यांने इण विध वेंहरता देख ने, कोई खूंचणो काढे जांणो रे।
जब तो कहे म्हें छां गृहस्थी, सेख्यां ताके मूढ अयांणो रे॥ २५॥
जो असुध लेवो गृहस्थी थकां, तो गुर किण लेखे वाजो रे।
ओछा जीतव रे कारणे, इसडो कांय करो अकाजो रे॥ २६॥
देव अरिहंत गुर साधु निग्रन्थ छें, तो श्रावक गुर किण लेखे रे।
मोह मिथ्यात में भूला थकां, ते तों सूतर साहमो न देखे रे॥ २७॥
आहार असुध वेंहरे जांण नें, त्यांरो होसी काई सूलो रे।
वले असुध दीयां में धर्म कहो, थे जिण मारग गया भूलो रे॥ २८॥
श्रावक ने आहार देवें असूझतो, तिणरो पिण ओहीज सूलो रे।
धर्म जांणे तो पाप अठारमो, ते रह्या मिथ्यात में भूलो रे॥ २९॥
साधां ने आहार देवे असूझतो, तिण मे बतावे पापो रे।
श्रावक नें देवें असूझतो, तिण में कीधी धर्म री थापो रे॥ ३०॥
साधां ने आहार असुध वेहरावियां, पाप कहें तो सत वाणी रे।
धर्म कहे श्रावक नें असुध दीयां, आ सरधा कठा सू आणी रे॥ ३१॥
साधा ने आहार पांणी असुध दीया, पाप लागे द्रव्ये धन खूटो रे।
श्रावक नें असुध दीयां धर्म कहें, ओ इसडो कांई छे लूठो रे॥ ३२॥
साधां ने आहार पांणी असुध दीयां, एकांत पाप पिछांणो रे।
ज्यूं श्रावक नेंई असुध दीयां, निश्चेंई धर्म म जाणो रे।
आ साची सरधा भगवान री*॥ ३॥
श्रावक बांदे श्रावकां भणी, गुण ने तिक्खुत्ता रो पाठो रे।
धर्म जांणे त्यांनें बांदियां, ओ मत निश्चेई माठो रे॥ आ॰ ३४॥
बडा श्रावक बाजें वरतां करी, ते तो छोटा श्रावक ने बादे रे।
यांरे लेखेंई ए भूला थकां, कर्म तणा पुज बाधे रे॥ ३५॥
इम कह्यां जाब न ऊपजे, जब कूर कपट चलावे रे।
कहे में घर बार छोड न्यारा हूआं, वले छ काय छोडी बतावें रे॥ ३६॥
छ काय छोडी कहे सर्वथा, वले छोड्यो कहे घर बारो रे।
ए झूठ बोले छें दोनूं विधें, ते सांभलजो विस्तारो रे॥ ३७॥
घर छोड्यो कहे मुख थकी, पिण गांम गांम बेठा घर माडी रे।
तिण घर रो नांम थांनक दीयों, आ तों यूंही आतमा भाडी रे॥ ३८॥
तिण थांनक रे कारणे, विवध पणे जीव मारी रे।
तिण थांनक नें कीयों आपरो, ए चोडें देखो घरबारी रे॥ ३९॥
छ काय छोडी कहें सर्वथा, तो रात पड्यां कांय हाले रे।
तिहां जीव अनेक मरे घणां, वले विनां जोया पिण चाले रे॥ ४०॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

भिक्षु-ग्रन्थमाला

ग्रन्थ : १

भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर

खण्ड : १

सम्पादक :

आचार्य श्री तुलसी

संग्रहकर्ता :

मुनि श्री चौथमलजी

प्रबन्ध सम्पादक :

श्रीचन्द रामपुरिया, बी. कॉम., बी. एल.



तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में प्रकाशित

प्रकाशक :
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कलकत्ता—१



प्रथमावृत्ति
जून, १९६०
आषाढ़ २०१७



प्रति संख्या
१५००



पृष्ठांक :
९९२



मूल्य :
पच्चीस रुपये



मुद्रक :
रेफिल आर्ट प्रेस,
कलकत्ता

प्रकाशकीय

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी द्वारा रचित कृतियों को 'भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर' (प्रथम खंड) के रूप में प्रकाशित कर वस्तुतः गौरवानुभूति हो रही है। स्वामीजी की उच्च कोटि की दार्शनिक कृतियो में जैन आचार और विचार विषयक गूढ़ तात्त्विक चर्चाएँ बड़ी सरल भाषा में हैं। यद्यपि इन कृतियों की रचना स्वामीजी ने आज से प्रायः पौने दो सौ वर्ष पूर्व तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में की थी, किन्तु, फिर भी ये रचनायें, आज भी उतनी ही उपयोगी हैं, जितनी अपनी रचना-काल में थीं।

महासभा ने स्वामी जी की समस्त कृतियों को जन-हितार्थ क्रम से प्रकाशित करने की परिकल्पना की है। प्रथम दो खण्डों में स्वामीजी की उपलब्ध पद्य-कृतियाँ प्रकाशित हैं। पाठकवृन्द इन परमोपयोगी ग्रन्थ रत्नों से अत्यन्त लाभान्वित होंगे, इसमें सन्देह नहीं।

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कलकत्ता—१
३० जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक,
साहित्य-विभाग

भूमिका

तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य संत भीखण जी द्वारा रचित विभिन्न तात्त्विक कृतियों को 'भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर' के प्रथम खंड में संकलित किया गया है। इस खंड में कुल ३४ रत्न हैं। भिन्न-भिन्न रत्नो का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :

१—नव पदारथ :

जैन-दर्शन में जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, बंध, निर्जरा और मोक्ष—ये नव पदार्थ बताये गये हैं। इस कृति मे इन्ही पदार्थों का विशद विवेचन है। यह कृति स० १८५५ में आरम्भ की गई और सं० १८५६ मे समाप्त हुई। ऐसा प्रथम और बारहवीं ढाल की अन्तिम गाथाओं से मालूम होता है। 'पुण्य पदार्थ' की दूसरी ढाल, जो १८४३ मे रचित है, तथा तेरहवी ढाल, जो १८५७ में रचित है, बाद में इस कृति के साथ जोड़ी गई हैं। इस कृति मे १३ ढालो में कुल ६४ दोहे और ६८० गाथाएँ हैं। नव पदार्थ का जैसा गभीर विवेचन इस कृति में है वैसा अन्यत्र कम देखा जाता है। पहली ढाल मे द्रव्य जीव और भाव जीव का भेद तथा जीव के तेईस गुणनिष्पन्न नामों का बड़ा सुन्दर और सरल विवेचन है। दूसरी ढाल मे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय का तुलनात्मक विवेचन तथा काल और पुद्गलास्तिकाल का अनेक पहलुओ से विवेचन है।

तीसरी और चौथी ढाल में पुण्य पदार्थ का विवेचन है। पुण्य की परिभाषा, पुण्य के उदय से उत्पन्न सुखो का स्वभाव, पुण्योत्पन्न सुखों के भोगने का फल, उनके त्याग का फल, पुण्य का बध कैसे होता है ?, पुण्य बधने के नौ प्रकार आदि अनेक विषयो का गहरा विवेचन है।

पाँचवी ढाल में पाप पदार्थ का विवेचन है। छठी और सातवी ढाल में आश्रव और कर्म मे भेद, आश्रव जीव है या अजीव, आश्रव के बीस भेद आदि का विवेचन है।

आठवी ढाल मे संवर किसे कहते हैं, संवर कैसे होता है, देश सवर और सर्व संवर आदि बातो पर मौलिक प्रकाश है। नवी और दसवी ढाल में निर्जरा कैसे होती है, निर्जरा की परिभाषा, शुभ योग और निर्जरा का सम्बन्ध, सवर और निर्जरा का सम्बन्ध, अकाम निर्जरा और सकाम निर्जरा, मोक्ष और निर्जरा में अन्तर आदि विषयो का विवेचन है। ग्यारहवी ढाल में बध पदार्थ का स्वरूप, उसके चार भेद आदि का वर्णन है। बारहवी ढाल में मोक्ष पदार्थ का विवेचन है। सांसारिक और मौक्तिक सुख, १५ प्रकार के सिद्ध, सिद्धों के स्वरूप आदि का मार्मिक विवेचन है। तेरहवी ढाल मे नौ पदार्थों में कितने जीव हैं और कितने अजीव इस विषय की चर्चा है।

२—श्रावक ना बारे व्रत :

यह कृति सं० १८३२ मे गुदोच शहर मे समाप्त हुई। इसमें श्रावक के बारह व्रतो का विस्तृत विवेचन है। बारह व्रतो पर इतना विशद और व्यापक विवेचन अन्यत्र कम देखा जाता है। इस कृति में १३ ढालें हैं जिनमें कुल ५२ दोहे और ३६३ गाथाएँ हैं।

३—कालवादी री चौपई :

स्वामीजी के समय में कालवादी एक विशिष्ट मत था। इस कृति मे स्वामी जी इस मत की मान्यताओ का खण्डन कर वास्तविक तथ्य क्या है इस पर बड़ा गहरा प्रकाश डालते हैं। यह उच्च कोटि की दार्शनिक कृति है जिसमें गूढ तात्त्विक चर्चा बडी सरल भाषा मे मिलती है। इसमें ७ ढालें हैं। कुल ३६ दोहे और २४७ गाथाएँ हैं। इस कृति की पहली चार ढालो मे रचना-सवत् नही मिलता।

५ वीं ढाल गेरवा शहर मे १८३२ मे आषाढ सुदी १ सोमवार के दिन रची गई थी। ६ वी और ७ वीं ढालें पुर मे सं० १८४८ को क्रमशः वैशाख सुदी ५ बुधवार और वैशाख सुदी ८ रविवार के दिन पूरी हुई।

४—इन्द्रियवादी री चौपई :

इसमें १५ ढालें हैं। कुल ६२ दोहे और ६६७ गाथाएँ हैं। प्रथम सात और १४ वी ढाल की रचना का काल नही मिलता। अवशेष ढालो का रचना-स्थान और काल इस प्रकार है :—

ढाल	८	नैंणवा शहर	सं०	१८४६ ज्येष्ठ सुदी बुधवार
"	९	"	सं०	१८४७ फाल्गुन वदि ८ शनिवार
"	१०	माधोपुर	सं०	" फाल्गुन सुदी
"	११	नैंणवा शहर	सं०	" वैशाख वदि ९ बुधवार
"	१२	आंतरदा गाँव	सं०	" वैशाख सुदी १२ रविवार
"	१३	इन्द्रगढ़	सं०	" ज्येष्ठ वदि १४ सोमवार
"	१५	माधोपुर	सं०	" चैत्र वदि २ सोमवार

इन्द्रियां सावद्य हैं या निरवद्य—इस विषय पर इन ढालो मे मौलिक विवेचन है।

५—परजायवादी री चौपई :

इस कृति मे ३ ढालें हैं जिनमें १५ दोहे और १०१ गाथाएँ हैं। इसके रचना-काल का उल्लेख नहीं है।

स्वामी जी के समय में परजायवादी एक मत था। उस मत की विशद समीक्षा इस कृति में है।

६—टीकम डोसी री चौपई :

टीकम डोसी की अनेक शंकाएँ थी। उनका निवारण स्वामीजी ने किया। इस कृति में अनेक तात्त्विक विषयो की गहरी चर्चा है। इस कृति में ५ ढालें हैं। कुल २८ दोहे और १२८ गाथाएँ हैं।

७—निपेपां री चौपई :

इसमें ६ ढालें हैं। कुल ३० दोहे और २६७ गाथाएँ हैं। किसी ढाल में रचना-काल नही मिलता। इस कृति में निक्षेपों के स्वरूप का विवेचन और उनपर मौलिक विचार हैं।

८—निन्हव री चौपई :

इसमे ६ ढालें हैं। कुल २८ दोहे और १७२ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल में रचना-काल का उल्लेख नहीं है। निह्नवों की मान्यताओं की गभीर आलोचना इस कृति में है।

९—मिथ्याती री करणी री चौपई :

इस कृति मे ४ ढालें हैं। कुल २५ दोहे और १५१ गाथाएँ हैं। दूसरी और चौथी ढाल का रचना समय नही मिलता। बाकी दो ढालो का रचना-समय इस प्रकार है —

पहली ढाल	माधोपुर	सं० १८४३ चैत्र सुदी ६ शुक्रवार
तीसरी ढाल	नैंणवा शहर	सं० १८४७ वैशाख वदि १२ शनिवार

१०—एकल री चौपई :

इसमे ८ ढालें हैं जिनमे कुल ३७ दोहे और २२७ गाथाएँ हैं। इसका रचना-सवत् नही मिलता। जो गण छोड़कर अकेले फिरते हैं उन्हें 'एकल' कहा जाता है। इस चौपई मे ऐसे स्वच्छंदो के दोषो पर प्रकाश डाला है और ऐसी स्वच्छंदता किस प्रकार जिन-आज्ञा के विपरीत है यह सिद्ध किया है। सूत्र मे एकल विहारी किसे कहा है? एकल विहार करते हुए भी कैसा साधु शुद्ध होता है? आदि विषयो का

विवेचन दूसरी ढाल में है। जो अव्यक्त है और विना गुरु की आज्ञा के अकेला स्वच्छन्द विहारी होता है उसका किस तरह पतन होता है इसका वडा मनोवैज्ञानिक चित्रण इस कृति मे होता है। स्वामी जी ने उपसंहार स्वरूप कहा है—'भगवान् ने सूत्र मे कहा है कि ऐसे कुशील, पार्श्वस्थ, अपछंद और ससक्त एकल विहारियो का सग नही करना चाहिये। साधु उनके साथ परिचय न करे।'

११—जिनाग्या री चौपई :

इस कृति मे ५ ढालें हैं जिनमे कुल ३४ दोहे और २३५ गाथाएँ हैं। पहली ढाल मे रचना-सवत् नही है। वाकी चार ढालें भिन्न २ वर्ष मे रचित हैं :

ढाल २	खेरवा	स० १८४० आश्विन वदि ५ शनिवार
„ ३		स० १८३१ ज्येष्ठ सुदी ३ शुक्रवार
„ ४	नाथ दुवारा	स० १८४२ आषाढ वदि १. सोमवार
„ ५	„	स० १८५६ फाल्गुन वदि ६ शनिवार

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि 'जिनाग्या री चौपई' कोई सलग्न रचना नही है। यह इस विषय की अलग-अलग समय की ढालो का सग्रह मात्र है। इसका प्रतिपाद्य है —"जैन-धर्म जिन-आज्ञा मे है, जिन-आज्ञा के वाहर जैन-धर्म नही।" पहली ढाल मे इसका वडा सुन्दर विवेचन है कि किन-किन वातो मे जिन-आज्ञा है और किन-किन में नही। दूसरी ढाल मे सावद्य-निरवद्य कार्य की कसौटी वताते हुए जो जिन-आज्ञा रहित कार्यो में भी धर्म वताते हैं उनकी तीव्र आलोचना की है। जो जिन-आज्ञा के वाहर के कार्यों मे मिश्र—धर्म-पाप मिश्रित वतलाते हैं उनकी भी तीव्र आलोचना है। साधु, आहार आदि करते हैं, वस्त्रादि रखते हैं, रात मे सोते हैं, ये कार्य जिन-आज्ञा के अन्तर्गत हैं। जो साधुओ के इन कार्यो मे प्रमाद, अविरति आदि दोष कहते और उनके महाव्रतो को सागार कहते हैं उनकी आलोचना तीसरी ढाल मे है। आज्ञा-सहित कार्य करने में किस तरह साधु को पाप नही लगता इसका विशद विवेचन भी इस ढाल मे है। चौथी ढाल में यह वताया गया है कि साधु और साध्वियो के जो अलग-अलग कल्प हैं उनमे किसी तरह का पाप नही। यह कल्प भगवान् द्वारा निर्धारित है और उनकी मुद्रा उस पर है फिर उसे पाप पूर्ण कैसे कहा जा सकता है? इस तरह इस ढाल में साधु-साध्वियो के कल्प का वडा गभीर और सुन्दर विवेचन है।

साधु के उपकरण १४ ही हैं या उनसे अधिक भी हो सकते हैं इसका विवेचन ५ वी ढाल का विषय है। स्वामीजी ने सिद्ध किया है कि साधु के उपकरण १४ ही नही अधिक भी हैं। अत जो यह कहते हैं कि १४ उपकरण के उपरांत उपकरण रखने वाला साधु नही, इनके उपरांत जो एक कागज का पन्ना भी रखता है वह असाधु है वे विपरीत प्ररूपणा करते हैं। इस ढाल मे इस वात का भी विवेचन है कि साधु लिखने के उपकरण रख सकता है या नही तथा लिख सकता है या नही।

१२—पोतियावंध री चौपई :

इस कृति मे ४ ढालें हैं। इनमे कुल २८ दोहे और १६७ गाथाएँ हैं। रचना-सवत् किसी भी ढाल में नही देखा जाता।

स्वामीजी के समय मे जैनो का एक सम्प्रदाय पोतियावन्ध नाम से भी था। स्वामीजी गृहस्थावास मे इस सम्प्रदाय के यहाँ भी आना-जाना रखते थे। गच्छवासी सम्प्रदाय को छोड कर वे इसके अनुयायी वने थे।

पोतियावन्ध सम्प्रदाय की एक मान्यता यह थी कि सिद्धो के पहले अरिहन्तो की वदना करने से आशातना होती है। सर्व साधुओ को वदना नही करनी चाहिए। जो वड़े हैं उन साधुओ

वे सिद्ध कैसे वन्दनीय हो सकते हैं? इस तरह नमस्कार मंत्र की रचना में वे त्रुटि बतलाते थे। स्वामीजी ने पहली ढाल में इसी मान्यता को लेकर उसकी निस्सारता सिद्ध की है। उनकी दूसरी मान्यता थी कि वर्तमान समय में जैन साधु नहीं हो सकते। स्वामीजी ने दूसरी ढाल में इस मिथ्या मान्यता का खण्डन किया है तथा इस सम्प्रदाय के अन्य अनेक अभिनिवेशों की भी आलोचना की है। वे 'मन' योग से प्रत्याख्यान नहीं करते थे। 'मन' योग से प्रत्याख्यान करने में वे पाप बतलाते थे। उसकी आलोचना तीसरी ढाल में है। चौथी ढाल में अन्य अनेक मान्यताओं का उल्लेख और उनका खण्डन है।

१३—निन्हव रास :

इस कृति में केवल एक ही ढाल है। सं० १८५३ की कार्त्तिक वदि ११ बुधवार के दिन यह ढाल रची गई। इसमें ९ दोहे और १७० गाथाएँ हैं। स्वामीजी को विपक्षी निह्नव कहते। स्वामीजी ने इस ढाल में यह बताया है कि वास्तव में निह्नव वह होता है जिसके श्रद्धा, आचार और प्ररूपणा जिन-वाणी के विपरीत हों। उन्होंने उस समय के साधुओं की मान्यता, आचार, प्ररूपणा आदि पर विवेचन करते हुए यह सिद्ध किया है कि निह्नव संज्ञा कहाँ घटती है। यह कृति उस समय के मिथ्या अभिनिवेश, क्रिया और प्ररूपणाओं पर बड़ा गंभीर प्रकाश डालती है।

१४—विनीत अविनीत री चौपई :

इस कृति में नौ ढालें हैं जिनमें दोहों की संख्या ५२ और गाथाओं की संख्या ३४२ है। यह कृति सिरयारी शहर में संवत् १८३२ भाद्र शुक्ल षष्ठी, शुक्रवार के दिन समाप्त हुई। इस कृति का मुख्य आधार 'उत्तराध्ययन' सूत्र है। पर अन्य सूत्रों में भी जहाँ भी इस विषय पर कुछ भी आया है उसको भी स्वामीजी ने इस कृति में ले लिया है। विनय किसका करना चाहिए, विनय किसे कहते हैं, अविनय किसे कहते हैं, कौन विनयी है, कौन अविनयी है, साधु के विनय का स्वरूप आदि-आदि अनेक विषयों पर इस कृति में बड़ा गम्भीर और मार्मिक विवेचन है। आगम आधार पर रचित इस कृति में बड़ा मौलिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है और इस दृष्टि से यह एक स्वतंत्र कृति भी कही जा सकती है। इसमें स्वामीजी ने विषय को समझाने के लिए अनेक मौलिक दृष्टान्त और मनोवैज्ञानिक विचार दिये हैं।

१५—विनीत अविनीत री ढाल :

इस कृति में दो ढालों का संग्रह है। दोनों ढालों में रचना संवत् नहीं है। दोनों में कुल मिलाकर दो दोहे और पचास गाथाएँ हैं। पहली ढाल में अविनयी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। दूसरी ढाल में अविनयी अपनी वृत्तियों को बदल कर किस तरह विनयी हो सकता है, इसका सुन्दर विवेचन है।

१६—उपकारी ढाल :

इस कृति में एक ही ढाल है जिसमें एक दोहा और ७८ गाथाएँ हैं। रचना-संवत् नहीं मिलता। इस ढाल में स्वामीजी ने तीन सम्बन्धों को लिया है—(१) माता-पिता और सन्तान का सम्बन्ध, (२) मालिक और नौकर का सम्बन्ध और (३) गुरु और शिष्य का सम्बन्ध और बतलाया है कि आध्यात्मिक दृष्टि से सन्तान, नौकर और शिष्य किस तरह उऋण होता है। आध्यात्मिक उपकार का सुन्दर विवेचन इस ढाल में है। स्वामीजी ने एक मौलिक दृष्टान्त द्वारा इनका विवेचन किया है।

१७—मोहणी कर्म बंध री ढाल :

आठ कर्मों में मोहनीय कर्म प्रवलतम है। प्राणी की ज्ञान और दर्शन की शक्ति इसीसे अवरुद्ध होती है। इस कृति में महा मोहनीय कर्म-बन्ध के ३० बोलो का विवेचन है। इस ढाल के गंभीर मनन से मनुष्य महान् पापो से वच सकता है। यह ढाल स्वामीजी ने पादुगांव मे सवत् १८३७ श्रावण वदि रविवार के दिन रची। इसमें ५ दोहे और ५० गाथाएँ हैं।

१८—दसवें प्राछित्त री ढाल :

इस ढाल में दसवां प्रायश्चित्त किसको आता है, इसका विवेचन है। यह ढाल 'स्थानाङ्ग' सूत्र के तीसरे और पांचवे स्थानक के आधार पर रची गई है। इसमे रचना-सवत् का उल्लेख नही है। इसमें दो दोहे और ग्यारह गाथाएँ हैं।

१९—जिण लखणा चारित आवे न आवे तिणरी ढाल :

यह ढाल संवत् १८३५ माघ सुदी ४, बुधवार के दिन रचित है। इसमें ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। श्रामण्य को आगम में गुणो का महा भार कहा है। श्रामण्य आत्मिक विशेषताओ के विना नही आता। इस ढाल में इस बात का विवेचन है कि किन गुणो से सर्व सयम—श्रामण्य का पाना सुलभ होता है और किन-किन कर्मों से मनुष्य उसका अधिकारी नही होता।

२०—सूंस भंगावण रा फल री ढाल :

इस ढाल में ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। यह कृति १८५४ चैत्र सुदी१३ वुधवार के दिन पादुगांव में रची गई है। इस छोटी सी ढाल में स्वामीजी ने प्रत्याख्यान के महत्वपूर्ण विषय को कई पहलुओ से स्पर्श किया है। प्रत्याख्यान किस भावना से ग्रहण करना चाहिए, किस तरह उसका पालन करना चाहिए, प्रत्याख्यान के भङ्ग में क्या दोष है, गिरते हुए को किस तरह से दृढ करना चाहिए, व्रती के परिणामो को ढीला नही करना चाहिये आदि २ विषयो पर वडा मार्मिक विवेचन है।

२१—सांमधर्मी सांमद्रोही री ढाल :

इस ढाल में कुल ३१ गाथाएँ हैं। इसका रचना-सवत् नही मिलता। एक योगी ने चूहे को मंत्र के वल से क्रमश बिल्ली से सिंह बनाया। सिंह बनने पर वह चूहा अपने उपकारी योगी को ही खाने के लिए उद्यत हो गया। यह स्वामी द्रोह का दृष्टान्त है। इसीमें एक अन्य दृष्टान्त राजा के स्वामीभक्त नौकर का है जिसको राजा ने ठुकरा दिया। वाद में राजा पर विपद पड़ी। उस समय उस नौकर ने राजा के व्यवहार की ओर जरा भी दृष्टिपात न करते हुए उसकी रक्षा की। स्वामीजी ने इन दृष्टान्तो की उपमा देते हुए विनयी-अविनयी शिष्य के स्वभाव को प्रगट किया है।

२२—शील की नव बाड़ :

इस कृति में ग्यारह ढालें हैं जिनमें दोहो की संख्या ४६ और गाथाएँ १६७ हैं। इसकी रचना संवत् १८४१ की मिती फाल्गुन वदि १० वुधवार के दिन पादुगांव में समाप्त हुई। इस कृति में उत्तम ब्रह्मचारी के शील—उसके लक्षण, रहन-सहन और व्यवहार के नियमो का विवेचन है। ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए 'उत्तराध्ययन' सूत्र में दस समाधि स्थानो का उल्लेख है। उसीके आधार पर ब्रह्मचर्य की बाड़ो का विस्तृत, मार्मिक एवं मौलिक विवेचन इस कृति में है।

इस कृति का सटिप्पण हिन्दी अनुवाद अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

२३—समकित री ढालां :

यह तीन ढालो का संग्रह है। इसमें सम्यक्त्व का महत्त्व, सम्यक्त्वी कौन है, किसमें सम्यक्त्व नही है, इसका विवेचन है। इसमें सम्यक्त्व के स्वरूप पर वड़ा अच्छा प्रकाश है। इस संग्रह म कुल २ दोहे और ४६ गाथाएँ हैं।

२४—गणधर सिखावणी :

यह दो ढालो का सग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान केलवा है और यह संवत् १८४३ के पौष महीने में रची गई है। मनुष्य का आयुष्य किस तरह अस्थिर है यह पहली ढाल में बताया गया है। दूसरी ढाल मे एक समय के लिए भी प्रमाद न करने का उपदेश देते हुए अनेक उच्च गुणों की आराधना का वडा गम्भीर उपदेश है। दोनो ढालो में ३६ गाथाएँ हैं।

२५—दान री ढालां :

यह दो ढालों का संग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान सिरियारी गाँव है। यह ढाल संवत् १८४२ कार्तिक मास में रची गई है। दोनो ढालो में कुल दोहो की सख्या ६ है और गाथाएँ ९० हैं। प्रथम ढाल में निरवद्य सुपात्रदान की महिमा का वर्णन है और दूसरी ढाल में कृपण की प्रकृति का गम्भीर मनोवैज्ञानिक विवेचन है।

२६—वैराग री ढालां :

यह कुल ४ ढालो का संग्रह है। इसमे कुल दोहे ५ हैं और गाथाएँ १०५। दूसरी ढाल का रचना-स्थान सिरियारी गांव है। यह संवत् १८३४ आषाढ वदि ११ शनिवार को रची गई है। पहले गणधर सिखावणी का जो संग्रह आया है उसकी पहली ढाल का ही विषय इस संग्रह की पहली ढाल का विषय है। वास्तव मे ये दोनों ढालें एक ही संग्रह मे होनी चाहिये थी। दूसरी ढाल को प्राय: 'बूढे की ढाल' कहते हैं। इसमें वृद्धावस्था में मनुष्य की कैसी हालत होती है उसका वर्णन है। तीसरी ढाल मे ग्रहस्थावस्था की विडम्बना का वर्णन है। इसमें कई अच्छे सूक्त हैं। उदाहरण स्वरूप :

नचिंत होय बेठा नर अंध, बांधे पर घर केरा बंध।
परणीजे जांणें घर मांड्या, इसडा घर अनंता छांड्या॥
तो ही तृप्त न हूवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नींव।
घर जलाय तीरथ जे करसी, सो साधु जग मांहें तिरसी॥
केइ श्रावक नां व्रत पाले, ते पिण नरक तिर्यंच दुख टाले।
देश थकी ते पिण ब्रह्मचारी, साधु तजिया सर्व विकारी॥
नरक दिखावण दीवी नार, मोष जावण नें आडी किंवाड।
सुयगडांग तंदुल वियालि साख, तिण में वीर गया छे भाख॥
स्त्री दोष जिण कह्या अनेक, तिण न्याए मेल्या क्यूंही एक।
बुरो मती मानें नर नारी, निश्चें देखो ग्यांन विचारी॥
छेदाणां जस हाथ नें पाय, कांप्या कांन नें नांक कहाय।
ते पिण सो वरसां नीं नारी, दूर तजें रहे ब्रह्मचारी॥
विषें दिष्टि वरजी चित्रनारी, तो किम निरखे सोले सिणगारी।
सूर्य साह्मों जोयां घटें तेज, ज्यूं ब्रह्मचर्य घटें इण हेज॥

उंदर बेठो मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण आस।
तिम नारी संगे शीलवत, विरलो कोइ वचे बलवंत ॥
इम जांणी रहे साधु एकंत, आपने हित वांछे ते संत।
शील सजम दिढ पाले ठीक, त्यांनें जांणो मुगत नजीक ॥

२७—जुआ री ढाल :

इसमे दोहे ४ और गाथाएँ ६१ हैं। इसकी रचना पुर शहर मे संवत् १८५७ श्रावण सुदी ५ शनिवार को हुई। जुये का भीषण दुष्परिणाम इस कृति मे वडे मौलिक ढग से दिखाया गया है।

२८—व्याहुलो :

इसमे केवल एक ही ढाल है। इसकी गाथाएँ ६८ हैं। इसके रचना-काल व स्थान का उल्लेख नही है। विवाह मे जो अनेक नेगचार होते हैं उनका आध्यात्मिक गूढार्थ इस कृति मे प्रगट किया है। स्वामीजी का उद्देश्य है कि इसको पढकर "जोगी जोग सेंठो रहे, भोगी तजे विकार"—अर्थात् योगी योग मे दृढ रहे और भोगी विकार को छोडे। यह ढाल स्वामीजी की औत्पातिकी बुद्धि का वडा सुन्दर नमूना है। विवाह सम्वन्धी लौकिक क्रियाओ का परमार्थ उपस्थित करते हुए उत्कट वैराग्य का उपदेश इस कृति में दिया गया है।

२६—तात्त्विक ढालां :

यह पाच ढालो का सग्रह है, जिनमे कुल ७ दोहे और १२४ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल में रचना-सवत् व स्थान का उल्लेख नही है। प्रथम ढाल मे जिन-शासन मे किन किन महान् व्यक्तियो ने सयम ग्रहण किया उनका वर्णन है। दूसरी ढाल मे २४ दण्डक की अपेक्षा से २३ पदवियों का वर्णन है। तीसरी ढाल मे मोक्षमार्ग मे ज्ञान और क्रिया की सहचारिता पर अन्धे और पगु का दृष्टान्त है। छोटी होने पर भी यह ढाल वडी अर्थ-गम्भीर है। चौथी ढाल में एकेन्द्रिय जीवो को कैसी वेदना होती है इसका दिग्दर्शन है। पांचवी ढाल में मोम, लाख, लकडी और मिट्टी के गोलो का दृष्टान्त देकर चार प्रकार के मनुष्यो की मार्मिक व्याख्या की है।

३०—अनुकम्पा री चौपई :

यह रत्न १२ ढालो का सग्रह है जिनमें ५४ दोहे और ४८७ गाथाएँ हैं।

प्रारम्भिक आठ ढालो मे रचना-सवत् नही मिलता। अवशेष ढालो के अन्त में निम्न ब्योरा मिलता है।

ढाल ६ वगडी १८४४ फाल्गुन सुदी ६ रविवार।

ढाल १० मांढा गाँव १८५२ आषाढ वदि ११ मगलवार।

ढाल ११ खेरवा १८५४ आश्विन सुदी २ शुक्रवार।

ढाल १२ पुर शहर १८५३ कार्त्तिक वदि १४ शुक्रवार।

उपर्युक्त रचना-वर्णन से यह स्पष्ट है कि कुछ ढालें मूल कृति के साथ वाद मे जोडी गई हैं। मूल कृति मे ८ अथवा ६ ढालें रही इसका स्पष्ट पता नही चलता। इस कृति में, हिंसा, अहिंसा, दया, अनुकम्पा, उपकार आदि विषयो पर विविध गम्भीर विवेचन हैं जिसके पीछे गहरा आगम-अध्ययन और गम्भीर चिन्तन-मनन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अहिंसा के क्षेत्र में स्वामीजी एक बहुत वडे विचारक और साधक रहे जिनके चिन्तन मे वहुमूल्य स्थाई तत्त्व हैं। इस कृति का सानुवाद सटिप्पण सस्करण अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

३१—विरत अविरत री चौपई :

इस संग्रह में २० ढालें हैं। कुल मिला कर ८६ दोहे और ६७५ गाथाएँ हैं। इनमें विरति और अविरति के विषय पर मौलिक चिन्तन और विश्लेपण है। दान के सावद्य-निरवद्य भेद पर आगम-सम्मत विचार हैं। एक ही क्रिया में धर्म-अधर्म दोनो होते हैं ऐसी मान्यता का खण्डन है। जैन-आगम में कहाँ किस परिस्थिति में मौन रहने का विधान है इसका जिक्र है। दस प्रकार के दान पर विवेचन कर सावद्य-निरवद्य दान का विवेक उपस्थित किया गया है। यह कृति अनेक मिथ्याभिनिवेशो को दूर कर अनेक विषयो में सम्यक्दृष्टि देती है। इस सग्रह की कुछ ढालो के रचना-स्थान और काल का विवरण इस प्रकार है—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
४	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि १० रविवार
८	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ८ शुक्रवार
६	कोठारया	१८४३ आसोज सुदी १४ शनिवार
१२	धेनावस	१८४४ माघ सुदी ७ वृहस्पतिवार
१३	पाली	१८५२ श्रावण वदि १३ मंगलवार
१४	पाली	१८५२ आसोज वदि ५ शुक्रवार
१५	पाली	१८५२ आसोज वदि १५ सोमवार
१६	सोजत	१८५३ श्रावण सुदी ६ सोमवार
१७	पाली	१८५५ आसोज सुदी १ बुधवार
१८	नाथ दुवारा	१८५६ पौष वदि २ शनिवार
१६	गोघुंदा	१८५७ चैत्र सुदी १४ बुधवार

३२—श्रद्धा री चौपई :

यह रत्न ३१ ढालों का सग्रह है। ये ढालें विभिन्न स्थल और काल में रची गई हैं। इनका पूरा विवरण इस प्रकार है :

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
१	बगड़ी	१८३६ कार्त्तिक सुदी १५ मंगलवार
२	माधोपुर	१८४८ आसोज सुदी ६ सोमवार
४	नाथदुवारा	१८४३ श्रावण वदि १५ मंगलवार
५	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ६ शनिवार
६	ईडवा	१८५४ चैत्र वदि ४ बुधवार
७	कोठारया	१८४३ कार्त्तिक सुदी १३ शनिवार
८	सिरयारी	१८५० आषाढ सुदी २ रविवार
६	गुदवच	१८५१ वैसाख सुदी ११ बुधवार
१०	खेरवा	१८५३ आसोज वदि १५ बुधवार
११	मेडता	१८५४ वैसाख वदि १५ सोमवार
१२	पाली	१८५५
१३	केलवा	१८५५ फाल्गुन वदि १ बधवार

१४	गुरला	१८५८ कार्त्तिक वदि ५ मंगलवार
१५	पीपाड़	१८३३ ज्येष्ठ वदि १२ मंगलवार
१६	पादू	१८५४ वैसाख वदि १० मंगलवार
१८	सिरयारी	१८५१ कार्त्तिक वदि १४ बुधवार
१९	पुर	१८५७ आसोज वदि ६ शुक्रवार
२०	पुर	१८५७ आसोज वदि १३ मंगलवार
२१	गंगापुर	१८५७ पौष सुदी ८ मंगलवार
२२	पीपाड़	१८५७ चैत्र सुदी १३ सोमवार
२३	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १ बृहस्पतिवार
२४	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १५ बृहस्पतिवार
२५	पूहना	१८५७ माघ वदि २ शनिवार
२६	रावल्यां	१८५७ चैत्र सुदी १४ रविवार
२७	मेवाड़	१८५७ आसोज वदि १५ बृहस्पतिवार
२९	नेणवा	१८४८ माघ वदि १५ सोमवार

स्वामीजी के समय में जैन दर्शन के क्षेत्र में बड़ा वितण्डावाद फैला हुआ था। एक ही विषय के सम्बन्ध में नाना प्रकार की मान्यताएँ प्रचलित थी। श्रद्धा विषयक इन मान्यताओ का स्वामीजी ने गहरा अध्ययन किया और हजारो विषयो पर सही दृष्टि दी। श्रद्धा आचार की चौपई में श्रद्धा विषयक निर्णयों का संग्रह और जिन धर्म विषयक विपरीत मान्यताओ की तीव्र आलोचना एवं खण्डन है। इस सग्रह मे कुल मिला कर १६० दोहे और १४६४ गाथाएँ है।

३३—आचार री चौपई :

इस चौपई में ३२ ढालो का संग्रह है। कुछ के रचना-काल और स्थान इस प्रकार मिलते हैं—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
९	मेडता	१८३३ वैसाख वदि ९
११	रीयां	१८३३ आषाढ सुदी ३ सोमवार
१२	पीपाड़	१८३४ आसोज सुदी ७ बुधवार
१४	अणंदपुर	१८३३ वैसाख सुदी ११ रविवार
१६	खेरवा	१८३२ आसोज सुदी २ मंगलवार
१७	खेरवा	१८३२ कार्त्तिक वदि २ मंगलवार
१८	गुंदवच	१८३२ वैसाख सुदी ११ सोमवार
१९	रीयां	१८३३ ज्येष्ठ सुदी १५ शुक्रवार
२०	रीयां	१८३३ आषाढ वदि ९ रविवार
२५	पाली	१८५२ भाद्र वदि ७ शुक्रवार
२६	सोजत	१८५३ आसोज सुदी ७ शनिवार
२७	पाली	१८५२ आसोज सुदी २ बुधवार
२८	सोजत	१८५३ आसोज वदि ११ मंगलवार
२९	पाली	१८५५ भाद्र वदि १० बुधवार
३०	नाथदुवारा	१८५६ कार्त्तिक सुदी ८ मंगलवार

श्रद्धा के बोलो की तरह आचार के सम्बन्ध में भी स्वामीजी के समय में बड़ा अन्धेर चला हुआ था। साधुओ के आचार में इतनी विभिन्नता थी कि किसे साधु कहा जाय और किसे नही यह निर्णय करना असंभव-सा हो गया था। स्वामीजी ने आचार विषयक शिथिलता की जो तीव्र आलोचना की वह इस संग्रह की प्रत्येक ढाल में देखी जाती है। उन्होने आगम-सम्मत शुद्ध साध्वाचार और श्रावकाचार को जनता के सामने रखा।

३४—अवनीत रास :

इसमें १ दोहा और ४४३ गाथाएँ हैं। अविनयी की प्रकृति का गहरा अध्ययन इस कृति की प्रत्येक गाथा से प्रगट होता है। स्वामीजी से चन्द्रभानजी आदि अलग हुए उसके बाद की यह कृति है। इसमें विनय और अविनय के विषय पर अमूल्य विचार-रत्न छिपे पड़े हैं।

इस खण्ड मे आई हुई कृतियों के विषयो का परिचय संक्षेप मे ऊपर दिया जा चुका है। इन कृतियो के पढने से पाठको के हृदय पर सहज ही निम्न प्रभाव पड़ेगा :

स्वामीजी का शास्त्रीय-ज्ञान बड़ा गंभीर था। आगमों का उनका अध्ययन बेजोड़ था।

शास्त्रीय-ज्ञान के साथ-साथ उनमे तीव्र नीर-क्षीर विवेक था जिसके सहारे वे तत्त्व-अतत्त्व का सही-सही निर्णय दे सकते थे।

उनकी कृतियो में तत्त्वों का सूक्ष्म निरूपण है। उनमें गांभीर्य के साथ-साथ सरलता और सहज बोध है।

वे बड़े भारी मनोवैज्ञानिक थे। मनोभावों का उनका विश्लेषण जितना ही गहरा है, उतना ही मुग्धकारी।

उन्होने जो कुछ लिखा है वह विद्वानों के लिए जितना सरल है उतना ही एक साधारण पढे-लिखे व्यक्ति के लिए भी।

वे सहज कवि और तत्त्व-ज्ञानी थे। उनकी काव्य-प्रतिभा असाधारण और विविध पहलुओवाली थी। वे सैद्धान्तिक थे और दिग्विजयी चर्चावादी। वे महान् टीकाकार थे। सूत्र की गाथाओ की उनकी टीकाएँ बेजोड हैं। वे पाण्डित्यपूर्ण ही नही वरन् वडी मूलस्पर्शी और मार्मिक भी हैं।

महान् वहुश्रुत होने के साथ-साथ वे महान् चिन्तक भी थे।

वे महान् उपदेशक और नैयायिक थे, साथ ही साथ तीव्र आलोचक और कठोर समीक्षक भी। उनकी कृतियो में गहरा ज्ञान और सहज वैराग्य है।

वे एक महान् आचार्य थे और एक दूरदर्शी आचार्य की तरह स्थायी अनुशासन के नियम दे सकते थे।

उनका जीवन-व्यापी प्रयास शुद्ध जैनत्व का प्रकाश करना रहा।

स्वामीजी अपने समय के एक महान् विचारक एवं क्रान्तिकारी पुरुष थे। उस समय की जैन धर्म की स्थिति एवं साधुओ मे छाई हुई शिथिलता के प्रति उनके मन मे गहरा दर्द था। जो यह कहा करते थे कि यह पंचम काल है, सम्पूर्ण साधुत्व का पालन असम्भव है, स्वामीजी उनके लिए एक चुनौती थे। उन्होने केवल प्रचलित आचार-विषय में ही नही किन्तु विचारो और मान्यताओ के विषय में भी मौलिक प्रकाश दिया। उन्होने जिनाज्ञा के विपरीत कार्यों में धर्म बताने वालों की गहरी आलोचना की। वे एक अत्यन्त स्पष्टवादी आचार्य थे। अपने विचारों को निर्भयतापूर्वक प्रगट करने में वे कभी नही सकुचाये।

इस खण्ड मे स्वामीजी की तात्त्विक और सैद्धान्तिक कृतियो का संग्रह है। द्वितीय खण्ड में स्वामीजी रचित आख्यानो और कथानको का सग्रह है। तृतीय खण्ड में स्वामीजी की गद्यमय रचनाओ का सग्रह रहेगा।

तीनो खण्डो की विस्तीर्ण विपय-सूचि, कठिन शब्दो का कोष आदि तृतीय खण्ड के परिशिष्ट रूप में प्रकाशित किये जायगे।

तात्त्विक ढालो का यह सग्रह न केवल जैनियो के लिए ही अत्यन्त महत्त्व का सिद्ध होगा पर जो जैन धर्म के हृदय को समझना चाहते हैं उन सब के लिए भी वैसा ही सिद्ध होगा।

स्वामीजी की ढालो की प्राचीनतम प्रति उनके परम भक्त शिष्य और द्वितीय आचार्य श्रीमद् भारीमालजी के हस्ताक्षरो में उपलब्ध है। वही प्रस्तुत संग्रह का आधार रही है। श्रीमद् जयाचार्य ने स्वामीजी की कृतियो का विषयवार वर्गीकरण कर उन्हें व्यवस्थित कर उनपर 'सिद्धान्त-सार' नामक ग्रन्थ की रचना की। वर्तमान आचार्य श्रीमद् तुलसीरामजी स्वामी ने "भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर" के रूप में उन्हें सयोजित करने का विचार किया। मुनि श्री चौथमलजी ने आचार्य श्री की दृष्टि के अनुसार सयोजन करने में पूरा परिश्रम किया।

तेरापन्थ सम्प्रदाय के द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर तेरापन्थ के प्रतिष्ठापक और आद्य आचार्य की वाणी का यह संग्रह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और आवश्यक प्रकाशन है। करीब १७५ वर्षों के वाद यह वहुमूल्य साहित्य अपने अमित आलोक के साथ जनता के सामने आ रहा है, यह एक वड़े ही सौभाग्य की वात है।

१५, नूरमल लोहिया लेन
कलकत्ता,
३० जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया

विषय-सूची

भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर

खण्ड : १

रत्न : १

नव पदारथ

१ : जीव पदारथ

दुहा

नमूं वीर सासन धणी, गणधर गोतम सांम।
तारण तिरण पुरषा तणा, लीजे नित प्रत नाम॥ १॥
त्या जीवादिक नव पदारथ तणो, निरणो कीयो भात भांत।
त्यांनें हलूकर्मी जीव ओलखे, पूरी मन री खात॥ २॥
जीव अजीव ओलख्या विना, मिटे नही मन रो भर्म।
समकत आयां विण जीव ने, रूके नही आवतां कर्म॥ ३॥
नव ही पदारथ जू जूआ, जथातथ सरदे जीव।
ते निश्चे समदिष्टी जीवडा, त्या दीधी मुगत री नीव॥ ४॥
हिवे नव ही पदारथ ओलखायवा, जूआ जूआ कहूं छूं भेद।
पहिलां ओलखाऊं जीव ने, ते सुणजो आण उमेद॥ ५॥

ढाल : १

[विना रा भाव सुण सुण गुंजे]

सासतो जीव द्रव्य साख्यात, कदे घटे नहीं तिलमात ।
तिणरा असंख्यात प्रदेस, घटे बधे नहीं लवलेस ॥ १ ॥
तिण सूं दरवे कह्यो जीव एक, भाव जीव रा भेद अनेक ।
तिणरो बहोत कह्यो विसतार, ते बुधवंत जाणे विचार ॥ २ ॥
भगोती वीसमां सतक मांय, बीजे उदेशे कह्यो जिणराय ।
जीवरा तेवीस[२३] नांम, गुण निपन कह्या छै तांम ॥ ३ ॥
जीवेतिवा[१] जीवरो नांम, आउखा नें बले जीवे ताम ।
ओतो भावे जीव ससारी, तिणनें बुधवंत लीजो विचारी ॥ ४ ॥
जीवथिकाय[२] जीवरो नांम, देह धरे छै तेह भणी आंम ।
प्रदेसां रा समुह ते काय, पुदगल रा समूह भेले छै ताय ॥ ५ ॥
सास उसास लेवे छै ताम, तिण सू पाणेतिवा[३] जीव नांम ।
भूएतिवा[४] कह्यो इण न्याय, सदा छै तिहुं काल रे मांय ॥ ६ ॥
सतेतिवा[५] कह्यो इण न्याय, सुभासुभ पोते छै ताय ।
विनूतिवा[६] विषे रा जांण, सबदादिक लीया सर्व पिछांण ॥ ७ ॥
वेयातिवा[७] जीव रा नांम, सुख दुख वेदे छै ठांम ठांम ।
ते तो चेतन सरूप छै जीव, पुदगल रो सवादी सदीव ॥ ८ ॥
चेयातिवा[८] जीवरो नाम, पुदगल नी रचणा करे तांम ।
विवध प्रकारे रचे रूप, ते तो भूडा ने भला अनूप ॥ ९ ॥
जेयातिवा[९] नांम श्रीकार, कर्म रिपू नों जीपणहार ।
तिणरो पराक्रम सकत अतंत, थोडा में करे करमा रो अन्त ॥ १० ॥
आयातिवा[१०] नाम इण न्याय, सर्व लोक फरस्यो छै ताय ।
जन्म मरण कीया ठाम ठांम, कठे पाम्यो नही आराम ॥ ११ ॥
रंगणेतिवा[११] नांम मदमातो, राग धेष रूप रग रातो ।
तिण सूं रहे छै मोह मतवालो, आत्मा नें लगावे कालो ॥ १२ ॥
हीडूतिवा[१२] जीवरो नांम, चिहूं गति मांहें हीड्यो छै तांम ।
कर्म हिलोलें ठांम ठांम, कठे पाम्यो नही विसराम ॥ १३ ॥
पोगलेतिवा[१३] जीवरो नाम, पुदगल ले ले मेल्या ठांम ठांम ।
पुदगल मांहें रच रह्यो जीव, तिण सूं लागी संसार री नीव ॥ १४ ॥

माणवेतिवा[१४] जीव रो नाम, नवो नही सासतो छै ताम ।
तिणरी परजा तो पलटे जाय, द्रव्य तो ज्यू रो ज्यू रहे ताय ॥ १५ ॥
कतातिवा[१५] जीव रो नाम, करमा रो करता छै तांम ।
तिण सू तिणने कह्यो छै आश्रव, तिण सूं लागे छै पुदगल दरब ॥ १६ ॥
विकतातिवा[१६] नाम इण न्याय, कर्मा ने विधूणे छै ताय ।
आ निरजरा री करणी अमाम, जीव उजलो जै निरजरा तांम ॥ १७ ॥
जएतिवा[१७] नाम तणो विचार, अति हि गमन तणो करणहार ।
एक समे लोक अन्त लग जाय, एहवी सकत सभाविक पाय ॥ १८ ॥
जतूतिवा[१८] जीव रो नांम, जन्म पाम्यो छे ठांम ठांम ।
चोरासी लख जोनि रे माहि, उपज्यो ने निसर गयो ताहि ॥ १९ ॥
जोणित्तिवा[१९] जीव कहिवाय, पर नो उत्पादक इण न्याय ।
घट पट आदि वस्त अनेक, उपजावे निज सुविवेक ॥ २० ॥
सयभूतिवा[२०] जीव रो नाम, किण हि निपजायो नही ताम ।
ते तो छे द्रव्य जीव सभावे, ते तो कदे नही विललावे ॥ २१ ॥
सरीरेतिवा[२१] नाम एह, सरीर रे अतर तेह ।
सरीर पाछे नाम धरायो, कालो गोरादिक नाम कहायो ॥ २२ ॥
नायएतिवा[२२] ते कर्मा रो नायक, निज सुख दुख छै दायक ।
तथा न्याय तणो करणहार, ते तो बोले छै वचन विचार ॥ २३ ॥
अन्तरअपा[२३] ते जीव रो नाम, सर्व सरीर व्यापे रह्यो तांम ।
लोलीभूत छै पुदगल माहि, निज सरूप दबे रह्यो त्याही ॥ २४ ॥
द्रव्य तो जीव सासतो एक, तिणरा भाव कह्या छै अनेक ।
भाव ते लखण गुण परयाय, ते तो भावे जीव छै ताय ॥ २५ ॥
भाव तो पाच श्री जिण भाख्या, त्यारा सभाव जू जूआ दाख्या ।
उदे उपसम ने खायक पिछाणो, खय उपसम परिणामीक जाणो ॥ २६ ॥
उदें तो आठ कर्म अजीव, त्यांरा उदा सूँ नीपना जीव ।
ते उदे भाव जीव छै ताम, त्यारा अनेक जूआ जूआ नाम ॥ २७ ॥
उपसम तो मोहणी कर्म एक, जब नीपजे गुण अनेक ।
ते उपसम तो भाव जीव छै ताम, त्यारा पिण छै जूआ जूआ नाम ॥ २८ ॥
खय तो हुवे आठ कर्म, जब खायक गुण नीपजे परम ।
ते खायक गुण छै भाव जीव, ते उजला रहे सदा सदीव ॥ २९ ॥
बे आवरणी ने मोहणी अंतराय, ए च्यारू कर्म खय उपसम थाय ।
जब नीपजें खय उपसमभाव चोखो, ते पिण छै भाव जीव निरदोपो ॥ ३० ॥

जीव परिणमे जिण जिण भाव माहि ते सगला छै न्याया न्यारा ताहि।
पिण परिणामिक सारा छैं तांम, जेहव तेहवा परिणामिक नांम॥ ३१ ॥
कर्म उदे सूं उदे भाव होय, ते तो भाव जीव छै सोय।
कर्म उपसमीयां उपसम भाव, (ते) उपसम भाव जीव इण न्याय॥ ३२ ॥
कर्म खय सू खायक भाव होय, ते पिण भाव जीव छै सोय।
कर्म खे उपसम सूं खें उपसम भाव, ते पिण छै भाव जीव इण न्याव॥ ३३ ॥
अे च्यारूं इ भाव छै परिणांमिक, ओ पिण भाव जीव छै ठीक।
और जीव अजीव अनेक, परिणामिक बिना नही एक॥ ३४ ॥
छे पाचूइं भाव ने भाव जीव जांणो, त्याने रूड़ी रीत पीछांणो।
उपजे ने विले हो जाय, ते भावे जीव तो छै इण न्याय॥ ३५ ॥
कर्म सजोग विजोग सू तेह, भावे जीव नीपनो छै एह।
च्यार भाव तो निश्चे फिर जाय, खायक भाव फिरे नही ताय॥ ३६ ॥
द्रव्य तो सासतो छै ताहि, ते तो तीनूंइ काल रे मांहि।
ते तो विले कदे नही होय, द्रव्य तो ज्यूं रो ज्यूं रहसी सोय॥ ३७ ॥
ते तो छेद्यो कदे न छेदावै, भेद्यो पिण कदे नही भेदावै।
जाल्यो पिण जले नाही, बाल्यो पिण न बले अगन मांहि॥ ३८ ॥
काट्यो पिण कटे नही कांई, गाले तो पिण गले नाहीं।
वाट्यो तो पिण नही बंटाय, घसे तो पिण नही घसाय॥ ३९ ॥
द्रव्य असख्यात प्रदेसी जीव, नित रो नित रहसी सदीव।
ते मारयो पिण मरे नांही, वले घटे, बधे नही कांइ॥ ४० ॥
द्रव्य तो असंख्यात प्रदेसी, ते तो सदा ज्यूँ रा ज्यूँ रहसी।
एक प्रदेस पिण घटे नाही, तीनूंइ काल रे मांही॥ ४१ ॥
खंडायो पिण न खंडे लिगार, नित सदा रहे एक धार।
एहवो छै द्रव्य जीव अखंड, अखी थको रहे इण मड॥ ४२ ॥
द्रव्य रा भाव अनेक छै ताय, ते तो लखन गुण परजाय।
भाव लखन गुण परजाय, ए च्यारू भाव जीव छै ताय॥ ४३ ॥
ए च्यारु भला नें भूडा होय, एक धारा न रहे कोय।
केइ खायक भाव रहसी एक धार, नीपना पछै न घटे लिगार॥ ४४ ॥
दरवे जीव सासतो जांणो, तिणमें पिण संका मूल म आंणो।
भगोती सातमा सतक रे माय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय॥ ४५ ॥
भावे जीव असासतो जाणो, तिणमे पिण संका मूल म आणो।
ए पिण सातमां सतक रे मांय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय॥ ४६ ॥

जेती जीव तणी परजाय, असासती कही जिणराय।
तिण ने निश्चे भावे जीव जाणो, तिणने रूडी रीत पिछाणो ॥ ४७ ॥
कर्मा रो करता जीव छै तायो, तिण सू आश्रव नाम धरायो।
ते आश्रव छै भाव जीव, कर्म लागे ते पुदगल अजीव ॥ ४८ ॥
कर्म रोके छै जीव ताह्यो, तिण गुण सू संवर कहायो।
सवर गुण छै भाव जीव, रूकीया छै कर्म पुदगल अजीव ॥ ४९ ॥
कर्म तूटा जीव उजल थाय, तिणने निरजरा कही जिणराय।
ते निरजरा छै भाव जीव, तूटे ते कर्म पुदगल अजीव ॥ ५० ॥
समस्त कर्मा सू जीव मूकायो, तिण सू तो जीव मोख कहायो।
मोख ते पिण छै भाव जीव, मूंकी गया कर्म अजीव ॥ ५१ ॥
सबदादिक काम ने भोग, तेहनो करे सजोग।
ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५२ ॥
सबदादिक काम ने भोग, त्याने त्यागे ने पाड़े विजोग।
ते तो सवर छै भाव जीव, तिण सू रूकीया छै कर्म अजीव ॥ ५३ ॥
निरजरा ने निरजरा री करणी, अे दोनूइ जीव ने आदरणी।
ए दोनू छै भाव जीव, तूटा ने तूटे कर्म अजीव ॥ ५४ ॥
काम भोग सू पामे आरामो, ते संसार थकी जीव स्हामो।
ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५५ ॥
काम भोग थकी नेह तूटो, ते संसार थकी छै अपूठो।
ते सवर निरजरा भाव जीव, जब रूके तूटे कर्म अजीव ॥ ५६ ॥
सावद्य करणी सर्व अकार्य, अे तो सगला छै किरतब अनार्य।
ते सगलाइ छै भाव जीव, त्यासू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५७ ॥
जिण आगन्या पाले छै रूडी रीत, ते पिण भाव जीव सुवनीत।
जिण आगन्या लोपे चाले कूरीत, ते तो छै भाव जीव अनीत ॥ ५८ ॥
सूर वीरा ससार रे माही, किणरा डराया डरे नाही।
ते पिण छै भाव जीव ससारी, ते तो हुवा अनती वारी ॥ ५९ ॥
साचा सूरवीर साख्यात, ते तो कर्म काटे दिन रात।
ते पिण छै भाव जीव चोखो, दिन दिन नेड़ी करे छै मोखो ॥ ६० ॥
कहि कहि नें कितोएक केहूं, द्रव्य ने भाव जीव छै बेहूं।
त्याने रूड़ी रीत पिछाणो, छै ज्यूं रा ज्यूं हीया माहे जाणो ॥ ६१ ॥
द्रव्य भाव ओलखावणी ताम, जोड कीधी श्री दुवारे सु ठाम।
समत अठारे पचावने वरस, चेत विद तिथ तेरस ॥ ६२ ॥

२ : अजीव पदारथ

दुहा

हिवे अजीव ने ओलखायवा, त्यांरा कहूं छू भाव भेद।
थोड़ा सा परगट करूं, ते सुणजो आंण उमेद॥ १॥

ढाल : २

[मम करो काया माया कारमी]

धर्म अधर्म आकास छै, काल ने पुदगल जांण जी।
अे पाचूंइ द्रव्य अजीव छे, त्यारी बुद्धवत करो पिछांण जी।
ए अजीव पदारथ ओलखो* ॥ १ ॥
यामें च्यार दरब ने अरूपी कह्या, त्यामें वर्ण गंध रस फरस नाहि जी।
एक पुदगल द्रव्य रूपी कह्यो, वर्णादिक सर्व तिण माहि जी॥ २॥
अे पाचूंइ द्रव्य भेला रहे, पिण भेल सभेल न होय जी।
आप आप तणो गुण ले रह्या, त्याने भेला कर सके नही कोय जी॥ ३॥
धर्म द्रव्य धर्मास्तीकाय छै, आसती ते छती वसत ताय जी।
असंख्यात प्रदेस छै तेहना, तिणने काय कही इण न्याय जी॥ ४॥
अधर्म द्रव्य अधर्मास्तीकाय छै, आ पिण छती वसत ताय जी।
असख्यात प्रदेस छे तेहना, तिणने काय कही इण न्यायजी॥ ५॥
आकास द्रव्य आकास्तीकाय छै, आ पिण छती वसत छै ताय जी।
अनत प्रदेस छै तेहना, तिण सू काय कही जिणराय जी॥ ६॥
धर्मास्ती अधर्मास्तीकाय तो, पेहली छै लोक प्रमाण जी।
लोक अलोक प्रमांण आकास्ती, लाबी ने पेहली जांण जी॥ ७॥
धर्मास्ती ने अधर्मास्ती, वले तीजो आकास्तीकाय जी।
अे तीनूं कही जिण सासती, तीनूंइ काल रे माय जी॥ ८॥
अे तीनूंइ द्रव्य छै जू जूआ, जूआ जूआ गुण परजाय जी।
त्यारी गुण परजाय पलटे नही, सासता तीन काल रे माय जी॥ ९॥
ए तीनूंइ द्रव्य फेली रह्या, ते तो हाले चाले नही ताय जी।
हाले चाले ते पुदगल जीव छे, ते फिरे छै लोक रे मांय जी॥ १०॥
जीव ने पुदगल चाले तेहने, साज धर्मास्तीकाय जी।
अनंता चाले त्यानें साज छै, तिण सू अनती कही परजाय जी॥ ११॥

---

* यह आँकड़ी है। प्रत्येक गाथा के अन्त मे इसकी पुनरावृत्ति समझनी चाहिए।

जीव ने पुदगल थिर रहे, त्याने साज अधर्मास्तीकाय जी।
अनता थिर रहे त्याने साझ छै, तिण सूं अनती कही परजाय जी॥ १२॥
जीव अजीव सर्व द्रव्य नो, भाजन आकास्तीकाय जी।
अनंता रो भाजन तेह सू, अनंती कही परजाय जी॥ १३॥
चालवाने साज धर्मास्ती, थिर रहेवाने अधर्मास्तीकाय जी।
आकास विकास भाजन गुण, सर्व द्रव्य रहै तिण माय जी॥ १४॥
धर्मास्ती रा तीन भेद छे, खध ने देस परदेस जी।
आखी धर्मास्ती खद छे, ते उणी नही लवलेस जी॥ १५॥
एक प्रदेस थी आदि दे, एक प्रदेस उणो खंध न होय जी।
त्या लग देस प्रदेस छै, तिणने खध म जाणजो कोय जी॥ १६॥
धर्मास्ती काय तो सेथाले पड़ी, तावड़ा छाही ज्यू एक धार जी।
तिणरे वेठो ने वीटो कोई नही, वले नही छेकी साध लिगार जी॥ १७॥
पुदगलास्ती सू प्रदेस न्यारो पस्थो, तिणने परमाणु कह्यो जिणराय जी।
तिण सूखम परमाणु थकी। तिण सू मापी छै धर्मास्तीकाय जी॥ १८॥
एक परमाणूओ फरसे धर्मास्ती, तिणने प्रदेस कह्यो जिणराय जी।
इण मापा सू धर्मास्ती काय ना, असख्याता प्रदेस हुवे ताय जी॥ १९॥
तिण सू असख्यात प्रदेसी धर्मास्ती, अधर्मास्ती पिण इमहीज जाण जी।
अनता आकास्ती काय ना, प्रदेस इण रीत पिछाण जी। २०॥
काल पदारथ तेहना, द्रव्य कह्या छै अनंत जी।
नीपना नीपजे ने नीपजसी वलि, तिणरो कदेय न आवसी अत जी॥ २१॥
गये काल अनता समा हूआ, वरतमान समो एक जाण जी।
आगमीये काले अनता हुसी, ए काल द्रव्य पिछाण जी॥ २२॥
काल द्रव्य नीपजवा आसरी, सासतो कह्यो जिणराय जी।
ऊपजे ने विणसे तिण आसरी, असासतो कह्यो इण न्याय जी॥ २३॥
तिण सूं काल द्रव्य नही सासता, ए तो उपजे छै जेम प्रवाह जी।
जे उपजे ते समो विणसे सही, तिणरो कदेय न आवे छै थाह जी॥ २४॥
सूरज ने चन्द्रमादिक नी चाल थी, समो नीपजे दगचाल जी।
नीपजवा लेखे तो काल सासतो, समयादिक सर्व अधा काल जी॥ २५॥
एक समो नीपजे ने विणसे गयो, पछै वीजो समो हुवे ताय जी।
वीजो विणस्यो तीजो नीपजे, इन अणुक्रमे नीपजता जाय जी॥ २६॥
काल वरेत छै अढाइ धीप में, अढी दीप बारे काल नाहिं जी।
अढी धीप वारला जोतषी, एक ठाम रहे त्यांरा त्याहि जी॥ २७॥

दे.य समयादिक भेला हुवे नहीं, तिण सूं काल नें खंध न कह्यो जिणराय जी।
खंध तो हुवे घणा रा समदाय थी, समदाय विण खंध न थाय जी॥ २८ ॥
अनता गये काल समा हूआ, ते एकट्ठा भेला नहीं हूआ कोय जी।
ए तो उपजे ने विणसे गया, तिण रो खंध किहा थकी होय जी॥ २९ ॥
आगमे काले अनता समा होसी, ते पिण एकट्ठा भेला नही कोय जी।
ते तो उपजे ने विललावसी, तिण सूं खंध किसी पर होय जी॥ ३० ॥
वरतमान समो एक काल रो, एक समा रो खंध न होय जी।
ते पिण उपजे ने विललावसी, काल रो थिर द्रव्य न कोय जी॥ ३१ ॥
खंध विना देस हुवे नही, खंद देस विना नहीं प्रदेस जी।
प्रदेस अलगों नही हुवे खंध थी, परमाणुओ न हुवे लवलेस जी॥ ३२ ॥
तिण सूं काल नें खंध कह्यो नही, वले नही कह्यो देस प्रदेस जी।
खंध थी छूटे अलगो पड्या विना, परमाणूओ कुण कहेस जी॥ ३३ ॥
काल ने मापो थाप्यो तीर्थंकरा, चन्द्रमादिक री चाल विख्यात जी।
ते चाल सदा काल सासती, ते वधे घटे नही तिलमात जी॥ ३४ ॥
तिण सू मापो तीर्थंकर वाधीयो, जगन समो थाप्यो एक जी।
जगन थित कार्य ने द्रव्य नी, तिण सूं इधका रा भेद अनेक जी॥ ३५ ॥
असंख्याता समा री थापी आवली, पछै मोहरत पोहर दिन रात जी।
पख मास रित अयन थापीया, दोय अयनां रो वरस विख्यात जी॥ ३६ ॥
इम कहिता कहिता पल सागरू, उतसर्पणी ने अवसर्पणी जाण जी।
जाव पुदगल परावर्तन थापीयो, इम काल द्रव्य ने पीछांण जी॥ ३७ ॥
इण विध गयो काल नीकल्यो, इम हीज आगमीयो काल जी।
वरतमान समो पूछै तिण समें, एक समो छै अधा काल जी॥ ३८ ॥
ते समो वरते छै अढी दीप मे, तिरछो एती दूर जांण जी।
उंचो वरते जोतप चक्र लगे, नव सों जोजन परमांण जी॥ ३९ ॥
नीचो वरते सहस जोजन लगै, माविदेह री दो विजय रे माय जी।
त्यामे वरते अनता द्रव्यां ऊपरे, तिणसू अनंती कही छै परजाय जी॥ ४० ॥
एक एक द्रव्य रे उपरे, एक एक समो गिण्यो ताय जी।
तिण सु एक समा ने अनता कह्या, काल तणी परजाय रे न्याय जी॥ ४१ ॥
वले कहि कहि ने कितरो कहूं, वरतमान समो सदा एक जी।
तिण एकण ने अनता कह्या, तिण ने ओलखो आण विवेक जी॥ ४२ ॥
ए काल द्रव्य अरूपी तणो, कह्यो छै अलप विस्तार जी।
हिवे पुदगल द्रव्य रूपी तणो, विस्तार सुणो एक धार जी॥ ४३ ॥

पदगल रा द्रव्य अनंता कह्या, ते द्रव्य तो सासता जांण जी।
भावे तो पुदगल असासतो, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण जी ॥ ४४ ॥
पुदगल रा द्रव्य अनंता कह्या, ते घटे वधे नही एक जी।
घटे वधे ते भाव पुदगलु, तिणरा छै भेद अनेक जी ॥ ४५॥
तिणरा च्यार भेद जिणवर कह्या, खंध नें देस प्रदेस जी।
चोथो भेद न्यारो परमांणुओ, तिणरो छै ओहीज विसेस जी ॥ ४६ ॥
खध रे लागो त्या लग परदेस छै, ते छूटनें एकलो होय जी।
तिणनें कहीजे परमाणुओ, तिण मे फेर पड्यो नही कोय जी ॥ ४७ ॥
परमाणु नें प्रदेस तुल छै, तिणरी संका मूल म आंण जी।
आगल रे असंख्यातमें भाग छै, तिणने ओलखो चतुर सुजाण जी ॥ ४८ ॥
उतकष्टो खध पुदगल तणो, जव सम्पूर्ण लोक प्रमाण जी।
आंगुल रे भाग असख्यातमें, जगन खव एतलो जाण जी ॥ ४९ ॥
अनंत प्रदेसीयो खध हुवे, एक प्रदेस खेत्र मे समाय जी।
ते पुदगल फेल मोटो खध हुवे, ते सम्पूर्ण लोक रे मांय जी ॥ ५० ॥
समचे पुदगल तीन लोक मे, खाली ठोर जायगां नही काय जी।
ते आमां स्हामां फिर रह्या लोक में, एक ठाम रहे नही ताय जी ॥ ५१ ॥
थित च्यारूंई भेदा तणी, जगन तो एक समो छै ताम जी।
उतकष्टी असंख्याता काल नी, ए भावे पुदगल तणा परिणांम जी ॥ ५२ ॥
पुदगल नो सभाव छै एहवो, अनता गले ने मिल जाय जी।
तिण सूं पुदगल रा भाव री, अनती कही परजाय जी ॥ ५३ ॥
जे जे वस्तु नीपजे पुदगल तणी, ते ते सगली विललाय जी।
त्यानें भावे पुदगल जिणवर कह्या, द्रव्य तो ज्यूं रा ज्यूं रहै ताय जी ॥ ५४ ॥
आठ कर्म ने शरीर असासता, ए नीपना हूआ छै ताय जी।
तिण सूं भाव पुदगल कह्या तेह ने, द्रव्य तो नीपजायो नहीं जाय जी ॥ ५५ ॥
छाया तावडो प्रभा काति छै, ए सगला भाव पुदगल जांण जी।
वले अंधारो नें उद्योत छै, ए पुदगल भाव पिछांण जी ॥ ५६ ॥
हलको भारी सुहालो खरदरो, गोल वटादिक पांच संठांण जी।
घड़ा पडहा ने वस्त्रादिक, ए सगला भावे पुदगल जाण जी ॥ ५७ ॥
घरत गुलादिक दसूं विगे, भोजनादि सर्व वखांण जी।
वले सस्त्र विवध प्रकार ना, ए सगला भावे पुदगल जांण जी ॥ ५८ ॥
सइकडां मण पुदगल बल गया, पिण द्रव्ये तो बल्यो नही अस मात जी।
ए भावे पुदगल उपनां हुंता, ते भावे पुदगल विणस जात जी ॥ ५९ ॥

सइकडां मण पुदगल उपनां, पिण द्रव्य तो नहीं उपनों लिगार जी।
उपनां तेहीज विणससी, पिण द्रव्य नो नहीं विगाड़ जी ॥ ६० ॥
द्रव्य तो कदेइ विणसे नहीं, तीनोंइ काल रे मांय जी।
उपजे ने विणसे ते भाव छै, ते पुदगल री परजाय जी ॥ ६१ ॥
पुदगल नें कह्यो सासतो असासतो, द्रव नें भाव रे न्याय जी।
कह्यो छै उत्तराधेन छतीस में, तिण में संका म आंणजो कांय जी ॥ ६२ ॥
अजीव द्रव्य ओलखायवा, जोड़ कीधी श्री दुवारा मजार जी।
संवत अठारें पचावनें, वैसाख विद पांचम बुधवार जी ॥ ६३ ॥

३: पुन पदारथ

ढाल : ३

दुहा

पुन पदार्थ छै तीसरो, तिणसूं सुख माने संसार।
काम भोग शबदादिक पामे तिण थकी, तिणनें लोक जाणे श्रीकार॥ १॥
पुन रा सुख छै पुदगल तणा, काम भोग शबदादिक जाण।
ते मीठा लागे छै कर्म तणे वसे, ग्यानी तो जाणे जेहर समान॥ २॥
जेहर सरीर में त्या लगे, मीठा लागे नींब पान।
ज्यूं कर्म उदय हुवे जीव रे जब, लागे भोग इमरत समान॥ ३॥
पुन तणा सुख कारमा, तिण मे कला म जाणो काय।
मोह कर्म वस जीवडा, तिण सुख मे रह्या लपटाय॥ ४॥
पुन पदार्थ तो सुभ कर्म छै, तिणरी मूल न करणी चाय।
तिण नें जयातथ परगट करू, ते सुणज्यो चित्त लाय॥ ५॥

ढाल

[रे जीव मोह अनुकम्पा न आणीये]

पुन तो पुदगल री परजाय छै, जीव रे आय लागे ताम रे लाल।
ते जीव रे उदय आवे सुभ पणे, तिण सूं पुदगल रो पुन छै नांम रे लाल॥
पुन पदारथ ओलखो॥ १॥
च्यार कर्म ते एकंत पाप छै, च्यार कर्म छै पुन ने पाप हो लाल।
पुन कर्म थी जीव ने, साता हुवे पिण न हुवे संताप हो लाल॥ २॥
अनंता प्रदेस छे पुन तणा, ते जीव रे उदय हुवे आय हो लाल।
अनंतो सुख करे जीव रे, तिणसुं पुन री अनंती परजाय हो लाल॥ ३॥
निरवद जोग वरते जब जीव रे, सुभ पणे लागे पुदगल ताम हो लाल।
त्या पुदगल तणा छै जू जूआ, गुण परिणामे त्यारा नाम हो लाल॥ ४॥

साता वेदनीय पणे परणम्यां, साता पणे उदय आवे ताम हो लाल।
ते सुखसाता करे जीव नें, तिण सूं साता वेदनी दीयो नांम हो लाल ॥ ५ ॥
पुदगल परणम्यां सुभ आउखा पणे, घणो रहणो वांछै तिण ठाम हो लाल।
जाणे जीवियै पिण न मरजीये, सुभ आउखो तिण रो नाम हो लाल ॥ ६ ॥
केइ देवता नें केइ मिनख रो, सुभ आउखो पुन ताय हो लाल।
जुगलीया तिर्यंच रो आउखो, दीसे छै पुन रे मांय हो लाल ॥ ७ ॥
सुभ नाम पणे आए परणम्यां, ते उदय आवे जीव रे ताय हो लाल।
अनेक वाना सुध हुवे तेह सूं, नाम कर्म कह्यो जिणराय हो लाल ॥ ८ ॥
सुभ आउखा रा मिनख ने देवता, त्यारी गति ने आणपूर्वी सुध हो लाल।
केइ जीव पचेन्द्रीय विसुध छै, त्यारी जात पिण पुन विसुध हो लाल ॥ ९ ॥
पाच वरीर छै सुध निरमला, त्यारा निरमला तीन उपंग हो लाल।
ते पामें शुभ नाम उदय हूआ, सरीर नें उपंग सुचग हो लाल ॥ १० ॥
पेला संघयण ना रूड़ा हाड छै, पहलो संठाण रूडे आकार हो लाल।
ते पामे सुभ नाम उदे थकी, हाड ने आकार श्रीकार हो लाल ॥ ११ ॥
भला भला वर्ण मिले जीव ने, गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल।
ते पामे सुभ नाम उदे हूआ, जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १२ ॥
भला भला मिले गध जीव ने, गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल।
ते पामें सुभ नाम उदे थकी, जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १३ ॥
भला भला मिले रस जीव नें, गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल।
ते पामें सुभ नाम उदे थकी, जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १४ ॥
भला भला मिले फरस जीव नें, गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल।
ते पामें सुभ नाम उदय थकी, जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १५ ॥
तस रो दश को छै पुन उदे, सुभ नाम उदय सूं जांण हो लाल।
त्यांनें जूआ जूआ कर वरणवूं, निरणो कीजो चतुर सुजांण हो लाल ॥ १६ ॥
[1]तस नाम शुभ कर्म उदय थकी, तसपणो पामें जीव सोय हो लाल।
[2]वादर सुभ नाम कर्म उदय हूआ, जीव चेतन बादर होय हो लाल ॥ १७ ॥
[3]प्रतेक सुभ नाम उदे हूआं, प्रतेक सरीरी जीव थाय हो लाल।
[4]प्रज्यापता सुभ नाम थी, प्रज्यापतो होय जाय हो लाल ॥ १८ ॥
[5]सुभ थिर नाम कर्म उदे थकी, सरीर ना अवयव दिढ थाय हो लाल।
[6]सुभ नाम थी नाभमस्तक लगे, अवयव रूड़ा हुवै ताय हो लाल ॥ १९ ॥
[7]सोभाग नाम सुभ कर्म थी, सर्व लोक नें वलभ होय हो लाल।
[8]सुस्वर सुभ नाम कर्म सूं, सुस्वर कंठ मीठो हुवे सोय हो लाल ॥ २० ॥

[९]आदेज वचन सुभ करम थी, तिणरो वचन मानें सहु कोय हो लाल।
[१०]जस किती सुभ नाम उदे हूआं, जश कीरत जग में होय हो लाल ॥ २१ ॥
अगुरलघू नाम कर्म सूं, सरीर हलको भारी नही लगात हो लाल।
परघात सुभ नाम उदे थकी, आप जीते पेलो पामे घात हो लाल ॥ २२ ॥
उसास सुभ नाम उदे थकी, सास उसास सुखे लेवत हो लाल।
आताप सुभ नाम उदे थकी, आप सीतल पेलो तपत हो लाल ॥ २३ ॥
उद्योत सुभ नाम उदे थकी, सरीर नो उजवालो जाण हो लाल।
सुभ गइ सुभ नाम कर्म सू, हस ज्यू चोखी चाल वखाण हो लाल ॥ २४ ॥
निरमांण सुभ नाम कर्म सू, सरीर फोड़ा फूलंगणा रहीत हो लाल।
तीर्थंकर नाम कर्म उदे हूआं, तीर्थंकर हुवे तीन लोक वदीत हो लाल ॥ २५ ॥
केइ जगलीयादिक तिरयच नी, गति नें आणपूर्वी जांण हो लाल।
ते तो प्रतक दीसे पुन तणी, ग्यांनी वदे ते परमांण हो लाल ॥ २६ ॥
पेहलो संघेण सठाण वरज ने, च्यार संघेण सठाण हो लाल।
त्यामे तो भेल दीसे छै पुन तणो, ग्यानी वदे तो परमांण हो लाल ॥ २७ ॥
जे जे हाड छै पहिला सघेण मे, तिण माहिला च्यारां माय हो लाल।
त्याने जावक पाप में घालीया, मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २८ ॥
जे जे आकार पहिला सठाण में, तिण माहिला च्यारां मांय हो लाल।
त्याने जावक पाप मे घालीया, ओ पिण मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २९ ॥
उच गोत पणे आय परणम्या, ते उदे आवे जीव रे ताम हो लाल।
उंच पदवी पामें तिण थकी, उंच गोत छै तिण रो नांम हो लाल ॥ ३० ॥
सगली न्यात थकी उंची न्यात छै, तिणमे कठे न लागे छोत हो लाल।
एहवा छै मिनष ने देवता, त्यारो कर्म छै उच गोत हो लाल ॥ ३१ ॥
जे जे गुण आवे जीव रे सुभ पणे, जेहवा छै जीव रा नाम हो लाल।
तेहवाइज नाम पुदगल तणा, जीव तणे सयोगे तांम हो लाल ॥ ३२ ॥
जीव सुघ हूओ पुदगल थकी, तिण सूं रूड़ा रूडा पाया नांम हो लाल।
जीव ने सुघ कीधो पुदगला, त्यांरा पिण सुघ छै नाम ताम हो लाल ॥ ३३ ॥
ज्या पुदगल रा प्रसग थी, जीव वाज्यो ससार में उच हो लाल।
ते पुदगल पिण उच वाजीया, त्यारो न्याय न जाणे भूच हो लाल ॥ ३४ ॥
पदवी तियकर ने चक्रवत तणी, वासुदेव बलदेव महत रे लाल।
वले पदवी मडलीक राजा तणी, सारी पुन थकी लहंत रे लाल ॥ ३५ ॥
पदवी देविंद्रो ने नरिंद्र नी, वले पदवी अहंमिंद्र वखाण हो लाल।
इत्यादिक मोटी मोटी पदवीयां, सहु पुन तणे परमांण हो लाल ॥ ३६ ॥

जे जे पुदगल परणम्यां सुभ पणे, ते तो पुन उदा सूं जांण हो लाल।
त्यां सूं सुख उपजे संसार मे, पुन रा फल एह पिछाण हो लाल ॥ ३७ ॥
वाला विछड़ीया आए मिले, सेणा तणो मिले संजोग हो लाल।
ते पिण पुन तणा परताप थी, सरीर में न व्यापे रोग हो लाल ॥ ३८ ॥
हाथी घोड़ा रथ पायक तणी, चोरंगणी सेन्या मिले आंण हो लाल।
रिध विरध ने सुख संपत मिलै, ते पुन तणे परिमांण हो लाल ॥ ३९ ॥
खेतू[1] वत्थू[2] हिरण[3] सोवनादिक[4], धन[5] धांन[6] नें कुबी धात[7] हो लाल।
दोपद[8] चोपदादिक आए मिलै, ते तो पुन तणो परताप हो लाल ॥ ४० ॥
हीरा मांणक मोती मूंगीया, वले रत्नां री जात अनेक हो लाल।
ते सारा मिलै छै पुन थकी, पुन विना मिले नही एक हो लाल ॥ ४१ ॥
गमती गमती विनेवंत अस्त्री, ते अपछर रे उणीयार हो लाल।
ते पुन थकी आए मिले, वले पुत्र घणा श्रीकार हो लाल ॥ ४२ ॥
ते सुख पामे देवता तणा, ते तो पूरा कह्या न जाय हो लाल।
पल सागरां लग सुख भोगवे, ते तो पुन तणे पसाय हो लाल ॥ ४३ ॥
रूप सरीर नो सून्दरपणो, तिण रो वर्णादिक श्रीकार हो लाल।
ते गमतो लागे सर्व लोग ने, तिणरो वोल्यो गमे वारुंवार हो लाल ॥ ४४ ॥
जे जे सुख सगला संसार नां, ते तो पुन तणा फल जाण हो लाल।
ते कहि कहि ने कितरो कहूं, बुधवंत लीज्यो पिछाण हो लाल ॥ ४५ ॥
ए तो पुन तणा सुख वरणव्या, ससार लेखे श्रीकार हो लाल।
त्यांने मोख सुखा सूं मीढीये, तो ए सुख नही मूल लिगार हो लाल ॥ ४६ ॥
पुदगलीक सुख छै पुन तणा, ते तो रोगीला सुख ताय हो लाल।
आतमीक सुख छै मुगत नां, त्याने तो ओपमा नही काय हो लाल ॥ ४७ ॥
पांव रोगी हुवे तेहनें, खाज मीठी लागे अतंत हो लाल।
ज्यूं पुन उदे हूआं जीव ने, सवदादिक सर्व गमता लागत हो लाल ॥ ४८ ॥
सर्प डंक लागा जहर परगम्यां, मीठा लागे नींब पान हो लाल।
ज्यूं पुन उदय हूआं जीव ने, मीठा लागे भोग परधान हो लाल ॥ ४९ ॥
रोगीला सुख छे पुदगल तणा, तिणमे कला म जाणो लिगार हो लाल।
ते पिण काचा सुख असासता, विणसतां नही लागे वार हो लाल ॥ ५० ॥
आतमीक सुख छै सासता, त्यां सुखा रो नही कोइ पार हो लाल।
ते सुख सदा काल सासता, ते सुख रहे एक धार हो लाल ॥ ५१ ॥
पुन तणी वछा कीयां, लागे छै एकत पाप हो लाल।
तिण सूं दुःख पामें संसार में, वधतो जाये सोग संताप हो लाल ॥ ५२ ॥

जिणसूं पुन तणी वंछा करी, तिण वांछिया कांम नें भोग हो लाल।
त्यानें दुःख होसी नरक निगोद नां, वले वाला रा पड़सी विजोग हो लाल ॥ ५३ ॥
पुन तणा सुख असासता, ते पिण करणी विण नहीं थाय हो लाल।
निरवद करणी करे तेहनें, पुन तो सेहजा लागे छै आय हो लाल ॥ ५४ ॥
पुन री वंछा सूं पुन न नीपजे, पुन तो सेहजां लागे छै आय हो लाल।
ते तो लागे छै निरवद जोग सूं, निरजरा री करणी सूं ताय हो लाल ॥ ५५ ॥
भली लेश्या ने भला परिणांम थी, निश्चेइ निरजरा थाय हो लाल।
जब पुन लागे छै जीव रे, सहजे सभावे ताय हो लाल ॥ ५६ ॥
जे करणी करे निरजरा तणी, पुन तणी मन में धार हो लाल।
ते तो करणी खोएने वापडा, गया जमारो हार हो लाल ॥ ५७ ॥
पुन तो चोफरसी कर्म छै, तिणरी वंछा करे ते मूढ हो लाल।
त्यां कर्म ने धर्म न ओलख्यो, करे करे मिथ्यात नी रूढ हो लाल ॥ ५८ ॥
जे जे पुन थी वस्त मिले तके, त्यांनें त्याग्यां निरजरा थाय हो लाल।
जो पुन भोगवे ग्रिघी थको, तो चीकणा कर्म बंधाय हो लाल ॥ ५९ ॥
जोड कीधी पुन ओलखायवा, श्रीजी दुवारा सहर मझार हो लाल।
संवत अठारे पचावने, जेठ विद नवमी सोमवार हो लाल ॥ ६० ॥

ढाल : ४

दुहा

नव प्रकारे पुन नीपजे, ते करणी निरवद जांण।
बयांलीस प्रकारे भोगवे, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण ॥ १ ॥
पुन नीपजे तिण करणी मझे, तिहां निरजरा निश्चे जांण।
तिण करणी री छै जिण आगना, तिण माहे सक म आण ॥ २ ॥
केई साध वाजे जैन रा, त्यां दीधी जिण मारग नें पूठ।
पुन कहे कुपातर ने दीया, त्यांरी गई अभितर फूट ॥ ३ ॥
काचो पाणी अणगल पावे तेहने, कहै छै पुन नें धर्म।
ते जिण मारग सू वेगला, भूला अग्यांनी भर्म ॥ ४ ॥
साध विना अनेरा सर्व ने, सचित अचित दीया कहे पुन।
वले नाव लेवे ठाणा अग रो, ते तो पाठ विना छै अर्थ सुन ॥ ५ ॥
किणहीएक ठांणा अग मझे, घाल्यो छै अर्थ विपरीत।
ते पिण सगला ठांणा अंग में नहीं, जोय करो तहतीक ॥ ६ ॥
पुन नीपजे छै किण विधे, जोवो सूतर मांय।
श्री वीर जिणेसर भाषीयो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[राजा रामजी हो रेश छमासी...]

पुन नीपजे सुभ जोग सूं रे लाल, सुभ जोग जिण आगना मांय हो। भविकजण*
ते करणी छै निरजरा तणी रे लाल, पुन सहिजां लागे छै आय हो॥ भविकजण।*
पुन नीपजे सुभ जोग सं रे लाल॥ १* ॥
जे करणी करे निरजरा तणी रे लाल, तिणरी आगना देवे जगनाथ हो।
तिण करणी करतां पुन नीपजे रे लाल, ज्यू खाखलो गोहां हुवे साथ हो॥ २ ॥
पुन नीपजे तिहां निरजरा हुवे रे लाल, ते करणी निरवद जांण हो।
सावद्य करणी में पुन नही नीपजे रे लाल, ते सुणज्यो चतुर सुजांण हो॥ ३ ॥
हिंसा कीयां भूठ बोलीयां रे लाल, साधु नें देवे असुध आहार हो।
तिण सूं अल्प आउखो बंधे तेहने रे लाल, ते आउखो पाप मभार हो॥ ४ ॥
लांबो आउषो बंधे तीन बोल सूं रे लाल, लांबो आउषो छै पुन मांय हो।
ते हिंसा न करे प्राणी जीवरी रे लाल, वले बोले नही मूसावाय हो॥ ५ ॥
तथारूप श्रमण निग्रंथ ने रे लाल, देवे फासू निरदोष च्यांरू आहार हो।
यां तीनां बोलां पुन नीपजे रे लाल, ठांणा अंग तीजा ठांणा मभार हो॥ ६ ॥
हिंसा कीयां भूठ बोलीयां रे लाल, साधू ने हेले निंदे ताय हो।
आहार अमनोग नें अपीयकारी दीये रे लाल, तो उसभ लांबो आउषो बंधाय हो॥ ७ ॥
सुभ लांबो आउषो बंधे इण विधे रे लाल, ते पिण आउषो पुन मांय हो।
ते हिंसा न करे प्राणी जीव री रे लाल, वले बोले नही मूसावाय हो॥ ८ ॥
तथारूप समण निग्रंथ नें रे लाल, करे वंदणा ने नमसकार हो।
पीतकारी वेहरावे च्यारूं आहार ने रे लाल, ठाणा अंग तीजा ठाणा मभार हो॥ ९ ॥
एहीज पाठ भगोती सूतर मभे रे लाल, पांचमें सतक षष्ठम उदेश हो।
संका हुवे तो निरणे करो रे लाल, तिणमें कूड़ नहीं लवलेश हो॥ १० ॥
वंदणा करतां खपावे नीच गोत नें रे लाल, उंच गोत बंधे वले ताय हो।
ते वंदणा करण री जिण आगना रे लाल, उतराधेन गुणतीसमां मांय हो॥ ११ ॥
धर्म कथा कहै तेहनें रे लाल, बंधे किल्याणकारी कर्म हो।
उतराधेन गुणतीशमां अधेनमें रे लाल, तिहां पिण निरर्जरा धर्म हो॥ १२ ॥
करें वीयावच तेहनें रे लाल, बंधे तीर्थंकर नाम कर्म हो।
उतराधेन गुणतीसमां अधेन में रे लाल, तिहां पिण निरजरा धर्म हो॥ १३ ॥
वीसां बोलां करेने जीवड़ो रे लाल, करमां री कोड़ खपाय हो।
जब बांधे तीर्थंकर नाम कर्म नें रे लाल, गिनाता आठमा अधेन मांय हो॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी है। प्रत्येक गाथा के अन्त में इसकी पुनरावृत्ति समभनी चाहिए।

सुबाहू कुमर आदि दस जणा रे लाल, त्यां साधां नें असणादिक वेंहराय हो।
त्या बाध्यो आउखो मिनख रो रे लाल, कह्यो विपाक सुतर रे मांय हो ॥ १५ ॥
प्राण भूत जीव सत्व नें रे लाल, दुःख न दे उपजावे सोग नांय हो।
अभूरणया नें अतीप्पणया रे लाल, अपिट्टणया परिताप नहीं दे ताय हो ॥ १६ ॥
ए छ प्रकारे बंधे साता वेदनी रे लाल, उलटा कीधां असाता थाय हो।
भगोती सतषच सातमें रे लाल, छठा उदेसा मांय हो ॥ १७ ॥
करकस वेदनी बंधे जीवरे रे लाल, अठारे पाप सेव्यां बधाय हो।
नही सेव्यां बवे अकरकस वेदनी रे लाल, भगोती सातमां सतक छठा माय हो ॥ १८ ॥
कालोदाई पूछयो भगवांन नें रे लाल, सुतर भगोती मांहि ए रेस हो।
किल्याणकारी कर्म किण विध बवे रे लाल, सातमे सतक दसमें उदेस हो ॥ १९ ॥
अठारे पाप थांनक नही सेवीयां रे लाल, किल्यांण कारी कर्म बंधाय हो।
अठारे पाप थांनक सेवे तेह सूं रे लाल, बघे अकिल्याणकारी कर्म आय हो ॥ २० ॥
प्राण भूत जीव सत्व ने रे लाल, बहु सबदे च्यारूंइ माहि हो।
त्यांरी करे अणुकम्पा दया आणने रे लाल, दुःख सोग उपजावे नाहि हो ॥ २१ ॥
अभूरणया नें अतीप्पणया रे लाल, अपिट्टणया नें अपरिताप हो।
या चवदे सूं बंधे साता वेदनी रे लाल, यां उलटा सूं बंधे असाता पाप हो ॥ २२ ॥
माहा आरभी ने माहा परिग्रही रे लाल, करे पचिंद्री नी घात हो।
मद मांस तणो भखण करे रे लाल, तिण पाप सूं नरक में जात हो ॥ २३ ॥
माया कपट नें गूढ माया करे रे लाल, वले बोलें मूसावाय हो।
कूडा तोला ने कूड़ा मापा करे रे लाल, तिण पाप सूं तिरजच थाय हो ॥ २४ ॥
प्रकत रो भद्रीक[1] नें वनीत[2] छै रे लाल, दया[3] नें अमछरभाव[4] जांण हो।
तिण सूं बधे आउखो मिनख रो रे लाल, ते करणी निरवद पिछाण हो ॥ २५ ॥
[1]पाले सराग पणे साधूपणो रे लाल, वले [2]श्रावक रा वरत बार हो।
बाल तपसा[3] नेअकांमनिरजरा[4] रे लाल, या सूं पामे सुर अवतार हो ॥ २६ ॥
काया सरल[1] भाव सरल[2] सूं रे लाल, वले भाषा सरल[3] पिछांण हो।
जेहवो करे तेहवो मुख सूं कहें[4] रे लाल, यां सूं बधे सुभ नाम कर्म जाण हो ॥ २७ ॥
ए च्यारूं बोल वांका वरतीया रे लाल, बधे उसभ नाम कर्म हो।
ते सावद्य करणी छै पापरी रे लाल, तिण मे नही निरजरा धर्म हो ॥ २८ ॥
जात[1] कुल[2] बल[3] रूप[4] नो रे लाल, तप[5] लाभ[6] सुतर[7] ठाकुराय[8] हो।
ए आठोई मद करे नही रे लाल, तिण सूं उंच गोत बंधाय हो ॥ २९ ॥
ए आठोई मद करे तेहनें रे लाल, बंधे नीच गोत कर्म हो।
ते सावद्य करणी पाप री रे लाल, तिण में नहीं पुन धर्म हो ॥ ३० ॥

ग्यांनावर्णी ने दरसणावर्णी रे लाल, वले मोहणी ने अतराय हो।
ये च्यारूंइ एकंत पाप कर्म छै रे लाल, त्यांरी करणी नही आग्या माय हो ॥ ३१ ॥
वेदनी आउपो नांम गोत छै रे लाल, ए च्यारूंई कर्म पुन पाप हो।
तिणमें पुन री करणी निरवद कही रे लाल, तिणरी आग्या दे जिन आप हो ॥ ३२ ॥
ए भगवती शतक आठ मे रे लाल, नवमां उदेसा मांय हो।
पुन पाप तणी करणी तणो रे लाल, ते जाणे समदिष्टी न्याय हो ॥ ३३ ॥
[१]करणी करे नीहांणो नही करे रे लाल, [२]चोखा परिणामां समकतवंत हो।
[३]समाध जोग वरते तेहनो रे लाल, खिमा करी परीसह खमंत हो ॥ ३४ ॥
[५]पांचूं इंद्री नें वश कीयां रे लाल, [६]वले माया कपट रहीत हो।
[७]अपासत्यपणो ग्यांनादिक तणो रे लाल, [८]समणपणे छै सहीत हो ॥ ३५ ॥
[९]हितकारी प्रवचन आठां तणो रे लाल, [१०]धर्मकथा कहें विसतार हो।
यां दसां बोलां बंधे जीवरे रे लाल, किल्याणकारी कर्म श्रीकार हो ॥ ३६ ॥
ते किल्याणकारी कर्म पुन छै रे लाल, त्यारी करणी पिण निरवद जांण हो।
ते ठाणा अंग दसमें ठाणे कह्यो रे लाल, तिहां जोय करो पिछाण हो ॥ ३७ ॥
अन पुने पांण पुने कह्यो रे लाल, लेण सेण वस्त्र पुन जांण हो।
मन पुने वचन काया पुने रे लाल, नमसकार पुने नवमों पिछांण हो ॥ ३८ ॥
पुन्य बधे नव प्रकार सूं रे लाल, ते नवोंई निरवद जांण हो।
ते नवोंई बोलां में जिण आगना रे लाल, तिणरी करज्यो पिछाण हो ॥ ३९ ॥
कोई कहै नवोंई बोल समचे कह्या रे लाल, सावद्य निरवद न कह्या तांम हो।
सचित्त अचित्त पिण नही कह्या रे लाल, पातर कुपातर रो पिण नहीं नांम हो ॥ ४० ॥
तिण सूं सचित अचित दोनूं कह्या रे लाल, पातर कुपातर ने दीयां तांम हो।
पुन नीपजे दीधां सकल ने रे लाल, ते झूठ बोले सुतर रो ले ले नांम हो ॥ ४१ ॥
साध श्रावक पातर नें दीया रे लाल, तीर्थंकर नामादिक पुन थाय हो।
अनेरां ने दान दीधां थका रे लाल, अनेरी पुन प्रकत बंधाय हो ॥ ४२ ॥
इम कहै नांम लेई ठाणा अंग नों रे लाल, नवमा ठाणा में अर्थ दिखाय हो।
ते अर्थ अणहूंतो घालीयो रे लाल, ते भोलां ने खबर न काय हो ॥ ४३ ॥
जो अनेरा ने दीयां पुन नीपजे रे लाल, जब टलीयो नहीं जीव एक हो।
कुपातर नें दीयां पुन किहां थकी रे लाल, समझो आंण विवेक हो ॥ ४४ ॥
पुन रा नव बोल तो समचे कह्या रे लाल, उण ठामें तो नही छै नीकाल हो।
ज्यूं वंदणा वीयावच पिण समचे कही रे लाल, ते गुणवंत सूं लेजो संभाल हो ॥ ४५ ॥
वंदणा कीधां खपावे नीच गोत नें रे लाल, उंच गोत कर्म बंधाय हो।
तीर्थंकर गोत बंधे वीयावच कीयां रे लाल, ते पिण समचे कह्या छै ताय हो ॥ ४६ ॥

तीथकर गोत बधे वीस बोल सू रे लाल, त्यामे पिण समचे बोल अनेक हो।
समचे बोल घणा छै सिधत मे रे लाल, त्यामे कुण समझे विगर ववेक हो ॥ ४७ ॥
जो अन पुने समचे दीधा सकल ने रे लाल, ते नवोई समचे जांण हो।
हवे निरणो कहूं छू नवा ही तणो रे लाल, ते सुणज्यो चतुर सुजाण हो ॥ ४८ ।
अन सचित अचित दीधा सकल ने रे लाल, जो पुन नीपजे छै ताम हो।
तो इमहीज पुन पाणी दीया रे लाल, लेण सेण वसतर पुन आम हो ॥ ४६ ॥
इमहीज मन पुने समचे हुवे रे लाल, तो मन भूडोई वरत्या पुन थाय हो।
वले वचन पुने पिण समचे हुवे रे लाल, भूडो बोल्याई पुन बधाय हो ॥ ५० ॥
काय पुने विण समचे हुवे रे लाल, तो काया सूं हिसा कीया पुन होय हो।
नमसकार पुने पिण समचो हुवे रे लाल, तो सकल ने नम्या पुन जोय हो ॥ ५१ ॥
मन वचय काया माठा वरतीया रे लाल, जो लागे छै एकत पाप हो।
तो नवोई बोल इम जाणजो रे लाल, उथप गई समचे री थाप हो ॥ ५२ ॥
मन वचन काया सूं पुन नीपजे रे लाल, ते निरवद वरत्या होय हो।
तो नवोई बोल इम जाण जो रे लाल, सावद्य मे पुन न कोय हो ॥ ५३ ॥
नमसकार अनेरा ने कीया थका रे लाल, जो लागे छै एकत पाप हो।
तो अनादिक सचित दीया थका रे लाल, कुण करसी पुन री थाप हो ॥ ५४ ॥
निरवद करणी मे पुन नीपजे रे लाल, सावद्य करणी सू लागे पाप हो।
ते सावद्य निरवद किम जाणीये रे लाल, निरवद मे आग्या दे जिण आप हो ॥ ५५ ॥
अन पाणी पातर ने वेहरावीया रे लाल, लेण सयण वस्त्र वेहराय हो।
त्यारी श्री जिण देवे आगना रे लाल, तिण ठामे पुन बधाय हो ॥ ५६ ॥
अन पाणी अनेरा नें दीया रे लाल, लेण सेण वसतर देवे ताय हो।
त्यारी देवे नही जिण आगन्या रे लाल, तिणरे पुन किहा थी बधाय हो ॥ ५७ ॥
सुपातर ने दीया पुन नीपजे रे लाल, ते करणी जिण आगना माय हो।
जो अनेरा ने दीयाई पुन नीपजे रे लाल, तिणरी जिण आगना नही काय हो ॥ ५८ ॥
ठाम २ सुतर मे देखलो रे लाल, निरजरा ने पुन री करणी एक हो।
पुन हुवे तिहा निरजरा रे लाल, तिहा जिण आगना छै शेष हो ॥ ५६ ॥
नव प्रकारे पुन नीपजे रे लाल, ते भोगवे बयालीस प्रकार हो।
ते पुन उदे हुवे जीवरे रे लाल, सुख साता पामें संसार हो ॥ ६० ॥
ए पुन तणा सुख कारिमा रे लाल, ते विणसता नही वार हो।
तिणरी वछा नही कीजीये रे लाल, ज्यूं पामें भव पार हो ॥ ६१ ॥
जिण पुन तणी वंछा करी रे लाल, तिण वछीया काम नें भोग हो।
ससार बधे काम भोग सू रे लाल, तिहां पामे जन्म मरण सोग हो ॥ ६२ ॥

वछा कीजे एक मुगत री रे लाल, और वंछा न कीजे लिगार हो।
जे पुन तणी वछा करें रे लाल, ते गया जमारो हार हो ॥ ६३ ॥
संवत अठारे तयांले समे रे लाल, काती सुद चोथ विसपतवार हो।
पुन नीपजे ते ओलखायवा रे लाल, जोड़ कीधी कोठारवा मझार हो ॥ ६४ ॥

४ : पाप पदारथ

ढाल : ५

दुहा

पाप पदारथ पाडूओ, ते जीव नें घणो भयकार।
ते घोर रूद्र छै बीहामणो, जीव ने दुःख नो दातार ॥ १ ॥
पाप तो पुदगल द्रव्य छै, त्याने जीव लगाया ताम।
तिण सूं दूःख उपजे छै जीव रे, त्यारो पाप कर्म छै नाम ॥ २ ॥
जीव खोटा २ किरतब करै, जब पुदगल लागे ताम।
ते उदय आयां दुख उपजे, ते आप कमाया काम ॥ ३ ॥
ते पाप उदय दुख उपजे, जब कोई म करजो रोस।
आप कीधा जिसा फल भोगवे, कोई पुदगल रो नही दोस ॥ ४ ॥
पाप कर्म ने करणी पाप री, दोनू जूआ जूआ छै ताम।
त्याने जथातथ परगट करु, ते सुणजो राख चित्त ठाम ॥ ५ ॥

ढाल

[मेघ कुमर हाथी रा भव मे]

घणघातीया च्यार कर्म जिण भाख्या, ते आभपडल वादल ज्यूं जाणो।
त्या जीव तणा निज गुण ने विगरया, चंद वादल ज्यू जीव कर्म ढकाणो ॥
पाप कर्म अन्तकरण ओलखीजे* ॥ १ ॥
ग्यांनावर्णी नें दर्शणावर्णीय, मोहणी अन्तराय छै ताम।
जीवरा जेहवा २ गुण विगस्या, तेहवा २ कर्मा रा नांम ॥ २ ॥
ग्यानावर्णी कर्म ग्यान आवा न दे, दर्शणावर्णी दर्शण आवे दे नाही।
मोहकर्म जीव नें करे मतवालो, अंतराय आछी वस्तु आडी छै माही ॥ ३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ए कर्म तो पुदगल रूपी चोफरसी, त्याने खोटी करणी करे जीव लगाया।
त्यांरा उदा सूं खोटा २ जीवरा नाम, तेहवा इज खोटा नाम कर्म रा कहाया॥ ४॥
थां च्यारूं कर्मां री जुदी २ प्रकृत, जूआ २ छै त्यांरा नाम।
त्यां सू जूआ २ जीव रा गुण अटक्या, त्यारो थोड़ो सो विस्तार कहूं छू तांम॥ ५॥
ग्यांनावर्णी कर्म री प्रकृत पाचे, तिण सूं पांचोंइ ग्यांन जीव न पावे।
मत ग्यांनावर्णी मत ग्यान रे आडी, सुरत ग्यानावर्णी सुरत ग्यान न आवे॥ ६॥
अवधि ग्यानावर्णी अवधि ग्यान ने रोके, मनपरज्यावर्णी मनपरज्या आडी।
केवल ग्यांनावर्णी केवल ग्यांन रोके, या पांचां में पांचमी प्रकत जाडी॥ ७॥
ग्यानावर्णी कर्म षयउपसम हुवै, जब पामें छै च्यार ग्यान।
केवल ग्यांनावर्णी तो खयोपसम न हुवै, आ तो खय हुवां पामें केवल ग्यान॥ ८॥
दर्शणावर्णी कर्म री नव प्रकृत छै, ते देखवा ने सुणवादिक आडी।
जीवां ने जावक कर देवे आंधा, त्यां मे केवल दर्शणावर्णी सगलां में जाडी॥ ९॥
चषू दर्शणावर्णी कर्म उदे सूं, जीव चषू रहीत हुवै अंध अयांण।
अचषू दर्शणावर्णी कर्म रे जोगे, च्यारूं इद्रीया री पर जाये हांण॥ १०॥
अवधि दर्शणावर्णी कर्म उदे सूं, अवधि दर्शन न पामें जीवो।
केवल दर्शणावर्णी तणे परसगे, उपजे नही केवल दरसण दीवो॥ ११॥
निद्रा सुतो तो सुखे जगायो जागे, निद्रा २ उदे दुखे जागे छै तांम।
बैठां उभां जीव ने नीद आवे, तिण नीद तणो छै प्रचला नाम॥ १२॥
प्रचला २ नीद उदे सूं जीव ने, हालतां चालता नीद आवै।
पांचमी नीद छै कठण थीणोदी, तिण नीद सूं जीव जाबक दब जावे॥ १३॥
पांच निद्रा ने च्यार दर्शणवार्णी थी, जीव अंध हुवै जाबक न सुझे लिगारो।
देखण आश्री दर्शणावर्णी कर्म, जीव रे जाबक कीयो अंधारो॥ १४॥
दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम हुवे जद, तीन षयउपसम दर्शन पामतो जीवो।
दर्शणावर्णी जावक षय होवे, केवल दर्शण पामे ज्यूं घट दीवो॥ १५॥
तीजो घन घातियो मोह कर्म छै, तिणरा उदा सूं जीव होवै मतवालो।
सूधी श्रद्धा रे विषे मूढ मिथ्याती, माठा किरतब रो पिण न होवै टालो॥ १६॥
मोहणी कर्म तणा दोय भेद कह्या जिण, दर्शण मोहणी ने चारित मोहणी कर्म।
इण जीव रा निज गुण दोय विगाड्या, एक समकत न दूजो चारित धर्म॥ १७॥
वले दंसण मोहणी उदे हुवे जब, सुध समकती जीव रो हुवे मिथ्याती।
चारित मोहणी कर्म उदे हुवे जब, चारित खोय ने हुवे छ काय रो घाती॥ १८॥
दर्शण मोहणी कर्म उदे सूं, सुधी सरधा समकत नावे।
दर्शण मोहणी उपसम हुवे जब, उपसम समकत निरमली पावे॥ १९॥

दर्शण मोहणी जावक खय होवे, जब खायक समकत सासती पावै।
दर्शण मोहणी षयउपसम हुवे जब, खयउपसम समकत जीव ने आवै ॥ २० ॥
चारित मोहणी कर्म उदे सूं, सर्व विरत चारित नही आवे।
चारित मोहणी उपसम हुवे जद, उपसम चारित निरमला पावे ॥ २१ ॥
चारित मोहणी जाबक खाय हुवे तो, खायक चारित आवे श्रीकार।
चारित मोहणी खयोपसम हुवे जब, खयउपसम चारित पामें च्यार ॥ २२ ॥
जीव तणा उदे भाव नीपना, ते कर्म तणा उदा सू पिछाणो।
जीव रा उपसम भाव नीपना, ते कर्म तणा उपसम सूं जाणो ॥ २३ ॥
जीव रा खायक भाव नीपनां, ते तो कर्म तणो खय हुवा सू तांम।
जीव रा खयोउपसम भाव नीपनां, खयउपसम कर्म हुआ सूं नाम ॥ २४ ॥
जीव रा जेहवा २ भाव नीपनां, ते जेहवा २ छै जीव रा नाम।
ते नाम पाया छै कर्म सजोग विजोगे, तेहवा इज कर्मां रा नाम छै ताम ॥ २५ ॥
चारित मोहणी तणी छै पंचवीस प्रकृत, त्या प्रकृत तणा छै जूआ जूआ नाम।
त्यांरा उदा सूं जीव तणा नाम तेहवा, कर्म ने जीव रा जूआ जूआ परिणाम ॥ २६ ॥
जीव अतत उतकष्टो क्रोध करे जव, जीवरा दुष्ट घणा परिणाम।
तिणने अनुताणुबधीयो क्रोध कह्यो जिण, ते कषाय आत्मा छै जीव रो नाम ॥ २७ ॥
जिणरा उदा सूं उतकष्टो क्रोध करे छै, ते उतकष्टा उदे आया छै ताम।
ते उदे आया छै जीव रा सच्या, त्यारो अणुताणबधी क्रोध छै नाम ॥ २८ ॥
तिण सु कायंक थोडो अप्रत्याखानी क्रोध, तिण सु कायक थोडो प्रत्याख्यान।
तिण सुं कांयक थोडो छै संजल रो क्रोध, आ क्रोध री चोकडी कही भगवान ॥ २९ ॥
इण रीते मान री चोकडी कहणी, माया नें लोभ री चोकडी इन जांणो।
च्यार चोकडी प्रसगे कर्मां रा नाम, कर्म प्रसंगे जीव रा नाम पिछांणो ॥ ३० ॥
जीव क्रोध करें क्रोध री प्रकत सूं, मान करे मांन री प्रकत सूं तांम।
माया कपट करें छें माया री प्रकत सूं, लोभ करें छे लोभ री प्रकत सूं आंम ॥ ३१ ॥
क्रोध करें तिण सूं जीव क्रोधी कहायो, उदे आइ ते क्रोध री प्रकत कहाणी।
इण हीज रीत मांन माया ने लोभ, याने पिण लीजो इण हीज रीत पिछांणो ॥ ३२ ॥
जीव हसे छै हास्य री प्रकत उदे सू, रित अरितरी प्रकत सूं रित अरित वधावें।
भय प्रकत उदे हूआं भय पामें जीव, सोग प्रकत उदे जीव नें सोग आवे ॥ ३३ ॥
दुगंछा आवें दुगछा प्रकत उदे सूं, अस्त्री वेद उदे सू वेदे विकार।
तिणनें पुरष तणी अभिलाषा होवे, पछे वेतो २ हुवे बोहत विगाड ॥ ३४ ॥
पुरष वेद उदे अस्त्री नी अभिलाषा, निपुंसक वेद उदे हुवे दोयां री चाय।
करम उदे सूं सवेदी नाम कह्यों जिण, करमां ने पिण वेद कह्या जिण राय ॥ ३५ ॥

मिथ्यात उदे जीव हुवो मिथ्याती, चारित मोह उदे जीव हुवो कुकरमी।
इत्यादिक माठा २ छै जीव रा नाम, वले अनार्य हिंसाधर्मी ॥ ३६ ॥
चोथो घनघातीयो अतराय करम छै, तिणरी प्रकत पांच कही जिण तांम।
ते पांचूई प्रकत पुदगल चोफरसी, त्यांरी प्रकत रा छै जूजूआ नांम ॥ ३७ ॥
दानांतराय छे दान रे आडी, लाभांतराय सूं वस्त लाभ सके नांही।
मन गमता पुदगल ना सुख जे, लाभ न सके सब्दादिक कांई ॥ ३८ ॥
भोगांतराय नां करम उदे सूं, भोग मिलीया से भोग भोगवणी नावे।
उवभोगांतराय करम उदे सूं, उवभोग मिलीया तो वे ही भोगवणी नहीं आवे। ३९।
वीर्यअंतराय रा करम उदे थी, तीनूंई वीर्य गुण हीणा थावे।
उठाणादिक हीणा थावे पांचूई, जीव तणी सक्त जावक घट जावे ॥ ४० ॥
अनंतो वल प्राक्रम जीव तणो छै, तिणनें एक अतराय करम सूं घटायो।
तिण करम नें जीव लगायां सू लागो, आप तणो कीयों आप रे उदे आयो ॥ ४१ ॥
पाचू अन्तराय जीव तणा गुण दाव्या, जेहवा गुण दाव्या छै तेहवा करमां रा नांम।
ए तो जीव रे प्रसगे नांम करम रा, पिण सभाव दे.यां री जूजूओ तांम ॥ ४२ ॥
ए तो च्यार घन घातीया करम कह्या जिण, हिवे अघातीया करम छें च्यार।
त्यामें पुन नें पाप दोनूं कह्या जिण, हिवे पाप तणो कहूं छूं विसतार ॥ ४३ ॥
जीव असाता पावे पाप करम उदे सूं, तिण पाप रो असाता वेदनी नांम।
जीव रा सचीया जीव ने दुःख देवें, असाता वेदनी पुदगल परिणांम ॥ ४४ ॥
नारकी रो आउखो पाप री प्रकत, केइ तिर्यंच रो आउखो पिण पाप।
असनी मिनख नें केई सनी मिनख रो, पाप री प्रकत दीसे छै विलाप ॥ ४५ ॥
ज्यांरो आउखो पाप कह्यो छे जिणेसर, त्यांरी गति अणुपूर्वी पिण दीसे छे पाप।
गति अणुपूर्वी दीसें आउखा लारे, इणरो निश्चो तो जांणे जिणेसर आप ॥ ४६ ॥
च्यार संघेयण मे हाड पाडूआ छें, ते उसभ नांम करम उदे सूं जांणों।
च्यार संठाण मे आकार भूंडा ते, उसभ नाम करम सूं मिलीया छें आंणो ॥ ४७ ॥
वर्ण गंध रस फरस माठा मिलीया, ते अण गमता नें अतंत अजोग।
ते पिण उसभ नांम करम उदे सूं, एहवा पुदगल दुःखकारी मिले छें संजोग ॥ ४८ ॥
सरीर उपंग वंधण नें संघातण, त्यां में केकांरे माठा २ अतंत अजोग।
ते पिण उसभ नांम करम उदे सूं, अणगमता पुदगल रो मिले छें संजोग ॥ ४९ ॥
थावर नांम उदे छे थावर रो दस को, तिण दसका रा दस बोल पिछांणो।
नांम करम उदे छे जीव रा नांम, एहवा इज नांम करमा रा जांणों ॥ ५० ॥
[1]थावर नांम करम उदे जीव थावर हूओ, तिण सूं आघो पाछो सरकणी नावें।
[2]सूक्ष्म नांम उदे जीव सूक्ष्म हूओ छै, सूक्ष्म सरीर सगला नांन्हो पावें ॥ ५१ ॥

[3]साधारण नाम सू जीव साधारण हूओ, एकण सरीर मे अनता रहे ताम।
[4]अप्रज्याप्ता नांम सू अप्रज्याप्तो मरे छे, तिण सू अप्रज्याप्तो छे जीव रो नाम ॥ ५२ ॥
[5]अथिर नाम सू तो जीव अथिर कहाणो, सरीर अथिर जाबक ढीलो पावे।
[6]दुभ नाम उदे जीव दुभ कहाणो, नाभ नीचलो सरीर पाडूओ थावे ॥ ५३ ॥
[7]दुभग नाम थकी जीव हुवे दोभागी, अण गमतो लागे न गमे लोकां ने लिगार।
[8]दुःस्वर नाम थकी जीव हुवे दुस्वरीयो, तिणरो कठ उसभ नही श्रीकार ॥ ५४ ॥
[9]अणादेज नाम करम रा उदा थी, तिणरो वचन कोइ न करे अगीकार।
[10]अजस नाम थकी जीव हुओ अजसीयो, तिणरो अजस बोले लोक वारुवार ॥ ५५ ॥
[11]अपघात नाम करम रा उदे थी, पेलो जीते ने आप पामे घात।
[12]दुभ गइ नाम करम संजोगे, तिणरी चाल किण ही नें दीठी न सुहात ॥ ५६ ॥
[13]नीच गोत उदे नीच हुवो लोका मे, उच गोत तणा तिणरी गिणे छे छोत।
नीच गोत थकी जीव हर्ष न पांमे, पोता रो संचीयो उदे आयो नीच गोत ॥ ५७ ॥
पाप तणी प्रकत ओलखावण काजे, जोड़ कीधी श्री दुवारा सहर मझार।
संवत अठारे पचावने वरसे, जेठ सुद तीज ने वृहस्पतिवार ॥ ५८ ॥

५ : आश्रव पदारथ

ढाल : ६

दुहा

आश्रव पदारथ पांचमों, तिणने कहीजे आश्रव दुवार।
ते करम आवारा छे बारणा, ते बारणा ने करम न्यार ॥ १ ॥
आश्रव दुवार तो जीव छें, जीव रा भला भूंडा परिणांम।
भला परिणाम पुन रा बारणा, भूडा पाप तंणा छें तांम ॥ २ ॥
केइ मूढ मिथ्याती जीवडा, आश्रव ने कहे छें अजीव।
त्यां जीव अजीव न ओलख्या, त्यांरे मोटी मिथ्यात री नीव ॥ ३ ॥
आश्रव तो निश्चेइ जीव छे, श्री वीर गया छे भाख।
ठाम २ सिद्धांत मे भाषीयो, ते सुणजो सूतर नी साख ॥ ४ ॥
हिवे पाप आवा ना बारणा, पेंहली कहूं छूं ताम।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणो राखे चित ठांम ॥ ५ ॥

ढाल

[विना रा भाव सुण......]

ठांणा अग सूतर रे मझार, कह्या छे पाच आश्रव दुवार।
ते दुवार छे माहा विकराल, त्या में पाप आवे दगचाल ॥ १ ॥
मिथ्यात इविरत ने कषाय, परमाद जोग छें ताय।
ए पांचूई आश्रव दुवार छे तांम, निश्चें जीव तणा परिणांम ॥ २ ॥
उधो सरधे ते आश्रव मिथ्यात, उंधो सरधे जीव साख्यात।
तिण आश्रव नों रूंधण हारो, ते समकित संवर दुवारो ॥ ३ ॥
अत्याग भाव इविरत छें तांम, जीव तणा माठा परिणांम।
तिण इविरत ने देवे निवार, ते व्रत छें संवर दुवार ॥ ४ ॥
नहीं त्याग्या छे ज्यां दरबां री, आसा वांछा लगे रही ज्यांरी।
ते इविरत जीव रा परिणांम, तिण नें त्याग्यां हुवे संवर आम ॥ ५ ॥
परमाद आश्रव छें तांम, ए पिण जीव रा मेला परिणांम।
परमाद आश्रव रूंधाय, जब अपरमाद संवर थाय ॥ ६ ॥

कषाय आश्रव छे आम, जीव रा कषाय परिणाम।
तिण सू पाप लागे छे आय, ते अकषाय सूं मिट जाय॥ ७ ॥
सावद्य निरवद जोग व्यापार, ए पाचूई आश्रव दुवार।
रूधे भला भूडा परिणाम, अजोग सवर तिणरो नांम॥ ८ ॥
ए पांचूइ आश्रव उघाड़ा दुवार, करम आवे या दुवार मझार।
दुवार तो जीव ना परिणाम, त्या सू करम लागे छे ताम॥ ९ ॥
यांरा ढाकणा सवर दुवार, आश्रव दुवार ना रूंधणहार।
नवा करम नां रोकणहार, ए पिण जीव रा गुण श्रीकार॥ १० ॥
इमहिज कह्यो चोथा अग मझारो, पाच आश्रव ने सवर दुवारो।
आश्रव करमा रो करता उपाय, करम आश्रव सू लागे छे आय॥ ११ ॥
उतराधेन गुणतीसमा माह्यो, पडिकमणा रो फल बतायो।
व्रता रा छिद्र ढकायो, वले आश्रव दुवार रूधायो॥ १२ ॥
उतराधेन गुणतीसमा माह्यो, पच्चक्खाण रो फल बतायो।
पचखाण सू आश्रव रूधायो, आवता करम ते मिट जायो॥ १३ ॥
उतराधेन तीसमा रे माह्यो, जलना आगम रूधायो।
जब पाणी आवतो मिट जावे, ज्यू आश्रव रूंध्या करम नावें॥ १४ ॥
उतराधेन उगणीसमा माह्यो, गाठा दुवार ढाक्या कह्या ताह्यो।
करम आवा ना ठाम मिटायो, जब पाप न लागे आयो॥ १५ ॥
ढाकीया कह्या आश्रव दुवार, जब पाप न बधे लिगार।
कह्यो छे दसवीकालिक मझार, तीजा अधेन मे आश्रव दुवार॥ १६ ॥
रूंधे पाचूंई आश्रव दुवार, ते भीषू मोटा अणगार।
ते तो दसवीकालिक मझार, तिहा जोय करो निस्तार॥ १७ ॥
पेंहला मनजोग रूधे ते सुध, पछे वचन काय जोग रूध।
उतराधेन गुणतीसमा माहि, आश्रव रूधणा चाल्या छे ताहि॥ १८ ॥
पाच कह्या छे अधर्म दुवार, ते तो प्रश्नव्याकरण मझार।
वले पाच कह्या सवर दुवार, या दोया रो घणो विसतार॥ १९ ॥
ठाणा अग पाचमा ठाणा माहि, आश्रव पडिकमणो ताहि।
पडिकम्या पाछो रूधाए दुवार, फेर पाप न लागे लिगार॥ २० ॥
फूटी नाव रो दिष्टत, आश्रव ओलखायो भगवत।
भगोती तीजा सतक मझार, तीजे उदेसे छैं विसतार॥ २१ ॥
वले फूटी नावा रे दिष्टत, आश्रव ओलखायो भगवत।
भगोती पेंहला सतक मझार, छट्ठे उदेसे छैं विसतार॥ २२ ॥

ए तो कह्या छे आश्रव दुवार, वले अनेक छे सूतर मझार।
ते पूरा केम कहिवाय, सगला रो एकज न्याय॥ २३॥
आश्रव दुवार कह्या ठाम ठांम, ते तो जीव तणा परिणांम।
त्याने अजीव कहे मिथ्याती, खोटी सरधा तणा पखपाती॥ २४॥
करमा नें ग्रहे ते जीव दरब, ग्रहे तेहीज छे आश्रव।
ते जीव तणा परिणांम, त्या सू करम लागे छे तांम॥ २५॥
जीव ने पुदगल रो मेल, तीजा दरब तणो नही भेल।
जीव लगावे जाण जांण, जब पुदगल लागे छें आण॥ २६॥
तेहिज पुदगल छे पुन पाप, त्यारो करता छै जीव आप।
करता तेहिज आश्रव जांणों, तिण मे संका मूल म आंणो॥ २७॥
जीव छै करमा रो करता, सूतर मे पाठ अपरता।
कह्यो पेहला अंग मझारो, जीव करमां रो करतारो॥ २८॥
ते पेंहला इज उदेसो सभालो, ए तो करता कह्यो त्रिहूं कालो।
जीव सरूप नो इधकार, तीन करणे कह्यो करतार॥ २९॥
करता तेहिज आश्रव तांम, जीव रा भला भूंडा परिणाम।
परिणाम ते आश्रव दुवार, ते जीव तणो व्यापार॥ ३०॥
करता करणी हेतू ने उपाय, ए करमां रा करता कहाय।
या सूं करम लागे छें आय, त्याने आश्रव कह्या जिण राय॥ ३१॥
सावध करणी सू पाप लागे, तिण सूं दुःख भोगवसी आगे।
सावध करणी ने कहें अजीव, ते तो निश्चे मिथ्याती जीव॥ ३२॥
जोग सावध निरवद चाल्या, त्यानें जीव दरब मे घाल्या।
जोग आतमा कही छै ताम, जोग ने कह्या जीव परिणाम॥ ३३॥
जोग छे ते जीव व्यापार, जोग छें तेहिज आश्रव दुवार।
आश्रव तेहिज जीव निसक, तिण में मूल म जाणो सक॥ ३४॥
लेस्या भली ने भूंडी चाली, त्याने पिण जीव दरब मे घाली।
लेस्या उदे भाव जीव ताम, लेस्या ते जीव परिणाम॥ ३५॥
लेस्या करमा सू आतम लेस, ते तो जीव तणा परदेस।
ते पिण आश्रव जीव निसक, त्यारा थानक कह्या असंख॥ ३६॥
मिथ्यात इविरत ने कषाय, उदे भाव छें जीव रा ताय।
कषाय आत्मा कही छै ताम, यानें कह्या छे जीव परिणाम॥ ३७॥
ए पाचूई छे आश्रव दुवार, छे करम तणा करतार।
ए पाचूं छे जीव साख्यात, तिण में संका नही तिलमात। ३८॥

आश्रव जीव तणा परिणाम, नवमे ठाणे कह्यो छै आंम।
जीव रा परिणाम छे जीव, त्याने विकल कहे छे अजीव॥ ३६ ॥
नवमे ठाणे ठाणा अग माहि, आश्रव करम ग्रहे छे ताहिं।
करम ग्रहे ते आश्रव जीव, ग्रहीया आवे ते पुदगल अजीव॥ ४० ॥
ठाणा अंग दसमे ठाणे, दस बोल उधा कुण जाणे।
उंधा जाणे तेहिज मिथ्यात, तेहिज आश्रव जीव साख्यात॥ ४१ ॥
पाच आश्रव ने इविरत ताम, माठी लेस्या तणा परिणाम।
माठी लेस्या तो जीव छै ताय, तिणरा लषण अजीव किम थाय॥ ४२ ॥
जीव ने लषण सू पिछाणो, जीव रा लषण जीव जाणो।
जीव रा लषण ने अजीव थापे, ते तो वीर ना वचन उथापे॥ ४३ ॥
च्यार सगन्या कही जिणराय, ते पिण पाप तणा छे उपाय।
पाप रो उपाय ते आश्रव, ते आश्रव जीव दरब॥ ४४ ॥
भला ने भूडा अधवसाय, त्याने आश्रव कह्या जिनराय।
भला सू तो लागे छे पुन, भूडा सू लागे पाप जबून॥ ४५ ॥
आरत ने रुद्र ध्यान, त्याने आश्रव कह्या भगवान।
आश्रव पाप तणा छे दुवार, दुवार तेहिज जीव व्यापार॥ ४६ ॥
पुन ने पाप आवाना दुवार, ते करम तणा करतार।
करमां रो करता आश्रव जीव, तिण ने कहे अग्यानी अजीव॥ ४७ ॥
जे आश्रव ने अजीव जाणे ते पीपल बाधी मूरख ज्यू ताणे।
करम लगावे ते आश्रव, ते निश्चेई जीव दरब॥ ४८ ॥
आश्रव ने कह्यो रूधाणो, आ जिनजी रा मुख री वाणो।
ओ कीसो दरब रूधाणो, कीसो दरब थिर थपाणो॥ ४९ ॥
विपरीत तत्व गुण जाणे, कुण माडे उलटो ताणे।
कुण हिसादिक रो अत्यागी, कुण रे वछा रहे लागी॥ ५० ॥
सबदादिक कुण अभिलाखे, कषाय भाव कुण राखे।
कुण मन जोग रो व्यापारो, कुण चिन्तवे म्हारो थारो॥ ५१ ॥
इद्रा नें कुण मोकली मेले, सबदादिक ने कुण भेले।
इण ने मोकली मेले ते आश्रव, तेहिज छै जीव दरब॥ ५२ ॥
मुख सूं कुण भूंडो बोले, काया सूं कुण माठो डोले।
ए जीव दरब नो व्यापार, पुदगल पिण वरते छे लार॥ ५३ ॥
जीव रा चलाचल परदेस, त्या नें थिर थापे दिढ करेस।
जब आश्रव दरब रूंधाणो, तब तेहिज सबर थपाणो॥ ५४ ॥

चलाचल जीव परदेस, सारा परदेसा करम प्रवेस।
सारा परदेसा करम ग्रहता, सारा परदेसा करमां रा करता ॥ ५५ ॥
त्या परदेसा रो थिर करणहार, तेहिज संवर दुवार।
अथिर परदेस ते आश्रव, ते निश्चेंई जीव दरब ॥ ५६ ॥
जोग परिणामीक ने उदे भाव, त्याने जीव कह्या इण न्याव।
अजीव तो उदे भाव नाही, ते देख लो सूतर माही ॥ ५७ ॥
पुन निरवद जोगा सू लागे छें आय, ते करणी निरजरा री छें ताय।
पुन सहजा लागे छें आय, तिण सू जोग छे आश्रव मांय ॥ ५८ ॥
जे जे संसार नां छें काम, त्यारा किण २ रा कहूं नाम।
ते सगला छे आश्रव ताम, ते सगला छें जीव परिणाम ॥ ५९ ॥
करमां ने लगावे तो आश्रव, तेहिज छे आश्रव जीव दरब।
लागे ते पुदगल अजीव, लगावे ते निश्चेंई जीव ॥ ६० ॥
करमा रो करता जीव दरब, करतापणो तेहिज आश्रव।
कीधा हुआ ते करम कहिवाय, ते तो पुदगल लागे छे आय ॥ ६१ ॥
ज्यारे गूढ मिथ्यात अधारो, ते नही पिछाणे आश्रव दुवारो।
त्याने संवली तो मूल न सूझे, दिन २ इधक अलूझे ॥ ६२ ॥
जीव रे करम आडा छें आठ, ते लग रह्या पाटानेपाट।
ज्यामे घातीया करम छें च्यार, मोख मारग रोकणहार ॥ ६३ ॥
और करमां सूं जीव ढंकाय, मोह करम थकी विगडाय।
विगड्यो करे सावद्य व्यापार, तेहिज आश्रव दुवार ॥ ६४ ॥
चारित मोह उदे मतवालो, तिण सूं सावद्य रो न हुवे टालो।
सावद्य रो सेवण हारो, तेहिज आश्रव दुवारो ॥ ६५ ॥
दंसण मोह उदे सरधे उंधो, हाथे मारग न आवें सुधो।
उंधी सरधा रो सरदणहारो, ते मिथ्यात आश्रव दुवारो ॥ ६६ ॥
मूढ कहे आश्रव ने रूपी, वीर कह्यो आश्रव ने अरूपी।
सूतरां मे कह्यों ठाम २, आश्रव ने अरूपी तांम ॥ ६७ ॥
पाच आश्रव ने इविरत ताम, माठी लेस्या तणा परिणांम।
माठी लेस्या अरूपी छैं ताय, तिणरा लषण रूपी किम थाय ॥ ६८ ॥
उजला ने मेला कह्या जोग, मोह करम संजोग विजोग।
उजला जोग मेला थाय, करम झरीयां उजल होय जाय ॥ ६९ ॥
उत्तरावेन गुणतीसमां माय, जोग सचे कह्यों जिणराय।
जोग सचे निरदोष में चाल्या, त्यां नें साधां रा गुण मांहें घाल्या ॥ ७० ॥

साधां रा गुण छे सुध मान, त्याने अरूपी कह्या भगवान।
त्या जोग आश्रव ने रूपी थाप्या, त्या वीर ना वचन उथाप्या ॥ ७१ ॥
ठाणा अग तीजा ठाणा मझार, जोग वीर्य रो व्यापार।
तिण सू अरूपी छै भाव जोग, रूपी सरधे ते सरधा अजोग ॥ ७२ ॥
जोग आतमा जीव अरूपी, त्यां जोगा ने मूढ कहे रूपी।
जोग जीव तणा परिणाम, ते निश्चे अरूपी छे तांम ॥ ७३ ॥
आश्रव जीव सरधावण ताय, जोड कीधी छे पाली मांय।
सवत अठारे पंचावना मझार, आसोज सुद बारस रिववार ॥ ७४ ॥

ढाल : ७

दुहा

आश्रव करम आवानां वारणा, त्याने विकल कहे छें करम।
करम दुवार ने करम एकहिज कहे, ते भूला अग्यांनी भरम ॥ १ ॥
करम ने आश्रव छे जूजूआ, जूओजूओ छें त्यांरो सभाव।
करम ने आश्रव एकहिज कहे, तिणरो मूढ न जाणे न्याव ॥ २ ॥
वले आश्रव ने रूपी कहे, आश्रव ने कहे करम दुवार।
दुवार ने दुवार मे आवे तेहने, एक कहे छे मूढ गिवार ॥ ३ ॥
तीन जोगा ने रूपी कहे, त्याने इज कहे आश्रव दुवार।
वले तीन जोगां ने कहे करम छे, ओ पिण विकलां रे नही छै विचार ॥ ४ ॥
आश्रव ना वीस भेद छे, ते जीव तणी पर्याय।
करम तणा कारण कह्या, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

मिथ्यात आश्रव तो उधो सरधे ते, उधो सरधे ते जीव साख्यातो रे।
तिण मिथ्यात आश्रव ने अजीव सरधे छे, त्यारा घट माहे घोर मिथ्यातो रे॥
आश्रव ने अजीव कहें ते अग्यानी ॥ १ ॥
जे जे सावद्य कामा नही त्याग्या छे, त्यांरी आसा वछा रही लागी रे।
ते जीव तणा परिणाम छे मेला, अत्याग भाव छे इविरत सागी रे ॥ २ ॥
परमाद आश्रव जीव नां परिणाम मेला, तिण सू लागे निरतर पापो रे।
तिणने अजीव कहें छे मूढ मिथ्याती, तिण रे खोटी सरधा री थापो रे ॥ ३ ॥
कषाय आश्रव ने जीव कह्यो जिणेसर, कषाय आतमा कही छें तांमो रे।
कषाय करवारो सभाव जीव तणो छे, कषाय छै जीव परिणांमो रे ॥ ४ ॥

जोग आश्रम नें जीव कह्यों जिणेसर, जोग आतमा कही छे तांमो रे।
तीन जोगां रो व्यापार जीव तणो छै, जोग छे जीव रा परिणांमो रे॥ ५ ॥
जीवरी हिसा करें ते आश्रव, हिंसा करे ते जीव साख्यातो रे।
हिसा करे ते परिणांम जीव तणा छे, तिणमें सका नही तिलमातो रे॥ ६ ॥
भूठ वोले ते आश्रव कह्यो छें, भूठ बोले ते जीव साख्यातो रे।
भूठ वोलण रा परिणांम जीव तणा छें, तिणमे संका नही तिलमातो रे॥ ७ ॥
चोरी करे ते आश्रव कह्यों जिणेसर, चोरी करें ते जीव साख्यातो रे।
चोरी करवा रा परिणांम जीव तणा छें,, तिणमें संका नहीं तिलमातो रे॥ ८ ॥
मैथुन सेवे ते आश्रव चोथो, मैथुन सेवे ते जीवो रे।
मैथुन परिणांम तो जीव तणा छें, तिण सूं लागे छें पाप अतीवो रे॥ ९ ॥
परिग्रह राखे ते पांचमों आश्रव, परिग्रह राखे ते पिण जीवो रे।
जीव रा परिणांम छें मूर्छा परिग्रह, तिण सूं लागे छे पाप अतीवो रे॥ १० ॥
पाच इंद्रयां ने मोकली मेले ते आश्रव, मोकली मेले ते जीव जांणों रे।
राग धेष आवे सब्दादिक उपर, यानें जीव रा भाव पिछाणो रे॥ ११ ॥
सुरत इद्री तो सब्द सुणे छे, चषु इंद्री रूप ले देखो रे।
घाण इद्री गन्ध ने भोगवे छे, रस इंद्री रस स्वादे वशेषो रे॥ १२ ॥
फरस इंद्री तो फरस भोगवे छे, पांचूं इंद्रयां नों एह सभावो रे।
यां सूं राग नें धेष करें ते आश्रव, तिण ने जीव कहीजे इण न्यावो रे॥ १३ ॥
तीन जोगां ने मोकला मेले ते आश्रव, मोकला मेले ते जीवो रे।
त्यांने अजीव कहे ते मूढ मिथ्याती, त्यारा घट मे नही ग्यान रो दीवो रे॥ १४ ॥
तीन जोगा रो व्यापार जीव तणो छे, ते जोग छे जीव परिणांमो रे।
माठा जोग छें माठी लेस्या रा लषण, जोग आतमा कही छे तांमो रे॥ १५ ॥
भंड उपगरण सू कोई करे अजेणा, तेहिज आश्रव जांणो रे।
ते आश्रव सभाव तो जीव तणो छें, रूडी रीत पिछांणो रे॥ १६ ॥
सुची-कुसग सेवे ते आश्रव, सुची कुसग सेवे ते जीवो रे।
सुची-कुसग सेवे तिणने अजीव कहें, त्यांरे उंडी मिथ्यात री नींवो रे॥ १७ ॥
दरव जोगां ने रूपी कह्या छें, ते तो भाव जोग रे छें लारो रे।
दरव जोगां सू तो करम न लागे, भाव जोग छें आश्रव दुवारो रे॥ १८ ॥
आश्रव ने करम कहे छे अग्यानी, तिण लेखे पिण उधी दरसी रे।
आठ करमां ने तो चोफरसी कहे छे, काया जोग तो छें अठफरसी रे॥ १९ ॥
आश्रव ने करम कहे त्यारी सरधा, उठी जठा थी भूठी रे।
त्यारा वोल्या री ठीक पिण त्यानें नांही, त्यारी हीया निलाड री फूटी रे॥ २० ॥

वीस आश्रव मे सोले एकंत सावद्य, ते पाप तणा छे दुवारो रे।
ते जीव रा किरतव माठा ने खोटा, पाप तणा करतारो रे॥ २१ ॥
मन वचन काया रा जोग व्यापार, वले समचें जोग व्यापारो रे।
ए च्यारूंइ आश्रव सावद्य निरवद, पुन पाप तणा छे दुवारो रे॥ २२ ॥
मिथ्यात इविरत ने परमाद, कषाय नें जोग व्यापारो रे।
ए करम तणा करता जीव रे छें, ए पांचूंइ आश्रव दुवारो रे॥ २३ ॥
यामें च्यार आश्रव सभावीक उदारा, जोग में पनरे आश्रव समाया रे।
जोग किरतब नें सभावीक पिण छें, तिण सूं जोग में पनरेंइ आया रे॥ २४ ॥
हिंसा करें ते जोग आश्रव छें, भूठ बोलें ते जोग छें ताह्यो रे।
चोरी सूं लेइ सुची कुसग सेवे ते, पनरेंइ आया जोग मांह्यो रे॥ २५ ॥
करमा रो करता तो जीव दरब छै, कीधा हुवा ते करमो रे।
करम ने करता एक सरधे ते, भूला अग्यांनी भर्मो रे॥ २६ ॥
अठारे पाप ठांणा अजीव चोफरसी, ते उदे आवे तिण वारो रे।
जब जूजूआ किरतव करे अठारो, ते अठारेंइ आश्रव दुवारो रे॥ २७ ॥
उदे आया ते तो मोह करम छे, ते तो पाप रा ठांणा अठारो रे।
त्यांरा उदा सू अठारेंइ किरतव करे छें, ते जीव तणो छें व्यापारो रे॥ २८ ॥
उदे ने किरतव जूआजूआ छे, आ तो सरधा सूधी रे।
उदे ने किरतव एकज सरधे, अकल तिणांरी उंधी रे॥ २९ ॥
प्राणातपात जीव री हिंसा करें ते, प्राणातपात आश्रव जांणों रे।
उदे हुवो ते प्राणातपात ठांणो छे, त्याने रूडी रीत पिछांणो रे॥ ३० ॥
भूठ बोलें ते मिरषावाद आश्रव छे, उदे छे ते मिरषावाद ठांणो रे।
भूठ बोले ते जीव उदे हुवा करम, यां दोयां ने जूआजूआ जांणो रे॥ ३१ ॥
चोरी करे ते अदत्तादांन आश्रव छें, उदे ते अदत्तादांन ठांणो रे।
ते उदे आयां जीव चोरी करें छें, ते तो जीव रा लषण जांणो रे॥ ३२ ॥
मैथुन सेवे ते मैथुन आश्रव, ते जीव तणा परणांमो रे।
उदे हूओ ते मैथुन पाप थांनक छें, मोह करम अजीव छें तांमो रे॥ ३३ ॥
सचित्त अचित्त मिश्र उपर, ममता राखे ते परिग्रह जाणो रे।
ते ममता छें मोह करम रा उदा सूं, उदे में छे ते पाप ठाणो रे॥ ३४ ॥
क्रोध सूं लेइ नें मिथ्यात दरसण, उदे हूआ ते पाप रो ठांणो रे।
यांरा उदा सूं सावद्य कामा करें ते, जीवरा लषण जांणो रे॥ ३५ ॥
सावद्य कामां ते जीव रा किरतव, उदे हूआ ते पाप करमो रे।
'यां दोयां नें कोइ एकज सरधे, ते भूला अग्यांनी भरमो रे॥ ३६ ॥

आश्रव तो करम आवांनां दुवार, ते तो जीव तणा परिणामो रे।
दुवार माहें आवे ते आठ करम छे, ते पुदगल दरब छें तांमो रे॥ ३७ ॥
माठा परिणाम ने माठी लेस्या, वलें माठा जोग व्यापारो रे।
माठा अधवसाय नें माठो ध्यान, ए पाप आवानां दुवारो रे॥ ३८ ॥
भला परिणांम ने भली लेस्या, भला निरवद जोग व्यापारो रे।
भला अधवसाय ने भलोइ ध्यान, ए पुन आवा रा दुवारो रे॥ ३९ ॥
भला भूडा परिणांम भली भूडी लेस्या, भला भूडा जोग छें तामो रे।
भला भूंडा अधवसाय भला भूडा ध्यान, ए जीव तणा परिणांमो रे॥ ४० ॥
भला भूडा भाव जीव तणा छे, भूडा पाप रा बारणा जांणो रे।
भला भाव तो छे संवर निरजरा, पुन सहुजे लागे छें आंणो रे॥ ४१ ॥
निरजरा री निरवद करणी करता, करम तणो खय जांणो रे।
जीव तणा परदेस चलें छे, त्यां सू पुन लागे छे आंणो रे॥ ४२ ॥
निरजरा री करणी करे तिण काले, जीव रा चालें सर्व परदेसो रे।
जव संहचर नाम करम सूं उदे भाव, तिण सू पुन तणो परवेसो रे॥ ४३ ॥
मन वचन कांया रा जोग तीनूइ, पसत्थ ने अपसत्थ चाल्या रे।
अपसत्थ जोग तो पाप ना दुवार, पसत्थ निरजरा री करणी में घाल्या रे॥ ४४ ॥
अपसत्थ दुवार ने रूंधणा चाल्या, पसत्थ उदीरणा चाल्या रे।
रूंधता ने उदीरतां निरजरा री करणी, पुन लागे तिण सू आश्रव मे घाल्या रे॥ ४५ ॥
पसत्य ने अपसत्य जोग तीनूइ, त्यारा बासठ भेद छे ताह्यो रे।
ते सावद्य निरवद जीव री करणी, सूतर उवाइ रे मांह्यो रे॥ ४६ ॥
जिण कह्यो सतरे भेद असंयम, असंजम ते इविरत जांणों रे।
इविरत ते आसा वछा जीव तणी छे, तिणने रूडी रीत पिछांणो रे॥ ४७ ॥
माठा २ किरतब ने माठी २ करणी, सर्व जीव व्यापारो रे।
वले जिण आज्ञा बारला सर्व कामां, ए सगला छे आश्रव दुवारो रे॥ ४८ ॥
मोह करम उदे जीव रे च्यार संज्ञा, ते तो पाप करम ग्रहे ताणो रे।
पाप करम ग्रहे ते आश्रव, ते तो लखण जीव रा जांणों रे॥ ४९ ॥
उठांण कम बल वीर्य पुरषाकार प्राकम, यांरा सावद्य जोग व्यापारो रे।
तिण सू पाप करम जीव रे लागे छें, ते जीव छे आश्रव दुवारो रे॥ ५० ॥
उठांण कम बल वीर्य पुरषाकार प्राकम, यांरा निरवद किरतब व्यापारो रे।
त्यांसूं पुन करम जीव रे लागें छें, ते पिण जीव छे आश्रव दुवारो रे॥ ५१ ॥
संजती असंजती ने संजतासंजती, ते तो संवर आश्रव दुवारो रे।
ते संवर नें आश्रव दोनूंइ, तिण में संका नहीं छै लिगारो रे॥ ५२ ॥

इम विरती अविरती नें विरताविरती, इम पचखाणी पिण जांणो रे।
इम पिंडीया बाला ने बालपिडीया, जागरा सुत्ता एम पिछाणो रे॥ ५३ ॥
वले संबूडा असबूडा ने सबूडासबूडा, धमीया धमठी तामो रे।
धम्मवचसाइया इमहिज जाणो, तीन तीन बोल छे तामो रे॥ ५४ ॥
ए सगला बोल छे सवर ने आश्रव, त्याने रुडी रीत पिछाणो रे।
कोइ आश्रव नें अजीव कहे छे, ते पूरा छे मूढ अयाणो रे॥ ५५ ॥
आश्रव घटीया सवर वधे छे, सवर घटीया आश्रव वधांणो रे।
किसो दरब घटीयो ने वधीयो, इणने रुडी रीत पिछाणो रे॥ ५६ ॥
इविरत उदे भाव घटीया सू, विरत वधे छे षयउपसम भावो रे।
ए जीव तणा भाव वधीया ने घटीया, आश्रव जीव कह्यो इण न्यावो रे॥ ५७ ॥
सतरे भेद असजम ते इविरत आश्रव, ते आश्रव नें निश्चे जीव जाणो रे।
सतरे भेद संजम ने सवर कह्यो जिण, ए तो जीव रा लषण पिछाणो रे॥ ५८ ॥
आश्रव ने जीव सरधावण काजे, जोड कीधी पाली मझारो रे।
सवत अठारे वरस पचावने, आसोज सुद चवदस मगलवारो रे॥ ५९ ॥

६ : संवर पदारथ

ढाल : ८

दुहा

छठो पदार्थ संवर कह्यो, तिणरा थिरी भूत परदेस।
आश्रव दुवार नों रूंधणो, तिण सूं मिटीयो करमा रो परवेस॥ १ ॥
आश्रव दुवार करमां रा बारणा, ढकीया छे सवर दुवार।
आतमा वश कीया संवर हूओ, ते गुण रतन श्रीकार॥ २ ॥
संवर पदारथ ओलख्या विना, संवर न नीपजें कोय।
सका कोइ मत राखजो, सूतर साह्मो जोय॥ ३ ॥
सवर तणा भेद पाच छें, त्या पांचा रा भेद अनेक।
त्यारा भाव भेद परगट करू, ते सुणजो आंण ववेक॥ ४ ॥

ढाल

[पूजजी पधारे हो नगरी]

नव ही पदारथ सरधें यथातथ, तिणनें कहिजे समकत निधांन हो। भविक जण।
पछें त्याग करे उंधा सरधण तणा, ते समकत संवर परधान हो। भविक जण।
सवर पदारथ भवीयण ओलखो* ॥ १ ॥
त्याग कीयां सर्व सावद्य जोग रा, जावजीव तणा पचखांण हो।
आगार नही त्यारे पाप करण तणो, ते सर्व विरत संवर जांण हो॥ २ ॥
पाप उदे सू. जीव परमादी थयो, तिण पाप सूं परमादी थाय हो।
ते पाप खय हूआ के उपसम हूआं, अपरमाद संवर हुवें ताय हो॥ ३ ॥
कषाय करम उदे छे जीव रे, तिण सूं कषाय आश्रव छें तांम हो।
ते कषाय करम अलगा हुवा जीव रे, जब अकषाय संवर हुवें आम हो॥ ४ ॥
थोड़ा थोड़ा सा जोगां ने रूंधीयां, अजोग संवर नहीं थाय हो।
मन वचन काया रा जोग रूंधे सरवथा, ते अजोग संवर हुवें ताय हो॥ ५ ॥
सावद्य माठा जोग रुंध्यां सरवथा, जब तो सर्व विरत संवर होय हो।
पिण निरवद जोग बाकी रह्या तेहनें, तिण सूं अजोग संवर नही कोय हो॥ ६ ॥
परमाद आश्रव ने कषाय जोग आश्रव, ए तो न मिटे कीयां पचखांण हो।
ए तो सहजांइ मिटे छे करम अलगा हुवां, तिणरी अंतरंग करजो पिछांण हो॥ ७ ॥
सुभ ध्यान ने लेस्या सूं करम कटियां थका, जब अपरमाद संवर थाय हो।
इमहिज करतां अकषाय संवर हुवें, इम अजोग संवर होय जाय हो॥ ८ ॥

---
* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

समकित ,सवर ने सर्व विरत सवर, ए तो हुवें छे कीयां पचखांण हो।
अपरमाद अकषाय अजोग सवर हुवे, ते तो करम खय हूआं जांण हो ॥ ९ ॥
हिसा भूठ -चोर मैथुन परिग्रहो, ए तो जोग आश्रव में समाय हो।
ए पाचू आश्रव ने त्यागे दीया, जब विरत सवर हुवे ताय हो ॥ १० ॥
पाचू इदर्‍यां ने मेले मोकली, त्यांने पिण जोग आश्रव जाण हो।
इदर्‍या ने मोकली मेलवारा त्याग छे, ते पिण विरत संवर ल्यों पिछाण हो ॥ ११ ॥
भला भूडा किरतब तीनूंई जोगा तणा, ते तो जोग आश्रव छे ताम हो।
त्या तीनूंइ जोगा ने जाबक रूंघिया, आजोग संवर हुवे आंम हो ॥ १२ ॥
अजेणा करे भडउपगरण थकी, तिणने पिण जोग आश्रव जाण हो।
सुची-कुसग सेवे ते आश्रव कह्यो, त्याने त्याग्या विरत संवर पिछाण हो ॥ १३ ॥
हिंसादिक पनरे जोग आश्रव कह्या, त्यानें त्याग्यां विरत संवर जाण हो।
त्यां पनरा ने माठा जोग माहें गिण्या, निरवद जोगा री करजो पिछाण हो ॥ १४ ॥
तीनूइ निरवद जोग रूंध्या थका, अजोग सवर होय जात हो।
ए बीसूइ सवर तणो विवरो कह्यो, ते बीसूइ पाच संवर मे समात हो ॥ १५ ॥
कोइ कहे कषाय ने जोगा तणा, सूतर माहे चाल्या पचखांण हो।
त्याने पचख्या विना सवर किण विध होसी, हिवे तिणरी कहुं छू पिछाण हो ॥ १६ ॥
पचखाण चाल्यो छे सूतर मे सरीर नो, ते सरीर सू न्यारो हुवा ताम हो।
इम हिज कषाय ने जोग पचखाण छे, सरीर पचखाण ज्यूं आम हो ॥ १७ ॥
सामायक आदि पाचूं चारित भणी, सर्व वरत सवर जांण हो।
पुलाग आदि दे छहूंई नियठा, ए पिण लीज्यो सवर पिछांण हो ॥ १८ ॥
चारितावर्णी षयउपसम हूआं, जब जीव ने आवें वेराग हो।
जब काम ने भोग थकी विरक्त हुवे, जब सर्व सावद्य दे त्याग हो ॥ १९ ॥
सर्व सावद्य जोग ने त्यागे सरवथा, ते सर्व वरत सवर जाण हो।
जब इविरत रा पाप न लागे सरवथा, ते तो चारित छे गुण खांण हो ॥ २० ॥
घूर सू तो सामायक चारित आदर्‍यो, तिणरे मोह करम उदे रह्यो ताय हो।
ते करम उदे सूं किरतब नीपजे, तिण सू पाप लागें छें आय हो ॥ २१ ॥
भला ध्यान नें भली लेस्या थकी, मोह करम उदे थी घट जाय हो।
जब उदे तणा किरतब पिण हलका पडे, जब हलकाइ पाप लगाय हो ॥ २२ ॥
मोह करम जाबक उपसम हुवे, जब उपसम चारित हुवें ताय हो।
जब जीव हुवें सीतलभूत निरमलो, तिणरे पाप न लागे आय हो ॥ २३ ॥
मोहणीय करम ने जाबक खय हुवां, खायक चारित हुवे जथाख्यात हो।
जब सीतलभूत हूओ जीव निरमलो, तिणरे पाप न लागे अंसमात हो ॥ २४ ॥

सामायक चारित लीये छें उदीर ने, सावद्य जोग रा करे पचखांण हो।
उपसम चारित आवें मोह उपसम्यां, ते चारित इग्यारमें गुणठाण हो ॥ २५ ॥
खायक चारित आवें मोह करम नें खय कीयां, पिण नावें कीयां पचखांण हो।
ते आवें सुकल ध्यान ध्यायां थकां, चारित छेहले तीन गुण ठांण हो ॥ २६ ॥
चारितावर्णी षयउपसम हुवां, षयउपसम चारित आवें निधान हो।
ते उपसम हूआं उपसम चारित हुवे, खय हूआं खायक चारित परधान हो ॥ २७ ॥
चारित निज गुण जीव रा जिण कह्या, ते जीव सूं न्यारा नही थाय हो।
ते मोहणी करम अलगो हूआं परगट्या, त्यां गुणा सूं हुवा मुनीराय हो ॥ २८ ॥
चारितावर्णी ते मोहणी करम छे, तिणरा अनत परदेस हो।
तिणरा उदे सूं निज गुण विगड्या, तिणसूं जीव ने अतंत कलेस हो ॥ २९ ॥
तिण करम रा अनत परदेस अलगा हूआ, जब अनंत गुण उजलो थाय हो।
जब सावद्य जोग ने पचख्या छे सरवथा, ते सर्व विरत संवर छे ताय हो ॥ ३० ॥
जीव उजलो हुवो ते तो हुइ निरजरा, विरत संवर सू रुकीया पाप करम हो।
नवा पाप न लागे विरत सवर थकी, एहवो छे चारित धर्म हो ॥ ३१ ॥
जिम २ मोहणी करम पतलो पडें, तिम २ जीव उजलो थाय हो।
इम करता मोहनी करम खय जाए सरवथा, जब जथाख्यात चारित होय जाय हो ॥ ३२ ॥
जगन सामायक चारित तेहनां, अनता गुण पजवा जाण हो।
अनता करम परदेस उदे था ते मिट गया, तिण सू अनत गुण परगट्या आंण हो ॥ ३३ ॥
जघन्य सामायक चारितीया तणा, अनंत गुण उजला परदेस हो।
वले अनंता परदेस उदे थी मिट गया, जब अनंत गुण उजलो वशेष हो ॥ ३४ ॥
मोह करम घटे छे उदे थी इण विधे, ते तो घटे छे असंखेज्ज वार हो।
तिण सूं सामायक चारित नां कह्या, असख्यात थानक श्रीकार हो ॥ ३५ ॥
अनंत करम परदेस उदे थी मिट गया, चारित थानक नीपजे एक हो।
चारित गुण पजवा अनंता नीपजे, सामायक चारित रा भेद अनेक हो ॥ ३६ ॥
जगन सामायक चारित जेहना, पजवा अनंता जाण हो।
तिण थी उतकष्टा सामायक चारित तणा, पजवा अनत गुणा वखाण हो ॥ ३७ ॥
पजवा उतकष्टा सामायक चारित तणा, तेह थी सुषम संपराय ना वशेख हो।
अनत गुणा कह्या छे जिगन-चारित तणा, ए सुषम संपराय लो पेख हो ॥ ३८ ॥
छठा गुण ठाणा थकी नवमां लगे, सामायक चारित जांण हो।
तिणरा असख्यात थानक पजवा अनंत छे, सुषम संपराय दसमों गुण ठाण हो ॥ ३९ ॥
सुषम सपराय चारित तेहना, थानक असखेज जाण हो।
एक २ थानक रा पजवा अनंत छें, तिणने सामायक ज्यूं लीजयो पिछाण हो ॥ ४० ॥

सुषम सपराय चारितीया रे सेष उदे रह्या, मोह करम रा अनंत परदेस हो।
ते अनंत परदेस खस्या निरजरा हुइ, वाकी उदे नही रह्यो लवलेस हो॥ ४१ ॥
जब जथाख्यात चारित परगट हुवो, तिण चारित रा पजवा अनत हो।
सुषम सपराय रा उतकष्टा पजवा थकी, अनत - गुणा कह्यां भगवंत हो॥ ४२ ॥
जथाख्यात चारित उजल हूओ सरवथा, तिण चारित रो थानक एक हो।
अनता पजवा तिण थानक तणा, ते थानक छे उतकष्टो वगेख हो॥ ४३ ॥
मोह करम परदेस अनता उदे हुवे, ते तो पुदगल री पर्याय हो।
अनता अलगा हूआं अनत गुण परगटे, ते निज गुण जीव रा छे ताय हो॥ ४४ ॥
ते निज गुण जीव रा ते तो भाव जीव छे, ते निज गुण छे वदणीक हो।
ते तो करम खय हूआ सू नीपना, भाव जीव कह्या त्याने ठीक हो॥ ४५ ॥
सावद्य जोगां रा त्याग करे ने रूंधीया, तिण सूं विरत सवर हुवो जांण हो।
निरवद जोग रूंध्या सवर हुवे, तिणरी करजो पिछांण हो॥ ४६ ॥
निरवद जोग मन वचन काया तणा, ते घटीया संवर थाय हो।
सरवथा घटीयां अजोग सवर हुवें, तिणरी विध सुणो चित्त ल्याय हो॥ ४७ ॥
साधु तो उपवास बेलादिक तप करे, करम काटण रे काम हो।
जब सवर सहचर साधु रे नीपजें, निरवद जोग रूध्यां सूं ताम हो॥ ४८ ॥
श्रावक उवास बेलादिक तप करे, करम काटण रे कांम हो।
जब विरत सवर पिण सहचर नीपनो, सावद्य जोग रूध्या सू तांम हो॥ ४९ ॥
श्रावक जे जे पुदगल भोगवे, ते सावद्य जोग व्यापार हो।
त्यांरो त्याग कीया थी विरत संवर हुवे, तप पिण नीपजें लार हो॥ ५० ॥
साधु कल्पे ते पुदगल भोगवे, ते निरवद जोग व्यापार हो।
त्याने त्याग्या सू तपसा नीपनी, जोग रूध्या रो सवर श्रीकार हो॥ ५१ ॥
साधु रो हालवो चालवो बोलवो, ते तो निरवद जोग व्यापार हो।
निरवद जोग रूंध्या जितलो सवर हुवो, तपसा पिण नीपजे श्रीकार हो॥ ५२ ॥
श्रावक रे हालवो चालवो वोलवो, सावद्य निरवद व्यापार हो।
सावद्य रा त्याग सू विरत सवर हुवे, निरवद त्याग्यां सूं सवर श्रीकार हो॥ ५३ ॥
चारित ने तो विरत सवर कह्यो, ते तो इविरत त्याग्या होय हो।
अजोग सवर सुभ जोग रूध्या हुवें, तिण माहे सक न कोय हो॥ ५४ ॥
संवर निज गुण निश्चेंइ जीव रा, तिणने भाव जीव कह्यो जगनाथ हो।
जिण दरब नें भाव जीव नही ओलख्या, तिणरो घट सू न गयो मिथ्यात हो॥ ५५ ॥
संवर पदार्थ नें ओलखायवा, जोड कीधी नाथ दुवारा मझार हो।
समत अठारे वरसे छपने, फागुण विद तेरस सुक्रवार हो॥ ५६ ॥

७ : निरज़रा पदारथ

ढाल : १

दुहा

निरज़रा पदार्थ सातमों, ते तो उजल वसत अनूप।
ते निज गुण जीव चेतन तणो, ते सुणजो धर चूंप ॥ १ ॥

ढाल

[धन्य धन्य जंबू स्वाम नें]

आठ करम छें जीव रे अनाद रा, त्यांरी उतपत आश्रव दुवार हो।
ते उदे थइ नें पछे निरजरे, वले उपजें निरंतर लार हो ॥
निरजरा पदार्थ ओलखो ॥ १ ॥
दरब जीव छें तेहनें, असंख्याता परदेस हो।
सारां परदेसां आश्रव दुवार छे सारां परदेसां करम परवेस हो ॥ २ ॥
एक एक परदेस तेहनें, समें २ करम लागंत हो।
ते परदेस एकीका करम नां, समें समें लागे अनंत हो ॥ ३ ॥
ते करम उदे थइ जीव रे, समें २ अनंता झड़ जाय हो।
भरीया नींगल ज्यूं करम मिटें नही, करम मिटवा रो न जांणें उपाय हो ॥ ४ ॥
आठ करमां में च्यार घण घातीया, त्यांसूं चेतन गुणां री हुइ घात हो।
ते अंसमात्र षय उपसमा रहे सदा, तिण सूं उजलो रहें अंसमात हो ॥ ५ ॥
काधक छन घातीया षयउपसम हूआं, जब कोयंक उदे रह्या लार हो।
षय उपसम थी जीव उजलो हुवो, उदे थी उजलो नही छें लिगार हो ॥ ६ ॥
कायंक करम खय हुवें, कायंक उपसम हुवे ताय हो।
ते षय उपसम भाव छे उजलो, चेतन गुण पर्याय हो ॥ ७ ॥
जिम २ करम षय उपसम हुवे, तिम २ जीव उजल हुवें आंम हो।
जीव उजलो तेहिज निरजरा, ते भाव जीव छें तांम हो ॥ ८ ॥
देस थकी जीव उजलो हुवें, तिणने निरजरा कही भगवांन हो।
सर्व उजल ते मोष छे, ते मोष छें परम निधांन हो ॥ ९ ॥
ग्यांनावरणी षय उपसम हूआं नीपजें, च्यार ग्यांन नें तीन अग्यांन हो।
भणवो आचारंग आदि दे, चवदे पूर्व रो ग्यांन हो ॥ १० ॥
ग्यांनावरणी री पांच प्रकत मझे, दोय षयउपसम रहें छें सदीव हो।
तिण सूं दोय अग्यांन रहें सदा, अंस मात्र उजल रहें जीव हो ॥ ११ ॥

मिथ्याती रे तो जगन दोय अग्यांन छें, उतकष्टा तीन अग्यांन हो।
देस उणों दस पूर्व उतकष्टो भणे, इतरो उतकष्टो षयउपसम अग्यान हो॥ १२॥
समदिष्टी रे जगन दोय ग्यान छे, उतकष्टा च्यार ग्यान हो।
उतकष्टो चवदे पूर्व भणे, एहवो षयउपसम भाव निधान हो॥ १३॥
मत ग्यानावरणी षयउपसम हूआ, नीपजे मत ग्यान मत अग्यान हो।
सुरत ग्यानावरणी षयउपसम हूआ, नीपजे सुरत ग्यान अग्यान हो॥ १४॥
वले भणवो आचारग आदि दे, समदिष्टी रे चवदे पूर्व ग्यान हो।
मिथ्याती उतकष्टो भणे, देस उणो देस पूर्व लग जांण हो॥ १५॥
अवधि ग्यानावरणी षयउपसम हूआ, समदिष्टी पामे अवध ग्यान हो।
मिथ्या दिष्टी ने विभग नाण उपजे, पयउपसम परमांण जांण हो॥ १६॥
मनपजवावर्णी षयउपसम्या, उपजे मनपजवा नाण हो।
ते साधु समदिष्टी ने उपजे, एहवो षयउपसम भाव परधान हो॥ १७॥
ग्यान अग्यान सागार उपीयोग छें, दोया रो एक सभाव हो।
करम अलगा हूआ नीपजें, ए षयउपसम उजल भाव हो॥ १८॥
दरसणावर्णी पयउपसम हूआ, आठ बोल नीपजे श्रीकार हो।
पांच इद्री ने तीन दरसण हुवें, ते निरजरा उजला तत सार हो॥ १९॥
दरसणावर्णी री नव प्रकत मझे, एक प्रकत पयउपसम सदीव हो।
तिण सूं अचषू दरसण ने फरस इदरी रहें, षयउपसम भाव जीव हो॥ २०॥
चषू दरसणावर्णी पयउपसम हूआ, चषू दरसण ने चषू इद्री होय हो।
करम अलगा हूआ उजलो हूओ, जब देखवा लागो सोय हो॥ २१॥
अचषू दरसणावर्णी वशेष थी, षयउपसम हुवे तिण वार हो।
चषू टाले सेष इद्री, पयउपसम हुवे इद्री च्यार हो॥ २२॥
अवधि दरसणावर्णी षयउपसम हुआ, उपजे अवधि दरसण वशेष हो।
जब उतकष्टो देखे जीव एतलो, सर्व रूपी पुदगल ले देख हो॥ २३॥
पांच इद्री ने तीनूं इ दरसण, ते षयउपसम उपीयोग अणाकार हो।
ते वानगी केवल दरसण माहिली, तिणमें सका म राखो लिगार हो॥ २४॥
मोह करम षयउपसम हूआ, नीपजे आठ बोल अमाम हो।
च्यार चारित ने देस विरत नीपजें, तीन दिष्टी उजल होय ताम हो॥ २५॥
चारित मोह री पचीस प्रकत मझें, केइ सदा षयउपसम रहे ताय हो।
तिण सू अंस मात उजलो रहें, जब भला वरते छे अधवसाय हो॥ २६॥
कदे षयउपसम इधकी हूवे, जब इधका गुण हुवे तिण माय हो।
षिमा दया संतोषादिक गुण वधें, भली लेश्यादि वरतें जब आय हो॥ २७॥

भला परिणांम पिण वरते तेहनें, भला जोग पिण वरते ताय हो।
धर्म ध्यांन पिण ध्यावे किण समें, ध्यावणी आवें मिटीयां कषाय हो॥ २८ ॥
ध्यांन परिणाम जोग लेस्या भली, वले भला वरते अधवसाय हो।
सारा वरते अंतराय षयउपसम हूआं, मोह करम अलगा हूआं ताय हो॥ २९ ॥
चोकड़ी अताणुवधी आदि दे, घणी प्रकृत्यां षयउपसम हुवें ताय हो।
जब जीव रे देस विरत नीपजें, इणहीज विध च्यारूं चारित आय हो॥ ३० ॥
मोहणी षयउपसम हूआं नीपनों, देस विरत नें चारित च्यार हो।
वले षिमा दयादिक गुण नीपनां, सगलाइ गुण श्रीकार हो॥ ३१ ॥
देस विरत नें च्यारूंई चरित भला, ते गुण रतनां री खांन हो।
ते खायक चरित री वांनगी, एहवो षयउपसम भाव परधांन हो॥ ३२ ॥
चारित नें विरत संवर कह्यों, तिण सूं पाप रूंधें छें ताय हो।
पिण पाप झरी नें उजल हूओं, तिणने निरजरा कही इण न्याय हो॥ ३३ ॥
दरसण मोहणी षयउपसम हूआं, नीपजें साची सुध सरधांन हो।
तीनूं दिष्ट में सुध सरधान छें, ते तो षयउपसम भाव निधांन हो॥ ३४ ॥
मिथ्यात मोहणी षयउपसम हुआं, मिथ्यादिष्टी उजली होय हो।
जब केयक पदारथ सुध सरधलें, एहवो गुण नीपजें छें सोय हो॥ ३५ ॥
मिश्र मोहणी षयउपसम हुआं, सममिथ्या दिष्टी उजली हुवें तांम हो।
जब घणां पदारथ सुध सरधलें, एहवो गुण नीपजें अमांम हो॥ ३६ ॥
समकत मोहणी षयउसपसम हूआं, नीपजें समकत रतन परधांन, हो।
नव ही पदारथ सुध सरधलें, एहवो षयउपसम भाव निधांन हो॥ ३७ ॥
मिथ्यात मोहणी उदे छें ज्यां लगे, सममिथ्या दिष्टी नहीं आवंत हो।
मिश्र मोहणी रा उदे थकी, समकत नहीं पावंत हो॥ ३८ ॥
समकत मोहणी ज्यां लगें उदे रहें, त्यां लग षायक समकत आवें नाय हो।
एहवी छाक छें दरसण मोह करम नीं, म्हांखें जीव नें भ्रमजाल मांय हो॥ ३९ ॥
षयउपसम भाव तीनोंइ दिष्टी छें, ते सगलोइ सुध सरधांन हो।
ते खायक समकत मांहिली, वांनगी मातर गुण निधांन हो॥ ४० ॥
अंतराय करम षयउपसम हूआं, लबध आठ गुण नीपजें श्रीकार हो।
पांच लबध तीन वीर्य नीपजें, हिवे तेहनों सुणो विसतार हो॥ ४१ ॥
पांचोंइ प्रकत अंतराय नी, सदा षयउपसम रहें छें साख्यात हो।
तिण सूं पांचूं लबध बाल वीर्य, उजल रहें छें अल्पमात हो॥ ४२ ॥
दानांतराय षयउपसम हूआं, दांन देवा री लबध उपजंत हो
लाभांतराय षयउपसम हूआं, लाभ री लबध खुलंत हो॥ ४३ ॥

भोगअंतराय पयउपसम्या, भोग लबध उपने छे ताय हो।
उपभोगअंतराय खयउपसम हूआ, उपभोग लबध उपजें आय हो॥ ४४ ॥
दान देवा री लबध निरंतर, दान देवे ते जोग व्यापार हो।
लाभ लबध पिण निरंतर रहे, वस्त लाभे ते किण ही वार हो॥ ४५ ॥
भोग लबध तो रहे छे निरंतर, भोग भोगवे ते जोग व्यापार हो।
उपभोग पिण लबध छे निरंतर, उपभोग भागवे जिण वार हो॥ ४६ ॥
अतराय अलगी हूआ जीव रे, पुन सारूं मिलसी भोग उपभोग हो।
साधु पुदगल भोगवे ते सुभ जोग छे,, और भोगवे ते असुभ जोग हो॥ ४७ ॥
वीर्य अतराय पयउपसम हूआ, वीर्य लबध उपजें छे ताय हो।
वीर्य लबध ते सगत छे जीव री, उतकष्टी अनती होय जाय हो॥ ४८ ॥
तिण वीर्य लबध रा तीन भेद छें, तिणरी करजो पिछाण हो।
बाल वीर्य कह्यो छे बाल रो, ते चोथा गुणठाणा ताई जाण हो॥ ४९ ॥
पिडत वीर्य कह्यो पिडत तणो, छठा थी लेइ चवदमे गुण ठाण हो।
बाल पिंडत वीर्य कह्यो छें श्रावक तणो, ए तीनोई उजल गुण जाण हो॥ ५० ॥
कदे जीव वीर्य ने फोडवे, ते छे जोग व्यापार हो।
सावद्य निरवद तो जोग छे, ते वीर्य सावद्य नही छे लिगार हो॥ ५१ ॥
वीर्य तो निरतर रहे, चवदमा गुण ठांणा लग जाण हो।
बारमा ताइ तो पयउपसम भाव छे, खायक तेरमे चवदमे गुण ठाण हो॥ ५२ ॥
लबध वीर्य नें तो वीर्य कह्यो, करण वीर्य ने कह्यो जोग हो।
ते पिण सगत वीर्य ज्या लगे, त्या लग रहे पुदगल सजोग हो॥ ५३ ॥
पुदगल विण वीर्य सगत हुवे नही, पुदगल विना नही जोग व्यापार हो।
पुदगल लागा छे ज्या लग जीव रे, जोग वीर्य छे संसार मभार हो॥ ५४ ॥
वीर्य निज गुण छे जीव रो, अतराग अलगा हूआ जाण हो।
ते वीर्य निश्चेइ भाव जीव छे, तिण मे सका मूल म आण हो॥ ५५ ॥
एक मोह करम उपसम हुवे, जब नीपजे उपसम भाव दोय हो।
उपसम समकत उपसम चारित हुवे, ते तो जीव उजलो हुवो सोय हो॥ ५६ ॥
दरसण मोहणी करम उपसम हुवा, निपजें उपसम समकत निधान हो।
चारित मोहणी उपसम हूआ, परगटे उपसम चारित परधान हो॥ ५७ ॥
च्यार घणघातीया करम षय हुवे, जब परगट हुवे खायक भाव हो।
ते गुण सरवथा उजला, त्यांरो जूओ २ सभाव हो॥ ५८ ॥
ग्यानावरणी सरवथा खय हूआं, उपजें केवल ग्यान हो।
दरसणावर्णी पिण खय हुवे सरवथा, उपजें केवल दरसण परधांन हो॥ ५९ ॥

मोहणी करम खय हुवें सरवथा, बाकी रहे नही असमात हो।
जब खायक समकत परगटें, बले खायक चारित जथाख्यात हो॥ ६० ॥
दरसण मोहणी खय हुवे सरवथा, जब निपजें खायक समकत परधान हो।
चारित मोहणी खय हूआ, नीपजे खायक चारित निघांन हो॥ ६१ ॥
अंतराय करम अलगो हूआं, खायक वीर्य सगत हुवें ताय हो।
खायक लब्ध पाचूंइ परगटे, किण ही बात री नही अंतराय हो॥ ६२ ॥
उपसमय खायक षयउपसम निरमला, ते निज गुण जीव रा निरदोष हो।
ते तो देस थकी जीव उजलो, सर्व उजलो ते मोख हो॥ ६३ ॥
देस विरत श्रावक तणी, सर्व विरत साधु री छे ताय हो।
देस विरत समाइ सर्व विरत मे, ज्यूं निरजरा समाइ मोख मांय हो॥ ६४ ॥
देस थी जीव उजले ते निरजरा, सर्व उजलो ते जीव मोख हो।
तिण सूं निरजरा ने मोख दोनूं जीव छें, उजल गुण जीव रा निरदोष हो॥ ६५ ॥
जोड़ कीधी निरजरा ओलखायवा, नाथ दुवारा सहर मझार हो।
संवत अठारे वरस छपने, फागण सुद दसम गुरवार हो॥ ६६ ॥

ढाल : १०

दुहा

निरजरा गुण निरमल कह्यो, उजल गुण जीव रो वशेख।
ते निरजरा हुवें छें किण विधें, सुणजो आंण ववेक॥ १ ॥
भूख तिरषा सी तापादिक, कष्ट भोगवे विविध परकार।
उदे आया ते भोगव्यां, जब करम हुवें छे न्यार॥ २ ॥
नरकादिक दुःख भोगव्यां, करम घस्यां थी हलको थाय।
आ तो सहजा निरजरा हुइ जीव रे, तिणरो न कीयो मूल उपाय॥ ३ ॥
निरजरा तणो कामी नही, कष्ट करें छे विविध परकार।
तिणरा करम अल्प मातर झरे, अकांम निरजरा नों एह विचार॥ ४ ॥
अह लोक अर्थे तप करे, चक्रवतादिक पदवी काम।
केइ परलोक ने अर्थे करे, नही निरजरा तणा परिणांम॥ ५ ॥
केइ जस महिमा वधारवा, तप करे छे ताम।
इत्यादिक अनेक कारण करे, ते निरजरा कही छे अकांम॥ ६ ॥
सुध करणी करे निरजरा तणी, तिण सूं करम कटे छे ताम।
थोडो घणो जीव उजलो हुवे, ते सुणजो राखे चित ठांम॥ ७ ॥

ढाल

[पूज्य भिखन जी रो समरण करता]

देस थकी जीव उजल हुवो छे, ते तो निरजरा अनूप जी।
हिवें निरजरा तणी सुध करणी कहू छू, ते सुणजो धर चूंप जी॥
आ सुध करणी छें कर्म काटण री॥ १॥
ज्यूं साबू दे कपडा नें तपावे, पाणी सूं छाटे करे संभाल जी।
पछे पांणी सूं धोवे कपडा नें, जब मेल छूटे ततकाल जी॥ आ० २॥
ज्यू तप कर नें आतम ने तपावे, ग्यान जल सूं छाटे ताय जी।
ध्यान रूप जल माहे झखोले, जब करम मेल छंट जाय जी॥ ३॥
ग्यांन रूप साबण सुध चोखे, तप रूपी निरमल नीर जी।
धोबी ज्यू छे अंतर आतमा, ते धोवे छे निज गुण चीर जी॥ ४॥
कांमी छें एकत करम काटण रो, और वछा नही काय जी।
तो करणी एकत निरजरा री, तिण सूं करम झड जाय जी॥ ५॥
करम काटण री करणी चोखी, तिणरा छे बारे भेद जी।
तिण करणी कीयां जीव उजल हुवें छें, ते सुणजो आंण उमेद जी॥ ६॥
अणसण करे च्यारूं आहार त्यागे, करे जावजीव पचखाण जी।
अथवा थोडा काल ताइ त्यागे, एहवी तपसा करें जाण २ जी॥ ७॥
सुध जोग रूंध्या साधु रे हूवो सवर, श्रावक रे विरत हुइ ताय जी।
पिण कष्ट सह्यां सू निरजरा हुवे, तिण सू घाल्यो छें निरजरा माय जी॥ ८॥
ज्यू २ भूख तिरषा लागें, ज्यू २ कष्ट उपजें अतत जी।
ज्यूं २ करम कटे हुवे न्यारा, समें २ खिरे छे अनंत जी॥ ९॥
उणों रहे ते उणोदरी तप छे, ते तो दरब ने भाव छें न्यार जी।
दरब ते ऊपगरण उणा राखें वले उणोइ करें आहार जी॥ १०॥
भाव उणोदरी क्रोधादिक वरजे, कलहादिक दिये छें निवार जी।
समता भाव छें आहार उपधि थी, एहवो उणोदरी तप सार जी॥ ११॥
भिख्याचरी तप भिख्या त्याग्या हुवें, ते अभिग्रहा छे विवध परकार जी।
ते तो दरब षेतर काल भाव अभिग्रह छें, त्यारो छे बोहत विस्तार जी॥ १२॥
रस रो त्याग करे मन सुधे, छांड्यो विगयादिक रो सवाद जी।
अरस विरस आहार भोगवे समता सू, तिणरे तप तणी हुवें समाद जी॥ १३॥
काया कलेस तप कष्ट कीया हुवें, आसण करें विवध परकार जी।
सी तापादिक सहे खाज न खणे, वले न करें सोभा नें सिणगार जी॥ १४॥

परीसंलीणीया तप च्यार परकारें, त्यांरा जूजूआ छें नांम जी।
इद्री कषाय ने जोग संलीण्या, विवत सेणासण सेवणा तांम जी॥ १५ ॥
सोइद्री ने विषें नां सव्द सू रुंधे, विषे सव्द न सुणे किंवार जी।
कदा विषे रा सव्द कानां में पडीया, तो राग धेष न करे लिगार जी॥ १६ ॥
इम चषू इंद्री रूप सूं संलीनता, घाण इंद्री गंध सुं जांण जी।
रसइंद्री रस सूं नें फरस इद्री फरस सू, सुरत इंद्री ज्यू लीजो पिछाण जी॥ १७ ॥
क्रोध उपजावारो रुंधण करवो, उदे आयो निरफल करे तांम जी।
मान माया लोभ इम हिज जांणों, कषाय संलीणीया तप हुवें आंम जी॥ १८ ॥
पाडुआ मन ने रुंधे देणों, भलो मन परवरतावणो तांम जी।
इम हिज वचन नें काया जांणों, जोग संलीणीया हुवे आंम जी॥ १६ ॥
अस्त्री पशू पिंडग रहीत थांनक सेवे, ते सुध निरदोषण जांण जी।
पीढ पाटादिक निरदोषण सेवें, विवत सेंणासण एम पिछांण जी॥ २० ॥
ए छव परकारे बाह्य तप कह्यो छें, ते परसिध चावो दीसंत जी।
हिवें छ परकारें अभितर तप कहूं छूं, ते भाष्यो छे श्री भगवंत जी॥ २१ ॥
प्रायछित कह्यों छे दस परकारें, दोष ओलाए प्रायछित लेवंत जी।
ते करम खपाय आराधक थावे, ते तो मुगत में बेगो जावंत जी॥ २२ ॥
विनों तप कह्यों सात परकारें, त्यांरो छें बोहत विसतार जी।
ग्यांन दरसण चारित मन विनों, वचन काया ने लोग ववहार जी॥ २३ ॥
पांचूं ग्यांन तणा गुणग्रांम करणा, ए ग्यांन विनों करणो छे एह जी।
दरसण विनां रा दोय भेद छे, सुसरषा नें अणासातणा तेह जी॥ २४ ॥
सुसरषा बडां री करणी, त्यानें बंदणा करणी सीस नांम जी।
ते सुसरषा दस विध कही छे, त्यांरा जूआ जूआ नांम छें तांम जी॥ २५ ।
गुर आयां उठ उभो होवणो, आसन छोडणो तांम जी।
आसन आमंत्रणों हरष सूं देणो, सतकार ने समांण देणो आंम जी॥ २६ ॥
वंदणा कर हाथ जोडी रहें उभो, आवता देख साह्मों जाय जी।
गुर उभा रहें त्यां लग उभा रहिणो, वें जाये जब पोहचावण जावे ताय जी॥ २७ ॥
अणअसातणा विनां रा भेद, पेंतालीस कह्या जिणराय जी।
अरिहंत नें अरिहंत परूप्यो धर्म, वले आचार्य नें उवभाय जी। २८ ॥
थिवर कुल गण संघ नो विनों, किरीया वादी संभोगी जाण जी।
मत ग्यांनादिक पांचूंई ग्यांन रो, ए पनरेई बोल पिछांण जी॥ २६ ॥
यां पनरां बोलां में पांच ग्यांन फेर कह्या छें, ते दीसे छे चारित सहीत जी।
ए पांच ग्यांन नें फेर कह्या त्यांरी, विनां तणी ओर रीत जी॥ ३० ॥

यारी आसातना टालणी नें विनो करणों, भगत कर देणो समांन जी।
गुणग्रांम करे ने दीपावणा त्यांने, दरसण विनों छें सुध सरधांन जी॥ ३१ ॥
सामायक आदि दे पाचूंई चारित, त्यारो विनों करणो जथाजोग जी।
सेवा भगत त्यांरी हरष सूं करणी, त्यांसूं करणो निरदोष संभोग जी॥ ३२ ॥
सावद्य मन नें परो निवारे, ते सावद्य छें बारे परकार जी।
बारे परकार निरवद मन परवरतावे, तिण सूं निरजरा हुवे श्रीकार जी॥ ३३ ॥
इम हिज सावद्य वचन बारे भेदे, तिण सावद्य ने देवे निवार जी।
निरवद वचन बोले निरदोषण, बारेइ बोल वचन विचार जी॥ ३४ ॥
काया अजेंणा सू नही परवरतावे, तिणरा भेद कह्या सात जी।
ज्यूं सात भेद काया अजे णा सू परवरतावे, जब करम तणी हुवे घात जी॥ ३५ ॥
लोग ववहार विनो कह्यों सात परकारे, गुर समीपे वरतवो तांम जी।
गुरवादिक रे छांदे चालणो, ग्यानादिक हेते करणो त्यांरो कांम जी॥ ३६ ॥
भणायो त्यांरो विनों वीयावच करणी, आरत गवेष करणों त्यांरो कांम जी।
प्रसताव अवसर नों जांण हुवेणो, सर्व कार्य करणो अभिरांम जी॥ ३७ ॥
वीयावच तप छे दस परकारे, ते वीयावच साधां री जांण जी।
करमां री कोड खपे छे तिण थी, नेड़ी हुवें छे निरवांण जी॥ ३८ ॥
सभाय तप छे पांच परकारे, जे भाव सहीत ही करे सोय जी।
अर्थ नें पाठ विवरा सुध गिणीया, करमां रा भड खय होय जी॥ ३९ ॥
आरत रोद्र ध्यांन निवारे, ध्यावे सुकल ध्यांन जी।
ध्यावतो २ उतकष्टों ध्यावे, तो उपजें केवल ग्यांन जी॥ ४० ॥
विउसग तप छें तजवारो नांम, ते तो दरव नें भाव छे दोय जी।
दरव विउसग च्यार परकारे, ते विवरो सुणो सहू कोय जी॥ ४१ ॥
सरीर विउसग सरीर रो तजवो, इम गण नों विउसग जांण जी।
उपधि नों तजवो ते उपधि विउसग, भात पांणी रो इम हिज पिछाण जी॥ ४२ ॥
भाव विउसग रा तीन भेद छे, कषाय संसार नें करम जी।
कषाय विउसग च्यार परकारे, क्रोधादिक च्यारूं छोड्यां छे धर्म जी॥ ४३ ॥
संसार विउसग संसार नों तजवो, तिणरा भेद छें च्यार जी।
नरक तिर्यंच मिनष नें देवा, त्यानें तजनें त्यांसूं हुवें न्यार जी॥ ४४ ॥
करम विउसग छें आठ परकारे, तजणा आठूंइ करम जी।
त्यांनें ज्यूं २ तजे हल को होवें, एहवी करणी थी निरजरा धर्म जी ४५ ॥
बारे परकारे तप निरजरा री करणी, जे तपसा करें जांण जी।
ते करम उदीर उदे आंण खेरे, त्याने नेडी होसी निरवांण जी॥ ४६ ॥

साव रे वारे भेदे तपसा करतां, जिहां २ निरवद जोग रुंधाय जी।
तिहां २ संवर हुवें तपसा रे लारे, तिण सूं पुन लागता मिट जाय जी ॥ ४७ ॥
इण तप माहिलो तप श्रावक करतां, कठे उसभ जोग रुंधाय जी।
जब विरत संवर हुवे तपसा लारे, लागता पाप मिट जाय जी ॥ ४८ ॥
इण तप माहिलो तप इविरती करतां, तिणरे पिण करम कटाय जी।
कोड परत संसार करे इण तप थी, वेगो जाए मुगत रे मांय जी ॥ ४९ ॥
साव श्रावक समदिष्टी तपसा करतां, त्यांरे उतकष्टी टले करम छोत जी।
कदा उतकष्टो रस आवें तिणरे, तो वंधे तीर्थंकर गोत जी ॥ ५० ॥
तप थी आंणे संसार नों छेहडो, वले आंणे करमां रो अंत जी।
इण तपसा तणे परतापे जीवडो, संसारी रो सिध होवंत जी ॥ ५१ ॥
कोड भवां रा करम संचीया हुवे तो, खिण में दिये खपाय जी।
एहवो छें तप रतन अमोलक, तिणरा गुण रो पार न आय जी ॥ ५२ ॥
निरजरा तो निरवद उजल हुवां थी, करम निरवरते हुओ न्यार जी।
तिण लेखे निरजरा निरवद कहीए, वीजूं तो निरवद नहीं छें लिगार जी ॥ ५३ ॥
इण निरजरा तणी करनी छे निरवद, तिणसूं करमां री निरजरां होय जी।
निरजरा नें निरजरा री करणी, ए तो जूआ जूआ छें दोय जी ॥ ५४ ॥
निरजरा तो मोष तणो अंस निश्चे, देश थकी उजलो छें जीव जी।
जिणरे निरजरा करण री चूंप लागी छे, तिण दीधी मुगत री नींव जी ॥ ५५ ॥
सहजां तो निरजरा अनाद री हुवे छें, ते होय २ नें मिट जाय जी।
करम वंधण सूं निवरत्यो नांहीं, संसार में गोता खाय जी ॥ ५६ ॥
निरजरा तणी करणी ओलखावण, जोड कीधी नाथ दुवारा मझार जी।
समत अठारे वरस छपनें, चेत विद बीज नें गुरवार जी ॥ ५७ ॥

८ : बंध पदारथ

--ढाल : ११

दुहा

आठमों पदारथ बंध छें, तिण जीव नें राख्यो छे बंध।
जिण बंध पदार्थ नहीं ओलख्यो, ते जीव छें मोह अंध ॥ १ ॥
बंध थकी जीव दबीयो रहे, काई न रहे उघाडी कोर।
तिण बंध तणा प्रबल थकी, काई न चले जोर ॥ २ ॥
तलाव रूप तो जीव छे, तिणमें पडीया पाणी ज्यूं बध जांण।
नीकलता पांणी रूप पुन पाप छे, बंध ने लीजो एम पिछांण ॥ ३ ॥
एक जीव दरब छे तेहने, असंख्यात परदेस।
सगला परदेसां आश्रव दुवार छे, सगला परदेसां करम परवेस ॥ ४ ॥
मिथ्यात इविरत ने परमाद छे, वले कषाय जोग विख्यात।
यां पांचां तणा वीस भेद छे, पनरे आश्रव जोग में समात ॥ ५ ॥
नाला रूप आश्रव नाला करम नां, ते रूंध्यां हुवें संवर दुवार,
करम रूप् जल आवतो रहे, जब बंध न हुवे लिगार ॥ ६ ॥
तलाव नो पांणी घटे तिण विधे, जीव रे घटे छ करम।
जब कांयक जीव उजल हुवे, ते तो छे निरजरा धर्म ॥ ७ ॥
कदे तलाव रीतो हुवें, सर्व पांणी तणो हुवें सोष
ज्यूं सर्व करमां नो सोषंत हुवें, रीता तलाव ज्यूं मोष ॥ ८ ॥
बंध तो छें आठ करमा तणो, ते पुदगल नी पर्याय।
तिण बंध तणी ओलखणा कहूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[ऋइ २ कर्म विडम्बना]

बंध नीपजें छें आश्रव दुवार थी, तिण बंध ने कह्यों पुन पापो जी।
ते पुन पाप तो दरव रूप छे, भावे बंध कह्यों जिण आपो जी ॥
बंध पदारथ ओलखो* ॥ १ ॥
ज्यूं तीर्थंकर आय उपनां, ते तो दरव तीर्थंकर जाणो जी।
भावे तीर्थंकर तो जिण समे, होसी तेरमें गुणठांणो जी ॥ बं २ ॥
ज्यूं पुन ने पाप लागो कह्यों, ते तो दरव छें पुन ने पापो जी।
भावे पुन पाप तो उदे आयां हुसी, सुख दुःख सोग संतापो जी ॥ ३ ॥
तिण बंध तणा दोय भेद छें, एक पुन तणो बंध जांणों जी।
बीजो बंध छे पाप रो, दोनूं बंध री करजो पिछांणो जी ॥ ४ ॥

यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पुन नों वंध उदे हूआं, जीव नें साता सुख हुवें सोयो जी।
पाप नों बंध उदे हूआं, विविध पणे दुःख होयो जी ॥ ५ ॥
वंव उदे नही ज्यां लग जीव नें, सुख दुःख मूल न होय जी।
वंध तो छता रूप लागो रहें, फोडा न पाडे कोयो जी ॥ ६ ॥
तिण वंध तणा च्यार भेद छे, त्यानें रूडी रीत पिछांणों जी।
प्रकतबंध नें थितबंध दुसरो, अनुभाग नें परदेस बंध जांणो जी ॥ ७ ॥
प्रकतवध छे करमां री जूजूइ, ते करमां रा सभाव रे न्यायो जी।
वांधी छे तिण समें बंध छें, जेसी बांधी तेसी उदे आयो जी॥ ८ ॥
तिण प्रकत नें मापी छें काल सूं, इतरा काल तांइ रहसी तांमो जी।
पछे तो प्रकत विल्लावसी, थित सूं प्रकत बंध छें आंमो जी ॥ ९ ॥
अनुभाग बंध रस विपाक छें, जेसो जेसो रस देसी ताह्यो जी।
ते पिण प्रकत नों बंध रस कह्यों, बांध्या तेसांइज उदे आयो जी ॥ १० ॥
परदेश बंध कह्यों प्रकत बंध तणो, प्रकत प्रकत रा अनंत परदेसो जी।
ते लोलीभूत जीव सूं होय रह्या, प्रकत बंध ओलखाई वशेषो जी ॥ ११ ॥
आठ करमां री प्रकत छें जूजूई, एकी की रा अनंत परदेसो जी।
ते एकी की परदेस जीव रे, लोली भूत हुवा छें वशेषो जी ॥ १२ ॥
ग्यांनावरणी दरसवरणी वेदनी, वले आठमों करम अतरायो जी।
यांरी थित छे सगला री सारिषी, ते सुणजो चित्त ल्यायो जी ॥ १३ ॥
थित छे यां च्यारूं करमां तणी, अंतरमुहरत परिमांणो जी।
उतकष्टी थित यां च्यारूं करमां तणी, तीस कोडा कोडा सागर जांणों जी ॥ १४ ॥
थित दरसण मोहणी करम नीं, जगन तो अंतरमुहरत परमांणो जी।
उतकष्टी थित छे एहनी, सितर कोडा कोड सागर जांणों जी ॥ १५ ॥
जिगन थित चारित मोहणी करम नीं, अंरमुहरत कही जगदीसो जी।
उतकष्टी थित छें एहनीं, सागर कोडा कोड चालीसो जी ॥ १६ ॥
थित कही छे आउखा करम नी, जिगन अंतरमुहरत होयो जी।
उतकष्टी थित सागर तेतीस नीं, आगे थित आउखा री न कोयो जी ॥ १७ ॥
थित नांम नें गोत्र करम तणी, जगन तो आठ मुहरत सोयो जी।
उतकष्टी एकीका करम नी, बीस कोडा कोड सागर होयो जी ॥ १८ ॥
एक जीव रे आठ करमां तणां, पुदगल रा परदेस अनंतो जी।
ते अभवी जीवां थी मापीयां, अनंत गुणां कह्या भगवंतो जी ॥ १९ ॥
ते अवस उदे आसी जीव रे, भोगवीयां विण नहीं छूटायो जी।
उदे आयां विण सुख दुःख हुवें नही, उदे आयां सुख दुःख थायो जी ॥ २० ॥

सुभ परिणांमां करम बांधीया, ते सुभ पणे उदे आसी जी।
असुभ परिणांमां करम बांधीया, तिण करमां थी दुःख थासी जी॥ २१ ॥
पाच वरणा आठोइ करम छें, दोय गंध ने रस पाचूई जी।
चोफरसी आठूइ करम छे, रूपी पुदगल करम आठोइ जी॥ २२ ॥
करम तो लूखा ने चोपड्या, वले ठंढा उना होइ जी।
करम हलका नही भारी नही, सूहाली ने खरदरा न कोइ जी॥ २३ ॥
कोइ तलाव जल सूं पूर्ण भर्यो, खाली कोर न रही कायो जी।
ज्यू जीव भर्यो करमां थकी, आ तो उपमा देस थी ताह्यो जी॥ २४ ॥
असंख्याता परदेस एक जीव रे, ते असंख्याता जेम तलावो जी।
सारा परदेस भरीया करमां थकी, जांणें भरीया चोखूणी बाबो जी॥ २५ ॥
एक एक परदेस छे जीव नो, तिहां अनंता करम ना परदेसो जी।
ते सारा परदेस भरीया छे बाव ज्यू, करम पुदगल कीयों छें परवेसो जी॥ २६ ॥
तलाव खाली हुवे छे इण विधे, पेंहला तो नाला देवे रूधायो जी।
पछे मोरियादिक छोडे तलाव री, जब तलाव रीतो थायो जी॥ २७ ॥
ज्यू जीव रे आश्रव नालो रूंध दे, तपसा करे हरख सहीतो जी।
जब छेहडो आवे सर्व करम नों, तब जीव हुवे करम रहीतो जी॥ २८ ॥
करम रहीत हुवो जीव निरमलो, तिण जीव नें कहिजे मोखो जी।
ते सिध हुवो छे सासतो, सर्व करम बंध कर दीयो सोषो जी॥ २९ ॥
जोड कीधी छे बंध ओलखायवा, नाथ दुवारा सहर मभारो जी।
समत अठारे ने वरस छपने, चेत विद बारस सनीसर वारो जी॥ ३० ॥

९ : मोख पदारथ

ढाल : १२

दुहा

मोख पदार्थ नवमो कह्यों, ते सगला मांहें श्रीकार।
सर्व गुणा करी सहीत छें, त्यांरा सुखां रो छेह न पार ॥ १ ॥
करमां सूं मूकाणा ते मोख छें, त्यारा छें नांम विशेष।
परमपद निरवाण ते मोख छे, सिद्ध सिव आदि छें नांम अनेक ॥ २ ॥
परमपद उत्कष्टो पद पामीयो, तिण सूं परमपद त्यारो नांम।
करम दावानल मेट सीतल थया, तिणसूं निरवांण नांम छें तांम ॥ ३ ॥
सर्व कार्य सिधा छें तेहनां, तिण सू सिध कह्या छें तांम।
उपद्रव्य करेंनें रहीत हूआं, तिण सू सिव कहीजे त्यांरो नाम ॥ ४ ॥
इण अनुसारे जाणजो, मोख रा- गुण परमाणे नाम।
हिवें मोख तणा सुख वरणवू, ते सुणजो राखे चित्त ठांम ॥ ५ ॥

ढाल

(पाखड वधसी आरे पाचवे)

मोख पदार्थ नां सुख सासता रे, तिण सुखां रो कदेय न आवें अंत रे।
ते सुख अमोलक निज गुण जीव रा रे, अनंत सुख भाख्या छे भगवंत रे॥
मोख पदार्थ छें सारां सिरे रे* ॥ १ ॥
तीन काल रा सुख देवां तणां रे, ते सुख इधका घणां अथाग रे।
ते सगलाइ सुख एकण सिध नें रे, तुले नावे अनंतमें भाग रे ॥ मो० २ ॥
संसार नां सुख तो छें पुदगल तणां रे, ते तो सुख निश्चें रोगीला जांण रे।
ते करमां वस गमता लागे जीव नें रे, त्यां सुखां री बुधिवंत करो पिछांण रे ॥ ३ ॥
पांव रोगीलो हुवें छें तेहनें रे, अतंत मीठी लागें छें खाज रे।
एहवा सुख रोगीला छें पुन तणा रे, तिण सूं कदेय न सीझे आतम काज रे ॥ ४ ॥
एहवा सुखां सूं जीव राजी हुवें रे, तिणरे लागें छें पाप करम रा पूर रे।
पछें दुःख भोगवे छें नरक निगोद में रे, मुगति सुखां सूं पडीयो दूर रे ॥ ५ ॥
छूटा जनम मरण दावानल तेह थी रे, ते तो छें मोष सिध भगवंत रे।
त्यां आठोंइ करमां नें अलगा कीयां रे, जब आठोंइ गुण नीपना अनंत रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ते मोख सिव भगवंत तो इंहा हिज हूआं रे, पछें एक समा में उंचा गया छे थेट रे।
सिघ रहिवा नो खेतर छें तिहां जाए रह्या रे, अलोक सू जाए अड्या छें नेट रे॥ ७॥
अनंतो ग्यांन ने दरसन तेहनों रे, वले आतमीक सुख अनंतों जाण रे।
षायक समकत छे सिघ वीतराग तेहने रे, वले अवगाहणा अटल छे निरवांण रे॥ ८॥
अमूरतीपणों त्यांरो परगट हूवो रे, हलको भारी न लागे मूल लिगार रे।
तिण सूं अगुरलघू नें अमूरती कह्यां रे, ए पिण गुण त्यांमे श्रीकार रे॥ ८॥
अतराय करम सू तो रहीत छे रे, त्यारे पुदगल सुख चाहीजे नांय रे।
ते निज गुण सुखा माहे भिले रह्यां रे, कांइ उणारत रही न दीसे कांय रे॥ १०॥
छूटा कलकली भूत संसार थी रे, आठोइ करमा तणो कर सोष रे।
ते अनंता सुख पांम्या सिवे रमणी तणा रे, त्याने कहिजे अविचल मोख रे॥ ११॥
त्यारा सुखां ने नही काई ओपमा रे, तीनोइ लोक संसार मभार रे।
एक धारा त्यारा सुख सासता रे, ओछा इधका सुख कदेय न हुवे लिगार रे॥ १२॥
तीरथ सिघा ते तीरथ मां सू सिघ हूआं रे, अतीरथ सिघा ते विण तीरथ सिघ थाय रे।
तीथकर सिघा ते तीरथ थापने रे, अतीथंकर सिघा ते विना तीथकर ताय रे॥ १३॥
सयवुवी सिघा ते पोते समभ ने रे, प्रतेकबुधी सिघा ते कायक वस्त देख रे।
बुधवोही सिघा ते समझे ओरा कने रे, उपदेस सुणे ने ग्यान वशेष रे॥ १४॥
स्वलिंगी सिघा साधा रा भेप मे रे, अनलिंगी सिघा ते अन लिंगी मांय रे।
ग्रहलिंगी सिघा ग्रहस्थ रा लिंग थका रे, अस्त्री लिंग सिघा अस्त्री लिंग मे ताय रे॥ १५॥
पुरख लिंग सिघा ते पुरख ना लिंग छतां रे, निपुसक सिघा निपुसक लिंग में सोय रे।
एक सिघा ते एक समे एक हीज सिघ हूआ रे, अनेक सिघा ते एक समे अनेक सिघ होय रे॥ १६॥
ग्यान दरसन ने चारित तप थकी रे, सारा हूआं छे सिघ निरवांण रे।
या च्यारा विना कोइ सिघ हूओ नही रे, ए च्यारूंई मोष रा मारग जाण रे॥ १७॥
ग्यांन थी जाणे लेवें सर्व भाव ने रे, दरसन सू सरध लेवे सयमेव रे।
चारित सूं करम रोके छे आवता रे, तपसा सू करमा ने दीया खेव रे॥ १८॥
एं पनरेइ भेदे सिघ हूआं तकेरे, सगला री करणी जाणों एक रे।
वले मोष में सुख सगला रा सारिषा रे, ते सिव छें अनंत भेदे अनेक रे॥ १९॥
मोष पदार्थ नें ओलखायवा रे, जोड कीधी छे नाथ दुवारा मभार रे।
समत अठारे नें वरस छपने रे, चेत सुद चोथ ने सनीसर वार रे॥ २०॥

ढाल : १३

दुहा

केइ भेष धार्‍यां रा घट मर्भे, जीव अजीव री खबर न कांय।
ते पिण गोला फेंके गालां तणा, ते पिण सुध न दीसे कांय॥ १॥
नव पदार्थ रो त्यांरे निरणों नही, छ दरबां रो निरणों नांय।
न्याय निरणा विनां बक बोकरे, तिणरो सोच नही मन मांय॥ २॥
जीव अजीव दोनू जिण कह्या, तीजी वस्त न कांय।
जे जे वस्त छे लोक में, ते दोयां में सर्व समाय॥ ३॥
नव ही पदार्थ जिण कह्या, त्यांनें दोयां में घाले नांय।
त्यांरे अंधकार घट में घणों, ते भूल गया भर्म मांय॥ ४॥
उंधी २ करे छें परूपणा, ते भोला ने खबर न कांय।
तिण सू नव पदार्थ रो निरणो कहूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५॥

ढाल

[मेघ कुंवर हाथी रा भव में]

जीव ते चेतन अजीव अचेतन, त्यांनें बादर पणे तो ओलखणा सोरा।
त्यारा भेदानभेद जूआजूआ करतां, जब तो ओलखणा छे अति ही दोरा।
जीव अजीव सूधा न सरधे मिथ्याती॥ १॥
जीव अजीव टालेने सात पदार्थ, त्याने जीव अजीव सरधें छें दोनूंइ।
एड़वी उंधी सरधा रा छे मूढ मिथ्याती, त्यां साधू रो भेष ले आतम विगोइ॥
जीव अजीव सूधा न सरधें मिथ्याती॥ २॥
पुन पाप नें बंध ए' तीनूंइ करम, करम ते निश्चेंइ पुदगल जांणो।
पुदगल छें ते निश्चेंइ अजीव; तिण मांहें संका मूल म आंणो॥
पुन पाप नें अजीव न सरधें मिथ्याती॥ ३॥
आठ करमां नें रूपी कह्या छे जिणेसर, त्यामें पांचूंइ वर्ण नें गंध छें दोय।
वले पांचूंइ रस नें च्यार फरस छे, ए' सोलें बोल पुदगल अजीव छे सोय॥
पुन पाप नें अजीव न सरधें मिथ्याती॥ ४॥
पुन पाप वेहूं नें ग्रहे आश्रव, पुन पाप ग्रहे ते निश्चें जीव जांणो।
निरवद जोगां सूं पुन ग्रहे छें, सावद्य जोगां सूं पाप लागे छे आंणो॥
आश्रव नें जीव न सरधें मिथ्याती॥ ५॥
करमां नां दुवार आश्रव जीव रा भाव, तिण आश्रव नां बीसोंइ बोल पिछांणो।
ते वीसोंइ बोल छे करमां रा करता, करमां रा करता निश्चेंइ जीव जांणों।
आश्रव नें जीव न सरधें मिथ्याती॥ ६॥

आतमा ने वस करें ते संवर, आतमा वस करे ते निश्चेंइ जीव।
ते तो उपसम खायक षयउपसम भाव, ए तो जीव रा भाव छें निरमल अतीव॥
संवर ने जीव न सरधे मिथ्याती॥ ७॥

संवर ते आवतां करमां ने रोके, आवतां करम रोके ते निश्चेइ जीव।
तिण संवर ने जीव न सरधे अग्यानी, तिणरे नरक निगोद री लागी छे नीव॥
तिण संवर ने जीव न सरधे मिथ्याती॥ ८॥

देस थकी करमां ने तोडे, जब देस थकी जीव उजलो होय।
जीव उजलो हुओ छे तेहिज निरजरा, निरजरा जीव छे तिणमें सका न कोय॥
इण निरजरा ने जीव न सरधे मिथ्याती॥ ९॥

करमां ने तोडे ते निश्चेंइ जीव, करम तूटा थका उजलो हुवो जीव।
उजला जीव ने निरजरा कही जिण, जीव रा गुण छें उजल अत ही अतीव॥
इण निरजरा ने जीव न सरधे मिथ्याती॥ १०॥

समसत करम थकी मूंकावें, ते करम रहीत आतमा मोष।
इण संसार दुख थी छूट पडया छे, ते तो सीतलीभूत थया निरदोष॥
तिण मोष नें जीव न सरधें मिथ्याती॥ ११॥

करमां थकी मूंकावे ते मोष, तिण मोष नें कहिजें सिध भगवांन।
वले मोष नें परमपद निरवांण कहिजें, ते तों निश्चेइ निरमल जीव सुध मांन॥
तिण मोष नें जीव न सरधें मिथ्याती॥ १२॥

पुन पाप नें बंध ए तीनूंइ अजीव, त्यांनें जीव नें अजीव सरधें दोनूंइ।
एहवी उंधी सरधा रा छें मूढ मिथ्याती, त्यां साध रा भेष में आतम विगोइ॥
पुन पाप नें अजीव न सरधे मिथ्याती॥ १३॥

आश्रव संवर निरजरा नें मोष, ए निमाइ निश्चे जीव च्यांरूइ।
त्यानें जीव अजीव दोनूइ सरधें, तिण उंधी सरधा सूं आतम विगोइ॥
यां च्यारां ने जीव न सरधे मिथ्याती॥ १४॥

नव पदार्थं मे पांच जीव कह्या जिण, च्यार पदार्थ अजीव कह्या भगवान।
ए नव पदार्थं री निरणो करसी, तेहिज समकत छें सुध मांन॥
जीव अजीव नें सुध न सरधें मिथ्याती॥ १५॥

जीव अजीव ओलखावण काजें, जोड कीधी पुर सहर मझार।
समत अठारें सत्तावनें व्रसें, भादवा सुद पूनम नें बुधवार॥
जीव अजीव नें सुध न सरधें मिथ्याती॥ १६॥

—:: ● ::—

रत्न : २

श्रावक ना बारे व्रत

व्रत पहिलो

(स्थूल प्राणातपात विरमण व्रत)

ढाल : १

दुहा

पांच अणुव्रत परवरा, तीन गुण वरत सार।
सिख्या वरत च्यारे चतुर, तेहनो करो विचार॥ १ ॥
पहिलां में हिंसा तजे, दूजें भूठ परिहार।
तीजे अदत्त चौथें अबंभ, पांचमें तजे धन सार॥ २ ॥
पहिलो गुण वरत दिसि तणो, दूजें भोग पचखांण।
तीजें अनरथ परहरे, ए तीनू गुण वरत जाण॥ ३ ॥
सामायक पहिलो सिख्या, दूजें सवर जांण।
तीजें पोषद कहीजीयें, चौथें सावा नें दे दान॥ ४ ॥
यां बारे वरतां तणों, कहीये छे विसतार।
भाव धरी भवियण सुणो, मन मे आण विचार॥ ५ ॥

ढाल

[जिन भाख्या पाप अठार]

श्रावक ना व्रत बार, पाले निरतीचार।
ते दुरगत नहिं पडे ए, भवसायर तिरे ए॥ १ ॥
पेहलो वरत इम जांण, तिण में हिंसा ना पचखांण।
हिंसा तस तणी ए, बीजी थावर भणी ए॥ २ ॥
वसतां ग्रहस्थावास, हिंसा हुवे जास।
आरम्भ विण करीये ए, पेट किम भरीये ए॥ ३ ॥
करूं तस तणा पचखाण, थावर नो परमांण।
भेद तस तणां ए, ग्यांनी कह्या घणां ए॥ ४ ॥
कोई मोनें घाले घात, मांहरो अपराधी साख्यात।
खमतां दोहिलो ए, नहि मोनें सोहिलो ए॥ ५ ॥
सांतो दे धन लेजाय, अथवा लूंटे आय।
खून करे जरे ए, सूंस नही तरे ए॥ ६ ॥

विण अपराधी होय, तिणरी हिंसा दोय।
मारे जांणतां ए, वले अजांणतां ए॥ ७॥
म्हारे धान जोखण रो काम, गाड़ी चढ़ जाऊं गाम।
खेती हल खड़ूं ए, सूर निदांण करूं ए॥ ८॥
तिहां बहू जीव हणाय, किम पालूं मुनीराय।
नही सफें एसो ए, ग्रहवासे फस्यो ए॥ ९॥
आकुटी ने साम, जीव मारण रे काम।
व्रत छै जांणतां ए, नहीं अजांणतां ए॥ १०॥
म्हारी इसडी इरज्या नाहि, चालूं अंधारा माहि।
वसतू पूंजूं नहीं ए, लेवूं मूंकूं सही ए॥ ११॥
थाप लाठी रो नेम, मोसूं चाले केम।
चोपद हाकणा ए, दोपद हठ्कणा ए॥ १२॥
इम करतां जीव मराय, जीव काया जूदा थाय।
हणवा बुध नहीं धरी ए, विना बुध मरी ए॥ १३॥
हणवारी बुध होय, जीव न मारूं कोय।
सेउपयोगे करी ए, एसी विगत धरी ए॥ १४॥
हिंसानां पचखांण, में कीधा परमांण।
जावजीव करी ए, करण जोग धरी ए॥ १५॥
धिन धिन जे ले वैराग, ज्यारे सर्व हिंसा रा त्याग।
तस थावर तणीं ए, अणकंपा घणीं ए॥ १६॥
हूं ग्रहस्थ मुनीराज, म्हारे आरम्भ काज।
इविरत बहु घणी ए, तस थावर तणी ए॥ १७॥
धिन धिन साधू मुनीराय, ते सुमते सुमता थाय।
जीवे ज्यां भणी ए, न चूके अणी ए॥ १८॥
धिग धिग ग्रहस्थावास, म्हारे मोटो पड़ीयो पास।
हिंसा बहु घणी ए, लागे मो भणी ए॥ १९॥
ग्यांनादिक आंकस ल्याय, मन नें आंणी ठाय।
हिंसा टालसूं ए, ममता वालसूं ए॥ २०॥
जावजीव पचखांण, नहि मोंनें आसान।
लफरो बहु घणो ए, न्यातीलां तणो ए॥ २१॥
धिन धिन साधू सूर, जिण लफरो कीधो दूर।
तिण विध मोंबत ए, खातो नहि खतै ए॥ २२॥

व्रत दूजो

(स्थूल मृषावाद विरमण व्रत)

ढाल २

दुहा

दूजो व्रत श्रावक तणों, करे झूठ तणों परमांण।
त्यागे माठो जाण नें, पाले जिणवर आंण ॥ १ ॥
झूठा बोला मांनवी, नहिं ज्यारी परतीत।
मनष जमारो हार ने, नरकां हुवे फजीत ॥ २ ॥

ढाल

[जिण भाख्या पाप अठार]

झूठ तणां पचखांण, नाहना मोटा जाण।
पचखे मोटका ए, केयक छोटका ए ॥ १ ॥
छोटा न बोलूं केम, म्हारो ग्रहवासा सूं पेम।
विणज सोदा करूं ए, मन मे लोभ धरूं ए ॥ २ ॥
मोटा पांच प्रकार, तेहनो करूं परिहार।
व्रत करूं इसो ए, मोसूं निभे जिसो ए ॥ ३ ॥
किन्या गोवाली जांण, तीजी भोम पिछांण।
थापण मोसो करे ए, कूड़ी साख भरे ए ॥ ४ ॥
किन्यां रा भेद अपार, करणो सूंस विचार।
वरसां छोटकी ए, न कहणी मोटकी ए ॥ ५ ॥
गहली गूगी होय, वले आंख नहिं दोय।
कांणी मीमरी ए, आंख्यां चीपडी ए ॥ ६ ॥
काली कोढणी नार, काना न सुणे लिगार।
टूंटी पांगली ए, बोले तोतली ए ॥ ७ ॥
रोग घणो घट मांय, जीवण री आस न कांय।
वेलजर तेजरो ए, आवे एकंतरो ए ॥ ८ ॥
वले रोग छे खेन, जीव न पामें चेन।
रकतपीती तणी ए, दुरगंध अति घणी ए ॥ ९ ॥

कूवी डूवी होय, बाडी बांकी जोय।
छोटी वांवणी ए, आंख्यां बांभणी ए॥ १० ॥
हीण वस री होय, तिणरी जात न जांणे कोय।
आ तो जाये जठे ए, साख न भरे कठे ए॥ ११ ॥
रूप रोग ने खोड़, वले वरस दे तोड़।
अछतो नहि भाषणो ए, हुवै जिम दाखणो ए॥ १२ ॥
यां बोलां रो साम, आय पड़े कोइ कांम।
घर मांडे जठें ए, भूठ न बोलूं तठे ए॥ १३ ॥
हासा मसकरी काज, म्हारे सूंस नही मुनीराज।
पलतां दोहिलो ए, नहि मोनें सोहिलो ए॥ १४ ॥
इत्यादिक परमांण, में कीधा पचखांण।
इमहीज पुरख तणां ए, कन्या ज्यूं भाषणां ए॥ १५ ॥
इम गोवाली जांण, दूध तणो परमांण।
वेत न ओछारणो ए, हुवें जिम दाखणो ए॥ १६ ॥
भोमाली घर ने हाट, वले बाघ नें घाट।
धरती बावण तणी ए, इत्यादिक घणी ए॥ १७ ॥
कोइ धन सूंपे आय, हूं राखूं घर मांहि।
आय ने मांगे तरे ए, नटूं नहि जरे ए॥ १८ ॥
मागे धणी जो आय, बाप भाई नें माय।
उ वारस आय अड़े ए, राजा रोके जरे ए॥ १९ ॥
जव भूठ बोलण रो नेम, राखूं वरत सूं पेम।
चोखो पालसूं ए, दोपण टाल सूं ए॥ २० ॥
मांगे अनेरो आय, तो नट जावूं मुनीराय।
सूंस नही कियो ए, लोभे चित दीयो ए॥ २१ ॥
साख भरावे मोय, भूठ न बोलू कोय।
ते पिण मोटकी ए, नहीं छोटकी ए॥ २२ ॥
जो हूं बोलूं वाय, तो घर पेलारो जाय।
भाषा तोलणी ए, पछे बोलणी ए॥ २३ ॥
करे भूठ रा भेद, त्याग्या आण उमेद।
मनोरथ जद फले ए, भूठ छोटोइ टले ए॥ २४ ॥
करण जोग घाली ने एम, करे भूठ रा नेम।
वरत करे इसो ए, पोते निभे जीसो ए॥ २५ ॥

व्रत तीजो

(स्थूल अदत्त विरमरा व्रत)

ढाल : ३

दुहा

तीजो व्रत श्रावक तणो, करे अदत्त रा त्याग।
मन मे सुमता आणीया, चढे भाव वेराग ॥ १ ॥
अह लोके जस अति घणो, परलोके सुख थाय।
भाव सहित अराधीया, जन्म मरण मिट जाय ॥ २ ॥
चोरी करे ते मानवी, गया जमारो हार।
मनष तणो भव खोय ने, नरका खाए मार ॥ ३ ॥
तीजो व्रत छे एम, करे अदत्त रा नेम।

ढाल

[जिन भाख्या पाप अठार]

न करे मोटकी ए, वले छोटकी ए ॥ १ ॥
म्हानी किम त्यागूं साम, म्हारे घास इंधण रो काम।
खिण खिण किणनें केवु ए, किहा किहा आम्या लेवु ए ॥ २ ॥
म्हानी त्यागे ते घिन, पिण म्हारो नहि मन।
चित्त चोखो नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ३ ॥
सांतो दे गांठी छोड, घाडो कर तांलो तोड।
वसतु मोटी अछे ए, धणी जाण्या पछे ए ॥ ४ ॥
ऐसा अदत्त रा त्याग, मे पचख्यो आण वैराग।
ते पिण परतणी ए, नही घर भणी ए ॥ ५ ॥
म्हारा कुटवादिक में माल, मो मे पडे हवाल।
भीड घणी सही ए, मांग्या दे नही ए ॥ ६ ॥
वले भूखो न मिले अन, म्हारा बाप भाई ने धन।
सेठो कीयो सही ए, मोंने दे नही ए ॥ ७ ॥
जब तालो ल्यू तोड, वले गाठडी छोड।
सांतो दे चोरसू ए, खोसल्यू जोर सू ए ॥ ८ ॥
इतरा मो आगार, ते नरक तणा दातार।
रमणी वस पड्यो ए, जजीरा जड्यो ए ॥ ९ ॥

राजा लेवे डंड, हुवे लोक मे भड।
चोरी नही करूं ए, ऐसो व्रत धरू ए ॥ १० ॥
इसो पले मुनीराय, मोने दो पचखाय।
जीवे ज्यां भणी ए, व्रत चोरी तणो ए ॥ ११ ॥
चोरी कर्म चण्डाल, तिण थी पडे हवाल।
दुख नरकां तणां ए, सहे अति घणां ए ॥ १२ ॥
चोरी ले पर माल, तिण में पडे हवाल।
नरक निगोद तणां ए, फल चोरी तणां ए ॥ १३ ॥
पर धन लेवे ताहि, दे पेला रे दाहि।
ते नरक ना पावणा ए, न्यात लजावणा ए ॥ १४ ॥
इहलोक उदे हुवे पाप, दुख भुगते आपो आप।
मार घणी पडे ए, विण आइ मरे ए ॥ १५ ॥
तिणरा काटे हाथ नें पाय, वले सूली देवे चढाय।
नकटो नें बूटों करे ए, वले मार घणी पड़े ए ॥ १६ ॥
मुआं पछे चोर री काय, न्हाखे खांइ मांय।
तिहां कुत्ता आयनें ए, विगाडे काय ने ए ॥ १७ ॥
वले काग चांचां सूं मार, तिणरा डीया काढे बार।
शरीर तिण तणो ए, विकराल दीसे घणो ए ॥ १८ ॥
तिण ने देखे मात ने तात, मन में घणा सीदात।
इण चोरी कर परतणी ए, लजाया म्हां भणी ए ॥ १९ ॥
लोक करे चोरी नी बात, ते सुणे मात नें तात।
बोले जब रोवता ए, नीचो जोवता ए ॥ २० ॥
चोरी सूं दुख अतंत, तिणरो कहिता न आवे अंत।
चिहुं गति में भटके घणो ए, ते पाप चोरी तणो ए ॥ २१ ॥
इम सांभलने नर नार, चोरी म करो लिगार।
समता रस आंणनें ए, त्यागो जांणनें ए ॥ २२ ॥
कोइ आंणे मन वैराग, चोरी सर्व थकी दे त्याग।
करण जोग करी ए, मन समता धरी ए ॥ २३ ॥
कोइ सूंस करे दे भांग, तिणरा घणा नीकलसी सांग।
महा पापी मोटको ए, कर्मा दियो धाको ए ॥ २४ ॥
चोखो पालसी सूंस, त्यांरी पूरी जे मन हूंस।
जासी देवलोक में ए, केई जाए मोख में ए ॥ २५ ॥

व्रत चौथो

(स्वदार संतोष परदार विरमण व्रत)

ढाल : ४

दुहा

मनष तणो भव पाय ने, जे नर पाले सील।
सिव रमणी बेगी वरे, रहे मुगत मे लील ॥ १ ॥
साधु त्यागे सर्वथा, ग्रहचारी पर नार।
माठी निजर जोवे नहीं, तिण रो खेवो पार ॥ २ ॥
एक एक श्रावक एहवा, आंणी मन वैराग।
भोग जाणी विष सारिखा, घर नारी दें त्याग ॥ ३ ॥

ढाल

[जिन भाख्या पाप अठार]

चोथो व्रत इम जाण, अबंभ तणा पचखांण।
देवगणा मिनषणी ए, त्यागे तिरजंचणी ए ॥ १ ॥
वले पोता री नार, तेहनो करे विचार।
तजे दिन रात नी ए, परणी हाथ नी ए ॥ २ ॥
परवीयादिक नो नेम, निरतो पाले एम।
मोहणी परहरे ए, आतम वस करे ए ॥ ३ ॥
कोई सर्व थकी दे त्याग, आंणी मन वैराग।
विषे ओधरे ए, ब्रह्म वृत धरे ए ॥ ४ ॥
मारे घर नारी सूं नेह, तिणने किम दूं छेह।
आतम वस नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ५ ॥
करूं दिवस दिवस तणा पचखांण, रात तणो परमांण।
संतोष आदरूं ए, विषे परहरूं ए ॥ ६ ॥
पर नारी सूं पेम, म्हे कीधो छे नेम।
सूइ डोरे करी ए, एसी विरत धरी ए ॥ ७ ॥
जे सेवे पर नार, ते गया जमारो हार।
नरकां मांहें पड़े ए, ढीलो नहिं करे ए ॥ ८ ॥
चोथो व्रत घणो श्रीकार, सारा व्रतां रो सिरदार।
व्रतां रो नायको ए, मुगत रो दायको ए ॥ ९ ॥

सील वृत छे मोटो रतन्न, तिणरा करे जतन्न।
ते आतम उघरे ए, सिव रमणी वरे ए॥ १०॥
ए व्रत पाले निरदोष, त्याने नेड़ी छे मोख।
तिण मे संका नही ए, श्री जिण मुख कही ए॥ ११॥
चारूं जात रा देव, करे ब्रह्मचारी नी सेव।
वले सीस नमावता ए, वादे गुण गावता ए॥ १२॥
जिण चोथो वरत दीयो भांग, त्यांरा घणा नीकलसी सांग।
ते नरक मांहे पडे ए, घणो रड़बडे ए॥ १३॥
इह लोके फिट फिट होय, पर लोके दुरगति जोय।
तिण जन्म विगाडीयो ए, मानव भव हारीयो ए॥ १४॥
जातवंत कुलवंत, ते आतम नित दमंत।
ते व्रत पालसी ए, कुल उजवालसी ए॥ १५॥
नहीं जातवंत कुलवंत, वले रस ग्रिधी अतंत।
ते विषय रो प्यासीयो ए, तिण व्रत विणासीयो ए॥ १६॥
निरलजा लज्या रहीत, वले विषय विकार सहीत।
तिण वृत ने कापियो ए, ते मोटो पापीयो ए॥ १७॥
ब्रह्म व्रत रा भांगणहार, धिग त्यांरो जमवार।
ते न्यात लज्जावणा ए, दुरगति ना पावणा ए॥ १८॥
घणा लोकां रे मांहि, उंचे सुर बोल्यो न जाय।
आ खांमी मोटी घणी ए, व्रत भांग्यां तणी ए॥ १९॥
कोइ ओ मोटो करे अकाज, लज्यावंत ने आवे लाज।
निरलजा लाजे नही ए, सेहल गिणे सही ए॥ २०॥
इण सील भांग्यां रो सोथ, कहतब न मिटे कोय।
आ मोटी मेहणी ए, जीवे ज्यां भणी ए॥ २१॥
इण पापी कियो अकाज, अजेय न आवे लाज।
तोही बोले गाजतो ए, निरलज नही लाजतो ए॥ २२॥
ब्रह्म व्रत तणो करे भंग, तिणरो कदे न कीजे संग।
कुकर्म मांहे मिलीयो ए, कर्म कादे कलीयो ए॥ २३॥
जो सेवे परनार, ते गया जमारो हार।
लजावे न्यात में ए, पड़ियो मिथ्यात मे ए॥ २४॥
परनारी मा बेन समांन, त्यां सूं न करे माठो ध्यांन।
चित चोखो कीयो ए, ब्रह्म व्रत लीयो ए॥ २५॥

कोइ छोडी सर्म नें लाज, त्यांसू इज करे अकाज।
ते निरलज नहिं लाजीयो ए, डाकी वाजीयो ए ॥ २६ ॥
कर्म जोगे जाए भाज, पिण केकां ने आवे लाज।
केइ लाजे नही ए, वेसरमा सही ए ॥ २७ ॥
केई सीदावें मन माय, म्हें मोटो कियो अन्याय।
पिछतावे घणो ए, खोटा किरतब तणो ए ॥ २८ ॥
जिणरो चोथो वरत गयो भाग, तिणरो पूरो अभाग।
ते नागो निरलजो ए, तिण में नही मजो ए ॥ २९ ॥
ब्रह्म व्रत तणी नव बाड, ते पाले निरतीचार।
अडिग सेंठो घणो ए, मन जोग तणो ए ॥ ३० ॥
जिण लोपे दीधी वाड, तिण रो हुवे विगाड़।
खुराबी हुवे घणी ए, ब्रह्म व्रत तणी ए ॥ ३१ ॥
व्रत भाग सेवे परनार, ते गया जमारो हार।
फिट फिट हुवे घणो ए, कुजस तिण तणो ए ॥ ३२ ॥
चोखे चित्त पाले सील, ते रहे मुगत मे लील।
राखें नित आसता ए, पामें सुख सासता ए ॥ ३३ ॥
दिन दिन चढते रंग, पाले व्रत अभग।
मन सुमता धरे ए, ते सिव रमणी वरें ए ॥ ३४ ॥
ब्रह्म व्रत ने श्री जगदीस, उपमा कही बतीस।
दसमा अग में कही ए, ते सूरा पाले सही ए ॥ ३५ ॥
करण जोग सू जांण, विवरा सुध पचखांण।
चोखे चित्त पालीये ए, दोषण टालिये ए ॥ ३६ ॥

व्रत पांचमों

(स्थूल परिग्रह विरमण व्रत)

ढाल : ५

दुहा

पांचमे व्रत त्यागे परिग्रहो, ते परिग्रह मुरछा जांण।
तिण सूं निरंतर जीव रे, पाप लागे छे आंण॥ १ ॥
ए मोटो पाप छे परिग्रह, तिण थी गोता खांय।
सांसो हुवे तो देखलो, तीन मनोरथ मांय॥ २ ॥
ओ अनर्थ ग्यांनी भाषीयो, नरक ले जावे तांण।
जती मार्ग नो भांडणो, निषेध्यों इम जांण॥ ३ ॥
खेतू वथू हिरण सोवन तणो, धन नें धांन जांण।
वले दोपद नें चोपद तणा, कुंवि धात तणो परमांण॥ ४ ॥
खेतू ते उघाड़ी भूमका, वथू हाट हवेली जाण।
रूपा नें सोना तणो, करे सक्त सारूं पचखांण॥ ५ ॥
धन ते रोकड नांणो गिणती तणो, धांन री जात अनेक।
कुवीधात ते घर विखेरो कह्यो, त्यानें त्यागे आंण विवेक॥ ६ ॥
सचित अचित मिश्र द्रव्य छे, यां सगलां री करे प्रमांण।
राख्या ते सगला इविरत में छें, बाकी सगलां रा कीया पचखांण॥ ७ ॥
ए नवोइ जात रो, बाहिरज परिग्रह जाण।
मुर्छा अभितर परिग्रहो, तिण सूं पाप लागे छे आंण॥ ८ ॥
बाहिरज परिग्रह नव जात रो, ममता कर ग्रह्यो छै ताहि।
तिण सूं यांनेंइ परिग्रह कह्यो, पिण यां सूं पाप न लागे आय॥ ९ ॥

ढाल

[जिण भाष्या पाप अठार]

परिग्रहा नों परिहार, संख्या करे बिचार।
ममता उघरे ए, नव भेदे करे ए॥ १ ॥
खेतू वत्थू छें जेह, सोनो रूप्पो तेह।
धन धान दोपद ए, कुंवी धात चोपद ए॥ २ ॥
ए नव विध संख्या थाय, वंछा दीए मिटाय।
त्रिसणा परहरें ए, मन सुमता धरें ए॥ ३ ॥

ममता वडी वलाय, चिहुं गति में लटकाय।
घणो रडवडे ए, नहिं जक पडे ए ॥ ४ ॥
मन सूं करी विचार, ए नरक तणी दातार।
एहने टालवे ए, व्रत ने पालवें ए ॥ ५ ॥
नव जात रो परिग्रह नाहि, विचार करो मन मांहि।
मुर्छा परिग्रहो ए, ओ मारग नरक रो ए ॥ ६ ॥
ए मोटो प्रतिबंघ पास, करे बोघ बीज रो नास।
मारग छै कुगत रो ए, फलसो मुगत रो ए ॥ ७ ॥
परिग्रह छे मोटो फंद, कर्म तणो छै बंघ।
नरक पोहचावे सही ए, तिहा मार घणी कही ए ॥ ८ ॥
परिग्रह छै महा विकराल, मोटो छै माया जाल।
तिण में खूता सही ए, धर्म पावे नही ए ॥ ९ ॥
कनक कांमणी दोय, त्यासूं दुरगति होय।
फद छें मोटका ए, त्यासू खाए धका ए ॥ १० ॥
कनक कामणी दोय, पेला ने पकड़ावे कोय।
तिणे फंद में नाख्यो सही ए, निकल सके नही ए ॥ ११ ॥
परिग्रहो दीधां कहे धर्म, ते भूला अयांनी भर्म।
यारे कर्म घणा सही ए, समझ पडे नही ए ॥ १२ ॥
इण परिग्रहा तणा दलाल, त्यामे पिण होसी हवाल।
दुख नरकां तणा ए, सहसी अति घणा ए ॥ १३ ॥
ए राख्या लागे छै कर्म, रखाया पिण नही धर्म।
तीनूं करण सारिखा ए, ते करजो पारिखा ए ॥ १४ ॥
परिग्रहा नां दातार, त्यारा सावद्य जोग व्यापार।
मारग नही मोखरो ए, छादो लोक रो ए ॥ १५ ॥
असणादिक च्यारूं आहार, श्रावक रे परिग्रहा मझार।
ते खाए खवावे सही ए, तिणमें पिण धर्म नही ए ॥ १६ ॥
श्रावक ते माहों मांहि, देवो लेवो छे ताहि।
ते सगलो परिगरो ए, संका मति करो ए ॥ १७ ॥
सचित अचित मिश्र दरब, तिण में आय गया छै सरब।
ए सगलोइ परिगरो ए, ते ममता मांहे खरो ए ॥ १८ ॥
सचितादिक सगला ताहि, गृहस्थ रे परिग्रहा मांहिं।
कह्यो उववाइ उपांग में ए, वले सूयगडायंग में ए ॥ १९ ॥

त्यांरो श्रावक कीयो परमांण, त्यागया त्यांरी विरत पिछांण।
बाकी इविरत में राखीया ए, सुतर छे साखीया ए॥ २०॥
सचितादिक सारां मांहि, सावां रे इवरित नांहि।
त्यां मुर्छा परहरी ए ममता उवरी ए॥ २१॥
परिग्रहो दीयां धर्म ह्वे ता, तो जिण आग्या देत।
कहे कहे ने दरावता ए, धर्म करावता ए॥ २२॥
इण धन थी अनर्थ होय, धर्म धुरा न चले कोय।
भव भटकावणों ए, दुर्गति पोचावणो ए॥ २३॥
धन थी धर्म न थाय, तीन काल रे मांहि।
साचो कर जांणजो ए, संका मत आंणजो ए॥ २४॥
इण परिगरा माहे रक्त, त्यांने आवें नही समक्त।
मुरछ्या तिण मे सही ए, समझ पड़े नही ए॥ २५॥
ज्यारे परिगरा सूं छै प्रीत, तें हूसी घणा फजीत।
नरकां जावसी ए, झीकां खावसी ए॥ २६॥
इण थी वधे संसार, जाए नरक निगोद मझार।
घणो रडवडे ए, जक नही पडे ए॥ २७॥
सचित अचित द्रव्य छें ताहि, ग्रहस्थ रे अव्रत मांहि।
ज्यांरो त्याग कीयो नही ए, त्यारो पाप लागे सही ए॥ २८॥
तीनां करणां लागे पाप, तिण सूं दुख भुगते आप।
त्यांने त्याग्यां विरत हुसी ए, जव जीव होसी खुसी ए॥ २९॥
करण जोग घालीजे जांण, कीजे सुध पचखांण।
चोखे चित पालीये ए, दोषण टालीये ए॥ ३०॥

व्रत छठा

(दिशि परिमाण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

पांच अणुव्रत धारतां, मोटी बांधी पाल।
छोटा री इविरत रही, ते पाप आवै दगचाल॥ १ ॥
तिण इविरत मेटण भणी, पहलो गुणव्रत देख।
दिस मरजाद मांडले, टाले पाप विशेष॥ २ ॥
माहिली इविरत मेटवा, दूजो गुणवरत धार।
द्रव्यादिक त्यागन करे, भोगादिक परिहार॥ ३ ॥
जे द्रव्यादिक राषीया, तेहनी इविरत जांण।
अर्थ डंड छूटे नहीं, अनर्थ डंड पचखाण॥ ४ ॥
छठो वरत श्रावक तणो, करे दिस तणो परमांण।
हिंसादिक त्यागे छहू दिस तणा, मन माहें सुमता आंण॥ ५ ॥

ढाल

[इण पुर क बल कोई न लेसी]

उंची नीची दिस कोस बे च्यार, तिण बाहिर सावध परिहार।
त्रिछी दिस पांच सो परमांण, इण विध दिस तणा पचखांण॥ १ ॥
प्रथवीयादिक जीव न मारे, छोटाइ झूठ तणो परिहारे।
चोरी न करे मइथुन टाले, धन सूं ममता पाछी वाले॥ २ ॥
मांहे बेठो पिण बारलो लेवो ने देवो, तिण रा पिण त्याग करे सयमेवो।
बारली वसत माहें मगावे नाही, माहिली वसत बारे मेले नहि काई॥ ३ ॥
जिगन तो एक आश्रव त्यागे कोई, उतकष्टा आश्रव त्यागे पांचोंइ।
एक करण तीन जोग सूं जांण, बारला आश्रव ना करे पचखांण॥ ४ ॥
कोइ दोय करण तीन जोगां सूं ताहि, त्याग कर ने अव्रत देवे मिटाय।
कोइ तीन करण तीन जोगा जांण, पाचोइ आश्रवनां करे पचखांण॥ ५ ॥
बारला आश्रवनां कीधा त्याग, इविरत छोडी छै आंण वेंराग।
षेत्र थकी सर्व षेत्र में जांण, काल थकी जावजीव पचखांण॥ ६ ॥
कोइ देवादिक तिण ने न्हांखे बार, तो पिण नहि सेवे तिहां आश्रव दुवार।
कोइ कष्ट पड्यां राखे छे अगार, पोता नी कचाइ जांणी तिणवार॥ ७ ॥

कोइ मित्री देवादिक ने बोलावे, तिण आगें आपरो कांम करावे।
तिण पिण छठो व्रत लियो तिवार, इतरो तो पहिलां राख्यो छै आगार ॥ ८ ॥
इत्यादिक राखे आगार अनेक, आगार विना करे नहिं एक।
आगार राख्यां इविरत रो पाप लागे, विना आगार करे तो छठो व्रत भांगे ॥ ९ ॥
छठा व्रत तणो छे बोहत विसतार, ते कहितां कहितां न आवे पार।
ओ तो संक्षेप मातर कह्यो विसतार, बुद्धिवंत जाण लेसी अनुसार ॥ १० ॥
छठे व्रत एहवा पचखांण, मांहें घणा दरबादिक जांण।
तेहनी इविरत टालण काज, सातमो व्रत कह्यो जिणराज ॥ ११ ॥

व्रत सातमों

(उपभोग परिभोग परिमाण व्रत)

ढाल : ७

दुहा

सातमों व्रत श्रावक तणो, तिण में उवभोग परिभोग नो त्याग।
गमती वस्त त्यागे तेहने, आवे छे इधिक वैराग ॥ १ ॥
भोग आवे एक वार मे, ते कहिये उवभोग।
वारूंवार आवे भोग जीव रे, तिण ने कह्या छें परिभोग ॥ २ ॥
उवभोग परिभोग श्रावक तणें, इविरत में कह्या भगवांन।
त्यांरो त्याग करे सद्गुरु कने, ते सातमों व्रत परधांन ॥ ३ ॥
उवभोग परिभोग काम भोग छै, माहा दुखां री खांन।
तिणने किंपाक फल री दीधी ओपमा, भगवंत श्री विरधमान ॥ ४ ॥

ढाल

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

अगोचा दातण फल अभंगण, उगटणो पीट्ठी ने मंजण।
वत्थ वलेपण पूफ आभरण, धूपखेवण पीवण ने भखण ॥ १ ॥
ओदन सूप विगे साग विमास, महुर जीमण पांणी मुखवास।
वाहण सयण पानीय सचित्त, द्रव संख्या कर त्यागे एक चित्त ॥ २ ॥
ए छावीस बोल तणो परमाण, धिन त्यागे ते सुमता आंण।
नाम लेइ विवरो कर लीजे, करण जोग घाले व्रत कीजे ॥ ३ ॥
ए छावीस बोल भोगवीयां संताप, भोगवाया पिण लागे पाप।
अणमोंयां धर्म किहा थी होइ, तीनूंइ करण सरीषा जोइ ॥ ४ ॥
मूरख रे दिल वात न बेसे, न्याय छोड झगडा मे पेसे।
सुगुर छोड कुगुर सू परचा, भारी हुवे कर उंधी चरचा ॥ ५ ॥
विरत इविरत कही जिण न्यारी, समझे नहिं तिण रे कर्म भारी।
मूढ मती नव तत्व नहिं जाणे, लीधी टेक छोडे नहि ताणे ॥ ६ ॥
छाबीस बोल तणो आगार, ते तो इविरत आश्रव दुवार।
त्यांमें केइ उवभोग ने केइ परिभोग, त्यांने भोगवे ते तो सावद्य जोग ॥ ७ ॥
त्यांरो त्याग करे मन सुमता आंण, सकत सारू करे पचखांण।
एक करण ने तीन जोगां सूं त्यागे, जब पोते भोगवण रो पाप न लागे ॥ ८ ॥

दोय करण तीन जोग सूं पचखांण, तिण छ भांगां रो पाप टाल्यो जांण।
ते पोते पिण भोगवे नहि कांइ, ओरां ने पिण भोगवावे नांही॥ ९॥
तीन करण तीन जोगां गु ं त्यागे, तिण ने नव ही भांगां रो पाप न लागे।
भोगवे नहि भोगवावे नांही, भोगवण वाला ने सरावे नहिं कांई॥ १०॥
जे जे सेरी छूटी रही ताहि, तिहां पाप कर्म लागे छें आय।
जे सेरी रुकी ते संवर दुवार, तिण सूं पाप न लागे लिगार॥ ११॥
छूटी सेरी में श्रावक खावे ने खवावें, खातां ने पिण छूटी सेरी में सरावे।
रुकी सेरी में खावे खवावे नांही, अनुमोदना पिण न करे कांई॥ १२॥
श्रावक ने मांहो मां छ काय खवावे, वले छ काय मारे ने जीमावे।
ए इविरत रा सावद्य जोग व्यापार, तिण माहें धर्म नही छें लिगार॥ १३॥
श्रावक ने मांहों मां छ काय खवावे, वले छ काय मारे ने जीमावे।
तिण माहें धर्म मिथ्याती जाणें, कर्म तणे वस उंधी ताणें॥ १४॥
विरत आश्री श्रावक नें कह्यो छें धर्मी, इविरत आश्री कह्यो छें अधर्मी।
तिण सूं श्रावक नें धर्मी अधर्मी जांणो, पनवणा भगोती सूं जोय - पिछांणो॥ १५॥
श्रावक रो खाणो पीणो ने गेहणों, मांहों मा एक एक ने लेणों ने देणों।
ते तीनोंइ करण इविरत में घाल्यो, उवाइ ने सूयगडाअंग मे चाल्यो॥ १६॥
शब्द रूप रस गंध ने फासा, राख्या छे तिणरी लग रही आसा।
एहीज उवभोग ने परिभोग, तिणरा मेले छे विवध संजोग॥ १७॥
राख्या छे तिणरी इविरत जाणो, तिणरो समय समय पाप लागे छे आंणो।
त्याने त्याग्यां होसी संवर सुखदाय, तिण सूं इविरत रा पाप मिट जाय॥ १८॥
उवभोग परिभोग भोगवे जांण, तिण सूं पाप लागे छें आंण।
भोगवावे तिणने दूजे करण पाप, तिण सूं पिण होसी बोहत संताप॥ १९॥
अनुमोदे ते सरावे जांण जांण, तिणरे पिण पाप लागे छें आंण।
श्रावक रा उवभोग परिभोग, तीनूंइ करणा छे सावद्य जोग॥ २०॥
जघन मझिम ने उतकष्टा जांण, श्रावक गुण रत्ना री खांण।
त्यांरो खाणो पीणो इविरत में जाणो, तिणने रूड़ी रीत पिछांणो॥ २१॥
जघन श्रावक रे इविरत घणेरी, उतकष्टा श्रावक रे इविरत थोड़ी री।
ते इविरत आश्रव पाप रो नालो, तिण सूं पाप आवे दगचालो॥ २२॥
श्रावक तप करे आंण हुलास, उवास बेलादिक करे छ मास
सावद्य जोग रूंध्यां संवर हूवो रूडो, तपसा सूं कर्म करे चकचूरो॥ २३॥
तप पूरा हूआं पछे इविरत आगार, खाए पीए ते सावद्य जोग व्यापार।
तिण सूं पाप कर्म लागे छें आय, ते पाप होसी जीवं नें दुखदाय॥ २४॥

पारणो करे ते पहले करण जाण, करावे ते दूजे करण पिछांण।
सरावणवालो छै तीजे करणो, या तीना रो बुधवत करसी निरणो ॥ २५ ॥
पहले करण तो पाप बंधावे, तो बीजे करण धर्म किहा थी थावे।
तीजे करण धर्म नहि छै लिगार, या तीना रा सावद्य जोग व्यापार ॥ २६ ॥
सावद्य जोग सू लागे छे पाप, तिण सूं आगना नहिं दे आप।
श्रावक ने जीमाया धर्म ह्वेत, तो अरिहंत भगवत आगना देत ॥ २७ ॥
केइ कहे श्रावक ने जीमाया धर्म, ते भूल गया अग्यानी भर्म।
पोते पिण जीम्यां लागे छै पाप कर्म, औरा ने जीमाया किम हुवे धर्म ॥ २८ ॥
कोइ कहे लाडू खवाया धर्म, ओ तप कर म्हारा काटसी कर्म।
तिणसू म्हे ओरा ने लाडूडा खवावा, पछे लाडूआं साटे म्हे उवास करावा ॥ २९ ॥
पछै तो उ करसी ते उणने होय, लाडू खवाया धर्म म जाणो कोय।
लाडू खाधा खवाया तो एकत पाप, ते श्री जिण मुख सू भाख्यो छै आप ॥ ३० ॥
श्रावक ने लाडू खवायां धर्म होय, तो एहवो धर्म करे हर कोय।
बडा बडा श्रावक हुआ धनवत, ते लाडूआ खवाय ने धर्म करत ॥ ३१ ॥
बडा बडा सेठ सेन्यापती ताहि, त्यारे हुती धर्म री चाहि।
लाडू खवाया धर्म हुवे तो आचो नहि काढत, लाडू खवाय काम सिराडे चाढत ॥ ३२ ॥
श्रावक नें लाडू खवायां हुवे धर्म, खवावण वाला रा कट जाए कर्म।
तो चक्रवत वलदेव वासूदेव, ओ तो धर्म करता सयमेव ॥ ३३ ॥
श्रावक ने लाडू खवाया हुवे धर्म, श्रावक ने लाडू खवायां कटे कर्म।
तो च्यारू जात रा देव सयमेव, ओ तो धर्म करत ततखेव ॥ ३४ ॥
एहवा धर्म थी सिव सुख होय, तो देवता आगो न काढता कोय।
एहवो धर्म करी पुरत मन खात, देव भव थी पाधरा मोष मे जांत ॥ ३५ ॥
लाडू खावा खवाया धर्म छै नाही, खाणो खवावणो इविरत मांही।
इण माहे धर्म सरधे ते भोला, त्यारे मोह कर्म ना छै रे झखोला ॥ ३६ ॥
लाडू खवाया धर्म नहि रे भाइ, आ तो उघाड़ी दीसे विकलाइ।
ओ लोलपणों जीभ्या रो सवाद, तिण सूं कर्म बधे छे वाद ॥ ३७ ॥
खाणो खवावणो त्यागे सोय, जब सातमो वृत श्रावक रे होय।
जब रुकसी आवाता पाप कर्म, तेहिज उजल संवर धर्म ॥ ३८ ॥

ढाल : ८

दुहा

उवभोग परिभोग ने, सातमो व्रत परधान।
तिण माहे उपदेसीया, पनरे करमांदान॥ १ ॥

ढाल

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

इट लीहाला सोनार ठंठारा, भडभूंजा कुभार लुहारा।
ए कर्म करी ने पेट भरीजे, ते अंगाली कर्म कहीजे॥ १ ॥
बेचे साग पात कद मूल, फल बीजादिक धान तंदूल।
बेचे फूलादिक सर्व बनराई, ते वण कर्म कहीजे भाइ॥ २ ॥
बेचे गाडादिक रथ कराई, चोकी पाट पिलग बणाई।
किवाड थभादिक बेचावे, तीजो साड़ी कर्म कहावे॥ ३ ॥
हाट हवेली भाडे थापे, रोकड नांणो ब्याजे आपे।
गाडादिक भाडे दे जेह, भाडी कर्म कहीजे तेह॥ ४ ॥
बेचे नालेरादिक फोड़ी, वले अखरोट सोपारी तोडी।
पथर फोड दल पीसे धान, पांचमों फोडी करमादांन॥ ५ ॥
कसतूरी कवडा गजदंता, मोती आगर पाप अनंता।
चर्म हाड सींग जुहार, छठो कर्मादान ए धार॥ ६ ॥
सातमें भेदे मेणसल आल, बेचे लाख गुली हरीयाल।
कसूंभादिक रांगण पास, दोषण घणा कह्या जिण तास॥ ७ ॥
मधु मास मांखण ने दारू, भारी विगे कही जिण च्यारूं।
दूध दही घ्रत तेल गुल जाण, आठमों ते रस बिणज पिछांण॥ ८ ॥
बेचे उंट गधा नें गाय, घोड़ा हाथी बहल मंगाय।
ऊन रूइ रेसम थान वणाय, केस विणज ए नवमों थाय॥ ९ ॥
सीगीमोहरो आफूसार, नीलोथूथो सोवन खार।
हरवंसी निरवंसी विणजे, दसमो ते विस विणज कहीजे॥ १० ॥
तिल सरसूं प्रमुख पीलावे, इखू रस ना धाण मंडावे।
जंतपीलण इग्यारमों कर्म, करता बांधे घणो अधर्म॥ ११ ॥

कान फड़ावे नाक बींधावे, बलदादिक ने तणीय नखावे।
बारमो करमादान निलछ्छण, व्रतधारी ने लागे लछ्छण ॥ १२ ॥
जाले गाम नगर दे लाय, अटव्यादिक ने दे रे लगाय।
वाले मुरड़ा ने दव आपे, तेरमो कर्म इसी पर व्यापे ॥ १३ ॥
चवदमे भाजे नदी द्रह तीर, खेत माहे आण घाले नीर।
सर द्रह तलाव करे सोखत, ए कर्म करी जीव नरक पडत ॥ १४ ॥
साध विना सगला पोखीजे, पनरमों असजती पोख कहीजे।
रोजगार लेइ त्या उपर रेवे, खाणो पीणो असजती ने देवे ॥ १५ ॥
ए पनरे कर्म तणो विसतार, मरजादा बाध करे परिहार।
पनरेई कह्या सावद्य व्यापार, करे आजीविका चलावण हार ॥ १६ ॥

व्रत आठमों

(अनर्थ दण्ड विरमण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

सात व्रत पूरा थया, हिवै आठमा नो विसतार।
अर्थ अनर्थ ओलखवा भणी, तेहनो सुणो विचार ॥ १ ॥
सात व्रत आदरतां थकां, बाकी अव्रत रहि छे ताहि।
तिण सू निरतर जीव रे, कर्म लागे छे आय ॥ २ ॥
तिण इविरत रा दोय भेद छे, तिण में एक तो अनर्थ डंड जांण।
एक इविरत अर्थे कही, तिण सू पाप लागे छे आंण ॥ ३ ॥
अर्थ ते मुतलब आपरे, सावद्य करे विविध प्रकार।
अनर्थ ते मुतलब विना, पाप करतां पिण न डरे लिगार ॥ ४ ॥
पाप करे छे अर्थे ने अनर्थे, त्याने रूड़ी रीत पिछांण।
अर्थ दड तो छोडणो दोहिलो, अनर्थ दंड रा करे पचखांण ॥ ५ ॥
अनर्थ दंड तणा भेद अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय।
पिण थोड़ा सा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

पहिलो भेद कह्यो अपधान, तिण थी बांधे अनर्थ खान।
वीजे भेदे प्रमाद आखे, घ्रतादिक ठांम उघाड़ा राखे ॥ १ ॥
सस्त्र जोड़ करे बिसतार, पाप उपदेश दे विवध प्रकार।
ए अनर्थ रा करे पचखांण, सूधी पाले जिणवर आंण ॥ २ ॥
ए अनर्थ डड केम कहीजे, अर्थ डड सेती ओलखीजे।
तेहना भेद छे विविध प्रकार, सखेप मात्र करू विसतार ॥ ३ ॥
माठा ध्यान रा दोय परकार, जग में जे ध्यावे नर नार।
आर्त्त रुद्र ध्यांन ध्यावे लोग, पामें बहु विध हर्ष ने सोग ॥ ४ ॥
सब्दादिक इंद्रयां नां भोग, तेहनों ध्यावे संजोग विजोग।
रोगादिक लागे अणगमता, भोग भोगवता ल्यावे ममता ॥ ५ ॥
इण विध जीव रचे ने विरचे, आप अर्थ कुटम्व ने परचे।
ठाकुर चाकर सगा सनेही, वोहरा ने घुरीया आद देइ ॥ ६ ॥

जिण सुखीए सुख वेदे आप, तिण दुखीये पामे सोग सताप।
ते पिण टाले सुमता आण, अनर्थ ध्यान ध्यावा पचखांण ॥ ७ ॥
रुद्र ध्यान हिंसा जे ध्यावे, झूठ चोरी वदीवांन दरावे।
अर्थ करे पिण धूजे तन, अनर्थ ध्यान तजे एक मन ॥ ८ ॥
घ्रत तेलादिक विणज करता, धूपादिक कारज अण सरता।
इण विध अर्थ उघाडा थाय, तिणरो जतन करे चित ल्याय ॥ ९ ॥



व्रत नवमों

(सामायिक व्रत)

ढाल : १०

दुहा

पांच अणुव्रत फेलतां, गुण व्रत दे संकड़ाय।
सिख्या व्रत जिम चोटली, कहे ओपमा ल्याय ॥ १ ॥
जिम देवल इंडो चढे, मुगट मस्तक अंत।
जिम समदिष्टी जीवड़ा, सिख्या व्रत पालंत ॥ २ ॥
व्रत आठ पहेलां कह्या, जावजीव लग जांण।
सिख्या व्रत च्यारां तणा, विविध पणे पचखांण ॥ ३ ॥
सामायक महोरत एक नी, जो करे चित्त ल्याय।
देसावगासी व्रत ना, जिम करे तिम थाय ॥ ४ ॥
पोसो हुवे दिन रात नो, जो ध्यावे निरमल ध्यांन।
बारमो व्रत सुध साध नें, देवे सूझतो दांन ॥ ५ ॥

ढाल

[मम करो काया माया कारमी]

सामायक सुमता पणे, सावद्य जोग पचखांण जी।
काल थी मोहरत एक नी, दुविहं तिविहेणं जांण जी ॥
सिख्या जी व्रत आराधी ए ॥ १ ॥
उतकष्टे भांगे करे, तीन करण तीन जोग जी।
ग्रहवासा तणी बात नों, न करे हर्ष न सोग जी ॥ २ ॥
उपगरण समाइ करतां राषीया, तिण उपरंत कीया पचखांण जी।
राख्या ते इविरत परिभोग री, तिणरो पाप निरंतर जांण जी ॥ ३ ॥
उपगरण समाइ में राखिया, त्यारो पिण करे परमांण जी।
बाकी तीन करण तीन जोग सूं, पाचूं आश्रव ना पचखांण जी ॥ ४ ॥
ते उपगरण पेहरे ओढे वावरे, बिछांवणादिक करे वारुंवार जी।
ते सरीर री सातादिक कारणे, ते तो सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ५ ॥
वले गेहणां आभरण कनें रह्या, ते पिण इविरत में जांण जी।
तिण रो पिण पाप निरंतर, समे समे लागे छै आंण जी ॥ ६ ॥
ते गेहणा आभरण रा जतन करे, त्यांसूं राजी हुवे तिण वार जी।
आगो पाछो समारे तिण अवसरे, सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ७ ॥

उपगरण गेहणा कने राखीया, ते तो नहिं आवे समाइ रे काम जी।
काम तो आवे छे परिभोग मे, सुख साता सोभादिक तांम जी॥ ८॥
समाइ री तो दीधी जिण आगना, ते तो समाइ छे संवर धर्म जी।
उपगरण ने गेहणा परिभोगव्या, तिण सूं तो लागे पाप कर्म जी॥ ९॥
समाइ में श्रावक री आत्मा, अधिकरण कही जिण राय जी।
भगोती रे सतषंद्य सात में, पहिला उदेसा रे माय जी॥ १०॥
अधिकरण ते सस्त्र छ काय रो, तिण ने सांतरो करे असमात जी।
तिणरी सार सभाल जतन करे, ते सावद्य जोग साख्यात जी॥ ११॥
कपडो ओढे पेहरे बावरे, वले वियावचादि करे ताहि जी।
तिण अधिकरण नें सांतरो कीयो, तिण री आगना न दे जिणराय जी॥ १२।
असमात सरीर रो कार्य करे, ते तो सावद्य जोग छे ताहि जी।
तिण सू पाप कर्म लागे जीव रे, तिणरी आगना न दे जिणराय जी॥ १३॥
हालवो चालवो सरीर नो, सुख साता काजे करे जाण जी।
ते सावद्य जोग श्री जिण कह्या, तिण सू पाप कर्म लागे आंण जी॥ १४॥
जिण किरतब कीया जिण आगना नही, ते सावद्य जोग साख्यात जी।
जिण किरतब कीया जिण आगना, ते निरवद जोग विख्यात जी॥ १५॥
उपगरण गेहणा ने सरीर ना, जतन करे समाई मझार जी।
त्याने जिण आगना नही सर्वथा, सावद्य जोग तणो छे व्यापार जी॥ १६॥
कने राख्या छे त्यारा जतन करे, ओ तो राख्यो समाइ मे आगार जी।
समाइ करता ज्याने त्यागीया, त्यारा जतन नही करणा लिगार जी॥ १७॥
श्रावक रा उपगरण इविरत मझे, कह्या उवाइ नें सूयगडाअंग माय जी।
त्यांने, सेववो सावद्य जोग छे, तिण सूं आगना न दे जिणराय जी॥ १८॥
कोइ कहे सामाइ कीधी तेहने, सावद्य जोग पचखाण जी।
तिणरे पाप रो आगार किहा थी रह्यो, कोइ एहवी पूछा करे आण जी॥ १९॥
तेहने जाब इम दीजिये, सर्व सावद्य नहि पचखाण जी।
सर्व सावद्य रा त्याग साधां तणे, तेहनी करो पिछाण जी॥ २०॥
छ भांगा समाइ में पचखीया, तिणरे तीन भांगां रो आगार जी।
तिणरे पाप लागे छे निरंतर, तिणरा जोग छै सावद्य व्यापार जी॥ २१॥
तिणरे पुत्रादिक हूआं हरषत हुवे, मूआ गया हुवे सोग जी।
इत्यादिक आगार समाइ मझे, एहवा सामाइ मे सावद्य जोग जी॥ २२॥
गहणो पडतो हुवे तेहने, जतन करे सामाइ रे मांहि जी।
ते पिण सावद्य जोग छै, तिणरी आज्ञा न दे जिणराय जी॥ २३॥

शरीर कपडादिक तेहना, जतन करे सामाइ रे मांय जी।
लाय चोरादिक ना भय थकी, एकांत ठांमें जेणा सूं जाय जी ॥ २४ ॥
वले सरप राजादिक ना भय थकी, एकंत ठांमें जयणा सूं जाय जी।
ते पिण सावद्य जोग छै, आगार सेव्यो समाइ रे मांहि जी ॥ २५ ॥
लाय सर्पादिक रा भय थकी, जेणा सूं नीकल जाए बार जी।
पारवती मिनख वेठो हुवे, त्यांने तो नहीं लेजावे लार जी ॥ २६ ॥
आपरो तो आगार राखीयो, औरां रो तो नहि छे आगार जी।
औरां ने त्याग्या समाइ मझे, त्याने किण विध लेजावे बार जी ॥ २७ ॥
लाय चोरादिक रा भय थकी, राख्या ते उपधि ले जाय जी।
पारवती कपड़ादिक हुवे घणा, त्यांने बारे ले जावे नहिं ताहि जी ॥ २८ ॥
राख्या ते दरब ले जावतां, समाइ रो भंग न थाय जी।
ज्यांने त्याग्या छे त्याने लेजावतां, समाइ रो व्रत भागे जाय जी ॥ २९ ॥
तिण सूं सर्वथा सावद्य जोग रा, समाइ में नहिं पचखांण जी।
आगार उपरंत सावद्य जोग रा, पचखांण कीया छे पिछांण जी ॥ ३० ॥
तिण सूं श्रावक रे त्याग कीया तके, ते सावद्य जोग रा पचखांण जी।
सर्वथा सावद्य जोग रा, ते तो त्याग साधां तणा जांण जी ॥ ३१ ॥
उपगरण समाइ में राखीया, ते तो पेले करण लेजो जांण जी।
ते औरां ने भोगावसी किण विधे, औरां रा तो कीया छे पचखांण जी ॥ ३२ ॥
द्रव्य थकी तो कने तिण उपरंत रा, सगलां रा कीया पचखांण जी।
खेत्र थकी सर्व खेत्र मझे, काल थी मोहरत जांण जी ॥ ३३ ॥
भाव थी राग द्वेष रहीत छै, तब संवर निरजरा गुण थाय जी।
इण रीते समाइ ओलख करे, जब भावे समाइ हुवे ताय जी ॥ ३४ ॥
अवर सगलां ने त्यागे दिया, त्यांसूं इज करे संभोग जी।
जव भागे समाइ व्रत तेहनों, इणरा वरतीया सावद्य जोग जी ॥ ३५ ॥
कोइ समाइ में समाइवाला तणों, कारज करणो छे जांण जी।
तिणरो कारज कीयां समाइ भागे नहीं, तिणरो पिण करे परिमांण जी ॥ ३६ ॥
समाइ में मांहोंमां कारज करे, ते तो सूत्र मांहें दीसे नहि ताय जी।
तिणरी निश्चे तो थापणी आवे नही, ग्यांनी वदे ते सत्य वाय जी ॥ ३७ ॥
कोइ कहे समाइ में राखी पूजणी, राखी ते दया रे कांम जी।
तिणरो जाव सुणो विवरा सुध, चित्त राखे एक ठांम जी ॥ ३८ ॥
सरीरादिक पूंजे समाइ मझे, मातरादिक परठे छे पूंज जी।
एहवा कारज री जिण आगना नही, तिण मे धर्म कहे ते अवूज जी ॥ ३९ ॥

सरीर ने पूंजे परठे मातरो, ते तो सरीरादिक नो छे काज जी।
जो धर्म तणो कार्य हुवे, तो आगना दे जिणराज जी॥ ४० ॥
जो पूंजणो परठणो करे नही, तो काया थिर करणी एक ठांम जी।
हस्तादिक ने विना हलवीया, रहणी ना आवे छे तांम जी॥ ४१ ॥
वले आ बाधा लघू बडी नीत नी, खमणी न आवे छे तांम जी।
तिण सूं पूंजे छे जायगा जोय ने, ते समाइ तणो नहि कांम जी॥ ४२ ॥
माखी माछर कीडी आद दे, ते तो लागे सरीर रे आय जी।
ते खमणी नावे छे तेहथी, तिण सूं पूजे परीकरे ताय जी॥ ४३ ॥
जो काया थिर राखे एक आसणें, तिण रे पूजण रो काई कांम जी।
परीसो खमणी नावे तेह सू, पूजणी राखे छे तांम जी॥ ४४ ॥
जो इतरी कह्या समझ पड़े नही, तो राखणी जिण परतीत जी।
जिण आगना बारे धर्म सरध ने, नही करणी एहवी अनीत जी॥ ४५ ॥
सरीर उपगरण रा जतन कीयां, सावद्य जोग व्यापार जी।
सरीर सू किरतब निरवद करे, तिण नें जिण आगना श्रीकार जी॥ ४६ ॥

●

व्रत दसमों

(देसावगासी व्रत)

ढाल : ११

दुहा

दसमा देसावगासी वरत छैं, तिणरा छै भेद अनेक।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काया माया कारमी)

देसावगासी व्रत ना, भांगा हुवे विध दोय जी।
पेहलो छे छठा व्रत नी परे, दूजो सातमा ज्यूं जोय जी ॥
सिख्या जी व्रत आराधो ए ॥ १ ॥

दिन परते प्रभात थी, छ दिसरो कीधो परिमांण जी।
मरजादा कीधी तिण बारला, पांचूं आश्रव ना पचखांण जी ॥ सि० २ ॥

जे भोमका राखी छे मोकली, तिण माहे द्रव्यादिक व्यापार जी।
मरजादा सकत सारू करे, भोगादिक परीहार जी ॥ ३ ॥

काल थी दिवस ने रात नो, भावना विवध प्रकार जी।
करण जोग घाले जेतला, जेहवो करे परीहार जी ॥ ४ ॥

वले जगन नवकारसी आदि दे, उतकष्टो घाले काल कोय जी।
मरजाद सूं त्यागे सावद्य भणी, जिम करे तिम होय जी ॥ ५ ॥

कोइ करे छै त्याग हिंसा तणो, तिण में काल रो करे परमांण जी।
ते त्याग पूरो हूआं तेहने, आगे तो नही पचखांण जी ॥ ६ ॥

हिंसा झूठ चोरी मैइथुन नो, वले पांचमो परिग्रह जांण जी।
ए पाचोंइ आश्रव दुवार नो, काल घाले ने करे पचखांण जी ॥ ७ ॥

परमांण करे छावीस बोल नो, पनरें कर्मादांन तणो परमांण जी।
वले सचितादिक चवदे नेम नो, यांरा नित नित करे पचखाण जी ॥ ८ ॥

नोकारसी पोरसी ने पुरमढ, एकासणो आंबलादिक तास जी।
उपवास बेलादिक तप करे, उतकष्टो करे तप छ मास जी ॥ ९ ॥

तप तणो कष्ट हूवो तको, ते करणी निरजरा तणी जांण जी।
खावा पीवा री विरत हुइ तका, दशमों व्रत हूवो आंण जी ॥ १० ॥

जे जे सावद्य त्यागे तेहमें, काल रो करे परमांण जी।
ते तो दशमों व्रत नीपनो, ते जावजीव नहि पचखांण जी ॥ ११ ॥

व्रत इग्यारमों

ढाल : १२

(पोषध व्रत)

दुहा

श्रावक रो व्रत इग्यारमो, पोषो कह्यो छे भगवान।
तीजो सिख्या व्रत रलीयामणो, ते सुणो सुरत दे कान ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काया माया कारमी)

पोषध व्रत वखाणीये, पचखे चउ विध आहार जी।
अबभ मणी सोवन तजे, माला वणग वलेपण परिहार जी॥
सिख्या जी व्रत आराधीये ॥ १ ॥

सत्य मुसलादिक आद दे, सावद्य जोग तणा पचखाण जी।
काल थी दिवस ने रात रो, एक पोसा तणो परिमाण जी ॥ २ ॥

जगन दोय करण तीन जोग सूं, करे सावद्य जोग पचखांण जी।
कोइ उत्कष्टे भागे करे, तीन करण तीन जोग सूं जाण जी ॥ ३ ॥

द्रव्य थकी तो कने तिण उपरत रा, कीया सर्व दरवां रा पचखाण जी।
षेतर थकी सर्व षेतर मझे, काल थी दिवस ने रात जाण जी ॥ ४ ॥

भाव थकी राग द्वेष रहीत करे, वले चोखे चित उपीयोग सहीत जी।
जव कर्म रुके छे आवता, वले निरजरा हुवे रुडी रीत जी ॥ ५ ॥

उपगरण पोसा माहे राखिया, तिण उपरत कीया पचखाण जी।
राख्या ते इविरत परिभोग री, तिणरो पाप निरतर लागे आण जी ॥ ६ ॥

पोसा ने सामायक वरत ना, सरीषा छे पचखाण जी।
सामाइ तो मोहरत एक नी, पोसो दिन रात रो जांण जी ॥ ७ ॥

पोसा ने समायक वरत में, यां दोया मे सरीषो छे आगार जी।
ते कह्या छ सगला इविरत मे, ते जोय करो निसतार जी ॥ ८ ॥

जब कोइ कहे पोषध वरत मे, मणी सोवनादिक पचखाण जी।
तिण सूं मणी सोवन कने राखीया, पोसो भागे गयो जाण जी ॥ ९ ॥

पोसा माहे कने राखीया, मणी सोवनादिक जाण जी।
तिण उपरत पचखाण छे, उत्तर एह पिछाण जी ॥ १० ॥

उमूक कहिता मूंके दीया, त्या मणी सोवन रा पचखांण जी।
कने रह्या त्यारी इविरत रही, भगोती सूं करजो पिछाण जी ॥ ११ ॥

मणी सोवन रा जावक पचखाण हुवे, तो उमूक रो पाठ कहिता नांहि जी।
ओ तो निरणो उघाड़ो दीसे कीयो, विचार देखो मन मांहि जी ॥ २२ ॥
श्रेणक ने किस्नजी री राणियां, इत्यादिक हुइ राणीयां अनेक जी।
त्यां पोसा कीया दीसे गेहणा थकां, समझो आंण ववेक जी ॥ १३ ॥
त्यांरी चूड़ीया में हीरा पना जड़्या, वले दांतां मे जांणीजे मेख जी।
ओर गेहणा त्यांरे पेहरणें, त्यां उतारख्या नहिं दीसे छे एक जी ॥ १४ ॥
भारी भारी जूंहर चूड्या जड्या, वले भारी २ हाथ गला मांय जी।
ते सगलाइ केम उतारसी, ओ तो मिलतो न दीसे छे न्यय जी ॥ १५ ॥
त्या कीधी समाइ संझ्या काल री, समाइ करी रात परभात जी।
ते खिण खिण मे केम उतारसी, आ पिण मिलती न दीसे छै वात जी ॥ १६ ॥
समाइ मे गेहणा न राखणा, तो चूडो न राखणो ताहि जी।
गेंहणो ने चूडो तो एक हीज छै, दोनूंई आभूषण मांहि जी ॥ १७ ॥
सामायक ने पोसा तणी, दोया री विध जाणो एक जी।
रीत दोयां री बरोबरी, समझो ने आण ववेक जी ॥ १८ ॥
इहलोक रे अर्थ करे नही, न करे खावा पीवा रे हेत जी।
लोभ लालच हेते करे नही, पर लोक हेते न करे तेथ जी ॥ १९ ॥
सवर निरजरा रे हेते करे, और वंछा नहि काय जी।
इण परिणामां पोसो करे, तो भाव थकी सुध थाय जी ॥ २० ॥
कोई लाडूआं साटे पोसा करे, कोइ परिग्रह लेवा करे तांम जी।
कोई और द्रव्य लेवा पोसो करे, ते कहिवा रो पोसो छे नांम जी ॥ २१ ॥
ते तो अरथी छै एकंत पेट रो, ते मजूरीया तणी छै पांत जी।
त्यांरा जीव रो कार्य सभे नही, उलटी घाली गला माहें रांत जी ॥ २२ ॥
लाडूआं साटे पौसा करावसी, अथवा धन देइ ने तांम जी।
ते कहिवा ने पोसा करावीया, पिण संवर निरजरा रो नही ओ कांम जी ॥ २३ ॥
कर्म काटण नें करे मजूरीया, त्यांरा घट मांहें घोर अग्यांन जी।
लाडू खवाय पोसा करावणा, ए तो कठेइ नही कह्यो भगवांन जी ॥ २४ ॥
कर्म काटण नें करे मजूरीया, त्यांरा घाट माहे घोर अंधार जी।
पइसा देई पोसा करावणा, ते नाही चाल्या सुतर मझार जी ॥ २५ ॥
मजूरीया करे खेत नेदाणवा, मजूरीया करे घर करवा कांम जी।
कडव काटण करे मजूरीया, कर्म काटण नही चालीया तांम जी ॥ २६ ॥
खेत खडवा ने चाल्या मजूरीया, वले भार लेजावण कांम जी।
धान खांडण करे मजूरीया, कर्म काटण नें नहिं चाल्या तांम जी ॥ २७ ॥

विरक्त होय काम भोग थी, त्याने त्याग्या छै सुध परिणाम जी।
मोष रे हेत पोसो करे, ते असल पोसो कह्यो ताम जी ॥ २८ ॥
इण विध पोसा ने कीजीये, तो सीझसी आतम काज जी।
कर्म रुकसी ने वले तूटसी, इम भाषीयो श्री जिणराज जी ॥ २९ ॥



व्रत बारहमों

(अतिथि सविभाग व्रत)

ढाल : १२

दुहा

अतिथ सविभाग चोथो सिख्या, ते बारमों व्रत रसाल।
समण निग्रंथ अणगार ने, दांन देवे दगचाल ॥ १ ॥
ते फासू अचित ने सूझतो, कल्पे ते दरब अनेक।
कल्पता खेतर काल मे, दान दे आण ववेक ॥ २ ॥
जो उ दान दे मुगत रे कारणे, और वंछा नहिं काय।
जब नीपजे व्रत बारमों, इम भाप्यो जिणराय ॥ ३ ॥
इग्यारे व्रत वस आपरे, मन माने जब नीपजाय।
बारमो व्रत सुध साध ने, प्रतिलाभ्यां थी थाय ॥ ४ ॥
लाखा कोडां खरचीया, जीव अनंती वार।
पिण दांन सुपातर दोहिलो, जीव तणो आधार ॥ ५ ॥
इण व्रत नीपावा कारणे, उदम करे नित नेम।
भावे साधां री भावना, हाथे दान देवण सूं पेम ॥ ६ ॥
आलस छोडणो किण विधे, किण विध देणों दांन।
उदम करणो किण विधे, ते सुणो सुरत दे कांन ॥ ७ ॥

ढाल

[मोह अनुकम्पा न आणीए]

बारमो व्रत छै श्रावक तणो, तिणरो सांभल जो विसतार जी।
समण निग्रंथ अणगार ने, देवो चउविध सुध आहार जी ॥
इम व्रत नीपावें बारमो ॥ १ ॥
इम वसत्र पातर ने कांबलो, पायपूछणों देवे एम जी।
पीढ फलग सेज्जा ने साथरो, देवे ओषध भेषद जेम जी ॥ इ० २ ॥
इत्यादिक वस्तु कल्पे तका, साधां ने दीधां हरषत होय जी।
जाणे धिन दीहाडो ने धिन घडी, बारमो व्रत नीपनो मोय जी ॥ ३ ॥
करे चिंतवणा साधां तणी, घर में देखे सुध आहार जी।
वले भांणे बेठां भावे भावना, व्रत बारी रो ओ आचार जी ॥ ४ ॥

साधु आय उभा देखे आंगणे, विकसे सगली रोमराय जी।
असणादिक देवे भाव सूं, घणो मन रलीयात थाय जी ॥ ५ ॥
काचा पांणी सूं थाली धोवे नही, वले सचित न राखे पास जी।
संघटे नहिं बेसे सचित रे, व्रत नीपजावण रो हुलास जी ॥ ६ ॥
कोई काम पडे आय सचित्त रो, जब पिण रीत राखे विख्यात जी।
दिस अवलोक्यां विण साघ नें, नहिं घाले सचित्त नें हाथ जी ॥ ७ ॥
कल्पे ते वस्त पडी असुझती, कदे सहिजां सुझती होय जी।
तो उ खप कर राखे सुझती, सचित उपर न मेले कोय जी ॥ ८ ॥
जे जे दरब जांणे छे सुझता, कल्पे ते साधु ने जांण जी।
तिणरी भावे निरंतर भावना, एहवा श्रावक चतुर सुजांण जी ॥ ९ ॥
चित्त वित्त पातर तीनूं तणो, कदे आय मिले सजोग जी।
जब अढलक दान दे हाथ सू, पछे न करे पिछतावो सोग जी ॥ १० ॥
जे जे वरतधारी श्रावक हुवे, ते जीमे नहिं जडे कमाड जी।
उवाइ ने सुयगडाअंग में, त्यांरा चाल्या उघाडा दुवार जी ॥ ११ ॥
सहजे उघाडा हुवे बारणा, जब राखे उघाडा ताम जी।
नहिं जडे उघाडे बारणा, साध ने दांन देवा कांम जी ॥ १२ ॥
ओर भेष उघाड मांहे घसे, साधु नावे खोल कमाड जी।
तिण सूं व्रतधारी श्रावक हुवे, ते तो राखे उघाडा दुवार जी ॥ १३ ॥
सहिजे आयो छे घरे आपरे, नीपनो देखे सुघ आहार जी।
जब काल जाणे गोचरी तणो, तो उ वाट जोवे तिण वार जी ॥ १४ ॥
ज्यांरे हूंस घणी छे मांहिली, पोते सहथ देवा दान जी।
त्यांरा हिरदा में साधु वस रह्या, त्यारो किण विध मूंके ध्यांन जी ॥ १५ ॥
असणादिक थाल में लीधां पछे, तुरत घाले नहीं मुख मांय जी।
दिस अवलोके भावे भावना, जाणे साध पधारे आय जी ॥ १६ ॥
इण विध भावना भावतां थकां, मिले सतगुर नी जोगवाय जी।
तो उ दान दे उलट परिणांम सू, चूके नहि अवसर पाय जी ॥ १७ ॥
सकत सारू दान दे साध नें, पिण न करे कूडी मनवार जी।
ठाला वादल ज्यूं गाजे नही, साचे मन बोले सुध विचार जी ॥ १८ ॥
अढलक दान देई साघ ने, पमावे नही ओरा पास जी।
गिरवा गंभीर रहे सदा, त्याने वीर वखाण्या तास जी ॥ १९ ॥
अढलक दान देणो पातरे, नहीं जिण तिण नें आसान जी।
दांन देवा रो ध्यान रहे सदा, एहवा विरला छे बुधवान जी ॥ २० ॥

आछी वस्त गोपव राखे नही, नांणे लोलपणों ने लोभ जी।
गमती वसत देवे साध ने, पिण कूडी न साधे सोभ जी॥ २१॥
आप खाए ते इविरत में गिणे, बंधता जांणे पाप कर्म जी।
तिण सूं दांन सुपातर ने दीया जांणें संवर निरजरा धर्म जी॥ २२॥
सुपातर दांन दे तिण अवसरे, लेखो नही करे मन मांहि जी।
लेखो कीयां सूं लोभ उपजे, अढलक दांन दीयो नहि जाय जी॥ २३॥
लाडू धोवणादिक वेंहरावतो, राखे एक धारा परिणांम जी।
व्रतधारी आघो काढे नही, रूडी जोगवाइ पांम जी॥ २४॥
कदा वेंहरयां विण पाछा फिरे, काइ आय पडे अंतराय जी।
जब पिछतावो कीयांई पुन बधे, वले कर्म निरजरा थाय जी॥ २५॥
पिछतावो कीयांई पुन बंधे, तो वेंहरायां हुवे लाभ अनंत जी।
उतकष्टो तीर्थंकर पद लहे, इम भाष गया भगवंत जी॥ २६॥
सूझती वसत न करे असूझती, ते तो न देवा रे कांम जी।
असूझती नें न करे सूझती, वेहरावण रा आंण परिणाम जी॥ २७॥
जांणे नें नहीं देवे असूझती, करडे पिण वणीये कांम जी।
निरदोषण दीधां वस्त हाथ सूं, पाछी लेवण री नहीं हांम जी॥ २८॥
दान देवण न देवण कारणे, अतिकरमे नही काल जी।
मछर मांन बडाइ छोड नें, दांन देवे ते दोषण टाल जी॥ २९॥
आपणी वस्त कहे पारकी, दांन देवा कांम जी।
धर्म ठिकांणे भूठ बोले नहीं, मूंढे कूडी न राखे मांम जी॥ ३०॥
इग्यारे व्रत तो त्यागन कीयां, बारमो व्रत दीधां होय जी।
तिण सूं कठण काम इण वरत रो, विरला नीपजावे कोय जी॥ ३१॥
सुपातर दांन देवे तेहनें, नीपजे तीन बोल अमोल जी।
संवर निरजरा होय पुन बंधे, त्यांरा अर्थ सुणो दिल खोल जी॥ ३२॥
जे जे दरब वेहराया साध नें, तिण दरब री इवरत नहीं काय जी।
ते वरत संवर हुवो इन विधे, सुभ जोगां सूं निरजरा थाय जी॥ ३३॥
सुभ जोग वरत्यां हुवे निरजरा, सुभ जोगां सूं पुन बंध जात जी।
पुन्य सहजे हुवे निरजरा कीया, ज्यूं खाखलो हुवे गोहां रे साथ जी॥ ३४॥
उतकष्टा परिणामां दान दे, तो उतकष्टी टले कर्म छोत जी।
उतकष्टा बंधे पुन्य तेहने, वले बंधे तीर्थंकर गोत जी॥ ३५॥
जो उणरे पुन्य उदे हुवे इण भवे, तो दुख दालद्र दूर पलाय जी।
रिध संपत पामें अति घणी, सुख साता मे दिन जाय जी॥ ३६॥

जो उदे न आवे इण भवे, तो पर भव में संका मत आंण जी।
उंच गोतादिक सुख भोगवे, इण दान तणा फल जांण जी॥ ३७ ॥
पुन्य री वछा कर देवे नहिं, समदिष्टी साधा नें दान जी।
देवे सवर निरजरा कारणे, पुन्य तो सहिजां बधे आसान जी॥ ३८ ॥
इविरत माहे दान देता थकां, पड़े श्रावक रे मन धड़क जी।
ज्यांनें दान दियां विरत निपजे, त्यानें दीठाइ पामे हरष जी॥ ३९ ॥
काम पड़े अविरत में दान रो, जब देतो ही सरमा सर्म जी।
पछे करे पिछतावो तेहनो, कायक ढीला पाडे कर्म जी॥ ४० ॥
इविरत मे दान देवण तणो, टालण रो करे उपाय जी।
जाणे कर्म बंधे छे माहरे, मोनें भोगवता दुख थाय जी॥ ४१ ॥
इविरत में दान देता थका, बधे आठोइ पाप कर्म जी।
सुपातर दान दियां हुसी, म्हारे सवर निरजरा धर्म जी॥ ४२ ॥
इविरत मे दान देवण तणो, कोइ त्याग करे मन सुध जी।
तिण पाप निरंतर टालियो, तिणरी वीर बखाणी बुध जी॥ ४३ ॥
कुपातर दान मोह कर्म उदे, सुपातर दान खयउपसम भाव जी।
व्रत नीपजे सुपातर ने दियां, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याव जी॥ ४४ ॥
सहिजा जायगा पडी हुवे सूझती, जब जोवे साधा री बाट जी।
तिणरे कर्म तणी निरजरा हुवे, वले बंध जाए पुन्य तणा थाट जी॥ ४५ ॥
बाट जोवता साधु पधारिया, सेज्जा दान दे हरषत थाय जी।
जाणे धिन दिहाडो ने धिन घडी, माहे साध उतरिया आय जी॥ ४६ ॥
सेज्जा दान देइ सुध साधु नें, केइ करे परत संसार जी।
केइ बंध पाड़े सुध गति तणो, ते तो पामे भव जल पार जी॥ ४७ ॥
सिज्जा थानक दे दे साधु नें, आगे तिरिया जीव अनंत जी।
वले तिरे ने तिरसी घणा, इम भाष गया भगवंत जी॥ ४८ ॥
दीधा दरायां ने भलो जाणियां, निर्दोष सुपातर दान जी।
व्रत निपजे दीधा वस्त आपरी, इम भाख्यो श्री भगवान जी॥ ४९ ॥
पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, परिणाम चढावे विशेष जी।
त्याने दान देवा सनमुख करे, सीखावे सुध विवेक जी॥ ५० ॥
पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, दान देवा रा रहे परिणाम जी।
त्यासूं हेत राखे जिन धर्म नो, सुध श्रावक तिणरो नाम जी॥ ५१ ॥
अडलक दान देतो देखे ओर ने, त्यांरा पाडे नहिं परिणाम जी।
कदा देणी न आवे आप सूं, तो कर दे तिणरा गुण ग्राम जी॥ ५२ ॥

गुण सहणी नावे दातार ना, पोते पिण दान दियो न जाय जी।
ए दोनूं अवगुण दूरा तजे, श्री जिनवर नो धर्म पाय जी॥ ५३ ॥
और नें दान देता देखने, कोइ बरज पाड़े अन्तराय जी।
तो उ कर्म बाधे महा मोहणी, एहवो श्रावक न करे अन्याय जी॥ ५४ ॥
केइ अन्यतीर्थी जीमें नहि, यांरा ठाकुर ने विण दियां भोग जी।
नित बारे रसोइ काढने, पोषे पूजारादिक लोग जी॥ ५५ ॥
त्याने ठीक नहि त्यांरा देव री, देवे लेवे न लेवे भोग जी।
तोहि राखे छे त्यारी आसता, नित वरतावे त्यारा जोग जी॥ ५६ ॥
तो व्रतधारी सुध श्रावक, धर्म सूं रग्यो तन मन जी।
ते गुर नी भावना भाया विना, मुख में किम घाले अन जी॥ ५७ ॥
केकांरे गुरु छे अन्यतीर्थी, त्यांरी करे साचे मन टेल जी।
तो साध पधारया आंगणे, त्यांने श्रावक न गिणे सेल जी॥ ५८ ॥
कोइ कहे दान घणो दढावियो, ए तो लेवा रो कीधो उपाय जी।
एहवा उघा बोले सुध बुध विना, एहवी श्रावक न काढे वाय जी॥ ५९ ॥
दान देवा रा परिणाम जेहना, ते तो सुण सुण हरषत थाय जी।
कहे व्रत निपजावा नी विधि, मोने सतगुरु दीधी सिखाय जी॥ ६० ॥
और व्रत कह्या छे देवल समा, सिख्या व्रत छे इंडा समान जी।
त्यां मे सगला सिरे व्रत बारमों, तिणरी बुधवंत करसी पिछांण जी॥ ६१ ॥
तिरया तिरे तिरसी घणा, इण दान तणे परताप जी।
तिण मे सका मूल न आणवी, श्री जिन मुख भाख्यो आप जी॥ ६२ ॥
सुतर पुराण कुराण मे, पातर दान तणो अधिकार जी।
पछे पातर कुपातर ओलखे, बुधवंत काढे निसतार जी॥ ६३ ॥
वले कहि कहि ने कितरा कहूं, इण दान तणा गुण ग्रांम जी।
कोइ जिभ्या करे वरणवे, पूरा कहणी न आवे तांम जी॥ ६४ ॥
जोड कीधी बारमा वरत री, ते तो गूंदोच सहर मझार जी।
संवत अठारे बतीसे समे, जेठ विद बीज सूर्य वार जी॥ ६५ ॥

रत्न : ३

कालवादी री चोपई

ढाल : १

दुहा

दसा सतखध सूयगडाअग में, अकिरीया वादी रो विसतार।
नास्तक मत छें तेहनो, वले किरीया न मानें लिगार। १ ॥
तीर्थंकर चक्रवतादिक, वले साधु सती अणगार।
त्याने जीव न मानें सरवथा, उ जांणे भर्म ससार ॥ २ ॥
तिण नास्तकवादी रा मत तणो, कालवादी परिवार।
तिण नास्तक पाडी जीवरी, ते भूलो भर्म गिवार ॥ ३ ॥
उ सरधा परूपें एहवी, कर २ खांच अतीव।
जे सिद्धां मे गुण पावे नही, ते गुण सर्व अजीव ॥ ४ ॥
वले असासता दरब नें इम कहें, नही चेतन गुण परजाय।
उण कुण २ काल में घालीया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ असुकम्या...]

तीर्थंकर गणधर धर्म रा नायक, आचार्य ने उवभाय मोटां अणगारो।
साध साधवीयादिक च्यारूंई तीरथ, त्याने अजीव कहे मूढ विनां विचारो।
आं सरधा छें कालवादी री*॥ १ ॥
देव गुर. धर्म तीनू रतन अमोलक, त्यारो सरणो लीया उतरे भवपारो।
याने अजीव कहे कोइ मूढ मिथ्याती, तिण आख मीचने कीयों अंधारो ॥ आ० २ ॥
गुर ही काल नें चेलो ही काल, कालरो विनों काल करें उछरगो।
काल सूं काल सभोग करें छें, काल सू काल रो मन जाए भंगो ॥ ३ ॥
काल उपदेस दे सूतर बांचें, धर्म कथा कहें मोटें मडांणों।
काल ही आय वखांण सुणें छें, काल कने काल लें पचखांणो ॥ ४ ॥
काल तिरें नें काल ही तारें, काल नें काल उतारे पारो।
काल डूबें ने काल डबोवे, काल ने काल करें छे खुवारो ॥ ५ ॥
चक्रवत वासुदेव मंडलीक राजा, ए मनष हूआं करणी कर मोटी।
भवी दरब देवादिक पांचोइ देवां ने, यांनें अजीव कहें तिणरी सरधा खोटी ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

बाप ही काल ने बेटोइ काल, काल रे काल वधे परिवारो।
काल जनम लेइ मोटों हुवें छें, पछें काल रे वधें छें विषय विकारो ॥ ७ ॥
काल परणीजे नें काल परणावें, काल रे काल पावणा आवें।
असणादिक आहार काल नीपाए, काल जीमें ने काल जीमावे ॥ ८ ॥
अपर्यासो पर्यासो काल, काल छें बाल जुवांन ने बूढो।
नेरइतयो रिजच मिनष नें देवा, ए सगला ने काल कहे छे मूंढो ॥ ९ ॥
चाले ही काल नें बोले ही काल, काल करें छे विणज व्यापारो।
खेती करसंण आदि दे काल करे छें, वले काल करे छे भगडा ने राडो ॥ १० ॥
एकेंद्री आदि दे पचिंद्री नें, छकाय धुरा घर कहें छें कालो।
चवदेइ भेद छे जीवरा त्यांने, याने अजीव कहें अग्यांनी बालो ॥ ११ ॥
हिंसक भूठाबोलो इ काल, चोर कुसीलीयों नें धनपातर।
वले तीन सो तेसठ पाषडीयां नें, यांनें इ काल कहें छें कुपातर ॥ १२ ॥
भोगी काल ने जोगी काल, वेंरी नें मित्री ए पिण कालो।
मायावीया मिथ्याती नें काल कहें छें, इण सरधा रो बुधवंत करसी टालो ॥ १३ ॥
आरत रूद्र ने धर्म ध्यांन, ए तीनूंइ ध्यांन नें कहें छें कालो।
छ भाव लेस्या नें पिण काल कहें छें, सूतर रे सिर दे दे आलो ॥ १४ ॥
अग्यान तीन ने च्यारूंई संज्ञा, वले चवदें गुण ठांणा कहें छें कालो।
बुध अकलमति ए पिण काल, ते कर रह्या मूरख भूठी भखालो ॥ १५ ॥
छ नियठा ने पांचोंइ चारित, उठांण कमादिक ए पिण पांच।
वले आतमा च्यार नें सावद्य निरवद, यांनें काल कहें मूढ कर २ खांच ॥ १६ ॥
इत्यादिक जीवरा बोल अनंता, त्यानें निश्चेंइ काल कहें छे अग्यांनी।
जे जे सभाव सिद्धां में न पावें, ते सगला नें कर दीया काल री कांनी ॥ १७ ॥
असासता सगलाइ पाछे कह्या ते, त्यांनें तो जीव कहसी किण लेखें।
यांने जीव कहें तो भूठ बोल छें, आपणी सरधा सांह्यो क्यूं नहीं देखें ॥ १८ ॥
जो चरचा रो कांम पड्यां जीव कहें तो, असासता दरब री पूछा कीजें।
असासता दरब नें काल कहें छें, यांनें जीव कहें तो भूठो घालीजें ॥ १९ ॥
असासता दरब नें जीव कहें छें, आपरी सरधा रो आप अजांणों।
सिद्धां में नही ते गुण नें जीव थापें, तो पोतेइ काय न दीसें पिछांणों ॥ २० ॥
हिवे कालवादी नें पूछा कीजें, संसार मांहें दुख किण विध पावें।
कुण उपजावे नें कूण खपावें, करमां रो करता कुण कहावें।
ए प्रश्न कालवादी नें पूछीजें ॥ २१ ॥

जो करमा रो करता जीव ने थापे, तो उणरी सरधा जाबक उठजावे।
करता अनेक असासता दीसे, वले सिद्धां मे करता कठासू बतावे ॥ २२ ॥
जो करमा रो करता अजीव कहे तो, घणा लोक न मांने तिणरी वातो।
असरधा हुवे तो पिण छाने राखे, एहवा कपटी रो भूठ ने गूढ मिथ्यातो ॥ २३ ॥
उणरी सरधा रा एलाण एहवा दीसे, करमा रा करता ने सरधे छे कालो।
कदा भूठ बोले ने जीव कहे पिण, सिद्धा मे नही करता ते सरधा संभालो ॥ २४ ॥
सिद्धां माहे तो करता मूल न दीसे, ते जीव ने करता कहसी किण लेखे।
एहवा प्रश्न पूछ्या रा जाब न आवे, जब भूठ बोलण री सेरी देखे ॥ २५ ॥
केतों भूठ जांणें ने बोले छे, के आपरी भाषा रो आप अजाणो।
ए वातरो निश्चो तो केवली जाणे, पिण बुधवत होसी ते करसी पिछाणो ॥ २६ ॥
श्री वीर कह्यो आचारंग माहे, करमां रो करता छे निश्चे जीवो।
चेतन गुण पर्याय सहीत ओलखसी, त्यारे अभितर ग्यान खुलसी घट दीवो ॥ २७ ॥
हिंसादिक भूठ चोरी जीव करे छे, तिण किरतब सूं लागे जीवरे पापो।
तो छेदन भेदन जनम मरण रा, च्िहूं गति मे दुख भुगते आपो ॥ २८ ॥
कालवादी री सरधा परगट कीधां, केइ क्रोध करे केइ मन मांहे लाजे।
जिण आगम लोपे विरुध परूपे, ते सीह तणी परे कदेय न गाजे ॥ २९ ॥
इण खोटी सरधा रो उघाड़ कीया सू, केइ बुधवंत सुण २ रहसी दूरा।
केइ विपरीत सरधा आदर ने छोडे, त्याने पिण वीर वखांण्या सूरा ॥ ३० ॥



ढाल : २

दुहा

आ कालवादी री सरधा वूरी, घोर रुद्र मिथ्यात।
हलुकरमा जीव किम सरधसी, आ प्रतख भूठी वात ॥ १ ॥
चेतन गुण पर्याय नें, कहि २ अग्यानी काल।
उधी करेय परूपणा, दीयो घणां सिर काल ॥ २ ॥
त्यांन साधु बतावें जूजूवा, जीव अजीव साख्यात।
पण गुधूसरीषा मांनवी, त्यांरे दीह तिकाइज रात ॥ ३ ॥
त्यांनें धुर सूं तो संत मिलिया नहीं, कीधों कालवादी रो प्रसंग।
जांणें निरणें कोठे भूंबीयों, काल नाग भूयंग ॥ ४ ॥
उणनें मिलें सतगुर गारलूं, जो उ दूर करें पखपात।
सूतर अरथ सुणाय ने, काढें जहर मिथ्यात ॥ ५ ॥
कालवादी री सरधा उपरें, सूतर मांहें जाब अनेक।
पिण थोड़ण सा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ६ ॥

ढाल

[पाषाड वधसी आरे पचमे]

तीरथंकर गणधर उत्तम जीव छे रे, उत्तम छें आचारज नें उवभाय रे।
त्यांरा ग्यांन दरसण चारित छे निरमला रे, यानें वांद्या सू पातक दूर पलाय रे।
ए अरिहंत वायक सतकर जांणजो रे* ॥ १ ॥
वले साधु साधवी श्रावक श्रावका रे, सूतर में भाष्या छें तीरथ च्यार रे।
त्यांने पिण उत्तम जीव जिण कह्या रे, ग्यांनादिक गुण रतनां रा भंडार रे ॥ए० २ ॥
त्यांने कालवादी पापडी इम कहे रे, ए सगला छे जड अचेतन काल रे।
यांने जीव चेतन कोइ मत जांणजो रे, ए दीयों अग्यांनी मोटों आल रे ॥ ३ ॥
च्यारूं तीरथ तीरथंकर देव में रे, पावें गुणठांणा परजा प्रांण रे।
जोग उपीयोग लेस्या तेहमें रे, यांनें अजीव कहें छें मूंढ अयांण रे ॥ ४ ॥
त्यांरो विनो वीयावच गुण कीरत कीयां रे, वांधे तीरथंकर गोतरसाल रे।
ते कह्यों छे गिना अधेन आठमें रे, लीजो वीसोंइ बोल संभाल रे ॥ ५ ॥
ओ काल वीयावच करसी किण विधें रे, काल वीयावच केम कराय रे।
ए कालवादी कूडो मत काढीयो, ए प्रतख चोडें भूलों जाय रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

भवी दरव देवादिक पाचू देवमे रे, यामे करें केइ वेक्रें रूप रसाल रे।
यारी गति आगति ने यारो आतरो रे, याने अजीव कहे ते मूरख बाल रे॥ ७॥
ए पेहली गतमा सू उपजें आय ने रे, ए मरने उपजे पेहली गति माय रे।
देवाधिदेव जावे छे मुगत मे रे, यानें अजीव सरधे ने बूडो कांय रे॥ ८॥
परभव में जासी ते निश्चे जीव छे रे, काल गतागत करसी केम रे।
इतरोइ न सूझे मोह अध जीव ने रे, उ बोले सूने चित गहला जेम रे॥ ९॥
भवी दरवादिक पाचूं देवरो रे, अरथ भगोती सूतर माहि रे।
नवमे उदेसे सतक बारमें रे, ए निरणो करलेजो भवीयण ताहि रे॥ १०॥
एकद्री आदि पचिन्द्री जीव ने रे, छकाय धुरा धर कहे छे काल रे।
चवदेई भेद जीवरा तेहमे रे, याने अजीव कहे अग्यानी बाल रे॥ ११॥
काल समायादिक वरते तेहने रे, नही कोइ खंव देस परदेस रे।
तिण काल नें एकद्रीयादिक जे कहे रे, ते करे अग्यानी कूड कल्लेस रे॥ १२॥
एकद्री आदि पचिद्री जीव ने रे, देस परदेस कह्या जिणराय रे।
ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोवो भगोती सूतर माय रे॥ १३॥
ते दशमे उदेशे दूजा सतक मे रे, वले दशमां सतक रे पेहले जाण रे।
सोलमे सतक उदेशे आठमे रे, ए निरणो कर लेजो चतुर सुजाण रे॥ १४॥
वले दसमे उदेसे सतक इग्यारमे रे, तिहां पिण तेहीज छे निसतार रे।
जीव अजीव देस परदेस नो रे, रूपी अरूपी नो विसतार रे॥ १५॥
नेरइयो तिरजंच मिनख ने देवता रे, त्यारे आठोई करम कह्या भगवत रे।
ए जीव हूसी तो यारे करम छे रे, त्याने निश्चेंइ जीव जाणो मतवत रे॥ १६॥
चोवीसोइ डडक नियमा जीव छे रे, नियमा कह्यो ते वीसवावीस रे।
दसमे उदेशे छठा सतक मे रे, भगोती मे भाष गया जगदीस रे॥ १७॥
जीवरा चवदे भेद सिघत मे रे, ते निश्चेइ जीव कह्या साख्यात रे।
याने मूढ मिथ्याती कहें अजीव छें रे, आ प्रतख झूठी तिणरी ब्रात रे॥ १८॥
वले दशवीकालिक चोथा अधेन में रे, निश्चेइ जीव कही छकाय रे।
तिणनें अग्यांनी जीव न लेखवें रे, ते करे बूडण रो मूंढ उपाय रे॥ १९॥
गिनाता सुतर रा तीजा अधेन मे रे, ठाणा अग मे तीजा ठाणा माय रे।
छजीव नीकाय माहे सका कर रे, तो अहेत असुख ने समकित जाय रे॥ २०॥
छवभाव लेस्या ने जीव जिण कही रे, तिणरी अतर में करो पिछांण रे।
माठी लेस्या रा माठा लखण छे रे, रूडी लेस्या रा रूडा जांण रे॥ २१॥
जीव रे मोह करम उदे हुवे रे, जब जीव वरते जो सावद्य कांम रे।
ते पाप उपजावें मेंला जोग सू रे, माठी लेस्या रा ए परिणाम रे॥ २२॥

कदे मोह करम रो खयउपसम हुवे रे, जब जीव वरते जो निरवद ठांम रे।
ते पाप खपाय उपजावे पुन नें रे, रूडी लेस्या रा ए परिणांम रे ॥ २३ ॥
ए लेस्या छें निश्चें लखण जीवरा रे, तो कांय भारी हुवो कहि कहि काल रे।
जोवो उतरारावेन चोतीसमें रे, वले पन्नावणा लेस्या पद संभाल रे ॥ २४ ॥
वले लेस्या परिणांम कह्या छेंजीवरा रे, ठांणा अंग दसमां ठांणा मांय रे।
वले जोग उपीयोग पावे तेहमें रे, तो निश्चेइ जीव जांणों इण न्याय रे ॥ २५ ॥
मति सुरतादिक च्यारूं ग्यांन रा रे, कीधा अग्यानी दोय दोय भेद रे।
सुतर अरथ विनां मुख सूं कहें रे, करमावस करें अणहुंती खेद रे ॥ २६ ॥
मति सुरतादिक नें कहें काल छें रे, ग्यांन कहें छें यांसूं न्यार रे।
दोय २ भेद कीयां छें इण विधें रे, उण उंधी अकल सूं कीयो विचार रे ॥ २७ ॥
समदिष्टी री मति नें मतिग्यान कह्यो रे, मिथ्याती री मति ते मति अनांण रें।
ए निरणो नदी सूतर में काढीयों रे, तो ही करें अग्यांनी कूड़ी तांण रे ॥ २८ ॥
पांच ग्यांन नें तीन अग्यांन नों रे, वले च्यारूंई दरसण तणो विचार रे।
त्यारा भेद कीयां छेग्यांनी अतिघणां रें, ते दोय उपीयोग तणो विसतार रे ॥ २९ ॥
जे भेद कीया छें जिण उपीयोग रा रे, ते भेद नें तेहीज उपयोग जांण रे।
त्यांमें काल रो भेद अग्यानी घालीयो रे, ते नंदीय सूतर सूं करो पिछांण रे ॥ ३० ॥
वले अग्यांननें कही छे नियमा आतमा रें, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे।
ए दसमें उदेसें सतक बारमें रे, भगोती मे जोय करो पिछांण रे ॥ ३१ ॥
उवाइ उपंग ने ठांणा अंग में रे, च्यारूंई ध्यान तणो विसतार रे।
ध्यान ध्यावें ते लषण जीवरों रे, यांनें अजीव कहें ते मूंढ गिवार रे ॥ ३२ ॥
चवदे गुणठांणा लखण जीवरा रे, जोवो समवायंग सूतर मांय रे।
ए निश्चेइ चेतन गुण पर्याय नें रे, काल परूपें डूबो कांय रे ॥ ३३ ॥
च्यारूंई संज्ञा चेतन दरब छें रे, वीर कह्यो ठांणा अंग माय रे।
जोवो चोथो दसमां अधेन में रे, संका मत आंणों भवीयण कांय रे ॥ ३४ ॥
जे जे दरब मे जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुण ठांणा पर्याय प्राण रे।
ते तो दरब निश्चेंइ जीव छें रे, ए सरधा में संका मूल म आंण रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ३

दुहा

कालवादी रा मति तणी, केइ कर रह्या कूडी ताण।
त्यांने खुलवा जाब बतावीया, साख सूतर री आंण ॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरधा छुड़ायवा, काढ़ण मूल मिथ्यात।
कितराएक तो वले कहूं, ते सुणजो विख्यात ॥ २ ॥

ढाल

[निन्हव तेरासीया केडायत ओलखो]

छ नियठा ने पांचूंइ चारित भणी, याने कहे छे अग्यांनी काल हो।
ए निस्चेइ चेतन गुण पर्याय छे, ते सुणजो सुरत संभाल हो॥
कालवादी री मत कूडो घणो* ॥ १ ॥
छ नियठा ने पाचूंइ चारित तणा, छतीस छतीस छे दुवार।
पच्चीस में सतक उदेसे छठे सातमे, ए भगोती में कह्यो विसतार हो ॥ का० २ ॥
यांरा पजवा अनता कह्या छे एक एक ना, त्यां पजवारी अल्पा वोहत जांण।
ते सख असख अनंत गुणा कह्या, ते पजवारी करजो पिछाण हो ॥ ३ ॥
निग्रंथ सनातक नें यथाख्यात रा, यांरा पजवा वरोवर जांण।
सेष चारित ने नियठा मेंला कह्या, तिणसू छे पजवांरी हांण हो ॥ ४ ॥
ए कुण दरवे मेंलो कुण उजलों, तिण दरब री करजो तहतीक हो।
याने दरव षेतर काल भाव सूं ओलखो, यांरा गुणांरी पिण करजो ठीक हो ॥ ५ ॥
किण ही दोय जणां चारित साथे लीयो, समकाले छोड्या प्रांण हो।
काल सारिखो दोयां रा चारित तणों, पिण चारित गुण मे फेर जाण हो ॥ ६ ॥
चारित ने जगन मभ्रम उतकष्टो कह्यों, ते तो चेतन गुण पर्याय हो।
ते चारितावर्णी करम दुरा हूआं, निजगुण परगट थाय हो ॥ ७ ॥
ए संजया नें नियठा तो निश्चेंइ जीव छे, तिण मांहे संका म आंण हो।
याने काल परूपे करम वावो मती, छोड दो कूडी तांण हो ॥ ८ ॥
संजती असंजती ने सजता संजती, एहवा बोल घणा छे ताहि हो।
ए सगलां ने जीव जिगेसर भाषीया, ते पन्नवणा भगोती माहि हो ॥ ९ ॥
चारित आतमा श्री जिणवर कही, ते सूतर भगोती मभ्रार हो।
ए दसमे उदेसे सतक बारमे, आतमा आठा री विसतार हो ॥ १० ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चारितावर्णी चारित ने विगाडीयो, ओ विगड्यों ते निजगुण जाण हो।
परगुण आडो करम आवे नही, इणरी पिण करजो पिछांण हो ॥ ११ ॥
ए चारितावर्णी जेणावर्णी करम कह्यों, तो चारित जेंणा जीव पर्याय।
ए नवमें सतक उदेशे इगतीस में, सूतर भगोती मांय हो ॥ १२ ॥
समाइ पचखांण सजम नें सवर, ववेक नें विउसग जांण हो।
ए सगला ने कही छे जिणेसर आतमा, तो कांय बूडो कर कर तांण हो ॥ १३ ॥
ए सूतर भगोती रा पेहला सतक मे, नवमों उदेसो संभाल हो।
समाइ समता परिणाम गुण जीवरा, त्यानें भोलेइ म सरवो काल हो ॥ १४ ॥
ग्यान दरसण चारित गुण कह्या जीवरा, ते अनुयोग दुवार मझार हो।
कोई जीव रो निजगुण चारित नही लेखवे, ते पूरो मूढ गिवार हो ॥ १५ ॥
दसमे अग छठा अधेन माहें कह्यो, प्रथम संवर दया जांण हो।
ते दया ने नियमा निजगुण जिण कही, तिण गुण सू पेहचें निरवांण हो ॥ १६ ॥
सुख दुख ग्यान दरसण चारित तप, वले वीर्य उपीयोग वखांण हो।
ए आठ लखण कह्या चेतन दरब नां, ते अठावीसमा उत्तराधेन जांण हो ॥ १७ ॥
चारित परिणांम कह्या छे जीवरा, दसमेधेन ठांणाअंग माय हो।
ते जीव परिणांम ने अजीव परुपने, कोई मति करो बूडण रो उपाय हो ॥ १८ ॥
ठाणाअंग चोथे कही छे च्यार परवजा, धन पूजीयादिक समांण हो।
ते करम न्यारा कीया परवजा हुवें निरमली, तिण परवजा नें निजगुण जांण हो ॥ १९ ॥
वले ठाणाअंग चोथे च्यार चारित कह्या, भिन्नेजजरीए समांण हो।
छिदर सहीत ने रहित चारित कह्या, ते जीवनां गुण परमांण हो ॥ २० ॥
ए ग्यान रो इंदर केवलग्यांन छे, समकत रो खायक समकत इंद हो।
जथाख्यात चारित इंद्र चारित तणो, ए तीजें ठांणे कह्यो छे छिणंद हो ॥ २१ ॥
उतकष्टा चेतन गुण ने इंदर कह्या, तिणमे चारित गुण सूं पांमे निरवांण हो।
तिण चारित गुण ने काल परुपने, कांय बूडो कर कर ताण हो ॥ २२ ॥
जगन मझम उतकष्टी आराधना, ते ग्यान दरसण चारित री जांण हो।
ते कुण दरब ने जीव आराधीयों, तिण दरव री करजो पिछांण हो ॥ २३ ॥
जिण जीव कीया निजगुण ने निरमला, तिण मोह करम ने टाल हो।
जिण चारित आराध्यो ते निजगुण आपरो, तिणनें मूरख सरवें काल हो ॥ २४ ॥
देस चारित ने सर्व चारित कह्यो, ते त्याग परमांणे गुण जोय हो।
काल दरव तो देस न चालीयो, तो काल चारित किम होय हो ॥ २५ ॥
चारितादिक गुण अनेक असासता, त्यानें सरवे अग्यांनी काल हो।
उ भावे जीव न मांनें असासतो, ते तो सूतर सिरदें आल हो ॥ २६ ॥

दरबे सासतो ने भावे असासतो, जीव नें कह्यों जिणराय हो।
ते सूतर भगोती रे सतक सातमें, दूजा उदेसा माय हो॥ २७॥
दरबे सासतो जीव ने यू कह्यो, जीव रो अजीव न थाय हो।
भावें जीव ने कह्यों छे असासतो, ते तो परजाय पलटें जाय हो॥ २८॥
निजगुण फिरे ने परगुण भ्ररपडे, ते परगुण पुदगल जाण हो।
परगुण भ्ररीया हुवें निजगुण निरमला, आ सरधा घट मे आण हो॥ २९॥
असुध निजगुण फिरीया सुध निजगुण हुवे, ते परगुण करदे दूर हो।
सुध निजगुण फिरीयां असुध निजगुण हुवे, तिणसूं परगुण लागे पूर हो॥ ३०॥
जे मेंला निजगुण मोह वसें, त्या निजगुण सू करम बंधाय हो।
मोह रहित निजगुण हुवे निरमला, त्यांसू परगुण दूर पलाय हो॥ ३१॥
सात करम उदे सूं निजगुण मेंला हुवें, त्यासूं पाप न लागे तांम हो।
ते करम भ्ररीया हुवे निजगुण निरमला, त्यांरा गुण निपन छे नांम हो॥ ३२॥
आठ करम उदे हूआ नीपजें निजगुण उदें भाव अनेक हो।
आठ करमा ने खय कीधा नीपनां, निजगुण खायक भाव वशेख हो॥ ३३॥
च्यार करमा ने खयउपसम कीया नीपजे, निजगुण खयउपसम भाव हो।
मोह करम उपसमीयां परगटे, निजगुण उपसम भाव हो॥ ३४॥
ए च्यारूंई भाव परिणांमीक जीव छें, ते चेतन गुण पर्याय हो।
ए भाव फिरें पिण दरब फिरे नही, ते पिण सुणजो न्याय हो॥ ३५॥
तत सुध सरध्या हुवे जीव समकती, उधा सरध्या मिथ्याती थाय हो।
उहीज ग्यानी रो अग्यांनी हुवे, अग्यानी रो ग्यानी हुय जाय हो॥ ३६॥
नारकी ने देवता रो मिनष तिरजंच हुवे, मिनख तिरजच देवता थाय हो।
इत्यादिक जीवरा भाव अनेक ही, ते ओर रो ओर हूय जाय हो॥ ३७॥
सासतो जीव दरब छे अनादरो, तिणरी पर्याय अनंती जांण हो।
ते पर्याय हांण विरध हुवे करम सू, पिण दरब री नही विरध हांण हो॥ ३८॥
जे भाव फिरे पिण दूर पडे नहीं, त्या भावां रा नांम अनेक हो।
इणविध भावे जीव असासतो, ते सरधो आंण ववेक हो॥ ३९॥
उ जीव रा भाव न सरधे असासता, तिण काढ्यों छे मत कूर हो।
यांनें काल कहें ते कुबद लगाय नें, तिणरी संगत करजों दूर हो॥ ४०॥
वले गोतम सांमी पूछा करी जीव री, सूतर भगोती माय हो।
ते तीजा उदेसा छठा सतक मे, ते साभल जो चित्त ल्याय हो॥ ४१॥
आदि ने अंत रहीत ए जीव छें, के आदि नही अत सहीत हो॥ जिणेसर॥
के आदि सहीत ने अत रहीत छे, के आदि ने अंत सहीत वदीत हो॥ जिणेसर॥
ए गोतम सांमी पूछ्यो श्री वीर नें*॥ ४२॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

श्री वीर जिणेसर कहे सुण गोयमा, ए च्यारूंई भांगा छें जीव हो।
त्यांरा भेद विसतार कहूं छूं जूजूआ, ए सरध्यां समकत री नीव हो॥ ए० ४३॥
ए आदि रहीत ने अत रहीत छें, ए अभव सिद्धीया जीव जांण हो।
आदि नही पिण अंत सहीत छे, ते भव सिद्धी जीव पिछांण हो॥ ४४॥
जे करम खपाय नें सिद्धी गति मे गया, त्यांरी आदि छें पिण अंत रहीत हो।
नारकी तिरजंच मिनख ने देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो॥ ४५॥
ए च्यारूंई जीव जिणेसर भाषीया, त्यांने जीव न सरधें मूंढ हो।
ते वूडें छे वीरनां वचन उत्थापनें, कर कर कूड़ी रूढ हो॥ ४६॥

ढाल : ४

दुहा

कालवादी चेतन नही ओलख्यो, तिणमे खोट अनन्त।
तिमहीज पुदगल दरब मे, कहिता न आवे अत॥ १॥
एक वर्ण एक गध छे, एक रस फरस छे दोय।
उ माने छे पुदगल एहने, ते पिण सुध न कोय॥ २॥
पांच वर्ण दोय गध छे, पाच रस फरस छे च्यार।
उ समचे पुदगल कहे एहने, ते पिण असुध विचार॥ ३॥
भारी हलको सुहालो खरदरो, ए पुदगल दरब साख्यात।
याने कालवादी कहे काल छे, ते प्रतख झूठ मिथ्यात॥ ४॥
खध देस परदेस परमांणूओ, याने पुदगल माने नाहि।
त्यांने पिण कहे काल छे, आ उधी अकल घट माहि॥ ५॥
ए प्रतख पुदगल दरब ने, कहे छे अग्यानी काल।
उणरी सरधा ने सरधा रा उतर कहूं, ते सुणजो सुरत संभाल॥ ६॥

ढाल

[मम करो काया माया कारमी]

पुद्गल रूपी दरब तणा, च्यार भेद कीयां जिणराय रे।
खंद देस परदेस परमाणुओ, छतीसमां उत्तराधेन माय रे।
कालवादी री सरधा सुणो* ॥ १॥
पुद्गल रा भेद च्यारू भणी, याने कहें छे अग्यानी मूढ काल रे।
ए करमां वस सुध सूझे नही, अभितर फूटी आया जाल रे॥ २॥
वीसामीसा वले पोगसा, ए पुद्गल री तीन जात रे।
यां पुदगलां ने काल दरब कहे, तिणरे छे गूढ मिथ्यात रे॥ ३॥
अठारे पाप ठाणा चोफरसी कह्या, आठ करमे चोफरसी कह्या वीर रे।
मन वचन जोग दरबे लीया, चोफरसी कह्यो कारमण सरीर रे॥ ४॥
सब्द अंधारा उद्योत ने, प्रकास छाया तावरो जाण रे।
इत्यादिक एहवा सूक्ष्म खंद ने, चोफरसी पुद्गल ने पिछांण रे॥ ५॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

छव दरब लेस्या च्यार सरीर नें, घणो दधी घणवाय तणवाय रे।
काय जोग नें केइ बादर खद नें, यानें अठ फरसी कह्या जिणराय रे॥ ६ ॥

दीप समुदर देवलोक नें, मुगत सिला पिण तेह रे।
नरकावासा जाव वेमाणिया, ए सर्व अठफरसी दरब एह रे॥ ७ ॥

ए चोफरसी आठफरसी पुद्गल कह्या, ते वरण गंध रस सहीत रे।
यांनें काल कहे मूढ मूरख थको, तिणरी सरधा घणी विपरीत रे॥ ८ ॥

धर्म अधर्म आकाश नें, काल पुद्गल जीव वखांण रे।
यांमें पांच दरबे ने अरूपी कह्या, रूपी एक पुद्गल जांण रे॥ ९ ॥

ए भगोती रे सतक बारमें, पांचमें उदेशे संभाल रे।
ज्यांनें पुदगल दरब श्री जिण कह्या, त्यांने मूरख परूपें छें काल रे॥ १० ॥

हाट घर मिंदर मालीया, आसण सयण-सेंण जांण विमांण रे।
वसत्र गेहणा आभूषण, हिरण सोवनादिक जांण रे॥ ११ ॥

गंध कसबोइ बाजंत्रादिक, असणादिक च्यार आहार रे।
ए उवभोग परिभोग आवें जीव रे, एक वार बहू वार रे॥ १२ ॥

त्यांमें सब्द रूप दोय कांमा कह्या, गंध रस फरस तीन भोग रे।
ए कांम ने भोग रूपी जिण कह्या, ते आय मिलीयां जीव रे संजोग रे॥ १३ ॥

ए कांम नें भोग रूपी ते पुद्गल कह्या, त्यांनें काल परूपे बूडो कांय रे।
ए भगोती रे सतक सात में, सातमा उदेसा रे माय रे॥ १४ ॥

घृत ने खांड मेदें करी, कोइ नीपजावे विविध पकवान रे।
ए प्रतख वात सरधे नही, ओ पिण पूरो अग्यांन रे॥ १५ ॥

घी खांड मेदों तो कहे काल था, ए तीनूंइ गया विललाय रे।
यां तीना सूं पकवांन नही नीपनां, एतो काल परगट हुओ आय रे॥ १६ ॥

पकवांन ने काल दरब कहे, यांरां नाम दरब कहें एक रे।
इण विपरीत सरधां रा उत्तर कहूं, ते सांभलो आण ववेक रे॥ १७ ॥

घृत ने खांड मेदे करी, कोइ निपजावे विविध पकवांन रे।
त्यांरा नांम एक २ रा अनेक छे, सूतरे भाख्यो भगवांन रे॥ १८ ॥

ए पकवांन तो पुद्गल दरव छें, तिणमें पांच वर्ण दोय गंध रे।
पांच रस आठ फरस छें, ते पुद्गल मिलीया छे बंध रे॥ १९ ॥

त्यांरा नांम तो ओलखवा भणी, ते नांम छें सूरत ग्यांन रे।
ते नांम ने दरब छे जूजूआ, ए वीर वचन सत मांन रे॥ २० ॥

ए नांम दरब जूदो सरधायवा, ओलखों दरब आकाश रे।
ते दरब छें लोक अलोक में, इणरो नांम छें जीव रें पास रे॥ २१ ॥

इण परें दरब अनेक छें, ते दरब छे दरब रे ठांम रे।
त्यां दरबां रा नांम जांणें जके जीव कनें सर्व नांम रे॥ २२ ॥

ढाल : ५

दुहा

चदरमा ने सूर्य नी चाल सू, नीपजे समयादिक काल।
तिणरी उतपत छे प्रवाह ज्यू, निरन्तर दगचाल ॥ १ ॥
ते अढाई दीप दोय समुद मे, सेष दीप समुद सर्वटाल।
पेतालीस लाख जोजन लगे, तिरछो वरते काल ॥ २ ॥
उंचो जोतक चकर लगे, ते नवसो जोजन परमाण।
सहंस जोजन नीचो कह्यो, दोय विजे उडी ताइ जाण ॥ ३ ॥
मेरू विचे उची दिस तिहा, प्रतिबंब सू वरते काल।
अठा बारे काल कठे नही, तिणरो सूतर माहे निकाल ॥ ४ ॥
कालवादी कहे लोक अलोक मे, सगले वरते काल।
ते सूतर अर्थ विना बके, वले देवे सूतर सिर आल ॥ ५ ॥
उधा अर्थ करे अकल विना, वले बोले आल पपाल।
हिवे काल दरब रो निरणो कहू, ते सुणजो सुरत सभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[म्हारो सेणा रो साथी रे वीछीयो]

चाल सासती ले जोतष्या तणी, जीव पुद्गल रो जघन व्यापार जी।
तिणने समो कह्यो तीथकरे, तिणरो साभलजो विसतार जी।
काल वंरते अढाई दीप मे* ॥ १ ॥
असख्याता समां री आवलका हुवे, जाव पुदगल परावर्तन जाण जी।
अतीत अनागत वरतमान ने, काल दरब री करजों पिछाण जी ॥का० २ ॥
जिण खेतर मे समो वरते नही, तठे आवल्कादिक पिण नही जी।
आवल्कादिक तो समा सू हुवे, अधा समो सगला रे माहि जी ॥ ३ ॥
उतराधेन मे छ दरबा तणा, चाल्या दरब खेतर काल भाव जी।
काल वरते समय खेतर मझे, तठे कह्यो उघाड़ो न्याव जी ॥ ४ ॥
समय खेतर कहे सर्व खेतर ने, कालवादी सूतर रो अजाण जी।
समय खेतर चाल्यो सिद्धांत में, तिणरा पाठ री करजों पिछांण जी ॥ ५ ॥
अढाई दीप दोय समुद ने, समय खेतर कह्यो जिणराय जी।
भगोती रे सतक दूसरे, जोवो नवमां उदेसा माय जी ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सीमंत नामा नरका वासो कह्यो, समय खेतर ने उडू विमांण जी।
वले मुगत सिला चोथी कही, ए तो च्यारूं बराबर जाण जी ॥ ७ ॥
च्यारूं पेंतालीस लाख जोजन तणा, ठांणाअंग चोथा ठांणा मांहि जी।
समय खेतर समय सहीत छें, गुण निपन नांम छे ताहि जी ॥ ८ ॥
परमांण[1] आहाउनिव्वत[2] काल छे, वले मरण[4] ने अधाकाल जी।
च्यारूं भेद छे अधाकाल ना, ठांणाअग चोथो ठांणो सभाल जी ॥ ९ ॥
अधाकाल छे मिनख लोक मे, ते तो समयादिक जाणे एह जी।
आतो सूर्यादिक री चाल छे, अढी दीप बारें नहीं तेह जी ॥ १० ॥
इदा[1] अगी[2] जमा[3] नें नेरइ[4], वारुणी[5] वायवा[6] दिस जाण जी।
सोमा[7] इसणीया[8] विमला[9] दिसि, दसमी दिस तमा[10] पिछांण जी ॥ ११ ॥
नव दिस मे अजीव अरूपी तणा, सात भेद तिहा वरते काल जी।
छत्र भेद नीची तमा दिस मझे, अधा समो दीयो जिण टाल जी ॥ १२ ॥
ए भगोती दसमा सतक मे, पेहले उदेसे जोय संभाल जी।
तो ही कालवादी भूठो थको, लोक अलोक में कहें काल जी ॥ १३ ॥
नीचा तिरछा खेतर लोक मे, अजीव अरूपी रा भेद सात जी।
छ भेद कह्या ऊंचा लोक में, अधाकाल टाल्यो साख्यात जी ॥ १४ ॥
ए भगोती रे सतक इग्यार मे, लेजो दसमें उदेसे संभाल जी।
उंचा लोक मे काल निषेधीयो, तो अलोक मे किहा थी काल जी ॥ १५ ॥
छहू दिस लोक नें अंत छेहडे, नही वरते समयादिक काल जी।
अजीव अरूपी रा छ भेद छें, अधासमों दीयो जिण टाल जी ॥ १६ ॥
धर्म अधर्म नें आकाश नां, देस परदेस कह्या जिणराय जी।
कालवादी कहे तिहां काल छें, तो तू सातमो भेद बताय जी ॥ १७ ॥
छ भेद अरूपी रा कह्या, रूपी रा कह्या छे भेद च्यार जी।
काल परूपे लोक रे छेहडे, तो तूं काढ़ बताय इग्यार जी ॥ १८ ॥
इग्यारे भेद तो काढ सकें नही, लोक अलोक में कहें काल जी।
उंधी परूपे सुध बुध बाहिरा, दे दे सूतर रे सिर आल जी ॥ १९ ॥
रूपी अरूपी विण वसतु नही, जीव अजीव विण नही काय जी।
त्यांरो लेखो तो मूढ करे नही, यूही कूडी करे बकवाय जी ॥ २० ॥
रूपी अरूपी जीव अजीव रो, रूडी रीत काढ्यो नीकाल जी।
भगोती रे सतक सोलमे, आठमे उदेसे संभाल जी ॥ २१ ॥
कालवादी कहें काल अलोक मे, ते बोलें नही वचन विमास जी।
अजीव दरब रो देस अलोक में, अनत भाग उणो छें आकास जी ॥ २२ ॥

दसमे उदेसे दूजा सतक मे, भगोती मे काढ्यो नीकाल जी।
पिण कालवादी भूठ आदर्यो, अलोक मे कहि २ काल जी॥ २३ ॥
रात-दिन अनंता नीपजें, ते तो लोक असखेज माय जी।
अढी दीप मे दरब अनत छे, इण लेखे अनता थाय जी॥ २४ ॥
एक २ दरब उपर गिण्या, एक २ रात दिन जाण जी।
इम अनंता दरब उपर गिण्या, अनता रात दिन पिछाण जी॥ २५ ॥
वले तीनूइ काल तणा गिण्या, तो पिण अनत हुवे दिन रात जी।
ए भगोती सतक पांचमें, नवमें उदेसे कह्या साख्यात जी॥ २६ ॥
काल फरसे पांचू दरबा तणा, छ दिस ना परदेस चकवाल जी।
पिण परदेस पाचू दरब ना, केइ फरसे न फरसे काल जी॥ २७ ॥
समय खेतर परदेस आगलो, तठा बारे न फरसे काल जी।
माहे परदेस पाचू दरब ना, अधा समो फरसे दगचाल जी॥ २८ ॥
जो काल हुवे लोक अलोक मे, तो सगला परदेस फरेस काल जी।
फरसे न फरसे जिण क्यानें कहे, कोइ समभो सुरत सभाल जी॥ २९ ॥
भगोती रे सतक तेरमे, चोथे उदेसे ए विसतार जी।
फरसे नही फरसे ते विवरो कह्यो, छ ही दरबा तणो निसतार जी॥ ३० ॥
नीची दिस थी उची दिस मभे, दरब अनत गुणा तिण मांय जी।
छ दरबा री अल्पाबोहत मे, तिणरो अर्थ सुणो चित्त ल्याय जी॥ ३१ ॥
नीची दिस में काल वरते नही, उची दिस काल वरते ताहि जी।
ते काल दरब माहे मिल्या, अनंत गुणा उंची दिस माहि जी॥ ३२ ॥
फिटकरतकरंड मेरु तणो, तिहा उची दिस वरते काल जी।
चंद सूर्य नी प्रभा पड़े तठे, समा नीपजे दग चाल जी॥ ३३ ॥
उचा लोक थी नीचा लोक मे, दरब अनत गुणां छे ताहि जी।
तठे समां अनता नीपजे, दोय विजे उडी तिण माहि जी॥ ३४ ॥
उचा लोक थी नीचा लोक मे, पुदगल जीव इधक विशेख जी।
अनंता गुणां कह्यां ते काल सूं, छ दरब री अल्पा बोहत देख जी॥ ३५ ॥
उंचा लोक मे काल वरते नही, नीची दिस मे न वरते काल जी।
काल वरते कहे सर्व खेतर मे, ते करें मूढ भूठी भखाल जी॥ ३६ ॥
पन्नावणा रा तीजा पद मभे, तठे कह्यों घणो विसतार जी।
तिणरो निरणो करें घट भीत रे, कालवादी रो सग निवार जी॥ ३७ ॥
लोक आकाशती सर्व लोक मे, तिणरा देस नें फरसे काल जी।
तिमहीज फरसे देश लोक नों, ए तो अघा समो दगचाल जी॥ ३८ ॥

आकाशती रा देस परदेस सू, अलोक ने फरस्यो जाण जी।
और दरब नही अलोक मे, ए श्री जिणवचन परमांण जी ॥ ३६ ॥
अढाई दीप दोय समुद ने, अधासमों फरसें दगचाल जी।
सेप दीप समुदर तेहनें, अधासमों न फरसें काल जी ॥ ४० ॥
समय खेतर बारे छें नही, आ तो जोतपीयां री चाल जी।
जेठ समयादिक नीपजे नही, तठें किहां थी फरसें काल जी ॥ ४१ ॥
पन्नवणा सूतर रे पद पनरमें, कोइ बुधवंत लेजो संभाल जी।
पिण कालवादी करमां वसें, लोक अलोक मे कहें काल जी ॥ ४२ ॥
नीपने सूर्यादिक चालीया, समयादिक काल अनत जी।
ए भगोती रे सतक बारमे, छठे उदेसे कह्यो भगवत जी ॥ ४३ ॥
नरकादिक गति में वरते नही, समों आवलिकादिक जांण जी।
त्यारा आउषादिक नें मापवा, मिनष खेतर में मांन परमांण जी ॥ ४४ ॥
आखा लोक मे काल वरतें नही, तो अलोक में किहाथी होय जी।
भगोती रे सतक पाच मे, लेजो नवमों उदेसो जोय जी ॥ ४५ ॥
खेतर उजाड मे धान नीपनो, कोइ कहे मण सो दोय च्यार जी।
तिणरा मापा तोला छे गाम में, उण उनमांन कह्यों विचार जी ॥ ४६ ॥
ज्यूं नरकादिक जीवां कने, आउषादिक पुद्गल पाय जी।
ते तो समे २ पुद्गल खिरे, त्यारो मापो समय खेतर कांय जी ॥ ४७ ॥
कपड़ो छे बजाज रा हाट में, गज दरजी रे घर ताहि जी।
ज्यूं आउषादिक जीवां कने, मापो छे समय खेतर मांहि जी ॥ ४८ ॥
गाय भेंस उहाडै हाचले, कोइ कहें दूध सेर छें च्यार जी।
पिण तोला पड्या घर हाट मे, इणरे उनमान कह्यो विचार जी ॥ ४६ ॥
ज्यूं संसारी जीवां तणा, आउषादिक सगलां तीर जी।
त्यांरा आउषादिक ने मापवा, समय खेतर में कह्यों काल वीर जी ॥ ५० ॥
जीव अजीव अवगाहे रह्या, तिणरी मापो छें खेतर आकास जी।
केइ उपजें विणसें केइ सासता, काल सूं माप लेजो विनास जी ॥ ५१ ॥
संचिठण गति च्यार में, तिणरा अरथ री कीजो पिछांण जी।
सुन असुन मिश्रपणें रह्यों, तिणनें काल सूं गिणीयो जांण जी ॥ ५२ ॥
जीव नरक सूं गयो गति ओरमें, फेर पाछो आयो नरक मांहि जी।
जद नेरइय मेल गयो हुतो, ते तो एक रह्यों नहीं ताहि जी ॥ ५३ ॥
ते तो सुन सचिठण में रह्यों, ते तो काल सूं गिणीयो वीर जी।
हिवें असुन सचिठण नें कहूं, तिणरो सुणजो अरथ सधीर जी ॥ ५४ ॥

जीव नरक सूं गयो गति ओर में, फेर पाछो आयो नरक ताहि जी।
जद नेरइया मेल गयो हूँ तो, ते तो सगलाइ हुवे नरक माहि जी ॥ ५५ ॥
ते तो असुन सचिठण में रह्यो, ते तो काल सू गिणीयो एम जी।
हिवें मिश्र संचिठण नें कहूँ, तिणरो अरथ सुणो घर पेम जी ॥ ५६ ॥
जीव नरक सू गयो गति ओर मे, फेर पाछो आयो नरक मांय जी।
जद नेरइया मेल गयो हूँतो, केइ उवेहीज केइ ओर आय जी ॥ ५७ ॥
ते तो मिश्र सचिठण में रह्यो, तिणने काल सूं गिण्यो भगवत जी।
पिण काल न वरते नरक में, तिणरो न्याय सुणो वुघवत जी ॥ ५८ ॥
सुन असुन मिश्र काल नरक मे, ते काल कह्या ओर न्याय जी।
तिणरो दिष्टन्त दे निरणो कहूं, ते साभल जो चित्त ल्याय जी ॥ ५९ ॥
एक चाडो भरयो तेल तेहनें, कोइ कहे तेल सेर छ सात जी।
पिण सेर नही चाडा मझे, ज्यू नरक मे नही काल विख्यात जी ॥ ६० ॥
कालवादी कूडो मत थापवा, नरक मांहे परूपे काल जी।
सुन असुन मिश्र कालरो, भेद जाण्या विण करें झखाल जी ॥ ६१ ॥
कालवादी रा मत तणी, एक इचरज वाली वात जी।
समझायो समझे नही, तिणरा घट माहे गूढ मिथ्यात जी ॥ ६२ ॥
हूँ कहि २ नें कितरो कहूं, कालवादी रा मत रो कूड जी।
इम सांमल नें नरनारीयां, कालवादी सू रहजो दूर जी ॥ ६३ ॥
काल दरव ओलखायवा, जोड कीधी खेरवा मझार जी।
समत अठारे बत्तीसे समे, आसाढ सुद एकम सोमवार जी ॥ ६४ ॥



ढाल : ६

दुहा

कालवादी रे करम उदें हुवां, तिणसूं हूवों घणों विपरीत।
तिणनें छेड़वीया उलटो पडे, नही न्याय मेलण री नीत ॥ १ ॥
अरिहंत देव ने आयरीया, वले उवभाय सगला साध।
त्यानें अजीव कहें मूरख थकों, वले भूठों करें विषवाद ॥ २ ॥
इण कालवादी पाषंडी तणों, करडों घणों छें मिथ्यात।
केइ भारीकरमा जीवडा, ते मांनें इणरी वात ॥ ३ ॥
केइ घेषी छे सुध साधां तणां, त्यारे घोर रूद्र मिथ्यात।
त्यानें समभ पडें नही सर्वथा, तोही करें इणरी पखपात ॥ ४ ॥
तिरण तारण उत्तम पुरपा भणी, अजीव कहतों नाणें मूंढ लाज।
हिवे साधु करें छे परूपणा, यांने जीव सरधावण काज ॥ ५ ॥

ढाल

[धन्या श्री आजनगर में वाइमें]

अरिहंत देव जिण सासण रा नायक, ते निश्चेंइ उत्तम जीवो रे लो।
त्यानें अजीव कहें कोइ मूंढ मिथ्याती, तिण दीधी नरक री नीवो रे लो ॥
देखो रे आंधा चेते नही* ॥ १ ॥
अरिहत देव अरी करमा ने हणीया, त्यां कीधी धर्म री आदो रे।
त्यानें अजीव सरधें काय बूडो, कर २ कूडी विषवादो रे लो ॥ दे० २ ॥
अरिहंत आप तिरे ओरा नें तारें, तिरण तारण उघाडों छें पाठो रे।
याने अजीव सरधे उसभ उदे सूं, त्यारो भाग उगडीयो माठो रे लो ॥ ३ ॥
अरिहंत देव मुगत जावारा कांमी, त्यां दीधी संसार नें पूठो रे।
त्यां अरिहंतां नें जीव न सरधें, ते मत निश्चेंइ भूठो रे लो ॥ ४ ॥
सगला मुनीसरां रा टोला माहें, तीथकर देव मोटा रे।
ते मुनीसरां ने तीथंकर देवा नें, अजीव सरधें तिण खाधा खोटा रे ॥ ५ ॥
साधां रा गण अधिपती गणधर, ते अनेक गुणां कर सहीतो रे लो।
त्यांनें अजीव कहे केइ भारीकरमां, ते होसी चिहूंगति में फजीतो रे लो ॥ ६ ॥
आचार्य पिण मोटा मुनीसर, ते छत्तीस गुणां सहीतो रे लो।
त्यांनें अजीव कहे केइ मत हीण मांनव, त्यारी विकल करें परतीतो रे लो ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

उवझाय पिण मोटा मुनीवर, ते पचीस गुणां सहीतो रे।
त्याने अजीव कहे केइ अकल विहूणा, ते नरभव खोय जासी रीतो रे लो ॥ ८ ॥
साधु रिषीसर मोटा मुनीसर, ते सत्तावीस गुणा करे पूरा रे।
त्यांनें अजीव कहे बाल अग्यानी, तिणरी वात माने ते कूडा रे ॥ ९ ॥
अरिहत आचार्य उवझाय ने साधु, ते सगलाई मोटा अणगारो रे।
त्याने अजीव सरधे उसभ उदे सू, ते बूड गया काली धारो रे ॥ १० ॥
या मोटा पुरषां ने अजीव सरधसी, तिणरें बंधसी पाप रा पूरो रे।
उवे उदे आसी जद दुखीयो होसी, तिणमें म जाणो कूडो रे ॥ ११ ॥
जो इणहीज भव मे पांप उदे हुवे, तो पडे बाहला रो त्रिजोगो रे।
वले रिद्ध संपत सगली विललावे, वले मिले दुसमण रो जोगो रे लो ॥ १२ ॥
कदा इण भव मांहें उदे पाप न होवे, तो परभव मे संका मत आणो रे।
उत्तम पुरषां ने अजीव सरधे त्याने, भव २ मे दुखीयो जांणो रे ॥ १३ ॥
उत्तम पुरषा ने अजीव सरधीया, आसातणा लागे भारी रे।
उसभ करम लागे इण सरधा थी, तिण सू भव २ में होसी खुवारी रे लो ॥ १४ ॥
अरिहत आचार्य उवझाय ने साधु, त्यारो भजन करो दिन रातो रे।
त्याने अजीव कहे छे कुपातर, तिणरी मूरख मानसी वातो रे लो ॥ १५ ॥
अरिहत आचारज उवझाय ने साधु, यां सगला ने ई जीव जाणो रे।
आगम संभालो नें जिणमत जोवो, इणमे सका मत आणो रे ॥ १६ ॥
कालवादी री सरधा पुर मे परगट कीधी, भव जीवा रो करण उधारो रे।
समत अठारे बरस अडतीसे, वैसाख सुद पाचम बुधवारो रे लो ॥ १७ ॥



ढाल : ७

दुहा

अरिहंत आचार्य उवझाय नें, वले साधु मोटां मुनीराय।
त्यांनें कालवादी कहें काल छें, कूडा कुहेत लगाय॥ १॥

अरिहत ने अरिहंतपणों, इम दोय २ बोल लगाय।
भोला नें पाड्या भर्म में, त्यांनें अजीव दीया सरधाय॥ २॥

अरिहंतपणों छुटे गयो, साधुपणों पिण छुट जाय।
जीव हुवों सिध तिण समें, जबें ए क्यूं गया विललाय॥ ३॥

जीव ने जीव रा गुण सासता, ते कदे नहीं विललाय।
जे विललाय पूरो हुवें, ते काल दरब छें ताय॥ ४॥

इम कहि २ भोला लोक नें, नांख्या भर्म जाल मांय।
पिण अरिहंत साधु रो सिध हुवो, ते जावक खबर न कांय॥ ५॥

अरिहंत साधु रों सिध हुवें, ते सूतर में जाब अनेक।
हिवे थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो आंण ववेक॥ ६॥

ढाल

[चतुर विचार करें नें देखो]

नमोथुणं अरिहंत सिद्धां नें कीधों, ते अरिहंत थी हुआ सिधो रे।
ठांम २ नमोथुणं संभालो, ओ चोड़ें पाठ प्रसिधो रे।
चतुर विचार करें नें देखो॥ १॥

जे अरिहंत जेंवंता विचरें, ते मुगत जावा रा कांमी रे।
आगे अरिहंत हुवा अनंता, त्यां सगलाइ सिध गति पांमी रे॥ २॥

पेंहलो नमोथुणं कीयों अरिहंत सिद्धां नें, बीजों नमोथुणं अरिहंता नें रे।
त्यां अरिहंतां नें अजीव परूपें, तिणरी वात अग्यांनी मांनें रे॥ ३॥

चोवीसां री असतूती लोगस गुणतां, ते अरिहंत सिघ हुआ चोड़सोंई रे।
त्यां अरिहंता नें अजीव सरधें, ते गया जमारो खोई रे॥ ४॥

अरिहंतां रा गुणां करें अरिहंत वाजें, साधां रा गुणां सूं साधु वाजे रे।
त्यां मोटां पुरषां नें अजीव कहतां, मूरख मूल न लाजें रे॥ ५॥

ज्यां पुरषां रा नांम लीयां थी, कटें पाप अदभूतो रे।
त्यां पुरषां नें अजीव परूपें, तिण दीधा नरक रा सूतो रे॥ ६॥

कालवादी कहें साध जीव हुवें तो, सिधां में साधु बतावो रे।
साध तो काल दरब पूरो हुवों, जब उणनें साध बतावे छें न्यावो रे॥ ७॥

रूइ रो सूत करे कपडो कीयो, पिण उतपत रूइ री जाणों रे।
ज्यूं साध अरिहत थई ने सिध हूआ, पिण यांरी उतपत साध पिछांणो रे॥ ८॥
तिण कपड़ा ने रूइ कहे त्याने, मतहीण मांनव जांणों रे।
ज्यूं सिद्धां ने साध परूपे, ते मूढ मिथ्याती अयांणो रे॥ ६॥
रूइ रा गुण तो कपडा मे समाया, ज्यू साध रा गुण सिधा मे समावें रे।
पिण वरतमांन काले हुवें जिम कहणो, ते समझ विरलां ने आवे रे॥ १०॥
रूइ रो गराग आया कपडो जोवे, पिण रूइ कठा सू पावे रे।
ज्यू कोइ साध सिधा माहे पूछे, सिद्धां मे साध किहां थी वतावे रे॥ ११॥
खाड रो बूरो करे कीधी मिश्री, पिण स्वाद न पडीयो जूओ रे।
ज्यूं वधता २ जीव रा गुण वधीया, जब ओ साध तणो सिध हुओ रे॥ १२।
मांखण ताएने घृत कीधो, ते घृत हुओ छे चोखो रे।
ज्यूं साधां रा सिध हूआ करणी करें, त्यां सकल करम कीयां सोखो रे॥ १३॥
आखा लोक मे धर्मास्तीकाय रा, खंध परदेस दोय भेद पावे रे।
आखा लोक में पूछे धर्मास्ती रो देस, तिणमें देस किहां थी वतावे रे॥ १४॥
खध हुवे तिहा देस न हूवे, देस हुवे तिहा खंध न पावे रे।
आखो ते खध ने उणो ते देस, दोनूं भेला किहा थी वतावे रे॥ १५॥
ज्यू आतमिक सुख पूरा सिद्धा मे, देस सुख साधां माहे पिछांणो रे।
सपूर्ण सुख ने सिध कहीजे, देस सुख ते साध ने जांणो रे॥ १६॥
सपूर्ण सुख तिहा नही अधूरा, अधूरा तिहां संपूर्ण नांही रे।
पूरा सुख सिधा मे उणा सुख साधा मे, दोनू सुख नहीं एकण मांही रे॥ १७॥
जिण समे साध तिण समे देस सुख, सिध तिण समे देस सुख नाही रे।
जब साध मरे ने सिध हूवो जद, देस सुख आयो सर्व सुख माही रे॥ १८॥
धर्मास्तीकाय रो खध हुवे तिहा, देस रो खय नही हूत्रों रे।
ज्यू साध रो सिध हूवों जब, साध न पडीयो जूओ रे॥ १६॥
मोष री साधन करतो साध कहिवांणो, साधन कर चूका ने सिध जाणो रे।
उणहीज साध रो सिध हुवो छे, तिण माहे सका मत आणो रे॥ २०॥
तिण साधु ने अजीव कहे छे अग्यानी, ते वूड गयो काली धारो रे।
इण सरधा ने कोइ साची जाणे, ते पिण जासी जनम विगाडो रे॥ २१॥
साध रो सिध भगवत हूवो छे, तिणरी खबर न कायो रे।
तिण साध नें अजीव कहे कालवादी, तिण गाला रो गोलो चलायो रे॥ २२॥
कोरा धान ने कोरो धांन कह्यो छें, सीझता ने कहे सीझे धांनों रे।
सीझ गया नें कह्यो सीझ्यौ धान, ए तीनूं धांन जांणों बुधवांनो रे॥ २३॥

कोरा धांन ज्यू अविरती समदिष्टी, सीझे ज्यूं साधु श्रावक पिछांणो रे।
सीझ्या धांन ज्यूं सिध भगवांन छे, ए तीनू उत्तम जीव जांणों रे ॥ २४ ॥
कोरा धांन री खप कीयां सीझ्यौ, ज्यूं समदिष्टी रो श्रावक हूवों जांणो रे।
पछे श्रावक रो साध अरिहंत हूवो, अरिहंत रो हूवों सिध निरवाणो रे ॥ २५ ॥
कोरो धांन अगन करें सीझ्यों, तिणमें कोरो किहां थी पावें रे।
ज्यूंतप सजम करे साध रो सिध हुओ, त्या में साध कठा थी बतावे रे ॥ २६ ॥
कालवादी कहे समाइ कीधीं होवें, वले साधुपणों कीधो होवें रे।
कीधी वसतु ते जीव नहीं छे, इम कहि २ भोलां नें विगोवें रे ॥ २७ ॥
जो उ कीधी वसतु ने जीव न मानें, तो उ सिद्धा नें जीव क्यूं माने रे,
सिध पिण करणी सू कीधा हुआ छे, आ पिण बात नही छे छानें रे ॥ २८ ॥
भावें जीव ते भला भूंडा भाव होवें, ते तो कीधां ईज होवें रे।
तिण सू भावें जीव नें कह्यों असासतो, तिण सूतर सांह्मो न जोवे रे ॥ २९ ॥
भावे न मानें असासतो जीव ने, घणां सूतर रा पाठ उथापी रे।
असासता जीव रा भाव न सरधें, दूसरो छें मूरख पापी रे ॥ ३० ॥
दरब जीव असंख परदेसी, ते तो कीधो होवे नांह्यो रे।
जीवरा भाव तो सर्व कीधां हुवे, जोवो सिधांत रे मांह्यों रे ॥ ३१ ॥
ठाम २ सूतर मांहें जोवो, साध पोहता निरवांणो रे।
त्यां साधां नें उत्तम जीव सरधो, छोड दो कूडी तांणों रे ॥ ३२ ॥
समत अठारें वरस अड़तीसें, वैसाष सुद आठम रविवारो रे।
जोड़ कीधीं पुर सहर रे मांही, भव जीवां रो करण उधारो रे ॥ ३३ ॥

रत्न : ४

इन्द्रियवादी री चौपई

ढाल : १

दुहा

केइ कहे इग्यारमे ने बारमे, दोय गुण ठाणा नव नव जोग।
च्यार च्यार जोग मन वचन रा, नवमो उदारीक रो छे प्रयोग ॥ १ ॥
इम कहे ते वीतराग ने, भूठाबोला कहें छे ताम।
ते ववेक विकल सुध बुध विना, भूठ बोले वेफाम ॥ २ ॥
त्यांरो भूठो मन वरते नही, मिश्र मन वरते नाहि।
वले भूठ न बोलें सर्वथा, मिश्र भाषा नही त्यांरे माहि ॥ ३ ॥
इग्यारमा गुण ठाणा सू आदि दे, चवदमा गुण ठांणा लग जाण।
जथाख्यात चारित छे निरमलो, जथातथ गुण रत्नारी खाण ॥ ४ ॥
ए च्यारा गुण ठांणां वीतराग छे, त्यानें पाप न लागे अस मात।
कषायादिक जोग माठा नही, त्यारी मूल न विगटे वात ॥ ५ ॥
इग्यारमें बारमे ने तेरमे, तीन गुण ठाण पुन बधाय।
ते पिण निरवद जोग सूं, इरिया वही कर्म लागे आय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आग्या में]

जथतथ चाले वीतराग हूआ ते, त्यानें भूठ लागतो मूल म जाणो।
भूठ सूं पाप निकेवल लागे छै, ते अभितर जोय करो पिछांणो।
वीतराग भाव अंतकरण ओलखजो* ॥ १ ॥
भूठो मन मिश्र मन त्यांरो न वर्तें, भूठी ने मिश्र भाषा मूल न बोलें।
निरदोष अखड चरित छे त्यारों, करलों काम पख्यां पिण मूल न डोलें ॥ २ ॥
भेषधारी कहे त्यांनें भूठ लागे छे, ते ऊठी जठा थी निकेवल भूठी।
वले ताणा ताण करें छें अग्यांनी, त्यारी अभितर आंख हीया री फूटी ॥ ३ ॥
भूठा जोग सूं पाप निकेवल लागे छें, ते पाप न लागें च्यारूं गुण ठाणे।
भूठा जोग वरत्या सूं पुन पिण न लागे, ते न्याय निरणा विण अग्यांनी तांणे ॥ ४ ॥
कदा कहिवा नें कहे पाप न लागें, जथाख्यात च्यारूं गुण ठाणे।
वले भूठाबोला त्यानें कहिता न सकें, पोतारा बोल्या ने पोते नही पिछाणे ॥ ५ ॥
भूठ लागो कहे जथाख्यात चरित ने, त्यांनें जाब पूछ्या बोलें आल पपालो।
ते भारीकर्मा जीव मूढ मिथ्याती, तीन काल रा अरिहत नें दीयो आलो ॥ ६ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अठारें पाप ठांणा मोह कर्म री प्रकृत, त्यांरा उदा सूं सेवे छे किरतब अठारो ।
ज्यारे मोह कर्म उदे जावक नाही, ते सावद्य किरतब न करे लिगारो ॥ ७ ॥

पापरा किरतब छे संसार में सगला, हिंसा भूठ आदि दे सेवें अठारों ।
ते जथाख्यात चारितीयो नही सेवें, त्यांरें निरवद जोग तणो व्यापारो ॥ ८ ॥

त्यांनें निरवद जोग सूं पुन लागे छे, भूठ ने मिश्र जोग हूआ लागें पापो ।
जब उ पण कहे त्याने पाप न लागें, पिण भूठ बोलण री करें मूढ थापो ॥ ९ ॥

कदा विण उपीयोगे कह्यों हुवें तिणनें समझतों देखें तो समझाय दीजें ।
जो उ समझायों समझें नहीं मूरख, तिणनें न्याय करे नें भूठो घालीजें ॥ १० ॥

वीतराग नें भूठ लागो कहे तिणरें, घट मांहें घणो छे घोर अंधारो ।
कदा ताण करंता टांको जलेतो, उतकष्टो भमें तो अनंत संसारो ॥ ११ ॥

ढाल : २

दुहा

आठ कर्म जिणेसरभाषीया, तिणमें घणघातीया कर्म च्यार।
ए च्यारू पाप कर्म उदे हूआ, जीवरे हूवे बोहत विगाड ॥ १ ॥

ए च्यारू कर्म षयोपसम हूआं, जब जीव उजल हुवे ताय।
जिम जिम च्यारू कर्म पातला पडे, तिम तिम गुण परगट थाय ॥ २ ॥

ए च्यारू कर्म षयोपसम हूआं, जीव पावें बोल बत्तीस।
ते बत्तीसोई पायक भाव माहिला, चोखा उजला विसवावीस ॥ ३ ॥

उजला हूवा करमा सू निवरते, ते उजला लेखे निरवद एह।
वले बीजो निरवद किरतब कह्यो, तिणसू कर्म रुके तूटे तेह ॥ ४ ॥

कर्म रोके आतमा वस करे, ते सवर निरवद जाण।
वले कर्म काटण करणी करे, ए बीजो निरवद वखाण ॥ ५ ॥

षयोपसम भाव छै निरमलो, तिणने कहे अग्यानी आम।
त्यारा केयक बोल निरवद कहे, केइ सावद्य निरवद कहे ताम ॥ ६ ॥

षयोपसम भाव ने सावद्य कहे, तिणरी प्रतख झूठी वात।
तिण सावद्य निरवद नही ओलख्यो, तिणरा घट माहे घोर मिथ्यात ॥ ७ ॥

ढाल

[पुन नीपजे शुभ जोग सू रे लाल]

हिवे षयोपसम भाव ओलखो रे लाल, आख हीयारी उघाड हो। भविक जण*
निरणो करो घट भितरे रे लाल, ते सावद्य नही छै लिगार हो ॥ भव० ॥
षयउपसम भाव निरवद जांणजो रे लाल*॥ १ ॥

जो षयउपसम भाव सावद्य हुवै रे लाल, तो पायक भाव सावद्य वशेष हो।
षयउपसम षायकभाव माहिलो रे लाल, या दोयारो छे निजगुण एक हो ॥ ष० २ ॥

ग्यानावर्णी दर्सनावर्णी मोहणी रे लाल, चोथो घणघातीयो अतराय हो।
ए च्यारू कर्म घनघातीया रे लाल, ते धर्म आवा न दे ताय हो ॥ ३ ॥

आभ पडल ज्यू घणघातीया रे लाल, देस थकी षय थाय हो।
जब जीव उजल हुवे देस थी रे लाल, ते सावद्य कठा थी आयो ताय हो ॥ ४ ॥

च्यारू कर्म देस थी अलगा हूआ रे लाल, मासू सावद्य निकलीयो कहे मूढ हो।
तिण सावद्यावर्णी कर्म थापियो रे लाल, तिणरे गाढो मिथ्यात री रूढ हो ॥ ५ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सावद्यावर्णी कर्म चाल्यो नही रे लाल, सावद्य आडा च्यारूं कर्म नांहि हो।
तिण सूं षयउपसम भाव नें रे लाल, सावद्य सरधे मत पडजों फंद मांहि हो ॥ ६ ॥
मोहणी कर्म जीव रे उदे हूआं रे लाल, जब तो सावद्य किरतब होय जात हो।
बाकी तीन कर्म उदे हूआं रे लाल, सावद्य नहीं नीपजें तिल मात हो ॥ ७ ॥
उदे हूआंई सावद्य न नीपजें रे लाल, तो कटीयां नहीं सावद्य अंसमात हो।
कर्म कटीयां सावद्य नीपनों कहें रे लाल, आ विकलां री इचर्यवाली वात हो ॥ ८ ॥
जीव उजला हूआं नें सावद्य कहें रे लाल, तो मेला हूआं सावद्य मिट जाय हो।
सावद्य घटीयो कहें उसभ उदे हूआं रे लाल, उणरी सरधा मिलसी इण न्याय हो ॥ ९ ॥
उणरी सरधा रे लेखे सावद्य यूं मिटें रे लाल, च्यारूं कर्म उदे आयां पूर हो।
सावद्य सेवे च्यारूं कर्म बांध नें रे लाल, उदे आंणे सावद्य करणों दूर हो ॥ १० ॥
घणघातीया देस थी अलगा हूआं रे लाल, सावद्य भूंडो नीपनो कहे तांम हो।
कर्म कटीयां सावद्य वधीयो कहे रे लाल, ते तों बूडे अग्यांनी वेफांम हो ॥ ११ ॥
ए च्यांरूइ कर्म पातला पड्यां रे लाल, कदे सावद्य नीपनों मत जांण हो।
कर्म पातला पड्यां सावद्य नीपजें रे लाल, आतो पाषंडीयांरी छे वांण हो ॥ १२ ॥
कर्म अलगा हूआं निरवद नीपजे रे लाल, आतो जिणजी रा मुख री वात हो।
तिण निरवद ने सावद्य कहे रे लाल, तिण रे उदें आयो छे मिथ्यात हो ॥ १३ ॥
आठ करमां मांहें छै अति बुरा रे लाल, घणघातीया च्यारूंई कर्म हो।
ते पतला पड्यां जीवरे ओगुण कहें रे लाल, ते भूला अग्यांनी भर्म हो ॥ १४ ॥
जिणमें अविनादिक ओंगुण घणा रे लाल, तिणरी सरधा रहे नहीं सुध हो।
सिध गुण जीवरा नें सावद्य कहे रे लाल, तिणरी भिष्ट हुई छै बुध हो ॥ १५ ॥

ढाल : ३

दुहा

कांयक घणघातीया कर्म षय हूआं, वले उदे हूआ ते षय जाय।
बाकी दबीया छे ते उपसम्यां, षयउपसम कर्म हूआ इण न्याय ॥ १ ॥
च्यारू कर्म षयउपसम हूआं, थोरो सो जीव उजल थाय।
ते उजलो खयउपसम भाव छे, ते चेतन गुण परजाय ॥ २ ॥
ग्यांनावर्णी षयउपसम हूआ, आठ गुण परगट थाय।
च्यार ग्यान ने तीन अगिनान कह्या, सूत्रादिक नो भणवो ताय ॥ ३ ॥
ए आठ गुण छे केवल ग्यान मांहिला, त्यामे सावद्य नही छे एक।
जो या माहिलो कोई सावद्य हुवे, तो केवल ग्यान सावद्य वशेष ॥ ४ ॥
ग्यांनावर्णी षयउपसम हूआं, ग्यान आयो कहे ते तो न्याय।
पिण अग्यान कठा थी आवीया, कोई एहवी पूछा करे आय ॥ ५ ॥
परमार्थ ग्यान अग्यान रो, एक कह्यो जिणराय।
ते पिण आवे छे ग्यानावर्णी घट्या, तिणरों न्याय सुणो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[जीव मोह अनुकम्पा न आणीये]

गिनांन ने अगिनांन दोया तणो, षयउपसम भणवो तो एक जांणरे।
ते तो समदिष्टी रो ग्यान जिण कह्यों, मिथ्याती रो कह्यो अनाण रे।
निरवद षयउपसम भाव छै* ॥ १ ॥
समदिष्टी भणे आगम गिनान ने, तेहिज भणे मिथ्याती गिनान रे।
उणरो ग्यान छे उणरो अग्यान छे, तिणरो निरणो कीजो बुधवांन रे ॥ नि० २ ॥
भारतादिक सास्त्र पर समे, त्याने भणें मिथ्याती जाणे रे।
तेहिज भणे समदिष्टी जाण ने, उणरे अनाण उणरे नांण रे ॥ ३ ॥
केइ निरवद कहे गिनान नें, पछे सरधा बतावे विरूध रे।
सावद्य निरवद कहै छै अग्यांन नें, आतो प्रतष बात विरूध रे ॥ ४ ॥
अगिनान ने सावद्य कहे, तिणरा घडा लगावें आंम रे।
खोटा सास्त्र भणे जांण जांण ने, उघाडे मुख घोखे तांम रे ॥ ५ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

अग्यांन सावद्य हुवे इण विध भण्यां, तो ग्यांन पिण सावद्य होय रे।
एहीज भणे समदिष्टी इण विधें, ए दोनू बरोबर सोय रे॥ ६॥
समदिष्टी खेती करें जांण ने, ग्यान सू जाणें होसी धान रे।
नही जाणे तो खेत वावे नही, तो ही सावद्य नही छे ग्यान रे॥ ७॥
समदिष्टी जाणे ग्यान सू, पुत्र होसी परणीज्यां नार रे।
पछे जाण परणीजे नार ने, पिण ग्यांन नही सावद्य लिगार रे॥ ८॥
समदिष्टी रे कोई बेरी हुवै, तिणनें मारण रो लग रह्यो ध्यांन रे।
ते पिण मारे छे ग्यान सूं जांण नें, ते पिण सावद्य नही छे ग्यान रे॥ ९॥
इत्यादिक अनेक सावद्य करें, समदिष्टी ग्यान सू जाण रे।
तो पिण ग्यान सावद्य मत जाणजों, सावद्य किरतब लेजो पिछांण रे॥ १०॥
एहीज किरतब मिथ्याती करे, अग्यान सू जाण पिछांण रे।
जो ग्यान निरवद छे निरमलो, तो अग्यान पिण निरवद जांण रे॥ ११॥
ग्यान अग्यान दोनू छे उजला, त्यारी धारणा निरवद जाण रे।
धारणा दोनू री छे सारिषी, तिण मे सका मूल म आण रे॥ १२॥
ग्यान ने अगिनान तेह ने, जाणपणा तणो गुण जांण रे।
ओर गुण ओगुण नही एह में, तिणरी बुधवत करजो पिछाण रे॥ १३॥
जे जे कर राखी छे धारणा, ते तो धारणा निरवद जाण रे।
ते धारणा उंधी सरधीयां, मिथ्यात उदें भाव पिछाण रे॥ १४॥
शास्त्र भणवारो उदम करे, तेतो जोग तणो व्यापार रे।
सावद्य जोग उदे भाव मोह सू, निरवद जोगारी करणी सार रे॥ १५॥
ग्यान अग्यांन छता रूप जीव रे, तिणसू जाण रह्यो छे ताय रे।
जे जे कोइ सावद्य नीपजे, मोह उदा तणी परजाय रे॥ १६॥
बोलवा चालवादिक अति घणी, जीवरी परजाय अनेक रे।
जाण पणा विण ग्यान अग्यान री, परजाय नही छे एक रे॥ १७॥
कोई अग्यांन ने सावद्य कहे, तिणरी प्रतष झूठी वात रे।
तिणरें उसभ उदे रा जोर सूं, चोरें पडवजीयो मिथ्यात रे॥ १८॥

ढाल : ४

दुहा

दरसणावर्णी घणघातीयो, षयउपसम होय पड्यो खीन।
जब आठ गुण परगट हुवे, पाच इन्द्री ने दर्शन तीन॥ १ ॥
ए आठूं गुण निरदोष छे, उजला लेखें निरवद जांण।
ते केवल दर्शण माहिला, गुण रतनां री खांण॥ २ ॥
केई अग्यांनी इम कहे, आठोई गुण निरवद नाहि।
यानें सावद्य निरवद दोनू कहे, भोला ने न्हाखें फंद माहिं॥ ३ ॥
यां आठा गुणा मे सावद्य हुवें, तो केवल दर्शण सावद्य विशेष।
ए तो केवल दर्शण माहिला, यां सगला रो गुण एक॥ ४ ॥
पाच इंद्री ने तीन दर्शण मभे, सावद्य नही छे एक।
ते जथातथ परगट करू, ते सुणजो आंण ववेक॥ ५ ॥

ढाल

[जोयजो रे समकित · आउषो टूटी ने साधो को नही रे]

चषू दर्शण मे चषू इद्री अछे रे, अचषू दर्शण में आइ इद्री च्यार रे।
यां विना देखे कोई मरजाद सू रे, ते अविध दर्शण छे या सू न्यार रे।
षयउपसम भाव छे निरवद जिण कह्यो रे* ॥ १ ॥
सुरतइद्री सुने छे तीन शब्द ने रे, पाच वर्ण चषू इद्री देखे ताहि रे।
यारो तो ओहिज गुण सभाव छे रे, गुण अवगुण और नही त्यां माहि रे॥ ष० २ ॥
घणइद्री वेदे दोय गध ने रे, रस इद्री रस वेदे पाच सवाद रे।
फरस इद्री वेदे आठ फरस ने रे, यासू नही विषे तणो विवाद रे॥ ३ ॥
ए त्रेवीस प्रकारे पुद्गल जूजूआरे, वेदे देखें ते दर्शण जाण रे।
या में राग ने घेष सेव्या विषे हुवे रे, तिणसू तो पाप लागे छै आण रे॥ ४ ॥
सुरतइद्री मे पुद्गल आए पडे रे, ते सुरतइ द्री रें नावे भोग रे।
चषू इंद्री देखे छे पुद्गल दूर थी रे, ते पिण नावे छे तिण रे भोग प्रजोग रे॥ ५ ॥
बाकी तीन इंद्री मे पुद्गल आए परे रे, ते पुद्गल आवे छे त्यारे भोग रे।
गंध रस ने फरस भोगवे रे, त्यां पुदगल नो आय मिले सजोग रे॥ ६ ॥
सुरतइद्रीं ने चषूइद्रीया रे, यारे तो पुदगल आवे काम रे।
भोग नही छै यारे सर्वया रे, तिणसू यारो कामी इंद्री नाम रे॥ ७ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

घणइंद्री रसइंद्री नें फरस इंद्रीयां रे, यारें तो पुदगल आवे भोग रे।
तिण सू तीनूं इंद्री भोगी कही रे, त्यानें पुदगल रों आय मिल्यां संजोग रे॥ ८॥
कामी नें भोगी तो इंदस्त्रयां कही रे, कांमभोग ने पुदगल जांण रे।
त्यासूं तो पाप न लागे सर्वथा रे, पाप लागे छे राग धेष सूं आंण रे॥ ९॥
कांमभोग सूं सुमता नही हुवै रे, असुमता पिण तिण सूं नही लिगार रे।
कह्यो छे उतराधेन बतीस में रे, सो नें पहली गाथा मभार रे। १०॥
सजम निरवाहण राखण शरीर ने रे, पुदगल रो करे छें साधु आहार रे।
ते निरवद जोग तणो व्यापार छे रे, इंदरयां रो नही छे विषे विकार रे॥ ११॥
त्यारे निरवद जोगां सूं निरजरा हुवै रे, जब पुन्य पिण सेहजें नीपजे छें ताय रे।
त्यां साधा रे सावद्य नही राख्यो सर्वथा रे, त्यानें आज्ञा दीधी छें श्री जिण राय रे॥ १२॥
ग्रहस्थ उदीरे पुदगल भोगवे रे, ते सावद्य जोग तणों व्यापार रे।
तिण शरीर प्रग्रहा नों कीयो जाबतो रे, वले इ दस्त्र्यां री सेवा विषे विकार रे॥ १३॥
वले छ काय रो सस्त्र ने तीखो कीयो रे, इत्यादिक अवगुण छे तिण माहि रे।
तिण सू पुदगल ने भोगववा तणी रे, सुध साधां विण श्री जिण आग्या नांहि रे॥ १४॥
सेह् हजे इदस्त्र्या मे पुदगल आए पड़े रे, त्यानें कोई वेदे देखें छे ताय रे।
जब पाप रो अंस न लागें तेहने रे, राग धेष सूं पाप लागें छें आय रे॥ १५॥
पुदगल ने भोगवे देखें उदीर ने रे, ते तो छे जोग तणों व्यापार रे।
तिणरो सावद्य निरवद किरतब ओलखों रे, जिण आग्या अणआग्या रो करों विचार रे॥ १६॥
जिण आग्या सहीत पुदगल ने भोगवे रे, ते निरवद जोग तणो व्यापार रे।
कर्म कटे छे तिण सू आगला रे, वले नवों न लागे पाप लिगार रे॥ १७॥
जिण आगना विण कोइ पुदगल भोगवें रे, ते सावद्य जोग तणो व्यापार रे।
तिण सूं पाप कर्म लागे छे तेहने रे, ते जीव ने दुखना आपणहार रे॥ १८॥
आख्या सूं देखें कागादिक जीवने रे, जब करे सिकारी तिणरी घात रे।
तिणसूं चषू इंद्री ने सावद्य कहे रे, ते प्रतष भूठी तिणरी वात रे॥ १९॥
चषू इंद्री सू रूप देखें नारी तणो रे, जब करे अकारज तिण सूं तेह रे।
तिण सूं चषू इंद्री नें सावद्य कहें रें, तिण पिण भूठ बोल्यो छे एह रे॥ २०॥
इत्यादिक रूप अनेक देखने रे, केइ जीवां रे उठें विषे विकार रे।
तिणसू चषू इंद्री नें सावद्य कहें रे, ते निरणों न जांणें मूंढ गिवार रें॥ २१॥
च्यारां इंदस्त्र्या मे पुदगल आए पडें रे, ते इंदस्त्र्यां वेद लेवे छे ताहि रे।
जब केयक जीवां रें अवगुण नीपजें रे, ते अवगुण बतावे इंदस्त्र्यां मांहि रे॥ २२॥
चषूइंद्री पुदगल देखे दूर थी रे, ते देखणरो गुण छे तिण में ताम रे।
जब केयक जीवां रे आंगुण नीपजें रे, खोटा वरत्या तिणरा परिणांम रे॥ २३॥

सावद्य कहे पाचू इंदर्यां भणी रे, तिणरे उदे छे मोह मिथ्यात रे।
ते इंदरयां नें निश्चे निरवद जिण कही रे, तिण मे सका नही तिलमात रे॥ २४॥
जो देख्यां वेद्यां इंदर्यां सावद्य हुवे रे, तो जाण्यां सू ग्यान सावद्य होय जाय रे।
ग्यान दर्शण रा गुण दोईज छे रे, सावद्य निरवद छै ओर परजाय रे॥ २५॥
दर्शण रो सभाव छे देखण तणो रे, और गुण ओगुण नही तिणरो एक रे।
और गुण ओगुण नीपजे जीव रे रे, ते परजा छे जीव तणी अनेक रे॥ २६॥

●

ढाल : ५

दुहा

च्यार कर्म घणघातीया, तिण में मोंटों मोंहणी कर्म।
तिणरा उदा सूं जीव पांमें नही, समकत चारित धर्म ॥ १ ॥
तिणमें दर्शण मोहणी उदे हुवां, पडे उंधी सरधा माही आण।
साची सरधा मूल सूझे नही, बूडे कूडी कर कर तांण ॥ २ ॥
चारित्र मोहणी रा जोग सू, करे सावद्य किरतब अनेक।
खोटा २ काम सर्व आवीया, बाकी सावद्य रह्यों नही एक ॥ ३ ॥
ते मोहणी षयउपसम हूआं, जब आठ गुण परगटे आय।
च्यार चारित्र देसविरत पाचमो, तीन दिष्ट षयउपसम थाय ॥ ४ ॥
ए आठोई बोल छें उजला, त्याने निरवद कह्या जिणराय।
ते आठोई षायक भाव मांहिला, त्यासूं कर्म न लागे आय ॥ ५ ॥
षयउपसम भाव मिथ्यादिष्टनें, सावद्य कहे अग्यांनी तांम।
तिणरी जथातथ ओलखणा कहूं, ते सुणज्यो राखे चित्त ठांम ॥ ६ ॥

ढाल

[दुलहो मानव भव पावणो]

उंधो सरधें ते मिथ्यादिष्ट छे, ते दसविध कह्यो मिथ्यात हो। भविकजन।
ते आश्रव उपाय छे पाप रो, ते उदे भाव कह्यो जगनाथ हो ॥ भ० ॥
षयउपसम भाव छे निरमलो* ॥ १ ॥
दसोई उंधा बोल माहिलो, कोइ सूधो सरधें बोल एक हो।
ते निरदोष षयउपसम भाव छे, पाछे सावद्य रह्या बोल शेष हो ॥ ष० २ ॥
जिम २ घट छे उंधो सरधवो, तिम २ घटें छे मिथ्यात हो।
उंधो घटया वधे सूधो सरधवो, ते षयउपसम भाव साख्यात हो ॥ ३ ॥
ते षयउपसम भाव निरवद कह्यो, श्री जिणमुख सूं आप हो।
ते उजला लेखें निरवद कह्यों, वले रूकीया छें तिणसूं पाप हो ॥ ४ ॥
इम घटतां २ सगला घटया, उंधा दसोई बोल जांण हो।
जब हूवो मिथ्याती रो समकती, एहवो षयउपसम भाव पिछांण हो ॥ ५ ॥
कोइ, षयउपसम निरवद भाव ने, सावद्य कहे छे कर २ तांण हो।
ते यूंही बूडे छे वापडा, ते जिण मारग रा अजांण हो ॥ ६ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

मिथ्यात मोहणी कर्म उदे हुआं, जब उदें भाव सावद्य मिथ्यात हो।
ते घटीयां सावद्य वधीयों कहे, ते विकलां वाली छें वात हो॥ ७॥
उदें भाव कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मिथ्यात मोहणी सु जाण हो।
वले षयउपसम कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मोह कर्म पस्यां हांण हो॥ ८॥
मोह कर्म उदे सावद्य नीपजें, षयउपसम हूआं सावद्य नाहिं हो।
षयउपसम हूआं निरवद्य नीपजे, बुधवंत समझो मन माहिं हो॥ ९॥
मिथ्यादिष्ट षयउपसम भाव छे, समामिथ्या दिष्ट तिमहीज जांण हो।
षयउपसम भाव निरवद्य कह्यो, तिण माहे सका मत आंण हो॥ १०॥
जो षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो षायक भाव सावद्य वशेख हो।
षयउपसम षायक भाव माहिलो, यां दोयां रो छे निजगुण एक हो॥ ११॥
षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो उदे भाव सूं मिट जाय हो।
उणरी सरधा रो ओहीज न्याय छे, उदे भाव रो करणो उपाय हो॥ १२॥
तो मिथ्यात मोहणी कर्म बांधणो, तिण सू षयउपसम मिट जात हो।
साची सरधा ने उंधी सरध ने, पाछों पडिवजणो मिथ्यात हो॥ १३॥

ढाल : ६

दुहा

चोथो कर्म घणघातीयो, भारी कर्म अंतराय।
जिण २ वसतुरी छे चावना, तिण आडो होय रह्यों ताय॥ १ ॥
अंतराय कर्म तणा, पांच भेद कह्या जिणराय।
प्रथम दांना अंतराय छे, बीजों भेद लाभा अंतराय॥ २ ॥
भोग उवभोग आडी होय रही, ते भोग उवभोग अंतराय।
वीर्य अंतराय कर्म थकी, सकत दबे रही ताय॥ ३ ॥
षयउपसम हुवे अंतराय जब, आठ गुण परगटें आय।
पांच लब्द नें तीन वीर्य हुवे, ते निर्मल गुण परजाय॥ ४ ॥
ए आठोंई गुण निरवद उजला, त्यां नें सावद्य कहे केइ मूंढ।
तिण ऊंध मती री सरधा सुंणों, छोड हीया री रूढ॥ ५ ॥

ढाल

[विनारा भाव सुण सुण गूंजे : डाभ मुंदिक नी डोरी]

धूर सूं तो दांना अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय।
दांन आडी नहीं छे ताय, दांन लब्द परगट हुवे आय॥ १ ॥
तिण लब्द नें निरवद जांणों, तिण मांहें संका मत आंणों।
तिणनें सावद्य कहे तांण तांण, ते तो जिण मारग अजांण॥ २ ॥
इण लब्द में ओगुण नांहीं, लबद तो जिण आगना मांहीं।
गुण अवगुण दांन में जांणों, सावद्य निरवद भेद पिछांणों॥ ३ ॥
इविरत में दान देवे जांणों, ते तो सावद्य जोग पिछांणों।
विरत में दांन देवे छे कोय, तिणरा निरवद जोग छे सोय॥ ४ ॥
दान नें सावद्य निरवद जांणों, त्यांनें रूडी रीत पिछांणो।
सावद्य दांन तो प्रतष खोटो, लब्द गुण छे निरंतर मोटो॥ ५ ॥
दान लब्द नें दांन छे न्यारो, तिणरो बुधवंत जाणे विचारो।
दान लब्द जतनज कीजे, सावद्य दान जाबक त्याग दीजे॥ ६ ॥
दांन लब्द छै निरवद भावो, तिण मांहें संका मत ल्यावो।
दान लब्द सावद्य कहै कोय, उणरे लेखे निरवद किम होय॥ ७ ॥
कर्म बांधे दांना अंतराय, सताब सूं उदें अणाय।
षयउपसम नें देणों घटाय, उणरे लेखे निरवद इम थाय॥ ८ ॥

दांना अंतराय कर्म घटीयो, जीव उजल हूवो कर्म मिटीयो।
तिण उजल नें सावद्य कहे ते भूठो, मोह कर्म उदे हीयो फूटो॥ ९॥
सावद्य वधीयो कहे घटियां कर्म, ते भूला अग्यानी भर्म।
ते सावद्यावर्णी कर्म थाप, यू ही बाधे अग्यानी पाप॥ १०॥
दूजी लाभा अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय।
लाभ आडी नही छे ताय, लाभ लब्द परगट हुवे आय॥ ११॥
तिण लब्द नें निरवद जाणों, तिण माहे सका मत आणो।
तिणनें सावद्य कहे तांण २, ते तो जिणमारग रा अजांण॥ १२॥
इण लब्द मे आंगुण नांही, लब्द तो जिण आगना मांही।
गुण आंगुण लाभ लेण मे जांणो, सावद्य निरवद भेद पिछाणो॥ १३॥
पुदगलादिक री छे चाय, इविरत मे लेण रो उपाय।
तिणनें मेल्यां मिले छे आय, तिणरा सावद्य जोग छे ताय॥ १४॥
पुदगलादिक री छे चाय, जिण आग्या सूं मेलण रो उपाय।
तिण ने मेल्यां मिले छे आय, तिणरा निरवद जोग छे ताय॥ १५॥
सावद्य जोग सूं पाप बंधाय, निरवद जोग सूं निरजरा थाय।
नही तूटे बंधे लब्द सू कर्म, लब्द छे निरजरा धर्म॥ १६॥
इत्यादिक अनेक भेद जांण, दान लब्द ज्यूं लेजो पिछाण।
लाभ लब्द में ओगुण नाही, गुण अवगुण पुदगल मेल्या माही॥ १७॥
तीजी भोगा अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय।
भोग आडी नहीं छे ताय, भोग लब्द परगट हुवे आय॥ १८॥
तिण लब्द नें निरवद जाणों, तिण मांहें संका मत आणो।
तिणने सावद्य कहे ताण २, ते तो जिण मारग रा अजाण॥ १९॥
इण लब्द मे आगुण नाहीं, लब्द तो जिण आगना माही।
गुण ओगुण भोगवण मे जांणों, सावद्य निरवद भेद पिछाणो॥ २०॥
पुदगल भोगवण री छे चाहि, इविरत में भोगवे छे ताहि।
पुदगल भोगवले एक वार, तेतो सावद्य जोग व्यापार॥ २१॥
पुदगल भोगवणरी छे चाहि, जिण आग्या सूं भोगवे ताहि।
पुदगल भोगवले एक वार, ते तो निरवद जोग व्यापार॥ २२॥
सावद्य जोग सू पाप बधाय, निरवद जोग सूं निरजरा थाय।
नही तूटें बंधे लबद सूं कर्म, लब्धि छे निरजरा धर्म॥ २३॥
इत्यादिक अनेक भेद जांणो, दांन लब्द ज्यूं लेज्यो पिछाणो।
भोग लब्द में ओगुण नाहीं, गुण ओगुण भोगवण रे माही॥ २४॥

असणादिक च्यारूं आहार, ते भोग आवे एक वार।
ते उवभोग कह्यो जिणराय, तिण आडी नही छे ताय ॥ २५ ॥
वस्त्र गेंहणादिक अनेक प्रकार, ते तो भोग आवे वारूंवार।
ते परिभोग कह्यो जिणराय, तिण आडी नही छे ताय ॥ २६ ॥
उवभोग लब्द ज्यूं जांणो, परिभोग लब्द पिछांणों।
सगलोई कहणो विसतार, लब्द सावद्य नही छे लिगार ॥ २७ ॥
पांचमी वीर्य अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय।
वीर्य आडी नही छे ताय, वीर्य लब्द परगट हुवे आय ॥ २८ ॥
तिण लब्द नें निरवद जांणो, तिण मांहें संका मत आंणो।
तिण नें सावद्य कहे तांण ताण, ते तो जिण मारग रा अजांण ॥ २९ ॥
इण लब्द मे ओगुण नांही, लब्द तो जिण आगना मांही।
गुण ओगुण किरतब मे जाणों, सावद्य निरवद भेद पिछांणो ॥ ३० ॥
संसार रो किरतब करे जाणों, ते तो सावद्य जोग पिछांणो।
निरवद किरतब करे कोय, तिणरा निरवद जोग छें सोय ॥ ३१ ॥
किरतब ने सावद्य निरवद जाणो, त्यां नें रूड़ी रीत पिछांणो।
सावद्य किरतब प्रतष खोटो, लब्द गुण छे निरंतर मोटो ॥ ३२ ॥
वीर्य लब्द नें किरतब न्यारो, तिणरो बुधवंत जांणें विचारो।
वीर्य लब्द रा जतन कीजे, सावद्य किरतब नें त्याग दीजें ॥ ३३ ॥
इत्यादिक अनेक भेद जांणो, दांन लब्द ज्यूं लीज्यो पिछांणो।
वीर्य लब्द में ओगुण म ज़ांणों, गुण अवगुण किरतब मे पिछांणो ॥ ३४ ॥
कोइ कहे बल प्राकम नही हुवें ताय, तो खोटा किरतब केम कराय।
तिण सू बल प्राकम सावद्य छे भूंडो, इण सू कर्म बांधे जीव बूडो ॥ ३५ ॥
उसभ उदे एहवी चरचा आणे, ते बल प्राकम नें सावद्य जांणें।
एहवी उंधी करे बकवाय, इणरो न्याय सुणों चित ल्याय ॥ ३६ ॥
अंतराय रो षयउपसम थाय, बल वीर्य सक्त हुवे ताय।
ते उजला लेखे निरवद रूडा, त्यानें सावद्य कहे ते कूडा ॥ ३७ ॥
यां सूं किरतब करे भला भूडा, भला सू तिरे भूडा सू बूडा।
किरतब नें जोग व्यापार जांणों, सावद्य निरवद री करो पिछांणों ॥ ३८ ॥
बल वीर्य सकत प्राकम ताह्यो, वीर्य लब्द में सर्व समायो।
ए छता रूप जीव रे मांहि, तिणसूं कर्म तूटें बंधे नाहि ॥ ३९ ॥
धर्मी पुरष छे बलवंत रूडा, करणी करे कर्म करे दूरा।
अधर्मी तो निरबळ हुआं रूडो, नही बांधे पाप रा पूरो ॥ ४० ॥

ते तो बल छे किरतब रूप ताह्यो, सावद्य निरवद जोग में आयो।
जोवो सुतर भगोती रे म्हांयों, जयवती ने वीर बतायो ॥ ४१ ॥
सावद्य जोग उदे भाव भूडा, तिणसू जीव अनता बूडा।
लब्द षयउपसम भाव छे रूडो, ते पामे छे कर्म हूवा दूरो ॥ ४२ ॥
षयउपसम ने उदे भाव, त्यांरो छे जूदो जूदों सभाव।
षयउपसय ने सावद्य जाणे, ते अग्यांनी थका उधी ताणे ॥ ४३ ॥
वले वीर्य सकत पिछाणो, ते जीवरा उजल गुण जाणो।
ते गुण जीव सू नही छे जूआ, पिण शरीर रे प्रयोगे हूआ ॥ ४४ ॥
जेहवा सरीर पुदगल बधाय, तेहवा बल प्राकम थाय।
बल प्राकम हीणो इधिको होय, ते शरीर काचे पाकें सोय ॥ ४५ ॥
शरीर गाढो हुवे अतंत, जब जीव मे बल अनंत।
शरीर पुदगल घट जावे, जब प्राकम हीणो थावे ॥ ४६ ॥
जीव शरीर सू हूवो न्यारो, जब नही बल प्राकम लिगारो।
जब गयो जीव मुगत रे माही, तठे बल प्राकम नही काई ॥ ४७ ॥
बल शरीर रे परसंग, जोवो रायप्रसेणी उपंग।
तिणरो कह्यो घणो विसतारो, केसीकुमर मोटा अणगारो ॥ ४८ ॥
भार ले जावे वूढो ने तरुणो, कावर दिष्टंत दे कीयो निरणो।
तरुणा ज्यू बालक तीर चलायो, तीर कबाण रो मेल्यो न्यायो ॥ ४६ ॥
आहार सिज्जा उपधादिक ज्यांने, सावद्य निरवद कह्या वीर त्यांने।
ते किरतव लेखे कह्या जाणो, तिण नें रूड़ी रीत पिछाणो ॥ ५० ॥
आहार सिज्जा उपधादिक जेह, ते तो पुदगल दरब छे एह।
ते तो सावद्य निरवद नाही, ते विचार करो मन माही ॥ ५१ ॥
ज्यू बल प्राकम वीर्य पिछाणों, सावद्य जोग किरतब सूं जांणो।
माठी बुध मत कही छे ताय, ते पिण कही छे किरतब रे न्याय ॥ ५२ ॥
बुध मत सूं करे विचारो, ते पिण मन जोगरो व्यापारो।
माठो विचास्यो माठो जोग पूरो, अछो विचास्यो निरवद जोग रूडो ॥ ५३ ॥
इत्यादिक बोल अनेक पिछाणो, त्यानें किरतब लेखे सावद्य जांणो।
पिण षयउपसम भाव छे चोखो, ते निश्चै निरवद निरदोखो ॥ ५४ ॥
बाल वीर्य गुण ठाणां च्यार, तिणमे पिण ओगुण नही लिगार।
तिण वीर्य सूं सावद्य रो आगार, तिण आगार सूं हुवे छे विगाड ॥ ५५ ॥
तिण इविरत सूं पाप लागे, तिण ने माठो जाणे ने त्यागे।
पिण वीर्य लब्द छे षयउपसम भावो, ते तो निरजरा गुण छे चावो ॥ ५६ ॥

पिंडत वीर्य नवगुणठांणा मांही, तिण सूं सावद्य न सेवणों कांई॥
सावद्य सेवण रो त्याग्यो आगारो, तिण सूं इविरत न रही लिगारो॥ ५७॥
जव चारित षयउपसम हूवो, ते चारित छे वीर्य सूं जूओ।
तिण चारित सूं पाप रुक जावे, लब्द उजल रही थिर भावे॥ ५८॥
वाल पिंडत वीर्य नें पिछांणो, तठें तो पांचमों गुण ठांणो।
देस थकी इविरत नें त्यागी, देस थकी हुवो वैरागी॥ ५९॥
इण त्याग सूं पंडित जांणो, इविरत रही सू बाल पिछांणो।
वाल पिंडत इण लेखे हूओ, वीर्य रो गुण इण सूं जूओ॥ ६०॥

ढाल : ७

दुहा

सागार उपीयोग रा, आठ भेद कह्या जिणराय।
पांच ग्यांन तीन अग्यांन छे, और भेद नही कोई ताय॥ १॥
त्यामें केवल ग्यांन सारां सिरे, क्षायक भाव सागार।
ते पामें ग्यांनावर्णी क्षय हूआं, तिणरो कोइ न पामें पार॥ २॥
सेष ग्यांन अग्यांन रह्या तेह ने, कहिजें षयउपसम भाव सागार।
ते केवल ग्यांन माहिली वांनगी, त्यांमे अवगुण नही छे लिगार॥ ३॥
च्यार ग्यांन केवल ग्यांन मांहिला, ते तो मिल गयो न्याय।
पिण अग्यांन केवल मांहि किम मिलें, कोई एहवी पूछा करें आय॥ ४॥
ग्यांन अग्यांन तो एकहीज छे, एकहीज उपीयोग सागार।
ते पामें ग्यांनावर्णी घट्यां, मिटे जीव तणों अंधकार॥ ५॥
*समदिष्टी रो ग्यांन जिण कह्यों, मिथ्याती रो कह्यों छे अनांण।
षयउपसम भाव तो निरमलो, दोयां रो बरोबर जांण॥ ६॥
ग्यांन अग्यांन षयउपसम भाव छे, या में जांणपणा रों गुण जांण।
और गुण यां में एक पावे नही, ते सुणजों चुत्तर सुजांण॥ ७॥

ढाल

[विनरा भाव सुण सुण गूंजे]

उंधो सूधो जांणपणो सारो, ग्यांन सूं सर्व राखे धारो।
ए षयउपसम भाव छे चोखों, तिण मे कोइ म जांणो दोखो॥ १॥
जिण रीतें धारे समदिष्टी, तिण रीते धारें मिच्छदिष्टी।
यांरी धारणा दोयां री एक, तिण में कोइ नही छे वशेष॥ २॥
धारणा षयउपसम भाव छे आछो, धारणा मति ग्यांन छे साचो।
तिण सूं पाप रुके तूटें नांहीं, वले पाप न लागे कांई॥ ३॥
ऊंधों सूधों जांणपणो सारो, धार्यां नही दोष लिगारो।
उंधो सरध्यां हुवे घणो विगाडों, जीवरो हुवे बहुत खुवारों॥ ४॥
अधर्म नें धर्म सरधें ताय, धर्म ने अधर्म सरधाय।
अजीव नें जीव सरधें कोय, जीव नें सरधे अजीव सोय॥ ५॥

---

* (मिच्छत्त समाजोगा, अणाण णाणंत्ति ठाविया सण्णा।
उपओगो एक्कं जहा, माहण चंडाल घड सलिलं १॥

कुमारग नें मारग सरधें कोइ, मारग नें कुमारग सरधें सोई।
असाध नें सरधें साधु, साध - नें सरधे असाध ॥ ६ ॥
अमूकांणा नें सरधे मूंकाणों, मूकांणों सरधे अमूकांणों।
इत्यादिक उंधा बोल सरधाय, तिण सूं जीव मिथ्याती थाय ॥ ७ ॥
दंसण मोह उदे हूवों आय, उंधो सरधवा लागो ताय।
जब हूवो जीव मिथ्याती, उंधी सरधा रो पषपाती ॥ ८ ॥
साची सरधा भाषी जगनाथ, ते ऊंधा सरध्यां आवें मिथ्यात।
और उंधो सरघणी आवे, तो भूठ लागे पिण सरधा न जावें ॥ ६ ॥
मिथ्याती उंधी सरधा सूं वागें, तिण रे क्रिया मिथ्यात री लागे।
ते दंसण मोह उदे भाव जाणों, तिण नें रूडी रीत पिछांणो ॥ १० ॥
तिणरे षयउपसम भाव अनांण, तिण सूं पाप न लागे आंण।
षयउपसम भाव नें उजल जांणो, मिथ्याती रे छे तिण सूं अनांणो ॥ ११ ॥
ओहीज समदिष्टी रे छे नांणो, षयउपसम भाव दोयां रो एक जांणो।
ग्यांनावर्णी रो षयउपसम हूओ, तिण सूं दोयां रो गुण नहीं जूओ ॥ १२ ॥
समदिष्टी रे कह्यो छे ग्यांन, मिथ्याती रे कह्यो छे अग्यांन।
तिण सूं समदिष्टी वागो ग्यांनी, मिथ्याती वागो अग्यांनी ॥ १३ ॥
जिणरी सरधा छे सुध मांन, ते भणीयो पूर्व रो ग्यांन।
एक बोल उंधो सरधें ताय, जब निश्चें मिथ्याती थाय ॥ १४ ॥
तिणरो भणीयो पूर्व रो ग्यांन, तिणरा ग्यांन नें कहीजें अग्यांन।
इण ग्यांन में आंगुण नहीं लिगार, अग्यांन वाज्यों मिथ्यात री लार ॥ १५ ॥
ओहीज बोल सूधो सरधें ताय, जब उहीज समदिष्टी थाय।
तिणहीज अग्यांन नें ग्यांन जांणो, समकत लारे ग्यांन कहवांणो ॥ १६ ॥
सावद्य उदें भाव मिथ्यादिष्ट, निरवद षयउपसम भाव दिष्ट।
सावद्य सूं पाप लागे आय, निरवद सूं पाप कर्म रुकाय ॥ १७ ॥
ग्यान अग्यांन तो षयउपसम भाव, जांणवा देखवा रो सभाव।
यां में तो ओहीज गुण पिछाणो, उजला लेखे निरवद जांणों ॥ १८ ॥
त्यां सूं कर्म रुके तुटे नाही, त्यां सूं पाप न लागे कांई।
केवल ग्यांन नें दर्शण पिछाणो, त्यां मांहिली वांनगी जाणो ॥ १६ ॥
ग्यांन सागार उपीयोग जांणो, तिणरो वशेष बोध वखांणो।
तिण में विवरो विचार विगनांन, दर्शण विचें ग्यांन प्रधांन ॥ २० ॥
दर्शण उपीयोग छे मणागार, तिण में नहीं विगनांन विचार।
तिण में देखण रो गुण छे ताहि, और गुण नही छे तिण मांहि ॥ २१ ॥

दर्शण देखवा रो गुण छे ताय, ग्यांन विना खबर नही काय।
तिण सूं ग्यान कह्यो परधान, दर्शण नें कह्यो सामान ॥ २२ ॥
या री खबर जुदी जुदी पाडो, बुधवंत हीया मे विचारो।
मतग्यान रा अठावीस भेद, ते सुणजो आंण उमेद ॥ २३ ॥
सुरतइन्द्री मे शबद पडे आय, मतग्यान विण खबर न काय।
उग्रह करे विचारें कोय, निरणो कर धारी राखें सोय ॥ २४ ॥
विचारणा निरणो करे सोय, ते तो सावद्य निरवद होय।
ते तो जोग तणो व्यापार, सावद्य निरवद लेजों विचार ॥ २५ ॥
धारणा कर राखें सोय, ते पिण सावद्य निरवद होय।
तिण में मन जोग रो व्यापार, ते पिण बुधवंत लेजों विचार ॥ २६ ॥
उग्रह इहा उवाय नें धारे संसार नें हेत विचारे।
ते सावद्य जोग कह्या जिणराय, माठी बुध मत छे इण न्याय ॥ २७ ॥
उग्रह इहा अवाय नें धारे, निरजरा हेतें मन मे विचारें।
ते निरवद जोग कह्या जिणराय, आछी बुध मत छे इण न्याय ॥ २८ ॥
बुवरो व्यापार मन जोग जांणो, मन विण नही कठे ठिकांणो।
बुध षयउपसम भाव छे न्यारो, तिण सूं नहीं सुधारो विगाडो ॥ २९ ॥
इम पाचूं इंद्री नें मन जांणो, उग्रहादिक च्यारूं सगले पिछाणो।
च्यारूं इंद्री ना वंजण च्यार, त्या में चषू नें मन कीयो न्यार ॥ ३० ॥
ए मतग्यांन रा भेद अठावीस, सुतर मे भाष्या जगदीस।
ते सुणवादिक सू करे विचार, सावद्य निरवद जोग व्यापार ॥ ३१ ॥
जांण जाण सावद्य करें कोय, तो ही ग्यांन सावद्य नही होय।
ग्यांन षयउपसम भाव छे ताहि, सावद्य किरतब उदे भाव माहि ॥ ३२ ॥
ग्यान परिज्ञा समदिष्टी रे होय, पिण पचखांण परिज्ञा न कोय।
ते सावद्य कामा करें जांण, तिण सू पाप कर्म लागे आण ॥ ३३ ॥



ढाल : ८

[चतुर विचार करी ने देखो]

शब्द रूप गंध रस नें फरस, रूडा उपर आंणे छे रागो रे।
पाडुवा उपर धेषज आणें, तिणरे पाप कर्म आय लागो रे।
चुतर विचार करे नें देखो* ॥ १ ॥
शब्द रूप गध रस नें फरस, रूडा उपर न आंणें रागो रे।
पाडुआ उपर धेष न आणें, तिणरें पाप रो अंस न लागा रे ॥ २ ॥
राग धेष आयां विण पाप न लागें, ते बुधवंत करो विचारो रे।
पाच इंद्रयां सूं पाप कदे नही लागें, यां में अवगुण नही लिगारो रे ॥ ३ ॥
इंद्री तो षयउपसम भाव छे चोखो, राग धेष उदे भाव जांणो रे।
ते चारित मोह उदे सूं नीपना, यां नें रूडी रीत पिछांणों रे ॥ ४ ॥
सागार नें मणागार उपीयोग, त्यानें ओलखल्यो घट मांह्यों रे।
अनंता पदार्थ जाणे नें देखें, तिण सूं अनंती परजायो रे ॥ ५ ॥
जांणपणा नें सागर उपीयोग जांणो, और गुण आंगुण तिणमें नांही रे।
मणागार उपीयोग में देखण रो गुण, और गुण अवगुण नहीं तिण मांही रे ॥ ६ ॥
उपीयोग उपीयोग री परजाय सूं, कर्म रूके तूटे नांहीं रे।
वले उपीयीग सूं कर्म न लागें, जोवो द्रव गुण पर्याय मांही रे ॥ ७ ॥
केइ मांनव कहें उपीयोग सेती, रूके तूटे छें कर्मो रे।
वले कहें कर्म उपीयोग सू लागे, ते भूला छें जाबक भर्मो रे ॥ ८ ॥
द्रव गुण परजाय दुवार लोका नें, रूड़ी रीत सीखावे रे।
पिण आपरा बोल्या री समझ पड़े नही, तिण सूं गाला रा गोला चलावे रे ॥ ९ ॥
अनंता पदार्थ जाणें नें देखें, उपीयोग रा ए गुण बतावें रे।
द्रव गुण पर्याय भिन २ लोकां नें, रूड़ी रीत सीखावें रे ॥ १० ॥
वले कहें छे कर्म रोके नें तोड़े, ते तो सागार ने मणागारो रे।
वले कहे कर्म उपीयोग सू बंधें छे, ओ प्रतष देखो अंधारो रे ॥ ११ ॥
षयउपसम इंद्रा नें सावद्य सरधें, हाथां सूं लगायो भूजों रे।
आपरी सरधा में आप अलूजें, जब डाहो कुण मांनसी दूजो रे ॥ १२ ॥
षयउपसम भाव नें सावद्य सरधें, जब सावद्य खोटो साख्यातो रे।
तिण सावद्य नें आस्रव कहिता लाजें, त्यांरी बिगडी सरधा बातो रे ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सावद्य कह्यो जब आश्रव निश्चै, कह दियों चोडे साख्यातो रे।
तो ही सावद्य कहें पिण आश्रव न कहे, कूडी टेक भाल्यारी आ वातो रे ॥ १४ ॥
जब कहे म्हें षयउपसम भाव तिणंनै, उदा सू कहा सावद्य तामो रे ।
सुध जाब नायां दूसरी ले उठे, तिणनें पाछो कहणो वले आमो रे ॥ १५ ॥
जो थे उदा सूं षयउपसम सावद्य जाणो, तो पिण सावद्य कह्यो षयउपसम भावो रे।
सावद्य कह्यो तिणनें आश्रव कहीजे, थारे मूढे थे कर दीयो न्यावो रे ॥ १६ ॥
षयउपसम भाव नें सावद्य कहे पिण, आश्रव कहितां आणे सको रे ।
ते लीधी टेक छूटे नही तिण थी, ते कर्म तणे वस वको रे ॥ १७ ॥
आगे आश्रव मे दोय भाव परुप्या, उदे नें परिणामीक भावो रे ।
षयउपसम कह्यां उठे आगली सरधा, तिण सू खेले छे खोटा डावो रे ॥ १८ ॥
जाणे भूठ बोलूं पिण आगली सरधा, उवा पिण कुसले खेंमे राखू रे।
तो दोय भाव आश्रव मांहें दाखूं, तीजो षयउपसम भाव न भाखू रे ॥ १९ ॥
पिण षयउपसम भाव नें प्रसिघ चोडे, सावद्य तो कह चूको रे।
सावद्य कह्यो जद आश्रव कह दीयो, तो तीन भाव कहो मान मूको रे ॥ २० ॥
तो पिण तीन भाव आश्रव माहें, मुख सू कहणी न आवे रे।
इसडी ताण आले रह्या त्यां ने, किण न्याय करे समभावे रे ॥ २१ ॥
जो आश्रव मे तीन भाव नही कहो, तो षयउपसम ने सावद्य मत भाखो रे ।
उदे ने परिणामीक कहे ने, आगली सरधा राखो रे ॥ २२ ।
इणविध चरचा में बंध कीधां, जाव नाया बोले कूरो रे।
वले अकबक करनें उधो बोलें, वले क्रोध करे भागे दूरो रे ॥ २३ ॥
कोइ गहलो कहे म्हारी मा बांभडी छे, ते चोडे कहूं नही छानें रे।
मो पूत तणी मा बांभडी निश्चै, एहवी बातडा हो कुण मानें रे ॥ २४ ॥
ज्यूं कोई षयउपसम ने कहे सावद्य, पिण सावद्य ने आश्रव कहे नाही रे।
म्हारी मां ने वले बांभडी छे तिम, एहवो अंधारो छे तिण माही रे ॥ २५ ॥
केइ मानव पांचू इंदयां ने, सावद्य कहे छे लोका ने रे।
कूडा २ कुहेत लगाए, चोडे कहे नही छे छाने रे* ॥ २६ ॥
सुरतइंद्री नों सभाव छे एहवो, भला नें भूंडा शब्द सुणायों रे।
और गुण आंगुण नही सुरतइंद्री मे, तिण मे संका म जाणो कोयो रे ॥ २७ ॥
भला २ शब्द सुणनें राग आणें, घेष आणे शब्द सुणे भूडा रे।
ए प्रतष आंगुण राग घेष में, त्या सूं पाप कर्म बाधे बूडा रे ॥ २८ ॥

*ए २६ वी गाथा समूचे पयोपसशम भाव उपर कही छे।

चषू इंद्रीनो सभाव छे एहवो, भला भूडा रूप देखें रे।
और गुण आगुण नहीं चषू इंद्री में, बुधवंत ग्यान सूं इम पेखे रे॥ २९॥
भला २ रूप देखनें राग आंणे, भूंडा देखनें आणे षेषों रे।
ए प्रतष आंगुण राग घेष में, चषू इंद्रीनों कांई नही लेखो रे॥ ३०॥
घाणइंद्री नों सभाव छे एहवो, भला ने भूंडा गंध वेदायो रे।
और गुण अवगुण नही घाणइंद्री में, सूधी समझ पारो इण न्यायो रे॥ ३१॥
भला २ गंध उपर राग आणे, भूंडा गंध उपर द्वेष आंणे रे।
ए प्रतष औगुण राग धेप में, घाणइंद्री में अवगुण भोला जाणे रे॥ ३२॥
रसइद्री नो सभाव छे एहवो, भला भूंडा वेदे रस सवादो रे।
और गुण ओगुण नही रसइंद्री में, इण सूं मूल नही विषवादो रे॥ ३३॥
भला २ रस उपर राग आणे, भूंडा रस उपर धेष आणें रे।
ए प्रतप औगुण राग धेष में, रसइंद्री में ओगुण भोला जांणे रे॥ ३४॥
फरसइंद्री नो सभाव छे एहवो, भला भूडा फरस वेदायो रे।
और गुण अवगुण नही फरस इंद्री में, इण नें ओलखल्यो इण न्यायो रे॥ ३५॥
भला फरस उपर राग आंणे, भूंडा फरस उपर आंणे धेषो रे।
ए प्रतप ओगुण राग धेष में, फरसइद्री नो नही कोई लेखो रे॥ ३६॥
राग धेप में अवगुण दीसे उघाडो, पिण इंद्री में अवगुण नांही रे।
यारी गुण परजाय छे न्यारी २, विचार देखो मन माही रे* ॥ ३७॥
कोई कहे छे आगुण सुरतइंद्री मे, सवद सुणीयां राग धेप आयो रे।
इसड़ा २ कूडा कु हेत लगाए, सुरतइंद्री ने सावद्य कहे ताह्यो रे॥ ३८॥
इसड़ा कूडा कु हेत सुण ने, सुरतइंद्री नें सावद्य जांणे रे।
हिवे तिणरो जाव सुणे भव जीवां, मन ने आंण ठिकांणे रे॥ ३९॥
किण ही ठामें पुरष अनेक बेठा था, त्यां सबद सुण्यो विषे कारी रे।
के कां रे तो शब्द गराज न आयो, त्यांरे गुण अवगुण न हूवो लिगारी रे॥ ४०॥
के कां तो शब्द ने जथातथ जाण्यो, ते निरवद जोग व्यापारो रे।
के कां रे शब्द सुणे वैराग उपनो, त्यानें संसार लागो खारो रे॥ ४१॥
केइक तो सव्द सुणने रीझ्या, त्यांरा तो सावद्य जोग छे भूंडो रे।
के कां रे शब्द सुणनें द्वेष आयो, ते पिण सावद्य जोग सूं वूडा रे॥ ४२॥
सुणवो तो सगलां रो जाणो सरीषो, सुरतइंद्री नों ओहीज सभावो रे।
शेष उदे षयउपसम भाव नीपना, ते सुणजों जथातथ न्यावो रे॥ ४३॥

*ए ३७ वें गाथा समचे इद्री उपरे छे।

सबद सुण्यो पिण गराज न आयो, ते पिण सुरतइंद्री नों स्वभाव जांणो रे।
जथातथ जाण्यो तिण विचार करे नें, ग्यान दूजो निरवद्य जोग पिछांणो रे॥ ४४॥
जथातथ जाण्यो ते गिनान मे आयो, विचास्यो ते निरवद जोग मांही रे।
ए दोनूंई परजाय निरवद जाणो, ते तो सुरतइंद्री नो गुण नाही रे॥ ४५॥
वैराग भाव उपनो तिण रे, चारित मोहणी षयउपसम हूओ रे।
ओपिण सुरतइंद्री नो गुण छे नाही, वैराग भाव इण सू जूओ रे॥ ४६॥
राग ने धेष आयो छे त्यारे, पाप कर्म बधाणा भारी रे।
ते पिण अवगुण नही छे सुरतइंद्री मे, ते बुधवत करज्यो विचारी रे॥ ४७॥
राग ने धेष आया ते मोह उदे सू, ते सुरतइंद्री नी नहीं परजायो रे।
राग धेष तणी परजाय छे, ते सुरतइंद्री मे केम समायो रे॥ ४८॥
राग ने धेष तणा परिणाम, वले बीतराग परिणामो रे।
ए पिण परिणाम जूआ जूआ छे, त्यारा जूआ जूआ छे नामो रे॥ ४९॥
एहवा भला भूंडा परिणाम वरते छे, ते गुण अवगुण छे या माही रे।
ते पिण सावद्य जोग वरत्या छे, ते तो सुरतइंद्री मे नाही रे॥ ५०॥
सुरतइंद्री सूं सबद साथे लगो सुणीयो, घणा मिनखा रो व्रदो रे।
तिणा काले तो सम रह्या सारा, कोई न पस्यो विषे रे फदो रे॥ ५१॥
हिवे के कारे अंतर मोहरत माहे, परिणाम माठा आया रे।
के का रे मोहरत दोय मोहरत पाछे, त्या पिण माठा परिणाम चलाया रे॥ ५२॥
इम पोहर दो पोहर दिवस पख मास, तथा वरस छ मास रे माही रे।
राग आवे तिण शबद रे उपर, ते सुरतइंद्री मे अवगुण नांही रे॥ ५३॥
सुरतइंद्री सू शब्द साभल लीधो, ते तो बीत गयो तिण कालो रे।
हिवे तो शब्द ग्यान सू याद आयो छे, मोह उदे सूं हूवो मतवालो रे॥ ५४॥
ग्यान सू याद आया विषे सेवा लागो, उणरे लेखे सावद्य ग्यानो रे।
जो याद न आवें तो विषे न सेवत, आ सरधा क्यूं नही मांनो रे॥ ५५॥
जो शब्द सुण्या सू राग उपनों, सुरत इंद्री सावद्य होय जायो रे।
ज्यूं ग्यांन सू याद आयां राग आवे, तो ग्यान सावद्य क्यूं नही थायो रे॥ ५६॥
सुरतइंद्री ने ग्यान तो सावद्य नाही, सावद्य तो राग धेष रो चालो रे।
ताणाताण छोडो भव जीवा, श्री जिण वचन सभालो रे॥ ५७॥
भूंडा भूंडा शब्द सुणीया धेष आवे, राग ज्यूं सगलोई कहणो रे।
रागरी ठोड तो धेष ने कहणो, रूडी रीत विचारी लेणो रे॥ ५८॥
कोइ कहे छें अवगुण चषू इंद्री में, रूप दीठा राग द्वेष आवे रे।
इसडा कूडा २ कुहेत लगाए, चषू इंद्री ने सावद्य बतावे रे॥ ५९॥

वले कहे जीव दीठो आंख्यां थी, जब कीधी जीवरी घातो रे ।
जो नही देखे तो क्यांने हणतो, इण लेखें आंख्यां सावद्य साख्यातो रे ॥ ६० ॥
इत्यादिक अनेक करे छे अकारज, जो कीधा छें आंख्यां सूं देखो रे ।
ते सर्व अवगुण छे चषू इंद्री नो, इसरो बतावे छे लेखो रे ॥ ६१ ॥
इण लेखे म्हे चषू ने सावद्य कहा छां, चषू मांहें छे मोटो दोखो रे ।
ग्यांन रो जांणपणो छे निरवद, तिणसूं ओ उपीयोग छैं चोखो रे ॥ ६२ ॥
इत्यादिक कूडा २ कुहेत सुणे ने, कोई चषू इंद्री ने सावद्य जाणे रे ।
हिवे तिणरो जाब सुणो भवजीवां, मन नें आंण ठिकाणे रे ॥ ६३ ॥
किण ही ठामें पुरष अनेक बेठा था, त्यां रूप दीठो विषेकारी रे ।
के कारे रूप गराज न आयो, त्यांरे गुण अवगुण न हूवो लिगारी रे ॥ ६४ ॥
सुरतइंद्री नो विस्तार कह्यो तिम, चखुइंद्री नो पिण जांणो रे ।
उठे शब्द कह्यो अठे रूप ने कहिणो, ते पिण रूडी रीत पिछांणो रे ॥ ६५ ॥
वले चषू इंद्री नो विसतार कहू छू, ते सांमल ज्यो चित्त ल्यायो रे ।
कोई चक्षु दर्शण ने सावद्य म जाणो, तिणरो न्याय धारो मन मांह्यो रे ॥ ६६ ॥
चषू सू देखनें करें सावद्य कामो, जो चषू सावद्य होय जायो रे ।
तो ग्यान सू जाण करे सावद्य कामा, ते ग्यांन सावद्य क्यू न थायो रे ॥ ६७ ॥
आघे पुरष बेटा ने मोटो हूवो जाण्यो, तिण जाण्यो तो पूत परणायो रे ।
जो नही जाणतो तो नही परणावतो, उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थायो रे ॥ ६८ ॥
ग्यांन सूं जांणने श्रावक खेती करे छैं, सूर नेदाणादिक करावे रे ।
ते जाणे म्हारे धान इण विध होसी, उणरे लेखें सावद्य ग्यांन थावे रे ॥ ६९ ॥
कोइ श्रावक समायक कर बेठो, तिणने थेली भूली याद आइ रे ।
याद आइ तो परिणांम चलीया, उठ चाल्यो भांग समाइ रे ॥ ७० ॥
जीव देख्यो तो हिंसा जीवरी कीधी, थेली जांणी तो भांगी समाइ रे ।
जो देखवो सावद्य तो जाणवो सावद्य, तिणमें कांइं घालो घुचलाई रे ॥ ७१ ॥
केइ समदिष्टी जांणने करावे, गढ कोट किलादिक भारी रे ।
हाट हवेली मेहलादि करावे, नही जाणे तो न करे लिगारी रे ॥ ७२ ॥
जांण २ नें एहवा कामा करे छे, तो ही ग्यांन नें नहीं कहो छो भूंडो रे ।
देखने करे छे सावद्य कामा, तो दर्शण नें सावद्य कहि कांय बूडो रे ॥ ७३ ॥
कोई ग्यान सूं जाण नें संचो करे छे, गुल तेलादिक धन धांनो रे ।
वले विवध प्रकार संचो करे तोही, सावद्य नहीं कहें ग्यांनो रे ॥ ७४ ॥
तो दर्शण सूं देखनें करे सचो, तो दर्शन सावद्य कांय जांणो रे ।
जांण नें देखने कीया सावद्य कामा, दोयां री एक रीत पिछांणो रे ॥ ७५ ॥

समदिष्टी न्यातीलादिक ने मूंआ जांण्यां, बिगड्या जाण्यां काम अनेको रे।
तिण जाण्यां सूं आर्त्तध्यान ध्यावा लागो, ज्ञान ने दोष न कहो एको रे॥ ७६ ॥
तो एहीज कामा देखतां विगड्यां, जब पिण ध्यायो आरत ध्यानो रे।
जो देखनें कीधां दर्शण सावद्य कहो छो, तो जाणे कीधां सावद्य हूवो ज्ञानो रे॥ ७७ ॥
समदिष्टी घर मे धन गडीयो जाणे, और माल मुल्क वले ताह्यों रे।
जब याद आवे तब मन माहें मूर्छे, नही जांणे तो नही मूरछायों रे॥ ७८ ॥
ग्यांन सूं जाण्यां तो मूर्छा आई, जब ग्यांन ने निरवद जांणो रे।
तेहीज सारा निजरां देख मूर्छे, जब उलटी कांय ताणों रे॥ ७९ ॥
जांण ने सावद्य कीयां ग्यान छे निरवद, देखे सावद्य कीयां दर्शण चोखो रे।
अवगुण उदेभाव किरतब में छे, दोनूं उपीयोग छे निरदोषो रे॥ ८० ॥
काम भोग जथातथ ग्यांन सूं जाणें, त्यां ने भोगवे जांण पिछांणो रे।
जो नही जाणें तो नही भोगवतो, जब थें ग्यान ने निरवद जांणो रे॥ ८१ ॥
तो चषू देखने भोग भोगवे, जब चषू ने सावद्य कांय भाखो रे।
एक जांण भोगवे एक देख भोगवे, दोयां ने सरीषा क्यूं न दाखो रे॥ ८२ ॥
धन भूलो ते समदिष्टी ने याद आयो, तिण सूं कीधा उदंगल अनेको रे।
याद नही आवे तो नही करत उदंगल, जद ग्यान कहो निरदोषो रे॥ ८३ ॥
तो चषू सूं देखने करे उदंगल, ते चषू नें सावद्य कांय भाखो रे।
जो जांण कीयां ग्यान सावद्य हुवे तो, देख कीयां चषू सावद्य दाखो रे॥ ८४ ॥
माठी वस्त अजाण्यां खाधी, जांण्यो जब मन हूवो भूंडो रे।
तिणरे मन भूंडो वरत्यां पाप बंधाणों, ते किसा उपीयोग सूं बूडो रे॥ ८५ ॥
देख खाधो जब मन भूंडो न वरत्यो, जाण्यो जब मन वरत्यो भूंडों रे।
तिण जाणपणा नें निरवद्य जाणो, तो चषू सावद्य कहे कांय बूडो रे॥ ८६ ॥
चास वटाउ देखने पीधी, पछे सुणनें जाण्यो जहर पीधो रे।
जाण्यो जब धसको पड्यो त्यां रे, पाप कर्म बांधें काल कीधो रे॥ ८७ ॥
वटाउ मूंआ ते धसको परयां थी, जहर सुणने ग्यांन सूं जांण्यो रे।
ते जांणपणा नें निरवद थापो, तो चषू सावद्य मत कहो ताणो रे॥ ८८ ॥
साधु अपछरा देख रह्यो समभावे, घणा दिनां पछे अणसण लीधो रे।
तिणरो रूप आछो जांण ने साधु, भोग वंछा नीहांणो कीधो रे।
तिणरा रूप री धारणा याद आई, तो साधु कीधो नीहाणों रे।
ते धारणा ग्यांन री निरवद जाणों, तो चषू मांहे अवगुण कांय जांणो रे॥ ९० ॥
धारणा याद आयां राग उपनो, देख्यो जब तो राग न आयो रे।
चषू इंद्री नों अवगुण मूल न दीसे, तिणरो काल बीत गयो ताह्यो रे॥ ९१ ॥

काम भोग सेव्या ते याद आया जब, हूवो काम भोग रो रागी रे।
जब किसा उपीयोग सूं याद आया छे, किसा उपीयोग सूं बाड भागी रे॥ ९२ ॥
ग्यान सूं याद आयो तो राग उपनों, जब ग्यांन जांण्यो थे रूडो रे।
चषू आदि इंद्री ने सावद्य थापो, ओ थे चोडे चलायो कूडो रे॥ ९३ ॥
अस्त्री नों रूप देख विकार उपजे, जब भागे छे चोथी वाडो रे।
ते पिण देखनें ग्यांन सूं जाण्यां पाछे, वाड भागी बधीयो विकारो रे॥ ९४ ॥
सगली बाड भागे ग्यान सू जाण्यां पाछे, आगेवांणी तो सगलेई ग्यांनो रे।
तिण ग्यांन नें निरवद चोखो जांणो, तो दर्शण सावद्य काय मानो रे॥ ९५ ॥
देखने करे ते छे पिण ग्यांन सू जांणे, मन सूं करे विचारो रे।
जांण ने करे छे तिहां देखण री भजना, ए निरणो रूडी रीत धारो रे॥ ९६ ॥
मेघकुमार हाथी रा भव मे, जातीसमरण सूं याद आयो रे।
जब एक जोजनरो मंडलो कीधो, घणा रूंख उपाड्या ताह्यो रे॥ ९७ ॥
याद आयो जातीसमरण सेती, तिणनें तो कहो छो चोखो रे।
चषू सू पाछिलो भव याद न आयो, तिणमें कांय बतावो दोखो रे॥ ९८ ॥
जिम छे तिमहिज जाण लीयां सूं, ग्यांन सावद्य नही ताह्यो रे।
जिम छे तिमहिज देख लीया सू, दरसण सावद्य किम थायो रे॥ ९९ ॥
जिम छे तिमहिज देख लीयां थी, चषू दर्शण में नही खोटो रे।
खोटो तको राग धेष उदेभाव, तिण सू बधे छै पापरी पोटो रे॥ १०० ॥
इत्यादिक अनेक करे सावद्य कामा, त्यां मे केइ ग्यांन सूं जाणै रे।
केइ दर्शण सू देख करे छे, त्यां ने रूड़ी रीत पिछांणो रे॥ १०१ ॥
इंद्रां रो सभाव तो जूओ २ छे, और सभाव यां में न पावे रे।
और उदे ने षयउपसम नही कोइयां में, इम समझ्या संका मिट जावे रे॥ १०२ ॥
केइ जांण करे केइ देख करे छें, सावद्य किरतब सारोई भडो रे।
उपीयोग तो छै दोइ निरवद नूं, त्यां नें सावद्य सरधे मत बूडो रे॥ १०३ ॥
दोनूं उपीयोग षयउपसम भाव छै चोखा, उजला लेखे निरवद जांणो रे।
चषू उपीयोग ने सावद्य सरधे ते, बूडे छै कर २ तांणो रे॥ १०४ ॥
जब केइ कहे म्हें मोह उदे सू, षयउपसम ने सावद्य जांणो रे।
तिणने पाछो इम उत्तर दीजे, इसडी उंधी मत तांणो रे॥ १०५ ॥
चारित मोहणी उदे हूवे जब, वीतराग भाव विललावें रे।
तिणसूं राग ने धेष प्रवल वधीया, तिण सूं माठा जोग चलावें रे॥ १०६ ॥
मोह कर्म षयउपसम हूवो जब, षयउपसम भाव परगटीयो रे।
तेहीज मोहणी फेर उदे हूवें, तेहीज षयउपसम घटीयो रे॥ १०७॥

चारितमोहणी कर्म उदे सूं, राग धेष उदे भाव थायो रे।
तो षयउपसम विगड्यो उदे भाव हूवों, तो षयउपसम नही छे ताह्यों रे॥ १०८॥
मोह उदे सूं मोहरो षयउपसम विगस्यो, ते षयउपसम भाव छे नाही रे।
ज्यूं साधु विगड्या ने साधु म जांणो, ते गिण लेजो असाध रे माही रे॥ १०९॥
ज्यूं षयउपसम विगस्या नें उदेभाव जाणो, षयउपसम भाव म जांणो रे।
षयउपसम आछो उदे भाव खोटो, इम सावद्य निरवद पिछांणो रे॥ ११०॥
मोह उदे सूं नीपजें सावद्य सारा, निरवद नीपजें षयउपसम तेथी रे।
पाप लागे मोह उदे भाव सू, नही लागे ते षयउपसम सेती रे॥ १११॥
मोह उदे हूआं मोह रो षयउपसम विगरे, और षयउपसम विगारे नांही रे।
चारित मोह सूं षिमादिक गुण विगरें, और गुण विगारे नही कांइ रे॥ ११२॥
दंसणमोह सूं सूधी सरधा विगाडे, ओर तो गुण विगाडे नांहीं रे।
दंसण नें चारित मोहनो ओहीज होदो, ओर गुण विगाडे नही कांइ रे॥ ११३॥
अनंतानवंधी चोकरी उदे हूआं, कदा दंसण मोह साथे उदे होयो रे।
जब जीवरा दोनूइ गुण विगरे, आप आपरा न्यारा लो जोयो रे॥ ११४॥
दसण मोहणी उदे हूवे जब, चारित मोहणी उदे हूवे साथो रे।
जब पिण जीवरा दोनूंइ गुण विगरे, जोवो सूतर मे साख्यातो रे॥ ११५॥
आधाकर्मी आहारादिक असुध कह्यो छे, ते तो किरतब आसरी जांणो रे।
ते आहार असुध सावद्य दोनू नाही, आहारादिक थी सावद्य पिछांणो रे॥ ११६॥
ज्यू सुरत इद्रीयादिक आस्रव कह्यो ते, राग धेष आश्री जाणो रे।
पिण सुरत इंद्री तो आस्रव नांहीं, अहार ज्यूं लो इंद्रयां पिछाणो रे॥ ११७॥
ज्यूं अजीव काय असंजम कह्यो छे, ते इविरत आश्री जांणो रे।
पिण अजीव तो असजम नांही, असजम इविरत आश्री पिछाणो रे॥ ११८॥
ज्यू इदस्या मोकली मेली ते आश्रव, ते विषें इविरत आश्री जाणो रे।
पिण इंद्रयां तो आश्रव छे नाहीं, ते अजीव असंजम ज्यू इंद्रयां पिछांणो रे॥ ११९॥
वले अजीव काय नें संजम कह्यो छे ते त्याग विरत लेखे वतायो रे।
ते अजीव तो संजम छे नाही, त्यांरी विरत लेखे ओलखायो रे॥ १२०॥
ज्यूं इंद्रयां नें वस करे ते संवर, ते विषें री विरत आश्री जांणो रे।
पिण इंदस्यां ने संवर विरत मति जांणो, अजीव सजम ज्यू इंदस्यां पिछाणो रे॥ १२१॥
परिग्रहो कह्यो सचित अचित ने मिश्र, ते दुरगति माहे डबोवे रे।
ते परिग्रहो तो डबोवे नांही, तिणरी मूर्छा विषे विगोवे रे॥ १२२॥
ज्यूं इंदरयां की विषे ने सावद्य कही ए, ते राग धेष आश्री जाणो रे।
पिण इंदस्यां तो सावद्य छे नांहीं, ते परिग्रहा ज्यू इंदस्यां पिछांणो रे॥ १२३॥

यों तीन प्रकार को परिग्रहो कह्यो ते, पाप कर्म न लागे तेथी रे।
पाप लागे तिणरी मुर्छा आयां सूं, वले तिणरी इविरत सेती रे॥ १२४॥
ज्यूं पांचू इंदस्थां सू पाप न लागे, पाप लागो विषे सूं जांणो रे।
केइ कहें इंदस्थां सूं ई लागें, ते प्रतख भूठ पिछांणो रे॥ १२५॥
अन पुने पाण पुने कह्यो सूतर में, नमसकार पुने नवमों वतायो रे।
पिण ए तो नवोंई पुन छे नांहीं, पुन नीपजें परिणाम सूं ताह्यो रे॥ १२६॥
ज्यूं इंदस्थां नें वस करे ते संवर, पिण इंदस्थां नें संवर म जांणो रे।
विषे त्यागी ते परिणाम संवर नां छें, अन पुने ज्यूं इंदस्थां पिछांणो रे॥ १२७॥
जोड़ कीधी इंदस्थां नी विषे ओलखावण, नेंणवा सहर मभारो रे।
संवत अठारे नें वरस छयांलें, जेठ सुद तेरस वुधवारो रे॥ १२८॥

ढाल : ९

दुहा

पांच भाव जिणेसर भाषीया, उदे[1] उपसम[2] क्षायक[3] भाव।
षयउपसम[4] ने परणांमीक[5] पांचमो, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याव ॥ १ ॥
धूरला च्यार भावां तणो, जुवो जुवो गुण जांण।
परणामीक भाव छे पाचमों, ते मिले सगलां मांहें आंण ॥ २ ॥
आठ कर्म उदे हूआं, त्यांसू नीपनों उदे भाव जांण।
त्यांरो जूओ जूओ सभाव छे, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण ॥ ३ ॥
उपसम एक मोहणी कर्म हुवे, जब नीपजे उपसम भाव।
तिण उपसम भाव तेह में, और भाव रो नहीं छे लगाव ॥ ४ ॥
आठ कर्म षय हूआं नीपजें, षायक भाव अनेक।
ते सगलाई षायक भाव मे, और भाव न पावे एक ॥ ५ ॥
च्यार कर्म षयउपसम हूआं, नीपजे षयउपसम भाव अनूप।
ते षयउपसम भाव निरमलो, तिणरो जूओ जूओ छे सरूप ॥ ६ ॥
च्यांरू भाव समावे आप आप मे, परिणामीक सगलां मे जाण।
समदिष्टी जथातथ ओलख्या, जिम छे तिम लीया छे पिछाण ॥ ७ ॥
पाच भाव पूरा नहीं ओलख्या, ते करे अग्यांनी तांण।
नव पदार्थ रो निरणो नहीं, ते मूंढ मिथ्याती अयांण ॥ ८ ॥
केइ ओलख ने उलटा पड्या, मोह कर्म उदे हूओ आंण।
तिण सू निन्व हूवा किण विधें, ते सुणजो चतुर सुजांण ॥ ९ ॥

ढाल

[पुन निपजे शुभजोग सू रे लाल]

इविरत ने कहे माठो ध्यान छे रे लाल, विरत ने कहे छे आछो ध्यांन हो।
मणागार उपीयोग कहे तेहने रे लाल, तिणरा घट माहे घोर अग्यान हो ॥
सरधा सुणो निन्वा तणी रे लाल ॥ १ ॥
माठा ध्यान नें इविरत कहे रे लाल, आछा ध्यान नें कहे छे विरत हो।
मणागार उपीयोग त्या ने पिण कहे रे लाल, एहवा कूडा करे छे निरंत हो ॥ २ ॥
विरत इविरत भला भूडा ध्यान ने रे लाल, कहे छै मणागार उपीयोग हो।
उंधी अकल हिया रा जोर सूं रे लाल, तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो ॥ ३ ॥

विरत इविरत भला भूंडा ध्यान ने रे लाल, कहे छे उपीयोग मणागार हो।
तिणरी खोटी सरधा छे सर्वथा रे लाल, ते बुधवंत करजो विचार हो॥ ४॥
विरत इविरत भला भूंडा ध्यान नें रे लाल, जूदा जूदा कह्या छें भगवांन हो।
त्यांरो विवरा सुध निरणो कहूं रे लाल, सुणो सुरत दे कान हो॥ ५॥
इविरत ने कहे माठो ध्यांन छे रे लाल, तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो।
सूतर सू मिलती नहीं रे लाल, ते सुणजो देई उपीयोग हो॥ ६॥
इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल, ते निरंतर लगती जांण हो।
तिण सू चेतन जीवरे रे लाल, पाप लागे निरंतर आंण हो॥ ७॥
इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल, ध्यान तो ध्यावे जब होय हो।
तिण सू ए तो दोनूइ जू जूआ रे लाल, यां नें एकम जांणो कोय हो॥ ८॥
जो इविरत माठो ध्यान हुवे रे लाल, तो छठे गुण ठाणे इविरत होय हो।
छठे गुण ठाणे आरत ध्यान छे रे लाल, जब तो विरत रो अंस न कोय हो॥ ९॥
जो विरत ध्यान आछो हुवे रे लाल, तो चोथें गुण ठांणे विरत होय हो।
धर्म ध्यान चोथें गुण ठांणे हुवें रे लाल, जब तो इविरत जाबक न कोय हो॥ १०॥
जो इविरत माठो ध्यान हुवे रे लाल, तो श्रावक रे निरंतर माठो ध्यांन हो।
श्रावक रे इविरत छे सदा रे लाल, ते पिण निरणो कीजो बुधवान हो॥ ११॥
जो विरत ध्यांन आछो हुवे रे लाल, तो श्रावक रे निरंतर आछो ध्यांन हो।
श्रावक रें विरत पिण छे सदा रे लाल, ओ पिण निरणो कीजो बुधवांन हो॥ १२॥
श्रावक रे दोनूं निरंतर हुवे रे लाल, विरत नें इविरत दोय हो।
जो विरत इविरत ध्यान छे रे लाल, दोनूं ध्यांन निरंतर होय हो॥ १३॥
विरत इविरत भलो भूडो ध्यान हुवे रे लाल, तो श्रावक रे निरंतर दोय ध्यान हो।
वले ध्यावें ते ध्यांन तीसरो हुवे रे लाल, ओपिण निरणो कीजो बुधवांन हो॥ १४॥
तीन ध्यान एकण समे हुवे नहीं रे लाल, विरत इविरत एकण समे दोय हो।
हीया माहे विचारे निरणो करो रे लाल, उंधी तांणकर बूडो मत कोय हो॥ १५॥
इविरत नें कहे माठो ध्यान छे रे लाल, विरत ने कहे छे आछो ध्यान हो।
आ उंधी सरधा छे अति बुरी रे लाल, ते किण विध मानें बुधवांन हो॥ १६॥
माठा ध्यांन ने पिण इविरत कहे रे लाल, आछा ध्यांन ने कहे छे विरत हो।
आपिण उंधी सरधा छें अति बुरी रे लाल, तिणमें करे अग्यांनी निरत हो॥ १७॥
धर्म ध्यांन थकी निरजरा हुवे रे लाल, धर्म ध्यांन सूं सवर न होय हो।
सवर तो हुवे छे विरत सूं रे लाल, तिण सूं विरत नें ध्यांन छे दोय हो॥ १८॥
संवर नें निरजरा कहे रे लाल, निरजरा नें संवर कहें तांम हो।
दोनूं प्रकारे बूडे छें बापड़ा रे लाल, उंधी अकल सूं वेफांम हो॥ १९॥

विरत इविरत भला भूंडा ध्यानं नें रे लाल, कहे छे मणागार उपीयोग हो।
ते पिण हीया रा जोर सूं रे लाल, आ पिण सरधा घणी छे अजोग हो॥ २० ॥
इविरत तो उदे भाव अधर्म छे रे लाल, मोह कर्म उदे सूं जांण हो।
मणागार उपीयोग छे उजलो रे लाल, ते तो षयउपसम भाव पिछांण हो॥ २१ ॥
मोह कर्म षयउपसम हुवा रे लाल, विरत नीपजे षयउपसम भाव हो।
तिण मणागार उपीयोग रो रे लाल, मूल नंही छे लगाव हो॥ २२ ॥
विरत सूं तो रुके कर्म आवता रे लाल, ते निश्चेंइ संवर जांण हो।
मणागार तो देखण रो सभाव छै रे लाल, विरत मे मिले नही आंण हो॥ २३ ॥
विरत इविरत तो निरंतर हुवे रे लाल, मणागार निरंतर नांहि हो।
विरत इविरत मणागार किहां थकी रे लाल, ते निरणो करो घट मांहि हो॥ २४ ॥
विरत इविरत नें कहे मणागार छै रे लाल, तिणरी सरधा में घोर अंधार हो।
ते भूठ बोले छे सर्वथा रे लाल, तिणमें सावद्य नही छे लिगार हो॥ २५ ॥
आरत रुदर ध्यान माठा बेहू रे लाल, त्यांनें कहे छे मणागार असुध हो।
धर्म शुकल ध्यांन बेहूं भला रे लाल, त्याने कहे छे मणागार सुध हो॥ २६ ॥
भला भूंडा च्यारूंइ ध्यान नें रे लाल, त्याने कहे उपीयोग मणागार हो।
ओतो गालां सूं गोलो चलावीयो रे लाल, तिणमें साच नही छे लिगार हो॥ २७ ॥
आरत रुदर ध्यान माठा वेहूं रे लाल, ते तो सावद्य जोग व्यापार हो,
ते सावद्य किरतब पारुओ रे लाल, ते निश्चे नही मणागार हो॥ २८ ॥
मोहकर्म उदे सू माठो ध्यान छे रे लाल, ते तो पाप कर्म रा उपाव हो,
मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, तिणरो देखण रो इज सभाव हो॥ २६ ॥
आरत रुदर ध्यान माठा तेह नें रे लाल, त्याने कहें मणागार उपीयोग।
एहवी उंधी करे छे परूपंणा रे लाल, तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो॥ ३० ॥
धर्म शुकल ध्यान बेहूं भला रे लाल, ते तो निरवद जोग व्यापार हो।
ते निरवद करणी निरजरा तणी रे लाल, ते पिण निश्चे नही मणागार हो॥ ३० ॥
अतराय ने मोहणी षयउपसम्या रे लाल, जब ध्यावे छे आछो ध्यान हो।
तिण सूं कर्म कटे छें जीवरा रे लाल, मणागार तो देखण रो इज तान हो॥ ३२ ॥
धर्म शुकल आछा ध्यांन ने रे लाल, त्याने कहें मणागार उपीयोग हो।
ते पिण उंधी करे छे परूपणा रे लाल, आपिण सरधा घणी छे अजोग हो॥ ३३ ॥
हिंसा करें प्राणी जीव री रे लाल, वले बोले मूसावाय हो।
चोरी करे सेवे मइथुन नें रे लाल, परिग्रह मेलणरो करे उपाय हो॥ ३४ ॥
करे क्रोध मान माया लोभ नें रे लाल, राग धेष कलहो करे ताम हो।
अभिषण पेसुण पर परवाद नें रे लाल, रति अरति माया मोसों आंम हो॥ ३५ ॥

सतरे पापथानक छे पांडुआ रे लाल, ते सेवे छें वारुवार हो।
चारित मोह ना उदें थकी रे लाल, त्यांनें कहें छें अग्यांनी मणागार हो॥ ३६ ॥
सतरे पाप सेवण रो त्यागन करे रे लाल, त्यांनें पिण कहे छे मणागार हो।
आ पिण उंधी सरधा छे अतिघणी रे लाल, समकत री गमावणहार हो॥ ३७ ॥
मिथ्यादसण सल अठारमो रे लाल, ते तो उंधी सरधा छे अंधकार हो।
तेहीज मिथ्यात निवरतं समकत हूवो रे लाल, यां दोयां नें कहे छे सागार हो॥ ३८ ॥
अठारे पाप थांनक रो सेवन करे रे लाल, अठारे पाप सेवण रो करे त्याग हो।
त्यांनें कहें छे सागारं मणागार छे रे लाल, ते तो रह्या मिथ्यात में लाग हो॥ ३६ ॥
मिथ्यातदंसण सल छे अठारमों रे लाल, उंधी सरधा रो घोर अंधकार हो।
ते दंसण मोहणी रा उदे थकी रे लाल, ते निश्चें नही सागार हो॥ ४० ॥
ते दंसण मोहणी षयउपसम हूवां रे लाल, जब पांमे समकत श्रीकार हो।
तिणसूं किरीया टली छे मिथ्यात री रे लाल, ते पिण निश्चें नही छे सागार हो॥ ४१ ॥
सागार तो ग्यान उपीयोग छे रे लाल, समकत ते तो सरधा जांण हो।
तिण समकत ने कहें छे ग्यांन छे रे लाल, ते पूरा मूंढ अयांन हो॥ ४२ ॥
चोथे गुणठांणे सागार ग्यांन छें रे लाल, ते ग्यांन छे षयउपसम भाव हो।
तिणरी समकत में तीन भाव छे रे लाल, तिणरो सुणो विवरा सुध न्याव हो॥ ४३ ॥
चोथे गुणठांणे षायक समकत हुवे रे लाल, वले उपसम समकत तेथ हो।
वले षयउपसम समकत छे तिहां रे लाल, ग्यांन तो षयउपसम छे एथ हो। ४४ ॥
समकत तो उपसम भाव जिण कही रे लाल, ग्यांन तो नहीं उपसम भाव हो।
तिण सू ग्यान ने समकत जू जूआ रे लाल, एक कहे ते करे छे अन्याव हो॥ ४५ ॥
षायक समकित चोथे गुणठांगे हुवे रे लाल, चोथे गुणठाणे षायक ग्यांन नाय हो।
तिण सूं ग्यांन नें समकित जू जूआ रे, त्यांनें एक सरधे बूडो काय हो॥ ४६ ॥
ग्यानावर्णी कर्म षयउपसम हुआं रे लाल, जब पांमे छें षयउपसम ग्यांन हो।
तिण ग्यांन ने कोई समकत कहे रे लाल, तिणरा घट मांहें घोर अग्यान हो॥ ४७ ॥
दंसण मोहणी कर्म उपसम हूआं रे लाल, जब उपसम समकत होय हो।
दंसण मोहणी षय हुवे रे लाल, जब षायक समकत पामें सोय हो॥ ४८ ॥
दंसण मोहणी षयउपसम हुवे रे लाल, जब षयउपसम समकत थाय हो।
यां तीनू समकत ने कहे ग्यांन छे रे लाल, ते तो चोडे भूला जाय हो॥ ४६ ॥
दंसण मोहणी कर्म घटीयां थका रे लाल, पामे छे सुध सरधांन हो।
ग्यांनावर्णी कर्म घटीयां तेहसूं रे लाल, पामें छे खयउपसम ग्यान हो॥ ५० ॥
समकत नें ग्यान बेहू जू जूआ रे लाल, जूइ जूइ त्यारी परजाय हो।
कोइ समकत नें गिणे ग्यांन में रे लाल, तिण गेंहला नें खबर न काय हो॥ ५१ ॥

चोथे गुणठाणे एक भाव ग्यांन में रे लाल, समकत माहें तो छें तीन भाव हो।
त्यारी समकत ने ग्यांन म जांणजो रे लाल, यांरो जूओ २ छें सभाव हो॥ ५२॥
दंसण मोहणी कर्म उदे हूआं रे लाल, समकत रो हूओ छे मिथ्यात हो।
तिण मिथ्यात नें कहे सागार छें रे लाल, तिणरी खोटी सरधा साख्यात हो॥ ५२॥
सागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, मिथ्यात उदे भाव अंधकार हो।
सागार उदे भाव हुवे नही रे लाल, ते बुधवंत करजो विचार हो॥ ५४॥
मिथ्यात उदे भाव तेहथी रे लाल, लागे छे किरीया मिथ्यात हो।
सागार षयउपसम भाव थी रे लाल, पाप न लागे तिलमात हो॥ ५५॥
समकत उपसमादिक तेह थी रे लाल, टल जाए किरीया मिथ्यात हो।
समकत रो मिथ्यात प्रतिपष छें रे लाल, बिगड्यो सुधरयो होय जात हो॥ ५६॥
सागार वधीयां कर्म रुके नही रे लाल, घटीयां पाप न आवे लगार हो।
वले कर्म न तूटें सागार थी रे लाल, उजला लेखे निरवद सागार हो॥ ५७॥
सागार वधे ग्यांनावर्णी घट्यां रे लाल, ग्यांनावर्णी वधीयां घटे सागार हो।
सागार घटीयां सावद्य न नीपजे रे लाल, वधीयां निरवद न नीपजें लिगार हो॥ ५८॥
मिथ्यात सावद्य छे मोटको रे लाल, तिणसूं पाप लागे दग चाल हो।
तिण मिथ्यात नें सागार कहे केई रे लाल, ते बोले छे आल पंपाल हो॥ ५९॥
कोइ सागार नें समकत कहे रे लाल, वले कहे छें सागार ने मिथ्यात हो।
संवर आस्रव कहे छे सागार नें रे लाल, तिणरी प्रतष झूठी वात हो॥ ६०॥
सागार तो संवर आस्रव नही रे लाल, संवर आस्रव तो समकत मिथ्यात हो।
सागार नें संवर आस्रव कहे रे लाल, ते चोडे भूला जात हो॥ ६१॥
सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, ते तो अंतरमोहरत माहि हो।
समकत रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल, किण ही समें विरहो पडे नांहि हो॥ ६२॥
मिथ्यात रहे त्यां लग निरंतर रहे रे लाल, किण ही समें विरहो पडे नांहि हो।
सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, सोच देखो मन माहिं हो॥६३॥
मिथ्यात ने समकत बेहू दिष्ट छे रे लाल, ते निश्चें नही छें सागार हो।
बेहू दिष्ट नें सागार म सरधज्यो रे लाल, करे हीया में विचार हो॥६४॥
बेहूं दिष्ट नें घाली सागार मे रे लाल, तोजी दिष्ट किम राखसी न्यार हो।
जो इण ने ई कहे सागार छे रे लाल, तो अंधार माहें फेर अंधार हो॥६५॥
समा मिथ्या दिष्ट छे तीसरी रे लाल, ते दिष्ट छे तीजे गुण ठांण हो।
दंसण मोहणी उदे षयउपसम हूआं रे लाल, मिश्र दिष्ट नीपजती जांण हो॥६६॥
मिश्र दिष्ट नें कहे सागार छे रे लाल, सागार नही मिश्र दिष्ट हो।
मिश्र दिष्ट नें कहे छें सागार छे रे लाल, तिणरी सरधां घणी छे भिष्ट हो॥६७॥

तीनां दिष्टां नें कहे सागार छे रे लाल, तिणरे उदे हूवो छे मिथ्यात हो।
आप डूबे ओरां नें डबोवता रे लाल, कर २ भूठी वात हो॥६८॥
तीनूं दिष्ट ने सागार उपीयोग रा रे लाल, जूआ २ गुण तास हो।
ए सगला नें घाल्या सागार में रे लाल, तिणरी समकत रो हूवो छे विणास हो॥६९॥
तीन दिष्ट नें सागार उपीयोग रो रे लाल, निरणों कीयो छे तांम हो।
हिवे निरणो कहू छू मणागार नों रे लाल, ते सुणजों राख चित्त ठांम हो॥७०॥
मणागार उपीयोग नें चारित कहे रे लाल, चारित नें कहे छे मणागार हो।
ते बेहूं विध सरधा उंधी घणी रे लाल, तिण में साच नहीं छे लिगार हो॥७१॥
चारित मोहणी षयउपसम हूआं रे लाल, जब पामें चारित श्रीकार हो।
तिणसूं इविरतादिक री किरिया मिटी रे लाल, ते तो निश्चेइ नहीं मणागार हो॥७२॥
मणागार तो दर्शण उपीयोग छे रे लाल, चारित नें तो त्याग भाव जांण हो।
तिण चारित नें कहे मणागार छे रे लाल, ते पिण पूरा मूढ अयांण हो॥७३॥
छठा गुणठांणा थी बारमां लगे रे लाल, मणागार तो षयउपसम भाव हो।
तठा तांइ चारित में तीन भाव छे रे लाल, तिणरो सुणो विवरा सुध न्याव हो॥७४॥
छठा गुणठाणा थी दसमां लगे रे लाल, षयउपसम चारित जांण हो।
उपसम चारित गुणठाणें इग्यारमें रे लाल, षायक चारित बारमें गुणठांण हो॥७५॥
षायक उपसम षयउपसम चारित तिहां रे लाल, षयउपसम छे मणागार हो।
तिणसूं मणागार नें चारित जू जूआ रे लाल, तिणमें शंका म राखो लिगार हो॥७६॥
चारित तो उपसम भाव जिण कह्यों रे लाल, मणागार उपसम भाव नांय हो।
ए न्यारा २ दोनूं जाण जो रे लाल, यां नें एक सरधे बूडो कांय हो॥७७॥
दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम हूआं रे लाल, जब नीपजे षयउपसम मणागार हो।
तिण मणागार नें चारित कहे रे लाल, तिणरा घट मांहें घोर अंधार हो॥७८॥
चारित मोहणी कर्म उपसम हूआं रे लाल, जब उपसम चारित होय हो।
तेहीज चारितमोहणी षय हूआं रे लाल, षायक चारित पामें सोय हो॥७९॥
चारित मोहणी षयोपसम हूआं रे लाल, षयउपसम चारित थाय हो।
यां तीनां नें कहे मणागार छे रे लाल, ते तो चोडे भूला जाय हो॥८०॥
चारित मोहणी कर्म घटीयां थकां रे लाल, जब चारित पांमें श्रीकार हो।
दर्शणावर्णी कर्म घटीयो तेह सूं रे लाल, पामें छे षयउपसम मणागार हो॥८१॥
तिण सूं मणागार नें चारित जू जूआ रे लाल, जूई जूई त्यांरी परजाय हो।
कोई चारित नें गिणें मणागार हो लाल, तिण गेंहला नें खबर न कांय हो॥८२॥
षयउपसम ग्यांन छदमस्थ रो रे लाल, त्यांरा चारित मांहे तीन भाव हो।
तिण चारित नें मणागार म जांण जो रे लाल, यां रो जूओ २ छें सभाव हो॥८३॥

चारित मोहणी कर्म उदें हूआं रे लाल, जब चारित रो अचारित हूवो जांण हो।
तिण अचारित नें कहे मणागार छे रे लाल, ते पूरा मूंढ अयांण हो॥८४॥
मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, अचारित तो उदे भाव जाण हो।
मणागार उदे भाव हुवे नही रे लाल, से निरणो करो चतुर सुजाण हो॥८५॥
अचारित उदे भाव तेहथी रे लाल, इविरत किरीया लागे साख्यात हो।
मणागार षयउपसम भाव थी रे लाल, पाप न लागे अंसमात हो॥८६॥
चारित सामायिकादिक तेहथी रे लाल, टलजाए किरिया पात हो।
चारित रो प्रतिपक्ष अचारित हुवे रे लाल, विगड्यो सुधस्यो होय जात हो॥८७॥
मणागार वधीयां कर्म रुके नही रे लाल, घटियां पाप न लागे लिगार हो।
वले कर्म न तूटे मणागार थी रे लाल, उजला लेखे निरवद मणागार हो॥८८॥
दर्सणावर्णी कर्म घटे बधे रे लाल, जब बधे घटे मणागार हो।
मणागार वधीयां घटीयां थकां रे लाल, सावद्य नही नीपजे लिगार हो॥८९॥
इविरत तो सावद्य छे अति बुरी रे लाल, तिणसूं पाप लागे दग चाल हो।
तिण इविरत नें कहें मणागार छे रे लाल, ते बोले छे आल पंपाल हो॥९०॥
कोइ मणागार नें चारित कहे रे लाल, वले कहे मणागार ने इविरत हो।
सवर आस्त्रव कहे मणागार ने रे लाल, ते तो कूड़ा करे छे निरत हो॥९१॥
मणागार तो संवर आश्रव नही रे लाल, संवर आश्रव तो विरत इविरत हो।
मणागार ने संवर आश्रव कहे रे लाल, ते न्योडे भूलो छें निसरत हो॥९२॥
मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, ते अतर मोहरत मांहि हो।
चारित रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल, किण ही समे विरहो पडे नांहि हो॥९३॥
इविरत रहे त्या लगे निरंतर रहे रे लाल, किणही समें विरहो पडे नांहि हो।
मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, ते विचार देखो मन माहि हो॥९४॥
दसमें गुणठाणे चारित निरंतर हुवे रे लाल, दसमें गुणठांणे नही मणागार हो।
जो मणागार चारित हुवे रे लाल, तो चारित न हुवे तिणवार हो॥९५॥
मणागार उपीयोग हुवे जिण समें रे लाल, तिण समें नही सागार उपीयोग हो।
तिणसूं सागार नें मणागार नों रे लाल, समकाले बेहां रो नही जोग हो॥९६॥
मणागार नों उपीयोग नहीं हुवे रे लाल, जब विरत इविरत हुवे ताहि हो।
तिणसूं विरत इविरत मणागार नों रे लाल, मिलाप नही मांहो मांहि हो॥९७॥
विरत इविरत छे बेहूं जू जूइ रे लाल, ते निश्चेइ नहीं मणागार हो।
यां दोयां नें मणागार म जांणजो रे लाल, करे हीया में विचार हो॥९८॥
विरत तो छे धर्म पक्ष मझे रे लाल, इविरत नें अधर्म पक्ष जाण हो।
विरताविरत मिश्र पख तीसरो रे लाल, यांरी पिण करज्यों पिछांण हो॥९९॥

दोय तो पख घाल्या मणागार में रे लाल, मिश्र पख किम राखसी न्यार हो।
जो-इण नें इ कहे मणागार छे रे लाल, तो अंधारा में फेर अंधार हो ॥१००॥
मिश्र पक्ष छे तीसरो रे लाल, मिश्र पक्ष पांच में गुणठांण हो।
चारित मोहणी उदे षयउपसम हूवां रे लाल, मिश्र पक्ष नीपजतो जांण हो ॥१०१॥
मिश्र पक्ष मणागार निश्चें नहीं रे लाल, मणागार मिश्र पक्ष नांहि हो।
मिश्र पक्ष नें कहे मणागार छे रे लाल, ते पडीया मिथ्यात रे मांहि हो ॥१०२॥
तीनां पक्षां नें कहें मणागार छें रे लाल, तिणरे उदे हूवो छें मिथ्यात हो।
आप डूबें ओरां नें डबोवता रे लाल, कर २ कूडी वात हो ॥१०३॥
तीनूं पक्ष नें मणागार उपीयोग रा रे लाल, जूआ २ गुण तास हो।
यां सगलां नें घाल्या मणागार में रे लाल, तिणरी समकत रो हुवो छे विणास हो ॥१०४॥
तीनों इ पष नें मणागार नों रे लाल, ए निरणों कह्यो छें तांम हो।
हिवें निरणो कहूं छूं तीनूं जोगां तणो रे लाल, ते सुणजो राख चित्त ठांम हो ॥१०५॥
अठारे पापथानक सेवे तेहनां रे लाल, ते तो सावद्य जोग व्यापार हो।
ते तो चारित मोहणी रा उदा थकी रे लाल, ते तो निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०६॥
हिंसा करे छे प्राणी जीवरी रे लाल, ते तो प्रणातपात आश्रव दुवार हो।
ते पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०७॥
भूठ बोले कोई मोटो छोटको रे लाल, ते मिरषावाद आश्रव दुवार हो।
ते पिण पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०८॥
कोई छोटी मोटी चोरी करे रे लाल, ते अदत्तादान आश्रव दुवार हो।
ते पिण पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०९॥
अस्त्रीयादिक सूं सेवें मैथुन नें रे लाल, ते मैथुन आश्रव दुवार हो।
ते पिण पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ मणागार हो ॥११०॥
सचित्त अचित्त मिश्र राखे परिग्रहो रे लाल, ते परिग्रह आश्रव दुवार हो।
ते पिण पापथांनक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१११॥
इम क्रोधादिक मिथ्यात अठारमों रे लाल, अठारोंइ आश्रव दुवार हो।
अठारे पापथांनक रा उदा थकी रें लाल, ते अठारोंइ नहीं मणागार हो ॥११२॥
सतरे पापथांनक छें चारित मोहणी रे लाल, अठारमों दंसण मोहणी जांण हो।
त्यांरा उदा सूं ए किरतब करे रे लाल, त्यांनें जूदा २ लो पिछांण हो ॥११३॥
हिंसादिक अठारेइ किरतब करे रे लाल, ते अठारेंइ सावद्य जोग हो।
ते अठारोंई आश्रव दुवार छें रे लाल, निश्चेंइ नहीं मणागार उपयोग हो ॥११४॥
हिंसा री इविरत निरंतर हुवे रे लाल, हिंसा रा जोग निरंतर नांहि हो।
हिंसा रा जोग तो हिंसा करे जदी रे लाल, विचार देखो मन मांहि हो ॥११५॥

हिंसादिक अठारे पाड़ूवां रे लाल, ज्यारी इविरत निरतर जांण हो।
हिंसादिक रा जोग वरते जदी रे लाल, यांरी करो हीया में पिछांण हो ॥११६॥
यां अठारां री इविरत तेहनां रे लाल, पूरा भेद कह्या नही जाय हो।
यां अठारां रा किरतब माठा जोगना रे लाल, कहितां २ पार न आय हो ॥११७॥
अठारां री इविरत नें माठा जोग नें रे लाल, कहीजे आश्रव दुवार हो।
ते मोहकर्म रा उदा थकी रे लाल, ते निश्चेइ नही मणागार हो ॥११८॥
सागार मणागार उपीयोग नें रे लाल, केई कहें छें आश्रव दुवार हो।
तिणरी उंधी सरधा छे सर्वथा रे लाल, तिणमें साच नही छे लिगार हो ॥११९॥
पनरे करमादांन सेवे जू जूवा रे लाल, आरंभ करे अनेक परकार हो।
विविध पणें किरतब पाडूआ करे रे लाल, त्यांनें कहे छें ग्यांनी मणागार हो ॥१२०॥
वले कूटवो पीटवो ने रोयवो रे लाल, वले घर रा कारज अनेक हो।
त्यां सगलां नें कहें मणागार छें रे लाल, त्यां विकलां ने नही छे विवेक हो ॥१२१॥
आश्रव संवर नें निरजरा तणा रे लाल, त्यांरा भेदां रो नही छें कोइ पार हो।
यां सगला नें कहे मणागार छे रे लाल, तिण मिथ्यात कीयो अंगीकार हो ॥१२२॥
पसारी तणा हाट तेह में रे लाल, किराणों छें विवध परकार हो।
त्यांरी कोथलीयां छें जू जूइ रे लाल, यां में जूइ जूइ नो जांणकार हो ॥१२३॥
तिण पसारी रो वेटों हीया फूट थो रे लाल, तिण विकल में नही छे विवेक हो।
तिण सगली कोथलीयां खोलने रे लाल, किरांणा रो कीयो ढिग एक हो ॥१२४॥
दोय कोथला हुंता तिणरी हाट में रे लाल, ते किराणो घाल्यो दोयां मांहि हो।
ते मन में जांणें हूं डाहो घणो रे लाल, मो सरीषो म्हारो पिता पिण नाहि हो ॥ १२५ ॥
पूत कपूत हुवो पसारी तणो रे, तिण कीयो नीवी रो नास हो।
इण दिष्टते निन्व हूआ रे लाल, त्यां कीयो समकत रो विणास हो ॥ १२६ ॥
अनंती परजाय छें जीवरी रे लाल, ते मांहों मांहि न खाए मेल हो।
जे निन्हव हूआ उ घी अकल का रे लाल, त्यां कर दीधी भेल संभेल हो ॥ १२७ ॥
समकत ने मिथ्यात नी परजाय ने रे लाल, त्यांने कहे छे सागार उपीयोग हो।
एहवा ववेक विकल निन्वां तणें रे लाल, लागो मिथ्यात रो रोग हो ॥ १२८ ॥
वले चारित अचारत री परजाय ने रे लाल, त्यांने कहे मणागार उपीयोग हो।
एहवा हीया फूट निन्वां तणी रे लाल, आ सरधा घणी छे अजोग हो ॥ १२९ ॥
इत्यादिक जीवरी परजाय नें रे लाल, कर दीधी भेल सभेल हो।
जूइ जूइ परजाय नही ओलखी रे लाल, ते बोले बालक जिम वेहल हो ॥ १३० ॥
सागार नों गुण जांणव तणा रे लाल, देखवा रो गुण छे मणागार हो।
और गुण अवगुण यामें कोइ नही रे लाल, ते करो हीया में निस्तार हो ॥ १३१ ॥

सागार मणागार उपीयोग नें रे लाल, संवर आस्रव म सरधो कोय हो।
जो संका पडे इण बात में रे लाल, तों सूतर नें लो जोय हो॥ १३२॥
संवत अठारे सेंतालेस में रे, फागुण विद आठम शनीसर वार हो।
जोड कीधी भव जीवांनें प्रति बोधवा रे लाल, नेणवा सहर मझार हो॥ १३३॥

ढाल : १०

दुहा

च्यार कर्म घनघातिया, अभ्र पटल ज्यूं जीवरे ताय।
ग्यानवर्णी दर्शणावर्णी मोहणी, चोथो कर्म अंतराय ॥ १ ॥
च्यार कर्म षयउपशम हुआं, नीपजे निरवद भाव।
ते निजगुण सुद्ध पर्याय छे, त्यांरो जूदो २ छें सभाव ॥ २ ॥
उजला लेखे सगलां भणी, निरवद कह्या भगवान।
केइ गुणा सू पाप कर्म रुके, उजला लेखे सर्व निधान ॥ ३ ॥
ए च्यारूं कर्म उदे हुवां, पडे गुणा री हाण।
जे २ गुण विगडे जिण कर्म थी, ते जाणें चतुर सुजाण ॥ ४ ॥
गुण विगड़े जिण २ कर्म थी, ते भोला ने खबर न काय।
तिण सूं ऊंधी करे छें परूपणा, तिणरा जाव सुणो चित्तलाय ॥ ५ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

ग्यानवर्णी कर्म षयउपसम हुआ रे, आठ गुण पामें श्रीकार रे ॥ सुगणनर* ॥
च्यार ग्यांन नें तीन अग्यांन ने रे लाल, वले सूतर नो भणवो सार रे ॥ सु० ॥
निज गुण रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
ग्यांनवर्णी कर्म रा उदा थकी रे, ग्यांन तणो छे विगाड़ रे।
और गुण नही विगडे एहथी रे, तिणमें संका नही छे लिगार रे ॥ सु० नि० २ ॥
दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम हूआं रे, आठ बोल पामे श्रीकार रे।
पांच इन्द्री ने दर्शण तीन नें रे, और गुण नही पामे लिगार रे ॥ ३ ॥
दर्शणावर्णी उदे हूआं रे, मणागार दर्शण रो विगार रे।
और गुण इणथी विगारे नहीं रे, इणरो तो ओहीज विचार रे ॥ ४ ॥
मोहणी कर्म षयउपशम हूआं रे, आठ बोल नीपजे विशिष्ट रे।
च्यार चारित ने देश विरत पांचमों रे, वले क्षयोपशम तीन दिष्ट रे ॥ ५ ॥
ते मोहणी कर्म उदे हुवां रे, समकत नें चारित नों विगार रे।
तिण षयउपशम हुवां गुण नीपना रे, त्यारो विगारणहार रे ॥ ६ ॥
अतराय कर्म षयउपसस हूआं रे, आठ बोल पामें ततसार रे।
पाच लब्धि ने वीर्य तीन नें रे, आठ गुण उजला श्रीकार रे ॥ ७ ॥

*प्रत्येक गाथा के अन्त मे इनकी पुनरावृत्ति है।

अंतराय कर्म उदे हूआं रे, लब्धि नें वीर्य री पड़े हाण रे।
अनेक वस्तु आडी होय रही रे लाल, तिणरी चोखी करज्यो पिछाण रे॥ ८॥
केइ मूढ मिथ्याती इम कहें रे, मोह उदे सूं विगरे उपीयोग रे।
कर्म बांधे विगस्था उपीयोग थी रे, तिण सूं बूड रह्या छे लोक रे॥
सरधा सुणों निन्वां तणी रे लाल॥ ६॥
दंसण मोहणी उदे हुवे रे, जब पामें जीव मिथ्यात रे।
तिण मिथ्यात नें कहे सागार छे रे, सागार विगस्थो कहे छे साख्यात रे॥ स०१०॥
दंसण मोहणी षयउपसम हुवे रे, जब पामें समकत सार।
तिण समकत नें कहे सागार छे रे, तिणमें साच नहीं छे लिगार रे॥ ११॥
चारित मोहरा उदा थकी रे, नीपजे माठी अविरत अजोग रे।
तिण अविरत नें कहे मणागार छे रे, तिणरे लागो मिथ्यात नों रोग रे॥ १२॥
चारित मोहिणी षयउपसम हूआं रे, चारित नीपजे सुखदाय रे।
तिण चारित नें कहे मणागार छे रे, एहवी कूड़ी करे बकवाय रे॥ १३॥
समकत तो सागार निश्चें नही रे, मिथ्यात पिण नहीं सागार रे।
चारित ते मणागार निश्चें नही रे, अचरित पिण नही मणागार रे॥ १४॥
मोह कर्म उदे सूं विगड़े नहीं रे, सागार ने मणागार रे।
दयादिक गुण विगरे मोह थी रे, कोइ बुधवंत करज्यो विचार रे॥ १५॥
मोहकर्म षयउपसम हूआं रे, दयादिक गुण नीपजे अठार रे।
त्यांरो जूओ २ निरणो कहूं रे, तो कहितां न आवे पार रे॥ १६॥
वले निपजावे तो नीपजे रे, मोंहणी कर्म परीयां हाण रे।
निरवद्य जोग निपजावे तो नीपजें रे, वले धर्म नें शुक्ल ध्यान रे॥ १७॥
भली लेश्या निपजावे तो नीपजे रे, भला अध्यवसाय नें परिणाम रे।
इत्यादिक गुण निपजाया नीपजें रे, ते मोह दूरो हूआं ताम रे॥ १८॥
वले मोह कर्म दूरो हूआं रे, मिट जाए तिण रो मिथ्यात रे।
वले वीतराग भाव नीपजे रे, राग द्वेष षय जात रे॥ १६॥
इत्यादिक गुण निपजें अति घणा रे, ते सगलाई गुण श्रीकार रे।
ते पामें मोहणी षयउपसम हूआं रे, त्यांरो कहितां न पामें पार रे॥ २०॥
ते मोहणी कर्म उदे हूआं रे, समकत ने चारित रो विगार रे।
मोह षयउपसम हूआं गुण नीपना रे, त्यां गुणरो विगारणहार रे॥ २१॥
समकत विगरे मिथ्याती हूओ रे, दंसण मोह उदे सूं जाण रे।
चारित मोह कर्म रा उदा थकी रे, पडी कुण २ गुणांरी हाण रे॥ २२॥
दया तणो गुण मिट गयो रे, हिंसा रो अवगुण प्रगट थाय रे।
झूठ चोरी मैथुन परिग्रहो रे, एहवा ओगुण बधे छें ताय रे॥ २३॥

*प्रत्येक गाथा के बाद यह आँकड़ी है।

क्षमा नरमाइ विगरे मोह थी रे, वले सरलपणो संतोष रे।
क्रोध मान माया लोभ परगटे रे, मोह कर्म उदे सूं एहवा दोष रे॥ २४ ॥
वीतरागपणो विगार दे रे, राग द्वेष वधे तिणसूं ताम रे।
घणा कर्म बघे राग द्वेष थी रे, वले माठा वरते परिणाम रे॥ २५ ॥
वले मोह कर्म रा उदा थकी रे, अविरत नीपजे ताम रे।
सतरे पाप सेवण रो उद्यम करे रे, अनेक सावद्य करे काम रे॥ २६ ॥
सतरे पापथानक सेवे जीवड़ो रे, माठी लेश्या माठा अध्यवसाय रे।
ध्यावे आर्त्त रौद्र ध्यान ने रे, चारित मोह उदे सूं ताय रे॥ २७ ॥
माठा जोग वरते छे जीवरा रे, ते पिण मोह उदा सूं जाण रे।
कहि २ नें कितरो कहूं रे, ते करज्यो हिया में पिछाण रे॥ २८ ॥
मोहणी कर्म षयउपसम हूआ रे, गुण नीपजे श्रीकार रे।
ते उदे हूआं यांहीज गुणा तणों रे, ओहीज विगारणहार रे॥ २९ ॥
कोइ मूढ मिथ्याती इम कहे रे, ग्यान आडो छे मोहणी कर्म रे।
ते विवेक विकल सुधबुध विनां रे, ते तो भूलो अग्यांनी भर्म रे॥ ३० ॥
जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, मोह बारमें गुणठाणे हुवे दूर रे।
जब केवलग्यान न उपजे रे, तो पडी सरघा में धूर रे॥ ३१ ॥
ग्यान आडो कहे कर्म मोहणी रे, ते पूरा मूढ गिंवार रे।
आप डूबे ओरांने डुबोवता रे, साची सरधा सूं करे छे खुवार रे॥ ३२ ॥
नाण मोह चाल्यो सूतर मझे रे, तो ग्यान में उपजे व्यामोह रे।
ते ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ते मोह निश्चेई न कोय रे॥ ३३ ॥
नाणमूढे कह्यो सूतर मझे रे, ग्यानावर्णी उदे सूं जांण रे।
व्यामोह पडे तिण जीव नें रे, तिणरी पूरी न करे पिछांण रे॥ ३४ ॥
ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, व्यामोह पामें छे ताय रे।
तिण व्यामोह नें थाप्यो मोहणी रे, भोलां नें खबर न काय रे॥ ३५ ॥
दिसामोहेण कह्यो आवसग मझे रे, ते दिसि नें पाम्यो व्यामोह रे।
ते पिण ग्यांनावर्णी रा उदा थकी रे, ते हिरदे विचारी जोय रे॥ ३६ ॥
ग्यांनावर्णी रा उदा थकी रे, ग्यांन भूले सांसो पर जाय रे।
दंसणमोहणी रा उदा थकी रे, पदार्थ उंधो सरघाय रे॥ ३७ ॥
मोहणी कर्म जावक षय गयो रे, जब आयो बारमें गुण ठांण रे।
जो ग्यांन आडो हुवे मोहणी रे, ते षय गयां उपजे केवलनाण रे॥ ३८ ॥
मोहणी कर्म जावक उपशम्यों रे, इग्यार में गुणठाण रे।
जो ग्यांन आडो हुवे मोहणी रे, ते उपशम्यां उपजे उपशम नाण रे॥ ३९ ॥

मुत्तें कहितां मूकाणा सर्व कर्म सूं रे, त्यांनें कहिजे सिद्ध भगवान रे।
त्यांनें अमूकाणा सरधे कर्म सूं रे, ते मिथ्याती री ऊंधी सरधान रे॥ ४० ॥
अमूत्त मुकाणा नही कर्म थी रे, ते तो संसारी जीव रे।
त्यांनें सरधे मूकाणा कर्म थी रे, तिणरे निश्चें मिथ्यात री नीव रे॥ ४१ ॥
ए नवमों नें दसमों मिथ्यात छैं रे, सूतर ठाणांग मांहि रे।
ते दोनूंई मिथ्यात उत्थाप नें रे, और बणाया छैं ताहि रे॥ ४२ ॥
मूर्ति नें अमूर्ति बणाविया रे, मूकाणा नें अमूकाणा री ठोर रे।
वले जोड करी तिण ऊपर रे, कर २ झूठा झोर रे॥ ४३ ॥
कहे एक जाण्यां जाणें सहू रे, नव जाण्यां न रहे एक रे।
एहवी करे छे परूपणा रे, कर २ ताण वशेख रे॥ ४४ ॥
यांहीज दसां बोलां मांहिलो रे, जो ऊ एक बोलरो हुवे अजाण रे।
तो ऊहीज उणरी सरधा थकी रे, जाबक मूढ अयाण रे॥ ४५ ॥
कहे नव जाण्यां एक रहे नहीं रे, इम कहे छे कर २ ताण रे।
तिण दोय न जाण्यां दसां मांहिलां रे, तो उणरे लेखे ऊ जाबक अजाण रे॥ ४६ ॥
दोय नही जाण्यां ते जिहांइ रह्या रे, बताय दिया दोय और रे।
अशुभ कर्म जोगे ऊंधी पडी रे, ते तो बूडे छे कर २ और रे॥ ४७ ॥
जो अमूर्ति अमूर्ति छोड नें रे, कहे मूकाणा नें अमूकाण रे।
उणरे लेखे मिथ्याती ऊ थेटको रे, उणरी सरधा लेज्यो पिछांण रे॥ ४८ ॥
मिथ्यादिष्ट षयोपशम हुई तेहनी रे, नास्ति पाड़ी छे विविध प्रकार रे,
ते पिण मूढ मिथ्याती जाणें नहीं रे, तिणरो तो घणो छे विस्तार रे॥ ४९ ॥
संवत अठारे सेंताले समें रे, फागुण सुद में ताहि रे।
जोड कीधी निन्व ओलखायवां रे, माधोपर सहर रे मांहि रे॥ ५० ॥

ढाल ११

दुहा

केइ मूढ मिथ्याती जीवडा, जिण मारग ना अजांण।
ते ग्रहस्थ री पांचूं इन्द्रयां भणी, सावद्य कहे छे तांण तांण ॥ १ ॥
जो कोइ ग्रहस्थ आंधो हुवे, तेहने कहे मिटियो देखण रो पाप।
ते आश्रव घटीयो कहे तेह नें, इम कर रह्या मूढ विलाप ॥ २ ॥
वले बहरो कानें हुवें, ते सुणवा रो मिटीयो कहे पाप।
ज्यूं २ इंद्री घटे ज्यू २ गुण वधे, एहवी करे अग्यांनी थाप ॥ ३ ॥
इंद्री घटीया गुण नीपनों कहे, इंद्री वधीया गुण घट जाय।
कहे इंद्रया मे अवगुण घणा, ते चोडे भूला जाय ॥ ४ ॥
जो इंद्रयां सावद्य हुवे, तो इंद्री घटे ते करणो उपाय।
जे इद्रयां ने सावद्य कहे, तिणरी सरधा रो ओहीज न्याय ॥ ५ ॥
पाप लागे छें राग धेष थी, इद्रयां थी न लागे पाप।
ए वीर वचन उत्थापीयो, तिणमे होसी घणो संताप ॥ ६ ॥
आंधो हुवां रो पाप टलियो कहे, ते पूरा मूढ अयाण।
तिणरा थोडा सा जाव परगट करूं, ते सुणज्यो चतुर सुजांण ॥ ७ ॥

ढाल

[जगत गुरु तिसला नन्दन वीर]

जाति[1] कुल[2] बल[3] रूप[4] नें, तप[5] लाभ[6] सूतूर[7] ने ठुकराय[8]।
ए आठूं पाम्यां मद आवे जीव नें, तिणसूं पाप कर्म लागे आय।
चुतर नर समझो ग्यांन विचार* ॥ १ ॥
ज्यूं पांचूं इंद्री पांमी जीवडे, तिणसूं शब्दादिक वेदाय।
जो राग धेष आंणे त्या उपरे, तो पाप कर्म बंधाय ॥ २ ॥
जात नें कुल बल रूप नें, तप लाभ सुतर ने ठुकराय।
ए आठूं पांम्या मद आवे नही, तिणरे पाप न लागे आय ॥ ३ ॥
ज्यूं पाचूं इंद्री पांमी जीवड़े, तिणसूं शब्दादिक वेदाय।
जो राग धेष न आणे त्यां उपरे, तिणसूं पाप न लागे ताय ॥ ४ ॥

*यह प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जात कुल बल रूप नें, तप लाभ सुतर नें ठुकराय।
ए आठोंइ मदरा कारण कह्या, पिण एतो नहीं मदरा उपाय॥ ५ ॥
आठ बोल ज्यूं पांचूंइ इंदर्‍यां, ए पिण कारण कहि छे ताय।
आठ बोलां सूं पाप लागे नहीं, ज्यूं इंदर्‍यांसुं पिण पाप न थाय॥ ६ ॥
जो पांचूं इंदरी सावद्य हुवे, तो ए पिण आठुंइ सावद्य होय।
जो ए आठूं बोल सावद्य नही, तो पांचूं इंदरी सावद्य नही कोय॥ ७ ॥
कोइ कहे आंधो हुवें छे तेहनें, देखण रो पाप टल जाय।
तो सुतर भण नें कोइ वीसर्‍यो, तिण रे टलीयो सुतर मद ताय॥ ८ ॥
कानें बहरो हूवों तेहनें, सुणवारो पाप मिटियो ताय।
कोइ तप करनें भागल हुवो, तिणरे पिण तप मद मिट जाय॥ ९ ॥
इण विध पांचूं इंदरी हीणी पर्‍यां, त्यांरो पाप न लागें आय।
तो जात कुलादिक आठूंइ भिष्ट हुवें, तिणरे आठूंइ मद मिट जाय॥ १० ॥
पांच इंदरी तो सावद्य नहीं, जातादिक आठूं मद नहीं ताहिं।
रागद्वेष ओलखायो छे एहथी, ते निरणो करो घट मांहि॥ ११ ॥
इंद्री घटीयां सूं गुण वधीयो कहे, ते जिण मारग रा अजांण।
इंद्री घटे छें उसभ उदे हूवां, तिणरी विकलां नें नहीं छे पिछांण॥ १२ ॥
उणरी सरधा रे लेखे इंदरीहार नें, थावर में उपनां गुण होय।
जात कुलादिक आठां तणो, त्यांरे मद नंहि आवे कोय॥ १३ ॥
उणरे लेखे मिनष छें दलदरी, हीयाफूट इंद्रीहीण होय।
जातादिक आठूं हीणा हुवां, तिणरे मद नहीं आवें कोय॥ १४ ॥
जीव नीच जाति मांहे उपनों, तिणरे जात रो मद आवे नांहि।
जो नीच कुल में जीव उपनो, तो कुल मद नहीं आवे मन मांहि॥ १५ ॥
जो बल करनें निरबल हुवें, तो बल रो मद नावें लिगार।
जो रूप में जीव कुरूप हुवें, तो रूप रो नही आवे अहंकार॥ १६ ॥
तपसा तिण सूं मूल हुवें नहीं, तिणरे तपसा रो मद नहीं आय।
असणादिक जावक मिले नही, तिण नें लाभ रो मद मावें ताय॥ १७ ॥
कोई ठोठ तो सुतर भणे नहीं, तो सूतर मद नावें ताय।
जो सिखादिक जावक मिले नही, तो ठकुराइ रो मद नहीं आय॥ १८ ॥
जातादिक आठूं पामें पाडूवा, ते उसभ कर्म सूं जांण।
पांचूं इंद्री हीणी पड़े तेहनें, उसभ कर्म उदे हूआ आंण॥ १९ ॥
उसभ उदे सूं गुण नीपनां कहे, तिणरे उदे हूओ छें मिथ्यात।
उसभ घटीया सावद्य नीपणों कहे, आतो विकला वाली छें वात॥ २० ॥

कोई जीव दो भागी ने दल दलदरी, दुख भोगवे विविध परकार।
तिणनें चावे ते वस्त मिले नहीं, तिणरे गुण कहे मूढ गिवार॥ २१ ॥
एतो उदें आया कर्म भोगवे, तिणरे गुण नही हुओ लिगार।
गुण तो होसी जद जीवरे, मिलीया त्यागसी तिण वार॥ २२ ॥
रूडा रूप छें विविध प्रकार नां, त्यां ने देखे चषू इंद्री तांम।
रूप नें चषू इंद्री सावद्य नही, सावद्य छे खोटा परिणांम॥ २३ ॥
रूडा शब्द विविध प्रकार ना, ते सुणें सुरत इद्री तांम।
शब्द नें सुरत इंद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणाम॥ २५ ॥
रूडा गंध छें विवध प्रकार ना, त्यांनें वेदे घणेंद्री ताम।
गंध नें घाणेंद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणांम॥ २५ ॥
रूडा रस विविध प्रकार नां, त्यानें वेदे रस इद्री तांम।
रस नें रस इंद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणांम॥ २६ ॥
रूडा फरस छें विविध प्रकार ना, त्यांनें वेदे फरस इन्द्री तांम।
फरस नें फरस इद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणांम॥ २७ ॥
शबदादिक पाचूं रूडा उपरे, राग ते सावद्य जांण।
शब्दादिक पांचूं पाडुआ उपरे, धेष आवे ते सावद्य पिछांण॥ २८ ॥
साध मनोग्य आहार करतो थको, जो ग्रिधपणो करे कोय।
ते जिण अगना रो चोर छे, तिणरो चारित कोयला होय॥ २९ ॥
साध मनोग्य आहार करतो थको, ग्रिधपणो करे नही कोय।
तिणरो चारित न हूवो कोयला, तिणरे कर्म निरजरा होय॥ ३० ॥
रस इंद्री सावद्य नही, सावद्य नही मनोग्य आहार।
ग्रिधपणा नें सावद्य कह्यो, तिणसू चारित हूवो छार॥ ३१ ॥
साधु अमनोग्य आहर करतो थको, जो उ धेष करे तिण वार।
तिणरे चारित में धूंवो उठीयो, हूवो श्री जिण आगना बार॥ ३२ ॥
साधु अमनोग्य आहार करतो थको, जो उ धेष न आणे लिगार।
तिणरो चारित कुसले रह्यो, वले कर्म तूटा तिण वार॥ ३३ ॥
रस इद्री तो सावद्य नही, सावद्य नही अमनोग्य आहार।
धेष आयो तिण नें सावद्य कह्यो, तिणसू हूवो चारित रो विगार॥ ३४ ॥
देखो राग धेष सावद्य कह्या, ते सावद्य जोग व्यापार।
भगोतीरे सतक खंद सातमे, पेंहिला उदेसामे विसतार॥ ३५ ॥
श्रेणिक राजा ने राणी चेलणा, त्यारो रूप मनोहर देख।
साधु साववियां नीहाणो कीयो, त्यारा खोटा परिणाम विशेष॥ ३६ ॥

जब केइ अग्यांनी इम कहे, रूप देख्यो तो कीयो नीहांण।
तिण सं चषू इंद्री नें सावद्य कहां म्हें, चोखी करी पिछांण ॥ ३७ ॥
घणा साध नें साधव्यां, त्यांरो रूप देख्यो तिण वार।
जो चषू इंद्रीं सावद्य हुवे तो, सगला रे हुंतो विगाड ॥ ३८ ॥
देखणा मांहें अवगुण नहीं, आंगुण मन परिणांम।
खोटो मन वरत्यो तेहनों, त्यां कियो नीहाणो तांम ॥ ३९ ॥
सुरीयाभ नामे देवता, ते वीर समीपे आय।
नाटक पाड़्या विवध परकारना जी, रूप अनेक वणाय ॥ ४० ॥
त्यांरा मीठा शब्द सुहामणा, ते सांधां सुणिया छें कांन।
वले साध नें साधव्यां, त्यांरा दीठा रूप असमांन ॥ ४१ ॥
शब्द सुण्या रूप देषीयां, तिणरो पाप न लागो लिगार।
पाप लागे छे सावद्य जोग थी, ते बुधिवंत करज्यो विचार ॥ ४२ ॥
नातीला ने कह्या असमाधीया, पिण ते असमाधीया नांहि।
असमाधीया निज परणाम छें, ते विचार देखो मन मांहि ॥ ४३ ॥
ज्यूं इंद्री ने वेरण कही पिण, इंद्रयां वेरण नांहि।
वेरी तो राग धेष परिणाम छें, ते विचार कीज्यो मन मांहि ॥ ४४ ॥
इंद्री तो षयउपसम भाव छे, जीवरो निज गुण सरूप।
केवल दर्शण माहिली वानगी, निरमल चीज अनूप ॥ ४५ ॥
काम नें भोग थकी समता नही, असुमता पिण मत जांण।
राग धेष थकी असुमता हुवे, तिणरी बुधवंत करज्यो पिछांण ॥ ४६ ॥
ए उत्तराधेन इकतीसमें जी, सो उपर ली गाथा एक।
तिणरो अर्थ हीया में धारने जी, छोड दो खोटी टेक ॥ ४७ ॥
वले कही २ नें कितरो कहूं, इंद्री छें षयउपसम भाव।
कर्म लागे छे तेह थी, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याव ॥ ४८ ॥
समत अठारे संताले समें, वैसाष विद नवमी बुधवार।
जोड़ कीधी इंद्री ओलखायवा, नेंणवा सहर मझार ॥ ४९ ॥

ढाल : १२

दुहा

केइ भारीकर्मा जीवडा, ते कर रह्या कूडी टेक।
ते पाचू इंदरया नें सावद्य कहे, ते बूडे छे विना ववेक॥ १॥
जो इंदरयां सावद्य हुवे, तो इंद्री घटीयां सावद्य मिट जाय।
उणरे लेखे इंद्री हारीयां, लाभ अनतो थाय॥ २॥
इंद्रयां षयउपसम भाव छे निरमलो, केवल दरसण माहिली चीज।
त्या इंदरयां नें सावद्य कहे, ते रह्या मिथ्यात में भीज॥ ३॥
कहे जो इदरयां कायम रहे, तो पडे नरक में जाय।
दूसरो ओगुण कहे इंदरयां मभे, ते एकंत मूसावाय॥ ४॥
अवगुण तो छे राग धेप में, ते दीया इंदरयां सिर नांख।
त्याने किम समभावियें, ज्यांरी फूटी अभितर आख॥ ५॥
केइ शब्दादिक सुख भोगवे घणा, तो ही जाअे देवलोक माय।
त्यारी इंदरया पिण कुसले रहे, तिणरो जाणे समदिप्टी न्याय॥ ६॥
इदरया काम रह्यां कह नारकी, ते भूठ रा वोलणहार।
तिणरी खोटी सरधा रो निरणो कहूं, ते सुणजों विसतार॥ ७॥

ढाल

[पाषण्ड वधसी आंरे पाच मे]

तीन पल आउषारा जुगलीया रे, त्यारी तीन कोस री हूंती काय रे।
इंद्री पांचोइ त्यारी निरमली रे, ते मरने निश्चेंइ देवता थाय रे।
इंदरयां नें सावद्य कोइ मत जांणज्यो रे*॥ १॥
जुगलीया मरने हुवे छें देवता रे, त्यांरे हूंता शब्दादिक नां सुख पूर रे।
इंदरी कायम रह्यां कहे नारकी रे, तिणरी सरधा रो प्रतष देखो कूड रे॥ २॥
काम ने भोग जुगलीया रे घणा रे, त्यांरा सुख पूरा केम कहवाय रे।
पिण राग ने धेप तीवर नही तेहनें रे, तिणसूं जुगलीया नरक न जाय रे॥ ३॥
कांम ने भोग उतकष्टा भोगवें रे, जो उतकप्टो राग तिणसूं होय रे।
तो जुगलीयो मरने जाए नारकी रे, देवता होय न सके कोय रे॥ ४॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ते वांजत्र सुणे छे विविध प्रकार नां रे, वले विविध प्रकारे देखे रूप रे।
कसबोइ लेवे विविध प्रकार नां रे, भोजन करे छे विविध अनूप रे॥ ५॥
फरस भोगवे विविध प्रकार नां रे, त्यांरे कांमभोग घणा सुखदाय रे।
पिण राग नें धेष तिणा रें पातला रे, तिण सूं तो अल्प पाप बंधाय रे॥ ६॥
जुगलीयां रा सुख रे भाग अनंत में रे, केइ राजा नां सुख छें अल्प लिगार रे।
जो राग ने धेष त्यांरे प्रबल हुवे रे, तो पादरा जाए नरक मझार रे॥ ७॥
ए प्रतष अवगुण छे राग धेष में रे, ते इंदरयां रे माथे न्हांखें कांय रे।
पाप लागे छे सावद्य जोग थी रे, विचार करे देखो मन मांय रे॥ ८॥
घणा काम नें भोग जुलीयां भोगवे रे, ते तो न जाए नरक मझार रे।
केइ थोडा भोगवीयां जाए नरक में रे, तिणरो कोइ बुधिवंत करो विचार रे॥ ९॥
जुगलीयां रा सुख सूं सुख अनंत गुणा रे, एक सवार्थ सिद्ध देवतां रा जांण रे।
पिण मूर्छा नें तिसणा त्यांरे अल्प छें रे, तो अल्प कर्म लागे छें आंण रे॥ १०॥
भवणपति नें व्यंतर जोतषी रे, वले नर मनष सगलाइ नर नार रे।
त्यां सगला रा सुख सूं अनंत गुणा रे, एक देवता रा सवार्थ सिद्ध मझार रे॥ ११॥
त्यां रे सुख छे उतकष्टा शब्दादिक तणां रे, पिण राग नें धेष अल्प छे ताय रे।
त्यां रे अल्प कर्म लागे छे तेह सूं रे, ते मिनष थइ नें मुक्ति में जाय रे॥१२॥
केइ दोनूंइ पुरष बरोबर भोगवे रे, काम नें भोग मनोग्य जांण रे।
पिण पाप न लागे त्यांने सारिषो रे, पाप परिणांमा लार पिछांण रे॥१३॥
कोइ काम नें भोग तीवर परिणांम सूं रे, भोगवे गाढी मूर्छा आंण रे।
तिण मूर्छा सूं पाप लागे छे चीकणा रे, ते पिण इंदरयां रो दोष म जांण रे॥१४॥
कोइ कांम नें भोग मनोग्य भोगवे रे, तिण उपर आणें अलपसो राग रे।
तो अलप कर्म लागे तिण राग थी रे, ते पिण इंदरयां रो नहीं विभाग रे॥१५॥
शब्दादिक पांचूं मिलिया पाडूवा रे, त्यां ऊपर करे जो गाढ़ो धेष रे।
तिण धेष सूं कर्म लागे छे चीकणा रे, ते इंदरयां रो कांई नहीं विशेष रे॥१६॥
शब्दादिक पांचूं मिलीया पाडुवा रे, तिण उपर करे अल्प सो धेष रे।
तो अल्प कर्म लागे तिण धेष थी रे, ते पिण इंदरयां रो नहीं विशेष रे॥१७॥
राग ने धेष करे छे जीवड़ो रे, जगन मझम उतकष्टो जांण रे।
जेहवो करे छे तेहवो पाप नीपजे रे, पिण इंदरयां सूं पाप न लागे आंण रे॥१८॥
धेष सूं तंदुल नामें माछलो रे, गयो छे सातमी नरक मझार रे।
ते एकंत सावद्य मन रा जोग थी रे, तिणरी इंदरी में दोष नही लिगार रे॥१९॥
नाटक पड़े छे विविध प्रकारनां रे, तिहां वाजंत्र बाज रह्या धुंकार रे।
वले गीत नें नाद घणा रलीयामणा रे, ते तो सावद्य जोग तणों व्यापार रे॥२०॥

ते नाटक देखे छे गायां भेंसीया रे, वले तेहीज नाटक देखे नर नार रे।
वले गीत वाजंत्र सघला सांभले रे, यां में कुण २ कर्मां रा बांधणहार रे॥२१॥
नाटक देखे छे गायां भेंसीयां रे, त्यानें तो समझ पडी नही काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नही वरतीयो रे, देख्या सूं पाप न लागे ताय रे॥२२॥
गीत सुणिया छे गायां भेंसीयां रे, त्याने तो समझ पडी नही काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नही वरतीयो रे, त्याने सुणीयां सू पाप न लागो ताय रे॥२३॥
त्यांरे सुणीयां देख्यांरी नही विचारणा रे, विचास्था विन मन सूं हरष न थाय रे।
कदा कोयक विचारी नें हरखत हुवे रे, जब तिणरे पिण पाप कर्म बंधाय रे॥२४॥
तेहीज नाटक देख्या नर नारीयां रे, ते मन सूं हूआ घणा गलतांन रे।
जब पाप लागो छे मनरा जोग थी रे, तिण पाप सूं होसी घणा हेरान रे॥२५॥
तेहीज गीत सुण्या नर नारीयां रे, वले सुणीया वाजंत्र ना घुकार रे।
जब केइ नर नारी मनसूं हरखीया रे, त्यां सघलां ने पाप लागो तिण वार रे॥२६॥
ते नाटक देख नें कोइ हरख्यो नही रे, नही हरख्यो सुणनें वाजंत्र गीत रे।
जब पाप न लागो तिणनें सर्वथा रे, इंदरयां नें दोष नही इण रीत रे॥२७॥
नाटक देख्यो छे गायां भेंसीयां रे, नाटक देख्यो नरनारी ताम रे।
यांमे पाप कर्म लागो छे जेहनें रे, जिणरा वरत्या खोटा परिणांम रे॥२८॥
पाप न लागे सुणियां देखीयां रे, तिण माहे संका मूल म आंण रे।
पाप लागे छे सावद्य जोग थी रे, मोह उदे भाव नीपन सूं जांण रे॥२९॥
च्यार कषाय ने तीन वेद थी रे, वले मिथ्यात इविरत सेली जांण रे।
माठी लेस्या ने माठा जोग सूं रे, या बोलां सूं पाप लागे छे आंण रे॥३०॥
वले कोइ मोह उदे सूं नीपना रे, त्यांसूं पिण लागे पाप एकंत रे।
पिण पाप न लागे षयउपसम भावथी रे, विचार करे देखो मतवंत रे॥३१॥
सात कर्म उदा सूं नीपनां रे, तिण सूं इ पाप न लागे आय रे।
तो षयउपसम कर्म हुआं गुण नीपना रे, त्यां गुणा सू पाप केम बंधाय रे॥३२॥
पाप बंधे कहे षयउपसम भाव थी रे, तिणरी सरधा मे पूरो घोर अंधार रे।
ते आप डूबे ओरां ने वोवता रे, तिण जीतब जन्म दियो बिगार रे॥३३॥
पांचूं इंदस्थां नें मेहले मोकली रे, ते शब्दादिक माहें ग्रिधी थाय रे।
ते निश्चेइ राग तणी परजाय छे रे, तिणसू सावद्य जोग वरते छे ताय रे॥३४॥
पांचूं इंदस्थां नें जो कोई वस करे रे, ते ग्रिधी शब्दादिक सूं नही थाय रे।
ते तो वीतराग तणी परजाय छें रे, जब निरवद जोग बरते छे ताय रे॥३५॥
इंदस्थां तो षयउपसम भाव छे निरमलो रे, तिण सू तो पाप न लागे आय रे।
पाप लागे छे उदे भाव थी रे, ते राग नें धेष तणी परजाय रे॥३६॥

पांचूं इंदस्यां ने राग धेष रो रे, सभाव जूओ २ छे तांम रे।
इंदस्यां रा सभाव मांहें अवगुण नही रे, कषाय तणा खोटा परिणाम रे ॥३७॥
काम ने भोग शब्दादिक तेह थी रे, समता नहीं पामें जीव लिगार रे।
असमता पिण नही पामें छे एहथी रे, यां सूं मूल न पामें जीव विकार रे ॥३८॥
जो राग नें धेष आणे त्यां ऊपरे रे, ते हिज विकार विषय कषाय रे।
ते कह्यो छे उत्तराधेन बत्तीस में रे, सो उपरली पहली गाथा मांय रे ॥३९॥
इंदस्यां नें राग धेष ओलखायवा रे, जोड कीधी आंतरदा गांम मझार रे।
संवत अठारे सेंताले समें रे, वैसाख सुदि बारस नें रविवार रे ॥४०॥

ढाल : १३

दुहा

केइ इंदरयां नें सावद्य कहे, ते जिणमारग ना अजांण।
ते आगम अर्थ अंवला करें, बूडे छे कर कर तांण॥ १ ॥
पांचूं इंदरी दमवी कही, निग्रह करवी कही छे ताय।
वले इंद्रयां नें संवरवी कही, तिणरो मूढ न जाणे न्याय॥ २ ॥
शब्द सुणें रूडा पाडुआ, राग धेष न करवो ताय।
निग्रह करवी कही छे इण विधे, दमणी संवरवी इण न्याय॥ ३ ॥
रूप दीठा रूडा पाडूआ, राग द्वेष न करवो ताय।
इण विध निग्रह करवी कही, दमवी संवरवी इण न्याय॥ ४ ॥
शेष इंदरी तीनां तणो, इण रीत सूं कहणो ताय।
निग्रह करणी दमणी ने सवरवी, सगलां रो छे ओहीज न्याय॥ ५ ॥
राग धेष उपजे जीव रे, शब्दादिक थी ताय।
ते इदरयां कर ओलखावीयो, ते भोला नें खबर न कांय॥ ६ ॥
ते आंगुण तो राग धेष में, पिण इंदरयां मे आगुण नाहि।
इंद्रयां हिंसादिक अठारा में नही, विचार देखो मन मांहि॥ ७ ॥
इंदरयां ने सावद्य निरवद कहे, ते परमारथ रा अजाण।
हिवे जथातथ निरणो कहूं, ते सुणजों चुतर सुजांण॥ ८ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा सुणो]

शब्द रूडा नें पाडुआ, ते सुणे सुरतइद्री ताह्यो रे।
तिण सूं हरष ने सोगरो आगार छे, ते इविरत कही जिण रायो रे।
कोइ इंदरयां नें सावद्य मत जाणजो॥ १ ॥
इविरत अत्यागभाव तेहसूं, पाप लागे निरंतर आणो रे।
शब्द सुणियां रो कारण को नही, इविरत संबधीयो पाप जाणो रे॥ को० २ ॥
शब्द रूडा ने पाडुआ, ते सुणियां हर्ष सोग थायो रे।
तिणरा सावद्य जोग वरतीया, मन वचन ने कायो रे॥ ३ ॥
तिण सावद्य जोग थी जीवरे, पाप कर्म आय लागे रे।
जोग वरते तठा ताई जांणज्यो, तिणरो नही निरंतर पाप आगे रे॥ ४ ॥

शब्द रूडा नें पाडुवा, ते सुणे सुरत इंद्री ताह्यो रे।
त्यां सूं हरख नें सोगरा त्याग छे, तिणनें विरत कही जिण रायो रे॥ ५ ॥
ते विरत त्याग भाव तेहसूं, रुके निरंतर पापो रे।
शबद सुणीयां रो कारण को नहीं, थिर परिणांम राख्या थापो रे॥ ६ ॥
शब्द रूडा नें पाडुवा, जो सुणनें वेराग आंणे ताह्यो रे।
तिण रा जोग निरवद वरतीया, मन वचन नें कायो रे॥ ७ ॥
तिण निरवद जोग थी जीव रे, कटे छे पाप कर्मो रे।
ते जोग वरते छे त्यां लगे, ते पिण नही निरंतर धर्मो रे॥ ८ ॥
शब्द री विरत नें निरवद जोग थी, हुवे छे संवर निरजरा धर्मो रे।
शब्द री इविरत नें माठा जोग थी, लागे छे पाप कर्मो रे॥ ९ ॥
विरत ने निरवद जोग वरतीया, ए दोनूं इंदरयां नांही रे।
इविरत नें सावद्य जोग वरतीया, ते पिण इंदरया नही कांइ रे॥ १० ॥
शेष च्यारूं इंदरयां भणी, सुरत इंद्री जेम पिछांणो रे।
विरत इविरत सुभ उसुभ जोग थी, सघली इंदरयां नें न्यारी जांणो रे॥ ११ ॥
शब्दादिक रूडा नें पाडुआ तणा, इविरत नें उसुभ जोग भूंडा रे।
पिण इंदरयां नें भूंडी मत जांणजों, छोड मिथ्यात री रूडा रे॥ १२ ॥
पांचूं इंदरयां नें संवर कही, वले मन वचन ने काया रे।
भंड उवगरण नें सूची कुसग, ए दसोंई संवर वताया रे॥ १३ ॥
एहीज दसोंई असंवर कह्या, त्यां नें रूडी रीत पिछांणो रे।
एतो दसोई संवर अंसवर नही, त्यांरो न्याय परमारथ जांणो रे॥ १४ ॥
शब्दादिक पांचूं विषें रा त्याग छे, मन वचन काया इम जांणो रे।
माठा वरतावण रा त्याग छे, संवर एह पिछांणो रे॥। १५ ॥
भंड उपगरण री ममता रो त्याग छे, वले अजयणा करवारो त्यागो रे।
सूची कुसग अजयणा रो त्याग छे, ए दसोंई संवर त्याग वेरागो रे॥ १६ ॥
शब्दादिक आदि सूची कुसग नों, नही त्याग्या दसोंई बोल तामो रे।
वले जोग बरतावे पाडुआ, ते असंवर खोटा परिणामो रे॥ १७ ॥
संवर ने आस्रव दोनूं तणो, ते इंद्रयां सूं कांइ लेखो रे।
संवर भांगा इंद्रयां भागे नहीं, इविरत पिण इमहीज देखो रे॥ १८ ॥
प्रथवी पांणी तेउ बाउ काय ने, वनसपती नें बेंइंद्री कायो रे।
तेइंद्री चोरिंद्री ने पचिंद्री, दसमों अजीव काय बतायो रे॥ १९ ॥
प्रथवी कायादिक दसां भणी, संजम कह्यो ठाणाअंग मांह्यो रे।
यां दसांई नें असंजम कह्यो, तिणरो मूढ न जाणे न्यायो रे॥ २० ॥

प्रथवी कायादि दसोइ संजम नहीं, असंजम पिण नही छे दसोई रे।
यांनें हणवा रो त्याग संजम कह्यो, विना त्याग असंजम कह्यो सोई रे॥ २१ ॥
संजम असंजम ने इंद्रयां कहे, ते पूरा मूढ अयांणो रे।
संजम असंजम ने इंद्रयां भणी, निश्चेइ जूआ २ जांणो रे॥ २२ ॥
मोह उदे ने षयउपसम हूआं, संजम ने असजम जाणो रे।
दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम्यां, पांचूं इंद्रयां प्रगटी पिछांणो रे॥ २३ ॥
संजम ने तो संवर जांणजो, असंजम नें असंवर जांणो रे।
त्यांनें इंदरयां कही किण कारणे, तिणरी करो हिया में पिछांणो रे॥ २४ ॥
सुरतइंद्री ने मेले मोकली, तिणने सुरतइंद्री मत जांणो रे।
मोकली मेहले ते भाव और छे, तिण ने रूडी रीत पिछांणो रे॥ २५ ॥
सुरतइंद्री नों सभाव सुणवा तणो, मोकली मेले ते राग धेषो रे।
ए सांप्रत दोनूंइ जूजूआ, यां दोयां ने एक म लेखो रे॥ २६ ॥
सुरतइंद्री सुणे ते जीव छे, ते तो षयउपसम भाव छे चोखो रे।
मोकली मेले ते पिण जीव छे, ते तो उदे भाव सदोखो रे॥ २७ ॥
उदे ने षयउपसम भाव दोय छे, त्यां ने एक कोइ मत जांणो रे।
षयउपसम सूं कर्म लागे नहीं, उदे भाव सूं कर्म लागे आंणो रे॥ २८ ॥
चषू इंद्री नें मेहले मोकली, तिणने चषू इंद्री मत जांणो रे।
सुरतइंद्री जिम पांचूं इंदरयां भणी, इणहीज रीत पिछाणो रे॥ २९ ॥
पांचूं इंदरयां ने सत्रू कही, उत्तराधेन तेवीसमां मझारो रे।
ते राग धेष ओलखायो इंदरयां करी, तिणरो पिंडत जांणे विचारो रे॥ ३० ॥
चोर कही पांचूं इंदरयां भणी, उत्तराधेन वत्तीस मां मझारो रे।
ते विकार उलखायो इंदरयां करी, तिणरो बुधवंत जाणे विचारो रे॥ ३१ ॥
एक २ इंद्री रा विकार सूं, मरण पाम्यां छे अकालो रे।
ग्रिधी थका राग पीडीया, त्यांरी घात हुइ ततकालो रे॥ ३२ ॥
रूप रे विषे ग्रिधी घणो, ते पामे विणास अकालो रे।
जिम रागे पीड्यो पतंगीयो, रूप लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३३ ॥
ग्रिधी घणो मनोग्य शब्द सूं, ते पामें विणास अकालो रे।
जिम रागे पीड्यो मिरगलो, शब्द लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३४ ॥
मनोग्य गंध सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे।
रागे पीड्यो सर्प गंध ओषधी, गंध लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३५ ॥
मनोग्य रस सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे।
रागे पीड्यो मछमांस नें ग्रहे, रस लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३६ ॥

मनोग्य फर्श सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे।
रागे पीड्यो महिष जल पडे, फरस लंपटी मरे ततकालो रे॥ ३७ ॥
मनोग्य भाव सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विनास अकालो रे।
रागे पीड्यो हस्ती कामभोग सूं, लम्पटपणा सूं मरे ततकालो रे॥ ३८ ॥
एक २ इद्री नां विकार थी, पामी अकाले घातो रे।
आतो इण भव केरी वानगी, कहे दिखाई छे बातो रे॥ ३९ ॥
एक २ इंद्री ना विकार थी, दुख पामें छे एमो रे।
तो पांचू इंद्री ना विकार थी, दुखां नों कहिवो केमो रे॥ ४० ॥
इंद्रयां रा विकार राग धेष छे, ते इंदयां रा गुण थी न्यारा रे।
इंदरयां तो शब्दादिक सुणे देख ले, शब्दादिक राग सूं लागे प्यारा रे॥ ४१ ॥
शब्दादिक जथातथ जाण्यां देषीयां, पाप न लागे लिगारो रे।
पाप लागे छे राग धेष आणियां, राग धेष छे विषय विकारो रे॥ ४२ ॥
राग ने धेष दोनूं षय कियां, तो वितरागी गुण थावे रे।
इंदरया तो कुसले रहे, ए तो केवल दर्शन मे समावे रे॥ ४३ ॥
तिण सूं इंद्रयां तो सावद्य नही, सावद्य छे राग धेषो रे।
पाप कर्म लागे तेहथी, ते तो इंद्रयां रो नही लेखो रे॥ ४४ ॥
करलो वचन कह्यो श्रवणे सुण्यो, मन सू जांण्यो जब जाग्यो धेषो रे।
तिणरो शरीर सघलोइ प्रजल्यो, आख्यां हुई लाल वशेषो रे॥ ४५ ॥
विषेकारी वचन श्रवणे सुण्यो, मनसूं जांण्यो जब उपनो रागो रे।
सगलो सरीर विषे सूं फलफूलीयो, विकार सहित जोवा लागो रे॥ ४६ ॥
राग द्वेष छे सर्व प्रदेस में, तिणसूं सर्व प्रदेसां पाप लागे रे।
वले सावद्य जोग कषाय थी, पाप लागे नें निजगुण भागे रे॥ ४७ ॥
वले कहि २ नें कितरो कहू, इंदरयां नें सावद्य मत जांणो रे।
इंदरयां सूं पाप लागे नही, त्यांनें रूडी रीत पिछांणो रे॥ ४८ ॥
जोड कीधी इंदरयां नें ओलखायवा, इंद्रगढ सहर मझारो रे।
संवत अठारे सेताले समें, जेठ विद चवदस सोमवारो रे॥ ४९ ॥

ढाल : १४

दुहा

केइ इंदरयां नें मूढ सावद्य कहे, कूडा २ कुहेत लगाय।
तिण श्री जिण वचन उथापने, खांच लीधी गलारे माय॥ १॥
कहे इंद्रयां निग्रह करणी कही, दमणी जीतणी कही ठांम २।
वस करणी नें संवरणी कही, सावद्य छे तो कही छे आंम॥ २॥
इण विध करे छे परूपणा, तिणरो मूल न जाणे मरम।
तिण रहिस न जांण्यो सिद्धांत रो, भूला अज्ञानी भरम॥ ३॥
पांचूं इंदरयां नें सावद्य थापवा, करे अनेक उपाय।
वले खोटी २ जोडां करे, भोला लोकां ने दीया भरमाय॥ ४॥
इंदरयां ने निग्रह करणी कही, तिणरो न्याय न जाणे मूढ।
तिण सूं उंधी करे छे परूपणा, झूठी झाल रह्या छे रूढ॥ ५॥
शब्दादिक पाचू उपरे, राग धेष न करणा हेत पीत।
इम निग्रह करणी दमणी जितणी, वस करणी संवरणी इण रीत॥ ६॥
वले वशेषे तेहनो, विवरो कहू छूं तांम।
चित्त लगाय नें सांभलो, ज्यूं सीझे आतम काम॥ ७॥

ढाल

(आ अणुकंपा जिन आग्या मे)

शबदरी चाहि करनें शब्द सुणे तें, शब्द सुणवा री चाहि विषे रस जांणों।
तिण विषे सेवण रा सुद्ध साधु नें, जीवे ज्यां लग छे पचखाणो।
इंद्रयां रो सभाव सुणो भव जीवां॥ १॥
परमारथका जे शब्द सुण्या नही दोष, वले सहिजा सुणे तोही दोष न लागे।
गमता शबदरी चाहि अभिलाष करे तो, जब त्याग वैंराग साधु रो भागे॥ २॥
शब्दरी अभिलाषा ने शब्द रो सुणवो, एतो दोनूं सभाव जूआ २ जांणो।
अभिलाषा तो मोह उदे राग भाव छे, इद्रया ने षयउपसम भाव पिछाणो॥ ३॥
मोह भाव अभिलाषा तिणने, मेट दीया वीतरागी थाय।
षयउपसम इंदरी मेट हुवे तो, जाय पडे अध कूप रे मांय॥ ४॥
सुरतइद्री नें निग्रह इण विध करणी, मन गमता शबद सूं मगन न थाय।
अमनोगम उपरे धेष न आणे, तिण सुरतइद्री निग्रह कीधी छे ताय॥ ५॥
सुरतइंद्री ने निग्रह कही जिण रीते, दमणी ने जीतणी इमहीज जाणो।
इमहिज वस करणी ने सवर लेणी, या पांचां री परमारथ एक पिछांणो॥ ६॥

निग्रह निग्रह कर रह्या मूरख, पिण निग्रह तणो निरणो नहीं जाणे।
दंसण मोह उदे संवली नही सूझे, पीपल बांधी मूरख ज्यूं ताणे॥ ७ ॥
तिणसूं ते तो कहे निग्रह इण विध करणी, जाबक शबदां नें सुणवा नांहीं।
जब उणने देणो कानां आडो दाटो, छेकी पिण भूल न राखणी कांई॥ ८ ॥
शब्दरी अभिलाषा चाहि करे ते, मन वचन कायारा छे माठा जोग।
शब्द सुणे सुरतइंद्री परोक्षपणे ते, अचषू दर्शण छे मणागार उपयोग॥ ९ ॥
शब्द सुणे सुरतइंद्री षयउपसम भावे, तिण भाव सूं पाप न लागे लिगार।
पाप लागे अभिलाषा चाहि कीयां थी, ते तो उदे भाव सावद्य जोग व्यापार॥ १० ॥
तिण उदे भाव नें निग्रह दमणो कह्यो छे, जीतणो वस करणो ने संवरणो।
निग्रहादिक जूआ २ पांच कह्या छे, पिण पांचां रो परमारथ एक करणो॥ ११ ॥
मन वचन काया रा जोग छे सावद्य, त्यां जोगां ने मूढ कहे सुरतइंद्री।
जोग ने सुरतइद्री एक सरधे छे, तिण समकित खोई छे तिण दिन री॥ १२ ॥
रूपरी चाहि करने रूप देखे तो, रूप देखन री चाहि विषे रस जाणो।
तिण विषे सेवण रा सुघ साधु रे, जीवे ज्या लग छे पचखांणो॥१३॥
सुरतइद्री तणी बारे गाथा कही तिम, पांचू इंद्रयां तणी इमहिज विध जाणो।
ए साठ गाथा पाचूं इद्रयां तणी छे, त्यारी जुदी २ गाथा कहि ने पिछांणो॥१४॥
ए पाचू इंदरयां रो निग्रह कह्यो जिण, त्यांरो न्याय निरणो न जाणे मिथ्याती।
ते मारग छोड नें उभ्भड पडिया, त्यारी भोला जीव करे पखपाती॥१५॥
तिण मूढ मिथ्याती ने पूछा कीजे, पांचूं भावां में निग्रह किसो भाव करणो।
वले किण भाव नें दमणो जीतणो छे, वले किण भाव ने वस करणो संवरणो॥१६॥
जो उ षयउपसम भाव नें दमणो कहें तो, उपसम खायक भाव नें दमणो वशेख।
उपसम षायक षयउपसम तीजो, यां तीनां रो निजगुण कह्यो जिण एक॥१७॥
जो उ उदे भाव नें दमणो कहे तो, तिणरो गाढो वचन ग्रहे ने बंध कीजे।
वले षयउपसम भाव नें दमणो कहे तो, तिण झूठाबोला ने झूठो घालीजे॥१८॥
उदे भाव नीपना रा तेतीस बोल, इत्यादिक उदे भाव रा बोल अनेक।
तिणमें मोह उदे भाव दमणो कह्यो जिण, और भाव नें दमणो कह्यो नहीं एक॥१९॥
सात कर्म उदे सूं नीपना भाव, त्यां ने पिण दमणा कह्या जिण नांही।
तो षयउपसम भाव दमणो किम कहसी, ते न्याय विचार देखो घट मांही॥२०॥
ववहार सचा भाषा कही जिणेसर, तिण भाषा सूं गूथ्या छे सुतर में बोल।
तिणरी विकलां नें समझ पडे नही पूरी, ते तो समदिष्टी देवे विवरा सुध खोल॥२१॥
घणा भेद छे ववहार सचा भाषा रा, ते तो पूरा कहणी न आंवे तांम।
पिण थोडा सा परगट करूं छूं त्यांनें, ते सांभलजो राखे चित्त ठांम॥२२॥

सचित्त अचित्त ने मिश्र परिग्रहो, तिणनें अनर्थ रो मूल कह्यो भगवान।
ज्यूं इदरया ने पिण सत्रू कही छे, त्यांरो न्याय न जांणे ते विकल समान ॥२३॥
सचित्त अचित्त ने मिश्र परिग्रह, ते तो निश्चेइ अनर्थ रो मूल नांही।
ज्यूं पाचू इंदरया पिण सत्रू नही छे, ते न्याय विचारे देखो घट माही ॥२४॥
सचित्त अचित्त ने मिश्र परिग्रहो, तिणरी मूर्छा सावद्य जोग अनरथ जाणो।
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग आणे, तिण राग ने सत्रू लीजो पिछाणो ॥२५॥
समचे शरीर ने नावा कही जिण, उत्तराधेन तेवीसमां धेन माय।
ज्यूं इंद्रया ने शत्रू तिहां इज कही छे, ते पिण विकलां ने खबर न काय ॥२६॥
ज्यूं शरीर तो नावा निश्चें नही छे, ज्यूं इद्रया पिण सत्रू निश्चेइ नाही।
त्यारो परमारथ समदिष्टी जाणे, पिण भोला ने खबर पडे नही कांई ॥२७॥
शरीर थी सावद्य सेवण आगार जे, तिण आगार ने फूटी नावा जांणो।
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग आणे तो, तिण राग ने शत्रु लीजो पिछांणो ॥२८॥
शरीर थी सावद्य रा त्याग छे त्रिविधे, ते त्याग छे नावा गुण रत्नां री खाणो।
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग न आणे, तिण त्याग ने मित्री कह्यो जिण जाणो ॥२९॥
प्रथवीकाय ने संजम कह्यो जिण, ज्यूं इदरयां ने सत्रू कही भगवत।
ते न्याय न जाणे मूंढ मिथ्याती, तिणरो परमारथ जाणे मतवत ॥३०॥
प्रथवीकाय तो सजम निश्चे नही छे, सजम छे प्रथवी हणवा रो त्याग।
ज्यूं इंदरया पिण सत्रू निश्चे नही छे, सत्रू सब्दादिक सू कीयां राग ॥३१॥
प्रथवीकाय ने असजम कह्यो जिण, ज्यूं इदरया ने सत्रू कही भगवंत।
ते पिण न्याय न जाणे मूढ मिथ्याती, तिणरो परमारथ सुणज्यो मतवंत ॥३२॥
प्रथवीकाय असंजम नहीं निश्चे, असजम तो प्रथवी हणवारो अत्याग।
ज्यूं इंदरया पिण सत्रू निश्चे नहीं छे, सत्रू तो शब्दादिक सू कीया राग ॥३३॥
सतरे भेदे संजम ने असजम, प्रथवीकाय ज्यूं सतरेइ जांण।
त्यांरो त्याग सजम नें अत्याग असंजम, त्यारी जूदी २ कर लीजो पिछाण ॥३४॥
काम ने भोग कह्या छे अनर्थरा मूल, त्या ने कह्या छे महादुख ने दुख तणी षान।
त्यां ने किंपाक फल री ओपमा दीधी, ज्यूं इंदरया ने सत्रू कही भगवान ॥३५॥
काम ने भोग कह्या छे अनरथ रा मूल, ते तो राग ने धेष आसरी जाणो।
ज्यूं इंदरया ने पिण सत्रू कही छे, तिण ने लीजो रुडी रीत पिछांणो ॥३६॥
काम ने भोग अनर्थ रा मूल नाही, त्या सू ग्रिध पणो अनर्थ रो मूल जाणो।
ज्यूं इदरयां पिण सत्रू छे नाही, सत्रू तो शब्दादिक सूं राग पिछाणो ॥३७॥
काम ने भोग थी जीव समता न पामे, काम ने भोग थी नही पामें विकार।
उत्तराधेन बत्तीसमें धेनें, सो ऊपरली पेंहली गाथा मभार ॥३८॥

काम नें भोग ऊपर राग नें धेष, तेहीज राग धेष छे विषय विकार।
ते मोह कर्म उदे नीपनां भाव, पिण इंदरयां सत्रू नहीं छे लिगार ॥३९॥
सत्त ने दत्त दोनूंइ संवर कह्या छे, प्रश्न व्याकरण सूत्र मकार।
पिण सत्त ने दत्त दोनू नही संवर, सत्त ने दत्त दोनूं छे जोग व्यापार ॥४०॥

ढाल : १५

दुहा

दरबे जीव छे सासतो, भावे जीव असासतो छे ताहि।
भगोती रे सतबंध सातमें, कह्यो बीजा उदेसा माहि॥ १॥
दरब तो तीन काल में सासतो, असंख्यात प्रदेसी जांण।
उपजे नें विणसे ते भाव जीव छे, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण॥ २॥
दरब नें भाव दोनूं छे जूजूआ, ते जीव लेखे तो एक हीज जाण।
उदयादिक पांच भावां करी, भाव जीव नें लीजो पिछांण॥ ३॥
छ दरब जिणेसर भाषीया, त्यांनें सासता कह्या तीन काल।
ते तो गिणती रा छहुं दरबां ने गिण्यां, अठे भाव रो न कह्यो निकाल॥ ४॥
छ दरबां नें छ दरब कह्या, त्यांरीं गिणी नही परजाय।
परजाय तो एकीका दरब री, अनंती अनंती कही जिणराय॥ ५॥
जीव दरब री परजाय नें, भावे जीव कह्यो जिणराय।
ते परजाय तो नीपनी हुवे, दरब घटे बधें नहीं ताय॥ ६॥
दरब नें भाव जीव रो, विवरो कहूं छू ताय।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ७॥

ढाल

[आ अणुकंपा जिण आग्या मे]

दरब नें भाव जीव रो निरणों कीजो, वीर रा वचन आगम माहे जोवो।
आगम नां उंधा २ अर्थ करेनें, मानव नों भव काय विगोवो।
दरब नें भाव जीवरो निरणो कीजो* ॥ १॥
नव पदारथ में धुर सूं जीव कह्यो जिण, तिणमें द्रव नें भाव दोनूं ई आया।
कांई दरब गुण परजाय बारे न राखी, समचे जीव कह्यो तिण में सर्व समाया॥ २॥
आश्रव संवर निरजरा नें मोष, ए च्यांरू पदारथ छे भाव जीवो।
यांनें समदिष्टी ओलखिया अभिंतर, त्यांरे अभिंतर ग्यांन खुल्यो घट दीवो॥ ३॥
आश्रव संवर निरजरा नें मोष, याने दरबे जीव कह्यी छे अग्यानी।
तिण भाव जीव नें द्रव जीव सरध्या, तिण नें समदिष्टी किण विध जाणे ग्यांनी॥ ४॥
अधवसाय परिणांम ध्यान नें लेस्या, त्यांरा भेद अनेक कह्या भगवंत।
ए जीवरा भाव असासता निश्चें, त्यांनें भावे जीव जांणो मतवंत॥ ५॥

---

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले जोग उपीयोग ने दिष्ट तीनोंइ, कषाय संज्ञादिक बोल अनंत।
ए पिण जीवरा भाव असासता निश्चे, त्यांनेंई भावे जीव कह्या भगवंत॥ ६ ॥
नारकी तिरजंच मिनख नें देवा, वले चोवीस डंडक नें छकाय।
इत्यादिक अनेक असासता त्यांनें, भावे जीव कह्या जिण राय॥ ७ ॥
द्रव आत्मा नें दरवे जीव कही जे, सेष जीवरी परजाय आतमा सात।
तिण परजाय नें दरवे जीव सरधे, तिणरे निश्चेइ आय चूको छे मिथ्यात॥ ८ ॥
भाव जीव नें दरव जीव सरधे, ते अन्हाखी थको करे भूठी भखाल।
ते आगम उथापनें उंधी परूपे, अनंता अरिहंता पे सिर दीधो आल॥ ९ ॥
दरवे तो जीव नें एक कह्यो छे, तिण एक रा दोय कदे नहीं होय।
तिण दरव रा लखणां नें भाव जीव कहीजे, तिण भाव री संख्या नही छे कोय॥ १० ॥
सुखदेव सिन्यासी पृछा कीधी, तिणरो जाव दीयो थावचे अणगार।
दरव थकी तो हूं एक हो सुखदेव, ते हू सासतो तीनोंइ काल मभार॥ ११ ॥
नाणदंसणठ्या ए दोय पिण हूं छूं, प्रदेसठ्याए अपय पिण हूं छूं।
प्रजोगठ्याए अनेक पिण हूं छूं, ए तोने जाव सूत्र सूं देऊं छूं॥ १२ ॥
वले सोमल नें कह्यो वीर जिणेसर, दरव थकी हूं सोमल एक।
अठारमां सतक रे दसमें उदेशें, भगोती सूतर जोय छोड दो टेक॥ १३ ॥
वले पारसनाथजी कह्यो सोमल नें, दरव थकी हूं सोमल एक।
निरावलिका सूतर जोय निरणो कीजो, परभव साहमों जोय नें छोड़ दो टेक॥ १४ ॥
इत्यादिक सूतर में ठांम ठांम, दरव थकी जीव कह्यो छें एक।
तिण दरव रा भाव नीपनां त्यानें, भाव थकी जीव नें कहीजें अनेक॥ १५ ॥
दरव थकी जीव तो सासतो कहीजे, भाव थकी असासतो केहणो।
भगोती रे सातमें सतक कह्यो छे, दूजा उदेसा मांहें जोय लेणो॥ १६ ॥
जीव दरवे सासतो भावे असासतो, जमाली नें वीर कह्यो छें ताहि।
भगोती सूतर रा नवमां सतक में, तेतीसमां उदेसा रे माहि॥ १७ ॥
नरेइयो नरेइयो द्रव थी तूला, प्रदेस थकी पिण तूला जाणो।
अवग्राहणा नें थित आश्री तो, चउठाणवडीयो लेजो पिछांणो॥ १८ ॥
नव उपीयोग आश्री छठाणवडीयो, तिणरी धारणा करनें रीत सूं कहीजे।
चउठाण ने छठाणवडीयो, त्यांने भावे जीव पिछाण लीजे॥ १९ ॥
दरव नें प्रदेस वधे घटे नांही, वधे घटे तिण नें भाव जीव कहीजे।
नारकी तिम डंडक चोवीसोंइ कहणा, जिण जिण में बोल पावे ते लीजे॥ २० ॥
ए पन्नवणा रा पांचमां पद मांहें, तिण ठामें तो छे घणो विस्तारो।
इम सांभल नें उत्तम नरनारी, दरव भाव सरध लो न्यारो न्यारो॥ २१ ॥

इत्यादिक सूतर में ठांम ठाम, दरबे जीव नें सासतो कह्यो वीर।
भावे जीव असासतो जीव कह्यो छे, दरब ने भाव जांण्या छे सरधा सधीर ॥ २२ ॥
भावे जीव असासतो तिण ने दरब ने भावे कहे छे दोनूं।
एहवी उंधी परूपणा करने अग्यानी, उसभ कर्म उदे साची सरधा ने खोइ ॥ २३ ॥
दरबे जीव तो नित सासतो छे, तिण नें पिण कहे दरब ने भाव दोनूंइ।
यांने ओलखीयां विण उंधी परूपे, ताण कर कर ने यूंही आतम विगोइ ॥ २४ ॥
दरब रा लषणा ने दरब न कहीजे, लषणा रा दरबा ने लखण न कहीजे।
दरब ने लखण न्यारा न्यारा कहीजे, जीव रे लेखे दोया ने एक गिणीजे ॥ २५ ॥
जिण दरब ने भाव ओलषीया नाही, ते खाय रह्या छे अग्यानी झखोला।
त्याने प्रश्न पूछ्यां तो डिगता बोले, त्यारी परतीत करनें बूढे कोइ भोला ॥ २६ ॥
दरब री ठोर तो भाव बतावे, भाव री ठोर दरब ने बतावे।
तिणरी अभितर आंख हिया री फूटी, तिणसूं आमो सांहमो झखोला खावे ॥ २७ ॥
दरब ने भाव जीव ओलषीया नाही, तिणने समझावण पूछा कीजे।
दरब जीव ने एक के अनेक कहीजे, वले सासतो के असासतो कहीजे ॥ २८ ॥
जो उ दरब जीवने सासतो कहदे, वले दरब जीव ने कह दे एक।
तिणरो वचन गाढो कर चरचा कीजे, भाव जीव असासतो कहीजे अनेक ॥ २९ ॥
पछे दरब ने भाव री चरचा करने, समझतो जाणे तो समझाय लीजे।
जो समझायो समझे नही मूरख, तिणसूं विषवाद कदेय न कीजे ॥ ३० ॥
सासतो असासतो दोनूं न जाणे, वले दरब ने भावरा नही निवेरा।
अजांण थको उंधी ताण करे छे, तिण नरक सूं सनमुख दीधा डेरा ॥ ३१ ॥
दरब ने भाव जीव ओलखावण काजे, जोड कीधी मावोपुर सहर मझारो।
समत अठारे ने वरस सेताले, चेत विद बीज ने सोमवारो ॥ ३२ ॥

●

रत्न : ५

परजायवादी री चौपई

ढाल १

दुहा

दसासतखंध सूयगडाअंग में, अकिरीया वादी रो विसतार।
नास्तक मत छे तेहनो, ओं जाणे मर्म ससार॥ १॥
तीर्थंकर चक्रवरतादिक, वले साधु सती अणगार।
त्यांने जीव न सरधे सरवथा, ते भूलो भर्म गिवार॥ २॥
तिण नास्तक वादी रा मत तणो, परजायवादी पिरवार।
तिण नास्तक पाडी जीवरी, तिणरा घट मांहे घोर अन्धार॥ ३॥
उ चेतन गुण परजाय नें, नही सरधे जीव अजीव।
एहवी उंधी करे छे परूपणा, कर २ खांच अतीव॥ ४॥
वले असासता दरव ने इम कहे, जीव अजीव दोनूंइ कहे नांहि।
जीव अजीव विनां तीजी वस्तु छे, ते तो नही गिणती रे मांहि॥ ५॥
नियमा निश्चे जीव तेहने, जीव गिणे नही ताय।
तिणरी सरधा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ६॥

ढाल

[आ अणुकंपा जिन आग्या में]

तीर्थंकर गणधर धर्म नां नायक, आचार्य उवझाय मोटां अणगारो।
साधु साधवीयादिक च्यारूंई तीर्थ, याने जीव न सरधे ते मूंढ गिवारो।
आ सरधा छे परजायवादी री* ॥ १॥
देव गुर धर्म तीनूंइ रतन अमोलक, त्यांरो सरणो लीयां उतरे भवपारो।
याने जीव न सरधे ते मूढ मिथ्याती, तिण आंख मीचीने कीयो अंधारो॥ आ० २॥
गुर नही जीव चेलो नही जीव, विनो अविनो करे ते पिण जीव नांही।
मांहोमां करें सभोग असणादिक नो, तिण मे पिण जीव रो अंस न कांई॥ ३॥
आठोंइ करमां सू मूकावे ते मोख, त्यांने तो कहीजें सिध भगवांन।
त्यांने पिण जीव न सरधें अग्यानी, त्यां विकला मे नही छे जावक विगनान॥ ४॥
सूतर वांचे ते जीव नही छे, धर्म कथा कहे ते पिण नही जीव।
वखांण सुणे ते पिण जीव नांही, त्यां दीधी मिथ्यात री उंडी नीव॥ ५॥
तिरण तारण जीवने नही सरधे, जीव नें जीव नही उतारें पारो।
जीव ने जीव डवोवे नांही, वले जीव ने जीव न करे खुवारो॥ ६॥

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चक्रवत वासूदेव मंडलीक राजा, ए मिनख हुआ करणी कर मोटी।
भवी दरवादिक पांचूंइ देवां नें, जीव न कहें तिणरी सरधा खोटी ॥ ७ ॥

वाप नहीं जीव वेटो नही जीव, वले जीव नहीं सगलो परिवारो।
जीव जनमें नहीं जीव मरें पिण नांहीं, जीव नहीं भोगवें विषें विकारो ॥ ८ ॥

परणीजे परणावे ते जीव नही छें, जांनी मांडी आया ते पिण नही जीव।
असणादिक नीपजावें ते जीव नही छें, जीमें जीमावें ते नही जीव अजीव ॥ ९ ॥

अप्रजापतो होय प्रजापतो हुवों, पछे वाल जुवांन ने होय गयों वूढो।
नेरइय तिरजंच मिनख ने देवा, यां नें जीव न सरधें ते जावक मूढो ॥ १० ॥

हालें चालें तिणनें जीव न कहीजे, वले जीव न करें छें विणज व्यापारो।
खेती करसणादिक करें ते जीव नही छें, जीव तो नहीं करें छें भगडा नें राडो ॥ ११ ॥

एकिंद्री आदि दे पंचिंद्री नें, वले प्रथवी आदि देइ छकाय।
वले चउदें भेद छें जीवरा त्यांनें, यां सगलां नें जीव कहें नही ताय ॥ १२ ॥

हिंसक भूठावोलो नही जीव, वले चोर कुसीलीयों नें धनपातर।
वले तीनसों तेसठ पाषंडीयां नें, यां सगलां नें जीव न सरधें कुपातर ॥ १३ ॥

भोगी नही जीव जोगी नही जीव, वेरी नें मित्री ए पिण जीव नांही।
मायावीया मिथ्याती ने जीव न जाणें, इण खोटी सरधा मांहें कला न कांई ॥ १४ ॥

आरत रुद्र धर्म नें सुकल, यां च्यारूं ध्यांना ने जीव न जांणें।
छ भाव लेस्या नें पिण जीव न जाणें, अग्यांनी थका मूंढ उंधी तांणें ॥ १५ ॥

वारें उपीयोग नें चवदें गुण ठांणा, त्यांनें पिण जीव न जाणें अग्यांनी।
जीव न जाणें चोवीस डंडक ने, तिणनें बुधवंत कोइ न जाणें ग्यांनी ॥ १६ ॥

छव नियंठा नें पाचूंइ चारित, उठाण कमादिक ए पिण पांच।
वले आतमा सात ने सावद्य निरवद, यांनें जीव न मानें करें कूडी खांच ॥ १७ ॥

इत्यादिक जीव रा भेद अनेक, त्यांनें निश्चेई जीव कह्या जिणराय।
त्यांनें जीव अजीव न कहें दोनूंइ, तीजी रास कहें छें ताय ॥ १८ ॥

असासता सगलाइ पाछें कह्या ते, त्यांनें तो जीव कहसी किण लेखें।
यांने जीव कहें तो भूठ वोले छे, आपरी सरधा सांह्या क्यूं नही देखे ॥ १९ ॥

जो चरचा रो कांम पड्यां जीव कहें तो, असासता दरव री पूछा कीजें।
असासत दरव ने जीव न सरधें, यांने जीव कहें तो भूठो घालीजें ॥ २० ॥

जो असासता दरव नें जीव कहे तो, आपरी सरधा रो आप अजांणों।
सूनें चित्त हीयाफूट विकल ज्यूं, आपरी सरधां री पिण नही पिछांणों ॥ २१ ॥

हिवें परजायवादी नें पूछा कीजे, संसार मांहें दुख किण विध पावें।
कुण उपजावे नें कुण खपावे, करमां रो करता कुण कहावें।
ए प्रश्न परजायवादी नें पूछीजे* ॥ २२ ॥

*इस आंकड़ी को प्रत्येक गाथा के अन्त में समझें।

जो उ करमां रो करता जीव ने थापें, तो उणरी सरधा जावक उठ जावे।
करता अनेक असासता दीसें, असासता नें जीव यूंही बतावें॥ २३॥
जो उ करम रो करता नें जीव नही कहे तो, घणां लोक न मानें तिणरी वातो।
जो सरधा हुवे तो पिण छानें राखें, एहवा कपटी रो भूठ ने गूढ मिथ्यातो॥ २४॥
उणरी सरधा रा अहलांण एहवा दीसें छे, करमा रा करता नें गेबी जांणो।
करमा रो करता तो असासतो छे, गेबी जांणजो इण अहलाणो॥ २५॥
धर्म ने करम रो करता जीव छे, तिणने जीव अजीव न कहे दोनूइ।
जीव अजीव विनां तीजी वस्तु न काई, तीजी कहे ते तेरासी होइ॥ २६॥
जीव अजीव विना वस्तु थापे, तिणने नियमाइ निश्चे तेरासीयो जाणो।
तिणने कोइ तेरासीयो नही जाणें, ते पिण मूढमती छे अयाणो॥ २७॥
करमां रो करता सासतो नांही, तो उ जीव ने करता कहसी किण लेखे।
एहवा प्रश्न पूछ्या रा जाव न आवे, जब भूठ बोलण री सेरी देखे॥ २८॥
के तो भूठ जाणी ने बोले छे, के आपरी भाषा रो आप अजाणो।
ए वात रो निश्चो तो केवली जांणे, पिण बुधवंत हूसी ते करसी पिछाणो॥ २९॥
श्री वीर कह्यों आचांरग माहें, करमां रो करता छे निश्चे जीवो।
चेतन गुण परजाय सहीत ओलखसी, त्यांरे अभितर ग्यांन खुलसी घट दीवो।
आ सरधा श्री जिणवर भाषी*॥ ३०॥
हिंसादिक भूठ चोरी जीव करे छे, तिण किरतव सू लागें जीवरे पापो।
ते छेदन भेदन जनम मरण रा, चिहू गति मे दुःख भुगते आपो॥ ३१॥
परजायवादी री सरधा परगट कीधा, केइ क्रोध करे केइ मन माहे लाजे।
जिण आगम लोप विरुध परूपें, ते सीह तणी परे कदेय न गाजे॥ ३२॥
इण खोटी सरधा रो उघाड कीयां सू, केइ बुधवंत सुण २ रहसी दूरा।
केइ विपरीत सरधा आदर ने छोडे, त्यांने पिण वीर वखाण्या सूरा॥ ३३॥
केइ मूढ मिथ्याती इसडी परूपें, जीव ने जीव री परजाय नही छे एक।
जीवरी परजाय ने जीव न सरधें, ते अग्यानी थको कूडी करें छे टेक॥ ३४॥
पीजणी पेडा नें वले नाभ नें ओधण, इत्यादिक जूआ जूआ नाम अनेक।
यां सगला नें गाडो निश्चे इ कहीजे, गाडा री परजाय ने गाडो छें एक॥ ३५॥
जिम गाडा री परजाय ने गाडो कहीजें, तिम जीव री परजाय ने जीव छे एक।
जीवरी परजाय ने जीव न सरधे, तिण खोटी सरधा धारी विनां ववेक॥ ३६॥
गाडां री परजाय तो भेली करी छे, ते तो कदेइ काले पड जाएं दूरी।
पिण जीवरी परजाय न पडें छे दूरी, उपजे उपजे ने होय जाए पूरी॥ ३७॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जे जे परजाय पूरी होय जाए, तिणरी प्रतख बीजी हुवे ताय।
जे मिनष मूओ ते देवादिक हुवो, इत्यादिक ओर रो ओर हुय जाय॥ ३८॥
देस थकी दिष्टत दीयों छे गाडां रो, ते बुधवंत जांण लीजो मन मांय।
पिण जीव री परजाय ने जीव एक छें, तिण मांहे संका म आंणजों कांय॥ ३९॥

ढाल : २

दुहा

आ परजायवादी री सरधा बूरी, घोर रुद्र मिथ्यात।
हलुकरमीं किम सरधसी, ए प्रतख झूठ मिथ्यात ॥ १ ॥
चेतन गुण परजाय ते जीव छे, जोवों सूतर माहीं सभाल।
चेतन गुण ने जीव सरधे नही, तिण दीयो अरिहंत सिर आल ॥ २ ॥
त्याने साध वतावे जूजूआ, जीव रा गुण जीव साख्यात।
पिण गुघू सरीखा मांनव मांने नही, त्यारे दिवस तकाइज रात ॥ ३ ॥
त्याने धुर सू तो संत मिलीयों नही, कीधो परजायवादी रो परसंग।
जांणे निरणें कोठें भूंबीयो, कालो नाग भूयग ॥ ४ ॥
उणने मिले सतगुर गारलू, जो उ दूर करे पखपात।
सूतर अरथ सुणाय ने, काढे जेहर मिथ्यात ॥ ५ ॥
जीवरा गुण लखण परजाय छें, त्यांने जीव कह्यो जिणराय।
त्याने जीव न सरधे सरवथा, ते चोडे भूला जाय ॥ ६ ॥
परजायवदी री सरघा उपरे, सूतर मे जाब अनेक।
पिण थोडा सा परगट करू, ते सुणजो आण ववेक ॥ ७ ॥

ढाल

[पाखंड वधसी आरे पाच मे]

तीर्थंकर गणधर उत्तम जीव छे रे, उत्तम छे आचार्य नें उवझाय रे।
त्यारा ग्यांन दरसण चारित छे निरमला रे, याने वांद्या सू पातिक दूर पलाय रे।
ए अरिहंत वायक सतकर जांणजो रे* ॥ १ ॥
वले साध साधवी श्रावक श्रावका रे, सूतर मे भाख्या छे तीरथ च्यार रे।
त्याने पिण उत्तम जीव जिण कह्या रे, ग्यांनादिक गुण रतना रा भडार रे ॥ ए० २ ॥
या सगला ने जीव न सरधे सरवथा रे, परजायवादी पाखडी बाल रे।
वले एहवी करे छे मूढ परूपणा रे, तिण दीयो अग्यांनी मोटों आल रे।
ए परजायवादी रो मत रूडो नही रे ॥ ३ ॥
ए च्यारू तीरथ तीथकर देव मे रे, पावे गुणठांणा परजा प्राण रे।
जोग उपीयोग लेस्या तेहमें रे, याने जीव न गिणे ते मूढ अयाण रे ॥ ए० ४ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यांरो विनों वीयावच गुण कीरत कीयां रे, वांधें तीर्थंकर गोत रसाल रे।
ते कह्यों गिनाताधेन आठमें रे, लीजो बीसोइ बोल सभाल रे॥ ५ ॥
विनों वीयावच करे ते निश्चे जीव छें रे, जीव विनां वीयावच कुण कराय रे।
यांनें परजायवादी जीव गिणे नही रे, ए प्रतख चोडें भूलों जाय रे॥ ६ ॥
भवी दरबादिक पांचूं देव में रे, यां में करे केइ वेक्रे रूप रसाल रे,
यांरी गति आगत्ति ने यांरो आंतरो रे, यांनें जीव न सरधे ते मूरख बाल रे॥ ७ ॥
ए पेंहली गति मां सूं उपजे आय नें रे, ए मरने उपजें पेंहली गति मांय रे।
देवातदेव जाए छे मुगत में रे, यानें सूतर में जीव कह्या जिणराय रे॥ ८ ॥
परभव मे जासी ते निश्चे जीव छें रे, जीव विना गतागति करें केम रे।
इतलो न सूझें मोह अघ जीव नें रे, ओ बोलें सूंणें चित गेहला जेम रे॥ ९ ॥
भवी दरबादिक पांचूं देव नों रे, विसतार भगोती सूतर माहि रे।
नवमें उदेसे सतक बारमें रे, ए निरणों कर लीजों भवीयण ताहि रे॥ १० ॥
एकद्री आदि पंचिंद्री जीव छे रे, छ काय नें जीव कही जिण राय रे।
जीवरा चवदे भेद ते जीव छें रे, त्यांने जीव न गिणे अग्यांनी ताय रे॥ ११ ॥
वले परजायवादी पाखंडी इम कहें रे, परजाय रे नही छें देस परदेस रे।
जीवरी परजाय नें जीव माने नही रे, ते करें अग्यानी कूड कलेस रे॥ १२ ॥
एकद्री आदि पंचिंद्री जीव ने रे, देस परदेस कह्या जिणराय रे।
ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोवों भगोती सूतर मांय रे॥ १३ ॥
दसमें उदेसे दूजा सतक में रे, वले दसमां सतक रे पेहलें जांण रे।
सोलमें सतक उदेसें आठमें रे, ए निरणों करलीजों चतुर सुजांण रे॥ १४ ॥
वले दसमें उदेसे सतक इग्यारमे रे, तिहां पिण तेहीज छे विस्तार रे।
जीव अजीव देस परदेस नों रे, रूपी अरूपी नों विस्तार रे॥ १५ ॥
नेरइयो तिरजच मिनष ने देवता रे, त्यारे आंठोइ करम कह्यां भगवत रे।
ए जीव होसी तो यांरे करम छें रे, त्याने निश्चोइ जीव जाणों मतवत रे॥ १६ ॥
चोवीसोई डडक नियमा जीव छें रे, नियमा कह्यों ते विसवावीस रे।
दसमें उदेसे छठा सतक मे रे, भगोती में भाष गया जगदीस रे॥ १७ ॥
जीव रा चवदे भेद सिघंत मे रे, ते निश्चोंइ जीव कह्या साख्यात रे।
याने मूंढ मिथ्याती जीव गिणे नही रे, आ प्रतख भूठी तिणरी वात रे॥ १८ ॥
वले दसवीकलिक चोथा अधेयन मे रे, निश्चोइ जीव कही छव काय रे।
तिणने अग्यानी जीव न लेखवे रे, ते करे बूडण रों मूढ उपाय रे॥ १९ ॥
गिनाता सूतर रा तीजा अधेन मे रे, ठांणा अंग मे तीजा ठांणा माय रे।
छ जीव नीकाय माहे संका करे रे, अहेत असुख ने समकत जाय रे॥ २० ॥

अरिहंत कही छें आठूं आतमा रे, आतमा ते निश्चें जीव साख्यात रे।
कोइ सात आतमा ने जीव सरधे नही रे, तिणरा घट माहें घोर मिथ्यात रे॥ २१ ॥
हिंसादिक अठारें थानक पाप रा रे, त्यां अठारा रो वेरमण ते परिहार रे।
पाच थावर ने धर्म अधर्म आकासासती रे, वले सलेसी साध मोटां अणगार रे॥ २२ ॥
बादर कलेवर ने परमाणूओ रे, वले सरीर रहीत जीव छे ताय रे।
ए सारा अडतालीस बोलां भणी रे, जीव अजीव दरव कह्या जिणराय रे॥ २३ ॥
ए भगोती सूतर रे सतक अठारमे रे, कह्यो चोथा उदेसा माहि रे।
जीव अजीव री परजाय नें रे, जीव अजीव दरव कह्या छे ताहि रे॥ २४ ॥
जीव री परजाय नें जीव एक छे रे, जीवरी परजाय ते निश्चे जीव रे।
परजायवादी परजाय ने जीव गिणें नही रे, तिण दीधी खोटी सरधा री नीव रे॥ २५ ॥
चोथे उदेसे सतक तेरमे रे, भगोती मे पूछयो गोतम साम रे।
आप कहो सामी किरपा करी जी रे, जीव रे जीव आवे छे काम रे॥ २६ ॥
जब वीर कह्यो छे सुण तू गोयमा रे, जीव रे जीव आवें छे काम रे।
उपीयोग कांम आवे छे जीव रे रे, त्या उपीयोगा रा छे वारे नाम रे॥ २७ ॥
जीव कह्यो छे वीर उपीयोग ने रे, निसंक पणें कीयो निस्तार रे।
जे कोइ जीव नही सरधें छे उपीयोग ने रे, ते निश्चेंइ पूरो मूढ गिवार रे॥ २८ ॥
केवल ग्यांन तणो विनो कीया रे, कट जाए माठा पाप करम रे।
कोइ जीव न गिणें छे केवल ग्यान ने रे, ते भूला अग्यांनी जावक भर्म रे॥ २९ ॥
अगिनान ने कही छे नियमा आतमा रे, नियमा ते निश्चेंइ जीव जांण रे।
ए दसमें उदेसे सतक वारमें रे, भगोती में जोय करो पिछांण रे॥ ३० ॥
गिनांन ने नियमा कही छें आतमा रे, नियमा ते निश्चेंइ जीव जाण रे।
दसमे उदेसे सतक वारमें रे, भगोती मे जोय करो पिछांण रे॥ ३१ ॥
आतमा छें तेहीज निश्चे ग्यान छे रे, ग्यान छे तेहीज आतमा जाण रे।
ते आचारग पांचमां अधेन मे रे, पाचमे उदेसे जोय पिछाण रे॥ ३२ ॥
जे जे दरव में जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुणठांणा परजाय प्राण रे।
ते तो दरव निश्चेंइ जीव छे रे, ए सरधा में सका मूल म आण रे॥ ३३ ॥

ढाल : ३

दुहा

परजायवादी रा मत तणा, केइ कर रह्या कूडी तांण।
त्यांनें खुलवा जाब बतावीया, साख सूतर री आंण ॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरधा छडायवा, काढण मूल मिथ्यात।
कितरा एक तो वले कहूं, ते सूणजों विख्यात ॥ २ ॥

ढाल

[पूज जी पधारो हो नगरी सेविया]

संजती असंजती नें संजतासंजती, एहवा बोल घणां छें ताहि हो।
ए सगला नें जीव जिणेसर भाषीया, ते पन्नवणा भगोती मांहि हो।
ए अरिहंत वायक सतकर जांण जो* ॥१॥
संजती असंजती नें संजतासंजती, एहवा बोल घणां छें ताय हो।
ते सगलाइ भावे जीव असासता, ते भाष्यों छें श्री जिणराय हो ॥ए०२॥
समाइ पचखाण संजम ने संवर, ववेक नें विउसग जांण हो।
ए सगला नें कही छें जिणेसर आतमा, ए भावे जीव पिछांण हो ॥३॥
ए सूतर भगोती रा पेंहला सतक में, नवमां उदेसा मांय हो।
समाइ आदि छहुं आतमा भणी, भावे जीव कह्यों जिणराय हो ॥४॥
चारित परिणाम कह्या छें जीवरा, ठांणाअंग दसमां ठांणा मांय हो।
ते जीव रा परिणांम तो निश्चें जीव छें, तिणमे संका म आंणों कांय हो ॥५॥
दरब कषाय जोग उपीयोग आतमा, ग्यांन दरसण चारित ताय हो।
वले आठमी कही छे वीर्य आतमा, आठोइ जीव कही जिण राय हो ॥६॥
एक जीव गिणे छें दरब आतमा भणी, ते सासती नित सदीव हो।
सेष आतमा सात नही छे सासती, त्यांनें जाबक न गिणे जीव हो ॥७॥
आतमा आठोइ जीव जिणवर कही, ते सूतर भगोती मझार हो।
ए दसमे उदेसे सतक बारमें, आतमा आठां रो विसतार हो ॥८॥
उ भावे जीव न सरधें असासतो, तिण सूतर दीया छें उथाप हो।
उ सांप्रत जीव नें जीव गिणें नही, यूं ही कूडों करें छे विलाप हो ॥९॥
दरबे सासतो नें भावे असासतो, जीव ने कह्यों जिणराय हो।
ते सूतर भगोती रे सतक सातमें, दूजा उदेसा मांय हो ॥१०॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दरबे सासतो जीव नें यूं कह्यों, जीव रो अजीव न थाय हो।
भावे जीव ने कह्यो छे असासतो, ते तो परजाय पलटे जाय हो ॥११॥
निजगुण फिरें नें परगुण भ्रूरपडे, ते परगुण पुदगल जांण हो।
परगुण भ्रूडीयां हुवें निजगुण निरमलो, आ सरधा घट में आंण हो ॥१२॥
असुघ निजगुण फिरीयां सुघ निजगुण हुवें, ते परगुण कर दे दूर हो।
सुघ निजगुण फिरीयां असुघ निजगुण हुवे, तिणसूं परगुण लागे पूर हो ॥१३॥
जे मेला निजगुण मोहकरम वसे, यां निजगुणा सूं करम बंधाय हो।
मोह रहीत निजगुण हुवे निरमला, त्यां सूं परगुण दूर पलाय हो ॥१४॥
सात करम उदे सूं निजगुण मेला हुवे, त्यां सूं पाप न लागे तांम हो।
ते करम भ्रूरयां हुवे निजगुण निरमला, त्यांरा गुण निपन छे नांम हो ॥१५॥
आठ करम उदे हूवां नीपजे, निजगुण उदें भाव अनेक हो।
आठ करमा नें पय कीधां नीपनां, निजगुण पायक भाव वशेख हो ॥१६॥
च्यार करमां ने षयोपसम कीयां नीपजे, निजगुण षयोपसम भाव हो।
मोह करम उपसमीयां परगटे, निजगुण उपसम भाव हो ॥१७॥
ए च्यारूंई भाव परणांमीक जीव छे, ते चेतन गुण परजाय हो।
ए भाव फिरे पिण दरव फिरे नही, ते पिण सुणजो न्याय हो ॥१८॥
तत्व सुघ सरध्यां हुवे जीव समकती, उंधी सरध्यां मिथ्याती थाय हो।
उहीज ग्यांनी रो अगनांनी हुवें, अग्यांनी रो ग्यांनी हुय जाय हो ॥१९॥
नारकी देवता रो मिनप तिरजच हुवे, मिनप तिरजंच देवता थाय हो।
इत्यादिक जीवरा भाव अनेक छे, ते ओर रो ओर होय जाय हो ॥२०॥
सासतो जीव दरव छे अनादरो, तिणरी परजाय अनती जांण हो।
ते परजाय हाण विरघ हुवें करम सूं, पिण दरव री नही विरघ हांण हो ॥२१॥
जे भाव फिरे पिण दूर पडें नही, त्या भावां रा नांम अनेक हो।
इण विघ भावे जीव असासतो, ते सरधो आंण ववेक हो ॥२२॥
ओ जीव रा भाव न सरघें असासता, तिण काढयो छे मत कूर हो।
यांने जीव न सरघे मूंढ मूरख थको, तिणरी सगत करजो दूर हो ॥२३॥
वले गोतम सामी पूछा करी जीव री, सूतर भगोती मांय हो।
ते तीजा उदेसा छठा सतक में, ते सांभल जो चित्त ल्याय हो ॥२४॥
ए आदि ने अंत रहीत जीव छे, के आदि नही अत सहीत हो।
कें आदि सहीत नें अंत रहीत छें, कें आदि नें अत सहीत हो।
ए गोतम सामी पूछयों श्री वीर नें ॥२५॥
श्री वीर जिणेसर कहें सुण गोयमा, ए च्यारूं भांगा छें जीव हो।
त्यांरा भेद विसतार कहूं छू जूजूआ, ए सरध्यां समकत री नीव हो ॥२६॥

ए आदि रहीत ने अंत रहीत छें, ए अभव सिधीया जीव जांण हो।
आदि नहीं पिण अंत सहीत छें, ते भव सिधीया जीव पिछांण हो॥२७॥
जे करम खपाए ने सिध गति में गया, त्यांरी आदि छें पिण अंत रहीत हो।
नारकी तिरजंच मिनष ने देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो॥२८॥
ए च्यारूंई जीव जिणेसर भाषीया, त्यांनें जीव न सरधें मूढ हो।
ते बूडे छें वीर ना वचन उथापनें, कर कर कूडी रूढ हो॥२९॥

●

रत्न : ६

टीकम डोसी री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिघ ने आयरिया, उवझाया सगला साध।
ए पाचू पदा नें नमण कीयां, पामे परम समाघ ॥ १ ॥
नव पदारथ ओलख्यां विनां, निश्चेंइ समकती नाहि।
केइ ओलख नें उंधा पड्या, ते तो निनवा री पात माहि ॥ २ ॥
एक एक वचन उथाप ने, निनव हूआं छें कर २ ताण।
तो अनेक वचन उथापें तके, ते तो निश्चेंइ निंनव जाण ॥ ३ ॥
करणी छे निरजरा तणी, तिणनें संवर सरधे कोय।
ते समकत खोय मिथ्याती हुवो, जीतव जनम विगोय ॥ ४ ॥
प्रबल उदे छे दंसण मोहणी, तिणसूं विगडी दिष्ट अतत।
विभ्रम पडीयो मिथ्यात रे, तिणरी मती हुइ भय भ्रंत ॥ ५ ॥
जिण अनेक वचन उथापीया, उंघा अर्थ करे ने ताय।
कुण कुण वचन उथापीया, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[साध म जाणो इण चल गत सु]

करडी सीखामण कहूं जोड नें, सुण ने मत धरजो घेष जी।
जो परभव री चिंता हुवे घट मे, तो निरणों करो विशेष जी।
उंधी सरधा कोई म राखों* ॥ १ ॥
सुभ जोगां ने सवर सरघे, संवर ने सरघे सुभ जोग जी।
तिण रे दोनू कानी पड्यो दिवालो, आ सरधा घणी अजोग जी ॥ उ०२ ॥
धुरला पांच गुणठांणा ताइ, नही सरधे सुभ जोग जी।
इसडी उंधी सरधा छें तिणरे, मोटों मिथ्यात रो रोग जी ॥ ३ ॥
केवल ग्यानी ने कहे अधरमी, त्यांरे सरधे सावद्य जोग जी।
वले सावद्य सूं पुन लागों सरघे, आ पिण वात अजोग जी ॥ ४ ॥
पाप ठांणो इविरत रो षय हूआं, कहे सर्व विरत आवे नांहि जी।
देस विरत नीपनी सरघे, आ सरघा नही जिणमत मांहि जी ॥ ५ ॥
पांच महावरता नें कहें सुभ जोग, सुभ जोगा ने कहे महावरत जी।
आपिण प्रतख उंधी सरघा, तिण में मूल नही छे सत जी ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

पांच चारित ने कहें सुभ जोग छें, सुभ जोगां नें कहें चारित पांच जी।
ते समकत खोय ने नें हूआ मिथ्याती, कर कर उंधी खांच जी॥ ७॥
सुभ जोगां ने कहे उपसम भाव, ओ पिण बडो अन्याय जी।
तिणरें जोग तणी ओलखणा नांही, चोडे भूला जाय जी॥ ८॥
असुभ जोग तणा कीधा पचखांण, तिणसू नीपना कहे सुभ जोग जी।
आपिण उंधी सरधा तिण री, ते किम सरधे डाहा लोग जी॥ ९॥
दरब जोग तीनूइ रूपी, तिण सूं लागों कहें पुन जी।
पुनरो करता रूपी सरधें, आ सरधा घणी जबूंन जी॥ १०॥
वले सावद्य सूं पुन लागों सरधे, तिण सावद्य नें कहे अधर्म जी।
पुनरो करता कहें अधर्म, ते जावक भूलों मर्म जी॥ ११॥
जीव रा भाव थकी नहीं लागें, पुनरो एक प्रदेस जी।
ए प्रतख खोटी सरधा तिणमें, नही साच तणों लवलेस जी॥ १२॥
पुन ग्रहवारो किरतब नही कोइ, कहे विण कीधां पुन होय जी।
आ सरधा जिणमत सूं न्यारी, तिणने मत धारो कोय जी॥ १३॥
कहे इरियावही किरीया छे धर्म, तिहां नीपनों कहे सावद्य जी।
तिण सावद्य नें अधर्म सरधे, ते कहितां न आवे लाज जी॥ १४॥
कहे असुभ कर्म रों परिग्रहण, सर्व सावद्य कहे छे तांम जी।
तिण सावद्य नें कहें अधर्म, ते यूंही बके बेफांम जी॥ १५॥
कहे सुभ लेस्या ने सुभ जोगां विण, कहें धर्म ने निरजरा नांहि जी।
इसडी उधी करें परूपणा, ते नही जिण आग्या माहि जी॥ १६॥
केवलीयां रें सावद्य सरधें, तिण सावद्य ने कहें अधर्म जी।
तिणरी थित कहे दोय समां री, तिणरो मूढ न जांणें मरम जी॥ १७॥
पुन ग्रहवारो किरतब नही कोइ, इसडो परूपें कोय जी।
ते पिण श्री जिण आग्या बारें, च्यार तीर्थ में नही होय जी॥ १८॥
कहे सुभ जोगां नें आश्रव सरध्या, वीस संवर नों हुवों विछेद जी।
एहवी उंधी करें परूपणा, तिण पाडयों धर्म में भेद जी॥ १९॥
कहें सुभ लेस्या नें आश्रव सरध्या, तो निरजरा नो थाए विछेद जी।
आपिण उधी सरधा तिणरी, ओ घाल्यों धर्म में भेद जी॥ २०॥
महावीर ना सासण मांहें, निनव हूआं सात जी।
त्यां तो एकीको वचन उथाप्यो, पडवजीयो मिथ्यात जी॥ २१॥

एक वचन उथाप्यां निनव हुवे, तिण मे संक म राखो कोय जी।
तो अनेक वचन उथापे ते तो, निश्चें निनव होय जी॥२२॥
तिण एहवी उंधी सरधा काढे, वले बोलें आल पपाल जी।
तिण तीन कालरा तीथकरा ने, दीयो अग्यानी आल जी॥२३॥



ढाल : २

दुहा

भारी कर्म छै जेहनें, तिण सूं खींची न छूटें टेक।
ज्यूं छेड़वें ज्यूं उल्टो पड़ै, साची बात न मांनै एक॥१॥
मोह कर्म पतलो पड़ीयां बिना, नहीं जांणै सूतर रो न्याय।
मद छाक्या मतवाला नी परें, समझ पड़ै नहीं काय॥२॥
हिवें मांन बड़ाइ छोड नें, आणे समता भाव।
तो खींची टेक म राखजो, जो समकत री हुवें चाव॥३॥
लागें खोटी सरधा कही तेहनों, उतर सुणो भव जीव।
जो सुण सुण नें निरणों करो, तो लागें मुगत री नींव॥४॥
खोटी सरधा रा एक एक बोल रो, उतर कहूं सूतर रे न्याय।
जो मुगत जावा री हुवें चावना, तो सांभलजो चित्त ल्याय॥५॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिन आग्या में]

चारित संवर नें सुभ जोग सरधें, इण सरधा सूं होसी घणा खुवार।
सुभ जोग नें संवर जिण कह्या न्यारा, त्यांरो सुणजो विवरा सुध सार।
सुध सरधा रो निरणों कीजो* ॥१॥
तेरमें गुणठांणे आतमा सात, तिहां कषाय आतमा टल गइ जाय।
चवदमें गुणठांणे छ आतमा छें, तिहां जोग आतमा गइ छें बिललाय॥सु०२॥
जोग आतमा मिटी चवदमें गुणठांणे, चारित आतमा तो मिटी नहीं कोय।
इण लेखें चारित नें सुभ जोग, प्रतख जूआ जूआ छें दोय॥३॥
चारित नें जोग एक सरधें तो, आठ आतमा री हुवें आतमा सात।
सुभ जोग नें चारित एक सरधें तिण, चोडें पकड़ीयो मिथ्यात॥४॥
बारमें तेरमें चवदमें गुणठांणें, षायक चारित छें जथाख्यात।
ते चारित निरंतर एक धारा छें, ते तो वधें घटें नहीं छें तिलमात॥५॥
चारित मोहणी षय हुवें जब, षायक चारित नीपजें ताय।
इण चारित संवर रों एक सभाव, सुभ जोग ने चारित कदेय न थाय॥६॥
चारित मोहणी उपसम हुवें जब, उपसम चारित नीपजें ताय।
षयउपसम हूआं षयउपसम चारित, षय हूआं षायक चारित थाय॥७॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चारित मोहणी पय षयउपसम हूआं, तिण सूं तो सुभ जोग नीपजे नाही।
मोह घट्या सुभ जोग नीपना सरधें, ते पड गया मोह मिथ्यात रे माही ॥ ८ ॥
सुभ जोग नीपजण री विध न जांणे, असुभ जोग तणी पिण विध नही जांणे।
सुभ जोग नें ओलखीया विण आवा, पीपल बाधी मूरख ज्यूं ताणे ॥ ६ ॥
सुभ ने असुभ जोग नीपजें तिणरो, निरणो वीर सूतर में वतायों।
त्यांरो थोडों सो विसतार कहू छूं, ते सांभलजों भवीयण चित्त ल्यायो ॥ १० ॥
अंतराय करम षय षयउपसम हूआं, नीपजे षायक पयउपसम ताय।
ते लबद वीर्य छें उजलों निरमल, तिण वीर्य सूं करम न लागें आय ॥ ११ ॥
तिण लबद वीर्य सूं करम न रुकें, वले वीर्य सू करम कटें नही ताय।
लबद वीर्य छें पुदगल ने संजोगें, तिण नें वीर्य आतमा कही जिणराय ॥ १२ ॥
लबद वीर्य तणों जीव करें व्यापार, ते व्यापार छे करण वीर्य जोग।
तिण व्यापार ने भाव जोग कहीजें, त्यांरो व्यापार छें पुदगल रे संजोग ॥ १३ ॥
सावद्य काम करें ते सावद्य जोग, निरवद कांम करें ते निरवद जोग।
तेतो दरव जोग पुदगल ने संघातें, दरव ने भाव जोग रों भेलो संजोग ॥ १४ ॥
सावद्य जोगां सू पाप लागें छे, निरवद जोगां सूं निरजरा होय।
वले निरवद जोगां सू पुन पिण लागें, सुभ जोगां ने सवर सरधो मत कोय ॥ १५ ॥
सुभ जोग छें करणी करम काटण री, सवर सू तो रुके छे करम।
सुभ जोगां ने संवर सरधे छें भोला, तेतो करमा तणें वस भूला छे भर्म ॥ १६ ॥
मन वचन जोग उतकष्टा रहे तो, अतर मोहरत ताइ जांण।
चारित तो उतकष्टों रहे तों, देसउणो कोड पूर्व परमांण ॥ १७ ॥
सुभ मन वचन जोग चारित हुवे तों, चारित पिण अतर मोहरत तांइ।
जो उ चारित री थित इधकी परूपे, तिणनें आपरा बोल्या री समझ न कांई ॥ १८ ॥
मन वचन रा दोय दोय तीन काया रा, ए सात जोग तेरमे गुणठाणे।
जोग ने संवर कहे तिण ने पूछा कीजें, तू किसा जोग ने सवर जांणे ॥ १६ ॥
कदेयक तो सत मन जोग वरते, कदेयक वरते जोग ववहार मन।
एक एक समे दोनू मन नही वरते, इमहीज वरते दोनू जोग वचन ॥ २० ॥
काया रा तीन जोग साथे नही वरतें, एक समें वरते काया रो जोग एक।
चारित सवर तो निरंतर एक, जोग तो जूजूवा वरतें अनेक ॥ २१ ॥
जो उ सातोंइ जोगां ने सवर सरधे, ते सातोइ जोग नही एक साथ।
कदे कोइ वरतें कदे कोइ वरते छे, संवर तो एक धारा रहें छे साख्यात ॥ २२ ॥
सवर ने सुभ जोग जूजूआ दीसे, या दोया ने एक कहे किण लेखें।
अभितर आंख हीया री फूटी, ते सूतर सांह्यो किण विध देखे ॥ २३ ॥

केवली समदघात करें तिण कालें, काया रा तीन जोग तणों व्यापार।
पेंहले नें आठमें ओदारीक जोग, बाकी रा जोग नहीं तिण वार ॥ २४ ॥
बीजें छठें वले सातमें समें, ओदारीक नों मिश्र जोग व्यापार।
तीजें चोथें नें पांचमें ए तीन समां में, कारमण जोग वरतें तिण वार ॥ २५ ॥
ए कारमण जोग तों नवों नीपनो, आगें जोग हूंता ते गया विललाय।
सुभ जोगां नें चारित गिणें तिण लेखें, चारित पिण विलें होय गयों ताय ॥ २६ ॥
जो उ कारमण जोग नें चारित सरधें, ते पिण मिटसी तेरमें गुणठांणें।
जब उणरे लेखे ते पिण चारित मिटीयों, जब उ किसा जोग नें चारित जांणें ॥ २७ ॥
जो उ ओदारीक रा मिश्र नें चारित सरधे, ते पिण जोग जासी विललाय।
जब तिणरें लेखे ते पिण चारित विललांयो, आप री सरधा समझ देखों मन मांय ॥ २८ ॥
वले पांच जोग नीपजें त्यारे, त्यांरे पिण चारित सरध उभों रहें ताय।
ते पिण जोग निरंतर नांहीं, त्यां जोगां नें चारित कहसी किण न्याय ॥ २९ ॥
चारित निरंतर केवलीयां रे, जोग निरंतर नही छें एक।
ए प्रतख न्याय उघाडों दीसें, हलूकर्मी होसी ते छोडसी टेक ॥ ३० ॥
तेरमां थी जाअें चवदमें गुणठांणें, जब पेंहला तो मन जोग रों रुधें व्यापार।
तठा पछे रुधें छें वचन रो जोग, जब एक काय जोग रह्यों छें लार ॥ ३१ ॥
जो उ मन वचन जोग संवर सरधें, तिणरें लेखें तो दोनूंइ संवर घट जाय।
अजोग संवर पिण नीपनो नांही, एक काया रो जोग बाकी रह्यो ताय ॥ ३२ ॥
एहवा प्रश्न पूछयां रा जाब न आवें, जब हलूकरमीं हुवें तो सवलों सूझे।
भारीकरमो हुवें तो ऊंधो पड जाअें, वले उंधी सरधा मांहे इधको अलूझें ॥ ३३ ॥
सुभ जोग ने संवर न्यारा न्यारा छें, यांनें एक सरधें ते मूंढ मिथ्याती।
वले दिन दिन इधिकी तांण करे तों, ते उंधी सरधा रो हुवों पखपाती ॥ ३४ ॥

ढाल : ३

दुहा

सुभ जोग सवर निश्चें नही, सुभ जोग निरवद व्यापार।
ते करणी छें निरजरा तणी, तिण सू करम न रुके लिगार॥ १॥
समदघात करे जब केवली, काय जोग तणो व्यापार।
तिण सूं करम तणी निरजरा हुवे, पुन पिण लागे तिण वार॥ २॥
त्यांरी निरजरा सूं पुदगल झस्या, त्यां सूं सर्व लोक फरसाय।
जोगां सूं निश्चे निरजरा हुवे, चोडे देखो सूतर रो न्याय॥ ३॥
सुभ जोगां सूं निरजरा हुवे, ते कह्यों सूतर रे मांय।
ते थोडा सा परगट करूं, ते सांभलजो चित्त ल्याय॥ ४॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

अकुसल जोग रुधतां निरजरा हुवे, ते निरजरा रुधे त्यां लग जांणो रे।
वले निरजरा हुवे कुसल जोग उदीस्यां, ते प्रवरते छे त्यां लग पिछांणो रे।
सुभ जोग छे निरजरा री करणी* ॥ १ ॥
ओं तो परिसलीणीया तप कह्यो श्री जिणेसर, सूतर उवाई मांह्यो रे।
त्या सुभ जोगा नें कोइ संवर सरधे, ते तो चोडे भूला जायो रे॥ सु० २ ॥
प्रसस्त जोग पडवजीयो साधु, अणंतघाती करमां ने खपायो रे।
ए उत्तराधेन गुणतीसमें अधेने, सातमो बोल कह्यो जिणरायो रे॥ ३ ॥
सामायक रो फल सावद्य जोग निवरते, इणरो ए गुण नीपनो ताह्यो रे।
ए पिण उत्तराधेन गुणतीसमें धेनें, कह्यों आठमां बोल रे माह्यो रे॥ ४ ॥
पांच परकार नी सझाय कीयां सूं, निरजरा हुइ कटीया करमो रे।
सझाय करे ते निरवद जोगां सू, जब नीपनों निरजरा धर्मो रे।
सुध सरधा रो निरणो कीजो॥ ५ ॥
ए पिण उत्तराधेन गुणतीसमें धेनें, उगणीस सूं तेबीस तांइ रे।
त्यां सुभ जोगां नें सवर सरधे, ते भूल गया भर्म मांही रे॥ ६ ॥
जोग तणा पचखाण कीयां सूं, अजोग संवर हुवो रे।
ते अजोग संवर चारित नाही, अजोग संवर चारित सूं जूवो रे॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

अजोग सवर सुभ जोग रुध्यां नीपनों, जब छूटो निरवद व्यापारो रे।
चारित नीपनो सर्व इविरत त्याग्यां, बाकी इविरत न रही लिगारो रे॥ ८॥
अजोग संवर हुवें निरवद जोग त्याग्यां, तिणमें सावद्य रो नही परिहारो रे।
चारित हुवे सर्व इविरत त्याग्यां, नव कोटी त्याग्यो सावद्य व्यापारो रे॥ ९॥
तीन करण जोगां सर्व सावद्य त्याग्यों, ते तो तीन गुपत संवर धर्मो रे।
पांच सुमति छें निरवद जोग व्यापार, त्यांसूं कटें छें आगला करमो रे॥ १०॥
गुपत संवर तो निरंतर साधु रे, पांच सुमत निरंतर नाही रे।
पांच सुमत तो निरंतर नहीं छे, ए तो प्रवरते छें जठा तांइ रे॥ ११॥
इर्या सुमत तो चालें जठा तांइ, भाषा सुमत बोलें जठा तांइ रे।
एसणा सुमत तो प्रवरतें छे त्यां लग, त्यांनें संवर कहीजें नाहीं रे॥ १२॥
आयाण भंड मत निखेवणा सुमत, ते तो लेवें मूंकें तठा तांइ रे।
परठणा सुमति परठे जठा तांइ, त्यांनें पिण संवर कहीजें नाहीं रे॥ १३॥
सुमति छें सुभ जोग निरजरा री करणी, सुभ जोगां नें संवर कहें कोयो रे।
यानें एक कहें तिणरी उंधी सरधा, संवर नें सुभ जोग छे दोयो रे॥ १४॥
सुभ जोग रुध्या मिटें निरजरा री करणी, पुन ग्रहवारा दुवार रुधांणा रे।
जब अजोग संवर नीपनों तिण कालें, करण वीर्य जोग मिटांणो रे॥ १५॥
जीव तणा प्रदेश चलावें, तेहीज जोग व्यापारो रे।
ते प्रदेश थिर हूआं अजोग संवर छें, सुभ जोग मिट्या तिणवारो रे॥ १६॥
सुभ जोग व्यापार सूं करम कटें छें, जब जीव रा प्रदेस चाले रे।
जीव रा प्रदेस चालें तठा तांइ, पुन रा प्रदेस झालें रे॥ १७॥
चारित ना परिणांम थिर प्रदेस, त्यांरो सीतलभूत सभावो रे।
तिण सूं सुभ जोग नें चारित न्यारा न्यारा छें, ओंतों देखों उघाडो न्यावो रे॥ १८॥
वीयावच करण रो फल वतायो, बंधे तीर्थंकर नांम करमों रे।
ते वीयावच करें सुभ जोगां सूं, त्यांसूं हुवों निरजरा धर्मो रे॥ १९॥
बंदणा करता नीच गोत खपावें, वले वांधें उंच गोते करमों रे।
बंदणा करें छें सुभ जोगां सूं, तिण सूं हुवों निराजरा धर्मो रे॥ २०॥
सावद्य जोगां सूं सेवे पाप अठारें, ते तों पाप री करणी जांणो रे।
ते सावद्य करणी करतां पिण निरजरा हुवें छें, त्यांरो न्याय हीया में पिछांणो रे॥ २१॥
उदीरी उदीरी नें करें क्रोधादिक, जब लागे छें पाप ना पूरो रे।
उदीरी नें क्रोधादिक उदें आंण्या ते, करम झरें पडें दूरो रे॥ २२॥
पाप री करणी करतां निरजरा हुवें छें, तिण करणी में जाबक खांमी रे।
सावद्य जोगां पाप नें निरजरा हुवें छें, ते निरजरा तणों नहीं कांमी रे॥ २३॥

ज्यू सुभ जोग छे निरवद व्यापार, ते करणी निरजरा री जांणो रे।
तिण करणी करतां पिण पुन लागे छे, त्यांरो न्याय हीया मे आंणो रे॥ २४ ॥
उदीरी ने करणी निरवद करतां, लागे पुन रा पूरा रे।
करम उदीर उदीर उदे आंणी ने, करम झाटक करे दूरो रे॥ २५ ॥
निरजरा री करणी करतां पुन हुवे छे, तिण करणी माहे नही खामी रे।
निरवद जोगा सूं निरजरा ने पुन हुवे छे, ते पुन तणा नही कामी रे॥ २६ ॥
सुभ जोग सूं निरजरा री करणी, तिणरो छे आगम साखी रे।
सुभ जोगां नें कोइ संवर सरधें, ते भारी करमां जीव अन्हाखी रे॥ २७ ॥
कहि कहि ने कितरो एक कहूं, सुभ जोग ते संवर नाही रे।
सुभ जोगा ने सवर सरधे, ते निनवांरी पांत माही रे॥ २८ ॥
सुभ जोग ने सुभ लेस्या सेती, पुन लागो सरधे नांही रे।
ते जिण मारग सू न्यारा पडीया, ते पिण निनवारी पांत माही रे॥ २९ ॥
भली लेस्या ने उदे भाव में आणी, अनुजोग दुवार सूतर मझारो रे।
वले भली लेस्या धर्म मे पिण आंणी, तिणरों मूढ न जाणे विचारो रे॥ ३० ॥
भली लेस्या थी तो पुन ग्रहे छे, तिण सूं उदे भाव माहे आणी रे।
निरजरा हुवें तिण सूं धर्म मे आंणी, आ श्री जिणवरनी वाणी रे॥ ३१ ॥
लेस्या अधेन री धुरली गाथा मे, करम लेस्या छह्रू जिण भाखी रे।
वले भली लेस्या ने धर्म मे आणी, उत्तराधेन चोतीसमो साखी रे॥ ३२ ॥
करमां ने ग्रहे तिण सू कही करम लेस्या, निरजरा हुवे तिण सू लेस्या धर्मो रे।
उदें भाव ते करम ग्रहवारो हेतू, सुभ लेस्या सू लागे पुन करमो रे॥ ३३ ॥
समचे जोगां ने उदे भाव मे आण्या, तिण में सावद्य निरवद दोनूं जाणो रे।
निरवद जोगा सू तो पुन ग्रहें छे, सावद्य सू पाप लागो छे आंणो रे॥ ३४ ॥
सुभ जोगा सू निरजरा हुवे छे, तिण सूं निरजरा री करणी मे चाल्या रे।
वले सुभ जोगा सूं पुन पिण लागे, तिण सूं आश्रव माहे घाल्या रे॥ ३५ ॥
गोहूं नीपावे छे गोहां कें कारणें, पिण खाखला री नही चावो रे।
तो पिण साथे खाखलो नीपजे छे, बुधवंत समझो इण न्यावो रे॥ ३६ ॥
ज्यू करणी करें निरजरा रे काजे, पिण पुन तणी नही चावो रे।
पिण पुन नीपजे छे निरजरा करतां, खाखला ने गोहां रे न्यावो रे॥ ३७ ॥
भली लेस्या ने भला जोगा सूं, निरजरा ने पुन होयो रे।
लेस्या नें जोगा में कायक फेर छे, तिण सू लेस्या ने जोग छे दोयो रे॥ ३८ ॥
सुभ लेस्या ने सुभ जोगां सू पुन लागे, त्यांरो न कीयो घणो विसतारो रे।
जो इतरे कहे किण नें समझ न पडे तो, सूतर सूं करो निसतारो रे॥ ३९ ॥

ढाल : ४

दुहा

पेहला गुणठाणा थी पाचमां लगे, कदे वरते नहीं सुभ जोग।
एहवी उंधी करें छे परूपणा, तिणरें लागों मिथ्यात रों रोग॥ १ ॥
पेहला गुणठांणा थी छठा लगे, सावद्य निरवद जोग छें ताहि।
सातमां थी तेरमां लगें, एक निरवद जोग त्यां मांहि॥ २ ॥
केइ मूढ मिथ्याती जीवडा, कर रह्या उंधी ताण।
श्रावक रे सुभ जोग सरधें नहीं, ते पूरा मूढ अयांण॥ ३ ॥
श्रावक रें सुभ जोग सरधें नही, ते भव भव में होसी खुराब।
श्रावक रे सुभ जोग जिण कह्या, ते सुणजों सूतर रो जाब॥ ४ ॥

ढाल

[आणंद समकित उचरे रे लाल]

श्रावक सामायक व्रत उचरे रे लाल, सावद्य जोग रा करे पचखांण हो। भविकजन*
ते भणें सझाय बोल थोकडा रे लाल, वले बोलें निरवद वांण हो। भविकजन
सुध सरधा रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
श्रावक पाच पदां नें वंदणा करे रे लाल, त्यांरा वरते निरवद जोग हो।
श्रावक रे सुभ जोग सरधें नही रे लाल, तिणरें मोटों मिथ्यात रो रोग हो ॥ भ० सु० २॥
आवो पधारो कहें साधां भणी रे लाल, ते ववहार वचन जोग सुध हो।
तिण वचन नें कहें असुभ जोग छें रे लाल, तिणरी भिष्ट हुइ छें बुध हो ॥ ३ ॥
वले साधा नें श्रावक दांन दें रे लाल, तिणरी तीनूंइ जोग हुवें सुध हो।
दान देवा रा जोगां नें असुध कहे रे लाल, तिणरी विगड गइ सुध बुध हो ॥ ४ ॥
तीन मनोरथ मन चितवे रे लाल, ते सुध मन जोग निरदोष हो।
तिण मन ने कहे असुभ जोग छें रे लाल, तिणरी सरधा फोगट फोक हो ॥ ५ ॥
धर्म ध्यान ध्यावे श्रावक तिण समें रे लाल, जब सुभ जोगां रो छे व्यापार हो।
तिण व्यापार नें कहें असुभ जोग छे रे लाल, तिणरी खोटी सरधा नें धिकार हो ॥ ६ ॥
श्रावक भावे साधां री भावना रे लाल, साध आवें तो देउं सुध आहार हो।
इण भावना रा जोगां नें असुध कहे रे लाल, तिण जीतब दीयों विगार हो ॥ ७ ॥
श्रावक सीलादिक बारे व्रत उचरे रे लाल, जब निरवद जोगां रो व्यापर हो।
तिण जोगां नें असुध कहें रे लाल, ते तो पूरा मूढ गिंवार हो ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

श्रावक निरवद किरतव करे रे लाल, ते निरवद जोगां सूं होय हो।
तिण जोगा ने सुध सरधे नही रे लाल, तिण समकत दीधी खोय हो॥ ९॥
मन पुने वचन काय पुने कह्या रे लाल, ए तीनूंइ सुध जोग जाण हो।
यां तीनां ने कहे असुध जोग छे रे लाल, ते तो जिन मारग नां अजाण हो॥ १०॥
श्रावक तो जिहाइ रह्या रे लाल, मिथ्याती रे पिण सुभ जोग जांण हो।
जब परत संसार मिथ्याती करे रे लाल, तिणरा निरवद जोग पिछाण हो॥ ११॥
सुख विपाक सूतर मे दस जणां रे लाल, दान दे कीयो परत ससार हो।
त्यांरा तीन करण जोग सुध था रे लाल, जोवो विपाक सूतर रे मझार हो॥ १२॥
दांन दीयों भगवांन ने रे लाल, विजे गाथापती आदि च्यार हो।
त्यां पिण तीन करण तीन जोग सूं रे लाल, कीधो परत संसार हो॥ १३॥
ठांम ठांम सिधांत माहे कह्यो रे लाल, मिथ्याती कीयो परत ससार हो।
त्यारे सुभ जोग मूल सरधें नही रे लाल, ते तो भूठ रा बोलणहार हो॥ १४॥
सूतर भगोती माहे कह्यो रे लाल, इद्र निरवद भाषा बोले जांण हो।
निरवद भाषा ते निरवद जोग छे रे लाल, तिणरी करों हीया मे पिछांण हो॥ १५॥

ढाल : ५

दुहा

अरिहंत सिघ नें आयरीया, उवझाय सगला साध।
ए मुगत नगर नां दायका, पांचूंई पद अराध ॥ १ ॥
पांच भाव जिणेसर भाषीया, उदें उपसम षायक जांण।
षयोपसम ने परिणांमिक छें, त्यांरी बुधवंत करजो पिछांण ॥ २ ॥
आठ करम उदे हूआं नीपजे, जीव तणा उदें भाव।
त्यानें भाव जीव जिणवर कह्या, त्यांरो जूओ जूओ छे सभाव ॥ ३ ॥
नारकी तिरजंच मिनष देवता, पृथ्वी आदि देइ छ काय।
किस्नांदिक भाव लेस्या छहू, क्रोधादिक च्यार कषाय ॥ ४ ॥
तीन वेद मिथ्याती नें अविरती, असनी नें अनांण।
वले अहारथा नें संसारथा, असिध नें अकेवली जांण ॥ ५ ॥
छदमस्थ नें संजोगीपणों, ए बोल कह्या तेतीस।
ते सारा उदें भाव जीव छें, ते भाष गया जगदीस ॥ ६ ॥
त्यामें मोह उदें सूं नीपनां, ते साराइ सावद्य जांण।
सेष करम उदें सूं नीपनां, त्यासूं पाप न लागें आंण ॥ ७ ॥
नाम करम उदे सूं नीपनां, त्यामें केयक निरवद जांण।
केइ सावद्य निरवद दोनूं नही, त्यांसूं करम न लागें आंण ॥ ८ ॥
छ करम उदें हूआं नीपनां, ते सावद्य निरवद नांहि।
त्यांरा भाव भेद परगट करूं, ते निरणो करो घट माहि ॥ ९ ॥

ढाल

[आ अणुकंपा जिण आग्या मे]

च्यार गति छ काय असनी नें अनाणी, संसारथा ते तो संसार रे मांहि।
असिद्ध अकेवली नें छदमस्थ, ए सोलें बोल सावद्य निरवद नांही।
उदें भाव जीव अतेकरण ओलखजों* ॥ १ ॥
च्यार कषाय नें तीन माठी लेस्या, वले तीनों वेद मिथ्यात नें इविरत।
ए वारोंइ बोल छें एकंत सावद्य, त्यांसूं एकंत पाप लागें छें निरत ॥ उ० २ ॥
तीन भली लेस्या छें एकत निरवद, त्यांसूं निरजरा होय पुन लागे छें आय।
आहारीक नें संजोगी छें सावद्य निरवद, त्यांसूं पुन नें पाप दोनूंइ बंधाय ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अंतराय करम षय षयउपसम हूआं, जब वीर्य लबद उपजें छें आय।
ते उजला लेखें छे एकत निरवद, तिण सूं पुन पाप निरजरा क्यूंही न थाय ॥ ४ ॥
वीर्य चलावें छें नांम करम संजोगें, ते निरवद जोग तणो व्यापार।
जब करम कटें तिण निरवद जोगां सूं, पुन रो पिण ग्रहण हुवें तिणवार ॥ ५ ॥
नांम करम संजोगें प्रदेस चलावे, ते भली लेस्या भला जोग व्यापार।
अधवसाय परिणांमादिक सर्व रूडा, जब निरजरा पुन हुवें तिणवार ॥ ६ ॥
भली लेस्या भला जोग करणी रे लेखें, षायक षयउपसम भाव छे ताय।
पुन रो पिण ग्रहण हुवें तिण लेखें, उदें भाव मांहें घाल्या जिणराय ॥ ७ ॥
चवदमें गुणठाणे चवदें जोग सरधे, तीणमें कारमण जोग नें दीयो छे टालो।
ए सरधा छें विपरीत प्रतख खोटी, तिणरो मूढ मिथ्याती न कढें निकाल।
इण खोटी सरधा रो निरणो कीजो ॥ ८ ॥
चवदमों गुणठाणो अजोगी कह्यो जिण, जो सका हुवें तो सूतर नें संभालो।
पिण भारी करमा ने सवली न सूझें, तिणरी अंभितर फूटी आया करम जालो ॥ इ० ६ ॥
तेरमें गुणठाणे पेंहला मन जोग रूंधे, पछें वचन रूंधे पछें रूंधे काया।
ए तीनूं जोग रूंधी नें हूआ अजोगी, त्यांरें पाछा जोग कठी सूं आया ॥ १० ॥
जब तो कहे प्रवर्तन जोग रूंधाणा, निरवरतन जोग छे तिण मांही।
ओ तों अणहूंतो गोलो चलायो, ते तो किण ही सूतर मे दीसें नांही ॥ ११ ॥
ए निरवतन जोग छें सुभ जोग संवर, ओ पिण अणहूतो चलायो गोलो।
ते किण ही सूतर माहें चाल्यो न दीसें, आ पिण मिथ्यात्यां रें मोटी भोलो ॥ १२ ॥
सुभ जोग ने संवर सरधे मिथ्याती, आतो उठी जठा थी जाबक भूठी।
ते हीया फूट गधा रा साथी, त्यांरी अंभितर आख हीया री फूटी ॥ १३ ॥
जोग तो व्यापार जीव तणो छें, जीव रा प्रदेस हालें चालें त्यांही।
थिर प्रदेस ने जोग सरवें छें, तिणरें मोटो मिथ्यात रह्यो घट मांहि ॥ १३ ॥
सुभ जोग ने संवर जूआ जूआ छे, त्या दोयां रो जूओ जूओ छे सभाव।
त्यां दोयां ने एक सरधे अग्यांनी, तिण निश्चेंइ कीधो छे मोटों अन्याव ॥ १५ ॥
सुभ जोगां सूं पुन करम लागे छें, असुभ जोगां सूं लागें पाप करम।
सुभ असुभ करम संवर सूं रुकें छें, वले सुभ जोग सूं हुवें निरजरा धर्म ॥ १६ ॥
सवर सू जीवा रा प्रदेस बंध हुवें छें, जोग सूं जीव रा प्रदेस री हुवें छें छूट।
यां दोयां ने एक सरवें छें अग्यानी, ते निश्चेंइ नेंमा छें हीया फूट ॥ १७ ॥

रत्न : ७

निषेपां री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिध ने आयरिया, वले उवाभाय नें सर्व साध।
थांरा गुण ओलखने वंदणा करे, ते पामें परम समाध ॥ १ ॥
केइ हिंसाधर्मी जीवडा, मांनें निगुणा देव गुर धर्म।
मारे छकाय रा जीव नें, बांधे उसभ करम ॥ २ ॥
नाम थापना दरब भाव ने, ए मांने नषेपा च्यार।
त्यांरी पिण समज पडे नही, घट मे घोर अंधार ॥ ३ ॥
ए च्यार नषेपा रो नाम ले, भोलां ने दें भरमाय।
त्यांरी सरधा रा प्रश्न पूछीयां थकां, तो भूठ बोले फिर जाय ॥ ४ ॥
ते भूठ बोले छे किण विधें, किण विध फिर फिर जाय।
हिवे नांम नषेपा रो निरणो कहूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे]

ढेढ डूंब थोरी नें सरगरा रे, भील मेंणा ने मूसलमान रे।
चंडाल धुरा धुर सर्व जात में रे लाल, के कांरो छें नांम भगवांन रे।
नांम नषेपा रो निरणो सुणो रे लाल* ॥ १ ॥

जे गुण विण नांम मानें तेहनें रे, सगला नाम भगवान वंदणीक रे।
तिणनें पूछणो सगली न्यात ने रे लाल, करणी नांम भगवांन री ठीक रे ॥ ना० २ ॥

पछे गुण विण नांम भगवांन ने रे, जो उ न वांदें सगला रा पाय रे।
उण सरधा थापी ते उथप गइ रे लाल, पिण गहला ने खवर न काय रे ॥ ३ ॥

केइ जोगी सिन्यास्यां रा नाम छे रे, सिधगिरी नें सिधनाथ रे।
जे गुण विणा नांम मांने तके रे लाल, सिधां ने क्यूं न वांदे जोडी हाथ रे ॥ ४ ॥

केइ करे मिनषां रो कारटा रे, ते पिण वाजें आचार्य लोकां मांय रे।
जे गुण विण नाम मांने तके रे लाल, क्यूं न वादें तिण आचार्य रा पाय रे ॥ ५ ॥

केइक ब्राह्मण लोक मे रे, त्यांरी जात वाजें उपाध्याय रे।
जे गुण विणा नांम मांनें तके रे लाल, क्यूं न वांदें उण उपाध्याय रा पाय रे ॥ ६ ॥

केइ साध वाजें भगत ढूंढीया रे, ते निगुण छें रहीत समाध रे।
जे गुण विण नाम मांने तके रे लाल, तें क्यूं न वादे एहवा साध रे ॥ ७ ॥

ए नांम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, त्यांरा पूछे पूछे नें नाम रे।
जे गुण विणा नांम माने तेहने रे लाल, वांदे पूजे करणा गुण ग्रांम रे ॥ ८ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए नांम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, जो उ नमें तो सरधा में फूट रे।
भाव भगत करी वांदें नहीं रे लाल, तो नांम नषेपो गयो उठ रे॥ ६ ॥
नांम नषेपो मांनें गुण विणा रे, पिण कांम पड्यां दे उथाप रे।
ते पग २ झूठ बोलें घणां रे लाल, ते कर रह्या कूडा विलाप रे॥ १० ॥
नांम वांदण रो कह्यां थकां रे, तब ते बोलें एम रे।
कहें नांम छे तो पिण गुण नहीं रे लाल, तिणनें सीस नमावां केम रे॥ ११ ॥
जे नांम नकेवल मांनता रे, ते गुण रो सरणो लें किण न्याय रे।
यांरी खोटी सरधा अटकें घणीं रे लाल, जब साच बोली आया ठाय रे॥ १२ ॥
ते कहवा नें ठांम आवीयों रे, पिण मांहें न भीजे मूढ रे।
त्यारें लागा डंक कु गुरां तणा रे लाल, ते किण विध छोडें रूढ रे॥ १३ ॥
ए नांम नषेपो करें रह्यां रे, तिण री पिण समझ न कांय रे।
भरमाया कुगुरां तणा रे लाल, ते चोडें भूला जाय रे॥ १४ ॥
सोनों रूपो दीयों नांम मिनष रो रे, ते कहवा नें छें नांम रे।
जो कांम पडे गेहणा तणो रे लाल, तो नावें गेहणा रे कांम रे॥ १५ ॥
किण ही मिनष रो नांम हीरो पनों दीयों रे, ते पिण कहवा नें छें नांम रे।
जो कांम पडे जडाव रो रे लाल, तो नावें जडाव रे कांम रे॥ १६ ॥
किण ही मिनष रो मांणक मोती नांम छें रे, ते पिण कहवा नें छें नांम रे।
जो पेंहरें सिणगार करवा भणी रे लाल, तो नावें पेंहरण रे कांम रे॥ १७ ॥
केसर किस्तूरा नांम दीयों मिनष रो रे, ते पिण कहवा नें छें नांम रे।
जो कांम पडे वलेपण गंध रो रे, तो नावें वलेपण गंध कांम रे॥ १८ ॥
किण ही मिनष रो नांम लाडू दीयों रे, ते पिण कहवा नें छें नांम रे।
पिण भूख लागें तिण अवसरें रे लाल, तो नावें खावण रे कांम रे॥ १९ ॥
किण ही लकडी रो नांम घोडो दीयों रे, ते पिण कहवा नें छे नांम रे।
जो कांम पडें चालण तणो रे, तो नावें चढण रें कांम रे॥ २० ॥
इत्यादिक जीव अजीव रा रे, दीधां नांम अनेक रे।
पिण गरज सरें नही ते नांम सूं रे लाल, समझो आंण ववेक रे॥ २१ ॥
ज्यूं गुण विण नांम भगवांन छें रे, ते पिण कहवा नें छें नांम रे।
पिण धर्म नहीं तिण वांदीया रे लाल, ते तिरण तारण नहीं तांम रे॥ २२ ॥
नांम भगवांन सर्व जीव रो रे, दीयों अनंती वार रे।
पिण गुण विण नांम भगवांन सूं रे लाल, न सरी गरज लिगार रे॥ २३ ॥
गुण विण नांम भगवांन सूं रे, न टलें आतम दोख रे।
जे त्यांनें वांधां सुद गति हुवें रे लाल, तो सगलाइ जीव जाता मोख रे॥ २४ ॥

गुण विण नांम वांद्यां थकां रे, गरज सरें नही काय रे।
गरज सरें एक भाव सूं रे लाल, जोवो सूतर रे मांय रे॥ २५॥
गुण विण नांम माने तेहनें रे, वोली रो न दीसे बंध रे।
फिरती भाषा वोलें घणां रे लाल, ते होय रह्या मोह अंध रे॥ २६॥
गुण करने अरिहंत छें रे, गुण करनें सिध साध रे।
त्यांरा गुण ने नांम एक हीज छे रे लाल, त्यांनें वांद्या हुवे परम समाध रे॥ २७॥
किणरी माता रो नांम सरूपां छें रे, तेहीज नांम अस्त्री रो होय जांय रे।
जे गुण विण नाम माने तेहने रे लाल, दोयां नें गिण लेंणी माय रे॥ २८॥
के दोया ने गिण लेणी अस्त्री रे, उणरी सरधा सांह्यो जोय रे।
जो उ अस्त्री ने मां जुदी गिणे रे लाल, तिण नांम नषेपो दीयो खोय रे॥ २९॥
किणरा बाप रो नांम धनरूप छे रे, त्यारे मांहोमां हेत मिलाप रे।
जे गुण विणा नांम माने तेहने रे लाल, सगला छे धनरूप बाप रे॥ ३०॥
सगला धनरूप नांम तेहने रे, संकतो नही लेखवे बाप रे।
ओर धनरूप सूं दुजागी करे रे लाल, तिण दीयो नांम नषेपो उथाप रे॥ ३१॥
बेन बेनोइ काका बावादिके रे, यारे नांम छें नांम अनेक रे।
त्याने नांम परमांणे न लेखवे रे लाल, तो छोड देणी कूडी टेक रे॥ ३२॥
गुण ओर नें नांम ओर छे रे, ते कह वतलावण कांम रे।
कोई भोलेइ मत भूलजो रे लाल, सुण सुण एहवो नांम रे॥ ३३॥
केयक नांम कहिवा ने दीया रे, केइ गुण निपन छें नांम रे।
कहिवा रा नांम कहिवा भणी रे लाल, पिण गुण निपन आवे कांम रे॥ ३४॥
इम कहि कहि ने कितोक कहूं रे, नांम नषेपों रो विसतार रे।
जे गुण विण नांम वादे नहीं रे लाल, तिण सफल कीयों अवतार रे॥ ३५॥

●

ढाल : २

दुहा

गुण विण नांम दीयों लोक में, ते प्रतख लेजो देख।
वले थोडा सा परगट करूं, ते सुण सुण म करो धेख॥ १॥

ढाल

[देशी – चौपई नी]

नाम दीयों सुरो रणधीर, भागो जाअें दीठें तीर।
नांम दीयों छे राधाकिसन, सेवतो जाअे सातो विसन॥ १॥
नाम दीयों छे गोबिंदराय, फिर फिर चरावें पराइ गाय।
बाई रो नाम दीयों छे लाछ, मांगी न मिले कुलडी छाछ॥ २॥
सासु कहे म्हारी कपूरदे बहू, भाभल नांम बोलावे सहू।
नाम दीयो कसतूरी जास, माहें न मिलें हीग री वास॥ ३॥
टेट घणी ने बाको न्हाल, दुरभख - पडीयो देस दुकाल।
नांम दीयो थो जगतपाल, पिण सगलां पेंहली बेच्या बाल॥ ४॥
किण ही एकरो नाम सोनो दीयो, साथ विणा एकलो चालीयों।
घणो दलद वहेज लार, नांम ने कदेय न उठें धाड॥ ५॥
वाइ रो नांम दीयों छें खुसाल, पिण मिट्यो नही सोक रो साल।
कुड कुड ने दिन पूरा करें, कूअें बावडी पड ने मरें॥ ६॥
नांम दीयो छे धर्मोसाह, परभव नी नही छें परवाह।
कूड कपट लंपट चित धरे, इसडो धरमो नरकां पडें॥ ७॥
लोक कहे आ लिछमी बाय, उगें सूर छांणा नें जाय।
किण ही एक रो नांम सरूपां दीयो, एक काली नें कुजस लीयो॥ ८॥
सुंदर नांम दीयों छें अनूंप, खोटी बोले वले कुरूप।
कुत्ता चाटें छे हाडीयां, सेडे करतें घर भाडीयां॥ ९॥
ज्यूं नांम दीयों अरिहंत भगवांन, पिण मांहें न दीसें अकल गिनांन।
तिरण तारण री समझ न काय, तिणनें मूरख वांदें जाय॥ १०॥
इण अनुसारे दीधां नांम अनेक, त्यासूं गरज सरें नही एक।
ते सुणनें समझे चतुर सुजाण, पिण मूरख माडे तांणा ताण॥ ११॥

ढाल : ३

दुहा

ए नांम नषेपो ओलखावीयो, हिवे थापना रो इधकार।
गुण विण देखी थापना, भूला भर्म संसार॥ १॥
वादे पूजें तीर्थंकर री थापना, त्यांरें आकारे पथर कोराय।
सोनें पीतल धात अनेक सूं, त्यारे आकारें विंब भराय॥ २॥
वले कागद कपडादिक उपरें, भगवंत रो मांडे आकार।
तिणनें सीस नमाय वंदणा करें, जांणे हुवो लाभ अपार॥ ३॥
कहे जिण प्रतिमा जिण सारखी, फेर म जांणों कोय।
दोनां ने वांदां थकां, लाभ सरीखो होय॥ ४॥
वले गुण लारें पूजा कही, निगुण पूजता जाय।
अें चोडें भूला मांनवी, त्यांनें किम आंणीजे ठाय॥ ५॥
कदे तो कहें वांदां गुणा भणी, कदे कहें वांदा आकार।
त्यारी सरधा में फूट फजीती घणी, ते कहतां न आवे पार॥ ६॥
अे गुण विणा आकार नें वांदता, त्यांनें प्रश्न पूछें जाय।
तो फिर जाअें झूठ बोलें घणो, ते सुणजो चित ल्याय॥ ७॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

चक्रवत वासुदेव ने बलदेवा, ते तो छे तीन खंड तणा सिरदार।
इत्यादिक केइ मिनष नें सर्व जूगलीया, ते सगलाइ छे भगवंत रे आकार।
थापना निषेपा रो निरणो सुणजो* ॥ १ ॥
भवनपती ने व्यंतर देवा, जोतकी देव ने विमांणीक वखांण।
ते पिण छें आरिहंत रे आकारे, समचोरस छे सगला रो संठाण॥ था० २ ॥
जे गुण विणा आकार भगवान रो वांदे, तिणरे लेखे वांदणा कुण २ आकारो।
समचोरस संठाण रा मिनष ने देवा, त्यानें हरष धरे वादणा वारूं वारो॥ ३ ॥
जो उ हरष धरे याने वांदे नहीं तो, उणरी सरधा उणरें लेखेंइ खोटी।
आप थापी ते आप उथापें, आ पिण आधां रे भोलप मोटी॥ ४ ॥
पथर धातु चितरामादिक ना, कर कर वांदें भगवंत रो आकारो।
तो लाद गोबर धूर कोयलादिक ना, आकार करे वांदणा वारुं वारो॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जो गोबरादिक नां आकार न वांदें, तो आपरी सरधा रो आप अजांणों।
पथर धातु चितरांमादिक नां, आकार देखी मूढ भर्म भुलांणो॥ ६॥
केई थापना सचित नें अचित दरब नी, भगवंत रें आकार वणावें चैरो।
तिण आगें आय पांचूं अंग नमें नें, नमोथूणं गुणें मूढ होय होय नेरो॥ ७॥
तिणरी सेवा पूजा करे भाव भगत सूं, एहीज म्हांरी आवागमण निवारें।
पिण तेतो एकंद्री जीव अग्यानी, ए तिरें नही ते किण विध तारें॥ ८॥
आचार्य उवभाय साध गुणवंता, त्यांरे आकारें ढूंढीयादिक भेषधारी।
जे गुण विणा आकार वांदें ते, तो ओ क्यूं न वांदें यांरो देखआकारी॥ ९॥
जे जे आकार मिनष तणा छें, तेहीज आकार साधां रा जांण।
जे गुण विणा आकार वांदें ते, सर्व मिनषां नें क्यूं नही वांदें अयांण॥ १०॥
जो उ सर्व मिनषां नें नहीं वांदें तो, तिण थापना आकार दीयों उठाय।
अें अकल विहुणा सरधा परूपें, ते पग पग झूठ बोलें फिर जाय॥ ११॥
जो आकार वांदण रो कहे कोइ उण नें, जब तो सूधो बोलें मुख सूं एम।
ए आकार छे तो पिण गुण नही माहे, तिणनें म्हे सीस नमावां केम॥ १२॥
जे थापना आकार मांनें निकेवल, ते गुण रो सरणो लें छें किण न्याय।
यांरी सरधा अटक्यां जाब न आवें, जब साच बोली नें आयो छें ठाय॥ १३॥
ते कहवा नें ठाय आया जांणों, पिण मन में न भीजें अग्यांनी मूढो।
त्यांरे कुगुरां रा डंक करडा लागा, ते किण विध छोडें खोटी रूढो॥ १४॥
ए थापना थापना कर रह्या मूरख, तिण थापना री पिण समझ न कायो।
कुगुरां रां भरमाया अग्यांनी, ते चोडे मारग भूला जायो॥ १५॥
जो उ हाथी मछल्यां भांत कपडो वेचे जब, त्यांरा फाडी फाडी करें दोय दोय टूका।
जो उ गुण विण आकार वांदें तिण लेखें, तो हाथी मछल्यां मारण कांय ढूका॥ १६॥
कहें हाथी मछल्यां भांत कपडो फाड्यां सूं, हाथी मछल्यां मार्‍यां रा न लागे पाप करमों।
तो भगवंत रे आकारें प्रतिमा वांद्यां, तिणनेंइ निश्चें म जांणों धर्मो॥ १७॥
किणरा सगा सबंधी व्याही न्यातीला, तिण नें रेत रा लाडू वणाय नें मेलें।
भगवंत रे आकारे प्रतिमा पूजें, ते रेत रा लाडू पाछा कांय ठेलें॥ १८॥
कहें रेत रा लाडू में सवाद नहीं छे, तो प्रतिमा में गुण मूंल म जांणो।
गुण विण वसतु ते अर्थ न आवें, समझो रे समझो थे मूढ अयांणो॥ १९॥
पथर कोराय नें प्रतिमा वणावें, तिण प्रतिमा नें भगवंत ज्यूं सेवें।
तिण नें तिणहीज पथर रा रुपीया देवें ते, ओ चोखा रुपीया में क्यूं नहीं लेवें॥ २०॥
घृत तेलादिक नों सोदो देइ नें, पथर रा रुपीया लेइ पलें न वांधें।
तो भाठा तणा भगवंत वणाए, उ भगवंत ज्यूं किण लेखें वांदें॥ २१॥

भाठा रा रुपीयां लेइ वसतु देवे, तो नीवी मे पड जायें जावक टोटो।
ज्यूं भांठा रा प्रभू वादे तिणरो मत, खोटो रे खोटो निकेवल खोटो ॥ २२ ॥
रूपा तणा रुपीयां रे ठिकांणे, पथर रा रुपीया कदे नही हालें।
ते तिरण तारण भगवत री ठोरे, भाठा रा भगवंत किण विध चालें ॥ २३ ॥
भाठा रा रुपीया लेइ घाले खजानें, त्यारो कांम पडे जब घणो सीदावे।
ज्यूं भाठा रा भगवंत थापी वादें ते, परभव माहे घणों पिछतावें ॥ २४ ॥
कोइ परख विणा खाजें रुपीया में खोटो, ते तो रूपा रा झोल तणो परतापो।
ए भगवंत में खोटा खाधा किण लेखे, आ तो प्रतख दीसे पथर री थापो ॥ २५ ॥
कोइ कागद उपर कटक अलकें, माहे भल घोरीया असवार वणावें।
त्यामें सूरपणा रो अंस न दीसे, वेरी दुसमण हटावण रें अर्थ न आवे ॥ २६ ॥
ज्यूं चोवीस आदि अनेक तीर्थंकर, त्यांरा जथातथ आकार वणावें।
त्यामें ग्यांनादिक गुण अंस न पावें, ते तरण तारण रें काज न आवें ॥ २७ ॥
जो उ राखें भरोसो कागद रा कटक रो, तो इजत जाय रहें नही आबो।
ज्यूं प्रतिमा नें वांदें तिरण रे भरोसें, ते चिहुं गति में होसी घणां खुराबो ॥ २८ ॥
पोल रे दोनूं कवलें हाथी वणाया, ते चढवा रें कांम कदे नही आया।
ज्यूं प्रतिमा कराय देवल में बेंसारी, आ पिण जांणजो थोथी माया ॥ २९ ॥
उण री अस्त्री मूआं जो फेर परणीजे, तो उ पिण उणरी सरधां गयो भूली।
गुण विण आकार वादें तिण लेखें, अस्त्री रे आकारे कर लेंणी ढूली ॥ ३० ॥
भरतार मूआं जो अस्त्री रोवें तो, उवा पिण सरधा गइ छें भूलो।
गुण विण आकार वादें तिण लेखें, भरतार रें आकारे कर लेंणो ढूलो ॥ ३१ ॥
अस्त्री री गरज ढूली नही सारे, भरतार री गरज सारें नही ढूलो।
इण दष्टंते गुण विण आकार वादें, त्यारी पिण जाणजो ओहीज सूलो ॥ ३२ ॥
वले बालपणें रमें डावडा डावडी, ते विकल पणें करें ढूली नें ढूला।
ज्यू भगवंत री प्रतिमा कर वादें, ते भूला रें भूला निकेवल भूला ॥ ३३ ॥
पापड रा लोया ने गधा रा लीडा, या दोया रो दीसें एक आकारो।
ज्यू प्रतिमा छें भगवत रे आकारें, अें गुण विण अर्थ न आवें लिगारो ॥ ३४ ॥
गधा रा लीडा रा पापड न थायें, कोरा खाधां पिण विगडे मूंढो।
ज्यूं प्रतिमा ने वांद्यां धर्म किहां थी, छोडो रे छोडो थे खोटी रूढो ॥ ३५ ॥
इण लोक में मोह अंध मिनप घणा छें, जेहवी सूआडी मोह अंध गाय।
तिणरो वछडो हूतो ते चल गयो चेतन, तिणरी खाल चाटी २ पावस जाय ॥ ३६ ॥
वछडा री खाल देखी गाय भूली, तो अे प्रतिमा देख भूला किण लेखें।
आ प्रतिमा नही भगवंत री काया, ते तो मोह अंध गाय सूं भूला वशेषे ॥ ३७ ॥

अरिहंत भगवंत मुगत गया जब, त्यांरो सरीर आकार लारें रही काय।
ते तो गुण विण जड अचेतन पुदगल, तिण नें कोइ वांदे तो धर्म न थाय॥३८॥
त्यांरो असल आकार सरीर पड्यो ते, तिणनेंइ वांद्यां बंधें निश्चें कर्मो।
तो ओर आकार वणाय नें वांदें, त्यां आंधां नें किण विध होसी धर्मो॥३९॥
गुण विण आकार वांदण वालो बोलें, आकार वांद्या कहें लाभ अनंत।
तिण सूं भगवंत री प्रतिमा कर वांदा, तिण प्रतिमा नें लेखव त्यां भगवंत॥४०॥
परिणांम चलें कहें अस्त्री दीठां, मा बेंन दीठां रहे सुध परिणांम।
ज्यूं प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें, एहवा कुहेत लगावें तांम॥४१॥
उण रें मा बेंन अस्त्री हुवें एक आकारें, कहें एक दीठां याद आवें तीनूंइ।
पिण एक तीनूंइ ज्यूं कांम न आवें, याद आइ पिण गरज सरी नहीं कोइ॥४२॥
कदे प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें, कदे भगवंत दीठां प्रतिमा याद आवें।
पिण धर्म तो भगवंत रा गुण वांद्यां, प्रतिमा रा गुण वांद्यां करम बंध जावें॥४३॥
मा बेंन आकारें अस्त्री तिण सूं. घर वासो करतो संक न आंणें।
जो उ गुण विण आकार वांदें तिण लेखें, तो अस्त्री नें मा बेंन क्यूं नहीं जांणे॥४४॥
मा बेंन आकारें अस्त्री तिण नें दीठां, हरषे ते विषें रे कांम।
ज्यूं प्रतिमा देखी मन हरष धरें तो, छ काय मारण रा उठे परिणांम॥४५॥
मा बेंन रे आकारे अस्त्री हुवें ते, मा बेंन री गरज निश्चेंइ न सारें।
ज्यूं भगवंत रे आकारें प्रतिमा कीधीं ते, आ पिण जांणजो कदेइ न तारें॥४६॥
भगवंत रे आकारें प्रतिमा वांदें, तिण आगें करें वले अनेक विलापो।
तो उणरा बाप रें आकारे मिनष घणा छें, त्यां सगला नें लेखव लेंणा बापो॥४७॥
जो सगला नें बाप लेखवतो लाजें, ओ मत उण रे लेखेंइ कूडो।
जो गुण विण आकार मांनें अग्यांनी, ते कर रह्यां मूरख फेन फितूरो॥४८॥
उण री मा रे उणीयारे बीदणी हूंती, तिणने धन खरचे परणीजे ल्यायो।
गुण विण आकार वादें तिण लेखें, दोयां नें लेखव लेंणी मायो॥४९॥
कें दोयां ने अस्त्री लेखव लेंणी, आपणी सरधा रो देखी न्यायो।
वले मा रें उणीयारें अनेक लूगायां, त्यां सगल्यां नें लेखव लेंणी मायो॥५०॥
वले बेंन बेनोइ काका बाबादिक, यांरें आकारें छें मिनष अनेक।
त्यानें आकार परमाणे नहीं लेखवें तो, छोड देणी कूडी जाबक टेक॥५१॥
कोइ बाइ छें हिंसा धर्मी अनार्य, तिण पुतर जायो ते पिता रे आकारो।
आकार वांदें तिण बाइ रे लेखें, दोयां नें गिण लेंणा भरतारो॥५२॥
कें दोयां नें बेटा लेखव लेंणा, तो उणरी सरधा में उवा परवीण दूरी।
जो भरतार नें बेटा जूदा गिणे तो, उण री सरधा लेखें आ पडसी कूडी॥५३॥

इत्यादिक जीव अजीव तणा छें, कीधा अकीधा आकार अनेक।
पिण गरज सरें नही आकार वांद्या, समझो रे समझो थे आण ववेक ॥५४॥
गुण विण थापना भगवान री छे, ते देखीं नें जाणे लेणो आकार।
पिण धर्म नही त्यानें सीस नमाया, तिरण तारण मत जाणो लिगार ॥५५॥
भगवंत रो आकार सर्व जीवां रे, हूवो छें अनत अनंती बार।
पिण गुण विण आकार भगवान रा सूं, किणरोइ हुवो न दीसें उद्धार ॥५६॥
गुण विण आकार भगवांन रा सू, निश्चेंइ न टले आतम दोख।
जो आकार वांद्यां सू सुदगति जावें तो, सगला जीव जाय विराजता मोख ॥५७॥
गुण विना आकार वांद्यां सू, निश्चेइ गरज सरें नही कांय।
गरज सरें एक भाव नें वांद्या, सासो हुवें तो जोवो सूतर मांय ॥५८॥
गुण विण आकार वादें तिणां रें, बोली मे मूल न दीसें बंध।
ते फिरती भाषा बोलें अग्यांनी, ते होय रह्या मतवाला ज्यूं अंध ॥५९॥
गुण करनें अरिहंत भगवंत छें, गुण करनें छें रखेसर साध।
त्यारा आकार सू गुण न्यारा नही छें, त्यांनें वांद्यां सू पामें परम समाध ॥६०॥
जे गुण विण आकार थाप राख्यो ते, कहि वतलावण आवे काम।
भर्म म भूला आकार देखी नें, वले सुण सुण नें आकार रो नाम ॥६१॥
केयक आकार कहिवारा छें, केइ गुण निपन चारित परिणाम।
कहिवारा आकार कहिवा भणी छें, गुण निपन आवे वादण काम ॥६२॥
इम कहि २ नें कितरो एक कहीजें, इण थापना निषेपा रो विसतार।
गुण विण थापना वादें नही, त्या निश्चेंइ सफल कीयो अवतार ॥६३॥

●

ढाल : ४

दुहा

ए थापना नषेपो कह्यो, हिवें दरब री करजो पिछांण।
केइ दरब नषेपो सांभली, भूला लोक अजाण ॥ १ ॥
ते गुण विण वादे दरब नें, कूडा कुहेत लगाय।
अतीत अनागत काल री, मांनें गुण परजाय ॥ २ ॥
कहे साध हुवा श्री रिषभ नां, त्यां कीयो चोइसत्थो ले नांम।
चोवीस तीर्थंकर हुवा नही, त्यांने वादें कीयां गुणग्रांम ॥ ३ ॥
इम कहि २ भोला लोक नें, करें निगुंणा वांदण री थाप।
उंधी करें परूपणा, बोहला बांधें पाप ॥ ४ ॥
त्यासूं कांम पडे चरचा तणो, तो भूठ बोलें फिर जाय।
त्यांरी सरधा ने भूठ परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आउखो तूटा ने साधो नही]

तीर्थंकर होसी आगमीया काल में रे, त्यांनें वांदें नें करें ग्यांनी जाप रे।
ते भेल नमोत्थुणं में घालीयो रे, त्यां कीधी निगुणा वांदण री थाप रे।
ए दरब नषेपा रो निरणो सुणो रे* ॥१॥
नमोत्थुणं चोवीसत्थो करतां थकां रे, कहे गुण रो मत जांणो कोइ कांम रे।
तो उणरी सरधा रें लेखें कुण कुण वांदणा रे, ते सुणजो राखे चित एकण ठाम रे ॥ए० २॥
एक मूला मांसूं जीव नीकली रे, अनंता तीर्थंकर आगें थाय रे।
जे दरब तीर्थंकर वादें गुण विनां रे, तो मूलां नें क्यूं नही वादे जाय रे ॥ ३ ॥
पृथवी आदि देइ छ काय नें रे, दरबे तीर्थंकर अनंत पिछांण रे।
जे दरब तीर्थंकर वांदें गुण विनां रे, तो क्यूं नहीं वांदें यानें जांण रे ॥ ४ ॥
अनंता दरबे सिध छें छ काय में रे, सिध होसी ग्यांनादिक पांमी रिध रे।
जो दरब तीर्थंकर वांदें गुण विनां रे, तो क्यूं नहीं वांदें दरबे सिध रे ॥ ५ ॥
अनंताइ छें साध छ काय में रे, भावे होसी चारित आराध रे।
जो दरबे तीर्थंकर वांदें गुण विनां रे, तो क्यूं नहीं वांदें छे साध रे ॥ ६ ॥
ए दरबे तीर्थंकर सिध साध कह्या रे, त्यांनें ओहीज न वादें सीस नमाय रे।
इण लेखें उण री सरधा खोटी पडी रे, पिण आंधां नें समभ पडे नही काय रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

भरत चक्री नो हुवो डीकरो रे, ते महावीर सामी नों जीव मरीच रे।
ते घर छोडी नें हुवो तिरडंडीयो रे, तिण री सावद्य करणी नें सरधा नीच रे॥ ८॥
ते दरबे तीथंकर हुतो तिण दिनें रे, श्री रिषभ जिणेसर दीयो बताय रे।
तो रिषभ जिणेसर रा साध साधव्यां रे, क्यूं नही वाद्या तिण रा पाय रे॥ ९॥
जो चोइथो करतो वादें तेहनें रे, तिण सूं तो भेलो करणो आहार रे।
वले रिषभ जिणेसर सरिषो लेखवी रे, अे करता बदणा ने नमसकार रे॥ १०॥
श्री रिषभदेव रा साध साधव्या रे, त्या नही वांद्यो निगुण मरीच रे।
जे कोइ दरब तीथंकर वादसी रे, तिण री पिण सावद्य करणी नीच रे॥ ११॥
वले भरतजी वाद्यो कहे मरीच ने रे, ते पिण नही छे सूतर माय रे।
भोला ने विगोए पाड्या भर्म मे रे, ते निगुणां ने वादें हरषत थाय रे॥ १२॥
वले दरबे तीथंकर हूता किसनजी रे, त्यानें नेम जिणंद दीयों बताय रे।
पिण नेम जिणद रा साध साधव्यां रे, त्या किसन रा क्यू नही वाद्या पाय रे॥ १३॥
त्यां उलटा किसन ने पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरबे न वाद्यो कोय रे।
तो चोइथो करतां निगुणा किम वादसी रे, हिरदें विमासी बुध सूं जोय रे॥ १४॥
वले दरबे तीथंकर हुती देवकी रे, वले रोहिणी बलभद्रजी जाण रे।
पिण नेम जिणंद रा साध साधव्यां रे, नही वांद्या ते गुण विण दरब पिछाण रे॥ १५॥
या तीनां नें उलटा पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरब न वाद्यो कोय रे।
तो चोइथी करता निगुण किम वांदसी रे, हिरदें विमासी बुध सूं जोय रे॥ १६॥
वले दरबे तीथंकर श्रेणक राय थो रे, त्यांने वीर जिणेसर दीयो बताय रे।
पिण वीर जिणेसर रा साध साधव्या रे, त्यां श्रेणक रा क्यूं नही वांद्या पाय रे॥ १७॥
त्या उलटा श्रेणक ने पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरब न वाद्यो कोय रे।
तो चोइथो करता निगुण किम वादसी रे, हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे॥ १८॥
मोटी सतीयां थी रांण्यां किसन री रे, त्यांरे तीथंकर वादण रो घणों हुलास रे।
जो वे दरबे तीथंकर वादे गुण विना रे, तो किसन सूं नही करती घरवास रे॥ १९॥
वले मोटीं सतीया श्रेणक नी राणीया रे, त्यारे तीथंकर वांदण रो घणों हुलास रे।
जो दरबे तीथंकर वादे गुण विनां रे, तो श्रेणक सूं नही करती घरवास रे॥ २०॥
त्यां भरतार जाणी ने कीधी विटबणा रे, वले त्यासूं पिण सेव्या काम ने भोग रे।
ते नमोथुण गुणता किम वांदसी रे, ते तो कुगुरा री सरधा जांण अजोग रे॥ २१॥
किसनजी ने श्रेणक री रांणीयां रे, ते तो समदिष्टी चतुर सुजांण रे।
त्यां सामायक पोसा मे वंदणा करी रे, ते तो भावे तीथंकर देव जांण रे॥ २२॥
जे दरबे तीथंकर वादें गुण विनां रे, त्यानें गुण विण वादणा दरबे साध रे।
जो उ कह दे दरबे साध न वादणा रे, उण ने उण री सरधा री न पडी लाध रे॥ २३॥

केइ आगमीये काले सुध साध होसी रे, केइ भागल हुवा चारित विराध रे।
ते दरव छे गुण विण ठाली ठीकरा रे, त्यां सगला नें कहीजें दरबे साध रे॥२४॥
जो दरवे साधां ने वांदें गुण विनां रे, तो यां सगला नें वांदणा करणी तांम रे।
उणरी सरधा रे लेखे कुण कुण वांदणा रे, हिवें दरबे साध रा कहुं छूं नांम रे॥२५॥
तो गोसाला कुपातर नें पिण वांदणो रे, ते पिण आगमीयो काले साध थाय रे।
जो उ दरबे साध ने वांदें गुण विनां रे, तो गोसाला नें क्यूं नही वांदें ताय रे॥२६॥
वले इग्यारे श्रेणक राजा रा डीकरा रे, ते कोणक नें कालादिक कुमार रे।
ए साध होसी आगमीया काल में रे, यांनें पिण वांदणा वारुंवार रे॥२७॥
जमाली नें कुंडरीकादिक जे हुवा रे, ते बिगड्या समकत नें संजम खोय रे।
जे दरवे साध ने वांदें गुण विनां रे, तो यांनें पिण वांदणा नीचो होय रे॥२८॥
इत्यादिक भागल नें हुवा कुसीलीया रे, त्यांरो दरब नखेपो न गयो तांम रे।
जे दरवे साध नें वादे गुण विनां रे, तो यांनेंई वांदणा ले ले नांम रे॥२९॥
जो उ न वादे याने भाव सूं रे, तो उण रो उणहीज दीयों उथाप रे।
वले दरबे साध ने वांदें गुण विनां रे, त्यांरें छें पोते बोहला पाप रे॥३०॥
उण अस्त्री परणी सूं घरवासो कीयों रे, ते माता हुंती पाछिल भव मांय रे।
जे मांनें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तो अस्त्री नें लेखव लेणी माय रे॥३१॥
उण नें जनम देइ ने मा मोटो कीयों रे, ते तो अस्त्री थी पाछल भव मझार रे।
जे मांने निकेवल गुण विण दरब ने रे, तिण लेखें मा नें गिण लेंणी नार रे॥३२॥
मा नें तो लेखव लेंणी अस्त्री रे, अस्त्री नें लेखव लेंणी माय रे।
जे माने निकेवल गुण विण दरब नें रे, उणरी सरधा रो ओहीज उंधो न्याय रे॥३३॥
इण रे सगलाइ जीव हुवा छें अस्त्री रे, सगलाइ जीव हुवा मा बेन रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तिण रा किण विध चलसी कूडा फेंन रे॥३४॥
वले बेटो इण रे घरे आय जनमीयो रे, तिण रो पाछल भव बेटो हुंतो आप रे।
जे माने निकेवल गुण विण दरब नें रे, तो बेटा नें इण लेखें गिणणो बाप रे॥३५॥
इण रो बाप ते पाछल भव बेटो हुंतो रे, तिणरोइज बेटो हुवों आय रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तो बाप नें बेटो गिणणो इण न्याय रे॥३६॥
थोरी मेंणादिक सर्व जीवां तणो रे, त्यांरे बेटो हुंतो पाछिल भव आप रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, इण लेखें सगला जीव इण रा बाप रे॥३७॥
जो उ सगला नें बाप न लेखवें रे, तो उणरेंइ लेखेइ सरधा कूड रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, त्यांरो चिहुं गति में होसी घणों फितूर रे॥३८॥
वले काका बाबादिक सगपण तेहनें रे, सगला जीव हुवा अनंती वार रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, ए किण विध करसी मूढ विचार रे॥३९॥

वले अरिहंत सिघ साघ इण जीव रे रे, ते हुवा न्यातीला वार अनंत रे।
जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तिणरे लेखें छें सगला एकण पत रे ॥४०॥
ओ कुण कुण मारे नें कुण कुण पूजसी रे, तिण रो कहता तो कदेय न आवें थाग रे।
ते बूडा अग्यांनी निगुणा वांद नें रे, त्यांरो भव भव मे होसी घणो अभाग रे ॥४१॥
अें दरब नषेपो वादें गुण विनां रे, पिण काम पड्यां देवें उथाप रे।
पगले पगले भूठ बोले घणों रे, ते कर रह्या कूडा मूढ विलाप रे ॥४२॥
यांनें गुण विण दरब वादण रो कह्यां रे, जब तो उवें सूंधो बोले एम रे।
कहे दरव छें तो पिण गुण माहे नही रे, तिणनें म्हें सीस नमांवा केम रे ॥४३॥
जे दरब निकेवल्ल वादें तेहनें रे, ते गुण रो सरणो लेवे किण न्याय रे।
आ खोटी सरघा यांरी अटकी घणी रे, जब साच बोले नें आया ठाय रे ॥४४॥
ते कहिवा नें ठाय अग्यांनी आवीया रे, पिण मांहें नही भीजे मूरख मूढ रे।
त्यादे डंक करडा लागा कुगुरां तणा रे, ते किण विघ छोडें खोटी रूढ रे ॥४५॥
ए दरब नषेपो मुख सूं कर रह्यां रे, तिणरी पिण समभ पडें नहीं काय रे।
जे भरमाया लागा छें कुगुरां तणा रे, ते प्रतख चोडें भूला जाय रे ॥४६॥
केइ दरव तीर्थंकर काल अनाद रा रे, त्यांरी पिण गरज सरी नही काय रे।
तो वंदणा करे तिणनें किम तारसी रे, ववेक आंणी समभो इण न्याय रे ॥४७॥
जे दरवे तीर्थंकर छें केइ गुण विनां रे, ते पिण कहिवा नें दरवे नांम रे।
पिण धर्म नही तिणांनें वांदीयां रे, ते तिरण तारण नही छें ताम रे ॥४८॥
गुण विण दरवे तीर्थंकर तेहसूं रे, किण विघ टलसी आतम दोख रे।
जो त्यांनेंइ वांदयां सूं सुध गति हुवें रे, तो जीव सगलाइ जाता मोख रे ॥४९॥
जे दरवे तीथंकर वांदें गुण विनां रे, त्यारे मूल न दीसें वोलें वंघ रे।
ते फिरती भाषे वोलें कपटी थका रे, ते होय रह्या पूरा मोह अंघ रे ॥५०॥
गुणां करें तीर्थंकर देव छें रे, गुण करनें कह्या छे सिघ साघ रे।
त्यांरा गुण ने दरव तो एक हीज छें रे, त्यांने वांद्यां सूं पामे परम समाघ रे ॥ ५१ ॥
गुण ओर नें दरव ओर छे रे, ते तो छें कह वतलावण कांम रे।
कोइ भोलें मत भूलो गुण विण दरव नें रे, सुण सुण दरव रो चोखो नांम रे ॥ ५२ ॥
केइ दरवा रा नाम कहिवा नें दीयां रे, केइ गुण निपन दरवां रा नांम रे।
ते कहिवारा दरब जांणो कहिवा भणी रे, पिण गुण निपन ते आवें कांम रे ॥ ५३ ॥
इम कहतां कहतां पूरो हुवें नहीं रे, इण दरव नषेपा रो विसतार रे।
जे गुण विण थोथा दरव वादे नही रे, तिण सफल कीयो निश्चे अवतार रे ॥ ५४ ॥

●

ढाल : ५

दुहा

नांम थापना दरब तणो, यां तीनां रो कह्यों विसतार।
ए निगुणा भाव रहीत में, कण नही रे लिगार॥ १॥
गुण विण नांम निकेवलो, गुण विण थापना आकार।
दरब नषेपो गुण विनां, ए तीनूं नषेपो असार॥ २॥
तिण कारण मोटों कह्यों, गुण सहीत नषेपो भाव।
च्यारूं नषेपो तिण भाव में, तिणरो विरला जांणें न्याय॥ ३॥
भाव नषेपो रूडी रीत सूं, ओलखजो नर-नार।
इण ने ओलखीयां विनां जीव रे, घट में घोर-अंधार॥ ४॥
जे जे दरब रो नांम छें, नांम जिसा छें गुण तिण मांय।
ए भाव नषेपो श्री जिण कह्यों, ते सुणजो चित्त-ल्याय॥ ५॥

ढाल

(पुज्य जी पधारो हो नगरी सेविया)

अनंता तीथंकर आगें हुसी वले, ते हिवडां रुलें च्यांरू गति मांहि हो। भ० ज०।
दरबे तीथंकर कहिजें तेहनें, पिण भावें एकंद्रीयादिक ताहि हो। भ० ज०।
भाव नषेपो भवीयण सांभलो*॥ १॥
तीथंकर ग्रहवासें वसतां थकां, जद भोगी पुरष विख्यात हो।
दरव तीथंकर त्यांनेंइ जिण कह्या, पिण भावें ते गृहस्थ साख्यात हो॥ भ० भा० २॥
तीथंकर घर छोडे नें चारित लीयो, पालें छें सुध आचार हो।
तो ही दरबे तीथंकर कहीजें तेहनें, भावे हूआं मोटां अणगार हो॥ ३॥
केवल ग्यान दरसण उपनां पछें, थापें तीरथ च्यार हो।
भावे तीथंकर कहीजे तेहने, समझो आंण विचार हो॥ ४॥
चोतीस अतसय कर नें परवस्था, वांणी छें गुण पेंतिस हो।
तीथकर नां गुण सगला छें तेह में, ते तीथंकर भावे जगदीस हो॥ ५॥
अनंत अरिहंत आगे हुसी वले, हिवडां तो चिहुं गति गोता खाय हो।
दरवे तो अरिहंत त्यांनेइ जिण कह्या, पिण भावे एकंद्रीयादिक मांय हो॥ ६॥
घर छोडे सुधो पालें साधपणो, पिण हणीया नही करम च्यार हो।
त्यां लगे दरबे अरिहंत कह्या तेहने, ते भावें हुवा सुध अणगार हो॥ ७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

च्यार करम घन घातीया छें अरि, ए अरी हणीयां सूं अरिहत हो।
भावे अरिहत कहीजें तिण समें, ओलख ने वादो मतवत हो॥ ८॥
अनंत सिघ आगमीयें काले हुसी, ते तो हिवडा चिहुं गत गोता खाय हो।
दरवे सिघ कहीजे तेहने, पिण भावे एकद्रीयादिक मांय हो॥ ९॥
वले अरिहंत साघ मुगत नें नीकल्या, त्यारा भाव परमांणे गुण रिघ हो।
पिण ज्या लग मुगत न पोहता त्यां लगे, त्यांनें दरवे कहीजे सिघ हो॥ १०॥
सकल कार्य साझी मुगते गया, त्या आठोंइ करम षय कीध हो।
त्यां आवागमण मेट्यो गति च्यार नो, त्यांने भावे कहीजें सिघ हो॥ ११॥
अनंत आचार्य उवझाय साघ होसी, ते हिवडां नरकादिक में ताम हो।
ते आचार्य उवझाय साघ दरवे कह्या, भावे नेरइयादिक नाम हो॥ १२॥
वले आचार्य उवझाय साघ घर में थकां, ते दरवे छें भाव रहीत हो।
त्यामें गुण परगट हुवा घर छोड्यां पछें, जब भावे छें गुण सहीत हो॥ १३॥
केइ आचार्य उवझाय साघ भागल थया, ते दरवे छें गुण रहीत हो।
त्यांमे आगमीये काले गुण परगट्यां, जद होसी वले भाव सहीत हो॥ १४॥
छतीस गुणा आचार्य परवस्था, पचीस गुणा उवझाय हो।
सत्तावीस गुणा सहीत साघ कह्या, ए सगला भावे मुनीराय हो॥ १५॥
ए भावे अरिहत सिघ साघ कह्या, त्याने वांद्यां निरजरा धर्म हो।
निगुणा तीन नषेधा वांदीया, बधें सात आठ उसभ करम हो॥ १६॥
जो मात पिता रा अंग सूं उपनो, ते भावे पुतर साख्यात हो।
मात पिता पिण भावे तेहना, जीव ज्यां लग त्यांरो अंगजात हो॥ १७॥
ते पुतर मरे ओर जायगां उपनो, जब यांरो नही भावे अंगजात हो।
अें पिण मात पिता नही भावे तेहनां, भावे सगपण नही तिलमात हो॥ १८॥
कोइ अस्त्री परणे ग्रहवासो करे, ते भावें वरतें नार हो।
ते पाछिल भव मे इण री माता हूती, ओ सगपण न रह्यो लिगार हो॥ १९॥
इम भाइ भतीजा काका बाबादिक, बेन बेनोइ आदि पिछाण हो।
जे जे सगपण वरतमांन काल मे, ते भावे सगपण जाण हो॥ २०॥
भावे सगपण जे जे संसार में, आवे गुण परमांणे कांम हो।
दरवे सगा सगलाइ एक एक रे, त्यारा कुण कुण कहीजें नांम हो॥ २१॥
भावे सगपण वीतां पछे तेहनें, भावे ज्यूं अर्थ न आय हो।
दरव छे तो पिण गुण माहें नही, तिण सूं गरज सरे नही काय हो॥ २२॥
सगलाई जीव छे दरवे नेरीया, पिण भावे तो नारकी मझार हो।
तिहा छेदन भेदन खेतर वेदना, ते खाअें अनंती मार हो॥ २३॥

जे देवता होसी आगमीया काल में, ते दरबे देवता पिछांण हो।
भवणपती वंतर जोतकी वेमाणीया, त्यानें भावे देवता जांण हो॥ २४॥
नारकी आदि चोवीसोइ डंडक मझे, तिहां जीव उपनों जाय हो।
जे भावे तो कहीजें वरतें तेहवो, ते जोवो सूतर मांय हो॥ २५॥
अणघडीया रूपा ने दरबे रुपीयो कह्यों, तिण रो घडे आकार तेह हो।
पछें उपर सीको दीयो चलण हुवें जेहवो, जब भावे रुपीयो एह हो॥ २६॥
सूत पूंणी नें दरबे कपडो कह्यो, ते गुण विण तिण रो नांम हो।
भावे कपडो कहीजे वणीयां पछें, आवें पेंहरण रे काम हो॥ २७॥
इत्यादिक भाव नषेपा अनेक छें, ते पूरा केम कहिवाय हो।
पिण इण अणुसारे बुधवंत समझ नें, अटकल लेजो न्याय हो॥ २८॥

ढाल : १

दुहा

दुनीया में भोलप घणी, ते कही कठा लग जाय।
अर्थ अनर्थ धर्म कारणें, हण रह्या जीव अथाय ॥ १ ॥
अर्थे हणें ते आठां कारणा, आतमा[1] न्यात[2] घर[3] पिरवार[4]।
मित्र[5] नाग[6] भूत[7] नें जक्ष[8] यांरो, कह्यों घणो विसतार ॥ २ ॥
आठां कारणां विण हणें, ते अकल विनां वेफाम।
ते अनर्थ डड श्री जिण कह्यो, छ काय हणे विण काम ॥ ३ ॥
देव गुर धर्म कारणें, जाणें जीव हण्या छे धर्म।
धर्म हेते हणे छे इण विधे, ते भूला अग्यानी भर्म ॥ ४ ॥
अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, सगले ठांमे हण रह्या प्रांण।
ते दया किसी ठोर पालसी, अे मूढमती अयांण ॥ ५ ॥
जे हिंसा धर्मी जीवडा, त्यारे उदे मिथ्यात अग्यान।
त्यारो छ काय मारण तणो, रहे निरतर ध्यान ॥ ६ ॥
देव गुर धर्म कारणे, किण विध हणें छ काय।
त्यारी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[देशी—विछियानी]

अरिहत देव री करे थापना, हण रह्या जीव छ काय जी।
देव काजे हणे जीव किण विधे, ते सामलजो चित ल्याय जी।
जीव मारे ते धर्म आछो नही* ॥ १ ॥
ते तो देवलादिक करावता, लगावे हजारा दाम जी।
धन खरचे पूजा कारणे, वले करे अनेक हगाम जी ॥ जी० २ ॥
पथर खांन सूं काढे मंगावतां, तस थावर मरे अनेक जी।
त्यारो लेखो करो घट भिंतरें, कोइ बुधवंत आण ववेक जी ॥ ३ ॥
पथर फोड्या पृथवीकाया मरे, पांणी घाले चूनादिक माय जी।
वायुकाय मरे लेता मेलता, टांची लागा उठे तेउकाय जी ॥ ४ ॥
वनसपति ने तस जीवडा, गाडादिक हेठे चीथ्या जाय जी।
नीव देइ देवल चूणता थकां, तठे पिण मरे जीव छ काय जी ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चूनो बाल उपर देतां थकां, तिहां पिण मरे जीव अथाग जी।
अनंता जीव मारे देवल कीयों, ओ तो नही छे मुगत रो माग जी॥ ६॥
देवल करावतां हिंसा हुइ, ते तो पूरी केम कहवाय जी।
पछें पूजादिक करावतां, नित रा नित मारें छ काय जी॥ ७॥
कठें टांची वाजें छें निरंतर, नित नित मारें पृथवीकाय जी।
त्यानें दुख उपजें छें तिण समें, घणी अतुल वेदना थाय जी॥ ८॥
नित पांणी ढोलें न्हवरावतां, अग्न मारें दीवो उजवाल जी।
नितका वाउकाय मारें घणां, कूट कूट मजीरा ताल जी॥ ९॥
नित नित काची कलीयां तोड नें, माला गूंथें चढावें आण जी।
दीवादिक सूं मरें पतंगीया, तसकाय रो करें घमसांण जी॥ १०॥
इण विध छ काय नें मारवा, करें छें नित का संग्राम जी।
वले कहे म्हानें पाप लागो नही, हणीयां अरिहंत देव रे कांम जी॥ ११॥
आवें दया पालण रो पगथीयो, तिथ परव पजूसण मास जी।
ते तो तिण दिन जीव मारें घणां, करें अनेक जीवां रो विणास जी॥ १२॥
वले सतर भेदे पूजा रचें, तिणरो माडें घणों विसतार जी।
तठें दया तणो सींचो नहीं, करें छ काय रो संघार जी॥ १३॥
वले वाधें पगां रे गूघरा, हाथ में ले मजीरा ताल जी।
ते तो गावें वजावें कूदता, करें छ काय रो खेंगाल जी॥ १४॥
देव काजें हणें जीव इण विधें, तिण में मूल न जांणें दोख जी।
जाणें लाभ हुवो जिण धर्म नों, तिण सूं नेडी छें अविचल मोख जी॥ १५॥
इत्यादिक देवल काजे हणें, तिणरो कहितां न आवे पार जी।
हिवें गुर काजें हणे जीव नें, ते सांभलजो विसतार जी॥ १६॥
देव रें काजे देवल करवंता, तस थावर लूट्या प्रांण जी।
तिम गुर काजें थांनक कीयां, हुवें छ काय रो घमसाण जी॥ १७॥
थांनक करावतां हिंसा हुइ, ते तो देवल नी परें जांण जी।
छ काय मारें छें तिण विधें, तिण री बुधवंत करजो पिछांण जी॥ १८॥
वले वांधें पडदा परेच नें, चंदरवा तातादिक आंण जी।
इत्यादिक थांनक करें कारणें, हणें तस थावर रा प्रांण जी॥ १९॥
खीर खांड फीणा रोट्यां करें, पांणी उकाले भर भर ठांम जी।
ओर वसत अनेक करें घणी, गुर नें प्रतिलाभण कांम जी॥ २०॥
आहार पांणी आदिक निपजांवता, करें छें काया रो विणास जी।
पछें तेड वहरावें तेहनें, वले करें मुगत री आस जी॥ २१॥

इत्यादिक गुर काजें हिसा करें, ते तो पूरी केम कहिवाय जी।
धर्म काजे हिंसा करें जीव री, ते सांभल जो चित लाय जी ॥ २२ ॥
करे उजवणा ने पारणा, वले साह्मी वछल जाण जी।
त्यानें नहत जीमावा कारणे, करें छे काय रो घमसांण जी ॥ २३ ॥
वले धर्म काजें धूंकल करें, संघ काढें ले जावें जात जी।
चोमासादिक मे जाता आवता, करें तस थावर री घात जी ॥ २४ ॥
तप माड्यो ते पूरो हूआं पछे, जीमण करें लोक जीमाय जी।
वले लाडू आदिक करें घणा, ते तो हण हण जीव छ काय जी ॥ २५ ॥
वले समदड होइ दान दें, उपर वाडा रा फल दें जांण जी।
आंबादिक फल नी चोवीसी दीयें, इत्यादिक दांन पिछाण जी ॥ २६ ॥
हणे अर्थे अनर्थे जीव ने, ते तो भारी हुवे बांधे पाप जी।
धर्म हेतें हणे छ काय ने, ओ तो कुगुर तणो परताप जी ॥ २७ ॥
पखी आला घालें देवल मझे, इंडा मेल बसें तिण माय जी।
ते निजर पडे कुगुरा तणी, तो आला दें तुरत पडाय जी ॥ २८ ॥
केइ इंडा पंखी जीवा मरें, केइ उड भागें आकास जी।
त्यामें धर्म परूपे पापीया, करावे जीवां रो विणास जी ॥ २९ ॥
अनार्य आवें देस उपरें, जब करें अकार्य काम जी।
दुख उपजावें राक गरीब नें, फिर फिर मारें नगर नें गाम जी ॥ ३० ॥
तिम कुगुर अनार्य सारिषा, त्यारा दुष्ट घणा परिणांम जी।
ते पिण गामां नगरा फिरता थका, मरावें पखीया रा गाम जी ॥ ३१ ॥
अनार्य देस मारे गया पछे, वले गाम नगर वसे आण जी।
कदे अनार्य फेर आवें तिहां, तो वले मार करे घमसांण जी ॥ ३२ ॥
ज्यूं कुगुर विहार कीयां पछे, पंखी फेरे आला घाले लाग जी।
वले कुगुर आवें तिण गांम मे, जब पंख्यारो जांणो अभाग जी ॥ ३३ ॥
मोटां विरद महाजन रा कुल मझे, वाजें जीव दया प्रतिपाल जी।
पिण कुगुरां तणा भरमावीया, पाडे पंखी जीवा रा आल जी ॥ ३४ ॥
अनार्य गांम नगर मास्या पछे, कोइ आणें मन पिछताप जी।
कुगुर जीव मराय हरषत हुवें, त्यारे हिंसा धर्म री थाप जी ॥ ३५ ॥
अनार्य करें कतल जीवां तणी, ते पिण फेरे दुहाइ वेग जी।
कुगुर जीव मरावण नित नवा, त्यारो कठेय न दीसें थेग जी ॥ ३६ ॥
अनार्य विचे तो कुगुर बुरा, त्यांरी मूरख मांनें वात जी।
ते तो धर्म जाणें जीव मार ने, ओं तो करलों घणो छें मिथ्यात जी ॥ ३७ ॥

कुगुर कहे हिंसा कीयां विनां, धर्म न होवें कोय जी।
पोते त्याग कीयों हिंसा तणों, त्यांनें धर्म किहां थी होय जी ॥ ३८ ॥
जो हिंसा कीयां धर्म नीपजे, तो गृहस्थ होय जावें निहाल जी।
पिण साधां नें हिंसा करणी नही, त्यांरो होसी कुण हवाल जी। ३९ ॥
जीव मार्‍यां में धर्म कहें, अें तो कुगुर तणा छें वेंण जी।
त्यांनें वादें पूजें गुर जांण नें, त्यांरा फूटा अभितर नेण जी ॥ ४० ॥
जीतव्य नें परसंसा हेतें हणें, वले मांन वडाइ कांम जी।
हणें जनम मरण मूंकायवा, वले दुख दूरा करवा तांम जी ॥ ४१ ॥
मारें छ कारणां छ काय नें, त्यांरे अहित रो कारण साख्यात जी।
धर्म हेते हणें तिण जीव रे, समकत जाय आवें मिथ्यात जी ॥ ४२ ॥
ए छ कारणे हिंसा कीयां, बघे आठ करम गांठ पूर जी।
निश्चें मोह नें मार बघें घणी, नहीं वरतें नरक सूं दूर जी ॥ ४३ ॥
ए छ कारणा हिंसा करें, ते तो दुख पामें इण संसार जी।
ए आचारांग पेहला अधेन में, छ उदेसां कह्यो विसतार जी ॥ ४४ ॥
केइ समण माहण अनार्य थका, करें हिंसा धर्म री थाप जी।
कहें प्रांण भूत जीव सत्व नें, धर्म हेतें हण्यां नहीं पाप जी ॥ ४५ ॥
एहवी उंधी परूपे तेहनें, आर्य साघ बोल्या केम जी।
तुम्हे भूंडो दीठों साभल्यो, भूंडो मांन्यो भूंडो जांण्यो एम जी ॥ ४६ ॥
जीव मार्‍या रो दोष गिणें नही, ए तो वचन अनार्य रो जांण जी।
एहवा मूढ मिथ्याती दुरमती, त्यांरी सुध बुध नही ठिकांण जी ॥ ४७ ॥
कोइ हिंसा धर्मी नें इम कहे, थांनें मार्‍यां हुवे धर्म कें पाप जी।
जब कहे मोनें मार्‍यां पाप छें, साच बोली सुधी करे थाप जी ॥ ४८ ॥
जो थांनें मार्‍यां रो पाप छें, तो इम सर्व जीव मार्‍यां जांण जी।
ओरां ने मार्‍यां धर्म परूप नें, थे कांय बूडो कर कर तांण जी ॥ ४९ ॥
आचारांग चोथा अधेन में, बीजें उदेसें ए विसतार जी।
हिंसा धर्मी अनार्य तेहनें, कीधा जिण मारग सूं न्यार जी ॥ ५० ॥
धर्म होसी एकंद्री मारीयां, तो बेंद्री मार्‍यां पाप न थाय जी।
इधके मार्‍यां इधको धर्म छें, उण री सरघा रो ओहीज न्याय जी ॥ ५१ ॥
जो एकद्री मार्‍यां पाप छें, तो बेंद्री मार्‍यां पाप वसेख जी।
इधके हण्यां इधको पाप छे, इम जिण धर्म साह्यो देख जी ॥ ५२ ॥
केइ हिंसा धर्मी चोडें कहें, हिंसा कीधां विण नहीं हुवें धर्म जी।
केइ चौडें न कहें कपटी थका, साचो कहितां आवें सर्म जी ॥ ५३ ॥

केइ दया धर्मी वाजें लोक में, चालें हिंसा धर्मी री रीत जी।
ते पिण छें तिण हीज पात रा, बतलायां बोलें विपरीत जी ॥ ५४ ॥
सूतर सिघत में इम कह्यो, जीव मार्‍यां सूं लागें पाप जी।
नही मार्‍यां पाप लागे नही, श्री जिण मुख भाख्यो आप जी ॥ ५५ ॥
वले देहरा प्रतिमा करावता, जीव हण रह्या पृथवीकाय जी।
त्यांनें मंद बुधी श्री जिण कह्या, दसमें अंग पेहला अधेन मांय जी ॥ ५६ ॥
वले रुद्रमति कही तेहनी, ते तो जढ मूढ घणों अतंत जी।
ते दूरंत पंत लखण रो धणी, हिंसा धर्मी नें कह्यों भगवंत जी ॥ ५७ ॥
जीव हिंसा करे तेहनें, ओलखायो श्री जिणराय जी।
हिवें हिंसा धर्मी रा फल कहूं, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ५८ ॥
केइ हिंसा धर्मी जीवडा, मरी उपजें नरक मझार जी।
तिहां छेदन भेदन पांमें घणी, वले खाअें अनंती मार जी ॥ ५९ ॥
मार खाअें नरक थी नीकलें, पडें तिर्यंच गति मे जाय जी।
तिहां पिण दुख पामें अति घणां, ते तो पूरा केम कहिवाय जी ॥ ६० ॥
वले निगोद में पडीयां पछे, दुख पांमे अनंतो काल जी।
परिभमण करे ससार मे, जांणें अरट तणी घड माल जी ॥ ६१ ॥
इम रुलतो रुलतो संसार मे, कदे मिनष तणो भव पाय जी।
ते कुण कुण पामें अवस्था, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ६२ ॥
त्यांरी बालपणे माता मरे, वले पिता रो पडे विजोग जी।
सेंण सगां रो विछोहो पडें, मिलें दुसमण रो सजोग जी ॥ ६३ ॥
बाल्क थकां मरें बेटा बेटीयां, वले घर भागे अधगाल जी।
दुखे दुखे जनम पूरो हुवे, माथे आवें अणहुतो आल जी ॥ ६४ ॥
केइ होय जाअें टूंटा पांगुला, केइ गुंगा बहरा जांण जी।
केइ होय जाअे आंधा दलद्री, रहे दिन दिन तांणा तांण जी ॥ ६५ ॥
सोलें रोग सरीरें उपजे, तिण सूं पामे दुख संताप जी।
जनम मरण जरा दुख पांमें घणां, हिंसा धर्मी तणे परताप जी ॥ ६६ ॥
सुयगडायंग अधेन अठारमें, ए भाव कह्या जिणराय जी।
इम जांणें नर नारीयां, धर्म काजें म हणो छ काय जी ॥ ६७ ॥
देवल हिंसा निषेधी सांभलें, केइ पाछो उत्तर दे आंम जी।
पाप हुवें तो नही लगावता, लाखां कोडां हजारां दांम जी ॥ ६८ ॥
आगे वडा वडेरा भोला नही, धन खरचे लगावें पाप जी।
किण री उठाइ उठे नही, म्हांरा वडा वूढां री थाप जी ॥ ६९ ॥

आगें सिव मारगी हुवा घणां, ज्यांरो जोवो पुरांणे विचार जी।
त्या पिण लाखां कोडां लगावीया, कराया देवल हरदुवार जी॥ ७०॥
आगे वडा वडेरा तुरकां तणा, मोटीं कराइ मसीत जी।
त्यां पिण लाखां कोडां लगावीया, त्यांरी पिण छें आहीज रीत जी॥ ७१॥
ग्यांनी सिवी नें मुसलमांन रे, सगला वडां री आ रीत जी।
सगळा लाखां कोडां लगाय ने, कराया देवल आदि मसीत जी॥ ७२॥
ओर देवल मसीत करावीयां, त्यांनें पाप वतावें पूर जी।
जिण रा देवल कीयां तेहनें, धर्म कहें ते एकंत कूड जी॥ ७३॥
धर्म होसी तो सगला ने धर्म छें, पाप होसी तो सगला नें पाप जी।
ए लेखो कीयां तो लड पडे, खोटी सरधा री करवा थाप जी॥ ७४॥
आप रा देवल री करें थापना, ओर देवल देवें उथाप जी।
पिण धर्म नही हिंसा कीयां, कोइ मत करो कूड विलाप जी॥ ७५॥
दया धर्म छे जिणवर तणो, तिण में जीव न हणवो कोय जी।
जीव मास्यां धर्म न नीपजें, प्रवचन सांह्मो जोय जी॥ ७६॥

रत्न : ८

निम्ब री चौपई

ढाल : १

दुहा

ठाणाअग उवाइ उपंगमे, निन्व नों आचार।
वले सुयगडाअग तेरमे, अर्थ तणो विसतार॥ १ ॥
श्री वीर तणा सासण मझे, निन्व चाल्या सात।
त्यारी सरधा नाम नगरी भणू, ते सुणंजो विख्यात॥ २ ॥

ढाल

[राग—सल कोई मत राखजो]

जे कारज करवा माडीयो, काइ कीधो ने कांइ करणो रे।
कीधा ने मूल माने नही, भारी करमे न कीधों निरणो रे।
सरधा सुणो निन्वा तणी* ॥ १ ॥
ए जमाली[1] सिप्य भगवान रो, ओ सुध सरधा थी भागो रे।
वीर थकाइज विगटीयो, सावथी नगरी ने वागो रे॥स० २॥
असष प्रदेसी जीव छे, वीर सगले चेतन भाख्यो रे।
ए प्रभु वचन उथाप नें, एक प्रदेस ने जीव दाख्यो रे॥ ३ ॥
ए तीसगुत्त[2] निन्व दूजो, नगरी राजग्रही जाणो रे।
तिण चेतन दरब न ओलख्यो, पड गयो उलटी ताणो रे॥ ४ ॥
संजमादिक मे संका पडी, त्या माहोमा वंदणा छोडी रे।
साधा में सरधे देवता, ते नमे नही कर जोडी रे॥ ५ ॥
सुध ववहार उथापीयों, करम उदे वात विगडी रे।
ए आसाढ[3] निन्व तीजो, ते हूओ सेवीया नगरी रे॥ ६ ॥
नरकादिक च्यारू गतां, थोडी थीडी घट जासी रे।
छेहडो आसी सर्व जीव रो, ओ संसार सूंनो थासी रे॥ ७ ॥
मिथला नगरी नें मझे, परगइ मन मे भातो रे।
विछेद सरध्यो संसार नों, ए आसमित्त[4] निन्व चोथो रे॥ ८ ॥
सपराय इरियावही आद दे, एक समे किरिया दोय लागे रे।
विगट्यो बोल अनेक सू, परूप दी लोका आगें रे॥ ९ ॥
ए गगे[5] निन्व पांचमा तणी, उत्पति उलका तीर नगरी रे।
एक समे किरिया दोय थापतां, समकत सरधा विगडी रे॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जीव अजीव दोनूं जिण कह्या, तीजी रास तेरासीयें थापी रे।
बोध बीज विणासीयों, संकीयों नही मूरख पापी रे॥ ११ ॥
अंतरंजी नगरी मझे, ओ हूय गयो समकत भठो रे।
तीन रास परूपी तांण नें, ए छलूक[६] निन्व छठों रे॥ १२ ॥
खीर नीर ज्यूं आठोंइ करम छे, जिण कह्या लोलीभूतो रे।
ते कांचूवा नी परें करम नें, ओ उंधी सरध विगूतो रे॥ १३ ॥
दशनपुर नगरी तिहां, ते गोष्ठामाहिल[७] जांणों रे।
ए सातांइ निन्वां तणो, सरधा एह पिछांणों रे॥ १४ ॥
ए सात निन्व तो हुय गया, वले हुसी त्यांरी केडायत रे।
सरधा परगट कीयां तेहनी, सुण नें हुवा रलीयायत रे॥ १५ ॥
जे आचार में ढीला पख्या, सुध सरधा थी पिण चूका रे।
भव जीवां नें देखी समझता, तो कर लोकां आगें कूका रे॥ १६ ॥
पाखंडीयां सूं मिल गया, साधां सूं अंतर धेखो रे।
केडें चाले लोक रे, ए प्रतख निन्व देखों रे॥ १७ ॥
पूरा दांन दया नहीं ओलख्या, घालें अणहूंता धोचा रे।
सुध साधां नें निन्व कहें, ए कुगुरां झाल्या चोचा रे॥ १८ ॥
गोसाले आद्रक कुमार पें, वीर में दोष बताया रे।
संका नहीं आंणी झूठ री, कूडा गोला चलाया रे॥ १९ ॥
आद्रक कुमार उत्तर दीयां, तब पाछा जाब न आया रे।
कुब्द करें घट भितरें, ओर पाषंडीयां नें लगाया रे॥ २० ॥
इम अजूणाइ काल में, नही न्याय मेलण री नीतो रे।
लोकां सूं करें लगावणी, त्यां लीधी गोसाला री रीतो रे॥ २१ ॥
महावरतां री चरचां कीयां, पगला मूल न मांडे रे।
सरणो लीयों संसार नों, भेष ले जिण मारग भांडे रे॥ २२ ॥
ग्यांन दरसण चारित तप विनां, धर्म बतावण लागा रे।
संके नही सावद्य बोलतां, ते वरत विहूणा नागा रे॥ २३ ॥

ढाल : २

दुहा

वस गयो पाच निन्वां तणो, प्रसिध न सुण्यो कोय।
दोय तणा परगट हूआ, साभलजो सहु लोय ॥ १ ॥
दो किरिया निन्व पांचमो, छठो तेरासीयो जांण।
त्यारा केडायत उठीया, प्रतख देखो अहलाण ॥ २ ॥
माहोमाही निन्व कहे, ते रागा घेखो जाण।
लखणा कर ओलखाय दे, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ ३ ॥
कहूं थोडीसी वानगी, तेरासीया नी वात।
भव जीवा ने प्रति बोघवा, काढण मूल मिथ्यात ॥ ४ ॥

ढाल

[देशी—पूजजी पधारो हो नगरी सेविया]

जीव अजीव दोनूंइ जिण कह्या, तीजी वस्तु न काय हो।
तीजी रास परूपी तेरासीये, तो निन्व कह्यो जिण राय हो।
निन्व तेरासीया केडायत ओलखो* ॥ १ ॥
धर्म अधर्म जिणेसर भाखीयों, तीजो पथ न कोय हो।
तीन परूपे ते निन्व जाणजो, छलूक छठा जिम होय हो ॥ नि० २ ॥
मिश्र पख ने तो मिश्र धर्म कहे, तिण रो न पायो भेद हो।
विरत इविरत दोनू न्यारी कीयां, कुड कुड पामे खेद हो ॥ ३ ॥
सुयगडाअग अधेन अठारमे, श्रावक धर्म विरत वखाण हो।
इविरत रही ते अधर्म जिण कही, तिण मे माडी ताण हो ॥ ४ ॥
इविरत सेवाया सेवीयां भलो जाणीया, तीनूइ करणा पाप हो।
एहवो भगवत वचन उथाप ने, कीधी छे मिश्र री थाप हो ॥ ५ ॥
सर्व विरत छे धर्म साधां तणो, देस विरत श्रावक जाण हो।
ए दोनूइ धर्म मे जिणजी री आगना, तिण री न करे पिछांण हो ॥ ६ ॥
तीजा गुणठाणा ने मिश्र धर्म कहे, भोला ने दीया भरमाय हो।
नांख्यां मोह मिथ्यात री जाल में, हिवे साभलो तिण रो न्याय हो ॥ ७ ॥
साची सरधा तो समकत माहिली, तिण सूं न लागे करम हो।
कायक मिथ्यात रह्यो घट भितरे, तिण मे नही जिण धर्म हो ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए दोनूं सरधा घट में जूजूइ, जूओ जूओ तिण रो सभाव हो।
समिथ्या दिष्टी तो समचे कह्यो, ए तीजा गुणठाणा रो न्याव हो॥ ६ ॥
मिश्र भाषा नें मिश्र धर्म कहे, एहवो चलायो भूठ हो।
करम बंधे इण थी महामोहणी, जो बोलें सभा में आकूट हो॥ १० ॥
तीसांइ बोलां बधें महामोहणी, धर्म से अंस न कोय हो।
जो गुणतीस बोला मे मिश्र न नीपजें, तो एकण में किम होय हो॥ ११ ॥
अराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही, भूला तिण रें भर्म हो।
वीर कही छे बोलण आसरी, पिण न कटे तिण सूं करम हो॥ १२ ॥
साची भाषा पिण सावज बोलतां, बंध जाय सात आठ करम हो।
ते साची भाषा ने कही छे आराधवी, तिणमेंइ न दीसे धर्म हो॥ १३ ॥
तो मिश्र भाषा मे धर्म किहां थकी, भोलेंइ म करजो तांण हो।
भूठ री नेश्राय साचो नीकलें, ते साच हीं सावद्य जांण हो॥ १४ ॥
जो करमां वस इतरी समझ पड़ें नही, तो भेल सभेल म जांण हो।
साच ने भूठ दोनूइ न्यारा करो, सावद्य निरवद पिछांण हो॥ १५॥
जमीकंद खाधा खवायां भलो जांणीयां, तीनूंइ करणां पाप हो।
ए चोडे मारग श्री जिणराज रो, ते पिण दीयो छें उथाप हो॥ १६॥
मिश्र परूपे अग्यांनी एह में, भोलां नें बतावें भेद हो।
खवाये तिरपत कीयो पर जीव नें, ए सरधो धर्म उमेद हो॥ १७॥
करम बचास्या छे तिण जीव रे, जमीकंद खवाय हो।
जीव अनता मार जूंहर कीयों, मिश्र किहां थी थाय हो॥ १८॥
एक डबोयो अनंता मार नें, ते कुगुर जांणें उपगार हो।
ए प्रतख पाप लागो दोनूं विधें, तिणरोइ घट में अंधार हो॥ १९॥
काचो पांणी छांण्या मिश्र धर्म कहें, ते भूठा चोज लगाय हो।
के धर्म हूओ तस जीव न्यारा कीयां, आ दया रही घट माय हों॥ २०॥
तस री दया ने घात पांणी तणी, मिश्र बतावें एम हो।
हिवे साध कहे ते भवीयण सांभलो, एक मना धर पेम हो॥ २१॥
एक गलें बीजो अणगल पीयें, ते बुधवंत करसी नीवेर हो।
पाणी रो पाप दोया ने बरोबर, तस मांहे पडीयो फेर हो॥ २२॥
पाणी छाण्यां घात हूइ अपकाय री, देख दीयों तस नें गोताय हो।
ठिकांणा छुडाया अबला जीवां तणा, ते मिश्र किहां थी थाय हो॥ २३॥
अणगल पीयां तो पाप लागें घणो, गल पीयां अल्प करम हो।
थोडो घणो छे पाप दोनूं भणी, नहीं छेरवीयां छें धर्म हो॥ २४॥

मिश्र अणहुंतो उठाय बेठो कीयो, विगटाया बोल अनेक हो।
ए वांकी गति छे मोह करम तणी, तिण सू न छूटे टेक हो ॥२५॥
चाले चाल असल निन्वां तणी, ओरा सिर दें आल हो।
निरणो न काढे समता भाव सू, बोलें आल पपाल हो ॥२६॥

ढाल : ३

दुहा

हिवें पांचमां निन्व तणा, ओलखजो परिवार।
ते विगडायल जिण भेष में, ते न कहें धर्म विचार॥ १॥
कहे दया आंण नें जीव मारीयां, हिवे छें धर्म नें पाप।
ए करम उदें पंथ काढीयो, भगवंत वचन उथाप॥ २॥
पाप कीयां धर्म न नींपजें, धर्म थी पाप न होय।
एक करणी में दोय न नींपजें, ए संका म आंणो कोय॥ ३॥
धर्म अधर्म करणी जू जूइ, ते मांहोमांही नही मेल।
दो किरिया निन्व केडायतां, कर दीधी भेल सभेल॥ ४॥
एक सावद्य करणी करें तेह नें, धर्म अधर्म दोय वताय।
कुण कुण चाला चालव्या, ते सुणजो चित्तलाय॥ ५॥

ढाल

[देशी-धिग धिग काम विडम्बणा]

एक सावद्य करणी कीयां थकां, धर्म अंस न होय रे।
ए अरिहत वचन मांनें नही, ते सावद्य में सरधें दोय रे।
दोय किरिया निन्व केडायत सुणों* ॥ १॥
हंस्यादिक अठारेंइ सेवीयां, तीनूंइ करणां पाप रे।
ए न्याय मारग जिणराज रो, ते निन्वां दीयों उथाप रें॥दो० २॥
खरच आधरणी जीमणवार में, वले नहत जीमावें लोक रे।
त्यांने धर्म अधर्म दोनूं कहे, ते निन्व सरधा फोक रे॥ ३॥
छकाय नां जीव विणासीया, ए जिण भाख्यों नहीं धर्म रे।
वले विषें सेवारी पर जीव नें, दोनूं विध बधीया करम रे॥ ४॥
कहें अबड नां सिष्य सातसों, अण दीधों लीधो नाय रे।
त्यां आगना ले पांणी लीयों, वले ओरां डबोया कांय रे॥ ५॥
वले आणंद आदि दे श्रावकां, मांगे ल्याया आहार रे।
ते सरलबुधो था जीवडा, त्यां कांय विगोया दातार रे॥ ६॥
इम कहे विरूध परूपता, हंस्या दिढावें मूढ रे।
हिवें एहनों विवरों सांभलो, छोडो मिथ्यात री रूढ रे॥ ७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

किण ही सूंस लीयो सतगुर कनें, जाव जीव न परणूं नार रे।
मोने बाप परणावें तो परणीज सूं, इतरो राख्यो आगार रे॥८॥
बाप परणावे तेह नें, तो हरख धरे मन मांय रे।
तो उण री सरधा रे श्रावकें, बाप डबोयो काय रे॥९॥
ज्यूं अबड आणंद आदि श्रावका, वेरागे कीयां पचखाण रे।
मागण री इविरत पेहलां हुंती, ते नवो पाप म जाण रे॥१०॥
जाचीयो ने अण जाचीयों, सचित अचित आहार रे।
सुभतो ने अण सुभतो, सगलोइ थो आगार रे॥११॥
वले पूछयां ने विण पूछीयां, पाप करता न आंणता लाज रे।
ते विरत करी विण पूछीया, ते इविरत टालण काज रे॥१२॥
जे जे आगार त्यागे दीयो, ते श्रावक नो छें धर्म रे।
बाकी रह्यो आगार सेवारीया, ते निश्चे बंधसी करम रे॥१३॥
ए आगार तो पेहलां हुतो, नवो न सीख्यो कोय रे।
इविरत सिची पार की, ते धर्म किहा थी होय रे॥१४॥
लेवाल रें इविरत लेण री, दातार रे देण री जांण रे।
ए दोयां रे काल अनादरी, ते त्याग्या थी निरवाण रे॥१५॥
वले कोइ अभिग्रह ले एहवो, हूं रनवन खेतमें जाय रे।
विण कहें विरख वाढूं नही, ते पूछी न्हाखे ढाय रे॥१६॥
इम हिज फल फूल चार नों, तस थावर जीव अनेक रे।
विण आग्या हणवो नही, सूंस लीयों आण ववेक रे॥१७॥
इण अनुसारे बोल अनेक छें, सावद्य किरिया करें कोय रे।
जे अधर्म री देसी आगना, तो आछा फल नही होय रे॥१८॥
अबरना सिष्या नें दीधी आगना, कहें खपें स भरलों नीर रे।
तिण हिंसा में सिर घालीयो, न सरायों तिण ने वीर रे॥१९॥
हिंसा तणी आग्या दीयां, नफो म जांणो कोय रे।
ए निरणो न कीयो घट भितरे, ते गया जमारो खोय रे॥२०॥
वरसी दान दीयो तीथकरे, एक कोड नें आठ लाख जांण रे।
ए प्रतख सावद्य सुझें नही, पर गया उलटी ताण रे॥२१॥
सोनइया लीधा तिण ने कहे, हुओ छें एकंत पाप रे।
दीया तीथंकर तेह नें, दो किरिया दीधी थाप रे॥२२॥
धर्म अधर्म दोनू कहें, सोनइया दीधा दांन रे।
पाप जांणें तो देता नही, ते एहवा आणें तान रे॥२३॥

इम कहे भोलां लोक नें, धर्म सूं दीयां भिरकाय रे।
हिवें साध कहें ते सांभलों, वरसी दांन रो न्याय रे॥ २४॥
एक कनक दूजी कांमणी, त्याग्यां सिव सुख होय रे।
पेंहला नें पकरावीयां, धर्म म जांणों कोय रे॥ २५॥
जो नफो जांणें सोंनइया दीयां, तो ओरां डबोया कांय रे।
लेवाल नें भारी कीयां, ए कपट रो मारग नांय रे॥ २६॥
जो सो सो सोनइया दीयां एक नें, तिण लेखें वांध्यो तू मार रे।
दिन रा मिनष हूआं एतला, एक लाख नें आठ हजार रे॥ २७॥
एक वरस तणा तीन कोड ने, अठ्यासी लाख नें असी हजार रे।
एहवे उनमाने मांनव्यां, पाप लगायो अपार रे॥ २८॥
ए जस महिमां देव वधारवा, ते समझों चतुर सुजांण रे।
ए सासती थित छें तेंहनी, उत्तर एह पिछांण रे॥ २९॥
आठ सहंस नें वले चोसठ, कलसा ढोल्या भर नीर रे।
वाजंत्र अनेक आरंभ कीयां, दीख्या लीधीं जिण दिन वीर रे॥ ३०॥
ए सगलाइ सावद्य जिण कह्या, राखों सूतर परतीत रे।
महोछव दांन सिनांन तो, ए गृहवासा री रीत रे॥ ३१॥
ग्यांन दरसण चारित तप विनां, सर्व करणी अधर्म जांण रे।
ज्यां श्री जिणधर्म न ओलख्यों, ते कर रह्या उलटी तांण रे॥ ३२॥
तीर्थंकर सोंनइया दीयां लोक नें, कहें हूओं छें पाप नें धर्म रे।
सुध आहार गवेषे नें भोगव्यो, कहें बांध्या उसभ करम रे॥ ३३॥
सुध आहार दीयों भगवंत नें, धर्म कहें ते तो न्याय रे।
पाप लागों कहें भगवंत नें, ए प्रतख मुसावाय रे॥ ३४॥
आप तिरें ओरां ने डबोय नें, आप डूबें ओरां नें तार रे।
ए दोनूं बोल विरुध छें, ते बुधवंत करसीं विचार रे॥ ३५॥

ढाल : ४

दुहा

सुयगडा अंग तेरमे, जथातथ छें भाव।
साध नें निन्वां तणों, कह दीयो भगवंत न्याव ॥ १ ॥
एक मारग कह्यो मोष रो, बीजो कह्यों ससार।
किरिया भली नें पाडवी कही, भेल न राख्यो लिगार ॥ २ ॥
निन्व पाषंडी बोटकादिक, ते उठ्या दिवस नें रात।
ते सूतर भणे जिण भाखीया, पिण गिर रह्या गूढ मिथ्यात ॥ ३ ॥
प्रबलपणो अहंकार नो, वले चाले उलटी रीत।
समाध मारग सेवे नही, ते अपछदा अवनीत ॥ ४ ॥
श्री जिण मारग उथपे, भाषे कुमारग जेह।
निन्व पाषडी त्याने कह्या, वले साभलजो विध तेह ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

विसुघ निरदोषण मारग मुगत रा रे, ग्यांन दरसण चारित तप च्यार रे।
ते छोड ने परीया करें कदागरो रे, ए निन्वां री सरधा ने आचार रे।
त्यांने पाषडी निन्व जिण कह्या रे* ॥ १ ॥
ग्यांन दरसण चारित तप विना रे, जे धर्म कहे छें ते विपरीत रे।
वले जोड करें हिंसा धर्म थापवा रे, त्यारें केडें पिण डूबे कर परतीत रे ॥ २ ॥
संवर सूं रूकें छें करम आवता रे, निरजरा सूं कटे आंगला करम रे।
शेष कारज सगला संसार नां रे, तिण मे पाषडी थापे धर्म रे ॥ ३ ॥
ग्यांन आगम मे संका आंणता रे, पिंडत वाजे मन मे अभिमान रे।
प्रश्न पूछ्या रो जाब नें उपजे रे, जब आणें अग्यानी कूडा तान रे ॥ ४ ॥
विनो करावणं ने आगा घणां रे, म्हे पदवीधर छा मोटा अणगार रे।
सतावीस गुण सू वरते वेगला रे, वले सरधा में पूरो घोर अंधार रे ॥ ५ ॥
केइ हीण आचारी कूगुर छोडने रे, सुध सरधा नें पाले वरत रसाल रे।
त्यानें कहि ए निन्व मायावीया रे, दे दे अणहूंतो भूठो आल रे ॥ ६ ॥
एहवा असाध साध कहावता रे, कपट सहीत त्यारी वात रे।
ते तो भमण करसी ससार मे रे, उतकष्टी अनती पामे घात रे ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

केइ गुर कनें भण नें गुर नें गोपवें रे, केइ प्रसिध आचार्य रो ले नांम रे।
केइ भूठ बोलें कहे हूं पोतें भण्यो रे, ए भारी करमां जीवां रा कांम रे॥ ८ ॥
उस्न्नादिक पाषंडीयां आगें भण्यों रे, पिण भूठ न बोलें उत्तम जीव रे।
खोटा जांण ने त्यांनें छोडणा रे, ए न्याय मारग छेंसिध गति नीव रे।
ए अरिहंत वायक सतकर जांणजो रे* ॥ ९ ॥

केइ सूतर सिधंत भणें अभवी कनें रे, तोही पूछयां तो कहि दें तिण रो नांम रे।
पिण जांणें मिथ्याती तिण नें मूलगो रे, नही कोइ गुर चेला रो काम रे॥ ए० १० ॥
सिधंत भणायो अनन्ता जीव नें रे, अनन्ता आगें भणीयो सिधंत रे।
गुर ने चेलों हूओं सर्व जीव नों रे, साची सरधा विन न मिटी भ्रंत रे॥ ११ ॥
गधा में घाल्यो चंदन वावनो रे, ते भार तणो विभागी जांण रे।
जे किरिया में हीण थकां सूतर भणे रे, समकत विण थोथा मूढ अयांण रे॥ १२ ॥
कोइ भणें भणावे करवा नांम नां रे, केइ प्रसंसा मांन वडाइ हेत रे।
सूनें चित परमार्थ पायो नही रे, ए वीज विण रहि गयो खाली खेत रे॥ १३ ॥
सुध साध पें घर छोडे सूतर भणें रे, आचार सरधा में देखे चूक रे।
तो कांण न राखे चेला गुर तणी रे, भागल जांणे तो जाअे मूक रे॥ १४ ॥
अजांणपणें कुगुर नें गुर करे रे, पिण ठीक पड्यां छोडें ततकाल रे।
त्यागी वेरागी त्यांनें जिण कह्या रे, ए सांसो हुवें तो सूतर संभाल रे॥ १५ ॥
वले क्रोध घणो बोलें अलखामणा रे, उपसम्यों कलहो करवा त्यार रे।
खिमा रो मारग छोडे उभर पड्या रे, ते पिण दुख पांमें संसार रे॥ १६ ॥
कोइ भेषले हलका बोलें एहवा रे, मो तुल कुण छें ग्यांन भंडार रे।
हूं जीवादिक नवतत रो निरणो करूं रे, हूं तपसी छूं उतकष्टों अणगार रे॥ १७ ॥
एहवा अहंकारी साध भेष में रे, त्यां दीयां नरकादिक जावा सूत रे।
अनेरा उत्तम साध नें श्रावकां रे, जांणें आकार मात विबभूत रे॥ १८ ॥
कुडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे, चंदरमा रो सगले छें प्रतिविंव रे।
सुध साध श्रावक नें एहवा लेखवे रे, आ भाली पाषंडीयां भूठी भंव रे॥ १९ ॥
ते मिरग ज्यूं परीया छें कुड जाल में रे, जे चारित लेनें करें अहंकार रे।
ते भमग करसी गाढा दुखीया थकां रे, इण भाव कूट संसार मझार रे॥ २० ॥
ए दिष्टंत सुलटा रों उलटों करें रे, साध नें कहें असाध एम रे।
ए हिज निन्व म्हां मांसूं निकल्या रे, सगलां नें गिणीया प्रतिविव जेम रे॥ २१ ॥
इम कहि कुगुरु कुब्द चलाय नें रे, साधां नें घालें निन्व मांय रे।
चद्रमा[1]ने प्रतिविंव[2] निन्व[3] साव[4] रो रे, ए च्यारां तणो सुणजो भवियण न्याय रे॥ २२ ॥
कुंडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे, चंद्रमा रों सगले छें प्रतिविब रे।
मूर्ख जाणें गिरलूं चंद्रमा रे, पिण ते तों आकासें अंतर लंव रे॥ २३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

प्रतिबिंब नें जे कोइ मानें चंद्रमा रे, ते तों कहिजें विकल समांन रे।
ज्यूं गुण विण सरधें साधु भेष नें रे, ते खूता मिथ्याती पूर अग्यान रे॥ २४ ॥
प्रतिबिंब नें प्रतिबिंब कह्या थका रे, भूठ म लागों जाणो कोय रे।
सतावीस गुण विहुणा साग ने रे, असाधु कह्यां थी दोष न होय रे॥ २५ ॥
साघ री गुण री चरचा माडीया रे, जब तो कांनी दे जाअे दूर रे।
घणां लिंग धार्‌यां सू भेलप करे रे, सुघ साघ ने निन्व कहिवा सूर रे॥ २६ ॥
घणां रे भरोसें कोइ रहिजो मती रे, सरघा ने चलगति मीढी जोय रे।
लोक भाषा माहि पिण इम कहे रे, घी खाघो पिण कुलडो न गयो कोय रे॥ २७ ॥
कोइ साघा म्हासू निकल भागल हुवे रे, केइ भागल छोडे ने हुवे छे साध रे।
वले थोडा घणा रो कारण को नही रे, सुघ करणी सूं पामे सदा समाघ रे॥ २८ ॥
सुघ साघा ने छोडे सरघा विगटीयां रे, ते गिणजो पाषडो निन्व माहि रे।
सुघ सरघा भाले ने छोड्या भागला रे, आचार पालें ते निन्व नाहि रे॥ २९ ॥
पूजा सलागा उचा गोत ने रे, पाम्या छे जीव अनती वार रे।
जे वेरागे घर छोडे सजम लीयो रे, गरब छूटो तो खेवो पार रे॥ ३० ॥

●

ढाल : ५

दुहा

केरायत दोय निन्वां तणा, ओलखाया रूडी रीत।
हिवे जमाली रा परगट करूं, ते सुणजो धर पीत ॥ १ ॥
श्री वीर तणा सासण मझे, निन्व हूअ सात।
तिण मे प्रथम निन्व जमाली हूओ, तिण री विगडी सरधा वात ॥ २ ॥
कांई कीधों नें कांई करणो अछें, ते प्रसिध चावी वात।
काई कीधा नें मूल माने नही, तिण रे इण विध आयों मिथ्यात ॥ ३ ॥
सावथी नगरी नां बाग में, इण रे रोग उपनो आय।
जव इण सावा नें तेडी कह्यो, मांहरे करो संथारो जाय॥ ४ ॥
जब सावां करणो मांड्यों साथरों, कांई कीधो ने करे तिणवार।
जव जमाली साधा ने कहे, अंजे कीयों कें न कीयों संथार॥ ५ ॥
जवसाधां कह्यों न कीयो करां छां साथरों, तब आयो जमाली चलाय।
इण पूरों न दीठों साथरो, तिण सू उंवी विचारी मन मांय॥ ६ ॥
भगवत कहे करवा माडीयों, तिण ने कीधो कहें साख्यात।
वले चलवा मांड्यां ने चलीयो कहें, ते एकंत भूठी वात। ७ ॥
तिण भगवंत नें भूठा कहें, पडवजीयों मिथ्यात।
तिणरा केडायत उठीयां, ते सुणजो विख्यात॥ ८ ॥

ढाल

[देशी—आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

कांई कीधां नें काई करणो छें वाकी, तिण कीधा कारज नें जे नही मानें।
इसडी सरधे ते जमाली रा केडायत, ते वुधवंत आगे किण विध रहसी छांनें।
आ सरधा जमाली निन्व री* ॥ १ ॥
पांच सेर तणी रोटी करणी छें, तिण मे सेर तणी कीधी छें रोटी।
सगली कीधां विनां कहे कीधी न कहणी, तिणरी पिण सरधा जाबक खोटी॥ आ० २ ॥
चोवीस हाथ रो थान वणवा मांड्यों, तिण मांहें बणीयों छे एक हाथ।
आखो वणीया विनां कहे वणीयों न कहिणो, तिणरो पिण जांणजो ओहिज मिथ्यात॥ ३ ॥
घर हाट हवेली करवा मांड्यां, कांई कीधा पिण न कीयां छे पूरा।
अधूरा कीयां ने कहे कीयां न कहिणा, त्यानें पिण जांणजों जिणजी री सरधा सूं दूरा॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दस कोस तणे गामतरें चाल्यों, काई चाल्यो ने कांई चालणो सेष।
थेट पोहता विनां कहे चाल्यो न कहिणो, आ पिण खोटी सरधा जमाली री टेक ॥ ५ ॥
कोइ मास खमण चोखे चित कीधो, तिण गुणतीसमे दिन एक खाधी रोटी।
जमाली रे लेखे मास खमण न भागो, तिण सू जमाली री सरधा खोटी ॥ ६ ॥
लाय लागी ने लाय लागी नही कहिणी, पूरो बलीया पछे कहे बलीयो ताय।
इण अनुसारें छे बोल अनेक, आ खोटी सरधा पूरी केम कहवाय ॥ ७ ॥
सुदंसणा भगवत री बेटी, तिण वीर कनें लीयो सजम भार।
तिणरें सरधा जमालीं री आई, ते पिण हुइ जमाली री लार ॥ ८ ॥
ते आहार करती थी परेच वाघे ने, ते आर्यां सहीत बेठी थी माय।
त्याने ढीक श्रावक समभावण काजें, अग्न सूं परेच ने दीधी लगाय ॥ ९ ॥
जब केइ आर्यां कहे परेच वले छे, जब ढीक श्रावक बोल्यो छे एम।
परेच वली कह्यां थारी खोटी हुवें सरधा, पूरी बली विनां वली कहो छो केम ॥ १० ॥
इम सुदसणा सामल ने डरपी, जमाली री सरधा छोडी खोटी जांण।
वीर कने सुघ हुइ आलोए, प्राछित ले पाछी आई ठिकाण ॥ ११ ॥
आ प्रतख खोटी जमाली री सरधा, ते सरधा भेष धार्‍यां रे आई।
जमाली रा थका भगवत रा बाजे, ते पिण विकला ने खबर न काई ॥ १२ ॥
दोष सेव्यों सेवे नें सेवसी आगें, तिणरोई चारित सरधें नही भागों।
वले करम तणे वस उघा बोले, कहे वरत न भागो पिण दोषण लागों ॥ १३ ॥
किण ही साध सावद्य किरतब कीधो, पाच महावरत मे दोषण लागो।
जे जे होसी जमाली रा केडायत, तिणरो संजम सरधे नहीं भागो ॥ १४ ॥
हिंसा कीया पेंहलो वरत भागे, भूठ बोल्यां दूजो वरत भागो।
जमाली रा केडायत कहें भेष धारी, वरत भागों नही पिण दोषण लागों ॥ १५ ॥
अदत लीया तीजो वरत भागे, विषे परिणाम आयां चोथो वरत भागो।
तिण भागा ने भागो न सरधें अग्यानी, ते पिण जमाली रे केडें लागो ॥ १६ ॥
उपगरण मरजादा सूं इधका राखें, थानकादिक उपर ममता रही लागों।
बंधो करावें दीख्या मो आगे लीजें, तिणरो पाचमों वरत न सरधें भागो।
ते निन्वा जमाली रा केडायत* ॥ १७ ॥
किवाड जड्या दोप लागो न सरधें, लागो सरधें तोइ वरत भागों न सरधें।
निसक थका पापी जडें उघाडे, रात दिवस राक जीवा ने मरदे ॥ ते० १८ ॥
ठांम ठाम थानक माडी ने बेठा केइ, आधाकरमी केइ मोल रा लीधा।
त्यांरो साधपणो भागो नही सरधे, त्या नरक सू सनमुख डेरा दीधा ॥ १९ ॥
असणादिक नित एकण घर वेहर्‍या, वीर कह्यों तिण ने अणाचारी।
केइ आहार पाणी नित धोवण वेहरें, तिण ने सरधें मूंढ सुघ आचारी ॥ २० ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

पुस्तक पांना वले लोट नें पातरा, सांनी करें साध मोल लरावे।
थोडो घणों त्यांनें मोल वतावें, वले साध रो मूरख विडद धरावें ॥ २१ ॥
जीमणवार आरा मांहें जावें, बेठी पांत मां सूं पातरा भर ल्यावें।
सूतर मांहे वरज्यों तोही नहीं मानें, वले लोकां मांहें साध ज्यूं पूजावें ॥ २२ ॥
गृहस्थ रें घरे मेले पोथी पांना, वले पडिलेह्यां विनां राखें वरस छ मासों।
जीवां रा जाल जमें तिण मांहें, एहवा साध वाजे त्यांरो दुरगत वासों ॥ २३ ॥
श्री पारसनाथ तणी साधवीयां, दोय सों ने छ साधपणो विगारी।
ते भिष्ट हुइ हाथ पग धोई नें, त्यांनें साधवीयां सरधे भेषधारी ॥ २४ ॥
त्यां समकत सहीत साधपणों खोयो, समकत रही हुवें तो देवी हुवें नांहि।
समदिष्टी विमांणीक देवता हुवे छें, त्यांनें साध सरधें ते जमाली रे माहि ॥ २५ ॥
भेषधारी भिष्ट भागल होय बेंठा, ते आप में दोषां रो पार न देखें।
त्यांरी विकलाई देख फिरे लोक त्यांसू, त्यांनें साधवीयां सरधें इण लेखे ॥ २६ ॥
एहवी भागल विराधक नें सरधें साधवीयां, त्यांनें वांद्यां पूज्यां कहें एकंत धर्मो।
त्यांरा विनां वीयावच में धर्म थापें, ते मूला मिथ्याती एकंत भर्मो ॥ २७ ॥
सेलग राय ऋषी ढीलों पस्यो जद, उस्नो कुसीलीयो कह्यों भगवंत।
वीर कह्यों इसडो साध हुवें तो, उतकष्टों रुले तो काल अनंत ॥ २८ ॥
हेलवा निदवा जोग कह्यो सेलग नें, तिणनें वांद्यां वंधे पाप करमो।
तिणरी वीयावच पंथक कीधीं, तिण नें भेषधारी कहे छें धर्मो ॥ २९ ॥
उस्नादिक वांद्यां नसीत रे माहे, च्यार महीनां रो प्राछित आवें।
उस्नांदिक पांचूं दोष सेलग में पावें, तिण ने वांद्यां धर्म मिथ्याती वतावें ॥ ३० ॥
सेलग ने पारसनाथ तणी साधवीयां, यांरा साधपणा सगला रा भागां।
यांरा पूरा भागां विण भागां न सरधें, त्यांनें समकत विहूणा कहिजें नागां ॥ ३१ ॥
यानें कहि कहि ने कितरो एक कहिजें, यांरी सरधा रो छेह्र न आवे वेगो।
यांनें वुधवंत जांण लेसी थोडा में, यांरी खोटी सरधा नें मूठ रो ठेगो ॥ ३२ ॥

ढाल : ६

दुहा

भेषधारी विगडायल जैंन रा, ते भूला सूतर वांच।
उंधा अर्थ करें घणां, त्यांरो विकल माने ले साच ॥ १ ॥
सुध साधां नें निन्व कहे, ले ले सूतर रो नांम।
पोतें केडायत निन्वा तणा, ते पिण खबर नही छें तांम ॥ २ ॥
त्यांरी सुध बुध तो चलती रही, तिण सूं बोलें आल पंपाल।
त्यारे न्याय निरणो घट में नही, तिण सूं भाषे अग्यांनी अलाल ॥ ३ ॥
निन्व कहिजे केहनें, किण नें कहिजे सुध साध।
समचें ओलखाउं दोनूं भणी, त्यारी विरलां परसी लाध ॥ ४ ॥

ढाल

[भव जीवां तुम्हें जिन धर्म ओलखो]

एक धर्म कहे जिण आगना मभे, एक कहे रे धर्म जिण आगना बार।
यामें साची सरधा छे केहनी, किण री भूठी रे सरधा घोर अंधकार।
बुधवंता यामें निन्व कहिजें केहने* ॥ १ ॥
धर्म कहे श्री जिण आगना मभे, ते केडायत रे श्री जिणजी रा जाण।
जिण धर्म जिण आगन्या बारे कहे, ते केरायत रे निन्वा रा पिछाण ॥ बु० ॥ २ ॥
जिण करणी में जिण आगना नही, तिण करणी मे रे साध साभे मूंन।
तिण में एक कहें मिश्र धर्म हवो, एक कहें रे ए तो करणी जबूंन ॥ ३ ॥
साध मूंन साभें पिण बोले नही, तिण करणी नें रे सावद्य जांणें तो ठीक।
मिश्र कहे ते केडायत निन्वां तणा, तेरासीया रे जिम जांणजों तहतीक ॥ ४ ॥
आहार पांणी कपडादिक आंण ने, जिण आग्या सूं रे भोगवें छें सुध साध।
तिण में एक कहें पाप लागे नहीं, एक कहे रे इविरत नें परमाद ॥ ५ ॥
साध आहार पांणी कपडादिक भोगव्या, पाप न कहें रे ते तो जिणजी रा साध।
पाप कहे ते पाषंडी कें निन्वां, त्यारे होसी रे भव-भव मे असमाध ॥ ६ ॥
एक कहे जिण आगना दीयें तिहां, तिण करणी में रे पाप करम लागें नाहि।
एक कहे जिण आगना दीयें तिहां, पाप लागे रे तिण करणी रे माहि ॥ ७ ॥
जिण आगना दीयें तिण करणी मभे, पाप लागो रे न कहें ते साची वात।
जिण आगना सहीत करणी मभे, पाप कहे छे रे तिण रा घट में मिथ्यात ॥ ८ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

एक कहे छें असुध थांनक भोगवें, ते तो साध रे कदे नही वंदणीक।
एक कहे वंदणीक असुध भोगव्यां, यां दोयां में रे किण री सरधा ठीक ॥९॥
असुध भोगवे ते तो वंदणीक नही, आ तो जाणो रे सुध साध री वाय।
तिण ने वंदणीक तो विकल कहें, ते तो चोडें रे निन्वां री पात मांय ॥१०॥
एक कहे नव तत ओलख्यां पछें, दिख्या देई रे भेलो करणो आहार।
एक कहे नव तत ओलख्यां विनां, दिख्या देणी रे ढील न करणी लिगार ॥११॥
नवतत ओलखाय देंणो साधपणो, इम भाखें रे ते तो जिणजी रा संत।
नवतत ओलख्या विनां देंणो कहें, इम भाखें रे ते तो निन्वां री पंत ॥१२॥
एक कहे चोथो वरत भांगें तेह नें, दिख्या देई रे छोटो करणो ताहि।
एक कहे दिख्या देई वडो राखणो, आगा ज्यूं रे वांदणा गण मांहि ॥१३॥
वरत भांगां दिख्या देई छोटो करें, आ तो साची रे सरधा छें ठीक।
वरत भांगाई वडा रो वडो राखीयो, आ निन्वां री रे सरधा जांणों तहतीक ॥१४॥
एक कहें पाप कीधां करावीयां, भलो जांण्यां रे तीनूं करणां छें पाप।
एक कहें पाप कीधां पाप छें, करायां रे दीयों मिश्र धर्म थाप ॥१५॥
पाप कीधा करायां भलो जांणीयां, यां तीनां नें रे पाप कहें ते वीर वेण।
कीधां पाप करायां मिश्र कहें, तिण निन्वां रा रे फूटा अभिंतर नेंण ॥१६॥
एक धर्म कहें छें विरत में, एक कहें रे धर्म अविरत में तांण।
यामें कुण निन्व नें कुण साध छें, यांरी पिण रे कर लीजों पिछांण ॥१७॥
विरत माहें धर्म कहें तेहनीं, सरधा चोखी रे सूतर रे न्याय।
इविरत मांहें धर्म कहें तेहनीं, सरधा खोटी रे निन्वां री छें ताय ॥१८॥
एक कहे देवगुर धर्म कारणे, नहीं हणवा रे छकाय रा जीव।
एक कहे देवगुर धर्म कारणें, छकाय नें रे हणवी निस दीव ॥१९॥
देवगुर धर्म काजे हणवा नही, जीवां री रे छवोंई काय।
इम कहे ते केडायत वीर नां, हणवा कहे रे ते तो निन्वां रा वाय ॥२०॥
एक कहें टोला सूं न्यारा तेहनें, नहीं वांदणा रे विण काढ्यां निकाल।
एक कहे यांरा कह्यां सूं वांदणा, यां दोयां में रे किण भांगी जिण पाल ॥२१॥
टोला सूं न्यारा कीयां तेहनें, नही वादे रे विण काढ्यां निकाल।
तिण धर्म ओलख्यों जिणराज रो, वांद्या तिण रें भांगी जिण वांधी पाल ॥२२॥
एक कहें अवकत फिरे एकलो, तिण एकल नें रे साध सरधणों नाहि।
एक कहें अवकत फिरें एकलो, तिण नें साध रे सरधें पडणों पगां माहि ॥२३॥
अवकत एकल फिरें तेहनें, साध न सरधें ते तो जिणजी रा साध।
अवकत एकल नें साध लेखवें, ते तो निन्व रे भूठों करे विषवाद ॥२४॥

साध नें वांदण जाता थका, मारग मे रे तस थावर री हुवें घात।
तिण रो एक तो पाप लागो कहे, एक कहे रे पाप नही अस मात ॥२५॥
तस थावर मूआ रो पाप लेखवे, ते तो सरधा रे सुध साधा री अटल।
जीव मूआ त्यारो पाप न लेखवे, त्यानें जाणो रे निश्चे निन्वा असल ॥२६॥



रत्न : ६

मिथ्याती री करणी री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहत सिध ने आयरीया, उवभाया सगला साध ।
मुगत नगर ना दायका, ए पांचूं पद अराध ॥ १ ॥
नमूं वीर सासण धणी, सासण नायक साम ।
त्या माथे हाथ देइ करी, सास्त्या घणा ना काम ॥ २ ॥
त्या श्री जिण मुख सूं भाखीया, आगम सार सिधंत ।
त्यांरो हलूकर्मी निरणों कीयों, त्यां पायो छें मारग तंत ॥ ३ ॥
केई सूतर वाचे जिण भाखीया, पिण पूरा मूढ अयाण ।
उंधा उंधा अर्थ करे, ते ववेक विकल समाण ॥ ४ ॥
पेहला गुणठांणा रो धणी, वेंराग मन मांहे आंण ।
दांन सीयल तप भावनादिक, निरवद करणी करें जांण जाण ॥ ५ ॥
तिण करणी नें मूढ मूर्ख कहे, मिथ्याती री करणी नही सुध ।
उणरे संसार वधें करणी कीयां, उणरे प्राकम सर्व असुध ॥ ६ ॥
जो उ घणी घणी करणी करें, तो घणों घणो वधें संसार ।
तिणरी सरधा परगट करूं, ते सुणजो विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अनुंकम्पा जिण आगन्या मे]

केई परकत रा भद्रीक मिथ्याती, वले विनेवंत साधां रा ताहि ।
दया तणा परिणाम छे चोखा, वले मच्छर नही तिणरा घट माहि ।
इण निरवद करणी रो निरणो कीजों ॥ १ ॥
तिणरे घर साधूजी गोचरी आया, ते साध ने देख हुवो हरख अनार ।
सात आठ पग सांह्मों आय ने, सीस नमाय वांद्या वारूंवार ॥ २ ॥
पछे रसोडा घर माहे लेजाए, प्रतिलाभ्यो उसणादिक च्यारूंइ आहार ।
तिणरो असुध प्राकम सरधें अग्यांनी, वले कहें तिणरें वधीयों संसार ॥ ३ ॥
मिथ्याती साधां नें असणादिक देवें, तिणरों तो उ प्राकम असुध जाणे ।
तो पिण उणरें घर जाए अग्यानी, असणादिक किण लेखें आंणें ॥ ४ ॥
वले वस्त्र पातर आहार नें पाणी, साधां ने दीयां जाणे छे वधतो संसारो ।
तेहीज तिणरो असणादिक वेहरें, तो उणरें लेखें उ कांय पाडें छें धाडो ॥ ५ ॥

जिण नें आप जांणें छें निश्चें मिथ्याती, त्यांरों असणादिक जांणी जांणी नें ल्यावें।
असुध प्राकम जांणें छें त्यांरो, तो उणरें लेखें उ ठगों कांय चलावें॥ ६॥
जो मिथ्याती उणने असणादिक देवें, तो ओ तुरत लेवण नें त्यांरी होवें।
उणरी करणी नें प्राकम असुध जांणें छें, तो साध थइ ओरां नें कांय डबोवें।
इण मूढ मती रो निरणों कीजो* ॥ ७॥

ज्यांरों आहार पांणी कपडादिक लेवें, त्यांरें सांप्रत जांणें छें वधतो संसार।
आप रा मुतलब काज ओरां नें डबोवें, धिग धिग छें तिणरो जमवारो॥ इ० ८॥
मन गमतों चोखो चोखो आहार वेंहरायों, वले मही महीं चोखो कपडो वेंहरावें।
तिणरों दांन नें प्राकम असुध जांणें छें, वले तिण हीज दांन नें तेहीज सरावें॥ ९॥
असणादिक नित ल्यावे छें घणा घरां रो, त्यां सगलां रें जांणे छें वधीयों संसार।
नित नित घणां रें ससार वधारें, ते तो नियमाइ निश्चें नही अणगार॥ १०॥
इण री सरधा रे लेखें मिथ्याती रा घर रो, असणादिक वेंहरणों नहीं कांइ।
वले सेज्या संथारो वस्त्र नें पातर, तिण मिथ्याती रो जाबक वेंहरणों नांही॥ ११॥
जो अनेरी सरधा रों उण नें आय पूछे, म्हारों असणादिक थे वेंहरी वेंहरीनें ल्यावों।
थांनें दांन दीयां करणी सुध कें असुध, म्हांरें फल लागें ते जथातथ वतावों॥ १२॥
आप नें भारी भारी म्हें वस्त्र वेंहराया, मनगमतों वेंहरायो म्हें आहार नें पांणी।
म्हें कल्पें ते वस्त आप नें दीधी, म्हें तो आप नें दांन दीयों धर्म जांणी॥ १३॥
आप नें दांन दीयां री सुध करणी हुवें, तो सुध करणी मुख सूं कही आप।
जो सुध नही हुवें तों असुध कहों थे, यां दोयां में एकण री करो थाप॥ १४॥
सुध करणी कह्यां निज सरधा उठें छें, असुध करणी कह्यां तो उ धेखी थावे।
प्रश्न पूछयां रो जाब तो देणी न आवें, जब पुन कहे नें उ पिंडों छुडावें॥ १५॥
जब उ कहे म्हें पुन री तो पूछा न कीधी, थांनें दान दीयां री करणी कहो आप।
भली करणी कह्यां पुन नें धर्म जांणें, भूंडी कह्यां तो जांण सूं एकंत पाप॥ १६॥
थानें दांन दीयां आछी करनी न जांणों, थांनें दांन दीयां करणी जांणों थे भूंडी।
तिण सूं आप करणी हुवे ते बतावो, हिवें मती करों आप गला गोलो।
हूं कहवायां विनां आप ने नहीं छोडूं, मोनें पिण आप निपटम जांणो भोलो॥ १७॥
थांनें दान दीयां आछी करणी कहो, तो हूं जांण सूं थांनें मोटा अणगारो।
थांनें दान दीयां आछी करणी न कहो तो, हूं जाण लेसूं थांने पिण दगादारो॥ १८॥
म्हें थांने दांन दीयों ते करणी, आछी जांणो तो चोड़ें कहिदो आछी।
म्हे तो म्हारे कारण पूछा करी छें, संका कांय आणो थें कहितां साची॥ १९॥
थांनें दांन दीयां री भूंडी करणी छें, तो थे ठग ठग नें म्हारो स्वाधो छें मालों।
थे साध थइ इसरा कांम कीधां, थारों परभव में होसी कूण हवालो॥ २०॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

थानें दान दीया आछी करणी न जाणों, थानें दान दीयां करणी जांणो थे भूंडी ।
वले भूडी करणी कीया पुन बतावों, ते निश्चे न चाले खोटी हूडी ॥ २१ ॥
पुन सरधो थे भूडी करणी मे, तो पाप होसी किण करणी माय ।
भूडी करणी कीयां निश्चे पाप लागे छे, ते पिण थाने समभ्क न काय ॥ २२ ॥
जो इसडो मिले कोइ पूछण वालो, तो पग पग सरधा माहे अटकावें ।
जब अकल विकल थइ उधो बोले, पिण पूछ्या रो जाब पूरो नही आवे ॥ २३ ॥
पेहले गुणठाणे दान साधा नें देइ नें, परत ससार कीधो छे जीव अनत ।
तिण दान रा गुण देवता पिण कीधां, ठाम ठाम सूतर मे कह्यो भगवंत ॥ २४ ॥
सुपातर दान री कोइ करे दलाली, वले हर कोइ देवे सुपातर दान ।
सुपातर दान री कोइ करे परससा, या तीना री आछी करणी कही भगवान ॥ २५ ॥
पेहले गुणठाणे सील पाले छे, वेराग सहीत चोखे परिणाम ।
तिणरो सील असुध जाणे अग्यानी, वले ससार वधीयो जाणे छे ताम ॥ २६ ॥
पेहलें गुणठाणे तपसा करे छे, उपवास वेलादिक चोखे परिणाम ।
वले हरी नीलोतरी त्याग करें छे, ते सगलाई असुध कहे छे ताम ॥ २७ ॥
दांन सील तप तणी भावना भावे, वले तिणने ससार लागे खारो ।
जो उ घणो घणो वेराग करे तो, उ घणो घणो जाणें वधतो ससारो ॥ २८ ॥
निरवद करणी करे पेहले गुणठाणे, तिण करणी ने जावक जाणे असुध ।
इसडी परूपणा करे अग्यानी, तिणरी भिष्ट हुइ छे सुध नें बुध ॥ २९ ॥
पेहलें गुणठाणे निरवद करणी करे छे, तिणरी करणी सराया मे दोषण जाणे ।
अतिचार लागो कहे समकत माही, तिणरो न्याय जाण्या विण मूर्ख ताणे ॥ ३० ॥
निरवद करणी कोइ करे मिथ्याती, तिणरे कहे गुण नीपजे नही काइ ।
तिणने भगवत पिण आगना नही देवे, एहवी कहे छे अग्यानी परपदा माही ॥ ३१ ॥
मिथ्याती री करणी माहे गुण नही जांणे, सरावे तिणने पिण दोष बतावे ।
वले तेहीज मिथ्याती ने सूस करावे, त्यारा वोल्या री परतीत किण विध आवे ॥ ३२ ॥
वले कहि कहि मिथ्याती ने हरी छुडावे, जमीकदादिकना पिण सूस करावे ।
उपवास वेलादिक कहि कहि ने करावे, तेहीज तिण करणी ने असुध बतावें ॥ ३३ ॥
वले मिथ्याती ने उपदेस देईं ने, कुसीलादिक छोडें तो छोडावें ।
राती भोजनादिक रो पिण त्याग करावे, छकाय नें चवदे नेमादिक सीखावे ॥ ३४ ॥
वले वखाण सुणावें छे तिणनें, वले कहि कहि ने तिणनें ग्यान सीखावे ।
संथारो पिण करावे उपदेस देइने, तेहीज तिणरी करणी असुध बतावें ॥ ३५ ॥
निरवद करणी करे पेहले गुणठाणे, तिणरी असुध करणी कहें छे वारूवार ।
वले असुध प्राक्रम जाणे छे तिणरो, वले करणी कीया जाणे वधीयो संसार ॥ ३६ ॥

समकत रो परमाद मिथ्याती री करणी, यां दोयां नें बरोबर कहें छें तांम।
वले खोटा पचखांण कहें छे तिणरा, तिणरी करणी नें जाबक जांणें अकांम ॥ ३७ ॥
इसडी सरधा तांण तांण परूपें, वले तेहीज मिथ्याती नें त्याग करावें।
कांम पड्यां तिणरी करणी तेहीज सरावें, एक धारा विकलां सूं बोलणी नावें ॥ ३८ ॥
निरवद करणी करें समदिष्टी, तेहीज करणी करें मिथ्याती तांम।
यां दोयां रा फल आछा लागें, ते सूतर में जोवों ठांम ठांम ॥ ३९ ॥
निरवद करणी नें मूढ नखेधें, तिण उपर जोड कीधी माधोपुर सहर मझार।
सवत अठारे वरसें सेंताले, चेत सुद छठ नें सुकरवार ॥ ४० ॥

ढाल : २

दुहा

जीव अजीव जाणे नही तेहनें, पेहले गुणठाणे कह्यो जिणराय।
त्यारा पचखांण दुपचखाण कह्या, तिणरो मूढ न जाणे न्याय॥ १॥
पेंहले गुणठाणे विरत न नीपजे, तिण लेखे कह्या दुपचखाण।
पिण निरजरा लेखे पचखांण निरमला, उतम करणी बखाण॥ २॥
पेहलें गुणठाणे करणी करे, तिणरे हुवे छे निरजरा धर्म।
जो घणो घणो निरवद प्राकम करें, तो घणा घणा कटे छे कर्म॥ ३॥
पेहले गुणठाणे दान दया थकी, कीयो छे परत ससार।
थोडासा परगट करू, ते सुणजो विस्तार॥ ४॥

ढाल

[पाखड वधसी आरे पाच मे]

सुलभ थो सुमुख नामे गाथापती रे, तिण प्रतिलाभ्या सुदत्त नामें अणगार रे।
तिण परत ससार कीयो तिण दान थी रे, विपाकसूतर मे छें विस्तार रे।
ए निरवद करणी मे छेजिण आगना रे* ॥ १॥
सुमुख गाथापति ज्यूं दसा जणा रे, त्या पिण प्रतिलाभ्या अणगार रे।
त्यां परत संसार कीयां सगला जणा रे, विपाक मे जूवो जूवो विस्तार रे॥ ए० २॥
जब देवतां वजाइ थी देवदुंदभी रे, तिण दांन रा कीया घणा गुणग्राम रे।
थे मिनष जन्म तणों लाहो लीयो रे, जस कीरत कीधी छे तिण ठांम रे॥ ३॥
केइ मूढ मिथ्याती करें परूपणा रे, मिथ्याती तो न करे परत संसार रे।
जो मिथ्याती दान देवें साधा भणी रे, तिण करणी मे सार नही लिगार रे॥ ४॥
सुमुख ने आदि देइ दसा जणा रे, त्यां दान थी न कीयों परत संसार रे।
ते साध ने देखे ने हरखत हूआ रे, उपसम समकत आइ तिणवार रे॥ ५॥
त्या उपसम समकत थी दसा जणां रे, सगलाइ कीयों परत ससार रे।
ते समकत अतरमुहुरतमे वमी रे, पछेमिनष आउखो बाध्यो तिणवार रे॥ ६॥
इसडी वातां मन सूं उठाय ने रे, दांन री करणी कहें असुध रे।
ते सके नही सूतर उथापतां रे, भिष्ट हुइ छे त्यारी बुध रे॥ ७॥
साप्रत सूतर माहे इम कह्यो रे, दानथी कीयों परत ससार रे।
मिनष रो आउखो बाध्यो दांनथी रे, जोवो विपाक सूतर मझार रे॥ ८॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सुलभ थो विजय नामें गायापति रे, तिण प्रतिलाभ्या भगवंत श्री महावीर रे।
तिण परत संसार कीयो तिण दांनथी रे, दान सूं पांम्यो भवजल तीर रे॥ ९ ॥
आणंद नें सुदंसण विजय नीपरें रे, वले बहुल वाह्मण तिमहीज जाण रे।
त्यां वीर ने दांन देइ च्यारूं जणां रे, परत संसार कीयो छे देता पाण रे॥ १० ॥
यां च्यारू रे सोनइयां री विरखा हुइ रे, पांच दरव परगट्या तांम रे।
तिहा देव वजाइ देवदूवभी रे, यां च्यारां रा कीयां घणा गुणग्राम रे॥ ११ ॥
वले धिन धिन कह्यो छे त्यानें देवता रे, थे सफल कीयों मांनव अवतार रे।
दांन निरदोषण देइ वीर नें रे, मिनष नो जीतब दीयो सुधार रे॥ १२ ॥
जस कीरत कीधी त्यांरी देवता रे, वले मिनषा पिण कीयां घणा गुण ताहि रे।
तिणरो विस्तार कह्यो छेंअति घणो रे, भगोती रा पनरमा सतक रे माहि रे॥ १३ ॥
त्यांने दान दीयो छे मिथ्याती थकें रे, मिथ्याती थकां कीयो परत ससार रे।
इण करणी री जिणजी री छें आगना रे, तिण करणी में अवगुण नही लिगार रे॥ १४ ॥
विजे गायापती आदि च्यारूं जणा रे, त्यां दांन थी न कीयो परत संसार रे।
ते पिण साध ने देखी हरखीया रे, उपसम समकत आइ तिणवार रे॥ १५ ॥
त्यां उपसम समकत पामी थी च्यारूंजणां रे, सगलाइ कीयो परत संसार रे।
देव तणो आउखों बांधीयो रे, ए मिथ्याती नही हूंता तिणवार रे॥ १६ ॥
इसडी वातां मन सूं उठाय नें रे, दान री करणी कहे असुध रे।
ते संके नही सूतर उथापता रे, भिष्ट हुइ छे त्यांरी बुध रे॥ १७ ॥
सांप्रत सूतर मांहे इम कह्यो रे, दांन थी कीयो परत संसार रे।
देव आउखो बांध्यों दांन थी रे, भगोती रा पनरमा सतक मझार रे॥ १८ ॥
घणा मिथ्याती श्री भगवांन ने रे, हरख सूं दीयो निरदोषण दांन रे।
तिण दांन री करणी नें कहे असुध छें रे, त्यां विकलां रा घट मे घोर अग्यांन रे॥ १९ ॥
अनंता तीथंकर हूआ तेहनें रे, त्यांनें हरख सूं दीयों अनता दान रे।
त्यां सगलां री करणी कहे असुध छें रे, ते भवभव में होसी घणा हिरांन रे॥ २० ॥
रेवती वेहरायो विजोरा पाक नें रे, तिण दांन सूं कीयो परत संसार रे।
वले देव आउखों बांध्यों दांन थी रे, ते विजय ज्यूं जांण लेजो विस्तार रे॥ २१ ॥
जिग नें वाडे हरकेसी साध नें रे, व्राह्मणां दीयो निरदोषण दांन रे।
तिण दांन री जस महिमा कीधी देवतां रे, ते सूतर माहें गूंथ्यो भगवांन रे॥ २२ ॥
मिथ्याती अनंता मातर दांन थी रे, निश्चेइ कीयों परत संसार रे।
ए वीर ना वचन उथापें पापीया रे, झूठ बोऊ नें हूआ त्यार रे॥ २३ ॥
सीलें आचार करें सहीत छें रे, पिण सूतर नें समकत तिणरें नाहि रे।
तिणनें आराधक कह्यो देसथी रे, विचार कर जोवो हीया माहि रे॥ २४ ॥

देस थकी तो आराधक कह्यो रे, पेंहले गुणठाणे ते किण न्याय रे।
विरत नही छे तिणरे सर्वथा रे, निरजरा लेखे कह्यो जिणराय रे॥२५॥
जो पेंहले गुणठाणे असुध करणी हुवें रे, तो देस आराधक कहिता नाहि रे।
ते विस्तार भगोती सतकज आठमे रे, ए चोभगी दसमा उद्देसा माहि रे॥२६॥
देस आराधक करणी जिण कही रे, ते करणी छे जिण आग्या माय रे।
कर्म कटे छे तिण करणी थकी रे, तिणने असुध कहे ने बूडो काय रे॥२७॥
तामलीतापस तप कीधो घणो रे, साठसहस वरसा लग जाण रे।
बेले बेले निरतर पारणो रे, वेंराग भावे सुमता आण रे॥२८॥
आहार वेंहरी ने ल्यायो तेहने रे, पाणी सू धोयो इकवीस वार रे।
सार काढे ने कूकस राखीयो रे, एहवो पारणे कीयो आहार रे॥२९॥
तिण सथारो कीयो भला परिणांम सू रे, जब देवदेवी आया तिण पास रे।
त्यां नाटक पाडे विवध परकारना रे, पछे हाथ जोडी करे अरदास रे॥३०॥
म्हे चमरचचा राजध्यानी तणा रे, देवदेवी हूआ म्हे सर्व अनाथ रे।
इद्र हूतो ते म्हारो चव गयो रे, थे नीहाणो कर हुवो म्हारा नाथ रे॥३१॥
इम कहे ने देवदेवी चलता रह्या रे, पिण तामली न कीयो नीहाणो ताय रे।
तिण कर्म निरजरीया मिथ्याती थका रे, ते इसांण इद्र हुवो छे जाय रे॥३२॥
ते देवचवी ने होसी मानवी रे, महाविदेह खेतर मभार रे।
ते साध थई ने सिवपुर जावसी रे, ससारनी आवागमण निवार रे॥३३॥
इण करणी कीधी छे मिथ्याती थके रे, तिण करणी सू घटीयो छे ससार रे।
इद्र हुवो छे तिण करणी थकी रे, इण करणी सूं हुवो एकाअवतार रे॥३४॥
जो तामलीतापस तप करतो नही रे, तो तपसा विण इद्र हूतो नाहि रे।
एकावतारी पिण हूतो नही रे, विचार करे देखो मन माहि रे॥३५॥
जो निरवद करणी मिथ्याती करे रे, ते पिण कर्म करे चकचूर रे।
तिण निरवद करणी ने कहे असुध छे रे, तिणरी सरधा मे कूड कूड मे कूड रे॥३६॥
तामली बालतपसी तेहनी रे, करणी तणो करो निस्तार रे।
ए भगोती सूतर रे सतकज तीसरे रे, पेंहला उद्देसा मे विस्तार रे॥३७॥
असोचा केवली मिथ्याती थकां रे, छठ छठ तप कीयो निरतर जाण रे।
वले लीधी सूर्य साह्मी आतापना रे, बाह दोनूइ उची आण रे॥३८॥
परकत रो भद्रीक ने वनीत छे रे, उपसतपणो घणों छे ताहि रे।
क्रोध मान माया ने लोभ पातला रे, मांन ने मर्द लीयो तिण माहि रे॥३९॥
इद्री नें वस कर लीधी जांण ने रे, वले घणा छे गुण तिण माहि रे।
इसरा गुणा सहीत तपसा करे रे, करमा ने पतला पाडे छे ताहि रे॥४०॥

इम करतां एकदा प्रस्तावें तेहनां रे, आया सुभ अधवसाय परिणांम रे।
वले चढती चढती लेस्या विसुध छे रे, विषय विकार तणी नहीं हाम रे॥४१॥
तदावर्णी कर्म पयउपसम हुवा रे, करवा लागो ते सुध विचार रे।
न्याय मारग री करतां गवेषणा रे, विभंग अनांण उपजें तिणवार रे॥४२॥
जो थोडो जांणे विभग अनांण सूं रे, आंगुल रे असंख्याता में भाग रे।
उतकष्टों जाणे नें देखें तेह सूं रे, असंख्याता जोयण सहस रो भाग रे॥४३॥
वले जांणें विभंग अनांण सूं रे, जीव ने अजीव तणों सरूप रे।
पाखडीयां ने जाण्यां पाडूआ रे, त्याने बूडंता जांण्यां भवजल कूंप रे॥४४॥
सारभी सपरिग्रही जाण्या तेहने रे, संकलेस करता जांण्यां छें तांम रे।
विसुध निरदोषण हुता तेहनें रे, त्याने पिण जांण लीया तिण ठांम रे॥४५॥
इण रीतें पेंहला तो समकत पांमीयो रे, विभंग अनांण रो हुवो अवधि गिनान रे।
पछे अनुक्रमें हुवो केवली रे, पछें गयों पांचमी गति प्रधान रे॥४६॥
असोच्चा केवली हूआ इण रीत सू रे, मिथ्याती थकां तिण करणी कीध रे।
कर्म पतला पड्या मिथ्याती थकां रे, तिण सूं अनुक्रमें सिवपुर लीध रे॥४७॥
जो मिथ्याती थको तपसा करतों नही रे, मिथ्याती थको नहीं लेतो आताप रे।
क्रोधादिक नही पाडतो पातला रे, तो किण विध कटता इणरा पाप रे॥४८॥
जो लेस्या परिणाम भला हुंता नही रे, तो किण विध पामत विभंग अनांण रे।
इत्यादिक कीयां सू हुवों समकती रे, अनुक्रमें पोहतो छें निरवाण रे॥४९॥
पेहले गुणठांणे मिथ्याती थकां रे, निरवद करणी कीधी छें तांम रे।
तिण करणी थी नीव लागी छें मुगत री रे, ते करणी चोखी ने सुध परिणांम रे॥५०॥
असोच्चा केवली री करणी तणो रे, विस्तार भगोती सूतर माहि रे।
नवमां सतक रे उद्देशें इगतीस में रे, तिहा जोय निरणों कर लीजो ताहि रे॥५१॥
समकत विण हाथी रा भव मझे रे, सुसला री दया पाली छे ताहि रे।
तिण परत ससार कीयो दया थकी रे, जोवों पेंहला अधेन गिनाता मांहि रे॥५२॥
मिथ्याती निरवद करणी करतां थकां रे, समकत पाय पोहता निरवांण रे।
तिण करणी नें असुध कहे छें पापीया रे, ते निश्चेंइ पूरा मूढ अयांण रे॥५३॥

ढाल : ३

दुहा

सूयगडाअंग आठमा अधेन मे, दोय गाथा कही तिण माय।
तेवीसमी ने चोवीसमी, तिणरो मूढ न जाणे न्याय॥ १ ॥
जे ततवना अजांण छे, मोटा भाग सहीत।
ते वीर सुभट वाजे लोक में, पिण समकत कर नें रहीत॥ २ ॥
ते करणी निरवद करे, दांन सीलादि निरदोष।
मास खमणादिक तपसा करे, तिणरी करणी कहे सर्व फोक॥ ३ ॥
असुध प्राकम कहे तेहने, करणी कीयां वधे संसार।
कर्म बंध कहे तिणरें सर्वथा, निरजरा नही कहे लिगार॥ ४ ॥
इण विध अर्थ उधा करे, निरवद करणी ने कहे छे असुध।
ते ववेक विकल सुध बुध विना, त्यांरी भिष्ट हुइ छें बुध॥ ५ ॥
तेवीसमी गाथा तणो, तिण मूल न जाण्यो न्याय।
असुध प्राकम कह्यो तेहनो, तिणरो अर्थ सुणो चित्तल्याय॥ ६ ॥

ढाल

[श्री नेम जिणद समोसरया रे लाल]

असुध प्राकम कह्यों तेहनों रे, ते असुध करणी तणो कथन जांण रे।
सुध करणी रो कथन इहा नहीं रे लाल, तिणरी बुधवत करजो पिछाण रे।
सुध सरधा रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
जे खोटी करणी मिथ्याती करे रे, ते जिण आगना बाहिर जांण रे।
ते असुध प्राकम तिणरो कह्यो लाल, तिणसू पाप कर्म लागे आण रे॥ सु० २ ॥
असुध करणी रो असुध प्राकम कह्यो रे, ते विकला ने खबर न काय रे।
तिण सू निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल, तिणनें असुध कहे ताय रे॥ ३ ॥
सावद्य निरवद करणी मिथ्याती करे रे, यां दोनू ने कहे छे असुध रे।
तो उणरी सरधा रो लेखो कीया रे लाल, समकती रो प्राकम सर्व सुध रे॥ ४ ॥
जे ततवतणा केइ जांण छे रे, ते मोटा भाग सहीत रे।
ते वीर सुभट वाजे लोक में रे लाल, ते समकत करने सहीत रे॥ ५ ॥
ते करणी निरवद करे रे, दानसीलादिक निरदोख रे।
मास खमणादिक तपसा करे रे लाल, तिण सूं कर्म तणो हुवे सोख रे॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

निरवद करणी ते सुध प्राकम कह्यों रे, ते जिण आगना माहिलों जांण रे।
शेष करणी असुध प्राकम कह्यो लाल, तिण सूं पाप कर्म लागें आंण रे॥ ७ ॥
ते असुध प्राकम समदिष्टी तणो रे, तिणरो कथन नहीं तिण ठांम रे।
सुध प्राकम मिथ्याती तणो लाल, तिणरो पिण कथन नही छें तांम रे॥ ८ ॥
तिण ठांमें तो कथन इतलोंज छें रे, असुध प्राकम मिथ्याती रो ताम रे।
समदिष्टी रा सुध प्राकम तणो रे लाल, फल वतायो तिण ठांम रे॥ ९ ॥
सावद्य निरवद करणी मिथ्याती तणी रे, यां दोयां रो प्राकम हुवें असुध रे।
तो समदिष्टी री दोनूं करणी तणो रे लाल, प्राकम हो जाअें सुध रे॥ १० ॥
मिथ्याती निरवद करणी करें रे, तिणरी करणी कहें छें असुध रे।
ते ववेक विकल सुध बुध विनां रे लाल, त्यांरी भिष्ट हुइ छें बुध रे॥ ११ ॥
वले मूढ मिथ्याती इम कहें रे, समदिष्टी तणों परमाद रे।
मिथ्याती तणी करणी तणो रे लाल, यां दोयां ने कहे असमाद रे॥ १२ ॥
निरवद करणी मिथ्याती तणी रे, समदिष्टी तणो परमाद रे।
अे दोनूंइ दुरगत रो कारण कहें रे लाल, एहवो कूडों करें छें विवाद रे॥ १३ ॥
आचारंग पाचमां अधेयन रो रे, छठों उद्देसों वताय रे।
भोला नें न्हाखें भर्म में रे लाल, तिणरो उंधो अर्थ वताय रे॥ १४ ॥
आचारंग तिण ठामें तो इम कह्यो रे, सावद्य करणी जिण आगना बार रे।
तिण करणी करण रों उदम करे रे लाल, ते पडीया कुमारग मफार रे॥ १५ ॥
निरवद करणी जिण आगना सहीत छें रे, तिणमें उदम नही छें लिगार रे।
ते पिण कुमारग में पड्या रे लाल, करमां रा वधारण हार रे॥ १६ ॥
अठें कुमारग री करणी कही रे, सनमारग रों कह्यों परमाद रे।
अें दोनूं कुगति रा कारण कह्या रे लाल, ए साची सरध्यां होसी समाद रे॥ १७ ॥
अठें मिथ्याती नें समदिष्टी तणो रे, कथन नही छे लिगार रे।
उठें करणी निखेवी आग्या बारली रे लाल, दुरगति नी पोहचावण हार रे॥ १८ ॥
वले निखेध्यों परमारद नें रे, करणी न करें जिण आगना सहीत रे।
तिणनें दुरगतिनों कारण कह्यो लाल, तिहां जोय लो रूडी रीत रे॥ १९ ॥
करणी जिण आगना माहिली रे, तिहां वीर कही निरदोष रे।
जे करसी ते सुख पावसी रे लाल, आग्या बारें करणी सर्व फोक रे॥ २० ॥
एहवो कथन आचारंग नें मझे रे, तिणरों अर्थ न जांण्यों ताय रे।
तिणसूं निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल, तिणनें कही दुरगति रों उपाय रे॥ २१ ॥
निरवद करणी मिथ्याती करें रे, तिणने कहें दुरगति रो उपाय रे।
समदिष्टी रा परमाद सरिखी कही र लाल, वले पुन बतावे तिण मांय रे॥ २२ ॥

समदिष्टी रा परमाद थी रे, पाप लागें छे आय रे
तो मिथ्याती री करणी मझे रे लाल, पुन क्यूं वतावें ताय रे ॥ २३ ॥
उणरी करणी दुरगति रो कारण कहें रे, तिण लेखें तो पुन नाहि रे।
पुन सूं तो जाओ सुदगति मझे रे लाल, ते पिण निरणों नही घट माहि रे ॥ २४ ॥
मिथ्यात्वी निरवद करणी करे रे, तिणने दुरगति रो कारण कहे मूढ रे।
परमाद कहें अन्हाखी थकां रे लाल, तिण झाली मिथ्यात री रूढ रे ॥ २५ ॥
मिथ्याती दान देवें साधा भणी रे, तिणरें जांणें दुरगति रो उपाय रे।
वले तेहीज वेंहरें तिणरो जाण नें रे लाल, इसडों काय करे छे अन्याय रे ॥ २६ ॥
मिथ्याती देवें वस्त्र पातरा रे, वले देवें असणादिक च्यारू आहार रे।
तिणरें जांणें उपाय दुरगति तणो रे लाल, तो लेवा नें कांय हुवें तयार रे ॥ २७ ॥
घणा मिथ्यात्या रा घर तणों रे, नित्य नित्य ल्यावे आहार रे।
त्यांरे दुरगति वधारें जांण जांण ने रे लाल, त्याने किम कहिजें अणगार रे ॥ २८ ॥
शील पाले मिथ्याती वेराग सूं रे, तपसा करें वेंराग सूं ताय रे।
हरियादिक त्यागे वेराग सू रे लाल, तिणरें कहे दुरगत रो उपाय रे ॥ २९ ॥
इत्यादिक निरवद करणी करें रे, वेराग मन माहे आंण रे।
तिणरी करणी दुरगत रो कारण कहे रे लाल, ते जिण मारग रा अजांण रे ॥ ३० ॥
वले तेहीज मिथ्याती जीव ने रे, उपदेस दे दे वारूवार रे।
कुसील छोडावे तेहने रे लाल, वले तपसा करावण ने त्यार रे ॥ ३१ ॥
वले तिणने छोडावे नीलोतरी रे, वले छोडावें वस्त अनेक रे।
तिणरी करणी रा फल दुरगति कहें रे लाल, त्या विकला मे नही छें ववेक रे ॥ ३२ ॥
निरवद करणी मिथ्याती करे रे, तिणनें कहें दुरगति ने परमाद रे।
ते ववेक विकल सुध बुध विनां रे लाल, बोले छें मिरखावाद रे ॥ ३३ ॥
निरवद करणी ओलखायवा रे, जोड कीधी नेणवा मझार रे।
समत अठारे सेताले समें रे लाल, वेंसाख विद बारस थावरवार रे ॥ ३४ ॥



ढाल : ४

दुहा

मिथ्याती निरवद करणी करें, तिणरें निरजरा कही जिणराय।
तिण माहें संक म राखजो, जोवो सूतर रें मांय ॥ १ ॥
मिथ्याती आछी करणी कीयां विनां, किण विध पामें समकत सार।
सुध प्राकम सूं समकत पांमसी, तिणमे संका म राखो लिगार ॥ २ ॥
धूर सूं तो जीव मिथ्याती थकां, सुणें साधां री वांण।
ग्यांन समकत पाय साधां कनें, अनुक्रमें पोहचें निरवांण ॥ ३ ॥
साधां री संगत कीयां थकां, दस बोलां री प्राप्त जांण।
धुर सूं तो सुणवो सिधंत रो, पछें ग्यांन विगनान पचखांण ॥ ४ ॥
संजम नें आश्रव रहीत पणों, तपसा नें कर्म बोदाण।
नवमो क्रीया रहीत पणों, दसमों सिध निरवांण ॥ ५ ॥
सका हुवें तो भगोती में जोय लो, दूजें सतक पांचमें उद्देस।
सुणीयां सूं समकत पांमसी, इणमें कूड नहीं लवलेस ॥ ६ ॥
जो मिथ्याती री करणी असुध हुवें, वले असुध प्राकम हुवें ताय।
जब सुणवोइ तिणरो असुध हुवें, तो उ समकती कदेय न थाय ॥ ७ ॥
मिथ्याती निरवद करणी करें, तिणनें असुध कहे ते अयांण।
तिणरा जाब कहूं सूतर थकी, ते सुणजों चतुर सुजांण ॥ ८ ॥

ढाल

[जगत गुरू तिसला नदन वीर]

किल्यांण कारणी वारता, सुणीयां सूं जांणें साख्यात।
वले जांणे सुणीयां थकी, अकिल्यांण कारणी वात।
चतुर नर समझों ग्यांन विचार* ॥ १ ॥
किल्यांण ने अकिल्यांण री, सुणीयां सूं दोयां री ठीक होय।
दसवीकालिक चोथा अधेयन में जी, इग्यारमी गाथा जोय ॥ च० २ ॥
मिथ्याती सुणें साधां कनें, पछें करें छें मन में विचार।
निरणो करें घट भितरें, तिण सूं पामें समकत सार ॥ ३ ॥
जो मिथ्याती रो प्राकम असुध हुवें, तो विचारणा सुध नही होय।
असुध प्राकम ने असुध विचार थी, समकत नहीं पामें कोय ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

समकत पामें सुघ विचारीयां, ते निश्चे सुघ प्राकम जाण।
तिण प्राकम ने असुघ कहें, ते तो पूरा मूढ अयांण॥ ५॥
सकडाल पुत्र श्री वीर ने जी, वदणा कीधी सीस नमाय।
वले जायगा माहे उतारीया, पाट पाटला दीघा वेहराय॥ ६॥
तिण दान दीयो श्री वीर ने, मिथ्याती थकें निरदोप।
अनुक्रमे समभ्क श्रावक हुवो, तिण कीयों कर्मा रो सोष॥ ७॥
तिणरा प्राकम ने कहे असुघ छे, वले असुध करणी कहे ताय।
कर्म बंघवा रो कारण कहे, ते तो चोडे भूला जाय॥ ८॥
धर्म करवा ने जाबक न उठीया, धर्म सुणवो न वाछे ताहि।
तिणने पिण धर्म सुणावणो, जोवो आचारग माहि॥ ९॥
जिणरो सुणवा रो असुघ प्राकम हुवे तो, सीखणो पिण असुघ होय।
जब धर्म न सुणावणो तेहने, ग्यान सीखावणो नही कोय॥ १०॥
मिथ्याती निरवद सीखे सुणे, तिणरी करणी जाणे छे असुघ।
तेहीज सुणावे सीखावे तेहने, उणरे लेखे उणरी भिष्ट बुघ॥ ११॥
सोगधीया नगरी बाहिरे, नीलासोग वाग मभ्कार।
तिहां सुखदेव सिन्यासी आवीयो, साथे ल्यायो सीष हजार॥ १२॥
तिण थावरचा अणगार ने जी, पूछ्या प्रश्न अनेक।
त्यारा जाब सुणे हरखत हुवो जी, घट माहें आयो ववेक॥ १३॥
पछे वांणी सुणे हीये सरघ ने, समकत पांमी तिण ठाम।
तिण सजम लीयो एक सहस सू जी, सास्या आतम काम॥ १४॥
तिण प्रश्न पूछ्या मिथ्याती थके, मिथ्याती थके सुणीया जाब।
मिथ्याती थका कीधी विचारणा, तिण सू समकत पायो सताब॥ १५॥
जो मिथ्याती रो सुणवो असुघ हुवे तो, समकत नही पामतो ताम।
तिणरो सुणवारो प्राकम सुघ हूतो, तिण सू समकत पायो तिण ठाम॥ १६॥
खघक नामे सिंन्यासी हूतो जी, सावथी नगरी माय।
तिणने प्रश्नज पूछीया जी, पिंगल नियठे आय॥ १७॥
जब तिणने जाब न उपनो, तिण सू आयो वीर ने पास।
तिणने वीर आगूच वतावीयो, ते सुणने पाम्यो हुलास॥ १८॥
तिण मिथ्याती थकें वाणी सुणे, पाम्यो समकत सार।
श्रीवीर जिणेसर आगले, तिण लीघो सजम भार॥ १९॥
तिणरो सुणवारो प्राकम सुघ थो, तिण सू पामीयो समकत सार।
तिणरा प्राकम कोइ असुघ कहे, ते पूरा मूढ गिवार॥ २०॥

हथणापुर नगर नों वासीयो, सिवराज रखेश्वर जांण।
ते राज छांडे तापस हुवों, तिणनें उपनों विभंग नाण॥ २१ ॥
सातद्वीप समुंदर देखीया, इतलोइज जांण्यों संसार।
असंख धीप समुंदर सुण्या जब, संका पड़ी तिणवार॥ २२ ॥
संका पड्यां इतरोइ देखें नहीं, जब आयो वीर नें पास।
वीर वचन सुणे हीये सरधीया, जब समकत पांमीयो तास॥ २३ ॥
वीर वचन सुण्या मिथ्याती थकां, तो पांमीयों समकत सार।
तिणरो सुणवारों प्राकम सुध छें, तिणमें संका नही लिगार॥ २४ ॥

रत्न : १०

एकल री चौपई

ढाल : १

दुहा

आरंभ जीवी ग्रहस्थी, फिरें त्यांरी नेश्राय।
अणतीर्थी पासथादिक, ते पिण तेहवा थाय॥ १ ॥
केइ वेंरागे घर छोड ने, राचे विषे रस रग
राग धेख व्याकुल थकां, करें व्रत नो भग॥ २ ॥
रित पांमें पाप कर्म में, सावद्य सरणो मांन,
गण छोडी हुवे एकला, कुड कपट री खांन॥ ३ ॥
न्यात लजावें पाछली, वले भेख लजावण हार।
एहवा मानव फिरे एकला, धिग त्यारो जमवार॥ ४ ॥
घणां में रहे सकें नही, ते एकलडा थाय।
कुण कुण दोख तिणमें कह्या, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[समरु मन हरखे तेह सती]

आप छांदें फिरें जे एकला, ते जिण मारग में नही भला।
साध श्रावक धर्म थकी टलीया, संसार समुद्र में कलिया॥ १ ॥
एकलो देख ने लोक पूछा करें, घणो क्रोध करी तिण सूं रे लडे।
कोइ वादें नही तब मांन वहे, करला वचन तिणनें रे कहे॥ २ ॥
कपटाइ घणी छे एकल तणी, सूतर माहे भाखी त्रिभुवन धणी।
वले लोभ घणो छें वोहल पणे, श्री वीर कह्यो छे एकलतणे॥ ३ ॥
बहु आरंभ ने विषे रक्त घणो, संचो करे बजर पाप तणों।
नट नी परें अर्थी भोग तणों, वहु भेख धरे माहे ग्रिधपणो॥ ४ ॥
घणे प्रकारे करें धुरतपणों, संके नही करतो कर्म रिणो।
अधवसाय मन रा अतही घणा, माठा वर्तें छें एकल तणा॥ ५ ॥
वहु[१] कोहे[२] माणे माया[३] लोभ[४] पणो, रते[५] नडे[६] सढे[७] संकप घणो।
ए आठ आंगुण घट में वर्ती, हिंसादिक आश्रवना अर्थी॥ ६ ॥
वले साधु नो लिंग लीयां रहे, कर्मे आछाद्यो एम कहें।
हूं सुध चारितीयो आचारी, सतरे भेदे सजमधारी॥ ७ ॥
रखे कोइ देखें अकार्य करतों, आजीवका अर्थी रहे डरतो।
अग्यांन परमाद दोख भर्यो, निरंतर मूढ मोह्यो कुपंथ पर्यो॥ ८ ॥

जिणधर्म न जांणे अपछांदें रह्या, त्यानें कर्म बांधण नें पिंडत कह्या।
पाप करण सूं अलगा रे नहीं, तिणनें संसार में भमण कही॥ ९ ॥
आचारंग पांचमें अधेनें आख्यों, पेंहलें उदेसें जिण भांख्यो।
ए चिरत कह्या छें एकल तणा, इण अनुसारें अतहि घणा॥ १० ॥
एहवा अपछंदा अवनीत, त्यां छोडी धर्म तणी रीत।
निरलजा भागल विपरीत, किम आवें तिणरी परतीत॥ ११ ॥
उस्नादिक पाचूं रे तणी, संगत वर्जी छे त्रिभुवन घणी।
ए मोख मारग ना छें फंदा, एहवा छे जेन तणा जिंदा॥ १२ ॥
त्यां छोडी लोकीक तणी लजीया, संको नही आणे करतां कजीया।
दोखण काढ्यां तो तपता रहें, ते आया परिसा केम सहें॥ १३ ॥

ढाल २

दुहा

ठाणाअंग माहें कह्यो, एकल रो ववहार।
आठ गुणां सहीत छे, ते सुणजो विसतार॥ १ ॥
सरधा में सेंठो घणो[1], न सके देव डिगाय।
सतवादी[2] प्रज्ञासूर[3] छे, बोले नही अन्याय॥ २ ॥
सूतर ग्रहवा सक्त घणी, मरजादा वत वखांण।
बहुश्रुती[4] नवमा पूर्व तणी, तीजी आचार वथू नों जांण॥ ३ ॥
पांचमे पांचू समरथा[5], तप सूतर एकलपणो जांण।
सत्व करी सेंठो घणो, वले समरथ सरीर वखांण॥ ४ ॥
कलहकारी[6] छठे नही, सातमें धीरज[7] ताहि।
अनुकूल प्रतिकुल उपसग्र सहे, आठमें वीरज[8] अछाहि॥ ५ ॥
ए आठां गुणां सहीत छें, तो करणो उग्र विहार।
तो पिण गुर आग्या दीयां, फिरे एकलमल अणगार॥ ६ ॥
ए आठा गुणा विण एकला फिरे, ते अवक्त मूढ अयांण।
वले आचारंग मे निखेधीयो, ते सुणजो चतुर सुजांण॥ ७ ॥

ढाल

[पाखड बधसी आरे पाच में]

एकल नें मुनी रो भाव नखेधीयो रे, अवक्त ने कह्यो छें घणो विगाड रे।
दुष्ट पराक्रम नो थांनक तेहने रे, दुष्ट कह्यों तिणरो विहार रे।
अवक्त ने नखेध्यों रहणो एकलो रे॥ १॥
धुर सूं तो लोपी अरिहंत आगना रे, एक तो आहीज मोटी खोड रे।
वले नांम धरावें एकल साध रो रे, ए तो छें जिण सासण में चोर रे॥ ए २॥
सूतर अवक्त वय अवक्त पणें रे, तिणरी चोभगी चित्त मे धार रे।
यां दोनू बोलां मांहे काचो नही रे, तो नचित रहो एकल अणगार रे॥ ३॥
कोइ गण माहे रहता पडीयो चूक में रे, तिणने गुर हित सूं दीधी सीख रे।
अवक्त क्रोध तणें वस आय ने रे, वचन न बोलें गुर ने ठीक रे॥ ४॥
कहें सगला साध तो इमहीज चालता रे, त्यानें सीखांमण न दीए कांय रे।
हूं घणां मांहे तो रहे सकूं नही रे, ओघट घाट घणी मन मांय रे॥ ५॥

अभिमांनी आपणपो मोटो मांनतो रे, प्रबल मोह मांहे मुरझाय रे।
कार्य अकार्य सुध सूझे नहीं रे, ववेक विकल ते एकल थाय रे॥६॥
गांमानुगांम विचरतां तेहनें रे, घणी आबाधा उपजे आय रे।
आबाधा एकल ने खमतां दोहिली रे, खमवा रो जांणे नही उपाय रे॥७॥
वीर कह्यों म्हांरा उपदेस थी रे, तोनें सीष एकलपणो म होय रे।
ए तो सरधा तीर्थंकर देव री रे, गण मत छोडो सूतर जोय रे॥८॥
आचारंग पांचमां अधेन में रे, चोथें उद्देसें छे ए भाव रे।
उपसर्ग थी आबाधा उपजे तेहनों रे, विसतार कहूं छूं तिणरो न्याव रे॥९॥

ढाल : ३

दुहा

सास खास ताव तेज रो, रोग उपजें अनेक विध आय।
वले गरढापो आया थकां, विवध पणे दुख पाय॥ १॥
वले परिणाम चल विचल हूआ, किण री हटक न काय।
ज्या एकलपणो आदस्यो, त्यांनें परभव चिंतन कांय॥ २॥
जो साधां री संगत करे, तो वधें घणो वेराग।
आप छांदे एकला फिस्या, जाए संजम थी भाग॥ ३॥
भागण रा उपाय छे अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय।
पिण कहूं थोडी सी वानगी, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ४॥

ढाल

[सल्य कोइ मत राखजो]

ताव चढे कदा आकरो, वाचा रुके बोल्यों न जायो रे।
तिरखा अतुल वाय भिड्कीया, कुण सखाइ थायो रे।
घिग घिग अवक्त एकलो* ॥ १॥
कर्म जोगे कुत्तो डसें, तो ठरले मात्र किम जावें रे।
डावरू जान्हो वालादिक हुवा, आहार पांणी कुण ल्यावे रे॥ घि० २॥
जव केइ कायर सीदावता, आप छादें करे मन जाण्यो रे।
भूख त्रिषा ना पीडीया, खाये ग्रहस्थ नो आंण्यो रे॥ ३॥
केइ आरत ध्यान मांहे मरे, नरक तिरजंच में जायो रे।
उतकष्टों अनंतां भव भमे, चिहूं गति गोता खायो रे॥ ४॥
अस्त्री आय वकारीया, तो लाग जाए तिण चाले रें।
विटल हुवा होसी घणा, किणरी लज्जा सील पाले रे॥ ५॥
विखे अतत पीड्या थका, वेस्यादिक ने घरे जायो रे।
माठी भावना भावीया, कुण आणें तिणने ठायो रे॥ ६॥
अकार्य करतो संकें नही, थोडा सुखा ने काजें रे।
वात चावी हुवा लोक मे, कने बेंसणवाला पिण लाजे रे॥ ७॥
यूं जाणे नर नारीया, एकल दूर ताजीजे रे।
घरे हाण हासो हुवे लोक मे, इसरो काम न कीजें रे॥ ८॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

क्यां सूं प्रकत पाछी वले नही, किण सूं न मिलें सभावो रे।
दुख वेदी हुवें एकला, केइ करे घणो अन्यावो रे॥ ९॥
क्यां सूं पोते आचार पलें नही, वले कूड कपट रो चालो रे।
गण छोडी हुवें एकला, ओरां रें सिर दे आलो रे॥ १०॥
क्यां सूं पोते आचार पले नहीं, पिण समकत राखें चोखों रे।
गण छोडी हुवें एकला, नहीं काढे ओरां में दोखो रे॥ ११॥
पछे मोह कर्म उदे हुवां, कुड कपट चलावे रे।
फिरती भाषा बोलें घणी, अणहूंता आंगुण गावें रे॥ १२॥
गांवां नगरा विचरतां, लोक पूछें हर कोइ रे।
थे साधा मांसूं नीकलें, आतम कांय विगोइ रे॥ १३॥
जब केयक बोले पाधरा, केइ बोलें आलपंपालो रे।
केइ क्रोध करें केइ परजलें, केइ मूह करें विकरालो रे॥ १४॥
केइ दोखण ढांके आपणा, ओरां में वतावें चूकों रे।
पूछ्यां न बोले पाधरो, पूजा सलागा रो भूखो रे॥ १५॥
कोइ लालालोलो करे, आहारदिकनां लपटी रे।
पूरो निकालो काढे नही, अैसा एकल कपटी रे॥ १६॥
आए साधां नें वंदणा करें, मांहें माठा परिणांमो रे।
विनो नरमाइ करें घणी, ए पेट भरण रो कांमो रे॥ १७॥
समभू नर नार वांदे नहीं रे, आगना लोप एकल देखी रे।
आहार पांणी न दे भाव भगत सूं, तो हुवें साधां रो धेखी रे॥ १८॥
छल छिद्र जोवतों रहें, दुष्ट परिणामा दिन काढे रे।
च्यार तीरथ सूं तपतो रहें, मोख तणी विरत वाढे रे॥ १९॥
दगध बीज करें आप रो, वले घालें ओरां रे संका रे।
भर्म में पाडें लोक नें, अैसा छें एकल वंका रे॥ २०॥
चित भरम्यों फिरतो रहें, तिणनें साची सरधा नावें रे।
कदाच जो आइ हुवे, तो थोडा मांहें गमावे रे॥ २१॥
मांगे न खांणो पार को, वले कने साधां रो भेखो रे।
सरधा राखे निरमली, केयक विरला देखो रे॥ २२॥
च्यार तीरथ नें ओर लोक में, फिट फिट सगले कहिवांणो रे।
जो अवगुण जाणें आप में, साची सरधा रो एह अहलांणो रे॥ २३॥
वले अवगुण काढें गुर तेहनां, तो ही कुलख भाव नही आंणें रे।
अभिंतर समकत परगामी, ते तों मोटा उपगारी जांणें रे॥ २४॥

बोध समकत पायो त्या कनें, त्या दीठां हरषत थायो रे।
विनो भगत करें घणी, साची सरघा दीसे तिण मांह्यों रे॥ २५॥
साध साधवी ने सरधा तणा, पूठ पाछें गुण गावे रे।
एकण धारा बोलतां, परतीत इण विध [आवें रे॥ २६॥



ढाल : ४

दुहा

भला फुल री विगरी तका, जोवे विरांणा साध।
ज्यूं साध विगस्यो आचार थी, ते किण विध आवें हाथ ॥ १ ॥
आग्या लोपें सतगुर तणी, तिणनें ओपम छें गलीयार।
आप छांदें एकलो भमें, ज्यूं ढोर फिरें रूलीयार ॥ २ ॥
विगस्यां धान री पाखती, बेठां दुरगंध आय।
ज्यूं एकल री संगत कीयां, बुधवंत अकल पत जाय ॥ ३ ॥
जो एकल नें आदर दीए, तो वधें मिथ्यात।
फूट परें जिण धर्म मे, ते सुणजो विख्यात ॥ ४ ॥

ढाल :

[भव जीवा तुम जिए धर्म ओलखो]

जिण सासण में आग्या वडी, आ तों बांधी रे श्री भगवंत पाल।
अें तो सजन असजन भेला रहें, छांदे चालें रे प्रभु वचन संभाल।
बुधवंता एकल संगत न कीजिए* ॥ १ ॥
छांदो रूंध्यां विण संजम नीपजें, तो कुण चाले रे परनी आग्या मांय।
सहु आप मतें हुवें एकला, खिण भेला रें खिण वीखर जांय ॥ बु० २ ॥
आप मतें एकला हुवां, तो सासण में रे पर जाए घमडोल।
एहवा अपछंदा री करें थापना, ते पिण भूला रे भेद न पायो रही भोल ॥ ३ ॥
ैराग घटें तिणरी पाखती, कें उण संगत रे आवें मूल मिथ्यात।
कें साध सूं उतर जाय आसता, साची सरध्यां रे एकल तणी वात ॥ ४ ॥
अें तो भिडकावें साधां रा समदाय थी, आपस में रे बोलें विरूवा वेंण।
वले छिद्र धरावें एक एक नें, साध दीठां रें बले अतर नेंण ॥ ५ ॥
नकटादिक चोर कुसीलीया, वधी चावें रे आप आपणी न्यात।
ज्यूं भागल ने भागल मिल्या, घणों हरखे रे करें मनोगत वात ॥ ६ ॥
चोरी जारी आदि खूंन अकरज कीयां, राजा पकडे रे करें छवी छेद खोड।
वले देस नीकालो दें काढीयां, त्यांनें राखे रे भील मेंणादिक चोर ॥ ७ ॥
ते विगाड करें तिण देसनों, भीलमेंणा रे त्यानें आंणी साथ।
दुख उपजावे रेंत गरीब नें, धन लेजावें रे करे करें त्यांरी घात ॥ ८ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यांनें असणादिक आदर दीयां, लफरो लागे रे भांग्या राजा तणी आंण।
कदा राय कोपे तो धन खोस ले, जीवा मारे रे तिणरा अें फल जाण ॥ ९ ॥
इण दिष्टते साधा रा समदाय मे, दोखण सेव्यां रे साध काढे गण बार।
ते आप छादें एकला रहे, के भागल रे आगें पाछे फिरें लार ॥ १० ॥
अे तो साधां रा ओगुण बोलता फिरे, मुख मीठा रे खेलें अतर घात।
ओछी बुधवाला ने विगोवता, कूडी कथणी रे कूडी कर कर वात ॥ ११ ॥
त्यांरी भाव भगत संगत कीया, तिण भागी रे भगवत नी आण।
ते तो दुख पामें इण संसार मे, उतकष्टां रे अनंत जामण मरण जांण ॥ १२ ॥
चोर ने तो आहार आदर दीया, इह लोके रे धन जीतव नो विणास।
भेष धारी ने भागल एकल तणी, संगत कीधा रे वधे करम तणी रास ॥ १३ ॥
उसनां कुसीलीया पासथा, अपछंदा रे ससत्तादिक जांण।
त्याने तीरथ मे गिणवा नही, ओ कर लीजो रे जिण वचन परमांण ॥ १४ ॥
अें तो हेलवा निंदवा जोग छें, खिष्ट करवा रे तिणरी ग्याता में साख।
त्यांरो सग परचो करणो नही, सूतर मांहे रे भगवत गया भाख ॥ १५ ॥
या तो अनंत ससार आरे कीयो, इह लोकें रे परलोके हुसी भंड।
त्यानें आहारपाणी उपध दीया, तिणनें आवे रे चोमासी नों दड ॥ १६ ॥
भेला वेस सभाय करवी नही, नही करणो रे त्यारे साथे वीहार।
यांरो संग परचो करता थकां, ग्यान दरसण रे चारित नों विगार ॥ १७ ॥

ढाल : ५

दुहा

केइ भेषधाख्यां रा टोलां थकी, लड भगड नीकलें बार।
ते आप छांदें फिरें एकला, ज्यूं ढोर फिरें रूलीयार॥ १ ॥
तिणने हीर हटक किणरी नही, स इछाचारी फिरें छे सदीव।
वले प्रबल उदें तिणरें मोहणी, एहवा एकल भारी करमां जीव॥ २ ॥
ते नांम धरावें साघ रो, पिण मूंक दीधी मरजाद।
वले वाड लोपी ब्रह्म वरत री, करतों फिरें मूढ उपाघ॥ ३ ॥
आठां गुणां विण एकलों, साघ नें रहिवों नांहि।
श्री वीर जिणेसर भाखीयों, जोवों आगम रे माहि॥ ४ ॥
जे आप छांदें फिरें एकला, श्री जिण वचन विराघ।
जिण लोक लज्या पिण परहरी, तिणनें मूरख सरघें साघ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

बावीस टोलां बाजें त्यांरी आ सरघा, साघां नें एकलो नहीं रहणो रे।
हिवें तेहीज एकल नें साघ थापें, त्यांरी विकलाइ रो कांइ कहणो रे।
एकल भेषधारी रो संग न कीजें॥ १ ॥
जो एकल नें चोडें साघ परूपें, तो लागें लोकां मांहें भूंडी रे।
जो एकल नें गिणें बावीस टोलां में, तो सगला री सरघा बूडी रे॥ २ ॥
त्यां वीर नां वचन तो हेठा मेल्या, तो एकल सूं पीत वांघें रे।
एकल नें कोइ साघ सरघें तिण, आगम उथाप्या आंघे रे॥ ३ ॥
क्यांरों नेव चवें क्यांरी चवें नेवाली, ते तों रहें एकल सूं डरता रे।
जांणें एकल म्हारो उघाड करें ला, तिण सूं संकता रहें लाजां मरता रे॥ ४ ॥
त्यांरा श्रावक श्रावका वांदें एकल नें, त्यांनें इतरो पिण कहणों काठो रे।
थे एकल नें वांदों किण लेखें, गुणें तीखुतों रा पाठो रे॥ ५ ॥
एकल तो जिण आगना बारें, तिणनें वांद्यां तो नहीं छें धर्मो रे।
थे सीस नमाय एकल नें वांदें, कांय वांधों चीकणा करमो रे॥ ६ ॥
इतरी कहेनें एकल री वंदणा छडावें, तो एकल घणों दुख पावें रे।
जब एकल पिण यांरा खोटा खोटा किरतब, चोडें लोकां में वतावें रे॥ ७ ॥

केइ इण कारण डरता थकां भेषधारी, राखें एकल सूं मिलापो रे।
वले उलटी खुसामदी करें एकल री, न करे एकल री उथापो रे॥ ८ ॥
केइ तो भेषधास्त्या रे ओहीज कारण, ते एकल ने उथापे केमो रे।
वले बीजों कारण भेषधास्त्या रे, ते सांभलजो घर पेमो रे॥ ९ ॥
एकला रा श्रावक भेषधास्त्यां नें, साध सरधें वादे पूजे रे।
वले आहार पांणी भावभगत सूं देवें, तिणसूं एकल रा अवगुण न सूझे रे॥ १० ॥
वले एकल रा श्रावक श्रावका पासे,, एकल रा गुण गावे रे।
तेतों पेटभरा इहलोक रा अरथी, एकला ने साध सरधावे रे॥ ११ ॥
मन माहें तों आछों न जाणें एकल ने, पिण मुख सूं खोटो कहणी नावे रे।
पिण निज मुतलब रे काजें भेषधारी, एकल ने नही रीसावे रे॥ १२ ॥
अें तो कूड कपट कर काम चलावे, त्याने पूछ्या करे गालागोलो रे।
यांसूं एकल नें असाध चोडे कहणी नावे, यारे पिण तांबा उपर झोलो रे॥ १३ ॥
कठेंक तो एकल नें साध कहें छे, कठे कहे एकल ने असाधो रे।
यारें कांम पडे जेहवी भाषा बोले, त्यांने किम कहिजे वीर ना साधो रे॥ १४ ॥
जो एकल भेषधास्त्यां रे कांम न आवे, तो तुरत दे तिणने उडायो रे।
खोटो सरधाय नें वंदणा छोडावे, घाले असाध तणी पांत मायो रे॥ १५ ॥
जिण एकल मे पांणी मरे विवध परकारे, ते तो ओरा ने केम उथापे रे।
भागल एकल नें भेषधारी, त्या सगलां नें साध थापे रे॥ १६ ॥
ते एकल भेषधास्त्यां सूं मिलतो चाले, वले करे त्यासूं नरमाइ रे।
आप रा किरतब आपनें सूझे, मन छानी चोरी नही काइ रे॥ १७ ॥
एहवो एकल भागल भेषधास्त्यां सूं, डरतो रहे दिन रातो रे।
वले झूठ बोलें त्यारा अवगुण ढाकें, त्यांरी कूडी करें पखपातो रे॥ १८ ॥
इमहीज भेषधारी भागल एकल सूं, डरता रहे दिन रातो रे।
ते पिण झूठ बोली दोष ढाकें एकल रा, वले कूडी करें पखपातो रे॥ १९ ॥
एकल पिण भेषधस्त्यां रो न करें उघाड, अें पिण न करें एकल रो उघाडो रे।
गालागोलो कनें ठग खावें लोकाने, धिग्रधिग्र त्यारो जमवारो रे॥ २० ॥
कांम पड्यां एकल सूं करें आहार पांणी, काम पड्या उतर जावें भेला रे।
कांम पड्या देवो लेवो करें एकल सूं, काम पडयां वादें किण वेला रे॥ २१ ॥
कांम परजाएं तो भेषधारी एकल सूं, करें बारेंइ संभोगो रे।
एकल पिण भेषधास्त्यां सूं करें संभोग, ते मेल दें सर्व सजोगो रे॥ २२ ॥
कदेक तो एकल सूं करें सभोग, कदेक न करें एकल सूं संभोगो रे।
एकल सूं संभोग करें छें त्यांरा, वरत छें माठा जोगो रे॥ २३ ॥

कदेक तो एकल सूं होय जाएं जूदा, कदेक होय जाएं भेळा रे।
ए साधां रा भेष में प्रतख देखो, जाणें नाचें कुबदी खेला रे॥ २४॥
गधा रा कंठ ने उट वखांणें, उंट रो रूप गधा वखांणें रे।
ए तो दोनूं जणां माहोमां हिलमिलीया, ते तो परमारथ नही पिछाणे रे॥ २५॥
ज्यूं भेषधास्थां नें एकल सरावे, एकल नें भेषधारी सरावें रे।
ए पिण मांहोमां हिलमिल एक हूआ, ठगठग लोकां नें खावें रे॥ २६॥
चोर मांहोमां मिलनें चोरी करें नें, पर धन कुसले ल्यावें रे।
ज्यूं एकल नें भेषधारी मिल चालें, तो भोलां नें ठग ठग खावें रे॥ २७॥
जो चोरां रे मांहोमां फाट पडें तो, पर धन हाथ न आवें रे।
ज्यूं यांरे पिण मांहोमां रे फाट पडें तो, यां आगें पिण कुण ठगावें रे॥ २८॥
एकल नें भेषधारी भेला मिल चालें, ओ प्रतख देखो पोलांणो रे।
ए ठग-ठग नें माल खाजें लोकां रो, त्यांरी बुधवंत करो पिछांणो रे॥ २९॥
भेषधास्थां रा श्रावक नें एकल रा श्रावक, त्यांरा घट मांहें घोर अंधारो रे।
ते साध असाध रा गुण नहीं जांणें, नहीं जांणें साधां रो आचारो रे॥ ३०॥
ते एकल नें पिण साध सरधे, यांरें आ पिण सुध बुध नाहि रे।
समझाया पिण समझें नही भोला, परीया एकल रा फंद माहि रे॥ ३१॥
भेषधास्थां रा श्रावका त्यांरी, सुधबुध जाबक विगडी रे।
ते एकल नें वांदें तीखुतों करनें, मस्तक पगां रे रगडी रे॥ ३२॥
केइ एकल नें भेषधास्थां रा श्रावक, ते पिण एकल रा दोष ढांकें रे।
सुध साधां रे आल देतां अग्यांनी, भारी करमा मूल न साकें रे॥ ३३॥
साधां रे आल दें एकल रा दोष ढांके, ते तों दोनूं परकारें बूडा रे।
ते तों नरक निगोद रा वीद वण्यां छे, चिहूंगति माहें दीस सी भूंडा रे॥ ३४॥
त्यांरा गुर में हूंता दोष वतावें, तो लडवा नें छें तयारो रे।
निकाल काढण री तो वात न कांइ, उलटा करें कजीया ने राडो रे॥ ३५॥
त्यांनें परभव री चिंता नही कांइ, त्यांरा मत माहें गाढा घूलीया रे।
त्यांरे न्याय निरणों तो मूल न दीसें, जेंसा हूंता जिसा गुर मिलीया रे॥ ३६॥

ढाल : ६

दुहा

केइ भेषधारी एकला फिरें, अवक्त मूढ अयांण।
ववेक विकल सुधबुध विना, जिण मारग रा अजाण॥ १ ॥
सगला एकल नहीं सरिखा, सगलां री सरधा नहीं एक।
चलगत पिण त्यांरी जूजूइ, त्यांरा चाला चिरत अनेक॥ २ ॥
केइ एकल छें भोलीया, केइ विकल छे तांम।
केइ एकल छें पेटारथी, केकांरा छे दुष्ट परिणांम॥ ३ ॥
केइ एकल छें धूरत अति घणां, कूड कपट री खान।
केइ एकल छे कुसीलीया, त्यांरो एकंत विषे सूं ध्यान॥ ४ ॥
केइ एकल तपसा करें, लोकां नें ठिगण रे कांम।
ते छानो खाअे तपसा मभे, ते तों थोथा करें छें हगाम॥ ५ ॥
केइ एकल दुष्ट छे अति घणां, निज दोषण देवें ढाक।
मोटां मोटां अकार्य पोते करे, देवे ओरां सिर न्हाख॥ ६ ॥
एकल माहे तो अवगुण घणां, ते पूरा कह्या न जाय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ७ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

केइ एकल कुपातर कुसीलीया छें, ते तो बुगल ध्यानी वणजायो रे।
तिणरे ठांम ठाम वायां सूं परचो, ते करता फिरें विषे रो उपायो रे।
एकल भेषधारी रो सग न कीजे* ॥ १ ॥
बुगला रो ध्यांन तो मछल्या उपर, ज्यूं एकल रे विषे सू ध्यांनो रे।
तिणने भोला लोक तो साधु जाणे छे, पिण पिंडत सू नही छे छानो रे॥ए०२॥
एहवा एकल उतरे खूणें खचूणें, ते जायगा छे अप्रतीतकारी रे।
तिण ठामे रात री अस्त्री रहे तो, लोका ने न पडे ठीक लिगारी रे॥ ३ ॥
वले रात रो आडो जडे सूअे एकल, जब कुण जाणें अस्त्री छे मांही रे।
इण वात रो कुण करे गवेसों, गवेसो कीया मिले त्याने कांइ रे॥ ४ ॥
घणा साध रहे कदा एहवें ठिकाणें, तो अस्त्री नो जोर न लागें रे।
जो एकल एहवे ठिकाणे रहें तो, ब्रह्मव्रत तिणरो भागे रे॥ ५ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जिण एकल रा परिणांम नही छें ठिकाणें, ते उतरें एहवी जायगां रे।
जे उतरें अप्रतीतकारी ठिकांणें, ते तों वरत विहूणा नागा रे॥ ६॥
जिण एकल रे सील पालणो नहीं, ते तों अजोग ठिकांणों जोवे रे।
तिण ठामें निसंक सूं करें अकारज, एकल आतम विगोवें रे॥ ७॥
खूणे खचूणे उतरे ते ठिकांणे, घणी अस्त्रियां तिण तिण ठामें आवे रे।
त्यांने हासा कतुहल री वातां सुणाए, घणी अस्त्रां नें मोह उपजावे रे॥ ८॥
त्यामें भोली बायां केयक इम बोलें, आपां नें ओपरी नही जांणे रे।
सांमीजी रो आपां सूं मोह घणों छें, तै एकल रा चाला चारित न पिछांणें रे॥ ९॥
त्यामें केयक अस्त्री कुपातर हुवें ते, एकल सूं दिष्ट लगावे रे।
तिणरी निजर चेष्टा देख नें एकल, तिणनें विषें सहीत वतलावें रे॥ १०॥
तिणरी लाज सरम छोडाय नें एकल, अकारज करतों नाणे सका रे।
भला कुल री ने भिष्ट करतो नही संके, केइ एहवा छे एकल वका रे॥ ११॥
गाम गांम विचरें तिहां एकल, ठांम ठांम ओहीज चालो रे।
एकल अकारज करें छे तिणरों, कुण काढें नीकालो रे॥ १२॥
टोलावर भेषधारी भेला रहें छे, ते तो साच वाजे भली भांतो रे।
त्यां माहे पिण कोइ कपडादिक देइ, विषें सेवी पूरें मन खांतो रे॥ १३॥
टोलां माहिलों विषे सेवें इण रीते, तो एकल रो काई कहणो रे।
घणां भेलां रहे ते तों संकोच पांमें, तो एकल नें तो एकलो रहणो रे॥ १४॥
घणां भेलां रहें ते तो अकारज करतो, राखें ओरां री संको रे।
एकल भेषधारी अकारज करे ते, निडर थको निसंको रे॥ १५॥
टोला माहिलो कपडो दे करें अकारज, तिणनें पूछें कोइ टोला वालो रे।
थारे कपडों हूंतो किणनें दीधों, इम पूछी नें काढें नीकालो रे॥ १६॥
एकल कपडादिक देइ करें अकारज, तिणने कुण पूछें काढें नीकालो रे।
तिणसूं एकल ने डर किणरो न दीसें, ते विषे रो किम करसी टालो रे॥ १७॥
टोलां माहिलो मोडेरो आवें ठिकांणे, तिणनें पूछें तूं हूंतो कठे रे।
जो एकल मोडों आवे तो कुण पूछें, तिणसूं ओं फिरें छे मनमांने जठे रे॥ १८॥
कुटंबवाली अस्त्री रा परिणांम चालीया, तो सरमा सरमी पिण न करें अकाजो रे।
जो आगें पाछें तिणरे कोइ न हुवें, तो छोड दें सरम नें लाजो रे॥ १९॥
ज्यूं एकल रें आगें पाछें कोइ न दीसें, तिणरे किणरी न दीसे लाजो रे।
तिण एकल रा परिणांम चल जाअें, तो सके नही करतो अकाजो रे॥ २०॥
एकल तो गुर नें गुर भायां सूं न्यारा, वले संभोगी पिण तिणरें नांही रे।
तिणसूं ओर नीकाल काढें क्यांरे तांइ, यांने दोष न लागें कांइ रे॥ २१॥

जो घणां भेला हुवे तो कोइ काढें नीकालो, सारां नें दोष लागतों जाणी रे।
तिण एकल री चिंता नही किणने, तिणरो निकाल काढें कुण तांणी रे॥ २२ ॥
केइ करमां रे जोगें फिरें एकला, दोष सेवें छें विवध परकारों रे।
पिण लोक लज्या सूं सील पालें छें, ते तो उतरे मभ बाजारो रे॥ २३ ॥
ते खूणें खचूणें उतरतो सके, रखें आवें अण हूतो आलो रे।
तो एकल ने कुण साचो जाणे, कुण काढे एकल रो नीकालो रे॥ २४ ॥
यूं जांणें ने केयक एकल भेषधारी, नही उतरे अप्रतीत कार्ये ठामो रे।
ओर ओंगुण तो अनेक छे तिणमें, पिण कुसील रा नही परिणांमो रे॥ २५ ॥
वले संसतों परचो न करे बायां सू, वले न करे आलाप सलापो रे।
केइ तो एकल एहवा फिरे छे, तिणरे कुसील री नही थापो रे॥ २६ ॥
एकल होय ने करे बायां सूं परचो, तिण तो हाथां सू वात विगाडी रे।
तिणरा उघाडा अहलाण दीसे भागल रा, तिण नें कुण कहसी ब्रह्मचारी रे॥ २७ ॥
आजूंणा काल मे पाचमे आरे, केइ अवक्त रहे एकलो रे।
ते तों निश्चेइ छे च्यार तीरथ बारे, एहवो एकल कदेय न भलो रे॥ २८ ॥
इण विध फिरे एकल भेषधारी, तिणमे साध तणी नही रीतो रे।
तिणरी तपसा ने आचारसील वरतरी, किम आवें परतीतो रे॥ २९ ॥
ए तों एकल कुपातर कुसीलीया रे, कह्या उतरवा रा ठामो रे।
हिवे फिरवा रा चिरत कहूं छू एकल रा, ते सांभलजो सुध परिणामो रे॥ ३० ॥
केइ एकल घर घर फिरें एकला, ज्यूं ढोर फिरें रूलीयारो रे।
ते विषे रों वाह्यों फिरें एकलो, तिणरो बुधवत करजो विचारो रे॥ ३१ ॥
केइ एकलो पातरो घाले पडला में, फिरें छे घर घर बारो रे।
ते तो विषे विकार रो पीडीयो एकल, करतों फिरें बाया रों दीदारो रे॥ ३२ ॥
बाया ने दरसण देवा रो नांम लेवे छे, ते पिण भूठ बोले छें तामो रे।
बायां ने देखण री चावना पोतें, तिणसू घर घर फिरें इण कांमो रे॥ ३३ ॥
जो बाया रें चावना दरसण री छे, तो बाया आय दरसण करसी रे।
जो एकल रे चावना बाया देखण री, तो एकल घर घर फिरसी रे॥ ३४ ॥
तिण एकल नें कोयक इम पूछे, थे क्यूं फिरो घर घर आमो रे।
थे आहार पांणी वेहरता न दीसो, ओर थारे काइ कामो रे॥ ३५ ॥
जब एकल कहे बायां ने दरसण देवा, घर घर फिरू जाणें उपगारो रे।
ओर तो मांहरे काम न कोइ, इम कहिनें उतर जाअे पारो रे॥ ३६ ॥
निरलज घर घर फिरें एकलो, बायां ने दरसण देंतो रे।
आ चलगति खोटी प्रतख दीसे, ए अजोग एकल रो पेंतो रे॥ ३७ ॥

बायां नें दरसण देवा घर घर फिरणो, आ तों सुध साधांरी नहीं रीतो रे।
आ तों रीत काढी छे एकल भागल, ते तों उघाडी दीसें विपरीतो रे॥ ३८॥
कोइ गरढी गिलांण छें तपसण बाइ, कोइ करती जांणें पचखांणो रे।
इत्यादिक कोइ उपगार जाणें तो, कारण पडीया दरसण देवा जांणो रे॥ ३९॥
घर घर फिरें बायां नें दरसण देवा, ते तों सूतर में नहीं पाठो रे।
दरसण देवा नें फिरें घर घर एकलो, तिणरो सील आचार छें माठो रे॥ ४०॥
दरसण देवा ने फिरें घर घर एकलो, ते पिण गोचरी री वेला टालो रे।
अकाल वेला में फिरे घर घर एकलो, ओं प्रतख दाल में कालो रे॥ ४१॥
एकल घणां घरां फिरें खोज भांगण नें, दरसण देवा रों ले ले ओटो रे।
विवध पणें चाला चारित करें नें, करें निसांणें चोटो रे॥ ४२॥
जो उणहीज घर जाअें दरसण देवा, तो पडजाअें हाथां सूं कूरो रे।
ओर बायां पिण मांहोमां माडें किचाकिच, वले करे एकल रों फितूरो रे॥ ४३॥
जो एकल विकलां नें मूंड करें चेला, त्यांनें तो म्हेलें तिण गांमो रे।
आप तों एकलो परगांवां जाअें, बायां नें दरसण देवा कांमो रे॥ ४४॥
एकल चेला ने राखें ठिकाणें, एकलो जाअें परगांमो रे।
ते पिण जाअें बायां नें दरसण देवा, तिणरा कुण जांणें सुध परिणांमो रे॥ ४५॥
दरसण देवा बायां नें जाअें एकलो, चेलां राखें ठिकांणें रे।
पांच सात रात तिहां रहे एकलो, तिणनें ब्रह्मचारी कुण जांणें रे॥ ४६॥
लखण तो उणरा ओ ही जांणें, कें केवल ग्यांनी जांणें रे।
छदमस्थ तों बारलो ववहार देखी, खोटो जाणें छें तिणनें अलांणें रे॥ ४७॥
एहवा धूरत केइ एकल भागल, त्यांरी कुण करसी प्रतीतो रे।
तिण एकल नें कोइ साधु जांणें, ते भव भव में होसी फजीतो रे॥ ४८॥
एकल घर घर फिरें कुवेला, किण सूं करे विषें री वातो रे।
किण किण सूं करें अंग कुचेष्टा, किण किण रें फेरें मस्तक हाथो रे॥ ४९॥
छोटी डावरीयां रे माथें हाथ फेरें, ते तों मोह उपजावण कामो रे।
जो तुरणी रा माथा उपर हाथ फेरें, जब तो दीसें विषें रा परिणांमो रे॥ ५०॥
जो उण लखणी कोइ बाइ हुवें तों, ते तों वात न काढें बारें रे।
एकल सूं हिलमिल करे अकारज, उ विगरयो ओरां नें विगाडे रे॥ ५१॥
कोई जातवंत कुलवंत हुवे बाई, ते तों कर दें एकल रों उघाडी रे।
जाणें रखे मोंने आल आवें अणहूंतों, तिण सूं आ तो कहिनें हुवे न्यारी रे॥ ५२॥
जब एकल कहें मोने आल देवे छें, जब आ पाडें एकल नें कूडो रे।
वले कहें एकल नें थे भूठ बोलों ला, तो इधकों होसी वले फितूरो रे॥ ५३॥

ए वात सुणे एकल रा श्रावक श्रावका, तो उलटा मांडें तिणसूं कजीया रे।
वले बदी करे दरबारा ताइ, त्यां .छोडी लोकीक री लोजीया रे॥ ५४॥
तिणने भेला होय दबकावे अग्यांनी, देदे अणहूता दाबा रे।
म्हांरा गुरां नें तूं आल देवें छे, वले करे लोकां में हाबा रे॥ ५५॥
तिणनें अनेक परकारें करी तें डरावे, तिणरो कर कर लोका मे फितूरो रे।
त्यारे निरणो काढण री तो वात न कांइ, खपे छे बोलावण कूडो रे॥ ५६॥
जांणे इण आगा सू झूठ बोलाए, उतारा गुरा रो आलो रे।
पिण इसरी तो विकलां रे मन मे आवे, आपां काढां इणरो नीकालो रे॥ ५७॥
तिणमें कोयक बाइ काची हुवें ते, डरती थकी झूठ बोलें रे।
जब विकल जाणें गुर रो आल उतरीयो, पिण अभितर री आंख न खोले रे॥ ५८॥
जो केयक बाइ गाढी हुवें हीया री, वले साची हुवें साहस पूरो रे।
तिणनें एकल रा श्रावक श्रावका पूछें, तो डरती न बोलें कूडो रे॥ ५९॥
तिणसूं धेष धरे पिण निकाल न काढे, यारे दोष ढाकण री रीतों रे।
एहवा मत ग्राही मानव मत माहे घुलीया, त्यारे न्याय तणी नही नीतो रे॥ ६०॥
अैं तो दोष जांणे तोही दाबे राखे, जाणे लागे लोका माहे भूंडी रे।
वले पड जाअे ला म्हारा मत में विखेरो, तो जाबक जायला वात बूडी रे॥ ६१॥
इम जाणे ने एकल रा दोष ढाके, नही काढे तिणरों नीकालो रे।
एकल रें बदले झूठ बोली ने, आतमा नें लगावे कालो रे॥ ६२॥
वले एकल घर घर फिरें तो अग्यानी, साता पूछें बाया री रे।
त्यारे सुखीअे सुखी त्यारे दुखीअे दुखी हुवे, वरग वहें छे आछा खांया री रे॥ ६३॥
साता पूछे वायां सूं माया मोह बाधे, त्यांसूं कर कर गमती वाता रे।
जे विकल बायां तिणने गुर जाणे, ते करें एकल री पखपातां रे॥ ६४॥
जो गृहस्थ री साता साघ पूछे तो, ते तों साध निश्चे अणाचारी रे।
तिण अणाचारी ने गुर जांण वादे, ते गया जमारो हारी रे॥ ६५॥
कोइ गृहस्थ बाइ भाइ मादो हुवे तो, त्यारी फिर फिर पूछें समाधो रे।
एहवो विकल एकल भेषधारी, ते तो निमाइ निश्चे असाधो रे॥ ६६॥
ए तों एकल रो विषे विकार बतायो, थोडीसी कही विकलाइ रे।
हिवे लोलपणा री विध कहूं एकल री, ते सामलजो चित्तलाइ रे॥ ६७॥

ढाल : ७

दुहा

केइ खावा पीवा रों अति लोलपी, ते घणां भेलो रहें केम।
गण छोडी एकलो फिरें, तिणरे खावा रों ध्यांन नित नेम ॥ १ ॥
आप छांदे एकल गोचरी करें, ते बुगल ध्यांनी बण जाय।
ताजे आहार तूटों परें, लांबों देख्यां तुरत फिर जाय ॥ २ ॥
एकल जांणे आहार नितकों करूं, तो न मिलें सरस आहार।
तपसा करूं तों आहार ताजों मिलें, वले जस फेलें लोक मभार ॥ ३ ॥
इम जांणी एकल तपसा करें, तिणरी तपसा री किसी परतीत।
तिणरी विकलाइ वेंहरण तणी, दीसें घणी विपरीत ॥ ४ ॥
रस ग्रिधी री तपसा तणी, परतीत आवें केम।
तिणरी वेंहरण री विध परगट करूं, ते सुणजो धर पेम ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आग्या में]

एकल नें आखी रोटी जवां री वेंहरावें, जब तों घणां गाढ सूं लेवें बटको।
जो लाडू सेरेक वेंहरावें एकल नें, तो तुरत वेंहरी नें करजावें गटको।
एकल भेषधारी रा चारित ओखलजो* ॥ १ ॥
आखी रोटी न लेवें नें बटको लेवें, ते तो आखो लाडू वेंहरें किण लेखें।
बटका रें लेखें तो डली लेणी लाडू री, आपरी सरधा सांह्यो क्यूं नही देखें ॥ए० २॥
आखी रोटी न लेवें नें बटको लेवें, तिणरो भेद भोली बायां नहीं जांणें।
आहार थोडो वेंहर्‍यो तिणसूं गुण गावें, तिणरो परमारथ पूरो न पिछांणें ॥ ३ ॥
आतो घर घर फिरें आछा आहार नें रिगतों, तिण तो आछे आहार खांणे चित्त दीधो।
ते जवां री रोटी आखी किम खावें, तिणसूं जवां री रोटी रो बटको लीधो ॥ ४ ॥
किणरेइ घरे तो बटकोइ न लेवें, गाला गोलों करें जवां री रोटी देख।
आगलें घर गयां आहार चोखों देवें तों, प्रतिपूर्ण आहार लेवें वशेख ॥ ५ ॥
कोइ तो बाइ कहें म्हांरे बटको लीधों, कोइ कहें म्हांरे मूल न लीयों आहार।
ते तों मिल मिल नें एकल रा गुण गावें, ते एकल रा चावा चारित न जांणें लिगार ॥ ६ ॥
यांरें दया रा लाडू जांणें तिण ठामें, उरला घर छोडी नें तिण घर जावें।
तिहां एकल नें बाइ लाडू वेंहरावें, तो भावें जिता एक घर नां ल्यावें ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जब रोटी रो तों बटको बटको वेंहरें, लाडू वेंहरावे तो लेवे भरपूर।
बटको बटको वेहस्यो तिणसूं महिमा वधारे, ते तो समझ पड्या विण वोले कूर॥ ८ ॥
किणरे खरच विवाह रा लाडू वच्यां हुवे, तिण ने आपरो रागी दातार जाणे।
ओर दातार छोडी ने तिण घर जावें, खपे जिता एकण घर रा आणे॥ ९ ॥
पारणें पारणें तिणहीज घर जावे, वोहत लाडू वेहरावे छे जिहा ताई।
लाडू पूरा हुआं पछें जावें आगा ज्यूं, तिण री भोला ने खवर पडे नही कांई॥ १० ॥
जवा री रोटी रो तो बटको वेहरे, लाडू वेहरावे तो लगाय दे झीको।
ताजा आहार उपर तो तूटो पडे छे, एहवा एकल ने कदेय म जाणो नीकों॥ ११ ॥
जवां री रोटी रो तो बटको लेवे, गोहा री देवे तो लेवे दोय च्यार रोटी।
वले फिरतों फिरतो ताजा घर सोझे, आ एकल री चलगत देखलो खोटी॥ १२ ॥
घणा लाडू वेहस्या तो दोष न कोइ, गोहां री रोटी घणी वेहस्या दोष नांही।
दोष तो छें आहार असुध वेहस्या मे, के दोष छे लोलपणा रे माही॥ १३ ॥
घणी रोटी वेहस्यां कोइ दोषण जाणे, घणा लाडू वेहस्या कोइ दोषण जाणे।
ते मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल, ते पीपल बांधी मूरख ज्यूं ताणे॥ १४ ॥
जवां री रोटी रो तो बटको वेंहरे, ताजो आहार देवे तो लेवें भरपूरो।
वले वेरांगी वाजें बटको वेहस्या सूं, एहवा कपटी रो वेराग कूडी फितूरो॥ १५ ॥
आखी रोटी न वेंहरें नें बटको वेहरे, जांणे आछो आहार मिलसी ओर ठाम।
इण कारण एकल घणां घरां भटकें, ताजो ताजों आहार गवेषण काम॥ १६ ॥
आखी आखी रोटी वेहस्यां थोडा घरा मे आवे, जब विगे सुखडी पिण थोडीज आवे।
दूध दही पिण थोडोइज आवें, जव थोडा सूं एकल संतोष न पावें॥ १७ ॥
तिणसूं घर घर रोटी रो बटको वेंहरें, जव तो वीस तीस घरां वेहर ल्यावे।
जब विगें पिण आवे छे घणां घरां नों, सुखडी दूध दही अें पिण घणां आवे॥ १८ ॥
विगें सुखडी घणी खावां हुवें राजी, वले टाल राखे छे त्यारा दातार।
सरस आहार रे कारण घणां घरा भटके, तिणरे किणरी हटक न दीसें लिगार॥ १९ ॥
केइ धूरत एकल छें मायावीया कपटी, ते तो कूड कपट कर काम चलावे।
ते एकंत आछों आहार खावा रें ताइ, तिणसूं बटको बटको वेहरी नें ल्यावे॥ २० ॥
जिण गांव में थोडो आहार मिलतों जाणे, तो जवां री रोटी वे हरे दोय च्यार।
जब लांबो पातलों आहार न छोडें, जांण नें अणोदरी न करे लिगार॥ २१ ॥
केइ एकल महिमा वधारण काजें, तपसा कर लोकां माहे पमावे।
वले तपसा जणाय ताजो आहार ल्यावे, पछे छाने छानें तपसा माहे खावे॥ २२ ॥
किणही कनें तो कपडादिक देवें, किणही रे घर मेले सुखडियादिक सार।
अथवा कोइ बाइ हुवें रागण एकल री, ते छानें छानें देवे एकल नें आहार॥ २३ ॥

कोइ एकल राखें आप तणा थांनक मे, ते मेल दे एकत गुप्त ठिकाणें।
ते तों रातेवासी राखें तपसा में खावें, एहवा एकल रा चारित तो केवली जाणें॥ २४॥
एकल कहे मोंने वीस वरस हुआं छें, निरंतर बेलें बेलें पारणो करतां।
तिणरों डील तों दीसे आगा जिम पुष्टों, वले थाको नही वीहार करतां विचरतां॥ २५॥
जो बेलें बेलें पारणो कहें निरंतर, तो पिण हीणों कुमलाणो दीसे नांही।
तिणरी तपसा री परतीत किण विध आवें, कोइ चतुर विचार देखों मन मांही॥ २६॥
तिणरो डील पिण दीसे चिलका करतो, वले लोही ने मांस तूटा दीसे नांही।
चाल तों पिण दीसे सेठों थकों एकल, तिणरे तपसा रा लखण न दीसे काई॥ २७॥
तिणरा सरीर रो गोलों दीसें एक धारा, वले बल प्राकम पिण तिणरो दीसे छें गाढो।
बेला तेला तिणरा किण विध कहीजें, पेट में पिण परीयों न दीसें खाडो॥ २८॥
इणरा डील तणा अेलांण देखतां, तपसा रो अंस न दीसें लिगार।
एहवा एकल भागल छें भेषधारी, ते तों निश्चेइ छें जिण आगना वार॥ २९॥
एकल री तपसा री नही परतीत, वले एकल रा सील री नही परतीत।
तपसा नांम लेवें छे ठाण लोकां नें, एहवा एकल होसी भव भव में फजीत॥ ३०॥

ढाल ८

[सैवो रे साध सयाणा]

के कासूं तो घणा भेलो रहणी न आवे, तिणसूं फिरे एकलो आपे।
ते सुध साधा ने पिण कहे असाध, ते करे एकल री थाप रे। भवीयण।
जोवो हिरदय विचारी, थे छोड दो तिणरी लारी रे। भवीयण।
एकल छे जिण आगना बारी* ॥ १ ॥
केइ विषे रा बाया फिरे एकला, तिणसूं घणा भेलो रहणी नावे।
वले खावा रो ग्रिधी रसनो लोलपी छे, घणा मे केम खटावे रे ॥ए०२॥
ज्याने साध सरधे त्यासू न रहे भेला, आप छादे फिरे एकलो।
एहवो भागल फिरे एकलो, तिणने कदेय म जाणजो भलो रे ॥ ३ ॥
अनेक टोलाघर फिरे छे त्याने, साधु सरधे वादे कर जोड।
त्यासू भेलो न रहे ने फिरे एकलो, तिणमें जाणजो मोटी खोड रे ॥ ४ ॥
घणा भेला रह्यां परतो दीसे उघाड, तिणसूं एकला फिरे अधर्मी।
तिणरा अहलाण तो उघाडा दीसे, जाणीजे साचेलो कुकरमी रे ॥ ५ ॥
तिण एकल ने पूछे थे टोलो काय छोडयों, जब एकल वोले छे आमो।
म्हे ढीला जाणे ने छोडया छे त्याने, म्हारे नही छे घणा सू कामो रे ॥ ६ ॥
मो सरीखो जे कोइ आय मिले तो, जब तो करू तिणने चेलो।
जो मो सरीखो कोइ नही मिले चेलो, तो आपरे मेले रहू एकलो रे ॥ ७ ॥
इम कहि कहि एकल आपो जणावे, ते पिण बोले बध न काई।
तिण एकल ने विकल मिले चेला, त्याने पिण मूड लेवे माही रे ॥ ८ ॥
ओ कहितो मो सरीखा ने करसू चेलों, तिण मूड लीया विकला ने माही।
ओ पिण भूठ उघाडो एकल रो, ते पिण विकला ने खबर न काई रे ॥ ९ ॥
थे पेहला कहिता हू चेलो करूं तो, मो सरीखो करसू सुवनीत।
हिवे चेलो कीया भोला विकला ने, थारा बोल्या री किसी परतीत ॥ १० ॥
एहवा चतुर विचक्षण श्रावक हुवे तो, इम पूछ करे तिणने खिष्ट।
भारीकरमा मूढ श्रावक त्याने, गुर मिलीयो एकल भिष्ट ॥ ११ ॥
एकलपणा रो खोज भागण ने, विकला ने मूड कीया भेला।
जो उणरा श्रावक ने समझ पड़ें तो, तुरत करें तिणरी हेला रे ॥ १२ ॥
चेला ने रात रा न्यारा राखे, आप रात रो रहे एकलो।
तिण एकल री अपरतीत दीसें उघाडी, एहवो एकल कदे नही भलो रे ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

तिण एकल रा चेला ववेक विकल छें, त्याने इतरी समझ छें नाही।
म्हारो गुर म्हासू रात रो रहें एकलो, किसा मुतलब रें ताइ रे॥ १४॥
एहवा कुकरमी फिरे एकल, तिणरें कुकरम रो छें चालो।
ते चेलो करें तो ही रहें एकलो, ते नही संकें लगावतों कालो रे॥ १५॥
एहवां एकल गयें कारले हुआ अनंता, अनंता होसी आगमीयें कालो।
केइ वरतमान कालें पिण एहवा छें एकल, तिणरो कुण काढें नीकालो रे॥ १६॥
एकल रा चारित तो एकल जांणें, के केवलग्यांनी रह्या जाणों।
छदमस्थ तो अहनांणां सूं जांणें, कोइ आप म लेजो तांणों रे॥ १७॥
केइ भेषधारी फिरे एकला, अपछंदा अवक्त मूढ।
तिणने पिण साध सरधें केइ भोला, कर कर कूडी रूढ रे॥ १८॥
ओ तों साध सरधें छें अनेक टोलां नें, त्यांनें वादें छें सीस नमाय।
वले त्यांसू पिण संभोग करें छें, वले मुख सू करें गुण ग्रांम रे॥ १९॥
त्यासू भेलों पिण रहे नही एकल, रहें एकलडो न्यार।
गामां नगरा पिण फिरें एकलो, वले करें एकलडो वीहार रे॥ २०॥
ओ किण कारण फिरे एकलडो, ते तों भोलां नें नही ठीक।
तिणरा कूड कपट नें दोष सेवण री, कुण करें तहतीक रे॥ २१॥
तिण एकल माहे अनेक अवगुण छें, वले कूडकपट रो भंडार।
ते एकल रहे छें सगला थी डरतों, रखें करें म्हांरो उघाड रे॥ २२॥
विण कारण फिरें घर घर एकलो, पातरो लेइ हाथ।
अवसर देखनें एकल पापी, फेरें बाया रे माथें हाथ रे॥ २३॥
घर घर फिरतो तपसा जणावें, ताजो आहार पिण गली आवें।
पछें पारणा रे दिन तिण घर सेती, ताजों आहार ताकी ल्यावें रे॥ २४॥
तिण एकल री सील आचार तपसा री, भोला करसी परतीत।
कोइ चतुर विचक्षण डाहा होसी ते, एकल नें जाणें विपरीत रे॥ २५॥
केइ क्रोधी कषाइ लोलपी होसी, ते फिरसी एकला।
वले विषे तणा वाया फिरें एकलो, एहवा एकल कदेयन भला रे॥ २६॥
ठांम ठांम सूतर माहें वीर नषेद्यों, साध नें एकलो रहणों नाहीं।
केइ एकल नें साध सरधें ने वांदें, ते पडीया मोटां फंद मांही रे॥ २७॥
इम साभल नें उत्तम नर नारी, एकल दूर तजीजें।
उत्तम साध हुवें सुध आचारी, त्यानें हरख सहीत गुर कीजें रे॥ २८॥
इण पाचमें आरें फिरें एकलो, ते नीमाइ निश्चें मिथ्री।
ते ववेक विकल जिण आगना बारें, तिणनें साध न सरधे समदिष्टी रे॥ २९॥

रत्न : ११

जिनाग्या री चौपई

ढाल : १

दुहा

श्री जिण धर्म जिण आगना मझे, आगना बारें नही जिण धर्म ।
तिण सूं पाप कर्म लागें नही, वले कटे आगला कर्म ॥ १ ॥
केइ मूढ मिथ्याती इम कहें, जिण आगना बारें जिण धर्म ।
जिण आगना माहे कहे पाप छे, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ २ ॥
जिण आगना बारें धर्म कहें, जिण आगना माहे कहे पाप ।
ते किण ही सूतर मे चाल्यों नही, यूं ही करें मूंढ विलाप ॥ ३ ॥
केइ कहें धर्म तिहां देवा आगना, पाप छें तिहां करां नखेद ।
मिश्र ठिकांणें मून छें, एह धर्म नो भेद ॥ ४ ॥
इसडी करें छें परूपणा, ते करें मिश्र री थाप ।
ते बूडा खोटों मत बांध ने, श्री जिण वचन उथाप ॥ ५ ॥
केइ मिश्र तो मानें नही, माने हिंसा में एकंत धर्म ।
ते पिण बूडा छे बापडा, भारी करें छें कर्म ॥ ६ ॥
जिण धर्म तो जिण आगना मझे, आगना बारें नही धर्म लिगार ।
तिणरी साख सूतर री दे कहूं, ते सुणजो विस्तार ॥ ७ ॥

ढाल

[जीव मोह अणुकम्पा न आणीये]

आग्या मे जिण धर्म जिणराज रो, आगना बारे कहे ते मूढ रे ।
ववेक विकल सुध बुध विनां, ते बूडे छें कर कर रूढ रे ।
श्री जिण धर्म जिण आगना मझे* ॥ १ ॥

ग्यान दर्शण चारित ने तप, ए तो मोख रा मारग च्यार रे ।
या च्यारा में जिणजी री आगना, यां विना नही धर्म लिगार रे ॥ श्री २ ॥

यां च्यारा महिला एक एक री, आगना मागे श्री जिण पास रे ।
तिण ने देवें जिणेसर आगना, जब उ पिण पामें मन मे हूलास रे ॥ ३ ॥

या च्यारां विण मांगें कोइ अगना, तो जिणेसर साझे मूंन रे ।
जिण आगना विण करणी करे, ते करणी जाबक जबून रे ॥ ४ ॥

वीसां भेदां रूके कर्म आवता, बारे भेदां कटें बांध्या कर्म रे ।
त्यांरी देवे जिणेसर आगना, ओहीज जिण भाख्यो धर्म रे ॥ ५ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

कर्म रूकें तिण करणी में आगना, कर्म कटें तिण करणी में जांण रे।
यां दोय करणी विनां नही आगना, ते सगली सावद्य पिछांण रे॥ ६ ॥
देव अरिहंत नें गुर साध छें, केवलीयें भाख्यो ते धर्म रे।
ओर धर्म में नही जिण आगना, तिण सूं लागें पाप कर्म रे॥ ७ ॥
जिण भाख्या में जिण आगना, ओर रो भाख्यो ते ओर जाण रे।
तिण सूं सुद गत जायें नही, पाप कर्म लागे छें आंण रे॥ ८ ॥
केवली भाख्यो धर्म मंगलीक छें, ओहीज धर्म उत्तम जाण रे।
सरणों पिण लेणों इण धर्म रो, तिणमें जिण आगना परमांण रे॥ ६ ॥
ठांम ठांम सूतर में देखलों, केवली भाख्यों ते धर्म रे।
मूंन सार्भें तिहां धर्म कह्यों नहीं, मूंन सार्भें तिहां पाप कर्म रे॥ १० ॥
मूंन साभणीयों धर्म माठो घणों, भेष धार्यां परूप्यों तांण रे।
खांच खांच बूडें छें बापडा, सूतर रा मूढ अजाण रे॥ ११ ॥
धर्म नें सुकल दोनूं ध्यांन में, जिण आग्या दीधी वारूंवार रे।
आरत रूद्र ध्यांन माठा बेहूं, यांनें ध्यावें ते आग्या बार रे॥ १२ ॥
तेजू पदम सुकल लेस्या भली, त्यांमें जिण आग्या नें निरजरा धर्म रे।
तीन माठी लेस्या में आग्या नहीं, तिण सूं बंधे पाप कर्म रे॥ १३ ॥
भला परिणांम में जिण आगना, माठा परिणांम आग्या बार रे।
भला परिणांमा निरजरा नीपजें, माठा परिणांमा पाप दुवार रे॥ १४ ॥
भला अधवसाय में जिण आगना, आग्या बारें माठा अधवसाय रे।
भला अधवसाय सूं निरजरा हुवें, माठा अधवसाय सूं पाप बंधाय रे॥ १५ ॥
ध्यांन लेस्या परिणांम अधवसाय, च्यारूं भलां में आग्या जांण रे।
च्यारूं माठा में जिण आगना नहीं, यांरा गुणां री कीजो पिछांण रे॥ १६ ॥
च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या, च्यार सरणा कह्या जिणराय रे।
ए सगला छें जिण आगना मझे, आग्या विण आछी वस्त न काय रे॥ १७ ॥
सर्व मूल गुण उत्तरगुण, देस मूल उत्तर गुण दोय रे।
यां दोनूं गुणां में जिण आगना, आगना बारे गुण नहीं कोय रे॥ १८ ॥
अर्थ परमअर्थ जिण धर्म छें, उवाइ सूयगडाअंग मांय रे।
तिण मांहे तो श्री जिण आगना, सेख अनर्थ में आग्या न कांय रे॥ १६ ॥
सर्वविरत धर्म साध तणों, देसविरत श्रावक रो धर्म रे।
यां दोनूं धर्म में जिण आगना, आग्या बारें तो बंधसी कर्म रे॥ २० ॥
उजल धर्म छें श्री जिणराज रो, ते तो श्री जिण आग्या सहीत रे।
मुगत जावा अजोग साध कह्यों, ते जिण आगना सूं विपरीत रे॥ २१ ॥

आग्या लोपी चालें छांदें आप रें, ते ग्यांनादिक धन सूं ठालो थाय रे।
आचारंग अधेन दुसरे, जोवो छठा उदेसा मांय रे॥ २२॥
आग्या सूं करूं ते धन मांहरो, एहवो चिंतवें साधु मन मांय रे।
आगना विण करवो जिहाइ रह्यों, रूडो बोलवो पिण नही कांय रे॥ २३॥
आग्या मांहिलो ते धर्म मांहरों, ओर सर्व पारको थाय रे।
आचारंग छठा अधेन मे, दूजे उदेसें कह्यो जिणराय रे॥ २४॥
आगना मांहें संजम ने तप, आगना में दांन परमाण रे।
आगना रहीत धर्म आछों नही, जिण कह्यो पलाल समांण रे॥ २५॥
आश्रव निरजरा रो ग्रहण जूदो कह्यों, ते जाणसी जिण आग्या रो जांण रे।
आचारंग चोथा अधेन में, पेंहले उदेसें जोय पिछांण रे॥ २६॥
निरवद धर्मी चतुरविध संघ छे, ते आग्या सहीत वांछें अनुष्ठान रे।
ते आचारंग चोथा अधेन में, तीजे उदेसें कह्यो भगवांन रे॥ २७॥
तीर्थंकर धर्म कीधो तको, ते मोख रो मारग सुध वेस रे।
ओर मोख रों मारग को नही, पांचमें आचारग तीजे उदेस रे॥ २८॥
जिण आगना बारली करणी तणो, उदम करें अग्यानी कोय रे।
आग्या माहिली करणी रो आलस करें, गुर कहे सीष तोने दोनूं म होय रे॥ २९॥
कुमारग तणी करणी करे, सुमारग रो आलस करे कोय रे।
दोनूं कारण दुरगत तणा, आचारंग पांचमो धेन जोय रे॥ ३०॥
जिण मारग रा अजांण ने, जिण उपदेस रो लाभ न होय रे।
ते आचारंग नां चोथा अधेन में, तीजा उदेसा मे जोय रे॥ ३१॥
जो दांन सुपातर नें दीयों, तिणमें श्री जिण आग्या जांण रे।
कुपातर दांन में आगना नही, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण रे॥ ३२॥
साध विनां अनेरा सर्व नें, दांन न दे साध माठो जाण रे।
दीधां भमण करें संसार मे, तिणसूं साधां कीया पचखाण रे॥ ३३॥
सूयगडाअंग नवमां अधेन में, तेवीसमी गाथा जोय रे।
वले दीधां भागे वरत साधु रा, जिण आगना पिण नही कोय रे॥ ३४॥
पातर कुपातर दोनूं ने दीयां, विकल जांणे दोया मे धर्म रे।
धर्म होसी सुपातर दांन में, कुपातर नें दीयां पाप कर्म रे॥ ३५॥
खेतर कुखेतर श्री जिणवर कह्या, चोथें ठांणें ठांणाअंग मांय रे।
सुखेतर में दीयां जिण आगना, कुखेतर में आग्या नही कांय रे॥ ३६॥
आहार पांणी नें उपधादिक, साध देवे गृहस्थ नें कोय रे।
तिणनें चोमासी डड नसीत मे, पनरमें उदेसें जोय रे॥ ३७॥

गृहस्थ नें दांन दे तिण साध नें, प्रायछित आवें छें कीधां अधर्म रे।
तो तेहीज दांन गृहस्थ दीयें, त्याने किण विध होसी धर्म रे॥ ३८ ॥
असंजम छोडें संजम आदर्यो, कुसील छोडें हूवो ब्रह्मचार रे।
अकलपणीक अकारज परहरे, कल्प आचार कीयो अंगीकार रे॥ ३९ ॥
अग्यांन छोडें ने ग्यांन आदर्यो, माठी किरीया छोडी माठी जांण रे।
भली किरीया ने साधां आदरी, जिण आग्या सूं चतुर सुजांण रे॥ ४० ॥
मिथ्यात छोडे समकत आदर्यों, अबोध छोडें नें आदरीयो बोध रे।
उनमारग छोडे सनमारग लीयों, तिणसूं आतम होसी सोध रे॥ ४१ ॥
आठ छोड्या ते जिण उपदेस सूं, पाप कर्म तणो बंध जांण रे।
जिण आगना सूं आठ आदर्या, तिणसूं पांमें पद निरवांण रे॥ ४२ ॥
ठांम ठांम सूतर में देख लो, जिण धर्म जिण आग्या में जांण रे।
ते मूढ मिथ्याती जांणें नही, यूंही बूडें छें कर कर तांण रे॥ ४३ ॥
हूं कहि कहि नें कितरो कहूं, आग्या बारें नही धर्म मूल रे।
आग्या बारे धर्म कहें तेहनी, सरधा कण विण जांणों धूल रे॥ ४४ ॥

ढाल : २

दुहा

केइ साधु वाजे जेंन रा, ते कूड - कपट री खान।
ते आगना बारें धर्म कहे, त्यांरा घट माहे घोर अग्यांन ॥ १ ॥
त्याने ठीक नही जिण धर्म री, जिण आग्या री पिण नही ठीक।
त्याने परिवार ववेक विकल मिल्यो, त्यामे बाजे पूज महिढीक ॥ २ ॥
ते वडा उट ज्यूं आगें चलें, लारें चालें जेम कतार।
ते बोहला वूडें छे बापडा, बडा बूढां री लार ॥ ३ ॥
हिवे वले वशेखे जिण आगना, ओलखजो बुधवांन।
तिणरा भाव भेद परगट करूं, ते सुण सुरत दे कान ॥ ४ ॥

ढाल

[बालम मीरा हो]

साध सामायक वरत उचरें, तिणमें सावद्य रा पचचाण।
तेहीज सावद्य गृहस्थ करें, तिणमे श्री जिण धर्म म जाण ॥
श्री जिण धर्म जिण आगना तिहा* ॥ १ ॥
श्रावक सामायक पोसो करे, तिणमे पिण सावद्य रा पचखांण।
तेहीज सावद्य कामा छूटो करें, तिणमे पिण जिण धर्म म जाण ॥ श्री० २ ॥
धर्म कहें साध जिण आगना मझे, आग्या बारें धर्म कहे मूढ।
तिण श्री जिण धर्म न ओलख्यो, तिण झाली मिथ्यात री रूढ ॥ ३ ॥
जिण धर्म री जिण आगना दीये, जिण धर्म सिखावे जिणराय।
आग्या बारे धर्म किण सिखावीयो, इणरी आग्या देवे कुण ताय ॥ ४ ॥
केइ आगना बारे मिश्र कहें, केइ धर्म पिण कहे आग्या बार।
तिणने पूछीजे ओ धर्म किण कह्यों, तिणरो नाम चोडे तूं पार ॥ ५ ॥
इन मिश्र ने धर्म रो कुण धणी, इणरी आग्या कुण दे जोड्यां हाथ।
देव गुर मूंन साझे न्यारा हूवा, उणरी उतपत रो कुण नाथ ॥ ६ ॥
केइ वेस्या रा पुत्र ने पूछा करें, थारो मा कुण ने कुण तात।
जब ओ नाम बतावे किण तात रो, ज्यूं आ मिश्र वालां री छे वात ॥ ७ ॥
वेस्या रा अग रो उपनों, तिणरो कुण हुवे उदीरी ने बाप।
ज्यूं आग्या बारे धर्म ने मिश्र री, जिण धर्मी कुण करसी थाप ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वेस्या रा अंग रो उपनो, उण लखणों हुवे उदीरी नें बाप।
ज्यूं जिण आग्या बारें धर्म नें मिश्र री, केइ करें छें पाषंडी थाप॥ ९ ॥
बाप विण बेटो निश्चें हुवें नहीं ज्यूं जिण आगना विण धर्म न होय।
जिण आग्या होसी तो जिण धर्म छे, आगना विण धर्म न कोय॥ १० ॥
कोइ कहे मांहरी मा तो छें बांझडी, तिणरो हूं छूं आतम जात।
ज्यूं मूर्ख कहें जिण आगना विनां, करणी कीधां धर्म साख्यात॥११॥
मा विण बेटा रो जनम हुवें नही, जनमे ते वांझ न कोय।
ज्यूं आग्या विण धर्म हुवें नहीं, जिण आग्या तिहां पाप न होय॥१२॥
घूघू पंखी ने चोर दोनूं भणी, गमती लागें अंधारा री रात।
ज्यूं भारी करमा जीव तेहनें, जिण आग्या बारलो धर्म सुहात॥१३॥
काग नीबोली में रित करे, भंडसूरा रें मिष्टो आवें दाय।
ज्यूं काग भडसूरा जेहवा मांनवी, रीझें आग्या बारली करणी मांय॥१४॥
चोर परदार सेवण कुसीलीया, ते तो सेरी जोवे दिन रात।
ज्यूं आग्या बारें धर्म सरधायवा, उंधी कर कर अग्यांनी वात॥१५॥
दुष्ट जीव मंजारा नें चीत रा, छल सूं करें पर जीवां री घात।
एहवो दुष्ट मिश्र सरधा रो धणी, छल सूं घालें विकलां रे मिथ्यात॥१६॥
सतगुर री आग्या मांनें नही, ते तो अपछंदा नें अवनीत।
ज्यूं कोइ जिण आग्या विण करणी करे, ते करणी पिण छें विपरीत॥१७॥
विगडायल हुवां न्यात बारे करे, ते विगडायल फिरें न्यात रें बार।
जेहवो धर्म जिण आग्या बारलो, तिणमें कदे मत जांणो भली वार॥१८॥
न्यात बारें ते न्यात माहें नही, तिणनें नहीं बेंसाणे एक पांत।
ज्यू जिण आग्या विण धर्म अजोग छें, कीयां पूरीजें नहीं मन खांत॥१९॥
जो आग्या विण करणी में धर्म छें, तो जिण आग्या रो कांम न कोय।
तो मन मांनी करणी करसी तेहने, सगली करणी कीयां धर्म होय॥२०॥
जिण आग्या बारली करणी कीयां, पाप नही लागें नें धर्म थाय।
तो किण करणी सूं पाप नीपजें, तिण करणी रो तूं नांम बताय॥२१॥
ग्यान दरसण चारित नें तप, ए च्यारूंइ छें आगना मांय।
यां च्यांरा माहें तो धर्म जिण कह्यो, यां विनां ओर नाम बताय॥२२॥
इम पूछ्यां रो जाब न उपजें, झूठ बोले वणाय वणाय।
विकलां नें विगोवें छें पापीया, जिण आग्या बारें धर्म सरधाय॥२३॥
जिण धर्म जिण आग्या बारें कहें, ते पिण छें जिण आगना बार।
इण सरधा सूं बूडें छे बापडा, ते भव भव में होसी खुवार॥२४॥

जिण आगना बारे धर्म कहे, ते विगडायल जैंन रा जाण।
त्यारी अभितर फूटी छे मांहिली, ते अधारा ने कहें भाण॥२५॥
जिण आगना विण करणी करे, ते तो दुरगतना आगेवाण।
जिण आग्या सहीत करणी कीयां, तिण सूं पांमे पद निरवांण॥२६॥
आग्या बारे धर्म कहे तेहनी, जोड कीधी खेरवा मझार।
सवत अठारें चालीसे समे, असोज विद पांचम थावरवार॥२७॥

ढाल : ३

दुहा

केइ पाखंडी जैंन रा, साध नांम धराय।
ते पाप कहैं जिण आगना मझे, कूडा कुहेत लगाय ॥ १ ॥
आहार पांणी साध भोगवें, ते श्रीजिण आगना सहीत।
तिण मे परमाद नें इविरत कहें, त्यांरी सरधा घणी विपरीत ॥ २ ॥
वले वसत्र पातर कांबलो, इत्यादिक उपध अनेक।
ते पिण जिण आगना सूं भोगवें, त्यांनें पाप कहें ते विगर ववेक ॥ ३ ॥
त्यां श्रीजिण धर्म न ओलख्यो, जिण आगना पिण ओलखी नांहि।
तिणसूं अनेक बोलां तणों, पाप कहे जिण आगना मांहि ॥ ४ ॥
कहे नंदी उतरें तिण साध नें, आगना दे जिण आप।
ते प्रतख हिसा देख लो, जिण आगना छे पिण पाप ॥ ५ ॥
इत्यादिक बोल अनेक में, आगना दे जिणराय।
तिहां हिसा हुवें छें जीव री, तिण सूं पाप लागें आय ॥ ६ ॥
इम कहि कहि जिण आगना मझे, थापे छे पाप एकंत।
हिवें ओलखाउ जिण आगना, ते सुणजों मतवंत ॥ ७ ॥

ढाल

[मगध देस को राजा राजे]

जे जे कारज जिण आगना सहीत छें, ते उपयोग सहीत करें कोय।
जे कारज करतां घात जीव तणी हुवे, तिणरों साध नें पाप न होय रे। भवीयण।
जोवो हिरदय विचारी, थे कांय करों रूढ हीया री रे। भवीयण।
जिण आगना सुखकारी ॥ १ ॥

जीव तणी घात हुवें साध थी, तिणरों साध नें पाप न लागे।
जिण आगना पिण लोपी न कहीजें, वले साध रो वरत न भागें रे ॥ भ० जि० २ ॥

ए इचर्य वाली वात उघाडी, काचां रे हीयें केम समावें।
ज्यां जिण आगना ओलखी नही पूरी, ते जिण आग्या में पाप बतावें रे ॥ ३ ॥

नंदी उतरें जब सुध साधां नें, आगना दे जिण आप।
जों नंदी उतरें त्यांने पाप हुवें तो, आगना दीधी त्यांने पिण पाप रे ॥ ४ ॥

छदमस्थ साध नंदी उतरें त्यांनें, केवली आगना दें सोय।
पोतें पिण केवली नदी उतरें छें, पाप होसी तो दोयां नें होय रे ॥ ५ ॥

जे नदी उतरे छे केवलग्यांनी, त्यानें पाप न लागें, लिगार।
तो छदमस्थ नें पाप किण विध लागें, या दोया रों छें एक आचार रे॥६॥
छदमस्थ ने केवली नंदी उतरें जब, दोया सू हुवे जीवा री घात।
जो जीव मूआ त्यांरी हिंसा लागे तो, दोया नें लागे परणातिपात रे॥७॥
केवल ग्यानी नदी उतरे त्याने, पाप न लागे कोय।
तो छदमस्थ साध नदी उतरे जब, त्यांने पिण पाप न होय रे॥ ८ ॥
कोइ कहे केवली ने पाप न लागें, नदी उतरता जोग सुध।
पिण छदमस्थ नें पाप लागें नदी रो, ए प्रतख वात विरुध रे॥ ९ ॥
जिण विध केवली नदी उतरे जिम, पिण छदमस्थ उतरे जो नाहि।
तो खामी छे तिणरे इरज्या सुमत में, पिण खांमी नही किरतव माहि रे॥ १० ॥
ते खांमी पडे ते अजांण पणे छे, इरियावही पडिकमण री थाप।
वले इधकी खामी जाणे इर्या सुमत मे, तो प्राछित ले उतारे पाप रे॥ ११ ।
साध नदी उतरे ते किरतब, सावद्य म जांणो कोय।
जो सावद्य हुवे तो सजम भागे, ते विराधक री पात होय रे॥ १२ ॥
आगे नदी उतरतां अनता साधां ने, उपनो केवलग्यांनो।
ते नंदी माहे आउखो पूरो करने, गया पाचमी गति परधांनों रे॥ १३ ॥
कोइ कहे साध नदी उतरे ते, इतरी हिंसा रो छे आगार।
तिणरो पाप लागे पिण व्रत न भागे, इम कहे ते मूढ गिंवार रे॥ १४ ॥
जो साध रे हिंसा रो आगार हुवे तो, नदी उतरतां मोख न जावे।
हिंसा रो आगार ने पाप लागे जब, चवदमोइ गुणठाणो नावे रे॥ १५ ॥
कोइ कहे नदी उतरे जब साधने, लागे असक हिंसा परीहार।
तिणरो प्राछित विण लीया सुध नही छे, इम कहे तिणरेंई अधार रे॥ १६ ॥
जो नदी उतस्यां रो प्राछित विण लीधा, साध सुध न थावे।
तो नंदी माहे साध मरे तो असुध, ते मोख माहे क्यूं जावें रे॥ १७ ॥
साध नंदी उतस्यां माहें दोष हुवे तो, जिण आगना दे नाहि।
जिण आगना देतां पाप नहीं छे, थे सोच देखो मन मांहि रे॥ १८ ॥
नंदी उतरे त्यारो ध्यांन कीसो छें, किसी लेश्या किसा परिणांम।
जोग किसा अधवसाय किसा छें, भला भूंडा री करो पिछांण रे॥ १९ ॥
ए पांचूं भला छें तो जिण आगना छे, माठा में जिण आग्या न कोय।
ए पांचूं माठा सूं पाप लागे छे, भलां सूं पाप न होय रे॥ २० ॥
छदमस्थ ने केवली नंदी उतरे जब, लारें छदमस्थ केवली आगें।
छदमस्थ उतरें केवली री आग्या सूं, त्यानें पाप किसे लेखें लागें रे॥ २१ ॥

जिण सासण नें च्यार तीर्थ मांहें, जिण आगना छें मोटी।
कोइ जिण आगना मांहें पाप वतावें, तिणरी सरधा घणी छें खोटी रे॥ २२॥
दवरो दाधो पड्यों जाय जला में, पिण जल में लागी लाय।
तो किसी ठोड करे ठंडाई, किसी ठोड साता हुवे ताहि रे॥ २३॥
ज्यूं जिण आगना मांहें पाप हुवें तो, किणरी आगना मांहे धर्म।
किणरी आगना पाल्यां सुद गति जावें, किणरी आग्या पाल्यां कटें कर्म रे॥ २४॥
छाटां आवे तिण मांहे साघ, मातरो परठें दिसां जावें।
त्यांनें पिण छे जिणजी री आग्या, तिणमें कुण पाप वतावें रे॥ २५॥
साधु राते लघू बड़ी नीत दोनूंई, परठण जावें अछायां।
वले समझाय करण राते थांनक वारें, जावे आवें अछायां माह्या रे॥ २६॥
इत्यादिक साधु रे राते कांम पड़ें जब, अछायां जावें नें आवें।
त्यांनें पिण छे जिणजी री आग्या, तिणमें कुण पाप वतावें रे॥ २७॥
राते अछायां अपकाय पडें छें, त्यांरी घात साव थी थाय।
ओ पिण न्याय नंदी जिम जांणों, पाप नही जिम आगना मांय रे॥ २८॥
नंदी मांहें वेंहती साववी नें, साध राखे हाय समाय।
तिण मांहे पिण छें जिणजी री आग्या, तिण मांहें पाप किसी पर थाय रे॥ २९॥
इरजा सुमत चालंतां साघनें, कदा जीव तणी हुवे घात।
ते जीव मूंआ रो पाप साघ नें, लागे नहीं अंसमात रे॥ ३०॥
जो ईर्या सुमत विण साधु चाले, कदा जीव मरें नही कोय।
तो पिण साघ नें हिंसा छकाय री लागी, पाप तणो बंघ होय रे॥ ३१॥
जीव मूंआ तिहां पाप न लागो, न मूंआ तिहां लागो पापो।
जिण आगम संभालो जिन आगना जोवो, जिण आग्या में पाप म थापो रे॥ ३२॥
जब केइ कहें गृहस्थ हाल्यां चाल्यां विण, साधां नें केम वेंहरावें।
हालण चालण री तो नहीं जिण आग्या, चाल्यां विण वेंहरावणी नावे रे॥ ३३॥
बेंठो हुवें तो उठ वेहरावें, उभो हुवें तो बेंठ वेंहरावें।
बेसण उठण री तो नही जिण आग्या, बारमो वरत किम नीपजावे रे॥ ३४॥
जो जिण आगना बारे पाप हुवें तो, हालण चालण रो पाप थावें।
साधां ने वेंहराया रो धर्म ते चोडे, कोइ इसडी चरचा ल्यावें रे॥ ३५॥
कोइ कहे चालण री जिण आगना नांहीं, तो ही चाल वेंहरायो रो धर्म।
जिण आगना विण चाल्यों तिणने, लागो नही पाप कर्मो रे॥ ३६॥
इण विघ कूहेत लगावें अग्यांनी, धर्म कहें जिण आगना बारो।
हिवें जिग आगना मांहें धर्म सरघण रा, जाब हीया में धारो रे॥ ३७॥

मन वचन काया रा जोग तीनूंई, सावद्य निरवद जांणो।
निरवद जोगां री श्री जिण आग्या, तिणरी करों पिछांणो रे ॥ ३८ ॥
जोग नांम व्यापार तणो छे, ते भला नें भूंडा व्यापार।
भला जोगां री जिण आगना छे, माठा जोग जिण आगना बार रे ॥ ३९ ॥
मन वचन काया भली परवतावो, गृहस्थ ने कहे जिणराय।
ते काया भली किण विध परवरतावें, तिणरो विवरो सुणों चित्त ल्याय ॥ ४० ॥
निरवद किरतब मांहे काया परवरतावे, तिण किरतब नें काय जोग जांणो।
तिण किरतब री छें जिण आग्या, किरतब ने करो अगेवांणो रे ॥ ४१ ॥
साधां नें आहार हाथां सूं वेंहरावे उठ बेस वेंहरावे कोय।
ते वेंहरावण रों किरतब निरवद, तिणरी श्री जिण आगना होय रे ॥ ४२ ॥
निरवद किरतब गृहस्थ करे त्यानें, आगना दे जिणराय।
ते किरतव तो काया सूं करसी, पिण न कहे चलावो थे काय रे ॥ ४३ ॥
निरवद किरतब 'री आगना दीधां, पाप न लागे कोय।
हालण चालण री आगना दीधां, गृहस्थ सूं संभोग होय ॥ ४४ ॥
बेंसो सूओ उभां रहो ने जावो, गृहस्थ ने साध न कहें आंम।
दसवीकालिक सातमें अधेने, सेंतालीसमीं गाथा में तांम रे ॥ ४५ ॥
उभां रो किरतब बेठा रो किरतव, किरतव करणो कहें जिणराय।
पिण बेसण उठण रो न कहें गृहस्थ ने, ते विचार जोवो मन मांय रे ॥ ४६ ॥
निरवद किरतव री आगना दीधां, निरवद चलिवो ते माहे आयो।
किरतव छोड नें चालण री आग्या दे, तो गृहस्थ रो संभोगी थापो रे ॥ ४७ ॥
गृहस्थ रे दुवारे पड्यो कपडादिक, जब साध सूं जाणी नावे माहि।
जब कोइ गृहस्थ भेलो करें कपडादिक, साध ने मारग देवा ताहि रे ॥ ४८ ॥
साधां नें मारग देवा रो किरतव, ते किरतब निरवद चोखो।
जो कपडादिक रे कांम भेलो करे तो, सावद्य कांम सदोखो रे ॥ ४९ ॥
तिण सूं साध कहें गृहस्थ ने, मोने जागां दो जावां माय।
कपडो भेलो करों सांवटने, इसडी न काढे वाय रे ॥ ५० ॥
गृहस्थ रो उपध करें आगो पाछो, बेंसवा सूवादिक रे काम।
ते पिण किरतव निरवद जाणों, नही उपधि उपर परिणांम रे ॥ ५१ ॥
केइ श्रीजिण आगना बारें अग्यांनी, धर्म कहें छें तांम।
भोला लोकां ने भर्म में पाडें, लेई अनेक वोलां रो नांम रे ॥ ५२ ॥
श्रावक री मांहोमांहि करें वीयावच, वले साता पूछे नें पूछावे।
त्याने श्रीजिण आगना मूल न दीसें, तिण मांहें धर्म वतावें रे ॥ ५३ ॥

श्रावक माहोमांहि वीयावच कीधी, तिण दीयों सरीर रो साज।
छकाय रो ससतर तीखो कीधों, तिणसूं आग्या न दें जिणराज रे॥ ५४॥
गृहस्थ री वीयावच कीधी तिणरो, अठावीसमो अणाचार।
साता पूछयां रो अणाचार सोलमो, तिण मे धर्म नहीं छे लिगार रे॥ ५५॥
सरीरादिक ने श्रावक पूजें, मातरादिक परठें पूंज।
इयादिक कारज री नही जिण आग्या, तिणमें धर्म कहें ते अबूज रे॥ ५६॥
सरीर पूंजे मातरादिक परठे, ते तो सरीरादिका रों छें काज।
जो धर्म तणो ए कारज हुवें तो, आगना देतां जिणराज रे॥ ५७॥
जो पूंजणो परठणो न करे जाबक, तो काया थिर राखणी एक ठाम।
हस्तादिक ने विनां चलायां, रहणी न आवे तांम रे॥ ५८॥
लघू बडी नीत तणी अबाधा, खमणी ठांमणी नावे तांम।
पूंज ने परठें तोही कांमो सावद्य, तठे जिण आग्या रों नहीं कांमरे॥ ५९॥
कदा थोडी बुध ज्यानें समझ पडें नही, त्यांनें राखणी जिण परतीत।
आगना मांहें पाप आग्या बारें धर्म, इसडी न करणी अनीत रे॥ ६०॥
जिण आगना माहें पाप कहें ज्यांरी, मति घणी छे माठी।
जिण आगना बारें धर्म कहें छें, त्यांरी अकल आडी आई पाटी रे॥ ६१॥
जिण आगना मांहें पाप कहितां, मूर्ख मूल न लाजें।
वले धर्म कहें जिण आगना बारें, ते पिंडत पाखंड्यां मे वाजें रे॥ ६२॥
जिण आगना माहें पाप कहे छें, ते बूडें कर कर तांण।
जिण आगना बारे धर्म कहें छें, ते पिण पूरा मूढ अयांण रे॥ ६३॥
संवत अठारें वरस इकतीसे, जेठ सुदि तीज सुकरवार।
श्री जिण आगना ओलखावण, जोड कीधो पर उपगार रे॥ ६४॥

ढाल : ४

दुहा

पाप अठारे कह्या अति बुरा, श्री जिण मुख सूं आय।
ते सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, तीनूइ करणा पाप॥ १ ॥
ए श्री जिण वचन उत्थापने, वेई उंधी परूपे ताहि।
कहे करण जोग मिले नही, पाप अठारा माहि ॥ २ ॥
पाप कीया पाप नीपनो कहे, पाप कराया कहे छें धर्म।
इण विध करे छे परूपणा, ते भूला अग्यांनी भर्म॥ ३ ॥
त्याने प्रश्न पूछे इण वात रो, पाप कराया धर्म किध थाय।
जब कल्प वतावे साध रो, पिण सूधो बोल्यो नही जाय॥ ४ ॥
तिण जिण आगना नही ओलखी, साधरो कल्प ओलख्यो नाहि।
त्या करण जोग विगटावीया, पाप कहे जिण आगना माहि॥ ५ ॥
कहे साध न पेहरे कांचूवो, पेंहर्‍या लागे पाप कर्म।
पिण साधवी ने आगना दीयां, हुवे छे निकेवल धर्म॥ ६ ॥
इत्यादिक अनेक बोल कल्प रा, त्यामे घाले घुचलाई मूढ।
करण जोग उथापे अग्यांनी थकां, त्या झाली मिथ्यात री रूढ॥ ७ ॥
कल्प साध सावची तणो, जुदो जुदो बाध्यो जिणराय।
तिण कल्प मे जिणजी री आगना, तिणमे पाप कीहां थी थाय॥ ८ ॥
साधनें कल्पे ते साध करें, साधवी करे कल्पे ते तांम।
पाप नही त्यारा कल्प मे, करण जोग रो अठे नही कांम॥ ९ ॥
हिवें कल्प साध साधवी तणो, सांभलजो नर नार।
निरणो कीजे घट भितरें, ज्यू उतरो भवपार॥ १० ॥

ढाल

[मगध देस को राज राजे]

साव साधवी रा कल्प माहे अग्यानी, पाप कहे मूढ कोय,
तिण कल्प माहे श्री जिणजी री आग्या, तिहा पाप रो अस न होय रे॥
भवीयण जोवो हिरदय विचारी, काय करो आतम भारी रे।
जिण बाध्यो कल्प सुखकारी* ॥ १ ॥
साध साध्वी रो कल्प श्री जिण बांध्यों, तिणरी श्री जिण आगना दीधी।
तिण माहे पाप वताए अग्यांनी, खाच गला नें लीधी रे॥ जि० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

तीन पिछोवडी साध नें कल्पे, साधवी नें कल्पें च्यार।
यां दोयां नें छें श्रीजिण आग्या, तिणमें पाप नहीं छें लिगार॥ ३ ॥
च्यार पछोवडी साधवी राखें तो, साध आग्या देवें भलीभात।
जो पोतेंई साध च्यार राखें तो, भागल री छें पांत रे॥ ४ ॥
कांचूओ नें जांघीयो साधवी राखें, तिणनें आग्या दे साध रखावें
जो साध पेंहरे कांचूओ जांघीयो, तो जिण आग्या रो चोर कहावें रे॥ ५ ॥
गांमां नगरा साधवी नें कल्पे, शेखाकाल रहिणो मास दोय।
जो शेखा काल साध रहें दोय महीना, तों जिण आगना रो चोर होय रे॥ ६ ॥
साधवीयां कमाड जडे नें उघाडें, सील व्रत राखण रें काजें।
जो साध कमाड जडें नें उघाडें, तो पेंहिलो माहावरत भाजें रे॥ ७ ॥
साधवीयां किवाड जडे नें उघाडें, त्यांनें जिण आगना दें सोय।
साध ने किवाड जडण उघाडण री, जिण आगना नही कोय रे॥ ८ ॥
कदा साधवी राखें उघाडो दुवार, तिणनें प्राछित दे करें सुध।
तिणनें आगनां दे किवाड जडण री, साध पोतें जडें तो असुध रे॥ ९ ॥
पेंहला नें छेहला तीर्थंकर त्यांरा, ते वाजें कपठीया साध।
त्यांरे धवला नें अल्पमोला कपडा, वले गिणती में पिण मरजादा रे॥ १० ॥
विचला तीर्थंकर बावीस त्यांरा, ते वाजें अकपठीयां साध।
त्यांरे पांच वर्णा नें बहुमोला कपडा, वले गिणती में नही मरजाद रे॥ ११ ॥
जे कपठीया नें नही कल्पें ते कपडा, भोगवें तो लागे पाप कर्म।
तेहीज कपडा अकपठीया नें कल्पें, त्यांनें भोगवीयां छें धर्म रे॥ १२ ॥
पांच वर्णा नें बहु मोंला कपडा, अकपठीया राखें भली भांत।
त्यांनें कपठीया आगना दें तो ही धर्म, पोतें राखे तो चोरां री पांत रे॥ १३ ॥
कपठीया साध साधवी नें, गांमां नगरां मरजाद सूं रहिणों।
अकपठीया रहें विण मरजादा, जिण आग्या परिमांणें वहिणो रे॥ १४ ॥
असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो कपठीयां रे तांई।
ते कपठीया सर्व साध नें न कल्पें, अकपठीया नें दोष नांही रे॥ १५ ॥
असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो एक कपठीया तांई।
तो पिण कपठीया नें न कल्पें, अकपठीया नें दोष नाहीं रे॥ १६ ॥
असणादिक सेज्जा संथारो, कीधो अकपठीया रे तांई।
तो कपठीया अकपठीया बेहूं नें, कल्पें नहीं मूल काई रे॥ १७ ॥
असणादिक सेज्जा संथारों उद्देसी, कीधो एक अकपठीया तांई।
तो अकपठीया नें कल्पें उण विनां, कपठीया साध नें कल्पें नांहीं रे॥ १८ ॥

सघटो साधवी रो साध ने न करणो, कारण पडीया 'कीयां दोष नांही।
ओ पिण कल्प जिणेसर बाध्यो, पाप नही तिण माही रे ॥ १९ ॥
साध साधवी ने राते भेलों न रहिणों, कारण पडीयां तो रहिणों भेलो।
जिण रीते वीर कह्यो तिण रीते, रहिता नें कोइ मत हलो रे ॥ २० ॥
साध साधवी ने साथे विहार न करणो, कारणे करणो साथे विहार।
त्यांने आगना दे हर कोइ साध, तिणने पिण नही पाप लिगार रे ॥ २१ ॥
साध नें तो एकलो रहिणो न कल्पें, साधवी नें न कल्पे दोय।
त्याने पिण रहिणो कल्पें कारण पडीयां, जिण आगना पिण छे सोय रे ॥ २२ ॥
साधवी दिखत घणा काल री छे, तो ही नव दिखत साध ने वदे।
साधवी पद तीर्थंकर पांमी, तिणनें साध वादे आंणदे रे ॥ २३ ॥
दिख्या वडी साधवी साध ने वादें, साध पिण साधवी ने वादे।
ओ पिण कल्प तीथकर बाध्यों, ओर नही बाध्यो आप छादे रे ॥ २४ ॥
दोय कोस उपरत आहार च्यारूई, साध ने भोगवणो नाहि।
पेहला पोहर तणो आहार छेहला पोहर मे, ते पिण नही घालणो मुख माहि रे ॥ २५ ॥
जो गाढा गाढ रो कारण पडे तो, पेहला पोहर तणो पोहर छेहले।
ओषधादिक जिम जाणे ने साधु, मुख माहे निसक सूं मेले रे ॥ २६ ॥
ओ पिण कल्प छे कपठीयां रो, अकपठीयां रो केवली जाणे।
ते पिण त्यारा कल्प माहे रहिसी, ते निश्चो काढे कुण ताणे रे ॥ २७ ॥
इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक, ते सूतर सूं कीजो पिछाणो।
आप आप तणा कल्प माहे चाल्या, तिण मे जिण आगना थे जाणो रे ॥ २८ ॥
साधरा कल्प मे साध चालें, त्याने लागे नाही पाप कर्म।
याने आगना दे कोइ यारा कल्प री, तिणने हुवे छें निरजरा धर्म रे ॥ २९ ॥
साधवी रा कल्प मे साधवी चालें, याने पिण नही छे पाप कर्म।
यानें पिण आगना दें यांरा कल्प री, तिणने पिण निरजरा धर्म रे ॥ ३० ॥
एहवो कल्प तीथकर वांध्यो, तिण कल्प परमाणे चालो।
इण कल्प मे पाप म सरधो कोइ, आ सरधा सेंठी कर भालो रे ॥ ३१ ॥
करण जोग विगटावण अग्यानी, करे साध रा कल्प री बात।
जे जे कल्प तिथकर बांध्यो, तिणमें पाप नही तिलमात रे ॥ ३२ ॥
तीर्थंकर कल्प वाध्यो तिण माहें, पाप हुवें तो कल्प छे भूंडों।
तिण कल्प तणी कोइ आगना देसी, ते पिण जाबक बूडो रे ॥ ३३ ॥
जे मोटा पुरुषां रो कल्प बाध्यो छें, तिणमें पाप कहें ते पापी।
ते बूड गयों मानव भव पाए, वीरनो वचन उथापी रे ॥ ३४ ॥

तीथंकरे कल्प बांध्यों छें तिणरी, तीथंकर आगना दे आप।
त्यारी आग्या नें कल्प में पाप हुवें तो, किणरी आग्या नें कल्प निपाप रे॥ ३५॥
साध नें आगना दे साध रा कल्प री, त्यांरी निरवद भाषा जाणो।
निरवद भाषा सूं निश्चें हुवें निरजरा, तिणमें संका मूल म आणो रे॥ ३६॥
साधां तो सावद्य सगलोइ त्याग्यो, त्यांरें पाप रो नहीं आगार।
त्यांरा कल्प में आगार पाप तणों हुवें, तो निश्चें नहीं अणगार रे॥ ३७॥
हिंसा झूठ चोरी मइथुन परिग्रह, इत्यादिक पाप थांनक अठारें।
ते सेव्यां सेवायां नें भलो जांण्यां, तिणमें धर्म नही छें लिगारे रे॥ ३८॥
जे जे किरतब कीधांई पाप छें, तो करायां अणूमोध्यांइ पाप।
इणमेई घोचो घाले अग्यांनी, श्री जिण वचन उथाप॥ ३९॥
कीधाइ पाप करायाइ पाप, अणुमोद्यां पिण हुवें पापो।
इण मांहे संका मूल म जांणो, श्री जिण भाख्यो छे आपो रे॥ ४०॥
साधु रो कांम करें कोइ श्रावक, श्रावक रो कांम करें जो साध।
यां दोयां नें श्री जिण आग्या नाहि, यां दोयां रे नही समाध रे॥ ४१॥
कोइ श्राविका कांम करे साधु रो, श्राविका रो करें साधु काम।
यां दोयां नें पिण जिनाग्या नांहि, वले धर्म नही छे तांम रे॥ ४२॥
कोइ श्राविका साधु रो पेट मसल नें, साधु नें जीवां बचांवे।
मुरछी मसले पीड्यां करें पगचंमी, साधु नें बाई साता उपजावे रे॥ ४३॥
वले कांटो काढे बाई साधु रा पग थी, फांटो काढे आख्यां थी बारे।
इत्यादिक साधु रो कांम बाई करें तो, तिणनें जिनाग्या नहीं लिगारे रे॥ ४४॥
श्राविका साधु रो कांम करें तिम, श्रावक करें साधवियां रो कांम।
यां दोयां नें पिण जिण धर्म नांहीं, जिनाग्या नही छें तांम रे॥ ४५॥
साधवी रो पेट मसल नें श्रावक, साधवी मरती नें बचावे।
मुरछी मसले पीड्यां करें पगचंपी, साधवी नें साता उपजावे रे॥ ४६॥
साधवी रो कांटो श्रावक पग थी काढे, फांटो काढे आख्या बारे।
इत्यादिक साधवी रो करें कांम श्रावक, जिनाग्या नहीं लिगारे रे॥ ४७॥
श्रीजिण पाल बांधी ते भागे, तिणनें साधु तो न कहें धर्म।
केई धर्म बतावें भेषधारी भागल, ते तो भूला ग्यानी भर्म रे॥ ४८॥
जे जिनाग्या बारे धर्म कहें त्यां, जिनाग्या दीधी छे भांगो।
एतो उंधी श्रद्धा रा मूढ मिथ्याती, त्यां पहर विगाड्यो सांगो रे॥ ४९॥
साधु साधवी नें श्रावक जीवां बचावे, अथवा वले साता उपजावे।
अरिहंत भगवंत कह्यो तिण रीते, कर्मां री कोड खपावे रे॥ ५०॥

अरिहंत भगवंत री आग्या लोपे, करे साधु साधवियां रो कांम।
तिण मांहे धर्म कहें भेषधारी, ते तो यूं ही बकें बेफाम रे॥ ५१॥
संवत अठारे वरस बयांले, असाड विद एकम सोमवार।
साधु साधवी तणो कल्प ओलखायो, नाथ दुवारा सहर मझार रे॥ ५२॥

ढाल : ५

दुहा

केई जेंनी नांम धराय नें, वांचें सूतर सिद्धंत।
पिण सवलो न सूझें तेहनें, उंधा उंधा अर्थ करत ॥ १ ॥
त्यांमें केई उघाडे मस्तकें, केई पोतीया मस्तक बंध।
ते वचन उथापें वीर ना, ते होय रह्या मोह अंध ॥ २ ॥
ते साध उथापण सांतरा, बोलें आलपंपाल।
नांम लेइ सूतर तणों, देवे अणहुंतो आल ॥ ३ ॥
ते चवदें उपगरण कहें छें साध रे, इधकों राखणो कहे छें नांहि।
इधकों राखे छें तेहनें, न गिणें साधां तणी पांत माहि ॥ ४ ॥
एहवी उंधी करें छें परूपणा, घणा लोकां रें मांय।
सुध साधां सूं भिडकावीया, कर कर कूडी बकवाय ॥ ५ ॥
उपगरण इधकां रो नांम ले, सुध साधां ने दीयां छे उथाव।
वले वीर वचन उथापनें, कर रह्या मूढ विलाप ॥ ६ ॥
श्री वीर वचन सतमेव छें, त्यांनें उथापजों मत कोय।
एक वचन उथापें जांण नें, तो अनंत संसारी होय ॥ ७ ॥
भंड उपगरण कह्या छे साध नें, ते वीर गया छें भाख।
चित्त लगाय ने साभलों, तिणरी सूतर में छें साख ॥ ८ ॥

ढाल

[पाखंड वधसी आरे पाच में रे]

उपगरण उगणीस तो लगता कह्या रे, दसमां अंग दसमां अधेन मांय रे।
ते नांमें परनांमें कह्यां छें जूजूआ रे, सांभलों एकमना चित्त ल्याय रे।
उपगरण भाख्या छें भगवत साध ने रे* ॥ १ ॥

भोजन भंड नें वले पातरा रे, संग्रह सबद में तीन पातरा जांण रे।
जो तीनां पातरा तणी संका पडें रे, तो तीनां सूतरां सूं करों पिछांण रे ॥ उ० २ ॥
तीन पातरा कह्यां सूतर ववहार में रे, दूजा उदेसा में जिणराय रे।
वले पातरा कह्यां छें तीन नसीत में रे, उदेसा अठारमां रें मांय रे ॥ ३ ॥
भंड कह्यों छे ते माटी तणों रे, ते उचारादिक रें आवे छें कांम रे।
तिणरों कांम पडें छें अचाचूक रो रे, तिण सूं भंड कह्यों छें तिणरों नांम रे ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

झोली कही छैं पातरा बांधवा रे, पाय केसरीया पातरा पडिलेहण जांण रे।
पाय ठवणंच ते कह्यो मंडल्यो रे, तीन पडिला कह्या छे ते परमांण रे॥ ५॥
रसतांन गोछो ने तीन पिछोवडी रे, रजोहरणों नें चोलपटों कह्यो तांम रे।
मुहपती चाली छैं मुख बांधवा रे, पायपुछणो कह्यों बिछावण कांम रे॥ ६॥
पायपुछणादि कह्यो तेहमें रे, आदि मांहे उपगरण छैं अनेक रे।
ते सूतर जोय जोय परगट करू रे, सांमलजों भवीयण आंण ववेक रे॥ ७॥
पातरा लूहवा नें चाल्यों लूहणो रे, दसवीकालिक पांचमा मांहि रे।
गलणों कह्यों छैं पांणी छांणवा रे, कल्प सूतर में जोवो ताहि रे॥ ८॥
बांह परमांणे डांडो नें वले लाकडी रे, पगे कादो लूहवा नें कही खपाट रे।
वांसादिक नी पिण सूइ कही रे, नसीत रें पेंहले उदेसें पाठ रे॥ ९॥
सूत नी डोरी नें वले रासडी रे, चिलमिली आडी बांधवा जांण रे।
ते नसीत सूतर मांहे जिण कही रे, पेंहले उदेसे में जोय करो पिछांण रे॥ १०॥
डोरा चाल्या छे कपडो सीववा रे, ते कह्या छैं सूतर आचारग मांय रे।
ते पिण उनमान जांण नें राखणा रे, तिणरी संका मत राखो कांय रे॥ ११॥
दोय वार सुच लेणो कह्यों खडीया थकी रे, नसीत रें चोथा उदेसा मांहि रे।
ते खंडीया तो गिणती में दीसें नही रे, जीत ववहार सूं जांणे लेसी ताहि रे॥ १२॥
आर्ज्यां रे च्यार उपगरण इधका कह्या रे, कांचूओ जांघीयो पिछोवडी एक रे।
वले साडी मांहे कपडो इधको कह्यो रे, वेतकल्प आचारंग लीजों देख रे॥ १३॥
साठ वरसा मे हूआं नें थिवर कह्यो रे, त्यांने उपगरण इधका वशेख रे।
ते ववहार सूतर उदेसे आठमे रे, संका पडें तों लेजो देख रे॥ १४॥
छत्तंवा कह्यो छैं ते तो छत्तरडो रे, ते कंवलादिक नों कर राखें तांम रे।
ते राखे छैं सी तापादिक टालवा रे, ओर मूतलब रो नही छे कांम रे॥ १५॥
सरीर परमाणें डांडो कल्पे छैं तेहनें रे, माटी नों भंड कल्पें छे ताहि रे।
ते राखे वडी नीतादिक कारणें रे, वले मात्रीयों राखें इधक सवाय रे॥ १६॥
लाठी राखणी कल्पे तेहनें रे, ते कही छैं दोढ हाथ परमांण रे।
ते वेसतां उठतां आधार छैं रे, एहवें कारण कही छे जांण रे॥ १७॥
पाटली कही दीसे बेंसवा भणी रे, गरढा नें वायादिक हुवेती जांण रे।
रोग उपजतों जांणी नें कही रे, सूतर सूं कर लेजों परमांण रे॥ १८॥
वस्त्र इधको कल्पे कह्यों थिवर ने रे, मसतकादिक वाधवा रे कांम रे।
रोग वधतों जांण्यों तिण सूं कह्यों रे, चोखा रहता जांण्या परिणांम रे॥ १९॥
वडी नीतादिक रो कारण वेगो पडें रे, वारें जांणो पडतो जांणे अकाल रे।
तिण सूं चिलमिली कही दीसें छैं थिवर ने रे, आडी बांधेनें दीयें आबाधा टाल रे॥ २०॥

चर्म नें चर्म तणी वले कोथली रे, चर्म तणों वले कटकों जांण रे।
ए पिण कह्यां वायादिक टालवा रे, सरीरादिक कारण जांण पिछांण रे॥ २१॥
ए इग्यारें उपगरण इधका छें थिवर ने रे, गरढ़पणा तणी दय जांण रे।
कह्या छें संयम थिर रहवा भणी रे, तिण मांहें संका मूल म आण रे॥ २२॥
तीस उपगरण साधु रे सूतर थी कह्या रे, आरज्या रे उपगरण इधका च्यार रे।
इग्यारें उपगरण थिवर ने कह्या रे, सूतर सूं जोय कीयां छें न्यार रे॥ २३॥
खेल करवानें अवस चाहिजें खेलीयो रे, पायपुछणादि सबद में जांण रे।
एहवा उपगरण राखें ते आदि सबद में रे, अल्पमात्र राखें उनमान परमाण रे॥ २४॥
वले उपगरण सूतर मांहें नीकले रे, ते पिण कर लेणों परमाण रे।
वीर वचनां नें कुण उथापसी रे, ओर कर लेंणा साचा जांण रे॥ २५॥
केइ मूढ मिथ्याती ते बकवोकरें रे, सूतर अरथ तणा अजांण रे।
चवदें उपगरण सूं इधका राखे तेहनें रे, सुध साध न सरधे मूढ अयाण रे॥ २६॥
सूतरां री तो पूरी समझ पडें नहीं रे, वले सूतरां रा अर्थ मरोड मरोड रे।
चवदें उपगरण सूं इधका राखे तेहनें रे, सरधें छें तीर्थंकर ना चोर रे॥ २७॥
उपगरण चवदें सूं तो इधका कह्या रे, ते सूतर में भाख गया भगवांन रे।
ते वचन उथापें बूडा बापडा रे, त्यांरा घट माहें पूरो घोर अग्यांन रे॥ २८॥
त्यां तीर्थंकर उथाप्या छें तीन काल ना रे, तीन काल रा दीधा साध उथाप रे।
वले सूतर उथाप्या भगवंत भाखीया रे, मत बांधण नें कीधी खोटी थाप रे॥ २९॥
तीन काल रा अरिहंत ने साधां भणी रे, दीयों अग्यांनी अछतो आल रे।
ते कर्म बांधे नें बूडा बापडा रे, त्यांरे भव भव में होसी घणों जंजाल रे॥ ३०॥
घणा भोलां नें भिडकाया सुध साधा थकी रे, चवदें उपगरण रो ले ले नांम रे।
ते पेट भरा अन्हाखी पापीया रे, त्यारे एकंत मत बांधण रो कांम रे॥ ३१॥
त्यां घणा लोकां नें बोया पापीया रे, ते पिण मांनी छें तिणरी वात रे।
तांण करें चवदें उपगरण नी रे, सुध साधां सूं पडवजीयो मिथ्यात रे॥ ३२॥
ते सूतर रा वचन न मांनें पापीया रे, सुमता आणे नें काढें नहीं निकाल रे।
यां पीढ्यां खप आल दीयों साधां भणी रे, कर कर झूठी मूढ झखाल रे॥ ३३॥
केइ मूढ मिथ्याती जीव इम कहें रे, साध नें लिखणों कलपें नांहि रे।
पानां पिण साध नें नहीं राखणा रे, इम कहें छें घणा लोका रे मांहि रे॥ ३४॥
चवदें उपगरण सूं इधका नही राखणा रे, पांना राख्यां तो उपगरण इधका थाय रे।
उपगरण इधका राखें ते साध निश्चें नहीं रे, एहवी उंधी परूपें लोकां मांहि रे॥ ३५॥
एहवी झूठी झूठी करें परूपणा रे, घणा लोकां नें दीयां डबोय रे।
त्यांनें सुध साधां सूं तो भिडकावीया रे, परभव सूं तो मूल न डरीयो कोय रे॥ ३६॥

लिखणो चाल्यो छे सुध साधा भणी रे, तिणरी छे सूतर माहे साख रे।
तिणरी सका कोइ मत आणजो रे, भगवंत आगम मे गया भाख रे॥ ३७॥
आचार्य री चाली छे आठ संपदा रे, तिण माहे लिखणो कह्यो साख्यात रे।
दसासुतखंध सूतर जोय निरणो करो रे, छोड दो भवीयण भूठ मिथ्यात रे॥ ३८॥
वले प्रश्न व्याकरण मे लिखणों चालीयों रे, साच बोले ज्यूं लिखणो साच रे।
दूजे संवर ते अधेन सातमो रे, संका काढो ते सूतर बाच रे॥ ३९॥
वले नसीत सूतर पूरो हुवे जठे रे, तिहा पिण लिखणो चाल्यो छे ताम रे।
वले नंदी सूतर मे लिखणों कह्यो रे, नरकादिक अलंकार चित्राम रे॥ ४०॥
लिखणों चाल्यों तो लेखण राखणी रे, स्याही आदि दे रग राखणी रे।
नालेरी आदि स्याही गालण नें राखणी रे, पाटी पाटला पांना बांधण रे काम रे॥ ४१॥
पाना राखे ते ग्यान रे कारणे रे, पाना रा उपगरण छे अनेक रे।
त्या पाना तणा जतन करवा भणी रे, मेंणीयादिक राखे वले वशेख रे॥ ४२॥
पाना विण ठीक किसी आचार री रे, पाना विण किम पाले आचार रे।
पाना तणी पूरी परतीत छे रे, आजूणा पाचमा काल मभार रे॥ ४३॥
धूर सूं तो पांना लिख्या आचारीया रे, तिणसू पाना री छे परतीत रे।
अणाचारया रा लिख्या जो सूतर हुवे रे, तो सूतर पाठ हुवें विपरीत रे॥ ४४॥
जिण सासण चालसी आरे पाचमे रे, तिणमे मत जांणो कोइ सक रे।
जो आचार सरधा मे सका पडे रे, जब पाना जोय ने हुवें निसक रे॥ ४५॥
साध ने लिखणो निषेधे पापीया रे, त्यारी भिष्ट हुइ छे सुध नें बुध रे।
ते यूही बूडे छे अन्हाखी थका रे, कर कर खोटी परूपणा विरुध रे॥ ४६॥
सरधा ने आचार थकी भिष्टी हूआं रे, त्या खोटा चाली सूतरा मभार रे।
त्यां खोटा ने समदिष्टी जथातथ जांण ने रे, कर दीधा दूध पांणी ज्यूं न्यार रे॥ ४७॥
साधु रा उपगरण नें लिखणा तणी रे, जोड कीधी नाथदुवारा सहर मभार रे।
समत अठारे छपना वरस मे रे, फागुण विद छठ सनीसरवार रे॥ ४८॥

रत्न : १२

पोतिया बन्ध री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिद्ध ने आयरिया, उवझाय सगला साध।
मुगत नगर ना दायका, ए पांचूं पद आराध॥ १ ॥
ए पाचू पद वादे भाव सूं, पातक दूर पलाय।
शिव रमणी वेगा वरे, जनम मरण मिट जाय॥ २ ॥
केइ अग्यांनी इम कहे, इम बाद्या नही जिण धर्म।
उलटो लागे अविनों आशातना, तिण सूं बवे पाप कर्म॥ ३ ॥
पेहला वादे अरिहंत ने, पछे वादे सिद्ध भगवांन।
तिण सू लागे सिद्धा री आशातना, एहवा करे अग्यानी तांन॥ ४ ॥
वले सर्व साघा नें वाद्यां थका, आ पिण न लागे ठीक।
वडा साधु हुवे तेहनें, छोटा किम वदनीक॥ ५ ॥
इम कहि कहि भोला लोक नें, सका घाले घट मांय।
पाचू पद वादण तणी, पाडे मोटी अंतराय॥ ६ ॥
सिद्धा पेंहली अरिहंत ने वादणा, सिद्धा पेहली अरिहंत रा नाम।
सूतर शाख दे वरणवू, ते सुणजो राखे चित्त ठाम॥ ७ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे]

पेंहुली अरिहंत रा गुण करे रें, पछे करे सिद्धां रा गुण ग्राम रे। सुगुण नर।
तो बधे तीर्थंकर गोत तेहनें रे लाल, जो आवे उतकष्टो रस तांम रे॥ सुगुण नर॥
वांदो पांचूं पद भाव सूं रे लाल*॥ १ ॥
ए ग्याता सूतर रे अधेन आठमे रे, वीसां बोलां रो विस्तार रे। सु०।
सिद्धा पेहली अरिहत रा गुण कीया रे, ते जीवो आंख उघाड रे॥ सु० वां० २ ॥
सिद्धां पेहलां अरिहंत ने वादियां रे, कहे न हुवो विने मूल धर्म रे।
तों उ वीस बोल गुणसी जदी रे, उणरे लेखेइ बधसी उणरे कर्म रे॥ ३ ॥
इम कह्या संवली सूझे नही रे, त्यारा घट माहे गूढ मिथ्यात रे।
ते घुघू सरिषा होय रह्या रे लाल, त्यारे दिवस तिकाइज रात रे॥ ४ ॥
जब केइ कहे पाचूं पद तणा रे, लगता काढो सूतर मे नाम रे।
तो में माना नवकार नें रे लाल, तो सुणो राखे चित्त ठांम रे॥ ५ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अरिहूंत सिद्ध नें आयरिया रे, उवभाय सगला साध ताहि रे।
ए पांचूं पद लगता कह्या रे लाल, चंदपनत्तो सूतर मांहि रे॥ ६ ॥
इरियावही कहेने काउस्सग्ग ठावणो रे, पारणो कहेनें नमोकार रे।
दसवेकालिक अधेन पांचमें रे लाल, तेराणूमीं गाथा मभार रे॥ ७ ॥
वले आवसग सूतर विषे कह्यो रे, लगतो पांचूं पदां ने नमस्कार रे।
त्यांमें पेहली अरिहंत पछे सिद्ध कह्या रे, ते जोय करो निस्तार रे॥ ८ ॥
वले आशातना टालण तणा रे, घणा बोल कह्या जिणराय रे।
त्यां पेंहली अरिहंत सिद्ध पछे कह्या रे, ते पिण आवस्सग्ग मांय रे॥ ९ ॥
साधु समचे वादे सर्व साध नें रे, ते पाठ छें आवस्सग्ग मांय रे।
तिणरी बुधवंत करजो विचारणा रे लाल, जोए सूतर रो न्याय रे॥ १० ॥
जे पांचूं पद लगता मानें नही रे, त्यां काउस्सग्ग दीयों उत्थाप रे।
त्या कीधी आशातना अरिहंतनी रे लाल, त्यांरे जांणजों जाडा पाप रे॥ ११ ॥
च्यार मंगलीक कह्या लोक में रे, अरिहंत सिद्ध साधु धर्म रे।
तिहां पिण पेंहली अरिहंत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे॥ १२ ॥
च्यार उत्तम कह्या लोक में रे, अरिहंत सिद्ध साधु धर्म रे।
तिहा पिण पेहली अरिहत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे॥ १३ ॥
च्यारू सरणा लेणा कह्या साध ने रे, अरिहंत सिद्ध साध धर्म रे।
त्यामे पेंहलो सरणो अरिहंत नों कह्यो रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे॥ १४ ॥
च्यार मगलीक च्यार उत्तम छें रे, वले च्यारूं शरणा कह्या ताहि रे।
तिहां पेंहली अरिहत पछे सिद्ध कह्या रे लाल, ते पिण आवस्सग्ग मांहि रे॥ १५ ॥
सिद्धा पेहली अरिहंत रो नांम छे रे, सूतर में जायगां अनेक रे।
संका म घालो लोकां भणी रे, छोड दो कूडी टेक रे॥ १६ ॥
दोनूं टंका साध पडिक्कमणो करे रे, ते पडिक्कमणो आवस्सग्ग सूत रे।
ते आवस्सग्ग सूतर मांनें नही रे, ते जिण सासन में कपूत रे॥ १७ ॥
साध आवस्सग्ग सूतर वाच्यां विनां रे, जो वांचे ओर सिद्धांत रे।
नसीत उद्देसें उगणीस में रे लाल, चोमासी दंड कह्यो भगवंत रे॥ १८ ॥
ए पडिक्कमणो आवस्सग्ग सूतर छे रे, नित करणो साधु नें दोय वार रे।
ते ने कीयां विराधक जिण धर्म नों रे, जोवो अनुयोग दुवार मभार रे॥ १९ ॥
आगे सूतर भण्या साधु साववी रे, जोवो सूतर में ठांम ठांम रे।
ते सामायक सूतर आदि दे रे, ते सामायक छे आवस्सग्ग रो नांम रे॥ २० ॥
केइ आवस्सग्ग मोलो कही रे, जाबक दीयो उत्थाप रे।
ते डरे नहीं भूठ बोलता रे, त्यांरे भव भव में होसी संताप रे॥ २१ ॥

दोनू टकां आवस्सग्ग कीयां रे, टले करमा री छोत रे।
जो आवे उतकष्टो रस तेहनें रे, तो बधे तीर्थंकर गोत रे॥ २२ ॥
ए ग्यातारा आठमां अध्येन मे रे, बीस बोला मे इग्यारमों बोल रे।
जे आवस्सग्ग सूतर मानें नहीं रे, त्यारे पूरी जांणजो पोल रे॥ २३ ॥
नमस्कार लगतो पाचू पद भणी रे, ए मानें नही किण न्याय रे।
जो साचा हुवो तो सूतर में बताय दो रे, नही तो मत करो कूडी बकवाय रे॥ २४ ॥
नमस्कार लगतो पाचूं पद भणी रे, कीधां कहे अविनो होय रे।
एहवी ऊंधी करें परूपणा रे लाल, पिण पोते अविना री खबर न कोय रे॥ २५ ॥
देव अरिहत गुर साधुजी रे, ए चोडे सूतर रो न्याय रे।
गुर बाजे श्रावक थकां रे, ओ प्रतख मांड्यो अन्याय रे।
ते श्रावक नही भगवान रा रे॥ २६ ॥

ते चेला चेली करता फिरे रे, श्रावक नांम धराय रे।
भोला ने भरमाय ने रे, तिक्खुता सू बंदावे पाय रे॥ २७ ॥
आगे श्रावक हुआ भगवांन रा रे, आणंद आदि अनेक रे।
ते घर में थकां पडिमा बुहा रे, पिण चेलो न कीधो एक रे।
ए साचो मत जिणराज रों रे॥ २८ ॥

ते पडिमा बुहा जब कीधी गोचरी रे, आपणी न्यात में जाय रे।
पिण ओर कुल मे कीधी नही रे, जोवो दसासुतखंध उपासग दसा मांय रे॥ २९ ॥
चेला चेली करता फिरे रे, घणा कुल री रोटी खाये माग रे।
आगे श्रावक हुवा भगवांन रा रे लाल, एहवो किण ही न काढ्यो दीसे सांग रे॥ ३० ॥
अंबड सन्यासी रे चेला सातसो रे, ते रीत संन्यास्यां री जाण रे।
पछे समझे श्रावक हुवा रे, इणरी म करजो कोइ तांण रे।
ते रीत सन्यास्यां री मूलगी रे लाल॥ ३१ ॥

त्यां संन्यासी थकां चेला कीयां रे, ते कुल री रीत परमाण रे।
त्यां सांग न पलट्यो मूलगो रे लाल, तिणरी बुधवंत करजो पिछाण रे॥ ३२ ॥
श्रावक श्रावक नें नमें रे, वले नेंहत जीमावे च्यांरू आहार रे।
त्यानें अरिहंत री आग्या नही रे लाल, ए लोकिक रो व्यवहार रे॥ ३३ ॥
साधु साधवियां नी परे रे, श्रावक श्रावका री थापी रीत रे।
ते पिण रीत चाले नही रे, यारे लेखेई ए अवनीत रे॥ ३४ ॥
श्रावक वेसें आंगणे रे, श्रावका वेसें पाट रे।
यांरो विनों मारग यां उत्थापियो रे, त्यांरे लेखेई होसी भूंडो घाट रे॥ ३५ ॥

वले श्रावक वांदे श्रावका भणी रे, यांरे लेखे आ ऊंधी रीत रे।
यांरे लेखे यां विनों उत्थापियो रे, ते चिहूं गति होसी फजीत रे॥ ३६॥
ए विनों विनो कर रह्या रे, पिण विनां री खबर न कोय रे।
त्यांसूं लेखो कीयां तो लडपडे रे लाल, त्यानें किम आणीजे ठाय रे॥ ३७॥
नोकार री कुणसी चली रे, यां उथाप्या बोल अनेक रे।
ते थोडासा परगट करूं रे लाल, ते सुणजो आंण ववेक रे॥ ३८॥

ढाल : २

दुहा

यानें छता साध सूझे नही, घट मे घोर अधार।
पोथा पांना बाच नें, भूला भर्म गिवार ॥ १ ॥
वले केइ अग्यांनी इम कहे, कठे अबारू साध।
ते झूठा थका बकवोकरें, त्या परमारथ नही लाघ ॥ २ ॥
प्रतख आरे पाचमे, साध कह्या जिणराय।
सांसो हुवे तो देख लो, सूतर भगोती माय ॥ ३ ॥
साध हुता तो सूतर छे, जेन जतीको वेस।
याहीज साधु देख लो, ओहीज आरज देस ॥ ४ ॥
जेवंतो जिण धर्म छे, आंधा करे अवेर।
छेहूडा सूधी चालसी, तिण में म जांणो फेर ॥ ५ ॥
कुमती चालणी सारीखा, त्याने किहा लगे उपदेस।
सार सार तो गेर दे, ग्रहे तूंतडा केस ॥ ६ ॥
एक साध ने उथपे, तिणरे बधे घणो सताप।
तो घणा साधा ने उथपे, तिणरे पोते वोहला पाप ॥ ७ ॥
जे देवालियो हुवे ते इम कहे, आज नही साहुकारा री रीत।
ज्यासूं पोतें सजम पले नही, ते उतारे साधां री परतीत ॥ ८ ॥
साहुकार होसी तिके, छता दिखावसी साह।
ज्यू साधुपणो सुध पालसी, ते खरो दिखावसी राह ॥ ९ ॥
केइ मूढ मिथ्याती मूरख थका, श्रावक श्राविका नाम धराय।
ते कुण कुण बोल उथापिया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १० ॥

ढाल

[वे वे मुनिवर वहरण पागुरया रे]

त्या समाई पडिक्कमणो उथापियो रे, वले दशमा व्रत ने दीयो उथाप रे।
वले पोसो उथाप्यो व्रत इग्यारमो रे, त्यारे होसी परभव मे घणो सताप रे।
त्यानें श्रावक मत जाणो भगवान रा रे* ॥ १ ॥
सुध आचारी साधा ने माने नही रे, तिण थी भाव सू दान दीयो नही जाय रे।
इण लेखे व्रत उथाप्यो बारमो रे, वले साधु वादण रा सूस दिराय रे ॥ त्या० २ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले व्रत उथाप्यों मूरख आठमों रे, तिण में अर्थ विन पाप करण रा त्याग रे।
ते पोतें पिण एहवो त्याग करें नहीं रे, ओर करे त्यांरो पाडे वेंराग रे॥ ३ ॥
जे मांगे नें खाए रोटी पार की रे, तो ही अनर्थे पाप करण आगार रे।
त्यांनें वांदे अग्यांनी सतगुरु जांण नें रे, त्यां दोयां रो विगड गयो जमवार रे। ४ ॥
वले समाई पडिक्कमणो करे नहीं रे, नहीं पोसो करवा सूं त्यांरो पेम रे।
वले सुघ आचारी साधु सूझे नहीं रे, त्यां विकला नें श्रावक कहीजें केम रे॥ ५ ॥
उतारे साधां री मूरख आसता रे, वले कनें आतां नें राखे पाल रे।
जाणे खोटा सरधेला मों भणी रे, आ चोडे रेणा देवी री चाल रे॥ ६ ॥
मिनकी फिरे छे घर घर बारणे रे, तिणरी उंदरा ऊपर खोटी दिष्ट रे।
ज्यूं समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिण नें संका घाले ने करदे भिष्ट रे॥ ७ ॥
कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिणरे संका घाले नें पाडे धडक रे।
जद केयक भोला सामायक छोड दे रे, तब पामे अग्यांनी मन में हरष रे॥ ८ ॥
सामायक पचखण री विध जांणे नही रे, वले पालण रो जांणे नहीं विचार रे।
पचखांण पालण री विध जांणयां विनां रे, संका घालण ने पापी त्यार रे॥ ९ ॥
समाई करे त्यांरो मन भांग दे रे, वले भिष्ट करण रो करें उपाय रे।
परिणांम पेलारा पारण सांतरा रे, दोष बत्तीस सुणाय सुणाय रे॥ १० ॥
ए समाई रा दोष बत्तीस कहे तिके रे, किण ही सूतर में दीसें नांही रे।
तो ही मान्या सामायक नें उथापवा रे, त्यांरे घोर अंधारो छे घट मांही रे॥ ११ ॥
त्यांरी परतीत नें संगत करे तेहनें रे, बत्तीस दोषण देवे सीखाय रे।
जांणे रखे समाई पडिक्कमणो करे रे, इसडो धडको त्यांरे मन मांय रे॥ १२ ॥
कोइ समाई पडिक्कमणो करे रे, तिण सूं धरे अग्यांनी द्वेष रे।
कोइ समाई पोसो करणो छोड दे रे, जब पामें पापीडा हर्ष वशेष रे॥ १३ ॥
कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, वले वांदे साधां ने जोडी हाथ रे।
तो भिष्ट परूपे मूरख तेहनें रे, ओ चोडे देखो त्यांरो मिथ्यात रे॥ १४ ॥
कोइ समाई पोसा रो बंधो करें रे, त्यांरा पिण देवे सूंस भंगाय रे।
तिण नें कूड कपट केलव करे आपणो रे, वले समाई करवा न देवे ताय रे॥ १५ ॥
कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिण नें भिष्ट करे बोले आल पंपाल रे।
ओछी अकल रा भोला मिनष नें रे, मांहें न्हांखण नें चोडे मांड्यो जाल रे॥ १६ ॥
केइ मांगे नें खाए रोटी पारकी रे, ते बोले अग्यांनी एहवी वाण रे।
म्हें करां सामायक पोसा किण विधे रे, म्हांरो नहीं रे मन रो जोग ठिकांण रे॥ १७ ॥
यांरी सरधा रा सगला इमहीज बोलता रे, त्यांरी ववेक विचार नहीं छें सुध रे।
त्यां समाई पोसा करणा उथापिया रे, आ भिष्ट हुइ सगलां री बुद्ध रे॥ १८ ॥

केइ मांगे नें खाए रोटी पारकी रे, तो ही सुध न रहे त्यांरा परिणांम रे।
त्यांसूं एक घडी पिण मन वस हुवे नही रे, ते घर छोडी नें खोटी हुवा बेकांम रे॥ १६॥
आगे हुवा मोटा मोटा राजवी रे, वले सेठ सेनापती आदि पिछांण रे।
त्यांरा घर में आरभ ने परिग्रहो अति घणो रे, त्यां पिण कीधी सामायक समता आंण रे॥ २०॥
त्यारे राजविणज रा विभा था घणा रे, वले तरह तरह रा हूता कांम रे।
त्यां पिण सामायक ने पोसा कीया रे, ते थोडासा कहे बताऊ नाम रे॥ २१॥
राय उदाइ हूतो मोटको रे, ते सोले देसा रो करतो राज रे।
तिण समाई पोसा पडिकमणा कीया रे, छोडे सगलाइ घर रा काज रे॥ २२॥
अदीनसत्तु राजा रो डीकरो रे, कुमर सुबाहू तिणरो नांम रे।
पांचसो राण्या हूंती तेहनें रे, तिण कीधी समाई सुध परिणाम रे॥ २३॥
कुमर सुबाहु आदि दस जणां रे, ते सगलाई मोटा राजकुमार रे।
त्यां सगलां रे पांचसो पांचसो राणियां रे, त्यां कीधी सामायक समता धार रे॥ २४॥
राय परदेशी हूंतो पापियो रे, तिण समझे ने लीधा व्रत रसाल रे।
उण पिण घर माहे बेठां थका रे, कीधी सामायक दोषण टाल रे॥ २५॥
सुबुद्धी प्रधांन आगे समझियो रे, जितशत्रु नामें राजेंद रे।
तिण पिण सामायक ने पोसा कीयां रे, ग्याता में भाख्यो वीर जिणंद रे॥ २६॥
कासी नें कोशल देस तणा धणी रे, हूता अठारे मोटा राय रे।
श्रीवीर निरवांण गया तिण अवसरे रे, त्यां पोसा कीधां था तिण दिन आय रे॥ २७॥
आणंद आदि दे श्रावक दस हुवा रे, त्यारा घर में हूतो कोडां रो धन रे।
हजारां गमे त्यारे गायां हूंती रे, त्यां कीधी सामायक चोखे मन रे॥ २८॥
वले तुगीया नगरी नां श्रावक मोटका रे, त्यारा घर मांहे धन हूंतो परभूत रे।
त्यां समाई पोसा पडिकमणा करें रे, मुक्ति जावा ना दीधा सूत रे॥ २६॥
इत्यादिक राजा सेठ सेनापति रे, त्यारो कहतां कहता नही आवे पार रे।
त्यां समाई पोसा पडिकमणा कीयां रे, त्यां घर मे बेठा पाल्या व्रत बार रे॥ ३०॥
तो घरवार छोडे नें गेहला थकां रे, न करे सामायक मूढ अयाण रे।
ते कहवा नें श्रावक बाजें मोटका रे, पिण श्री जिण धर्म तणा अजांण रे॥ ३१॥
श्रावक रा बारे व्रता माहिलां रे, व्रत उथाप्या मूरख पांच रे।
बाकी सात व्रतां मे मन पचखे नही रे, कर्मां वस कर कर कूडी खांच रे॥ ३२॥
वले उत्थापी इर्यावही नें तस्सुत्तरी रे, वले लोगगस उथाप्यो जिण सतूत रे।
खबर विना उथाप्या खामणा रे, त्या दीधा दुरगति जावा ना सूत रे॥ ३३॥
एक वचन उथाप्या श्री भगवंत रो रे, उतकष्टो रूलैं तो अनंतो काल रे।
तो घणा उथापें बोल सिद्धांत रा रे, ते भमसी ज्यूं अरढ तणी घड माल रे॥ ३४॥

चिरमी नें उड़द दोनूं देख्यां थकां रे, भिड़कें पूर्वीया भगत बगेल रे।
इण दिष्टांते भरमाया भोला लोक नें रे, ते भिड़के सावां नें निजरां देख रे॥ ३५॥
ते वरत पचखांण करें ते मन विनां रे, पिण मन सूं तो जावक नहीं पचखांण रे।
त्यांरा विकल्पणा री विध परगट करूं रे, ते विवरा सुध सुणजो चतुर सुजांण रे॥ ३६॥

ढाल : ३

दुहा

आप छादे उंधी अकल सूं, काढ्यों मत विपरीत।
त्या सूस पचखांण कीयां तिके, सगलाई मन रहीत ॥ १ ॥
त्यारे सिष्य शिष्या हुआ तिके, राखी उणरी परतीत।
ते पिण भूला भर्म मे, ते चाले उणहीज रीत ॥ २ ॥
वडो ऊंट आगें चलें, पाछे चलें कतार।
ज्यूं वहुला बूडा वापडा, या वडां बूढां री लार ॥ ३ ॥
लीधी टेक छूटे नही, घट मे घोर मिथ्यात।
गुघू सरिपा होय रह्या, त्यारे दिवस तिकाइज रात ॥ ४ ॥
कूआ तणो डेडक कूए रंजे, तिण सायर लहर न दीठ।
ज्यूं साधा री सगत करी नही, त्याने लागे पाषड मत मीठ ॥ ५ ॥
त्या जिण मारग नही ओलख्यो, नही ओलखिया सुध साध।
वले श्रावक विध समझे नही, यूंही करता फिरे विषवाद ॥ ६ ॥
जिण वस्तु सू काम पडे नही, तिणरो पिण न करे नेम।
त्या कुण कुण आगार राखिया, ते सुणजो धर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[जिण धर्म आराधीये ए]

त्यारा मत माहे सका मोटकी ए, ते मन सूं न करे पचखांण।
परमारथ जाण्या विना ए, ए बूडा करें करे तांण।
भविक जन सांभलो ए* ॥ १ ॥
मुरगी गाडर वाकरा ए, वले हिरण सूंसा नें गाय।
त्यानें मारण तणी ए, मन सूं विरत न कीधी काय ॥ भ० २ ॥
वले जलचर थलचर खेचरा ए, वले उरपर भुजपर जांण।
यानें मारण तणो ए, मन सू न कीयो पचखांण ॥ ३ ॥
वले मात-पिता सुत बंधवाए, सेण सगा मित्र विचार।
त्याने पिण मारण तणो ए, मन सूं राख्यो आगार ॥ ४ ॥
वले इडा जात अनेक रा ए, त्यानें मन सूं मारण रो नही नेम।
एहवा मूरखां भणी ए, विकल वादे घर पेम ॥ ५ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

तीड पतंग भमरा माखियां ए, कीडी माकण लट नें गीडोल।
मन सू राख्यां मारणा ए, त्यां विकलां रे मोटी भोल॥ ६॥
पुढवी पांणी अग्नि ने वाय रो ए, वले वनस्पती नें तस जाण।
ए छकाय नें हणवा तणा ए, मन सूं न कीया पचखांण॥ ७॥
जीव अनंत छकाय में ए, त्यारी विवध परकारे छे घात।
त्यानें हणवा तणी ए, मन सूं विरत नहीं तिलमात॥ ८॥
ओर जीव तो जिहांई रह्या ए, गुर री पिण न छोडी घात।
हणवा ने मन मोकलो ए, ए इचरज वाली वात॥ ९॥
देव अरिहंत गुर साधजी ए, यांनें हणवा रो मन सूं आगार।
इसरोई सूंस कीयों नहीं ए, त्यांरा जीतब नें धिकार॥ १०॥
वले चेला चेली आपरा ए, गुर भाई गुर बहिन पिछांण।
त्यांनेंई हणवा तणो ए, मन सूं न कीयो पचखांण॥ ११॥
मोटो भूठ पांच परकार नों ए, वले छोटो विवध परकार।
मन सूं बोलण तणो ए, सगलोई राख्यो आगार॥ १२॥
मोटी चोरी पांच परकार नी ए, वले छोटी रा भेद अनेक।
ते सगली चोरी मोकली ए, पिण मन सूं न छोडी एक॥ १३॥
देव देवांगणा मिनष मिनषणी ए, वले तिर्यंच तिर्यंचणी विचार।
त्यांनें सेवण तणो ए, मन सूं सगलोई आगार॥ १४॥
जिण माता री कूखे उपनों ए, वले बहिन बेटी आदि जांण।
चेली गुर बहिन नें ए, मन सूं सेवा रा नहीं पचखांण॥ १५॥
हीरा माणक मोती मूंगीया ए, सोनो रूपादिक सर्व धात।
कंकर पत्थर घणां ए, वले रत्नां री सोले जात॥ १६॥
सर्व परिग्रहो छें नवजात रो ए, तीनूंई लोक मभार।
ते मन रा जोग सूं ए, यांरे सगलोई आगार॥ १७॥
पाप अठारें सेवण तणो ए, तीनूंई लोक मभार।
ते मन रा जोग सूं ए, जाबक नही परिहार॥ १८॥
गेंहणा कपडा विवध परकार नां ए, खावा पिवा री जात अनेक।
फूल बहु जात रा ए, यां मन सूं न छोड्यो एक॥ १९॥
मद पिवण मांस खावण तणो ए, वनस्पती अठारे भार।
जमीकंद सर्व रो ए, मन सूं राख्यो सर्व आगार॥ २०॥
हाथी घोडादिक बाहण तणो ए, घणी जात रा पीठी मरदन।
धूपादिक खेवणो ए, त्यांमें सगलेई मोकलो मन॥ २१॥

सर दह तलाब फोडण तणो ए, दवदे करे जीवां रो संघार।
गामांदिक बालण तणो ए, यारे मन सूं सगलो आगार ॥ २२ ॥
मोटा मोटा वृष वाढण तणो ए, वले कटावणा बाग।
घाणी फेरण तणो ए, मन सू न कीधों त्याग ॥ २३ ॥
पनरे कर्मादान मे ए, आयो सगलोई विणज व्यापार।
तिणरा भेद अति घणा ए, ते सगलोई मन सूं आगार ॥ २४ ॥
इत्यादिक कुकरम घणा ए, ते तों पूरा कह्या न जाय।
ते मन सू न पचखिया ए, त्यारे बधसी कर्म अथाय ॥ २५ ॥
अर्थे काम करणो तो ज्याही रह्यो ए, अर्थ विनां न करणो पाप।
ते मन सू न त्यागियो ए, आ खोटा मत री थाप ॥ २६ ॥
मन सू तदुल माछलो ए, अशुभ कर्म उपाय।
अतर महुरत मझे ए, पडे सातमी नरक में जाय ॥ २७ ॥
ज्यांरो सदा काल मन मोकलो ए, सगलाई कुकरम माय।
त्यांरो काई पूछणो ए, ए चोडे बूडा जाय ॥ २८ ॥
माठी माठी वस्तु खावा भणी ए, चलता न दीसे परिणांम।
तिणमेई मन मोकलो ए, ओ राख्यो अग्यानी किण काम ॥ २९ ॥
आखा जनम में करणा पडे नही ए, माठा माठा अकारज अनेक।
ते मन सू न पचखिया ए, आ खोटा मत री टेक ॥ ३० ॥
एहवा ववेक विकला भणी ए, पूछा कीजें आम।
अकारज करवा भणी ए, मन मोकलो राख्यो किण कांम ॥ ३१ ॥
इम पूछ्या जाब न उपजें ए, जब क्रोध करें घट माय।
चरचा करवा थकी ए मूंह टालो दे जाय ॥ ३२ ॥
कदा लाजा मरता मन पचख दे ए, छोडे खोटा मत री रूढ।
इण लेखे यारा वडबडा ए, सगला हुआ ते मूढ ॥ ३३ ॥
इम कहि कहि ने कितरो कहू ए, इण मत रो घोर अंधार।
समझ पड्यां विना ए, ए भूला भरम गिंवार ॥ ३४ ॥
त्या आपो न ओलख्यो आपणो ए, तो ही साधु उत्थापण शूर।
भोला नें भरमायवा ए, कर रह्या फेन फितूर ॥ ३५ ॥
ते जिण मारग रा धारवी ए, कूडो उठायो धध।
जिण वचन उथाप ने ए, चोडे मांड्यो फद ॥ ३६ ॥
इम सुण नें नर नारियां ए, छोडो कूडी टेक।
साधां री सेवा करो ए, मन मे आंण ववेक ॥ ३७ ॥

ढाल : ४

दुहा

केइ श्रावक बाजें घर छोडनें, मागे ल्यावे आहार।
पिण न्याय मारग सूझे नहीं, घट में घोर अंधार॥ १॥
चेला चेली करतां फिरें, वले साधां ज्यूं रह्या पूजाय।
वले खोटी करें छें परूपणा, ते पिण खबर न कांय॥ २॥
अधर्म करें करावें त्यांरे कारणें, तिण नें बतावें धर्म।
कोइ धर्म करे जिण भाषियो, तिणनें कहें छें अधर्म॥ ३॥
एहवी ऊंधी करें परूपणा, ते पूरी केम कहिवाय।
पिण थोडीसी परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ४॥

ढाल

[सल कोइ मत राखो जी]

यांरा कपडा धोवें कोइ गृहस्थी, तिणमें कहे विनें मूल धर्मो रे।
एहवी ऊंधी करें परूपणा, भोलां नें पाड्या भर्मो रे।
सरधा सुणजो विकलां तणी*॥ १॥
जब केयक गृहस्थ बापडा, कपडा धोवें जीवां नें मारी रे।
तिणनें कहे ओ तों वनीत छे, धर्मी पुरुषां ने साताकारी रे॥ स० २॥
ए हिंसा धर्म परूपियो, अभितर री आंख मीचो रे।
कोइ चतुर पुरूष होसी तिको, एहवो कांम न करसी नीचो रे॥ ३॥
यांरा कपडा धोवें तेहनें, निश्चेंई बंधसी कर्मो रे।
जे धर्म कहे इण कांम में, तिण थाप्यो अधर्म नें धर्मो रे॥ ४॥
नमस्कार करें पांचूं पद भणी, सीस नमी जोडे हाथो रे।
यांनें बांधा पाप लागे कहे, त्यांरा घट मांहें घोर मिथ्यातो रे॥ ५॥
यांरा कपडा धोवें पांणी आंण नें, तिण नें लाभ बतावें मोटो रे।
नोकार गुण्या कहें पाप छें, ओ मत निश्चेंई खोटो रे॥ ६॥
वले जूंवां कढावे गृहस्थ कनें, काढणवाला नें मुख थी सरावे रे।
विने मूल धर्म कहें तेहनें, ए तों इसडा गोला चलावे रे॥ ७॥
साधु सूतर लिखे जेणां करी, ते तों ग्यांन ववारण हेतो रे।
तिण साधु नें पाप लागो कहें, त्यांरा फूटा अभितर नेतो रे॥ ८॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

थांरी जूआं काढ्यां तो धर्म कहे, साधु सूतर लिख्या कहे पापो रे।
ते दोनूं विध बूडे बापडा, कर कर कूड विलापो रे॥ ९ ॥
यांने वेसावें गाडे घोडे पीठी ए, करे तस थावर नी घातो रे।
तिण वेंसाण वाला ने धर्म कहे, आ ऊंधी सरधा साख्यातो रे॥ १० ॥
साधु सूतर रा न्याय सूं, जोडे तवन सझायो रे।
तिणमे पाप बतावे झूठा थका, कर कर कूडी बकवायो रे॥ ११ ॥
यानें गाडे घोडे बेसाणिया, तिणने धर्म कहे छे अग्यानी रे।
साधु जोड कीयां अधर्म कहें, त्याने किण विध कहीजे ग्यांनी रे॥ १२ ॥
ए तों अधर्म ने धर्म कहे, धर्म नें अधर्म कहे अन्हाखी रे।
त्याने निश्चे मिथ्याती जिण कह्या, ठाणांग दसमो ठाणो साखी रे॥ १३ ॥
यांने थांनक देवे असूझतो, तिणमें धर्म कहें निसको रे।
त्या ववेक विकल भोला मिनष रे, लगाया मिथ्यात रा डको रे॥ १४ ॥
थानक दडे लीपे यारे कारणे, वले केलू सारे छांन छावे रे।
ते मारे अंनता जीवां भणी, तिणमें धर्म बतावें रे॥ १५ ॥
इत्यादिक यारे कारणे, जीव छकाय रा हतिया रे।
वले धर्म सरधे जीव मारने रे, ते बूड गया त्यारा मतिया रे॥ १६ ॥
याने आहार पाणी दें असूझतो, तिणने कहे निकेवल धर्मो रे।
ते भोला ने समझ पडे नही, ते तो भूला अग्यानी भर्मो रे॥ १७ ॥
कहिवा ने कहे ल्यां म्हे सूझतो, तिणरो पूरो न जाणें विचारो रे।
जांण जाण ने लेवें असूझतो, ते साभलजो विस्तारो रे॥ १८ ॥
यांरे गाम पर गांम थी बीदडी, चोमासा दिक में चाली आवे रे।
जब जीव अनेक मरें घणां, तिणमेंई धर्म बतावे रे॥ १९ ॥
आहार पाणी वस्त्र पात्रादिक, यारे कारणे मोल ले आणे रे।
इण विध वेंहरावे असूझतो, तिण दातार ने धर्म जाणे रे॥ २० ॥
घी खाड लाडू आदि चोर ने, वहू ले आवे सासू छाने रे।
त्यानें आंण वेंहरावे तेहमें, धर्म निकेवल माने रे॥ २१ ॥
ए बात चावी हुवे लोक मे, तो दोनूंई दीसे भूडी रे।
चोरी कर नें वेहरायो असूझतो, ते तों दोनूं प्रकारें बूडी रे॥ २२ ॥
जाये ग्रहस्थ रे घरे गोचरी, जब माडे फेन वशेषे रे।
कहे असूझतो माहरे लेणों नही, मांने वेंहरायजो सुध देखे रे॥ २३ ॥
साहमो आण दे बरसता मेह मे, तिणरो तो न करे टालो रे।
धूर्तवादी करे गृहस्थ नें घरे, एहवो कूड कपट रो चालो रे॥ २४ ॥

वले वेसे गाडे घोडे पोठीए, करें अनंत जीवां री घातो रे।
छकाय छोडी कहे सर्वथा, ते चोडें बोले भूठ साख्यातो रे॥ ४१॥
वले छाटां में ऊठे गोचरी, साह्मों आंण दीयों पिण लेवें रे।
तिहां जीवां री हिंसा हुवे घणी, वले बुहारी सूं बुहारो देवें रे॥ ४२॥
इत्यादिक कामां करतां थकां, विवध पणे जीव मारे रे।
वले छ काय छोडी कहे सर्वथा, ते भूठ बोली जनम विगाडे रे॥ ४३॥
इम कह्यां जाब न ऊपजे, जब सूवा बोले तिण वारो रे।
में छोडी जिती म्हांरे विरत छे, बाकी रह्यो आगारो रे॥ ४४॥
तो ग्रहस्थ छोडी छ काय देस थी, ते पिण हुवो वरत धारो रे।
तिग लेखे तो ऊ श्रावक वडो, तिग वडा नें पगे कांय पारो रे॥ ४५॥
जब कहे में छ काय छोडी घणी, इण श्रावक छोडी छे थोडी रे।
इण श्रावक सूं मों में गुण घणां, म्हांने तिण सूं वांदे हाथ जोडी रे॥ ४६॥
एहवी ऊंधी करें परूपणा, वडा श्रावक ने पगे लगावें रे।
इण वात रो प्रश्न पूछियां, ते पिण जाव न आवें रे॥ ४७॥
किण ही गृहस्थ संथारो कीयो, च्यांरू आहार दीयां वोसरायो रे।
जब यांसूं तो उण में गुण घणां, तिणनें क्यूं नहीं वांदे जायो रे॥ ४८॥
गुर रे पचखांण हुवे मोकला, लारे चेलो हुवे इचक वेंरागी रे।
घणां गुण वाला ने कहे वांदणो, तो चेला नें वांदणो पगे लागी रे॥ ४९॥
चेला ने वांदणी आवें नही, जब करे वडां री थापो रे।
ते न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या कूड विलापो रे॥ ५०॥
तो वरतां वडो छे ऊ गृहस्थी, ऊ पिण श्रावक वाजें रे।
आप छोटा छे उण श्रावक थकी, तिण वडा नें वांदता कांय लाजे रे॥ ५१॥
कदे करे वडा री थापना, कदे करे गुणा री थापो रे।
ते वंदणा रा भूखा थकां, ओरां ने डबोय डूबसी आपो रे॥ ५२॥
एहवा पाखंडी लोक में, गृहस्थ थकां गुर वाजें रे।
करावे तिक्खुत्ता सूं वंदणा, पिण निरलज्जा मूल न लाजें रे॥ ५३॥
जिम अरिहंत सिघ ने वंदणा करे, तिमहिज आप वंदावे रे।
ए गुण विण ठाली ठीकरा, अरिहंत सिघ रे जोडे किम आवे रे॥ ५४॥
त्याने तिक्खुत्ता सूं वंदणा करे, ते जिण मारग गया भूलो रे।
ज्यां गुर कीधा गृहस्थी भणी, ते रह्या मिथ्यात मे भूलो रे॥ ५५॥
इम सांभल नें नर नारियां, पाषंड मत निवारो रे।
सुध साधां ने ओलख गुर करो, ज्यूं उतरो भव पारो रे॥ ५६॥

●

रत्न : १३

निम्ब रास

ढाल : १

दुहा

भेषधारी भागलां थकी, पले नही आचार।
वले सरधा पिण त्यारी बुरी, तिणमें अतंत अंधार॥ १॥
केइ नाम धरावें साध रो, पिण वरत न पाले एक।
ते भिष्ट थया आचार थी, सेवण लागा दोष अनेक॥ २॥
ते आचार तणी वाता सुणे, तो लागें अभितर लाय।
तलतलाट करता थकां, बोलें मूसावाय॥ ३॥
सुध साधां नें निन्व कहें, वले बोलें फिरता वेंण।
सिकल विकल बुध बाहिरा, त्यांरा फूटा अभितर नेण॥ ४॥
त्यारे सरधा छें निन्वा तणी, ते अरू वरू ल्यों देख।
वले भिष्ट थया आचार थी, त्यां पेहर विगाड्यो भेख॥ ५॥
माहोमा निन्व कहे, ते तों रागा धेषो जांण।
लखणा कर ओलखाय दे, ते डाहा चतुर सुजांण॥ ६॥
त्यांरा टोला अनेक छें जूजूआ, जूइ जूइ सरधा छें तांम।
जूइ जूइ करे छे परूपणा, ते पिण साध धरावें नांम॥ ७॥
ते आचार में हीणा घणां, वले लोप दीधी मरजाद।
साची सूतर री वात माने नही, कूरो करे रह्या विषवाद॥ ८॥
ते दोष सेवें छे अति घणा, ते पूरा केम कहिवाय।
थोरा सा परगट करू, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ९॥

ढाल

[हूं वलीहारी जादवा]

अरिहंत सिध नें आयरिया, उवभाय ने उत्तम सुध साध कें।
मुगत नगर ना दायका, ए पाचूं पद ने लीजो अराध के।
रास भणूं निन्वां तणो* ॥ १ ॥
नमूं वीर सासण धणी, वले नमूं गणधर गोतम सांम के।
त्या मोटा पुरुषां नें नमीयां थका, सीभें मन वछत आतम काम कें॥ र० २ ॥
इण दुषम आरें पांचमें, साग पेंहरे बाजें साध अणगार के।
सरधा त्यारे निन्वां तणी, वलें छें त्यारो भिष्ट आचार कें।
नीचों मत निन्वां तणो॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यांरा चेंहन लखण परगट करूं, कोइ म धरजो मन मांहें धेप कें।
निरणों कीजों घट भितरें, जे जे कहूं ते निजरां लेजो देख कें॥ ४ ॥
कोइ मिनष आंतरीयों जूतों धुरल कें, ते धन उदकें छे थांनक रें काज के।
ते दांन लेइ थांनक करें, त्यां छोड दीधी लोकां री लाज कें॥ ५ ॥
वले थांनक करावण कारणें, अउत तणों लेवें छें माल कें।
तिण थांनक मांहें रहें, ओ प्रतख जाणों खांपण वालो ख्याल कें॥ ६ ॥
लिंगडा लिंगड्यां कारणें, जागां वांधी छें मठ जेम कें।
मठवासी ज्यूं मांहें वसें, त्यां विकलां नें साध कहीजें केम कें॥ ७ ॥
आधाकरमी थांनक भोगवें, वले मोल रा लीया में रहें छें ताहि कें।
वले भाडे लीया पिण भोगवें, त्यांनें निश्चेंइ जांणों निन्वां री पांत मांहि कें॥ ८॥
कोइ मिनष आंतरीयो जूतों धरल कें, ते घर री जायगां नें थांनक दे थाप कें।
तिण थापीता थांनक में रहें, तिण थांनक रा धणी होय बेंठा आप कें॥ ९॥
एहवा थांनक भोगव्यां, बुध अकल पत त्यांरी जाय कें।
त्यां भेष भांड्यो छें भगवांन रो, ते बूडा साध नांम धराय कें॥ १०॥
ए चाला तो पोतें चालवें, कांम पड्यां कपटी होय जाए दूर के।
थांनक भायां निमतें कहें, जांणे जांणें नें मूरख बोले कूर कें॥ ११॥
दडें लीपें साधां रें कारणें, ओडीयां ओडीया आंणें छें गार कें।
ते पिण बूड गया बापडा, वले गुर रो इ जनम दीयों छे विगाड कें॥ १२॥
केइ भेषधारी नें भेषधास्यां, हाथां दडें लीपें छें गार कें।
त्यां भेष भांड्यों भगवांन रों, त्यांनें वांदें ते पिण मूढ गिंवार कें॥ १३॥
साध काजें वांदें चंदरवा, वले वांधें पडदा परेच कनात कें।
ते पिण बूडे गया बापडा, वले गुर नें भिष्ट कीयां साख्यात के॥ १४॥
केलू फेरें साधां रे कारणें, जमीया उखेलें छे जीवां रा जाल कें।
नीलण फूलण कुलायता, अनंत जीवां रा छें खेंगाल कें॥ १५॥
छपरा करें साध कारणें, वले उपर चढ छावें छें छांन कें।
ते गुर नें सेवग बेहूं जणां, भव भव में होसी घणां हिरांन कें॥ १६॥
मुरड न्हांखे नीलो उखणें, अनंत जीवां री करें छें घात कें।
जब साध श्रावक बेहूं जणां, चोडेंइ बूड गया साख्यात कें॥ १७॥
थांनक री भींत पड गइ, जब श्रावक फेर चुणावें भींत कें।
तिण हिंसा रा पाप उदें हूआं, चिहुं गति में होसी घणां फजीत कें॥ १८॥
साध रेत आंणे नें पाथरें, ते रहें रों छार उपर बरसें मेह के।
जीव अनंत मरें तिहां, तिण रा साधपणा रो आए गयो छेह कें॥ १९॥

वले टाची वजावे सिलावटा, साधा रें थांनक सुधारण काज के।
तिण जायगां मे साधु रहें, त्यां छोड्यो संजम ने लोकां री लाज कें॥ २०॥
पका थाभा मंगावे पर गांम थी, तिहा अनत जीवा रो करे छे सधार कें।
ते वूडो जीवा थी वेर वाध नें, गुर रो पिण दीधो जनम विगाड कें॥ २१॥
नवी जायगा उठाय वेठी करे, थेट सूं नवी दराए नीव के।
साधा निमते हिसा करे, ते तो निश्चेइ हिसक दुष्टी जीव के॥ २२॥
हिसा करें साधा रे कारणें, त्या जीवां रो जाणजो पूरो अभाग के।
तिण विध विध सूं जीव मारीया, त्यारो कहितां कहितां न आवे थाग के॥ २३॥
गरथ दीयो छे थांनक करायवा, तिण अनंत जीवां रो करायो छें नास के।
पाप रो मूल मूदे तो तेहिज छें, तिणनें निश्चेइ जांणजों दुरगति वास के॥ २४॥
एहवा थानक भोगवें, ते निश्चेंइ छें भगवत रा चोर कें।
आचारांग नसीत सूत्तर मर्भे, तिहा वीर जिणद कीयों छे निचोड कें॥ २५॥
नवो थानक त्यारे मोल ले, जव आगलो थानक वेचे करें दाम कें।
ते व्याज देवें सामग्री मर्भे, ते थानक तालके कहें छे तांम के॥ २६॥
मुरदादिक रो माल लें भेलो करे, ते व्याज देइ नें वधारें माल कें।
तिणने पिण कहे थानक तालकें, ते वूडा देवाल लेवाल दलाल के॥ २७॥
जिणरो थानक तिणरो परगरो, ओर रो परगरो म जाणो कोय के।
ते थानक छे भेषधार्‌या तणो, त्यारो इज परगरो जाणो लीजो सोय के॥ २८॥
वले थापीता थानक मे रहें, ओ पिण छे उघाडो दोप कें।
तिण दोप ने दोप जाणें नही, ते मिथ्याती किण विध जावसी मोख के॥ २९॥
कहि कहि ने कितरो कहू, इण अनुसारें वोल अनेक कें।
एहवा थांनक भोगवे, त्यामें आखो वरत न पावे एक कें॥ ३०॥
राते किवाड जड्या उघाडीया तिहा पिण हुवें छें जीवां री घात के।
तिणरो पाप ने दोप गिणे नही, त्यानें निन्व जाणो साख्यात के॥ ३१॥
नित को वेहरे एकण घरे, धोवण पाणी असणादिक आहार कें।
ते भिष्ट हूआ जिण धर्म थी, विगड गयो विकलां रो आचार कें॥ ३२॥
साध नाम धराय नें, वेठी पात आरा माहे जाय के।
त्या भेष भाड्यो भगवान रो, त्या विकला ने जाणजो निन्वां रे माय के॥ ३३॥
कलाल ना घर नों पांणी पीयें, ते पिण दोप सहीत असुध कें।
एंहवो पाणी पीये तेहनी, भिष्ट हुइ छें सुध ने वुध कें॥ ३४॥
पाणी वेहरें कलाल ना घर तणो, ते पिण मोल रो लीधो छे ताम के।
वले रुपीया नें व्याज दे तेहनें, ते पाणी वेंहरे ते निन्वां रो काम कें॥ ३५॥

विण पडिलेह्यां गिज पोथ्यां तणो, त्यांमें अनंत जीवां री हुवें छें घात कें।
त्यां जीवां रों पाप गिणें नही, ते तो असल निन्व साख्यात कें ॥ ३६ ॥
ववेक विकल बालक विरघ छें, ते तों समकत विरत जांणें नही ताहि कें।
वले साधपणों नही ओलख्यों, एहवा विकला नें मूडे ले मांहि कें ॥ ३७ ॥
सात आठ वरस रो डावडो, समकत विण हीण बुधीयो जीव कें।
तिणनें दिख्या दे आहार भेलो करे, त्यां पिण दीधी छें नरक री नींव कें ॥ ३८ ॥
तिण बालक नें न्यातीला पकड नें, पाछो गृहस्थ करें तिण रो भेष उतार कें।
तिणनें पाछें निन्व जाय नें, घरणो पाडें वाख्वार के ॥ ३६ ॥
पूछ्यां कहें म्हें घरणो पाड्यों नहीं, जांणें जांणें नें बोले सांप्रत कूड कें।
एहवा किरतब तो निन्व करें, त्यांरो लोकिक में पिण हुवो फितूर कें ॥ ४० ॥
कोइ निरघन घर छोडें त्यां कनें, तिणनें घर रा आगना देवें नही ताम कें।
जब निन्व आमना करें, गृहस्थ कनाथो दरावें छें दांम कें ॥ ४१ ॥
दांम दरावण री दलाली करें, त्यांरो पाचमो वरत हूवो चकचूर कें।
दसवीकाल कें देखलो, साघपणों गयो वेहतीरे पूर कें ॥ ४२ ॥
मूंआ गयां रा पातरा, इधका राखें थांनक रे माय कें।
त्यांनें पूछें तो कहें गृहस्थ ना, सांप्रत बोलें मूंसावाय कें ॥ ४३ ॥
ते पडिलेह्यां विण पडीया रहे, जाल जमें जीवां री हुवें घात के।
इधका राख्यां भागों वरत पांचमों, त्यांनें जांणजों निन्व साख्यात के ॥ ४४ ॥
इधका थांन राखें कपडा तणा, ते पिण विण पडिलेह्या तांम के।
त्यांनें आला में घालें मूंद दे, अें तो भेषधारी निन्वा रा कांम कें ॥ ४५ ॥
आरा मां सूं साधां रें कारणें, धोवण मांड मेले अनेरे घर आण कें।
ते दोखीलों वेंहरें जांण नें, एहवो भिष्ट आचार निन्वां रो जाण कें ॥४६॥
धोवण मांहें नीलोंतरी, तिण धोवण नें वेंहरे जाण कें।
वले दोष गिणे नहीं तेह में, ते निन्व छें पूरा मूढ अयांण कें ॥ ४७ ॥
भूरी धोवे छें जुवार री, तिण धोवण में जुवार रा दाणा अनेक कें।
ते धोवण वेंहरे छें जांण नें, त्यां छोड दीधीं जिण धर्म री टेक के ॥ ४८ ॥
बायां घर घर नों धोवण भेलो करें, साधां नें वेंहरावण रें काज कें।
ते धोवण वेंहरें साध जांण नें, त्यांने किम कहिजें मुनिराज कें ॥ ४६ ॥
छती सकत फिरवा तणी, तोही लिगडा लिगडी थाणें वेसें ताहि कें।
कल्प मरजादा भांगी छें पापीयां, त्यांनें गिणों निन्वां री पांत मांहि कें ॥ ५० ॥
सहर में फिरें गोचरी उतावला, वले हाथ मांहें लीयां चाले छें भार कें।
वले मेड्यां चढें नें उतरें, त्यां विकलां नें छें तीन धिकार कें ॥ ५१ ॥

थाणे बेठा छें खावा घालीया, ते थांणें न बेंठा खांणे बेठा जांण के ।
ते रस ग्रिधी नगर पिंडोलीया, त्यां भेषधार्यां भागी छे जिणवर आंण कें ॥ ५२ ॥
एक दिन माहें एकण घर मझें, वेहर ल्यावें छे तीन च्यार वार कें ।
ते पिण सख्या छें नही, त्या विकला रो विगड गयों आचार के ॥ ५३ ॥
ते पिण विनाइ कारण वेहरता, त्यां भागे दीधी छें कल्प मरजाद के ।
एहवा भेषधारी भागल फिरें, विकल थकां वाजे छे साध के ॥ ५४ ॥
माहोमाहि साव सरधे नही, त्यारा मूंअे गयो करे मांहोमा मूकांण के ।
आदर भाव नही आयां तणी, ते निन्व जिण मारग रा अजांण के ॥ ५५ ॥
वले ग्रहस्थ नें बेंसण री आमना करे, जायगा वतावे बेंसण सुवण नें ताय के ।
तिण कीयो सभोग गृहस्य सू, तिणरी पिण विकला ने खबर न काय के ॥ ५६ ॥
प्रश्न व्याकरण दसमा अग मझे, साव ने न राखणो चसमो कांच कें ।
ते राखे छे सूतर उथाप ने, त्या निन्वां रो विकल माने छे साच कें ॥ ५७ ॥
एकलो साघ चोमासो करे, वले एकलो रहे छे सेषे काल के ।
तिणने अव्यक्त भगवत भाखीयो, सावपणा थी दीयो छे टाल कें ॥ ५८ ॥
दोय साधवीया चोमासो करे, दोय जणी रहे सेखा काल के ।
कारण विण विचरें दोय जणी, तिण लोपी मरजादा भागे दीधी पाल के ॥ ५९ ॥
पांणी ठारे गृहस्थ रा ठाम मे, भोगवी पाछा सूप दे ताहि के ।
त्यानें अणाचारी जिणवर कह्या, दसवीकालिक तीजा अवेन रे माहि के ॥ ६० ॥
मातरीयादिक रो नांम ले, पातरो इधको राखे छे ताहि के ।
तिण माहे दोष जाणे नही, त्याने जाणो निन्वा री पांत माहि के ॥ ६१ ॥
कारण विनाइ साधव्यां, काजल घाले आख्या रे माहि के ।
अणाचारणी त्याने कही, दसवीकालक तीजा अवेन रे माहि के ॥ ६२ ॥
केइ आर्यां पेहरे छे काचूओ, मिश्रू आदि वले खीनखाप के ।
ते विगडायल छे जेन री, त्यानें वाद्यां पूज्या छे निकेवल पाप के ॥ ६३ ॥
वधो करावे गृहस्थ ने, तूं दिख्या ले तो लीजे म्हारे पास के ।
ओर साध कनें लीजे मती, तिण श्री जिण आगना लोपे दीधी तास के ॥ ६४ ॥
मोल लरावे लोट पातरा, वले पाना परत लारावे मोल के ।
वले मोल वतावें थोडो घणो, ओ देखो निन्वां रो पोल के ॥ ६५ ॥
लोट पातरा वसतर · पोथीया, सेंठी घालें भुयरा रे माहि के ।
त्यारी पडिलेहण करे नही, एहवा भिष्ट आचारी छें निन्व ताहि के ॥ ६६ ॥
लोट पातरा वसतर ने पोथीया, गृहस्थ रे घरे मेले छे ताम कें ।
त्यारी भलावण देवे गृहस्थ ने, पछें विहार करें जाओ ओर गाम के ॥ ६७ ॥

मोल ले राखें सांधां नें वेंहरायवा, घी खांड आदि दे वस्तु अनेक कें।
ते वेंहर आंणें लोलपी थकां, त्यां पेहर विगाड्यो साध तणो भेख कें॥ ६८॥
गृहस्थ ने देवें लोट पातरा, पूठा पांना नें परत वशेष कें।
वले देवे ओघो नें पूजणी, ते भिष्ट हूआ ले साध रो भेष कें॥ ६९॥
थोडोइ उपधि गृहस्थ नें दीयो, त्यांरो आखो वरत रह्यो नहीं एक के।
नसीत रे पनरमें उद्देसे कह्यों, ओ पिण नहीं विकला रे ववेक कें॥ ७०॥
इधका राखें छें लोट नें पातरा, इधका राखें कपडा लोपें मरजाद कें।
वरत भांगों त्यारो पांचमो, त्यां विकलां ने विकल जांणे छें साध कें॥ ७१॥
कागद लिखावें गृहस्थ कनें, ओर गांम मेंलण ने ताहि कें।
तिण मांहें समाचार आपरा, ते पिण छें निन्वां री पांत माहि के॥ ७२॥
केइ तों कागद हाथां लिखें, मेंल देवें गृहस्थ रें साथ कें।
कहें ओर किणही ने दीजों मती, छानें दीजों साध साधव्यां रे हाथ कें॥ ७३॥
कपडा वेंहरावे त्यानें मोल लें, ते जांण नें वेंहरें छें ताहि कें।
ते भिष्ट हूआं जिण धर्म थी, त्यांनें निस्चेंइ जांणजो निन्वां रें मांहि कें॥ ७४॥
मोल लीधो थांनक भोगवें, मोल रो लीधो भोगवे आहार कें।
कपडा पिण मोल लीधा भोगवें, त्यानें निस्चेंइ मत जांणजों अणगार कें॥ ७५॥
सिजातर पिंड भोगवें, तें सरस आहार तिणरो आवतो देख कें।
धणी छोडे आग्या ले ओर नीं, तिण पेंहर विगाड्यों साध तणो भेख के॥ ७६॥
त्यांरा श्रावक खाजें केइ मांग नें, त्यानें सानी करें दरावे दांम कें।
तिणमें मुतलब जांणें आपरों, इणरे होसी ते आवसी म्हांरे कांम कें॥ ७७॥
ओ मोल ल्यावें घी खांड नें, वले चिरक पणो मेवा मिष्टांन कें।
ओ पिण खाजें मन मांनीयो, गुर नें पिण दे अडलक दांन कें॥ ७८॥
उणरे निठे खांतां नें देवतां, जब फेर त्यांरी करें दातार कें।
जब ओ पिण वेंहरावें उण रीत सूं, एहवो छें भेषधार्‍यां रें अंधार कें॥ ७९॥
कोइ घर सूं आयों वोलायवा, वेंहरायवा असणादिक आहार के।
तिण घर जाए तेडीया, त्यां विकलां रो विगड गयो आचार के॥ ८०॥
घर हाट मूं आयों चलाय नें, कपडों वेंहरण ने ले जावें वोलाय कें।
तिहां पिण जाये तेडीया, त्यांमें पिण कला मत जांणजों कांय कें॥ ८१॥
सांह्यो आंण्यों ले जाए तेडीयो, ए दोनूंइ दोष कह्या भगवांन कें।
ते पिण वेंहरें निसंक सूं, त्यांनें भिष्ट आचारी जांणें बुधवांन के॥ ८२॥
पाट बाजोट आंणें गृहस्थ रा, पाछा देवण री नहीं छे नीत कें।
मरजादा लोपीं नें भोगवें, आ तो निस्चेंइ जांणो निन्वां री रीत के॥ ८३॥

केइ पाट वाजोट मोल रा लीया, केइ आधाकरमी पाट वाजोट कें।
केइ तो साह्मा आणे दीयां, ओ पिण त्यामें मोटकों खोट कें॥ ८४ ॥
भांगां तूटा करावे त्याने सातरा, खाती रे पासें पागादिक दराय कें।
केइ पाट वाजोट आगा लीयें, केइ थांनक ज्यूं थापे राख्या ताय कें॥ ८५ ॥
गृहस्थ ने लिखावें बोल थोकडा, आप तणो पानो दे उतारण ताय कें।
ते उतारे छें पानो देख ने, इण दोष री विकला ने खबर न कांय कें॥ ८६ ॥
पेहलो करण लिख दीया मे पाप छे, तो लिखाया पिण होसी पाप कें।
तिणमें निन्व जाणे धर्म छे, त्यां श्री जिण वचन ने दीया उथाय कें॥ ८७ ॥
पुस्तक पातरा आदि दें, मोल लरावें ले ले नाम कें।
आछा भूंडा कहे तेहनें, अ पिण छे भागलां रा कांम कें॥ ८८ ॥
गराग नें तो कइयो कह्यों, कुगुर छे तिण विच दलाल कें।
वेचण वालो वाणीयो कह्यों, यां तीना रो जांणजो एक हवाल कें॥ ८९ ॥
क्रय विक्रय माहें वरते सावजी, त्यानें महा दोषण छे एह कें।
उत्तराधेन पेतीसमे, तिणने तो साध न कह्यो छे तेह कें॥ ९० ॥
जो मोल लरावे अचित वस्त ने, तो सुमत गुप्त होय जाअे खड कें।
पांचूं महावरत भागें गया, तिणरो आवे चोमासी डड कें॥ ९१ ॥
ए भाव कह्या छे नसीत मे, संका हुवे तो जोवो उगणीस मे उद्देस कें।
सुध साधा विण कुण कहे, सूत्तर तणी उडी रेस कें॥ ९२ ॥
पोथां रा गिज राखे पडिलेह्या विना, त्या माहें जमे छे जीवा रा जाल कें।
पडे कथुया माकड उपजे, नीलण फूलणादिक जीवा रो हुवें खेगाल कें॥ ९३ ॥
जोवे वरस छें मास नीकल्या थका, तो पेहला वरत तणों हुवे खड कें।
नसीत रे दूजे उद्देसे कह्यो, एक मास रो आवे डड कें॥ ९४ ॥
गृहस्थ रें साथे संदेसो कहे, जब गृहस्थ सू भेलो कीयो संभोग कें।
ते साध नही भगवान रा, त्यारे लागो मिथ्यात रो रोग कें॥ ९५ ॥
भेषधारी मांहोमां कजीया करें, धरणा पाडें दरावें आंण कें।
आंम्हा सांह्मा बेसें बाजार में, अन खावा रा दरावे पचखांण कें॥ ९६ ॥
अन पांणी छोडावे आण दे, कदा होय जावें तिण मिनष री घात कें।
एहवा किरतब करें तेह में, साधपणो रह्यो नही अंसमात कें॥ ९७ ॥
धरणो पाडें साध रा भेष मे, त्यां छोड दीधी लोका री लाज कें।
ते वेसरमा सर्म वाहिरा, त्या विकला ने विकल कहे मुनीराज कें॥ ९८ ॥
त्यानें वादे पूजें ते भोलीया, त्यानें साधपणा री खबर न कांय कें।
ते पिण बूडें गया बापडा, कुगुर तणी पखपात रें मांय कें॥ ९९ ॥

नहीं कल्पें ते वस्त भोगवें, तिण माँहें जांणजों मोटी खोड कें ।
आचारंग पेंहला सतखंव में, तिणनें तों भगवंत कहि दीयो चोर कें ॥१००॥
अनेक असुध वस्त भोगवें, ते तों निश्चेंइ चोर साख्यात कें ।
तिणरो प्राछित पिण लेवें नही, तिण री तो विगड गइ सर्व वात के ॥१०१॥
महंत रो नांम कानें सुणें, जब जांणें लीधी जमात री करामात कें ।
ज्यूं भिष्ट आचार्य तेहनीं, निश्चेंइ भिष्ट जांणों जमात कें ॥१०२॥
एक वचन सिधंत नों उथपें, तिणनें निन्व कह्यों जिणराय कें ।
उवाइ ने ठांणाअंग में देखलो, तिहां विवरा सुध दीयां छें वताय कें ॥१०३॥
तीन रास परूपी तेरासीयें, तिण घाली गला नें मिथ्यात री रांत के ।
ज्यूं मिश्र दांन कहें तके, ते छें तेरासीया निन्व री पांत कें ॥१०४॥
मिश्र दांन भगवते न भाखीयों, संका हुवें तो जोवों सिधंत रे मांहि कें ।
मिश्र दांन कहें ते निन्वां, तेरासीया निन्व ज्यूं ताहि के ॥१०५॥
मिश्र दांन अणहुंतो परूपीयों, मूढ मिथ्याती कर कर खांच कें ।
ज्यूं काग मेवो दाखां परहरी, उकरली में घालें चांच कें ॥१०६॥
माठी वसत ज्यूं सरधां मिश्र दांन री, तिण सरधां नें कदेय म जांणजों साच के ।
पिग काग सरीषा मांनवी, ते मिश्र री सरधा में रह्या छे राच कें ॥१०७॥
पेंहलो निन्व जमाली थयों, पांचमों निन्व गंगेय नांम कें ।
छलूक निन्व छठो कह्यों, यां तीनां री सरधा आदर बेंठा तांम कें ॥१०८॥
निन्व निन्व कर रह्या, पिण निन्वां नें निन्व कह्या किण न्याय के ।
पोतें निन्व छें तेहनीं, ते पिण विकलां नें खबर न कांय कें ॥१०९॥
साल दाल मीठा भोजन तजें, भंडसूरों घालें भिष्टा मुख मांहि कें ।
ज्यूं भेषधारी भिष्टी थया, त्यां सील आचार छोडें दीयों ताहि कें ॥११०॥
आहार सेजा नें वसतर पातरा, जांण जांण नें भोगवें असुध के ।
भंडसूरा सम त्यांनें कह्या, भिष्ट हुइ छें त्यांरी सुध नें बुध कें ॥१११॥
कूह्या कांनां री किडंदी कूतरी, तिणनें कोइ आवा नहीं दे घर मांहि के ।
जिहां जावें तिहां हुड हुड करें, ज्यूं मिश्र री सरधा जांणे लीजों ताहि कें ॥११२॥
भंडसूरो नें कूती कूह्या कांन रीं, तिण री ओपमा भागल निन्व नें ताहि कें ।
किण रें संका हुवें तो जोयलों, उत्तराधेन रा पेंहलां अधेन रे मांहि कें ॥११३॥
जिण जिण सेरयां हाथी संचरे, तिहां तिहां स्वांन भुसें लव तोड कें ।
अलगा थकां भुसवों करें, ए दिष्टंत बुधवंत लेजों जोड कें ॥११४॥
जिहां जिहां विचरें साधजी, तिहां तिहां हुवे तों देखें उपगार के ।
जब भेषधारी भागल निन्वां, स्वांन ज्यूं करें घणी भुसवाड कें ॥११५॥

डोला वारें काढे तुरकां तणें, जब मोटे मोटें सब्दे करें आइघोय के।
ज्यूं निन्वा रो मत विखरे जवे, आहिज रीत जाणें लेजो सोय कें॥११६॥
सैंद मास्या तुरकां तणा, तिण सूं आए वरस करे छेंआइघोय के।
ज्यूं ज्यांरा खेतर श्रावक फिरे, आइघोय ज्यूं करें छें हाय वोय के॥११७॥
सूतर विरुध जोडा करे, तिणरा कागदिया लिख दीघा हाथ के।
आइघोय ज्यूं करता थकां, बकता फिरें हाटां मे दिन रात कें॥११८॥
सुघ साधां नें निन्व कहे, निन्वा नें कहें सुध साध के।
ते दोनूं विघ वूडा बापडा, त्यांरा घटमे उपनी मिथ्यात री व्याघ के॥११९॥
नवकरवाली निंद्या तणी, कुगुरां दीघी छें त्यानें पकडाय के।
जाप जपें नित तेहनों, रात दिवस करें छें बुडण रो उपाय के॥१२०॥
सुघ साधां तणी निंद्या करें, वले अणहूता देवे आल के।
गेंहला ज्यूं बकवोकरे, साच भूठ तणो नही काढे निकाल के॥१२१॥
ओरां रें माथें आल दें, तिणसूंइ पांमे भव भव में आल के।
ज्यूं साधां रे आल देवें तिको, उतकष्टों रुलें तो अनतो काल कें॥१२२॥
जो पाप उदें हुवें इण भवे, तों घर माहे आवे दलदर भूख कें।
विजोग पडे वाहलां तणों, वले दिन दिन उपजें दुख माहे दुख कें॥१२३॥
रोग सोग संताप वघे घणों, जीवें जा लग रहे खांचा ताण के।
वले दुख पांमें नरक निगोद ना, सुघ साधा री निंदा रा ए फल जाण के॥१२४॥
जिहां विचरें सावजी, तिहा तिहां मिले परपदा रा थाट के।
तिहा भेषघारी ने निन्वा, रात दिवस करें छें तलतलाट के॥११५॥
जिहां जिहां निन्व संचरें, तिहां तिहा हुवें जिण धर्म री हांण कें।
कजीयो कलेस वधें घणो, तिहा मूरख बूडे छे कर कर ताण के॥१२६॥
जिहां जिहां सूर्य उदें हुवें, तिहां तिहां हुवें चोरां तणी घात के।
जिहां जिहां विंचरें साघजी, तिहां तिहां पतलों पडें छें मिथ्यात के॥१२७॥
साघ रो आचार परगट करें, जब भेपघास्या रे लागे दाह के।
रोम रोम तिणा रा परजलें, ओर लोकां रें तो नही परवाह के॥१२८॥
कजीया कलेस तो अेंहिज करें, अेहीज करें जिण धर्म री हांण के।
अेहीज निंद्या करें पारकी, ते पिण विकलनें नही छे पिछांण कें॥१२९॥
मत विखरतो देखे आप रो, वले परती देखें छें मत माहे फूट के।
जब निन्व नें निन्वा रा श्रावका, मिल मिल नें चलावें छें भूठ के॥१३०॥
स्वांन भुसें छें मुख उंचों करें, कानां सुणे भालर रो भिणकार कें।
ज्यूं साघां रा सब्द कानां सुणे, स्वांन ज्यूं निन्व करें भुसवार के॥१३१॥

माठी वस्त नें ज्यूं ज्यूं उकरालीयां, ज्यूं ज्यूं नीकलें दुरगंध वास के।
ज्यूं ज्यूं निन्वां नें छेडवे, ज्यूं ज्यूं उंचा बोले छें तास कें॥१३२॥
नींव फलें जव कागलो, घणों हरषें नींबोली देख के।
ज्यू काग सरीषा मांनवी, मिश्र री सरधा सूं हरखे वशेष के॥१३३॥
ते मल मल नें गावें मिश्र नें, जांणें सार काढ्यों इण सरधा मांय के।
न्याय निरणों त्यांरे नहीं, यूंही करें थोथी बकवाय के॥१३४॥
मिश्र दांन उठाय वेंठो कीयों, ते सरधा छें एकंत भूठ मिथ्यात कें।
ते किण किण में मिश्र कहें, ते सांभळजों छोडी पखपात कें॥१३५॥
आठ दांन कह्या संसार नां, तिण मांहें कहें जिण धर्म रो भेल कें।
आ उंधी सरधा निन्वां तणी, ते जिण मारग सूं नहीं खावें मेल कें॥१३६॥
अणुकंपा आंण गाजर मूला दीयें, वले सर्व नीलोत्तरी नें जमीकंद कें।
ते पिण दीयां मिश्र कहें, एहवो छे निन्वां री सरधा रो फंद कें॥१३७॥
बंदीवांनादिक नें दांन दें, सचित्तादिक नीलोती अनेक कें।
तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, आ खोटी सरधा भाले रह्या टेक के॥१३८॥
ग्रह करडा आयां भय रो घालीयों, थावरीयादिक नें देवें दांन कें।
तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, आ निन्वां री सरधा घोर अग्यांन कें॥१३९॥
खरच मूंआ रे केडें करें, ए चोथो दांन लोकिक ववहार कें।
तिणमें भेल कहें जिण धर्म रों, आ निन्वां री सरधा छें घोर अंधार के॥१४०॥
सांकडें पडीयो लज्या सूं दांन दें, ते सासरादिक में जमाइ ज्यूं जांण के।
तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, एहवा निन्वां छें मूढ अयांण के॥१४१॥
गरव चढ्यों दांन दे जेह भणी, मुकलावो पेहरावणी मूसालों रंगरेलकें।
रावलीयादिक नें दांन दें, तिण मांहे कहें जिण धर्म रो भेल के॥१४२॥
हांती नेंतो देवो नेंत घालवो, इत्यादिक आमों सांह्यो देवो लेवो तांम कें।
ए नवमों दसमों दांन छें, तिणमें जिण धर्म रो भेल कहें छें अलाम के॥१४३॥
पीहर बाजें छकाय नां, छकाय खवायां कहें मिश्र दांन कें।
जव पीहर तों पूरो पड्यो, दया रहीत छें विकल समांन के॥१४४॥
एक करणी करें तेहमें, नीपनो कहे छें धर्म नें पाप के।
एहवी करे छें परूपणा, मिश्र दांन री कीधीं छें थाप कें॥१४५॥
जीव खाचां खवायां भलो जांणीयां, तीनूंइ करणा कह्यो जिण पाप के।
जीव खवायां मिश्र कहें, त्यां निन्वां रे होसी भव भव मांहे संताप कें॥१४६॥
भात वरोटी जीमणवार में, नेंत जीमावें सगा नें सेण कें।
तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, त्यांरा फूट गया अभितंर नेण कें॥१४७॥

छही ,छकाय जीवां तणी, कोइ मडावे छही दान साल के।
त्यामे किणहीक मे तो मिश्र कहे, किणहीक रो नही काढे निकाल के ॥१४८॥
बावीस टोला ने कहे साघ छे, त्या पिण मिश्र री सरघा जाणे लीधी कूड के।
खोटी जाणे ने परहरी, ज्यू माठी वस्त उपर दे घूर के ॥१४९॥
बावीस टोला ने कहे साध छे, ओ पिण भूठ बोले जाण जाण के।
पिण मन माहि साघ जाणे नही, त्या भूठा बोला री करजो पिछाण के॥ १५०॥
जो साघ सरघे छे तो तेहनी, बदणा छडावे छे किण न्याय के।
एहवा प्रश्न पूछे सांकडे लीया, जब तो जीभ पडे नही ठाय के॥१५१॥
कदे करडे काम साकडे पड्या, बावीस टोला ने कहिदे साघ के।
ओ पिण भूठ बोले छे जाण जाण ने, पिण अतरग माहे जाणे असाघ के॥१५२॥
मिश्र दान उथापे तेहने, हिंसाघर्मी कहे छे ताम के।
हिंसा घर्मी तो निश्चेइ असाघ छे, जब तो बावीस टोला री पाडी माम के॥ १५३॥
मिश्र दान ने उथपे, त्याने पाखडी कहे छे ताम के।
वले हिंसाघर्मी त्याने कहे, वले भूठाबोला कहे छे ठाम ठाम के॥१५४॥
वले खोटो मत कहे तेहनो, वले अग्यानी कहे छे ताम के।
ग्यान विना आधा कहे, विध विध सूं पाडे छे माम कें॥१५५॥
जोड कीधी छे त्या उपरे, तिणमे निषेद्या छे विवघ परकार के।
साघपणा ने समकत तणो, खेरो मूल न राख्यों लिगार के॥१५६॥
ज्याने भिन भिन कर ने नषेघीया, वले त्यानेइज कहे छे साघ के।
एहवा भूठाबोला छे निन्वा, त्या विकला रे किण विध होसी समाघ के॥ १५७॥
बावीस टोला मे केइ भोलीया, त्या भूठाबोला ने कहे छे साघ के।
ते पिण सुघ बुघ बाहिरा, त्यारे पिण कदेय म जाणो समाघ के॥१५८॥
सील भागे निन्वां रा टोला मझे, तिणनें कहिवा ने तो दिख्या दे फेर के।
पिण वडो ज्यू रो ज्यूं राखीयो, एहवो छे निन्वा रा मन मे अघेर के॥१५९॥
कुसीलीया भागल भेला रहे, त्यारो तो किण विघ काढे निकाल के।
पाणी भरे सगला मझे, कण रहीत भेलो कीयो छे पराल के॥१६०॥
साघ साधवी सू वरत भाग दे, तिणनें दसमो प्राछित कह्यो जिण आप के।
ते ठांणाअग वेदकल्प मे, ते प्राछित निन्वां दीयों उथाप के॥१६१॥
सील भागें साघ साधवी थकी, तिणनें न्याय करण ने दिख्या दे फेर के।
तिण ने वडो ज्यू री ज्यू राखीयो, ओ पिण निन्वा रे अतत अघेर के॥१६२॥
फेर दिख्या दे सगला सू छोटो कीयो, जब सगलां वांदणा सीस नमाय के।
तिणरी वदणा तो जिहांइ रही, उलटा वडा ने पाडे छे पाय कें॥१६३॥

आगे छोटों थों तिणनें बंदणा करें, तो इणरो पडें छें लोका में उघाड कें।
तिण सूं बडो ज्यूं रो ज्यूं राखीयों, ओ चोडें देखों निन्वां रो आचार कें॥१६४॥
वडो छोटां नें बंदणा करें, त्यां खोय दीयों छें विनें मूल धर्म कें।
ते जिण मारग सूं उलटा पख्या, त्यां निन्वा रे छें भारी करम कें॥१६५॥
साध साधवी सूं अकारज करें, तिण पापी नें काढ देणो गण बार कें।
तिणरो काण मूल न राखणों, हेलणों निदणो च्यारूं तीरथ मझार कें॥१६६॥
तिणनें मांहें लेणों छें तो इण विधें, जो उ पोतीयों वांधें फिरें छ मास कें।
पछें दिख्या दे सगलां सूं छोटों करें, आ रीत करने माहें लेणो तास कें॥१६७॥
फेर दिख्या दे बडो राखीयों, तिणनें प्राछित न दीयों छें अंसमात कें।
जिण टोला मांहें आ रीत छें, त्यानें निस्चेंइ निन्वां जांणो साख्यात कें॥१६८॥
जिणरो प्राछित ओछो दीये, जिण रो प्राछित उण ने आवे ताहि कें।
जो संका हुवें तो जोय लों, वेदकल्प ठांणाअंग मांहि कें॥१६९॥
रास जोड्यों निन्वां तणों, प्रसिध सोजत सहर मझार कें।
समत अठारें वरस तेपनें, काती विद इग्यारस नें बुधवार कें॥१७०॥

रत्न : १४

विनीत अविनीत री चौपई

ढाल : १

दुहा

नमूं वीर सासन धणी, ते पाम्या पद निरवाण।
त्या विनों परूप्यों सद्गुर तणो, बाधी मरयाद परमांण ॥ १ ॥
केइ साधु नांम धरावतां, ते बोलें आल पपाल।
सुध आचार श्रद्धा थी वेगला, ज्यूं कण रहित पराल ॥ २ ॥
एहवा भेषधारी मिष्टी थकां, मुख सूं कहें म्हे साध।
ते विनो परूपें भागल तणो, श्री जिण वचन विराध ॥ ३ ॥
त्यांसूं महाव्रतां री चरचा कीयां, तो भागें मृग ज्यूं दूर।
घणा आडंबर करें पूजावता, वले भाखे अनेक विध कूड ॥ ४ ॥
त्यांरो विनों करें गुर जांण नें, भोला लोक अयांण।
केडे लागा कुगरां तणे, ते बूडें कर कर तांण ॥ ५ ॥
कुगुर आदर ने छोडण तणो, कठिन घणो ए कांम।
कोइ छोडे हिरदे ग्यांन परगट्या, त्यानें वीर वखाण्या तांम ॥ ६ ॥
विनो करणो छें सतगुर तणो, त्यांरा गुणां री करी पिछांण।
उत्तराधेन पेहलें कह्यो, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ७ ॥

ढाल :

[पाषंड वधसी आरे पाचमें रे]

संजोग छोड्या अभिंतर बाहिरला रे, ते मोटा ऋषिश्वर छे अणगार रे।
ते सर्व सावद्य त्यागे ने नीकल्या रे, त्यांरे पाप करण रो नही आगार रे।
विनों कीजे एहवा सतगुर तणो रे ॥ १ ॥
ते करणी कर भेदे भिक्खु कर्म ने रे, निरदोषण भिख्या ना लेवणहार रे।
विनो परूप्यो एहवा सतगुर तणो रे, सूत्तर में श्रीवीर कह्यों विस्तार रे। वि० २ ॥
जे चाले निरंतर गुर री आगनां मझे रे, समीपे रहे तो रूडी रीत रे।
ते जाण वरते गुर री अग चेष्टा रे, तिणने श्रीवीर कह्यो सुविनीत रे ॥ ३ ॥
विनो तो जिण सासन रो मूल छे रे, विनो निरवाण साधन रो काज रे।
जे विनों करण सूं उपराठा पड्या रे, ते गया संजम नें तप सूं भाज रे।
ते अविनीत भारी कर्मा एहवा रे ॥ ४ ॥
केइ गुर री नहीं पाले मूरख आगना रे, समीपे रहिता संके मन मांय रे।
रखे करावे कारज मोक नें रे, एहवो बूडण रो करें उपाय रे ॥ ते० ५ ॥

ते प्रत्यनीक अंतरंग में गुर नों पापियो रे, उण विनों न जांण्यो रूडी रीत रे।
उणरे कूड कपट ने घेठापणो घणों रे, तिणनें श्रीवीर कह्यों अविनीत रे॥ ६ ॥
जो कार्य करें अविनीत गुर तणो रे, तो जांणे अग्यांनी बेठ समान रे।
तिण धर्म जिणेसर नों नही ओलख्यो रे, ते चिहुं गति मे होसी घणो हेंरान रे॥ ७ ॥
जो तप कर काया कष्टे आपणी रे, ते जश कीरति के खावा ध्यांन रे।
के पूजा श्लाघा री भूखो थकों रे, पिण विनों करणो तो नहीं आसान रे॥ ८ ॥
जो घरावे गृहस्थ नें बोल थोकडा रे, ते पिण मान बडाई काज रे।
ओ आपो प्रसंसे अवर ने निंदतो रे, ते अविनीत निरलज नांणे लाज रे॥ ९ ॥
अविनीत नें आपो दमवो दोहिलो रे, तिणरा अथिर परिणांम रहें सदीव रे।
ओ किण विध पाले गुर री आगनां रे, जे क्रोधी अहंकारी दुष्टी जीव रे॥ १० ॥
उणरे चेला करण री मन में अति घणी रे, तिणसूं गुर रा गुण मुख सूं कह्या न जाय रे।
रखे मोंनें छोड दिख्या लें गुर कनें रे, एहवी ओघट घाट घणी मन मांय रे॥ ११ ॥
कोइ गुर कनें दिख्या ले तो जांण नें रे, तो फाडण रो करें मूढ उपाय रे।
बुगल ध्यांनी ज्यूं वरते तिण कनें रे, नाहर भगत ज्यूं आपो दीये छिपाय रे॥ १२ ॥
उतारे टोला नें गुर री आसता रे, भाव चारित्रिया पासे नाय रे।
ओ परभव रो डर नहीं आंणे पापियो रे, चेला करण री मन में चाय रे॥ १३ ॥
अविनीत रे चेला री हुवे चावना रे, पिण गुर नें आग्या देतां नहीं जांण रे।
उ चेलो हुंतो देखे जो आपरो रे, तो गुर सूं पिण तोडे मूढ अयांण रे॥ १४ ॥
अविनीत आगें घर छोडे तेहनें रे, ते अविनीत करे चेलो ततकाल रे।
वले कुकला सीखाय भिडकावें गुर थकी रे, दे दें अणहुंता कूडा आल रे॥ १५ ॥
अविनीत आगें घर छोडें तेहनें रे, तिणनें तो पूरी खबर न काय रे।
जो गुर नही सूंपे शिष्य अविनीत नें रे, तो कुण कुण करें अकारज ताय रे॥ १६ ॥
ओ असाध परूपें सगला साध नें रे, वले गुर सूं पिण राखें मूरख वेष रे।
वले कांण न राखें पापी तेहनीं रे, तिण प्रहर विगाड्यो साधु रो भेष रे॥ १७ ॥
कोइ गुर री आग्या लोपे चेलो करे रे, तिण छोडी छें जिण सासण री रीत रे।
ते फिट फिट हुसी समभू लोक में रे, परभव में पिण होसी घणो फजीत रे॥ १८ ॥
वेंराग घट्यो ने आगो वस नहीं रे, तिणरे रहे चेला करण रो ध्यांन रे।
उणनें शिष्य मिलियां सूं तो सिथल पडें रे, वले वधें लोलपणो नें अभिमांन रे॥ १९ ॥
विनीत शिष्य रे शिष्य री मन में उपनीं रे, पिण गुर री आग्या विन न करें चाव रे।
तिण आत्मा दमनें इंद्रया वश करी रे, शिष्य मिलियां न मिलियां सरल स्वभाव रे॥ २० ॥
जो विनीत आगें घर छोडें तेहनें रे, तो विनीत बोलें सूतर रे न्याय रे।
हूं गुर री आग्या विन चेलो किम करूं रे, हूं दिख्या दे सूंपूं गुर नें जाय रे॥ २१ ॥

कोइ उपगारी कंठ कला घर साधु री रे, प्रशंसा जश कीरति बोलें लोग रे।
अविनीत अभिमांनी सुण सुण परजलें, उणरें हरष घटें नें वधें सोग रे॥ २२॥
जो कंठ कला न हुवे अवनीत री रे, तो लोकां आगें बोलें विपरीत रे।
यां गाय गाय रीभाया लोक ने रे, कहे हूं तत्त्व ओलखाउं रूडी रीत रे॥ २३॥
एहवा अभिमांनी अविनीत ते लोकां कनें रे, एहवी जणावे ऊंधी रेस रे।
उना रे उत्तम साधा री आसता रे, तिण छोड्यो छे सतगुर नों आदेस रे॥ २४॥
ओ गुर रा पिण गुण सुण नें विलखो हुवे रे, ओ गुण सुणे तो हरषत थाय रे।
एहवा अभिमांनी अविनीत तेहनें रे, ओलखाऊं भव जीवां नें इण न्याय रे॥ २५॥
कोइ प्रत्यनीक ओगुण बोलें गुर तणा रे, अविनीत गुर द्रोही पासें आय रे।
तो उत्तर पडउत्तर न दे तेहनें रे, अभितर में मन रलियायत थाय रे॥ २६॥
प्रत्यनीक ओगुण बोलें तेहनी रे, जो आवे उणरी पूरी परतीत रे।
तो अविनीत एकठ करे उण सूं घणी रे, ओ गुर रा ओगुण बोलें विपरीत रे॥ २७॥
वले करें अभिमानी गुर सूं वरोवरी रे, तिणरे प्रबल अविनों नें अभिमांन रे।
ओ जद तद टोलां मे आछो नही रे, ज्यूं विगड्यो विगाडे सडियो पांन रे॥ २८॥
ओ खिण मांहे रंग विरंग करतों थकों रे, वले गुर सूं पिण जाए खिण मे रूस रे।
जब गूंथे अग्यांनी कूडा गूंथणा रे, ओर अविनीत सूं मिलवा री मनहूंस रे॥ २९॥
जो अविनीत ने अविनीत भेला हुवे रे, तो मिल मिल करें अग्यांनी गूझ रे।
क्रोध रे वस गुर री करें आसातना रे, पिण आपो नहीं खोजे मूढ अबूझ रे॥ ३०॥
जो अविनीत अविनीत सूं एकठ करें रे, ते पिण थोडा में विखर जाय रे।
त्यारे क्रोध अहंकार ने लोलपणो घणो रे, ते तो साधां में केम खटाय रे॥ ३१॥
उणनें छोटा ने छादे चलावण तणी रे, ते पिण अकल नही घट मांय रे।
वडा रे पिण छादे चाल सकें नही रे, तिण अविनीत रा दुख मांहें दिन जाय रे॥ ३२॥
पुस्तक पाना वसतर नें पातरा रे, इत्यादिक साधु रा उपधि अनेंक रे।
गुर ओर साधां ने देता देख नें रे, तो गुर सूं पिण राखे मूरख घेख रे॥ ३३॥
जब करे मांहोमां खेदो ईसकों रे, वले वांछे उत्तम साधां री घात रे।
तिण जनम विगाड्यो करे कदागरो रे, करें मांहोमां मन भांगण री वात रे॥ ३४॥
एहवा अभिमांनी नें अविनीति री रे, करें भोला भारी कर्मां परतीत रे।
उणरा लपण परिणांम कह्या छे पाडुआ रे, कोइ चतुर अटकलसी तिणरी रीत रे॥ ३५॥

ढाल : २

दुहा

टोलां मांहें रहिवा री आसा नहीं, क्रोधी अविनीत जांणें एम।
तिण सूं छानें छानें लोकां कनें, बोले थावरिया जेंम॥ १॥
गर्भवती नें कहें डाकोत रो, थारें होसी पुत्र अनूप।
पाडोसण ने कहें होसी डीकरी, ते पिण अतंत करूप॥ २॥
गुर भगता श्रावक श्रावका कनें, गुर रा गुण बोले तांम।
आपो वश हुवो जांणें तिण कनें, ओगुण बोलें तिण ठांम॥ ३॥
थावरिया डाकोत ज्यूं, बोलें अनेक विध कूर।
इह लोक तणो अरथी घणो, वले मांनें आपण पो सूर॥ ४॥
कनें रहे तिण साधु तणो, वैर बुद्धी ज्यूं जांण।
खीटोरखेडाइ करें घणी, पग पग तांणा तांण॥ ५॥
कलहगारा अभिमांनी अविनीत नें, निषेंध्यो सूतर मांय।
तिणनें माठी माठी दीधीं ओपमा, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ६॥

ढाल

[रावण दिगजय चालियो]

कुह्या कानां री कूतरी, तिणरे झरे कीडा राध लोही रे।
सगले ठांम सूं काढें हुड हुड करें, घर में आवण न दे कोइ रे।
धिग धिग अविनीत आतमा*॥ १॥
कुत्ती विगाडे रमणीक आंगणो, न्हांखे कीडा राध ने लोही रे।
वास दुरगंध आवे अति बुरी, तिणनें धुर धुर करें सर्व कोइ रे॥ धि० २॥
जेहवी कुह्या कानां री कूतरी, तेहवा अविनीत नें अभिमांनी रे।
तिणरो पाडुओ शील ने मुख अरी, तिण सूं सगलाइ दे जाए कांनी रे॥ ३॥
अविनीत रा मुख मां सूं नीकलें, ते तों कुवचन कीडा सम जांणो रे।
रमणीक आंगणा ज्यूं सुध साध नें, पाप लगावें क्रोध उठाणो रे॥ ४॥
थिर करण मांहें राखे तेहनें, छिद्र ग्रहे हुवे द्रोही रे।
तिणनें कुह्या कांना री कूतरी ज्यूं, गण बारे काढें सर्व कोइ रे॥ ५॥
कण सहित कुंडो छोड नें, भिष्टो भखे भंडसूरो रे।
तिण भंडसूरा री ओपमा, अविनीत नें दीधीं वीरो रे॥ ६॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ते अविनो छे भिष्टा सारिखो, तिणनें अविनीत आचर लीधो रे।
विना धर्म सू अलगो पडे, अनंत ससार आरे कीधो रे॥ ७॥
हरिया जव तो मिले खावा भणी, पीवा नें मिले पांणी ताह्यो रे।
तिण सू भिडके मूढ मिरगलो, पछे जाय पडे जाल माह्यो रे॥ ८॥
ते अविनीत छे मिरग सारिखो, ते तों विनों करतो संक आणे रे।
अविना रूपणी जाल में पडे, ते पिण मूढ न जांणे रे॥ ९॥
तिण भडसूरा ने मिरग री, ए ओपमा अविनीत नें छाजे रे।
तिणरो विगड्यो इहलोक परलोक, तोही निरलज मूल न लाजें रे॥ १०॥
गलियार गधो घोडो अविनीत ते, कूट्यां विन आगो न चालें रे।
ज्यूं अविनीत नें कांम भलाविया, कह्यां नीठ नीठ पार घाले रे॥ ११॥
गलियार गधो घोडो मोल ले, खाडेती घणो दुख पावे रे।
ज्यू अविनीत ने दिख्या दीयां पछें, पग पग गुर पिछतावे रे॥ १२॥
वुटकने गधेडे दुराचरी, तिण कीधी घणी खोटाई रे।
आप छादे रह्यो उजाड मे, एक वलद ने कुबद सीखाई रे॥ १३॥
तिण अविनीत वलद ने तुरकिया, मार गाडा मे घाल्यो रे।
वुटकनां ने आंण जोतर्यो, हिवें जाये उतावल सू चाल्यो रे॥ १४॥
ज्यू अविनीत ने अविनीत मिल्यां, अविनीतपणो सिखावे रे।
पछें वुटकना ने वलद ज्यूं, दोनू जणा दुख पावे रे॥ १५॥
कुशिष्य रो चेलापणो, जेहवो वेश्या नों घरवासो रे।
खिण खिण आय विनो करे, खिण खिण हुवे उदासो रे॥ १६॥
ते वेश्या मुतलव आपणे, करें सोलें सिणगारो रे।
पुरप रीझावे पारका, किणरी म जाणो नारो रे॥ १७॥
ज्यूं अविनीत वाजें विनो करें, ते तो मुतलब रों छे यारो रे।
जो स्वारथ देखे असीझतो, तो खिण माहे हुय जाय न्यारो रे॥ १८॥
वेश्या सू घर वासो करे तिके, धन खूटा पछे पिछतावे रे।
ज्यूं अविनीत ने कनें राखिया, ते तों कांम पड्या सीदावे रे॥ १९॥
वेश्या ने अविनीत री, या दोया री एकज रीतो रे।
त्यारो इहलोक परलोक विगडियो, वले भव होसी फजीतो रे॥ २०॥
अंगीकार न करे गुर वचन ने, विरूओ बोले पाडें विरोधो रे।
मृदु सुकुमाल गुर छे खिम्यावंत, उणरी संगत सू करे क्रोधो रे॥ २१॥
तिणने चूक पड्यां गुर सीख दे, तो अविनीत ने द्वेष जागें रे।
वले कलहो करे उलटो पडे, पिण गुर री सीख न लागे रे॥ २२॥

ते सीख छें किल्याण कारणी, ते अविनीत एहवी धारी रे।
मोनें मारे चपेटा नें टाकरां, देवें डंडादिक परिहारी रे॥ २३॥
बांध्यो कालारी पाखती गोरियो, वर्ण नावें पिण लखण आवे रे।
ज्यूं विनीत अविनीत कनें रहे, तो उ कांयक कुबद सीखावें रे॥ २४॥
अभिमांनी अविनीत सूं, सुध विनों कीयो नही जावे रे।
कोइ विनीत गुर रो विनों करे, जब आप घणो सीदावे रे॥ २५॥
अविनीत दुखदाई केहवो, जेहवी सोक वरते दुखदाई रे।
ते छल छिद्र जोवतो रहे, खुद्र परिणांम रहें सदाई रे॥ २६॥
ज्यूं सोक रो सोक लोकां कनें, करें चावत नें वांछे घातो रे।
ज्यूं अविनीत वरतें गुर थकी, आहिज रीत विख्यातो रे॥ २७॥
कांई जात कुजात री उपनी, भरतार सूं लडें रीसावें रे।
पछें ताके कुवा नें बावडी, के ओर साथे उठ जावें रे॥ २८॥
ज्यूं अविनीत गुर सूं रूठो थकों, करें संलेखणा मांडें मरणो रे।
ते मरणो अविनीत नें दोहिलो, तिणसूं ताके ओरां रो सरणो रे॥ २९॥
तिणरो संथारो ज्यूं कूवो बावडी, तिण सूं मरे तोहि बाल मरणो रे।
ओर साथे उठ जावे अस्त्री, ज्यूं ओर अविनीत रो ले सरणो रे॥ ३०॥
सोर ठंडो लागें मुख में घालियां, अग्नि मांहें घाल्यां हुवें तातो रे।
ज्यूं अविनीत नें सोर री ओपमां, सोर ज्यूं अलगो पडे जातो रे॥ ३१॥
आहार पांणी वस्त्रादिक आपियां, तो उ श्वान ज्यूं पूंछ हलावे रे।
करडो कह्यां उठे सोर अग्नि ज्यू, गण छोडी एकल उठ जावे रे॥ ३२॥
सोर आप बले बालें ओर नें, पछें राख थइ उड जावे रे।
ज्यूं अविनीत आप ने परतणा, ग्यांनादिक गुण गमावें रे॥ ३३॥
सोर सोरीगर रा घर थकी, लोक बुधवंत रहें छें दूरा रे।
ज्यूं अविनीत सूं अलगा रहे, ते तों परमेश्वर रा पूरा रे॥ ३४॥
उत्तराधेन पेहलां अधेन सूं, अविनीत नें ओलखायो रे।
वले तिण अनुसारे निषेधियो, ते तों ले ले सूतर रो न्यायो रे॥ ३५॥

ढाल : ३

दुहा

वले अवनीत नें ओलखावियो, दशविकालिक मांय।
निरणो कहूं नवमा अधेन सूं, ते सुणजो चित्तल्याय॥ १ ॥
अहंकारे करी क्रोधे करी, जात्यादिक मद तास।
वले पाच परमाद रे वस पड्यो, विनों न सीखे गुर पास॥ २ ॥
या च्यार बोलां अविनीत रे, हुवें ग्यांनादिक रो विणास।
ज्यूं वंस फल विणासे वंस नें, ज्यूं अविने सू निजगुण नास॥ ३ ॥
कोइ अविनीत मद मूरख थको, गुर ने बालक जांण।
वले थोडा भण्या गुर तेहनो, अविनों करें मूढ अयांण॥ ४ ॥
जे गुर री हेला निंदा करें, तिण पडवजियों मिथ्यात।
तिणरे दरसण मोह उदे हुवां, संवली न सूझे वात॥ ५ ॥
केइ बालक गुर बुघवत छे, केइ बालक अल्प बुद्धिताय।
पिण चारित पाले निरमलो, वले गुण घणा त्या मांय॥ ६ ॥
त्यारी हेला निंदा कीयां थका, सकल .गुण खय याय।
तिणने उपमा देने निषेधियो, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ७ ॥

ढाल

[निन्हव तेरासिया केडायत ग्रोलखो]

*ज्यूं अग्न में रूडी वस्त घाल्या थकां, तो बल जल भस्म होय जाय हो। भविक जन
ज्यू अविनें रूपणी अग्न सूं गुण वले, ओगुण परगट थाय हो। भविक जन
श्रीवीर कह्यो अविनीत ने अति वुरो* ॥ १ ॥
कोइ बालक नाग जांणे नें खीजावियो, तो पामें तिण सू घात हो। भ०।
इण दृष्टान्ते गुर री हेला निंदा कीयां, पामे एकेन्द्रियादिक जात हो॥ भ० श्री० २ ॥
आसी विष सर्प अतत रूठा थकां, जीव घात सूं इधको न थाय हो।
पिण गुर रा पग अप्रसन हुआ थका, अबोध ने मुगत न जाय हो॥ ३ ॥
कोइ अग्नि प्रजलती नें चापे पग थकी, कोइ सर्प नें क्रोधे चढाण हो।
कोइ ताल पुट विष खाये जीववा भणी, ज्यूं गुर नी आसातना जांण हो॥ ४ ॥
कदा अग्नि न वाले मंत्रादिक जोग सूं, कदा कोप्यो इ सर्प न खाय हो।
कदा ताल पुट विष न मारें खाधां थका, पिण गुर हेलणा सूं मुगत न जाय हो॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कोइ पर्वत वांछे सिर सूं फोड़वो, कोइ सूतोइ सिंह जगाय हो।
कोइ भाला री अणी नें मारें छें टाकरां, ज्यूं गुर नी आसातना थाय हो॥ ६ ॥
कदा पर्वत पिण फोडे कोइ मस्तकें, कदा कोप्योइ सिंह न खाय हो।
कदा भालोइ न भेदे टाकर मारियां, पिण गुर हेलणा सूं मुगत न जाय हो॥ ७ ॥
कोइ क्रोधी कुशिष्य अग्यांनी अहंकार सूं, बोलें विगर विचारी वाण हो।
ते मायावियो धुरत तांणीजसी संसार में, काष्ट बूहो जाये पांणी में ज्यूं जांण हो॥ ८ ॥
अविनीत नें सीख दीये हेत जुगत सूं, तो उ क्रोध करे तिण वार हो।
ते आवती लिखमी नें ठेले डांडे करी, ते तों पूरों छें मूढ गिंवार हो॥ ६ ॥
केइ हस्ती घोड़ा छें अविनीत आतमा, त्यांनें प्रतख दीसे छें दुख हो।
तो अविनीत धर्माचारज तेहनों, ते किण विध पामें सुख हो॥ १० ॥
वले अविनीत आतमा दुख पामें घणो, लोक मांहें नरनार हो।
ते विकलेंद्रिय सारिखा छें सुध बुध बाहिरा, त्यांरों विगड्यो दीसें आकार हो॥ ११ ॥
ते तों डांडे शस्त्रकरी मारीजता, भूख तिरखा रा दुख सहीत हो।
तो गुर रा अविनीत नें सुख किहां थकी, तिण छोडी छें जिण धर्म रीत हो॥ १२ ॥
वले अविनीत देव दाणव गंधव्वा, ते पिण खाये छें मार हो।
तो गुर रा अविनीत नें मार अनंत गुणी, नरक निगोद मझार हो॥ १३ ॥
अविनीत ग्यांन दरसण चारित तणो, उ दिन दिन पामें विणास हो।
उणनें ऊंधोई सूझें नें ऊंधो अरथ करें, वले बुध नें अकल रो हुवें नास हो॥ १४ ॥
केइ विनीत अविनीत भण्या दोनूं गुर कनें, पिण विने सहीत भणियो विनीत हो।
तिणनें सूधोई सूझे नें सूधो अरथ करें, भण भण ऊंधो पड़े अविनीत हो॥ १५ ॥
ते विनीत अविनीत मारग जातां थकां, हथणी रो पग देखी तांम हो।
अविनीत कहे हाथी गयो इण मारगे, ओ बोल्यो निसंक पणे आंम हो॥ १६ ॥
विनीत कहे हथणी पिण कांणी डावी आंख री, उपर राजा री राणी सहीत हो।
वले पुत्र रतन छे तिणरी कूख में, विवरा सुध बोल्यो विनीत हो॥ १७ ॥
वले आगे गयां एक बाइ प्रश्न पूछियो, ते ऊभी सरवर पाल हो।
म्हांरो पुत्र प्रदेश गयो ते मिलसी किण दिनें, जब अविनीत कहे कोधो उण काल हो॥ १८ ॥
हूं काटूं रे वाढूं जीभड़ली तांहरी, तू विरूओ बोले केम रे दो भागी।
तूं धसको क्यूं नांखे रे पापी एहवो, जब विनीत बोलें छें एम हो॥ १६ ॥
विनीत कहे पुत्र थांरो घरे आवियो, आज मिलसी तोसूं निसंक हो।
इणरो साच न मांने ओ भूठ बोले घणो, इणरी जीभ वेरण रो वंक हो॥ २० ॥
ए दोनंई बोलां मे अविनीत भूठो पड्यो, साच उतरियो विनीत हो।
जब अविनीत धेष धर्यो गुर ऊपरें, कहे मोनें न भणायो रूडी रीत हो॥ २१ ॥

एहवी ऊंधी करें विचारणा, आए गुर सूं झगड्यो अविनीत रे।
कहे मोनें न भणायो थे कूड कपट करी, वले बोलें घणो विपरीत रे॥ २२॥
अविनीत ने बोल्यो जांण बुरी तरें, तिण सू गुर पूछ्यो दोया ने विचार हो।
निरणों करे संका काढी अविनीत री, पिण उणरो तो उहिज आचार हो॥ २३॥
इहलोक तणा गुर रा अविनीत री, अकल विगड गई एम हो।
तो धर्माचारज रा अविनीत री, ऊंधी अकल रो कहिवो केम हो॥ २४॥
नकटी बूटी कुलखणी नार ने, तिणनें परहरी निज भरतार हो।
तिण विगडायल नें जोगी भखडादिक आदरे, ते पिण जाए तिणहिज लार हो॥ २५॥
नकटी तो आप सरिखो आवे मिल्यां, घणो हरष घरे मन पीत हो।
ते इधको न वाछे आपणपो खोजिया, तिमहिज जाणो अविनीत हो॥ २६॥
नकटी सरिखो छे अविनीत कुलखणो, तिण सूं निज गुर न घरे पीत हो।
तिणनें आप सरिखो को एक आए मिले, तिणसूंई इधकों अविनीत हो॥ २७॥
नकटी तो जोवें जोगी भखडादिक, ज्यूं अविनीत जोवे अजोग हो।
जो अशुभ उदें हुवें घणो अविनीत रे, तो मिल जाए सरिखो संजोग हो॥ २८॥
कांदा ने सो वार पाणी सूं धोवियां, तो ही न मिटें तिणरी वास हो।
ज्यूं अविनीत ने गुर उपदेश दीये घणो, पिण मूल न लागें पास हो॥ २९॥
कांदा री तो वास धोया मुघरी पडे, निरफल छें अविनीत नें उपदेश हो।
जो छोडवे तो अविनीत अंवलो पडे घणो, उणरे दिन दिन इधक कलेश हो॥ ३०॥
कोइ गुर भक्ता छे सुविनीत आतमा, गुर छादे रो चालणहार हो।
जो हेत देखें तिण ऊपर गुर तणो, तो अविनीत मुख दे विगाड हो॥ ३१॥
विनीत ऊपर घणो हेत हुवें गुर तणो, तो अविनीत नें दुख हुवें साख्यात हो।
जब ओगुण सूझे अणहूंताइ गुर तणा, वले वाछे विनीत री घात हो॥ ३२॥
अविनीत जाणें विनीत मूआ थकां, पछें म्हांरोईज हुसी आग हो।
एहवा परिणामा घात वाछे सुविनीत री, तिण लीधो कुगति रो माग हो॥ ३३॥
वले ओषध भेषज आहार पाणी तणी, ओ जाणे नें पाडे अन्तराय हो।
दुख ने असाता वाछें सुविनीत री, अविनीत नें ओलखो इण न्याय हो॥ ३४॥
ओरां री अतराय असाता दुख चितव्यां, तिणरे बंधे महा मोहणी कर्म हो।
सितर कोडा कोड सागर त्यां लगे, नही पांमे जिणवर धर्म हो॥ ३५॥
ते तो जिहां जिहां उपजे तिहा तिहां दुख हुवें, उतकष्टो अनंतो काल हो।
अतराय अविनीत पणो छे एहवो, कोइ बुधवंत देसी टाल हो॥ ३६॥
जो पाप उदें हुवे अविनीत रे इण भवे, तो सगला ने लागे जहर समांन हो।
वले गमतों न लागे इणरो बोलियो, आगें खुलसी दुखां री खान हो॥ ३७॥

गुर बारा सूं आयां उठ ऊभो हुवें, पग पूंज नेमें सुविनीत हो।
अविनीत नें इतरो ही करणो दोहिलो, कदा करें तोही भूंडी रीत हो ॥ ३८ ॥
पग पूंज वीयावच करणी अविनीत नें, ते तों कठण घणो छे कांम हो।
ते कांम पड्यां अविनीत टालो दीये, तिणरें प्रबल अविनो नें अभिमांन हो ॥ ३९ ॥
गुर भक्ता उपर द्वेष अविनीत रो, वले ईसको ने खेदो अतंत हो।
उणरा छिद्र जोवें छें उतारणा आसता, तिणरा चारित जांणें मतवंत हो ॥ ४० ॥
वले करें विनीत सूं मूढ बरोबरी, पिण विनो कीयों मूल न जाय हो।
वले अवगुण न सूझें अविनीत ने आपरा, तिण सूं दिन दिन दुखियो थाय हो ॥ ४१ ॥

ढाल : ४

दुहा

छ बोलां करी सहित नें, करणो गण अधिकारी जांण।
ते तो करें बधोतर गण तणी, ते गुण रतना री खांण॥ १॥
कलहगारी अभिमानी अविनीत ने, जो करे आगेवांण।
तो पाडे विखेरो गण मझे, करें साधा री हाण॥ २॥
केयां ने लडलड नें दूरा करें, वले वांछे केया री घात।
गुणवंत साधां रा गुण सुणे, ते पिण सह्या न जात॥ ३॥
उ आंमी साहमी वाता करें, उठावें मांहोमां घेष।
करें मांहोमां लगावणी, ते अविनीत लेजों देख॥ ४॥
इसडा अजोग अविनीत सूं, कोइ करे अग्यांनी प्रीत।
ते पिण घणो पिछतावसी, होसी घणो फजीत॥ ५॥
आगें अविनीत हुवा घणा, त्यांरो सूतर में छें नाम।
इण अनुसारें अवर ने, ओलख लेजो ताम॥ ६॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

घनावो सेठ सुत च्यारे बहू रे, उझिया नें भोगवती जांण रे। सुगण नर*।
रखिया नें वले रोहिणी रे लाल, त्यांरी सेठ कीधी छे पिछाण रे। सुगण नर।
भाव सुणो अविनीत रा रे लाल*॥ १॥
पांच पांच साल दाणा सूंप नें रे, मांग्या किते एक काल रे। सु०।
उझिया कण उछाले दीया रे, भोगवती गिल गई साल रे॥ सु० भा० २॥
रखिया जतन कर राखिया रे, रोहिणी कीधी बधोतर भरपूर रे।
ते तों सुसरे माग्या सूपे दीया रे लाल, धुरली दोयां रो विगडयो नूर रे॥ ३॥
सेठ च्यारां नें साच बोलाय नें रे, यारा न्यातीला उभा आंण रे।
सेठ सूंप्यो कांम च्यारां भणी रे, यारा गुण परिणामे जाण रे॥ ४॥
गोबर वासीदो उझिया भणी रे, भोगवती रसोइदार रे।
कोठार सूंप्यो रखिया भणी रे लाल, रोहिणी नें सगलो घर बार रे॥ ५॥
उझिया भोगवती दुखणी थई रे, घरती मन माहे रोस रे।
ते हेला निंदा पामी लोक मे रे लाल, पिण सुसरो हुवो निरदोष रे॥ ६॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ज्यूं गुर गण सूंपे सुविनीत नें रे, ते छे रखिया नें रोहिणी समांन रे।
जब अविनीत दुख पामें घणो रे लाल, उमिया भोगवती ज्यूं जांण रे॥ ७॥
उभिया नें भोगवती दुखणी हुई रे, ते तों एकण भव मझार रे।
पिण अविनीत दुखियो हुसी घणो रे, तिणरो कहितां नावें पार रे॥ ८॥
उभिया भोगवती नें घर सूंपियां रे, ते करें खजानो खुराब रे।
ज्यूं अविनीत नें गण सूंपियां रे, तो जाए टोलां री आब रे॥ ९॥
जिण टोलां में अविनीत छे रे, तिणसूं आछो कदेय म जांण रे।
तिणरी खप करने ठांम आंणजो रे, नहीं तो परिहरो चतुर सुजांण रे॥ १०॥
किण ही गाय दीधीं च्यार ब्राह्मणां भणी रे, ते वारे वारे दूहे ताय रे।
तिणनें चारे न नीरे लोभी थकां रे, म्हांरे काले न दूजें आ गाय रे॥ ११॥
त्यारें मांहोमां लागो इसको रे, तिण सूं दुखे दुखे मूइ गाय रे।
ते फिट फिट हुवा ब्राह्मण लोक में रे, ते दिष्टंत अविनीत नें ओलखाय रे॥ १२॥
गाय सारिखा आचारज मोटकां रे, दूध सारिखो दे ग्यांन अमोल रे।
कुशिष्य मिल्या तो ब्राह्मण सारिखा रे, ते ग्यांन तो लेवें दिल खोल रे॥ १३॥
आहार पांणी आदि वीयावच तणी रे, ए न करें सार संभाल रे।
एहवा अविनीतां रे. वस गुर पड्या रे, त्यां पिण दुखे दुखे कीयों काल रे॥ १४॥
ब्राह्मण तो फिट फिट हुवा घणां रे, ते तों एकण भव मझार रे।
तो गुर रा अविनीत रो कहिवो किसूं रे, तिणरो भव भव हुसी बिगाड रे॥ १५॥
ज्यांरे सिखां रो लोभ लालच नहीं रे, ते तों दूर तजें अविनीत रे।
ते गरग आचारज सारिखा रे, गया जमारो जीत रे॥ १६॥
गरग आचारज नें मिल्या रे, पांचसो शिष्य अविनीत रे।
ते गुर वचनें उलटा पड्या रे, हिवें सुणजों त्यांरी रीत रे॥ १७॥
गुर नें रोग उपना थकां रे, पडियो ओषधादिक रो कांम रे।
अविनीत मेल्या जाये नहीं रे, ते तों जुआ जुआ बोलें आंम रे॥ १८॥
एक कहें मोंनें नहीं ओलखो रे, बीजों कहें न देसी मोय रे।
तीजों कहें घरे हुसी नहीं रे, चोथो कहे मेलो थें ओर जोय रे॥ १९॥
केइ सुण सुण उत्तर दे नहीं रे, मूंन साझें कपट सहीत रे।
केइ अलगा जाय बेसें गुर थकी रे, कार्य करवा सूं डरिया अविनीत रे॥ २०॥
केइ राय बेठियां री परें मानता रे, केइ बतलायां मुख दे विगाड रे।
एहवा अविनीतां ऊपरें रे, गुर खेद पाम्या तिणवार रे॥ २१॥
म्हे दिख्या दे सूतर भणाविया रे, भात पांणी सूं पोख्या अविनीत रे।
मारे कांम न आया दिन आजरे रे लाल, यां लीधीं पंखियां वाली रीत रे॥ २२॥

पंखी इंडा पाल मोटा करें रे, पछें उड जाये आया पांख रे।
ज्यू ए अविनीत भण भण विगडिया रे, म्हारी मूल न माने सांक रे॥ २३॥
सीदावें छें म्हारी आतमा रे, यां अविनीता रे परसंग रे।
इहलोक परलोक मांहरो रे, रखे विगड जाये यारे सग रे॥ २४॥
एहवा शिष्य छे माहरा रे, गलियार गधा ज्यूं अविनीत रे।
त्यानें दूर तजें अलगो रहे रे, सुध संयम पालूं रूडी रीत रे॥ २५॥
छोड्या पाचसो अविनीत ने रे, आण्यो मन संतोष रे।
करणी करे कर्म काट ने रे, पहुता अविचल मोख रे॥ २६॥
ज्यूं अविनीत ने छोड्या थकां रे, ग्यानादिक गुण वधता जांण रे।
मिट जोय कलेश कदागरो रे लाल, त्यानें नेडी हुसी निरवाण रे॥ २७॥
केइ अविनीत नरके गया रे, केइ जाय पड्या छे निंगोद रे।
आप छादे ऊधी अकल सू रे लाल, गमाय ने समकित बोध रे॥ २८॥
अविनीत मे अवगुण घणा रे, ते तो पूरा कह्या न जाय रे।
पिण इण अनुसारे अनेक छें रे, ते बुधवंत देसी बताय रे।॥ २९॥
अविनीत रा भाव सांभले रे, घणो हरख पामे नरनार।
केइ भारी करमा उलटा पडे रे, त्यारे घट माहे घोर अधार रे॥ ३०॥

ढाल : ५

दुहा

केइ अविनीत एकल फिरें, बिटल हुआं बेकार।
ते धीठा निरलज लोक में, त्यांरो विगड गयो जमवार ॥ १ ॥
तिण एकल सूं अविनीत बुरो, साधां रा गण माय।
ते स्वामद्रोही सेवग जिसो, न डरें करतों अन्याय ॥ २ ॥
दुमनों चाकर दुसमण सारिखो, ते प्रसिद्ध लोक वदीत।
ज्यूं छिद्री थकों टोलां माहें रहें, ते आछो नही अविनीत ॥ ३ ॥
ओ भेलो रहे कपटी थकों, ते करें घणी नरमाय।
छल बल खेलें चोर ज्यूं, करें बूडण रो उपाय ॥ ४ ॥
तिणरी चरचा उपदेश छे अति बुरो, ते फाडा तोडा रें कांम।
अभिमांनी अविनीत री रीत नें, कहि बताऊं तांम ॥ ५ ॥

ढाल

[जिण धर्म अराधीये र]

अविनीत समभावे तेहनें ए, आपरो कर राखे तांम।
ओरां सूं करें ओपरो रे, तिणरो आपो वस नही ठांम कें।
अविनीत एहवा ए* ॥ १ ॥

ओर साधां रा काढें गृहस्थ खूंचणा ए, तिण सूं बात करें दिल खोल।
अंतर में जांणें आपरो ए, तिणनें सीखावे चरचा बोल कें ॥ अ० २ ॥
कोइ ओर साधां रा गुण करें ए, तो अविनीत सूं सह्या रे न जाय।
तिण सूं इस झाल नें ए, तिणनें ग्यांन चरचा न सीखाय कें ॥ ३ ॥
कोइ सतगुर आगें समझियो ए, सतगुर री घणी छें परतीत।
तिणरेई ओगुण नींपजें ए, जो आय मिलें अविनीत ॥ ४ ॥
तिणनें आडा टेडा बोल पूछ नें ए, तिणरी समकित दे रे उडाय।
आगो परगट करें ए, कोइ चरचा बोल सीखाय ॥ ५ ॥
कोइ चरचा बोल सीखाय नें ए, इम बोलें अविनीत।
हिवें हुवा थे समकती ए, तिणरे मन मांहें खोटी नीत ॥ ६ ॥
ते तों गुर श्रद्धावण आपनें ए, मांन बडाइ काज।
करें आपण थापना ए, तिण रा किण विध सीझें काज ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

तिणनें आप तणो करें रागियो ए, शंका ओरां री घाल।
अभिमांनी अविनीत री ए, एहवी छे उंधी चाल॥ ८॥
कोइ गुर गुर भायां आगे समझियो ए, तिण व्रत लीया तिण पास।
वांदें त्यांरों नाम ले ए, जब अविनीत पामे उदास॥ ९॥
अविनीत रो नाम लेवां दे नही ए, तो तिण सूं राखे धेष।
भूखो घणो नाम रो ए, तिण पहिर विगाड्यों भेष॥ १०॥
कोइ विनीत आगे व्रत आदरे ए, तो विनीत बोले एम।
म्हारें सो गुर थाहरे रे, हिवें अविनीत बोले केम॥ ११॥
जो अविनीत आगे व्रत आदरे ए, तो उ न लें गुर रो नांम।
पोतेंइ गुर ठेहरे ए, ते पिण मान बडाई कांम॥ १२॥
विनीत सीखावे करणी वंदणा ए, तो धुर सूं ले गुर रो नांम।
अविनीत सीखावता ए, ते तो आपरो नांम ले ताम॥ १३॥
विनीत तणा समझाविया ए, साल दाल ज्यूं भेला होय जाय।
अविनीत रा समझाविया ए, ते कोकला ज्यूं कानी थाय॥ १४॥
समझाया विनीत अविनीत रा ए, त्यामे फेर कितोयक होय।
ज्यूं तावडो नें छाहडी ए, इतरो अन्तर जोय॥ १५॥
कोइ अविनीत आगे समझियो ए, पिण ग्यान रो होय गराग।
को एक हुवे समकती ए, नही लागो अविनीत रो दाग॥ १६॥
कोइ कठ कलाधर साध जी ए, ते तो करें घणो उपगार।
हेत ने जुगत करी ए, समझावे नर नार।
उपगारी साध एहवा ए॥ १७॥
केया ने साध पणो अदरावता ए, केयां ने श्रावक व्रत दराय।
केया ने करे समकती ए, नवतत्व निरणो कराय॥ १८॥
केया ने जिण धर्म सूं सनमुख करें ए, तिणसू दान देवे निरदोख।
ससार परित्त करे ए, तिणसूं पामे अविचल मोख॥ १९॥
केइ दयासत सील आदरे ए, केइ तप कर करम दे तोड।
ते पिण सुण्यां सांभल्यां ए, वले पामे आणद कोड॥ २०॥
केइ सुण सुण नें सुलभ पडें ए, घणो हरष पामे भवि जीव।
उपदेश सुणियां थका ए, घणा जीव दे मुगत री नीव॥ २१॥
ते तों जिण मारग करें दीपतो ए, धर्म कथा रे संजोग।
महिमा फेलें अतिघणी ए, त्यांनें धन धन करें बहुलोग॥ २२॥
अविनीत सुणे तो मुंह मचकोड नें ए, करें हासो मसकरी ठेक।
कहे म्हे सगला देखिया ए, समकती न दीठों एक॥ २३॥

पेला रा गुण सहिवा दोहिला ए, तिण सूं ऊंधो बोलें अविनीत।
करें घणी इरखा ए, तिणमें होसी घणी रे कुपीत॥ २४॥
तिणनें चतुर विचक्षण अटकले ए, ए गुर भायां रो अविनीत।
ओलख नें परहरे ए, राखें सतगुर री परतीत॥ २५॥
कोइ अविनीत आगें समझियो ए, जो उ राखें उणरी परतीत।
ओरां री नहीं आसता ए, तो उणरी पिण आहिज रीत॥ २६॥
अविनीत समझायो तेहनें ए, जो उ मांने अविनीत री बात।
ओरां सूं रहे ओपरो ए, तिणरे मांहे रह्यों मिथ्यात॥ २७॥
अविनीत नें अविनीत श्रावक मिले ए, ते पामें घणो मन हरख।
ज्यूं डाकण राजी हुवे ए, चढवा नें मिलिया जरख॥ २८॥
डाकण जरख चढी फिरें ए, ज्यूं अविनीत अविनीत रे साथ।
डाकण मारें मिनष नें ए, ज्यूं ओ करें समकत री घात॥ २९॥
डाकण चोर राजा तणी ए, तिणनें राजा मारें तो एक बार।
अविनीत चोर जिण तणो ए, ते भव भव में खासी मार॥ ३०॥
केइ काछ लपटी कुशिलिया ए, ते न गिणें जात कुजात।
गृद्धि घणा रूप रा ए, नीच रे घरे जाये साख्यात॥ ३१॥
ते फिट फिट हुवे सागली न्यात में ए, वले राजा लेवे डंड।
कुजरबो बणे घणी ए, हुवें देश विदेश में भंड॥ ३२॥
ए काछ लपटी री ओपमां ए, अविनीत नें दीधी इम जांण।
गिरधी घणो खांण रो ए, तिणसूं विकलां नें मूंडे ताण॥ ३३॥
ओर आगे विकलाइ कर सकें नहा ए, तिणसूं चेला री भूख अतंत।
संके नहीं दोष सूं ए, ते कुण कुण करें विरतंत॥ ३४॥
पेला रो शिष्य फटावतो ए, ओ न करे जेज लिगार।
को एक आए मिले ए, तो लेजाअे धाडोपाड॥ ३५॥
पेला रो शिष्य फाड आपणो करे ए, तिणने भारी प्रायश्चित्त आय।
ते पिण सूझें नहीं ए, तिणरे लग रहि चेला री चाय॥ ३६॥
कोइ अजोग अविनीत गिरधी घणो ए, तिणरी परतीत नही रे लिगार।
इसडो इ शिष्य सूंपियां ए, करवा नें होय जाय त्यार॥ ३७॥
विकल नें शिष्य पणे आदरे ए, ते तों अभिमांनी के अविनीत।
कें गिरधी छें आहार रो ए, त्यांरी किम आवें परतीत॥ ३८॥
उणनें विकल अजोग जाण्यां पछें ए, तिणनें चेलो करें मतहीण।
निरलज संके नहीं ए, ते तों करम बांधण परवीण॥ ३९॥

ज्यारे चेला री तृष्णा अति घणी ए, त्यांरा अथिर रहे परिणांम।
चरित ने आराधणो ए, तिणरो छे काठो कांम ॥ ४० ॥

ढाल : ६

दुहा

ए अविनीत साध ओलखावियो, इमहिज साधवी जांण।
वले श्रावक श्रावका तणी, तिमहिज करजो पिछांण ॥ १ ॥
केयक गृहस्थ अजोग छें, श्रावक श्रावका नांम धराय।
ते अविनीत घणा साधां तणा, संके नहीं करता अन्याय ॥ २ ॥
त्यांनें विनो धर्म सूझें नहीं, प्रबल अविनों नें अभिमांन।
दगाबाजी करें जिण धर्म में, वले कूड कपट री खांन ॥ ३ ॥
ते करें साधां री आसातना, वले बोलें घणा विपरीत।
त्यांरी ओगुण ग्राही छे आतमा, अतिही घणा अविनीत ॥ ४ ॥
एहवा अविनीता में अवगुण घणां, कहितां नावें पार।
पिण थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो आंख उघाड ॥ ५ ॥

ढाल

[मम करो काया माया कारमी]

केइ अविनीत श्रावक श्रावका, संके नही बांधता कर्म रे।
करें धर्म ठिकांणे कदागरो, नहीं उलख्यो विने मूल धर्म रे।
केइ अविनीत श्रावक एहवा ॥ १ ॥

ते साध साधव्यां री निंदा करे, अवगुण बोले विपरीत रे।
ते सूंस कराय ग्रहस्थ नें, त्यांरी भोला मांनें परतीत रे ॥ २ ॥
ते सूंस री संका रो मारियो, किण विध काढें निकाल रे।
जो प्रतीत राखें एहवा अजोग री, ते बांधे अशुभ कर्म जाल रे ॥ ३ ॥
उंधा सूंस दीया अविनीत रा, ते सरध्यां हुवे समकित नास रे।
एहवा दुपच खांणा दूरा करें, आलोवण करें गुर पास रे ॥ ४ ॥
उण कही ते सगली कहे गुर कनें, गोपवी नही राखें लिगार रे।
नही कह्यां तो सल्य मांहें रहें, ते मतवंत करज्यो विचार रे ॥ ५ ॥
बात अविनीत री मानियां, उणरे कुण कुण अवगुण थाय रे।
उतर जाये साधां री आसता, सुध वंदणा पिण कीधी न जाय रे ॥ ६ ॥
दांन पिण देणी नावें भाव सूं, असणादिक च्यार आहार रे।
संका सहित वेंहरावियां, किम करें परित संसार रे ॥ ७ ॥

हुलास न आवे साधु देखियां, अनेक गुणां री पडे हांण रे।
दग्ध बीज दाधा रीगा हुवे, तिणरी संगत रा एकल जाण रे॥ ८ ॥
जो उ सूंस भागण सूं डरतो थको, नही काढे तिणरो निकाल रे।
तो उ भमण करे इण ससार मे, ज्यूं अरट तणी घड माल रे॥ ९ ॥
सूंस दराय ने अवगुण कहे, काढण न दे निकाल रे।
एहवा अविनीत अजोग ने, बुधवंत जाण देसी टाल रे॥ १० ॥
कोइ अविनीत हुवे साधु साधवी, तिण सूं मिलें मूढ जाय रे।
ओ अणहूता अवगुण कहे तिके, धार राखे मन मांय रे॥ ११ ॥
ते गुर कने आय कहे नही, अविनीत रो न करे उघाड रे।
वले ओगुण बोलावण कारणे, तिण जनम कीयों छें खुवार रे॥ १२ ॥
उ साच माने अविनीत रो, वले तिणरी करें पखपात रे।
सुध साधां री निंदा करतो फिरें, तिणरे न मिट्यो मूल मिथ्यात रे॥ १३ ॥
अविनीत नरमाइ करे उण कने, वले बोले मीठा मीठा वेण रे।
करे खुसामदी तेहनी, रोवे घणो भर भर नेण रे॥ १४ ॥
पछें अवगुण बोले ओ गुर तणा, केइ एहवा छे दुष्ट अविनीत रे।
गरीब होय आपो छिपाय दे, तिणरी मूरख मानें परतीत रे॥ १५ ॥
जो साच माने अविनीत रो, घणा री न मानें परतीत रे।
पखपात करे अविनीत री, ते चिहुंगति में होसी फजीत रे॥ १६ ॥
अविनीत नरमाइ करे घणी, तिणरी वात राखें सर्व दाव रे।
तिण नें साध लेखव ने विनो करें, तिणरी पिण जावसी आब रे॥ १७ ॥
आप सूं आय मिले तेहनां, ओगुण दे सर्व ढांक रे।
रहितो जाणें आप सूं ओपरो, तो उणने आल देतो नांणे सांक रे॥ १८ ॥
ए राग ने धेष रो घालियो, कर रह्यो कूडी पखपात रे।
एहवा अजोग श्रावक तणी, कोइ मूरख मानसी वात रे॥ १९ ॥
एहवा जनम कदागरी अजोग सूं, गूज्झ करे मतिहीण रे।
कर्म बंधे उणरी सगत कीया, तिणनें दूर तजे परवीण रे॥ २० ॥
कोइ अविनीत अजोग साधु तिण कनें, लीया श्रावक व्रत पचखांण रे।
वले सीख्यो सझाय बोल थोकडा, पिण तिणरी न कीधी पिछाण रे॥ २१ ॥
जो उ निंदा करे सुध साध री, तो उ मांन लेवे ततकाल रे।
उणने श्रद्धे सत्यवादी भोलो थको, वले संकतो नहीं काढे निकाल रे॥ २२ ॥
अविनीत ओगुण कहे ओर ना, जो जाण राखे घट मांय रे।
पिण कोइक उणरा ओगुण कहे, तो कह दे उ तिण कने जाय रे॥ २३ ॥

ते भणियां नें वरत लीयां तणी, ए कूडी करे पखपात रे
ओ आछो जांणे छे अविनीत नें, ते तो निश्चेंइ बूडो साख्यात रे ॥ २४ ॥
केइ एहवा छे श्रावक श्रावका, वले लड पडे काढ्यां नेकाल रे।
ते तों राग नें धेष मांहें कल्या, ते निफल गमावे छे काल रे ॥ २५ ॥
वले गृहस्थावास मांहें थकां, उणरे स्वारथ पूगो छ एक रे।
तिणनें साचो करवा भणी, तांण करें मूढ अनेक रे ॥ २६ ॥
एक स्वारथ पूगो थो आपणो, तिण सूं डस राखे मन माय रे।
तिण साचा नें भूठो करवा भणी, करे ओ अनेक उपाय रे ॥ २७ ॥
उणरा गुण कीरत जश सांभले, तो लागें अभितर लाय रे।
तिणरा अणहुंता ओगुण परगट करें, गुण गुण दे रे उडाय रे ॥ २८ ॥
वले छल छिद्र जोवतो रहे, सदा रहे दुष्ट परिणांम रे।
उणरी आसता उतारण खप करे, यूंही जनम गमावें बेकांम रे ॥ २९ ॥
ए दोष आलोयां विनां मरे, ते मरणो छे सल्य सहीत रे।
पछें पाप उदें हुवां तेहनें, भव भव होसी कुप्रीत रे ॥ ३० ॥
जिण उपर धेष हुवे तेहनों, छिद्र जोवें दिन रात रे।
उणरा दोष अणहुंताइ कहें गुर कनें, करें मन भांगण तणी वात रे ॥ ३१ ॥
साधु कहे दोष लागो नहीं, ओ कहे लागो दोष साख्यात रे।
डंड दो एहनें निसंक सूं, तिणमें कूड नहीं तिलमात रे ॥ ३२ ॥
साधु कहें डंड लेवूं नहीं, जब गुर बोल्या छे आंम रे।
डंड ले नें संका काढो एहनीं, ते तों भगडो भांजण कांम रे ॥ ३३ ॥
उणनें डंड दीयो गुर समभाय नें, वले केतब न राख्यो लिगार रे।
डंड दिरायो तिणनें कहे, ओर नें नहीं कहिणो लिगार रे ॥ ३४ ॥
जो कह्यो तो तोनें भूठो जांण स्यां, वले जांण लेस्यां थांरो धेख रे।
एहवी कीधीं छें थापना, ते सर्व ग्यांनी रह्या देख रे ॥ ३५ ॥
तिण अंतर द्वेष हुवे तेहनों, पिण सूं कह्यां विण केम रहिवाय रे।
उ कहे छानें छानें लोकां कनें, सूंस दराय दराय रे ॥ ३६ ॥
पछें आल देवें मन मानियो, वले बोलें घणो विपरीत रे।
वेंर जाग्यो तिण उपरें, तिणरी किण विध आवे परतीत रे ॥ ३७ ॥
उणरी बात चालें तो पडती कहे, घणी निंदा करे परपूठ रे।
उणनें चतुर हुंता त्यां जांणें लीयो, ओ द्वेष वस बोले छे भूठ रे ॥ ३८ ॥
छद्मस्थ एहनांण सूं अटकल्यो, ओ अजोग घणो अविनीत रे।
कदा साच कहे पिण तेहनीं, पूरी नावें परतीत रे ॥ ३९ ॥

उणरो वचन न माने तिण ऊपरे, क्रोध करे मूंह दे विगाड रे।
उण लारे बोल्या हरषित हुवे, तो धिग धिग तिणरो जमवार रे॥ ४० ॥
वले आपो जणावे भूठो थकों, वले भूठो दरायो छे डड रे।
एहवा अविनीत अजोग छे, ते चिहुंगति मे होसी भंड रे॥ ४१ ॥

ढाल : ७

दुहा

कूडा कूडा आल सांधा रे दीयां, महामोहणी करम बंधाय।
समकित बोध गमाय नें, पडे नरक निगोद में जाय॥ १ ॥
तिहां छेदन भेदन पामें घणी, कहितां नावें पार।
उतक्रष्टा अनंता भव करे, तिहां खाअें अनंती मार॥ २ ॥
केइ खाअें श्रावक घर तणो, केयक मागे खाय।
पिण अविनीत पणो छूटे नही, तो गरज सरे नही कांय॥ ३ ॥
केइ पेढी जमावे आपणी, मांगे नें ल्यावे आहार।
त्यां सूं विनों करणो छे दोहिलो, छोडे नें गरव अहंकार॥ ४ ॥
पिण सगला नही छे सारिसा, सुविनीत ने अविनीत।
त्यांनें जथातथ परगट करूं, त्यांरी सुणजो भवियण रीत॥ ५ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा सुणे]

ज्यांरे मांगे ने खावणो पारको, त्यांरे श्रद्धा रो कठिन छे कांमो रे।
वले मांन बडाइ रा भूखा थकां, त्यांनें न गमें साधां रा गुण ग्रांमो रे।
केइ अविनीत श्रावक एहवा॥ १ ॥
जो लोक न देवे खावा पहिरवा, ऊंचो हाथ न करे त्यानें देखो रे।
वले आदर सनमान देवें नहीं, तो साधा उपर करें धेखो रे॥के० २॥
साध साधवियां नें दीठां थकां, उठे अभिंतर आलो रे।
वले पेट रे कारण पापिया, डरे नहीं देता भालो रे॥ ३ ॥
म्हांनें दीधां में अविरत कहे, तो म्हें उठाय दां यांरी परतीतो रे।
तिणसूं लोकां रा मन भांगता थकां, बोलें घणा विपरीतो रे॥ ४ ॥
साधां री छे लोकां में आसता, तिणसूं नही छे म्हांरो आघो रे।
आध बिनां वेंहरासी म्हांनें किण विधें, यांनें पेट भरण रो सोच लागो रे॥ ५ ॥
त्यांनें दीधां में पुन परूपियां, तो श्वान ज्यूं पूछ हलायो रे।
वले दरावे कर कर आमना, तो वांदे लुल लुल पायो रे॥ ६ ॥
केइ अविनीत हुवे साध साधवी, कदा गुर दे लोकां ने जतायो रे।
ते जनम कदागरी सांभले, तो तुरंत कहदे तिण कने जायो रे॥ ७ ॥

अविनीत ने तीखो करे घणो, विगड्या ने वशेप विगाडे रे।
तिणरो मन भागे कूड कपट करी, टोलां माहे भेद पाडे रे॥ ८ ॥
अविनीत ने पोगां चढाय ने, अवगुण बोले तिण पासो रे।
ते सुण सुण ने हरपत हुवे, ते तों बाधे करमा री रासो रे॥ ९ ॥
उ छांनो विगड्यो थो घणा दिना, पिण लोकां मे न पड्यो उघाडो रे।
अविनीत सूं एकठ कीया पछे, प्रगट हुवो लोक मझारो रे॥ १० ॥
जो दोप लागो देखे साध ने, तो कहे देणो तिणनें एकतो रे।
जो उ माने नही तो कहिणो गुर कने, ते श्रावक छे बुद्धिवंतो रे।
सुविनीत श्रावक एहवा॥ ११ ॥
प्रायश्चित दराय नें सुध करे, पिण न कहे ओरा रे पासो रे।
ते तों श्रावक गिरवा गंभीर छे, त्याने वीर वखाण्या तासो रे॥ १२ ॥
उणरे मूढे तो दोप कहे नही, उणरा गुर ने पिण न कहे जायो रे।
ओर लोका आगे कहतो फिरे, तिणरी परतीत किण विध आयो रे॥ १३ ॥
वले साधां ने आय वंदणा करे, साधवियां ने न वादे रूडी रीतो रे।
त्याने श्रावक श्रावका म जाणजो, ते तो मूढ मति छे अविनीतो रे॥ १४ ॥
तिण श्री जिण धरम न ओलख्यो, वले भण भण करें अभिमानो रे।
आप छादे माठी मत उपजें, तिणने लागा नही गुर कानो रे॥ १५ ॥
कोइ साप पड्यो थो उजाड मे, चेत नही सुध कायो रे।
तिण सर्प री अणुकपा आंण ने, मिश्री घाले ने दूध पायो रे।
भाव सुणो अविनीता रा॥ १६ ॥
ते सर्प सचेत थयां पछे, आडो फिरियो खावा ने आयो रे।
जो उ लूठो हुवे तो उणने दाव दे, काचो हुवे तो डक दे लगायो रे॥ १७ ॥
सर्प सारिखो अविनीत कोइ मानवी, एकल फिरे ज्यूं ढोर रूलियारो रे।
त्याने समकित चारित पमाड ने, कीधो मोटो अणगारो रे॥ १८ ॥
एहवो उपगार कीयो तिको, ततकाल भूले अविनीतो रे।
वले उलटा अवगुण बोले तेहना, उणरे सर्प वाली छे रीतो रे।
केइ अविनीत मानव एहवा॥ १९ ॥
आहार पाणी कपडादिक कारणें, ते पिण भूठो भगडो माडे रे।
इणनें उपरलो हुवे तो दावे डड दे, आघो काढे तो उलटा भाडे रे॥ २० ॥
सर्प ने मिश्री दूध पाया पछे, डक देवे ते तो सर्प गेरी रे।
ज्यूं ओ समकित चारित लीया पछे, हुवो साधा रो वेरी रे॥ २१ ॥
वले खाणा पीणा रो हुवो लोलपी, आपरा दोप मूल न सूझें रे।
छेडविया सू साह्यो मडे, वले क्रोध करें तन धूजें रे॥ २२ ॥

तिणनें दूर करे तो दुसमण थको, बोलें घणो विपरीतो रे।
असाध परूपे सगला साध नें, साच बोलण री नही नीतो रे॥ २३ ॥
वले प्रायश्चित्त देनें मांहें लिये, तो मांहें आवे ततकालो रे।
इसडा अजोग अविनीतरो, साच माने अग्यांनी बालो रे॥ २४ ॥
त्यांनें भागल असाध परूपिया, त्यांमें प्रायश्चित्त लेई माहे आवे रे।
कदे कर्म जोगे हुवे एकलो, तिणनें बुधवंत मूंढे न लगावे रे॥ २५ ॥
सुगरा सांप ने दूध पायां थकां, तो उ करे पाछो उपगारो रे।
तिणने धन देई नें धनवंत करे, वले दीठां हुवे हरख अपारो रे॥ २६ ॥
ज्यूं कोई आप छांदे थो एकलो, सरल परिणांमी नें सुध रीतो रे।
तिणनें समझाय नें संजम दीयो, ते आग्या पाले रूडी रीतो रे॥ २७ ॥
कीधो उपगार कदे नहीं वीसरे, सर्व देही त्यारे काजें सूंपे रे।
त्यांरो दरसण देख हरषत हुवे, सर्व काम में धोरी ज्यूं जूपे रे॥ २८ ॥
तिणनें समकित ने सजम बेहू, रुचिया अभितर पूरो रे।
ते चलावे ज्यूं चाले छांदो रूंध नें, पाछो उपगार करण नें सूरो रे॥ २९ ॥
वले गामां नगरां फिरतां थकां, सदा काल करे गुण ग्रामा रे।
ते सुविनीत गुण ग्राही आतमा, त्यांनें वीर वखाण्या तांमो रे॥ ३० ॥
ए भाव कह्या अविनीत रा, सांभल ने नरनारो रे।
सतगुर रो विनों करो, तो पामों भव जल पारो रे॥ ३१ ॥

दुहा

ढाल : ८

ज्यारी विनेवंत छे आतमा, ते हलु करमी छे जीव।
ते विनो करण उद्यमी घणा, त्या दीधी मुगत री नीव॥ १ ॥
ते विनो करें सत गुर तणो, त्यारा गुणां री करे पिछांण।
भेषधारी भागल ने परहरे, ते डाहा चतुर सुजाण॥ २ ॥
सतावीस गुणा सहित छे, तारण तिरण जिहाज।
एहवा गुरां रो विनों कीयां थकां, सीझे आतम काज॥ ३ ॥
भेषधारी भागल तणो, विनो कीया वंधे कर्म रास।
धर्माचार्य सुध गुर तणो, विनों कीयां हुवे सुध गतिवास॥ ४ ॥
ते तो सर्व सावद्य तज नीकल्या, नही पाप करण रो आगार।
विनो करणो कह्यो छे वीर तेहनो, ते सूतर मे विस्तार॥ ५ ॥
त्यांरो विनो करणो छे किण विधे, वले करणो कितोयक काल।
त्यारी आग्या पालणी किण विधे, ते सुणजो सूतर सभाल॥ ६ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अनुकम्पा न आणिये]

पालें गुर री निरंतर आगना, कनें राख्यां हुवे हरख अपार जी।
वले वरते गुर री अंग चेष्टा, जिण सफल कीयो अवतार जी।
श्री वीर वखाण्यो विनीत ने*॥ १॥
तिण अभिंतर छोडी कषाय नें, नहीं मुख तणो लवाल जी।
एहवा गुर समीप रह्यां थका, छता गुण दीपे रसाल जी॥श्री २॥
तिणनें करडे काठें वचने करी, गुर सीख देवे किणवार जी।
तो उ खिम्या करे धर्म जाण नें, पिण न करे क्रोध लिगार जी॥ ३ ॥
सुकुमाल कठोर वचने करी, गुर दीधी सीखावण मोय जी।
सुविनीत हुवे ते इम चिंतवे, मोनें हेत रो कारण होय जी॥ ४ ॥
कदा क्रोध करे करमा वसे, तो ओलवे नही राखे विनीत जी।
आलोवे ने प्रायश्चित्त ले गुर कने, नही विचरे सल्य सहीत जी॥ ५ ॥
भद्र किलाणकारी घोडे चढ्या, असवार रे हरष आणंद जी।
ज्यू सीख दीया सुविनीत ने, गुर पामे परमानन्द जी॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

विनीत घोडो आकीर्ण जात रो, चाबखो धणी रे हाथ देख जी।
मन गमतो चाले असवार रे, चाबखानी न खाए एक जी॥ ७॥
इण दृष्टान्ते सुविनीत ने ओलखो, ते तों चाले गुर अणुसार जी।
चाबखा रूप वचन लागां विनां, देखी वरतें गुर रो आकार जी॥ ८॥
ते तों मन वचन काया करी, चित्त चोखे रूडे परिणांम जी।
मारवाड नां घोरी नी परें, विण कह्यां करें गुर कांम जी॥ ९॥
जे जे गुर नें कारज ऊपनां, जब सुविनीत रो आधार जी।
एहवा गुर भगता विनीत रो, जश कीरती बोलें ससार जी॥ १०॥
गुर नां चित केडें चालतो, कार्य करें विलंब रहीत जी।
कदा क्रोधी गुर हुवे आकरा, पिण प्रसन्न करें सुविनीत जी॥ ११॥
क्रोध न चढावे गुर नें सर्वथा, सुविनीत गुणां रो भंडार जी।
ते तों घात न वांछें गुर तणी, न हुवें छिद्र गवेषणहार जी॥ १२॥
विनीत जांणें गुर नें कोपिया, तो उपजावें पूरी परतीत जी।
दोनूं हाथ जोडी गुर नें कहे, हूं कदेय न चालूं कुरीत जी॥ १३॥
विनीत दमी छे आतमा, तिण संजम तप सूं सोय जी।
तिण जनम सुधार्‍यो आपणो, बेहूं लोक में सुखियो होय जी॥ १४॥
दोनूं पासां बरोबर वेसें नहीं, नहीं वेसें पूठ अडाय जी।
साथल सूं साथल संघटे नहीं, नहीं बेसें पसारी पाय जी॥ १५॥
पग उपर पग चढाय नें, गुर पासें नही वेसें आय जी।
वले ठांसली मार वेसें नही, उंचे आसण न वेसें जाय जी॥ १६॥
विनीत नें गुर बोलावियां, बेंठो नही रहे मूंन साझ जी
आसण छोडी आय उभो रहे, मोसूं किरपा करी गुर आज जी॥ १७॥
आसण बेंठो न लेवे वांचणी, वांचणी लेवे रूडी रीत जी।
सनमुख आय वेसें ऊकडू, दोनूं हाथ जोडी सुविनीत जी॥ १८॥
आहार पांणी कपडादिक भोगवे, ते पिण गुर री आग्या सहीत जी।
शिष्य पिण न करे विण आगना, पालें जिण शासण री रीत जी॥ १९॥
वले उपधादिक नों जाचवो, इत्यादिक कांम अनेक जी।
वले देवो लेवो ओर साध नें, गुर आग्या विण न करें एक जी॥ २०॥
उपवास बेलादिक तप करें, करें रसादिक परिहार जी।
ते पिण न करें आगनां विना, वले संलेखणा संथार जी॥ २१॥
करें वयावच्च ओर साव री, ओर पासें करावे आप जी।
ते पिण गुर आगनां हुवां, एहवी जिण शासण री थाप जी॥ २२॥

अंसमात्र करणो करावणो, ते पिण आग्या लें सुविनीत जी।
सर्व कारज मे लेणी आगनां, एहवी बांधी छे अरिहंत रीत जी ॥ २३ ॥
सुविनीत टोलां माहे रह्यां, ते तो सगलां नें गमतो होय जी।
ओर साधु साथे मेल्या थकां, तिणने पाछो न ठेले कोय जी ॥ २४ ॥
आतमा दमे इछ्या वस करे, उपजावे साधां नें परतीत जी।
वले लोक वतावे आंगुली, एहवो काम न करे विनीत जी ॥ २५ ॥
विनीत सू गुर प्रसन्न हुवे, तो आपे ग्यान अमूल जी।
तिण सूं शिव रमणी वेगी वरे, रहे साश्वत सुख में भूल जी ॥ २६ ॥
अग्नहोत्री ब्राह्मण अग्न ने, नमस्कार करे हाथ जोड जी।
घृतादिक सीची ने मंत्र भणे, तिणनें आरावे मांन मोड जी ॥ २७ ॥
इण दिष्टान्ते गुर नें अरावतां, केवली थयो शिष्य सुविनीत जी।
तो पिण सेवा भगत करे गुर तणी, त्रिनो साचवे आगली रीत जी ॥ २८ ॥
राज मे हाथी घोडा विनीत छे, ते तो सुख पामे रूडी रीत जी।
नरनारी रिद्ध सम्पत करी, सुखी दीसे छें सुविनीत जी ॥ २९ ॥
वले सुखी दीसें देवी देवता, जशवत मोटी रिद्ध पाय जी।
जावजीव लगे सुख भोगवे, लोक जस कीरति थाय जी ॥ ३० ॥
ते पाछिल भव पुन्य बांध्या तिके, भोगवे उदे आयां आप जी।
पिण प्रतख दीसें लोक मे, जाणें विनां तणो परताप जी ॥ ३१ ॥
ज्यूं कोइ गुर ने रिझावे विनो करी, कारज कर उपजावे संतोष जी।
तिणरा ग्यांन दरसण चारित बधे, वेगो पामें अविचल मोख जी ॥ ३२ ॥
केइ पेट भराइ कारणे, सीखे सिल्प कला विग्यान जी।
ते तों संसार ना गुर कने, ते पिण विनो करें मूकें मान जी ॥ ३३ ॥
इहलोक तणा अरथी थकां, भणे राजादिक नां कुमार जी।
गुर करडा वचन कहे तेहनें, देवे डडादिक परिहार जी ॥ ३४ ॥
ते पिण तिण गुर नां पग पूज ने, देवे सतकार ने सनमांन जी।
वले घणा सतोषे तेहनें, वले देवे प्रीतीदान जी ॥ ३५ ॥
तो सिद्धांत भणावे तेहनी, विनेवत किम लोपे कार जी।
ते तों गुर वचने लीनो घणो, तिण सफल कीयो अवतार जी ॥ ३६ ॥
इहलोक नां गुर नो विनो कीयां, कदा सीझें इहलोक काज जी।
पिण सतगुर नों विनो कीया, पामे मुगतपूरी नो राज जी ॥ ३७ ॥
मूल नें खंघ थी वृक्ष उपजे, पछें साखा पडिसाखा वखाण जी।
पांन फूल फल रस नीपजे, ते उत्पत्ति सहु मूल री जांण जी ॥ ३८ ॥

इण दिष्टान्ते जिण धर्म विरख रे, विने रूपियो मूल वखांण जी।
समकित रूप थाणो तेहनें, धीरज रूपियो खंध पिछांण जी॥ ३९॥
जश रूप खंध विने वेद का, शील रूपियो गंध वखांण जी।
शुभ ध्यांन रूपी छे कूंपलां, पंच महाव्रत शाखा जांण जी॥ ४०॥
प्रति शाखा ते पचीस भावनां, बहु गुण रूपियो छे फूल जी।
पंच संवर रूप फल तेहनें, दया रूपियो रस अमूल जी॥ ४१॥
मोष रूपियो बीज तिण फल मझे, एहवो धर्म विरख छे अखोभ जी।
ते समदृष्टि रे हिये विराजतो, विने मूल सूं रह्यो सोभ जी॥ ४२॥
ज्यूं विरख रो मूल सूकां थकां, शाखादिक सगला सूक जाय जी।
ज्यूं विने रूप मूल खिस गयां, सगलाइ गुण खय थाय जी॥ ४३॥
गुर गुरभाई नें टोलां तणा, गुण बोलें रूडी रीत जी।
लोक पिण गुण ग्रांम करतां थकां सुण सुण हरखे सुविनीत जी॥ ४४॥
शिष्य शिष्यणी मिलें ओर साध नें, मिले उपधादिक अनेक जी।
वले कंठ कला देखी ओर नी, विनीत तो हरखे वशेष जी॥ ४५॥
किण ही साध रो न करे ईशको, सर्व साध नें हुवे हितकार जी।
एहवा सुविनीत री वंसावली, फेले तीनूंइ लोक मझार जी॥ ४६॥
गमतो लागें तीरथ च्यार में, जिण शासन रो सिणगार जी।
एहवा सुविनीत पासें रह्यां, सीखावे विनो आचार जी॥ ४७॥
ज्यांरी जात माता री निरमली, पिता रो कुल छें निरदोष जी।
ते पिण लज्या कर सहीत छे, ते विनो कर लेसी मोख जी॥ ४८॥
ते पिण मोह कर्म पतलो पडयां, सुध रीत जांणें बुधवांन जी।
हाड मिजा रंगी जिण धर्म सूं, तिणनें विनों करणो आसान जी॥ ४९॥
केइ क्रोधी अहंकारी निरलजा, भेष पहिरी करे कपटाय जी।
इहलोक तणा अरथी घणा, त्यां सूं विनो कीयो किम जाय जी॥ ५०॥
अविनीत में अवगुण घणा, ते तों जाबक छोडे विनीत जी।
विनां रा गुण सगला आदरे, ते तों गया जमारो जीत जी॥ ५१॥
उतराधेन पेंहला अध्ययन में, दसविकालिक नवमें जांण जी।
वले ओर अनेक सिद्धांत में, कीया विनीत रा वखाण जी॥ ५२॥
सतगुर तणा विनीत में, गुण भाख्या श्री भगवंत जी।
ते कोड जीभ्या कर वरणवे, पिण कहितां न आवे अंत जी॥ ५३॥

ढाल : ६

दुहा

अविनीत रा भाव सांभले, अविनीत घणो दुख पाय।
केइ कुगुर सुध बुध वाहिरा, ते पिण हरषत थाय॥ १॥
विनीत तणा गुण साभले, विनीत रे आणद ओच्छाव।
ते पिण कुगुर हरषत हुवे, त्यारे विनो करावण चाव॥ २॥
ते तो विनो परूपे निसंक सू, मन मे आणंद कोड।
शिष्या ऊपर हुकम चलावता, कर कर मन रो जोड॥ ३॥
ज्याने समझ नही जिण धर्म री, सूतर री खबर न काय।
त्यांरो विनों करे भोला थकां, करे वूडण रो उपाय॥ ४॥
एहवा कुगुरा ने वीर निषेधिया, तो ही विनों सुणी हरखत।
त्याने जथातथ परगट करू, ते सुणजो कर खंत॥ ५॥

ढाल

[डाभ मू जादिक नी डोरी]

विना रा भाव सुण सुण गूंजे, आपरा किरतब नही सुझे।
ते तों व्रत विहूणा नागा, ते पिण विनो करावण आगा॥ १॥
देखो कुगुर हीण आचारी, हुवा विनो करावण त्यारी।
आपण किरतब नही देखे, विनों करावसी किण लेखे॥ २॥
हसली नी देखी हाल, वुगली पिण काढी चाल।
पिण वुगली सूं चाल न आवे, तिणसूं हसली उपर दुख पावे॥ ३॥
एहवा कुगुर साधा नें देखी, ते पिण करवा लागा शेखी।
आडम्वर कर विनो करावे, पिण आचार पाल्यो नही जावे॥ ४॥
सुण कोयल रा टहुकारी, कां कां काग करे तिण वारी।
सतियां रा सुण सोभागी, केइ कुसत्या कुडवा लागी॥ ५॥
काग बोले कुराले गाढें, पिण कोयल जेहवो शब्द न काढे।
कुसती लजा करे किण वारे, सती रे तुले नावे लिगारे॥ ६॥
काग कुसती जेहवा भेषधारी, ते तो विटल थया वेकारी।
ठाला वादल ज्यू थोथा गाजे, विनो करावता नही लाजे॥ ७॥

गति गयवर की देखी स्वान, भूसवा लागा ऊंचा कर कांन।
ज्यूं सावां नें देखे भेषधारी, स्वान ज्यूं बोले मूंह विगारी॥ ८ ॥
ते पिण विनों करावण भूखा, वले बोलें अग्यांनी अचूका।
कने राखें साधु रो भेष, तिण सूं बूडे लोक अनेक॥ ९ ॥
ते तों व्रत न पाले एक, तोही कर रह्या कूडी टेक।
वले चढ गया मांन रे छाजे, एहवा पिण लोक में गुर बाजे॥ १०।
विनों परूपता तो गाजे, आचार बतावता लाजे।
त्यांमें दोखां रा छेह न पारा, त्यारें चिहुं दिसि पडिया वघारा॥ ११ ॥
सीप सिघोडिया रा साथी, थेट रा मूल्गा छे मिथ्याती।
कूडा कर रह्या पाषंड फेन, एहवा पांचमां आरा रा चेन॥ १२ ॥
बांध्या थांनक मिष्टाचारी, वले माया ममता धारी।
ते पिण नांम धरावे पूज, ते तों पूरा मूढ अबूज॥ १३ ॥
नहीं जिण शासन री ठीक, त्यां नरक नें कीधीं नजीक।
एहवा ने पिण गुर कर पूजें, समकित विन संवली न सूझें॥ १४ ॥
त्यांरा मत मांहें मोटी भोलो, जांणें मंड रह्यो गांगी रोलो।
फेल्यो कूड कपट रो चालो, त्यांरो कुण काढें निकालो॥ १५ ॥
नव तूंवा तेरे नेगदारो, तिण राज में पूरो अंधारो।
ए पोपां बाई रो राज पिछांणो, ए तो दष्टांत लोकिक जांणो॥ १६ ॥
एहवो भेषधार्‍यां रे अंधारो, ते तो फेल्यो लोक मझारो।
ठग ठग खाए लोकां रो माल, चिहुंगति में होसी हवाल॥ १७ ॥
ज्यांरा गुर छे भिष्ट आचारी, त्यारें हुइ नरक नीं त्यारी।
दुख में दुख पामें अभागा, कुगुर वांदां रा ए फल लागा॥ १८ ॥
कुगर वांदे पग झाल, मुख सूं करे लाल नें पाल।
वले साधां री निंदा ने सूरा, ते तो डूबसी मूरख पूरा॥ १९ ॥
एक सत गुर रो अविनीत, एक कुगुर रो सुविनीत।
ए दोनूं मारग गया भूल, रह्या पाप कर्म में भूल॥ २० ॥
कुगुरां रा तो दोषण ढांके, साधां रे आल देतो न सांके।
ते तों करे बूडण रो उपाय, भव भव मांहें दुखिया थाय॥ २१ ॥
साधां रा गुण सुणे मिथ्याती, के कां री वल उठे छाती।
ओ पिण छे बूडण रो उपाय, सेजे दलद्र लीयो बुलाय॥ २२ ॥
कुगुर वांदां सूं हुवे छे खुवारी, सुगुर हेल्यां हुवे अनंत संसारी।
कुगुर छोडें नें सतगुर वांदे, ते तों शिवपुर सूं पीत सांदे॥ २३ ॥

कुगुर निषेध्या सुणे अविनीत, ऊंधा अर्थ करे विपरीत।
नही विनो करण री नीत, तिण सू बोलें कपट सहीत ॥ २४ ॥
उण सू विनो कीयो नही जावे, तिणसूं गुर ने कुगुर सरघावे।
आपणा दोष सगला ढाके, साधा सिर आल देतो न साके ॥ २५ ॥
ते तों गुर सू पिण नही गुदरे, त्यारा कारज किण विघ सुधरे।
तिण ने करे टोलां सू न्यारो, तो उ चोर ज्यूं करे विगाडो ॥ २६ ॥
सगला साधा नें कहे असाध, वले करे घणो विषवाद।
सर्व साधां रो होय जाय बेरी, केइ एहवा छे अविनीत गेरी ॥ २७ ॥
तिणने लोक आरे करे नाही, तो उ प्राछित्त ले आवे मांही।
ज्यानें असाधु परूप्या था मुख सूं, त्यारा वादे पग मस्तक सूं ॥ २८ ॥
जो उ वले न चाले सूधो, तो उग ने कर देवे गुर जूदो।
जब अविनीत रे उवाइज रीत, त्यारो कीयां बोलें विपरीत ॥ २९ ॥
लोकां नें साधां सूं भिडकावे, आप बुगल घ्यांनी होय जावे।
वले कूड कपट रो चालो, आतमा नें लगावे कालो ॥ ३० ॥
ओतो ओगुण काढे अनेक, बुधवंत न माने एक।
एहवा अविनीत छे गुर द्रोही, तिण आतम पूरी विगोई ॥ ३१ ॥
जे माने अविनीत री वात, त्यारे घट में आवे मिथ्यात।
एहवा अविनीत अवगुणगारा, त्या सूं बुधवत रहसी न्यारा ॥ ३२ ॥
इम सुण सुण ने नरनारी, छोडो कुगुर हीण आचारी।
अविनीत सूं रहसी दूरा, ते तो परमेश्वर नां पूरा ॥ ३३ ॥
विनीत सुण सुण पामे हरष, पडे अविनीत रे मन धडक।
ते तो रहे चोर ज्यूं रांच, लेवे आपण ऊपर खांच ॥ ३४ ॥
विनीत अविनीत रा अहलाण, इम ओलख कीजो पिछांण।
रूडी रीत सू काढे नीकालो, अविनीत सू दीजो टालो ॥ ३५ ॥
विना अविना रो ए विस्तार, कीधो खेरवा शहर मझार।
वत्तीसे वरष सवत अठारो, भादवा सुद छठ सुकरवारो ॥ ३६ ॥

●

रत्न : १५

विनीत अविनीत री ढाल

ढाल : १

दुहा

केइ अविनीत छे दुष्ट आतमा, ते सके नही करता अन्याय।
त्यांनें जथातथ प्रगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ १॥

ढाल

[समरू मन हरखे तेह]

छिद्रपेही छिद्रधारी राखे, कदे कांम पडे जब कहे दाखे।
तिणरें चारित पालण री नही नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ १॥
ओर साधां नें दोष लागो देखी, जो उ तुरत कहे तो निरापेखी।
आ सुध साधां री छोडी नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ २॥
गुर री निंदा करे छाने छाने, तिण अविनीत री वात अविनीत मांने।
ते चिहुंगति में होसी फजीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ ३॥
छाने छानें टोला में जिलो बांधे, गुर आग्या विण आपरे छादे।
तिण संजम सहीत खोई परतीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ ४॥
गुर सूं चेला रो मन फाडे, वले टोलां में मूरख भेद पाडे।
कूड कपट कर कर बोले विपरीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ ५॥
सतगुर री वात देवे ठेली, अविनीत रो तुरत हुवे वेली।
तिण छोडी सतगुर सूं प्रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ ६॥
गुर नें वादे तिक्खुत्ता रो पाठ गुणी, पिण मन मांहे ओघटघाट घणी।
वले खेले कपट दगा सहीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ ७॥
जिण सूं हेत राखे तिणरा दोष ढाके, तूटां हेत देतो आल नही सांके।
पछे मन मानें ज्यूं बोलें नचीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ ८॥
ते नागा निरलज्ज होय वेठा, त्यानें वतलायां वचन बोलें धेठा।
त्यांरे संजम रूप खिस गई भीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ ९॥
पेला ने कुसावण रे कामो, पोते नाक काटे ने मिले साह्मो।
ज्यूं अविनीत री छे आहिज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ १०॥
सुध साधां नें उत्थापण काजें, पोते असाध हुवतो पिण नही लाजें।
त्यां जनम खोयो पिण वे रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ ११॥
अविनीत साधां रा ओगुण गावे, ते तों भेष धास्यां रे मन भावे।
त्यारें लारे ए पिण गावें गीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत॥ १२॥

त्यां लाज सरम अलगी मेली, त्यांरा भेषधारी भागल बेली।
अविनीत नें यांरी एकहीज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १३ ॥
अविनीत भण भण उलटो बूडे, कर कर अभिमांन वेसें तूडें।
तिणरे विनों नरमाइ नही घट भीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १४ ॥
इसडा अविनीत जाबक भूंडा, त्यांरे केडें लागा ते पिण बूडा।
त्यांमें पिण हुसी घणी कुपीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १५ ॥
अविनीत नें हाथ जोडी वांदे, ते तों सात कर्म निश्चें बाधे।
तिणनें सतगुर री नही परतीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १६ ॥
अविनीत रो वखांण सुणवा जावे, तिणरे मिथ्यात वेगो आवे।
तिणनें पिण कर देवे विपरीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १७ ॥
अविनीतां आगे करें समाई, तिणरे पिण जांणजो भोलाई।
तिण अविनीतां री नहीं जांणी रीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १८ ॥
अविनीतां सूं जे कोइ प्रीत बांधे, तिण धर्म न ओलखियो आंवे।
समकित जावण री आहिज रीत, इसडा भारीकर्मां अविनीत ॥ १९ ॥

ढाल : २

दुहा

साध साधवी सर्व ने, सतगुर नी ए सीख।
आदर जो आछी तरे, चित्त नें राखे ठीक॥ १ ॥

ढाल

[डाभ मूजादिक नी डोरी]

गुर उभो सूकावे तो उभो सूके, ओ पिण अवसर नही चूके।
गुर करावे शिष्य ने सथारो, ते पिण आग्या न लोपे लिगारो॥ १ ॥
शक्ति न हुवे तो कहे जोडी हाथ, म्हारी शक्ति नही सांमी नाथ।
शक्ति हुवे तो आघो नही काढ़, आप कहो ते सिर उपर चाढूं॥ २ ॥
एहवा शिष्य गुर रा सुविनीत, आगन्या पाले इण रीत।
ते पिण जीवे ज्या लग जाण, गुर को वचन करे परमाण॥ ३ ॥
गुर पिण अवसर का जाण, ते पिण एहवी क्याने करे ताण।
सूस करावे अवसर देख, किण सूं मूल न राखे धेख॥ ४ ॥
अपछंदा में घणा छे दोष, छादो रूंध्या सूं पामें मोष।
उतराधेन चोथा अधेन मझारो, कोइ बुधवंत करज्यो विचारो॥ ५ ॥
गुर ने शिष्य री उपजे अपरतीत, विनादिक में जाणे विपरीत।
जो उ शिष्य हुवे सुविनीत, तो उपजावे गुर नें परतीत॥ ६ ॥
जिण जिण बोला री गुर ने संक, ते संका काढें नें करे निशक।
करडा करडा सूस खावे, गुर नें परतीत उपजावे॥ ७ ॥
सूस कीधाई परतीत नाणे, सूसां ने पिण लोपतो जाणे।
तो सूस लिख दे कोरे पानें, ते किण सू न राखे छाने॥ ८ ॥
हू इण लिख्या परमाणो हालू, आगन्यां लोप कदे नही चालूं।
जो शिष्य हुवे सुविनीत, इम उपजावे परतीत॥ ९ ॥
सूस लिखत री नाणे परतीत, आगे गुर ने घणी अपरतीत।
तोही हाथ जोडे सुविनीत, विने सहित बोले रूडी रीत॥ १० ॥
थें म्हारी परतीत मूल न राखी, तो हिवें च्यार तीरथ देउं साखी।
म्हांरा सूस कागद मे लिखाय, च्यार तीरथ नें देउ बंचाय॥ ११ ॥
हूं चालू इण लिख्या परमांणो, कदा चूक मे पडियो जाणो।
तो च्यार तीरथ नें देजो जताय, मोने हेलें निंदे आणे ठाय॥ १२ ॥

जो थांरे कहे न चालूं सूधो, तो मोनें कर देजो गण सूं जूदो।
पिण मोसूं किरपा करो स्वांमी नाथ, म्हांरे मस्तक राखो हाथ॥ १३॥
हूं मरजादा नही चूकूं, आपरो शरणो नही मूंकूं।
आपरो छे मोनें आधार, मोने उतारो भव पार॥ १४॥
जब गुर कहे तूं बोले सूधो, हिवडां मूल न दीसें ऊंधो।
रखे हुवेला विश्वासघाती, बांवलिया रा बीज रो साथी॥ १५॥
बांवल बीज वाया पांणी पूगे, तो उ सूला लीयांईज उगे।
बांवल बीज सुंहालो थो आगे, हिवे ज्यूं बधे ज्यूं सूला लागे॥ १६॥
ज्यूं तूं रहे छे गण मांय, घणो विनों करे छे ताय।
रखे साध साधुवियां फारे, गुर सू परिणांम उतारे॥ १७॥
पछे आल दे नीकलेला बारे, ओरां ने ले जावेला लारे।
पाछला नें परूपे असाध, करेला घणो विपवाद॥ १८॥
घणा जीवां रे घाले ला संका, लगावे ला मिथ्यात रो डंक।
ओ तो भारी अकारज मोटो, इसडो मन में म राखे खोटो॥ १९॥
आ पिण शंका छे थांरी मोंने, वारवार कहूं हिवे तोने।
आ परतीत उपजाव तूं गाढी, करडा सूंसादिक काढी॥ २०॥
जो तूं सरल छे नही अनाखी, तो तूं च्यार तीरथ दे साखी।
जो थांरे रहिणो छे गण मांय, तो इण विध परतीत उपजाय॥ २१॥
इम सांभल नें सुविनीत, विने सहित बोले रूडी रीत।
आप कहो तिणनें साखी देऊं, आप कहो तिको सूंस लेऊं॥ २२॥
कदा कर्म जोगे पडूं न्यारो, तो ओरां ने न ले जाऊं लारो।
कोइ आफे आवे म्हांरे लार, तिण सूं भेलो न करूं आहार॥ २३॥
गण में रहूं निरदावे एकलो, किण सूं मिलें न बांधूं जिलो।
किणनें रागी करे राखूं म्हांरो, एहवो पिण न करूं विगाडो॥ २४॥
साध साधवियां री वात, उतरती न करूं तिल मात।
वले मांहोमां कलहो लागे, किणरी नही कहूं किण आगे॥ २५॥
इण विध रहूं गण मझारो, किणरो ओगुण न बोलूं लिगारो।
एहवा सूंस करावो आप, च्यार तीरथ नें शाखी थाप॥ २६॥
कदा कर्म जोगे पडूं न्यारो, तो हूं मुख में न घालूं आहारो।
ओ पिण सूंस करावो मोय, तिणरा साखी करो सहु कोय॥ २७॥
च्यार तीरथ नें दो थें जताय, मो छूटकरी न मानें वाय।
थांने ही दो सूंस कराय, पिण मोनें राखो गण मांय॥ २८॥

गुर नें उपनी जांणें अपरतीत, तो इम उपजावे परतीत।
ज्यारे मुगत जावा री नीत, गुर ने आराधे इण रीत॥ २९॥
जे समता रस मे रह्या भूल, ते तों मरणो कर दें कबूल।
पिण गुर कुल वासो नही मूके, विनांदिक गुण सूं नही चूके॥ ३०॥
सुविनीत गुर ने आराधे, ते आतम कारज साधे।
विनों कर गुर ने रीझावे, ते मुगत तणा सुख पावे॥ ३१॥



रत्न : १६

उरण री ढाल

ढाल : १

दुहा

मात पिता सूं उरण किण विध हुवे, सेठ सूं उरण हुवे केम।
वले गुर सूं उरण किण विध हुवे, ते सुणजो धर पेम ॥ १ ॥

ढाल

[डाभ मूंजादिक नी डोरी]

मात पिता जनम रा दातार, करे संसार नों उपगार।
तिणनें पालें पोसें रुडी रीत, त्यांरो कोयक हुवे सुविनीत ॥ १ ॥
त्यानें गमता भोजन खवावे, गमता गेंहणा वस्तर पेंहरावे।
पीठी मरदन सिनांन करावे, गमती सेज्या मे जाय पोढावे ॥ २ ॥
वले कावड मांहे वेसाय, कावड खाधे लीयां फिरे ताय।
घणो विनों करे जोडी हाथ, ते उरण हुवो नही तिलमात ॥ ३ ॥
माइतां रो जाणे उपगार, त्यांरो विनो करे वारूवार।
जाव जीव रहे आगन्याकारी, तोही उरण न हुवे लिगारी ॥ ४ ॥
इसडो माइतां नें हितकारो, जीव हुवो अनंती वारो।
मुगत जावा रो उपगार, तिण न कीयो मूल लिगार ॥ ५ ॥
मात पिता सूं उरण थावे, जो उ जिण धर्म त्यांनें पमावे।
समभाय मेले मुगत में ताय, ते मा बाप सूं उरण थाय ॥ ६ ॥
कोइ दलद्री दलिद्र सहीत, धन धानादिक सूं रहीत।
नीठ नीठ भरे छे पेट, तिणनें राख्यो गुमासतो सेठ ॥ ७ ॥
दलद्री तिणने सेठ वधास्यो, तिणरो दलिद्र दूर निवास्यो।
तिणने कीधों रिधिवंत भारी, सेठ इसडो हुवो उपगारी ॥ ८ ॥
कदे सेठ न्यारो कीयो ताय, जब ओ ओर सहर रह्यो जाय।
तो पिण सेठ री आगन्यां माय, त्यारो नांम धरावे ताय ॥ ९ ॥
वले लाखां कोडां पामी आथ, हुवो घणा नरा नो नाथ।
तिणरे गुमासता वोहत कमावे, सगला ऊपर हुकम चलावे ॥ १० ॥
आप हुवो घणा रो सेठ, तोही निज सेठ सू वरते हेठ।
त्यांरो गुमासतो आप वाजे, मुख सू पिण कहतो न लाजे ॥ ११ ॥
मूलगा जांणें उपगारी, त्याने किण विध घाले विसारी।
त्यांरो सिक्को घारे रह्यो सेंठो, त्यांरो थको तिहा रहे बेठो ॥ १२ ॥

लारे सेठ रे दिन आयो खोटो, तिणरे पड गयो जावक तोटो।
वले घर में आई पूरी खाल, बाकी क्यूं ही रह्यो नही माल॥ १३॥
सेठ रा पुन पड गया माठा, गुमासता पिण धन ले नाठा।
कांनी कांनी रह्या धन दाव, थोडा में छेडो आयो सताव॥ १४॥
माथे पिण ऋण हुवो पूरो, सेंण सगा हुवा सरव दूरो।
उपर सूं पडियो दुरभख ताही, खावा धान नही घर माही॥ १५॥
लोकां मांहें पिण पडियो उघाडो, तिणसूं माथेई न मिले उघारो।
अन्न विण मरतां मेली नाकी, जब गुमासता री दिशि ताकी॥ १६॥
तिण दलद्री रो सेठ कीधो, तिणरो शरणो लेवा मन कीधो।
अशुभ उदे विपद रो घाल्यो, तिणरी दिशि नें चाल्यो॥ १७॥
तूटो डील नें तूटी सभाई, मुख वदन गयो कुमलाई।
पगां लिगतरा बाजे ताहि, इण रीते आयो शहर रे मांहि॥ १८॥
निज सेठ नें आवतो देखी, हरख्यो मन माहें वशेखी।
गादी तकिया छोडी साह्मों जाय, सेठ रा पगा मे पडियो आय॥ १९॥
विने सहीत बोलें जोडी हाथ, मोने आज कीयो थें सनाथ।
थांरो दरसण में दीठो आज, म्हांरा सरिया वंछित काज॥ २०॥
म्हांरे आज भलो दिन ऊगो, मन रो मनोरथ पूगो।
घणी अतंत कीधी लघुताई, इण कुमिय न राखी काई॥ २१॥
विनो नरमाई करता देख, लोक इचरज पाम्यां वशेख।
त्यांने उत्पति धुर सू बताय, सगलां ने दीया समझाय॥ २२॥
पछें निज सेठ ने घरां ल्याय, मरदन सिनांन कराय।
मोय मूंहगा नें हलका तोल मांय, एहवा वस्त्र गेंहणा पहिराय॥ २३॥
पछें मन गमता भोजन कराय, रूडी सेज्या मे आंण पोढाय।
वले भोजन अनेक रसाल, नित्य जीमावे काल रा काल॥ २४॥
डीलां में चाका कीयो जरूरो, सूरत में घणो सनूरो।
गादी तकिया वेंसाणे आंण, हिवे बोले किण विध वांण॥ २५॥
आप पधास्या इण ठांम, ते मोनें फुरमावो कांम।
जब सेठ बोले इम वाय, मोमे विपत पडी छे आय॥ २६॥
देश दुरभख पडियो ताय, खावा धांन नहीं घर माय।
माथे पिण न मिले उधारो, जब हूं आयो थारी दिशि धारो॥ २७॥
आ हूं आप कनें करूं अरज, कांयक तो करो म्हांरी गरज।
जब ओ बोल्यो सीस नमाय, इसडी भोले म काढजो वाय॥ २८॥

आप तो म्हांरा सिर धणी सेठ, हूं तो गुमासतो थांरो नेठ।
हूं दलद्री तिणने आप वधास्यो, म्हांरो मिनष जमारो सुधास्यो ॥ २९ ॥
म्हे था पामी रिधि विस्तार, ओ सगलो आप तणो उपगार।
हिवे सगली अवेरलो आथ, रिधि सहित सगला रा थे नाथ ॥ ३० ॥
आ रिधि खावो पीवो उडावो, सगलां ऊपर हुकम चलावो।
मोने पिण ऋजक रोटी दो आप, हू पिण इधका क्याने करूं टाप ॥ ३१ ॥
सेठ नें सगली सोपे आथ, सेवग थको रहे जोडी हाथ।
वले कदेय न हुवे त्यांसूं जूओ, तो पिण सेठ सू उरण न हूवो ॥ ३२ ॥
इसडो सेठ नें हितकारो, जीव हुवो अनती वारो।
मुगति जावा रो उपगार, तिण न कीयो मूल लिगार ॥ ३३ ॥
जे कोइ सेठ सूं उरण थावे, ते सेठ ने जिण धर्म पमावे।
समभाय मेले मुगत रे मांय, इम सेठ सू उरण थाय ॥ ३४ ॥
सेठ नें माईत कीयो उपगार, तिणसू उलटो बधे ससार।
ए तो सावद्य रो दातार, तिणमे धर्म नही छे लिगार ॥ ३५ ॥
जो उ मुगत गामी जीव होवे, तो एहवा उपगार साह्मो न जोवे।
जो इण उपगार मे धर्म जाणे, ते तो भर्म मे भूला ताणे ॥ ३६ ॥
एहवा उपगारी ने देखे ताय, थोडो घणो हरखे मन माय।
तिणरे निश्चे बधें कर्म सात, आ तो जिणजी रा मुख री वात ॥ ३७ ॥
एहवो पाछो करे उपगार, तिणरें पिण बधे ससार।
एहवा आह्मा साह्मा उपगार, कीधा नही पामे भव पार ॥ ३८ ॥
कोइ हुतो जीव मिथ्याती, खोटा देव गुर रो पखपाती।
करे अधर्म ने धर्म जाणे, महामूढ थको ऊंधी ताणे ॥ ३९ ॥
तिणनें मिल्या मोटा मुनिराय, समदिष्टि कीयो समभाय।
वले श्रावक करे साधु कीधो, मुगत गामी निश्चे कर दीधो ॥ ४० ॥
ते साधपणो सुध पाल, पछे कीयो तिहा थी काल।
ते उपनों देव लोक मे जाय, गुर भगता घणो छे ताय ॥ ४१ ॥
तिण उपयोग दे जोयो तांम, गुर ने देख लीया तिण ठांम।
गुर चोमास कीयो तिणवार, काल पडियो ते देश मझार ॥ ४२ ॥
गोचरी गया न मिले आहार, जाबक तूट गया दातार।
लोक होय गया हेंरान, खावा ने पूरो न मिले धान ॥ ४३ ॥
ओर देश में सुणियो सुगाल, पिण मारग में दुरभख काल।
तिहा पिण जावा रो काठो काम, विच मे उज्जड होय गया गाम ॥ ४४ ॥

जब कष्ट घणो गुर मांय, मोत घात आए लागी ताय।
जब उ शिष्य देवलोक मझार, कष्ट देखी नें कीयो विचार ॥ ४५ ॥
म्हांरा गुर में पडी इसडी वेला, तो हूं जाय करूं अन्न भेला।
इम चिन्तव सताब सूं आय, गुर नें मेल्या सुगाल रे मांय ॥ ४६ ॥
गुर नो कष्ट मेट्यो शिष्य आय, अन्न विण मरता राख्या ताय।
वले हरख्यो घणो मन मांय, तो पिण शिष्य उरण हुवो नाय ॥ ४७ ॥
वले गुर भूला मोटी अटवी मांय, मारग री पिण खबर न काय।
वले भूख तिरखा लागी आय, पग भर आघो खिसियो न जाय ॥ ४८ ॥
अन्न पांणी विनां अटवी मांय, जुदा हुवे जीव ने काय।
सिंघ चित्तादिक तिहां आय, उपसर्ग देवा लागा ताय ॥ ४९ ॥
जब उ शिष्य देवलोक थी आय, गुर नें वसती में मेल्या उठाय।
गुर ने जीवां मरता राख्या ताय, तो पिण शिष्य उरण नही थाय ॥ ५० ॥
वले गुर रा शरीरे मांय, सोले रोग उपनां आय।
तिण रोग सूं हुवे जीव घात, वले सुख नहीं तिल मात ॥ ५१ ॥
जब उ शिष्य देवलोक थी आय, सोलेई रोग दीया गमाय।
सुख साता कीधी जीवां वचाय, तो पिण गुर सूं उरण नही थाय ॥ ५२ ॥
काल रा मेल्या सुगाल रे मांय, अटवी सूं मेल्या वसती में ताय।
रोग कीया शरीर थी न्यार, तोही उरण न हुवो लिगार ॥ ५३ ॥
जो इसडा करे अनेक उपाय, तोही गुर सूं उरण नहीं थाय।
उरण न हुवो ते किण लेखे, ते परमारथ विरला देखे ॥ ५४ ॥
जो उ शिष्य आए इम न करंत, तो पेहले छेहडें गुर जीवां मरत।
मरनें संसार में न पडंत, कष्ट सही कर्म दूर करंत ॥ ५५ ॥
तो पिण वले नही हुआ कर्म, वले घटतो नही त्यांरो धर्म।
मुगत जावा रो न कीयो उपाय, उरण न हुओ ते इण न्याय ॥ ५६ ॥
गुर धर्म थी भिष्ट हुवे ताय, ने आंणे शिष्य ठाय।
पडता राख्या भव कूआं मांय, जब गुर सूं उरण हुवो ताय ॥ ५७ ॥
कदा गुर भिष्ट होय बेंठा ताय, ग्यांनादिक गुण सर्व गमाय।
रात दिवस हणे छे छ काय, जाबक खूता संसार रे माय ॥ ५८ ॥
जब उ शिष्य देवलोक थी आय, खपकर आंणे गुर नें ठाय।
पाछा साधु करें समझाय, ते गुर सूं उरण हुवे ताय ॥ ५९ ॥
जो गुर भगता हुवे शिष्य सुविनीत, गुर सूं उरण हुवे इण रीत।
ए ठाणां अंग सूतर मांय, तीजे ठांणे कह्यो जिणराय ॥ ६० ॥

गुर कीधो भारी उपगार, गुर उतांरयो संसार थी पार।
कीधो मुगत तणो अधिकारी, त्याने किण विध घाले विसारी ॥ ६१ ॥
रात दिवस गुर रो ध्यान ध्यावे, रात दिवस गुर रा गुण गावे।
गुर रो कीधो उपगार बतावे, गुर रा गुण किण विध गावे ॥ ६२ ॥
गुर मोसूं कीयो मोटो उपगार, ग्यानादिक गुण रा दातार।
हूं तो हुतो जीव अग्यानी, मोने सतगुर कीधो ग्यानी ॥ ६३ ॥
हूं अनाद काल रो हुंतो मिथ्याती, हिंसा धर्म तणो पखपाती
ते म्हांरी श्रद्धा खोटी छुडाय, गुर समकित दे आण्यो ठाय ॥ ६४ ॥
हू खूतो थो संसार मझार, जब हूं सेवतो पाप अठार।
मोनें दीख्या दे कीयो साध, म्हारी भव भव री मेटी व्याध ॥ ६५ ॥
हूं डूबो इण संसार मांह्यो, गुर बारें काढ्यो बांह संभायो।
सुध श्रावक रो धर्म पमायो, त्यासूं उरण किण विध थायो ॥ ६६ ॥
हूं अनंत संसारी जीव थो भारी, ते मोने गुर कीयो परित संसारी।
हू दुर्लभ बोधी जीव थो करलो, गुर मोने सुलभ बोधी कीयो सरलो ॥ ६७ ॥
हूं तो कृष्ण पखी जीव थो कुकरमी, हिंसाधर्मी ने पूरो अधर्मी।
मोनें शुकल पखी गुर कीधो, मुगतगढ रो पट्टो लिख दीधो ॥ ६८ ॥
हूं तो अचरम मिथ्यात सहीत, संसार नां छेहडा रहीत।
गुरां चरम करे सिर चाढ्यो, म्हारा संसार नों छेहडो काढ्यो ॥ ६९ ॥
मोने गुर कीधो मुगत नजीक, इन्द्र नों पिण कीयो पूजनीक।
म्हांरो जीतब जनम सुधार्यो, मोने संसार पार उतार्यो ॥ ७० ॥
शिष्य सुविनीत हलुकर्मी होवे, तो गुर रा उपगार साह्मो जावे।
जिण आगम सीखामण सूधी धारी, हिवें कुण कुण करे विचारी ॥ ७१ ॥
कोइ पट्टो राजा रो खावे, कोइ रोजगार नित पावे।
ते पिण विनों करे जोडी हाथ, वले लेखवे सिर धणी नाथ ॥ ७२ ॥
तिणनें करडी मूहम धणी मेले, तो पिण धणी रो वचन नही ठेलें।
मर जाये तिणरा मूंढा आगे, धणी ने मेल पाछो नही भागे ॥ ७३ ॥
तिण धणी रो पिण काचो आधार, थोडा में पट्टो देवे उतार हो।
वले काढ दे देश रे बार, कदा जीवां पिण नाखे मार ॥ ७४ ॥
तिण धणी रो वचन न लोपें, मरण साह्मों मडे पग रोपें।
जाणें आउं धणी रे काम, तो हू नही होऊं लूण हराम ॥ ७५ ॥
रिजक रोटी पट्टा रे काजें, मर जाये पिण पाछो न भाजें।
तो हूं मुगत जावा रे काज, पिंडत मरण करतो नाणू लाज ॥ ७६ ॥

गुर शिष्य नें मुगत गांमी कीधो, मोष रो पट्टो अविचल दीधो।
दलिद्र दीयो दूर गमाय, ग्यांन दरसण चारित पमाय॥ ७७॥
जो उ शिष्य हुवे सुविनीत, गुर री आग्या पालें रूडी रीत।
ते गुर रो वचन किम लोपें, मरण साह्मों तुरत पग रोपें॥ ७८॥

रत्न : १७

मोहणी कर्म बंध री ढाल

ढाल

दुहा

महामोहणी कर्म री, स्थिति लाबी कही जिणराय।
सितर कोडा कोड सागर तणी, ते भोगवतां दुख थाय ॥ १ ॥
आठ कर्मां माहे राजवी, मोटो मोहणी कर्म।
इण कर्म उदे वस जीवडो, पामे नही जिण धर्म ॥ २ ॥
जे जे माठा किरतब करे, मोह कर्म उदे वस जीव।
पाप कर्म उपजावे अति घणा, तिणसूं पामें दुख अतीव ॥ ३ ॥
इण मोह कर्म रा जोर सूं, माठी माठी अकल बुद्धि थाय।
साधु श्रावक धर्म सू चूक ने, पडें नरक निगोद मे जाय ॥ ४ ॥
जे कर्म बधे महामोहणी, तिणरा छे तीस बोल।
ते चित्त लगाय ने सांभलो, आंख हीया री खोल ॥ ५ ॥

ढाल

[बिछियानी]

दुष्ट परिणामां तस जीव ने, डबोवें पांणी रे माय रे।
तिणने मारे पाणी मे बुरी तरें, जुदा करे जीव ने काय रे।
इम कर्म बधे महामोहणी* ॥ १ ॥
मुख भीच मारे तस जीव नें, वले मारे नाकादिक भीच रे।
मारे गले देई गल भीचियो, इण विध मारे भूंडी कुमीच रे ॥ इ० २॥
घणा जीव बाडा मे घाल ने, देवे चोफेर अगन लगाय रे।
मारे अगन धूआ रा जोग सूं, खोटा परिणामा ताय रे ॥ ३ ॥
मारे खडग सू मस्तक भेद ने, मारे मुगदरादिक सिर मार रे।
अथवा मस्तक फाडे विदार ने, करे जीव ने काया न्यार रे ॥ ४ ॥
तस जीव तणा मस्तक मभे, आलो बाघ वीटे ताण तांण रे।
पछे आण वेसाणे तावडे, इण विध हणे प्रांणी रा प्राण रे ॥ ५ ॥
काला गेहला ने मारे हसें, कतोहल करवा कांम रे।
वले कपट करी भेप पालटे, ते आपो छिपावण काम रे ॥ ६ ॥
खोटो आचार गोपवे आपरो, देखाडे रूडो आचार रे।
वले माया ढाकण माया केलवे, भूठ बोली गोपे वारुवार रे ॥ ७ ॥
अणाचार सेव्यो नही तेहनें, हेले देदे भूठा आल रे।
आप दोप अणाचार सेव नें, ओर रे सिर देवे राल रे ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

भरी सभा में बेठो थको, सके नहीं करतो अन्याय रे।
मिश्र भाषा बोले तिण अवसरे, झूठ नें झूठ जांणतो नांय रे ॥ ९ ॥
राजा रे रूंवे लिखमी आवती, द्रोही प्रधान कपट सहीत रे।
वले भेद पांडें सुभटां थकी, राजा नें करे राज रहीत रे ॥ १० ॥
राज लिखमी गयां विल विल करे, तिणनें बोले मरम मोसावाय रे।
वले भोग भोगवतां तेहनें, जोरी दावे देवे अंतराय रे ॥ ११ ॥
आचारज गणनायक अघपति, त्यांरे शिष्य कोइ दुष्ट अविनीत रे।
ते मन भांगे ओर साधां तणो, गुर नें करे पदवी रहीत रे ॥ १२ ॥
जश कीर्ति घटावे गुर तणी, देवे पूजा श्लाघा घटाय रे।
वले शिष्य हो तो देखनें वरज दे, उपधादिक री देवे अंतराय रे ॥ १३ ॥
राजा रे रूंवे लिखमी आवती, तिणमें दरबे चोरी री खोड रे।
इण विध गुर सूं चेलो करे, ते तीर्थंकर रो चोर रे ॥ १४ ॥
बाल ब्रह्मचारी नहीं ते कहे, हूं तो बाल ब्रह्मचारी अकन कवार रे।
वले अस्त्री सेवण गिरधी घणो, विषय पिण वांछे वारूंवार रे ॥ १५ ॥
ब्रह्मचारी नहीं वले इम कहे, हूं छूं शीलवतो ब्रह्मचार रे।
जिम गधो भूंके गायां मझे, तिम ओ बोले साधां रे मझार रे ॥ १६ ॥
जिणरी नेश्राय करे आजीवका, धन वधियो तिणरी नेश्राय रे।
जश कीरति वधी तिणरी नेश्राय सूं, तिणरो धन लूंसे जाय रे ॥ १७ ॥
वधियो राजादिक री नेश्राये, त्यांनेंईज दगो दे ताय रे।
वले छल बल खेले तेह सूं, उपगारी नें हुवे दुखदाय रे ॥ १८ ॥
गुण वधिया गुर री नेश्राये, त्यां सूं दगो करे मन मांय रे।
छल छिद्र जोवे चोर नी परे, शिष्य शिष्यणी लेवे फंटाय रे ॥ १९ ॥
साधु साधवी श्रावक श्रावका, त्यांनें फाडण रो करे उपाय रे।
गुर सूं मन भांगे तेहनों, भूठा भूठा अवगुण दरसाय रे ॥ २० ॥
करे विश्वासघात मांहें थको, मुख मीठो खोटो मन मांय रे।
वले जिल्लो बांधे ओर साध सूं, आपरो कर राखे ताय रे ॥ २१ ॥
राजा नही तिणनें राजा कीयो, राज दीधो मोटे मंडाण रे।
ते तों उपगारी छे मूलगो, तिणनेंइज दुख दुख देवे जांण रे ॥ २२ ॥
सर्पणी इंडा गिले आपरा, अस्त्री मारे निज भरतार रे।
वले चाकर मारे ठाकर भणी, गुर नें शिष्य नांखे मार रे ॥ २३ ॥
मारे देश तणा नायक भणी, सेठ नें हणे माठे ध्यांन रे।
कोइ मारे अधिकारी पुरुष नें, कुल में दीवा समांन रे ॥ २४ ॥

कोइ संत रिषेश्वर मोटको, घणा जीवां रो तारणहार रे।
द्वीपा समान डूबता जीव नें, त्यानें हणे कोइ वेषधार रे॥ २५॥
केई चारित लेवा उठिया, केइ चारित पाले ताय रे।
तिण चारितीया नें चारित थकी, भिष्ट करवा रो करे उपाय रे॥ २६॥
उतकष्टा ग्यानी केवली, त्यारे संजम तप री समाध रे।
ते तो प्रतिबोधे भवि जीव नें, त्यारा बोले अवगुणवाद रे॥ २७॥
न्याय मारग छे सुध मुगत रो, तिणसूं तपतो रहे दिन रात रे।
तिण मारग सूं घणा ने चूकाय दे, खोटी श्रद्धा हिया मे घात रे॥ २८॥
आचार्य उवझाय त्यां कने, साध हुवो छोडे माया जाल रे।
वले भणियो सिद्धात त्यां कनें, त्यानेंइज निंदे मूरख बाल रे॥ २९॥
आचार्य उवझाय तेहने, न करे सेवा भगत मन सुध रे।
विनो वियावच पिण करे नही, अहमेव पणा री बुद्ध रे॥ ३०॥
आचार्य उवझाय त्यां कने, ग्यान दरसण चारित पाय रे।
त्यां सू पिण करे मूढ बरोवरी, वले सनमुख झगडे आय रे॥ ३१॥
आचार्य उवझाय त्या कने, समझे कीयो परित्त ससार रे।
वले सजम रे सनमुख कीयो, त्यारा अवगुण बोले वारूंवार रे॥ ३२॥
आचार्य उवझाय गण थकी, अविनीत ने देवे दूर टाल रे।
जब अविनीत क्रोध तणे वसे, हेले दंदे भूठा आल रे॥ ३३॥
आचार्य उवझाय तेहनी, वदणा छोडावे संका घाल रे।
उत्तमा री उतारे आसता, दुष्ट अविनीत री आ चाल रे॥ ३४॥
आचार्य उवझाया ऊपरे, कोइ पडिवजियो मिथ्यात रे।
तिण अविनीत नें सवलो सूझे नही, करे जोम ने गाढ री वात रे॥ ३५॥
कोइ बहुश्रुती तो निश्चे नही, ते कहे हू छू बहुश्रुती साध रे।
मो बरोबर सूत्तर कुण भण्यो, अभिमानी करे भूठो विवाद रे॥ ३६॥
कोइ तपसी तो निश्चे नही, ते कहे हू छूं तपसी घोर रे।
तिणने तीन लोक रा चोर सू, उतकष्टो कह्यो वीर चोर रे॥ ३७॥
बालक तपसी गरढा गिलाण छे, त्यारी न करे वियावच देख रे।
ते छती सगत घेठो थको, वले राखे त्या ऊपर घेख रे॥ ३८॥
वले कपट केलव भूठो कहे, हू करू छू वियावच ताय रे।
पिण दुष्ट परिणामा तेहने, उलटी देवे अंतराय रे॥ ३९॥
कलह कारणी कथा कहे, वले घाले माहोमा खेद रे।
आह्मी साह्मी करे लगावणी, पाडे च्यार तीरथ मे भेद रे॥ ४०॥

चेला रो मन भांगे गुर थकी, गुर रो चेला सूं दे मन भांग रे।
यांनें भेद घाली न्यारा करे, तिण पहर विगाड्यो सांग रे॥ ४१॥
गुर मोटा उपगारी मुगत रा, त्यां सूं दूर करे भरमाय रे।
जीवे ज्यां लग भेला हुवे नहीं, एहवी मोटी देवे अंतराय रे॥ ४२॥
गण माहें वसे साधु साधवी, त्यांमें पाडें विखेरो कोय रे।
चित्त भंग करे यांरो एहवो, कदे फेर मिलाप न होय रे॥ ४३॥
साधु साधवी गुर सूं फाड नें, आपरा कर राखे ताय रे।
गुर सू छानें छानें बांधे जिल्लो, मूरख चोरी करे गण मांय रे॥ ४४॥
जोतिष निमित्तादिक भाखे घणा, वले हिंसा कीयां कहे धर्म रे।
वले पूजा श्लाघा रे कारणे, करे वसीकरणादिक कर्म रे॥ ४५॥
कांम भोग मिनष देवता तणा तिणमें रहे अतृप्तो ताय रे।
तिणरे वंछा घणी कांम भोग री, वले लंपट रहे तिण मांय रे॥ ४६॥
मोटी रिध संगत पांमी देवता, ते संजम तप रे प्रसाद रे।
इसडा मोटका देवता तणा, कोइ बोले अवगुण वाद रे॥ ४७॥
देवता नही देखे ते कहें, हूं देवता देखूं साख्यात रे।
वले अग्यांनी थको लोकां मझे, जिणेसर ज्यूं पूजावे विख्यात रे॥ ४८॥
तीसां बोलां बंधे महामोहणी, एतो कह्यो तीर्थंकर देव रे।
त्यांनें साधु तो वरजे सर्वथा, त्यारी करे इंद्रयादिक सेव रे॥ ४९॥
संवत अठारे सेंतीसे समें, सावण विद सातम रिववार रे।
कर्म बंधे छे महामोहणी, जोडी पादू गाम मझार रे॥ ५०॥
भवि जीवां ने समझायवा॥

रत्न : १८

दसवें प्राछित्त री ढाल

ढाल

दुहा

ठाणाअंग तीजें न पांचमें, दशमों प्राछित्त कह्यो जिणराय।
जघन्य मझिम प्राछित्त किण ही बोल मे, ते पिंडत जाणे न्याय॥ १ ॥
कोइ दशमो प्राछित्त सेवनें, ए आलोए तो मतिवत।
ते जथातथ प्रगट करूं, ते सुणजो कर खंत॥ २ ॥

ढाल

[समरूं मन हरखे तेह सती]

दुष्ट परिणामां ऊंघी धारे, गुरवादिक मूवां रा दांत पाडे।
तीव्र कषाय वस समता नावें, तिणनें दशमों प्राछित्त आवे॥ १ ॥
करे प्रमाद वस अकार्य मोटो, ते प्रतख लोक विरुघ खोटो।
तिणरो लोकिक पिण विगडी जावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवें॥ २ ॥
साघ साघवियां रो पेहरण साग, माहोमा चोथो व्रत देवे भाग।
ते च्यार तीर्थं मे फिट फिट थावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवे॥ ३ ॥
रहें एक आचार्य रा शिष्य भेला, कुल माहे वसे सहु मनमेला।
त्यामे भेद पाडण उघमी थावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवें॥ ४ ॥
रहे दोय आचार्य रा शिष्य भेला, गण माहे वसे सहु मनमेला।
त्यामे भेद पाडण उघमी थावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवे॥ ५ ॥
गुरवादिक री वाछे घात, एहवो घ्यान रहे दिन ने रात।
ते मन मे पिण नही पिछतावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे॥ ६ ॥
ओर साघां रा छिद्र जोवे तांम, तिणनें हेलवा निंदवा रे काम।
दोष भेला कर कर पछे उडावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवे॥ ७ ॥
प्रश्न पूछे हिंसादिक वारूवार, तिण चारित वाल कीयो छार।
ते इहलोक रो अरथी थावे, तिणनें दशमों प्राछित्त आवें॥ ८ ॥
कुल गण मे भेद पाडे केइ, हिंसा ने छिद्र तणो पेही।
सावघ प्रश्न वारूवार वतावें, तिणने दशमो प्राछित्त आवे॥ ९ ॥
दुष्ट प्रमाद ने अनमन सेवे, तिणरो प्राछित्त हाथ जोडी लेवें।
जे आलोव न सुघ थावें, तिणने दशमों प्राछित्त आवे॥ १० ॥
ठाणाअग तीजे ने पांचमे ठाणे, त्यांरा भेद अनेक पिंडत जांणें।
जघन्य मझिम भेद न्यारा थावें, उतक्रष्टो प्राछित्त दशमो आवे॥ ११ ॥

रत्न : १६

जिण लखणा चारित आवे न आवे तिण री ढाल

ढाल

दुहा

चारित आवे चोखो चित्त हुवा, पतलो पड्या मोह कर्म।
आतम वस छे आपरे, ते पाले छे जिण धर्म॥ १॥
जे तीखी बुद्धि रा मानवी, सरल सभाव मतिवंत।
ते समभ सताब सयम लीयो, ज्यारी पूरीजे मन खत॥ २॥
केइ समझ्या छे सतगुर कने, पिण न मिटी मन री भोल।
त्याने चारित आवे किण विधे, माहे मोटी कर्म किलोल॥ ३॥
त्याने ससार खारो लागो नही, लपट रह्या तिण माय।
ते सजम री भावे भावना, पिण संजम आवे नांय॥ ४॥
जिण लखणा चारित आवे नही, जिण लखणा चारित आय।
त्यारा भाव भेद परगट करू, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५॥

ढाल

[समरु मन हरख तेह सती]

त्यारे समकित री सेंठी नीव, विनेवंत हलुकर्मी जीव।
ते ससार सू रहे निरदावे, या लखणा चारित वेगो आवे॥ १॥
जे वेराग मांहे भीना पूरा, ते लोभ लालच सूं रहे दूरा।
बेरी वाहलां ऊपर रहे समभावे, या लखणा चारित बेगो आवे॥ २॥
त्यारे न्यातीला सू नेह थोडो, वले मोह कर्म रो नही जोरो।
दिन दिन चोकडी घटावे, या लखणा चारित वेगो आवे॥ ३॥
ते आगूंच मोह माया मूकें, वले सतगुर मिल्यां अवसर नही चूके।
कर्म काटण ने तप तेज संभावे, या लखणा चारित वेगो आवे॥ ४॥
त्यारे मुगत जावण री लग रही आस, ते काल रो नही करे विश्वास।
ते आगूच आपो संभावे, यां लखणा चारित वेगो आवे॥ ५॥
केइ संजम लेवा करे टाला टोला, पल पल में ऊठे अनेक डोला।
खिण मे रंग विरग होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ ६॥
लोभ लालच त्यांरे नही छूटो, न्यातीला सूं नेह पिण नही तूटो।
माया मेलण री मनसा ल्यावे, या लखणा चारित नही आवे॥ ७॥
वेंराग विना निरथक बेठा, त्यानें वतलाया वचन वोलें वेठा।
शूर वीरपणो त्यामे नही पावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ ८॥

वले दिन दिन इधक मेले तांता, आऊखा मांसूं दिन नही जांणे जाता।
हलफल में यूंही दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ ६॥
वले नवा नवा सगपण साधे, आगला सूं नेह इधको बांधे।
त्यांरे काजे कर्मबंध कमावे, यां लखणा चारित नहीं आवे॥ १०॥
ज्यांनें संसार लागे छे अति मीठो, त्यांरो निश्चेंई वेंराग जांणो फीटो।
ते अंतरंग भावना किम भावे, यां लखणा चारित नहीं आवे॥ ११॥
आरा मोसर आरंभ में आधो, छकाय मारण केडे लागो।
वले मांन बडाई में नही मावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १२॥
जिण आगन्यां पालण सूं दूरा, वले सावद्य काम करण शूरा।
तिणनें सरायां फल फूल होय जावे, यां लखणा चारित नहीं आवे॥ १३॥
मूंढे मीठा पिण नही समभावा, घणा जीवा सूं राखे कावा दावा।
रात दिवस पेला रो भूंडो चावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १४॥
संसार में राड झगडा कजिया, तिण मांहें नितका सजिया।
थोडा मे पेला रो घर गमावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १५॥
आह्यो साह्यो घणा सूं डस राखे, वले मांन बडाई मुख भाखे।
वले कुबुद्धि करे कलह लगावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ १६॥
वेंराग रहित बोलें पोला, त्यारो मनडो खाय रह्यो झोला।
त्यांरे चारित री चित्त में नावें, यां लखणा चारित नही आवे॥ १७॥
अथिर सभावी घर छोडण री कहें, त्यांरो आरंभियो तो यूंहीज रहें।
घडी घडी में परिणांम फिर जावें, या लखणा चारित नहीं आवे॥ १८॥
वरस छमास में छोडूं गृहपासा, ते दिन आयां ओर बाधे आसा।
आगे लगा दिन चलिया जावें, यां लखणा चारित नही आवे॥ १९॥
संसार नीं वातां सुण सुण हरषे, संजम री वात कीयां धडके।
संजम लेवा सूं नहीं उमावे, या लखणा चारित नही आवे॥ २०॥
केइ कर रह्या संजम लेऊं, जांणें गृहवासो जोग सामूं वेहूं।
इम करतां करतां नें काल गटकावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ २१॥
संजम लेवा करे गाथा गूथा, ते तों यूंही रहे घर में खूता।
परिणांम चढ चढ नें पड जावे, यां लखणा चारित नहीं आवे॥ २२॥
काचे मन चारित री वात काढें, ते तो काम सिराडे किम चाढे।
पांणी पर पोटा ज्यूं वेंराग विललावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ २३॥
केइ आपरा मन सूं शूरा बाजें, कांम पड्यां डेरो नांखे भाजे।
इण दिष्टान्ते केइ पडिया पोमावे, या लखणा चारित नही आवे॥ २४॥

घर छोडतां करें थागा थेगो, त्यारे नही वेराग रस संवेगो।
थागा थेगा कर दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २५ ॥
इसडा जीव आगे अनत हुवा, उवे आसा अलुधा यूहीज मुवा।
ते तो चिहुगति मे गोता खावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २६ ॥
केइ घर छोडण मन वेराग धरे, जब ओरा ने माहे लेऊ वधो करे।
पछे परिणाम पडे जब सीदावे या लखणा चारित नही आवे ॥ २७ ॥
उणरो वेली घर छोडण री करे, जव कायर रे मन धडक पडे।
वंधो करने पडियो पिछतावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २८ ॥
जव उणरा परिणाम पाडण खपे, घणो कूड कपट मुख सू रे जपे।
कर्म बंधवा रो डर नही ल्यावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २९ ॥
आप घर छोडण सूं मन उमावे, जब उणरा पिण परिणाम चढावे।
आप डिगियो ओरा ने डीगावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३० ॥
चारितिया ने चारित सू भिष्ट करे, तो महामोहणी कर्म रो बध पडे।
ते तों ससार में दुखियो थावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३१ ॥
साधु सुध उपदेश दे सुविचारी, उणरा वेली ने करे सजम सू त्यारी।
जब ऊ साधा ऊपर पिण दुख पावे, या लखणा चारित नही आवे॥ ३२ ॥
के उ भागण री ओर ताके सेरी, घणो झूठ वोले भाषा फेरी।
ते बधो भाग ने भागल थावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३३ ॥
भागल थई झूठ बोले भारी, केइ होय जाय अनत ससारी।
पछे दडी दोटा ज्यूं झीका खावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३४ ॥
बधो भांग सत बोले निरापेखो, इरडा तो वेयक विरला देखो।
भारीकर्मां सू साच वोलणी नावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३५ ॥
सूंस भागे ने घर मे रहिवा री करे, ते तो साधा रा छिद्र जोवतो रे फिरे।
मिनकी उदर ज्यूं माठी भावना भावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३६ ॥
कोइ घर छोडण री चित्त मे धारे, जब ओरा रा परिणाम ढीला पाडे।
जाणे रखे मोसू वडो होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३७ ॥
केइ सूस वरत देवे भगो, जब मूरख पामे उछरगो।
भागल ने भागल बधिया चावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३८ ॥
घर छोडण रा सूस भागे, जब साधा ने असाधु श्रद्धण लागे।
आल देतो पिण डर नहीं ल्यावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३९ ॥
निर्लज सूंस वरत देवे भाग, त्यारा चिहूगति मे नीकले साग।
वले लोकिक पिण विगड जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४० ॥

लज्यावंत उत्तम नरनार, सूंस वरत करे ते घालें पार।
त्यांरा तीर्थंकर पिण गुण गावें, यहा लखणा चारित नही आवे॥ ४१॥
दोय दोय तरवार बांधे गाढी, वरसो वरस खुरसाण चाढी।
कांम पड्यां बारे काढणी नावें, यां लखणा चारित नही आवे॥ ४२॥
ज्यूं त्यागी वेंरागी बाजें पूरा, घर छोडण निमित्त दीसें शूरा।
कांम पड्यां ते पिचक जावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ ४३॥
गोला बांण वहे तलवाख्यां भलकी, तिण ठामें कायर जाए सलकी।
विरुदावली बोलतांई नाठो जावे, यां लखणा चारित नहीं आवे॥ ४४॥
ज्यूं परीसा रूप वहे बांण गोला, ते कायर सुण भाग जाये भोला।
तिण भागल नें वेराग विरुद न सुहावे, यां लखणा चारित नही आवे॥ ४५॥
गोला बांण वहे तलवाख्यां भलके, तिण ठामें शूरा हुवे ते नही सलके।
ते तों मरण रो डर मूल नहीं ल्यावे, या लखणा चारित बेगो आवे॥ ४६॥
ते परीसा रूप गोला बांण वहे, ते सुण सुण उत्तम जीव दृढ रहे।
घर छोडतां परीसा रो डर नही ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे॥ ४७॥
केइ कायर संग्राम मांहें जावें, तिणनें न्यातीलादिक याद आवे।
ते सनमुख लोह किण विध खावें, यां लखणा चारित नहीं आवे॥ ४८॥
यूं घर छोडण री चित मांहें धरे, ते न्यातीलादिक नें याद करे।
त्यांनें छोडी नें किम हुवे निरदावे, यां लखणा चारित नहीं आवे॥ ४९॥
शूर संग्राम चढे शस्तर झाले, न्यातीला में चित्त नही घाले।
आप जीते ओरा नें हठावे, यां लखणा चारित बेगो आवे॥ ५०॥
ज्यूं घर छोडण नें शूरा होवे, ते न्यातीला साह्मों नही जोवे।
संजम लेनें कर्म वेंरी खपावे, यां लखणा चारित बेगो आवे॥ ५१॥
संसार शूरा पिण सेंठी धारे, नासण भागण री नही विचारे।
मरण सूं साह्मों मंड जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे॥ ५२॥
इण दिष्टांते वेराग मांहें पूरा, मुगत जावण नें हुवे शूरा।
ते घर छोडण री डर नही ल्यावे, त्यां लखणा चारित बेगो आवे॥ ५३॥
कर्म रोकण तोडण री सेंठी धारे, ओर आल पंपाल नही विचारे।
आड दोढ चित्त में मूल नहीं ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे॥ ५४॥
एक मुगत जावण री राखे आसा, ओर छोड दे सर्व आसापासा।।
संसार सुखां में रति नही पावे, यां लखणा चारित बेगो आवे॥ ५५॥
इम सुण नें उत्तम नरनार, सूंस वरत पालो निरतीचार।
ज्यूं जनम मरण दुख मिट जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे॥ ५६॥

वरस पेंतीसे संवत अठारे, महासुदि चोथ दिन बुधवारे।
देश मेवाड वनेडे गाम, जोड पूरी कीधी छे तिण ठांम ॥ ५७ ॥



रत्न : २०

सूंस भंगावण रा फल री ढाल

ढाल

दुहा

वनस्पति टाल नें पाच काय थी, अनंत गुणा अभवी जाण।
त्यासू पडिवाई समदिष्टी अनंत गुणां, समकित भिष्ट अयाण॥ १ ॥
त्यामे केकां तो-भांग्यो साघपणो, केका भांग्यो श्रावकपणो जाण।
केइ भिष्ट हुवा समकित थकी, होय गया मूढ अयाण॥ २ ॥
ते पडिया छे नरक निगोद में, तिहा खाये अनंती मार।
अनंत काल लगे दुख भोगवे, तिणरो वेगो न आवे पार॥ ३ ॥
भागल हुवा छे बापडा, दीघो जीतब जनम विगाड।
थोडा सुखां रे कारणे, गया जमारो हार॥ ४ ॥
भागल भिष्ट्या ने निषेधियां, सूतर सिद्धांत रे माय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[भवियण सेवो रे साध सयाणा]

छोटो मोटो सूंस व्रत आदरो तो, पालज्यो रूडी रीत।
जे सूस भाग ने भिष्ट हुवा ते, चिहू गति मे होसी फजीत रे।
भवियण सूस म भांगो लिगारी, सूंस भांग्या सूं घणी खुवारी रे॥ भ० ॥
टांको भले तो अनंत ससारी* ॥ १ ॥

छोटोइ सूस भागे छे तिणमें, हवाल पडे छे अतंत।
तो मोटा मोटा सूंस भागे छे तिणरो, होसी कुण विरतत रे॥भ० २॥
हिंसा भूठ चोरी मैथुन ने परिग्रहो, त्याने त्यागे छे आण वेरागो।
त्यारा त्याग जाण ने भागे, तिणरो छे पूरो अभागो रे॥ ३ ॥
छकाय हणवा रा त्याग करे ने, पहरयो साध रो सांग।
शीलादिक आदरयो रूडी रीते, वले रोटी खाए छे माग रे॥ ४ ॥
करडा करडा सूस कीया छे त्याने, भाग करे चकचूर।
ते बूडा छे बापडा जीव अग्यानी, ते पड गया मुगत सू दूर रे॥ ५ ॥
केइ सूस भांगी ने परणीजे पापी, वले चोथो व्रत देवे भाग।
तिण पापी जीव रा चिहूंगति माहे, घणा निकलसी सांग रे॥ ६ ॥
चोथो व्रत शील आदर ने भागे, तिण दीधी नरक नी नीव।
तिणने परमाधांमी मार देसी जब, करसी नरक मे रीव रे॥ ७ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

शीलव्रत आदर नें सर्व अस्त्री नें, थापी छे मा बेंन सामांन।
तिणनें परणीजे तिणसूं करे गृहवासो, ते चिहुंगति में होसी हेंरान रे॥ ८॥
शील आदरियो जब सर्व अस्त्री नें, मूख सूं कही छे मा बेंन।
तिणसूं हीज पाछो करे ग्रहवासो, ते किण विध पांमसी चेंन रे॥ ६॥
व्रत भांग नें भागल हुवा तिण, दीयो जीवत जनम विगाड।
नरक निगोद तणो पाहुणो होय बेठो, गयो जमारो हार रे॥ १०॥
सूंस तणा भागल छे त्यांनें, जक कठे नहीं होय।
दुख भोगवसी नरक में निरंतर, तिहां सुख नों संचार न कोय रे॥ ११॥
सूंसा रो भागल संसार मांहें रुले तो, उतकष्टो अनंतो काल।
ते तों नरक निगोद में भींकां खासी, तिणरो वेगा न आवे निकाल रे॥ १२॥
अनंतेइ काले मिनष हुवे तो, गूंगो मूंगो दुखियारी होय।
आछो खाणो पीणो मिले नहीं तिणनें, रहे हींजरतो सोय रे॥ १३॥
बाल्हां रो विजोग पडे ऊगतां रे, मिले दुशमण तणो सजोग।
आदर भाव कठे नहीं पामें, नित्य रहे संताप नें सोग रे॥ १४॥
कहि कहि नें कितरा एक कहूं, तिणरा दुखां रो छेह न पार।
छेदन भेदन पामें संसार रे मांहें, तिणरो कहणी नावे विस्तार रे॥ १५॥
इहलोक मांहें पिण फिट फिट हुवे, सूंस व्रत रो भागणहार।
मस्तक नीचो घाले लोकां में, तिणनें सहु कोइ देवे धिक्कार रे॥ १६।
लज्या रहित निरलज्या मानव, सूंस भांगता मूल न लाजे।
तिणनें परलोक नी परवाह नहीं छे, बकास्यांई गीदड जिम भाजे॥ १७॥
शील व्रत भांगो छे तिणरा, पाचूं व्रत हुवा चकचूर।
मानव नों भव खोए अंग्यांनी, गयो वहती रे पूर रे।॥ १८॥
पाप करे त्यानें पापी कहीजें, पाप्यां तणी पात मांय।
पिण सूंस व्रत भागे ते महापापी छे, महा पाप्यां री पांत माहे गिणाय रे॥ १६॥
तिणरे पाप उदे हुवे इण भव माहें, तो बधे घणो रोग सोग।
रिधि संपति रो छेहडो आवे इण भव में, पडे बाल्हां तणो विजोग रे॥ २०॥
जातिवंत लज्यावंत कुलवंत तिणरो, कर्म जोगे गयो व्रत भागी।
ते परभव नें लोकिक सूं डरतो, पाछो ऊठ खडो रहे जागी॥ २१॥
भागल होय होय नें पाछा उठ्या अनंता, टाल्या आतम ना सर्व दोष।
सूंस भांगा ते पाछा सताब सूं साधे, उणहिज भव पोहता मोष॥ २२॥
सूंस भांग नें भागल भिष्ट हुआ ते, धर्म सूं होय गयो रीतो।
काल कीयो आलोयां पडिकमियां विण, तिणमें भव भव में होसी कुपीतो रे॥ २३॥

केइ भागल भिष्टी छैं भारीकर्मा, ते तो भागल बधिया चावे।
घर छोडण रो बंधो कीयो आप साथे, तिणरोई बधो भंगावे रे॥ २४॥
सूंस भागे ने भागल भिष्ट हुआ छे, त्या सूं साधपणो लेणी नावे।
तिणनें आपरा अवगुण तो मूल न सूझे, उलटा साधा मे दोष बतावे रे॥ २५॥
केइ टोलां तणा टालोकड भिष्टी, त्या साधा सूं पडिवजियो मिथ्यात।
ते पिण साधां मे दोष कहे अणहुता, झूठ सू न डरे तिलमात रे॥ २६॥
केइ साधपणो लेवा ने ऊठ्या, सूंस भाग रह्या घर माय।
ते पिण साधां मे दोष कहे अणहुता, निज अवगुण देवे छिपाय रे॥ २७॥
टोलां रा टोलाकड भागल भिष्टी, त्यारा बोल्या री नही परतीत।
त्यारी समदिष्टी ने संगत न करणी, आजिण मारग री रीत रे॥ २८॥
केइ तो सूंस भागे ने बेठा, केइ पेला रा सूंस भगावे।
त्यांरी पिण आहिज रीत जाणो, नरक निगोद मे दुख पावे रे॥ २९॥
कोइ चढता परिणामा सूस पाले छे, चढता परिणामां अधिक वेरागो।
चारित लेवा उद्यमी थया छे, मुगत जावा सूं चित्त लागो रे॥ ३०॥
तिणरा कोइ सूस भंगावण दुष्टी, करे अनेक उपाय।
ते डूब गया वापडा अग्यानी, त्याने भव भव मे दुख थाय रे॥ ३१॥
केइ सूंस भगावे उपसर्ग कर ने, दुख देइ विवध परकार।
चारित लेवा ने ऊठ्या छे तिणने, कर दे थोडा मे खुवार रे॥ ३२॥
केइ चारित लेवा ऊठ्या छे तिणनें, कु कलाकार देवे चलाय।
विषय री वाता सुणाए तिणने, ससार नां सुख वताय रे॥ ३३॥
कोइ चारित लेवा ने उठ्यो छे तिणने, भिष्ट करण ने ताम।
साधां मे दोष अणहुता वताए, पाडे तिणरा परिणांम रे॥ ३४॥
साधा री आसता उतारण ने उणरा, परिणांम करे चकचूर।
चारितिया ने भिष्ट करे चारित सू, ते तो गया बहती रे पूर रे॥ ३५॥
सुध साधां ने असाधु सरधा ए पापी, करे चारित सूं भिष्ट।
एहवा कांम करे ते मिथ्याती, भूंडी छे तिणरी दिष्ट रे॥ ३६॥
सुध सायां ने असाधु कह्या तिण, मोटो कीयो अन्याय।
वले भिष्ट कीयो चारित लेवा सूं, ओ तो पूरो बूडण रो उपाय रे॥ ३७॥
छकाय हणवा रा त्याग करनें, रोटी तिण भाग ने खावे।
वले पाच आश्रव ना त्याग छे तिणरा, जोरी दावो करे भंगावे रे॥ ३८॥
पांच आश्रव ना त्याग भगाए पापी, साधपणो लेवा दे नाय।
तिण मोटो अकार्य कीधो अग्यानी, बूडो संसार समुद्र रे मांय रे॥ ३९॥

साधु रो भेष उतरावे पापी, माथे बंधावे पाप।
छकाय मारण नें सरु कीयो छे, तिणरो पिण जांणो पूरो अमाप रे॥ ४०॥
भेष उतारण री कोइ करे दलाली, तिण दलाली सूं होसी खुराव।
ते पिण चिहुंगति माहें गोता खासी, भव भव माहें जासी आव रे॥ ४१॥
परतणा सूंस भंगावे पापी, मोष जावा री दे अंतराय।
तिणरे चीकणा कर्म बंधे छे भारी, तिणसूं भव भव में दुख थाय रे॥ ४२॥
चारितीया नें भिष्ट करे चारित सूं, इणसूं इधको नहीं कोइ पाप।
एहवा पाप सूं जाए पड़ें नरक मांहें, तिहां होसी घणो सोग संताप रे॥ ४३॥
चारितिया नें भिष्ट चारित सूं, करवा नें, खोटी काढे मूंढा सूं वाणी।
तिणरी परमाधामी नरक रे माहें, जीभ काढे जडां सूं तांणी रे॥ ४४॥
नरक तणा दुख सहे अनंता, सूंसा रो भंगावणहारो।
छेदन भेदन मार अनंती, तिणरो कहितां न आवे पारो रे॥ ४५॥
उतकष्टो रुले तो काल अनंतो, नरक निगोद मझार।
अनंता काल में दुख सहे अनंता, सूंसा रो भंगावण हार रे॥ ४६॥
कदा पाप उदे हुवे इण भव मांहें, तो बधें घणो रोग सोग।
वले छेहडो आवे रिध संपत केरो, पडें वाल्हां तणो विजोग रे॥ ४७॥
केइ तो आंधा होय जाअे इण भव में, जाबक होय जाअे निराधार।
भीख भमता हुवे इण भव मे, सूंसा रा भंगावण हार रे॥ ४८॥
केइ तो मर जाअें अन्न विहुणा, करता थकां विल विलाट।
परतणा सूंस भंगावे तिणरा, भव भव में हुवे एहिज घाट रे॥ ४९॥
सर्व संसार नां कांमा चालू कीया छे, सूंसा रो भंगावण हार।
तिण महामोटो पाप में सीर घाल्यो, ते तों बूड गयो काली धार रे॥ ५०॥
इम सांभल उत्तम नरनारी, पेला रा सूंस मति भंगावो।
इण कुकरम री दलाली मत करज्यो, जो जीव नें सुख चावो रे॥ ५१॥
कोइ धर्म थकी डिगतो हुवे तिणनें, पाछो समझाय नें थिर कीजे।
यूं कीधां तो कर्म तणी निरजरा हुवे, डूबता नें पिण उद्धर लीजे रे॥ ५२॥
धर्म सूं डिगता नें थिर कीयां सू, टल जाए कर्म री छोत।
जो उतकष्टो रस आवे तो जिण रे, बंधे तीर्थंकर गोतर रे॥ ५३॥
सूंस भंगावे तिण रा फल उपर, जोडी पादू गांम मझार।
संवत अठारे नें चोपनें वरसें, चेत सुद तेरस नें गुरवार रे॥ ५४॥

रत्न : २१

सांम धर्मी सांमद्रोही री ढाल

ढाल

[म्हैं तो मार लियो सो लियो]

ऊंदर ऊमर मिनकी आपी जाण, जब जोगी ऊंदर री अणुकंपा आण।
तिण जोगी मंत्र पढ्यो ततकाल, उदर ने कीयो घोघड विकराल ॥ १ ॥
जव मिनकी न्हाट्ठी घोघड ने देख, घोघड देख ने आप्यो स्वान वशेख।
जोगी घोघड नी करुणा लीध, कुत्तो सिकारी ततक्षण कीध ॥ २ ॥
अहो कर्म गति इचकी देख, जोगी मोह्यो राग वशेख।
स्वांन देखी चीत्तो आप्यो आय, जब स्वांन नें जोगी सिंह कीयो ताय ॥ ३ ॥
जब चीत्तो नाठो सिंघरी देख हाक, सीकंप हुवो पडी मन में धाक।
हिवें तिण सिंह ने भूख लागी छे तांम, तिण जोगी नें खावा उठ्यो तिण ठांम ॥ ४ ॥
जब जोगी देख मन इचरज थात, देखो नीच उदर री जात।
इणरी मिनकी करती अकाले घात, ते म्हे बचा लियो साख्यात ॥ ५ ॥
म्हांरो उपगार कीयो न गिण्यो तिलमात, म्हारी उलटी मांडी करवा घात।
म्हैं नीच ऊंदर नें ऊंचा लियो, सिंघ नी पदवी दे ने मोटो कीयो ॥ ६ ॥
नीच नें वधारयां आछो हुवे नांहि, ते भाख्यो छे नीति सास्त्र मांहि।
तो इणनें पाछो ऊंदर करूं मंत्र राल, सिंघ नें ऊंदर कीयो ततकाल ॥ ७ ॥
ते ऊंदर जावक हुवो अनाथ, तिण री मिनकी वले करवा मांडी घात।
जोगी देख अणुकपा कीधी नांहि, किरतघन मुवो ते बिल रे माहि ॥ ८ ॥
ज्यूं नीच नें ऊच पदवी जोखे नांहि, जोय देखो लोकिक लोकोत्तर मांहि।
किण ही राय वधारया अमराव दोय, वले कीया पदवी घर मोटा सोय ॥ ९ ॥
यामे एक तो सांम धर्मी सुवनीत, वले राजनीति जाणें सर्व रीत।
तिण सूं राय रूठो किणवार, पट्टो उतार काढ्यो देश वार ॥ १० ॥
जव राय ऊमर इण न कस्यो रोस, जांण लियो निज कर्म रो दोष।
अलगो रहे तोही मांने कीयो उपगार, राजा तणो सदा रहे हितकार ॥ ११ ॥
कदा राजा ने भीड पडी सुण कान, भीड आयो लेइ साथ सामान।
वले मुख सूं कहे म्हांरा सिर धणी आप, सारो दीसें ते आप तणो परताप ॥ १२ ॥
इम सुण नें तिण सूं रीझ्यो राय, आगे विचेइ घणों वधारयो ताय।
वले घणो वधारयो तिणरो मांन, आगेवांण कीयो सगली ठाम ॥ १३ ॥
बीजो हरामखोर लूणहराम, सामद्रोही रा दुष्ट परिणांम।
तिण सूं पिण राय रूठो किणवार, तिणरो पट्टो उतार काढ्यो देश वार ॥ १४ ॥

जब ऊ धाडा करे वले करे उजाड, राय तणा देश में करे विगाड।
फिर फिर मारे वले नगर नें ग्रांम, वलि राय सूं सनमुख करे संग्रांम ॥ १५ ॥
राजा सूं जुध करे तांण तांण, देखो नीच वधास्यां रा ए फल जांण।
ज्यां वधास्यो त्यांसूं ही मांड्यो गर्व, उपगार कीयो ते भूल गयो सर्व ॥ १६ ॥
जब राजा अनेक करनें उपाय, हरामखोर नें पकड लीयो ताय।
इणरा हाथ पांव कांन नाक नें काट, गांम दोले फेस्यो गधे चाढ ॥ १७ ॥
वले विवध परकारे दीधी मार, फिट फिट हुवो लोक मकार।
एतो लोकिक कह्यो दिष्टंत, हिवे लोकोत्तर सुणो मन खांत ॥ १८ ॥
एक आचार्य मोटो अणगार, दोय जणा सूं कीयो उपगार।
त्यांनें समकित पमाय नें कीया साध, वले ग्यांन भणाय नें करी छे समाध ॥ १९ ॥
यांमें एक तो गुर भगता सुवनीत, तिण में असल साध री रीत।
घणो भणे तोही न करे मांन, अवनीत री बात सुणे नहीं कांन ॥ २० ॥
तिणनें गुर करडे वचनें देवे सीख, तो पिण अविनां साह्मीं न भरे वीख।
वले गुर निखेदे वारूंवार, तो पिण न करे क्रोध लिगार ॥ २१ ॥
गुर नें देखी करडी निजर करूड, तो पिण न विगाडे मुख नो नूर।
गुर राखे तो रहे गुर नी हजूर, गुर दूरी राखे तो सुखे रहे दूर ॥ २२ ॥
सदा गुर सूं राखे सुध परिणांम, रात दिवस करे गुर रा गुण ग्रांम।
याद आवे गुर नों कीयो उपगार, ते तों कदेय न घाले विसार ॥ २३ ॥
एहवा गुणां करे कर कर्मां नो सोख, अनुक्रमें पांमें अविचल मोख।
एहवा उंच जीव ऊंच पदवी लही, त्यांरा सुख रों कोइ पार नहीं ॥ २४ ॥
दूजा अवनीत री ऊंधी रीत, घणो भणे ज्यूं घणो अवनीत।
गुर सूं पिण यो करे अभिमांन, ओर अवनीत नें लगावे कांन ॥ २५ ॥
तिणनें गुर सीख देवे चूको देख, तो तुरत जागे अवनीत नें धेक।
घणो छेडवे तो करे विगाड, क्रोध करे नें होय जाए न्यार ॥ २६ ॥
वले दूजो अवनीत हुवो टोलां मांय, तिणनें पिण देवे भरमाय।
गुर सूं मन भागे कूडी कर कर वात, तिण अवनीत नें ले जावे साथ ॥ २७ ॥
गुर ना अवगुण बोले दिन रात, संका पिण नांणे तिलमात।
अवनीत वधारे अति ही मिथ्यात, भूठी कर कर मुख सूं वात ॥ २८ ॥
टोलां नें गुर सूं जागे वेर, अविनीत हुवे छे एहवा गेर।
केयक एहवा हुवे अवनीत, त्यांनें छेडवियां बोले विपरीत ॥ २९ ॥
ते फिट फिट हुवो इहलोक मभार, आगे नरक निगोद में खाए मार'
घणो भमण करे संसार मुझार, तेहनों कहितां नावें पार ॥ ३० ॥

नीच नें वधास्यां आछो नांहि, ज्यूं अविनीत जांण लेजो मन मांहि।
इम सांभल ने उत्तम नर नार, अवनीत ने नीचनो सग निवार॥ ३१ ॥



रत्न : २२

शील की नव बाड

ढाल : १

दुहा

श्री नेमीसर चरण जुग, प्रणमूं उठ परभात।
बावीसमां जिण जगत गुर, ब्रह्मचारी विख्यात ॥ १ ॥
सुंदर अपछर सारिखी, विद्यु सम राजकुमार।
भर जोबन में जुगति सूं, छोडी राजल नार ॥ २ ॥
ब्रह्मचर्य जिण पालीयो, धरतां दूधर जेह।
तेह तणां गुण वरणव्यां, पांमें भव जल छेह ॥ ३ ॥
कोड केवली गुण करें, रसना सहस वणाय।
तो ही ब्रह्मचर्य नां गुण घणां, पूरा कह्या न जाय ॥ ४ ॥
गलित पलित काया थई, तो ही न मूकें आस।
तरुणपणें जे वरत धरें, हूं वलीहारी तास ॥ ५ ॥
जीव विमासी जोय तूं, विषय म राच गिवार।
थोडा सुखां रे कारणे, मूरख घणा म हार ॥ ६ ॥
दस दिष्टंते दोहिलो, लाधो नर भव सार।
सील पालो नव वाड सूं, ज्यूं सफल हुवे अवतार ॥ ७ ॥
सील माहें गुण अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[मन मधुकर मोही रह्यो]

सीयल सुर तरुवर सेवीये, ते वरतां माहें गिरवो छे एह रे।
सीयल सूं सिव सुख पामीये, त्यां सुखां रो कदे नावें छेह रे।
सीयल सुर तरुवर सेवीये* ॥ १ ॥
सीयल मोटो सर्व वरत में, ते भाख्यो छे श्री भगवंत रे।
ज्या समकित सहीत वरत पालीयो, त्यां कीयो संसार नों अंत रे ॥ सी० २ ॥
जिण सासण वन अति भलो, ते नंदण वन अनुसार रे।
जिणवर वनपालक तेह में, ते करुणा रस भंडार रे ॥ ३ ॥
विरख तिण वन में सील रूपीयो, तिणरें मूल दिढ समकित जांण रे।
साखा छें महावरत तेहनी, प्रति साखा अणुवरत वखांण रे ॥ ४ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

साधा साधवी श्रावक श्रावका, त्यांरा गुण रूप पत्र अनेक रे।
महुकर करम सुभ बंध नों, परमल गुण वशेख रे॥ ५॥
उत्तम सुर सुख रूप फूलडा, सिव सुख ते फल जांण रे।
तिण सीयल विरख रा जतन करों, ज्यूं वेगी पांमों निरवांण रे॥ ६॥
संसार सीयल थकी उधरे, जो पाले नव कोटी अभंग रे।
तो स्वयंभू रमण जितलों तिख्यों, सेष रही नदी गंग रे॥ ७॥
उत्तराधेन रें सोल में, बंभ समाही ठांण रे।
कीधी तिण विरख नें राखवा, नव बाड दसमों कोट जांण रे॥ ८॥

ढाल : ३

दुहा

कथा न कहणी नार नी, ते जिण कही दूजी बाड।
जो नारी कथा कहे तेह सू, हुवे वरत विगाड॥ १॥
जे भूल रह्या ब्रह्म वरत मे, त्यारे विषे नही मन माय।
ते ब्रह्मचारी नें नारी कथा, करवी सोभे नाय॥ २॥

ढाल

[कपूर हुवे अति उजलो रा]

जात रूप कुल देसनी रे, नारी कथा कहे जेह।
वार वार कथा करे रे, तो किम रहे वरत सूं नेह रे।
भवीयण नारी कथा निवार, तू तो दूजी बाड विचार रे* ॥ १॥
चद मुखी मिरग लोयणी रे, वेणी जाणे भूयग।
दीप सिखा सम नासिका रे, होठ प्रवाली रे रंग रे॥ भ० २॥
वाणी कोयल जेहवी रे, हाथ पाव रा करे वखांण।
हस गमणी कटी सीह समी रे, नाभि ते कमल समाण रे॥ ३॥
कूख छें जेहनी अति भली रे, वले अग उपग अनेक।
त्याने वारवार न सरावणा रे, आणी मन मे विवेक रे॥ ४॥
जथातथ कहितां थका रे, दोष नही छे लिगार।
पिण विना काम कहिवा नही रे, नारी रूप वर्ण सिणगार रे॥ ५॥
नारी रूप सरावतां रे, बधे छे विषे विकार।
परिणाम चल विचल हुवे रे, हुवे वरत नो विगाड रे॥ ६॥
मली कुमारी नो रूप सांभल्यो रे, छव्ह राजा रा चलीया परिणांम।
त्यां सगाई करण ने दूत मेलीयो रे, विगड्यो मांहोमांही तान रे॥ ७॥
मिरगावती रो रूप साभल्यो रे, चडप्रद्योत राजान।
तिण कोसबी नगर घेरो दीयो रे, करायो मिनषा रो घमसाण रे॥ ८॥
तिणरे हाथे न आई मिरगावती रे, ते यूंही हुओ खुराब।
फिट फिट हुओ लोक मे रे, घणी पडाइ आब रे॥ ९॥
पदमोतर राजा नारद कनें रे, द्रोपदी रा रूप री सुण वात।
देव कनें मगाई तिण द्रोपदी रे, तो इजत गमाई साख्यात रे॥ १०॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सभ सिणगार देवांगणा, आई चलावण तास हो।
तिण आगे तो चलीयों नहीं, तो ही रहिणों एकंत वास हो॥५॥
अस्त्री हुवें तिहां वासो रहें, कदा चल जाअें परिणांम हो।
जब दिढ रहिणों दोहिलों, मिष्ट हुवें तिण ठांम हों॥६॥
सींह गुफावासी जती, रह्यों वेस्या चित्रसाल हो।
तुरत पस्यों वस तेहनें, गयो देस नेपाल हो॥७॥
कुल बालूरो साध थो, तिण भाग्यो वरत रसाल हो।
कोणक री गणका वस पस्यों, ते रूलसी अनंतो काल हो॥८॥
मंजारी जिहां उंदर रहें, ते घात पांमे ततकाल हो।
ज्यूं नारी तिहां ब्रह्मचारी रहें, भांगे सीयल रसाल हो॥९॥
बाड सहीत सूध पालीयें, पूरीजे मन खांत हो।
आ सीख दीधी छें तो भणी, तूं रहिजे जायगां एकंत हो॥१०॥

ढाल : ३

दुहा

कथा न कहणी नार नी, ते जिण कही दूजी बाड।
जो नारी कथा कहे तेह सूं, हुवे वरत विगाड॥ १ ॥
जे भूल रह्या ब्रह्म वरत मे, त्यारे विषे नही मन मांय।
ते ब्रह्मचारी ने नारी कथा, करवी सोमे नाय॥ २ ॥

ढाल

[कपूर हुवे अति उजलो रे]

जात रूप कुल देसनी रे, नारी कथा कहे जेह।
वार वार कथा करे रे, तो किम रहे वरत सू नेह रे।
भवीयण नारी कथा निवार, तू तो दूजी बाड विचार रे* ॥ १ ॥
चद मुखी मिरग लोयणी रे, वेणी जाणे भूयग।
दीप सिखा सम नासिका रे, होठ प्रवाली रे रंग रे॥ भ० २ ॥
वाणी कोयल जेहवी रे, हाथ पाव रा करे वखाण।
हस गमणी कटी सीह समी रे, नाभि ते कमल समाण रे॥ ३ ॥
कूख छे जेहनी अति भली रे, वले अंग उपग अनेक।
त्याने वारुवार न सरावणा रे, आणी मन मे विवेक रे॥ ४ ॥
जथातथ कहिता थका रे, दोष नही छे लिगार।
पिण विना काम कहिवा नही रे, नारी रूप वर्ण सिणगार रे॥ ५ ॥
नारी रूप सरावता रे, वधे छे विषे विकार।
परिणांम चल विचल हुवे रे, हुवे वरत नो विगाड रे॥ ६ ॥
मली कुमारी नों रूप साभल्यो रे, छहू राजा रा चलीया परिणाम।
त्या सगाई करण ने दूत मेलीयो रे, विगड्यो माहोमांही तांन रे॥ ७ ॥
मिरगावती रो रूप साभल्यो रे, चंडप्रद्योत राजांन।
तिण कोसबी नगर घेरो दीयो रे, करायो मिनषा रो घमसाण रे॥ ८ ॥
तिणरे हाथे न आई मिरगावती रे, ते यूही हुओ खुराव।
फिट फिट हुओ लोक मे रे, घणी पडाइ आब रे॥ ९ ॥
पदमोतर राजा नारद कने रे, द्रोपदी रा रूप री सुण बात।
देव कनें मगाई तिण द्रोपदी रे, तो इजत गमाई साख्यात रे॥ १० ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

नारी कथा सुणनें विगड्या घणां रे, त्यांरा कहितां न आवें पार।
ते भिष्ट हुवां वरत भांग नें रे, ते हार गया जमवार रे॥११॥
नीबू फल नीं वारता सुण्यां रे, मुख पांणी मेलें छें ताय।
ज्यूं अस्त्री कथा सुणीयां थकां रे, परिणांम थोडा में चल जाय रे॥१२॥
संका कंखा वितिगछा मन उपजें रे, सीयल वरत पालूं के नांहीं।
तिण सूं नारी कथा करवी नही रे, दूजी बाड रें मांहीं रे॥१३॥
वार वार अस्त्री तणी रे, कथा न कहणी तांम।
ए बीजी बाड सुध पालसी रे, ते पांमसी अविचल ठांम रे॥१४॥

ढाल : ४

दुहा

हिवें तीजी वाड मे इम कह्यो, ब्रह्मचारी नार सहीत।
एकण सय्या नही बेसवो, ए जिण सासण री रीत॥ १ ॥
अगन कुंड पासें रहे, तो प्रगले घृत नो कुंभ।
ज्यूं नारी संगति पुरष नो, रहे किसी पर बंभ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी जोगी जती, न करें नार प्रसंग।
एकण आसण वेसता, थावें वरत नों भंग॥ ३ ॥
पावक गाले लोह ने, जो रहें पावक संग।
ज्यूं एकण आसण वेंसता, न रहे वरत सूरंग॥ ४ ॥

ढाल

[अभिया राणी कहे धाय ने]

तीजी वाड हिवें चित्त विचारो, नारी सहित आसण निवारो लाल।
एकण आसण वेठा काम दीपे छे, ते ब्रह्मचारी ने आछो नही छे लाल।
तीजी वाड हिवे चित्त विचारो॥* १ ॥
एकण आसण वेठा आसगो थावें, आसगे काया फरसावे लाल।
काया फरस्यां विषें रस जागे, इम करतां जावक वरत भागें लाल ॥ती०२॥
पाट बाजोट सेज्जा सथारो जाणो, एहवा आसण अनेक पिछांणों लाल।
तिहां नारी सहीत वेसो मत कोइ, जिण वचनां साह्यो जोई लाल॥ ३ ॥
अस्त्री सहीत वेसे एकण आसण, तो वले लोक पडें छे विमासण लाल।
अछतोई आल दे करें फितूरो, वले वोले अनेक विध कूडो लाल॥ ४ ॥
जिन ठामे वेठी हुवें नारी, तिण ठामे न वेंसे ब्रह्मचारी लाल।
वेंसें तो अंतर मूहरत टाली, वेद सभाव संभाली लाल॥ ५ ॥
नारी वेद रा पुदगल तिण थी, नर वेद विकार वेदे जिण थी लाल।
यूंहीज नारी ने पुरष सूं जाणों, मांहोमा वेद विकार पिछाणो लाल॥ ६ ॥
नारी फरस वेद्या हुवे भोग रो रागी, जब जावे वरत सूं भागी लाल।
इण कारण एकण आसण वेंसणो नाही, नारी फरस सूं डरणों मन माही लाल॥ ७ ॥
श्री रांणी सम्भूत वाद्यो आणी मन रागों, कर फरस मुनी तन लागों लाल।
तिण चारित्र खोय नीहाणो कीधो, दुरगत नों पथ लीधो लाल॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ते देव थई चक्रव्रत हुवों, भोग मांहें ग्रिधी थको मूओ लाल।
सातमीं नरक मांहें जाय पडीयों, पाप सूं पूर्ण भरीयो लाल॥ ९॥
नारी फरस वेद्यां सूं ओगुण अनेक, तिण सूं आसण न बेंसणों एक लाल।
संका कंखा वितिगछा उपजें मन मांही, सील वरत पालूं के नाहीं लाल॥ १०॥
ए वाड लोपी तिण बात विगोई, तिण दीयो ब्रह्म वरत खोइ लाल।
ते नरक निगोद मांहें जाय पडीया, ते संसार में रडबडिया लाल॥ ११॥
कावर कोहलो फाड्यां कर फाटों, तिण सूं वाक लूट हुवें आटो लाल।
ज्यूं अस्त्री सूं एकण आसण बेंठां तांम, ब्रह्मचारी रा चलें परिणाम लाल॥ १२॥
मा बेंन बेटी पिण इम हीज जाणों, एकण आसण मतीय बेंसाणों लाल।
त्यां सूं पिण भाग गया छें अनंत, ते भाख्यो छें श्री भगवंत लाल॥ १३॥
इम सांभल तीजी वाड म लोपो, ब्रह्मचर्य में थिर पग रोपो लाल।
तो सिव रमणी नें वेगी वरसों, आवागमण न करसों लाल॥ १४॥

ढाल : ५

दुहा

नारी रूप नही विरखणो, ए जिण कही चोथी वाड।
ए सुध मांन जे पालसी, तिण सफल कीयो अवतार॥ १ ॥
चित्र लिखित जे पूतली, ते पिण जोयवी नाहि।
केवलग्यांनी इम कह्यो, दशवेकालिक माहि॥ २ ॥

ढाल

[मोहन मूंदडी ले गयो]

मनहर इंद्री नार नी रे, तिण दीठाई वधें विकार।
मिरग जाल ज्यूं नर भणी रे, पास रच्यों संसार।
नारी रूप न जोईये, जोईये नही धर राग* ॥ १ ॥
नारी रूप दीवलो रे, भोगी पुरष पतंग।
झपे सुख रे कारणे रे, दाझे कोमल अंग॥ ना० २ ॥
कांमणगारी कांमणी रे, वस कीयो सर्व ससार।
आखी अणी कोयक रह्यां रे, सूर नर गया सर्व हार॥ ३ ॥
रूपे रंभा सारिषी रे, वले मीठा वोली हुवें नार।
ते निजर भरे नें निरखतां रे, वरत ने होवे विगाड॥ ४ ॥
रूप में रूडी देखने रे, माहे पडे काम अंध।
सुख मांणे जाणें नही रे, ते पाडें दुरगत नों वंध॥ ५ ॥
रूप घणों रलीयांमणो रे, वले अपछरें रे उणीयार।
ते देखे रीझो किसू रे, आ मल मूतर रो भडार॥ ६ ॥
अशुच अपवित्र नों कोथलो रे, कलह काजल नो ठांम।
बारें श्रोत वहें सदा रे, चरम दीवडी नाम॥ ७ ॥
देह उदारीक कारमी रे, खिण मे भंगुर थाय।
सपत धात रोगाकुली रे, जतन करतां जाय॥ ८ ॥
अवला इंद्री निरखतां रे, वाधें विषे रस पेम।
राजमती देखी करी रे, तुरत डिग्यों रहनेम॥ ९ ॥
नारी वेद नरपति थयो रे, वले चखू कूसीलीयो ते थाय।
वाड भांग लाखां भवा रे, रुलीयो रूपी राय॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सेठ घरे जांमो लीयो रे, नांम इलापुतर जांण।
ते नटवी रूपें मोहीयो रे, ते वसीयो नटवां घरे आंण॥ ११॥
ते बांस उपर चढ़ नाचतो रे, ते मन मांहें हरख न मात।
ओ बांछें धन राय नों रे, राय बांछें इणरी घात॥ १२॥
मणरथ बंधव मारीयो रे, मेणरेहा रो देखी रूप।
मरण पांम्यों तिण जोग सूं रे, वले जाय पड्यों अंध कूप॥ १३॥
अरणक संजम आदस्यो रे, दीधी संसार नें पूठ।
ते नारी रूपें मोहीयो रे, ते नारी लीयो तिण लूट॥ १४॥
एक षत्री आंणों लेजावतां रे, मारग मांहें मिलीयो चोर।
तिणनें षत्री बांण वाया घणां रे, चोर फरसी सूं न्हांख्या तोड॥ १५॥
हिवें एक बांण बाकी रह्यो रे, जब अस्त्री निज रूप दिखाय।
ते चोर तिणरें रूप बिलंबीयो रे, जब षत्री बांण सूं दीयो ढाय॥ १६॥
चोर पड्यों ते देखनें रे, षत्री करवा लागों मांण।
चोर कहें गरबे किसूं रे, म्हांरे नारी नेणां रा लागा बांण॥ १७॥
इत्यादिक बहू मांनवी रे, त्यांरो कहितां न आवें पार।
जे नारी रूप में रीझीया रे, ते गया जमारो हार॥ १८॥
नारी रूप कांनें सुणी रे, भिष्ट हुआ छें अनेक।
तो दीठां गुण होसी किहां रे, समझों आंण विवेक॥ १९॥
काची कारी आँख नीं रे, सूर्य सांह्यों जोयां अंध होय।
ज्यूं नारी नेंणा निरखीयां रे, ब्रह्म वरत देवें खोय॥ २०॥
ब्रह्मचारी निरखे मती रे, नारी रूप सिणगार।
आ सीख दीधी छें तो भणी रे, रखे चूकेंला चोथी बाड॥ २१॥

ढाल : ६

दुहा

भीत परेच ताटी आतरे, जिहां रहिता हुवे नर नार।
तिहा ब्रह्मचारी ने रहिवों नही, ए जिण कही पांचमी बाड ॥ १ ॥
संजोगी पासे रहें, ब्रह्मचारी दिन रात।
तेह तणा सब्द सुण्या थका, हुवें वरत नी घात ॥ २ ॥
जेवर नेउर खलकती, ते सब्द पडे तिहा कांन।
जव चल जाअे ब्रह्म वरत थी, लागे विषे सू ध्यांन ॥ ३ ॥

ढाल

[आणद समकित उचरे रे लाल]

वाड सुणो हिवें पांचमी रे लाल, सील तणी रुखवाल ब्रह्मचारी रे।
ज्य वरत कुसल रहे तांहरो रे, वले नावे अछतो आल।
वाड सुणो हिवे पांचमी रे लाल* ॥ १ ॥
भीत परेच ताटी आंतरे रे लाल, अस्त्री पुरष रहिता हुवें रात।
तिहा कुण कुण दोषण उपजे रे लाल, ते सांभलजे चितलाय ॥ वा० २ ॥
केल करे निज कत सू रे लाल, ते बोलती जगावें छे काम।
कुई सब्द करे तिहा रे लाल, रुदन सब्द करे तिण ठाम ॥ ३ ॥
कोयल जिम बोले कत सूं रे लाल, गावे मधूरे साद।
काम वसें हडि हडि हसे रे लाल, बोलती करे उनमाद ॥ ४ ॥
वले थणित क्रदित सब्द तिहा रे लाल, वले विलपति सब्द हुवें ताम।
तिहां रहितां एहवा सब्द सांभले रे लाल, जव चल जाअे तुरत परिणांम ॥ ५ ॥
गाज तणो सब्द सुणी रे लाल, रित पामे पपहीया मोर।
ज्यूं भोग समे रा सब्द सांभल्यां रे लाल, लागें वरत ने खोड ॥ ६ ॥
इम सांभल नें रहिवो नही रे लाल, सब्द पडें तिहां कांन।
ए पाचमी वाड पालीया रे लाल, पामे मुगति निधान ॥ ७ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ढाल : ७

दुहा

हिवें छठी बाड में इम कह्यों, चंचल मन म डिगाय।
खाधो पीधों विलसीयों, ते मत याद अणाय ॥ १ ॥
मन गमता भोग भोगव्या, ते याद कीयां गुण नांहि।
ए बाड भांग्यां वरत खंड हुवें, वले अजस हुवें लोक मांहि ॥ २ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अनुकम्पा नाणीए]

हाव भाव सब्द नारी तणा, त्यां सुणीयां बधे विषें विकार रे।
एहवा सब्द आगें सुणीया हुवें, त्यांनें याद न करणा लिगार रे।
छठी बाड सुणो ब्रह्मचर्य नीं* ॥ १ ॥

वर्ण गोरादिक सरीर नों, रूप सोभायमांन अतंत रे।
एहवी अस्त्री सूं भोग भोगव्या, चीतारें नही वरतवंत रे ॥ २ ॥
गंध चोवा नें चंदणादिक, रस मधूरादिक अनेक रे।
ते पिण अस्त्री संघातें भोगव्या, ते पिण याद न करणों एक रे ॥ ३ ॥
हाथ पग सुखमाल नारी तणा, सुखमाल सरीर सुखदाय रे।
एहवी अस्त्री सूं कीला करी, ते चीतारें नहीं मन मांय रे ॥ ४ ॥
सब्द रूप गन्ध रस नें फरस, पांच परकार नां कांम भोग रे।
ते तों अस्त्री संघातें भोगव्या, त्यांनें याद करणा नही जोग रे ॥ ५ ॥
रम्या सारी पासा सोगटादिक, जूवटादिक रांमत अनेक रे।
ते अस्त्री संघातें रांमत करी, त्यांनें याद न करणी एक रे ॥ ६ ॥
सब्द सुणीयां भांगे बाड पांचमीं, रूप सूं चोथी बाड विगाड रे।
फरस सूं भांगे बाड तीसरी, अस्त्री कथा सूं दूजी बाड रे ॥ ७ ॥
एक याद करें यां मांहिलों, तिण सूं भोगें छठीं बाड रे।
तो सगलाई याद कीयां थकां, ब्रह्म वरत नें हुवें विगाड रे ॥ ८ ॥
मन गमता कांम भोग भोगव्या, तिण सूं हरखत हुवें संभाल रे।
तिण बाड सहीत वरत खंडीया, पांणी किम रहें फूटां पाल रे ॥ ९ ॥
पूर्वला कांम भोग चीतार नें, कीधीं रेंणा देवी सूं पीत रे।
जब जिन रिष नें जष न्हांखीयों, रेंणा देवी मार्‍यों वेंरीत रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जहर सहीत चास पीये चालीयां, त्यांरो वांकोई न हुवों वाल रे।
त्यांने घणां वरसां पछें कह्यो, तिण सूं मरण पांम्यो ततकाल रे॥ ११ ॥
भाई नें पवन मूळ्यो देख नें, भाई ने न जणायों ताय रे।
जणायो जिण दिन घसकों पडें, ततकाल छोडी तिण काय रे॥ १२ ॥
ए मूंआ जहर याद अणावीयां, पांमी अणचिंतवी असमाध रे।
ज्यूं भागे ब्रह्मचारी सील सूं, कांम भोग नें कीधां याद रे॥ १३ ॥
काम भोग नें याद कीयां थकां, संका कंखा उपजें मन माय रे।
सील पाळूं के पाळूं नही, वले जाबक पिण भिष्ट थाय रे॥ १४ ॥
इम सांभल ने नर नारीयां, मत लोपो छठी वाड रे।
तो सील वरत सुध नीपजे, तिण सूं हुवें खेवो पार रे॥ १५ ॥



ढाल : ८

दुहा

नित नित अति सरस आहार नें, वरज्यों सातमी वाड।
ते ब्रह्मचारी नित भोगवें, तो वरत नें हुवे विगाड॥ १॥
घ्रतादिक सूं पूर्ण भर्त्यो, एहवों भारी आहार।
ते धातू दीपावें अति घणी, तिण सूं वधे छे विकार॥ २॥
खाटा खारा चरपरा, वले मीठा भोजन जेह।
वले विविध पणे रस नीपजें, ते रसना सब रस लेह॥ ३॥
जेहनीं रसना बस नहीं, ते चाहें सरस आहार।
ते वरत भागे भागल हुवें, खोवे ब्रह्म वरत सार॥ ४॥

ढाल

[हूं तो करु साधने वंदना]

कवलां करें आहार उपारतां, घृत विन्दू झरतो आहार भारी रे।
एहवो आहार सरस चांप चांप नें, नित नित न करें ब्रह्मचारी रे।
ए बाड म लोपी सातमी* ॥ १॥
वय तुरणी काया रोग रहीत छे, ते करें सरस आहारो रे।
ते आहार रूडी रीत परगमें, तिण सूं वधे अतंत विकारो रे॥ए० २॥
विकार वध्यां ब्रह्म वरत नें, दोष अनेक विध लागें रे।
वले अंग कुचेष्टा उपजे, जावक वरत पिण भागे रे॥ ३॥
सरस आहार नित चापे कीयां, वरत भांगे विगडे बेहूं लोगो रे।
संसार में दुखीयों हुवें, वधतो जाए रोग नें सोगो रे॥ ४॥
वय तुरणी काया जीर्ण पडी, ते करें सरस आहारो रे।
तो पेट फाटें पर्त्यो टल वलें, वले आवें अजीरण डकारो रे॥ ५॥
वले विविध पणे रोग उपजे, नित सरस आहार कीधा भारी रे।
अकाले मरे धर्म खोय नें, पछें होय जाए अंनत संसारी रे॥ ६॥
वय तुरणी रो घणीं इण विध मरें, नित कीधां सरस आहारो रे।
तो बूढा रो कहिवो किसूं, इणरे पेट तुरत झाले भारो रे॥ ७॥
दूध दही विविध पकवांन नें, सरस आहार भोगवे रहें सूतो रे।
पाप समण कह्यों उत्तराधेन मे, ते साधपणा थी विगूतो रे॥ ८॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चक्रव्रत नी रसवती भोगवे, भूदेव ब्राह्मण छोडी लाजो रे।
काम विटंबणा तिण लही, बेंन बेटी सू कीयों अकाजो रे॥ ९ ॥
सरस आहार तणो लपटी घणो, मगू आचार्य तेहो रे।
मरने गयो व्यंतरीक में, संजम लारे उडाई खेहो रे॥ १० ॥
वले सेलग राय रिषीसरु, सरस आहार तणो हुवो ग्रिधी रे।
ते जिभ्या वस पडीये थके, किरीया अल्गी घर दी रे॥ ११ ॥
कुडरीक रस लोलपी थको, पाछो घर में आयो रे।
भारी आहार सू रोग उपज मूंओ, पडीयो सातमी नरक मे जायो रे॥ १२ ॥
इत्यादिक बहू साध ने साधवी, लोपी ने सातमी बाडो रे।
ब्रह्मचर्य वरत खोय ने, गया जमारो हारो रे॥ १३ ॥
सनीपातीयो दूध मिश्री पीये, तो सनीपात वधतो देखो रे।
ज्यू ब्रह्मचारी ने सरस आहार सूं, विकार वधे छे वशेखो रे॥ १४ ॥
इम साभल ब्रह्मचारीयां, नित भारी म करजो आहारो रे।
सील वरत सुध पाल ने, आवा गमण निवारो रे॥ १५ ॥
सरस आहार तो जीहाई रह्यो, लूखोई पिण आहारो रे।
चाप चांप दिन प्रते करणो नही, ते कहिसू आठमी बाडो रे॥ १६ ॥

ढाल : ९

दुहा

आठमीं बाड में इम कह्यों, चांप चांप न करणो आहार।
प्रमांण लोप इधको करें, तो वरत नें हुवें बिगाड॥ १ ॥
अति आहार थी दुख हुवें, गलें रूप बल गात।
परमाद निद्रा आलस हुवें, वले अनेक रोग होय जात॥ २ ॥
अति आहार थी विषें वधें, घणोंइज फाटें पेट।
धांन अमाउ उरतां, हांडी फाटें नेट॥ ३ ॥
केइ बाड लोपे विकल थकां, करसी इधक आहार।
त्यारें कुण कुण ओगुण नीपजें, ते सुणजो विसतार॥ ४ ॥

ढाल

[विमल केवली एक रे चम्पा नगरी]

भर जोबन रे मांहि रे, देह निरोगी हुवे।
मांहे तेजस रो जोरो घणों ए॥ १ ॥
ते चांपे करे आहार रे, ते पचे सताब सूं।
तो विषें वधें तिण रें घणी ए॥ २ ॥
जब गमता लागें भोग रे, ध्यांन माठो रहें।
वले गमती लागें अस्त्री ए॥ ३ ॥
हूं सील पालूं कें नांहि रे, ए संका उपजें।
पछें भोग तणी वंछा हुवें ए॥ ४ ॥
मोनें लाभ होसी कें नांहि रे, सील वरत पालीयां।
ए पिण सांसों उपजें ए॥ ५ ॥
जब भिष्ट हुवें वरत भांग रे, भेष मांहें थकां।
केइ भेष छोडी हुवें गृहस्थी ए॥ ६ ॥
जे चांपे कीधां आहार रे, पचें आछी तरें।
तो इसडो अनरथ नीपजें ए॥ ७ ॥
के कां रें हुवें रोग रे, आहार इधको कीयां।
वधें असाता वेदनी ए॥ ८ ॥
फाटें पेट अतंत रे, बंध हुवें नाडीयां।
वले सास लेवें अबखो थकों ए॥ ९ ॥

वले हुवे अजीरण रोग रे, मुख वासें बुरों।
पेटे भाले आफरो ए ॥ १० ॥
वले उठें उकाला पेट रे, चालें कलमली।
वले छूटे मुख थूकणी ए ॥ ११ ॥
डील फिरें चकडोल रे, पित घूंमे घणां।
चाले मुजल वले मुलकणी ए ॥ १२ ॥
आवें माठी घणी डकार रे, वले आवें गूचरका।
जब आहार भाग उल्टों पडें ए ॥ १३ ॥
वले चाले मरोडा पीड रे, पेट दुखे घणो।
लोही ठांण फेरो हुवें ए ॥ १४ ॥
वले नाड्यां में हुवें रोग रे, ते आहार भेलें नही।
ज्यूं खावें ज्यूं नीकले ए ॥ १५ ॥
वले ताव चढें ततकाल रे, बंध हुवें मातरो।
आहार इघको कीयां थका ए ॥ १६ ॥
घणी देही पडे कषाय रे, आहार भावें नही।
जब मांस लोही दिन दिन घटें ए ॥ १७ ॥
खीण पडं जब देह रे, निबलाई पडें।
हाथ पगां सोजों चढे ए ॥ १८ ॥
जब ठंभे अतीसार रे, ओषघ करे घणां।
दिन दिन फेरो इघको हुवें ए ॥ १९ ॥
पछें जाबक छूटें अन रे, चूकें घर्म घ्यान थी।
वले बोलें घणो दयामणो ए ॥ २० ॥
वले हुवें सांस नें खास रे, जलोदर वघें।
सूंन बूंन देही पडे ए ॥ २१ ॥
वर्घे अपचों रोग रे, आहार पचें नहीं।
ओषघ को लागें नही ए ॥ २२ ॥
वले उपजें दाह सरीर रे, बलण लागी रहे।
पेट सूल चाले घणी ए ॥ २३ ॥
वेदन हुवें आंख नें कांन रे, खाज हुवें घणीं।
वले रोग पीतंजर उपजे ए ॥ २४ ॥
इत्यादिक बहु रोग रे, उपजें आहार थी।
कहि कहि नें कितरो कहूं ए ॥ २५ ॥

ए हुवें आहार थी रोग रे, जब नांम लें अवर नों।
कूड कपट वधें घणो ए॥ २६॥

जे चापे करें आहार रे, ग्रिधी पेट रो।
त्यांनें साच बोलणो दोहिलो ए॥ २७॥

कोइ साध कहें एम रे, ओ आहार इधको करें।
तो घणों कूडें तिण उपरे ए॥ २८॥

जो मिलनें कहें अनेक रे, तूं आहार घणों करें।
तो ही कह्यों न मानें केहनो ए॥ २९॥

केइ पूरण भरें नित पेट रे, इधको चांप नें।
जब पांणी पूरो मावें नहीं ए॥ ३०॥

जब तिरखा लागें अतंत रे, पेट फाटें घणों।
जब टलवलाट करें घणां ए॥ ३१॥

वले खाजें आंवला डील रे, जक नहीं तेहनें।
अजक घणीं वले तेहनें ए॥ ३२॥

इसडी पडें विपत रे, तो ही ग्रिधी पेट रो।
निज अवगुण छोडें नहीं ए॥ ३३॥

जब रोग पीडलें आंण रे, मरें माठी तरें।
श्री जिण धर्म गमाय नें ए॥ ३४॥

पछें च्यारूं गति रे मांहि रे, भमण करें घणों।
अनंत काल दुख भोगवें ए॥ ३५॥

कूंडरीक रे उपनों रोग रे, आहार इधको कीयां।
ते मरनें गयों नरक सातमीं ए॥ ३६॥

हांडी फाटे नेट रे, इधको उरीयां।
तो पेट न फाटें किण विधें ए॥ ३७॥

ब्रह्मचारी इम जांण रे, इधको नहीं जीमीयें।
अणोदरीए गुण घणां ए॥ ३८॥

ए उतम अणोदरी तप रे, करतां दोहिली।
वेंराग विनां हुवें नहीं ए॥ ३९॥

ए कही आठमीं बाड रे, ब्रह्मचारी भणी।
चोखें चित्त आराधजो ए॥ ४०॥

ढाल : १०

दुहा

नवमी बाड ब्रह्मचर्य नी, विभूषा न करणी अंग।
विभूषा कीयां थकां, थायें वरत नों भंग॥ १ ॥
सरीर विभूषा जे करें, ते करे तन सिणगार।
वले रहे घटास्या मठारीया, त्यां लोपी ब्रह्म व्रत बाड॥ २ ॥
सरीर विभूषा जे करें, ते संजोगी होय।
ब्रह्मचारी तन सोभवें, ते कारण नही कोय॥ ३ ॥
बाड भांग्यां किण विध रहें, अमोलक सील रतन।
तिण सूं ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य नां, किण विध करें जतन॥ ४ ॥

ढाल

[धीज करें सीता सती रे लाल]

सोभा न करणी देह नीं रे लाल, नहीं करणो तन सिणगार ब्रह्मचारी रे।
पीठी उगटणों करणो नही रे लाल, मरदन नहीं करणो लिगार ब्रह्मचारी रे।
ए नवमी बाड ब्रह्म वरत नी रे लाल* ॥ १ ॥
ठंडा उन्हा पांणी थकी रे लाल, मूल न करणो अंगोल।
केसर चंदण नही चरचणा रे लाल, दांत रगे न करणा चोल॥ए०२॥
बहू मोलां नें उजला रे लाल, ते वसत्र नें पेंहरणा नांहि।
टीका तिल्क करणा नही रे लाल, ते पिण नवमी बाड रे माहि॥ ३ ॥
कांकण कुंडल नें मूंदडी रे लाल, वले माला मोती ने हार।
ते ब्रह्मचारी पेंहरें नही रे लाल, वले गेंहणा विवध परकार॥ ४ ॥
नही रहणों घटास्यों मठारीयो रे लाल, केसादिक नें समार।
वले वसत्रादिक पिण पेंहरनें रे लाल, मूल न करणो सिणगार॥ ५ ॥
विभूषा अंग छें कुसील नों रे लाल, तिण सूं चीकणा करम बंधाय।
तिण सूं पडें संसार सागर मझे रे लाल, तिणरो पार वेगो नहीं आय॥ ६ ॥
सिणगार कीयां रहें तेहनें रे लाल, अस्त्री देवें चलाय।
भिष्ट करें सील वरत थी रे लाल, ठालो कर देवें ताय॥ ७ ॥
रतन हाथे आयो रांक रें रे लाल, ते दीठां खोस ले राय।
ज्यूं ब्रह्मचारी विभूषां कीयां रे लाल, अस्त्री सील रतन खोसें ताय॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ब्रह्मचारी इम सांभली रे लाल, सील विभूषा मत करजे लिगार।
ज्यूं सीयल रतन कुसलें रहें रे लाल, तिण सूं उतरें भव जल पार॥६॥

ढाल : ११

दुहा

ए नव वाड कही ब्रह्मचर्य री, हिवे दसमो कहे छे कोट।
ए वाड लोपी वीटे रह्यो, तिणमे मूल न चाले खोट ॥ १ ॥
कोट भांगा जोखो छे वाड ने, वाड भांगा वरत ने जाण।
तिण सू कोट भिलण देवे नही, ते डाहा चतुर सुजांण ॥ २ ॥
कोट भांग वधारा पडीया थका, वाड भागता किती एक वार।
तिण सूं वशेष कोट रो, करवो जतन विचार ॥ ३ ॥
सेर कोट सेठो हुवे, तो चिंता न पामें लोक।
ज्यू अडिग कोट ब्रह्मचर्य रो, तिण सू सील न पामे दोख ॥ ४ ॥
ते कोट करणो किण विघ कह्यो, किण विघ करणो जतन।
ते ब्रह्मचारी विवरा सुघ, साभलजो एक मन ॥ ५ ॥

ढाल

[डाभ मु जादिक नी डोरी]

मन गमता सब्द रसाल, अण गमता सब्द विकराल।
गमता सब्द सुण्या नही रीभे, अण गमता सुण्या नही खीजे ॥ १ ॥
काला नीला राता पीला धोला, पाच परकार ना रूप वोहला।
राग नाणें भला रूप देख, माठा देख न आणणो घेख ॥ २ ॥
गघ सुगघ दुगंध छे दोय, गमता अण गमता सोय।
गमता सूं नही रति सोय, अण गमता सू अरति न कोय ॥ ३ ॥
रस पांच परकार ना जाणो, त्यांरा स्वाद अनेक पिछांणो।
गमता सूं राग न करणो, अण गमता सूं घेष न घरणो ॥ ४ ॥
फरस आठ परकार नां तांम, त्यारा जूआ जूआ छे नांम।
रागी गमता रो अण गमता रो घेखी, यां दोयां सूं रहणो निरापेखी ॥ ५ ॥
सब्द रूप गन्ध रस फरस, भला भूंडा हलका भारी सरस।
या सूं राग घेष करणो नांही, सील रहसी एहवा कोट मांही ॥ ६ ॥
सील वरत छे भारी रतन, तिणरा किण विध करणा जतन।
सगला व्रता माहे वरत मोटो, तिणरी रिच्या भणी कह्यो कोटो ॥ ७ ॥
जो सब्दादिक सू हुवे राजी, तो कोट जाओ छे भाजी।
कोट भागां वाड चकचूरो, ब्रह्म वरत पिण पर जाओ पूरो ॥ ८ ॥

तिण सूं कोट रा करणा जतन, तो कुसले रहे सील रतन।
टल जावें सगल दोख, जब पांमें अविचल मोख ॥ ९ ॥
इम सांभल नें ब्रह्मचारी, तूं कोट म खंडें लिगारी।
ज्यूं दिन दिन इधको आणन्द, इम भाष्यों छें वीर जिणंद ॥ १० ॥
ए कोट सहित कही नव वाड, ते सांभल नें नर नार।
इण रीत सूं ब्रह्म वरत पालों, ज्यूं मिटें सर्व आल जंजालों ॥ ११ ॥
उतराधेन सोलमां मझारों, तिणरो लेई नें अनुसारो।
तिहां कोट सहीत कही नव वाड, ते संखेप कह्यों विसतार ॥ १२ ॥
इगतालीसें नें समत अठार, फागुण विद दसमीं गुरवार।
जोड कीधीं पादू मझार, समझावण नें नर नार ॥ १३ ॥

रत्न : २३

समकित री ढालां

ढाल : १

[म्हारो मनडो उमाह्यो प्रभुजी ने वांदवा]

राय सिद्धार्थ नें घर जनमिया, राणी तिसलादे अंग जात।
छेहला तीर्थंकर श्री महावीर जी, चावा तीनूं लोक विख्यात।
श्री वीर जिणेश्वर सुणज्यो मोरी वीनती* ॥ १ ॥

त्यां अथिर संसार छोडी संजम लियो, तोड्या घनघातिया कर्म।
तीरथ चलायो हो केवली थया पछे, परूपियो निरवद्य धर्म ॥ श्री० २ ॥

चवदें सहस्त्र मुनिश्वर तारिया, वले आर्या छतीस हजार।
पाप अठारे हो सर्व पचखाय नें, उतास्या भव पार ॥ ३ ॥

एक लाख गुणसठ सहस्त्र श्रावक हूवा, त्याने कीया बारे व्रत धार।
श्रावका तीन लाख अठारे हजार नें, त्यांरो पिण कीयो उद्धार ॥ ४ ॥

ग्यान दरसण चारित तप निरमला, ए शिवपुर मारग च्यार।
ए साध श्रावक नो धर्म बताय ने, पहुंता मुक्त मझार ॥ ५ ॥

अधेन अठावीसमां उत्तराधेन मे, मोष मार्ग कह्या च्यार।
ग्यान दरसण चारित ने तप विनां, नही श्रद्धुं धर्म लिगार ॥ ६ ॥

देव अरिहंत निर्ग्रंथ गुर मांहरे, केवलीए भाखित धर्म।
ए तीनूंई तत्व सेठा कर झालिया, ओर छोड दीया सहु भर्म ॥ ७ ॥

ए तीनूं ही तत्व मांहि जिणजी री आगन्या, मैं कर लीधी परमांण।
धर्म शुक्ल ध्यांन ध्यावे आ आत्मा, हूं इम पालू तुम आंण ॥ ८ ॥

केवल ग्यांनी भरत मे को नही, वले पूर्व ग्यांन विच्छेद।
कुबधी कदाग्रही उठ्या अति घणा, त्यां घाल्यो धर्म मे भेद ॥ ९ ॥

वले उंचा तो कुल नां हो मोटा राजव्यां, त्यां छोड दीयो जिण धर्म।
वले लिंगडा नें लिंगडी साधु रा भेष मे, त्यांरो पिण निकल गयो भर्म ॥ १० ॥

द्रव्य जेनी केइ साधु कहावतां, त्यां सू चरचा कीजे जाय।
त्यां शरणो लियो हो सगला दरशण्या तणो, त्यानें किम आणिजे ठाय ॥ ११ ॥

जिण धर्म माहें साहेवा विखो पड्यो, मांहें राजा न दीसे एक।
गुण विनां भेष वध्यो भगवांन रो, त्यारी सरधा चाल अनेक ॥ १२ ॥

एक एक री उतारे माहोमांहि आसता, वदना रा सूस दिराय।
न्याय री चरचा रो कांम पड्यां थका, झूठ बोले एक होय जाय ॥ १३ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यांरी सरधा रो मुंह माथो को दीसें नहीं, वले बोलें घणा विपरीत।
पिण मांहरे तो आधार छे प्रभु ए बडो. एक सूतर री परतीत॥ १४॥

ढाल : २

[कद ठाकुर फुरमायो]

देव तणो आचार न जांणें, गुर री खबर न कांई रे।
धर्म तणो तू नाम न जांणे, तूं राखे घणी ठसकाई रे।
प्राणी समकित किण विध आई रे॥ १॥
नव तत्व नां भेद न आवे, कूडी करे लपराई रे।
धर्म तणो धोरी होय बेठो, तोमें दीसे घणी भोलाई रे॥ प्रा० २॥
जीव न जाणें अजीव न जांणें, पुन्य नी पारखा नांई रे।
पाप तणी प्रकृति नही धारी, थे कीधी घणी नहराई रे॥ ३॥
आश्रव नाला छूटा नही देखे, संवर सुमता नांई रे।
निरजरा तणो निरणो नही कीधो, कठे गइ चतुराई रे॥ ४॥
बंध मोष बेहूं नो जोडो, तिणरी समझ न पाई रे।
समदिष्टी तू नांम धरावे, तोनें कुगुरां दीयो भरमाई रे॥ ५॥
हाथ जोडी नें समकित लेवे, कुगुरां पासे जाई रे।
अजांण पणो मिटियो नही अंतर, मिथ्यात दीयो बोसराई रे॥ ६॥
न्याय री बात हृदय में नहीं वेसें, थोथी करे बडाई रे।
आग्या बारे धर्म परुपें, बूड गई चतुराई रे॥ ७॥
करण जोग भांगा नहीं धार्‍या, व्रतां री खबर न कांई रे।
अव्रत मांहि धर्म परूपें, या ही नरक री साई रे॥ ८॥
पाप धर्म नों नही निवेडो, अकल गई दपटाई रे।
जब तोनें कोइ जांण पणो पूछे, तो उलटी करे लडाई रे॥ ९॥
पोथा पानां काढ नें बेठो, भोला नें दे भरमाई रे।
कूड कपट कर फंद में पाडे, ते मांडी पेट भराई रे॥ १०॥
सांगधारी नें साधज सरधें, पडें पगा में जाई रे।
तिखुत्ता सूं करे वंदणा, मन में हरषित थाई रे॥ ११॥
सावद्य करणी सूं पापज लागें, तिण री विगत न पाई रे।
निरवद्य में धर्म पुन्य दोनूंई, ते पिण अटकल नांई रे॥ १२॥
द्रव्य खेतर काल भाव न धार्‍या, गुण विण वस्तु न कांई रे।
च्यार निषेपा नों निरणो नही कीधो, ते मिनष जमारो पाई रे॥ १३॥
सगला मे तूं बडेरो बाजें, मन में मगज न माई रे।
न्याय मार्ग तोनें किण विध आवे, कुगुरां दीया डंक लगाई रे॥ १४॥

सरधा दुर्लभ जिणेश्वर भाखी, सूतर में दीयो जताई रे।
चतुर हुंता त्यां निरणो कीधो, ते मिनष जमारो पाई रे॥ १५॥
जीव अजीव ए छ द्रव्य कीधा, नव कीया न्याय बताई रे।
समदिष्टी ओलखिया अंतर, त्यांनें नहीं सके देव डिगाई रे॥ १६॥

ढाल : ३

दुहा

नव पदार्थ ओलख्यां विनां, समकित नही तिण माहि।
समकित विण साधपणो नही, साधपणा विण शिवपुर नाहि ॥ १ ॥
तिण सूं वशेप समकित तणी, खप करज्यो भव जीव।
समकित सहीत करणी करे, त्यारे निश्चय मुक्ति री नीव ॥ २ ॥

ढाल

[पायो मिनष जमारो मति हारो]

देव गुर धर्म री पारखा करो, पखपात मांहि कोइ मति परो।
छोडो कुगुरा तणी लारो, सगला माहे समकित सारो* ॥ १ ॥
भावे जितरा ताप तपो, वले भावे जितरा जाप जपो।
पिण समकित विण न हुवे उद्धारो ॥ स० २ ॥
मीढी अनेक माडी देखो, आंक विनां नही लागे लेखो।
ज्यूं आका जिसी समकित धारो ॥ ३ ॥
साधु रो आचार पूरो पाले, दोषण सगला विध सू टाले।
ते समकित विण नही पामे पारो ॥ ४ ॥
केइक उजाड माहे रहे, सी तापादिक ना दुख सहे।
पिण समकित विण पूरो अंधारो ॥ ५ ॥
सूंस आखडी साकडा कीधा, वले साधु श्रावक ना व्रत लीधा।
समकित विण वरत नही लिगारो ॥ ६ ॥
उणा पूर्व दश भण बाजे ग्यानी, पिण समकित विण छे अग्यानी।
तिणरे तत्व तणो नही विचारो ॥ ७ ॥
श्रेणिक राय घर मे वेठो, ते समकित माहि रह्यो सेंठो।
तिण सू होसी तीर्थंकर अवतारो ॥ ८ ॥
अरणक ने वले काम देवो, त्या धर्म तणी नही छोडी टेवो।
ज्या कने देव गया हारो ॥ ९ ॥
संस्कृत प्राकृत भणियो टीका, पिण समकित विण सगला फीका।
तिण सू तत्व तणो निरणो धारो ॥ १० ॥
व्याकरण भणियो मोटें मंडाण, वले षट विध भाषा रो जाण।
पिण तत्व विना सगला छारो ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

विद विद पाठ भणे भारी, त्यांरा अर्थ करे शुद्ध विचारी।
पिण नव तत्व मांहि पूरो अंधारो॥ १२॥
केइ भण भण नें उलटा बूडे, ऊंधा अर्थ करे वेसे तुडे।
ते धर्म कहे जिण आग्या बारो॥ १३॥
सरधा दुर्लभ जिण भाखी, उत्तराधेन आदि वोलें साखी।
डाहा होसी ते करसी विचारो॥ १४॥
समकती जीव मिथ्यात दीयो मूंको, ते मोषगांमी जीव होय चूको।
इसडो समकित नो आचारो॥ १५॥
मिथ्यात्व दश परकारों, त्यांमें एक रह्यो बाकी लारो।
तो ही समकित यांरी पांत बारो॥ १६॥

रत्न : २४

गणधर सिखावणी

ढाल : १

[सत्य कोइ मत राखज्यो]

श्री वीर कहे सुण गोयमा, इण जीव तणी नही आदो रे।
हिवे नीठ नीठ नर भव लह्यो, समो एक म कर परमादो रे ॥ श्री०* १ ॥
वृक्ष तणो जिम पानडो, पंडुर थइ झड जायो रे।
इम अथिर आउखो मिनष रो, खिण मे वेरंग थायो रे ॥ २ ॥
डाभ अणि जल जेहवो, वले अथिर सुपना री माया रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, खिण में धूल धांणी हुवे काया रे ॥ ३ ॥
अथिर धजा देवल तणी, अथिर पांणी मे पतासो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवो चेर बाजी रो तमासो रे ॥ ४ ॥
अथिर वेग नदी तणो, वले अथिर बादल नी छायां रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवी जुवारी री माया रे ॥ ५ ॥
अथिर वचन का पुरष रो, वले अथिर सीख अवनीतो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, अथिर नारी री प्रीतो रे ॥ ६ ॥
अथिर फूस नो तापवो, अथिर उन्हाला रो मेहो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, अथिर कन्या धन जेहो रे ॥ ७ ॥
अथिर रंग पतग रो, ते जातां न लागे वारो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जाणे आंख तणो टिमकारो रे ॥ ८ ॥
अथिर धनुष आकाश रो, अथिर कुंजर नों कांनो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवो संध्या रो वानो रे ॥ ९ ॥
अथिर परपोटो पांणी तणो, अथिर झालर रो झिणकारो रे।
ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जाणें विजली तणो चमतकारो रे ॥ १० ॥
एहवो अथिर आऊखो मिनष रो, तिणमे घणो उदवेगो रे।
इम जाण परमाद ने परहरो, मरण आवे छे वेगो रे ॥ ११ ॥
मिनष तणो भव पाय ने, आंणे वेंराग संवेगो रे।
काल अनंतो दोहिलो, वार वार न पांमसी वेगो रे ॥ १२ ॥

●

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ढाल २.

[आऊखो टूटा नें साधो को नहीं रे]

श्री जिणवर गणधर मुनिवर नें कहे रे, एक समो पिण मत कर परमाद रे।
सुमति गुप्ति आठूं सुध पालजे रे, ज्यूं तोने उपजे परम समाध रे॥ १ ॥
भूसर परमांणें इरिया सोधजे रे, ऊंची तिरछी दिष्टी म जोय रे।
दश बोल वरजे तूं मारग चालतो रे, ज्यूं जीव तणी हिंसा नहीं होय रे॥ २ ॥
भाषा विचारी निरवद बोलजे रे, करकस कठोर मूल मत बोल रे।
सावद्य भाषा मत बोले सरवथा रे, मीठो बोले तूं पेंहली तोल रे॥ ३ ॥
दोष बयांलीस सगला टाल नें रे, असणादिक वेंहरे च्यारूं आहार रे।
पांच दोषण टाले मंडला तणा रे, ज्यूं तोनें पाप न लागे लिगार रे॥ ४ ॥
वस्त्र पातर लेतां मेलतां रे, जोय पूंजे तूं रूडी रीत रे।
हिंसा हुवे तिम कीजे मती रे, दया सूं राखे अंतरंग पीत रे॥ ५ ॥
उचार पासवणादिक नें परठतां रे, जायगां जोय नें परठे ताम रे।
त्यां पिण जयणा कीजें जीव नीं रे, सिझे निकेवल आतम कांम रे॥ ६ ॥
मन वचन काया शुद्ध तूं गोपवे रे, ज्यूं तोनें मूल न लागे पाप रे।
ए आठूंई प्रवचन पाले निरमला रे, तो मिट जाय जनम मरण संताप रे॥ ७ ॥
जयणा सूं चाल्यां जयणा सूं बोलियां रे, जयणा सूं कीधां शुद्ध आहार रे।
जिण आग्या सहित करणी कीयां रे, तोने पाप न लागे मूल लिगार रे॥ ८ ॥
पांच महाव्रत पाले निरमला रे, वले पाले तूं पांच आचार रे।
पांचूं इंद्री नें वस कर राखजे रे, तेवीसूंई विषय परिनिवार रे॥ ९ ॥
छ काय जीवां री जयणा राखजे रे, निरभय रहिजे भय सात निवार रे।
मद रा थांनक आठूंई परहरे रे, वले शील तणी पाले नव बाड रे॥ १० ॥
वीस थांनक वरजे असमाधिया रे, इकवीस सबला दोषण टाल रे।
बावीस परिषह जीते जुगत सूं रे, सतावीस साधु रा गुण पाल रे॥ ११ ॥
तीसां बोलां बंधे महा मोहणी रे, तीसूंई टाले विसवावीस रे।
जोग संग्रह नां बोल बतीस छे रे, टाले तूं आसातना तेतीस रे॥ १२ ॥
आहार सेज्या नें वस्त्र पातरा रे, लीजे बयांलीस दोषण टाल रे।
अनाचार विध टाले सरवथा रे, श्री जिण आग्या चोखी पाल रे॥ १३ ॥
सेवा भक्ति कीजे शुद्ध साध री रे, अणाचारी सूं रहिजे दूर रे।
ए दोनूं सीखामण सेंठी धारजे रे, ज्यूं कर्म आठूंई हुवें चकचूर रे॥ १४ ॥

प्रीति पुराणी विणसे क्रोध सूं रे, मांन सूं विनय तणो हुवे नास रे।
मित्रीपणो विणसे माया कपट सू रे, लोभ सू सर्व तणो हुवे नास रे॥ १५॥
क्रोध मांन माया नें लोभ सूं रे, लागे छे निश्चे पाप कर्म रे।
तिण कर्मां सूं भमण करे ससार में रे, पांम न सके श्री जिण धर्म रे॥ १६॥
ए च्यारूई चडाल तणी छे चोकडी रे, तिण सूं तप सजम नो हुवे नास रे।
इहलोक परलोक विगडे एह थी रे, त्यानें मत राखे लगता पास रे॥ १७॥
शब्द रूप गध रस फर्श छे रे, राग धेख मत धरज्यो कोय रे।
पाचूं इन्द्री ने वस कीयां थकां रे, सवर निरजरा दोनू होय रे॥ १८॥
शब्द रूप रस गंध फर्श छे रे, गमता सू राग म धरो लिगार रे।
धेख मत धरज्यो भंडा ऊपरे रे, ज्यूं पामें भव सागर रो पार रे॥ १६॥
शरीर जीरण पडे छे ताहरो रे, केश पण्डूर पडे छे वशेख रे।
इन्द्री पिण हीणी पडे छे ताहरी रे, परमाद मत कर तू समो एक रे॥ २०॥
कपडा रो तार तूटे इता विचे रे, असख्याता समा वहे अगाध रे।
एहवो सूक्ष्म समो छे काल रो रे, एक समो पिण मत करजे परमाद रे॥ २१॥
एक समा तणा परमाद मे रे, सात आठ लागे पाप कर्म रे।
प्रदेश अनता एकीका कर्म ना रे, त्या कर्मां सूं खोवे श्री जिण धर्म रे॥ २२॥
ज्यां लग पाच इंद्रीं परवरी रे, जरा न व्यापी तोने आय रे।
वले देही में रोग न फेल्यो ज्यां लगे रे, कर्म काटे ए अवसर माय रे॥ २३॥
जोड कीधी गणधर सीखामणी रे, केलवा सहर मांहि हित ल्याय रे।
समत अठारे तयांलीस मे रे, पोष महिना सुध पख माय रे॥ २४॥



रत्न : २५

दांन री ढालां

ढाल : १

[पूज पाषाड न देता छड]

दान थी दलदर दूर, दान थी दोलत पूर आज हो।
दान थी जोत काति हुवे डील नी जी ॥ १ ॥

दान सू पामे रिध, दांन सू पामे विरध आज हो।
दान सू दीपे तीरथ च्यार मे जी ॥ २ ॥

भरिया रिघ भडार, ते जावा ने हुवा तैयार आज हो।
दान थी थिर लिखमी रहे तेहनी जी ॥ ३ ॥

दान सू रहे मुख सनूर, रोग सोग रहे सहु दूर आज हो।
दान सू कदेय न आवे आपदा जी ॥ ४ ॥

दान सू करे परत संसार, दान सू पामे भव पार आज हो।
दान सूं पामें शिव सुख सासता जी ॥ ५ ॥

दान सू पामे सर्व थोक, दान सू जावे देवलोक आज हो।
दान सू जावे सिद्ध गीत पाचमी जी ॥ ६ ॥

दान सू टले कर्मा री छोत, वले बाधे तीर्थंकर गोत आज हो।
दान थी पामें पदवी मोटकी जी ॥ ७ ॥

दान थी पावे नव ही निधान, दान सुखा री खांन आज हो।
मन रा मनोरथ सीझे दांन थी जी ॥ ८ ॥

इसो छे सुपातर दान, नहीं जिण तिणनें आसान आज हो।
कृपण नें दांन सुपातर दोहिलो जी ॥ ९ ॥

मिले सुपातर आण, जब मन में उजम आण आज हो।
अडल्क दान दीया उद्धरे जी ॥ १० ॥

भरत नरेशर जांण, पाछल भव दीयो दांन आज हो।
चक्रव्रत पदवी पामी दांन थी जी ॥ ११ ॥

सुबाहु कुमर आदि जाण, सुखे सुखे जासी निरवाण आज हो।
परत संसार कीधो दान थी जी ॥ १२ ॥

दीयो रेवती पाक, तिण सूं वीरजी हो गया चाक आज हो।
परत ससार करी ने उद्धरी जी ॥ १३ ॥

संख नामे राजांन, दीयो धोवण रो दान आज हो।
तीर्थंकर हुवा जिण बावीसमा जी ॥ १४ ॥

ढाल : २

दुहा

दांन शील तप भावना, ए च्यारूं जिण आग्या सहीत।
जे समदिष्टि जिण धर्म में, यानें ओलखो रूडी रीत॥ १ ॥
कड़वा फल छे कुपातर दांन रा, तिणसूं भ्रमण करे संसार।
आछा फल छे सुपातर दांन रा, तिणसूं पामें भव पार॥ २ ॥
दांन सुपातर ओलख्यो, तो ही देतां धूजे हाथ।
कुपातर दांन दे हर्ष सूं, आ इचरज वाली बात॥ ३ ॥
पाप जांणे कुपातर दांन में, सुपातर दांन में जांणे छे धर्म।
तो ही सुपातर दांन में कृपण हुवे, तिणरे बहुत भारी छे कर्म॥ ४ ॥
कर्म बान्ध्या छे भव पाछिले, ते उदय हुवा छे आय।
ते छते जोग मिलियां थकां, पातर दांन दीयो नही जाय॥ ५ ॥
दातार नें कृपण तणी, ठीक पाडे बुधवांन।
हिवे ओलखाउं कृपण भणी, सुणो सुरत दे कान॥ ६ ॥

ढाल

[नणदल हे नणदल]

दांनान्तराय निकाचित बध्यो, वले मोह कर्म उदय जोर। भवियण।
तिण कर्मां कर कृपण हुवो, त्यांनें देवण रो नहीं कोड॥ भवियण।
कृपण नें दांन देणो दोहिलो*॥ १ ॥

घर रो माल देणो तो दोहिलो, ओरां आडा अंतराय ने तयार। भ०।
इणरा कृपणपणा रा प्रताप थी, संवलो न सुझें लिगार॥ भ० कृ० २॥
सुपातर दांन में कृपणपणो, कुपातर दांन माहि शूर।
ते दोनूं प्रकारे हुवे दलद्री, त्यां सू दुरगति नही छे दूर॥ ३ ॥
कृपण ने दांन देता थकां, कोइ देख लेवे दातार।
तो सरधा घटे तिणरे दांन री, करतो रहे परत संसार॥ ४ ॥
कोइ कृपण साधां रे पातरे, जो देखे सरस आहार।
तो दोष अणहुंतो जांणें साध में, ऊंधो सूझें तिण वार॥ ५ ॥
कोइ दांन दे उलट परिणांम सूं, असणादिक सरस आहार।
ते निजर पडे कृपण तणें, तो मूंढो दे तुरंत विगाड॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पोते वेरावणो तो जिहाड रह्यो, देखणो पिण जिहां रह्यो तांम।
सरस आहार वेहरयो काने सुणे, तो विगडे तुरंत परिणांम ॥ ७ ॥
कृपण रो कृपणपणो, कृपण नही जाणे लिगार।
आपो न सूझे आपरो, हू सूम छूं के दातार ॥ ८ ॥
साधु समचे निषेधे कृपणपणो, समचे करे दांन रा गुण ग्रांम।
ए दोनू वात कृपण सुणे, गमती न लागे ताम ॥ ९ ॥
कृपण भाणे वेठ न भावे भावना, ते कृपणपणा नों प्रताप।
साधु विण वेंहरया घर सू पाछा फिरें, तो पिण मूल न करे पिछाताप ॥ १० ॥
कदा कृपण भावे भावना, ते तों तिण वेला हरख।
जो ऊ साधु आया देखे बारणें, तो पड जाय मन में धडक ॥ ११ ॥
कृपण आदरे व्रत बारमो, तोही भावना नहीं भाय।
हाथ सू दान देवण तणी, हूंस नहीं मन मांय ॥ १२ ॥
कदा कृपण हाथां सूं वेहरावता, मन मे नहीं हरख वशेष।
जो न कहे नाकारो साधु तो, साधां ऊपर करे धेष ॥ १३ ॥
कृपण जो लोलपी हुवे, वले हुवे लोभ असमान।
ए तीनूई दोष तिण मे हुवे, ते किण विध देवे दान ॥ १४ ॥
जो कृपण अति मानी हुवे, तो धन खरचे जश कीर्ति कांम।
पिण दान सुपातर देवण तणा, आधा चाले नही परिणांम ॥ १५ ॥
तिणने राजा खोसे के घरे गिले, तसकर लगे के लाय।
कृपण नें कापुरुष री खाटवां, माल मस्करा खाय ॥ १६ ॥
कण कण सचो कीडी करे, ते कण तीतर चुग जाय।
ज्यूं कृपण रो धन सचियो, यू ही जावे विललाय ॥ १७ ॥
केइ धनवंत पिण कृपण हुवें, केइ निरधन हुवें दातार।
छते जोग मिल्या कृपण थकी, लाहो लेणी न आवे लार ॥ १८ ॥
कृपण दान दे तिण समें, कोइ देखे अनेरो तांम।
ते कृपणपणो पिण आदरे, उतर जावे दांन सूं परिणांम ॥ १९ ॥
दातार दांन दे तिण समे, कोइ देखे अनेरो तांम।
तो दांन देवा सू तेहनां, चढे घणा परिणांम ॥ २० ॥
दातार री संगत कीयां थका, ते पिण हुवे दातार।
कृपण री संगत कीया, कृपणपणों छे तयार ॥ २१ ॥
दान शील तप भावना, यासू सीझें आतम अर्थ।
तीनां मे कवडी लागे नही, दांन दीयां घट जाय गर्थ ॥ २२ ॥

केइ धनवंत पिण कृपण हुवे, केइ निरधन ही हुवे दातार।
ते धनवंत रह गयो दरिद्री, निरधन करे परत संसार ॥ २३ ॥
घर में धन माल छतां थकां, वले छती जोगवाइ पांम।
लाहो लेणी न आवे दांन रो, ओ कृपण रो काम ॥ २४ ॥
आगे दांन थकी तिरिया घणा, कृपण नें कहे बात मांड।
तो पिण टूब न लागे तेहनें, ज्यूं रेत री न हुवे खाड ॥ २५ ॥
कृपण नें दांन देवण तणो, साधु उपदेश दे दगचाल।
ज्यूं लाखां प्रकारां हुवे नहीं, कदे गेहूं री दाल ॥ २६ ॥
बुद्धि पाम्यां फल तत्व विचारणा, देह पाम्यां रो फल व्रत धार।
धन पाम्यां फल दांन सुपातरां, वाचा फल बोले हितकार ॥ २७ ॥
मोटका नें खिम्या करणी दोहिली, कृपण नें दोहिलो दान।
भर जोवन में शील दोहिलो, कायर नें दोरो चारित निधांन ॥ २८ ॥
एक सूम नी त्रिया कहे, आज कांई पीऊ मुख दीन।
के कछु ही खोयो गयो, के किण ही नें दीन ॥ २९ ॥
ना कछु ही खोयो गयो, ना किण ही नें दीन।
एक पाडोसी नें देतां देखनें, मांहरो मुख थयो दीन ॥ ३० ॥
जब सूमन की त्रिया कहे, थांरा धन पाम्यां नें धूर।
थां सूं दांन देणी तो आवे नहीं, थें देख विगाड्यो कांय नूर ॥ ३१ ॥
जब सूम कहे त्रिया भणी, मोनें न गमे दांन री बात।
दांन देणो तो जिहांइ रह्यो, कानें सुणियो पिण न सुहात ॥ ३२ ॥
आवे अगगाट करतो अहंकार जब, कृपणपणो गयो वहती रे पूर।
षय उपशम री तयारी हुवां, जब कृपणपणो छे हजूर ॥ ३३ ॥
कांम पडें सावद्य दांन रो, जब कृपणपणा रो हुवे नास।
षयउपसम देखे आवतो, जब कृपणपणो छे पास ॥ ३४ ॥
दातार नें कृपण बेहूं, रहे एकण घर मांय।
जो दातार डरे कृपण थकी, तिण सूं दांन दीयो नहीं जाय ॥ ३५ ॥
दातार नें कृपण बेहूं, रहे एकण घर मांहि।
जो कृपण डरे दातार थी, देतां वरजणी आवे नांहि ॥ ३६ ॥
घर में दातार नें कृपण बेहूं, त्यांरे आय ऊभा साधु बार।
जब दातार उठ्यो वेंहरायवा, तिण पेंहली कृपण हुवो तयार ॥ ३७ ॥
जो सगलाइ घर में कृपण हुवे, त्यांरे साधु ऊभा बार।
जब सगलां रे हुलास वेंहरावण तणी, मांडे मांहोमां मनवार ॥ ३८ ॥

कृपण रे धसको दातार नो, रखे ओ देला बहुत वेंहराय।
दातार रे धसको कृपण तणो, रखे ओ देला मोनें अन्तराय ॥ ३९ ॥
घर में सगला कृपण हुवें, के सगलाइ हुवें दातार।
तो कजियो न लागे दांन रो, पछें किरतब साक्त फल लार ॥ ४० ॥
किणरे दांन देवण री मन में घणी, पिण मिलियो कृपण रो जोग।
ते मन री मन मांहि लें गयो, इसडो छे कृपण रो सजोग ॥ ४१ ॥
दाता धनवत रो निरधन हुवे, तो ही दांन देवण रो हुलास।
घर मे वस्तु न हुवे तेहने, तो ही करे दलाली ओरां पास ॥ ४२ ॥
असली राजा रो राज गया थकां, तो ही ओ राखे राज री रीत।
ज्यूं दातार रो धन खूटें सरवथा, तो पिण दान देवण सूं पीत ॥ ४३ ॥
कदे कृपण निरधन रो धनवत हुवे, तो ही देणी न आवे दान।
वले वरजे घर रां ने कहे द्यो मती, वात न गमे दांन री कान ॥ ४४ ॥
कमसल रे राज घरे थकां, तो ही शुद्ध नही राज रीत।
ज्यूं कृपण नें धन मिलियां थका, दान देवण री नही पीत ॥ ४५ ॥
एक मेह गाजे ने वरसे घणो, एक गाजे पिण वरसे नहीं काय।
एक गाजे नही पिण वरसे घणो, एक गाजे वरसे नाय ॥ ४६ ॥
ज्यूं एक दातार गाजे ने वरसे घणो, एक गाजे पिण नही छे दातार।
एक गाजे नही पिण दातार छे, एक न गाजे न वरसे लिगार ॥ ४७ ॥
केइ कृपण थोथा गाजें घणा, पिण मूल नही दातार।
केइ कृपण मूल गाजें नही, दान पिण नही देवे लिगार ॥ ४८ ॥
केइ कृपण पिण एहवा, थोथा करे गुमान।
ठाला बादल ज्यूं गाजें घणा, पिण देणी नांवे दान ॥ ४९ ॥
केइ ओरां ने देतां देखने, मुरझ रहे मन मांय।
हाथ न चाले आपरो, तिण सूं बोल्यो पिण नही जाय ॥ ५० ॥
कृपण दान देवे नही, तिण ऊपर साधु करे धेख।
दोनूं बूडें छें बापडा, त्यानें ग्यानी रह्या छें देख ॥ ५१ ॥
वार वार कृपण भणी, निषेधण रो नही कांम।
राग धेख वधे घणो, न रहे शुद्ध परिणाम ॥ ५२ ॥
कोइ दातार रो कृपण हुवे, कोइ कृपण रो हुवे दातार।
पछे कर्मां गति छे वांकडी, तिण सूं जीव न रहे एक धार ॥ ५३ ॥
सुपातर दांन दे तेहने, बरज्या बंधे भारी अन्तराय।
तिण सूं दुख असाता हुवे अति घणी, चिहुंगति गोता खाय ॥ ५४ ॥

नींठ नीठ नर भव लह्यो, इण जग मे नर नार।
पिण कर्म जोगे कृपण हुवा, महा लोभी परले पार ॥ ५५ ॥
कृपण नें दांन दोहिलो, हुवा सत हीणा नर सूम।
दिसे फररा फूटरा, हलका थोथा बूम ॥ ५६ ॥
सूमा केरी संपदा, चोढें कुपातर खाय।
के रोकीले रावले, पिण हाथां सूं दीयो नही जाय ॥ ५७ ॥
सूम साधां नें आया देख नें, मूंहडो फेर दे पूठ।
कला करी वस्तु छिपाय दे, के कोइ बोले भूठ ॥ ५८ ॥
घर में धन पिण दलद्री, जिके न देवे दांन।
भार भूत धन तेहनों, कोरो करे गुमांन ॥ ५९ ॥
जीव कटे कृपण तणो, देतां लडथड धूजें हाथ।
कृपण काठो भाठा सारीषो, कपिला दासी वाली जात ॥ ६० ॥
सात थोक देवे सूमडा, कृपण आडा देवे किंवाड।
के आडा पग दे आंण नें, बेठो उत्तर देवण ने तयार ॥ ६१ ॥
कृपण सीख दे दातार नें, कदे नही दीजें दांन।
जो घर रा मिनषां नें देता देखनें, तो तोडे जांसूं तांन ॥ ६२ ॥
देखें साधु आया नें अन्न सूभतो, देखे वेहरावूं एकण वार।
भाले कुडछी बलतो थको, वले पाछा नहीं आवे दुजी बार ॥ ६३ ॥
कृपण करे कदागरो, करे सावां नें भाड।
मांहरो असूभतो आहार ले गया, कहे काचा पांणी कनें मांड ॥ ६४ ॥
दातार नें दांन देता देख ने, मूंहडो दे कुमलाय।
पारका दुखां हुवे दुबलो, भांणे बेठो रोटी नहीं खाय ॥ ६५ ॥
कृपण रो धन कारमों, धर्‍यो रहें घर मांय।
लेखे क्यूं ही लागे नहीं, धन पापी रो परले जाय ॥ ६६ ॥
कीडी सिंचे कहे लोक में, तेहनों तीतर खाय।
कृपण कीडी सारिषो, कहे लोक दुनियां रे मांय ॥ ६७ ॥
छाती फाटें सूम री, जो देता देखे दांन।
दांन तणा गुण वरणवे, तो कृपण कदे न मांडे कान ॥ ६८ ॥
घणो उपदेश दे दांन रो, कृपण नें किरपाल।
लाखां प्रकारां न हुवे, कदे गेहुं तणी दाल ॥ ६९ ॥
मूल कदेही मानें नहीं, कृपण केरी बात।
कृपण आयां कोइ हरषे नहीं, जिम अमावस री रात ॥ ७० ॥

कदे सूम री सोभा हुवे नही, देखो सहु ससार।
जात न्यात ने लोक मे, सहु देखलो नर नार ॥ ७१ ॥
लाहो मिनष जन्म तणो, कृपण न लीनो कोय।
धन माल सहु मेल ने, चाल्यो कलदर होय ॥ ७२ ॥
परलोके पाप परगटें, भरे नेणा भरे नीर।
हाय मे दान दीयो नही, अब कुण वटावे पीड ॥ ७३ ॥
कृपण राक ते बापडा, बाधी पूर्व भव अतराय।
तिण कारण तिण जीव सू, दान दीयो नही जाय ॥ ७४ ॥
कृपण ओलखणी प्रगट करी, कहिज्यो अवसर देख।
जो कृपण नें सुणावोला माड ने, तो तुरत जागेला धेख ॥ ७५ ॥
सवत अठारे बयालीस मे, कार्तिक मास मझार।
कृपण ने ओलखावीयो, सरीयारी सहर मझार ॥ ७६ ॥



रत्न : २६

वैराग री ढालां

ढाल : १

[श्री जिणवर गणधर मुनिवर ने कहैं रे]

वृक्ष तणो ज्यू पाको पानडो रे, ते पडता काय न लागे वार रे।
ज्यू तूटे आउखो मरतां मिनष नो रे, जब कोइ न सके राखण हार रे॥
ढील मत करज्यो चतुरा धर्म नी रे* ॥ १ ॥

मात पितादिक ऊभा मेलने रे, पर भव में जासी एकलडो आप रे।
विछडियां नें पाछो मिलणो दोहिलो रे, कुण गति मे जासी मा बेटो बाप रे॥ ढी० २ ॥
जीवडो तो अलुझ रह्यो माया मझे रे, वले स्त्री मात पितादिक माय रे।
ताणा वेजा तिणरे लागे रह्या रे, पिण आसा अलधा छोडी जाय रे॥ ३ ॥
जीव काया छोडे तिण अवसरे रे, चिंतवे मन माहे अनेक जजाल रे।
म्हे धन जोवन रो लाहो लीयो नही रे, इम विल विल करतो कर जाये काल रे॥ ४ ॥
जीवडो तो जाणे केइ दिन थिर रहू रे, पिण मरण आगे नही लागे जोर रे।
जन्म मरण री सगला जगत मे रे, मुदे तो आहिज मोटी खोड रे॥ ५ ॥
काया माया सगली छें कारमी रे, कारमो छे सगलो परिवार रे।
ते मिल मिल विलावे बादल नी परे रे, एहवो छे सगलो अथिर संसार रे॥ ६ ॥
धन गडीयो घर माहें लेंणो लोक मे रे, जांणे पुत्रादिक ने देऊं सर्व बताय रे।
जीभ थकी जब न आवे बोलणी रे, ते पिण रह गइ मन री मन माय रे॥ ७ ॥
कांइ कीधो कांइ करणो अछे रे, घर हाटादिक विणज व्यापार रे।
वले माया मेलूं मेलू करतो फिरे रे, पिण काल अण चिंत्यो न्हाखे मार रे॥ ८ ॥
घर रा कारज पूरा कर नही सके रे, अध बीच छोड चल्या सहु कोय रे।
धधा माहि कलिया रहे सदा रे, ते गया निरर्थक मानव भव खोय रे॥ ९ ॥
मिनष तणो भव छे अति दोहिलो रे, उतकष्टो पामे अनते काल रे।
ते अल्प सुखा रे कारण पड्यां रे, हारे मानव भव मूरख बाल रे॥ १० ॥
एहवो अथिर आऊखो जाण ने रे, करो जिणेश्वर भाख्यो धर्म रे।
जो शुद्ध गति जावा री छे चावनां रे, तो दिन दिन पतला पाडो कर्म रे॥ ११ ॥
हू कहि कहि नें कितरो कहू रे, ससार छे सगलो अतत असार रे।
ग्यांन दरसण चारित तप विनां रे, सार म जाणो मूल लिगार रे॥ १२ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ढाल : २

दुहा

केइ बालपणे समज्या नहीं, वले जोवन दीधो खोय।
पछें बुढापो आयां थकां, कुण कुण अवस्था होय॥ १ ॥
शक्ति घटी देही तणी, वले वली लीलरी आय।
तिणसूं कमायो पिण जावे नही, जब बेठो रहे घर मांय॥ २ ॥
जब गमतो न लागें केहनें, वले दीठांई न सुहाय।
पुन्य संचो पूरो हुवो, हिवें दुख मांहें दिन जाय॥ ३ ॥
खाट पड्यो खूं खूं करे, हुइ सूगली देह।
हाल हुकम चाले नहीं, परिजन फिर दीधो छेह॥ ४ ॥
भूख तृषा पीड्यो थको, पामें दुख अतंत।
जरा आइ जोवन गयो, जब कुण-कुण हुवे वृतन्त॥ ५ ॥

ढाल

[म्हारी सासु रो नांम छे फूली]

बूढो डिगतो डिगतो चाले, आंख नाक झरे सिर हाले।
कांग वाय ज्यूं मस्तक धूणे, जब जाय बेठो घर खूणें॥ १ ॥
बूढो खूं खूं करतो थूके, घर रा तिण ऊपर कूकें।
नींठ नीठ दड लीप सुधास्यो, थें तो सगलो आंगण विगाड्यो॥ २ ॥
बूढे हाठ हवेली कराया, तठे वेसण न दे जाया।
नोहरे जाय वेसाण्यो एकंत, सार संभार को न करत॥ ३ ॥
सुसरे करे घणी नरमाइ, पुत्र नी बहु नें बतलाइ।
हे तूं बडा साजन की जाइ, मोनें ठंडो सो पांणी पाइ॥ ४ ॥
हूंतो होवुं छूं कातण सूं खोटी, हूं तो किम भर ल्यावुं लोटी।
इम सुण हुवो बूढो उदास, म्हांखे हिया मांसूं निसास॥ ५ ॥
बूढा सूं बेठो रहणी नावें, वले बेटा री बहु नें बोलावे।
कहे मोसूं बेठो रह्यो न जाय, खाट गूदडी दे तूं विछाय॥ ६ ॥
म्हारा बालक बालकी रोवें, ते तों पालणियां में न सोवें।
थांनें छोडपरी किम जाऊं, खाट गूदडी केम विछावूं॥ ७ ॥
सुसरा मोनें क्यांनें संतावो, थांरा बेटां नें कांम भोलावो।
बेटा नें बोलायां मूंन साझे, कने ऊभो रह्यो पिण लाजें॥ ८ ॥

बूढला रा पुन्य परवार्या, तिणसूं वचन जाए मार्‍या।
जब बूढलो मन में खीजे, बेटा बहु मूल न भीजे॥ ९ ॥
बूढा रे बालपणा रा हेवा, जाणे खावूं मिष्टान नें मेवा।
मन गमता भोजन खावूं, लाडू पेडा जलेबी मगावूं॥ १० ॥
उन्हों सीरो मगद वले खाजा, एहवा भोजन भावे ताजा।
जाणे नरमसी खीचडी खावू, दही दूध ने बूरो मंगावूं॥ ११ ॥
बूढा नें आछा भोजन भावे, पुन्य विनां कहो कुण खवावे।
ओ तो स्वारथ किणरे न आवे, तिण सूं घर रां ने मूल न सुहावे॥ १२ ॥
घर सूं सूखी लूखी रोटी आवे, ते तो दांता सूं खाइ न जावे।
जब बूढो हुवो दिलगीर, काढें आख्यां मां सूं नीर॥ १३ ॥
जां की बोली पिण न सुहावे, मीठा भोजन कुण खवावे।
बूढे हाथां सूं द्रव्य कमाया, बेटा दाब रह्या धन माया॥ १४ ॥
जब ओ कर कर लोकां ने भेला, करे बेटा बहुं नीं हेला।
म्हांरा कह्या में को नही चाले, पूरो धान खावानें न घाले॥ १५ ॥
जब लोक हर्से पीटें ताल्यां, बोले बेटा बहु नें गाल्या।
कहे बेटा बहु ने एम, डोकरा नें दुख दो केम॥ १६ ॥
केइ केहवा लागा आम, थें तो मत हुवो लूण हराम।
जब बेटा बहु इम बोले, डोकरा रा परदा खोले॥ १७ ॥
ओ तो लोका सूं एकठ मांडे, म्हाने यूं ही अनाखो भाडें।
म्हे तो आछा भोजन नित घालां, इणरे केडें सगला चाला॥ १८ ॥
इणरे पीत मुरीद न कांई, ओ तों यूं ही करे विकलाई।
इणरी गइ अकल विग्यांनो, इणरी वात कोइ मत मांनो॥ १९ ॥
बूढा रो कुण ऊले वेली, उणरी बात गइ सर्व ठेली।
बूढा रा पुन्य पड गया पूरा, तिण सूं सैंण सगा हुवा दूरा॥ २० ॥
निज नारी री आहिज रीत, वूढा सूं न धरे प्रीत।
वले ओर सगा सैंण सारा, वूढा सूं होय जाय न्यारा॥ २१ ॥
कदे घी गुल सूंघा होय जात, जब वांछे वूढा री घात।
घर रां तो मांड्यो अति आंचो, ओ तों मरे न छोडे माचो॥ २२ ॥
बाल जवान तो मर जावे, इण वूढा नें मरण न आवे।
ओ तों नित नवो होय रह्यो सेठो, म्हांरे वारणे रिणाइ ज्यूं बेठो॥ २३ ॥
म्हे तो सगला हुवां छां काया, इण डोकरे वोहत सताया।
इणरी दांई ना पर गया विरखो, ओ तो अजे न मुंवो जरखो॥ २४ ॥

म्हांरे उघडी पाप री खांनो, इण बूढा सूं पडियो पानो।
एहवा वचन बूढा नें सुणावे, जब बूढो अतंत दुःख पावे॥ २५॥
बूढे कर्म कीया था जाडा, ते तों आया कुबेलां में आडा।
ते भोगवतां दुख पावे, सुमता विण पडियो सीदावे॥ २६॥
बूढा री विपत अनेक, पूरी कहणी नावें वशेख।
थोडीसी कही बांनगी मात, देखो अरूबरू साख्यात॥ २७॥
इणरी सुणज्यो लोक लुगाइ, एहवी विपत बुढापे आई।
जो ऊ पेंहली धर्म करतो, एहवी विपत में क्यांनें पडतो॥ २८॥
बूढो पेंहलां बूहो मद छकियो, जिण धर्म ओलख नही सकियो।
हिवे रह्यो आरत ध्यांन ध्याय, तिण सूं धर्म कीयो किम जाय॥ २९॥
बूढे पेंहलां कीधी कूडी सेखी, रह्यो धर्म तणो नित वेखी।
करतो साधु श्रावकां री हेला, हिवे आय पडी छे बेलां॥ ३०॥
पेंहलां कीधी न्यातीलां ठेलो, जिण धर्म नें जांणियो सेलो।
हिवें न्यातीला आडा न आवे, जब आप पड्यो पिछतावे॥ ३१॥
मोह माया में रह्यो कलियो, दुरगति नों टांको भलियो।
जोवन हुंतो ते दीधो गमाय, हिवे कारी न लागे काय॥ ३२॥
पछें मरनें माठी गति जावे, चिहुंगति में गोता खावे।
पाप आगे न चाले जोरो, पाछो नर भव पावणो दोरो॥ ३३॥
केइ बूढा घर रां नें डरावे, लड भगड नें आछो खावे।
वले कर कर लोकां नें साखी, बेटा बहु ने भांडे अन्हांखी॥ ३४॥
वले करे खीटोर खोराई, घर रां नें घणो दुखदाइ।
केइ बूढा छे एहवा पापी, रह्या घर रां नें नित संतापी॥ ३५॥
केइ बूढा सूधा हुवे जोग, वेटा वहु मिलिया अजोग।
कदा आछी वस्तु बूढो खावे, तो उवे खूणे घाली घुरकावे॥ ३६॥
कहे तूं तो हुवो गटकायो, म्हांरे धन नही घर मांयो।
सूधो बेठो रोटी क्यूं न खावे, म्हाने कांय अन्हाखी सतावे॥ ३७॥
जब बूढो संके लाजां मरतो, वारे वचन न काढे डरतो।
बूढे कीयो विचारज ऊंडो, रखे दीसूं लोका मे भूंडो॥ ३८॥
एतो कर रह्या फेन फितूरो, म्हांरे धोलां में घालें धूरो।
यांनें छेडवियां नहीं बाकी, रखे जावे बूढापे नाकी॥ ३९॥
म्हांरो कांण कुख थो भारी, रखे लोकिक विगडे म्हारी।
इम जांणी बूढे मूंन साभी, जांण्यो राखूं बूढापे वाजी॥ ४०॥

जो न हुवे दोयां मांहे लजिया, तिणरा घर मांसू न मिटे कजिया।
कुड कुड काढे राता डोला, नीकले नित सांग बनोला ॥ ४१ ॥
बात करता माथे सल चाढे, नितका दुख मे दिन काढे।
देखो नीठ मानव भव पायो, राग धेख में यूंही गमायो ॥ ४२ ॥
ससार ना सगा सर्व काचा, त्यांने जाण रह्या मूढ साचा।
तिण री बुधवंत करज्यो पिछाणो, याने जाणज्यो वैरी समाणो ॥ ४३ ॥
केइ बूढा रे पुन्य रहे बाकी, घर रा कार न लोपे जाकी।
जिण रे पूर्व पुन्य छे भारी, तिणरी मरजादा राखे नारी ॥ ४४ ॥
जिण पूर्व पुन्य उपाया, त्यारे हाथ जोड रे जाया।
जो ऊ थोडीसी वस्तु मंगावे, तो उवे थाल भरी बेगा ल्यावे ॥ ४५ ॥
सर्व जी जी कारे बतलावे, वले बूढा को हुकम चलावे।
मन गमता भोजन खवावे, सारा पेहली बूढा ने जीमावे ॥ ४६ ॥
जिण पूरी कीधी पुन्याई, बेटा बहु मिल्या सुखदाई।
रूडा रूडा वस्त्र पहरावे, सुख सेज्या माहे पोढावे ॥ ४७ ॥
वले काण कुख राखे भारी, सगला रहे आगन्या कारी।
देव परमेश्वर ज्यूं पूजे, करडी नजर कीया सर्व धूजे ॥ ४८ ॥
एहवा सुख मे बूढो रति पामे, वले रही लौकिक लोका मे।
बूढो एहवी साता सुख पाय, घणो मगन हुवो मन मांय ॥ ४९ ॥
एतो सारा मिल्या सुखदाय, पिण त्रांण शरण नही थाय।
एतो इण भव केडे चाले, परभव जाता साथे न हाले ॥ ५० ॥
साथ आवे पुन्य ने पाप, सुख दुख भोगवे आपोआप।
इम सांभल नें नर नारी, करज्यो मन माहिं विचारी ॥ ५१ ॥
एहवा सुख तो सगलाइ फीका, त्यानें कदे म जाणो नीका।
ते तो थोडा माहे विललावे, सुपना जिम आल माल होय जावे ॥ ५२ ॥
त्यामें कदे म जांणज्यो सार, ते तो मिल्या अनती बार।
एहवा सुख ऊपर निजर न दीजें, करणी कर लाहो लीजें ॥ ५३ ॥
आचारग रो ले अनुसारो, कह्यो बूढा तणो विस्तारो।
इम जांणी करो जिण धरम, ज्यूं पांमो मुगत सुख परम ॥ ५४ ॥
सवत अठारे चोतीसें वरस, अषाढ विद तिथ इग्यारस।
सनीसर वार विचारो, जोड किधी सरियारी मझारो ॥ ५५ ॥

ढाल : ३

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

देखो नारी कादें में खूंता, लोक फिरे सहु हा हा हूंता।
जल थल देश प्रदेशां जावे, तो पिण नारी सुख कर ध्यावे॥ १॥
ठगण मूंसण दगा री हूंस, ज्यूं ज्यूं धन ल्यावूं लूंस।
अेसा डाव अनेक उपावे, पिण पूर्व पुन्य हुवे ते पावे॥ २॥
किण उहां वेठें कीधी सगाइ, पिण पाछा घर न सक्या आइ।
किण नें विचे ठगांइज मास्या, देखो नर भव यूंहिज हास्या॥ ३॥
केइ आय परणीज्या नारी, धन खूटां वले हुवा तयारी।
किण ही द्रव्य इहाइज कमाया, पिण निश्चें छे काची माया॥ ४॥
खांण भोग छे कर्म बलाय, पेहलां स्वाद विगडे जाय।
ज्यूं विष चढिया नें नींम ही भावे, पांव रोगी नें खाज सुहावे॥ ५॥
एसा काचां सुख सहु फीका, अंत लागु छे निश्चें जी का।
इंद्री कदें तृप्त नहीं होवे, यूं ही मूरख जमारो खोवे॥ ६॥
मरण तणो भय न मिट्यो जेथ, कासूं सुख भुगतेलो तेथ।
मोह्यो विषें नार नों दास, कुण कुण कांम करावे तास॥ ७॥
फिर फिर वस्तु घणी जो आंणी, तो पिण आगल नार रीसाणी।
हूं तुझ केडें लागी फोक, कांइ न आणे रुपिया रोक॥ ८॥
गेंहणा गांठा मुझ नें जोइजें, तुझ थी कारज कोइ न सीझें।
किण हूंसे तें मुझ नें परणी, घर किम चालसी थारी करणी॥ ९॥
हूंतो करूं सहु घर नों कांम, तूं जाय वेसे बीजी ठांम।
ए तुझ ने किण बात सीखाइ, घर री चित न जांणें काई॥ १०॥
आज तो जोइजे घर में हांडी, चूलो भांज गयो घर माडी।
इंधण री भारी गई खूटी, बांण गयो माचा रो तूटी॥ ११॥
धांन पीसण जोगी नही घरटी, आंण आप मुझ गेहु वरटी।
साल दाल धृत ल्यावण पाछो, तुझ नें भावे आछो आछो॥ १२॥
काजल कूंकूं डाबी हार, गेंहणा आंण सझूं सिणगार।
टीकी राखडी तेल सुगंध, पेइ आरसी मेल संबंध॥ १३॥
मेला वस्त्र धोई ने ल्याव, जूना जोय तूं नवा कराव।
सूई सूत बीजणो छाज, जोडी आंण मुझ पहरवा काज॥ १४॥

साजी लूण हीग मिरच वेसवार, खुवारो बुहारी दातणा चार।
ऊखल मूसल आछी गाय, कुडछी डोयला छुरी मोलाय॥ १५॥
ढहिया घर तूं नवा कराय, डावडा रमवा दडी बणाय।
गुडी गुली तीर घुणी ने हटरी, टोपी झगो रूण झलियो कुलडी॥ १६॥
एता ल्याव सताब संभाल, काना हेटे मती फुजाल।
अजे न ल्यायो कदकी कूकी, थारी अकल गइ छे चूकी॥ १७॥
मोर मसल थाकी कहे कामण, बेटो आज छे आमण दूमण।
बेस तूं इण ने खोले लेइ, काम कर न सकू हू बेई॥ १८॥
दोहिली हुवे नें ए मे जायो, हिवे तू पालीस काय उपायो।
सवा नव मास बूही हू भार, तू दोरो लेतो खिणवार॥ १९॥
किण ही काज रीसाणी नार, मनावे पगे लाग तिवार।
डावा पगरी दे सिर लात, तो पिण मूरख तजे न तात॥ २०॥
पाप तणे वस पडियो समणी, रुदन करावे छे वलि रमणी।
भेष लेइ केइ विषे विगूता, ते पिण यू घर रे भार जूता॥ २१॥
भात भात रा सुख मधु विंद, आगे नरक तणा छिद भिद।
इण परे रोलवे पुरुष नें नारी, नीचा काम करावे भारी॥ २२॥
दास तणी पर आगे ध्यावे, तो पिण विरत न कान्चित आवे।
जीव तो थोडा सुखा ने काजे, गुलामपणो करतो नही लाजे॥ २३॥
एहवा दुख ने सुख कर मानें, यूही बूडा जाय अग्यानें।
भटके तलफे सुख के ताई, ज्यू ज्यू अलूझ पडे दुख माही॥ २४॥
नचिंत होय बेठा नर अध, बावे पर घर केरा बध।
परणीजे जाणें घर माड्या, इसडा घर अनता छाड्या॥ २५॥
तो ही तृप न हुवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नीव।
घर जलाय तीरथ जे करसी, सो साधु जग माहे तिरसी॥ २६॥
केइ श्रावक ना व्रत पाले, ते पिण नरक तिर्यंच दुख डाले।
देश थकी ते पिण ब्रह्मचारी, साधु तजिया सर्व विकारी॥ २७॥
नरक दिखावण दीवी नार, मोष जावण ने आडी किवाड।
सुयगडायग तदुल वियालिए साख, तिण मे वीर गया छे भाख॥ २८॥
स्त्री दोष जिण कह्या अनेक, तिण न्याए मेल्या क्यूही एक।
बुरो मती माने नर नारी, निश्चे देखो ग्यान विचारी॥ २९॥
छेदाणा जस हाथ ने पाय, काप्या कांन नें नाक कहाय।
ते पिण सो वरसा नी नारी, दूर तजें रहे ब्रह्मचारी॥ ३०॥

विषें दिष्टी वरजी चित्रनारी, तो किम निरखे सोले सिणगारी।
सूर्य साह्मो जोयां घटें तेज, ज्यूं ब्रह्मचर्य घटें इण हेज ॥ ३१ ॥
उंदर बेठो मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण आस।
तिम नारी संगे शीलवंत, विरलो कोइ वचे बलवंत ॥ ३२ ॥
इम जांणी रहे साधु एकंत, आपनें हित वांछे ते सत।
शील संजम दिढ पाले ठीक, त्यांनें जांणो मुगत नजीक ॥ ३३ ॥

ढाल : ४

[तारा हो प्रतख मोहणी]

स्वारथ सहु ने बाल हो, स्वारथ जग मंडाण। चतुरनर।
उद्यम जीव करे घणो, प्राप्ति भाग परमाण ॥ चतुरनर ॥
स्वारथ जग मंडाण* ॥ १ ॥

पीहरिया सूं पुत्री राजी रहे, ज्यां लग विवध पणे आवे माल।
मुतलब पूगे त्यां लगे, त्यानें दिठा हुवे अतत कुशाल ॥ २ ॥
जो पीहरियां होय जाय दरिद्री, पुत्री नो घर ताजा देख।
जो मागे कायक पुत्री कने, तो तुरत जागे तिण नें घेख ॥ ३ ॥
पुत्र ने पाल मोटो करे, सूंपे सारो घर धन माल।
ते गरढापणे पिता भणी, पुत्र जाणे पिता नें साल ॥ ४ ॥
घर रे कांम न आवे सर्वथा, निकमो बेठो खावे धांन।
जब गमतो न लागे केहने, खारो लागे विष समान ॥ ५ ॥



*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

रत्न : २७

जुआ री ढाल

दुहा

विसन सातोंई छे अति बुरा, त्यांने छोडे उत्तम जीव।
त्याने सेवे भारीकर्मा जीवडा, त्यां दीधी नरक री नीव॥ १ ॥
प्रथम विसन जूवा तणो, तिण खेल्यां बंधे छे कर्म।
मतिभ्रष्ट हुवे तेहथी, वले खाय देवे जिण धर्म॥ २ ॥
जूवे रमे ते मांनवी, गया जमारो हार।
इह लोक परलोक विगाड नें, गया नगर निगोद मझार॥ ३ ॥
तिण जूवा में अवगुण घणा, ते पूरा केम कहिवाय।
थोडा सा परगट करू, ते सुणज्यो चित ल्याय॥ ४ ॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे साध सयाणा]

जूवे रमें त्यांरो रहे माठो ध्यान, माठी लेश्या नें माठा परिणांम।
वले माठाइ जोग नें माठा अध्यवसाय, वले चित्त न रहे एक ठांम रे। भवियण।
जूवो मत रमजो कोइ, इण जूवा थी आछो न होइ रे। भवियण।
हीये विमासी जोइ॥ १ ॥
जूवे रमें तिणरे भूठ ने चोरी, दोनूं लारे लागी रहे नित। भ०।
थोडा मे दरिद्री होय जावे, थोडा मे हार दें सर्व वित्त रे॥ भ० ही० २ ॥
वले धसको निरतर न मिटे तिणरो, वले न मिटे सोग संताप।
वले विलखे मूंढे फिरे लोकां में, इन जूवा तणे परताप रे॥ ३ ॥
जुवारी रा घर में धन माल हुवे तो, थोडा मे हार दें ततकालो।
वले लोका रो माथे उधारो ल्यावे, मांग्यां काढे तुरत देवालो रे॥ ४ ॥
लोक आय माग्यां माथो नीचे घाले, तिण सूं पाछो तो देणी न आवे।
कोइ लाजां मरतो कूवो बावडी ताके, केइ परदेशां उठ जावे रे॥ ५ ॥
जूवे रमे जुवारी तिणरो, घर रा पिण न करे विश्वास।
जाणे रखे घर मासू चोर लेजावे, रखे नीवी तणो करे नास रे॥ ६ ॥
तिणरा सगा सबंधी ने मंत्री न्यातीला, त्यारे घरे जुवारी आवे।
जब त्यारे पिण धसको पडे तिणरो, रखे कांयक चोरे लेजावे रे॥ ७ ॥
मात पिता सासू नें सुसरा, वले सेंण सगां रे माहि।
वले सजन नें असजन सारा में, जुवारी री परतीत नांहि रे॥ ८ ॥

कोइ जुवारी नें बेटी देतो संके, इणरे जूवा रो कलंक लागो।
इण नें बेटी परणाए क्यांनें विगोऊं, ओ तों धन खोय हुंतो दिसे नागो रे॥ ९॥
कोइ जुवारी नें ब्याज देवे छे, कोइ जूवारी नें देवे उधारो।
कोइ जुवारी सूं सीर मांडे छे, यां तीनां रो हुवे विगाडो रे॥ १०॥
कोइ जुवारी री संगत करे छे, ते पिण जुवारी होवे।
ते पिण धन माल खोय नें होय जाय रीतो, पछे छानें - छानें घणो रोवे रे॥ ११॥
जुवारी री संगत कीधी ते बोलें, हूं इण री संग सूं गाढो बूडो।
घर में धन माल हुंतो ते सारोई हास्यो, वले दीठो लोकां में भूंडो रे॥ १२॥
जुवारी जूवे रमे ते व्यसनी, बाप दादा नें मेंहणी बोलावे।
उवे जुवारी तणी बात कांना सुणे जब, त्यां सूं पिण पूरो बोल्यो न जावे रे॥ १३॥
जुवारी रा बेटा नें पोता सुधी, मेहणी बोलावे लोकां मांहि।
इण रो बाप दादो जुवारी हुंतो, जब ए नीचो माथो घाले ताहि रे॥ १४॥
जुवारी रो आबरू घटे लोकां में, वले काण कुख जाबक घट जावे।
वले जुवारी री संगत करे छे, तिण रा पिण विसवा हीणा थावे रे॥ १५॥
वले जुवारी री स्त्री जूवा थी, दुखे दुखे काढे दिन रात।
इण भरतार लारे आयां पछें मोनें, कदे सुख न हुवो तिलमात रे॥ १६॥
वले जुवारी रा माता नें पिता, जुवारी थी सारा हुवा काया।
ओ पापी म्हांरे घर आय ऊपनों, इण निठाय दीनी म्हांरी माया रे॥ १७॥
जुवारी रे कुटंब कबीलो, सगलाइ दुखिया थाय।
जुवारी सारो धन हार जावे जब, न्यातीला पिण सीदावें ताय रे॥ १८॥
जुवारी जूवे रमतो हार जावे, सारो धन स्त्री नें माल।
पछे भीख भमतो फिरे लोकां में, रोतां रा पिण पडें हवाल रे॥ १९॥
जुवारी रे घर कोइ थापण मेले, तिण नें जुवारी हार देवे।
तो पाछो आय मांग्यां कठा सूं देवे, जब ऊ घणा घमेडा लेवे रे॥ २०॥
जुवारी जूवे रमें तिण काले, तिणनें देवे कोइ उधारो।
ते पिण दूजें तीजें करण जुवारी, ते जुवारियां रो सिरदारो रे॥ २१॥
जूवा रो पट्टो कराय सही कराई, ते सगला जूवा तणो अधिकारी।
तिण सगला जुवास्यां रे छूट कराई, तिण रे नरक तणी छे तयारी रे॥ २२॥
केइ चोपड रमे छे गरथ अडे नें, ते पिण निश्चें जुवारी साख्यात।
मार- मार करे मुख बोले रीणोइ, तिण री पिण विगडी छे बात रे॥ २३॥
भेला करे पासा नें सारी, मुख बोले मार मारी।
चोपड रमें कर्म बांध्या भारी, ते हुवा नरक नें तयारी रे॥ २४॥

जूवे रमें केइ माल अडे नें, हारी नें वले रोवे।
इण भव पर भव मे दुख पावे, दोनूंई जन्म विगोवे रे॥ २५॥
जिण गाव मे जुवारी घणा हुवे ते, गाव री पेठ गमावे।
भला भला मिनष छे तिण गाम माहे, ते सगला ने भूडा दिखावे रे॥ २६॥
जुवारी गांम रा सगला लोकां ने, देशां देशां मे मेहणी बोलावे।
जो जुवारी सगला ने कहावे, गांम री हलकी घणी लगावे रे॥ २७॥
जान बरात पर गांम मे जाये, जो तिण माहे जुवारी होवे।
तठे पिण तिण गाम री हलकी लगावे, जानियां रो पिण आबरू खोवे रे॥ २८॥
जुवारी जूवे रमे धन माल हारे, तिणनें मुख मुख दे फिटकारो।
शोभा तो लोकां में कठेय न दीसें, धिग धिग छे तिण रो जमवारो रे॥ २९॥
जूवे रमें तिण रे उतकष्टे भागे, विसन सातोई आवे।
आगला नें पाछला न्यातीला ने, जुवारी सगला नें लजावे रे॥ ३०॥
नल राजा तो जूवो रमें ने, सर्व राज नें स्त्री हारी।
देश नगर साराइ छोडी ने, एकलो चाल्यो मूंह विगाडी रे॥ ३१॥
पाचोई पांडव जूवे रमे ने, हार्‍यो हथनापुर नो राज।
देश प्रदेशां भमता फिरिया, त्यां गमाई लोका में लाज रे॥ ३२॥
आगे बडा बडा राजा अनेक हुवा ज्यां, जूवा थी राज हार्‍यो।
भीख मंगता हुवा भिख्यारी, त्यां जीतब जनम बिगाड्यो रे॥ ३३॥
जूवे रमे जुवारी तिण रे, अजक रहे दिन रात।
ताणा वेजा लागा रहे चित्त मे, तिण रा दुख माहे दिन जात रे॥ ३४॥
पछे जुवारी मरने माठी गति जावे, तिहा पावे दुख अनंत।
नरक निगोद मे भीकां खावे, इम भाख्यो छे श्री भगवंत रे॥ ३५॥
साहुकार रो बेटो जूवे रमें नित को, साहुकार सू वरजणी नावे।
जाण्यो वरजूं तो बेटो अपघात करनें, रखे अकाले मर जावे रे॥ ३६॥
रेसे रेसे बेटा ने समझायो घणो, पिण बेटा सूं जूवो छोडणी नावें।
जब साहुकार बेटा थी डरियो, रखे सारो धन जुवा मे गमावे रे॥ ३७॥
म्हारो कह्यो बेटो मूल न माने, इणने छेडवूं तो दूणो दूणों।
ओ तो कपूत उठ्यो म्हारा पाप रे उदे, करतो दीसे छे घर रो पूणो रे॥ ३८॥
इतले साहुकार मादो पड्यो जब, बेटा नें कहे एकंत बोलाय।
मो काल कीयां पछे हूं कहूं ज्यूं कीजे, ज्यूं तोनें सुख थाय रे॥ ३९॥
म्हारा खरच ऊपर देशां देशां रा, जूवार्‍यां ने लीजे बोलाय।
खरच कीयां पछें तूं पाट वेसे जब, जुवार्‍यां कने टीको कढाय रे॥ ४०॥

जुवार्‌यां में बडा जुवारी पासें, तिण कनें तूं टीको कढाय।
तूं चोड़ें कहीजे न्यातीलां सारां नें, मोनें तात कह्यो छे बोलाय रे॥ ४१॥
इम कही नें काल साहुकार कीधो, जूवो छोडावण रो कीयो उपाय।
तिणरी बेटा नें समझ पडी नहीं कांई, पिण न्यांन सूं दीयो समझाय रे॥ ४२॥
हिवें साहुकार रे खरच रे ऊपर, जुवारी लिया अनेक बोलाय।
भारी खरच करे सारी न्यात जीमाए, पछे जुवारी सर्व जीमाय रे॥ ४३॥
साहुकार रो बेटो पाट बेठो जब, न्यातीलां नें कह्यो संभलाय।
म्हांरे पिता कह्यो तूं पाट बेसे जब, जुवारी आगें टीको कढाय रे॥ ४४॥
इम न्यातीलां रा कानां में काढें, सारा जुवारियां नें बोलाय।
थां में पका में पक्को जुवारी हुवे ते, म्हांरे टीको काढो आय रे।
भायां मत करो जेज लिगार॥ ४५॥
एक कहे हूं पक्को जुवारी, जुवारी मांहि पक्का सूं पक्को।
म्हांरे धन माल हुंतो ते सगलोई हार्‌यो, होय बेठो छूं फकम फक्को रे।
टीको तो हूं देसूं॥ ४६॥
दूजो कहे हूं थां थकी पक्को जुवारी, जुवार्‌यां मांहें बडो जुवारी।
म्हें पिण धन माल हुंतो ते सगलोइ हार्‌यो, हाट हवेली म्हें अधिकी हारी रे॥ ४७॥
तीजो जुवारी कहे थां थकी म्हांरो, सुणो थें सगलाइ ढालो।
हाट हवेली म्हें पिण हार्‌या, वले म्हें अधिको काढ्यो दिवालो रे॥ ४८॥
चोथो जुवारी कहे हूं थां थकी पक्को, थांनें खबर नहीं छे म्हांरी।
थें हार्‌यो छे ते म्हें पिण हार्‌यो, थां सूं स्त्री म्हें अधिकी हारी रे॥ ४९॥
पांचमों कहे हूं थां सूं पक्को जुवारी, मोनें गांव बारे काढ्यो कूटो।
थें हार्‌या छे ते म्हें पिण हार्‌या, अधिकाइ रो ठिकांणो छूटो रे॥ ५०॥
छठो कहे थां थकी पक्को जुवारी, थें हार्‌यो ते म्हें पिण हार्‌यो।
मोनें गधे चढाय गांम बारे काढ्यो, वले ऊपर जूतां सूं मार्‌यो रे॥ ५१॥
सातमों कहे हूं थां थी पक्को जुवारी, थां में बीती ते सारी मो मांयो।
थांनें संका हुवे तो निजरां देखल्यो, म्हें हाथ अधिकेरो कटायो रे॥ ५२॥
आठमों कहे हूं सारां सिरे जुवारी, तिणरो लेखो तूं सुण रे माया।
थां सगला में बीतीं ते मो में बीतीं, म्हें हाथ ने नाक दोनूं कटाया रे॥ ५३॥
जुवार्‌यां रे मांहोमांहि वाद लागो, त्यांरो देखी मांहोमां तांण।
जब साहुकार तणो बेटो डरियो, जुवारी लागा जहर समांण रे॥ ५४॥
तिण जुवारी आगे टीको नहीं कढायो, त्यांनें काढ दीया घर बारो।
जूवो रमवो तिण जाबक छोड्यो, हीया में कीयो शुद्ध विचारो रे॥ ५५॥

म्हारे बाप मरते थके कह्यो थो मोने, तूं जुवारी आगे टीको कढाय।
ते तो एकत म्हारो जूवो छोडावण, त्या इण विध मोनें समझाय रे॥ ५६॥
जो हूइज वले जूवो रमू, इण सारिखो हू पिण थाऊ।
तो जीतव जन्म विगाडूं म्हारो, धन माल पिण सगलो गमाऊ रे॥ ५७॥
जुवारी मर नें माठी गति जावे, पावे दुख अनंत।
नरक निगोद मे झीका खावे, इम भाख्यो श्री भगवंत रे॥ ५८॥
कही-कही ने कितरो एक कहूं, जूवा मांहे अवगुण अनेक।
इम सांभल ने उत्तम नर नारी, जूवा नें छोडो आण ववेक रे॥ ५९॥
कोइ जूवा तणा अति अवगुण सुण ने, जूवो छोडे साधां हजूर।
ते सूस भांग नें जूवे रमे पापी, तिणरा जीतब जनम नें धूड़ रे॥ ६०॥
जूवा ने ओलखावण काजे, जोड कीधी पुर सहर मझार।
संवत अठारे वरस सतावने, सावण सुदी पंचमी शनिसर वार रे॥ ६१॥



रत्न : २८

ब्याहुलो

ढाल

साखी शब्द कहे घणा, सीखी अकल उठांण।
परमारथ खोजे तिके, तें नर विरला जांण ॥ १ ॥
कद कूंपल बोली हंसी, पान दीयो कब जाब।
वीर वखांणी ओपमा, समझे लोग सताब ॥ २ ॥
नवा नवा लोक जाण नें, कह्या घणा प्रस्ताव।
करज्यो मती कदागरो, जोयजो सूतरां न्याव ॥ ३ ॥
अछता नें ओपमा छती, छतें अछती होय।
इम जांणी ने गुण ग्रहो, झगडो म करो कोय ॥ ४ ॥
मति ग्यान रा भेद छे, सुणज्यो चित्त लगाय।
एक सूतर नेश्राय छे, बीजो विण नेश्राय ॥ ५ ॥
अणदीठो अणसाभल्यो, मेले वचन रसाल।
जेसो नर देखे तिसो, उत्तर दे ततकाल ॥ ६ ॥
इसी वुद्धि उत्पात की, वीर वखाणी ताहि।
सशय हुवे तो देखलो, नंदी ठांणाअग माहि ॥ ७ ॥
लोक तिके पिण यूं कहे, कनक कामणी फंद।
साधु कहे तिण मे किसूं, इण छलिया नर इद ॥ ८ ॥
कहे लोक जांणे नही, पूरो परमारथ।
विषे रूपिया फद रो, सुणज्यो अबे अरथ ॥ ९ ॥
जोगी जोग सेठो रहे, भोगी तजे विकार।
तिण उपर दिष्टान्त छे, सुणज्यो रोस निवार ॥ १० ॥
प्राणी चाल्यो परणवा, जब आगूंच दीयो जताय।
तोरण तारा छांहडी, किम कर बाध्यो जाय ॥ ११ ॥
जो तू बेटो शाह नों, करे कसाई कांम।
तो तुमने परणावस्या, इण विध मेले दाम ॥ १२ ॥
तोही विषे मे अध हुओ, तुरंत छडी ले देत।
साला न्हाखे धूल सिर, चेत अबें ही चेत ॥ १३ ॥
तव थोडोसो बोलियो, मुहडे पोत्यो देय।
पाछो पिण जावे नही, उभो छे हठ लेय ॥ १४ ॥

सासू म्हांसूं सलसली, आई मोडा बार।
चोडें लोकां देखतां, मांड्यो कोण विचार ॥ १५ ॥
नाक तांण दही चोडियो, अब तो हुवो अधिराज।
भोग थकी नरके गयो, नकटा अव तो लाज ॥ १६ ॥
साले थूलो न्हांखियो, सासू खांच्यो नाक।
सालो सुसरो स्यूं करे, डर लाग्यो तिण धाक ॥ १७ ॥
रुपिया सेती राजवी, बस हो जावे तेह।
तो स्यूं छे आ बापडी, नांणे घरसी नेह ॥ १८ ॥
इम चितव आघा कीया, घाल्या रुपिया रोक।
तुरंत उतारे आरती, इचरज पाम्या लोक ॥ १९ ॥
मिल नें मांहें लेगया, माया दराई धोक।
कोइक जूती मेलके, हांसी करेज लोक ॥ २० ॥
अनमी भूम्यां ज्यूं नम्यां, चाकर ऊभो आय।
आपो परवश बेचियो, तिणरी खबर न काय ॥ २१ ॥
हाथी हलकां आवज्यो, मोत्यां चोक पुराय।
पग हेठे गंगा वहे, कूडी करें सराय ॥ २२ ॥
केशरियो वनडो कहे, घणो लडायो जोर।
गाल्यां गावा ओसरी, जांणे दीधी भाटा री ठोर ॥ २३ ॥
कोइ कहे तुझ मा इसी, तो करें रावला लग।
साल्यां भांडे तब हसें, तिण जीतव नें धिग ॥ २४ ॥
बोल्यो तब मोल्यो कह्यो, पांणी लावण दास।
कुटुम्ब कबीलो भांडियो, तोइ न हुयो उदास ॥ २५ ॥
भोला कहे गाया भला, रीझ गया घर पीत।
ग्यांनी मन में मुलकिया, ए गेल्यां वाला गीत ॥ २६ ॥
जातादिक तेडाव सूं, दुनियां हरषित थाय।
मन लागो छे मुगत सूं, तिण और न आवे दाय ॥ २७ ॥
घर में सेंठो घाल नें, नांख्यो माया जाल।
आगे मेल्यो भूस रो, अब तो सुरत संभाल ॥ २८ ॥
बदल तणी परि खांचसी, सगला घर नों भार।
आलस करनें बेससीं तो, देसी वचन प्रहार ॥ २९ ॥
छेहडे छेहडो बांधियो, नास न सकें जाय।
छोडी नासे ठाव को, तो सेंठो हाथ संभाय ॥ ३० ॥

व्याहुलो

तिवार ।
बीच मेदी घाली वली, दागल कीयो लिगार ॥ ३१ ॥
देखो काम विडम्बना, ओ लाजें नही एलाण ।
ओलख लेस्या आप स्यू, मेदी रे तांण ॥ ३२ ॥
लाखां हजारा लोक मे, पकडे लेसा कर्म ।
चिहुगति चंवरी जाणज्यो, बंधन डोर छे कुधर्म ॥ ३३ ॥
थोथा तीनू बांसडा, कुगुर कुदेव तोय ।
हिंसा धर्म बताय नें, घणो रुलावसी जोय ॥ ३४ ॥
पाच थावर च्यार त्रस, ए नव घाटी माय ।
होम तणी पर होमसी, पापी नरकां नाय ॥ ३५ ॥
रंक राव सब एकसा, कारण किसका नाह ।
नरक पंथ जांणे नही, आव बतावूं जाह ॥ ३६ ॥
तीन फेरा आगें लीया, चोथे चलियो कपास ।
खीच तणी पर खांडसी, भूरे जेम आस ॥ ३७ ॥
इण विध बेला बीतसी, तो पिण जीवण री गिवार ।
जुवारी जिम जाणज्यो, हाख्यो जाय किंवार ॥ ३८ ॥
कर्म गाठ काठी होसी, जाता मोष ढोर ।
पेहला हुतो माणसियो, अबे हुवो छे जोर ॥ ३९ ॥
बाया पिण गावे खरी, ओ हिज इचरज चाल ।
ढोल घुरावे जीत रा, देखो उलटी माल ॥ ४० ॥
मानस खोडे मार ने, गावे टोडर खूट ।
जीत्यो नही पिण हारियो, इम भावे धन छूट ॥ ४१ ॥
पइसा भर भर नीठ सू, देव देव कर आथ ।
आगेवाणी तूं होसी, पापे मेलसी हाथ ॥ ४२ ॥
दोरो काकण दोरडो, ते खुलसी एकण बंधाय ।
विणज पाप नारी तणो, थोडा कर्म लगाय ॥ ४३ ॥
तिण सू खोले दोरडो, दोनूं हाथ दांन ।
सूंक पाक दीधी घणी, दे जाचकां मांन ॥ ४४ ॥
इतरो थोका परणियो, तोइ करे छे जाय ।
घर चिंता लागी घणी, दिन भूरंतां मांय ॥ ४५ ॥
अछते छते तिरपतो, तडफे फासी वेठ ।
चोर कसाई रिण दगो, भूठ गुलामी पेट ॥ ४६ ॥
इतरा वानां आदरे, तोइ नीठ भरीजे

एक कवलियो जद होसी, अनता जीव संहार।
दोटो ले दोली फिरी, इण विध दां ला मार॥ ४७॥
कद सासू मुख सू कह्यो, कहो कुण दीयो जताय।
नरक दीवी श्री जिण कही, तिण स्यूं मेल्यो न्याय॥ ४८॥
नारी सेती नेह करी, रुलियो काल अनंत।
इम सांभल नें थडहरुया, शूर वीर गुणवंत॥ ४९॥
तडके मोहज तोडियो, चित्त लागो निरवांण।
आज पछे विषे सेववा, मोनें देव गुर री आंण॥ ५०॥
तोरण सूं पाछा फिरुया, बावीसमां जिण चंद।
जानी जोवंत रह्या, छोड दीया घर फंद॥ ५१॥
चोसठ सहस्र अंतेवरू, पायक छिन्नू कोड।
भरत चक्रवर्ति सारिखा, छिन में दीधा छोड॥ ५२॥
एकीका नर बोलिया, ए आगली रीत।
मोटा मोटा मांनवी, मांडी इण सूं पीत॥ ५३॥
तिणरो जाब सुणो तुमें, क्रोध कषाय निवार।
आगम वेद कुरान में, माख्यो दोषण नार॥ ५४॥
मोटा मोटा मांनवी, मांड्यो इण सूं प्यार।
थोडा सुखां रे कारणें, भव भव हुआ खुवार॥ ५५॥
महाभारत इण थी हुओ, आतो बात वदीत।
रावण सारिखा जीवडा, बहुला हुआ फजीत॥ ५६॥
लंका कोट चितोड पिण, मार कीया पेमाल।
नारी हंदा नेह सूं, कुण कुण पड्या हवाल॥ ५७॥
लोक तिके जांणें घणा, परे मांडे छे रांत।
मांडे झोलू भोज री, कराइ बकडावतां री घात॥ ५८॥
नारी घर आई तरे, करे कवण वृतंत।
भेद घाल पर भावसी, चिंता गले पडंत॥ ५९॥
माता जण मोटो कीयो, पिता पोषियो देह।
भाई बहन रमाडता, त्यांसूं तोडायो नेह॥ ६०॥
नारी बोली नाह सूं, घर रो कांम चलाय।
आरों अवसर आवियो, हिम्मत हिवें संभाय॥ ६१॥
के तों जावो चाकरी, के जावो परदेस।
के करषण व्यापार कर, बैठा कांय अजेस॥ ६२॥

लेणायत लडवो करे,, हाकिम दहे हमेश ।
ज्यू त्यू कर धन आंण ने, मेटो परो कलेश ॥ ६३ ॥
उपसर्ग आरो आवियो, घर मे नही दरब ।
दिन दिन चिंता मे गले, किण विध रहे गरब ॥ ६४ ॥
सगा सेण सू मांगणी, जाये करो अरज ।
म्हांरी शर्म थासू रहिस, क्यूंइक करो गरज ॥ ६५ ॥
टीण पुन्नी कोइक स्त्री, धर्म करण दे नाय ।
वेर काढे भरतार सू, न्हांखे नारकी मांय ॥ ६६ ॥
चाकर नी पर चूकले, हुकम चलावे वार ।
दिल केडे चाले पिऊ, तो पिण विरचे नार ॥ ६७ ॥
परण्यो जब उजम हुंतो, अबे गयो तन सोस ।
बाधी गले कलेषणी, रुपिया लीधा खोस ॥ ६८ ॥



रत्न : २६

तात्विक ढालां

ढाल : १

[जिण मारग मे धुर सू आदि जिणद के]

जिण मारग मे धुर सूं आदि जिणद कें, त्या आदि काढी जिण धर्म री जी।
त्यारी सेवा सारे सुर नर चोसठ इद कें, त्या सारां पेहली संजम लियो जी ॥जि०*१॥
जिण मारग मे रिषभ देव जी को पूत के, भरतेश्वर छ खण्ड नो धणी जी।
त्यां पिण दीधा मुगति नगर ना सूत के, त्यागी चउसठ सहस्र अन्तेवरू जी ॥ २ ॥
समुद्र विजय सुत नेम महा बलवान कें, तीर्थंकर बावीसमां जी।
त्या तोरण सेती पाछी वाली जान के, तेल चढी तज नीकल्या जी ॥ ३ ॥
जिण मारग मे प्रगट्या पारस नाथ के, जश नांमी थया जगत मे जी।
दिख्या लीधी तीनसो पुरषा संघात कें, जिण शासण ना अधिपती जी ॥ ४ ॥
जिण मारग मे भगवत श्री वरधमान के, त्या सूर पणे सजम लियो जी।
कष्ट सही उपजायो केवल ग्यांन कें, आज शासण वरते तेहनो जी ॥ ५ ॥
शाति जिणेश्वर ऊपना गर्भ में आय के, देश नगर मे शाति हुई जी।
एकण भव मे छहुं पदवी पाय के, मुगत गया तीरथ थापने जी ॥ ६ ॥
जिण मारग मे शाति कुथु अरनाथ के, तीरथ धर्म दीपायने जी।
दिख्या लीधी सहस्र पुरुष सघात के, मास संथारे शिव लह्या जी ॥ ७ ॥
जिण मारग मे तीथकर चोवीस के, क्षत्रिय कुल ना ऊपना जी।
त्या सगला चारित पाल्यो विसवा वीस के, च्यारूं तीरथ थापने जी ॥ ८ ॥
जिण मारग मे सागर नामे राय के, साठ सहंस सुत मुवा सुणी जी।
दीधी सगली छ खण्ड रिद्धि छिटकाय के, वेरागे मन वालने जी ॥ ९ ॥
जिण मारग मे चक्रव्रती सनत कुमार के, तस रूप देखण देव आवियो जी।
रोग ऊपनो जांणी देही असार के, चारित ले मुगते गया जी ॥ १० ॥
जि० भरत सगर मघव सनत-कुमार के, शाति कुथु अर जाणिये जी।
महापद्म हरिषेण जय विचार के, दसूंई चक्रवर्ती मोटका जी ॥ ११ ॥
त्यारे लख चोरासी हय गय रथ ना थाट के, चोसठ सहस्र अन्तेवरू जी।
ते छोड्या पाय दल छव खण्ड रिद्धि गहघाट के, जिण मारग कीयो दीपतो जी ॥ १२ ॥
जिण मारग में नवू ही बलदेव के, राज रमण सर्व परिहरी जी।
मुगत पहुंता श्री जिण मारग सेव के, बलभद्र गया सुर पाचमे जी ॥ १३ ॥
जिण मारग में दशारण नाम नरेंद के, देश दशारण को धणी जी।
तास पारखा करवा आयो शकेंद्र के, वीर समीपे दिख्या ग्रही जी ॥ १४ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

राय उदाई त्याग्या सोले देश कें, वित भय पाटण नगर सहु जी।
मुगत गया दिल आंण दया नी रेस कें, राज भांणेजा नें थाप नें जी॥ १५॥
जिण मारग में नमी नांमे राय कें, छोडी सहस्र अन्तेवरू जी।
दश प्रश्न पूछ्या इन्द्र आय कें, जब अडिग थके उत्तर दीया जी॥ १६॥
जिण मारग में पांचूं पांडव तांम कें, त्यां द्रोपदी सहित संजम लियो जी।
तपस्या कर नें सार्‍या आतम कांम कें, दोय मास संथारे शिव लही जी॥ १७॥
जिण मारग में दवदंत नांम राजान कें, हस्तीसीर्ष नगर तणो धणी जी।
तिण पांच पांडव नों गाल दीयो अभिमांन कें, पछें चारित ले मुगते गयो जी॥ १८॥
जि० करकण्डू देश कलिंग नों राय कें, दुमुही देश पंचाल नों जी।
विदेह देश नों नमी राजा ताहि कें, गधार देश नों नगई जी॥ १९॥
जिण मारग मे प्रत्येक बुद्धि च्यार कें, राज रमणी सर्व परिहरी जी।
यां स्वमेव संजम लीधो सम काल कें, एकण काल मुगते गया जी॥ २०॥
जिण मारग में संजती नामें राय कें, सिकार गयो तिहां समझियो जी।
तिण कपिल पुर नो राज दीयो छिटकाय कें, गर्दभाली गुर आगले जी॥ २१॥
जिण मारग में त्यागी देश सोहाय कें, क्षत्रिय राय संजम लियो जी।
ते संजति राय नें मिलियो मारग मांय कें, तब तिहां चरचा कीधी चूंप सूं जी॥ २२॥
जिण मारग में महाबल नांम राजान कें, आठ रमण तिण परिहरी जी।
छ काय जीवां ने दीयो अभय दांन कें, राज हथणापुर नो छोडियो जी॥ २३॥
जिण मारग में भरतेश्वर ना भाय कें, अठाणु एकण समें जी।
त्यां चारित लियो रिषभ समीपे आय कें, झगडो भाइ सूं भांजियो जी॥ २४॥
जिण मारग में बाहुबल बुद्धिमांन कें, तिण जीती राड चारित लियो जी।
केवल पाम्यों छोडी निज अभिमांन कें, लघु बंधव तिहां बादने जी॥ २५॥
जिण मारग में मुनिवर गज सुकुमाल कें, तिण बालपणे संजम लियो जी।
त्यांरे मस्तक खीरा घाल्या बांधी पाल कें, ते खिम्या कर मुगते गया जी॥ २६॥
जिण मारग में जम्बू नांम कुमार कें, आठ परण नें परिहरी जी।
आठां ने समझाइ लीधी लार कें, छेला हुवा केवली जी॥ २७॥
जिण मारग में भद्रा सुत धनो जाण कें, नगरी काकंदी नों वासियो जी।
जिणरा कीधा श्री वीर जिणंद वखांण कें, सिरे चवदे सहस्र अणगार मे जी॥ २८॥
जि० थावच्चा पुत्र छोडी बत्तीस नार कें, रूपे रंभा सारिखी जी।
सहस्र पुरुष संजम लियो तिण लार कें, तिणरा मोच्छव कीधा कृष्णजी जी॥ २९॥
जिण मारग में साला बेनोइ नी जोड कें, धन्नो नें शालभद्र हुवो जी।
त्यां चारित लीधो तडके बंधन तोड कें, तिणरे माथे नाथ न सुहाइयो जी॥ ३०॥

जिण मारग मे कार्तिक नामे सेठ के, ते सो वेलां पडिमा वह्यो जी।
पछे संजम लीधो सगलो सावद्य मेट के, बाणोत्तर सहस्र ने आठसो जी॥ ३१॥
जिण मारग मे इत्यादिक तीथकर चक्रवर्त के, बलदेव मंडलीक राजवी जी।
सेठ सेनापति आदर मारग सत्य के, मुगति गया ने जावसी जी॥ ३२॥
जिण मारग मे मोरा देवी माय के, ते जननी रिषभ जिणंद नी जी।
तिण हाथी होदे केवल ग्यांन उपाय के, ते सारा पेहली सिद्ध हुवा जी॥ ३३॥
जिण मारग मे ब्राह्मी सुदरी जाण के, ते पुत्री रिषभ जिणंद री जी।
दिख्या लीधी शूरपणो मन आण के, बाहुबल प्रतिबोधियो जी॥ ३४॥
जि० सीता सतिया मे सिरदार के, तिणरे आल अणहुतो आवियो जी।
ते धीज उत्तर ने लीधो सजम भार के, ते इंद्र हुवो सुर वार मे जी॥ ३५॥
जिण मारग मे राजमती राजकुमार के, तिण तेल चढी सजम लियो जी।
वले तीनसो जणिया नीकली तिणरी लार के, ते मोटा कुल नी ऊपनी जी॥ ३६॥
जिण मारग मे अग्रमहेपी आठ के, ते पटराणी श्री कृष्ण नी जी।
ते मुगत गइ छे कर्म तणी जड काट कें, वले पुत्र दोय बहु तेहनी जी॥ ३७॥
जि० श्रेणिक नी राण्या तेवीस के, त्या वीर कने संजम लियो जी।
त्यां तपस्या कीधी पूरी विसवा वीस के, कर्म खपाय मुगते गई जी॥ ३८॥

ढाल : २

[सत्य कोइ मत राखज्यो]

गणधर गोतम स्वांम जी, समरूं सुख दातारो जी।
चोवीस डंडक ऊपरे, पदवी रो विस्तारो जी।
भाव धरी भवियण सुणो ॥* १ ॥
समदिष्टी श्रावक मुनि, केवली जिणवर जाणो जी।
चक्री हलधर केशवा, मंडलीपती राजानों जी ॥भा०२॥
सेनापति गाथापति, बढही प्रोहित जोयो जी।
इत्थी हय गय जांणज्यो ए रत्न पचेन्द्री होयो जी ॥ ३ ॥
चक्र छत्तर चरम डंड, असी मणी कागणी सातो जी।
सातूं नरक रो नीकल्यो, ए न लहे पदवी विख्यातो जी ॥ ४ ॥
पेंहली नरक रो नीकल्यो, पदवी सोले पावे जी।
दुजी रा पनरा लहे, चक्रवर्त्त नही थावे जी ॥ ५ ॥
तीजी रा तेरा लहे, टलिया बल वासुदेवो जी
चोथी रा बारा लहे, न हुवे देवाधिदेवो जी ॥ ६ ॥
पांचमी नरक इग्यार छे, केवलग्यांनी न होयो जी।
छठी रा दश रिध लहे, साधु न थाये कोयो जी ॥ ७ ॥
सातमीं नरक रा नीकल्या, तिर्यंच माहि आवे जी।
हय गय समकित जाणज्यो, पदवी तीनज पावे जी ॥ ८ ॥
पृथवी पांणी वनस्पति, तिर्यंच मिनष वखाणो जी।
काल करी नें रिध लहे, संख्या उगणीस परमांणो जी ॥ ९ ॥
तीर्थंकर चक्रवर्ति नी, टलिया बल वासुदेवो जी।
तेवीस पदवी माहिली, च्यार पदवी नही लेवो जी ॥ १० ॥
बे ते चोइन्द्री जीवडा, रिधि अठारे पावे जी।
च्यार बोल ल्यो पाछला, वले केवलग्यानी न थावे जी ॥ ११ ॥
तेउ बाउ रा नीकल्या, पदवी नव बखाणो जी।
एकेन्द्री साते सही, वले घोडो ने हाथी जाणो जी ॥ १२ ॥
भवन पति व्यंतर ज्योतिषी, पदवी इम इकवीसो जी।
तीर्थंकर वासुदेव नी, वे न लहे कही जगदीसो जी ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पेहला वीजा देवलोक रा, पदवी तेवीस पावे जी।
तीजा सू आठमा लगे, एकेन्द्री नही थावे जी॥ १४॥
च्यार देव लोक नव ग्रीवेक ना, रिधि लहे दश च्यारो जी।
घोडो ने हाथी टल गया, लेज्यो चतुर विचारो जी॥ १५॥
पांच अनुत्तर विमाण रा, पदवी आठज पावे जी।
चवदें रत्न चक्रवर्त्ती ना, वले वासुदेव न थावे जी॥ १६॥
ए तेवीस पदवी जिण कही, भव जीवा रे भागो जी।
भणे गुणे सुणे साभले, आणज्यो घट वेंरागो जी॥ १७॥



ढाल : ३

दुहा

एक आंधो नें एक पांगलो, दोनूं पडिया अटवी मांय।
इणरे आंख नहीं उणरे पग नहीं, त्यां सूं नगर गयो नही जाय ॥ १ ॥
आंधो ढूंडाटी मारतो थकों, आमों साहमों भमलेटा खात।
पांगलो पडियो तिहां आवियो, दोनूं करे मांहोमांहि बात ॥ २ ॥
पांगलो कहे हूं दुखियो घणो, हूं पडियो छूं अटवी मांय।
दोनूं पग नही भाई मांहरे, मोसूं नगर गयो नहीं जाय ॥ ३ ॥
जब आंधो कहे हूं पिण दुखियो घणो, हूं पिण मारूं अटवी में ढूंढाट।
आंख्यां विण नगर पोहचूं नहीं, नोनें कुण बतावे बाट ॥ ४ ॥
जो तं खांधे वेसे मांहरे, तूं मोनें मारग चलाय।
तो आपां दोनं जणा, नगरी पहुंचा जाय ॥ ५ ॥

ढाल

[डाभ मुंजादिक नी डोरी]

पांगलो सुण हरख्यो ताहि, मिसलत कीधी मांहोमांहि।
पांगला नें उठायो आंधे, वेसाण्यो पोतारा खांधे ॥ १ ॥
पांगलो ते आंधा नें चलावे, सांनीकर मारग बतावे।
इण विध अटवी लांघी ताहि, दोनूं आया छें नगरी मांहि ॥ २ ॥
नगरी आया तो सुखिया हुआ, अन्न पांणी विनां नहीं मुवा।
ए दिष्टान्त रूडी रीत जांणों, संसार ने मुगत पिछांणो ॥ ३ ॥
मोटी अटवी जिम संसार, तिण में दुखिया जीव अपार।
नगर जिम मुगति नं जांणो, तिण नें रूडी रीत पिछांणो ॥ ४ ॥
आंधा ज्यूं जीव ग्यांन रहित, अग्यांनी मिथ्यात सहित।
तिण रे क्रिया रूप नहीं पाय, ते मुगत नगर किम जाय ॥ ५ ॥
ते जीव क्रिया करवा लागो, पिण नही जांणे मुगत रो मागो।
जिण आगम नों जांण नांहीं, जीवादिक न जांणे काई ॥ ६ ॥
ते मुगत नगर किम जावें, संसार में झोला खावें।
ते तों आंधा जेम अलूझें, ग्यांन विनां संवलो न सूझें ॥ ७ ॥
कदा जीवादिक नो हुवो जांण, मोप मारग लियो पिछांण।
पिण क्रिया करणी नहीं आवे, तो पिण मुगत नहीं जावे ॥ ८ ॥

मिलिया आंधो नें पांगलो दोय, सुखे नगर पोहता सोय।
ज्यूं ग्यांन क्रिया नों संयोग थाय, तो जीव मुगत माहे जाय॥ ९ ॥
क्रिया तो ग्यान छे नांही, क्रिया तो जांणे देखे नहीं कांइ।
क्रिया तो सुमता रस भाव, कर्म रोकण तोडण रो सभाव॥ १० ॥
ग्यांन दरसण छैं उपयोग, ते जांणे देखे लोक अलोक।
कोइ क्रिया नें कहे उपयोग, तिण ते मोटो मिथ्यात रो रोग॥ ११ ॥
ग्यान क्रिया छे दोय, त्यां नें एक म जांणो कोय।
त्यांरो सभाव जूवो जूवो जांणो, त्यांने रूडी रीत पिछांणो॥ १२ ॥



ढाल : ४

दुहा

केइ अग्यांनी इम कहें, एकेन्द्रिय ना पुन्य अल्प मात।
त्यांनें मार पचेन्द्री पोषियां, तिण में कहें धर्म साख्यात॥ १॥
तिण एकेन्द्री नें वेदना हुवे, ते भोलां नें खबर न कांय।
तिणरी गोतम स्वांमी पूछा करी, जब दीधी वीर बताय॥ २॥

ढाल

[स्वांमी म्हारा राजा नें धर्म सुणाज्यो]

हाथ जोडी विनती करे, नीचो शीष नमाय हो। स्वांमी*।
पृथवी काय हणियां थकां, वेदना केहवी थाय हो। स्वांमी*।
अरज करूं छूं विनती*॥ १॥

तिणरे आंख कांन नासिका नहीं, जिभ्या पिण नहीं ताय हो। स्वा०।
वले मन वचन विण वेदना, भोगे छे किण न्याय हो॥स्वा०अ०२॥
वलता वीर इसडी कहे, अति वेदन हुवे ताय हो। गोतम।
दिष्टांत देइ नें कहुं तो कने, सुण तूं चित लगाय हो। गोतम।
उपकारी इम उपदिशे॥* ३॥

कोइ गुंगो पुरुष छे जन्म रो, वहरो जन्म रो जांण हो।
ते पिण आंधो ने पांगुलो, वले रोग घेरित छे आंण हो॥गो०उ०४॥
तिण अंध पुरुष नें भालां करी, भेदें जायगा बत्तीस हो।
वले बत्तीस जायगां खडगे करी, छेदे कर कर रीस हो॥ ५॥
तिण अंध पुरुष नें हुवे वेदनां, छेदे भेदे तिण वार हो।
एहवी वेदन पृथवी काय नें, हुवे छे दीयां परिहार हो॥ ६॥
ते रांक गरीब छें बापडा, त्यांरी करे हर कोइ घात हो।
त्यांरी पुकार लागें किण आगले, ए इसडा जीव अनाथ हो॥ ७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ढाल : ५

दुहा

मेण लाख लकडा तणो, चोथो माटी रो ताहि।
ए च्यारूंइ गोला कह्या, सूतर ठांणायग मांहि॥ १॥
ज्यूं च्यार जात रा मांनवी, इण संसार मभार।
केइ गीदड केइ सूरमां, ते सुणज्यो विस्तार॥ २॥
साधां री वांणी सुणी च्यारूं जणा, आयो मन वेराग।
आपे इतला दिन आंधां बूहा, अबे उघडिया भाग॥ ३॥
हिवें थांनक बारे नीकल्या, केइ लोक बोल्या छे तडकी।
थे बेठा मूढो बांध नें, भली गमाइ घरकी॥ ४॥
केइक तो इम बोलिया, केइकां दीधी गाल।
मेण गोला ज्यूं परगल्यो, ताप लागो ततकाल॥ ५॥
मेण गोलो सूर्य रा ताप थी, गल नें हुवो नरम।
ज्यूं इण लोकां रा ताप थी, छोड दीयो जिण धर्म॥ ६॥
तीन पुरुप गाढा रह्या, त्यांने पाछा उत्तर आप।
पोता पोता रे घरे आवियां, जिहां बेठा छे मा बाप॥ ७॥
मात पिता ने इम कहे, म्हें सुणी साधां री बांण।
त्या वचन अमोलक बागस्या, म्हांने लागा अमिय समांण॥ ८॥
जब माता त्रिसूलो चाढ नें, बोली मुख सू गेर।
निकल म्हारा घर थी, लेने थारी वेर॥ ९॥
ते हाथ जोडी ने इम कहे, तू म्हांरे जन्म री दाता।
हूं साधां कने जाऊं नहीं, आज पछे हे माता॥ १०॥
सूर्य ताप थी नही पिगलियो, तिण ने लागी अग्नि री झाल।
लाख तणो गोलो हुंतो, पिगलियो ततकाल॥ ११॥
माता वचन करडा कह्या, तिण नें अग्नि जिम भाल।
पोते लाख गोला जिसो, ते भिष्ट हुवो ततकाल॥ १२॥
दोय पुरुष गाढा रह्या, न हुवा मूल उदास।
माता पिता नें उत्तर दीया, हिवे आया नारी रे पास॥ १३॥
नारी पूरी कलेसणी, तिण रे धर्म न आवे दाय।
तीन लिलाडी सल चाढ नें, किण विध बोलें वाय॥ १४॥
तडक भडक बोली इसी, कर आवे ज्यूं दाय।
ओ घर ने ए टाबस्या, हूं कूवें पड स्यूं जाय॥ १५॥

हूं जीमण रांधूं जुगत सूं, तूं आवे खांण नें हूंस्यो।
तूं जाय बेठो मुख बांध नें, बडो धर्म को धूंस्यो॥ १६॥
ए वचन सुणी नारी तणा, भय पाम्यो छे अतंत।
आ मरसी मो ऊपरे, तो करवो कुण विरतंत॥ १७॥
आ मरती दीसें खरा खरी, तो हिवें छोड देवूं जिण धर्म।
ज्यूं सगा संबंधी लोकां मझे, रहे ज्यूं म्हांरी सर्म॥ १८॥
ओ नारी सूं डरतो कहे, राखो म्हांरी सर्म।
थें कूवे कदे पडज्यो मती, हूं कदे न करसूं धर्म॥ १६॥
सूर्य अग्नि रा ताप सूं, पिगल्यो मेंण नें लाख।
त्यां काठ गोलो काठो रह्यो, ते हुवो अग्नि सूं राख॥ २०॥
हूं कोड घणो परण्यो हुंतो, घणां लोकां री साख।
काठ गोला सारिखो थो गीदस्यो, ते बल नें होय गयो राख॥ २१॥
स्त्री अग्नि जिसी कही, तिण री भरे सहु कोइ साख।
काठ गोला जिसो हुंतो, तिण नें बाल कीयो छे राख॥ २२॥
जे आग्याकारी नार नां, ते पडिया इण रे पास।
ते नित डरता रहे तेह सूं, जांनें आग्याकारी दास॥ २३॥
उठ वेस आव जाव रो, कर अमकडियो कांम।
बानर जेम नचावियो, जांणे असल गुलाम॥ २४॥
इसडा गीदड बापरा, तिण सूं धर्म कीयो किम जात।
हिवें चोथो गार गोला जिसो, सुणज्यो तिण री बात॥ २५॥
तिण लोका ने उत्तर दीया, कर मा बाप सूं जाब।
निज स्त्री बेठी तिहां, आयो तुरत सताब॥ २६॥
तिण स्त्री ने मांडी कही, में जिण धर्म जांण्यो आज।
हिवें सामायक पोसा करी, सारूं आतम काज॥ २७॥
ए वचन सुणी नें स्त्री, कीधो क्रोध अपार।
अगल डगल बोली घणी, तीन लीटी चाढी निलाड॥ २८॥
थें मूंडे बांधी मुंहपती, मांड्यो घर में फेंन।
हूं जहर फांसी खाये मरूं, थे किसो एक पावो चेंन॥ २६॥
पाषंड छोडी चालो पाधरा, थें मानों म्हांरी बात।
नहीं तो हूं थां ऊपरे, मर सूं कर अपघात॥ ३०॥
जब इम जांण्यो आ पापणी, नाहरी सम छे नार।
कह्यो करूं जो एहनों, तो म्हांने नरक मझार॥ ३१॥

जो हूं नरमाइ करूं, तो आ उल्टी पाड आव।
तो वणसी म्हांरा भाग री, हिवे देऊं पादरा जाव ॥ ३२ ॥
तू कूवे बावडी पड मरे, थारे उदे हुआ छे कर्म।
पिण हूतो थारे कारणे, छोडूं नही जिण धर्म ॥ ३३ ॥
म्हांरे बंधन छे एक तांहरो, तो तुट जावे इणवार।
तूं कूवे बावडी पड मरे, तो हूं लेसूं संजम भार ॥ ३४ ॥
कत वचन इसडो कह्यो, जब पीहर गइ रीसाय।
घणो ओसीयालो होय नें, मोने ले जासी मनाय ॥ ३५ ॥
स्त्री आगे मूल चलियो नही, ओ अडिग रह्यो व्रत झाल।
ओ तों गार गोला जिसो, ज्यू घमे ज्यूं लाल ॥ ३६ ॥
इण लारे तेलो करे, आडा जडे किंवाड।
तीन पोसा ठाय नें, धर्म ध्यांन ध्यावे तिणवार ॥ ३७ ॥
स्त्री बाट जोए रही, मनाय लेजावे मोय।
तीन दिन विचें गया, पिण अजे न आयो कोय ॥ ३८ ॥
छोरा छोरी पीहर तणा, भेला कर मेल्या सोय।
थांरो बेनोंइ कांई करे, पाछो आय कहिज्यो मोय ॥ ३९ ॥
ते भेला होय ने आविया, जोवे छेकली माहि।
मस्तक उघाडे मुंह मुंहपती, बेठो दीठो घर माहि ॥ ४० ॥
ते देखी पाछा आय नें, मांड कही सर्व बात।
जब धसको पड्यो तेहने, घर गयो दीसें साख्यात ॥ ४१ ॥
बेंन भाइ मा वाप नें, साथे ले आइ तेह।
हिवें हाथ जोडी ने इम कहे, मोनें कदे म दीजो छेह ॥ ४२ ॥
टावरियां घर तणी, थांनें छे आशर्म।
उवे मुनिवर मोटा जती, थें करो जोख सूं धर्म ॥ ४३ ॥
मैं संजम री सुणी वारता, म्हांरा गल गल हुवा नेंण।
थें बुरो मूल मांनो मती, म्हें हसती बोल्या बेंण ॥ ४४ ॥
हू कह्यो न लोपूं तुम तणो, हूं रहसूं आग्याकार।
थें घर बेठांइ करो धर्म, मत लो संजम भार ॥ ४५ ॥
जब कंत कहे सुण कांमणी, ओ हूं करूं नही करार।
जब म्हांरो मन ऊठसी, तब लेसूं संजम भार ॥ ४६ ॥
जब स्त्री मन मांहे जांणियो, ओ रखे छोडेला मोय।
सो विनय भक्ति करूं घणी, इण रो कह्यो न लोपं कोय ॥ ४७ ॥

आ मल गमती चाले घणी, करे लाल नें पाल।
पिण ओ छे गार गोला जिसो, ज्यूं घमें ज्यूं लाल ॥ ४८ ॥
इसडा होसी मांनवी, ते करसी जिण धर्म।
कायर तीन गोला जिसा, त्यांरो नीकल गयो छे भर्म ॥ ४९ ॥

रत्न : ३०

अणुकम्पा री चौपई

ढाल : १

दुहा

अणुकंपा नें आदरे, कीजों घणा जतन।
जिणवर ना धर्म मांहिली, समकत पाय रतन॥ १ ॥
गाय भेंस आक थोंर नों, ए च्यारूंई दूध।
तिम अणुकंपा जांणजों, राखे मन में सूध॥ २ ॥
आक दूध पीधां थकां, जुदा करे जीव काय।
ज्यूं सावद्य अणुकंपा कीयां, पाप कर्म बंधाय॥ ३ ॥
भोलेंई मत भूलजों, अणुकंपा रे नांम।
कीजो अंतरंग पारखा, ज्यूं सीझें आतम कांम॥ ४ ॥
अणुकंपा में आगन्यां, तीर्थंकर नी होय।
सावद्य निरवद ओलखों, सूतर साह्मां जोय॥ ५ ॥

ढाल

[समकित वमियो नन्दरा०]

मेघ कुंमर हाथी ना भव में, श्री जिण भाषी दया दिल आई।
उंचो पग राख्यों सुसीयो न मास्यों, या करणी श्री वीर सराई।
या अणुकपा जिण आगन्या मे*॥ १ ॥
कष्ट सह्यों तिण पाप सू डरते, मन दिढ सेंठी राखी तिण काया।
बलता जीव दावानल जांणी, सूंड सू गिर गिर बारें न ल्याया॥ या० २ ॥
परत ससार कीयों तिण ठांमें, उपनो श्रेणक नें घर आई।
भगवंत आगला दीष्या लीधी, पेंहला अधेन गिनाता मांहि॥ ३ ॥
मांडलो एक जोजन रो कीधो, घणा जीव वचीया तिहां आई।
तिण वचीयां रो धर्म न चाल्यो, समकत आया विण समझ न कांई।
या अणुकपा सावद्य जाणों॥ ४ ॥
नेम कुंमर परणीजण चाल्या, पसू पंखी देख दया दिल आंणी।
एहवो कांम सिरें नही मोनें, म्हारे काज मरें बहु प्रांणी॥ ५ ॥
परणीजणा सूं परिणांम फिरीया, राजमती नें उभी छिटकाई।
कर्म तणा बंध सूं नेम डरीया, तोडी आठ भवां री सगाई॥ ६ ॥
आप सूं मरता जीव जांणी नें, कडवा तूंबा रो कीधों आहारो।
कीडीयां री अणुकंपा आंणी, धिन धिन धर्म रूची अणगारो॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

फोडवी लब्द अणुकंपा आंणी, गोसाला नें वीर बचायो।
छ लेस्या छदमस्थ हूंता, मोह कर्म वश रागज आयो।
या अणुकंपा सावद्य जाणों ॥ ८ ॥

असंजती गोसालो कुपातर, तिणनें साहज सरीर रो दीधो।
धर्म जांणें तो जगत दुखी था, वले वीर ए कांम कांय न कीधों ॥ या० ९ ॥
तेजु लेस्या मेल गोसालें, बाल्या दोय साध भसम करी काया।
लब्द धारी था साध घणाई, मोटा पुरुषां नें क्यूं न बचाया ॥ १० ॥
जिण राखियें अणुकंपा कीधी, रेंणा देवी तिण साह्मों जोयो।
सेलग जष हेठो उतार्यो, देवी आंण खड्ग में पोयों ॥ ११ ॥
भगता हिरण गमेषी नी सुलसा, कीधी अणुकंपा विलखी जांणी।
छ बेटा देवकी रा जाया, सुलसा रें घर मेल्या आंणी ॥ १२ ॥
जगन वाडे हरकेसी आया, असणादिक तेहनें नहीं दीधों।
जषदेव अणुकंपा आंणे, रुद्र वमता ब्राह्मण कीधां ॥ १३ ॥
मेघकुमर गर्भे हूंता जब, सुख रें ताई कीधां अनेक उपायो।
धारणी रांणी कीधी अणुकंपा, मन गमता असणादिक खायो ॥ १४ ॥
अभयकुमार रो मित्री देवता, तिण अभयकुमर री अणुकंपा आणी।
धारणी रांणी रो डोहलो पूर्यो, अकाले विरषा कर ने वरसायो पांणी ॥ १५ ॥
किसनजी नेम वंदण नें जातां, एक पुरुष नें दुखीयों जाणी।
साज दीयो अणुकंपा कीधी, ईंट उठाय उणरें घर आंणी ॥ १६ ॥
दुखीया दोहरा देख दलद्री, अणुकंपा उणरी किण आंणी।
गाजर मूलादिक सचित्त खवावें, वले पावें काचो अणगल पांणी ॥ १७ ॥
दुखीया जीव मारग मांहें देखी, टल जाए साध संकोची काया।
आप हणें नहीं पाप सूं डरता, अणुकंपा आंण न मेले छाया ॥ १८ ॥
उपाडे नें जो छाया मेलें तों, असंजती नीं बीयावचा लागी।
या अणुकंपा साध करें तों, जाए पांचूंई महावरत भागी ॥ १९ ॥
सो साध ग्रिषमकाल उन्हालें, पांणी विनां हुवें जुदा जीव काया।
अणुकंपा आंणे नें असुध वेंहरावें, छ काया रा पीहर साधु बचाया ॥ २० ॥
गज सुखमाल ले नेम री आग्या, काउसग कीयो मसांणा में जाई।
सोमल आंण खीरा सिर घाल्या, सीस न धूण्यों दया दिल आई ॥ २१ ॥
साधु विनां अनेरा सर्व जीवां री, अणुकंपा आणे साध बांधे बंधावें।
तिणनें नसीत रे बारमें उद्देसें, तिण साध नें चोमासी प्राछित आवें ॥ २२ ॥

रासडीयादिक सूं तस जीव बंध्या छे, ते तो भूख तिरषादि सूं अतत दुख पावे।
त्याने अणुकंपा आणे ने छोडे छोडावे, तिण साध ने चोमासी प्राछित आवे॥ २३॥
व्याध कसटादिक रोगीलो सुण ने, तिण उपर वेद चलाए ने आवे।
साजो करे अणुकपा आणें, गोली चूरण दे रोग गमावे॥ २४॥
लवदधारी ना खेलादिक थी, सोलेई रोग जडां सू जावे।
वले जाणे साध ए रोग सू मरसी, अणुकपा आणे रोग नही गमावें॥ २५॥
जो अणुकपा साध करे तो, उपदेस देई वेराग चढावे।
चोखे चित पेलो हाथ जोडे तो, च्यारूंई आहार ना त्याग करावें।
या अणुकपा निरवद जांणों॥ २६।
गृहस्थ भूलो उजाड वन मे, अटवी ने वले उजड जावे।
अणुकपा आणे साध मारग बतावे, तो च्यार महीना रो चारित जावें॥ २७॥
अटवी मे भूला ने अतत दुखी देख, च्यारूंई सरणा साध दिरावें।
मारग पूछें तो मुनज साझें, बोलें तो भिन भिन धर्म सुणावें।
या अणुकंपा निरवद जांणों॥ २८॥



ढाल २

दुहा

अणुकंपा इह लोक नी, कर्म तणो बंध होय।
ग्यांन दरसण चारित विनां, धर्म म जांणो कोय ॥ १ ॥
जे अणुकंपा साधु करे, ते नवा न बांधें कर्म।
तिण मांहिली श्रावक करें, तिणमे पिण छे धर्म ॥ २ ॥
साध श्रावक दोनूं तणी, एक अणुकंपा जांण।
इमरत सहु नें सारिषों, कूडी मत करों तांण ॥ ३ ॥
वरजी अणुकंपा साव नें, सूतर नीं दे साख।
चित्त लगाय नें सांभलो, श्री वीर गया छे भाष ॥ ४ ॥

ढाल

[सोरठा, यतनी नी देशी]

डाभ मूंजादिक नीं डोरी, बंधीया करे हेला नें सोरी।
सी तापादिक कर दुखीया, साता वांछें जांणें हुवां सुखीया ॥ १ ॥
अणुकंपा उणारी आंणें, छोडें छोडावें नें भलों जांणें।
तिणनें चोमासी प्रायछित आवें, धर्म जांणें तों समकत जावें ॥ २ ॥
इम बांधे बंधावे हुवें राजी, तिणरो संजम गयो भाजी।
ए तो सावद्य कांमा जांणों, तिणरा सावां कीया पचखाणों ॥ ३ ॥
जीवणों मरणों नहीं चावें, साध क्यांने बंधावें छोडावें।
ज्यांरी लागी मुगत सूं ताली, नहीं करें तिके रुखवाली ॥ ४ ॥
गृहस्थ रें लागी लायों, घर बारें नीकलीयो न जायों।
बलतो जीव बिल बिल बोलें, साधु जाय किवाड न खोलें ॥ ५ ॥
दरबे भावें लाय लागी, तिण मांहें केयक वेंरागी।
तिणरी अणुकंपा आवें, उपदेश देई समभावें ॥ ६ ॥
जनम मरण री लाय थी काढें, उणरों कांम सिरांडें चाढें।
पकडावें ग्यांनादिक डोरी, तिण थी आठूंई कर्म दें तोडी ॥ ७ ॥
अणुकंपा कीयां डंड आवें, परमारथ विरला पावे।
नसीत नों बारमों उद्देशों, जिण भाष्यों दया नों रेंसो ॥ ८ ॥
छोडें साध सूतर में कहें चाल्यो, ए तो अर्थ अणहूंतो घाल्यों।
भोला नें कुगुरां बेंहकाया, कूडा कूडा अर्थ बताया ॥ ९ ॥

सिंघ वाघादिक मंजारी, हिंसक जीव देखी आचारी।
त्यांनें मार कह्यां हिंसा लागें, पेंहलोई महावरत भागें ॥ १० ॥
मत मार कह्यां उणरो रागी, तीजें कारण हिंसादिक लागी।
सूयगडाअग छे साखी, श्री वीर गया छे भाखी ॥ ११ ॥
गृहस्थ नां सरीर ममता मे, साधु बेठो समता मे।
रह्या धर्म सुकल ध्यांन ध्याई, मूंआ गयां फिकर न काई ॥ १२ ॥
इह लोक ने पर लोक, जीवणो मरणो काम भोग।
ए तो पाचूंई छें अतिचार, वांध्यां नही धर्म लिगार ॥ १३ ॥
आपणोंई वाछें तो पाप, पर नो कुण घाले संताप।
घणों जीवणो वांछें अग्यांनी, समभाव राखें ते ग्यांनी ॥ १४ ॥
वायरो विरषा सी ताप, रह्यो न रह्यो चावें तो पाप।
राज विरोघ रहीत सुकाल, उपद्रव जावो ततकाल ॥ १५ ॥
साता बोलां रो ए विसतार, ओलखीयो ते अणगार।
घट माहे जो सुमता आवे, हुवा न हुवा एको ही न चावे ॥ १६ ॥
एकण रे दे रे चपेटी, एकण रो दे उपद्रव मेटी।
ए तो राग द्वेष नों चालो, दसवीकालक संभालो ॥ १७ ॥
साघ बेठों नावा में आई, नावडीए नाव चलाई।
नावा फूटी मांहें आवे पांणी, साघ देखें लोकां नही जांणी ॥ १८ ॥
आप डूबें अनेरा प्रांणी, किणरी अणुकंपा नाणी।
वतायां वरत रो भग, तिणरो साखी आचारंग ॥ १९ ॥
सानी कर साघ जतावे, लोक कुसले खेमें घर आवे।
डूबा पिण साघ न चावे, रह्या चावें तो तुरत बतावे ॥ २० ॥
मूंन साघ रह्या ते संत, तिके करें संसार नो अंत।
परिणामज राखें सेंठा, धर्म ध्यांन माहे रहें बेठां ॥ २१ ॥



ढाल : ३

दुहा

वांछें मरणों जीवणों, तो धर्म तणों नही अंस।
ए अणुकंपा थकां, वधें कर्म नों वंस॥ १ ॥
मोह अणुकंपा जे करे, तिणमें राग ने धेष।
भोग वधें इंद्र्यां तणो, अंतर उंडो देख॥ २ ॥
दया अणुकंपा आदरे, तिण आतम आंणी ठाय।
मरतो देखे जगत नें, सोच फिकर नहीं कांय॥ ३ ॥
कष्ट सह्या घर में थकां, पाल्या वरत रसाल।
मोह अणुकंपा श्रावकां, त्यां पिण दीधी टाल॥ ४ ॥
काचा था ते चल गया, ते होय गया चकचूर।
के सेठां रह्या चलीया नहीं, त्यानें वीर वखांण्या सूर॥ ५ ॥

ढाल

तुम जायेज्यो रे स्वारथ ना सगा]

चंपा नगरी नां वांणीयां, ज्याज भर नें समुदर में जाय रे।
हिवें तिण अवसर एक देवता, त्यांनें उपसर्ग कीधो आय रे।
जीव मोह अणुकंपा न आणीए* ॥ १ ॥
मिनका सीयाल खांधे वेसांण नें, गले पेंहरी छे रूंड माल रे।
लोही राव सूं लीप्यो सरीर नें, हाथे खडग दीसें विकराल रे॥ जी० २ ॥
लोक धड धड लागा धूजवा, ओर देव रह्या मन ध्याय रे।
अरणक श्रावक डरीयो नहीं, तिण काउसग दीधो ठाय रे॥ ३ ॥
सागारी अणशण कीयों, धर्म ध्यान रह्यो चित्त ध्याय रे।
सगलां ने जांण्या डूबता, अणुकंपा न आंणी कांय रे॥ ४ ॥
अरणक श्रावक नें डिगायवा, देव वदि वदि बोलें वाय रे।
जो अरणक धर्म न छोडसी, तो ज्याज डबोवूं जल मांय रे॥ ५ ॥
उंची उपाड नें उंधी न्हांख नें, कर सूं सगलां री घात रे।
काली बोली अमावस रा जण्या, मांन रे तूं अरणक बात रे॥ ६ ॥
ग्यांन दरसण म्हांरा वरत नें, इणरों कीधों विघन न थाय रे।
हूं सेवग छूं भगवांन रो, मोनें कोइ न सकें चलाय रे॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

लोक विल विल करता देख ने, अरणक रो न विगड्यो नूर रे।
मोह करुणा न आणी केहनी, देव उपसर्ग कीधो दूर रे॥ ८॥
देव धिन धिन अरणक ने कहे, तूं तो जीवादिक नो जाण रे।
थांरा सुधर्मी सभा मझे, इन्द्र कीया घणा वखाण रे॥ ९॥
अरणक श्रावक रा गुण देख नें, आया देव री दाय रे।
दोय कुंडल री जोडी आप ने, देव आयो जिण दिस जाय रे॥ १०॥
नमीराय रिषि चारित लीयो, ते तो उभो बाग मे आय रे।
इन्द्र आयो तिणने परखवा, ते किण विध बोले वाय रे॥ ११॥
थारी अगन करी मिथला बलें, एकर सू साह्मो जोय रे।
अतेवर बलतो मेलसी, ए वात सिरे नही तोय रे॥ १२॥
सुख वपराय सारा लोक मे, विलखा देख पुत्र रतन रे।
जो तू दया पालण ने उठीयो, तो कर तूं यांरा जतन रे॥ १३॥
नमी कहे वसूं जीवूं सुखे, म्हारी पल पल सफला जाव रे।
या मिथला नगरी दाझता, म्हारो बले नही तिलमात रे॥ १४॥
मोंनें हरख नहीं मिथला रह्या, वलीया नही सोग लिगार रे।
मैं सावद्य जांण त्यागी जका, रही बली न चावें अणगार रे॥ १५॥
नमिराय रिषी आंणी नही, मोह अणुकंपा नी वात रे।
समभाव राखे मुगते गया, करे अष्ट कर्मां री घात रे॥ १६॥
श्री केसव केरो बधवो, यो तो नामे गजसुखमाल रे।
तिण दीख्या ले काउसग्ग रह्यो, सोमल आयो तिण काल रे॥ १७॥
माथें पाल बाधी माटी तणी, माहे घाल्या लाल अंगार रे।
कष्ट ऊपनों वेदन अति घणी, नेम करुणा न आणी लिगार रे॥ १८॥
श्री नेम जिणेसर जाणता, होसी गज सुखमाल री घात रे।
पिण अणुकंपा आंणी नही, ओर साध न मेल्या साथ रे॥ १९॥
श्री वीर जिणद चोवीसमा, कल्पातीत मोटा अणगार रे।
त्यानें देव मिनष तिरजंच नां, उपसर्ग उपनां अपार रे॥ २०॥
सगम देवता भगवत नें, दुख दीधा अनेक प्रकार रे।
अनार्य लोकां पिण वीर ने, स्वांनादिक दीवा लार रे॥ २१॥
चोसठ इंद्र मोहछव आवीया, दीख्या दिन भेला होय रे।
पिण कष्ट पड्यो भगवान ने, नायो उपसर्ग टालण कोय रे॥ २२॥
दुख देता देखी जगनाथ ने, किण अलगा न कीधा आय रे।
समदिष्टी देव हुंता घणा, त्यां करुणा न आणी कांय रे॥ २३॥

देवता जांण्यों श्री विरधमांन रे, उदे आया दीसें छें कर्म रे।
अणुकंपा आंण विचें पड्यां, ए जिण भाष्यो नहीं धर्म रे॥ २४॥
धर्म हुवें तो आघों नहीं काढता, वले वीर नें दुखीया जांण रे।
परीसो देवण आवे तेहनें, देव अलगो करता तांण रे॥ २५॥
मछ गलागल मंड रही, सारा दीप समुद्रां मांय रे।
भगवंत कहे जो इंद्र नें, तो थोडा में दीयें मिटाय रे॥ २६॥
पडती जांणें अंतराय नें, तो अचित खवारें पूर रे।
एहवी सकत घणी छें इंद्र नीं, पिण कर्म न हुवें दूर रे॥ २७॥
चूलणी पीया नें पोसा मझें, देव दीघा छें दुख आय रे।
कुण कुण हवाल तिण कीया, ते सांभलजो चित्त ल्याय रे॥ २८॥
तीन बेटां रा नव सूला कीया, तिणरा मूंहढा आगें लाय रे।
तेल उकाल नें मांहें तल्या, बलबलता सूं छांटी काय रे॥ २९॥
समें परिणामां वेदना सही, जांणी आपणा संच्या कर्म रे।
अणुकंपा नांणी अंगजात री, तिण छोड्यो नही जिण धर्म रे॥ ३०॥
मत मारण रो कह्यों नहीं, ते तों जांण्यों सावद्य वाय रे।
करुणा नांणी मरता देख ने, सेंठों रह्यों धर्म ध्याय रे॥ ३१॥
जो तूं धर्म न छोडसी, तो थारें देव गुर जिम छे माय रे।
तिणने मारूं विघ आगली, थांरा मूंहढा आगें ल्याय रे॥ ३२॥
जद आरत ध्यांन तूं ध्याय नें, परसी माठी गति में जाय रे।
सुणनें चूलणीपीया चळ गयों, मानें राखण रो करें उपाय रे॥ ३३॥
ओ तों पुरप अनर्थ करें जिसो, झाल राखूं ज्यूं न करें घात रे।
ते तों भद्रा बचावण उठीयों, इणरें थांभो आयो हाथ रे॥ ३४॥
अणुकंपा आंणी जणणी तणी, तो भागा वरत नें नेम रे।
देखों मोह अणुकंपा एहवीं, तिणमें धर्म कहीजें केम रे॥ ३५॥
चूलणीपीया नें सूरादेव नां, चलशतक नें सकडाल रे।
यां च्यांरा रा मार्‍या दीकरा, देव तलीया तेल उकाल रे॥ ३६॥
बेटां नें मरता देखीया, नांणी मोह अणुकंपा पेम रे।
उठ्या मात त्रियादिक राखवा, तों भागा वरत नें नेम रे॥ ३७॥
मात त्रियादिक राखतां, भागा वरत नें बंध्या कर्म रे।
तो साध विचे जाए पडीयां थकां, यांनें किण विध होसी धर्म रे॥ ३८॥
चेडा नें कोणिक री वारता, निरावलिका भगोती साख रे।
मांनव मूंआ दोय संगरांम में, एक कोड नें असी लाख रे॥ ३९॥

भगवंत अणुकंपा आंण नें, पोतें न गया न मेल्या साघ रे।
यांनें पेंहला पिण वरज्यां नहीं, घणा जीवां री जाणे विराघ रे॥ ४० ॥
ए दया अणुकंपा जांणता, तो वीर बडालें जाय रे।
सगला ने साता वपरावता, थोडा में देता चकाय रे॥ ४१ ॥
कोणिक भगता भगवांन रो, चेंडो बारें वरतघार रे।
इंद्र भीढी आयों ते समकती, अे किण विघ लोपता कार रे॥ ४२ ॥
ग्यांन दरसण चारित माहिलों, वघतों जांणें किणरों उपाय रे।
तो करें अणुकंपा भव जीव री, वीर विनां बोलायां जाय रे॥ ४३ ॥
समुद्र पाली सुखां में मिल रह्यो, संसार विषें रस लाग रे।
चोर नें मारतो देखी ऊपनों, उतकष्टो परम वेंराग रे॥ ४४ ॥
चारित लीयो कर्म काटवा, जाणें मोष तणों उपाय रे।
पिण करुणा न आंणी चोर नीं, छोडावण री न काढी वाय रे॥ ४५ ॥
साघ श्रावक नीं एक रीत छें, तुमे जोवो सूतर नों न्याय रे।
देखो अंतर माहे विचार नें, कूडी कांय करों वकवाय रे॥ ४६ ॥



ढाल : ४

दुहा

दुखीया देखी तावडें, जो नहीं मेलें छाय।
साध श्रावक न गिणें तेहनें, ए अन तीरथी नीं वाय॥ १ ॥
मार्‍यां मरायां भलो जांणीयां, तीनूंई करणां पाप।
देखण वाला नें जे कहें, ते खोटा कुगुर सराप॥ २ ॥
करमां कर नें जीवडा, उपजें ने मर जाय।
असंजम जीतव्य तेहनों, ते साध न करें उपाय॥ ३ ॥
देखे मांहोमांहि विणसता, अलगो करदां जाय।
एहवो कहें तिण उपरें, साध बतावें न्याय॥ ४ ॥

ढाल

[दुलहो मानव भव काई तुमें]

नाडो भरीयो छे डेडक माछल्यां, मांहें नीलण फूलण रो पूर हो। भविकजण।
लट फूहांरा आदि जलोक सूं, तस थावर भरीया अरूड हो। भविकजण।
करजों पारख जिण धर्म री *॥ १ ॥

सुलीया धांन तणो ढिगलो पर्‍यो, मांहें लटां ने ईल्यां अथाय हो।
सुलसल्यां इंडादिक अति घणा, किल विल करें तिण मांय हो॥क०२॥
एक गाडो भर्‍यों जमीकंद सूं, तिणमें जीव घणा छे अनंत हो।
च्यार प्रज्या च्यार प्रांण छें, मार्‍यां कष्ट कह्यो भगवंत हो॥ ३ ॥
काचा पांणी तणा माटा भर्‍या, घणा जीव छें अणगल नीर हो।
नीलण फूलण आदि लटां घणी, त्यांमें अनंत बताया छे वीर हो॥ ४ ॥
खात भीनों उकरडी लटां घणी, गींडोला गधईया जांण हो।
टलबल टलवल कर रह्या, यांनें कर्मां नांख्या छे आंण हो॥ ५ ॥
कांयक जायगां में उंदर घणा, फिरें आमां नें सांह्या अथाग हो।
थोडों सो खडकों सांभलें, तो जावें दिसोंदिश भाग हो॥ ६ ॥
गुल खांड आदि मिसटांन में, जीव चिहुं दिस दोड्या जाय हो।
माख्यां नें मांका फिर रह्या, ते वों दुचकें मांहोमां आय हो॥ ७ ॥
नाडों देखी नें आवें भेंसीयां, धांन ढूकें बकरा आय हो।
गाडें आवें बलद पाधरा, माटों आय उभी छें गाय हो॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पंखी चूगें उकरली उपरे, उंदर पासे मिनकी जाय हो।
माखी ने माका पकड लें, साधु किणनें वचावें छोडाय हो॥ ९॥
भेस्यां हाकल्यां नाडा माहिलां, सगला रे साता थाय हो।
बकरा ने अलगा कीयां, इंडादिक जीव ते बच जाय हो॥ १०॥
थोडा सा बलदां ने हाकल्यां, तो न मरे अनत काय हो।
पाणी फूंहारादिक किण विध मरे, नेडी आवण न दें गाय हो॥ ११॥
लट गीडोलादिक कुसले रहे, जो पंखी नें दीये उडाय हो।
मिनकी छछकार नसार दें, तो उंदर घर सोग न थाय हो॥ १२॥
मांका ने आघो पाछो करे, तो माखी उड नाठी जाय हो।
साधा रे सगला सारिषा, ते तो विचें न पडें जाय हो॥ १३॥
मिनकी धाकल उदर वचाय ले, माखी राखें माका ने धकाय हो।
ओर मरता देख राखे नही, यामे चूक पड्यो ते वताय हो॥ १४॥
साध पीहर वाजे छ काय नां, एक छोडावें तस काय हो।
पांच काय मरती राखे नही, तो पीहर किण विध थाय हो॥ १५॥
रजूहरण लेई ने उ उठीयों, जोरी दावे दीयो छुडाय हो।
ग्यान दरसण चारित मांहिलो, यारें वधीयो ते मोय वताय हो॥ १६॥
ग्यान दरसण चारित तप विनां, ओर मुगिति रो नही उपाय हो।
छोडा मेला उपगार संसार नां, तिण थी सद गति किण विध जाय हो॥ १७॥
जितरा उपगार संसार नां, ते तो सगलाइ सावद्य जांण हो।
श्री जिण धर्म मे आवे नही, कूडी म करों तांण हो॥ १८॥
अग्यानी रो ग्यांनी कीया थका, हुवो निश्चें पेला रो उधार हो।
कीयों मिथ्याती रो समकती, तिण उतारीयों भव पार हो॥ १९॥
असजती ने कीयो संजती, ते तों मोष तणा दलाल हो।
तपसी कर पार पोंहचावीयो, तिण मेल्या सर्व हवाल हो॥ २०॥
ग्यान दरसण चारित ने तप, यारों करें कोइ उपगार हो।
आप तिरे पेलो उधरे, दोयां रों खेवों पार हो॥ २१॥
ए च्यार उपगार छें मोटका, तिणमे निश्चेंई जाणों धर्म हो।
शेष रह्या कार्य ससार नां, तिण कीधां बधसी कर्म हो॥ २२॥

ढाल : ५

दुहा

जीव दया छें उपरें, मुलगा तीन दिष्टंत।
आगें विसतार करें जितों, ते सुणजो कर खंत ॥ १ ॥

ढाल

[सहेल्या रा वादो रुडा साध नें]

एक चोर चोरें धन पार को, वले दूजो हों चोरावें आगेंबांण।
तीजों, कोइ करें अनुमोदनां, ए तीनां रा हो खोटा किरतब जांण।
भव जीवां तुमें जिण धर्म ओलखों* ॥ १ ॥

एक जीव हणें तसकाय ना, हणावे हो बीजों पर नां प्रांण।
तीजों पिण हरखे मारीयां, ए तीनूंई हो जीव हिंसक जांण ॥ भ० २ ॥

एक कुसील सेवें हरख्यों थको, सेवाडे हो ते तो दूजें करण जोय।
तीजों पिण भलो जांणे सेवीयां, ए तीनां रे हो कर्म तणों बंध होय ॥ ३ ॥

ए सगला नें सतगुर मिल्या, प्रतिबोध्या हो आंण्या मारग ठाय।
किण किण जीवां नें साधां उधस्था, तिणरो सुणजो हो विवरा सुध न्याय ॥ ४ ॥

चोर हिंसक नें कुसीलीया, यांरें तांई रे दीधो साधां उपदेस।
त्यांनें सावद्य रा निरवद कीया, एहवो छें हो जिण दया धर्म रेस ॥ ५ ॥

ग्यांन दरसण चारित तीनूं तणों, साधां कीधो हो जिण थी उपगार।
ते तो तिरण तारण हुआं तेहनां, उतास्या हो त्यांनें संसार थी पार ॥ ६ ॥

ए तो चोर तीनूं समझ्यां थकां, धन रह्यो रे धणी नें कुसले खेम।
हिंसक तीनूं प्रतिबोधीयां, जीव बचीया हो कीधो मारण रो नेम ॥ ७ ॥

सील आदरीयो तेहनी, अस्त्री पडी हो कूआ मांहें जाय।
यांरो पाप धर्म नहीं साध नें, रह्या मूंआ हो तीनूं इविरत मांय ॥ ८ ॥

धन रो धणी राजी हुवों धन रह्यां, जीव बचीया हो ते पिण हरषत थाय।
साध तिरण तारण नहीं तेहनां, नारी नें पिण हो नहीं डबोई आय ॥ ९ ॥

कोइ मूंढ मिथ्याती इम कहें, जीव बचीया हों धन रह्यों ते धर्म।
तो उणरी सरधा रे लेखें, अस्त्री मूंई हो तिणरा लागें कर्म ॥ १० ॥

जीव जीवें ते दया नहीं, मरें ते हो हिंसा मत जांण।
मारण वाला नें हिंसा कही, नहीं मारे हो ते तों दया गुण खांण ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

नींब आंबादिक विरष नो, किण ही कीधो हो वाढण रो नेम।
इविरत घटी तिण जीव नी, विरष उभो हो तिणरो धर्म केम ॥ १२ ॥
सर द्रह तलाव फोडण तणों, सूस लेइ हो मेट्या आवता कर्म।
सर द्रह तलाव भर्या रहें, तिण माहि हो नही जिणजी रो धर्म ॥ १३ ॥
लाडू घेवर आदि पकवांन नें, खाणा छोड्या हो आतम आंणी तिण ठाय।
वेंराग वध्यों तिण जीव रें, लाडू रह्यों हो तिणरो धर्म न थाय ॥ १४ ॥
दव देवो गांम जलायवो, इत्यादिक हो सावद्य कार्य अनेक।
ए सर्व छोडावें समझाय ने, सगला री हो विध जांणों तूमें एक ॥ १५ ॥
हिवें कोइक अग्यानी इम कहें, छ काय काजे हो द्यां छां धर्म उपदेस।
एकण जीव नें समझावीयां, मिट जाए हो घणा जीवा रो कलेश ॥ १६ ॥
छ काय घरे साता हुइ, एहवो भाषे हो अण तीरथी धर्म।
त्यां भेद न पायो जिण धर्म रो, ते तो भूला हो उदें आयो मोह कर्म ॥ १७ ॥
हिवें साध कहें तुमे साभलों, छ काया रे हो साता किण विध थाय।
सुभ असुभ बांध्या ते भोगवें, नही पाम्या हो त्यां मुगत उपाय ॥ १८ ॥
हणवा सूंस कीया छ काय नां, तिणरे टलीया हो मेला असुभ कर्म पाप।
ग्यांनी जांणें साता हुई एहने, मिट गया हो जनम मरण संताप ॥ १९ ॥
साध तिरण तारण हुआ एहना, सिव गति मे हो मेल्यो अविचल ठाम।
छ काय लारें भिलती रही, नही सभीया हो तिणरा आतम कांम ॥ २० ॥
आगें अरिहंत अनंता हुआ, कहता कहता हो कदे नावें त्यांरो पार।
आप तिर्या ओरां नें तारीया, छ काया रे हो साता न हुइ लिगार ॥ २१ ॥
एक पोतें बच्यों ते मरवा थकी, दूजे कीधो हो तिणरे जीवण रो उपाय।
तीजों पिण हरष्यों उण जीवीयां, यां तीनां मे हो कुण सुध गति जाय ॥ २२ ॥
कुसले रह्यो तिणरे इविरत घटी नही, तो दूजा ने हो तुमे जांणजो एम।
भलो जाणें तिणरें विरत न नीपनी, ए तीनूंई हो सुध गति जासी केम ॥ २३ ॥
जीवीयां जीवायां भलो जांणीयां, ए तीनूंई हो करण सरीषा जाण।
कोइ चतुर होसी ते परखसी, अणसमझ्या हो करसी ताणा ताण ॥ २४ ॥
छ काया रो वांछें मरणो जीवणो, ते तो रहसी हो संसार मझार।
ग्यांन दरसण चारित तप भला, आदरीयां हो आदरायां खेवो पार ॥ २५ ॥

ढाल : ६

दुहा

पोतें हणे हणावें नहीं, पर जीवां ना प्रांण।
हणे जिणनें भलो जांणें नहीं, ए नव कोटी पचखांण ॥ १ ॥
ए अभय दांन दया कही, श्री जिण आगम मांय।
तो पिण द्वंध उठावीयों, जेंनी नांम धराय ॥ २ ॥
अभय दांन न ओलख्यों, दया री खबर न कांय।
भोला लोकां आगलें, कूडा चोज लगाय ॥ ३ ॥
कहें साध बचावें जीव नें, ओरां नें कहें तूं बचाय।
भलों जांणे वचीयां थकां, पिण पूछ्यां पलटे जाय ॥ ४ ॥

ढाल

[जगत गुरु तिसला नन्दन वीर]

इण सावां रा भेष में जी, बोलें एहवी वाय।
म्हें पीहर छां छ काय नां जी, जीव वचावां जाय।
चतुर नर समझो ग्यांन विचार ॥ १ ॥
एहवी करें परूपणा जी, बोले बंध न होय।
पलट जाए पूछ्यां थकां जी, भोलां खबर न कोय ॥ चु० स० २ ॥
पेट दुखे सों श्रावकां जी, जुदा हुवें जीव काय।
साध आया तिण अवसरे जी, हाथ फेर्यां सुख थाय ॥ ३ ॥
साध पधार्या देख नें जी, गृहस्थ बोल्या वाय।
थें हाथ फेरो पेट उपरें जी, अें श्रावक जीवां जाय ॥ ४ ॥
जब कहें हाथ न फेरणो जी, ए साध नें कल्पें नांय।
थें कहिता जीव वचावणो, तो बोल नें बदलो कांय ॥ ५ ॥
गोसाला नें वीर वचावीयों जी, तिणमें कहे छे धर्म।
सों श्रावक नहीं वचावीयां, त्यांरी सरधा रो निकल्यों भर्म ॥ ६ ॥
गोसाला रे कारणें जी, लब्द फोडी जगनाथ।
सों श्रावक मरता देख नें, ते कांय न फरों हाथ ॥ ७ ॥
धर्म कहें भगवंत नें, पोतें कांय छोडी रीत।
सों श्रावक नहीं वचावीयां, त्यांरी कुण मांनें परतीत ॥ ८ ॥

गोसाला ने बचावीयां में, धर्म कहे साख्यात।
तो सो श्रावक नही बचावीयां, त्यांरी विगडी सरधा वात॥ ९ ॥
इम कह्यां जाव न ऊगजें, जब कूडी करें बकवाय।
हिवें साध कहे तुमें सांभलों जी, गोसाला रो न्याय॥ १० ॥
साध नें लब्द न फोडणी, कह्यों सूतर भगोती रे मांय।
पिण मोह कर्म वस राग थी जी, लीयो गोसालो बचाय॥ ११ ॥
छ लेस्या हुती जद वीर में जी, हूता आठूंई कर्म।
छदमस्थ चूका तिण समें जी, मूर्ख थापे धर्म॥ १२ ॥
छदमस्थ चूक पड्यों तिकों जी, मुंढे आंणे बोल।
निरवद कोइ म जांणजो जी, अकल हीया री खोल॥ १३ ॥
ज्यूं आणंद श्रावक नें घरे जी, गोतम बोल्या कूड।
पडीया छदमस्थ चूक मे जी, सुघ हुवा वीर हजूर॥ १४ ॥
इम अवस उदें मोह आवीयों, नही टाल सक्या जगनाथ।
ते तो न्याय न जांणीयों, त्यारे मांहें मूल मिथ्यात॥ १५ ॥
गोसाला नें नहीं वचावता तो, घटतो अछेरो एक।
निश्चें होणहार टले नही जी, समझों आंण ववेक॥ १६ ॥
गोसाला नें वचावीयो तो, वधीयो घणो मिथ्यात।
लोहीठांण कीयो भगवंत नें, वले दोय साधां री घात॥ १७ ॥
गोसाला नें वचावीया में, धर्म जांणें ए सांम।
तो दोय साध वचावत आपणा, वले करता ओहिज कांम॥ १८ ॥
गोसाला नें वचायने जी, धर्म जांणें जिणराय।
दोय साध न राख्या आपणा, यो किण विध मिलसी न्याय॥ १९ ॥
जगत नें मरता देख नें जी, आडा न दीधा हाथ।
धर्म जाणें तो आगो न काढतां, अें तिरण तारण जगनाथ॥ २० ॥
ए विवरा सुध वतावीयो जी, सूतर भगोती रे न्याय।
कुबदी करें कदागरों जी, सुबुधी री आवें दाय॥ २१ ॥
साधां रा मुख आगलें, पंखी पडीयों माला थी आय।
कहें मेहलां ठिकांणें हाथ सूं तो, दया रहे घट मांय॥ २२ ॥
तपसी श्रावक उपासरे जी, काउसग दीयो ठाय।
तांगीं मिरगी आय ढहि पड्यों जी, गावड भांगे जीव जाय॥ २३ ॥
कोइ गृहस्थ आंण नें कहें जी, थें मोटा मुनिराज।
थें बेठों न कर्खों एहनें जी, ओ मर छे गावड भांज॥ २४ ॥

जब तो कहें म्हें साध छां जी, श्रावक बेठो करां केम।
मांहरे कांम कांई गृहस्थ सूं जी, बोलें पाधरा एम ॥ २५ ॥
श्रावक बेठो करें नहीं जी, पंखी मेले माला मांय।
देखो पूरो अंधारों एहनें जी, ए चोडें भूला जाय ॥ २६ ॥
पंखी माला में मेलतां जी, सके नही मन मांय।
तो श्रावक नें बेठों कीयां में, धर्म न सरधे कांय ॥ २७ ॥
इतरी समझ पडे नहीं, त्यांनें समकत आवे केम।
छकीया मोह मिथ्यात में, बोलें मतवाला जेम ॥ २८ ॥
कहें साध नें उंदर छोडावणों जी, मिनकी पाछें जाय।
श्रावक नें बेठों करें नहीं, अें किण विध मिलसी न्याय ॥ २९ ॥
मुंसादिक वचावतां जी, मिनकी नें दुख थाय।
श्रावक नें बेठां कीयां जी, नहीं किण रे अंतराय ॥ ३० ॥
मुंसादिक नें कारणें जी, मिनकी नें न्हसावें डराय।
श्रावक मरें मुख आगलें, बेठों न करें हाथ संभाय ॥ ३१ ॥
ए प्रतख वात मिलें नहीं जी, तावडा छांया जेम।
श्री जिण मारग ओलख्यों, त्यांरें हिरदें वेसें केम ॥ ३२ ॥
लाय लागें तो ढांढां खोल नें, साध काढें उघाडें दुवार।
श्रावक नें बेठों करें नहीं, आ सरधा करसी खुवार ॥ ३३ ॥
ढांढां नें तो खोलतां जी, खप घणी छें ताय।
सों श्रावक हाथ फेरयां वचें, त्यांरी नांणें कांई मन मांय ॥ ३४ ॥
कहें ढांढां खोल वचावसां, पिण श्रावक रें न फेरां हाथ।
एह अग्यांनी जीव री जी, कोइ मूर्ख मांनें वात ॥ ३५ ॥
गाडा नीचें आवें डावडों, कहें साध नें लेणों उठाय।
श्रावक नें बेठों करे नहीं, ओ उंधों पंथ इण न्याय ॥ ३६ ॥
रित वरसाला नें समें जी, जीव घणा छें ताय।
लटां गजायां नें कातरा जी, पडीया मारग मांय ॥ ३७ ॥
साध वारे नीकल्या जी, जोय जोय मूंकें पाय।
लारें ढांढां देख्या आवतां, पिण साध न लेवें उठाय ॥ ३८ ॥
जे बालक लेवें उठाय नें, यां जीवां नें न लें उठाय।
तो उणरी सरधा रें लेखें, उणरें दया नही घट मांय ॥ ३९ ॥
जो बालक नें लेवें उठाय नें, ओर जीव देखी ले नांय।
इण सरधा रो करजों पारिखों, कोइ रखे पडों फंद मांय ॥ ४० ॥

ढाल : ७

दुहा

मछ गलागल लोक में, सबला ते निबला नें खाय।
तिण मे धर्म परूपीयों, कुगुरां कुबुद्ध चलाय ॥ १ ॥
मूला जमीकंद खवावीयां, कहें छें मिश्र धर्म।
आ सरधा पाषड्यां री आदरया, जाडा बघसी कर्म ॥ २ ॥
मूला खवाया पाणी पावीयां, ओर सचित्तादिक अनेक।
खाघा खवाया भलों जाणीयां, यां तीनां री विध एक ॥ ३ ॥
ए तो न्याय न जाणीयो, उजड पडीया अजांण।
करण जोग विगटावीया, अें मिथ्यादिष्टी अेंलांण ॥ ४ ॥
कुहेत लगाए लोक नें, हिंसा धर्म भाषंत।
हिवें सात दिष्टंत साध कहे, ते सुणजो धर खंत ॥ ५ ॥
मूला पाणी अन्न नों, चोथो हूका रो जांण।
तस जीव कलेवर तस तणो, सातमो मिनप वखांण ॥ ६ ॥
यामें तीन दिष्टत करडा कह्या, जाणें अग्यानी विरुध।
समदिष्टी जिण धर्म ओलख्यो, ते न्याय सूं जांणे सुध ॥ ७ ॥
केशी कुमर दिष्टत करडा कह्या, तो छोडी प्रदेसी रूढ।
न्याय मेले हुवो समकती, झगडो झालें ते मूढ ॥ ८ ॥
जिणरी बुध छें निरमली, ते लेसी न्याय विचार।
सुणे भारीकर्मा जीवडा, तो लडवा ने छे तयार ॥ ९ ॥
ए सात दिष्टंत धुर सूं चले, आगें घणों विसतार।
भिन भिन भवियण सांभलों, अंतर आख उघाड ॥ १० ॥

ढाल

[वीर सुणो मोरी वीनती]

मूला खवायां मिश्र कहें, लगावें हो खोटा दिष्टंत एह।
कहे पाप लागो मूलां तणो, धर्म हूवो हो खाधा बचीया एह।
भवियण जिण धर्म ओलखो* ॥ १ ॥
कहे कूआ वाव खणावीयां, हिंसा हूइ हो तिणरा लागा कर्म।
लोक पीयें कुसले रह्या, साता पामी हो तिणरो हूवो धर्म ॥ भ० २ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इम कहें मिश्र परूपतां, नहीं संके हो करता बकवाय।
इण सरधा रो प्रश्न पूछीयां, जाब नावें हो जब लोक लगाय ॥ ३ ॥
हिवें सात दिष्टंत री थापना, त्यांरी सुणजो हो विवरा सुध वात।
निरणो करजों घट भितरें, बुधवंता हो छोड नें पखपात ॥ ४ ॥
सो मिनखां नें मरता राखीया, मूला गाजर हो जमीकंद खवाय।
वले कुसले राख्या सो मांनवी, काचो पांणी हो त्यांनें अणगल पाय ॥ ५ ॥
पोह माह महीनें ठारी परें, तिण काले हो वाजें शीतल वाय।
अचेत पड्या सो मांनवी, मरता राख्या हो त्यांनें अगन लगाय ॥ ६ ॥
पेट दुखें तलफल करें, जीव दोरो हो करें हाय विराय।
साता वपराइ सो जणा, मरता राख्या हो त्यांनें होको पाय ॥ ७ ॥
सो जणा दुरभख काल में, अन्न विनां हो मरें उजाड मांय।
कोइ एक मारें तसकाय नें, सो जणा नें हो मरता राख्या जीमाय ॥ ८ ॥
किण ही कालें अन्न विनां, सो जणा रा हो जुदा हुवें जीव काय।
सहजें कलेवर मूंओ पड्यों, कुसले राख्या हो त्यांनें एह खवाय ॥ ९ ॥
मरता देखी सो रोगला, ममाइ विण हो ते तो साजा न थाय।
कोइ ममाइ कर एक मिनष री, सो जणां रे हो साता कीधी बचाय ॥ १० ॥
जमीकंद खवायां पांणी पावीयां, त्यांमें थापें हो धर्म नें पाप दोय।
तो अगन लगायां होको पावीयां, इत्यादिक हो सगलें मिश्र होय ॥ ११ ॥
जो धर्म सरधें बचीया तिकों, हिंसा तिणरा हो लागा जाणें कर्म।
तो सातूंई सारिषा लेखवे, कहि देणों हो सगलें पाप नें धर्म ॥ १२ ॥
जो सातां में मिश्र कहें नहीं, तो किम आवे हो इण बोल्या री परतीत।
आप थापें आप उथपें, तो कुण मानें हो आ सरधा विपरीत ॥ १३ ॥
जो सातांइ में मिश्र कहें, तो नही लागें हो गमती लोकां नें बात।
मिलती कह्यां विण तेहनीं, कुंण करे हो कूडां री पखपात ॥ १४ ॥
एक दोय बोलां में मिश्र कहें, सगलां में हो कहितां लाजें मूढ।
एहवो उलटों पंथ झालीयों, त्यांरें केडें हो ताणें मूर्ख रूढ ॥ १५ ॥
सो सो मिनष सगलें बच्या, थोडी घणी हो सगलें हुइ घात।
जो धर्म बरोबर न लेखवें, तो उथप गई हो मूला पांणी री वात ॥ १६ ॥
बात उथपती जांण नें, कदा कहिदें हो सगलें पाप नें धर्म।
पिण समदिष्टी सरधे नही, ए तों काढ्यों हो खोटी सरधा री भर्म ॥ १७ ॥
असंजती रों मरणों जीवणो, वंछा कीधां हो निश्चें राग नें धेष।
ओ धर्म नहीं जिण भाखियों, सांसों हुवें तो ही अंग उपंग देख ॥ १८ ॥

काच तणा देखी मिणकला, अण समझ्या हो जाणे रतन अमोल।
ते निजर पड्यो सराफ री, कर दीधो हो त्यारो कोड्या मोल ॥ १९ ॥
मूला खवाया मिश्र कहे, या सरधा हो काच मणी समान।
तो पिण झाली रतन अमोल ज्यूं, न्याय न सूझें हो चाला कर्मां रा जांण ॥ २० ॥
जीव मारें झूठ बोल ने, चोरी करनें हो पर जीव बचाय।
वले करे अकार्य एहवा, मरता राख्या हो मइथुन सेवाय ॥ २१ ॥
धन दे राखे पर प्राण ने, क्रोधादिक हो अठारे सेवाय।
ए सावद्य कांम पोतें करी, पर जीवां ने हो मरता राखे ताय ॥ २२ ॥
जो हिंसा करे जीव राखीया, तिणमें होसी हो धर्म ने पाप दोय।
तो इम अठारेइ जाणजों, ए चरचा मे हो विरलो समझे कोय ॥ २३ ॥
जो एकण मे मिश्र कहे, सतरां मे हो भाषा बोले ओर।
उधी सरधा रों न्याय मिलें नही, जब उलटी हो कर उठे झोड ॥ २४ ॥
जीव मारे जीव राखणा, सूतर मे हो नही भगवंत वेण।
उंधो पंथ कुगुरा चलावीयों, सुध न सूझे हो फूटा अतर नेण ॥ २५ ॥
कोइ जीवता मिनष तिर्यंच नां, होम करे हो जुध जीतण सगराम।
एक तो ओं पाप मोटको, जीव होम्या हो बीजों सावद्य कांम ॥ २६ ॥
कोइ नाहर कसाइ मार ने, मरता राख्या हो घणा जीव अनेक।
जो गिणे दोया ने सारिषा, त्यांरी बिगडी हो सरधा बात ववेक ॥ २७ ॥
पेहला कहिता जीव बचावणा, तिण लेखे हो बोलें सुध न कांय।
जीव बचीयां रों धर्म गिणे नही, खिण थापे हो खिण मे फिर जांय ॥ २८ ॥
देवल धजा तेहनीं परे, फिरता बोले हो न रहे एकण ठांम।
त्यानें पाषडी जिण कह्या, झगडो झाल्यो हो नही चरचा रो काम ॥ २९ ॥
जो एकण ने अधर्म कहे, तो दूजा नें हो कहणो धर्म नें पाप।
ए लेखो कीया तो लड पडे, त्यारा घट मे हो खोटी सरधा री थाप ॥ ३० ॥
वले सरणो लेइ श्रेणक तणों, सावद्य बोले हो तिणरी खबर न कांय।
जोरी दावें पेला ने वरजीयां, तिण माहे हो जिण धर्म बतांय ॥ ३१ ॥
कहे श्रेणक फडहो फेरावियो, हणो मती हो फेरी नगरी मे आण।
तिण मोष हेते धर्म जाणीयो, एहवो भाषे हो मिथ्या दिष्टि अजाण ॥ ३२ ॥
कहें राय श्रेणक तो समकती, धर्म विनां हो किम करसी ए काम।
इम कहि कहि भोला लोक ने, फंद मे न्हाखे हो श्रेणक रो ले नांम ॥ ३३ ॥
श्रेणक नें करे मुख आगलें, आह्मी साह्मी हो माडे खाचा ताण।
आप छांदें उटंका मेलता, कुण पालें हो श्री जिणवर आंण ॥ ३४ ॥

समदिष्टी तणों कोइ नांम ले, भरमावे हो अणसमझ्या अजाण।
तो सकंद्र समदिष्टि देवता, जिण भगता हो एका अवतारी जांण ॥ ३५ ॥
ते भीड आए कोणक तणी, जुध कीधा हो तिण सावद्य जांण।
एक कोड असी लाख उपरें, मिनषां रो हो कर दीयो घमसांण ॥ ३६ ॥
श्रेणक राय फडहो फेरावीयों, ए तो जांणों हो मोटां राजां री रीत।
भगवंत न सरायों तेहनें, तो किम आवें हो तिणरी परतीत ॥ ३७ ॥
फडहो फेरयों हणों मती, इतरी छें हो सूतर में वात।
कोइ धर्म कहें श्रेणक भणी, ते तो बोलें हो चोडें भूठ विख्यात ॥ ३८ ॥
लोकां सूं मिलती बात जांण नें, कर रह्या हो कूडी बकवाय।
मिश्र कहें ते पिण अटकलां, साचा हुवें तो हो सूतर में दे बताय ॥ ३९ ॥
ए तो पुत्रादिक जायां परणीयां, ओछवादिक हो ओरी सीतला जांण।
एहवो कारण कोइ उपजें, श्रेणक राजा हो फेरी नगरी में आंण ॥ ४० ॥
ते रुकीया नहीं कर्म आवतां, नही कटीया हो तिणरा आगला कर्म।
नरक जातो रह्यों नहीं, न सीखायो हो तिणनें भगवंत धर्म ॥ ४१ ॥
भगवंते मोटा मोटा राजवी, प्रतिबोध्या हो आंण्या मारग ठाय।
साध श्रावक धर्म बतावीयों, न सीखायो हो फडहो फेरणो ताय ॥ ४२ ॥
तो श्रेणक सीख्यो किण आगलें, भगवंत हो पूछ्यां साझें मूंन।
वले न जणावें आंमना, आगया विण हो करणी जांणों जबूंन ॥ ४३ ॥
वासुदेव चक्रव्रत मोटकां, त्यांरी वरती हो तीन छ खंड में आंण।
जो फडहो फेरयां मुगत मिलें, तो कुण काढे हो आघो जिण धर्म जांण ॥ ४४ ॥
कोउ रांगण दीवादिक सिनांन नें, विसन सातूं हो विनां मन दे छोडाय।
जो इण विध जिण धर्म नीपजें, तो छ खंड में हो वरजें आंण फेराय ॥ ४५ ॥
फल फूल अनंत काय नें, हिंसादिक हो अठारें पाप नें जांण।
जोरी दावें पेंला नें मना कीयां, धर्म हुवे तो हो फेरें छ खंड में आण ॥ ४६ ॥
तीथंकर घर में थकां, त्यांनें हुंता हो तीन ग्यांन वशेष।
हाल हुकम थो लोक में, त्यां नहीं फेरयो हो फडहो सूतर देख ॥ ४७ ॥
वल देवादिक मोटा राजवी, घर छोडी हो कीया पाप पचखांण।
श्रेणक जिम फडहो न फेरीयों, जोरी दावें हो न वरताइ आंण ॥ ४८ ॥
ब्रह्मदत्त चक्रवत तेहनें, चित्त मुनी हो प्रतिबोधण आय।
साध श्रावक नो धर्म कह्यों, फडहा री हो न कही आंमना काय ॥ ४९ ॥
बीसां भेदां रुकें कर्म आवतां, बारें भेदा हो कटें आगला कर्म।
ए मोष रा मारग पाधरा, छोड़ा मेला हो सगला पाषंड धर्म ॥ ५० ॥

दोय वेस्या कसाइवाडे गइ, करता देख्या हो जीवां रा संघार।
दोनू जण्यां मतो करी, मरता राख्या हो जीव एक हजार॥ ५१॥
एकण गेहणो देइ आपणो, तिण छोडाया हो जीव एक हजार।
दूजी छोडाया इण विधे, एका दोया हो चोथो आश्रव सेवार॥ ५२॥
एकण नें पाषंडी मिश्र कहे, तो दूजी ने हो पाप किण विध होय।
जीव बरोबर बचावीया, फेर पडीयो हो ते तो पाप मे जोय॥ ५३॥
एकण सेवायो आश्रव पाचमो, तो उण दूजी हो चोथो आश्रव सेवाय।
फेर पड्यो तो इण पाप मे, धर्म होसी हो ते तो सरीषो थाय॥ ५४॥
एकण ने धर्म कहितां लाजे नही, दूजोडी नें हो कहितां आवे सक।
जब लोका सूं करें लगावणी, एहवो आंणो हो चोडे कुगुरा रा डक॥ ५५॥
एक वेस्या सावद्य कामो करी, सहस्र नाणो हो ले वडी घर मांय।
दूजी किरतब करी आपणा, मरता राख्या हो संहस्र जीव छोडाय॥ ५६॥
धन आण्यो खोटा किरतब करी, तिणरें लागा हो दोनू विध कर्म।
दूजी जीव छोडाया तेहने, उण लेखें हो हुवो पाप ने धर्म॥ ५७॥
पाप गिणें मइथुन मे, जीव बचीयां हो तिणरो न गिणे धर्म।
पोतें सरधा री खबर पोते नही, ताणे ताणे हो बांधे भारी कर्म॥ ५८॥
ए प्रश्नां रो जाब न उपजे चरचा मे हो अटकें ठांम ठांम।
तो पिण निरणों करे नही, बक उठे हो जीवां रो ले नाम॥ ५९॥
जीव जीवें काल अनाद रो, मरे तेहनीं हो पर्याय पलटी जाण।
संवर निरजरा तो न्यारा कह्या, ते ले जावे हो जीव ने निरवाण॥ ६०॥
पृथवी पाणी अग्न वाय नें, वनस्पति हो छठी तसकाय।
मोल ले ले छोडावे तेहनें, धर्म होसी हो ते तों सगलां मे थाय॥ ६१॥
तसकाय छोडायां धर्म कहे, पांच काय मे हो नहीं बोले निसंक।
भर्म मे पाड्या लोक ने, त्या लगाया हो मिथ्यात रा डक॥ ६२॥
त्रिविधे त्रिविधे छकाय हणवी नही, एहवी छे हो भगवंत री वाय।
मोल लीया कर्म कहें मोष रो, ए फद माड्यो हो कुगुरां कुबद चलाय॥ ६३॥
देव गुर धर्म रतन तीनूं, सूतर मे हो जिण भाष्या अमोल।
मोल लीयां नही नीपजें, साची सरधो हो आख हिया री खोल॥ ६४॥
ग्यांन दरसण चारित ने तप, मोष जावा हो मारग छे च्यार।
त्याने भिन भिन ओलखे आदरे, सुध पालें हो ते पामे भव पार॥ ६५॥

ढाल : ८

दुहा

दया दया सहको कहैं, ते दया धर्म छैं ठीक।
दया ओलख नें पालसी, त्यांनें मुगत नजीक॥ १ ॥
आ दया तो पहिलो व्रत छैं, साध श्रावक नों धर्म।
पाप रुकें तिण सूं आवता, नवा न लागें कर्म॥ २ ॥
छ काय हणावें नहीं, हणीयां भलो न जाणें ताय।
मन वचन काया करी, आ दया कही जिणराय॥ ३ ॥
आ दया चोखें चित्त पालीयां, तिरें घोर रुदर संसार।
वले आहीज दया परूपने, भव जीवां उतारें पार॥ ४ ॥
एक नांम दया लोकीक री, तिणरा भेद अनेक।
तिणमें भेषधारी भूला घणा, ते सुणजों आंण ववेक॥ ५ ॥

ढाल

[पाखण्ड मत रो निरणो कीजे]

द्रवे लाय लागी भावे लाय लागी, द्रवे कूवो नें भावेई कूवो।
ए भेद न जांणें मूंढ मिथ्याती, संसार नें मुगत रो मारग जूवो।
भेष धर ने भूला रो निरणो कीजो*॥ १ ॥

कोइ द्रवे लाय सूं बलतों राखें, द्रवे कूवो पडता नें झाल बचायों।
ओं तो उपगार कीयो इण भव रों, जो ववेक विकल त्यांने खबर न कायो॥मे०२॥
घट में ग्यांन घाल नें पाप पचखावें, तिण पडतो राख्यो भव कूआ मांह्यो।
भावे लाय सूं बलता नें काढें रिषेस्वर, ते पिण गेंहलां भेद न पायो॥ ३ ॥
सूंनें चित सूतर बांचे मिथ्याती, त्यारे द्रव ने भाव रा नही निवेरा।
पिरवार सहीत कुपंथ में पडीया, त्यां नरक सूं सनमुख दीधा डेरा॥ ४ ॥
गृहस्थ नें ओषध भेषद देइ नें, अनेक उपाय करे जीवां बचावें।
ए संसार तणा उपगार कीयां मे, मुगत रो मारग मूंढ बतावें॥ ५ ॥
करें मितर जंतर झाडा नें झपटा, सरपादिक नों जेंहर देवे उतारी।
काढें डाकण सांकण भूत जषादिक, तिणमेंइ धर्म कहे सांगधारी॥ ६ ॥
एहवा किरतब सावद्य जांणें, त्रिविधे त्रिविधे सावां त्याग कीधों।
भेषधारी लोकां सूं मिल्लें अग्यांनी, त्यां जीव बचावण रो सरणो लीधो॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

उवे जीव बचावण रो मुख सूं कहैं पिण, काम पड्यां बोलैं फिरती वांणो।
भोला नें भर्म मे पाड विगोया, ते पिण डूबे छे कर कर ताणो॥ ८॥
कीड्या मकोडा नें लटा गजाया, ढांढां रा पग हेठे चीथ्या जावें।
भेषधारी कहैं म्हें जीव बचावां, तो चुण चुण जीवां ने क्यूं न बचावे॥ ९॥
कोइ आखो चोमासों उपदेस देवे तो, दश पांच जीवां ने दोहरा समझावें।
जो उद्यम करे च्यार महीना माहे, तो लाखां गमे जीव तेह बचावें॥ १०॥
सो घर रे आंतर कोइ लेवे संथारो, तो तुरत आलस छोडी देवण जावे।
सो पगलां गया जीव लाखा बचें छे, त्यां जीवां नें जाए क्यूं न बचावें॥ ११॥
घर छोडतो जांणें सो कासो उपरे, तो सांग पेहरावण सताब सूं जावें।
एक कोस गयां जीव कोडां बचे छे, त्यां जीवा जाय क्यूं न बचावें॥ १२॥
जब तो कहैं म्हारो कल्प नही छें, म्हे तो संसार सूं हूआ न्यारा।
कब ही कहे म्हे जीव बचावां, उवे वाणी न बोलें एकण धारा॥ १३॥
साध तो आपरा व्रत राखण नें, त्रिविध त्रिविध जीव नहीं सतावें।
संसार मांहे जीव पच रह्या छें, त्यांसूं तो साध हुव निरदावें।
आ सरधा जिणवर भाखी॥ १४॥
जीवणो मरणों त्यारो नही चावें, समझतो देखे तो साध समझावें।
ग्यानादिक गुण घट माहें घालें, मुगतनगर मे साध पोहचावें॥ १५॥
गृहस्थ रा पग हेठें जीव आवें तो, भेषधारी कहे म्हे तुरत बतावां।
ते पिण जीव बचावण काजें, म्हें सर्व जीवां रों जीवणो चावां॥ १६॥
इविरती जीवा रो जीवणो वाछें, तिण धर्म रो परमारथ नही पायो।
आ सरधा अग्यानी री पग पग अटके, ते साभलजों भवियण चित ल्यायो॥ १७॥
गृहस्थ रे तेल जाझे मूंण फूटा, ते कीड्यां रा दर माहें रेलो आवे।
बिच में जीव आवे ते तेल सूं वहिता, वले तेल बुहो बुहो अगनि में जावें॥ १८॥
जो अग्न उठे तो लाय लागे छे, तो तस थावर जीव मारया जावें।
गृहस्थ रा पग हेठें जीव बतावें, तो तेल ढूलें ते बासण क्यूं न बतावे॥ १९॥
पग सूं मरता जीव बतावें, तेल सूं मरता जीवा नें नही बतावे।
आ खोटी सरधा उघाडो दीसें, पिण अभितर आंधा रें निजर न आवे॥ २०॥
वले भेषधारी विहार करतां मारग में, त्यांने श्रावक साह्मां मिलीया आयो।
ते मारग छोड ने उज्जड पडीया, तस थावर जीवां नें चीथता जायो॥ २१॥
श्रावका ने उज्जड पडीया जाणे, तस थावर जीवा ने मरता देखें।
गृहस्थ रा पग हेठें जीव बतावें, तो मारग बताय देणो इण लेखें॥ २२॥

एक पग हेठें जीव मरें ते बतावें, तो थोडा सा जीवां नें वचता जांणो।
श्रावकां ने उज्जड सूं मारग घाल्या, घणां जीव वचें तस थावर प्रांणो॥ २३॥
एक पग हेठें जीव वचावे अग्यानी, ठाला बादल अंबर ज्यूं गाजें।
त्यांनें श्रावक उजाड में मारग पूछे तो, मोन साझें बोलता कांय लाजें॥ २४॥
थोडी दूर बतायां थोडो धर्म हुवें तो, घणी दूर बतायां घणो धर्म जांणों।
घणी दूर रों नांम लीयां बक उठें, त्यारी खोटी सरधा रो ए अहलांणो॥ २५॥
कोइ आंधो पुरुष गामांतरें जातां, ऊ आंख विनां जीव किण विध जोवें।
कीड्यां मांकादिक चीथतों जाअें, तस थावर जीवा रो घमसाण होवें॥ २६॥
भेषधारी सहजांइ साथे जातां, आंधा रा पग सूं जीव मरता देखें।
जो पग पग जीवां नें नहीं बतावें, तो खोटी सरधा जाणजों इण लेखे॥ २७॥
त्यांनें बताय बताय नें जीव बचावणा, कें पूंजी पूंजी नें करणा दूरो।
इण धर्म करण सूं तों पोतेंइ लाजें, तो दूजें कुण मांनसी यो मत कूडो॥ २८॥
वले इल्यां सुल सलीयां सहीत आटो छे, ते गृहस्थ रे ढुलें मारग मायो।
तपती रेत उनाला री तिण में, ते परत पांण जुदा हुवें जीव कायो॥ २९॥
गृहस्थ नहीं देखें आटो ढुलतों, ते भेषधास्थां री निजस्था आवें।
उवे पग सूं मरता जीव बतावें, आटे ढुलतें मरता जीव क्यूं न बतावें॥ ३०॥
इत्यादिक गृहस्थ रा अनेक उपध सूं, तस थावर जीव मंआ नें मरसी।
ते पग हेठें जीव बतावें त्यानें, सगली ठोड बतावणा पडसी॥ ३१॥
किण हीक ठोडें जीव बतावें, किण हीक ठोड संका मन आणें।
समझ पड्यां विण सरधा परूपें, पीपल बांधी मूर्ख ज्यूं तांणें॥ ३२॥
ए पग पग जाव अटकता देखें, कदा सर्व आरे हुवें अग्यानी थूलो।
कूड कपट करे मत कुसले राखण ने, पिण बुधवंत बात न मांनें मूलो॥ ३३॥
गृहस्थ रों न वांछणों जीवणो मरणों, ते वाछें बतायां लागें पाप कर्मो।
राग धेष रहीत रहिणों निरदावें, एहवो निकेवल श्री जिण धर्मो॥ ३४॥
समोसरण ते एक जोजन मांडला में, तठें नर नास्थां रा व्रंद आवें नें जावें।
अरिहंत आगें वांणी सुणवा त्यांनें, भगवंत भिन भिन भाव सुणावें॥ ३५॥
च्यार कोस मांहें तस थावर हुंता, मर गया जीव उरांणें आया।
नर नास्थां रा पगां सूं विण उपीयोगे, पिण भगवंत कठेय न दीसें बताया॥ ३६॥
नंद मिणीयारो डेडकों हुय नें, वीर वांदण जांतो मारग मांयों।
तिणनें चीथ मास्थों श्रेणक रे वछेरें, वीर साध साह्मां मंहली क्यूं न बचायो॥ ३७॥
गृहस्थ रा पग हेठें जीव आवें ते, साधां नें बतावणों कठेय न चाल्यों।
भारी कर्मा लोकां नें भिष्ट करण नें, ओ पिण घोचो कुगुरां रो घाल्यों॥ ३८॥

जव साधा रो नांम तो अलगों मेलें, श्रावकां री चरचा मुख ल्यावें।
साध सूं मरता जीव साव बतावे, ज्यूं श्रावक श्रावकां नें जीव बतावे ॥ ३९ ॥
सिधंत रा वल विण बोलें अग्यानी, श्रावका रो संभोग साधां ज्यू बतायो।
अें गाला रा गोला मुख सूं चलाया, ते न्याय सुणो भवीयण चित ल्यायो ॥ ४० ॥
साधां रा पग हेठे जीव मरे ते, संभोगी साध देखी जो नहीं बतावे।
तो अरिहंत नी आग्या लोपावे, पाप लागो ने विराधक थावें ॥ ४१ ॥
साध तो साधा ने जीव बतावें, ते पोता रो पाप टलावण रे काजें।
श्रावक श्रावकां ने जीव नहीं बतावे, तो किसो पाप लागो किसो वरत भाजे ॥ ४२ ॥
श्रावक श्रावका नें न बताया पाप लागो कहें, ओ भेषधारयां मत काढ्यों कूडो।
श्रावकां रें संभोग सावां ज्यू हुवे तो, पग पग बंध जायें पाप रा पूरो ॥ ४३ ॥
पाट बाजोटादिक साध बारे मेले, ठरलें मातरादिक कारज जावे।
लारें ओर साव त्यानें भीजतो देखे, जो ओ न ल्यावें तो प्राछित आवे ॥ ४४ ॥
रोगी गरढा गिलाण साध री वीयावच, साध न करे तो श्री जिण आगना बारें।
महा मोहणी कर्म तणो बंध पाडें, इह लोक नें परलोक दोनूं बिगाडे ॥ ४५ ॥
आहार पांणी साध वेंहरे आणें, सभोगी साध नें बांटे देवा री रीतो।
आप आण्यों जाण इविको लेवें तो, अदत्त लागे नें जाअें परतीतो ॥ ४६ ॥
इत्यादिक साध साध रे अनेक बोलां रो, सभोगी साध सूं न कीयां अटकें मोषो।
याहिज बोलां रो श्रावक श्रावकां रे, न करें तो मूल न लागें दोषो ॥ ४७ ॥
श्रावकां रे सभोग साधा ज्यूं हुवें तो, श्रावक श्रावका ने पिण इण विध करणो।
ए सरधा रो निरणों न काढें अग्यानी, त्यां विटल थइ लीयो लोकां रों सरणो ॥ ४८ ॥
जो ए श्रावक श्रावकां रा नही करें तो, भेषधारया रे लेखे भागल जांणो।
त्यां श्रावकां रे संभोग साधां ज्यूं परूप्यों, ते पड गया मूर्ख उलटी ताणो ॥ ४९ ॥
श्रावक रें संभोग तो श्रावक सूं छें, वले मिथ्याती सूं राखें भेलापो।
त्यारो संभोग तो अविरत मे छें, ते त्याग कीया सूं टलसी पापो ॥ ५० ॥
त्यांसूं सरीरादिक रो संभोग टाले नें, ग्यांनादिक गुण रो राखें भेलापो।
उपदेस देइ निरदावें रहिणों, पेंलो समझे नें टालें तो टलसी पापो ॥ ५१ ॥
लाय लागी जो गृहस्थ देखे तो, तुरत बुझावें छ काय नें मारी।
ए सावद्य किरतब लोक करें छें, तिण मांहे धर्म कहे सांगधारी ॥ ५२ ॥
अगन पाणी छ काय मूई त्यांरों, थोडो सो पाप कहें हुवें कानी।
ओर जीव बच्या त्यारो धर्म बतावे, लाय बुझावण री करे सांनी ॥ ५३ ॥
ए पाप नें धर्म रो मिश्र परूपे, तोटा बिचे लाभ घणों बतावें।
त्यां भेषधारयां री परतीत आवे तो, लाय बुझावण दोरया जावें ॥ ५४ ॥

एहवी दया बतावें अग्यांनी, छ काय रा पीहर नांम धरावें।
मिश्र धर्म कहें लाय बुझायां, पिण प्रश्न पूछ्यां रो जाब न आवें॥ ५५॥
छ काय जीवां री हिंसा कीधां, ओर जीव बच्या त्यांरो कहें छें धर्मो।
आ सरधा सुण सुण नें बुधवंता, खोटा नांणा ज्यूं काढ्यो मर्मो॥ ५६॥
नित रा नित पांचसों जीवां ने मारें, कोइ करें क़साइ अनार्य कर्मों।
जो मिश्र धर्म छें लाय बुझायां, तो इणनेइ मार्यां हुवें मिश्र धर्मों॥ ५७॥
लाय सूं बलता जीव जांणी नें, छ काय हणें नें लाय बुझाइ।
ज्यूं कसाइ सूं मरता जीवां नें देखें, कोइ जीव बचावण हणें कसाइ॥ ५८॥
जो लाय बुझायां जीव बचें तो, कसाइ नें मार्यां बचें घणां प्राणों।
लाय बुझायां कसाइ नें मार्यां, ए दोयां रो लेखो बरोबर जाणों॥ ५९॥
वले नाहर सिंघादिक चीता बघेरा, अें दुष्टी जीव करें पर घाता।
जो लाय बुझायां जीव बचें छें, तों यानेइ मार्यां घणां रे हुवें साता॥ ६०॥

ढाल : ९

दुहा

जीव हिंसा छे अति बुरी, तिण माहे ओगुण अनेक।
दया धर्म मे गुण घणा, ते सुणजों आंण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

[थो भल रे सीता पति आयो]

दया भगोती छे सुखदाई, ते मुगत पुरी नी साइ जी।
साठ नाम दया रा कह्या जिण, दसमा अ ग रे माहिं जी।
दया धर्म श्री जिणजी री वांणी. ॥ १ ॥
पूजणीक नांम दया रो भगोती, मगलीक नाम छे नीको जी।
जे भव जीव आया इण सरणें, त्यानें छे मुगत नजीको जी ॥ द० २ ॥
त्रिविधे त्रिविधे छ काय न हणवी, आ दया कही जिणरायो जी।
तिण दया भगोती रा गुण छे अनता, ते पूरा केम कहवायो जी ॥ ३ ॥
त्रिविधे त्रिविधे छ काय जीवां ने, भय नही उपजावे तामो जी।
ए अभयदान कह्यो भगवते, ए पिण दया रो नामो जी ॥ ४ ॥
त्रिविधे त्रिविधे छ काय मारण रा, त्याग करे मन सुधे जी।
आ पूरी दया भगवते भाषी, तिण सूं पाप रा वारणा रूंधे जी ॥ ५ ॥
त्याग कीयां विण हिंसा टालें, तो कर्म निरजरा थायो जी।
हिंसा टाल्यां सुभ जोग वरते छे, तिहा पुन रा थाट बंधायो जी ॥ ६ ॥
इण दया सू पाप कर्म रुक जावे, वले कर्म करें चकचूरो जी।
या दोय गुणा में अनत गुण आया, ते पाले छे विरला सूरो जी ॥ ७ ॥
आहीज दया छें महावरत पहलो, तिणमे दया दया सर्व आई जी।
ते पूरी दया तो साघ जी पालें, बाकी दया रही नही काई जी ॥ ८ ॥
छ काय ने हणें हणावें नही, वले हणतां ने नही सरावे जी।
इसडी दया निरंतर पाले, त्यारे तुलें बीजो कुण आवे जी ॥ ९ ॥
आहीज दया चोखे चित पाले, ते केवलीया री छे गादी जी।
आहीज दया सभा में परूपे, तिणने वीर कह्यो न्यायवादी जी ॥ १० ॥
आहीज दया केवलीया पाली, मन-परयव अवधि ग्यानी जी।
वले मति ग्यानी नें सुरत ग्यानी, आहीज दया मन मानी जी ॥ ११ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

आहीज दया लब्द धारयां पाली, आहीज पूर्व घर ग्यांनी जी।
संका हुवें तो निसंक सूं जोवों, सूतर में नही छें बात छानी जी॥ १२॥
देस थकी दया श्रावक पालें, तिणनें पिण साध बखाणे जी।
ते श्रावक हिंसा करें घर बेठां, पिण तिण मांहे धर्म न जांणें जी॥ १३॥
प्रांण भूत जीव नें सतव, त्यांरी घात न करणी लिगारो जी।
या तीन काल नां तीर्थंकर नी वांणी, आचारंग चोथा अधेन मझारो जी॥ १४॥
मत हणों मत हणों कह्यों अरिहंतां, अे जीव हणें किण लेखे रे।
ज्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी, ते सूतर साह्यों न देखें रे॥ १५॥
जीवां री हिंसा छे महा दुखदाई, ते नरक तणी छे साई जी।
खोटा खोटा नांम तीस हिंसा रा, कह्या दसमां अंग रे मांहि जी।
हिंसा धर्म कुगुरां री वांणी*॥ १६॥
प्रांण घात हिंसा छे खोटी, ते सर्व जीव नें दुखदायो जी।
तिण जीव हिंसा मांहें अवगुण अनेक, ते पूरा केम कहवायो जी॥ १७॥
केइ कहें म्हें हिंसा कीयां में, जांणां छां पाप एकंतो जी।
पिण हिंसा कीयां विण धर्म न हुवें, म्हें किण विध पूरा मन खतो जी॥ १८॥
केइ कहें म्हें हणां एकेंद्री, पंचेंद्री जीवां रे तांइ जी।
एकेंद्री मार पंचेंद्री पोष्यां, धर्म घणों तिण माहि जी॥ १९॥
एकेंद्री थी पंचेंद्रीय नां, मोटां घणा पुन भारी जी।
एकेंद्री मार पंचेंद्री पोष्यां, म्हांनें पाप न लागें लिगारी जी॥ २०॥
केइ इसडों धर्म धारे नें बेठा, ते तो कुगुरां तणा सीखायो जी।
निसंक थका छ काय नें मारें, वले मन मांहे हरषत थायो जी॥ २१॥
कोइ पांच थावर नें सहल गिणी नें, मारयां न जांणें पापो जी।
तिण सूं त्यांनें हणतां संक न आंणें, ओ तो कुगुरां तणों परतापो जी॥ २२॥
पांच थावर नां आरंभ सेती, दुरगत दोष बधारें जी।
कह्यों दसवीकालक छठें अधेने, तो बुधवंत किण विध मारें जी॥ २३॥
छ काय जीवां नें जीवां मारे नें, सगा सेंण न्यात जीमावें जी।
ए प्रतख सावद्य संसार नों कांमो, तिण मांहें धर्म बतावें जी॥ २४॥
जीवां नें मारे जीवां नें पोषें, ते तो मारग संसार नों जांणो जी।
तिण मांहें साध धर्म बतावें, ते पूरा छें मूंढ अयांणो जी॥ २५॥
मूला गाजर सकरकंद कांदा, इत्यादिक नीलोती अनेको जी।
ते पिण दांन दीयां में पुन परूपें, ते बूडें छे विनां ववेको जी॥ २६॥
केइ जीव खवायां में पुन परूपें, केइ मिश्र कहें छें मूढो जी।
ए दोनूंइ हिंसा धर्मी अनार्य, ते बूडें छें कर कर रूढो जी॥ २७॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जीवां री हिंसा में पुन परूपे, त्यांरी जीभ वहें तलवारो जी।
वले पहरण सांग साधु रो राखे, धिग त्यांरो जमवारो जी॥ २८॥
केइ साध रो विड्द धरावें लोका मे, वले वाजे भगवत रा भगता जी।
पिण हिंसा माहें धर्म परूपें, त्यारा तीन वरत भागे लगता जी॥ २९॥
छ काय मार्‌यां माहे धर्म परूपें, त्याने हिंसा छ काय री लागे जी।
तीन काल री हिंसा अणुमोदी, तिण सू पेहलो महावरत भागें जी॥ ३०॥
हिंसा में धर्म तो जिण कह्यो नाही, हिंसा धर्म कह्या भूठ लागे जी।
इसडी भूठ निरतर बोलें, त्यारो बीजोइ महावरत भागें जी॥ ३१॥
ज्यां जीवा नें मार्‌यां धर्म परूपें, त्या जीवां रो अदत्त लागो जी।
वले आग्या लोपी श्री अरिहत नी, तिण सू तीजोई महावरत भागो जी॥ ३२॥
छ काय मार्‌यां माहे धर्म बतावे, त्यारी सरधा घणी छे उधी जी।
ते मोह मिथ्यात मे जडीया अग्यानी, त्याने सरधा न सुझें सूधी जी॥ ३३॥
त्यानें पूछ्यां कहे म्हे दयाधर्मी छा, पिण निश्चे छ काय रा घाती जी।
त्या हिंसाधर्म्यां ने साध सरधे केइ, ते पिण निश्चें मिथ्याती जी॥ ३४॥
केइ कहे साध जीव बचावे, राखें रखावे भलो जाणें जी।
ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी, इसडी चरचा आणें जी॥ ३५॥
साध तो जीवां ने क्याने बचावे, ते पचे रह्या निज कर्मो जी।
कोइ साध री संगत आय करें तो, सीखाय देवे जिण धर्मो जी॥ ३६॥
छ काय रा सस्त्र जीव इविरती, त्यांरो जीवणों मरणों न चावे जी।
त्यारो जीवणों मरणों साध वर्छे तो, राग धेष बेहू आवें जी॥ ३७॥
छ काय रा सस्त्र जीव इविरती, त्यारो जीवणो मरणो खोटो जी।
त्यानें हणवा रो त्याग कीयो तिण माहे, दया तणो गुण मोटो जी॥ ३८॥
असजम जीतब ने बाल मरण, या दोया री वछा न करणी जी।
पिंडत मरण ने संजम जीतब, यारी आसा वंछा मन धरणी जी॥ ३९॥
छ काय रा सहस्र जीव इविरती, त्यारो असजम जीतब जाणो जी।
सर्व सावद्य त्याग कीया त्यारो, सजम जीतब एह पिछाणो जी॥ ४०॥
त्रिविधे त्राइ छ काय रा साध, त्यांरी दया निरतर राखें जी।
ते छ काय रा पीहर छ काय ने मार्‌या, धर्म किसे लेखे भाखें जी॥ ४१॥
छ काय रा जीवां ने हणें ससारी, त्यारें बिचे पडे नही जायो जी।
बिचे पड्या वरत भागे साध रो, ते विकला ने खबर न कायो जी॥ ४२॥
केइ तो कहें साधां नें बिचें न पडणो, केइ कहे विचें पडणो जी।
साधां नें समभावे रहणो, ते विकलां रे नही छें निरणो जी॥ ४३॥

साधां नें बिचें पडणों त्रिविधे निषेध्यों, ते हणतां बिचें न पडें जायो जी।
पिण गृहस्थ नें धर्म कहे बिचें पडीयां, तो घर रों धर्म कांय गमायों जी ॥ ४४ ॥
हणे जीतब नें परसंसा रे हेतें, हणें मांन नें पूजा रे कांमो जी।
वले जनम मरण मूंकावा हणें छें, हणें दुख गमावण तांमो जी ॥ ४५ ॥
यां छ कारणां छ काय नें मारें तो, अहेत रो कारण थावें जी।
जनम मरण मूंकावण हणें तो, समकत रतन गमावें जी ॥ ४६ ॥
ए छ कारणें छ काय नें मार्‍यां, आठ कर्मां री गांठ बंधायो जी।
मोह नें मार वधें घणी निश्चें, वले पडें नरक मे जायो जी ॥ ४७ ॥
अर्थ अनर्थ हिंसा कीधां, अहेत रो कारण तासो जी।
धर्म रें कारण हिंसा कीधां, बोध वीज रो नासो जी ॥ ४८ ॥
ए छ कारणें छ काय नें मारें, ते तो दुख पांमे इण संसारो जी।
ए तो आचारंग रें पेंहलें अधेनें, छ उदेसा में कह्यो विसतारो जी ॥ ४९ ॥
केइ समण माहृण अनार्य पापी, करें हिंसा धर्म री थापो जी।
कहें प्रांण भूत जीव नें सतव, धर्म हेतें हण्या नहीं पापो जी ॥ ५० ॥
एहवी उंधी परूपणा करे अनार्य, त्यांनें आर्य बोल्या घर पेमों जी।
थें भूंडो दीठो नें भूंडो सांभलीयों, भूंडो मांन्यो भूंडो जांण्यों एमो जी ॥ ५१ ॥
जीव मार्‍यां में धर्म परूपें, ए तो अनार्य री वांणो जी।
ते तो मूंढ मिथ्याती भारीकर्मी, त्यांरी सुध वुध नही ठीकाणो जी ॥ ५२ ॥
त्यां हिंसाधर्मी नें आर्य पूछ्यों, थानें मार्‍यां धर्म कें पापो जी।
जब तो कहें म्हांनें मार्‍यां छे पाप एकंत, साच बोले कीधी सुध थापो जी ॥ ५३ ॥
जब आर्य कहें थानें मार्‍यां पाप छे, तो सर्व जीवां नें इम जांणो जी।
ओरां नें मार्‍यां धर्म परूपें, थें कांय बूडो कर कर तांणो जी ॥ ५४ ॥
इम हिंसाधर्मी अनार्य त्यांनें, कीधा जिण मारग सूं न्यारो जी।
जोवों अचारंग चोथा अधेन मांहें, बीजें उदेसें विसतारो जी ॥ ५५ ॥
ओरां नें मार्‍यां धर्म परूपें, आप नें मार्‍यां पापो जी।
आ सरधा विकलां री उंधी, तिणमें कर रह्या मूंड विलापो जी ॥ ५६ ॥
अर्थ अनर्थ धर्म रे काजें, जीव हणें छ कायो जी।
तिणनें मंद बुधी कह्यों दसमां अंग में, पेंहला अधेन रे मांयो जी ॥ ५७ ॥
छ काय जीवां रो घमसांण करनें, श्रावकां नें जीमावें जी।
उणनें मंद वुधी तो कह दीयो भगवंत, तिणनें धर्म किसी विध थावे जी ॥ ५८ ॥
कोइ तो जीवां नें मार खवावें, कोइ जीव खवावें आखा जी।
तिण मांहें एकंत धर्म परूपें, ते अनार्य री भाषा जी ॥ ५९ ॥

केइ जीव मास्यां मांहे धर्म कहे छें, ते पूरा अग्यांनी उंधा जी।
त्यांने जांण पुरष मिलें जिण मारग रो, किण विध वोलावें सूधा जी॥ ६०॥
लोह नो गोलो अगन तपाए, ते अगन वर्ण करे तातो जी।
ते पकड संडासे आयो त्यां पासें, कहें बलतो गोलों थें भालो हाथो जी॥ ६१॥
जब पाषडीया हाथ पाछो खाच्यो, जब जाण पुरुष कहे त्याने जी।
थे हाथ पाछो खांच्यो किण कारण, थांरी सरधा म राखो छाने जी॥ ६२॥
जब कहे गोलो म्हे हाथे ल्यां तों, म्हांरो हाथ बलें लागें तापो जी।
तो थांरो हाथ बाले तिणने पाप के धर्म, जब कहें उणने लागो पापो जी॥ ६३॥
थारो हाथ बाले तिणनें पाप लागें तो, ओरा नें मास्यां धर्म नाही जी।
थें सर्व जीव सरीपा जांणों, थे सोच देखो मन मांहि जी॥ ६४॥
जे जीव मास्या मे धर्म कहे ते, रूले काल अंनतो जी।
सूंयगडा अग अधेन अठारमे, तिहा भाष गया भगवंतो जी॥ ६५॥
स्थांनक करावे छ काय हणे ते, करे अनत जीवा री घातो जी।
अहेत नो कारण निश्चे हुवो छें, धर्म जाणे तो आवे मिथ्यातो जी॥ ६६॥
जब कहे म्हे स्थानक करावा तिणमें, जांणा छां एकंत पापो जी।
तिण कहिवा नें पाप कह्यो भूठ बोले, सरधा गोप विगोयो आपो जी॥ ६७॥
कोइ मिनष आंतरीयो छे तिण काले, घन उदकें स्थानक काजो जी।
जो उ पाप जाणे तो पर भव जातें, इसडों कांय कीयो अकाजो जी॥ ६८॥
घर रो धन देने जीव मराया, ते अर्थ न दीसें कांई जी।
अनर्थ पिण जांण्यों नही दीसें, धर्म जाण्यो दीसें तिण माहि जी॥ ६९॥
हिंसा री करणी मे दया नही छें, दया री करणी मे हिंसा नांही जी।
दया नें हिसा री करणी छें न्यारी, ज्यूं तावडो नें छांही जी॥ ७०॥
ओर वसत में भेल हुवें पिण, दया मे नही हिसा रो भेलो जी।
ज्यूं पूर्व ने पिछम रो मारग, किण विध खाये मेलो जी॥ ७१॥
केइ दया ने हिसा री मिश्र करणी कहे, ते कूडा कुहेत लगावें जी।
मिश्र थापण ने मूढ मिथ्याती, भोला लोकां ने भरमावें जी॥ ७२॥
जो हिंसा कीयां थी मिश्र हुवे तो, मिश्र हुवें पाप अठारो जी।
एक फिस्यां अठारे फिरे छें, कोइ वुधवत करजो विचारो जी॥ ७३॥
जिण मारग री नीव दया पर, खोजी हुवें ते पावे जी।
जो हिंसा माहे धर्म हुवें तो, जल मथीयां घी आवे जी॥ ७४॥
संवत अठारे नें वरस चमालें, फागुण सुद नवमी रिववारो जी।
जोड कीधी दया धर्म दीपावणां, बगडी सहर मभारो जी॥ ७५॥

●

ढाल : १०

दुहा

नमूं वीर सासण धणी, गणधर गोतम सांम।
त्यां मोटा पुरुषां रा नांम थी, सीझे आतम काम॥ १ ॥
त्यां घर छोडे संजम लीयो, भगवंत श्री विरधमांन।
बारें वरस नें तेरें पखे, छदमस्थ रह्या भगवान॥ २ ॥
त्यां गोसाला नें चेलो कीयो, ते तो निश्चे अजोग साख्यात।
सराग भाव आयों तेह थी, ते पिण छदमस्थ पणा री बात॥ ३ ॥
तीर्थंकर साध छदमस्थ थकां, चेलो न करें दीख्या देवे नांहीं।
धर्मकथा पिण कहें नहीं, नव मे ठांणे अर्थ मांही॥ ४ ॥
बारें वरस नें तेरे पख मझे, दीख्या दे चेलों न कस्यो कोय।
एक गोसाला अजोग नें चेलों कीयों, निश्चें होणहार टलें नही सोय॥ ५ ॥
तीर्थंकर साथें दीख्या लीयें, तिणने दीख्या दे जिणराय।
पछें केवली हुवें नहीं त्यां लगें, कीण नें दीख्या देवें नांय॥ ६ ॥
गोसाला नें वीर बचावीयो, छदमस्थ पणा रो सभाव।
मोह राग आयो तिण उपरें, तिणरो विकल न जांणें न्याव॥ ७ ॥
गोसाला नें वीर बचावीयों, तिणनों मूर्ख थापें धर्म।
सूनें चित बकवो करें, ते भूला अग्यांनी भर्म॥ ८ ॥
कहे भगवंत दीख्या लीयां पछें, न कीयो किंचित परमाद ते पाप।
जांणतां नें अजांणतां, कदे दोष न सेव्यों जिण आप॥ ९ ॥
इम कही भोला लोकां भणी, न्हांखे छें फंद मांय।
तिणरो न्याय निरणो जथा तथ कहूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ १० ॥

ढाल

[पाखंड वधसी आरे पाचमे]

गोसाला नें बचायों वीर सराग थी रे, तिण मांहें धर्म नही लिगार रे।
ओ तो निश्चें होणहार टलें नहीं रे, तिणरो भोला नहीं जांणें मूल विचार रे।
कुपातर नें बचायां धर्म किहां थकी रे* ॥ १ ॥
कुपातर नें बचायो वीर सराग थी रे, तिणमें म जांणों कोइ कूड रे।
संका हुवें तो भगोती रों अर्थ देखनें रे, खोटी सरधा नें कर दो दूर रे॥ कु० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

भारीकर्मां जीवा ने समभ पडे नही रे, ते तो कुगुरा रे बदले बोले कूड रे।
ताणा ताण मे जासी ताणीया रे, वेहती अगाध नदी रे पूर रे॥ ३ ॥
गोसालो तो अधर्मी अवनीत थो रे, भारीकर्मो कुपातर जीव रे।
वले दावानल छे जिण धर्म रो रे, दुष्टया मे दुष्टी घणो अतीव रे॥ ४ ॥
भगवत ने भूठा पाडण पापीये रे, तिल नें उखणीयो पापी जांण रे।
मिथ्यात पडवजीयो श्री भगवान थी रे, त्यारी मूल न राखी पापी काण रे॥ ५ ॥
जगत तणा सगला चोरा थकी रे, गोसालो छे इधको चोर निसंक रे।
वले कूड ने कपट तणो थो कोथलो रे, तिणरे करडो मिथ्यात तणों छें डंक रे॥ ६ ॥
तिणने वीर बचायो बलतो जाण ने रे, लबद फोडवें सीतल लेस्या मूंक रे।
राग आण्यों तिण पापी उपरे रे, छदमस्थ गया तिण कालें चूक रे॥ ७ ॥
केइ भेषधारी भागल इसडी कहे रे, गोसाला नें बचाया हूवो धर्म रे।
त्या धर्म जिणेसर नों नही ओलख्यो रे, ते तो भूल गया अग्यानी भर्म रे॥ ८ ॥
वले कहे छे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, दोष न सेव्यो मूल लिगार रे।
परमाद किंचत मात्र सेव्यों नही रे, वले आश्रव न सेव्यों किण ही वार रे॥ ९ ॥
इम कहि कहि ने सचवादी हुवें रे, पिण एकंत बोले छे मूसावाय रे।
त्या धर्म जिणेसर नो नही ओलख्यो रे, फूटा ढोले ज्यूं बोले विरुआ वाय रे॥ १० ॥
ते भूठ बोले छें सुध बुध बाहिरो रे, त्यांरी सरधा री त्यांने खबर न काय रे।
त्या विकला री सरधा ने परगट करूं रे, ते भवीयण सांभलजो चित ल्याय रे॥ ११ ॥
भगवत आहार कीयो छे जाण ने रे, तिणमे कहे छे परमाद नें आश्रव पाप रे।
वले निद्रा लीधा मे कहे पाप छे रे, ते निद्रा पिण लीधी भगवत आप रे॥ १२ ॥
परमाद न सेव्यों कहे भगवांन नें रे, वले कहिता जावें पापी परमाद रे।
न्याय निरणो विकला रे छे नही रे, यूंही करे कूडो विषवाद रे॥ १३ ॥
मोह करम उदय सू सावद्य सेवीयो रे, छदमस्थ थका श्री भगवान रे।
अजाणपणें ने विण उपीयोग छे रे, ते बुधवंत सुणो सुरत दे कांन रे॥ १४ ॥
दस सुपनां पिण भगवत देखीया रे, दस सुपनां रो पाप लागो छे आण रे।
ते पिण दसू सुपना रो पाप जुओ जुओ रे, तिणरी सका मत करजों चतुर सुजाण रे॥ १५ ॥
कोइ कहे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, पाप रो अस न सेव्यों मूल रे।
जो उवे सुपना देख्यां मे पाप परूपसी रे, तो त्यांरे लेखे त्यांरी सरधा मे धूल रे॥ १६ ॥
सात प्रकारे छदमस्थ जाणीये रे, कह्यो छे ठांणाअग सूतर माहि रे।
हिंसा लागें छें प्रांणी जीव री रे, वले लागें मृषा नें अदत्त ताहि रे॥ १७ ॥
शब्दादिक आस्वादें रागें करी रे, पूजा सतकार वांछें छे मन माय रे।
कदे असणादिक पिण सावद्य भोगवे रे, वागरें जेसो करणी नावें ताय रे॥ १८ ॥

ए सातोंइ सावद्य रा थांनक कह्या रे, छदमस्थ सेवें छें किण ही वार रे।
त्यांरो पिण प्राछित जथायोग छें रे, जांण अजांण सेव्यां रो करे विचार रे॥१९॥
ए सातोंइ वोल न सेवें केवली रे, छदमस्थ पिण निरंतर सेवें नांहि रे।
सेवें तो मोह कर्म उदें हुआं रे, संका हुवें तो जोवों सूतर मांहि रे॥२०॥
गोसाला नें वीर बचायो तिण दिनें रे, छदमस्थ हुंता जिण दिन भगवान रे।
मोह राग आयों भगवंत नें तिण दिनें रे, निश्चें होणहार टालण नहीं आसांन रे॥२१॥
छदमस्थ थकां पिण श्री भगवांन नें रे, समें समें लागता कर्म सात रे।
मोह कर्म वशेष थकी उदें हुवो रे, कुपात्र नें बचाय लीधो साख्यात रे॥२२॥
गोसालो दावानल श्री जिण धर्म नों रे, ते दुष्टां में दुष्टी घणो अतीव रे।
वले कोयलो कूड कपट रो तेहनें रे, बचायां रा फल सुणों भव जीव रे॥२३॥
गोसाले तेजू लेस्या मेलनें रे, दोय साधां री कीधी घात रे।
उंचो अंवलों वोल्यो भगवांन नें रे, वीर सूं पडवजीयो मिथ्यात रे॥२४॥
वले लेस्या मेली पापी वीर नें रे, त्यांरी पिण एकंत करवा घात रे।
तिण जांण्यों जमाउ सासण मांहरो रे, एहवो गोसालो दुष्ट कुपात रे॥२५॥
तिल रो प्रश्न पूछ्यां भगवंते कह्यो रे सुगली मांहें तिल बताया सात रे।
जब वीर नें भूठा घालण पापीयें रे, तिल उखण नें कीधी घात रे॥२६॥
तेजू लेस्या सीखाइ गोसाला भणी रे, तिण लेस्या सूं कीधी साधां री घात रे।
वले लोही ठांणे कीधों भगवंत नें रे, इसडा कांम कीया पापी साख्यात रे॥२७॥
गोसाला पापी नें वीर बचावीयों रे, तो बधीयो भरत में घणो मिथ्यात रे।
घणा जीवां नें पापी बोवीया रे, उंधी सरधा हीया में घात रे॥२८॥
कूड कपट करे नें पापीयें रे, भूठोइ सासण दीयो थाप रे।
अणहूंतों तीर्थंकर वाज्यो लोक में रे, वीर नों सासण दीयो उथाप रे॥२९॥
गोसाला नें वीर बचायो तठा पछे रे, घणा जीवां रें हुवों बिगाड रे।
ओ पापी घाडायत हूवो धर्म रो रे, इण गुण तो न कीधो मूल लिगार रे॥३०॥
गोसाला पापीडो बचीयां पछें रे, तिण कीधा पापीडे अनेक अकाज रे।
तिण दुष्टी नें बचायां धर्म किहां थकी रे, विकलां नें मूल न आवें लाज रे॥३१॥
गोसाला नें बचायां धर्म कहे तके रे, गोसाला रा केडायत जांण रे।
त्यां धर्म न जांण्यों श्री जिणराज रो रे, यूं ही बूडें अग्यांनी कर कर तांण रे॥३२॥
जो धर्म होसी गोसाला नें बचावीयां रे, तो छ ही काय बचायां होसी धर्म रे।
जो उवे जीव बचायां धर्म गिणे नहीं रे, तो विकलां री सरधा रो निकल्यों भर्म रे॥३३॥
गोसाला नें वीर बचायो जिण विधे रे, श्रावक नें तिण विध बचावें नांहि रे।
कहें छें तिण हीज विध करे नही रे, तो धूर छें त्यांरी सरधा मांहि रे॥३४॥

पेट दुखे छे सो श्रावकां तणो रे, जूदा हुवे छे जीव ने काय रे।
साव पधास्या छे तिण अवसरे रे, त्यारें हाथ फेरे तो साता थाय रे॥ ३५॥
लवदधारी तो साध पधास्या देख ने रे, गृहस्थ बोल्या छे इम वाय रे।
हाथ फेरो त्यारा पेट उपरे रे, नही फेरो तो श्रावक जीवा जाय रे॥ ३६॥
जब कहे म्हांने तो हाथ न फेरणा रे, अें मरो भावे दुखी घणा हुवो तांम रे।
मरणो जीवणो मूल न वाछे तेहनों रे, म्हारे गृहस्थ सूं काई काम रे॥ ३७॥
तो गोसाला दुष्टी नें वीर बचावीयो रे, तिण माहे कहो छो निकेवल धर्म रे।
तो श्रावक मरतां नें नही बचावीयां रे, त्यांरी सरधा रो त्याहीज काढ्यों भर्म रे॥ ३८॥
श्रावक ने बचाया धर्म गिणे नही रे, गोसाला ने बचाया गिणे धर्म रे।
ते ववेक विकल छे सुध बुध बाहिरा रे, उधी सरधा सू बांधे पाप कर्म रे॥ ३६॥
गोसाला पापी दुष्टी रे कारणे रे, लबद फोडी छें श्री जगनाथ रे।
तो सो श्रावक जीवा मरता देख ने रे, थे कांय न फेरो त्यारे हाथ रे॥ ४०॥
धर्म कहे गोसाला ने बचावीया रे, तो पोतें कांइ छोडी धर्म री रीत रे।
सो श्रावक मरतां ने बचावे नही रे, त्या विकला री विकल करे परतीत रे॥ ४१॥
गोसाला दुष्टी ने वीर बचावीयो रे, तिण माहे धर्म कहे साख्यात रे।
सो श्रावक मरता ने नही बचावीयां रे, त्यां विकलां री बिगडी सरधा बात रे॥ ४२॥
श्रावक आखड ने पड मरतो हुवे रे, जिण ने पडता झेले राखे नाहि रे।
गोसाला ने बचाया मे कहे छे धर्म रे, ओ पिण अधारो त्यारे माहि रे॥ ४३॥
ग्यान दरसण ने देस चारित श्रावक मझे रे, गोसालो तो एकत अधर्मी जाण रे।
तिणने बचायां धर्म किहा थकी रे, तिणरो न्याय न जाणे मूढ अयांण रे॥ ४४॥
गोसाला ने बचाया रो कहे धर्म छे रे, श्रावक नें बचाया कहे पाप रे।
एहवो अधारो छे विकला तणे रे, उधी सरधा री कर राखी छे थाप रे॥ ४५॥
बारें वरस नें तेरे पख मझे रे, छदमस्थ रह्या छे श्री भगवान रे।
तिणमे एक गोसाला नें बचावीयो रे, किणनें न बचायां श्री विरधमान रे॥ ४६॥
गोसाला दुष्टी ने बचावीयां रे, जो धर्म कठेइ जाणे साम रे।
तो दोनूंइ साध बचावत आपणा रे, वले रात दिन करता ओहीज काम रे॥ ४७॥
गोसाला दुष्टी ने बचावीयां रे, तिण माहे धर्म जाणें जिणराय रे।
दोय साध मरता नही राख्या आपणा रे, ओ पिण किण विध मिलसी न्याय रे॥ ४८॥
अकाले जगत ने मरतो देखीयो रे, पिण आडा न दीधा भगवत हाथ रे।
धर्म हुवें तो भगवत आघो नही काढता रे, निश्चेंइ तिरण तारण जगनाथ रे॥ ४६॥
अनत चोवीसी तो आगे हुइ रे, हिवडां तो रिषभादिक चोवीस रे।
त्या ताख्या भव जीवा नें समझाय ने रे, पिण मरता न राख्या श्री जगदीस रे॥ ५०॥

एक गोसालो वीर बचावीयो रे, ते तो निश्चेंइ होणहार रे।
मोह राग आयो भगवांन नें रे, तिणरो न्याय न जांणें मूढ गिंवार रे॥५१॥
संवत अठारे तेपने समे रे, आसाड विद इग्यारस मंगलवार रे।
गोसाला कुपातर नें ओलखावीयो रे, जोड कीधी छें माढा गाव मझार रे॥५२॥

ढाल : ११

दुहा

दोय उपगार श्री जिण भाषीया, त्यारो बुधवंत करजो विचार।
तिणमे एक उपगार छें मोष रो, बीजो ससार नो उपगार॥ १ ॥
उपगार करे कोइ मोष रो, तिणरी जिण आगना दे आप।
उपगार करे ससार नो, तिहा आप रहे चुपचाप॥ २ ॥
उपगार करे कोइ मोष रो, तिणनें निश्चेंइ धर्म साख्यात।
उपगार करे ससार नों, तिणमे धर्म नही तिलमात॥ ३ ॥
दोनू उपगार छे जुवा जुवा, ते कठेइ न खाअे मेल।
पिण मिश्र पाषड्या परूप नें, कर दीयो मेल सभेल॥ ४ ॥
कुण कुण उपगार छें मोष रो, कुण कुण ससार ना उपगार।
त्यांरा भाव भेद परगट करू, ते सुणजो विसतार॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगना में]

ग्यान दरसण चारित ने वले तप, या च्यारा रो कोइ करे उपगार।
तिणने निश्चेइ निरजरा धर्म कह्यो जिण, वले श्री जिण आगना छे श्रीकार।
ओ तो उपगार निश्चेइ मुगत रो॥ १ ॥
ग्यान दरसण चारित ने तप, या च्यारा विनां कोइ करे उपगार।
तिणने निश्चेइ धर्म नही जिण भाख्यो, वले जिण आगना पिण नही छे लिगार।
ओ तो उपगार ससार तणो छे*॥ २ ॥
ससार तणो उपगार करें छे, तिणरें निश्चेइ ससार वधतो जांणो।
मोष तणो उपगार करे छे, तिणरे निश्चेइ नेडी दीसे निरवाणो॥ ३ ॥
कोइ दलदरी जीव ने धनवत कर दे, नव जात रों परिग्रहो देइ भर पूर।
वले विवध प्रकारे साता उपजावे, उणरो जावक दलदर कर दे दूर॥ ओ० ४ ॥
छ काय रा सस्त्र जीव इविरती, त्यारी साता पूछी ने साता उपजावे।
त्यारी करे वीयावच विवध प्रकारे, तिणने तीथकर देव तों नही सरावें॥ ५ ॥
गृहस्थ री साता पूछ्या ने वीयावच कीधा, तिण सू साध तो होय जाअे अणाचारी।
तो त्यारी साता पूछ्या ने वीयावच कीया मे, जिण आगना पिण नही छे लिगारी॥ ६ ॥

---

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

साता पूछ्यां तो साध नें पाप लागे छें, तो साता कीधां में धर्म किहां थी होवें।
पिण मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल, ते श्री जिण आगमां साह्मों न जोवें॥ ७॥
कोइ मरता जीव नें जीवां बचावें, झाडा झपटा करें ओषध देइ तांम।
वले अनेक उपाय करे नें तिणनें, मरतों राख्यों साजो कीयो तमांम॥ ८॥
कोइ मरता जीव नें सूंस करावें, च्यारूं सरणा देइ नें करावें संथारों।
ग्यांन ध्यांन मांहें परिणांम चढावें, न्यातीलां सूं देवें मोह उतारो॥ ९॥
श्रावक नों खांणों पीणों छें सर्व इविरत में, ते सेवें तो सावद्य जोग व्यापारो।
वले नव ही जात रो परिग्रहो इविरत में, तिणनें सेवारे छे कोइ वारूंवारो॥ १०॥
श्रावक नों खांणो पीणों छे सर्व इविरत में, तिणरों त्याग करावें चढाय वेंरागों।
वले नव ही जात रों परिग्रहो इविरत में, ते छोडें छोडावे त्यारे सिर भागों॥ ११॥
कोइ लाय सूं बलतां नें काढ बचायों, वले कूअें पडतां नें झाल बचायों।
तलाव मांहें डूबा नें बारें काढें, वले उंचा थी पडतां ने झाले लीयो ताह्यों॥ १२॥
जनम मरण री लाय थी बारें काढें, भव कूआ मांहि थी काढें बारें।
नरकादिक नीची गति मांहें पडतां नें राखें, संसार समुद्र थी बारें काढ उधारें॥ १३॥
किणरें लाय लागी घर बले छें, तिणमें नांन्हा मोटा जीव बलें लाय मांहि।
कोइ लाय बुझाय त्यांनें बारें काढें, घणां रें साता कीधी लाय बुझाई॥ १४॥
किणरें तिसणा लाय लागी घर भितर, ग्यांनादिक गुण बलें तिण मांय।
उपदेस देइ तिणरी लाय बुझावें, रूंम रूंम में साता दीधी बपराय॥ १५॥
कोइ टाबर पाले नें मोटा करें छे, आछी आछी वस्त तिणनें खवाय।
वले मोटें मंडाण करे परणावें, वले धन माल देवें कमाय कमाय॥ १६॥
कोइ बेटा नें रूडी रीत समझाए, धन माल सगलोइ देवें छोडाय।
कांम भोग अस्त्रीयांदिक खावों नें पीवो, भली भांत सूं त्याग करावें ताय॥ १७॥
मात पिता री सेवा करें दिन रात, वले मन मान्यां भोजन त्यांनें खवावें।
वले कावड कांधे लीयां फिरें त्यांरी, वले बेहूं टकां रो सिनांन करावें॥ १८॥
कोइ मात पिता ने रूडी रीतें, भिन भिन कर नें धर्म सुणावें।
ग्यांन दरसण चारित त्यांनें पमावें, कांम भोग शब्दादिक सर्व छोडावे॥ १९॥
जिणरो खांणों पीणों गेंहणो इविरत में, तिणनें मन मांने ज्यूं खवावें पीवावे।
वले मांगें जिको तिणनें धन धांन आपें, वले विवध पणे तिणनें साता उपजावें॥ २०॥
जिणरों खांणों पीणों गेंहणों इविरत में छें, तिणनें उपदेस दइ नें परहो छोडावे।
तिणरें ग्यांनादिक गुण घट मे घालें, तिणरी तिसणा लाय नें परी मिटावें॥ २१॥
किणरा वालां काढें किणरा कीडा काढें, वले लटां जूंआदिक काढें छें ताहि।
कानसिलाया बुगादिक काढें, घणी साता उपजावें शरीर रें मांहि॥ २२॥

किणरे बाला कीडा नें लटां जूंआदिक, शरीर में उपनां जीव अनेक।
तिणने वारें काढण रा त्याग करावें, कहे सरीर बारे काढणों नही छे एक ॥ २३ ॥
गृहस्थ भूलो उज्जड वन मे, अटवी ने वले उजाड जावे।
तिणने मारग वताय ने घरे पोंहचावें, वले थाको हुवें तो कांधे वेसावे ॥ २४ ॥
संसार रूपणी अटवी मे भूला ने, ग्यानादिक सुध मारग बतावें।
सावद्य भार ने अलगो मेलाए, सुखे सुखे सिवपुर मे पोंहचावे ॥ २५ ॥
नाग नागणी हुता वलता लकडा मे, त्याने पारसनाथ जी काढ्या कहे छे वार।
अगन मे वलता ने राख्या जीवता, पाणी ने अगनादिक रा जीवा ने मार ॥ २६ ॥
पारसनाथ जी घर छोडे काउसग कीधों जव, कमठ उपसर्ग कर वरषायो पाणी।
जव पदमावती हेठे कीयो सिंघासण, धरणिंद्र छत्र कीयों सिर आंणी ॥ २७ ॥
नाग नागणी ने नोकार सुणाए, च्यारूं सरणा ने सूंस दराया जांणी।
ते सुभ परिणामां सूं मरनें हूआ, धरणिंद्र ने पदमावती रांणी ॥ २८ ॥
सूग्रीव सूं उपगार कीयो राम लछमण, जव सुग्रीव हुवो त्यारो सखाइ।
सीता री खवर आणे रावण ने मरायो, तिण पाछों उपगार कीयो भीड आइ ॥ २९ ॥
कोइ दुष्टी जीव जूं ने मारतो थो, तिणने वरजे ने जूं ने वचाइ।
ते जूं रो जीव मिनप हुवो जव, इणरो कजीयो इण पिण दीयो मिटाइ ॥ ३० ॥
धणी रा मूंढा आगे सेवग मरे ने, धणी ने जीवतो कुसले खेमे काढे।
जव धणी तूठो थको रिजक रोटी दे, इणरो इहलोक रो काम सिराडे चाढे ॥ ३१ ॥
दोय इदर आयां कोणक री भीडी, कोणक रे साता कर दीधी तांम।
एक कोड असी लाख मिनपां ने मारें, कोणक रो सुधास्यो काम ॥ ३२ ॥
एकीका जीव ने अनती वार वचाया, त्या पिण इणनें अनती वार वचायो।
आमां साह्मा उपगार संसार ना कीधा, त्यासू तो जीव री गरज सरी नही कायो ॥ ३३ ॥
हाती नेहतादिक देवे आमा साह्मा, लाडू खोपरादिक देवे आमां साह्मां।
अथवा कोइक आघाइ पिण देवे, इत्यादिक छे अनेक ससार नां कामा ॥ ३४ ॥
संसार नों उपगार करे जिण सेती, कदा ते पिण पाछो करें उपगार।
ए तो उपगार एकीका जीवा सूं, कीधा छें अनंत अनती वार।
आ सरधा श्री जिणवर भाषी ॥ ३५ ॥
संसार नां उपगार सव ही फीका, ते तो थोडा मांहे विलें होय जावें।
संसार नां उपगार फीका छें, त्यांसूं मुगति तणा सुख कोयन पावे ॥ आ० ३६ ॥
संसार तणा उपगार कीया में, केइ मूढ मिथ्याती धर्म वतावें।
ते श्री जिण मारग ओलखीयां विण, मन मानें ज्यूं गालां रा गोला चलावें ॥ ३७ ॥
जितला उपगार संसार तणा छें, जे जे करे ते मोह वस जांणों।
साध तो त्यानें कदे न सरावे, संसारी जीव तिणरा करसी वखांणों ॥ ३८ ॥

संसार तणा उपगार कीयां में, जिण धर्म रो अंस नही छे लिगार।
संसार तणा उपगार कीयां में, धर्म कहे ते तो मूंढ गिंवार॥३६॥
किण ही जीव नें खप कर नें वचायो, किण ही जीव उपजाय ने कीधो मोटो।
जो धर्म होसी तो दोयां नें धर्म होसी, जो तोटो होसी तो दोयां नें तोटो॥४०॥
वचावण वाला विचें तो उपजावण वालों, सांप्रत दीसें उपगारी मोटो।
थांरो निरणो कीयां विण धर्म कहे छें, त्यांरो तो मत निकेवल खोटों॥४१॥
वचावण वालों ने उपजावण वालो, अें तो दोनूं संसार तणा उपगारी।
एहवा उपगार करे आमां साह्मां, तिणमें केवली रो धर्म नही छें लिगारी॥४२।
जीव नें जीवां वचावें तिण सूं, वंध जावें तिणरों राग सनेह।
जो पर भव में ऊ आय मिलें तो, देखत पांण जागे तिण सूं नेह॥४३॥
जीव नें जीव मारें छें तिण सूं, वंध जावें तिण सूं धेप वशेख।
ते पर भव में उ आय मिले तो, देखत पांण जागें तिण सूं धेप॥४४॥
मित्री सूं मित्रीपणों चलीयों जावें, वेरी सूं वेंरीपणों चलीयों जावें।
अें तो राग धेष कर्मां रा चाला, ते श्री जिण धर्म माहे नही आवें॥४५॥
कोइ अणुकंपा आंणी घर मंडावें, कोइ मंडता घर नें देवें भंगाय।
ओ प्रतख राग नें धेप उघाडो, ते आगें लगा दोनूं चलीया जाय॥४६॥
कोइ तो पेंला रा कांम भोग वधारें, कोइ कांम भोग री दे अंतराय।
ओ पिण राग नें धेष उघाडो, ते आगें लगा दोनूं चलीया जाय॥४७॥
कोइ पेंला रों धन गमीयो वतावें, वले अस्त्रीयादिक पिण गमीया वतावें।
कोइ लाभ नें तोटो लोकां नें बतावें, तिण सूं आगें लगो राग चलीयो जावें॥४८॥
कोइ वेंदगरों करे करे नें लोकां रों, रोग गमाय ने जीवां वचावें।
ओं उपगार लोकां सूं कीधां, आगे लगो राग चलीयों जावें॥४६॥
कहि कहि नें कितरोंएक कहूं, संसार तणा उपगार अनेक।
ग्यांन दरसण चारित नें तप विनां, मोष तणों उपगार नहीं छें एक॥५०॥
संवर ना भेद वीस कह्या जिण, निरजरा तणा भेद कह्या छे बार।
अें बतीसूंइ वोल उपगार मुगत रा, ओर मोष रों उपगार नही छे लिगार॥५१॥
संसार नें मोष तणा उपगार, समदिष्टी हुवे ते न्यारा न्यारा जांणें।
पिण मिथ्याती नें खवर पडें नहीं सूधी, तिण सूं मोह कर्म वस उंधी तांणें॥५२॥
संसार नें मोष रो मारग ओलखावण, जोड कीधी छें खेरवा सहर मझार।
संवत अठारें नें वरस चोपनें, आसोज सुदि वीज नें सुकरवार॥५३॥

ढाल : १२

दुहा

चोवीसमां जिणवर हुआ, महावीर विख्यात।
त्यांरी पहली वांणी निरफल गई, ते हुवो अछेरो इचरज बात॥ १ ॥
जंभीक गाम ने बाहिरें, सांम नाम करषणी रे खेत।
तिहा साल नांमा विरख थों, गहर गभीर पांन समेत॥ २ ॥
तिण साल विरख हेठें आवीया, भगवत श्री विरघमान।
वेसाख सुदि दसम दिनें, उपनो केवल ग्यान॥ ३ ॥
केवल महोछव करवा भणी, तिहा देवता आया अनेक।
पिण मिनषा ने ठीक पडी नही, तिणसूं मिनष न आयो एक॥ ४ ॥
देवता आगें वाणी वागरी, थित साचववा काम।
कोइ साध श्रावक हुवो नहीं, तिण सूं वाणी निरफल गई आम॥ ५ ॥
जो धन थकी धर्म नीपजे, तो देवता पिण धर्म करत।
वीर वाणी सफली करे, मन माहें पिण हरष धरंत॥ ६ ॥
वरत पचखाण न हुवे देवता थकी, धन सू पिण धर्म न थाय।
तिण सू वीर वाणी निरफल गई, तिणरो न्याय सुणो चित्त ल्याय॥ ७ ॥

ढाल

[जीव मोह अणुकम्पा न आणिये]

जिण धर्म हुवे सोनइया दीयां, तो देवता देता हाथो हाथ जी।
पुरत मनोरथ मन तणा, वीर वाणी निरफल न गमात जी।
भव करजों परख जिण धर्म री* ॥ १ ॥
रतन हीरा नें माणक पना, मन माने ज्यू देवता देत जी।
वीर री वाणी सफल करे, देवता पिण लाहो लेत जी॥ भ० २ ॥
धन दीयां हुवे धर्म जिण भाखीयो, देवता दांन दे दग चाल जी।
यूं कीया वीर वाणी सफल हुवें, तो अछेरो नही हुवें तिण काल जी॥ ३ ॥
धन धांनादिक लोकां ने दीयां, ए तो निश्चे इ सावद्य दांन जी।
तिणमें धर्म नही जिण राज रों, ते भाख्यों छे श्री भगवांन जी॥ ४ ॥
जो जीव बचायां जिण धर्म हुवे, ओं तो देवता रे आसांन जी।
अनंता जीवां नें बचाय नें वांणी सफल करता देवां न जी॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

असंख्याता समदिष्टि देवता, एकीको बचावत अनंत जी।
जो धर्म हुवें तो आघो न काढता, वीर नीं वांणी सफल करंत जी ॥ ६ ॥
साध श्रावक रों धर्म छें विरत में, जीव हणवा रा करें पचखांण जी।
ए धर्म देवता थी हुवें नहीं, तिणसूं निरफल गई वीर वांण जी ॥ ७ ॥
जीवां नें जीवां बचावीयां हुवें, संसार तणों उपगार जी।
यूं तो सफल न हुवें वांणी वीर नीं, धर्म रो नहीं अंस लिगार जी ॥ ८ ॥
असंजती नें जीवां बचावीयां, वले असंजती नें दीयां दांन जी।
इम कीयां वीर वांणी सफल हुवें, ओ तो देवतां रे पिण आसान जी ॥ ९ ॥
कुपातर जीवां नें बचावीयां, कुपातर नें दीधां दांन जी।
ओ सावद्य किरतव संसार नों, भाष्यो श्री भगवांन जी ॥ १० ॥
उत्तराधेन अठावीसमें कह्यों, मोष नां मारग भाष्या च्यार जी।
बाकी सर्व कांमा संसार नां, सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ११ ॥
जो धर्म हुवें सावद्य दांन में, असंजती नें बचायां हुवें धर्म जी।
तो निश्चेंइ समदिष्टी देवता, ओ धर्म करे काटें कर्म जी ॥ १२ ॥
कर्म कटें इण सावद्य धर्म सूं, एहवा सावद्य कांमा अनेक जी।
ते तो थोडा सा परगट करूं, ते सुणजों आंण ववेक जी ॥ १३ ॥
मछ गलागल लग रही, सारा दीप समुद्रां मांय जी।
मोटो मछ छोटा नें भखें, उणसूं मोटों उणनेंइ खाय जी ॥ १४ ॥
जो उद्यम करे एक देवता, तो एक दिन में बचावें अनेक जी।
धर्म हुवें तो आघों काढें नहीं, ओ तो छें देवता में ववेक जी ॥ १५ ॥
जीव बचायां अभय दांन हुवें, तो अभय दांन घणां नें देत जी।
धर्म जांणें जीव बचावीयां, देव भव में पिण लाहो लेत जी ॥ १६ ॥
मछला बचावें एक दिन मझे, लाखां कोडाइ गिणिया न जाय जी।
इणमें धर्म हुवें जिण भाषीयों, तो देवता देवें मछला छुडाय जी ॥ १७ ॥
मच्छ आगा सूं मछ छोडावीयां, उणरे परती जांणे अंतराय जी।
तो अचित्त मछ उपजाय नें, उणनें पिण देवे खवाय जी ॥ १८ ॥
जो धर्म हुवें मछला नें बचावीयां, मछला नें पोख्यां हुवें धर्म जी।
एहवा धर्म तो हुवें देवता थकी, यूं कर कर काटें कर्म जी ॥ १९ ॥
जो धर्म हुवें तो देवता, असंख्याता मछला नें बचाय जी।
असंख्याता पोखें माछला, आलस पिण न करें ताय जी ॥ २० ॥
पृथवी पांणी तेउ वाउ मझे, जीव कह्या छें असंख्यात जी।
वनसपती में अनंत छें, यांनें पिण देव बचात जी ॥ २१ ॥

तीन विकलेंद्री मिनष तिर्यंच ने, बचाया धर्म जाणे जो देव जी।
तो त्यांनेइ बचावण री खप करे, समदिष्टी देवता स्वमेव जी॥ २२॥
नाहर चित्तादिक दुष्ट जीव छें, करें गायादिक री घात जी।
गायादिक ने तो खावा दे नही, त्यानें पिण देव अचित्त खवात जी॥ २३॥
जीव जीव तणो भक्षण करें, त्यानें बचावें अचित्त खवाय जी।
जो यूं कीयां मे धर्म नीपजें, तो देवता करे ओहीज उपाय जी॥ २४॥
अढाइ दीप मिनषां तणें, घर घर आरंभ करे जाण जी।
ते तो कतल करे जीवा तणी, छ ही काय तणो घमसांण जी॥ २५॥
नित एकीका घर मे जूजूओं, आरंभ हुवे दिन रात जी।
छेदन भेदन करे निलोतरी, करें अनंत जीवा री घात जी॥ २६॥
दलणों पीसणो नें पोवणो, घर घर चूहलो धुकावे तास जी।
आवट कूटो करे छ काय नो, करे अनत जीवां रो विणास जी॥ २७॥
एकीका समदिष्टी देवता, त्यांरी शक्त घणी छे अतत जी।
अढी दीप रो आरभ मेट नें, बचावें जीव अनत जी॥ २८॥
अढी दीप तणा मिनषा भणी, भूखा तिरषा न राखे कोय जी।
अचित अन पांणी नीपजाय नें, सगला ने करे तिरपत सोय जी॥ २९॥
विवघ प्रकार ना भोजन करें, विवघ प्रकार ना पकवांन जी।
खादिम सादिम विवध प्रकार ना, विवघ प्रकारे सीतल पांन जी॥ ३०॥
साग व्यजण विवध प्रकार ना, फल नीलोती विवघ प्रकार जी।
मनसा भोजन सगला मिनषा भणी, करावें देवता वार वार जी॥ ३१॥
ठाम ठाम अचित्त पांणी तणा, कूड भर भर राखे ताम जी।
वले भोजन विवघ प्रकार ना, त्यांरा ढिगला करे ठाम ठांम जी॥ ३२॥
च्यारूइ आहार अचित्त नीपाय नें, दीघा हुवें धर्म ने पुन तांम जी।
वले धर्म हुवे जीव बचावीयां, तो देवता करें ओहीज कांम जी॥ ३३॥
देवता खांणो देवें मिनषा भणी, तो खेती रो आरभ टल जाय जी।
वले गेंहणा कपडा देवे देवता, तो घणा जीव मरे नही ताय जी॥ ३४॥
घर हाट हवेली मेहलायतां, इत्यादिक कमठाणा ताय जी।
अे पिण निपजाय देवे देवता, तो अनता जीव मरता रहि जाय जी॥ ३५॥
ते छावणा लीपणा ना पडे, ते तो सुदर ने सोभाय मांन जी।
ते पिण दिसे घणा रलीयामणा, देवता नें करता आसान जी॥ ३६॥
एहवी करणी कीया धर्म नीपजें, तो देवता आघो नही काढंत जी।
आ करणी करे कर्म काट नें, काम सिराडें देता चाढंत जी॥ ३७॥

दांन दीयां नें जीव बचावीयां, जो कर्म तणों हुवें सोख जी।
तो दांन दे जीव बचाय नें, देवता पिण जावें मोष जी ॥ ३८ ॥
अनेरा नें दीयां पुन नीपजें, देवता रे हुवें पुन रा थाट जी।
वले धर्म हुवें जीव बचावीयां, तो देव मोष जावें कर्म काट जी ॥ ३९ ॥
असंजती जीवां रो जीवणो, ते सावद्य जीतव साख्यात जी।
तिणनें देवे ते सावद्य दांन छें, तिणमें धर्म नही अंसमात जी ॥ ४० ॥
धर्म हुवें तो सगला मिनषां तणें, रतनां जड्या कर दे मेंहल जी।
ते पिण थोड़ा में नीपजाय दे, देवता नें करता सेंहल जी ॥ ४१ ॥
खांणो पीणों गेंहणों कपड़ादिक, गृहस्थ तणा सारा कांम भोग जी।
त्यांरी करें वधोतर तेहनें, बंधें पाप कर्म नो संजोग जी ॥ ४२ ॥
कांम नें भोग सारा गृहस्थ नां, दुख नें दुख री छें खांन जी।
त्यांनें किंपाक फल री ओपमां, उतराधेन में कह्यों भगवांन जी ॥ ४३ ॥
त्यांनें भोगवावें धर्म जांण नें, तिणरें बंधे छें पाप कर्म जी।
तिणमें समदिष्टी देवता, अंसमात न जांणें धर्म जी ॥ ४४ ॥
केइ अग्यांनी इम कहें, श्रावक नें पोष्यां छें धर्म जी।
लाडू खवाए दया पलावीयां, तिणरा कट जाए पाप कर्म जी ॥ ४५ ॥
लाडूआ साटें उपवास बेला करे, तिणरा जीतब नें छे धिकार जी।
तिणनें पोषें छें लाडू मोल लें, तिणमें धर्म नही छें लिगार जी ॥ ४६ ॥
लाडूआ साटें पोषा करें, तिणमें जिण भाष्यों नही धर्म जी।
ते तो इह लोक रे अरथें करें, तिणरो मूरख न जांणें मर्म जी ॥ ४७ ॥
धर्म हुवें तो समदिष्टी देवता, अचित्त लाडुआदिक नीपजाय जी।
वले पांणी पिण अचित्त नींपजाय नें, श्रावकां नें जिमावें ताहि जी ॥ ४८ ॥
जाव जीव सगला श्रावकां भणी, लाडूआदिक अचित खवाय जी।
अढी दीप तणा श्रावकां भणी, दया पलावे पोषा कराय जी ॥ ४९ ॥
त्यांने आरम्भ करवा दें नही, त्यांनें कल्पे ते देवता देत जी।
धर्म हुवें तो आघों नहीं काढता, ओ पिण देवता लाहो लेत जी ॥ ५० ॥
श्रावकां नें वस्त दें चावती, उणायत राखें नही कांय जी।
धर्म हुवे तो आघों काढें नही, त्यांरें कुमीय न दीसें कांय जी ॥ ५१ ॥
जो धर्म हुवें श्रावक नें पोषीयां, तो देवता पिण करें ओ धर्म जी।
असंख्याता श्रावकां नें पोष नें, काटता निज पाप कर्म जी ॥ ६२ ॥
असंख्याता दीप समुद्र में, असंख्याता श्रावक छें तांम जी।
त्यांनें पोषें समदिष्टी देवता, जो जांणे धर्म नों कांम जी ॥ ५३ ॥

श्रावक रो खांणों पीणों सरवथा, इविरत मे कह्या छें आंम जी ।
तिण सूं समदिष्टी देवता, एहवो किम करसी कांम जी ॥ ५४ ॥
सकेंद्र ने इसांण इंद्र छें, तिरछा लोक तणा सिरदार जी ।
हाल हुकम छे सगलां उपरें, असंख्याता दीप समुद्र मभार जी ॥ ५५ ॥
मछ गलागल लग रही, सारा दीप समुद्रां मांय जी ।
जो धर्म हुवें जीव बचावीयां, तो इंद्र थोडा मे देवें मिटाय जी ॥ ५६ ॥
भगवंत कह्यो हुवें इंद्र ने, जीव बचायां धर्म होय जी ।
तो दोनूं इंद्र जीव बचावता, आलस नही करता कोय जी ॥ ५७ ॥
मछ आगा सूं मछ छोडाय नें, मछां ने देता जीवा बचाय जी ।
त्यानें पिण भूखा नहीं राखता, अचित्त मछ कर देता खवाय जी ॥ ५८ ॥
यूं कीयां जिण धर्म नीपजे, तो भगवंत सीखावत आप जी ।
वले आगना देता तेहने, वले चोडे करता आहीज थाप जी ॥ ५९ ॥
जीव ने जीवा बचावीया, ओ तो संसार नों उपगार जी ।
तठें जिण आगना जाबक नही, धर्म पिण नहीं छें लिगार जी ॥ ६० ॥
छ काय ना सस्त्र बचावीयां, छ काय रो वेरी होय जी ।
त्यांरो जीतब पिण सावद्य कह्यों, त्याने बचायां धर्म न होय जी ॥ ६१ ॥
असजती रा जीवणां मभे, धर्म नही अंसमात जी ।
वले दांन देवें छे तेहनें, ते पिण सावद्य साख्यात जी ॥ ६२ ॥
दान देवों ने जीव बचायवों, यो तो देवता नें आसांन जी ।
यूं कीयां धर्म हुवें तो देवता, जावें पांचमी गति परधांन जी ॥ ६३ ॥
जीव बचावणो ने सावद्य दांन ने, ओलखायो पुर सहर मभार जी ।
सवत अठारें वरस सातवनें, काति विद चोदस नें सुकरवार जी ॥ ६४ ॥



रत्न : ३१

विरत इविरत री चौपई

ढाल : १

[चतुर विचार करी नै देखो]

साध नें श्रावक रतनां री माला, एक मोटी दूजी नांनी रे।
गुण गुंथ्या च्यारू तीरथ नां, इविरत रह गइ कानी रे।
चतुर विचार करी नें देखो* ॥ १ ॥

समणोवासग पडिमा आदर नें, आपणी न्याति मे लीधो रे।
तिणनें च्यारूं आहार वेंहराए, परित संसार न कीधो रे ॥च०२ ॥

ए तो गोचरी आपणें छांदें, जोवो सिधंत संभाली रे।
दातार ने लेवाल बेहूं में, जिण आग्या किण पाली रे ॥ ३ ॥

श्रावक नो खांणो पीणो नें गेहणो, इविरत मांहें घाल्यो रे।
उवाइ सुयगडा अंग मांहे, पाठ उघाडो चाल्यो रे ॥ ४ ॥

सेवायां इविरत कर्मज लागें, ए तो सरधा सुंधी रे।
कर्म तणें वस धर्म परूपें, अकल तिणां री उंधी रे ॥ ५ ॥

करण जोग विगटावें अग्यांनी, लाग रह्या मत भूठे रे।
न्याय करे समभावें तिण सूं, क्रोध करे लडवा उठे रे ॥ ६ ॥

खायां पाप खवायां धर्म, ए अन्य तीर्थी री वायो रे।
विरत इविरत री खबर न काई, भोलां ने दे भरमायो रे ॥ ७ ॥

कहे ममता उतरीया धन सूं, दे उपजावे साता रे।
इसडो धर्म वतावें लोका में, जके मोह मिथ्यात में राता रे ॥ ८ ॥

द्रव्ये साता नें भावे साता, मूरख भेद न जांणें रे।
सावद्य साता जिण धर्म बारे, ग्यानी विण कुण पिछाणें रे ॥ ९ ॥

कहें श्रावक रतनां रो भाजन, तिण पोष्यां नही तोटो रे।
च्यारूं आहार वेंहराय नें हर्षे, तिण ने लाभज मोटो रे।
कुगुर तणें उपदेस म भूलो ॥ १० ॥

ए तो सरधा अनारज केरी, लोक रीझावण लागा रे।
जे कोइ साध कहे तो उणरा, पाचूंइ महाव्रत भागा रे ॥ ११ ॥

रतनां रो भाजन श्रतां करनें, गुण आदरीया हूवो रे।
खावो पीवो लेवो नें देवो, ए तो मारग जूवो रे ॥ १२ ॥

श्रमण निग्रंथ नें दांन रा दाता, बारमा व्रत मे आण्या रे।
परित संसार कीधो सुध देनें, ज्यांनें श्री मुख वीर वखाण्या रे ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सामायक संवर पोषां में, साधां नें हर्ष वेहरावें रे।
सो श्रावक तेला रे पारणें, त्यांने क्यूं न जीमावें रे॥ १४॥
आ करणी जिण आग्या बारें, व्रतां माहे न आवें रे।
सावद्य जोग रा त्याग कीया तिण, श्रावक केम जीमावें रे॥ १५॥
श्रावक नां च्यार विसामा तिण में, छोड्यो ते माठो जांणी रे।
सावद्य भार नें अलगो मेल्यो, जिण आग्या आगेवांणी रे॥ १६॥
वार वार दांन ने प्रसंसे, भेद न जांणें मिथ्याती रे।
सुयगडा अंग अधेन इग्यारमें, कह्यो छकाय रो घाती रे॥ १७॥
दांनसाला मांडी प्रदेसी, मोष रो हेत न जांण्यो रे।
च्यारूं भाग राज रा कीधा, साधां नही वखांण्यो रे॥ १८॥
तीन भागां में पाप कहो थें, एकण री कांय ताणी रे।
केसी कुमार तो मुनज साजी, च्यारूं बराबर रा जांणी रे॥ १९॥
आणंद श्रावक व्रत आदर नें, एहवो अभिग्रहो लीधो रे।
अन्य तीरथी नें दान न देवूं, श्री जिण आगल कीधो रे॥ २०॥
छ छंडी रो आगारज राख्यो, आपणी जाण कचाइ रे।
सामायक संवर पोषा में, ते पिण दे छिटकाइ रे॥ २१॥
एक तो त्याग करे नें बेठों, एक दांनसाला मंडावें रे।
भगवंत री आगना किण पाली, साधु किण ने सरावें रे॥ २२॥
असंजती दांन दीयां में, धर्म नें पुन कांय थापो रे।
वीर कह्यो भगोती मांहें, निरजरा नही एकंत पापो रे॥ २३॥
जिणनें अन दीयां नींपजें पुन, नमसकार इम जाणी रे।
उलटा पड पड कर्म म बांधो, कर कर तांणा तांणी रे॥ २४॥
निरणो न कीधो नव बोलां रो, तिणरें भोलप मोटी रे।
नव ही बोल सरीषा न थापें, तिणरी सरधा खोटी रे॥ २५॥
जितरा द्रव्य सुपातर वेंहरें, तेहीज द्रव्य बताया रे।
गायां भेंस्यां धन धांन धरती, त्यांनें क्यूं न जताया रे॥ २६॥
करता पाप देखी म्हें वरज्यां, धर्म करावां माडाणी रे।
मिश्र ठिकांणें मुनज साझां, ए कुंदसण्या नी वांणी रे॥ २७॥
साध श्रावक नों एकज मारग, दोय धर्म बताया रे।
ते पिण दोनूं आग्या मांहें, मिश्र अणहूंतो ल्याया रे॥ २८॥
मिश्र पष नें मिश्र भाषा, मिश्र गुणठांणो चाल्यो रे।
इणरो ले ले नांम अग्यांनी, झूठो झगडो झाल्यो रे॥ २९॥

यां तीनां रो तार काढ्यो तिण, जिण सीखावण मानी रे।
मिश्र धर्म ने किण विध सरधे, भगवत रा सतानी रे॥ ३०॥
हाथी घोडा रथ बेसी ने, वीर वांदण ने चाल्या रे।
सिनान कीया गेहणा फूल पहरया, श्री मुख सू नही पाल्या रे॥ ३१॥
पाप तणा फल कडवा बताया, ए वायक जगनाथो रे।
सुण सुण ने वेंराग हूता ज्या, सूस लीया जोडी हाथो रे॥ ३२॥
मूला गाजर ने काचो पाणी, कोइ जोरी दावे ले खोसी रे।
जे कोइ वस्त छोडावें बिनां मन, इण विध धर्म न होसी रे॥ ३३॥
भोगी नां कोइ भोगज रूधे, वले पाडे अतरायो रे।
माहामोहणी कर्मज बाधें, दसाश्रु तखध माहि बतायो रे॥ ३४॥
देव गुर धर्म नें कारण, मूढ हणें छकायो रे।
उलटा पडीया जिण मार्ग थी, कुगुरा दीया बेहकायो रे॥ ३५॥
धर्म हेते श्रावक नेतरीयो, मन मे अधिक हूलासो रे।
आरभ कर जीमाया धर्म जाणें, तो बोध बीज रो नासो रे॥ ३६॥
वीर कह्यो आचारग माहे, जिण ओलखीयो तत सारो रे।
समदिष्टी धर्म नें कारण, न करे पाप लिगारो रे॥ ३७॥
एकद्री मारे पचद्री पोषे, ते निश्चे वाधे कर्मो रे।
मच्छ गलागल चोडे माडी, ए पाषंडीया रो धर्मो रे॥ ३९॥
लोही खरड्यो जो पितबर, लोही सू केम धोवायो रे।
तिम हिंसा मे धर्म कीया थी, जीव उजलो किम थायो रे॥ ३८॥
कहे म्हे पाप करां थोडो सो, पछे होसी धर्म अपारो रे।
सावद्य काम करां इण हेते, तिणथी खेवो पारो रे॥ ४०॥
चोखी सिन्यासण धर्म कह्यो तिण, दान सिनान बतायो रे।
आठमा अधेन गिनाता माही, घणा लोक दीया भरमायो रे॥ ४१॥
जिम कोइ सावद्य दान दिढाइ, मन मे हुवे रलियायत रे।
लोका रे मन गमता बोले, चोखी जोगण नां केडायत रे॥ ४२॥
आ सरधा सुखदेव सिन्यासी री, सहस जणा सिप्य जाणी रे।
सेठ सुदसण तिण रो भगता, हाड मिंजा रगाणी रे॥ ४३॥
कर्म थोडा ने सुलटो सुझ्यो, अंतर गति निरणो कीधो रे।
थावचे अणगार प्रतिबोध्यो, खोटी छोड सजम लीधो रे॥ ४४॥
चतुरविध सघना कोठा ठारया, पाछल भव दांन वतायो रे।
सनत कुमार इंद्र हूवो तेथी, ए पिण मूसा वायो रे॥ ४५॥

ए तो पूछ्या वर्तमांन कालें, पाछिल भव री नही चाली रे।
फंद में नांखें अजांण लोकां नें, कुब्द हीया में घाली रे॥४६॥
तीनां काल री समझ पड़ें नही, तो हेत नें सुख बतावों रे।
च्यारूं आहार नों नांम लेइ ने, गोला कांय चलावो रे॥४७॥
अबर ना सिष्य सात सो हूंता, अण दीधो नहीं लीधो रे।
काचो पांणी अधर्म जाण पीता, अण मिलीया अणसण कीधो रे॥४८॥
जे कोइ मिलतो दातार तिणा ने, हर्षे वेंहरावत पांणी रे।
लेवाल तो अविरत में लेता, इमहीज दातार जाणी रे॥४९॥
ग्यांनी पुरषां दोनूं जणा री, सावद्य करणी जांणी रे।
दातार नें कोइ धर्म कहें तो, अन्य तीर्थ नीं वांणी रे॥५०॥
समकत वमीयो नदणमणीयारे, साची सरधा भागी रे।
तेलो करे तीन पोषा ठाया, भूख तिरषा अति लागी रे॥५१॥
संगत पाषंडीयां री करनें, उलटो मारग लीधो रे।
धिन धिन कूआ तलाव खणावें, तिण सफल जमारो कीधो रे॥५२॥
पोषो पार श्रेणक नें पूछे, पोखरणी बाव खणाइ रे।
धन खरचे जस लीयो लोकां में, वले दांनसाला मंडाइ रे॥५३॥
सोलें रोग सरीरे उपनां, मूओ अति ध्यान ध्यायो रे।
आप खणाइ में जाये पडीयो, डेंडक रो भव पायो रे॥५४॥
आद्र कुमार नें ब्राह्मण बोल्या, छोड तूं सगला परचा रे।
म्हांरो धर्म उतम नें उजल, सुण तूं मोरी चरचा रे॥५५॥
दोय सहंस ब्राह्मण जीमाड्यां, परलोक में सुख दायक रे।
देव हूवें पुन खंध उपार्जी, वेद तणो ए वायक रे॥५६॥
आद्रकुमार कह्यो अपात्र नें, नित जिमाडे तेही रे।
दोय सहंस ब्राह्मण नें दाता, नरक पहुंचें बेही रे॥५७॥
मंजारी जिम रसना गिरधी, कहि दीयो सर्म न राखी रे।
धर्म नें पुन रो अंस न भाख्यो, सूयगडा अंग छें साखी रे॥५८॥
भगू पिरोहित कहें बेटां नें, सांभल मोरी सिख्या रे।
वेद भणी ब्राह्मण जीमाडी, लेजों थे पछे दीख्या रे॥५९॥
ब्राह्मण जीमाड्यां ए फल लागें, पहूंचाडें तमतमा रे।
उत्तराधेन चवदमें भाख्यो, ए तो सावद्य धर्मां रे॥६०॥
खोटी सरधा नें हीण आचारी, पूजा स्लागा रा भूखा रे।
कर्म घणा नें संवली न सूझें, कदागरो करवा ढुका रे॥६१॥

राते भूला तो आसा राखें, दीयां सूभसी सूला रे।
कहो नें आसा राखें किण विध, दीयां दोपारां रा भूला रे॥ ६२॥

भाव मारग थी भूला अग्यानी, उजड चलीया जायो रे।
मन में आसा मुगत री राखे, दिन दिन अलगा थायो रे॥ ६३॥

सूतर नी चरचा अलगी मेले, लोक कीया पखपाती रे।
साची सरधा किण विध आवे, हूआ घणा रा साथी रे॥ ६४॥

जो थारें दिल काय न बेसे तो, सगलो झगडो चूको रे।
समता आदर नें कजीया छोडो, जिण तिण आगें म कूको रे॥ ६५॥

इविरत ओलखो उतम प्रांणी, छोड द्यो राग ने धेखो रे।
मानव नो भव अहल म हारो, परभव सांमो देखो रे॥ ६६॥

ढाल : २

[चतुर विचार करी ने देखो]

संख नें पोखली जिमण कीधो, ते तो आपणो छांदो रे।
तिणनें सरावे मूंढ अग्यांनी, कर्मां रा पूंज बाधें रे॥ १॥
तिण जीमण नें माठो जांणी, पोषो कर दीधो त्यागी रे।
पखी रे दिन पाप ने पचख्यो, संख बडो वेंरागी रे॥ २॥
उपला श्रावका पोखली घर आयां, विनों कीयो सीस नमायो रे।
ते तो छांदो आपणों जांण्यों, भगवंत नही सिखव्यो रे॥ ३॥
नमसकार अंबर नें कीयो चेलां, ते तो सूतर उवाइ मे चाल्यो रे।
भगवंत भाव दीठा जिम भाख्या, जिण धर्म मांहें न घाल्यो रे॥ ४॥
नवकार ना पद पांच परूप्या, श्रावक नें दीधो टालो रे।
जिण आग्या नहीं ग्रहस्थ वांदण री, भगवंत वचन सभालो रे॥ ५॥
मांहोमाहि वीनों वीयावच कीधां, भगवंत नही वखाण्यां रे।
ग्रहस्थ ना कार्य सावद्य दीठा, मनकर भला न जाण्या रे॥ ६॥
कहें म्हें अव्रिरत सेवां जिण में, जाणां छां बंधता कर्मों रे।
पिण कोइ सेवारें इविरत मांनें, जिणनें हुवें छें धर्मो रे॥ ७॥
आ सरधा श्रावक नही राखें, न दे किण नें दगो रे।
धर्म ठिकाणे भूठ बोलतो, जिण सासण में ठगो रे॥ ८॥
आपतो अविरत माहें आंणें, भोला नें धर्म बताइ रे।
श्रावक एहवो भूठ न बोले, जिण धर्म माहें आइ रे॥ ९॥
साध नें कोइ असुध वेंहरावें, ते गर्भ में आडो आवें रे।
श्रावक नें कोइ सचित खवरावें, ते सुद गति किण विध जावें रे॥१०॥
एक एक मांनव कर्म तणें वस, कर रह्या उंधी ताणो रे।
सचित असुध रोकड द्यों मांनें, होसी धर्म संका म आणो रे॥११॥
पेट रें कारण अनरथ भाषें, परभव सांमो न जोवे रे।
वले पखपात करे कुगरां री, मांनव नो भव खोवे रे॥१२॥
दांन सील तप भावना च्यारूं, मुगत नगर ले जावें रे।
तिण में दांन सुपातर आयो, ते इविरत माहे न ल्यावे रे॥१३॥
समचें दांन में धर्म कहें तो, नांइ जिण धर्म सेली रे।
आक नें गाय रो दुध अग्यांनी, कर दीयो भेल सभेली रे॥१४॥

इविरत मे दान ले पेंला रों, मोष रो मार्ग बतावें रे।
धर्म कह्यां विण लोक नही दे, जब कूर कपट चलावे रे॥१५॥
कहे ओर जायगा धन देता देखें, खरच हू लेखे लेखें रे।
ए श्रावक सुपातर त्याने, दान दे तूं वसेखें रे॥१६॥
कल्पें ते वस्त श्रावक नें देने, गोत तीथकर बाघे रे।
एहवो धर्म अनारज भाषे, ते किण विध लागे सांघो रे॥१७॥
आगार ने सुपातर कहि कहि, सानी कर साधु दरावे रे।
तिण रे दीसें घोर अधारो, समकत किण विध आवे रे॥१८॥
खेती करें व्याज वोहरावे पाले, घर रो कांम चलावें रे।
करे सगपण आरा नें मोसर, वेटा बेटी परणावे रे॥१९॥
साधा रें आहार ने पाणी वधे तो, परठ दे एकत जायो रे।
इग्यारमी पडिमा रो श्रावक मागें तो, तिण ने न दें किण न्यायो रे॥२०॥
घरती परठ्या तो व्रत रहे छें, दीघा दोप उघाडा रे।
पांच महाव्रत मूलगा तिण मे, सगला पडीया वघारा रे॥२१॥
घरती परठ्या तो अरथ न आवें, ए करणी नही नीची रे।
दीघा दराया ने भलो जाण्या, सावद्य इविरत सीची रे॥२२॥
जगन मझिम उतकष्टा श्रावक, तीना री एकज पातो रे।
इविरत छे सगला री माठी, तिणमे म राखो भ्रातो रे॥२३॥
कोइ श्रावक ना व्रत ले साधा पें, आयो जिण दिस जायो रे।
मार्ग मां दोय मित्री मिलिया, ते बोल्या जूदी जूदी वायो रे॥२४॥
एक कहे व्रत चोखा पालें, ज्यूं कटे आठोइ कर्मो रे।
काल अनादि रे भमतें भमते, पायों जिणवर धर्मो रे॥२५॥
एक कहे तूं आगार सेवे, सचितादिक सर्व सभाली रे।
जतन घणा कीजे डीलां रां, वले कूटव तणी प्रतपाली रे॥२६॥
व्रत पालण ही आग्या दीघी, ए तो धर्म रो मित्री मोटो रे।
अविरत आग्या दीघी तिण नें, ग्यानी तो जाणें खोटो रे॥२७॥
गुर तो मिलिया जावक आंघा, चेला पूरा निरंदो रे।
ए तो जाल रच्यो तिण चोडें, कोइ आय पडें तिण फंदो रे॥२८॥
न्याय री चरचा रो कांम पडें तो, एकें होय माडे लडणों रे।
पापंडीयां सूं जाय मिल्या वले, लीयो लोका रो सरणो रे॥२९॥
अत ही दूष्ट हुवे हिंसाधर्मीं, निन्दा करें परपूठें रे।
कोइ खांच तांण साधा में आणे, तो अवगुण लेनें उठें रे॥३०॥

कहें दांन दीयो तीर्थंकर तिण में, जांणां छां कटीया कर्मों रे।
ते तो सोनइयां देवां आंण दीधा, त्यानें पिण हुसी धर्मों रे॥३१॥
कर्म कटें सोनइयां साटें, तो करणी नहीं करता रे।
ए मारग थी सिवपुर पोहचें, तो घर छोड दुख में न पडता रे॥३२॥
सोनइयां दीधां कर्म कटें तो, वरस री जेज न पाडत रे।
लोकां रा घर भर सोनइयां, देता कर्म विडारत रे॥३३॥
कहें लीधां पाप नें दीधां धर्म, तिण लेखें रह गया कोरा रे।
देवां कनें ले मिनष नें दीधा, पडीया अणहुंता फोडा रे॥३४॥
एक कोड आठ लाख सोनइयां, निकल्या वर्सीदांन देइ रे।
मुगत रो मारग तिणमें न जांण्यो, संवर निरजरा न बेइ रे॥३५॥
वर्सी दांन महोछव सगला, केवलीयां नहीं वखांण्यो रे।
तीर्थंकर नें देव दोनूं इविरती, त्यां पिण धर्म न जांण्यो रे॥३६॥
भगवंत दीख्या लीधी तिण कालें, चढीया अनंत वेंरागो रे।
सावद्य दांन सिनांन सोनइयां, माठा जांणी दीधा त्यागो रे॥३७॥
भगू पिरोहित धन छोड निकलीयों, इखुकार राजा मंगायो रे।
धन सूं धर्म ने कर्म कटें तो, अेंली साटें कांय गमायो रे॥३८॥
घर छांडें त्यांमें अकल घणी थी, आलस कर आधो न काढत रे।
धन सूं धर्म हुवें ते करनें, कांम सिराडें चाढत रे॥३९॥
धर्म री धुरा धन सूं न चालें, भगू नें कह्यो बेटां दोइ रे।
मांहोमां धन दीयां धर्म थापें, ते गया जमारो खोइ रे॥४०॥
रिषभदत्त ब्राह्मण ने देवानंदा, वांणी सुण आयो वेंरागो रे।
त्यां पिण धन नें छोड्यो अधर्म जांण, धर्म हुवें तो न काढत आघो रे॥४१॥
कहें आरा मोसर डायचादिक में, मिश्र धर्म कर रह्या तांणो रे।
राय उदाइ राज दीयो भाणेजा नें, तिण लेखें तो मोटो लाभ जांणो रे॥४२॥
ए परिग्रह छें अनरथ रो मूल, करें बोध बीज री घाता रे।
वीर कह्यो छें दसमां अंग में, ए नरक तणों छें दाता रे॥४३॥
ठांम ठांम सूतर सिद्धांतां में, धन सूं धर्म न थाप्यो रे।
किण विध कर्म कटें दाता रा, ए तो अविरत मांहें आप्यो रे॥४४॥
जंबूकुमर आठ परणे आयो, डायचे रिध लीयो अपारी रे।
कोड निनाणू तो पेंरावणी रो, वले घर में हुंती रिध भारी रे॥४५॥
कनक कांमणी सूं विरक्त भावें, उत्तम चारित लीधो रे।
वेंराग आंणे धन छोड दीयो पिण, धन सूं धर्म न कीधो रे॥४६॥

बीस हजार सोना रुपा ना आगर, खूटें नही अखूट भंडारो रे।
चक्रवंत छे खंडकेरो साहिब, तिणरी रिध रो घणो विस्तारो रे॥ ४७॥
एहवी रिध में काल कीयो तिण, नरक पड्या बांधो कर्मों रे।
दुरगति टल जाय धन दीघां, तो दे दे करता धर्मों रे॥ ४८॥
श्रावक तो जिण कालेइ हुंता, धन लेवा नें तयारो रे।
यांनें दीयां उधार हुवें तो, दे उतरें भव पारो रे॥ ४९॥
चित मुनी संभूत समझावा, साध श्रावक धर्म बतायो रे।
धन सूं सुद गति जाय विराजें, इसडो न कह्यो उपायो रे॥ ५०॥
कहे साध आहार करें इविरत में, संजम नो छें ओटो रे।
एतो वचन अनारज केरों, तिण आदरीयों मत खोटो रे॥ ५१॥
इविरत नें परमाद बेहूं नें, संजम नों छें धको रे।
ओटो कहें तिणरी उंधी सरधा, तिण गिरीयो मिथ्यात नें पको रे॥ ५२॥
साधां सावद्य सगलो त्याग्यो, पाप रो नहीं आगारो रे।
इविरत मे आहार ल्यावें खावें, ते निश्चें नही अणगारो रे॥ ५३॥
च्यार गुणठांणां में अकेली इविरत, श्रावक में दोनूं पावें रे।
साधां रे इविरत मूल न दीसें, कुब्दी कूड चलावे रे॥ ५४॥
इविरत मे साध आहार करे तो, जिण आग्या नही देता रे।
पाप जांणे तो मुनज सामेंत, ए पिण आग्या न लेता रे॥ ५५॥
प्रतख पाप जांणें आहार कीधां, कर्म तणो बंध होवें रे।
तो आग्या ले गुरनी मुरख, गुर नें कांय डबोवे रे॥ ५६॥
गुर नी आग्या ले पाप करण री, ते तो मलेछ अनारज रे।
विनें सहित कोइ सावद्य सेवें, तिण मोटो कीयों अकारज रे॥ ५७॥
त्यांने गुर पिण मिलीयो अतंत अग्यानी, कर्मां कर सुझ्यो भूंडो रे।
पाप करण री आग्या देनें, पोतें अली साटें कांय बूडो रे॥ ५८॥
चेला नें आग्या इविरत री दे, घाल्यो पाप में सीरो रे।
देखो अकल गइ तिण गुर री, इण नें कांई पडी थी भीरो रे॥ ५९।
पाप करण री आग्या देसी, ते निश्चें होसी भारी रे।
कुण चेलो गुर नें गुर भाइ, जोवो अंतर मांहें विचारी रे॥ ६०॥
साध आहार कीयां परमाद नें इविरत, तो दातार नें नहीं धर्मों रे।
इविरत री इविरत में घाल्यो, तो दोयां रे बंधसी कर्मों रे॥ ६१॥
कर्म तणे वस मूढ अग्यानी, सवली सीख न धारें रे।
आप डूबे इविरत मे ल्याइ, ते ओरां नें किण विध तारें रे॥ ६२॥

साध आहार कीयां में पाप परूपें, त्यांरें मोह मिथ्यात रो चालों रे।
तीन काल रा मुनीसरां नें, दीयो अणहूंतो आलो रे॥ ६३॥
आहार करण री सुध साधां नें, भगवंत आग्या दीधी रे।
तिण में पाप बतावे अग्यांनी, खांच गला में लीधी रे॥ ६४॥
जो थांनें समझ पडें नहीं पूरी, तो राखो जिण परतीतो रे।
आग्या मांहें पाप परूपें, एहवी म करो अनीतो रे॥ ६५॥
जिण आग्या में पाप परूपें, ते भूला भरम अग्यांनी रे।
आग्या बारे धर्म कहें त्यांनें, किण विध कहिजें ग्यांनी रे॥ ६६॥
गुण विण भेख धरे साधु रो, करें विकलां री थापो रे।
छ कारणां विण आहार करसी, तिणनें छें एकंत पापो रे॥ ६७॥
छ कारणें साध आहार करें तो, जिण आग्या नही लोपी रे।
पाप तिणां नें किण विध लागें, संवर कर आतम गोपी रे॥ ६८॥
निरवद गोचरी रिखेसरां री, मोष री साधन भाखी रे।
पाप कर्म आहार करतां न लागें, दसवीकालक साखी रे॥ ६९॥
सात कर्म साध ढीला पाडें, आहार करें तिण कालो रे।
सुख भोगवीयां ए फल लागें, सूतर भगोती संभालो रे॥ ७०॥
सेलक जष रे कांधें बेंस नीकलीयो, राखी रेंणा देवी सूं पीतो रे।
अणुकंपा आंणें साह्यों जोयो, जिणरिष हूवो फजीतो रे॥ ७१॥
सेलक जष जिम संजम जांणो, रेंणा देवी ज्यूं इविरत मेंली रे।
मुगत नगर नें संत नीकलीया, त्यां इविरत छोडी पेली रे॥ ७२॥
सेलक जष नें रेंणादेवी रे, मांहोमां नहीं मेलापो रे।
विरत सूं धर्म ते पार पोहचावें, इविरत लगावें पापो रे॥ ७३॥
रेंणा देवी एक भव दुखदायक, इविरत अनंतो कालो रे।
सांसो हुवें तो गिनाता मांहें, नवमों अधेन संभालो रे॥ ७४॥

ढाल : ३

[चतुर विचार करी ने देखो]

सुयगडा अग अधेन इग्यार मे, त्यां दान रो कीधो निचोडो रे।
मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल, ते करे अणहूती झोडो रे॥ १॥
चतुर विचार करी ने देखो*।

सोलमीं गाथा सूं लेइ इकवीसमी तांई, ए छव गाथा रा अर्थ छे सूंधा रे।
तिहां सावद्य दान मे मिश्र थापण ने, अर्थ करे छें उधा रे॥ च० २॥

ते सावद्य दांन संसार ना कारण, तिण में निरवद रो नही भेलो रे।
ससार ने मुगत रा मारग न्यारा, ते कठे न खावें मेलो रे॥ ३॥

ए छ गाथा रा अर्थ छें भारी गूढा, त्यांरो निरणो कीजों बुधवांनो रे।
ते अर्थ विवरा सुध त्यांरो, सुणजो सुरत दे कांनो रे॥ ४॥

दांन रें अर्थे जीव हणे त्याने, साधु तो भलो न जाणे रे।
देवे पो सतूकार खोदावें कूवादिक, लाभ जांणे सरधा परमाणे रे॥ ५॥

ते आय साधां नें प्रश्न पूछे, ते आरंभ लीयां बोले वाणी रे।
इण करणी मे पुन हुवे के नाही, जब साध करे मूंन जांणी रे॥ ६॥

पुन पिण साध न कहे तिणनें, वले न कहे थारे पुन नांही रे।
बेहू प्रकारें माहा भय रो कारण, मूंन करे ते कारण कांई रे॥ ७॥

दान रे कारण लोक करे छे, तस थावर री घातो रे।
पुन कह्या त्यारी दया उठे छे, दया विण नही पुन साख्यातो रे॥ ८॥

असजती नें उदीरी उदीरी, आरंभ कर जीमावे अन पांणी रे।
पुन नही कह्या अतराय पडें छे, ओहीज कारण जांणी रे॥ ९॥

साधु तो अंतराय किणनें न देवे, उण वेलां जीभ क्यानें हलावें रे।
चरचा रो काम पडे तिण काले, हुवे जिसा फल बतावें रे॥ १०॥

जे कोइ दांन प्रससे तिणनें, कह्यो छकाय रो घाती रे।
तो देवें दिरावे त्यांरो स्यू कहिवो, ए पिण उणरा साथी रे॥ ११॥

हिसा झूठ चोरी कुसील प्रसंसें, ते बूड गया काली धारो रे।
तो करण करावण वाला रो, किण विध होसी उवारो रे॥ १२॥

कोइ गांव जलावे ने गायां कटावे, इत्यादिक कारज सब भूडां रे।
त्यांनें सरावे ते बूड गया छे, तो करण वाला तो वशेष बूडा रे॥ १३॥

ज्यूं सावद्य दांन प्रससे तिणनें, कह्यो छे छकाय रो घाती रे।
देवें तिणनें धर्म मिश्र कहे त्यांनें, कहीजें मूंढ मिथ्याती रे॥ १४॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

माठो कांम सरायां बूडें छें, तो कीधां बूडसी गाढो रे।
आ सरधा सुण सेंठी धारो, थें सल अभितर काढो रे॥ १५॥
सावद्य दांन प्रसंसें तिणरा, माठा फल कह्या जिण रायो रे।
हिवें दांन नषेधणों नहीं साधु नें, तिणरो पिण सुणजों न्यायो रे॥ १६॥
दातार दांन देवें तिण कालें, लेवाल लेवें धर पीतो रे।
जब साध कहे तूं मत दें इणनें, नषेधणो नहीं इण रीतो रे॥ १७॥
जो दांन देता नें साध नषेदें तो, लेवाल रे पड़ें अंतरायो रे।
अंतराय दीयां फल कडवा लागें, तिणसूं नषेध न करें इण न्यायो रे॥ १८॥
अंतराय सूं डरतो साधु न बोलें, ओर परमारथ मत जांणो रे।
ते पिण मूंन छें वरतमांन कालें, बुधवंत कीजों पिछांणो रे॥ १९॥
उपदेस देवें साध तिण कालें, दूध पांणी ज्यूं करें नीवेडो रे।
विनां बतायां च्यार तीरथ में, किण विध मिटें अंधेरो रे॥ २०॥
दोनूं भाषा साधु नहीं बोलें, पुन छें अथवा पुन नाही रे।
ते वरज्यों वरतमांन काल आसरी, थें सोच देखों मन मांही रे॥ २१॥
कोइ कहें पुन कहणों न कहणों वरज्यों, तो पुन में पाप रो भेल जांणो रे।
तिणसूं मिश्र ठिकांणों ले उठ्या अग्यांनी, ते कर कर उंधी ताणो रे॥ २२॥
पुन छे कें नहीं रो प्रश्न पूछ्यों, पाप रो कथन न चाल्यो रे।
मिश्र री सरधा वालें अग्यांनी, घोचो मिश्र रो घाल्यो रे॥ २३॥
दांन में मिश्र नहीं जिण भाख्यों, पुन होसी कें पापो रे।
सुपातर सूं पुन कुपातर सूं पाप, पिण खोटी मिश्र री थापो रे॥ २४॥
वले सुयगडा अंग अधेन इकवीसमे, दोय बातां जिण भाखी रे।
त्यां पिण न कह्यों छें मिश्र ठिकांणों, जोवो बतीसमीं गाथा साखी रे॥ २५॥
दातार नें देतां लेवाल नें लेतां, साधु इसडों देखें विरतंतो रे।
जब गुण अवगुण न कहें तिण कालें, तिहां मूंन करें एकंतो रे॥ २६॥
तिण दांन तणा साधु गुण करें तो, असंजम री अणुमोदनां लागें रे।
असंजम छें ते एकलो अधर्म, ते अणुमोद्यां संजम भागें रे॥ २७॥
जिण दांन नें साधु भलो न जांणें, भलो जांण्यां बंधें पाप कर्मों रे।
तो तिणहीज दांन तणा दाता नें, किण विध होसी मिश्र नें धर्मों रे॥ २८॥
पाप अणुमोद्यां तो पाप हुवें छें, धर्म अणुमोद्यां धर्म होयो रे।
तो मिश्र अणुमोद्यां मिश्र चाहीजें, ते मिश्र न दीसें कोयो रे॥ २९॥
दांन देवें दिवरावें भलो जांणें, यां तीनां री एकज पांतो रे।
पुन पाप मिश्र होसी तो तीनां नें, तिणमें म राखों भ्रांतो रे॥ ३०॥

जिण दांन तणा गुण कीधां साधु नें, असंजम री अणुमोदनां लागें रे।
ते दांन असंजम में जिण घाल्यो, ओगुण कह्यां रो बोलतों आगें रे॥ ३१॥
दांन तणा ओगुण कीधां में, लेवाल रें पडे अंतरायो रे।
अंतराय देंणी ते साधु नें न कल्पें, तिण सू मूंन करे मुनीरायो रे॥ ३२॥
इण न्याय साघ ने मूंन कही छे, पिण मिश्र न जांणें तिणमे रे।
इण दांन मे मिश्र नें धर्म थापें तो, कोरो मिथ्यात छें तिण में रे॥ ३३॥
गुण कह्यां असंजम अणुमोदीजें छें, अवगुण कहितां लागें अंतरायो रे।
यां दोयां सू डरतो साधु न बोले, अठें मिश्र किहा थी थायो रे॥ ३४॥
साधु मूंन करें वरतमांन काले, पिण उपदेस मे मूंन न राखें रे।
द्रव्य खेतर काल भाव देखे तो, हुवें जिसा फल दाखे रे॥ ३५॥
मिश्र थापण ने मूंढ अग्यानी, छल छिद्र रह्यो नित देखों रे।
सूतर में ओर बोल घणा छें मिश्र रा, त्यामें मिश्र दान दें टेकों रे॥ ३६॥
कोइ कहें पाप कहे तिण देतां पाल्यों, इसडी बोलें छे वांणों रे।
ए दोनूं भाषा ने एकज सरवें, ते भाषा तणा मूढ अयांणो रे॥ ३७॥
कोइ कहे पाप कहे तिण दान निषेद्यो, ते पिण भाषा रा अजांणो रे।
सावद्य दांन नें थापण अग्यानी, बोले छे उधी वांणो रें॥ ३८॥
दान देतां नें कहे तू मत दे इण ने, तिण पाल्यों निषेद्यों दांनो रे।
पाप हुंतो ने पाप बतायों, तिणरो छें निरमल ग्यानो रे॥ ३९॥
असंजती ने दांन दीया मे, कहि दीयो भगवंत पापो रे।
त्यां दांन नें वरज्यो निषेद्यो नाही, हुती जिसी कीधी थापो रे॥ ४०॥
किण ही साधु ने कह्यों आज पछें तूं, म्हारें घर कदे मत आयो रे।
किणही ए करडा वचनज बोल्यो, हिवे साधु किसे घर जायो रे॥ ४१॥
साधां नें वरज्यो तिण घर मे न पेसे, करडा कह्या तिण घर मांहे जावें रे।
निषेद्यों ने करडो बोल्यां ते, दोनूं एकण भाषा मे न समावे रे॥ ४२॥
ज्यूं कोइ दान देता वरज राखे, कोइ दीधां मे पाप बतावें रे।
ए दोनूंई भाषा जुदी जुदी छें, ते पिण एकण भाषा में न समावें रे॥ ४३॥
कोइ रांक गरीब नें मरता देखी ने, त्यारी अणुकपा मन माहे आवे रे।
जब पेंला रों माल चोरी कर पोतें, रांका ने हाथ सूं पकडावें रे॥ ४४॥
धणी ने विण पूछ्यां चोरी कर देवें, रांकां री अणुकपा काजें रे।
उणरी सरधा रें लेखें तो इणनेइ मिश्र, अठे मिश्र कहिता काय लाजें रे॥ ४५॥
माल धणी रे दाह दीधी तिणरों, हुवो एकत पाप कर्मो रे।
तो रांकां नें दीयो ते अणुकपा आंणे, उणरे लेखें ओ प्रतख धर्मों रे॥ ४६॥

पेंलां रो धन खोस रांकां नें देवें, तिणमें मिश्र कहें नांहीं रे।
तो उठ गई मिश्र री सरधा, थें सोच देखों मन मांहीं रे॥ ४७॥
पर रो धन चोर रांकां ने दीधां, तिण में मिश्र हुवें नांहीं रे।
तो जावक जीव हणे रांक नें पोषें, अठें मिश्र कठें तिण मांहीं रे॥ ४८॥
कोइ चोरी कर रांकां नें पोषें, कोइ जीव हण नें पोषें रांको रे।
इण एकंत पाप में मिश्र कहें, त्यांरी सरधा में पूरो छे बांको रे॥ ४९॥
रांकां नें पोषें घणा जीव हणें नें, तिणनें चोरी हिंसा लागें दोयो रे।
ते चोरी तो त्यांरा सरीर री लागी, जीव हणीयां री हिंसा होयो रे॥ ५०॥
रांकां नें पर धन चोर देवें त्यांनें, एक चोरी तणों पाप होयो रे।
ए दोनूं किरतब करें अणुकंपा आंणे, ते गया जमारो खोयो रे॥ ५१॥
पर नीं चोरी करे रांकां नें देवे, इण किरतब सूं जो बूडें रे।
तो हिंसा कर ने कुपातर पोषें, ते क्यूं नही वेंससी तूडें रे॥ ५२॥
कहें आराधवी विराधवी मिश्र भाषा छें, ते भाषा छें धर्म अधर्मो रे।
आराधवी जितरो छें एकलो धर्मो, विराधवी सूं लागें पाप कर्मो रे॥ ५३॥
इम कहि कहि मिश्र करणी थापें, तिण करणी में कहें धर्म पापो रे।
इम आंटी घालें सावद्य दांन मांहें, करे मिश्र री थापो रे॥ ५४॥
ते मिश्र भाषा छें एकंत सावद्य, तिम बोल्यां बंधें पाप कर्मो रे।
महामोहणी कर्म बंधें तिण सूं, तिणमें किहां थी धर्मो रे॥ ५५॥
आराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही, ते तो बोलवा लेखें रे।
अठें पाप धर्म रो कथन न चाल्यो, तिणरा सुणजो भेद वशेखें रे॥ ५६॥
आराधवी कही छें सत भाषा नें, ते पिण बोलवा लेखें पिछांणो रे।
ते साची भाषा छें सावद्य निरवद, तिण सावद्य में धर्म म जाणो रे॥ ५७॥
साची भाषा सावद्य तिणनें, आराधवी कही बोलवा लेखें रे।
पिण एकंत पाप बंधे तिण बोल्यां, ते मिश्र में मूढ पाप न देखें रे॥ ५८॥
ववहार भाषा नें कही छें जिणेसर, आराधवी विराधवी नांही रे।
ते पिण कही छें बोलवा लेखें, धर्म अधर्म लेखों नहीं यांहीं रे॥ ५९॥
धर्म अधर्म लेखें तो ववहार भाषा, आराधवी विराधवी जांणो रे।
निरवद नें आराधवी जांणो, विराधवी सावद्य नें पिछांणो रे॥ ६०॥
जो मिश्र भाषा धर्म अधर्म लेखें, आराधवी विराधवी होइ रे।
तो ववहार भाषा बोलसी तिणने, धर्म अधर्म नही कोइ रे॥ ६१॥
जो साची भाषा बोलें धर्म रे लेखें, थापे आराधवी कोयो रे।
तो साची भाषा सावद्य बोल्यां, एकंत धर्मज होयो रे॥ ६२॥

जो मिश्र भाषा माहे मिश्र हुवें तो, सत भाषा मे एकंत धर्मों रे।
ववहार भाषा तो सुन होय जावें, बोल्या नहीं धर्म ने पाप कर्मों रे॥ ६३॥
ए तो बोलवा आश्री च्यारूई भाषा, आराधवी विराधवी जांणो रे।
अठे धर्म अधर्म रो कथन न चाल्यो, पनवणा सू करो पिछाणो रे॥ ६४॥
सत असत मिश्र ने ववहार, ए च्यार भाषा जिण भाखी रे।
त्यामें असत ने मिश्र तो जाबक सावद्य, जोवो दसवीकालक साखी रे॥ ६५॥
सत भाषा नें ववहार भाषा, ए तो सावद्य निरवद दोई रे।
ते सावद्य टाले नें निरवद बोलें, तो पाप न लागें कोई रे॥ ६६॥
असत नें मिश्र तो जाबक छोडणी, ते बोल्यां बूडे जावे वहिता रे।
जो मिश्र भाषा माहे मिश्र धर्म हुवे तो, जाबक छोडणी नही कहितां रे॥ ६७॥
धर्म अधर्म आश्री च्यारूइ भाषा, बोलवी नही बोलवी चाली रे।
सत नें ववहार विचार बोलवी, असत मिश्र नें सरवथा पाली रे॥ ६८॥
तीसां बोला बधे महामोहणी कर्म, ते एकंत छे पाप कर्मों रे।
तो मिश्र भाषा बोलें तिण माहे, किण विध होसी पाप ने धर्मों रे॥ ६९॥
जो गुणतीस बोला मे एकलो पाप, तो मिश्र भाषा में एकंत पापो रे।
कोइ मिश्र भापा माहें मिश्र धर्म कहे, तिण आगम दीया उथापो रे॥ ७०॥

ढाल : ४

दुहा

श्री जिण आगम मांहें इम कह्यों, धर्म अधर्म करणी दोय।
धर्म करणी मांहें जिण आगना, अधर्मकरणी में आगना न कोय॥ १ ॥
धर्म अधर्म करणी जुई जुई, ते कठें न खावें मेल।
जे मूढ मिथ्याती जीवडा, त्यां कर दीधी मेल समेल॥ २ ॥
चतुर व्यापारी विणज करें, जेंहर ने इमृत दोय।
मांगें ते वसत देवें गराक नें, पिण ओर न देवें कोय॥ ३ ॥
ववेक विकल व्यापारी हुवें, तिणनें वस्त री खबर न कांय।
जेंहर घालें इमृत भर्फे, इमृत घालें जेंहर रे मांय॥ ४ ॥
ज्यांनें वसत री ठीक पडें नहीं, ते घालें ओर री ओर मांय।
ते नाश करें नीवी तणों, तिम जांणों धर्म रो न्याय॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

जिम कोइ घ्रत तंबाखू विणजें, पिण वासण विगत न पाडें रे।
घ्रत लेई तंबाखू में घालें, ते दोनूंई वसत विगाडें रे॥ १ ॥
चतुर विचार करी ने देखो*।
ज्यूं इविरत रो दांन विरत में घालें, पिण विरत री विगत न पाडें रे।
विरत री विगत पाड्यां विण बांगा, सूंनें चित दांन पूकारें रे॥ च० २ ॥
श्रावक मांहोमांहि जीमें जीमावें, ते तो एकंत आश्रव जांणो रे।
तिण मांहे धर्म परूपें अग्यांनी, ते पूरा मूंढ अयांणो रे॥ ३ ॥
जीभ रो ओषद आंख्यां में घाल्यों, आंख्यां रो ओषद जीभ में घाल्यो रे।
तिण री आंखई फूटी नें जीभइ फाटी, दोनूंइ इंद्री खोय चाल्यो रे॥ ४ ॥
ज्यूं अधर्म रा कांमा धर्म मांहें घाल्या, धर्म रा कांमा अधर्म में घाल्या रे।
दोनूंई विध कर्म बांधे अग्यांनी, दुरगत मांहें चाल्या रे॥ ५ ॥
सावद्य किरतब में धर्म जांणें, निरवद में पाप जांणें रे।
सावद्य निरवद में नहीं समर्फे, अग्यांनी थका उंधी तांणें रे॥ ६ ॥
सचित अचित्त दीधां कहें पुन, वले सुध असुध दीधां कहे पुनो रे।
वले पुन कहे पातर कुपातर नें दीधां, ओ मत जावक जबूंतो रे॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पातर कुपातर दोनां नें दीधां, पुन कहें छे कर कर तांणी रे।
तिण पातर कुपातर गिणीया सारीषां, आ पाषंडीयां री वांणी रे॥ ८ ॥
कूंडाधर्मी कूंडें बेंस जीमें जब, भेला जीमें एकण कूंडा माह्यों रे।
जात कुजात नें चोखा अचोखा, त्यांरी भिन न राखे कांयो रे॥ ९ ॥
ज्यूं पातर कुपातर सर्व नें दीधां, पुन कहें एक धारो रे।
ओ मत कूंडापंथी जिम जांणों, किण सूं भिन न राख्यों लिगारो रे॥ १० ॥
केइ डाहा हुवें ते कूंडा पंथ्यां नें, न्यात जात सूं जांणें भिष्टी रे।
ज्यूं पून कहे दांन कुपातर दीधां, त्यांनें ग्यांनी जांणें मिथ्यादिष्टी रे॥ ११ ॥
श्री वीर कह्यों पातर दांन दीधां, धर्म नें पुन दोनूं होयो रे।
कुपातर दांन में पुन कहें ते, गया जमारो खोयो रे॥ १२ ॥
श्रावक नें एकंत सुपातर कहे नें, तिण पोख्यां में धर्म बतावें रे।
इसडी परूपणा कर कर अग्यांनी, भोला लोकां नें इम भरमावें रे॥ १३ ॥
श्रावक नें एकंत सुपातर कहें छें, ते पूरा मूंढ अग्यांनी रे।
त्यांनें श्रावक पिण इसडाइज मिलीया, त्यां पिण सरधा साची कर मांनी रे॥ १४ ॥
नांव मातर श्रावक ववेक रा विकल, त्यांनें निज अवगुण नहीं सूझें रे।
त्यांनें गुर पिण मिलीया त्यांहीज सरीषा, तिण सूं दिन दिन इधका अलूझें रे॥ १५ ॥
श्रावक नें एकत सुपातर कहे, ते तो उठी जठाथी भूठी रे।
सावद्य किरतव मूल न सूझें, त्यांरी हीया नीलाडी री फूटी रे॥ १६ ॥
आंधा मिनष नें आंधो मिलीयो, जब कुण बतावें वाटो रे।
ज्यूं श्रावक ने एकंत सुपातर कहे छें, त्यांरें आयो अभितर पाटो रे॥ १७ ॥
श्रावक सुपातर विरतां रे लेखें, इविरत लेखें जेंहर रो वटको रे।
इविरत रो इणरें कांम पडें जब, छकाय रो कर जाय गटको रे॥ १८ ॥
श्रावक सुपार वरतां सूं हूवो, इविरत सूं अधर्मी जाणो रे।
इविरत रो इणरें कांम पडें तो, छकाय रो करें घमसांणो रे॥ १९ ॥
छकाय जीवां रो गटको करें छें, छकाय रो करें घमसांणो रे।
इण किरतब नें सुपातर जांणें, ते जिण मारग रा अजांणो रे॥ २० ॥
श्रावक अस्त्री सेवें सेवावें, वले परणें नें परणावें रे।
तिणनें एकंत सुपातर थापें, ते तो गाला रा गोला चलावें रे॥ २१ ॥
केइ श्रावक रे हुवें अस्त्री हजारां, पासवांन खवासण अनेको रे।
एहवा भोगी भमर नें सुपातर जांणें, त्या विकला नें नहीं ववेको रे॥ २२ ॥
हिंसा भूठ चोरी मइथुन सेवे, परिग्रह मेलें विवध प्रकारो रे।
तिणनें एकंत सुपातर परूपें, त्यांरा मत मांहें पूरो अंधकारो रे॥ २३ ॥

श्रावक लाखां वीघां घर खेती करें छें, कोडां मण काढे अणगल पांणी रे।
त्यांनें पिण एकंत सुपातर कहें छें, ते तो पाषंडीयां री वांणी रे॥२४॥
दमडी काजें पागडा पाडें पडावें, आंमी साह्मीं पेजारां चलावें रे।
एहवा श्रावक नें सुपातर कहितां, विकलां नें लाज न आवें रे॥२५॥
कजीयाखोर बथोकडा बगीया, मन मांनें ज्यूं बोलें भूंडा रे।
ममा चचा री गाल्यां तो वस रही मूंढें, त्यांनें सुपातर सरधे कांय बूडा रे॥२६॥
केइ नागडा निरलज फीटा बोलें, ते दीसें उघाडा कुपातर रे।
केइ एहवा कुपातर नें कहें छें सुपातर, त्यांनें पिण कहीजें एहवा सुपातर रे॥२७॥
केइ दगा दगी रो विणज करें छें, कपडादिक बेचें नग बदलावें रे।
त्यांनें एकंत सुपातर कहि कहि, ते विकलां नें विकल रीभावें रे॥२८॥
श्रावक तो घर मांहें बेठों, करें छें अनेक अकाजो रे।
तिण घरबारी नें सुपातर कहितां, विकलां नें न आवे लाजो रे॥२९॥
आगें मोटा मोटा राजा श्रावक हुआ, जीवादिक नवतत रा जांणो रे।
ते रिण संगराम चढ्या तिण कालें, घणां मिनषां रा कीयां घमसांणो रे॥३०॥
एक कागादिक मारण रा त्यांग कीयां, ते पिण श्रावक री पांत मांहीं रे।
बाकी रा सर्व किरतब खोटा करें छें, ते सुपातर पणां में नांहीं रे॥३१॥
श्रावक नें सुपातर किण न्याय कहीजें, किण न्याय अधर्मी कुपातर रे।
सूतर मांहें जोए भव जीवां, हीया मांहें करो जमें खातर रे॥३२॥
सूयगडांग अधेन अठारमें, तीन पष तणों विसतारो रे।
धर्म अधर्म मिश्र पष तीजों, यां तीनां रो सुणों भेद न्यारो रे॥३३॥
सर्व विरत नें धर्म पष कहीजें, इविरत नें अधर्म पष जांणो रे।
कांयक विरत नें कांयक इविरत, मिश्र पष एह पिछांणो रे॥३४॥
धर्म पष मांहें एकंत साधां नें घाल्या, त्यांरे सर्व थकी विरत जांणो रे।
अधर्म पष मांहें असंजती घाल्या, त्यांरें जाबक नही पचखांणो रे॥३५॥
मिश्र पष मांहें श्रावक नें घाल्या, तिणरो न्याय सुणो चित ल्यायो रे।
जे विरत कीया ते धर्म पष मांहें, इविरत छें अधर्म पष माह्यों रे॥३६॥
तिण सूं श्रावक नें कहीजें धर्मी अधर्मी, संजती नें असंजती जांणों रे।
वले श्रावक नें कहीजें विरती इविरती, पिंडत नें बाल दोनूं पिछांणो रे॥३७॥
श्रावक नें वरतां कर संजती कहीजें, गुण रतनां री खांणो रे।
वरत आदरतां इविरत राखी, तिण सूं कोरों असंजती जांणों रे॥३८॥
श्रावक रो खांणों पीणों नें गेंहणों, इविरत मांहें जांणो रे।
तिण इविरत नें असंजती कहीजें, तिण मांहें धर्म म जांणो रे॥३९॥

कोइ श्रावक नें असणादिक देवे, ते तो असंजतीपणा माह्यों रे।
असजती नें दान दे त्यांरें, आछा फल नही लागें ताह्यो रे ॥४०॥
असजती नें दांन दीयां में, पाप कह्यों छें एकंतो रे।
भगवती आठमे सतक छठें उद्देशें, इम भाष गया भगवंतो रे ॥४१॥
साध श्रावक विण सर्व ससारी, एकंत असंजती जाणो रे।
श्रावक री इविरत पिण असजती छें, ते रुडी रीत पिछांणो रे ॥४२॥
अधर्मी जीव च्यारां गुण ठाणां, श्रावक रो पांचमो गुण ठांणो रे।
बाकी नव गुण ठांणा साध रिखेसर, ए ससार मे सर्व जीव जाणो रे ॥४३॥
पाचूं इद्री मोकली मेल्यां पाप, मेलाया पिण लागे छे पापो रे।
पांचूं इद्री नीं तेवीस विषे सेवायां, पाप कह्यो जिणेसर आपो रे ॥४४॥
कोइ श्रावक नी रस इंद्री पोखें, पाचूं रस मन गमता जीमावें रे।
तिण रस इद्री नी विषे सेवाइ, तिण में धर्म अग्यांनी बतावें रे ॥४५॥
कोइ श्रावक री पाचूं इद्री पोषे, विषें सेवारें तेवीसो रे।
तिण माहे धर्म परूपे मिथ्याती, ते वूडा छें विसवावीसो रे ॥४६॥
केइ मूढ मती जीव अतत अग्यांनी, ते इसडी चरचा आंणे रे।
जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवे, तो च्यार तीरथ मे क्यूं जांणे रे ॥४७॥
च्यार तीरथ नें कही रतना री माला, तिण माला रा भेद न जाणें रे।
गुण अवगुण सर्व माला में घाल्या, ग्यानी थकां उधी ताणें रे ॥४८॥
च्यार तीरथ छे गुण रतना री माला, तिण में इविरत नही लिगारो रे।
माला माहे श्रावक रा वरत घाल्या, इविरत ने काढे दीधी बारो रे ॥४९॥
इविरत ने एकलो अधर्मी कहीजें, तिणरा अनेक माठा माठा नांमो रे।
ते रतनां री माला में किण विध घाले, ते तो सगलाई सावद्य कांमो रे ॥५०॥
श्रावक नें एकत सुपातर थापण, कोइ इसडी चरचा ल्यावें रे।
जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवें, तो देवलोकां किम जावें रे ॥५१॥
श्रावक जावें छें देवलोक माहे, ते तो समकत वरत सूं जांणो रे।
एक समकत सूं पिण देवलोक जावे, तो श्रावक रे छे समकत पचखांणो रे ॥५२॥
इविरती समदिष्टी चोथे गुण ठाणें, ते एकत असजती जाणो रे।
ते पिण देवलोक माहे जावे छे, ते समकत गुण पिछांणो रे ॥५३॥
श्रावक देवलोक माहे जावें छे, ते तो समकत वरत मे पूरा रे।
त्यारें पुन बंधे छें शुभ जोगां सूं, वले पाप कर्म करें दूरा रे ॥५४॥
जे देवलोक जावे ते निरवद गुण सूं, अवगुण लेजावे दुरगत ताणो रे।
ज्यूं श्रावक पिण देवलोक जावे छें, ते तो गुणां री बोहलता जाणो रे ॥५५॥

अभवी जीव एकंत मिथ्याती, ते निश्चें सुपातर नांही रे।
ते पिण कष्ट तणें परतापें जावें छें, नवमां ग्रीवेक तांइ रे॥ ५६॥
ते तो समदिष्टी साध श्रावक पिण नांहीं, ते पिण नवमें ग्रीवेक जावें रे।
वले सिन्यासी नें गोसाला मती पिण, ते पिण विमांणीक थावें रे॥ ५७॥
वले कृष्ण पषी तिरजंच मिथ्याती, ते पिण आठमें देव लोक जायों रे।
जो देवलोक जावें ते सर्व सुपातर, तो ए पिण सुपातर माह्यों रे॥ ५८॥
बारें देवलोक नें नव ग्रीवेक मांहें, जीव गयों अनंती बारो रे।
जे देवलोक गया ते सुपातर हुवें तो, नहीं रुलें अनंत संसारो रे॥ ५९॥
समदिष्टी नें पिण कहीजें सुपातर, ते तो समकत ग्यांन सूं जांणो रे।
उणरी इविरत नें खोटा किरतब कीधां, एकंत कुपातर पिछांणो रे॥ ६०॥
वले मिश्र पष में पाषंड्यां नें घाल्या, कष्ट नें कहिवा रे लेखें जाणो रे।
ते समकत विण छें एकंत इविरती, अधर्मी पेंहलों गुण ठांणो रे॥ ६१॥
जो किरतब सूं मिश्र पष हुवें तो, साधु पिण हुवें मिश्र पष माह्यों रे।
साधु नें पिण कषाय माठी लेस्या आवें, माठा जोग पिण वरतें ताह्यों रे॥ ६२॥
कदे आरत ध्यांन साधां नें पिण आवें, माठा आवे अधवसाय परिणांमो रे।
तो पिण साधां नें मिश्र पष में न घाल्या, ते तो सगला सावद्य था कांमो रे॥ ६३॥
माठा किरतब नें कुमारग कहीजें, इविरत नें अधर्मी कही ताह्यों रे।
अधर्म नें कुमारग न्यारा कह्या छें, ठाणांग दशमा ठांणा माह्यों रे॥ ६४॥
धर्मी अधर्मी ने धर्माधर्मी, मिनषां माहें तीनूंई जांणो रे।
तिरयंच मांहें छें धर्मी अधर्मी, बाकी सर्व अधर्मी पिछांणो रे॥ ६५॥
जो किरतब सूं धर्माधर्मी हुवें तो, देवता पिण धर्माधर्मी होयो रे।
देवता पिण निरवद किरतब करें छें, जोग लेस्या भला हुवें सोयो रे॥ ६६॥
देवता नें एकंत अधर्मी कह्या छें, ते तो इविरत रे न्याय जांण्यो रे।
ज्यूं धर्मी अधर्मी धर्माधर्मी, विरत इविरत में तीनूं आण्यो रे॥ ६७॥
संवत अठारें वरस तयालें, आसोज विद दसम रिववारो रे।
पातर कुपातर ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मझारो रे॥ ६८॥

ढाल : ५

दुहा

आगना श्री अरिहंत नीं, निरवद दांन में जांण।
सावद्य दांन नें थापवा, मूरख मांडे तांण॥ १ ॥
मिश्र धर्म परूपीयो, ते नही सूतर रो न्याय।
न्हाखें फद में लोक नें, कूडा कुहेतु लगाय॥ २ ॥
इविरत आश्रव में कही, श्री जिण मुख सूं आप।
सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, तीनूई करणां पाप॥ ३ ॥
विरत में धर्म श्री जिण तणों, इविरत अधर्म जांण।
मिश्र मूल दीसें नही, करे अग्यांनी तांण॥ ४ ॥

ढाल

[अधर्मी अवनीत...]

जिण भाख्या पाप अठार, सेव्यां नही धर्म लिगार।
संका मत आंणजो ए, साचो कर जांणजो ए॥ १ ॥
जो थोडो घणो करो पाप, तिण थी हुवें संताप।
मिश्र नही जिण कह्यों ए, समदिष्टी सरधियो ए॥ २ ॥
कहे अग्यांनी एम, श्रावक नही पोखां केम।
भाजन रतना तणो ए, नफो अति घणो ए॥ ३ ॥
इणरो नही जांणें न्याय, त्यानें किम आंणी जे ठाय।
झगडो झालीयो ए, बेदो घालीयो ए॥ ४ ॥
हिवें सुणजो चतुर सुजान, श्रावक रतना री खांण।
व्रतां कर जांणजो ए, उलटी मत तांणजो ए॥ ५ ॥
केइ रूंख बाग मे होय, आंब धतूरा दोय।
फल नही सारिखा ए, करजो पारिखा ए॥ ६ ॥
आंबा सूं लिवलाय, सींचे धतूरो आय।
आसा मन अति घणी ए, अंब लेवा तणी ए॥ ७ ॥
पिण आंब गयो कुमलाय, धतूरो रह्यो डहिडाय।
आय ने जोवें जरें ए, नेणा नीर झरे ए॥ ८ ॥
इण दिष्टतें जांण, श्रावक व्रत अंब समांण।
इविरत अलगी रही ए, धतूरा सम कही ए॥ ९ ॥

सेवारे इविरत कोय, व्रतां साह्मों जोय।
ते भूला भर्म में ए, हिंसा धर्म में ए ॥ १० ॥
इविरत सूं बंधे कर्म, तिणमें नहीं निश्चें धर्म।
तीनूं करण सारिखा ए, ते विरला पारिखा ए ॥ ११ ॥
कहें खाधां बंधइ कर्म, खवायां मिश्र धर्म।
ए भूठ चलावीयो ए, मूरख मन भावीयो ए ॥ १२ ॥
ए मिश्र नहीं साख्यात, तो कांय सरधे ए बात।
अकल नही मूढ में ए, ते पडिया रुढ में ए ॥ १३ ॥
पोतें नहीं बुध प्रकास, लागों कुगरां रो पास।
ते निरणों नहीं करे ए, ते भव कूवे पडे ए ॥ १४ ॥
साधु संगत पाय, सुणें एक चित्त लगाय।
पखपात परहरें ए, खबर बेगी पडें ए ॥ १५ ॥
आणंद आदि दे जाण, श्रावक दसूंई वखांण।
त्यां पडिमा आदरी ए, ते चरचा पाधरी ए ॥ १६ ॥
जे जे कीधो छे त्याग, आंणी मन वेंराग।
ते करणी निरमली ए, करनें पूरी रली ए ॥ १७ ॥
पिण बाकी रह्यो आगार, इविरत में आंण्यो आहार।
आपणी न्यात में ए, समझो इण बात में ए ॥ १८ ॥
इविरत में दे दातार, ते किम उतरे भव पार।
मारग नहीं मोष रो ए, ए छादो लोक रो ए ॥ १९ ॥
दाता नें अन सुघ थाय, पिण पातर इविरत में त्याय।
ते किम तारसी ए, पार उतारसी ए ॥ २० ॥
जूनो छे गूढ मिथ्यात, तिणरें किम बेसें ए बात।
कर्म घणा सही ए, समझ पडे नही ए ॥ २१ ॥
उपासग उवाई उपंग, वले सूयगडाअंग।
सूतर थी उधरी ए, इविरत अलगी करी ए ॥ २२ ॥
आगम नीं दे साख, श्री वीर गया छे भाख।
भवीयण निरणों करे ए, तो भव सागर तिरें ए ॥ २३ ॥
देइ सुपातरां दांन, न करें मन अभिमांन।
संसार परत करें ए, सिव नगरी वरें ए ॥ २४ ॥
दांन सूं तिख्या अनत, भाष्यो श्री भगवंत।
ते दांन न जांणीयो ए, न्याय न छांणीयो ए ॥ २५ ॥

साध सुपातर सोय, दाता सूझतो होय।
असणांदिक सुध दीयो ए, तिण लाभ मोटो लीयो ए॥ २६॥
साध सुपातर जाण, दाता सुध पिछांण।
आहारदिक असुध सही ए, वेहराया नफो नही ए॥ २७॥
जो मिले मोटा अणगार, पिण सुध नही दातार।
असणादिक सुध सही ए, पिण दीधां नफो नही ए॥ २८॥
आय मिले कुपातर कोय, दाता अन सुध छे दोय।
प्रतिलाभ्या तिरे नही ए, श्री जिण मुख सूं कही ए॥ २९॥
धारो मन आण ववेक, तीनां मे सुध नही एक।
प्रतिलाभ्यां धर्म नही ए, सूतर मे इम कही ए॥ ३०॥
पातर दाता ने आहार, तीनूं असुध विचार।
धर्म न भाखें जती ए, यो भूठ जांणो मती ए॥ ३१॥

ढाल : ६

दुहा

दस दांन भगवंते भाषीया, सूतर ठाणांग मांय।
गुण निपन्न ज्यांरा नांम छे, पिण भोलां नें खबर न कांय॥ १॥
धर्म अधर्म दोय मूलगा, प्रसिध लोक में एह।
आठां रो अर्थ उंधो करे, मिश्र धर्म कहे तेह॥ २॥
मिश्र धर्म परूप नें, कूडो वाद करंत।
पिण आठे अधर्म में जिण कह्या, सांभलो एक दिष्टंत॥ ३॥
आंबा नें नींब रूंख नो, जूदो जूदो विसतार।
नींबफर नींबोली तेल खल, ए नीब तणो परिवार॥ ४॥
इम आठेइ दांन जांणज्यो, अधर्म तणो परिवार।
धर्म दांन में आवें नही, श्री जिण आग्या बार॥ ५॥
इतरे समफ पडे' नहीं, तो सुणो जूजूआ भेद।
विवरो सुध बतावीयां, म करो क्रोध नें खेद॥ ६॥

ढाल

[जांरो छे राय तूं रात]

किरपण दीन अनाथ ए, मलेछादिक त्यांरी जात ए।
रोग सोग नें आरत ध्यांन ए, त्यांनें दे ते अणुकंपा दांन ए॥ १॥
देवें मूलादिक जमीकंद ए, त्यांमें अनंत जीवां रा फंद ए।
इण दीधां कहें मिश्र धर्म ए, ज्यांरे उदें आयो मोह कर्म ए॥ २॥
लूण आदि दे पृथवी काय ए, आपें अगन पांणी ढोले वाय ए।
देवें सस्त्र विवध प्रकार ए, ए दांन थी रूलें संसार ए॥ ३॥
बंदीवांनादिक नें काज ए, त्यांनें कष्ट पड्यां दे साफ ए।
थोरी बावरी भील कसाइ नें ए, सचित्तादिक द्रव्य खवाइ नें ए॥ ४॥
छोडावें गर्थ दे तांम ए, संग्रह दांन छे तिण रो नांम ए।
ए तो संसार नों उपगार ए, अरिहंत नीं आग्या बार ए॥ ५॥
ग्रह करडा आया जांण ए, सुणी लागी पनोती आंण ए।
फिकर घणी मरवा तणी ए, वले कुटंब तणा जतन भणी ए॥ ६॥

भय रो घालीयो देवें आंम ए, भय दांन छें तिणरो नांम ए।
ते ले छे कुपातर आय ए, तिण मे धर्म किहां थी थाय ए॥ ७॥
खरच करें मूंआ नें केडें ए, जीमावें न्यात नें तेडें ए।
तीनां वारां दिनां उनमांन ए, ते चोथो कालुणी दांन ए॥ ८॥
वले वरस छ मासी सराध ए, जिम जिम छे कुल मरजाद ए।
मूआ पेली खरचे कोय ए, घणा नें करें तिरपत सोय ए॥ ९॥
आरंभ कीया नही धर्म ए, जीमायां पिण वधइ कर्म ए।
बुधवंत करो विचार ए, नही संवर निरजरा लिगार ए॥ १०॥
घणा नी लज्या वस थाय ए, सांकडे पडीयो देवें ताय ए।
देवें सचितादिक धन धान ए, ते पांचमो लज्या दांन ए॥ ११॥
ए सावद्य दान साख्यात ए, ते दीयो कुपातर हाथ ए।
कोइ कहे हुवो मिश्र धर्म ए, ते निश्चें बांधें कर्म ए॥ १२॥
मूकलावो परंणी मुसाल ए, सगा नें जूआ जआ संभाल ए।
जे द्रव्य दे जस रे कांम ए, गरव दांन छें तिणरो नांम ए॥ १३॥
किरतनीया वादी मल ए, रावलियां रांमत चल ए।
नट भोपा आदि वशेष ए, दांन दें त्यानें द्रव्य अनेक ए॥ १४॥
ए दांन थी बधे कर्म ए, मूरख कहे मिश्र धर्म ए।
ज्यारी प्रतख भूठी बात ए, खोटी सरधा मूल मिथ्यात ए॥ १५॥
गणिकादिक सेवा कुशील ए, दांन दे त्यांनें करवा कील ए।
ए प्रतख खोटो कांम ए, अधर्म दान छे तिणरो नाम ए॥ १६॥
सूतर अर्थ सीखाय ए, सुध मारग आंणे ठाय ए।
आपें समकत चारित एह ए, धर्म दान छे आठमो तेह ए॥ १७॥
वले मिले सुपातर आण ए, देवे निरदोषण द्रव्य जांण ए।
ए दांन मुगत रो माग ए, दीयां दलद्दर जावे भाग ए॥ १८॥
छकाय मारण रो त्याग ए, कोइ पचखें आंण वेंराग ए।
अभय दांन कह्यो जिणराय ए, धर्म दांन मे मिलियो आय ए॥ १९॥
सचितादिक द्रव्य अनेक ए, उधारा जिम देवें वशेख ए।
पाछो लेवा रो मन ध्यान ए, नवमों कायंति दांन ए॥ २०॥
लेणात नें जिम दे जेह ए, हाती नेहतादिक दे तेह ए।
पाछो लेवा रो एकंत काम ए, कतंती दांन तिणरो नांम ए॥ २१॥
नवमे दसमे दांन ए चाल ए, धुर वोहरा वालो ख्याल ए।
ग्यांनी जांणें सावद्य मांय ए, तो मिश्र किहां थी थाय ए॥ २२॥

ए दस दांन तणो विचार ए, संखेप कस्यों विसतार ए।
वीर नीं आग्या में एक ए, आग्या बारे दान अनेक ए॥२३॥
असंजती श्रावक घरे आवियो ए, निरदोषण आहार वेंहराविया ए।
तिणनें दीयां एकंत पाप ए, भगोती में कह्यों जिण आप ए॥२४॥
इम सांभल करो विचार ए, आठे अधर्म तणो पिरवार ए।
घणा सूतरां नीं शाख ए, श्री वीर गया छें भाष ए॥२५॥
धर्म अधर्म दांन छे दोय ए, पिण मिश्र म जाणो कोय ए।
किम सरधें मिथ्याती जीव ए, मूल मे नही समकत नीव ए॥२६॥

ढाल : ७

दुहा

केइ भेषधारी भागल थका, त्यारे दया नही घट माय।
हिंसा धर्म परुपीयो, ते नही सूतर रो न्याय॥ १॥
दया दया मुख सूं कहे, पिण दया री खबर न कांय।
भोला नें पाड्या भरम मे, ते हणे जीव छकाय॥ २॥
उवें हिंसा धर्म दिढावता, वले बोले फिरता वेंण।
आप डूबे ओरां ने डबोवता, फूटा अभितर नेण॥ ३॥
'हिंसाधर्मी' री परतीत सूं, डूबा जीव अनेक।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक॥ ४॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगना मे]

श्रावक ने माहोमांहि छकाय खवावे, वले छकाय मारे ने जीमावे।
ए जीव *हिंसा रो राहज खोटो, तिण माहे धर्म अनारज बतावे।
या हिंसा धर्म्यां रो निरणो कीजो॥ १॥
छ काय जीवां रो तो घमसाण कीघो, जीमाय कीयो उणनें कर्मां सूं भारी।
दोनूं कानी जोया दीसे दिवालो, इण माहे धर्म कहे भेषधारी॥ २॥
छ काय जीवा ने खाधा खवाया, अरिहंत भगवत पाप बतावे।
ए वचन उथापे नें मिश्र परूपे, तिण दुष्टी रे दिल दया न आवे॥ ३॥
रांकां ने मार धीगा ने पोख्यां, ए तो वात दीसे घणी गेरी।
तिण माहे दुष्टी धर्म बतावे, ते राक जीवा रा उठ्या वेरी॥ ४॥
पाछिल भव पाप उपाया तिण सूं, ते हुआ एकेंद्री पुन पखारी।
त्यां राक जीवां रे उसभ उदे सू, लोकां सहित लागू उठ्या भेषधारी॥ ५॥
कुपातर दांन मे पुन परूपें, तिणसू लोक जीवां ने हणे बसेप।
कुगुर एहवा चाला चलावें, ते भिष्ट हुआ लेइ साधु रो भेष॥ ६॥
कोइ पूछे तो कहे मून साझां म्हे, पिण सानी कर जीव मरावण लागा।
हेठलो जोवरो खेच अलगा हुवें, ते विरत विहुणा कहीजे नागा॥ ७॥
कोइ माली रे ओडो भूखो आय उभो, तिणने मूला गाजर धपाय खवावे।
ए एकत पाप उघाडो दीसे, तिणमेंड मूरख धर्म बतावे॥ ८॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

बेंगण बालोलादिक अनेक नीलोती, कोइ रांधें रांधें पोखें पर प्रांणी।
इण मांहि दुष्टी धर्म बतावें, दुरगत जावा री आ अहलांणी॥ ९॥
खरच आगरणी नें भात व रोटी, अनेक आरंभ कर त्यात जीमावें।
ए सर्व संसार तणा किरतब छें, तिण मांहि धर्म अग्यांनी बतावें॥ १०॥
भेषधारी श्रावक नें सुपातर थापें, तिण नेहत जीमायां कहें मुगत रो धर्मो।
त्यांनें सूतर सस्त्र ज्यूं परगमीयो, ते हिंसा दिढाय बांधें मूढ कर्मो॥ ११॥
कोइ बीस पचीस श्रावक नें नेहतर, घर जाय घर रां नें धंधें लगावें।
केइ मूंग दलें केइ गेहूं पीसें, केइ अगन सधूखी नें चूलो धुकावें॥ १२॥
कोइ लूण पांणी घाल आटो गिलावें, कोइ आधण दे उरें चोखा दालो।
कोइ रोटी तवें न्हांखें खीरां सेकें, केइ तरकारी रांघ लेवें ततकालो॥ १३॥
छ काय जीवां री हिंसा करनें, अनेक चीजां रांघ कीधीं रसालो।
पछें दांतण कराय नें भांणें वेसाण्या, बाजोट देइ मेली उपर थालो॥ १४॥
पछें भोजन पुरसें भेला बेंठा, आप आप तणों पेट सगलांइ भरीयो।
भेषधारी सहित श्रावकां नें पूछीजें, यांमें कुण कुण डूबो नें कुण कुण तिरियो॥ १५॥
जब जीमण वाला नें पाप बतावें, हिंसा करण वाला नें कहें छें पापी।
जीमावण वाला नें धर्म कहें छें, आ सरधा भेषधारयां थापी॥ १६॥
हिंसा करण वाला ने जीमण वाला रे, आ पाप री उतपत किण सूं चाली।
वले छ काय रा जीव मूंआ त्यांरो, नेंहत जीमावण वालो दलाली॥ १७॥
इण पाप दलाली नें धर्म परूपें, ते पड गया मोह मिथ्यात अंधेरे।
ए प्रतप हिंसाधर्मी अनारज, केइ बूड गया त्यां कुगुरां रें केडें॥ १८॥
श्रावक नें नेंहत जीमावें तिणमें, धर्म कहें मूढ बिनां विचारो।
मुंहपती बांध नें मीठा बोलें, पिण जीभ बहें तीखी ज्यूं तरवारो॥ १९॥
जो जीव हणता नें संका आवें तो, ते तुरंत हणें सुण कुगुरां री वांणी।
पेंहला हिंसा कीयां पछें धर्म बतावें, आ कुगुर वांणी जेंसी वेंहती घांणी॥ २०॥
किण ही रांक गरीब नें दांन उदकीयो, उदकीयो दांन श्रावक नें दरावें।
धनवंत धर्म रो लेवण लागा, पछें रांकां रे हाथ कठासूं आवें॥ २१॥
वले लाडू खोपरा रोकड नांणो, सांनी कर सामग्री में दरावें।
कुगुर एहवा चाला चलावें, पेट भरां जांणें पातरें आवें॥ २२॥
गाय सुखी हुवां गरभ सुखी हुवें, कूवें पांणी हुवें तो अवालें आवें।
इण दिष्टंतें पेट रें कारण पापी, आप आप तणी सामग्री में दरावें॥ २३॥
ते देण वाला नें तो धर्म बतावें, लेवाल नें तो कहें पापज होवें।
तो धर्म करण नें मूढ अग्यांनी, सर्व सामग्री नें कांय डबोवें॥ २४॥

सर्व सामग्री नें पाप लगाया, ते पिण निश्चे होसी पाप नूं भागी।
ए साची सरधा नें ज्यों न्हाखें, त्यां विकल्यां ने गुर मिलीया भेषधारी ॥ २५ ॥
धर्म करे ओरां नें पाप लगाए, तिण धर्म ने कदेय म जांणो रूडो।
भारीकर्मा जीवां रे असुभ उदे सूं, भेष धारयो मन काढ्यो कूडो ॥ २६ ॥
कुपातर दान री चरचा करतां, पडिमाधारी श्रावक ने मुख आंणें।
भोला लोकां ने भिष्ट करण ने, ते पिण भेद मिथ्याती न जांणे ॥ २७ ॥
पडिमाधारी श्रावक वेहरी ने आंणे, तिणने तो एकंत पाप बतावे।
उवें दातार ने तो धर्म कहे पिण, प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवे ॥ २८ ॥
पडिमाधारी श्रावक ने पाप लागों तो, दातार ने धर्म हुवो किण लेखें।
उण इविरत सेवण दान दीयो छे, तिण किरतब साह्मों अग्यांनी न देखे ॥ २९ ॥
पडिमा पडिमा कर रह्यां मूरख, ते पडिमा तो छे श्री जिणवर धर्मों।
पिण पडिमा आदरतां इविरत राखी, ते सेव्यां सेवायां बंधसी कर्मों ॥ ३० ॥



ढाल : ८

दुहा

जिण आगना बारली किरिया करें, तिहां जीव तणी हुवें घात।
जे हिंसाधर्मी छें जीवडा, तिणरो पाप न गिणें तिलमात ॥ १ ॥
जीव मारें छें छ काय रा, तिणरो पाप न गिणें लिगार।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो विसतार ॥ २ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी नै देखो]

अति ही दुष्टी हुवें हिंसाधर्मी, ते तो हिंसा धर्म दिढाव रे।
दया धर्म तिणसूं भिड्कावें, दुरगति मांहे पोंहचावें रे।
हिंसा धर्मी रो संग न कीजें* ॥ १ ॥

साध नें तपावें अगन सूं अग्यानी, ते तो पाप अठारां में पेंहलो रे।
तिण मांहें पुन परूपें अग्यांनी, तिणनें पिंडत कहीजें के गेंहलो रे ॥ हिं० २ ॥
साधु नें तपायां में पुन परूपें, ते तो मूढ मिथ्याती छे पूरो रे।
अगन री हिंसा में पाप न जांणें, ते मत निश्चेंइ कूडो रे ॥ ३ ॥
सभाय स्तवन कहे मुख उघाडे, जब वाउ जीवां री हुवें घातो रे।
केइ कहें वाउकाय रो पाप न लागें, आ उंध मती री छें बातो रे ॥ ४ ॥
श्रावक नें मांहोमां छ काय खवावें, छ काय मारे नें जीमावें रे।
ए प्रतष पाप उघाडो दीसें, तिणमें कुगुर धर्म बतावे रे ॥ ५ ॥
साधां नें वांदण जाता मारग में, तस थावर री हुवें घातो रे।
ज्यां सूं जीव मूआ ज्याने पाप न सरधें, त्यांरा घट मांहें घोर मिथ्यातो रे ॥ ६ ॥
विण उपीयोगें मारग मांहें चालें, जब मरें जीव छ कायो रे।
ए प्रतष पाप उघाडो दीसें, पिण विकलां ने खबर न कायो रे ॥ ७ ॥
विण उपीयोगें मारग मांहे चालें, कदे न मरें जीव किण बारो रे।
तो पिण वीर कह्यों छें तिण नें, छ काय री मारणहारो रे ॥ ८ ॥
जो जीव मूआ त्यांरो पाप न लागें, तो जोय जोय ने कुण हालें रे।
निसंक थकां छ काय जीवां नें, मरदता मरदता चालें रे ॥ ९ ॥
मोटा मोटा राजा गया वीर वांदण नें, चउरंगणी सेन्या ले साथो रे।
त्यां आरंभ कीधा अनेक प्रकारें, तिहां हुइ छ काय री घातो रे ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कोइ कहे जीव मूआ रो पाप न लागो, ते तो उठी जठा थी भूठी रे।
ए प्रतष पाप उघाडो न सूझे, त्यारी हीया निलाड री फूटी रे॥ ११ ॥
जो वादण जावे ईयां जोवतां, तो जीवा री हिंसा न थायो रे।
विण जोयां चाले तो प्रतष हिंसा, तिण सू निश्चे लागे आयो रे॥ १२ ॥
कूंडापथी रो आचार कूंडापथी सूं, चोडे लोका मे कहणी न आवे रे।
एको दुको मिले कोइ आप सारीषो, तिण आगे कायक वतावे रे॥ १३ ॥
उणने भरमाय भरमाय कूडे वेंसावें, माठी माठी वसत खवावे रे।
पछे धीरा धीरा ओ पिण इसडो हुवे, जव ओ पिण कूडा धर्म दिढावे रे॥ १४ ॥
ज्यू जीव खवाया मे पुन कहे त्यासू, चोडे लोका मे कहणी न आवें रे।
एको दूको कोइ आय मिले जव, थोडोसो रहस्य वतावे रे॥ १५ ॥
इम भोला नें भरमाय मत माहे घालें, पछे हिंसा में धर्म सीखावें रे।
पछें ते पिण त्यां सा रीपो होय जावे, जव जीव मारता संका न आवे रे॥ १६ ॥
कूंडाधर्मी कूडे वेस जीमे जव, मन रलीयायत थायो रे।
ज्यूं हिंसाधर्मी हरषे जीव खवायां, पुन नीपनो जाणें तिण माह्यो रे॥ १७ ॥
जीव खवाया मे पुन जाणे छें, त्यांरी दया घट माही सूं न्हाठी रे।
वले छ काय हणे जीमाया धर्म जाणे, एहवी कुगुरां दीधी मति माठी रे॥ १८ ॥
जीव खवाया पुन कहे छे, पिण पूछ्या पलटें वाणो रे।
ते छाने छाने सरधा सीखावे, ते तो जार गरभ जिम जाणो रे॥ १९ ॥
जमीकंद मे जीव अनंता, ए भगवंत वायक जांणो रें।
मूला खवायां मे पुन परूपे, आ कुगुरा री वांणी रे॥ २० ॥
कर्म घणा ने वोहल ससारी, आ सरधा साची कर मानी रे।
कुगुर तो वीद वण्या नरक जावा, विकला ने साथे लिया जांणी रे॥ २१ ॥
ढाका वंगाला ने कागरु देस रा, वीद्या मतर धुतारो रें।
इण सरधा रो इचरज आवें, ओ धर्म सीखायो के धारो रे॥ २२ ॥
खरच आगरणी ने भात व रोटी, सगा सेण नेहत जीमायो रे।
इण लूंटा लूंट मे पुन परूपें, ओ कुगुरां कूड चलायो रे॥ २३ ॥
आ सरधा धराए लोकां ने, हुवा नरक अधिकारी रे।
वडा उट जिम आगें चालें, विकलां लारें वाधी कतारी रे॥ २४ ॥
छ काया रा तो पीहर वाजे, सांग साधां रो धरीयो रे।
जीव खवाया मे पुन परूपे, ओ पीहर पूरो पडीयो रे॥ २५ ॥
गृहस्थ नें मांहोमां छ काय खवावें, ते पाप थांनक छें पेहलो रे।
तिण मांहे मूरख धर्म वतावें, ते पिडत कहीजें के गेंहलो रें॥ २६ ॥

संवत अठारें नें वरस तयाले, आसोज विद आठम सुकरवारो रे।
हिंसाधर्मी ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मझारो रे॥ २७॥

ढाल : ९

दुहा

जिण आगम मांहें इम कह्यों, श्री जिण मुख सूं आप।
अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, जीव हण्या छें पाप॥ १॥
केइ अग्यांनी इम कहें, धर्म काजे हणें जीव कोय।
चोखा परिणामां जीव मारीयां, त्यांरो जाबक पाप न होय॥ २॥
जीव मारें छें उदीर नें, तिणरा चोखा कहे परिणांम।
ते ववेक विकल सुध बुध विना, वले जेनी धरावें नांम॥ ३॥
साधां नें वादण जातां नें वेंहरावतां, तिहां जीव तणी हुवें घात।
तिणरो कहे पाप लागों नही, एहवी उंध मत्यां री छें बात॥ ४॥
इण विध करें छें परूपणा, ते विकलां माने लीधी बात।
त्यारी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो विख्यात॥ ५॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

कोइ गाडी जोतर साधां ने वांदण, चोमासा में सो कोसां जावें रे।
जब लटां गजाया ने कीडी मकोडा, मारग मांहें बोहत चिथावें रे।
या "हिंसा धर्म्यां रो संग न कीजे* ॥ १॥
वले नीलो आलो नीलण फूलण चोमासें, ते पिण जीव चीथ्या जावे रे।
वले नदीयां अनेक उतरें मारग मे, ठांम ठांम रसोई नींपजावें रे॥ यां० २॥
इत्यादिक हिंसा कीधी अनेक प्रकारें, तिण रो पाप लागों कहें नाही रे।
इण विध हिंसा माहे धर्म थापें, ते विकलां री परषदा मांही रे॥ ३॥
कहे साधा नें वादण चाल्यों जठाथी, सगलोई धर्म कारज जांणो रे।
विचें जीव मूआं त्यारो पाप न लागें, आ पाषडीयां री वांणो रे॥ ४॥
पांणी री भीक पडे तिण कालें, कोइ वरसतां वांदण जावें रे।
पांणी रा जीव मूआ छें त्यारो, पाषडी कहें पाप न थावें रे॥ ५॥
वले उघाडे मुख वातां करतां चालें, सगपण सोदा करें मारग मांही रे।
इत्यादिक सावद्य करे छें वांदण जाता, तिणरो पिण पाप कहें छें नांही रे॥ ६॥
इण विध जीव मूआं रो पाप न जाणें, तिण रो नियमा निश्चे मत कूडो रे।
ते भूठा थका जेनी नाम धरावे, पिण जिण मारग थी दूरो रे॥ ७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केइ ईर्यां जोवतां वांदण जावें, केइ जीवां नें मरदता जावें रे।
केइ गाडें घोडे रथ बेंसनें जावें, कहें किणनेंइ पाप न थावें रे॥ ८॥
इण लेखें तो इर्या जोवण वाला नें, लाभ हुवो नही कांई रे।
हिवें इसडो हिंसा धर्म्यां री सरधा रा, जाब धारों मन मांहीं रे॥ ९॥
सामायक संवर पोषा में, साधां नें वांदण जावें रे।
जब जीव तणी कोइ घात हुवें तो, ते प्राछित ले सुध थावें रे॥ १०॥
सामायक मांहें वांदण जातां हिंसा हुवें, तिणरो पाप लागां प्राछित आवें रे।
तो ओर वांदण जातां हिंसा हुवें छें, तिण ने पाप क्यूं नही थावें रे॥ ११॥
साधां नें वांदण जातां मारग में, करें जिसा फल पावें रे।
सावद्य निरवद तीनूं जोगां सूं, पुन पाप न्यारा न्यारा थावें रे॥ १२॥
वांदण जातां मन जोग सुध हुवें तो, एकंत निरजरा थायो रे।
वचन नें काया असुध हुवें तो, तिण सूं पाप लागें छें आयो रे॥ १३॥
कदे काया नें वचन दोनूं जोग सुध हुवें, त्यांसूं पिण हुवें निरजरा धर्मो रे।
एक मन रो जोग असुध रह्यों बाकी, तिण सूं लागें पाप कर्मो रे॥ १४॥
कदे तीनूंइ जोग सुध हुवें तो, पाप न लागें लिगारो रे।
इण विध वांदण जातां मारग में, तीनूं जोगां रो व्यापार न्यारो रे॥ १५॥
उसभ जोगां सूं पाप सुभ जोगां सूं पुन, तिण मांहें म जांणों फेरो रे।
सावद्य निरवद रा फल जूवा जूवा छें, दूध पांणी ज्यूं जांणों निवेडो रे॥ १६॥
पछें भाव सहीत तिण साधां नें वांद्या, करमां री कोड खपावें रे।
उतकष्टों पद तीर्थंकर पांमें, मुगत में बेगो सिधावें रे॥ १७॥
साधां नें वांदण जावण आवण रो, ए पिण दोनूं किरतब न्यारो रे।
वले तीजो किरतब वंदणा रो न्यारो, यां तीनां रो सुणों विसतारो रे॥ १८॥
साधां नें वांदण जावें ते वंदणा रे कारण, पाछो घर रे कारण घरे आवें रे।
साधां नें वंदणा कीधी तिखुतो करनें, ए तीनूं करणी भेली न थावें रे॥ १९॥
कोइ उघाडे मुख बोल साधां नें वेंहरावें, जब मारें छें वाउकायो रे।
ते वाउकाय मूआं रो कहें पाप न लागें, इम बोलें पाषंडी वायो रे॥ २०॥
कोइ साधां नें असणांदिक आहार वेंहरावें, ते बोलें छें मुख उघाडे रे।
काया रो जोग तो निरवद तिणरो, वचन सूं वाउकाय नें मारें रे॥ २१॥
उघाडें मुख बोलें वाउकाय मार्‍यां, तिणरो लागें पाप कर्मो रे।
काया रा जोग सूं जेंणा करनें वेंहरायों, तिणरो छें एकंत धर्मो रे॥ २२॥
काया रा जोग सूं साधां नें वेंहरावें, जो काया सूं हुवें जीव घातो रे।
जब तो साधु तिण रा हाथां सूं, वेंहरें नहीं तिल मातो रे॥ २३॥

काया रा जोग सूं करतो अजेणा, साधां नें असणांदिक देवे रे।
फूंक देवे करे भटको फटको, जब तो साधु मूल न लेवे रे॥ २४॥
मन वचन तणा जोग दोनूं असुध, एक काया तणों जोग चोखो रे।
तिणरा हाथां सूं साध वेंहरें तो, मूल नही छे दोखो रे॥ २५॥
साधु वेंहरें काया रो सुध जोग हुवें तो, जब वेहरयां वेहरायां धर्म निसंक धर्मी रे।
मन वचन रा जोग असुध हुवे तो, तिणरो तिणनें इज लागें कर्मों रे॥ २६॥
संवत अठारें ने वरस तयांले, आसोज सुद चवदस सनीसर वारो रे।
हिंसाधर्मी ओलखावण काजें, जोड कीधी कोठारया मझारो रे॥ २७॥

ढाल : १०

दुहा

केइ साधु बाजें लोक में, त्यांरी सरधा अतंत अजोग।
ते जथातथ परगट करूं, ते सांभलजो सहू लोग॥ १ ॥
जीव मारे नें जीव बचावीयां, कहें धर्म नें पाप।
ए कर्म उदें पंथ काढ नें, कीधी मिश्र री थाप॥ २ ॥
इम मिश्र कहें छें तेहनें, न्याय निरणों नही घट माय।
वले बंध नहीं त्यारें बोलीयें, प्रश्न पूछ्यां तुरंत फिर जाय॥ ३ ॥
त्यांरी सरधा छें मिल्ली लोक सूं, जिण मारग थी विपरीत।
त्यांरी एक धारा वांणी नहीं, बोली मांहें फूट फजीत॥ ४ ॥
सरधा परमांणें बोलें नहीं, बोलें आवें ज्यूं मन दाय।
हिवें सरधा कहूं छूं तेहनीं, ते सुणजो चितल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[एक चोर चोरे धान पार को०]

काचो पांणी पावें अणुकम्पा आंण नें, तिण रो कहें छें रे मिश्र धर्म नें पाप।
धर्म अणुकम्पा रो पाप पांणी तणो, इण विधरें करें मिश्र री थाप।
भव जीवां तुम्हे मिश्र म मानजो *॥ १ ॥
जो काचो पांणी पायां मिश्र धर्म हुवें, ते पांणी खोस्यां रे तो पिण मिश्र धर्म होय।
अणुकम्पा आंणे पांणी रा जीवां तणी, पाप लागो रे अंतराय तणों सोय॥ भ० २॥
कोइ अणुकम्पा आंण पंखिया तणी, मुख आगें रे न्हाखें एकंद्री आंण।
कोइ अणुकम्पा आंण एकंद्री तणी, उरा लेई रे मेलें एकंत आंण॥ ३ ॥
पंखियां री अणुकम्पा आंण नें, एकंद्री न्हाख्यां रे धर्म नें पाप होय।
तो एकंद्री नी पिण अणुकम्पा आंण नें, पंखी आगा सूं रे उरा लीधां मिश्र जोय॥ ४ ॥
जमीकंद आदि बेंगण बालोल नें, दांन देवें रे अणुकम्पा आंण।
कोइ अणुकम्पा आंण जमीकंद री, खोस लेवें रे खातां आगा सूं तांण॥ ५ ॥
अणुकम्पा आंण जमीकंदादिक दीयां, तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय।
तो जमीकंदादिक री अणुकम्पा आंण नें, खोस लीधां रे दोनूं क्यूं नही होय॥ ६ ॥
कोइ अणुकम्पा आंण रांक गरीब री, छ ही काया रे हणनें देवें सतूकार।
कोइ अणुकम्पा आंण छकाय री, वरज राखें रे कहे तूं मत दें लिगार॥ ७ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

छ ही काय हण रांका नें पोखीयां, तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय।
तो अंतराय दे राखी छ काय ने, तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय॥ ८॥
खरच व रोटी आदि जीमण करे, छ काय हण नें रे पोषें घणां जीवा नें ताय।
तिण नें धर्म नें पाप दोनू कहें, पाप आरंभ रो रे धर्म पोष्यां रो थाय॥ ९॥
छ काय हणे नें न्यात पोषीयां, तिण ने होसी रे धर्म नें पाप दोय।
तो अंतराय दें राखें छ काय ने, मिण ने पिण रे धर्म ने पाप होय॥ १०॥
खणावें कूवा बाव तलाव नें, तिण नें पिण रे कहे मिश्र धर्म।
घणा रे साता हुइ रो धर्म हुवो कहे, हिंसा हुइ रे तिण रो लागो कहे पाप कर्म॥ ११॥
तो कूवा तलाव खणावें तेह ने, बरजें राख्या रे हुवे मिश्र धर्म।
घणा जीव बच्यां री धर्म हुवें, अंतराय दीधी रे तिणरो लागे पाप कर्म॥ १२॥
जिण जिण किरतब मे मिश्र कहे, तिण किरतब नें रे बरज्या पिण मिश्र जोय।
जो अतराय तणो पाप लागसी, तो जीव बचीया रे तिणरो धर्म क्यू न होय॥१३॥
धर्म पाप हुवे एक करणी कीया, ते करणी रे करायां पिण दोनूं होय।
ते बरज राख्या पिण दोनूं नीपजें, ते पिण निरणो रे तिणरे नही कोय॥ १४॥
पाप छूटां रे छूटें छे धर्म तेहनो, धर्म छुटा रे छूटे छे तिण रो पाप।
इसडी दोघड लागी मिश्र धर्म मे, तिण मिश्र नें रे कीधा बोहत संताप॥ १५॥
दान दीधां धर्म पाप दोनू हुवे, ते तो देसी रे जब होसी पाप धर्म।
तिण मे सदा इविरत तिण रे पापी री, तिण सू बधें रे समे समे सात कर्म॥ १६॥
असंजती इविरती जीव तेहने, दान दीधां रे होसी एकंत पाप।
भगोती रे सूत खघ आठ में, छठें उद्देसें रे कह्यों श्री जिण आप॥ १७॥
तिण दान नें साधा जावक छोडीयो, देवे नही रे दरावे नही कोय।
भलो पिण नही जाणे तिण दांन नें, तिण माहे रे धर्म किहाथी होय॥ १८॥
इण दांन तणी परसंसा करे, तिण नें कह्यों रे छ काय रो घाती वीर।
सूयगडा अग अवेन इग्यार मे, तिण माहें रे साधु किम घाले सीर॥ १९॥
तिण दान नें परससें अग्यांनी थकां, तिण माहे रे कहे धर्म नें पाप।
श्री वीर वचन उथाप ने, खोटी कीधी रे निश्चें मिश्र री थाप॥ २०॥
मिश्र करणी माहे लेस्या किसी, ध्यांन किसो रे किसा वरते अधवसाय।
परिणाम मिश्र मे बरते केहवा, इम पूछीजे रे मिश्रवालां नें ताय॥ २१॥
लेस्या ध्यांन अधवसाय परिणांम ते, ए तो च्यारू रे भला के मूंडा जाण।
धर्म भला माहे पाप भूडा मभे, मिश्र नही रे तिणरी करजो पिछाण॥ २२॥
इम पूछ्या रो जाब न उपजें, जब उ जाणें रे पिडताइ मे पडती धूड़।
तिण सूं आल पंपाल बके घणों, मिश्र थापण ने रे बोलें अनेक विध कूड॥ २३॥

हूं कहि कहि नें कितरो कहूं, घणी खोटी रे सरधा मिश्र री जांण।
भारी कर्मां जीवां त्यां आदरी, कर्मां वस रे बूडें कर कर तांण॥२४॥

ढाल : ११

दुहा

केइ भेषधास्यां री सरधा बुरी, तिण सूं कर रह्या मूंढ विलाप ।
त्यांरे उसभ उदेंरा जोग सूं, किधी मिश्र री थाप ॥ १ ॥
त्या गाला मांसूं गोला करे, फेल्या लोकां मांय ।
ते मिश्र कहे छें मून मे, ते पिण समझ न कांय ॥ २ ॥
कहे म्हे करणो न करणों कवां नही, आगना पिण न द्यां कोय ।
ते करणी ग्रहस्थ करें, तिण मे पाप धर्म हुवें दोय ॥ ३ ॥
जो धर्म हुवें तो द्यां आगना, पाप हुवें तो वरजां तांम ।
पाप धर्म दोनूं हुवें, तठें मून करां तिण ठांम ॥ ४ ॥
इण विध करें छे परूपणा, मिश्र कहे छें निसंक ।
त्यांनें त्यां सारिषा आए मिल्या, त्यारें लागा मिथ्यात रा डंक ॥ ५ ॥
कहिवा नें मिश्र मुख सूं कहे, त्यानें पूछ्यां रा नावें जाब ।
जब बंध नही त्यारें बोलीयें, फिर जावें तुरत सताब ॥ ६ ॥
पाप धर्म रो मिश्र कहे मून मे, तिणरी सरधा में घोर अंधार ।
हिवें किण किण ठिकांणें मुन छें, ते सुणजो विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

कोइ धुर नें दान दें वांधी सारें, ते पिण निनांण ने काजें रे ।
त्यांनें देतां लेता साधु निजरा देखे तो, बोलें नही मून साझें रें ।
मून में मिश्र कहे छें अग्यांनी* ॥ १ ॥
कोइ साधु देखतां करें सगाई, तिहां साधु तो रहे मून साझो रे ।
जो मून साझे तिहां मिश्र होसी तो, इणरेइ मिश्र छें ताजो रे ॥ मू० २ ॥
कोइ थोरी बावरी नें ससतर देवें, ते साधु देखे तो साझें मूनो रे ।
जो मून में मिश्र होसी तो इणरेइ मिश्र छें, यो किम रहसी निमूनो रे ॥ ३ ॥
कोइ धांन पीसण नें देवें घरटी, वले उखल मूसल देवें कोयो रे ।
तो साधु देखे तो मून करें छें, तो इणरें पिण मिश्र होयो रे ॥ ४ ॥
कोइ घास काटण नें देवें दांतरलो, कोइ विरष काटण नें देवें कुहारो रे ।
जो साध मून साझ्या मिश्र हुवे तो, इणरेंइ मिश्र छें तयारो रे ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साध कसी कूदालादिक देतां देखें तो, मून साझें निरदोषों रे।
जो मून सा‍झें तिहां मिश्र होसी तो, इणरेंइ मिश्र छे चोखों रे ॥ ६ ॥
ससतर अनेक साध देतां देखें तो, साध न बोलें तिण ठोडें रे।
जो मून सा‍झें तिहां मिश्र होसी तो, इणरेंइ मिश्र छें चोडें रे ॥ ७ ॥
कोइ होको पीवण नें देवें तमाखू, कोइ अगन पांणी घालें तांमो रे।
कोइ भांग तिजारो घोटी पावें, साध रे मून सगली ठांमो रे ॥ ८ ॥
घांणी अरटको सीटों खडवा, वले गाडा हल खडवा काजे रे।
त्यांनें बलद कोइ मांग्या देवें, ते साध देखें तो मून साझें रे ॥ ९ ॥
कोइ रोटी करण नें चूलो देवें, कोइ छांणा देवें बालण काजें रे।
कोइ छ काय हणी नें कर दें रसोइ, कोइ साध देखें तो मून साझें रे ॥ १० ॥
कोइ अणगल पांणी रात रो पावें, सूलीयों धांन खवावे रांधी रे।
कोइ भडभूंजा नें धांन देवें सूलीयों, ते साध देखे नें मून सांधी रे ॥ ११ ॥
कोइ गेंहणा कपडा फूल पेंहरावें, करावें मरदन पीठी रे।
वले काचा पांणी थी सिनांन करावें, ते साध देखें तो मून मीठी रे ॥ १२ ॥
कोइ सोर सीसों सिकारी नें देवें, मछीगर नें सूत जाली काजें रे।
कसाइ नें नांणों दें जीव ल्यावण नें, ते साध देखें तो मून साझें रे ॥ १३ ॥
कोइ अर्थ अनर्थ हिंसक जीव पोषें, कोइ पांणी काढण नें देवें नांणो रे।
कोइ चोर नें धांन दें चोरी करावण, साध रें तो अठेंइ मून जांणो रे ॥ १४ ॥
कोइ सावण करण नें तेल खरीदें, कोइ लोहडो देवें ससतर काजों रे।
कोइ लोह धवण नें धवण देवें छें, तिहां मून करें ते मुनीराजो रे ॥ १५ ॥
कोइ हाट हवेली आदि व्याह थापणा रा, मोहरत देवे विवध प्रकारो रे।
इसडो वरतमांन साधु देखें तो, तिहां साधु न बोले लिगारो रे ॥ १६ ॥
कोइ लूण पांणी देवें अणुकंपा आंणे, वले घालें अगन नें वायो रे।
वले वनसपती तस काय देता देखें, मून करें ते मुनीरायो रे ॥ १७ ॥
कोइ सचित देवें बंदीवांनादिक नें, डाकोतादिक ने देवें भय काजें रे।
वले खरच करें छें मूआ नें केडें, साधु तो सगलेंई मून साझें रे ॥ १८ ॥
लज्या रो घाल्यों देवें मलेछादिक नें, रावलीयादिक नें देवें मांन आंणो रे।
कोइ देवें उधारों कोइ पाछो देवें, तिहां साधु रे मूंन पिछांणो रे ॥ १९ ॥
कुसील सेवण नें देवें गणकादिक नें, ते साध देखें तो मूंन साझें रे।
जो मूंन में मिश्र तो इणरेंइ मिश्र छें, इणनें मिश्र कहितां कांय लाजें रे ॥ २० ॥
सुरियाभ देवता नाटक करण री, आग्या मांगी भगवंत पासो रे।
जब भगवंत मून साझी नहीं बोल्या, त्यां एकंत जांण तमासो रे ॥ २१ ॥

जमाली आग्या मांगी विहार करण री, वीर समीपे आंणों रे।
काई कारण देखी भगवत नही बोल्या, पिण नहीं जांण्यो मिश्र ठिकांणो रे॥२२॥
शिष्य होण रो कह्यो भगवत नें गोशालो, भगवंत कीधी मून तांमो रे।
अजोग जांणी वीर आरे न कीधो, पिण मिश्र न जांण्यो तिण ठांमो रे॥२३॥
चित्तजी विनती कीधी केशी कुमार नें, आप सेवीया नगरी पधारो रे।
नही जांण रा परिणांम तिण सूं न बोल्या, पिण मिश्र न जांण्यों लिगारो रे॥२४॥
इत्यादिक मून रा बोल अनेक छें, ते कहितां न आवें पारो रे।
जो मून में मिश्र तो सगलें मिश्र छे, कहि देणो एकण धारो रे॥२५॥
किणहीक मून मे मिश्र कहि दें, किणही मून मांहे कहे पापो रे।
जो सगलेंई मिश्र कहितां लाजें, तो उड गई मिश्र री थापो रे॥२६॥
जे मून मे मिश्र कहे छें चोडें, ते पाप कहसी किण लेखें रे।
जो पाप कहें तो मिश्र उठें छें, जब किसी सरधा साह्मों देखें रे॥२७॥
जो सगलें मिश्र कह्यां लोक न मांनें, होय जावे जाबक फितूरो रे।
जब किण ही मून मांहे पाप पिण कहि दें, तो पडी मिश्र माहे बुडो रे॥२८॥
यो मिश्र अणहुंतो चलायो अग्यांनी, ते सूतर माहें कठेय न चाल्यो रे।
भारी कर्मां जीवां नें डबोवण, घोचो अणहुंतो घाल्यो रे॥२६॥
देव गुर तो मिश्र न होवें, तो धर्म मिश्र किण लेखें रे।
अभिन्तर आंख हीया री फूटी, ते सूतर साह्मों न देखें रे॥३०॥
मून मे मिश्र कहे छ अग्यांनी, ते उठी जठाथी भूठी रे।
एक करणी मे पाप धर्म दोनू कहे त्यारी, हीया निलाड री फूटी रे॥३१॥
मून में पाप धर्म दोनू कहि कहि, घणां लोका नें विगोया रे।
वले सिष सिषणी पोता रा हुंता, त्यांनें तो जाबक बोया रे॥३२॥
मून मे मिश्र री करें परूपणा, ते खोटो घणों छें दिल को रे।
ते श्री जिण आगना उलंघे अग्यानी, ते थोथो जमायो खिल्को रे॥३३॥
अधवसाय परिणांम ध्यांन नें लेस्या, च्यारूं भला के भूडा जांणो रे।
भला मे धर्म भूंडा मे अधर्म, मिण मिश्र रो नही छे ठिकांणो रे॥३४॥
विरत माहे धर्म इविरत माहे अधर्म, पिण मिश्र रो नही छें ठिकांणो रे।
इविरत सेवाया एकंत अधर्म, तिण मांहे शका मत आणो रे॥३५॥
पाप अठारे सेव्या एकत पाप, ते सेव्यां नही धर्म होयो रे।
पाप धर्म री करणी छे न्यारी, पिण मिश्र करणी नही कोयो रे॥३६॥
इण मिश्र रो मुंहमाथो नही दीसें, ओ निश्चे अणहुतो गोलो रे।
ते जिण मारग सूं चोडें भूला, त्यां लीयों मिश्र रो ओलो रे॥३७॥

कुपातर दांन ते एकंत सावद्य, तिणमें श्री जिण आगन्यां नांही रे।
अंतराय पडें तिण सूं मूनज साभें, पिण धर्म नही तिण मांही रे॥ ३८॥
कुपातर दांन नें सावां त्रिविधे त्याग्यों, तिणनें मन करे भलोई न जाणे रे।
तिण दांन में धर्म परूपें, ते जिण धर्म केम पिछांणें रे॥ ३९॥
सामायक पोषां मांहें श्रावक, साध विनां ओरां नें देवा त्यागों रे।
जो उ ओर कनें सांनी करे दिरावें, तो सामायक पोषों भागों रे॥ ४०॥
जिण दांन सूं भागें समायक पोषों, वले साधपणों पिण भागें रे।
एहवो सावद्य दांन छें खोटो, तिणरा आछा फल किम लागें रे॥ ४१॥
अन पुने पाण पुने कह्यों सूतर में, लेंण सेंण वसतर पुन चाल्यो रे।
ते पातर सूं पुन कुपातर सूं पाप, ओ घोचों मिश्र रो कांई घाल्यो रे॥ ४२॥
अन मिश्रे पाण मिश्रे न चाल्यो, लेंण सेंण वसतर मिश्र नही रे।
मिश्र धर्म भगवंते न भाष्यों, किणही सूतर रे मांही रे॥ ४३॥
दस दांन कह्या ठाणांग मांहें, गुण जिसाइ त्यांरा नांमो रे।
आठां दानां रा अर्थ उंधा करे नें, मिश्र ले उठ्या तांमो रे॥ ४४॥
कहें धर्म अधर्म दांन कर दीया न्यारा, आठ दांना रो विवरो नांही रे।
तिण सूं मिश्र कहां धर्म अधर्म रो, आठूंइ दांन रे माही रे॥ ४५॥
इण विध मिश्र कहें छें अग्यांनी, ते गाढो रह्या मत भाली रे।
साची वात सूतर री न मांनें, त्यांरें आडी छें कर्म रूप राली रे॥ ४६॥
नव पदारथ मांहे जीव अजीव, न्यारा न्यारा बतावें रे।
इण सरधा रे लेखें सात पदारथ, जीव अजीव रों मिश्र थावें रे॥ ४७॥
नव पदारथ में धुर सूं जीव अजीव, बाकी गुण जिसा नांम सातोंइ रे।
जो आठ दांन मांहें मिश्र होसी तो, ए पिण सातोंई मिश्र होइ रे॥ ४८॥
जो सात पदारथ मांहें मिश्र न थापें, तों दांन मिश्र नही आठो रे।
उठें जीव अजीव अठें धर्म अधर्म, बाकी समचें सूतर रो पाठो रे॥ ४९॥
पुनादिक सात पदारथ मांहें, जीव अजीव रो भेल नांही रे।
ज्यूं भेला नहीं छें धर्म अधर्म, आठूंइ दांन रे मांहीं रे॥ ५०॥
दांन साला मंडावें लूंण पांणी अगन री, वाउ वनसपति नें तसकायो रे।
आय मांगें त्यांनें दांन दें दगचालें, खावा पीवा भोगववा ताह्यो रे॥ ५१॥
छ काय रा जीवां नें जीवां मारी नें, मन मांनें त्यांनें खवावें रे।
अथवा हाथां सूं छ काय जीवां रो, कहि कहि नें गटको करावें रे॥ ५२॥
जो पाप होसी तो सगलां नें पाप, मिश्र होसी तो सगलां नें मिश्रो रे।
जो किणही एक बोल में पाप कहें तो, मिश्र होय गयो फिसरो रे॥ ५३॥

जीव ने जीव खवावण ने देवे, वले हाथां सूं मार खवावें रे।
ए प्रतष पाप उघाडो दीसें, तिणमे मिश्र किहांथी थावे रे॥ ५४॥
जीव खवाया मे मिश्र परूपे, ते सरधा घणी छे खोटी रे।
इण सरधा सूं नरक गया अनता, त्या लीधी छे अटवी मोटी रे॥ ५५॥
इण मिश्र मे ओगुण अनेक कह्या जिण, ते पूरा कहणी न आवे रे।
इम साभल उतम नरनारी, मिश्र रे संग न जावे रे॥ ५६॥

●

ढाल : १२

दुहा

जिण शासण में जिण आगन्यां बडी, ते ओलखें बुधवांन।
ज्यां जिण आगन्यां ओलखी नही, ते जीव विकल समांन॥ १॥
दोय करणी संसार में, सावद्य निरवद जांण।
निरवद करणी में जिण आगन्यां, तिणसूं पामें पद निरवांण॥ २॥
सावद्य करणी संसार नी, तिणमें श्री जिण आगन्यां नाही।
संसार वधें छें तेहथी, धर्म नहीं तिण माही॥ ३॥
हिवें किहां किहां छें जिण आगन्यां, किहां किहां आगन्यां नाहिं।
बुधवंत करे विचारणा, निरणों करों मन माहिं॥ ४॥

ढाल

कोइ करें पचखांण नोकारसी, तिणरी आगन्या द्यो जिण आप हो।
कोइ दांन दें लाखां संसार में, पूछ्यां आप रहो चुपचाप हो।
हू बलिहारी हो श्री जिणजी री आगन्या* ॥ १॥

जिण आगन्यां सहीत नोकारसी, कीधां कटें सात आठ कर्म हो।
कोइ दांन दें लाखां संसार में, ते तो आपरी भाख्यो नही धर्म हो॥ हूं० २॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडों, तिणरी आग्या द्यो थे जिणराज हो।
कोइ जीव छुडावें लाखां दांम दें, तठें आप रहो मूंन साझ हो॥ ३॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडों, ते तो आपरों सीखायों छें धर्म हो।
तिण सूं कर्म कटें तिण जीव रे, उतकष्टा पांमें सुख परम हो॥ ४॥
कोइ जीव छुडावें लाखां दांम दे, ते तो आपरो सीखायो नही धर्म हो।
ओ तो उपगार संसार नों, तिणसूं कटता न जाण्या आप कर्म हो॥ ५॥
कोइ साधां नें वेंहरावें एक तिणखलो, तिणरी आग्या द्यो आप साख्यात हो।
कोइ श्रावक जीमावें कोडांग में, तिणरी आग्या न द्यो अंसमात हो॥ ६॥
साधां नें वेंहरावें एक तिणखलो, तिणरें बारमो वरत कह्यो आप हो।
तिण सूं आग्या दीधी आप तेहनें, वले कटता जाण्या तिणरा पाप हो॥ ७॥
कोइ श्रावक नें जीमावें कोडांग में, ते तो सावद्य कांमो जांण्यो आप हो।
उण छ काय रों सस्त्र पोखीयों, तिण में धर्म री न करी थें थाप हो॥ ८॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कोइ करे वीयावच श्रावका तणी, तठे पिण आपरे छें मूंन हो।
उण तीखो कीयो सस्त्र छ काय रो, ते किरतव जांणो आप अवूंन हो॥ ९ ॥
उघाडे मुख गुणे छे सिघंत ने, वले कोडांग में गुणे छे नवकार हो।
जिण में आप तणी आगन्या नही, तिण मे धर्म न सरधूं लिगार हो॥ १० ॥
उघाडे मुख गुणे छे नवकार नें, तिण वाउ काय मारया असख हो।
तिणमे धर्म सरधे भोला थका, तिणरें लागा कुगुरा रा डक हो॥ ११ ॥
जेणा सूं गुणे एक नवकार ने, तिण सूं कोडां भवां रा कटें कर्म हो।
तिणमे आप तणी छे आगन्यां, तिणरे निश्चे छे निरजरा धर्म हो॥ १२ ॥
केइ साधु नांम धराय ने, प्रससे छे सावद्य दांन हो।
त्या भेष माड्यो भगवांन रो, त्यारा घट माहे घोर अग्यांन हो॥ १३ ॥
मून कही थे साधु रें सावद्य दांन मे, ते तो अंतराय पडती जांण हो।
तिणरो फल ते सूतर मे बतावीयो, तिणरी बुधवंत करसी पिछांण हो॥ १४ ॥
प्रदेसी राजा कह्यो केसी साम नें, म्हारें तो छे चढतो वेराग हो।
म्हारे सात सहस गांम छे खालसें, तिणरा करे च्यार भाग हो॥ १५ ॥
एक भाग राण्या निमते करें, बीजो भाग करे खजांन हो।
तीजो भाग घोडा हाथ्यां निमते करे, चोथो भाग करे देवा दान हो॥ १६ ॥
च्यारू भाग सावद्य कामो जाण नें, मून साझे रह्या केसी सांम हो।
जो उवे धर्म कठेइ जाणता, तो करता तिणरा गुणग्रांम हो॥ १७ ॥
सावद्य किरतव च्यारूं भाग राज रा, त्यामे जीवा री हिंसा अतत हो।
तिण सूं च्यारूं बरोबर जाण ने, मून साझी मतवंत हो।
हूं बलिहारी हो श्री जिणजी री मून मे॥ १८ ॥
दान देवा माडी दानसाल ने, परदेसी राजान हो।
सात सहंस गाम हुता खालसें, तिणरो चोथो भाग दीयो दांन हो॥ १९ ॥
च्यारू भाग करे आप न्यारो हुवो, तिण जाण्यो ससार नो माग हो।
तिण तिथ न कीधी तिण राज री, रह्यो मुगत स सनमुख लाग हो॥ २० ॥
ओ तो दान ओरा ने भलाय नें, तिणरी पूछी न दीसें वात हो।
चवदे प्रकार नो दांन साध नें, ओ तो राख्यो निज पोता रे हाथ हो॥ २१ ॥
चोथो भाग ते दांन रे ताल कें, नही राख्यो पोता रे हाथ हो।
तीन भाग ज्यूं इण ने पिण थापीयो, छ काय जीवा री जाणी घात हो॥ २२ ॥
साढा सतरेंसों गाम दांन ताल के, दिन दिन प्रतें मठेरा पाच गांम हो।
त्यारा हासल रो धान रंधाय ने, दानसाला माडी ठांम ठांम हो॥ २३ ॥
टालवा गाम जाणीजे खालसे, ते तो चोथा आरा रा था गाम हो।
हासल आयो ते तो जाणीजे घणो, नेमें हुंती घणी अमांम हो॥ २४ ॥

हासल आयो हुवें एकीका गांम रो, दस सहंस मण रें उनमांन हो।
दिन दिन प्रतें मठेरा पांच गांम रो, उणो पचास हजार मण धांन हो॥ २५॥
इण लेखें हुवो एक वरस तणों, पूणा दोय कोड मण धांन हो।
इधको ओछो तो आप जांणें रह्या, म्हें तो अटकल सूं बांध्यो उनमांन हो॥ २६॥
पांणी लागें पांच कोड मण आसरें, पूणा दोय कोड मण रांध्या धांन हो।
अगन पिण एक कोड मण जांणीजें, लूण छ लाख मण रे उनमांन हो॥ २७॥
नित धांन हजारां मण रांधतां, अगन पांणी हजारा मण जांण हो।
तठें लूण मणा बंध लागतो, वाउकाय रो ई बोहत घमसांण हो॥ २८॥
फूंहारादिक अनेक पांणी मझे, वले वनसपती पांणी माय हो।
धांन हजारां मण रांधतां, तिहां अनेक मूआ तसकाय हो॥ २९॥
दिन दिन प्रतें मारी छें छ काय नें, कीधी अनंत जीवां री घात हो।
त्यांरी हिंसा रो पाप गिणें नही, तिणरे हिंसा धर्मी रो मिथ्यात हो॥ ३०॥
एहवा दुष्ट हिंसाधर्मी जीव नें, केइ जाणें छें अग्यांनी साध हो।
तिणरें पिण घट में घोर अंधार छें, ते पिण नीमाइ निश्चें असाध हो॥ ३१॥
केइ जीव खवायां में पुन कहे, केइ मिश्र कहें छे मूढ हो।
ए दोनूंई बूडें छें वापडा, कर कर मिथ्यात री रूढ हो॥ ३२॥
जीव खाधां खवायां भलो जांणीयां, तीनूंई करणां पाप हो।
आ सरधा परूपी छे आपरी, ते पिण दीधी आगन्या उथाप हो॥ ३३॥
केइ कहे जीवां नें मार्‍यां विनां, धर्म न हुवें तांम हो।
जीव मार्‍यां रो पाप लागें नहीं, चोखा चाहीजें निज परिणांम हो॥ ३४॥
केइ कहें जीव मार्‍यां बिनां, मिश्र न हुवें छें तांम हो।
पिण जीव मरण री सांनी करे, ले ले परिणांमां रो नांम हो॥ ३५॥
केइ धर्म नें मिश्र करवा भणी, छ काय रो करें घमसांण हो।
तिणरा चोखा परिणांम किहां थकी, पर जीवां रा लूंटें छें प्रांण हो॥ ३६॥
कोइ जीव खवावें छें तेहनां, चोखा कहें छें परिणांम हो।
कहें धर्म नें मिश्र हुवें नही, जीव खवायां विण तांम हो॥ ३७॥
जीव खांण रा परिणांम छे अति बुरा, खवावण रा पिण खोटा परिणांम हो।
यूंही भोलां नें न्हांखें भरम मे, ले ले परिणांमां रो नांम हो॥ ३८॥
जिण ओलख लीधी आपरी आगन्यां, जिण ओलख लीधी आपरी मूंन हो।
तिण आप नें पिण ओलखे लीया, तिणरी टलगी माठी माठी जूंन हो॥ ३९॥
जिण आग्या न ओलखी आपरी, आपरी नहीं ओलखी मूंन हो।
तिण आपनें ओलख्या नही, तिणरें बधसी माठी माठी जूंन हो॥ ४०॥

केइ जिण आगन्यां बारें धर्म कहे, जिण आग्या माहे कहे छें पाप हो।
ते दोनू विध बूडे छे बापडा, कूडों कर कर अग्यानी विलाप हो ॥ ४१ ॥
आपरो धर्म आपरी आग्या मझे, आपरो धर्म नही आपरी आग्या बार हो।
जिण धर्म जिण आग्या बारें कहे, ते पूरा छे मूंढ गिंवार हो ॥ ४२ ॥
आप अवसर देखी नें बोलीया, आप अवसर देखे साझी मून हो।
जिहा आप तणी आगन्या नही, ते करणी छें जाबक जबूंन हो ॥ ४३ ॥
भेषधारी थापे सावद्य दान नें, तिण दांन सूं दया उठ जाय हो।
वले दया कहे छ काय बचावीयां, तिण सू दान उथप गयों ताय हो ॥ ४४ ॥
छ काय जीवां ने जीवां मार ने, कोइ दांन दे ससार रे मांय हो।
तिणरें तो छ काय जीवा तणी, घट मे दया रहें नही काय हो ॥ ४५ ॥
कोइ दान देवें तिणने वरज नें, जीवां बचावे छ काय हो।
ते जीव बचायां दांन उथपे, त्यांसूं न्यारा रह्यां सुख थाय हो ॥ ४६ ॥
छ काय जीवा ने मारें दान दे, तिण दांन सूं मुगत न जाय हो।
वले फिर फिर बचावे छ काय ने, तिण सूं कर्म कटें नही ताय हो ॥ ४७ ॥
सावद्य दांन दीया दया उथपें, सावद्य दया सूं उथपे अभय दांन हो।
ते सावद्य दया दांन संसार ना, त्यांनें ओलखें ते बुधवांन हो ॥ ४८ ॥
त्रिविधे त्रिविधे छ काय हणवी नही, आ थे दया कही जिण राय हो।
दान देणो सुपातर ने कह्यों, तिण सूं मुगत सुखे सुखे जाय हो ॥ ४९ ॥
दांन दया दोनूं मारग मोष रा, ते तो आपरी आगन्यां सहीत हो।
यानें रूडी रीत आराधीया, ते गया जमारो जीत हो ॥ ५० ॥
आप तणी आगन्यां ओलखायवा, जोड कीधी धेनावस मझार हो।
संवत अठारें चमालेसमें, माहा सुदि सातम विसपतवार हो ॥ ५१ ॥

ढाल : १३

दुहा

केइ भेषधारी कहें म्हें धर्म री, आगन्यां द्यां छां तांम।
पाप करतां नें वरज द्यां, मूंन करां मिश्र ने ठांम॥ १ ॥
राइ पाप नें धर्म मेरू जितों, धर्म राइ नें मेरू सम पाप।
अनेक भांगा छें इण मिश्र ना, तठें रहां चुप चाप॥ २ ॥
पाप करण री आगन्यां द्यां नहीं, मिश्र री पिण आग्या द्यां नांय।
मिश्र करता नें पिण वरजां नहीं, म्हें जांण रहां मन मांय॥ ३ ॥
इण विध करें छें परूपणा, पिण बोले नही बंध लिगार।
प्रश्न पूछ्यां रा जाव न उपजें, जब फिरतां न लागें बार॥ ४ ॥
कहें एकंत धर्म री द्यां आगन्यां, पाप करतां नें वरजां साख्यात।
मूंन करां मिश्र नें बोलां नहीं, पिण यां तीनूंइ में फिरजात॥ ५ ॥
हिवें कुण कुण प्रश्न पूछीयां, त्यांरी सरधा रो पडें उघाड।
ते चित लगाय नें सांभलो, अल्प मातर कहूं विसतार॥ ६ ॥

ढाल

[तीजी सुमत छे एषणा ए]

श्रावक श्रावक री वीयावच करें, सामायक नें पोषा मांही रे।
तिणमें धर्म कहें छें निसंक सूं, तिणरी आगन्यां देवें नांही रे।
सरधा सुणजो निनवां तणी*॥ १ ॥

पेंहला कहिता धर्म री द्यां आगन्यां, धर्म सरधें आग्या देवें नांही रे।
त्यांरा बोल्यां री ठीक त्यांनें नही, सुध ववेक नहीं त्यां मांहीं रे॥ स० २ ॥
श्रावक श्रावक री पडिलेहण करे, साता पुछें करें नमसकारो रे।
तिण में पिण धर्म चोडें कहें, तिणरी पिण आग्या नही दें लिगारो रे॥ ३ ॥
श्रावक श्रावक नें देवें समायक मझे, पूंजणी कपडादिक जांणी रे।
तिण नें धर्म जांणें पिण न दें आगन्यां, ते तो पूरा छें मूढ अयांणो रे॥ ४ ॥
इत्यादिक बोल अनेक में, कहें छें एकंत धर्मो रे।
तिण धर्म री नहीं दें आगन्यां, जब नीकल गयो सरधा रो भर्मो रे॥ ५ ॥
कहें म्हें धर्म करण री द्यां आगन्यां, यूंही बोलें अनांखी कूडो रे।
जो धर्म करण री आगन्यां दें नहीं, जब सरधा में पड गइ धूडो रे॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

करणी करण रो उपदेस दे, तिणरी प्रससा गुणग्राम करता रे।
वले धर्म निकेवल कहे तेह मे, तिणरी आगन्यां नहीं दे डरता रे॥ ७॥
पाप लागो जाणें आगन्यां दीया, प्रसंसा कीयां जाणे धर्मो रे।
एहवी उंधी सरधा छें तेहनीं, त्यारे मोटो मिथ्यात नो मर्मो रे॥ ८॥
पाप कहें धर्म री आगन्यां दीयां, ते उठी जठाथी भूठी रे।
धर्म करण री आगन्या देता डरें, त्यांरी हीया निलाड री फूटी रे॥ ९॥
कदा जाव अटकता जांण नें, तो उ फिर जाअे करें ताना माना रे।
धर्म कह्यो पाछिला बोला मर्भे, त्यामे कहि दे मिश्र दोय वाना रे॥ १०॥
दोय वाना मिश्र कहे तेह ने, न्याय चरचा माहें बांध लीजें रे।
त्यांनें पाछो जाब न उपजें, एहवा प्रश्न पूछीजें रे॥ ११॥
तो सामायक पोषा मर्भे, राख्यो छें तिण उपरंत त्यागो रे।
ते दोय वांना मिश्र कीया, सामायक ने पोषो भागों रे॥ १२॥
जब उ कहे दोय बांना मिश्र कीया, सामायक पोषो भागे नाहीं रे।
एहवी उंधी ले उठे तेहनें, भूठ बोलण री सक न काई रे॥ १३॥
मिश्र कीया सामायक भागें नही, ते पिण चोडें कूड चलायो रे।
तो उवे मिश्र सरधे छें सावद्य दान में, ते पिण देणो सामायक माह्यो रे॥ १४॥
आठ दाना ने पिण मिश्र कहें, ते पिण एकत भूसावायो रे।
मिश्र दान भगवते न भाषीयो, ओ पिण गाला सूं गोलो चलायो रे॥ १५॥
जो मिश्र कीया सामायक भागे नांहीं रे, तो आठ दांन सामायक मे देणा रे।
जो आठ दांन सामायक में दे नही, त्या विकला री बोली रा क्या केणा रे॥ १६॥
श्रावक नें अनेक दरब दीयां, दोय वाना मिश्र कहें ताह्यो रे।
मिश्र कीया सामायक भागें नही, तो श्रावक नें देणा सामायक माह्यो रे॥ १७॥
धर्म तणी तो नहीं देवे आगन्यां, ते मत जावक कुडो रे।
वले पाप तणी देवे आगन्यां, तिण सरधा रो सुणजों फितूरो रे॥ १८॥
कहें म्हे पाप करता ने वरज द्यां, ते पिण थोडा माहे फिर जायो रे।
त्यांरी सरधा री समभ त्यानें नही, आ पिण कूडी करे वकवायो रे॥ १९॥
साध चेला चेली करे तेहमें, पाप जांणे छें मूढ अग्यानी रे।
पाप जाणे नें देवें आगन्यां, त्यानें किण विध कहीजे ग्यानी रे॥ २०॥
साध साववी असणादिक भोगवे, कपडादिक दरब वशेष रे।
तिणमें पाप जांणें नें देवें आगन्या, निज बोल्या साह्यो नही देखे रे॥ २१॥
वीयावच करावें तिण साध नें, तिणमे पाप निकेवल थापें रे।
तिणरी पिण देवे छे आगन्यां, आपरी सरधा आप उथापें रे॥ २२॥

साध नदी उतरें छें तेहमें, पाप निकेवल जांणें रे।
तिणरी पिण आग्या देतां थकां, संका मूल न आंणे रे॥ २३॥
इत्यादिक साधां रा कांम करावता, ते पिण निरवद नें निरदोषों रे।
तिणमे पाप जांणें दें आगन्यां, त्यांरा बोल्या गया सर्व फोकों रे॥ २४॥
पेंहला कहितां वरजां निसंक सूं, पाप करतां नें जोयों रे।
ते वरजणों तो जिहांइ रह्यो, उलटा आगन्यां देवें छें ताह्यों रे॥ २५॥
पाप री करणी जांणें छें तेहनें, तिणरी आगन्यां देवण सूरा रे।
धर्म करणी जांणें न दें आगन्यां, दोनूं परकारें मूढ छें पूरा रे॥ २६॥
हरीया जव देखें नें भिडकें मिरगला, डरता थका दूर जायो रे।
पास मांड्या देख डरें नांहीं, जाय पडें जाल माह्यो रे॥ २७॥
मिरग सरीषा अग्यांनी जीवडा, धर्म जांणें आगन्यां दे नांहीं रे।
पाप करणी जांणे देवें आगन्यां, ते खूता मिथ्यात रे मांहीं रे॥ २८॥
कहितां धर्म करण री द्यां आगन्यां, पाप करता नें वरजां ताह्यों रे।
यां दोयां बोलां में भूठा पड्यां, मिश्र में भूठा किण विध थायो रे॥ २९॥
उघाडे मुख गुणें छें नोकार नें, वले सूतर बोल सभायो रे।
तिणमें दोय बांना मिश्र कहे, मिश्र में मूंन कहें छें ताह्यो रे॥ ३०॥
उघाडे मुख गुणें छे तेहने, कहें मत गुण उघाडे मूढें रे।
कहे मूंन करां म्हे मिश्र में, तो ए मूंन भांगे कांय बूडें रे॥ ३१॥
सामायक वालों छूटा रो विनो करें, वले वीयावच ने नमसकारो रे।
तिणमे मिश्र सरधें नें वरज दें, जब पड गयो मूंन में बगारो रे॥ ३२॥
इत्यादिक वोल अनेक में, मिश्र जांणें छें मूंढ अयांणो रे।
ते पिण मिश्र करतां नें वरज दें, मूंन भांग दीधी मूंढ जांणो रे॥ ३३॥
कहें म्हें मिश्र ठिकांणे बोल बोलां नहीं, तेहीज वरजें मिश्र नें जांणो रे।
मूंन छोडे नें लाग्ा बोलवा, त्यांरे ते पिण नही छें पिछांणो रे॥ ३४॥
दोय बांना तो मुख सूं कहें दीया, तो ए मूंन कहें किण लेखें रे।
दोय बांना कह्यां तो मूंन उड गइ, तिण साह्यों मूढ न देखें रे॥ ३५॥
दोय बांना मिश्र जाबक नहीं, ए तो यूं ही चलावें कूडो रे।
तेहीज मिश्र करतां नें वरज दे, जब पड गइ मूंन में धूडो रे॥ ३६॥
मूंन में दोय बांना मिश्र कहें, ते तो उठी जठाथी भूंठी रे।
सावद्य में पुन पाप दोनू कहे, त्यांरी हीया निलाडी री फूटी रे॥ ३७॥
मूंन वाला नें मूल बोलणो नहीं, कोइ परूपें क्यूं ही रे।
मिश्र थाप्यां तो मूंन उठे गइ, ए तो मूंन बतावें यूं ही रे॥ ३८॥

मून करो भावे मिश्र कहो, यारो परमारथ एक जाणो रे।
एहवी उंधी करे छें परूपणा, मिश्र थापण ने मूढ अयांणो रे॥ ३६॥
कोइ प्रश्न पूछे साध ने, लोका ना मारग सू मिलता तामो रे।
जब जाणे नही तिणनें समभता, जब मूंन करें तिण ठांमो रे॥ ४०॥
जो जाब देवे जथातथा तेह ने, तो उ करें जिण धर्म री हेला रे।
प्रवचन तणी थावे हीणता, जब मून साभें तिण बेलां रे॥ ४१॥
इत्यादिक अनेक कारण पड्यां, जब साधु तो मूल म बोले रे।
पिण मिश्र न जाणे तेह ने, अवसर देखे तो बोले मून खोलें रे॥ ४२॥
मिश्र दान कहे छें तेह ने, घट माहे घोर अंधारो रे।
आप डूबे ओरा नें डबोवता, ते गया जमारो हारो रे॥ ४३॥
दस दान भगवते भाषीया, त्यामें मिश्र दान नही कोइ रे।
कोइ आठ दाना में मिश्र कहे, ते गया जमारो खोइ रे॥ ४४॥
दस दान कह्या छें तेह मे, केयक आछा ने केयक भूंडा रे।
पिण मिश्र दांन जावक नही, मिश्र सरधे अग्यानी कांय बूडा रे॥ ४५॥
कहि कहि नें कितरो कहू, दान मिश्र तो नाही रे।
ज्या मिश्र दान परूपीयो, ते खूता मिथ्यात रे माही रे॥ ४६॥
मिश्र दांन मिथ्यात ओलखायवा, जोड कीधी पाली सहर मभारो रे।
सवत अठारे वरस वावने, सावण विद तेरस मगलवारो रे॥ ४७॥

●

ढाल : १४

दुहा

केइ भेष धास्थां तणी, सरदहणा खोटी घणी छें अतंत।
वले खोटी करें छें परूपणा, हीयाफूट ज्यूं मूढ बकंत ॥ १ ॥

श्रावक श्रावक रों विनो वीयावच करें, तिण मे कहें छें धर्म।
वले धर्म कहें साता पूछीयां, ते भूला अग्यानी भर्म ॥ २ ॥

साध साध रो विनो वीयावच करें, तिणरें कटें छें पाप कर्म।
ज्यूं श्रावक श्रावकां रों विनों वीयावच करें, तिणनें पिण छें धर्म ॥ ३ ॥

साध साध रो विनों वीयावच करें, तिम श्रावक श्रावक रो जांण।
यो विनें मूल धर्म जिण भाषीयों, इसडी कहें छें मूढ अयांण ॥ ४ ॥

त्यांरी सरधा री खबर त्यांनें नहीं, यूंही करें बकवाय।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

साध रो विनों वीयावच साध करें छें, ज्यूं श्रावक नें श्रावक रो करणो।
केइ मूढ मिथ्याती इसडी परूपें, त्यांरी खोटी सरधा रो सांभलजो निरणो।
इण उंधी सरधा रो निरणों कीजों* ॥ १ ॥

एकण कागादिक मारण रो नेम कीधो, ते समदिष्टी हुवों श्रावक व्रतधारी।
तिण पाछें एकण वारें व्रत लीधा, सांकडा सांकडा सूंस कीधा भारी ॥ इ० २ ॥

कागादिक मारण रो सूंस पेंहला कीयों छें, ते तो श्रावक छें उण सेती मोटो।
तिणरों विनों करणों सावां रें रीत छें तिम, न करे तो यारें लेखें यांरो मत खोंटो ॥ ३ ॥

उणनें आवतों देख उभो होणों, आसण छोड विनो करणों सीस नमाय।
साता पूछणी दोनूं हाथ जोडी नें, आपथी उंचे आसण बेंसावणों ताय ॥ ४ ॥

इत्यादिक विनों साध रो साध करें तिम, श्रावक रों विनो श्रावक नें सारोइ करणों।
न करें तो यांरो मत यांहीज उथाप्यो, आप रा बोल्यां रो नहीं आप रें निरणों ॥ ५ ॥

छोटा साध नें साध री आग्या में रहणों, ज्यूं श्रावक नें श्रावकां री आग्या माहे रहणों।
छोटा साध नें साध आग्या में चलावें, ज्यूं श्रावक नें श्रावकां री आग्या पालण रो कहिणों ॥६॥

छोटा साध बडा री आग्या में न चालें, ते तो च्यार तीरथ दीसे छें मूंडा।
ज्यूं यांरा श्रावक उणरी आग्या नहीं पालें, तो यांरा श्रावक यारें लेखें सगलाई बूडा ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

छोटा साधां ने बडा सर्व साधां री, आसातणा टालणी छें तेतीस।
ज्यूं यांरां श्रावक ने बडा सर्व श्रावका री, आसातणा टालणी निसदीस ॥ ८ ॥
यारां छोटा श्रावक बडा सर्व श्रावका री, आसातणा न टाले रूडी रीत।
तो यारें लेखे यारां सगलाइ श्रावक, चोडे दीसे उघाडा अवनीत ॥ ९ ॥
वडा श्रावक रो करें विनो वीयावच, यारें लेखें तो ओहीज विने मूल धर्म।
धर्म कहे पिण आगन्या न देवे, थे भूला रे भूला अग्यानी भर्म ॥ १० ॥
कोइ मा बाप पेंहली वेटो श्रावक हुवो, पछे मा बाप श्रावक हुआ वरत धार।
यारें लेखे वेटा री आग्या मांहें रहणो, नित नित वेटा ने करणो नमसकार ॥ ११ ॥
पेंहिला श्रावक रा व्रत वेटे लीया छें, ते मा वाप थी तो छे श्रावक मोटो।
तिणरो विनो करणो साधां रें रीत छे तिम, न करें तो यारें लेखे यारो मत खोटों ॥ १२ ॥
वेटा नें आवतों देख ऊभो हुणों, आसण छोड विनो करणो सीस नमाय।
साता पूछणी दोनूंइ हाथ जोडी ने, आप थी उचे आसण बेसावणो ताय ॥ १३ ॥
मन गमती वियावच करणी बेटा री, सेवा भगत करणी वेटा री दिन रात।
वले रेकारो वेटा ने कदे नहीं देणो, वात करता विचे नही करणी वात ॥ १४ ॥
इत्यादिक साध रो साध विनो करे तिम, बेटा रो विनो मा बाप ने सारोइ करणो।
न करें तो यारो मत यांहीज उथाप्यों, आप रा बोल्यां रों नही आप रें निरणो ॥ १५ ॥
छोटा साध ने बडा साधा री आग्या में रहिणो, ज्यू मा बाप ने वेटा री आग्या मे रहिणो।
जो छोटा साध ने वडा साध आग्या में चलावे, तो वाप ने वेटा री आग्या पालण रों कहिणों ॥ १६ ॥
छोटा साध बडा री आग्या ने न चाले, ते तो च्यार तीरथ माहे दीसे छें भूंडा।
जो उ बाप बेटा री आग्या नही पाले, तो यारे लेखे मा ने वाप दोनूंइ बूडा ॥ १७ ॥
छोटा साध नें बडा सर्व साधां री, आसातणा टालणी तेतीस।
ज्यू वाप थकी वेटो वडो श्रावक छें, तिणरी आसातणा टालणी निसदीस ॥ १८ ॥
जो मा बाप थकी वेटो वडो श्रावक छे, तिणरी आसातणा न टाले रूडी रीत।
तो यारे लेखे मा नें वाप दोनूंइ, चोडें दीसे उघाडा अवनीत ॥ १९ ॥
कोइ वाप पेहली वेटो साध हुवो छे, तिणरो विनो करे दिख्या मे वडो जाण।
ज्यू यारे लेखे विनो करणो वेटां रो, आप सू वरतां माहे वडो पिछांण ॥ २० ॥
पेंहला तो वेटा री वहुआं श्रावका हुइ, पछे सासू हुइ वारे व्रत धारी।
यांरी सरधा रें लेखें सासू ने वहुआं रो, विनो करणो रहिणो आगन्या कारी ॥ २१ ॥
बडा साध रो विनों वियावच करें तिम, वहुआं रो विनो सासू नें करणों।
न करें तो सासू अवनीत वहुआं री, विने मूल धर्म गयो किम तरणो ॥ २२ ॥
जो उवा सासू वहूआं ने पगे लगावे, जव तो यारे लेखें सासू गाढी बूडी।
यारें लेखे तो इण अवनीत पणा सूं, सासू ने वहुआं सारी जासी नरक नी तूडी ॥ २३ ॥

राजा रा अमराव नें चाकर बांदा, वले ढोली डूंबादि सरगडा तांम।
राजा सूं पेंहला श्रावक व्रत लीधा, त्यांरो राजा नें विनो करणों सीस नांम ॥ २४ ॥
वले छतीस पवन मांहें श्रावक बडा छें, त्यांरो राजा नें पूछ नें काढणो निरणों।
त्यांरो विनों करणों साधां री रीत छें तिम, ज्यूं आप सूं बडा श्रावक रो विनो करणों॥ २५॥
चक्रवत सूं बडो छें दास रो दास, तिणरो चक्रवत विनों करे बडो जांण।
ज्यूं यांरें लेखें राजा नें छतीस पवन रों, विनों करणो वरतां मांहे बडा पिछांण ॥ २६ ॥
छोटो श्रावक सामायक पोषां माहें वेठों, कोइ बडो श्रावक तिणरें पासे आयों।
तिणरो विनों करणों साधां रें रीत छें तिम, यांरे लेखें तो कमीय न राखणी कायों ॥ २७ ॥
जव तो कहें ओ तो सामायक माहें वेठों, बडो श्रावक तो इविरत माहें छूटो।
इण बंधीया ने छूटा रें विनो न करणों, इण ही लेखें पिण यांरो हियो फूटो ॥ २८ ॥
वडो श्रावक तो छोटा नें नहीं वांदे, छोटो श्रावक पिण बडा नें वादे नांही।
ए दोनूंइ मांहोमां अंठठ हुआ छे, हिवें तो यांरें विनो न दीसे कांई ॥ २९ ॥
जव तो यांरे लेखें छोटां ने वडां रो, कारण मूल न दीसें कांई।
सांकडा पचखांण वाला श्रावक नें, वडा श्रावक नें वांदणा नांही ॥ ३० ॥
छोटा श्रावक रे विरत मेरु जिती छें, बडा श्रावक रे विरत राइ समान।
जो सामाइ में वडां रो विनों न करे तो, ओ पिण बडां रों विनो करसी किण ग्यांन॥ ३१ ॥
छोटें श्रावक तो सील रतन आदरीयो, बडां रे सीलादिक नहीं विरत वशेखें।
जो सामाइ में वडां रों विनो न करें तो, ओ पिण बडां रो विनों करें किण लेखें ॥ ३२ ॥
वडां श्रावक रें वरत पचखांण छें थोडा, छोटा रें वरत पचखांण सूंस वशेखे।
जो सामाइ में वडां रो विनों न करणों तो, इण बडां रो विनो करणों किण लेखें ॥ ३३ ॥
पेंहला तो छोटें श्रावक सामाइ कीधी छे, पछे वडें सामाइ कीधी छें आय।
जब तो छोटो बडां रो विनों करें छे, तिण बडां रो विनों करे किण न्याय ॥ ॥ ३४ ॥
वरतां लेखें तो बडां रो विनों न कीधों, सामाइ लेखें पछें कीधी ते छोटो।
इण बडां रो विनों कीयो किण लेखें, सामाइ लेखें तो छोटों श्रावक मोटो ॥ ३५ ॥
सामायक में सामायक वालो वांदें छें, तो वरतां बडां रो कारण नही कांई।
जिण पेंहली सामाइ करी ते वडो छें, तो उ किण लेखे पडें बडां रा पगां मांही ॥ ३६ ॥
सामाइ में तो बडां रों विनो न कीधो, जब तो बडां श्रावक रो बडपण गमायो।
पछें वरतां मे बडां नें सामायक वांदें, हिवे बडां रों बडपण कठा सू आयो ॥ ३७ ॥
साधां रो विनों साव करे तिम, श्रावक रो विनो करणो श्रावक नें थापें।
तो श्रावक श्रावक नें तीखूता सूं वादें, तो तीखूता री वंदणा ने कांय उथापे ॥ ३८ ॥
घणो विनों कीयां घणो धर्म होसी, थोडो विनो कीयां छे थोडोइज धर्म।
श्रावक री तीखूता सूं वंदणा उथापे, त्यांरी सरधा रो त्यांहीज काढियो भर्म ॥ ३९ ॥

केइ भेषधार्यां रे इसड़ी छे सरधा, सामाइ में छोटा ने तीखूता सूं वादे।
सामाइ नें पोसा तो उतर गुण विरत, मूल गुण वाला वडा रें चालणो छादें॥ ४०॥
मूल गुण तो श्रावक रें जाव जीव छे, उत्तर गुण विरत इधकाइ रा ताम।
मूल गुण विरत जिण पेहली कीया छे, जाव जीव छोटा सूं बडो छे तांम॥ ४१॥
तिण लेखे सामाइ नें पोसा रे माहे, बडा श्रावक रो विनो साधां ज्यूं करणो।
जो संथारों करे तो बडां श्रावक रे, सीस नमाय ने पगा मे पड़णों॥ ४२॥
यां तो छोटा रा विनो सामाइ मे थाप्यो, या छोटा रा विना मे पाप बतायों।
यामें किण री साची किण री खोटी सरधा छे, ते पिण विकला ने खबर न कायो॥ ४३॥
श्रावक रो विनो थापें छे साध तणी पर, ते मत निश्चेंइ जांणजो कूडों।
त्यां विकला री सरधा तो पग पग पर अटके, त्यांरी खोटी सरधा रो सुणजो फिलूरो॥ ४४॥
श्रावक श्रावक रो विनों साध तणी पर, करता तो किण ही नें निजरा न दीठो।
यूंही बकरोल करे छें अन्हाखी, तिणने प्रश्न पूछ्यां पडें पग पग फीटो॥ ४५॥
छोटो श्रावक भारी भारी वसतर पेंहरे, बडा रें लीलर कपडा ने लीलर पागों।
जो उ बडा नें आछा वसतर नहीं देवें तो, जब यारे लेखें छोटा रो पूरो अभागों॥ ४६॥
यारां छोटा श्रावक रें भारी भारी गेंहणा, वडां श्रावक नें गेंहणो नही एक मासो।
जब छोटो वडां श्रावक ने गेहणों न देवे, तिण तो कीयो विने मूल धर्म रो न्हासो॥ ४७॥
छोटो श्रावक जीमे साल दाल ने मोदक, वडो श्रावक जीमे छें कूकस कूर।
यारें लेखे आछो आहार न दें बडा ने, तो विनें मूल धर्म मे पड गइ धूर॥ ४८॥
छोटा श्रावक रें चोखा हाट हवेल्या, वडां रे छोटी टपरी छे तो पिण तूटी।
जो उ हाट हवेल्या वडां ने न आपें, जब यांरो विनो धर्म गयो उठी॥ ४९॥
छोटा श्रावक तो हाथी घोडें रथ वेठां, वडो श्रावक मूढा आगे चालें पालो।
त्यां पिण खोयो त्यारो विने मूल धर्म, इण लेखे यारी सरधा नें लागें छे कालो॥ ५०॥
छोटो श्रावक चाले छे पालखी बेठो, बडो श्रावक पालखी लीधी छें कांधें।
यारे लेखें पिण छोटके श्रावक, विने मूल धर्म नें खोयो छे आंधें॥ ५१॥
छोटा श्रावक रे घर में धन घणो छें, वडो श्रावक दलदरी तिणने न आपें।
यारें लेखें यारा छोटा श्रावक ने कहिणो, तूं विनें मूल धर्म ने कांय उथापें॥ ५२॥
इत्यादिक छोटा श्रावक रे वसत अनेक, ते वडो श्रावक मागें तो देवें नांही।
जब यो पिण यारें लेखें अवनीत श्रावक, तिणमे विने मूल धर्म न दीसे काई॥ ५३॥
विनों विनों कर रह्या मूरख, ते विनो करणो तो साधा रो चाल्यों।
श्रावक रो विनो करणों कहे साध तणी परे, ओ तो धोचो अणहूतों कुगुरां रो घाल्यों॥ ५४॥
यारो वडों श्रावक पिण छोटा श्रावक नें, उलटो सीस नमाय करे नमसकार।
जब धूल पडी त्यांरा विनें धर्म मे, यांरी सरधा ने दीजें तीन धिकार॥ ५५॥

श्रावक रो विनों थापें साध तणी परें, आ तो सरधा उठी जठाथी भूठी।
ग्रहस्थ रा विनां मांहें धर्म कहें त्यांरी, हीया निलाड री दोनूंइ फूटी ॥ ५६ ॥
श्रावक तो निश्चें ग्रहस्थ सागे, वले अधर्मियां सूं करें संभोग।
तिणरो विनों थापे मूढ साध तणी परे, त्यांरें मोटो छें मिथ्यात रो रोग ॥ ५७ ॥
श्रावक तो मांहोमां पागडी पाडें, कांम पड्यां मांहोमां करें जीव घात।
तिणरो विनो थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरो गाढो घट मांहें घोर मिथ्यात ॥ ५८ ॥
छ काय जीवां रो करे घमसांण, वले छ काय जीवां रो कर जाय गटको।
तिणरो विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरी सरधा नें जांणजो जेंहर रो बटको ॥ ५९ ॥
केइक तो मिथ्यातां विचेंई, केइ श्रावकां रें त्यांसूं इधको आरभो।
त्यांरो विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यां विकलां री सरधा रो जोयजो अचंभो ॥ ६० ॥
श्रावक मांहोमां करें छें विनों वीयावच, वले हाथ जोडी साता पूछें वगेल।
नमसकार करें नीचो सीस नमाए, ते जिण आगन्यां मांहींलो नही एक ॥ ६१ ॥
इत्यादिक सगलाइ छें सावद्य कांमा, तिणमें श्री जिण आगन्यां नही छें लिगार।
तिण मांहें धर्म कहें छें अग्यांनी, त्यांरा घट मांहें छें पूरो घोर अंधार ॥ ६२ ॥
श्रावक श्रावक रा करणा गुण ग्रांम, छता गुण ढांक न राखणा तिणरा।
उणरा दीपावणा ग्यांनादिक गुण नें, जिण आग्या सहीत गुणग्रांम करणा तिणरा ॥ ६३ ॥
सुसरका विनों तो साध रो करणो, श्रावक रा तो करणा गुणग्राम।
इमहीज विनों मतग्यांनादिक रो, जोय लेवों सूतर में ठांम ठांम ॥ ६४ ॥
श्रावक मांहोमां आरंभ कर जीम्या, नमसकार कीयों ते सूतर में चाल्यों।
भगवंत भाव दीठा जिम भाख्या, ते जिण धर्म में भेषधार्‍यां घाल्यों ॥ ६५ ॥
जोड कीधी सावद्य विनों ओलखावण, पाली सहर में कीयो विचार।
संवत अठारें वरस बावनें, आसोज विद पांचम शुकरवार ॥ ६६ ॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी भिष्ट भागल हुआ तिके, करें असुध वेंहरण री थाप।
च्योर ज्यूं असुध अर्थ हेरता, थोथा करें अग्यांनी विलाप ॥ १ ॥
किहां एक पाठ छें सूतर मे, तिणरो न्याय मेले नहीं मूढ।
साधा ने असुध वेहरायां धर्म कहे, एहवी कर रह्या पापी रूढ ॥ २ ॥
एक पाठ छें भगोती मझे, शतक आठमा मांय।
अर्थ करण वालो पिण डरपीयो, तिण केवलीया नें दीयो छें भलाय ॥ ३ ॥
साधां ने सचित असुध दीया, कहे निरजरा बोहत अल्प पाप।
ते उंधी सरधा रो निरणों कहूं, ते सुणजो चुपचाप ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

अफासू आहार ने सचित कहीजें, अणेसणीजेणं ते असूभतो जांणो।
ते दीधां कहे अल्प दोप नें बोहत निरजरा, त्यां विकलां री सरधा री करजो पिछांणो।
भेपधर नें भूलां रो निरणों कीजो* ॥ १ ॥
काचो पाणी कोरों अन साधु नें वेंहरावे, वले खादिम सादिम सचित वेंहरावे।
ए च्यारूंइ आहार सचित ने असुध वेंहरावे, तिणरें अल्प दोष नें बोहत निरजरा वतावें ॥भे०२॥
अफासू ने अणेसणी पाठ छें चोडे, तिण पाठ रो अर्थ सूधो कहणी नावें।
जथातथ तिणरो अर्थ करें तो, घणा लोका माहे सेखी उड जावें ॥ ३ ॥
तिणरा भूठा भूठा अर्थ अनेक वतावें, कदे कारण पडियां रो नांम वतावें।
कदे ओर सूतर सं घुचलाइ घालें, भारीकर्मा भोला लोकां नें भरमावें ॥ ४ ॥
ओ तो पाठ भगोती सूतर में घाल्यो छें, पिण आंधां रें अंतरंग नही छें पिछांणों।
च्यारूं आहार सचित नें असुध वेंहरायां, बोहत निरजरा किहांथी होसी रे अयांणो ॥ ५ ॥
फासू एसणीक साधु नें देवें श्रावक, ठांम ठांम बहू सूतरां रें मांही।
ते सचित असुध सुध जांणें किम देवें, वले बोहत निरजरा जाणे किम ताहि।
असुध वेंहरण री थाप करो मत कोइ ॥ ६ ॥
इण पाठ नें मूंढे आंणें वारंवार, त्यांरा सचित नें असुध खावा रा परिणांम।
जो असुध वेंहरण रा परिणांम नही छें, तो यूही क्यांनें वकसी वेकांम ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

च्यारूं आहार सचित नें असुध वेंहरावें, तिणरे तो अल्प आउखो बंधाय।
भगोती पांचमें सतक छठें उद्देशें, वले तीजें ठांणें ठांणाअंग मांय॥८॥
साधु जांण नें भोगवें आधाकर्मी, ते तो बांधें छें उसभ कर्म रा जाल।
ते तो नरक निगोद में भींका खासी, उतकष्टों रुलें तो अनंतो काल॥९॥
साधु नें जांण नें आधाकर्मी वेंहरावें, ते तो चारित धर्म रो लूटणहार।
ते पिण नरक निगोद में भींका खावें, उतकष्टों रुलें तो अनंतो काल॥१०॥
आधाकर्मी वेंहरायां छें एकंत पाप, सचित नें असुध वेंहरायां ओ पिण पाप।
च्यारूं आहार सचित नें असुध वेंहरायां, तिणनें मूढ करें बोहत निरजरा री थाप॥११॥
साधां ने असुध आहार तो अभष कह्यो जिण, ते अभष आहार देवें दातार।
तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहें ते, ते तो भूला रे भूला थें मूंढ गिंवार॥१२॥
साधां नें आहार असुध देवण रों, ओ त्याग करावें छें किण न्याय।
अल्प दोष नें बोहत निरजरा जांणें छें, तिणरें निरजरा री कांय देवें अंतराय॥१३॥
वले साधां नें अंतराय आहार री पाडी, दातार नें अंतराय आहार दीधी वशेखें।
अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी, तिणनें सूंस करायों छें किण लेखें॥१४॥
श्रावक साधां नें असुध जांण नें वेंहरावें, तिणनें धर्म नें पाप दोनूंइ जाणों।
ते दोय वांना नें मिश्र दांन कहो थें, तिण दांन रा क्यूं करावो पचखाणों॥१५॥
थें कहो छों मिश्र दांन तणा म्हे, किणनेंइ सूंस करावां नांही।
इण मिश्र दांन रा सूंस करायां, थांरी सरधा री वरग बूहा नहीं कांई॥१६॥
मूला गाजर जमीकंद दांन देवें छें, तिणमें धर्म थोडों नें घणों कहो पाप।
तिण दांन रा सूंस करावों नांहीं, मिश्र दांन जांणी रहो चुपचाप॥१७॥
अल्प दोष नें बोहत निरजरा जांणों छों, तिण दांन तणा पचखांण करावो।
बोहत पाप नें निरजरा अल्प जांणों थें, तिण दांन रा सूंस न करावो छों किण न्यावो॥१८॥
साधां ने असुध वेंहरावें तिणरो, बारमों व्रत भागों के नांय।
जब ओ कहें तिणरों बारमो व्रत भागों, तो बोहत निरजरा नही छें तिण मांय॥१९॥
जो असुध वेंहरायां बारमों व्रत भागें छें, तो बोहत निरजरा तिण में कदे म जांणों।
व्रत भांग्यां तो निश्चेंइ भूंडों होसी, तिणरी बुधवंत हीया में करसी पिछाणों॥२०॥
साधां नें असुध वेंहरावें जांण नें, तिणनें एकंत पाप कह्यों नही कूड।
केइ अल्प दोष नें बोहत निरजरा कहें छें, त्यांरी सरधा तो जांणजों फेंन फितुर॥२१॥
मिश्र तणा बोल अनेक चाल्या छें, मिश्र दांन तो कठेय न चाल्यों।
भारीकर्मी जीवां रे उसभ उदें सूं, मिश्र दांन रो घोचों पाषंड्यां घाल्यों॥२२॥
मिश्र पष नें मिश्र भाषा कही जिण, मिश्र गुण ठांणों नें मिश्र परिग्रह दाख्यों।
वले मिश्र पांणी नें मिश्र शब्द कह्या छें, वले मिश्र जोग भगवंते भाख्यो॥२३॥

इत्यादिक दोय मिलीयां सूं मिश्र हुवे छे,, त्यारा नांम सूतर मे जूवो जूवो चाल्यो।
पिण मिश्र दान सूतर में न चाल्यों, ओ तो भेष धार्यां भूठो झगडो झाल्यो ॥२४॥
सुपातर नें कुपातर दांन तो चाल्या, पिण मिश्र दान तो सूतर में नाही।
पिण हीया फूट गधा रा साथी, ते खूता छे मिश्र दांन री सरधा रे माही ॥२५॥
श्रावक ने नेहत जीमावे तिण नें, केइ भेषधारी मिश्र दांन बतावे।
भोलां ने भिष्ट करण नें अग्यानी, कुण कुण कूडा कुहेत लगावें ॥२६॥
नीब रा रूख मे आबो रूंख उगो, तिण नीब रा रूख मे पाणी पावे।
जब दोनूंई रूखा मे पाणी पोंहचें छें, नीब ने आंबो दोनूंई फल फूल थावें ॥२७॥
ज्यू श्रावक ने असणादिक आहार जीमावे, जब विरत नें इविरत दोनूं सीचाणी।
तिणरे दोय वाना मिश्र दान नीपनो, एहवा कूहेत लगावे छें मूंढ अयांणी ॥२८॥
जो जीमावण वाला ने दोय वाना मिश्र छे, तो जीमण वाला ने इण लेखे मिश्र होय।
इण पिण इण री विरत ने इविरत सीची छें, यारें लेखे इण नें एकत पाप न कोय ॥ २९ ॥
श्रावक तो अनेक नीलोती खाये छें, वले पीये छे काचो अणगल पांणी।
इत्यादिक भोगवे छे दरब अनेक, यारें लेखे तो विरत इविरत दोनूं सीचाणी ॥ ३० ॥
श्रावक ने दरब अनेक खवावे तिणनें, विरत नें इविरत दोनूंइ सीची बतावे।
श्रावक घर रा दरब खावें छे तिण ने, विरत इविरत सीची कहता लाज क्यूं आवे ॥ ३१ ॥
घर रा दरब खाद्या कहे इविरत सीचाणी, पार को खाधा दोनू कठाथी सीचाणी।
विरत इविरत पोखी कहे श्रावक जीमायां, ते पूरा छें मूरख मूंढ अयांणी ॥ ३२ ॥
जो श्रावक असणादिक आहार खाधा थी, जो विरत इविरत दोनू पोखांणी।
इण लेखे श्रावक रे कुसील सेव्यां थी, विरत नें इविरत दोनूं सीचांणी ॥ ३३ ॥
श्रावक असणादिक सू साता पावें छे, तो कुसील सू साता पामे वशेखो।
असणादिक सूं विरतने इविरत सीचाणी, तो अस्त्री सेव्यां पिण ओहिज लेखों ॥ ३४ ॥
यारे लेखे तो असणादिक रों त्याग कीधो, वले कुसीलादिक रो कीयो पचखाणों।
जब पिण श्रावक रे विरत इविरत पोषांणी, यारी सरधा रे लेखे तो ओहीज जाणो ॥ ३५ ॥
जो आगार सेव्या विरत इविरत सीचाणी, तो त्याग कीया पिण दोनू सीचांणी।
ओ तो उंधी मत्या री सरधा रो लेखो, त्यां विरत इविरत हीया में नही पिछाणी ॥ ३६ ॥
उपभोग परिभोग श्रावक भोगवें छे, तिण सूं तो एकंत इविरत सीचांणी।
तिणरो त्याग कीया थी विरत वधें छें, विरत सींची कहे ते पाषडी री वांणी ॥ ३७ ॥
श्रावक रें बारे विरत नें बारें इविरत छें, त्यारा फल कोइ बुधवत लेसी पिछांणो।
इविरत सेव्यां सेवाया छें एकत पाप, विरत सेवायां एकत धर्मज जाणो ॥ ३८ ॥
विरत इविरत सीचे कहे छेश्रावक ने जीमाया, आ तो सरधा उठी जठाथी भूठी।
श्रावक ने जीमायां मिश्र दान कहे छें, त्यारी हीया नीलाडी री दोनूंइ फूटी ॥ ३९ ॥

श्रावक रा कांम भोग तो इविरत में छैं, ते तो भोगव्यां उसभ कर्म लागें छें आंणों।
ते किंपाक फल री छें ओपमा त्यांनें, तीनूंइ करण सारीषा जांणों॥ ४०॥
किंपाक फल तो भोगवतां मीठा, तिणरो सवाद लागें जांणें अमीय समांणों।
नाडो नाड परगमीया पाछें, जूदा हुवें जीव काया प्राणों॥ ४१॥
ज्यूं कांम भोग भोगवतां मीठा, ते भोगवतां लागें अमीय समांणो।
तिण सूं कर्म लागें ते उदें आवें जब, भव भव में दुख उपजें आंणो॥ ४२॥
किंपाकफल तो एक भव दुखदाइ, कांम नें भोग भव भव में दुखदायों।
ते कांम नें भोग श्रावक नें सेवायां, धर्म नें मिश्र किहांथी थायों॥ ४३॥
किंपाकफल खवावें तिणनें, ववेक विकल जांणें मित्री छें म्हारों।
जे चतुर विचषण डाहा हुवें ते, वेंरी जांणें घात रों करणहारों॥ ४४॥
ज्यूं कांम नें भोग भोगवावें छें तिणनें, ववेक रा विकल जांणें ओ मित्री छें रूडों।
जो चतुर विचषण डाहा हुवें ते, पाप कर्म रो दाता वेंरी जांणें पूरों॥ ४५॥
श्रावक तो जीवादिक पदार्थ जांणें, वले सावद्य निरवद भिन भिन पिछांणें।
ते तो श्रावक मांहोमां जीमें जीमावें, तिणमें धर्म तणों अंस कदेय न जांणे॥ ४६॥
श्रावक रा कांम भोग शब्दादिक छें त्यांनें, किंपाकफल री ओपमा जांणी।
तीनां करणां नें पाप जांणें छें एकंत, तिण श्री जिण आग्या नें रूडी पिछांणी॥ ४७॥
रूंख बाढण नें साध कूहाडो दीधों, तिण कुहाडा सूं रूंख बाढें छें आणों।
रूंख बाढें तिणनें साज दीयों छें, त्यां दोयां नें एकंत पापज जांणों॥ ४८॥
धांन पीसण नें साझ घरटी दीधीं, तिण घरटी सूं धांन पीसें छें आंणों।
धांन पीसें तिणनें साझ दीयों छें तिणनें, यां दोयां नें एकंत पापज जांणों॥ ४९॥
गांम बालण नें साझ अगन रों दीधों, तिण अगन सूं गांम बालें छें आंणों।
गांम बालें तिणनें साझ देवें तिणनें, यां दोयां रो लेखों बरोबर जांणों॥ ५०॥
इत्यादिक अनेक सावद्य रों साझ देवें छें, तिण सूं सावद्य कांम करें छें जांणो।
सावद्य करें तिण नें साझ दीयों छें तिणनें, यां दोयां नें एकंत पाप पिछांणो॥ ५१॥
ज्यूं श्रावक नें साझ असणांदिक रो दीधों, ते असणांदिक भोगवें अन पांणों।
खायें पीयें तिणनें साझ दीयों छें तिणनें, यां दोयां रो लेखों बरोबर जांणों॥ ५२॥
पाप करण रों साझ देसी तिणनें, एकंत पाप लागें छें आंणों।
पाप रो साझ दीयां नहीं धर्म नें मिश्र, समझो रे समझो थें मूंढ अयांणो॥ ५३॥
विरत इविरत पोषी कहो श्रावक जीमायां, तो मिथ्याती पोष्यां इविरत पोषी जाणों।
इविरत पोष्यां एकंत पाप उघाडो, तिणरी पिण मूरख करें छें तांणों॥ ५४॥
तो मिथ्याती नें पोष्यां मिश्र किण लेखें, इणरी तो एकंत इविरत पोषांणी।
इविरत पोष्यां रों थें पाप बतायों, हिवें मिश्र कठा थी आयो अयांणी॥ ५५॥

श्रावक भोगवें छें दरब अनेक, ते तो एकंत इविरत मांहें जांणों।
जीमावण वालों पिण इविरत में जीमावें, तिणमें .धर्म नही छे रे मूढ अयांणों ॥ ५६ ॥
श्रावक जीमायां नें मूढ मिथ्याती, विरत नें इविरत दोनूं पोषांणी जांणें।
जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, पीपल बांधी मूरख जिम ताणें ॥ ५७ ॥
श्रावक रा शब्दादिक भोग ओलखावण, जोड कीधी पाली सहर मझार।
संवत अठारे नें वरस बावनें, आसोज विद अमावस सोमवार ॥ ५८ ॥



ढाल : १६

दुहा

भेषधारी भूला जिण धर्म थी, ते कहें छें मिश्र दांन।
सूतर विण करें छें परूपणा, त्यांरां घर मांहें घोर अग्यांन॥ १ ॥
सूतर ठाणांग तेह में, दस दांन कह्या भगवांन।
गुण निपन त्यांरा नांम छें, पिण मिश्र न कह्या जिण दांन॥ २ ॥
देवा नों नांम दांन छें, लेवा रो नांम लाभ।
मिश्र दांन नें मिश्र लाभ नों, कठे नही सूतर में जाब॥ ३ ॥
मिश्र दांन उठाय बेठों कीयों, त्यांरी सरधा नहीं छें सुध।
ते तो माठी मत रा मांनवी, त्यांरी भिष्ट हुइ छे बुध॥ ४ ॥
सावद्य निरवद दोनूं दांन चालीया, सुतर में ठांम ठांम।
मिश्र दांन पाषंडीयां परूपीयों, भूठा ले ले सूतर रों नांम॥ ५ ॥
निज मत उथपतों जांण नें, थाप्यों छे मिश्र दांन।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणो सुख दे कांन॥ ६ ॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे]

दुरबल दुखीया री अणुकंपा आंणे, तिणनें दे ते अणुकंपा दांन।
तिण दांन नें मिश्र दांन कहें त्यांरो, भिष्ट हुवो विगनांन रे।
भवियण मिश्र दांन कोइ मत मांनो, ओ गूढ मिथ्यात छें छांनो रे। कुमत्यां॥*।
आ सरधा छें जहर समांनो॥ १ ॥

तिणनें सचित अचित दोनूंइ देवें, छ ही काय हणी दें कोय।
यो दांन संसार नो दीसें उघाड़ों, तिण में मुगत रो भेल न होय रे।
मिश्र दांन कठा न थी काढयों, इण मिथ्यात थी जगत नें दाढयों रे। कु०।
आत्मा नें कलंक कांय चाढयों रे॥ २ ॥

वंदीवांनादिक नें दांन दे तिणनें, संग्रह दांन कह्यों जिण आप।
तिण दांन नें मिश्र दांन कहें, तिण वीर ना दीया वचन उथाप रे॥ ३ ॥
ओ पिण दांन संसार नों तिण में, मोष मारग रो भेल नहीं।
कोइ चतुर विचषण डाहा हुवें ते, विचार देखों मन मांहीं रे॥ ४ ॥
भय रो घालीयों दांन दें तिणनें, भय दांन कह्यों भगवांन।
ए एकंत दांन संसार तणों छें, तिणनें मूढ कहें मिश्रदांन रे॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ग्रह करडा जांण भय रो घाल्यों, देवे थावरीयादिक रें हाथ।
तिणमें जिण धर्म रो भेल बतावें, तिणरे बुकसीयों मिथ्यात रे॥ ६॥
खरच करें मूआं रे केडें, ते तो चोथों कालुणी दांन।
ए तो एकंत दांन ससार नों तिण सूं, वधें लोकां में मांन रे॥ ७॥
ए दान ससार तणों किरतब छे, तिणमे मोष रो मारग नांही।
तिणमे तो मोष रा मारग रो भेल बतावे, ते तो भूल गया भर्म मांही रे॥ ८॥
साकडे पडीयो दे लज्या रो घाल्यों, तिणने जिण कह्यो लज्या दान।
तिण दांन नें मिश्र दांन कहे त्यारें, घट माहें घोर अग्यांन रे॥ ९॥
सासरा में जमाइ लज्या तणें वस, देवें जाचकादिक रे तांई।
ओ पिण एकंत दांन संसार तणो छें, तिणमे जिण धर्म रो भेल नांही रे॥ १०॥
देवें रावलीया भाड भवइयादिक नें, भोपादिक नें देवें घर मांन।
मुकलावों पेंहरावणी देवे मूसालों, गरव सू देवें ते गरब दांन रे॥ ११॥
ओ एकंत दांन संसार नों, तिणमे संवर निरजरा नहीं अंसमात।
इणमें मोष रा मारग रो भेल वतावें, तिण पडिवजीयों मिथ्यात रे॥ १२॥
गणिकादिक ने दान देवें छें, कुसीलादिक सेवण कांम।
ओ तो दांन उघाडो सावद्य, अधर्म दांन छे तिणरों नांम रे॥ १३॥
आठमो धर्म दांन छें मोष रो मारग, तिण सूं उतर जायें भव पार।
सासता सुख पामें सिव रमणी रा, तिणरो सांभलजो विसतार रे॥ १४॥
आपे ग्यांन दरसण चारित नें तप, तिण सूं पामे पद निरवाण।
ए च्यारूइ दांन धर्म दांन मे घाल्या, केवल ग्यांनीया ग्यांन सूं जांण रे॥ १५॥
छ ही काय हणवा रा त्याग करें छें, ते अभेंदांन कह्यो जिण राय।
तिण सू आवता पाप कर्म रुक जावें, तिणनें घाल्यो धर्म दांन रे माय रे॥ १६॥
निरदोषण दरव साधां नें देवे, तिणने कह्यों सुपातर दांन।
तिण दान नें पिण धर्म दान मे घाल्यो, भगवत श्री विरधमान रे॥ १७॥
छ काय हणवा रो त्याग करें छें, सुपातर दांन देवें छें तांम।
आपें छें ग्यांन दरसण नें चारित, धर्म दांन छें तिणरो नांम॥ १८॥
हाती नेंहतादिक देवें सेण सगां ने, नेंहत घालें बनोला दें तांम।
तिण पाछो लेवा री आसा सू दीधों, कायंती दांन तिणरो नांम रे॥ १९॥
हाती नेंहतादिक देवे सेंण सगां ने, नेंहत घाले बनोला दें तांम।
पेंहलां दीधों त्याने पाछों देवें छें, कतंती दांन तिणरो नांम रे॥ २०॥
आमी साह्मी हाती देवे जीमें जीमावें, नेंहत पिण घालें आंमी साह्मी।
ए तो एकंत दान संसार ना दोनूं, लेवा नें देवा रा छें कांमी॥ २१॥

नवमों दसमों दांन देवो नें लेवो, ख्याल छें धुर वोहरा वालों।
तिणमें जिण धर्म रों मेल बतावें, तिण सरधा रो कीजों टालो रे॥ २२॥
ए दस विध दांन कह्या भगवंते, मिश्र दांन कह्यों नहीं एक।
केइ आठ दांनां नें मिश्र कहें छें, ते बूडें छें विनां ववेक रे॥ २३॥
त्यांरें बडा बडेरा आगें हुआ त्यां, मिश्र दांन कह्यों दीसें नांही।
मिश्र दांन परूपें बडां नें विगोया, पडीया पाषंड पंथ रें मांहीं रे॥ २४॥
मिश्र दांन रों थापण वालों, भूठ बोलतों संक्यों नांहीं।
भूठी २ साख सूतर री दीधी छें, पिण नहीं छें सूतर रे मांही रे॥ २५॥
सूयगडाअंग इग्यारमें अधेनें, तिणरी साख दीधी ते कूडा।
जो तिण ठांमें मिश्र दांन न काढें, तो मूंढे पडसी धूड रे॥ २६॥
सूयगडाअंग दूजें पांचमें अधेनें, मिश्र दांन कहें छें तांम।
बतीसमी गाथा री साख दीधी छें, साचा हुवें तो काढों तिण ठांम रे॥ २७॥
जो तिण ठांमें मिश्र दांन काढों, तो सरधा फेन फितूरों।
केइ चतुर विचषण डाहा होसी ते, थांरों जांण लेसी मत कूडो रे॥ २८॥
आठ दांनां में मिश्र दांन बतावें, ठांणाअंग दसमें कहे तांम।
जो साची साख सूतर री दीधी हुवें तो, काढ दिखावो तिण ठांम रे॥ २९॥
वले तीजा ठांणा री साख देइ नें, कहें छें मिश्र दांन।
जो तिण ठांमें मिश्र दांन न काढें, तो यूंही बकें जिम स्वांन रे॥ ३०॥
वले घणा सूतरां नांम बतावें, मिश्र दांन कहें छें साष्यात।
जो किण ही सूतर में मिश्र दांन न काढें, तो सरधा छे भूठ मिथ्यात रे॥ ३१॥
मिश्र दांन परूपण वालें, घणा जीवां नें विगोया।
वले सिष सिषणी छें निज पोता रा, त्यांनें तो जाबक बोया रे॥ ३२॥
मिश्र दांन नें मिश्र धर्म, ए तो सूतर मांहें न चाल्या रे।
भारीकर्मा जीवां रें उसभ उदें सूं, ए तो घोचा अणहूंता घाल्या रे॥ ३३॥
मिश्र दांन कहो भावे मिश्र धर्म कहों, ए तो परमारथ एक।
मिश्र दांन होसी तो मिश्र धर्म छें, समभों आंण ववेक रे॥ ३४॥
किणही मिश्र दांन तो कह दीयों चोडें, तिण कह दीयों मिश्र धर्म।
हिवें मिश्र दांन तों कहितां न लाजें, मिश्र धर्म कहितां आवें सर्म रे॥ ३५॥
सावद्य दांन नें निरवद दांन, दोनूं दांन तो सूतर माह्यो।
पिण मिश्र दांन सूतर में नांहीं, ओ तो गाला सूं गोलो चलायो रे॥ ३६॥
आठ दांनां नें पिण सावद्य कहें छें, वले सावद्य में सरधें छे दोय।
सावद्य कह्यों तिण अधर्म कह्यों छें, ते पिण विकलां में खबर न कोय रे॥ ३७॥

मिश्र दान कहे तिणरी सरधा रे लेखे, सावद्य दांन न कहणो।
मिश्र सावद्य के मिश्र निरवद कहिणों, पुछ्यां रो जाव सुधो देणो॥ ३८॥
सावद्य नें तो मिश्र कहिता लाजे, निरवदनेइ मिश्र कहितां लाजे।
दांन मिश्र कहितां नही लाजे, ते तो पिडत भोलां मे वाजें रे॥ ३९॥
सावद्य खोटो नें निरवद आछो, आ तो सरधा छें सूधी।
सावद्य में धर्म ने पाप सरधें, अकल तिणां री उंधी रे॥ ४०॥
सावद्य किरतब ने अधर्म जाणो, अधर्म ने सावद्य जाणो।
सावद्य मे कोइ मिश्र जांणे छे, ते वूडे छें कर कर ताणो रे॥ ४१॥
सावद्य कह्यों तिण कह दीयो अधर्म, निरवद कह्यो तिण कह दीयों धर्म।
पिण पोता रा बोल्या री समझ न पोले, ते तो मूला अग्यांनी भर्म रे॥ ४२॥
असणादिक दातार देवे छे, तिणनें दान कह्यो जिणराय।
तिणमें पातर मे पुन कुपातरे पाप, ते तो जोय लों सूतर मांय रे॥ ४३॥
अन्न पाण पुने लेण ने सेण पुने, वत्थ पुने कह्यो जगनाथ।
याने मिश्र कहसी कोइ मूंढ मिथ्याती, तिणरी प्रतष भूठी बात रे॥ ४४॥
अन्न मिश्र पाण मिश्र न चाल्यो, लेण ने सेण मिश्र नाही।
वत्थ मिश्र भगवते न भाख्यो, जोवो सूतर रे मांही रे॥ ४५॥
ए पांचूं बोला मिश्र दांन हुवे तो, आश्रव सवर मिश्र होय जाय।
वले निरजरा पिण मिश्र होय जावे, जोवो सूतर रे माय रे॥ ४६॥
आठ दांन देवण री भावना भावे, तिणरा किसा अधवसाय परिणाम।
तिणरी लेस्या किसी ने ध्यान किसों छें, ज्यारा मायलो कह द्यो तांम रे॥ ४७॥
ध्यान लेस्या अधवसाय परिणाम, ए तो मिश्र चाल्या नही कोय।
ए ज्यारूं भला कें ज्यारू मूडा छे, मिश्र हुवे तो वतावो मोय रे॥ ४८॥
ए आठूंइ दान संसार ना दान, त्यामे संवर निरजरा नाही।
यामे मोष रा मारग रो भेल वतावे, ते तो खूता संसार ने माही रे॥ ४९॥
पातर कुपातर हर कोइ नें देवे, तिणने कहीजे दातार।
तिणमे पातर दान मुगत रो पावडीयो, कुपातर सूं रूले संसार रे॥ ५०॥
खिम्यां सूरा कह्या अरिहंता, तवे सूरा कह्या अणगार।
दाने सूरा कह्या वेसमण देवता ने, जूझे सूरा वासुदेवा धार रे॥ ५१॥
यामे दोय सूरा तो ससार ना सूर, ते तो जस कीरत रा कामी।
बाकी दोय सूरा निज आतम जीते, कर्म काटे हुवे सिव गांमी रे॥ ५२॥
संसार नो दांन ने मुगत रो दान, पिण मिश्र दांन न कोय।
मोष रा दांन सूं हुवे संवर निरजरा, ससार ना दांन सूं आश्रव होय रे॥ ५३॥

आठ दांन री साध परसंसा करें-तो, छ काय रों वध वंछणहारो।
देण वाला रे फल लागें ते, बुधवंत लेजों विचारो रे॥ ५४॥
ए बावीस टोलां नें साध कहें छे, ते पिण मिश्र दांन न मांनें।
मिश्र दांन कहें तिणनें भूठो जांणें छें, सुध सरधा सूं कर दीयो कांनें रे॥ ५५॥
अधर्मी जीवां नें दांन देवे छें, ते एकंत अधर्म दांन।
धर्मी नें. दांन निरदोषण देवें, ते धर्म दांन कह्यों भगवांन रे॥ ५६॥
सुपातर नें दीयां संसार घटें छे, कुपातर नें दीयां वधें संसार।
ए वीर वचन साचा कर जांणों, तिणमें संका नहीं छे लिगार रे॥ ५७॥
संसार ना दांन नें साध परसंसें, तिणनें कह्यो छ काय रों घाती।
तिणमें मुगत रा मारग रो भेल बतावें, ते तो पूरा छें मूंढ मिथ्याती रे॥ ५८॥
जोड कीधी मिश्र दांन निषेदण, सोभत सहर मभारो।
संवत अठारे ने वरस तेपनें, सावण सुदि छठ नें सोमवारो रे॥ ५९॥

ढाल : १७

दुहा

भेषधारी भूला फिरे जेन रा, बाजे लोका मे अणगार।
ते धर्म कहे हिंसा कीया, ज्यारी जीभ बहे ज्यू तरवार ॥ १ ॥
ते खोटी करे छे परूपणा, जाबक सूतर विरुध।
त्या जिण मारग नही ओलख्यो, त्यारी भिष्ट हुइ छे बुध ॥ २ ॥
जीव दया त्यारा घट मे नही, हिंसा रो उपदेस दे ताम।
त्यारो उपदेस सुणे छे तेहना, रहे जीव मारण रा परिणांम ॥ ३ ॥
सावद्य दान ससारी जीवा तणो, तिणमे छ ही काय री घात।
तिणमे धर्म नें पुन परूपता, पापी सके नही तिलमात ॥ ४ ॥
वेंरी उठ्या छे पापी छ काय ना, धर्म कहि कहि हणावे छ काय।
किण विध करे छे परूपणा, ते सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आगन्या मे]

छ काय रा पीहर बाजे लोका मे, पिण सांनी करे छ ही काय ने मरावे।
छ काय हणे कोइ दान देवें छे, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे।
आ सरधा केइ भेप धारया री ॥ १ ॥
मुरड माटी खडी आदि अनेक पृथवी छे, त्यारी जूदी जूदी दान साला मडावे।
दगचाल पाड्यां त्यारो दान देवे छे, तिण मे एकंत धर्म ने पुन बतावे ॥ २ ॥
कूआ वाव खणावे तलाव खोदावे, अथवा पांणी री पिण पो मडावे।
दगचाल पाड्या दाम देवें पाणी रो, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावें ॥ ३ ॥
अगन रा खीरा भोभर नें भरसाड, इत्यादिक अगन री दानसाला मडावे।
दगचाल पाड्या दांन देवे अगन रो, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावें ॥ ४ ॥
आया गया ने वायरो घालण, वीजणा री दानसाला मडावे।
दगचाल पाड्या सहु ने वायरो घालें, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ५ ॥
प्रतेक ने साधारण वनसपती री, त्यारी जुदी जुदी दानसाला मडावें।
दगचाल पाड्या दान देवे वनसपती नो, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ६ ॥
लावा तीतरादिक तस जीव अनेक, त्यारी जुदी जुदी दानसाला मंडावे।
तस जीव रो दान देवें दगचाल, तिण मे एकंत धर्म ने पुन बतावे ॥ ७ ॥

अथवा छ काय जीवां नें जीवां हणे नें, त्यांरी जुदी जुदी दांनसाला मंडावें।
दगचाल पाड्यां दांन देवें जीव हणी नें, तिण मे एकंत धर्म नें पुन बतावे॥ ८॥
कोइ छ काय जीवां रो गटकों करावे, अथवा छ काय मारे ने खवावें।
ओ जीव हिंसा नों राहज खोटों, तिण में एकंत धर्म नें पुन बतावे॥ ९॥
कोइ श्रावक री अणुकंपा आंणी नें, कोरी नीलोती सचित खवावे।
अथवा नीलोती रांध खवावें, तिण में मूरख धर्म बतावे॥ १०॥
बेंगण बालोदिक अनेक नीलोती, रांध रांध जीमावें श्रावक जाणी।
तिण में इ धर्म कहें भेषधारी, त्यांरी भाषा छें जाणें बहती घांणी॥ ११॥
गाजर मूला नें सकरकंद कांदा, इत्यादिक जमीकंद श्रावक नें खवावे।
अथवा जमीकद नें रांध रांध खवावें, तिण मांहे धर्म अनारज बतावे॥ १२॥
केइ बेंगण बालोदिक भडथा करे नें, श्रावक ने जीमावण त्यारी कीधा।
तिण मे भेषधारी धर्म बतावें, त्यां नरक सूं डेरा सनमुख दीधा॥ १३॥
कोइ धर्म जांणें श्रावक रें काजें, कोरी कवली नीलोती छमक वघारी।
तिण मांहे दुष्टी धर्म बतावे, त्यांरे नरक जावा री हुइ तयारी॥ १४॥
श्रावक नें नीलोती विवध प्रकारें, कोरी काची खवावें वघार धूंगारी।
तिण मांहें धर्म कहे भेषधारी, त्यांरी भव भव में होसी घणी खवारी॥ १५॥
कोइ कोडां मण जमीकंद रांधी नें, श्रावक श्रावक नें देवें अणुकंपा आणी।
तिण दातार री लेस्या नें भली कहे छें, केइ भेषधारी बोलें एहवी वांणी॥ १६॥
श्रावक नें उन्हों पांणी कर पावें, वले पावें काचो अणगल पांणी।
तिण में धर्म कहें भेषधारी अनारज, त्यांरी जीभ बहे जाणें बहती घांणी॥ १७॥
श्रावक री अणुकंपा आंणी ने, खपें सो देवें अणगलीयों पांणी।
हरकोइ कांम करवा रें काजें, तिण में धर्म कहें छें मूंढ अयांणी॥ १८॥
श्रावक नें कल्पें ते वस्त दीयां में, धर्म कहें भेषधारी दिढाय दिढाय।
श्रावक तो हरकोइ वसत लेवें छें, आ पिण विकलां नें समझ न कांय॥ १९॥
श्रावक तो वसत इविरत में लेवें छें, देवाल पिण इविरत में दीधी।
इण वात रो निरणों कीयां विण विकलां, खोटी खोटी परूपणा पापीयां कीधी॥ २०॥
अंबडना सिष्य सातसों हुंता, त्यांनें काचा पांणी री आगन्यां दीधी।
तिण मांहें धर्म कहें भेषधारी, आ पिण खोटी परूपणा कीधी॥ २१॥
आगन्या रे देवाल तो निसंक पणा सूं, सर्व नंदी री आगन्या दीधी छें तांम।
सर्व नंदी री आगन्या दीधी छें तिण रा, भेषधारी कहे चोखा परिणांम॥ २२॥
असंख्याता जीव तो पांणी तणा छें, वले नीलण फूलण रा जीव अनंत।
त्यांरो गटको करण री आगन्या दीधी, तिण नें भेषधारी धर्म भाखंत॥ २३॥

काचा पांणी री आगन्या दीधी छे तिणने, साधु तो त्रिविधे त्रिविधे नही सरावे।
भेषधारी भागल सरधा रा भिष्टी, ते निसक पणे तिण ने धर्म बतावे ॥ २४ ॥
जिण भाषीया तो सूतर बाचे, वले लोका मे जेन रा साध बाजें।
नदी रा पांणी री आगन्या दीधी, तिण ने धर्म कहिता मूल न लाजें ॥ २५ ॥
कोडा मण काचो अणगल पाणी, तिणरी आगना देवे हर कोइ।
तिण माहे पुन कहे भेषधारी, त्या मांनव नो भव दीधो खोइ ॥ २६ ॥
जीव खवायां मे पुन परूपें, त्या विकला री सरधा छे जेहर समान।
तिण सू आप डूबे अनेरां ने डबोवे, ते भव भव मे होसी घणा हिरान ॥ २७ ॥
जीव खवाया मे पुन परूपे, आ तो सरधा उठी जठाथी भूठी।
पर जीव री पीडा न ओलखी त्यारी, त्यारी हीया नीलाड री दोनूंइ फूटी ॥ २८ ॥
जीव खवाया में पुन परूपे, त्या दुष्ट्यां ने कहिजे निश्चे अनारज।
त्यारी जीभ वहे तरवार सू तीखी, त्या विकला रा किण विध सीभसी कारज ॥ २९ ॥
जीव खवाया मे पुन परूपे, वले चिठाय चिठाय ने बोलें सेठा।
ते दया रहीत छे दुष्ट अनारज, नरक निगोद रा प्रावण होय बेठा ॥ ३० ॥
जीव खवाया पुन कहें जेनी होय ने, ते नरक निगोद ने त्यारी हुवो।
समकित श्रावक ने साध पणो हुवे, त्यारे तीनूइ बोला मे उठीयो धूओ ॥ ३१ ॥
जीव खवायां मे पुन परूपे, त्यां सुध बुध अकल ने जावक खोइ।
इण सरधा सू नरक मे भीका खासी, तिहा छोडावण वालो नही छे कोइ न कोइ ॥ ३२ ॥
जीव खवाया मे पुन परूपे, त्यारे वाहलां तणो पडजाय विजोग।
वले दुसमन रो जोग मिलसी तिणा ने, वले वधतों जासी त्यारे रोग ने सोग ॥ ३३ ॥
जीव खवायां पुन कहे भेषधारी, मुहपती बाधी री पिण वरग न बूहां।
पापीया जेंन रों भेष लजायो, विरत विहूणा नागडा निरलज हुआ ॥ ३४ ॥
जीव खवाया मे पुन परूपे, त्यानें पूछ्या थकां पलटे जावे वांणो।
छानें छांने तो सरधा सीखावे, त्यारी सरधा ने जार गरभ जिम जांणों ॥ ३५ ॥
जीव खवाया मे पुन परूपे, ते सीह तणी परें कदे न गूजे।
परगट कहितां मूडा दीसे, त्याने प्रश्न पूछ्यां गाडर जिम धूजें ॥ ३६ ॥
जीव खवायां पुन कहे त्यारी सरधा, चोडे निसक सू निश्चेइ उधी।
ते जेन तणा विगडायल पापी, त्यारी भाषा पिण किण विध नीकलें सूधी ॥ ३७ ॥
कदे तो पुन कहे जीव खवाया, कदे कहे जीव बचायां पुन।
यां दोया रों निरणो न कीयों विकला, यू ही वके गेहला ज्यूं हीयासून ॥ ३८ ॥
चोर चोरी री वसत छाने छानें वेचे, चोडे धाडें तिण सूं वेचणी नावें।
ज्यूं जीव खवायां पुन कहे त्यांसूं, चोडे लोकां में बतावणी नावे ॥ ३९ ॥

जीव खवाया पुन परूपे, त्यांरी सरधा अवंत छें माठी सूं माठी।
आ उंधी सरधा बेठी उसभ उदे सूं, त्यांरी सुघ बुघ अकल जावक गइ न्हाठी ॥ ४० ॥
जीव खवायां पुन कहें त्यांरी सरधा, मांस अहारी ने हिंसा धर्म्यां सू मिलती।
एहवा अनारज तो आ सरधा सरासी, पिण जिण मारग सूं तो जावक टलती ॥ ४१ ॥
जीव खवायां पुन कहें ते पापी, पाघरा नरक निगोद मे जासी।
तिहां छेदन भेदन विवध प्रकारें, वले मार में मार अनंती खासी ॥ ४२ ॥
जीव खवायां पुन कहे त्यां पापीयां नें, तातो तांबो उकाल नें नरक मे पासी।
वले जीभ काढसी त्यांरी जड सूं तांणी नें, खाल उतार नें वले खार लगासी ॥ ४३ ॥
जीव खवायां पुन कहें भेषधारी, त्यांनें नरक री मार रो छेह न पारो।
छदमस्थ सूं पूरी कहणी न आवें, पल सागरा लग खासी मारो ॥ ४४ ॥
ते नरक मांसूं नीकल नें पापी, पछें रुलतो रुलतो निगोद में जासी।
तिहां जन्म नें मरण करसी अनंता, अनंतो काल तिहां दुख पासी ॥ ४५ ॥
नरक निगोद नें तिरजंच गति में, आमां साह्मां घणा गोता खासी।
तिणरी मार तणो छेह वेगो न आवे, अनतो काल तिहां दुख पासी ॥ ४६ ॥
नरक निगोद सूं नीकल नें पापी, नीठ नीठ नर नो भव पासी।
घणो दो भागीयों ने दलदरी होसी, तिणनें निजरां दीठा पिण किण नें न सुहासी ॥ ४७ ॥
उगता रा मात पिता मर जासी, वले वाहलां तणो पड जासी विजोग।
दुसमण तणों संजोग आए मिलसी, वले वधतों जासी तिणरें रोग ने सोग ॥ ४८ ॥
जीव खवायां पुन कहे भेषधारी, त्यां दुष्टयां री संगत दूर निवारो।
दया धर्मी री संगत कर नें, तिरण तारण गुर माथे धारो ॥ ४९ ॥
वले कहि कहि नें कितरा एक केहूं, जीव खवाया पुन कहे त्यारा दुख।
ते भमन करसी अरट घटकारें न्यायें, तिण पापी ने किण विध होसी सुख ॥ ५० ॥
हिंसाधर्मी ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली सहर मझारे।
संवत अठारे नें पचावनें वरसें, आसोज सुद एकम नें बुधवारे ॥ ५१ ॥

ढाल : १८

दुहा

केइ भेषधारी भागल थया, त्यारी भिष्ट हुइ सुध बुध।
त्यां पेट भरण रे कारणें, कीधी परूपणा असुध॥ १ ॥
ग्रहस्थ लाडू आदि मोल आंण ने, अथवा घरे नीपाए तांम।
ते जीवावे त्यारा श्रावका भणी, तिणरो दया दीयो छे नांम॥ २ ॥
एहवो धर्म सीखायो श्रावका भणी, तिण सू उलटा वांधें छे कर्म।
जेसा कू तेसा मिल्या, भूला अग्यानी भर्म॥ ३ ॥
लाडू खवायां धर्म परूपीयों, ते आप रे मुतलव काम।
रस गिधी जीभ्या रा लोलपी, यारें आछा खावां री मन हाम॥ ४ ॥
दया पलाइ मुख सू कहे, पिण प्रतष दीसें गोठ।
तिण गोठ रों नांम दया दीयो, ते चोडे चलायो खोट॥ ५ ॥

ढाल

[रे भवीयण सं०]

केइ दया पलावण चोखा रे ताइ, मूसलां सू साल खंडावें।
एकीका मूसलरें धमके, असंख्याता वाउकाय मर जावें।
रे भवीयण आ दया कठा थी काढी, ओछा वेवज पेट रें कारण।
जिण धर्म तणी वरत वाढी रे, थे समभाया पिण समभों नांही।
थारें चोकडी दीसें जाडी रे*॥ १ ॥
जबूदीप भरे तिजारा रा दाणा थी, ते तो गिणती रा जीव असख्यात।
तिण थी असख्यात गुणा वाउ रा जीवा री, एके धमके हुवे घात रे॥ रे० २ ॥
पछें छाज मे घाले भाटक पछाटें, तुसनें चावल करें जुआ।
तिहां पिण एकीका छाज रें फरके, असख्याता वाउकाय मूआ रे॥ ३ ॥
दया पलावण चोखा पीसें ते, घरटी नें धमकावें।
एकीका घरटी रा फेरा में, असंख्याता वाउकाय मर जावे॥ ४ ॥
वले घरटी फेरयां तेउकाय उठें छें, तिण अगन तणी हुवें घात।
एकीका घरटी रा फेरा मे, तेउकाय मरें असंख्यात रे॥ ५ ॥
वले मेदां मे घी उन्हो करे घालें, तिहां तेउ तणी हुवें घात।
खांड घाले दया रा लाडू वणावें, तठें दया नही तिलमात रे॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केइ लाडू भुजीया नें मुरमुरीयां, दया पालण नें मोल मंगावें।
ओ पिण क्रय विक्रय नों दोष छें भारी, अठें पिण हिंसादिक थावे रे॥ ७॥
वले दया पलावण नें सूंठ भीजोवें, वले अथाणो मोल मंगावें।
वेंसवास्या भूंगडा पिण ल्यावें, केइ पापड पिण सेकावें रे॥ ८॥
हलवाइ तो लाडू मोल बेचण कीधा, मोल लेवे त्यारें आधाकर्मी।
एहवा लाडू खावें खवावें, त्यांनें निश्चें जांणो अधर्मी रे॥ ९॥
गांम परगांम थी दही मोल मंगावे, नदी वाहला उलंघी ल्यावें।
नीलण फूलण रा जीव मारें अनंता, पांणी फूंवारादिक मास्या जावे॥ १०॥
वले जातां नें आवतां नीलो चीथ्यो, तस थावर तणी हुवें घात।
वाउकाय मरें उघाडें मुख वोल्यां, तठे पिण दया नही तिलमात रे॥ ११॥
साध साधवीयां नें श्रावक श्रावकां रो, सारां रो भेलों बांधें तुमार।
दया पलावण धर्म रे लेखें, इण विध नीपजावें आहार रे॥ १२॥
मुदें तो रातां हाथ री बायां बुलावे, आप म्हारें आंगण पधारों।
थें दया धर्म रा लाडू खाय नें, म्हांरा जीवां रों करो उधारो रे॥ १३॥
ए तो निरलजीयां इण कांमां नें बेंठी, ते तो सुणनें हरषत थावें।
पेलां रें घरे जाय उमाड, दया धर्म रा लाडू खावें रे॥ १४॥
भेषधास्यां नें घर सूं जाय बोलावें, म्हारें घरे आप पधारों।
बारमों वरत नीपजावों म्हारें, तिणसूं म्हांरो होसी उधारो रे॥ १५॥
त्यांनें तेड्यां ततकाल जावें तिण घर, जांणें डोरी ताण्यों स्वांन।
ताजें आहार तूटा पडें पापी, यांरे पेट भरण रों तांन रे॥ १६॥
लाडूआं री दया तो यांहीज सीखाइ, ते तो आघों काढसी केम।
ए सगला लाडू खाए ते वेंहरें, पूरें मन रा मनोरथ एम रे॥ १७॥
बायां नें लाडू दया रा खवायां, त्यांसूं उपवास रो करे करार।
भेषधास्यां नें लाडू तेड बहराया, त्यांसूं करार न कीधों लिगार रे॥ १८॥
लाडू खाती खाती लेवे दही रा सबडका, सवाद सूं खावें मुरमुरी भुजीया।
धर्म रा लाडू खाती नहीं लाजें, ते तों छोडो लोकीक री लजीया रे॥ १९॥
उपवास री बांधवा कर लाडू खवावें, ते खावा री ओछ राखें किण लेखें।
भीकों उडावें लाडू खावारों, चांप चांप खावें वशेखे रे॥ २०॥
ताजी ताजी वसतां खावें ग्रिधीपणा सूं, जो एक वसत माहें हुवें कजी।
तो भांड ज्यूं भांडें तिणनें भांडोंकाडीयां, तिणरी निंदा करें निरलजो रे॥ २१॥
ताजों आहार सराय सराय नें खावें, ते तो कर्म तणा पूंज बांधें।
त्यां विकलां नें, जीमायां धर्म जांणें, तिण धर्म न ओलख्यो आछे॥ २२॥

आछों आछों खाये तिणरी दया सुधारे, उणी रहे तो उवा दया विगाडें ।
एहवी रस ग्रिधणीया जीभ्या री लपटण, ते पेला नें कदेय न तारें रे ॥ २३ ॥
मिनष आंतरीयो घुरल कें जूतों, तिण उपर दया पलावें ।
उणरें प्रांण छुटण री त्यारी हुइ छे, तिण घर वेठी लाडू खावे रे ॥ २४ ॥
उण मादा तणा सुर बाज रह्या छे, दोहरा लेवें छे सांस उसांस ।
ए लाडू खाती दहो रा लेवें सबडका, वले मन मे आण हुलास रे ॥ २५ ॥
तिण मांदा ने तिण दिन मरतों जाणे ने, लाडू दही तिहां थी उठावें ।
दूजें टक खावा रें ताइ, ओर जायगा आंणे ने खावे रे ॥ २६ ॥
मिनष आंतरीयों घुरलकें जूतों, तिणरा मुख सूं दया बोलावें ।
ते मूआ पछें तिणरा न्यातीलां रे घर, घूरलाका रा दान रा लाडू खावें रे ॥ २७ ॥
एहवी रीता हाथां री बायां बारणें बेंसाणे, त्यांनें जीमाया भलो न होगा ।
ए प्रतष कुसावण दीसें लोका रे लेखे, जाणे मादा उपर नाचे मोगा ॥ २८ ॥
मंजारी जिम फिरती रहे छे, जीमणवार री खबर रें ताइ ।
आछा खावा रो व्यांन लग रह्यों त्यारो, ताणा वेजा लागा तिण माही ॥ २९ ॥
किणरें आरो मोसर जीमण करता, बारदानों वधीयो सुणें ताय ।
जब रस ग्रिघणीयां जिभ्या री लपटण, तिण दोली फिरे छे जाय ॥ ३० ॥
कहे मोने लाडू खवाय ने दया पलावें, थाने इण बात रो होसी धर्म ।
म्हे लाडू खाय नें उपवास करस्या, तिणसू थारे पिण कटसी कर्म ॥ ३१ ॥
जब वा बाइ थोडो हुंकारो भरे तो, ए खावा ने होय जावे तयार ।
धर्म रा लाडू खाती नही लाजें, त्यां विकला नें तीन धिकार रे ॥ ३२ ॥
ठंडी रोटी ने घाट सू दया पलावे, तो मुख सू कर दें नाकारो ।
ताजा माल सांटें त्याने दया पलावे, तो ए तुरत हुवे खावा ने तयारो रे ॥ ३३ ॥
ओ तो खावा तणी गटकाया उघाडी, त्याने पोष्यां बंधे पाप कर्मो ।
तिणमे धर्म जाणें कुगुरा रा कह्या थी, ते पिण भूला अग्यानी भर्मो रे ॥ ३४ ॥
एहवी खावा तणी गटकाइ त्यानें, वुधवत जाणे धर्म ठगों ।
धर्म रे ओले खाए ते धर्म ठगारी, भोला लोका ने देवें छे दगो ॥ ३५ ॥
दस वीस कोस उपर पकवान सुणे तो, हीडोला खावां नें दोड्या जावे ।
ए तो घरे वेठी गुर री दलाली सू, दोनू टका लाडूडा खावे रे ॥ ३६ ॥
हीडोला में वीस कोस खाबा पड्या जव, एक टक पिण नीठ सूं खावें ।
याने घरे वेठा मिलें दोनूं टक लाडू, त्यासू लाडू छोड्या किम जावे रे ॥ ३७ ॥
हीडोला तो जाये जीमे न्यात रे लेखें, ते पिण निरलज हीडोला बाजे ।
ए पिण धर्म रा लाडू खावे निरलजीयां, वेसरम्यां मूल न लाजे ॥ ३८ ॥

ओसर मोसर विनां पलार घरे, जाए बेंठी पग पसार।
हींडोला जिम जीमें धर्म रे लेखें, घिग त्यांरो जमवार रे॥ ३९॥
मोटका घर रा केइ डाहा हुवें ते, विचार करें मन मांहीं।
आपरा घर री लाडू खावा जाती हुवें, तिणनें पर घर जावा दें नांही॥ ४०॥
रुलीयार ढोर ज्यूं रुलीयार हुवें ते, वरजें तोही वरजी न लागें।
दया पलावण रा लाडू कानें सुणें तो, होय जाए सगला रें आगें रे॥ ४१॥
दया रा लाडू खावा नें उमाइ, आंमी सांमी घणी जण्यां भटकें।
त्यांसू जिभ्या तणो चट रस नही छूटें, गटकाया हिली छे गटकें रे॥ ४२॥
यांरे मूंदें तो रीता हाथा री वायां, कदा कांयक सुहागण आवें।
तिणने पिण कर दे गटकाइ, तिण सूं आ पिण त्यांमें जावे रे॥ ४३॥
वीजासणीयां में खेतलो देवें, खेतला विण विजासणीयां नांहीं।
ज्यूं रीता हाथां री दया पालें छें, तो ही भेषधारी त्यां मांहीं रे॥ ४४॥
यांनें दया तणा लाडू खावा री, भेषधार्यां कुबद सीखाइ।
आप तणा मुतलब रें तांइ, आ कुगुरां कुबद चलाइ रे॥ ४५॥
गाय सुखी हुवां गर्भ सुखी हुवें, कूए हुवें तो अवालें आवें।
जांणें यांनें खवावसी तो मांनेंइ वेरासी, तिण कारण ए चाला चलावें रे॥ ४६॥
कोई पांच तिथां उपवास करती न दीसें, न करे एक टक पोहर बेपारी।
तिणनें लाडूआ साटें उपवास करावें, तिथां विनां हुवें उपवास नें तयारी रे॥ ४७॥
जो यांरें दया पालण रा परिणांम हुवें तो, घर री रोटी खाए दया पालो।
उपवास करें वले करदों पोसो, छ काय तणो करो टालो रे॥ ४८॥
ए सांप्रत लाडू खाए धर्म लेखें, त्यांनें पूछ्यां बोल जाए कूर।
मूंहपती बांधे नें झूठ बोलें छें, त्यांरी दया में पड गइ धूर रे॥ ४९॥
ब्राह्मण तो मनसा भोजन धर्म रो जीमें, त्यांरों तो कुल में चेंहरों न थाय।
माहजन री वेट्यां धर्म रा लाडू खाए तो, त्यांरी निंद्या हुवें लोकां मांय रे॥ ५०॥
ब्राह्मण तो धर्म रे लेखें भाता लेवें, दिषणा दीयां लेवें धन धांन।
इत्यादिक यांनें देवें ते लेवें, ते तो लेता न करें अभिमांन रें॥ ५१॥
यांनें मनसा भोजन आदि देवें नें लेवें, यांरा कुल री छें आहीज रीत।
जो इण रीतें दांन महाजन री बेट्यां लेवें, तो लोकां में हुवें फजीत रे॥ ५२॥
आंतरीया ऊपरला लाडू खावें, त्यांनें भातादिक देवें सर्व लेंणों।
ब्राह्मण तो दातार नें धर्म कहेलें, ज्यूं यांनें पिण धर्म केंणों रे॥ ५३॥
धर्म रा लाडू तो खाती नही लाजें, तो भातादिक लेती लाजें कांय।
धर्म रो लेंणो मांड्यो तो सब ही लेणों, लेखो कर देखों मन मांय रे॥ ५४॥

ब्राह्मण तो दातार ने आसीस देवे छे, दोनूं हाथ जोडी नमे सीस।
ज्यूं ए पिण धर्म रा लाडू खाए ने, दातार ने देणी आसीस रे॥ ५५ ॥
आणद आदि देई श्रावक अनेक हुआ त्या, एहवी देया तो किण ही न पलाइ।
किण ही सूतर मे चाली नही दीसे, थे आ कुबद कठाथी चलाइ रे॥ ५६ ॥
त्यारे कोडाग मे धन घर माहे हुतो, जीव रा पिण किरपण नाही।
एहवी दया पलाया में धर्म जांणें तो, आघो न काढता काई॥ ५७ ॥
आगे गोतमादिक साध अनेक हुआ त्या, एहवी दया पालणी कही नाही।
लाडू खावां खवाया तो हिंसा उघाडी, तिणमे कला मत जाणो काई रे॥ ५८ ॥
एहवी दया भेषधारया सीखाई, तिणमे दया नही तिलमात।
लोलपणो तो उघाडो दीसे, वले छ काय तणी हुवे घात॥ ५६ ॥
लाडूवा खाणी दया ओलखावण, जोड कीधी नाथ दुवारा मझार।
सवत अठारे ने वरस छपने, पोह विद बीज सनीसरवार रे॥ ६० ॥

ढाल : १९

दुहा

अंबरसिन्यासी श्रावक थयो, ते हुवो साधां रो सुवनीत।
तिण लीधा व्रत चोखा पालीया, पिण छोडी नही मत रीत ॥ १ ॥
तिणरे भगवां वसतर पेहरणें, डंड कमडल तिणरें हाथ।
ओर उपगरण सिन्यासी तणां, ते लीया फिरें छें साथ ॥ २ ॥
काचों पांणी नदी तणों, ते पिण निरमल बेहतों जांण।
ते पिण दीधो दातार नो, ते पिण पांणी लेणो छांण ॥ ३ ॥
ते पिण पांणी सावद्य जिण कह्यो, तिण पांणी रों अंबर ने आगार।
अचित पांणी नें उन्हां पांणी तणो, तिण त्याग कीयो परिहार ॥ ४ ॥
आ रीत छें सिन्यासी तणी, छूटती नही दीठी तास।
तिण श्रावक रा व्रत आदर्यां, श्री वीर जिणंद रें पास ॥ ५ ॥
तिणरें विरत आदरतां इविरत रही, ते एकंत अधर्म जांण।
ते आश्रव पाप ना बारणा, तिण सूं पाप लागें छे आंण ॥ ६ ॥
तिणरों खांणो पीणों नें पेंहरणों, वले उपधि उपभोग परिभोग।
ते सगलाइ राख्या ते इविरत में, त्यांनें भोगव्यां सावद्य जोग ॥ ७ ॥
भोगवे ते पेंहले करण पाप छें, भोगवावे ते दूजे करण जांण।
सरावें ते करण तीसरें, सारां रे पाप लागें छें आंण ॥ ८ ॥
केइ अग्यांनी इम कहे, अबर नें जीमायां धर्म।
त्यां जिण मारग नही ओलख्यों, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ ९ ॥
अंबर कीधो छें सों घरां पारणों, ते निश्चेइ इविरत में जाण।
ते अथा तथ परगट करूं, ते सुणजो चतुर सुजांण ॥ १० ॥

ढाल

[दया भगवती छे सुख दायी]

केइ कहें अंबर सिन्यासी श्रावक, सो घरां पारणों कीधो तामो जी।
सों घरां रात रों बासों कीधों, ते धर्म दीपावण कांमो जी।
बुधवंत ग्यात करी नें देखो* ॥ १ ॥
सों घरां अंबर पारणों कीधों, सों घरां बासों लीयों ताह्यो जी।
कोइ धर्म दीपावण रो नांम लेवें छें, ते एकत मूषावायो जी ॥ बु० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सो घरां अंवर पारणों कीधों, सो घरां वांसों लीयो ताह्यों जी।
तिणरो न्याय न जाणे अग्यांनी, थोथो करे वकवायो जी॥ ३॥
अवर सिन्यासी सो घरां पारणो किधो, सो घरा वीसों कीयो छे तामो जी।
तिण घणा लोकां नें विसमय उपजावण, वेक्रे लवध फोरवी इण कांमो जी॥ ४॥
वेक्रे लवध फोरवी ते सावद्य जोग, वेक्रे सरीर कीयों तिण कालो जी।
वेक्रे सरीर करतां पाच किरीया लागी, तिण सूं पाप लागो दग चालो जी॥ ५॥
काइया अहिगरणीया ने पाउसीया, पारितावणीया पाणाइवायो जी।
ए पांच किरीया लागें वेक्रे कीधां, पन्नवणा छतीसमां पद माह्यो जी॥ ६॥
वेक्रे करने सों घरां वासो लीधों, वेक्रे कर सो घरां कीयों आहारो जी।
ए तीनूं किरतव जिण आगन्या वारें, ते सावद्य जोग व्यापारो जी॥ ७॥
धुर सू वेक्रें कीयों ते सावद्य जोग, दूजो सो घरा कीयो आहारो जी।
तीजों सों घरां वासो लीधो, ए तीनू सावद्य जोग व्यापारो जी॥ ८॥
ए तीनूंइ किरतव सावद्य कीधा, ते तो विसमे उपजावण कामो जी।
कोइ कहे धर्म दीपावण कीधा, ते भूठ वोले वेफांमो जी॥ ९॥
धर्म दीपावण सों घरा पारणो कीधो, तो थे सूतर मे काढ वतावो जी।
जो थे सूतर मांहे नही काढो तो, गाला रा गोला मती चलावो जी॥ १०॥
पारणो कीधों सों घरा धर्म दीपावण, आ तो उठी जठाथी भूठी जी।
ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी, त्यारी हीया निलाड री फूटी जी॥ ११॥
सो घरां पारणों कीयो विसमय उपजावण, ते तो उघाडो सावद्य साख्यातो जी।
तिण मांहे धर्म कहे छे अग्यांनी, ते प्रतख भूठ मिथ्यातो जी॥ १२॥
लवध फोडवीयां जिण मारग दीपे तो, गोतमादिक साध अनेको जी।
तो लवध घणेरी हुंती, ते तो मारग दीपावत वशेखो जी॥ १३॥
आप ने ओरां ने विसमय उपजावे, तिणने चोमासी प्राछित आवे जी।
नसीत रे इग्यारमे उदेसे, तिणमे धर्म किहांथी थावे जी॥ १४॥
विसमे ने इचरज कतोहलादिक विद्या, मत्र इद्रजालादिक जाणो जी।
ते विसमे उपजावण अंवर सिन्यासी, फोडवी लवद पिछाणो जी॥ १५॥
साधु विसमें उपजावे तों प्रायछित आवे, लागे एकत पाप कर्मो जी।
तो अंवर सिन्यासी विसमय उपजाइ, तिणने किण विध होसी धर्मो जी॥ १६॥
केइ कहे श्रावक रतना रो भाजन, तिण पोख्यां छे एकत धर्मो जी।
पाप रों अंस तो मूल न लागे, कटें निकेवल कर्मो जी॥ १७॥
जो श्रावक नें पोख्यां मे पाप हुवे तो, अंवर नें पारणों नही करावत जी।
अंवर सिन्यासी पिण श्रावक हूंतों, सो घरा पाप नही लगावत जी॥ १८॥

यूं कहि कहि अग्यांनी श्रावक जीमायां, थापें छें एकंत धर्मो जी।
तिणनें विरत इविरत री खबर न कांई, भूला अग्यानी भर्मो जी ॥ १९ ॥
अंबर सिन्यासी सो घरां पारणों कीधो, तिणनें सों घर रो पाप लागो जी।
तिणरें खांणों पीणों सारो इविरत में थो, इविरत सेवी पिण वरत न भागों जी ॥ २० ॥
अंबर सिन्यासी सों घरां पारणो कीधो, सों घरां रो लागो छें पाप कर्मो जी।
तिणनें पारणो कराय पाप लगायों, त्यांनें किण विध होसी धर्मो जी ॥ २१ ॥
अंबर नें पेंलें करण पाप हूवों छें, तो करावण वालो दूजें करण जाणों जी।
सरावण वालों तीजे करण पापी, यानें रूडी रीत पिछांणो जी ॥ २२ ॥
अंबर नें काचो पांणी लेवण री, सर्व नदी री आगन्या दीधी जी।
तिणनें धर्म कहें छें अग्यानी, तिण हिंसा धर्म री थापना कीधी जी ॥ २३ ॥
जीव रो गटको करण री आगन्या देसी, तिणरे निश्चें बंधसी पाप कर्मो जी।
तिण माहें धर्म कहे छें पाखंडी, ते भूला अग्यानी भर्मो जी ॥ २४ ॥
तीन काल रा श्रावक त्यांरों, खांणो पीणो एकंत अधर्मो जी।
ते अंबर नें पारणो करायां, किण विध होसी धर्मो जी ॥ २५ ॥
अंबर पारणो कीधो छे तिणरो, अंबर ने पाप लागो छे तांमो जी।
करावण वाला नें करावण रों पाप, यांरा जूआ जूआ परिणामो जी ॥ २६ ॥
पेला रों लगायों तो पाप न लागें, आपरो लगायो पापज लागें जी।
सावद्य जोग दोयां रा जूआ जूआ वरत्या, त्यांरों पाप लागो छे सागे जी ॥ २७ ॥
अंबर तो सों घरां पारणो कीधों, तिणनें सिन्यासी जांण करायो जी।
करणवाला नें करावणवाला नें, भगवते नही सरायो जी ॥ २८ ॥
अंबर सों घरां पारणों कीधो, सो घरां वासो लीयो ताह्यरें जी।
तिण सावद्य कांम कीयो जब लोकां, सिन्यास्यां रो मारग दीपायो जी ॥ २९ ॥
जिण मारग मांहें कोइ लबध फोडवी तो, भगवंत नहीं सरावे जी।
तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबध, तिण में धर्म केम बतावें जी ॥ ३० ॥
अनेरा भेष में केवल ग्यांन उपजें, ते तो नही बागरें वाणी जी।
त्यां कनें दिष्या लेवें तो दिष्या न देवें, मिथ्यात वधतों जाणी जी ॥ ३१ ॥
वांणी वागरीयां लोक सुणे इम बोलें, यामेंइ उपजें केवल नांणो जी।
अनेरा मत री वधें परसंसा, वांणी नहीं बागरे इम जाणो जी ॥ ३२ ॥
केवल ग्यांनी अनेरा मत री, महिमां वधती जांणी जी।
पाखंड मत ने वधतो देख्यों, यूं जांणे नहीं बागरी वाणी जी ॥ ३३ ॥
तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबद, तिणनें लबध जीरवी नाही जी।
तिण विसमें उपजावणा फोडवी लबद, तिणमें धर्म नही छे कांई जी ॥ ३४ ॥

सिन्यासी रा भेष मे लबद फोडवी, तिण सिन्यासी री महिमा वधारी जी।
आपरें छादे लवद फोडवी तिणने, जिण आगन्या नही छे लिगारी जी ॥ ३५ ॥
जब कोइ कहे अंबर ने कह्यो अराधक, तिणने वीर जिणंद सरायो जी।
पांचमे देवलोके देवता हूवो, ते मिनष थइ मोष जायो जी ॥ ३६ ॥
अबर तो अराधक हूवो, चोखा वरत पाल्या सू जाणो जी।
पिण लबध फोडवी तिण सू नही हूवो, तिणरी सूतर सू कीजो पिछाणो जी ॥ ३७ ॥
अनेरा भेष मे केवल ग्यान उपनो, ते भेष छे पेहरण तामो जी।
त्यानें साध श्रावक जाणें केवल ग्यानी छे, पिण वादे नही सीस नामो जी ॥ ३८ ॥
तिण भेष थका साध श्रावक वादे, तिण मत रा पाखडी गूजे जी।
जांणे म्हाराइ मत मे केवल ग्यान उपजे, त्याने उडी तो मूल न सूझे जी ॥ ३९ ॥
कदा साध श्रावक जो त्याने वादे, तो बिगडे छे जाबक बातो जी।
घणा लोक त्यांरी देखा देख वादे, जब वधें घणो मिथ्यातो जी ॥ ४० ॥
गोतम सामी पूछयों भगवत ने, अबर सिन्यासी छे तांमो जी।
इण काई करणी करे लबध पाइ छे, लबद फोडवे छे किण कामो जी ॥ ४१ ॥
जव वीर जिणेसर कहे गोतम नें, सुण तू अबर री वातो जी।
अबर सिन्यासी प्रकत रो भद्रीक छे, जाव विनेवत साख्यातो जी ॥ ४२ ॥
अबर सिन्यासी वेले वेले निरतर, आंतरा रहीत तपसा कीधी जी।
दोनूइ वाह्या उची राखी ने, सूर्य सामी आतापना लीधी जी ॥ ४३ ॥
आतपना भूम नदी तट माहे लेता, आया सुभ परिणामो जी।
भला अधवसाय आया तिण काले, निरमली लेस्या वरती तामो जी ॥ ४४ ॥
एकदा प्रस्ताव तदावर्णी कर्म, षयोपसम कर्म हूवा चकचूरी जी।
विचारणा करता तिण काले, वीर्य लवद पामी छे रूडी जी ॥ ४५ ॥
वेक्रें करवा री सक्त पामी, वले पामीयो अवधि गिनानो जी।
वीर्य लवद छता रूप सकत, वेक्रे सू करें रूप असमानो जी ॥ ४६ ॥
वेक्रें लवद फोडवे वेक्रे रूप कर ने, सो घरां पारणो कीयो तांमो जी।
वले वासो सों घरा मे लीधो, ते विसमे उपजावण कामों जी ॥ ४७ ॥
वले गोतम सामी पूछयो भगवत ने, अबर मरने किहां जासी जी।
जव वीर कहे पाचमे देवलोके, महीढीक देवता थासी जी ॥ ४८ ॥
देव चवी महाविदेह षेतर मे, चारित पाली निरदोषो जी।
आठोई कर्म तणों षय कर नें, पाधरों जासी मोखो जी ॥ ४९ ॥
अबर सिन्यासी री वेक्रें लब्द ओलखावण, जोड कीधी गोघूंदा मझारो जी।
सवत अठारें सतावनें वरसें, चेत सुदि चोथ ने बुधवारो जी ॥ ५० ॥

ढाल : २०

दुहा

केइ हिंसा धर्मी जीवडा, 'ते जीव मार्‍यां कहें धर्म।
ववेक विकल सुध बुध विनां, भूला अग्यांनी भर्म॥ १ ॥
जिण आगम अर्थ ऊंधा करें, वले कूडा कुहेत लगाय।
हिंसा कराय जीवां तणी, घणो हरस धरें मन मांय॥ २ ॥
टीका चूर्ण भास निर्युक्ति नां, यांरा करे घणा वखांण।
ए च्यारूंई नहीं जिण भाखीया, त्यांरी बुधवंत करजो पिछांण॥ ३ ॥
एबारे काली पछे कीया, भिष्ट आचार्‍यां आप रे छंद।
त्यांमें विवध पणे भूठ गूंथ नें, चोडें मांड्यों भोलां नें फंद॥ ४ ॥
ज्यूं ज्यूं अणाचार सेवीयां, ज्यूं ज्यूं घाल्या टीकादिक मांहि।
वले उंघी उंधी सरधा घणी, ते घाली टीका में ताहि॥ ५ ॥
जीव हणवा रों उपदेस दें, घणी खोटी परूपें छें ताय।
थोडी सी परगट करूं, ते सुणजों चित्त ल्याय॥ ६ ॥

ढाल

[रे प्राणी कर्म समो नहीं…]

देव गुर संघ काजें चक्रवत री सेना, कहे साध करें चकचूरों।
जो नहीं करें तो दसमो प्राछित आवें, थे इसडो म भाषो कूडो रे।
कुमत्यां हिंसा धर्म कांय थापो रें* ॥ १ ॥
थे भगवंत भाष्या सूतर बाचो, वले साध लोकां मांहें बाजों।
जीव मार्‍यां में धर्म परूपों, इसडो म करों अकाजो रे॥ कु० २ ॥
गोसाले दोय साध भगवंत रा बाल्या, वले वीर नें कीयां लोही ठांण।
त्यां साधां में सकत थी गोसाला बालण री, पिण खमता कीधीं सुमता आंण रे॥ ३ ॥
ओ प्रतख गोसालो प्रतणीक हुवो, तिणरी साधां न करी घात।
थे प्रतणीक मार्‍यां में धर्म बतावों, ते मूरख मांनें बात रे॥ ४ ॥
प्रतख गोसालो प्रतणीक नें, जो नहीं हणीया प्राछित आवें।
तिण लेखें भगवंत रा साध लब्द धारी, प्राछित लीयां सुध थावें रे॥ ५ ॥
सुमंगल आचार्य गोसाला नें बालसी, ते पिण मुख सूं बोलसी न्याय।
हूं छती सकत्त समर्थ नहीं खमवा, अवगुण काढसी आप मांय रे॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले दोय साधां रा ने वीर रा गुण गावसी, कहसी तोनें न बाल्यों तिण वार।
त्यांरो छती सकत चोखें चित खमीयों, ते धन मोटा अणगार रे॥ ७ ॥
सुमंगल आचार्य गोसाला नें बालसी, तिणने बतावो थें धर्म।
ते क्रोध करे घात करसी राजा री, तिणरे बंधसी निकेवल करम रे॥ ८ ॥
कोइ लब्द धारी साध लब्द फोड नं, करे मिनषांदिक नी घात।
ते जिण आग्या लोपे हुवो विराधक, तिणमे धर्म कहें ते मिथ्यात॥ ६ ॥
निंदक जीवां ने मार्‌या धर्म थापो थें, ते चोडे कहो छो लोकां नें।
वले धर्म कहो निंदक ने मार्‌या, ते तो मूढ मिथ्याती माने रे॥ १० ॥
तीन सो तेसठ पाखंडी हुंता, त्या घणा जीव मिथ्यात मे पाड्यां।
वले निंदक पूरा श्री जिण धर्म रा, त्याने साधां क्यू नही मार्‌यां रे॥ ११ ॥
देवल काजें बलद मूआ तिणनें, आठमों सरग बतावो।
एहवा गोला थें गाला मां सूं फेंको, भोला नें कांय थें भरमावो रे॥ १२ ॥
काजी मुल्ला जबें करें छें, ते कहे म्हे करा छां हलाल।
म्हें जीव मारां ते भिसत पोंहचावां, एहवो थें पिण मांड्यो छें ख्याल रे॥ १३ ॥
थें बलदा नें मारें देवलोक पोंहचावो, ते एकत मूसा बायो।
हिवें ओहीज प्रश्न पूछीयां थानें, मत करजो बकवायो रे॥ १४ ॥
थारा गुर गुर भाई कुटंब न्यातीला, त्याने संथारो कांय करावों।
यारे पिण माथे मोटी सिला देईं नें, सुध गति क्यूं नही पोहचावों॥ १५ ॥
थें देवल काजें पथर आंणो जब यारें माथें पिण आण्या किम दोष।
याने पिण बलदा जिम मारें, क्यूं नही मेलो मोख रे॥ १६ ॥
देवल काजे साध श्रावक मारें, तिणनें किम गिणसो दोखो।
तो ही श्रावक नें बारमे देवलोक नही मेलो, साधा नें पिण नही मेलो मोखो रे॥ १७ ॥
साध श्रावक नें इम सुध गति नही मेलो, त्यारो जीतव नही थें सुधारो
तो रांक गरीब बापडा बलदा नें, देवल काजें कांय मारो रे॥ १८ ॥
जो बलद मरे आठमें सरग जावें, आ बात जांणो थें साची।
तो पथर रा जीवां री देवल प्रतिमा हुई, यारी पिण गति होसी आछी रे॥ १९ ॥
वले छ काय मूई मरे नें वले मरसी, ते पिण देवल रे कांमे।
जो बलद मूंआ आठमे सरग जावें, तो सगलाई सदगति पामें रे॥ २० ॥
बलद मरे ते पर वस दुखीया, यांरे उसभ उदे हूआ आयो।
त्यानें विनां परिणांमा सदगति किम होसी, वले इम हीज जांणो छ कायो रे॥ २१ ॥
सिलावट मरें कोइ देवल करतो, तिणने कहो बारमों देवलोक।
ओ पिण गोलो निकेवल गालां रो, ते पिण जांणों फोको रे॥ २२ ॥

हिंसाधर्मी जीव मरायां रो, मूल गिणें नहीं दोख।
भोलां नें भरमावें अग्यांनी, वले कहें यांने होसी मोख रे॥ २३॥
पेंलां ने मार्‍यां धर्म परूपें, आप नें मार्‍यां न कहें धर्मो।
ववेक विकल सुध वुध विनां बोले, ते भूला अग्यांनी भर्मो रे॥ २४॥
धर्म रे कारण जीव हणें त्यांरो, मत छें जावक मूंडो।
त्यांरो सरधा कोइ मूरख मांनें, ते पिण नर भव खोय बूडो रे॥ २५॥
केइ ब्राह्मण कहें बकरा होमण रो, मुख सूं किण विध कहिसो।
जे थांरे करणों छें होम बकरा रो, तो थें सावधांन थकां रहिसो रे॥ २६॥
म्हें वेद भणतां भणतां बोलां जव, कहां अजा होमण रो पाठ।
जव थें अजा होम छाली रा जायां रो, होम में न्हांखज्यों सिर काट रे॥ २७॥
ज्यूं थें पुफांरो हण नें फलां रो हणवा रो, पाठ कहें नें समझावो।
उवें जीव होमें नें जज्ञ करावें, ज्यूं थें पिण पूजा करावो रे॥ २८॥
यांरा यज्ञ होम में थें पाप बतावो, तो थांनें धर्म होसी किण लेखें।
ओ तो किरतव छें दोयां रो बरोबर, निज खोटी सरधा नहीं देखें रे॥ २९॥
उवें सिर कटाय होम मांहें नखावें, थें प्रतिमा काजें हणावो।
जो यांनें पाप तो थांनेंई पाप छें, ओ जोवो उघाडो न्यावों रे॥ ३०॥
केइ सिरदार चोरादिक नें मरावें, जव कहें दूध पीवा जाय।
जव अटवी मांहें तिणनें ले जावें, जुदा करें जीव काय रे॥ ३१॥
ज्यूं थें पिण छ काय रा जीव मरावो, जव पूजा रो नांम बताय।
जव गृहस्थ तो छ काय जीवां रा, जुदा करें जीव काय रे॥ ३२॥
चोरादिक मरावें ते खून कीयां थी, ते मन मांहें पिण पिछतावें।
थें हर्ष धरी धर्म हेत मरावो, थांनें पिछतावो पिण नहीं आवें रे॥ ३३॥
कसाई जीव हणियां तो पाप जांणें छें, तिणसूं मरावें छें गरथ देई।
थें जीव हण्यां रो पाप न जांणों, तो क्यूं नहीं मरावो छो थेंई रे॥ ३४॥

रत्न : ३२

श्रद्धा री चौपई

ढाल : १

दुहा

ठांणा अंग माहे कह्यो, दस प्रकार रो मिथ्यात।
त्यांरो विवरा सुध निरणो कहूं, ते सुणजो विख्यात॥ १ ॥
अधर्म ने धर्म सरदहे, धर्म ने सरधे अधर्म।
ते मूढ मिथ्याती जीवडा, भूला अग्यांनी भर्म॥ २ ॥
अजीव ने जीव सरदहे, जीव ने सरधे अजीव।
उण जीव अजीव न ओलख्या, ते पिण मिथ्याती जीव॥ ३ ॥
कुमारग ने मारग जांणे मोष रो, मारग ने कुमारग जाणें मूढ।
ते मिथ्याती सुध बुध बाहिरा, कर रह्या कूडी रूढ॥ ४ ॥
केई असाध ने साध सरधता, केई साध ने सरधे असाध।
ते बूडा मोह मिथ्यात मे, श्री जिण वचन विराध॥ ५ ॥
मोष न गया कर्म खपाय ने, त्यांनें सरधे अग्यानी मोष।
मोष गया ने मोष सरधे नही, ते सरधा घणी छे सदोष॥ ६ ॥
ए दस प्रकार नां मिथ्यात मे, ऊधो सरधे एक बोल।
त्यानें निश्चे मिथ्याती सरधजो, आख हीया री खोल॥ ७ ॥
भेषधारी ववेक रा विकल घणा, त्यारो जुदो जुदो समदाय।
उंधी सरधा पिण यारी जू जूई, पिण आधां ने खबर न कांय॥ ८ ॥
त्यांरो सरधा आचार नही सारिखो, तोही सरधे माहोमा साध।
त्यारे बोलेइ बंध दीसे नही, मांहोमा पिण करें विषवाद॥ ९ ॥
अधकार घणो यारा भेष मे, तिणरो कुण काढे नीकाल।
हिवे थोडोसो परगट करू, ते सुणजो सुरत संभाल॥ १० ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

यांरे पेहरण साग साधा तणो रे, वले रह्या लोका मे पूजाय रे सुगुणनर*।
ए कुबदी खेला ज्यूं नाचता रे लाल, पिण विकला ने खबर न काय रे सुगुण नर।
जोयजो अधारो भेष मे रे लाल*॥ १ ॥
केई सूतर सिद्धांत रा न्याय सू रे लाल, जोड करे सुध मान रे। सु०।
तिणमे केयक तो अधर्म कहे रे लाल, केई सरधे एकंत धर्म ध्यांन रे॥ सु० जो० २ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जोड करणी निषेदें ते यांनें गिणें रे लाल, निन्हवां री पांत मांय रे।
ते नांम ले सुयगडा अंग नो रे लाल, तेरमों अधेन बताय रे॥ ३ ॥
वले जोड करे त्यांनें घालीया रे लाल, वेस्या रा करंडिया मांय रे।
पलमां रा गेंहणा सरीषा कीयां रे लाल, ठांणा अंग चोथो ठांणो बताय रे॥ ४ ॥
इत्यादिक अवगुण कहे घणा रे लाल, जोड करे तिण मांय रे।
वले भूठा बोला सरधे तेहनें रे लाल, यांनें जाबक दीया उडाय रे॥ ५ ॥
जोड करणी थापें ते यांनें इम कहे रे लाल, ए भूठ बोले बेफांम रे।
जोड करणी उथापें अन्हाखी थकां रे लाल, भूठा भूठा ले सूतरां रा नांम रे॥ ६ ॥
कहे साधु तो जोडे जुगत सूं रे लाल, सूतर केरे न्याय रे।
पिण कुबदी करे कदाग्रहो रे लाल, पिण सुबुधी रे आवे दाय रे॥ ७ ॥
वीर वखाणी बुध उतपात री रे लाल, नन्दी सूतर रे मांय रे।
वले श्रुत गिनांन रा भेद सू रे लाल, म्हे जोड करां इण न्याय रे॥ ८ ॥
वले ठांणा अंग नवमा ठांणा मझे रे लाल, उत्तराधेन गुणतीसमां मांय रे।
यांरा अर्थ तणा विसतार सूं रे लाल, म्हें जोड करा इण न्याय रे॥ ९ ॥
इत्यादिक अनेक सूतरां तणा रे लाल, नांम ले ले थापें करणी जोड रे।
जोड करणी उथापे तेहमें रे लाल, सरधें छें मोटी खोड रे॥ १० ॥
एक थापें एक उथपें रे लाल, इण विध करे मांहोमां विवाद रे।
यांरे भगडो लागो पीढीयां लगे रे लाल, यांमे कुण छे साध असाध रे॥ ११ ॥
यांमें कुण साचो कुण भूठो अछे रे लाल, कुण सूतर रो जांण अजांण रे।
यांमें साची सरधा रो कुण समकती रे लाल, यांमे कुण छे मिथ्याती अयाण रे॥ १२ ॥
भूठ बोल्यां भागे विरत दूसरो रे लाल, उंधो सरध्यां आवे मिथ्यात रे।
सूतर जोय निरणों करो रे लाल, आ मूंढा री नही छे बात रे॥ १३ ॥
केई अधर्म नें धर्म सरदहे रे लाल, धर्म नें सरधे अधर्म सदीव रे।
त्यांनें ठांणा अंग दसमें ठांणे कह्यो रे लाल, ये दोनूं मिथ्याती छे जीव रे॥ १४ ॥
यांरे लेखें उवे भूठ बोले घणो रे लाल, यांरे लेखें उवे बोले भूठा वाय रे।
वले सरधा पिण मांहोमां उंधी कहे रे लाल, चोडे असाध कहे छे मांहोमांय रे। १५ ॥
त्यांरे कांम पडे मुतलब तणो रे, जब यांनें पिण कह दे असाध रे।
ए कूड कपट केलवे घणो रे लाल, यारे किण विध होसी समाध रे॥ १६ ॥
उंधी सरधा नें भूठा बोला तेहनें रे, साध सरधे ते मूंढ अयांण रे।
ते निश्चें मिथ्याती जीव छे रे लाल, जिण मारग रा अजांण रे॥ १७ ॥
मांहोमांहीं साध थापें नें उथपें रे, करे विकलां वाली बात रे।
ए सूने चित्त बकबो करें रे, यांरा घट मां सूं न गयो मिथ्यात रे॥ १८ ॥

यामें केयक तो करे घणा रे, नरकादिक ना चितरांम रे।
तिणमें केयक तो अधर्म कहे रे लाल, केई धर्म कहे छें ताम रे॥ १९॥
चितरांम निषेधे करणा साध ने रे, वरज्यो कहे नशीत रे मांय रे।
चितरांम करणा थापे साव नें रे, ते देवे नन्दी सूतर मे बताय रे॥ २०॥
यांमे कुण साचो कुण भूठो अछे रे, कुण सूतर रो जांण अजांण रे।
यांमे कुण मिथ्याती ने कुण समकती रे, आ पिण न करे पिछाण रे॥ २१॥
एक वचन उथापें सिधात नो रे, रुले उतकष्टो काल अनत रे।
तो अनत ससारी कुण एह मे रे, इणरो निरणो करो बुधवत रे॥ २२॥
वलें साध मांहोमा ए सरदहे रे, ए इसडा छे मूढ अजाण रे।
याने वादे पूजे गुर जाण ने रे, ते पिण विकल समाण रे॥ २३॥
वासी ठडी रोटी लालरी मझे रे, केई कहें छे वेइद्री जीव रे।
केई कहे जीव निश्चे नही रे लाल, इम कर रह्या ताण अतीव रे॥ २४॥
ठंडी रोटी मे जीव सरधे तिके रे, टाले ग्रीषम रित ने चोमास रे।
ठडी रोटी में सरधे नही रे, ते वेहरे वारोई मास रे॥ २५॥
ठंडी रोटी लेनी थापें साध ने रे, ते बतावे अचारग री साख रे।
वले नाम ले दसमा अग नो रे लाल, यामे वीर गया छे भाख रे॥ २६॥
ठडी रोटी न लेंणी कहे साध ने रे, ते वतावें रस चलित रो पाठ रे।
एक थापे एक उथापे रे लाल, यारे ओ पिण माहोमा छे फाट रे॥ २७॥
ठंडी रोटी मे कहे छें वेइद्री रे, त्यारे लेखे उवे साध न होय रे।
जीवा नें खाय भूठ वोले तेह सूं रे, कहे भागा महावरत दोय रे॥ २८॥
एकद्री जीव खाए तेहने रे, साध सरधे त्यारे छे बूड रे।
तो ए खाए यारे लेखें वेइद्री रे, त्यानें साध सरधे तो एहीज मूंढ रे॥ २९॥
ठडी रोटी मे जीव सरधे नही रे, त्यारे लेखे उवे साध न होय रे।
ए भूठ बोलें छें घणा दिनां रे, यां दूजो वरत दीयो खोय रे॥ ३०॥
ठंडी रोटी मे कहे छे वेइंद्री रे, त्यानें निश्चे जाणे छे देता आल रे।
जो एहीज यानें साध लेखवे रे, तो ए पिण अग्यानी बाल रे॥ ३१॥
इण विध करे माहोमा निषेधणा रे, वले सरधे मांहोमांहि साध रे।
ए दोनूं वूडे छे वापडा रे, ए कर कर कूडो विषवाद रे॥ ३२॥
यारे न्याय निरणो तो दीसें नही रे, कूडी मांड रह्या घमडोल रे।
वले वेन्ध नही यारे वोलीए रे, यारा मत माहे मोटी भोल रे॥ ३३॥
कहिवा नें लोकां आगे तो इम कहें रे, म्हे तो साध सरधा माहोमांय रे।
पिण जावक उडावे जडां मूल सूं रे, तिणरी रेंस सुणो चित्त ल्याय रे॥ ३४॥

ज्यांनें साध चोडें मुख सूं कहे रे, त्यारी बंदणा देवें छुड़ाय रे।
आप आप तणा श्रावकां कनें रे, अवगुण अनेक दरसाय रे॥ ३५॥
पछें श्रावक त्यांनें वांदे नही रे, केइ उंचोई न करें हाथ रे।
तो साध मांहोमां सरखण तणी रे, बिखर गई विकलां री बात रे॥ ३६॥
यांरे श्रावक त्यांनें वांदे नहीं रे, जब मूल न राखी त्यांरी आब रे।
तोही कहें म्हांनें साध लेखवें रे, आब पाडी ते पिण देवे दाब रे॥ ३७॥
सुध साधां री संका घाल नें रे, त्यांरी वंदणा छुडावें कोय रे।
ते बूडा भव सागर मझे रे, केई अनंत संसारी होय रे॥ ३८॥
ए साध मांहोमां चोडें कहें रे, वले बंदणा छुडावे मांहोमांय रे।
ओ पिण न्याय निरणों नहीं रे, ए चोडें भूला जाय रे॥ ३९॥
यांमें आवें त्यांरा टोलां मांहिलो रे, तिणनें दिष्या दे लेवें मांय रे।
जब तो यांनें असाध निश्चें गिण्या रे, यांरी कांण न राखी कांय रे॥ ४०॥
वले केकण नें दिष्या विण मांहें लीए रे, जब यांरी पिण नही परतीत रे।
कदे थापें कदे उथपें रे, यांरे गेंहलां वाली छे रीत रे॥ ४१॥
दिष्या नहीं आवे तिणनें दिष्या दीये रे, दिष्या आवे तिणनें देवें नांहि रे।
तिणनें दिष्या आवे इण डंड में रे, जोवो वेतकल्प रे मांहि रे॥ ४२॥
इसडा दोष यांमें बतायां थकां रे, तिणरो नहीं काढे नीकाल रे।
कुड कुड नें कूके घणा रे, जांणें सीयाला रा स्याल रे॥ ४३॥
यांरे साध कहितां विरीयां नहीं रे, असाध कहितां नही कोइ बार रे।
ज्यांनें रात दिवस निषेदतां रे, त्यांसूं प्राछित विनांइ कर ले आहार रे॥ ४४॥
आहार पांणी भेलो कीयां पछें रे, जब तो सरधे मांहोमां साध रे।
वले आहार पांणी तूटां पछें रे, करे मन मांनें ज्यूं विषवाद रे॥ ४५॥
यांरे उसभ उदे रा जोग सूं रे, दिन दिन इधको बधें छें मिथ्यात रे।
वले वेधा उठायां रे नव नवा रे, ते इचरज वाली बात रे॥ ४६॥
धर्म अधर्म टाले आठ दांन में रे, केई कहें छें निकेवल धर्म रे।
केई मिश्र कहें छें आठ दांन में रे, ए तो भूला मांहोमांहि भर्म रे॥ ४७॥
नव प्रकारे पुन नींपजें रे, यांरे ते पिण सरधा नही एक रे।
उंधी करें मांहोमां परूपणा रे, तिणमें विगटें छें बोल अनेक रे॥ ४८॥
केइ कहें सुपातर कुपातर भणी रे, सचित्त अचित देवें हर कोय रे।
तिणमें एकंत धर्म पुन नीपजें रे, केइ कहे मिश्र धर्म होय रे॥ ४९॥
कोरो काचो अनादिक रांध सेक नें रे, सर्व जीवां नें देवें कोय रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई कहें धर्म नें पाप दोय रे॥ ५०॥

आधाकर्मी वेंहरावे कोइ साध नें रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें साख्यात रे॥ ५१॥
कोई नेहत जीमावे श्रावका भणी रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे साख्यात रे॥ ५२॥
भात वरोटी खरचादिक जीमण करे रे, आरभ कर कर जीमावे सारी न्यात रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे विख्यात रे॥ ५३॥
गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, सगलां ने देवे अणुकम्पा आण रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे कर कर तांण रे॥ ५४॥
गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, राधे रावे सगलां ने देवें कोय रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई कहे छे धर्म ने पाप दोय रे॥ ५५॥
खणावें तलाव कूआ बावडी रे, घणा जीवा री अणुकम्पा आंण रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छे ताण ताण रे॥ ५६॥
कोइ काचो पांणी पावे सकल नें रे, ते पिण अणगलीयो तिणमे तसकाय रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छे तिण माय रे॥ ५७॥
काचो पांणी उकाले भर भर ठांमडा रे, साधा ने वेंहरावण ताहि रे।
तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छे तिण माहि रे॥ ५८॥
काचो अणगल पाणी उंनो करे रे, सगला नें पावा कांम रे।
तिण में केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र धर्म कहे ताम रे॥ ५९॥
केई जायगां करावे छे जू जूइ रे, सगलां ने माहे रहवा काम रे।
तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण ठांम रे॥ ६०॥
मठ आसन बंधावे जोगी कारणे रे, भगत काजे मढी ने धर्मसाल रे।
तकीयो बंधावे फकीर रे रे, जती काजे उपासरो पोसाल रे॥ ६१॥
थांनक करावे केई साध रें रे, श्रावक काजे पोषध साल रे।
घर हाटादिक भवन मेंहलायतां रे, करावे जयाजोग संभाल रे॥ ६२॥
इत्यादिक जायगां कर कर देवें सकल नें रे, ते हण हण जीव छ काय रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे॥ ६३॥
पाट बाजोट करावे विरष बाढ नें रे, पछें देवे सगलां ने दांन रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छे कर कर तांन रे॥ ६४॥
केई वसतर वणाय धोवाय नें रे, पछे देवें सगलां ने ताहि रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छे तिण माहि रे॥ ६५॥
केई दोपद चोपद देवे सकल ने रे, देवें सोना रूपादिक सारी धात रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें साख्यात रे॥ ६६॥

देवें लूणादिक पृथवी काय नें रे, वले सगलां नें घालें तेउकाय रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छें तिण मांय रे॥ ६७॥
इत्यादिक दांन देवे छे ग्रहस्थी रे, त्यां दरबां रा नांम अनेक रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र री कर रह्या टेक रे॥ ६८॥
उंधी सरधा मांहोमां यांरे दांन री रे, तिणरो कहितां कहितां न आवें पार रे।
उंधो सरधें छे बोल अनेक में रे, यांरे इसडो छें मांहोमां अंधार रे॥ ६९॥
सुध असुध सगलां नें देवें तेह में रे, जोग वरतें मन वचन नें काय रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे॥ ७०॥
सुध साधां नें असुध देवें तेहमें रे, जोग वरतें मन वचन काय रे।
तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे॥ ७१॥
धर्म कहें कुपातर दांन में रे, ते गमावें मिश्र रो खोज रे।
कहें मिश्र री सरधा माठी घणी रे, तिणनें छोड दो सूतर सोझ रे॥ ७२॥
कहें ध्यांन लेस्या मिश्र नहीं रे, मिश्र नही अधवसाय परिणांम रे।
ए च्यारूं भला के च्यारूं बूरा रे, जोवो सूतर में ठांम ठांम रे॥ ७३॥
सचित अचित सगलां ने दांन देवतां रे, भला परिणांम भला अधवसाय रे।
वले ध्यांन भलो लेस्या भली रे, जे मिश्र कहें ते मूसावाय रे॥ ७४॥
छ काय हणे पोषें सकल नें रे, तिणमें धर्म कहां म्हें इण न्याय रे।
उण रा परिणांम दांन देवां तणा रे, जीव हणवा रा नही अधवसाय रे॥ ७५॥
दांन देवां काजें हणे छ काय नें रे, तिणनें पाप न लागें अंस मात रे।
सर्व जीवां नें पोष्यां धर्म एकलो रे, मिश्र कहें ते मिथ्यात रे॥ ७६॥
मिश्र कहें कुपातर दांन में रे, धर्म कहें त्यांने करें भंड रे।
उणरी सरधा उठावे जडां मूल थी रे, वले देवें प्रायछित डंड रे॥ ७७॥
छ काय हणे छें उदीरनें रे, तिणरो मूल न सरधें छें पाप रे।
ए तो मारग छोड उजड पड्या रे, करे हिंसा में धर्म री थाप रे॥ ७८॥
धर्म कहें कुपातर दांन में रे, त्यांने जाबक झूठा ठहराय रे।
करे मिश्र धर्म री थापना रे, कूडा कूडा कूहेत लगाय रे॥ ७९॥
छ काय हणी नें पोषें सकल नें रे, हिंसा हुई तिणरा लागा कर्म रे।
धर्म हूवो साता पाई तेहनों रे, इण लेखें कहां छां मिश्र धर्म रे॥ ८०॥
इण विध करें मिश्र री थापना रे, धर्म कहे त्यांने झूठा घाल रे।
एक एक री करें उथापना रे, यांरे सोकां वालो जांणों साल रे॥ ८१॥
यांरे सरधा परूपणा तो जू जूई रे, रह्या जूदो जूदो मत झाल रे।
वले साध मांहोमांहि लेखवें रे, आ तो चोडें पाषंडीयां री चाल रे॥ ८२॥

यानें कदे माहोमां साध लेखवे रे, कदे लेखवे माहोमां असाध रे।
यारे गेहली वालो जांणों पेंहरणो रे, ए तो मांहोमा करे उपाध रे॥ ८३॥
गेंहली कदे तो पेहरे चूप सूं रे, कदे नगन हुवे कपडा न्हाख रे।
ज्यूं ए साध थाप ने वले उथपें रे, यारी फूटी अभितर आंख रे॥ ८४॥
छ काय हणी नें पोपें सकल ने रे, तिणमे केई कहें धर्म एकत रे।
केई मिश्र कहें पाप धर्म रो रे, ए दोनूंइ भूठ भखंत रे॥ ८५॥
मिश्र कहे कुपातर दान मे रे, तिण गाला मासूं गोला फेक रे।
इण उसभ उदे पंथ काढीयो रे, तिणमे लोक रह्या केई वेक रे॥ ८६॥
मिश्र कहे कूपातर दान मे रे, ते किणही सूतर मे नही बात रे।
ओ मिश्र मूरख रो परूपीयो रे, तिणरा घट माहे घोर मिथ्यात रे॥ ८७॥
किणरी मात पिता री न्यात जू जूइ रे, तिणरी कही छे वुकस जात रे।
ज्यूं कोइ मिश्र परूपे पाप धर्म रो रे, तिणरो वूकसीयो मिथ्यात रे॥ ८८॥
मिश्र कहे कूपातर दान मे रे, तिणरा कूड कपट रो नही थाग रे।
छल छिदर तिण माहे अति घणा रे, उण रे कुबुध कदाग्रह रो माग रे॥ ८९॥
किण नें दांन दिरावण रो मन करे रे, जब राइ जितो कहे पाप रे।
धर्म कहे मेरू जितो रे, करे एहवा मिश्र री थाप रे॥ ९०॥
किणने दांन दिरावण रो मन नही रे, जब मेरू जितो कहे पाप रे।
धर्म कहे राई जितो रे, करे एहवा मिश्र री थाप रे॥ ९१॥
कदे कहे लाभ थोडो ने तोटो घणो रे, कदे कहे थोडो घणो लाभ रे।
इण रा कूड कपट रो छेहडो नही रे, मन मानें ज्यूं काढे जाब रे॥ ९२॥
चोर चोरी कर ल्यावे धाडो पाड ने रे, पछे न्हासे भागे सेरी देख रे।
ज्यूं मिश्र परूपे दांन मे रे लाल, तिणरा चाला चरित अनेक रे॥ ९३॥
सांबर केरा सीग में रे, सीग सीग मे सीग रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यांरी वात मे रे, धीग धीग में धीग रे॥ ९४॥
बावल वाजे आकरी रे, जब उडे धूर धूर मे धूर रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यारी वात मे रे, कूर कूर मे कूर रे॥ ९५॥
बाजर खेत बावे तरे रे, बूट बूट में बूट रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यांरी बात मे रे, भूठ भूठ में भूठ रे॥ ९६॥
चोर मिले उजाड में रे, करे भपट भपट मे भपट रे।
ज्यूं मिश्र परूपे त्यांरी वात मे रे, कपट कपट मे कपट रे॥ ९७॥
कोरड धांन सुले तिहा रे, डक डक में डक रे।
ज्यूं मिश्र परूपें त्यारी वात में रे, वंक वंक मे वक रे॥ ९८॥

कपटी आलोवण करे तेहनें रे, रहे सल सल में सल रे।
ज्यूं मिश्र परूपें त्यांरी बात में रे, गल गल में गल रे॥ ९९॥
थोरी नेवर नें मगरे छेडव्यां रे, लागे तोट तोट में तोट रे।
ज्यूं मिश्र परूपें त्यांरी बात में रे, खोट - खोट में खोट रे॥१००॥
बलतो दीवो तिहां आय नें रे, मरे पतंगीयो झांफ रे।
ज्यूं मिश्र धर्म नें थापवा रे, पापी मारे फांफां में फांफ रे॥१०१॥
धर्म अधर्म करणी जू जूई रे, वले जुदा जुदा छे पुन नें पाप रे।
एक करणी में दोय न नींपजें रे, भूठी कीधी मिश्र री थाप रे॥१०२॥
ध्यांन लेस्या मिश्र नहीं रे, मिश्र नहीं अधवसाय परिणांम रे।
ए च्यारूं भला के च्यारूं बुरा रे, जोवो सूतर में ठांम ठांम रे॥१०३॥
छ काय हणी पोषें कुपातरां रे, त्यांरी माठी लेस्या माठो ध्यांन रे।
अधवसाय परिणांम माठा तेहनां रे, ते निरणो करो बुधवांन रे॥१०४॥
धर्म अधर्म मारग दोय छे रे, पिण तीजो पंथ न कोय रे।
तीजो मिश्र मिथ्याती भूठो कहे रे, आप डूबें ओरां नें डबोय रे॥१०५॥
छ काय हणे पोषें कुपातरां रे, तिणमें कहें निकेवल धर्म रे।
ते मारग छोड उजड पड्या रे, भूला अग्यांनी भर्म रे॥१०६॥
छ काय हणे पोषें कुपातरां रे, तिणरा चोखा कहे अधवसाय रे।
ध्यांन लेस्या परिणांम पिण चोखा कहे रे, ते तो चोडें भूला जाय रे॥१०७॥
पाप न गिणे छ काय हणी तेहनों रे, धर्म गिणे कुपातर पोष्यां मांय रे।
ते दोनूं विध बूडा वापडा रे, साधु नांम धराय रे॥१०८॥
प्रतष हणी छ काय उदीर ने रे, त्यांरा हणवा रा न गिणे अधवसाय रे।
ओ मत साकमती पाषंडी तणो रे, जोवो सूयगडा अंग मांय रे॥१०९॥
साकमती पाषंडी इम कहे रे, कोइ हणे बालक जांणी सोय रे।
जो उ राखें परिणांम तूंबडा तणा रे, तो बालक रो पाप न होय रे॥११०॥
इत्यादिक त्यांरी उंधी सरधा सुणी रे, जब आदर कुमार बोल्यो तांम रे।
प्रतष बालक मारे उदीरनें रे, त्यांरा चोखा किहां थी परिणाम रे॥१११॥
बालक मार्खां रो पाप थे गिणो नही रे, तो थें बूडा खोटो मत झाल रे।
यांने आदर कुमार निषेध्यां घणा रे, जाबक भूठा घाल रे॥११२॥
ज्यूं केई हणे छ काय उदीरनें रे, पछे पोषें कुपतरां रा थाट रे।
तिणमें धर्म निकेवल कहे तिके रे, साकमती पाषंडी रे पाट रे॥११३॥
ज्यूं केई जीव हणे छ काय नां रे, पोषें कुपातरां नें ताय रे।
त्यांरा ध्यांन लेस्या खोटा घणा रे, वले खोटा घणा परिणांम अधवसाय रे॥११४॥

धर्म कहे कुपातर पोषीयां रे, त्यारी प्रतष भूठी वात रे।
जीव हिंसा रा पाप न लेखवें रे, त्यारे भारी छे गूढ मिथ्यात रे॥११५॥
आगे हिंसाधर्मी हुवा घणा रे, त्यां हिंसा धर्म री कीधी थाप रे।
पिण ए सगला हिंसा धर्म्यां सिरे रे, ते जीव मार्‍यां रो न गिणे पाप रे॥११६॥
नमसकार पुन कह्यो सिधंत में रे, यारे ते पिण सरधा नही एक रे।
करे जुदी जुदी परूपणा रे, तिणमें विगटें छे बोल अनेक रे॥११७॥
नमसकार कुपातर ने करे रे, नीचो सीस नमी जोडे हाथ रे।
तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहें छे विख्यात रे॥११८॥
सात नरक मे नेरीया रे, ते खाऐ छें मार अनत रे।
केई पुन कहे त्याने वांदीयां रे, केई पाप कहे छे एकत रे॥११९॥
भंड सूरा गधा कुता कागला रे, त्यानें नमसकार करे कोय रे।
तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई कहे एकत पाप होय रे॥१२०॥
जलचर मछ कछादिक डेडका रे, थलचर चोपदादिक जांण रे।
वले उरपर भुजपर ने पेहचरा रे, ए तिरजच भेद पिछांण रे॥१२१॥
इत्यादिक तिरजच ने तिरजचणी रे, त्यारों कहितां कहितां नावें अ त रे।
केई पुन कहे त्याने वादीयां रे, केई पाप कहे छे एकत रे॥१२२॥
भील कसाई थोरी बावरी रे, तुरक मेर मेणादिक जाण रे।
वले भंगी ढोली नें सरगरा रे, ढेढ जटीया अनेक पिछाण रे॥१२३॥
वले तीनसो तेसठ पाषडीयां रे, उच नीच सगला मिनष नाम रे।
केई पुन कहे त्याने वादीया रे, केई पाप कहे छें तांम रे॥१२४॥
च्यार जात रा देवी नें देवता रे, त्याने वादे कोइ सीस नाम रे।
तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे छे ताम रे॥१२५॥
भवानी भेरू ने खेतला रे, गोगा मोगा अनेक विध जाण रे।
जष भूतादिक चूरामणी रे, ए विन्तर जात पिछाण रे॥१२६॥
इत्यादिक मेला देवी ने देवता रे, त्यांने वादे पूजे कोइ ताहि रे।
तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे॥१२७॥
जीव अजीव री सगली थापना रे, त्याने वादे पूजे कोइ ताहि रे।
तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे॥१२८॥
नमसकार पुन मे यारे वेदो घणो रे, ते कहितां कहितां नावें पार रे।
एक थापे एक उथपे रे, यारे इसडो छे माहोमांहि अधार रे॥१२९॥
ते न्याय निरणो यारे नहीं रे, ए वूडे छे कर कर रूढ रे।
वले साध माहोमांहि लेखवे रे, ए इसडा अग्यानी छे मूढ रे॥१३०॥

पातर कुपातर उंच नीच नें रे, सगलां नें कीयां नमसकार रे।
तिण मांहें लाभ कहें तिके रे, विनेंवादी पाषंडी रो परिवार रे॥१३१॥
विनेवादी पाषंडी इम कहें रे, सगलां नें नम्यां गुण- होय रे।
ज्यूं पुन कहें सगलां नें नम्यां रे, त्यांने पिण जांणो तिमहिज सोय रे॥१३२॥
नमसकार सगलां नें कीयां थकां रे, केई कहें बंधे पुन थाट रे।
ते विनेंवादी पाषंडी तणो रे, यां राख्यो अग्यान्यां पाट रे॥१३३॥
केई वांदे पूजें छें कुपातरां रे, वले वांदे अजीव ने कोय रे।
तिणमें पुन परूपें विकल थकां रे, त्यांमें निश्चें समकत न होय रे॥१३४॥
साधु आहार करें छ कारणे रे, तिणमें कहें छे पाप रे।
केई कहें धर्म एकलो रे, यांरे ये पिण नही छें मिलाप रे॥१३५॥
साधु आहार करें छ कारणें रे, तिणमें पाप कहे ते बोले भूठ रे।
त्यां भेष भांड्यो भगवांन रो रे, दीधीं मुगत मारग नें पूठ रे॥१३६॥
यांरे सरधा सामग्री तो जू जूइ रे, जुदी जुदी परूपणा छें ताहि रे।
कदे आय पडें यांमें सांकडी रे, जब भूठ बोली मिल जाय रे॥१३७॥
परदल कटक देखें आवतो रे, जब सगला नूंनर एके हो जाय रे।
परदल कटक पाछो फिर्‌यां रे, सगला नूंनर बीखर जाय रे॥१३८॥
ज्यूं साधु आयां देख गांम नगर में रे, सगला भेषधारी एके थाय रे।
वले साधु वीहार कीयां पछें रे, ये पिण खोटा कहें मांहोमांय रे॥१३९॥
ए कदेक मांहोमां उथपें रे, कदेक देवें मांहोमां थाप रे।
मोह कर्म उदे रा मतवाल सूं रे, ए बांधे छें बोहला पाप रे॥१४०॥
यांरे सरधा सामग्री मत जू जूओ रे, त्यांरे विगटें छें बोल अनेक रे।
पिण सुध साधां नें निषेधवा रे, हुवे मांहोमांहि पापीडा एक रे॥१४१॥
मांहोमां करें कलेस कदाग्रहो रे, यांरे सरधा खोटी घणी गेंर रे।
यांरे साधु तो निजर पड्यां थकां रे, जांणें जाग्यो पूर्वलो वेंर रे॥१४२॥
जो तुरक देखें करकांटीयो रे, तो जागे तुरकां ने धेष रे।
ज्यूं भेषधारी देखें साध नें रे, त्यांनें जागे धेष वशेष रे॥१४३॥
तुरक कहे इण करकांटीये रे, म्हांरा सेंद मराया इण बताय रे।
तिणसूं वेंरी म्हारो करकांटीयो रे, उ वेर मांगां छां ताय रे॥१४४॥
ज्यूं भेषधारी कहे छे साधां भणी रे, यां कीधो छे म्हांरो उघाड रे।
करडी कर कर परूपणा रे, म्हांरा श्रावक लीधां पाड रे॥१४५॥
किरकांटीयां नें तुरक देख नें रे, मारें कूटें बोलें घणा गेंर रे।
ज्यूं भेषधारी देखें साध नें रे, तो जागें अभितर वेंर रे॥१४६॥

भेष अंधारी परगट करी रे, बगडी सहर मझार रे।
संवत अठारें छतीसे समें रे, काती सुद पुनम मंगलवार रे॥१४७॥



ढाल : २

[धीज करे सीता सती रे लाल]

केई आहार न मांनें केवली भणी रे, केई कहें केवली करे आहार रे सुगुणनर*।
यांमें साची भूठी सरधा केहनीं रे लाल, ते पिण विकलां रे नहीं छें विचार रे। सु० न०।
जोयजो अंधारो भेष में रे लाल* ॥ १ ॥

यां दोयां जणां में एकण तणी रे, खोटी सरधा साख्यात रे। सु०।
वले साध मांहोमांहि लेखवें रे, ते दोयां जणां रे मिथ्यात रे ॥ सु० जो० २ ॥

देस उणो कोड पूर्व लगे रे, विनां कीयांई आहार रे।
बोलें चालें जीवें किण विधे रे लाल, आ पिण नहीं समझ लिगार रे ॥ ३ ॥

केई कहें तीर्थंकर बोले नहीं रे, यांरे अतिसय गूंजे रह्यो मांय रे।
केई कहें तीर्थंकर बोलता रे लाल, ववहार भाषा नें सत वाय रे ॥ ४ ॥

यांमें एक तो भूठो असाध निश्चें खरो रे, तो ही गिणे मांहोमां साध रे।
ते निरणों नहीं घट भितरे रे, त्यांरे किण विध होसी समाध रे ॥ ५ ॥

जो तीर्थंकर बोले नहीं रे, तो किण कह्यो पूर्व ग्यांन रे।
लोक अलोक तणा भाव किण कह्या रे, केवली विण किण नें आसांन रे ॥ ६ ॥

केई अछेरा दस मांनें नहीं रे, केई मांनें अछेरा तीन काल रे।
यांमें एक तो भूठो निसंक सूं रे लाल, ते पिण विकलां रे नही छे नीकाल रे ॥ ७ ॥

अछेरा दस मांनें नहीं रे, तिणरी सरधा कहें छें असुध रे।
वले तेहीज तिणनें साधु गिणे रे लाल, तो दोनूं जणां री भिष्ट बुध रे ॥ ८ ॥

अछेरा दस मांनें नहीं रे, तिण सूतर दीया उथाप रे।
ते आप छांदे उंधी अकल सूं रे लाल, ते कर रह्या कूड विलाप रे ॥ ९ ॥

केई कहें केवल ग्यांन साव नें रे, उपजें बारा थी आय रे।
केई कहें केवल ग्यांन उपजें रे, ते तो मांहि थी परगट थाय रे ॥ १० ॥

केवल ग्यांन बारा थी उपनों कहे रे, तिणरी खोटी छे मिथ्यादिष्ट रे।
तिण जीव नें ग्यांन न्यारो गिण्यो रे, तिणनें साध गिणे ते ही भिष्ट रे ॥ ११ ॥

केई कहें महावरत देसथी रे, तिणमें इविरत रो आगार रे।
केई कहें महावरत सर्व थी रे लाल, साध रे नहीं इविरत लिगार रे ॥ १२ ॥

जिण साधु रे महावरत देसथी रे, ते नियमा निश्चें नहीं साध रे।
तिण देस विरती नें साध कहे रे, ते पिण निश्चें असाध रे ॥ १३ ॥

साधु रे महावरत सर्व थी रे, ठांणा अंग दसवीकाल मांय रे।
वले उवाइ सुयगडा अंग में रे, साधु रे नहीं इविरत कांय रे ॥ १४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पाच महावरत सर्व थी रे, तिणमें कूड नही तिल मात रे।
केई कहे महावरत देस थी रे, ते निश्चें मिथ्याती साख्यात रे ॥ १५ ॥
देस महावरत तो हुवे नही रे, महावरत तो सर्व थी होय रे।
देस विरत कीया श्रावक हुवें रे, तिणनें साध म जाणो कोय रे ॥ १६ ॥
कोइ देस विरती नें साधु कहे रे, ते पूरा मूंढ गिंवार रे।
ते निश्चें मिथ्याती मूलगा रे लाल, साधु श्रावक री पात बार रे ॥ १७ ॥
आहार उपध साधु भोगवे रे, तिणमे केई कहे निरजरा धर्म रे।
केई परमाद ने इविरत कहे रे, तिण सूं लागो कहें पाप कर्म रे ॥ १८ ॥
आहार उपध साधु भोगवे रे, तिणमे जाणे मिथ्याती पाप कर्म रे।
तिण मूंढ मती ने साधु गिणे रे, ते पिण भूला अग्यांनी भर्म रे ॥ १९ ॥
साध आहार कीयां माहे पाप छें रे, पाप नीपजें तो बूडो दातार रे।
तिण साधु नें पाप भेला कीयां रे, तिणरो किण विध होसी उधार रे ॥ २० ॥
नवपदारथ छे जूआ जूआ रे, जूओ जूओ छे त्यारो सभाव रे।
त्याने रूडी रीत न ओलख्या रे, त्यांरो मूढ न जांणें न्याव रे ॥ २१ ॥
केई नवपदारथ ने इम कहे रे, आठ जीव नें एक अजीव रे।
एहवी करें छे परूपणा रे लाल, कर कर खाच अतीव रे ॥ २२ ॥
केई नव पदारथ मे इम कहे रे, एक जीव ने एक अजीव रे।
सात जीव तणी परजाय छे रे, ते तो नही छें जीव अजीव रे ॥ २३ ॥
केई नवपदारथ मे इम कहे रे, पांच जीव ने च्यार अजीव रे।
एहवी करें छे परूपणा रें, कर कर खाच अतीव रे ॥ २४ ॥
ए तीनोंइ सरधा छे जू जूइ रें, एकण टोला मझार रे।
वले साध माहोमा सरध नें रे, भेलो करे अग्यांनी अहार रे ॥ २५ ॥
त्यारी सरधा तो माहोमा जू जूइ रे, नही मानें एक एक री बात रे।
तोही करे संभोग साघ सरध ने रे, त्यांरो प्रतष देखो मिथ्यात रे ॥ २६ ॥
यानें इतरी तो समझ पडे नही रे, ते तो पूरा छें मूंढ गिंवार रे।
ते ववेक विकल सुध बुध विनां रे, त्याने मूर्ख सरधे अणगार रे ॥ २७ ॥
त्याने श्रावक पिण इसडा मिल्या रे, त्यारा घट मांहें घोर अंधार रे।
त्याने इतरी पिण समझ पडे नही रे, ते पिण पूरा छे मूढ गिंवार रे ॥ २८ ॥
केई कहें पुन पाप जीव छे रे, केई कहें पुन पाप अजीव रे।
केई कहे जीव अजीव दोनूं नही रे लाल, यांमे कुण छे मिथ्याती जीव रे ॥ २९ ॥
जो तीनोंइ ने कहे समकती रे, तो बूड गई छे त्यारी बात रे।
खोटी नें साची सरधा रो निरणो नही रे, त्यांरें आय चूकों छें मिथ्यात रे ॥ ३० ॥

केई आश्रव ने कहे जीव छें रे, केई आश्रव नें कहें अजीव रे।
केई कहें जीव अजीव दोनूं नहीं रे लाल, जूआ जूआ बोलें छें निसदीव रे॥ ३१॥
संवर निरजरा मोष ने रे, केई कहें छें जीव साख्यात रे।
केई कहें जीव अजीव दोनूं नही रे, ते पिण वद वद बोलें छे विख्यात रे॥ ३२॥
केई कहें छें बंध अजीव छें रे, केई कहें छें बंध छें जीव रे।
केई कहें जीव अजीव दोनूं नहीं रे, ते पिण कर कर तांण अतीव रे॥ ३३॥
इण विध सरधा छें जू जूइ रे, वले भेलो छे त्यांरो संभोग रे।
त्यांमे संजम समकत किहां थकी रे, त्यांरे मोटो मिथ्यात रो रोग रे॥ ३४॥
यांरे सरधा तो मांहोमांहि जू जूइ रे, वले सरधे मांहोमां साध रे।
सुध साधां ज्यूं लोकां में पूजावता रे, त्यांरे किण विध होसी समाध रे॥ ३५॥
यांने श्रावक वांदे साध जांण नें रे, ते श्रावक विकल समांन रे।
यूंही बूडे छे बापडा रे, त्यांरा घट मांहें घोर अग्यांन रे॥ ३६॥
वले तिरण तारण जाणें एहनें रे, इसडी गाढी बेठा छे धार रे।
ते सुध बुध विनां जीव बापडा रे, भव भव में होसी खुवार रे॥ ३७॥
त्यां विकलां ने छेरव्यां थकां रे, तो लडवा नें छे तयार रे।
त्यां सूं न्याय निरणो हुवें नहीं रे, करवा बेठा छे झगडो ने राड रे॥ ३८॥
यांरे सरधा रो मूंह माथो नहीं रे, वले भिष्ट छे आचार रे मांहि रे।
ते विकलां नें समझ पडे नहीं रे, कूडी पख झाले रह्या ताहि रे॥ ३९॥
साधां रे आल देतां संके नहीं रे, वले निन्दा करण ने सूर रे।
भागल भिष्ट नें वांदे गुर जांण ने रे लाल, त्यां सूं दुरगति नहीं छे दूर रे॥ ४०॥
खोटी सरधा रा भिष्टी ओलखायवा रे, जोड कीधी माधोपुर मझार रे।
संवत अठारे अडतालेसमे रे लाल, आसोज सुद छठ ने सोमवार रे॥ ४१॥

ढाल : ३

दुहा

नमूं वीर सासण धणी, ते पोहता पद निरवांण।
जनम मरण दुख षेय करी, मेट्या आवण जाण ॥ १ ॥
जे भाव भगवंते परूपीया, ते गणधरे गूंथ्या जांण।
ते भेषधार्‍यां रे पानें पड्या, उधा करे अर्थ अयाण ॥ २ ॥
ते छठे गुण ठाणे निरंतर कहें, आरत ने धर्म ध्यांन।
ते परमारथ पायां विनां, बोले विकल समान ॥ ३ ॥
श्री वीर कह्यो एकण समें, दोय ध्यान न ध्यावे कोय।
आरत ध्यान ध्यावे तिण समे, धर्म ध्यान किहा थी होय ॥ ४ ॥
एहवी पिण समझ पडे नही, वले ओर परूपें विरुध।
आरत ध्यान ध्यावे तिण समे, कहे लेस्या तीनूंई सुध ॥ ५ ॥
आरत ध्यान ध्यावे तिण समे, आछी लेस्या किहा थी होय।
जे ववेक विकल हुवा तेहने, आ पिण खवर न कोय ॥ ६ ॥
लेस्या ने आरत ध्यान री, यांरा लखणा सू खवर पडत।
त्यांरा भाव भेद परगट करूं, ते सुणजो कर खंत ॥ ७ ॥

ढाल

[श्रा श्रणुकम्पा जिण श्रागन्या मे]

आरत ध्यांन ध्यायां माठी लेस्या आवे, तिण माहे सका मूल म आणो।
आ प्रतष साची बात उथापें, कांय बूडो कूडी कर कर तांणो।
माठो ध्यांन ध्यायां माठी लेस्या आवे* ॥ १ ॥
कहे छठे गुणठांणे आरत ध्यान ध्यायां, जब पिण कहे लेस्या वरते छे रूडी।
इसडी परूपें लोकां में अग्यांनी, त्यारी प्रतष सरधा कूडी रे कूडी ॥ मा० २ ॥
ज्यारे भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवे, त्यांने तो जावक साध न सरधे।
ए प्रतष लोका आगे परूपी, ते तो छानी वात न राखी पडदे ॥ ३ ॥
भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवें, त्याने जो उ साध सरधे तो दीससी भूंडो।
जो छ लेस्या वाला नें साघ सरधे वांदे, तो उ आप री सरघा रे लेखेई बूडो ॥ ४ ॥
कदे उसभ जोग साधु रा वरतें, जब लेस्या पिण साधु रे माठी आवें।
तिण उसभ जोगां में मूंढ मिथ्याती, लेस्या तिनूंई रूडी वतावें ॥ ५ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

कदे साधु चारितीयो मोहकर्म वस, सुपनां माहें सेवे कांम नें भोग।
खेती करसण आदि करे सुपनां में, जब माठी लेस्या ने माठा जोग॥ ६॥
वले विणज करे सुपनां में साधु, वले पड जाए सुपनां में आल जंजाल।
वले माठाई जोग नें माठीई लेस्या, थे समझो रे समझो सुरत संभाल॥ ७॥
कदे विषे कषाय माठा जोग वरतें, कदे मईथुन संग्या साधुरे आवें।
हस्त कर्मादिक कोइ करे कुचेष्टा, जब पिण माठी लेस्या साधु में पावें॥ ८॥
कदे कलहो करे साधु कर्म तणें वस, आहार पांणी सिखादिक रे कांम।
करडा काठा वचन काढे कर्म तणें वस, जब माठी लेस्या नें माठा परिणांम॥ ९॥
कदे लोलपणो आवे आहारादिक सूं, कदे आंसू पिण मोह कर्म वस आवें।
कदे फोरवे लब्द कतूहल निमते, जब पिण माठी लेस्या साध मे पावें॥ १०॥
कदे शब्दादिक गमता अणगमता, त्यांसूं पिण कदे थाए हरख नें सोग।
कदे इरषा मांन वडाई पिण आवे, जब माठी लेस्या ने माठा जोग॥ ११॥
इत्यादिक जागतां सूतां सुपनां माहें, कदे साधु रा वरते छे उसभ जोग मेला।
जब माठोई घ्यांन माठी लेस्या आवे, ते परमारथ जांणें नहीं गेला॥ १२॥
उसभ जोग आरतध्यांन सरधे साधु रे, पिण लेस्या नें सरधे साधु मांहें भूंडी।
ते सूने चित्त सूतर बांचे मिथ्याती, परमारथ आयां विण त्यारी पिंडताई बूडी॥ १३॥
आगे आगे हुआ मोटा साध रिखेसर, त्यांनें माठी लेस्या आई उघडी।
त्यां आलोई पडिकमे प्रायछित लीधो, ते सांभलजो भवीयण विसतारी॥ १४॥
सीहो मुनी मोटें मोटे शब्दे रोयो जब, आरतध्यांन ने माठी लेस्या आई।
जब पिण सीहा में आछी लेस्या बतावें, त्यां विकलां नें सूतर री समझ न काई॥ १५॥
बाल भाव एमंता मुनीसर नें आयो, जब पांणी पातरो दीयो तिराई।
ए प्रतख सावद्य किरतब कीधो, जब माठोई ध्यांन माठी लेस्या आई॥ १६॥
रहनेम चलो देख राजमती नें, खोटा मन सूं काढी खोटी वाय।
त्यांनें पिण माठो घ्यांन माठी लेस्या आई, तिण मांहें संका मत आंणों कांय॥ १७॥
इत्यादिक मोटा मोटा संत रिखेसर, त्यांनें कर्म जोगे माठी लेस्या आई।
ते आलोइ पडिकमी प्रायछित लीधा, पिण ववेक विकला नें खबर न कांई॥ १८॥
केई भेष धार्यां री एहवी सरधा, कहे साधां ने माठी लेस्या नही आवे।
ते सूतर अर्थ जांणें नही भोला, गाला रा गोला घड घड चलावे॥ १९॥
पेंहले सतक भगोती रे पहले उद्देसे, वले ठांणां अंग रे तीजे ठांणे।
तिणरा पाठ अर्थ री समझ पड्यां विण, पींपल बांधी मूरख ज्यूं ताणे॥ २०॥
द्रव ने भाव लेस्या रा गुण नहीं जांणें, ते तो द्रव लेस्या री ठोड भाव लेस्या बतावे।
भाव लेस्या री ठोड कहे द्रव लेस्या, ते ववेक विकल भोला नें भरमावें॥ २१॥

भाव ने द्रव लेस्या जिणेसर भाषी, त्यांरा लखण जूआ जूआ ओलख लीजे।
त्यांरो विवरो कहू सूतर मे भाख्यो जिम, ते सुण सुण घट मांहे निरणो कीजें॥ २२॥
भूंडा भला वरण गन्ध रस परस छे, एहवा गुण सूं दरव लेस्या पिछाणो।
जव जीव रा लखण भूडा भला आवे, ते गुण सू भाव लेस्या ने जाणो॥ २३॥
पांच आश्रव परमाद आरंभ ना जोग, इत्यादिक लषणां किस्न लेस्या पिछाणो।
यां मांहिला केयक छठे गुणठाणे, साधु ने कदेयक लागता जाणो॥ २४॥
इरषा ने मिरषा विषे अभिलाषा, वले धेष परमाद वोले भूठ वाय।
रस रा लोलपी नें साता रा गवेषी, ए लषणां सूं लेस्या नील कहवाय॥ २५॥
वचनें करे बाका ने वक आचरले, वले कपट ने दोष रो ढाकण हारो।
वले राग ने धेष अदत मछर भाव, इत्यादिक माठा लषण कापोत रा धारो॥ २६॥
तीन माठी लेस्या मांहिला लषण, तेहीज लषण आरत ध्यान रा जाणो।
जो छठे गुणठाणे आरत ध्यान सरधो, तो माठी लेस्या सरधण री कांय मांडी ताणो॥ २७॥
आरत ध्यान नें तीन माठी लेस्या रा, कोइ लषण मीढी जोय करो विचारा।
जो मिले सारिषा तो सरधलो एक, न मिले तो सरधलो न्यारा॥ २८॥
आरत ध्यान रा च्यार भेद कह्या जिण, ते साभलज्यो भवीयण चित ल्याय।
अणगमता शब्दादिक आय मिलीया, जब तिणरों विजोग वाछे धेष ल्याय॥ २६॥
मन गमता शब्दादिक आय मिलीया, ते संजोग वाछे रागी थको जांण।
आतंक रोग आय सरीरे उपनो, तिणरो विजोग वाछे धेष आंण॥ ३०॥
सेवीया कांम भोग रा सजोग मिलीयां, ते पिण संजोग वाछे राग आण।
ए आरत ध्यान रा भेद चारूंई माठा, त्यांरा लषणा री बुधवंत करजो पिछांण॥ ३१॥
जे करे आक्रंद मोटे मोटे सब्दे, वले दीन पणो करे सोग संताप।
दलगीर होय आसू न्हाखे रोवे, वले करे अनेक विध मोह विलाप॥ ३२॥
ए च्यारूं माठा लषणा आरत ध्यान जांणो, च्यार भेद कह्या ते पिण माठा जांणो।
ए माठो ध्यांन घ्यायां माठी लेस्या आवे, तिण माहे सका मूल म आंणो॥ ३३॥
कदे आरत ध्यांन साधु रे आवे जब, लेस्या पिण साधु रे माठी आवे।
आरत ध्यांन ध्यावे साधु तिण माहे, मूढमती लेस्या आछी वतावे॥ ३४॥
ए तो आरत ध्यांन रा भेद ने लषण, उवाइ उपग नें ठांणाअग मांय।
एहवो आरत ध्यांन साधु ध्यावे जव, लेस्या पिण माठी व्यापे आय॥ ३५॥
आरत ध्यांन आयो साधु रे वतावे, जव माठी लेस्या आई नही वतावे।
कोइ एहवी परूपें मूढ मिथ्याती, इसडा अन्हाखी नें कुण समभावे॥ ३६॥
भेषधारी कहे म्हारा सर्व टोला मे, माठी लेस्या कदे नही व्यापे आय।
त्याने आप तणा किरतव नही सूझे, त्यांरा टोला रा चारित सुंणो चित ल्याय॥ ३७॥

आहार पांणी रे कारण करे लडाई, वले लडतां विढतां लोट पातरा फूटे।
जब पिण कहें माठी लेस्या न आई, ते निश्चें अग्यांनी लागा मत भूठे॥ ३८॥
वले चेला चेली आप करवा काजें, करे मांहोमांहि भूठा झगडा।
जब पिण कहे माठी लेस्या न आई, एहवा भूठ बोले पाषंडी धगडा॥ ३९॥
त्यांरा टोला में पग पग इसको खेधो, वले पग पग कर रह्या झगडा ने राड।
ए प्रतष उघाडी माठी लेस्या देखो, पिण समझे नही मूंढ मिथ्याती गिवार॥ ४०॥

ढाल : ४

दुहा

केई .भेषधारी जेन रा, ते भाखें अग्यानी अलाल।
त्यांनें श्रावक ववेक विकल मिल्या, ते पूरा अग्यांनी बाल ॥ १ ॥
ते सूतर अर्थ उंधा करी, भाखे हिंसा धर्म।
त्यांरी सरधा सुण सुण बापडा, बांधे बोहला कर्म ॥ २ ॥
कहे साधा री अणुकम्पा आण ने, जीव मारे मिथ्याती कोय।
तिणरे एकंत पुन नीपनों कहे, पाप रो बंध न होय ॥ ३ ॥
साधु कंपतो देखे सीतकाल मे, कोइ गृहस्थ अगन लगाय।
पकड तपावे तिण साध ने, तिणरे पुन तणो बध थाय ॥ ४ ॥
इण विध पुन कहे हिंसा कीयां, ते विकलां नें खबर न कांय।
त्यारी सरधा परगट कीयां थकां, ते फिरतां पिण वार न कांय ॥ ५ ॥
यारी सरधा ने कूड कपट री, कही कठा लग जाय।
हिवे थोडी सी परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[रे प्राणी कर्म समो नही कोइ···]

साधु नें कंपतो देख सीयाले, कोइ अणुकम्पा मिथ्याती आणे।
तिण अगन लगाए साधु ने तपायो, तिणमे पुन अग्यांनी जांणे रे।
कुमत्यां हिंसा में धर्म कांय थापो* ॥ १ ॥
तिण अगन लगाय साधु ने तपायो, ते हूंतो जीव मिथ्याती।
साव थई इण मे पुन परूपें, ते पिण उणरो साथी रे ॥ कु० २ ॥
साधु तो मुख सूं नां नां कहिता, तोही पकड वेंसाण तपायो।
तिण मोटो अकार्य कीयों अग्यानी, तिणमे पुन किहा थी थायो रे ॥ ३ ॥
साधु अगन रो आरंभ अनर्थ जांण्यो, जब कह्यो मोनें कल्पे नांही।
तोनें पिण ए काम जुगतो नही छे, पाप जांण निषेध्यो त्यांही रे ॥ ४ ॥
जो पुन जाणे तो साधु नही निषेधता, निषेधो जब जांण्यो छे पाप।
अनर्थ प्राप जांण्यो तिण माहे, पुन री किम करसी थाप रे ॥ ५ ॥
साधु ने तपावें अगन लगाए, तिणमे साधु तो पुन कहे नाहिं।
केई जैंन तणा भेषधारी अग्यानी, पुन कहे तिण मांहि रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

साधु तो पेंहलां अनंथ जांण निषेद्यो, पछे कह्यों थांरे पुन बंधाणो।
इसडो भूठ साधु किम बोलें, थांनें आ पिण नही छे पिछांणो रे॥ ७॥
साधु नें अगन लगाए तपाए, तिणमें पुन कहे छे पाषंडी।
वले साधपणा रों नांम धरावे, तिण भेष ले आतम भंडी रे॥ ८॥
साधु नें अगन लगायो तपायो, तिणरी लेस्या कहे छे रूडी।
वले परिणांम ध्यांन आछा कहे तिणरी, सरधा छे जावक कूडी रे॥ ९॥
साधु नें अगन लगाय तपायो, तिणरी लेस्या घणी छे भूंडी।
वले परिणांम ध्यांन आछा कहे तिणरी, बुध अकल गई बूडी रे॥ १०॥
एक चिरमी जितरी तेउकाय में, जीव असंष बतावें।
तो अगन जाले नें साधु नें तपायो, पुन कहितां लाज न आवें रे॥ ११॥
अगन रा आरंभ सूं दुरगत बधे छे, दसवीकालिक छठो धेन जोय।
तो साधु नें तपावण अगन जलायां, पुन किहांथी होय रे॥ १२॥
केइ जनम मरण मूंकावण काजें, तेउकाय हणे छे कोय।
अहेत ने अबोध कह्यो छे तिणरें, आचारंग पेंहलो धेन जोय रे॥ १३॥
आठ कर्म गांठ बंधे अगन आरंभ सूं, वले मोह मार नरक होय।
इसडा फल लागे अगन हण्यां सूं, तो पुन किहांथी होय रे॥ १४॥
अर्थ अनर्थ धर्म रे हेतें, मंदबुधी हणे तेउकाय।
वले मार अनंती नरक निगोद में, ते जोवो दसमां अंग मांय रे॥ १५॥
साधु नें तपायां में पुन जांणे ते, रुद्रध्यान तणो भेद तीजो।
जो बंध पडे तो पडे नरक रो, ठांणाअंग उवाई जोय लीजो रे॥ १६॥
साधु रे काजे अगन लगाए, पछे साधु नें पकड तपावे।
तिणरी आछी लेस्या नें पुन बंध कहितां, विकलां नें लाज न आवे रे॥ १७॥
कोइ त्रिषा सूं पीड्या साधु नें पकड नें, मुख फाडे काचो पांणी पावें।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावें रें॥ १८॥
कोइ भूख सूं पीड्या साधु नें पकड नें, मुख फाड ने सचित खवावे।
जो अगन तपायां पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे॥ १९॥
उजाड मांहें थाका साधु नें पकड नें, गाडे उंट घोडे बेंसावे।
जो अगन तपयां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे॥ २०॥
कोइ सीयां मरता साधु नें पकड नें, अगन अणमिलीयां राली ओढावे।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे॥ २१॥
कोइ साधु रो पेट दुख्यो जांणे जब, अजमादिक उकाली पावे।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावे रे॥ २२॥

कोइ साधु रो शरीर मेलो देखी नें, पकडे सिनांन करावे।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे॥ २३॥
कोइ साधु रा कपडा मेला देखी नें, खोस ने काचा पांणी सूं घोवे।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन होवे रे॥ २४॥
कोइ साधु रा काजें जायगां कराए, साधु नें राखे तिण मांय।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, तिणरो पिण पुन थाय रे॥ २५॥
इत्यादिक अनेक बोलां में, साधु काजे हणें छे काय।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, सगलां मे पुन थाय रे॥ २६॥
जो किण ही बोला मे पुन बतावे, किण ही में कहे पुन नांही।
तो उण रे लेखें उण री बोली में, अंधारो घणो घट माही रे॥ २७॥
पुन कहे साधु नें अगन तपायां रे, ते उठी जठाथी मूठी।
तेउकाय मास्यां रो पाप न जाणे, त्यारी दया दिल सूं गइ उठी रे॥ २८॥
कोइ सथारा माहें मुख फाडे ने, असणादिक घाले मुख माय।
जो अगन तपायां रो पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे॥ २९॥
कोइ त्यागवाला रो मुख फाडे ने, त्यागी वसत घाले मुख मांय।
जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे॥ ३०॥
त्याग वालां रो त्याग भंगावे, ते जीव छे भारी कर्मो।
सूंस भाग्या भंगायां निश्चें पाप बंधे छें, पिण निश्चें नहीं पुन धर्मो रे॥ ३१॥
ओर रो सूंस भगायाइ बूडें छें, बधे छें पाप कर्म।
तो साध रा सूंस भंगावे तिण रे, किण विध होसी पुन ने धर्म रे॥ ३२॥
सूंसवालो जो सेंठो रहेसी, तिणरो तो सूंस न भांगो।
पिण सूंस भंगावण वालो तो बूडो, तिणरे निश्चेंइ पाप कर्म लागो रे॥ ३३॥
आहार सेज्या वसतर नें पातरा, साधु नें असुध वेंहरावे।
तिणनेंइ एकंत पाप हुवे छे, तो अगन तपायां पुन किम थावे रे॥ ३४॥
साधु नें अगन सूं तपावे तिणमें, पुन कहे तिणरी बुध माठी।
ते कहिणवालां ने सरधवालां रे, हीया आडी आइ छें पाटी रे॥ ३५॥
साधु नें अगन तपावें तिणमें, पुन कहे मिथ्याती कोय।
तिणने सूतर ससतर ज्यूं परगमीया, ते बूडा मानव भव खोय रे॥ ३६॥
साधु नें अगन सू तपावें तिणमें, पुन कहे ते भारी कर्मा जीव।
तिण आल दीयो अनंता अरिहंत ने, घणी करसी नरकां में रीव रे॥ ३७॥
साधु नें अगन सूं तपावे तिणमे, पुन कहे ते बोलें छें कूड।
ते प्रतख हिंसाधर्मी अनारज, त्यांरा पिंडतपणा में धूड रे॥ ३८॥

साधु नें तपायां में पुन परूपें, तिणरी अकल में घणो छे अंधारो।
वले विवध मिथ्यात छे तिणरा मत में, कहितां न आवें पारो रे॥ ३९॥
मिथ्याती साधु नें तपावे अगन सूं, तिणने थें पुन बतायो।
श्रावक तपावे तिणनें पाप बतावो, ओ किण विध मिलसी न्यायो रे॥ ४०॥
श्रावक ने पाप मिथ्याती नें पुन, ए उंधी सरधा कांय थापो रे।
अगन रो आरंभ दोनूं जणा नें, कीधां छें एकंत पापो रे॥ ४१॥
साधां ने अगन सूं तपावे श्रावक, तिणनें पाप कहो ते तो न्याय।
मिथ्याती तपावे तिणनें पुन कहें छें, ओ तो निश्चें उघाडो अन्याय रे॥ ४२॥
ए हिंसा धर्मी ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मझारो रे।
संवत अठारे वरस तयांले, सावण विद अमावस मंगलवारो रे॥ ४३॥

ढाल : ५

दुहा

केयक विगडायल जेन रा, त्यारे ग्यान नही घट माय।
झूठ बोले अग्यांनी निडर थका, त्याने परभव चिंता न कांय ॥ १ ॥
कोइ तपसा करे साध साधवी, त्यारी निंद्या करे दिनरात।
आल अणहूता टेक दे, त्यारी मूरख माने वात ॥ २ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

धोवण पाणी चास आछ राखे नें, कोइ तपसा करे मोटी नांनी रे।
तिण तपसा नें मूरख खोटी जाणें, ते पूरा मूढ अग्यांनी रे।
या झूठाबोलां रो सग न कीजें* ॥ १ ॥
चास पाणी राखे ओर सगलोई त्याग्यो, ते तो अणोदरी तप मोटो रे।
तिण तपसा री निंद्या करे पापडी, त्यारों नीमा निश्चे मत खोटो रे ॥ यां० २ ॥
तपसी तणा गुण ग्राम करे तो, करमां री कोड खपावें रे।
उतकष्टो पद तीथकर पामे, तिणरा ओगण अग्यांनी गावें रे ॥ ३ ॥
तपसी तणा गुण कीधांई धर्म, तो तपसा कीधा मे इधको छे धर्मो रे।
कोइ तपसा करे त्यांरी निंद्या करें छे, ते तो निश्चें बाधे जाडा कर्मो रे ॥ ४ ॥
तपसी तणा गुण हर कोइ गावें, ते गुण खमणी न आवें रे।
तिण सूं अजांण लोकां नें कर कर तीखा, त्यां आगा सूं ओगुण बोलावे रे ॥ ५ ॥
तपसी रा ओगुण बोलें बोलावें, ते तो दोनूं परकारे बूडे रे।
ते माठी गति जावा नें वीद बण्या छे, भारी होय जासी नरक रे तूंडे रे ॥ ६ ॥
भगवत भाषी बारे भेदें तपसा, तिणरो मूरख न्याय ने जांणे रे।
तिणसूं मूंढ मिथ्याती भारीकर्मा, निंद्या करता संक न आणे रे ॥ ७ ॥
एक सीत मातर कोइ ओछो खाए, ते जिगन अणोदरी जांणों रे।
जिम जिम उदर उणों इधको राखे, तिम तिम अणोदरी तप पिछांणो रे ॥ ८ ॥
पांच विगें एक विगें किण त्यागी, ते पिण तपसा जांणो रे।
तो पाचोइ विगें सर्वथा त्यागी, ए रस त्याग तपसा पिछांणों रे ॥ ९ ॥
इण अणुसारे तपसा रा भेद घणा छे, तिण मे लाभ कह्यो जिणराया रे।
तो चास पाणी राखें सगला दरब त्याग्या, तिणमे तो बोहत निरजरा थायो रे ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

एक सीत त्याग्यां एक विगें त्याग्यां में, तिणमें पिण कटें छें कर्मो रे।
तो चास उपरंत सारी वसत त्यागी, ते मोटों तप निरजरा धर्मो रे॥ ११॥
एक दिन चास राखें सारी वसत त्याग्यां, तिणमेंइ निरजरा थावें रे।
तो चास राखें त्याग करें महीना लग, ते कर्मा री कोड निश्चें खपावे रे॥ १२॥
तिण तपसा रा कोइ ओगुण बोलें, आतमा नें लगावे छे कालो रे।
तिण अरिहंत वचन उथाप्यो अग्यांनी, दे दे अणहूंतो आलो रे॥ १३॥
चास टाले ओर सगली वसत त्यागी, ते गुण मूले न सूझें रे।
मोह मिथ्यात ने उसभ उदें सूं, दिन दिन इधका अलूझें रे॥ १४॥
तिणनें श्रावक मिलीया अतंत अग्यांनी, त्यांनें आंधा ज्यूं मूल न सूझें रे।
त्यां आगें मन मांनें ज्यूं गोला चलावें, तो पिण बलतों जाब न बूझें रे॥ १५॥
थांरा मत मांहें कोयक बुधवंत हुवें तो, तुरत जांणें तिणनें कूडो रे।
तो छोड देंत ततकाल खोटो जांणी, झूठा बोला रे मुख देइ धूडो रे॥ १६॥
तपसी तणा गुण कानें सुणे जब, वलें अग्यांनी री छाती रे।
वले उलटा ओगुण काढें तपसा, ते निश्चें जीव मिथ्याती रे॥ १७॥
संवत अठारें वरस तयालें, आसोज विद नवमी सनीसर वारो रे।
मूड मती ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मझारो रे॥ १८॥

ढाल : ६

दुहा

च्यार साधवियां चोमासो कीयो, पादू गांम मझार।
तिण में दुष्टी पापी जीवडा, आल दीधा विवध प्रकार॥ १॥
कुण-कुण आल उठाय नें, दीया लोकां में फैलाय।
थोडा सा प्रगट करूं, ते सुणज्यो चित्त ल्याय॥ २॥

ढाल

[श्रावक समकित उचरे रे लाल]

दीख्या लेवा नें उठियो, तिणरो लेले अग्यानी नांम।
तिण वेंहराइ वस्तु असूझती, सूंखडियादिक तांम रे।
दुष्टी आल देता संक्या नही* ॥ १ ॥
पचास रुपियां री सूंखडी, साधवियां नें वेहराइ आण रे।
मोल मंगाए मेडता थकी, इसडी कहे छे कर कर ताण रे॥ दु० २ ॥
मोल आंण वेहराइ सूठने, ते पिण वेहर लीधी ततकाल रे।
वले वासी राखी कहे सूंठ नें, ओ पिण दीयो अग्यांनी आल रे॥ ३ ॥
साधवियां काजे सीरो कराय नें, साधवियां नें दीधो वेंहराय रे।
ओ पिण आल दीयो छे पापियां, वले दीयो लोकां मे फेलाय रे॥ ४ ॥
घृत ने खोपरादिक मोल ले, साधवियां ने वेहराया ताम रे।
एहवी बात उठाए पापिया, बकवो करें ठांम ठाम रे॥ ५ ॥
डावडा नें सूंस आर्यां दीया, परणवा रा कराया त्याग रे।
ओ पिण आल दीयो छे पापियां, त्यांरो जांणज्यो पूरो अभाग रे॥ ६ ॥
छकाय हणवा रा सूंस कराविया, घर में रहिवा रा त्याग कराय रे।
या तीना नें उचकाया आर्यां, ओ पिण एकंत मूसावाय रे॥ ७ ॥
भोज पत्र राख्यो कहे साधव्यां, वसीकरणादिक करवा ताहि रे।
ओ पिण आल देइ नें पापियां, फेलायो लोकां मांहि रे॥ ८ ॥
राते थांनक मे राख्या डावडा, ओ पिण बोल्यो हलाहल झूठ रे।
तिणरे वेख घणो आर्यां थकी, लोका में कीयो झूठो फितूर रे॥ ९ ॥
एक जणी आल इसडो दीयो, फीणा रोट्यां कर कर च्यार रे।
म्हे तो वेहराइ आर्यां भणी, एकण दिन मझार रे॥ १० ॥

---

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

इत्यादिक आल दीया घणा, फेलाया लोकां रे मांहि रे।
कर्मां वश बकिया बापडा, पर भव सूं पिण डरिया नांहि रे॥११॥
दीख्या लेवा नें उठिया तेहनां, त्यातीलां उठाइ बात रे।
त्यां आल दीया छे अन्हांखी थकां, प्रसिद्ध कीधा लोकां में विख्यात रे॥१२॥
वले भेषधारयां री श्रावका, त्यां पिण दीधा अणहुंता आल रे।
ते आल फेलाया लोक में, बुद्धि विण कुण काढे निकाल रे॥१३॥
केइ टोला री टालोकर फिरें, त्यांरे साधां सूं धेष अतंत रे।
त्यांनें अणहुंता दोष उतराय नें, त्यांरी पिण पूरी मन खंत रे॥१४॥
ते तों आगे पिण आल देतीं घणा, अवगुण बोलती थी दिन रात रे।
ते तों दोष उतार हरषी घणी, जाणें खरची आइ म्हांरे हाथ रे॥१५॥
फिरे छें ठांम ठांम बंचावती, अवगुण बोलें छें ठांम ठांम रे।
आर्यां री उतारण आसता, यांरा दुष्ट घणा परिणांम रे॥१६॥
केइ दोष उतारे आंणिया, केइ मुख सूं जोडी करे बात रे।
साधवियां नें आल देती फिरे, त्यां पूरो पडिवजियो मिथ्यात रे॥१७॥
झूठा दोष उतारया पापियां, ते पापणी लिया उतार रे।
त्यांरी बात साची कर मांनसी, ते पिण बूडसी कालीधार रे॥१८॥
दोष उतारिया त्यांनें पूछणों, थें दोष उतारियां किण कांम रे।
ए थें साचा उतारिया जांण नें, के थें झूठा जांणें नें तांम रे॥१९॥
ए तों दोष कहे लोकां मझे, त्यां दोषां नें साचा ठहराय रें।
आर्यां री उतारनें आसता, पांनो बंचाय बंचाय रे॥२०॥
त्यांनें लज्जा नहीं इण लोक री, परभव री चिंता न कांय रे।
झूठ बोलती पिण संके नहीं, मन मानें ज्यूं बोले ताय रे॥२१॥
आल उतार आर्यां तणा, पांमी मन मांहें हरष रे।
जांणें डाकण पाली फिरें तेहनें, चढवा नें मिलियो जरख रे॥२२॥
ए तो आगेइ चारित भांग नें, आरे कर बेठीं अनंत संसार रे।
ए साच किसी तरह बोलसी, यांरी परतीत नहीं छें लिगार रे॥२३॥
आहार अशुद्ध वेंहरयो छे जांण नें, वले कहे मैं वेंहरयो निरदोष रे।
इम झूठ बोले जांण जांण नें, एहवा भिष्टी न जाए मोष रे॥२४॥
आहार पांणी वेंहरयो छे सूझतो, वले पूछ करे निरधार रे।
त्यांनें भारीकर्मा केइ जीवडा, आल देता न संके लिगार रे॥२५॥
यां दोषां रो निकालो काढियो, पादूगांम मझार रे।
घणा बाई भाई बेठां थकां, आर्यां में नहीं दोष लिगार रे॥२६॥

आल दीयो अन्हांखी पापियां, त्यांरो हुवो घणो फितूर रे।
तोही नागा निरलंज लाजे नही, त्यारा जन्म जीतब ने धिक्कार रे॥२७॥
या आल दीयो अन्हारविया, त्यांरी मानी छे साची बात रे।
ते पिण बूड गया छे बापडा, तिण में संका नहीं तिलमात रे॥२८॥
एहवा आल सुणे भेषधारियां, साचा कर मांन लीधा ताय रे।
ए पिंण गांम नगर कहता फिरे, मन मे हरषत थाय रे॥२९॥
भेषधाख्यां नें बोया पापियां, आर्यां ने झूठा दे आल रे।
ए पिण पापी बकवो करें, पूरो काढें नही निकाल रे॥३०॥
यां पोते पिण आल दीया घणा, वले दीसें एहिज परिणांम रे।
ए दोष सुण ने हरषे घणा, जांणें सरिया मन वछित कांम रे॥३१॥
त्यानें परभव री चिंता हुवे, तो इण बात रो काढें निकाल रे।
वले नागडा भडंग हुवा तिके, सके नही देता आल रे॥३२॥
ओर जीवा नें कोइ आल दे, ते पिण रुले घणो संसार रे।
जिहां जाए तिहां परजले, पाछो आल पामें वारूंवार रे॥३३॥
तो साधां नें कूडा कूडा आल दे, तिण पापी रो पूरो अभाग रे।
भारी कर्म बांध्या तिण पापिए, तिण सूं पांमे दुख अथाग रे॥३४॥
कदा बंध पडे जे नरक रो, तो जावे नरक मझार रे।
तिहां दुख असाता हुवे घणी, वले खाये अनंती मार रे॥३५॥
साधां रे आल देवे पापिया, मन माहे उजम आंण रे।
तिंणरी परमाधांमी देवता, जीभ काढे जडां सूं तांण रे॥३६॥
साधां ने आल देवे पापिया, तिण छोडी लाज नें सर्म रे।
घणा मे मिश्र भाषा बोलता, बांधे महा मोहणी कर्म रे॥३७॥
केइ झूठ बोले नें पापिया, साधां ने देवे आल रे।
ते भ्रमण करे संसार मे, उतकष्टों अनंतो काल रे॥३८॥
ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो कहितां न आवें पार रे।
ते तों प्रश्न व्याकरण माहे कह्यो, दूजा आश्रव द्वार मझार रे॥३९॥
कदा पाप उदे हुवें इण भवे, तो बधे घणो रोग सोग रे।
छेहडो आवे रिद्धि संपति तणो, पडे बालां तणो विजोग रे॥४०॥
केइ आंधा होय जावे इण भवे, जाबक होय जावे निराधार रे।
भीख भमता होवे इण भवे, साधां नें आल रो देवणहार रे॥४१॥
केइ तो अन्न विहूंणा मरे, करता थकां विल विलाट रे।
साधां ने आल देवे तेहनां, भव भव में हुवे ओहिज घाट रे॥४२॥

इत्यादिक आल दीया घणा, फेलाया लोकां रे मांहि रे।
कर्मा वश बकिया बापडा, पर भव सूं पिण डरिया नांहि रे॥११॥
दीख्या लेवा नें उठिया तेहनां, न्यातीलां उठाइ बात रे।
त्यां आल दीया छे अन्हांखी थकां, प्रसिद्ध कीधा लोकां में विख्यात रे॥१२॥
वले भेषधास्यां री श्रावका, त्यां पिण दीधा अणहुंता आल रे।
ते आल फेलाया लोक में, बुद्धि विण कुण काढे निकाल रे॥१३॥
केइ टोला री टालोकर फिरें, त्यांरे साधां सूं धेष अतंत रे।
त्यांनें अणहुंता दोष उतराय नें, त्यांरी पिण पूरी मन खंत रे॥१४॥
ते तों आगे पिण आल देतीं घणा, अवगुण बोलती थी दिन रात रे।
ते तों दोष उतार हरषी घणी, जाणें खरची आइ म्हांरे हाथ रे॥१५॥
फिरे छें ठांम ठांम बंचावती, अवगुण बोलें छें ठांम ठांम रे।
आर्यां री उतारण आसता, यांरा दुष्ट घणा परिणांम रे॥१६॥
केइ दोष उतारे आंणिया, केइ मुख सूं जोडी करे बात रे।
साधवियां नें आल देती फिरे, त्यां पूरो पडिवजियो मिथ्यात रे॥१७॥
भूठा दोष उतास्या पापियां, ते पापणी लिया उतार रे।
त्यांरी बात साची कर मांनसी, ते पिण बूडसी कालीधार रे॥१८॥
दोष उतारिया त्यांनें पूछणों, थें दोष उतारिया किण कांम रे।
ए थें साचा उतारिया जांण नें, के थें भूठा जांणें नें तांम रे॥१९॥
ए तो दोष कहे लोकां मंझे, त्यां दोषां नें साचा ठहराय रे।
आर्यां री उतारनें आसता, पांनो बंचाय बंचाय रे॥२०॥
त्यांनें लज्जा नहीं इण लोक री, परभव री चिंता न कांय रे।
भूठ बोलती पिण संके नहीं, मन मानें ज्यूं बोले ताय रे॥२१॥
आल उतार आर्यां तणा, पांमी मन मांहें हरष रे।
जांणें डाकण पाली फिरें तेहनें, चढवा नें मिलियो जरख रे॥२२॥
ए तो आगेइ चारित भांग नें, आरे कर बेठीं अनंत संसार रे।
ए साच किसी तरह बोलसी, यांरी परतीत नही छें लिगार रे॥२३॥
आहार अशुद्ध वेंहस्यो छे जांण नें, वले कहे मे वेंहस्यो निरदोष रे।
इम भूठ बोले जांण जांण नें, एहवा भिष्टी न जाए मोष रे॥२४॥
आहार पांणी वेंहस्यो छे सूझतो, वले पूछ करे निरधार रे।
त्यांनें भारीकर्मी केइ जीवडा, आल देता न संके लिगार रे॥२५॥
यां दोषां रो निकालो काढियो, पादूगांम मझार रे।
घणा बाई भाई बेठां थकां, आर्यां में नहीं दोष लिगार रे॥२६॥

आल दीयो अन्हांखी पापियां, त्यारो हुवो घणो फितूर रे।
तोही नागा निरलज्ज लाजे नही, त्यारा जन्म जीतव ने धिकार रे ॥२७॥
या आल दीयो अन्हारविया, त्यारी मानी छे साची वात रे।
ते पिण बूड गया छे बापडा, तिण मे संका नही तिलमात रे ॥२८॥
एहवा आल सुणे भेषधारियां, साचा कर मांन लीधा ताय रे।
ए पिण गांम नगर कहता फिरे, मन मे हरषत थाय रे ॥२९॥
भेषधास्यां नें बोया पापियां, आर्यां ने भूठा दे आल रे।
ए पिण पापी बकवो करें, पूरो काढे नही निकाल रे ॥३०॥
यां पोते पिण आल दीया घणा, वले दीसे एहिज परिणांम रे।
ए दोष सुण नें हरषे घणा, जाणे सरिया मन वछित कांम रे ॥३१॥
त्यानें परभव री चिंता हुवे, तो इण बात रो काढे निकाल रे।
वले नागडा भडग हुवा तिके, सके नही देता आल रे ॥३२॥
ओर जीवा नें कोइ आल दे, ते पिण रुले घणो संसार रे।
जिहां जाए तिहां परजले, पाछो आल पामे वारुंवार रे ॥३३॥
तो साधां ने कूडा कूडा आल दे, तिण पापी रो पूरो अभाग रे।
भारी कर्म वांध्या तिण पापिए, तिण सूं पांमे दुख अथाग रे ॥३४॥
कदा वंध पडे जे नरक रो, तो जावे नरक मभार रे।
तिहां दुख असाता हुवे घणी, वले खाये अनंती मार रे ॥३५॥
साधां रे आल देवे पापिया, मन मांहे उजम आंण रे।
तिणरी परमाधामी देवता, जीभ काढे जडां सूं तांण रे ॥३६॥
साधां नें आल देवे पापिया, तिण छोडी लाज नें सर्म रे।
घणा मे मिश्र भाषा बोलता, बांधे महा मोहणी कर्म रे ॥३७॥
केइ भूठ बोले नें पापिया, साधां नें देवे आल रे।
ते भ्रमण करे ससार मे, उतकष्टों अनतो काल रे ॥३८॥
ते दुख भोगवे नरक निगोद मे, तिणरो कहितां न आवें पार रे।
ते तों प्रश्न व्याकरण मांहे कह्यो, दूजा आश्रव द्वार मभार रे ॥३९॥
कदा पाप उदे हुवें इण भवे, तो वधें घणो रोग सोग रे।
छेहडो आवे रिद्धि संपति तणो, पडे वालां तणो विजोग रे ॥४०॥
केइ आंधां होय जावे इण भवे, जावक होय जावे निराधार रे।
भीख भमता होवे इण भवे, साधा ने आल रो देवणहार रे ॥४१॥
केइ तो अन्न विहूंणा मरे, करता थकां विल विलाट रे।
साधां नें आल देवे तेहनां, भव भव मे हुवे ओहिज घाट रे ॥४२॥

साधु : साधवियां नें आल दे, तिणरो भव भव मांहिं अभाग रे।
ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो बेगो न आवे थाग रे॥४३॥
इम सांभल नें नर नारियां, किणनेंइ म दिज्यो आल रे।
आल दीधां रा फल छे पाडुवा, श्री जिण वचन संभाल रे॥४४॥
आल दीधां रा फल ओलखायवा, जोड कीधी ईडवा मझार रे।
संवत अठारे वर्ष चोपनें, चेत विद चोथ नें बुधवार रे॥४५॥

ढाल : ७

दुहा

केई अग्यानी इम कहे, साधु नें जोड करणी नांहि।
ते अन्हाखी बकबोकरें, त्यांरे ग्यांन नही घट मांहि॥ १॥
त्यां सावद्य निरवद्य न ओलख्यो, नही ओलखी भाषा च्यार।
ते जोड करणी उथापवा, हुवा अग्यानी त्यार॥ २॥
श्री अरिहंत भाष्या अर्थ नें, ते गणधरे गुथ्यों सिधंत।
त्या जोड करी सूतरा तणी, त्यांरो अर्थ करे मतवंत॥ ३॥
रिषभ देवजी रा साधां जोडीया, पइना चोरासी हजार।
श्री वीर तणा साधां कीयां, चवदें हजार पइना सार॥ ४॥
वले विचला बावीस तिथकरा तणां, साधा कीधा पइना अनेक।
तो हिवडां जोड निरवद्य करें, त्यामे दोष म जांणों एक॥ ५॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

केई कहे साधां ने जोड न कहणी, कहितां बंधे ग्यांनावरणी कर्मो रे।
दरसणावरणी कर्म बंधे जोड सुणीया, तिण जोड कह्या नही धर्मो रे।
चतुर विचार करी नें देखो*॥ १॥
पेहलां तो साधां ने जोड कहणी नषेधी, ते ही जोड कहिवा लागा रे।
त्या विकलां ने साधु किण विध कहिजे, ए तो वरत विहूणा नागा रे॥ च० २॥
जोड कह्यां ग्यांनावरणी कर्म बंधे छें, सुणें ते दरसणावरणी बांधे रे।
हिवें तेहीज जोड कहे तिणरे लेखें, समकत चारित खोयो आंधे रे॥ ३॥
वले जोड कहें त्यानें इण विध कहितां, गीतेरण ज्यूं गावे गीतो रे।
ते पिण जोड नें मिल मिल गावे, त्यांरी विकल मानें परतीतो रे॥ ४॥
जोड कहणी नषेघे नें कहिवा लागा, त्यांनें आय कहे कोइ आमो रे।
थें साधा नें जोड कहणी नषेधी, थें जोड कहो किण कामों रे॥ ५॥
जब कहे म्हे जोड नें भली न जांणां, म्हे कहा अनेरा नी कीधी रे।
परनी कीधी जोड कहां परपेखा, म्हानें आय मिली छें सीधी रे॥ ६॥
भूठ लागें जोड करणवाला नें, म्हानें तो कहितां भूठ न लागें रे।
म्हे तो जिसी हुवे जिसी कहे बतावां, लोक सुणें त्यां आगें रे॥ ७॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पेलां री जोड कीधी जोड भूंडी जांणों छों, तो थें कांय कहो लोकां आगे रे।
लोक पिण जोड सुण नें घणी सरावे, जब सगलां नें भूठ लागें रे॥ ८॥
जो पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, तो कहि देणों लोकां आगें रे।
खोटी जोड नें थें मतीय सरावो, जब किणनेंई भूठ न लागें रे॥ ९॥
खोटी जोड कहे ने थें धिन धिन कहावों, जब बकता सुरता दोनूं बूडा रे।
अठें तो ठागा सूं कांम चलावे, आगे चिहूं गति में दीससी भूंडा रे॥ १०॥
पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, पिण मन मांहें खोटी जांणों रे।
तो होली रा गीत नें गाल परपेखा, ते कहितां संक क्यूं आंणों रे॥ ११॥
यांरा कहिण रे लेखें सगली जोड भूंडी, तो कांय करो टाला टोलो रे।
कांई जोड कहो कांई कहिता संको, आ पिण थांरे लेखें थांमें भोलो रे॥ १२॥
जोड कहणी निषेधें नें कहिता जाए, त्यां विकलां री नही परतीतो रे।
सावद्य निरवद्य विण ओलखीयां, यूंही बोले घणा विपरीतो रे॥ १३॥
केई सावद्य चोरी अनेरा नी कीधी, ते पिण चोप्या कहवा लागा रे।
तिण मांहे भूठ छें विवध प्रकारें, ते पिण जोड कहिवा नें आगा रे॥ १४॥
एहवी पिण खोटी जोड कहे नें, लोक रीभावण लागा रे।
वले साधु रो विडद धरावें अग्यांनी, ते पिण विरत विहूणा नागा रे॥ १५॥
वले जोड कहें त्यांनें निनव कहें छें, वले भूठाबोलां कहें तांमो रे।
सुयगडाअंग तेरमाधेन रो, ले ले अणहूंतो नांमो रे॥ १६॥
वले जोड कहें त्यांनें वदवद घाल्या, वेस्या रा करंडीया माह्यों रे।
ठांणाअंग चोथा ठांणा रो नांम लेइ ने, ते पिण मूंसावायो रे॥ १७॥
निन्व ने वले भूठाबोला कहें छें, वले वेस्या जोडे दीघा रे।
वले दोष अनेक कहे जोड कीधां, त्यांरा वचन विकलां मांन लीधा रे॥ १८॥
जोड करे त्यांनें कहें खोटा नें निन्व, जोड नें पिण कहें छें खोटी रे।
तेहीज जोड नें पोतें कहें छें, ते विकलां रे भोलप मोटी रे॥ १९॥
वले जोड करें त्यांसूं संभोग भेलो, तिणनें साध गिणें आप सारिखो रे।
ते पिण रेलो आप में आवें, त्यांनें आ पिण नहीं छें ठीको रे॥ २०॥
साधां नें निरवद्य जोड करणी उथापें, ते पूरा मूंढ गिंवारो रे।
निरवद्य न्याय करे जोड साधु, तिणमें नही दोष लिगारो रे॥ २१॥
मतिग्यांन तणा दोय भेद कह्या जिण, नंदी सूतर रे माह्यों रे।
सूतर री नेश्राय सूं अर्थ बधारें, सूतर विण बुध फेंलावें तांह्यों रे॥ २२॥
सूतर विनां कोइ बुध फेंलावें, ते जोड करें निरदोषो रे।
च्यार भाषा तणा जे जांण होसी ते, जोड करसी तिको ग्यांन चोखो रे॥ २३॥

ते उतपात री बुध वीर वखांणी, ते तो मेल दे वचन रसालो रे।
जिसरो नर देखे जिसरोइज साचो, उतर दे ततकालो रे॥ २४॥
सूतर विनां कोइ बुध फेलावे, ते तो बुध घणी छे भारी रे।
सावद्य निरवद्य अकल सूं जांणो, ते तो करसी जोड विचारी रे॥ २५॥
अणदीठो अणसांभल्यो काने, मन मे पिण न कीयो विचारो रे।
एहवो प्रश्न कोइ आय पूछे जव, ततषण जाब दे तिणवारो रे॥ २६॥
भारत रामायणादिक सास्त्र अनेक, ते अनतीर्थी कीया ग्रंथो रे।
ते साधु भणें सम सूतर हुवे, ते बुध सूं संवलो करे अर्थो रे॥ २७॥
अण तीरथीया रा कीधा सासत्र, त्याने हुंता ज्यूं रा ज्यूं जांणो रे।
तो पोते जोड करसी तिण मांहे, सावद्य किण विध आणो रे २८॥
केई मिथ्याती जोड करे तिण माहे, काई सांच काई कूडो रे।
ते सुणीयां थका रंग किण विध आवें, जाणे मिली केसर माहे धूरो रे॥ २९॥
साधु तो कुड ने काने करेने, साच कहे सुखदायो रे।
जांणे गंगोदक मे केसकर घाली, ज्यू रग दीये चढायो रे॥ ३०॥
साधु तो जोड करे छे जुगत सूं, सूतर केरे न्यायो रे।
पिण कुबदी जीव कदागरो माडे, सुबदी री आवे दायो रे॥ ३१॥
अनतीरथी री कीधी जोड माहिलो, कूड काने करे ताह्यो रे।
तो इसडी ओलखणा घट ज्यारे, ते न करे जोड अन्यायो रे॥ ३२॥
आचारग आदि दे सूतर अनेक, ते भाष्या अरिहत भगवानो रे।
तेहीज सूतर ' जाणे मिथ्याती, तिणरे हुवे मति अग्यानो रे॥ ३३॥
पुरांण कुरांण ने श्री जिण आगम, मिथ्याती जाणे तो अग्यानो रे।
तेहीज समदिष्टी जांणे तो ग्यांन, तिणरो निरमल मति गिनानो रे॥ ३४॥
सत असत ने वले मिश्र ववहार, ए च्यारूंई भाषा जाणे सोयो रे।
ते जोड करणी क्याने उथापे, साधु ने भाषा बोलणी दोयो रे॥ ३५॥
सत ने ववहार भाषा दोय बोले, ते पिण निरवद्य ने निरदोषो रे।
या दोय भाषा सूं जोड करें छें, त्यारो मति ग्यांन छे चोखो रे॥ ३६॥
ए दोय भाषा बोलण री साधां ने, भगवंत आग्या दीधी ताह्यो रे।
दसवीकालक सातमा अधेने, तीजी गाथा माह्यो रे॥ ३७॥
केई जोड करे केई जोड कहे छे, अथवा केई जोड सरावे रे।
जो धर्म होसी तो सगलां ने होसी, पाप होसी तो सगला ने थावे रे॥ ३८॥
वले उतराधेन गुणतीसमे धेने, तिहां अर्थ मे गाथा विसतारो रे।
जोड करे प्रवचन दीपावे, तिणने होसी लाभ अपारो रे॥ ३९॥

ववहार समकत रा सतसठ बोल, तिणमें पिण ओहीज न्यायो रे।
तिणमें आठां बोलां प्रवचन दीपावें, तिहां जोड करणी तिण माह्यो रे॥ ४०॥
वले ठांण अंग नवमां ठांणां मांहें, तिहां अर्थ कह्यो छे आंमो रे।
नवूं ही पाप सासत्र साध भणें तो, धर्म पुसटों करें तांमो रे॥ ४१॥
वले चोथें ठांणें च्यार काव्य कह्या छें, गदबंध कथा गीतो रे।
ते जोड कह्यां विण किण विध गांवें, ते पिछांण कीजों रूडी रीतो रे॥ ४२॥
किण ही जेंहर नीपाए नें पीधों, किणही जेंहर पीधों जांणें सीधो रे।
तिण जेहर थकी दोनूं जणा ततषण, अकाले आउषो पूरो कीधो रे॥ ४३॥
ज्यूं कोइ जोड करे नें कहें छें, कोइ जोड कहें सीधी जांणों रे।
जो जेंहर सरीषी जोड भूठी छें, तो दोयां नें पाप लागसी आंणो रे॥ ४४॥
जिण जेंहर नीपाए नें पीधो ते मूंओ, सीधो जेंहर पीधो तेही मूंओ रे।
ज्यूं जोड करे नें कह्यां पाप लागें, तो सीधी कही त्यांनेंइ पाप हूवो रे॥ ४५॥
जो निरवद्य जोड हुवें इमरत सरीषी, ते कह्यां थकां कटें कर्मो रे।
एहवी जोड करे नें कह्यां धर्म निश्चें, सीधी कहणवालानेंई धर्मो रे॥ ४६॥
त्यां जोड करणी साधां नें निषेधी, तेहीज जोड करवा लागा रे।
ते प्रतष चोडें भूठाबोला छें, ते वरत विहूंणा नागा रे॥ ४७॥
पेंहलां तो कहितां साधां नें जोड न करणी, ते पिण जोड करवा नें ढूका रे।
वेण सगाइ तो मेल न जांणें, यूंही कुडीया थका करें कूका रे॥ ४८॥
त्यांरा बडा बडेरा आगें हूवा ते, साधां नें जोड करणी न थापी रे।
त्यांनें पिण जाबक भूठा घाले नें, खोटी जोड करवा लागा पापी रे॥ ४९॥
कोइ निरवद जोड सूतर न्याय करता, त्यांरी निद्या करता दिन रातो रे।
हिवें जोड करें त्यांनें आछा जांणें, तिण लेखें आगें हूंतो मिथ्यातो रे॥ ५०॥
संवत अठारे नें वरष तयांले, काती सुदि तेरस नें सनीवारो रे।
निरवद्य जोड करणी ओलखावण काजें, जोड कीधी कोठारया मभारो रे॥ ५१॥

ढाल : ८

दुहा

केई मूढ मिथ्याती जीवडा, ते तो बूडे छे कर कर तांण।
ते ववेक विकल सुघ वुघ विनां, जिण मारग रा अजांण॥ १ ॥
च्यार पाटी ने काउसग कीयां विनां, कहे सामायक नही होय।
एहवी उधी करे छे परूपणा, त्यां सुघ वुघ दीधी खोय॥ २ ॥
पेहिली करणी छे इरीयावइ तसोतरी, पछें काउसग करणों एक ठांम।
पछे लोगस्स कहे सामायक पचखणी, पछे कहिणो नमोथुण तांम॥ ३ ॥
ए च्यार पाटी ने काउसग कीयां विनां, सावद्य जोग रा करे पचखांण।
तिणरे सामायक नही नीपजें, इसडी कहें मूंढ अयांण॥ ४ ॥
सका घाले लोकां ने अन्हांखी थकां, सामाइ री देवे अंतराय।
रात दिवस बकवो करे, तिणरा जाव सुणो चितल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे साध सयाणा]

च्यार पाटी कह्यां विण समाइ न करणी, इम कहें त्यारी सरघा खोटी।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, त्यांरी अकल मे खांमी छे मोटी रे।
भवियण जोवो हिरदय विचारी, थे काय करो आतम भारी रे।
भवियण थे छोड दो रूढ हीया री*॥ १ ॥
छ आवसग माहे पेहली समाइ, पछें चोवीसत्थो चाल्यो।
ते वीर वचन उथापे अग्यानी, ओ घोचो अणहुंतो घाल्यो रे॥ भ० २ ॥
उतराघेन गुणतीसमे घेनें, पेंहलां सामायक रो फल भाख्यो।
पछें चोवीसत्था सूं पचखांण लग, त्यांरो फल अनुक्रमें दाख्यो रे॥ ३ ॥
अनुयोग दुवार में छ आवसग चाल्या, पेहिलो आवसग समाइ जांणों।
पछे चोवीसत्थो वंदणा पडिकमणो, पछे काउसग ने पचखांणो रे॥ ४ ॥
समाइ चोइत्थो वंदणा पडिकमणो, काउसग ने पचखांणों।
थे सांझ सवेर रो करो पडिकमणो, जव थे इम काय बोलो वांणों रे॥ ५ ॥
थारे लेखें याने पेहलां कहिणो चोइत्थो, पछें कहिणो थांने समाइ।
जो थे पेंहलां नाम सामायक रो लेसो, तो थां में समझ न दीसे कांई रे॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

च्यार पाटी कह्यां विण पचखें समाइ, तिणरी थें न गिणों समाइ।
जो थें साचा हुवों तो सूतर में बतावो, नहीं तो कूडी कुबद चलाइ रे॥ ७॥
यारें लेखें तो च्यार पाटी समाइ, ते पिण विकलां नें समभ न कांई।
सामायक चोइत्थो ओलख्यां विण, यूंही करे लपराइ रे॥ ८॥
च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, आतमा सुघ नहीं होय।
आतमा सुघ कीयां विण करे समाइ, तो सामायक नहीं नीपजें कोय रे॥ ९॥
एहवी उंधी परूपणा कर कर लोकां में, सामायक री देवें अंतराय।
त्यांनें सूतर सस्त्र ज्यूं परगमीया, तिण सूं कूडी करें वकवाय रे॥ १०॥
एहवा मूंढ मिथ्याती नें पूछा कीजें, जिण भाख्या बारें वरत सोय।
च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसो किसो वरत नहीं होय रे॥ ११॥
हिंसा भूठ चोरी मैथुन परिग्रह, ए पांचूंइ आश्रव जोय।
च्यार पाटी नें काउसग कीया विण, किसा आश्रव ना त्याग न होय रे॥ १२॥
हिंसादिक अठारें पाप रो सेवण, ते सर्वथा सावद्य जांण।
च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसा पाप रा न हुवें पचखांण रे॥ १३॥
एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवे, जब बोलें अग्यांनी ऊंधा।
त्यांरे कर्म जोगें डंक लागा कुगुरां रा, ते किण विध बोलें सूंधा रे॥ १४॥
त्याग वैंराग री जेभ न करणी, पाप रो क्यांसूं होसी समाद।
वीर कह्यों उतराधेन दसमें अधेन नें, एक समों न करणो परमाद रे॥ १५॥
सामायक चारित वीर लीयों जद, च्यार पाटी तो गुणी न दीसें।
सर्व पाप करणों नही मोनें, इम कह्यों छे श्री जगदीसें रे॥ १६॥
इरीया तसोतरी कहे काउसग कीधो, पछें लोगस कह्यों तिण ठांम।
इतला मांहें घर कांम उपनों, तो उ जाय करें घर कांम रे॥ १७॥
पेंहला सावद्य जोग रा त्याग करे नें, समाइ कर बेठो एक ठांम।
तठा पछें कोइ घर कांम उपनो, तो उ जाय न करे घर कांम रे॥ १८॥
च्यार पाटी कहितां नें काउसग करतां, समा वहें असंषज कालो।
जब लग आश्रव नाला छूटा राख्यां, त्यांमें पाप आवें दगचालो रे॥ १९॥
ते तो समें समें सात कर्म लागें छें, हिंसादिक नाला करें प्रवेस।
एक एक कर्म रा प्रदेस अनंता, जीव रें लागे एक प्रदेस रे॥ २०॥
किणनें वैंराग आयो समाइ करण रो, ते हुवो समाइ नें तयार।
त्यारें लेखें तो तिणनें समायक न करणी, उणनें पाटी न आवें च्यार रे॥ २१॥
कोइ तो च्यार पाटी विनां कह्यांइ, सामायक करे हरषत होयो।
तिण यांरी सरधा सुण छोडी सामाइ, तिणनें तो यां जाबक बोयो रे॥ २२॥

च्यार पाटी विना जो न हुवें सामाइ, आ सरधा धारे बेंठो कोइ।
तो इण लेखें तो च्यार पाटी कह्यां विण, वरत न हुवें बारोंइ रे॥ २३ ॥
च्यार पाटी कह्यां विण दस वरत न सरधो, नही सरधो सामाइ नें पोसो।
ओ तो अपछादें ने उंधी सुझी, ओ तो कर्म तणो छे दोषो रे॥ २४ ॥
इरीयावही तसोतरी काउसग, ए तो पडिकमणा री पाटी।
त्याने कह्यां विनां सामाइ न सरधें, त्यांरी अकल कर्म सूं दाटी रे॥ २५ ॥
लोगस ने नमोत्थुण त्यामे, अरिहंत रा गुणग्राम।
त्यानें कह्या विण सामाइ न सरधें, ते तो यूंही बके बेफांम रे॥ २६ ॥
यानें मोह मिथ्यात नें उसभ उदे सू, संवली तो मूल न सुझें।
वले प्रवल राग नें घेष उदें छें, तिणसूं दिन दिन इधिक अलुझें रे॥ २७ ॥
बावल छुटी घर मे आवे कजोडो, ते घर सुध किण विध थायो।
त्यामें केई चतुर करें थोडा में, विकलां सूं सुध कीयों न जायो रे॥ २८ ॥
केई घर मासूं काढे कजोडो, जब पेहलां जडे आडा किवाडो।
पछें कजोडो बुहारे करें भेलो, पछे न्हाख दे घर रे बारो रे॥ २९ ॥
केई किवाड जड्यां विण बुहारो देवें, ते कचरो उड उड पाछो आवे।
बुहारो देवें पिण कचरो न रहे आवतो, ते घर सुध किम थावें रे॥ ३० ॥
ज्यू जीव रूपीया घर मे कर्म कजोडो, समें समें निरंतर आवे।
त्यामे केइ चतुर चतुराई करें तो, जीव रूपीयो घर सुध थावें रे॥ ३१ ॥
घर जिम तालाब नें रीतो करणो, जब तो नाला रूंधणा पेंहला।
माहिलो पांणी मोरीयादिक सूं काढे, जब तालाव खाली हुवेला रे॥ ३२ ॥
जीव रूपीयो तलाव छें तिणरें, पेंहला आश्रव नाला रूंध।
पछें तपसा करे ने कर्म खपावें, जब निरमल हुवें जीव सुध रे॥ ३३ ॥
ए उतराधेन रें तीसमे अधेने, पेहला तो आश्रव रूंधवा चाल्या।
ज्यू आश्रव रूंधे च्यार पाटी कह्या विण, तिणमेंइ घोचा कुपातरा घाल्या रे॥ ३४ ॥
सवर निरजरा गुण छे दोनूंइ, पेला पछे कीयां नही दोष।
च्यार पाटी कह्यां विण समाइ न सरधें, आ उंधी सरधा छे फोक रे॥ ३५ ॥
समायक उथापण ने मूढ मिथ्याती, कूडा कुहेत लगावे अनेक।
पिण जिण मारग ओलखीयो छे त्यारे, थांरी बात न माने एक रे॥ ३६ ॥
च्यार पाटी ने काउसग कीया विण, नही सरधे छे मूढ समाइ।
त्यारी खोटी सरधा ओलखावण काजें, जोड कीधी सिरीयारी मांहि रे॥ ३७ ॥
सवत अठारें ने वरष पचासें, आसाढ सुद बीज नें रिववारो।
ते सुण सुण ने उत्तम नरनारी, कोइ संका म राखो लिगारो रे॥ ३८ ॥

ढाल : ६

दुहा

सासण श्री विरधमांन रों, ग्यांनादिक गुण भंडार।
साध साधवी श्रावक श्रावका, अे तीरथ कह्या जिण च्यार ॥ १ ॥
सर्व विरत धर्म साध रो, देस विरत श्रावक धर्म जांण।
ए दोनूंइ धर्म छें निरमला, समदिष्टीयां लीया छे पिछांण ॥ २ ॥
बीस भेद कह्या संवर तणा, बारां भेदां निरजरा जांण।
संवर निरजरा में श्रीजिण आगन्या, तिणसूं जीव पोंहचें निरवांण ॥ ३ ॥
साध श्रावक रा धर्म में, हिंसादिक नहीं तिलमात।
ओ निरवद्य धर्म परूपीयो, चोवीसमें जगनाथ ॥ ४ ॥
इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष।
ते भिष्ट छें सरधा आचार में, अरू बरू लो देख ॥ ५ ॥
ते पिण साधु बाजें छें लोक में, भूला अग्यांनी भर्म।
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रह, यांमें कहें छें धर्म ॥ ६ ॥
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रहो, यांमें जिण कह्यो एकंत पाप।
त्यांमें धर्म परूप्यों अनार्यां, श्री जिण वचन उथाप ॥ ७ ॥
ते चोरें कहितां तो लाजा मरें, वले कांम पड्यां फिर जाय।
ते सरधा कहें छें किण विधें, ते सुणजों चित ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[रे भवियण जिण आगन्या...]

कहें समदिष्टी नें पाप न लागे, जो उ करे हर कोइ कांम।
इसडी परूपणा करें अग्यांनी, भूठो ले ले सूतर रो नांम रे।
कुमत्यां आ सरधा कठा सूं धारी रे, थें कांय करो आतम भारी रे।
इण सरधा सूं घणी खुवारी* ॥ १ ॥
कहें समदिष्टी सतरें पाप सेवें, त्यांनें पाप रों अंस न लागों।
इसडी उंधी सरधा परूपें छें त्यांरे, मोटो लागों मिथ्यात रो दागों रे ॥ ई० २ ॥
कहें समदिष्टी देवता नें देवी, भोग भोगवें विवध प्रकार।
वले कीला करें छें अनेक प्रकारें, त्यांनें पाप न कहो लिगार रे ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सक्र इन्द्र कोणक री भीड आए ने, दोय दोय सगराम कीधा भारी।
एक कोड असी लाख मानव मूंआ, इंद्रा ने पाप न कहो लिगारी रे॥ ४ ॥
काली कुमरादिक दसोइ भायां ने, चेडे मास्या एकेकें बाण।
थे चेडा राजा ने पाप लागो नही जांणों, तो थे पूरा छो मूंढ अयांण रे॥ ५ ॥
भरतादिक चक्रवत हुआ समदिष्टी, राज कीधो छ षंड रो आपो।
वले अनेक अस्त्रीयां सूं भोग भोगवीया, त्यांनें मूल न सरधो थे पापो रे॥ ६ ॥
सकडाल पुतर थो वीर नो श्रावक, तिण घाल्या सइकडां निहाव।
थें तिणमेंइ पाप न सरधो रे विकलां, थें पको कीधो बुडण रो उपाव रे॥ ७ ॥
वीर तणो श्रावक आणंद हुंतो तिण, पांचसो हलवा खेती कीधी।
तिणनें खेती रो पाप लागो नही सरधे, तिण नरक तणी नीब दीधी रे॥ ८ ॥
समदिष्टी श्रावक घर मांहे बेंठा, त्यां आरंभ कीधा अनेक।
त्यांनें आरभ कीयां रो पाप न जाणें, ते बूडें छें विनां ववेक रे॥ ९ ॥
त्यांने चोडें प्रश्न पूछ्यां लाजां मरें जब, दरबे पाप लागो बतावें।
कूड कपट करे निज सरधा ढांकण नें, ज्यूं त्यूं कर नें पार होय जावें रे॥ १० ॥
दरबे पाप तो पाप छे नाही, दरबे साध ते साधु नाही।
दरव तीथंकर ते तीथंकर नाही, विचार देखो मन मांही रे॥ ११ ॥
दरवे साध ने दरवे तीथंकर, त्यांने गिणती मे गिणीया नांही।
ज्यू दरवे पाप कहिवा ने कहीजें, तिण सूं दुख उपजें नही काई रे॥ १२ ॥
त्या विकला ने वले पृछा कीजे, पाप कहो थे दरब ने भावो।
तो थे दोनूंइ पाप रा जूआ जूआ फल, जथातथ कहि बतावो रे॥ १३ ॥
भावे पाप तणा फल कडवा बतावो, दरवे पाप रा फल कहो मीठा।
ए विरुध वात बताया लोकां मे, परोला हाथा सूं फीटा रे॥ १४ ॥
दरवे नें भावे दोय बतावो, जो दोया रा फल कडवा बतावो।
जब तो दरव भाव एक कह्या थें, दोय कह्या किण न्यावो रे॥ १५ ॥
आ भूठी वकरोल करे लोकां में, भोलां नें काय भरमावो।
दरवे ने भाव रो नांम लेइ नें, गोला कांय चलावो रे॥ १६ ॥
समदिष्टी ने पाप लागो न सरधो, पाप लागो कहो किण लेखे।
थे तो हीयाफूट गधा रा साथी, निज सरघा साह्मो क्यू नही देखे रे॥ १७ ॥
थारी अंतरंग मे सरधा उंधी, जाबक खोटी जबून।
समदिष्टी भोग भोगवे त्यानें, सरधो छो निरजरा पुन रे॥ १८ ॥
सतरे पाप सेवे समदिष्टी तिणमे, थे जांणो छो कटता कर्म।
वले पुन तणा थाट बधीया जाणो, थारे मूढे तो ओ तत धर्म रे॥ १९ ॥

समदिष्टी श्रावक र इण विध, नीपनों जांणो छो धर्म।
कांम भोग तणी अभिलाषा हुवें जब, भोग भोगवे नें तोडें कर्म रे॥ २०॥
समदिष्टी आरंभ करें अनेक प्रकारें, खेती आदि दे विणज व्यापार।
इण किरतब में निरजरा पुन जांणें, यांरी सरधा नें तीन धिकार रे॥ २१॥
केई समदिष्टी तो घर हाट करावें, करें छ काय संघार।
तिणमेंइ पाप न जांणों रे कुमत्यां, थें बुड गया काली धार रे॥ २२॥
समदिष्टी श्रावक रे कांम पडें तो, करें संगराम अनेक।
तिणमेंइ थें धर्म ने पुन जांणों, थें बुडों छो विनां ववेक रे॥ २३॥
केई समदिष्टी खाएं चुगली नें चाडी, पेंला रों घर देवें गमाई।
तिणमें धर्म जांणों पिण पाप न जांणों, आ पूरी थांरी विकलाइ रे॥ २४॥
केई समदिष्टी करें सिनांन सपाडा, रंगा चंगा रहें नित न्हाइ।
त्यांनें पिण पाप लागो नहीं सरधो, थांरी अकल गइ दपटाइ रे॥ २५॥
श्रावक समदिष्टी मइथुन सेवें, ते भोग तणी छें लील।
श्रावक रा मइथुन नेश्चें कुसील, तिण कुसील नें जांणों सुसील रे॥ २६॥
हिवें कहि कहि नें कितरोंक कहूं, समदिष्टी करें अनेक आरंभो।
तिणनें पाप लागो नहीं सरधो, थांरी सरधा रो बडो अचंभो रे॥ २७॥
समदिष्टी नें पाप लागो नहीं सरधो, आ तो उठी जठाथी झूठी।
प्रतष पाप कीयां में पाप न जांणों, थांरी हीया निलाड री फूटी॥ २८॥
समदिष्टी श्रावक नें पाप लागो न सरधो, आ सरधा कठा सूं काढी।
आगम उथाप नें अंवला पडीया, मोष तणी वरत वाढी रे॥ २९॥
श्रावक नें सुसीलीयो कह्यो छे, तिणरो थें भेद न जांणो।
थें कुसील ने सुसील जांणों नें, पींपल बांधी मूर्ख जिम तांणो रे॥ ३०॥
इविरती समदिष्टी अधर्मी, श्रावक धर्मीअधर्मी दोनूंइ।
श्रावक नें एकंत धर्मी सरधें, ते गया जमारो खोइ रे॥ ३१॥
इविरत रो पाप लागें श्रावक नें, किरतब करें जिसों पाप होइ।
श्रावक रें पाप लागो न सरधें, ते चाल्या जनम विगोइ रे॥ ३२॥
उवाइ सुयगडाअंग मांहें, श्रावक धर्मीअधर्मी चाल्यो।
श्रावक नें एकलो धर्मी कहेनें, थें घोचो अणहूंतो घाल्यो रे॥ ३३॥
श्रावक नें पाप लागो न कहे मिथ्याती, त्यांनें ओलखावण ताहि।
भव जीवां नें समभावण काजें, जोड कीधी गुदवच रे मांहि रे॥ ३४॥
संवत अठारें नें वरस एकावनें, वेंसाष सुदि इग्यारस वार बुध।
ते सुण सुण नें उतम नर-नारी, सरधा धार राखो सुध रे॥ ३५॥

ढाल : १०

दुहा

केई भारीकर्मां जीवडा, त्यारा घट माहे घोर अग्यान।
त्यारा बोल्यां री समझ त्यानें नही, ते जीव विकल समांन॥ १ ॥
नारकी देवता मे भेद जीव रा, तीन तीन कहे छे अयांण।
इग्यारमो तेरमों नें चवदमो, इण लेखें विकल समाण॥ २ ॥
ते सूतर बाचें छे जिण भाषीया, त्यांरी रहस न जाणे मूढ।
ते ताण करें छें झूठा थकां, पिण लीधी न छोडे रूढ॥ ३ ॥
त्यारी पीढ्यां खपी झूठ बोलतां, पिण किण ही न काढ्यो निकाल।
ववेक विकल सुध बुध विनां, झूठी करे छे झखाल॥ ४ ॥
कदा अजांणपणे झूठ बोलीयो, पछेइ निरणो करे सोय।
ते आलोएनें सुध हुवो, रूढ राखे ते बूडा सोय॥ ५ ॥
नारकी नें सर्व देवता मझे, दोय भेद कह्या जिणराय।
तेरमो ने वले चवदमो, तिणमे सका न जांणो काय॥ ६ ॥
तीन भेद कहे छे तेहनें, झूठा घालीजे एम।
त्यांरा भाव भेद परगट करूं, ते सुणजो धर पेम॥ ७ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

जीव रा तीन भेद कहे देवता मे, ए बात उठी छे तठाथी झूठी।
इण बोल रो निरणो न करे छे त्यांरी, हीया ने निलाड री दोनूंइ फूटी।
इण झूठाबोला रो निरणो कीजो*॥ १ ॥
इग्यारमों भेद जीव रों निश्चे निपुंसक, देवता नही छे निश्चे निपुसक ताम।
देवता मे इग्यारमो भेद कह्यो तिण, देवता नें निपुंसक कहि दीया आम॥ २ ॥
देवता ने तो निपुसक कहिता लाजें, तो इग्यारमो भेद कहे किण लेखें।
त्यारी अभितर आख हीया री फूटी, ते सूतर साह्मो मूल न देखें॥ ३ ॥
इग्यारमों भेद कहे पिण न कहे निपुसक, एहवो छे भेष धास्थां रे अंधारो।
वले पिंडत नांम धरावे मूर्ख, त्या विकला ने विकल मिल्या परवारो॥ ४ ॥
इतरी पिण समझ पडे नही त्यानें, साची सरधा किण विध आवे।
सरधा तो परम दुलभ कही छे, एहवा विकला ने कुण समझावे॥ ५ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले देवता नें असनी कहें छें, इग्यारमों भेद जीव रों त्यांमें बतावें।
त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी, त्यां ववेक रा विकलां नें कुण समभावें॥ ६ ॥
असनी पचिंद्री रो अप्रजापतो छें, तिणमें जीव रो भेद इग्यारमों जांणों।
परजाय बाधें तो बारमो भेद होसी, ते चवदमो किहां थी होसी रे अयांणों॥ ७ ॥
इग्यारमों भेद परजाय बांध्यां बारमों हुवे, चवदमों हुवें तो कदेय म जांणो।
इग्यारमो परजाय बांध्यां चवदमों कहें छें, ते तो जिण मारग रा निश्चें अयांणों॥ ८ ॥
पेंहला भेद परजाय बांध्यां बीजों हुवें, तीजो भेद बांध्यों चोथो होय।
पांचमो भेद परजाय बांध्यां छठो होवें, सातमो परजाय बांध्यां आठमों जोय॥ ९ ॥
नवमो भेद परजाय बांध्यां दसमों हुवे छे, इग्यारमों परजाय बांध्यां बारमों जांणों।
इग्यारमो परजाय बांध्यां थी न हुवे चवदमों, चवदमों भेद कहे ते विकल समांणों॥ १० ॥
तेरमों जीव रो भेद परजाय बांधें ते, जीव तणो भेद चवदमों जांणो।
पिण इग्यारमां भेद रों न हुवे चवदमों, समभो रे समभो थें मूंढ अयांणों॥ ११ ॥
इग्यारमों भेद कहें नारकी देवतां में, त्यांनें एकंत भूठाबोला जांणों।
इग्यारमां सूं चवदमों हुवो कहें छें, ते यूं ही बूडें छें कर कर तांणों॥ १२ ॥
पांचसो नें तेसठ जीव रा भेद, पोतें सीखे नें ओरां नें पिण सीखावें।
जब तो नारकी नें सर्व देवतां में, जीव रा दोय दोय भेद बतावें॥ १३ ॥
कठेंक तो नारकी देवतां में, जीव रा तीन भेद कहें छें ताय।
कठेंक त्यांमें कहें दोय भेद छें, त्यांरा बोल्यां री त्यांनेंइ समभ न कांय॥ १४ ॥
ए पीढीयां खप भूठ बोलता आवें, पिण इण बोल रो किण ही न काढ्यों निकालो।
जेसा हुंता तेसा चेला पिण आय मिलीया, अभितर फूटी आडा आया कर्म जालो॥ १५ ॥
सातमें आठमें नें दसमें, वले इग्यारमें नें बारमें गुण ठांणें।
त्यांरें सुभ जोग नें सुभ लेस्या वरतें छें, त्यांरा माठा जोग अग्यांनी जांणे॥ १६ ॥
त्यांने पिण भूठाबोला जांणें अग्यानी, मिश्र भाषा पिण बोलता जांणें छें यांनें।
वले भूठो मन परवरतावता जांणें, मिश्र मन परवरतावता जांणें छें त्यांने॥ १७ ॥
ज्यांरा माठा जोग वरते छें ते तो, ते अपरमादी निश्चेइ न थाय।
अपरमादी साध नें भूठाबोला कहें छें, ते तों निश्चेंइ चोडें भूला जाय॥ १८ ॥
जथा तथ चालें जथाख्यात चारितीयो, तिणनें पाप रो अंस न लागें ताहि।
त्यांनें पिण भूठा बोलता कहें अग्यांनी, ओ पिण अंधारो विकलां रे मांहि॥ १९ ॥
इग्यारमें बारमें गुणठांणें त्यांरें, जथाख्यात चारित श्रीकारो।
भूठ बोलें छें त्यांनें तो पाप लागें छे, पिण यांनें तो पाप न लागें लिगारो॥ २० ॥
भूठ बोले कहें जथाख्यात चारितीयो, आ पिण विकलां रे भोलप मोटी।
भूठ बोलें पिण पाप न लागें, आ पिण सरधा छे जाबक खोटी॥ २१ ॥

आरभ री किरीया लागे छठे गुणठाणे, ते तो उसभ जोगां सूं लागे छे ताम।
उसभ जोग न वरते जब अणारंभी छे, आगे सुभ जोग नें सुभ लेस्या परिणांम ॥ २२ ॥
सातमा गुणठाणा थी अणारंभी छे, त्यारें तो उसभ जोग वरते नही तांम।
ज्यू ज्यूं आगले गुणठांणे चढे जव, चढती लेस्या नें ध्यांन चढता परिणांम ॥ २३ ॥
अप्रमादी ने अणारभा कह्या छे, त्यारा उसभ जोग तो वरतें छे नाही।
सका हुवे तो भगोती सूतर मांहे जोवो, पेहला सतक रा पेहला उद्देसा माही ॥ २४ ॥
सातमां सू ले ने बारमे गुणठाणे, त्यारा जोग कदे वरते नही भूंडा।
त्याने भूठाबोला कहे मूढ मिथ्याती, ते तो पीढीयां खप जाए छे वूडा ॥ २५ ॥
त्यारा श्रावक त्यारें बदले भूठ वोले, समभ्क पड्यां विण करें छें ताणो।
ते पिण बूड गया त्यारे केडे, न्याय निरणा विण बोलें छें विकल समाणो ॥ २६ ॥
वले अनेक भूठ त्यारे बासठीया में, ते साभलजो भवीयण चित ल्यायो।
जीव रा तीन भेद कहे नारकी मे, तीन . भेद कहे वले देवता माह्यो ॥ २७ ॥
दस भवण पती ने वाण मतरा मे, वले कहे पेंहली नरक रें माह्यो।
जीव रा तीन तीन भेद बतावे, ओ पिण बोले छे मूंसावायो ॥ २८ ॥
अवेदी में जोग इग्यारे वतावें, अकसाइ मे जोग नव वतावें।
ओ पिण भूठ बोले छे अग्यांनी, दर पीढ्यां भूठ वोलता आवे ॥ २९ ॥
सुषम संपराय ने जथाख्यात चारित मे, यामे पिण नव नव जोग बतावें।
ओ पिण निरणों कीया विण अग्यानी, गालां रा गोला मुख सू चलावें ॥ ३० ॥
तीन तीन भेद कहे नारकी देवता मे, सूतर भगोती देवे छे साख।
त्यारी पिढताइ माहे पड गइ धूर, यूंही अलाल भाखे छें अन्हांख ॥ ३१ ॥
देवता ने निपुंसक कहे छे त्यांने, एकत भूठा बोला जांणें।
पोतें निपुसक कहे तिणरी ठीक नही छे, पीपल बाधी मूर्ख ज्यूं ताणें ॥ ३२ ॥
देवता माहे तो कहे छे मूंढ मिथ्याती, जीव तणो इग्यारमों भेद।
जब देवता ने कह्या निश्चें निपुंसक, इग्यारमो भेद असनी निपुंसक वेद ॥ ३३ ॥
देवता तो निपुसक निश्चे नही छे, वले असनी पिण नही देवता तांम।
देवता ने असनी ने निपुसक कहे छे, ते तो निश्चेइ भूठ बोले बेफांम ॥ ३४ ॥
सतावन भेद संवर रा कहे छे, त्यामे पिण खोटा छे बोल अनेक।
ते पीढीया खप चालीया जाए छे, ते पिण विकला रे नही छे ववेक ॥ ३५ ॥
वावीस परीसा पाच सुमत तीन गुप्त, दस विध जती धर्म ने भावना वारे।
पाच चारित घाल्यां ए वोल सतावन, यां सारां नें सवर कहे विना विचारे ॥ ३६ ॥
बावीस परीसा ते जीव री सक्त छें, विचार खमे ते चोखा परिणांम।
चोखा परिणाम ते निरजरा री करणी, त्यानें संवर कहे ते भूठाबोला आंम ॥ ३७ ॥

पांच सुमत नें संवर कहें छें अग्यांनी, ओ पिण भूठ उघाडो बोले।
पांच सुमत तो छें निश्चें निरजरा री करणी, आ पिण आंख हीया न खोले ॥ ३८ ॥
दस विध जती धर्म जिणेसर भाष्यो, त्यांमें पिण केई बोल निरजरा रा जांणो।
दसूंइ बोलां नें संवर सरधें छें, त्यांनें पिण जांणजो मूंढ अयांणों ॥ ३९ ॥
बारें भावना निरजरा री करणी छे निश्चें, त्यांनें पिण संवर सरधें छेंमूंढ मिथ्याती।
त्यांनें संवर री ओलखणा नांहीं, त्यां विकलां रें निरणा तणी नहीं बाती ॥ ४० ॥
संवर रा बोलां नें निरजरा में घालें, निरजरा रा बोलां नें संवर में घालें।
त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी, ते मारग छोडी नें उजड चालें ॥ ४१ ॥
कर्म ग्रंथ सेतम्बर दिगम्बरा कीधा, तिण मांहें बोल घणा छें विरुध।
ज्यां जिण मारग ओलखीयों होसी, ते विरुध टाले नें कर लेसी सुध ॥ ४२ ॥
कर्म ग्रंथ मांहें कर्मां री प्रकृत, पुन पाप री प्रकृत न्यारी ठहराई।
तिण मांहे पिण छें भूठ अनेक, ते पिण विकलां नें खबर न कांई ॥ ४३ ॥
तिरजंच नें मिनष तणों आउखो, तिणनें कहें छें एकंत पुन।
तिणमें असनी मिनष तणों आउखों, आ तो पाप तणी प्रकृत छें जबूंन ॥ ४४ ॥
पांच थावर सुषम अपरयापता छें, त्यांरा पिण आउखा नें कहे छें पुन।
यांरो पिण छें तिरयंच रो आउखो, पाप री प्रकृत जावक जबूंन ॥ ४५ ॥
पांच थावर नें वले तीन विकलेंद्री, त्यां अप्रज्यापता रो आउखों जबूंन।
आ पिण पाप री प्रकृत उघाडी, सूतर में कठेय न दीसें पुन ॥ ४६ ॥
इत्यादिक छें तिरजंच रो आउखों, विवध प्रकार कह्यों जिणराय।
त्यांमें केकां रों आउखों पाप री प्रकृत, केकां रों आउखों दीसें पुन रे मांय ॥ ४७ ॥
च्यारें प्रकारें बांधें तिरजंच रो आउखों, ते च्यारूंइ बोल सावद्य नहीं रूडा।
त्यांसूं तो पाप री प्रकृत बंधे छें, त्यांरों आउखों पुन कहे ते कूडा ॥ ४८ ॥
तिरजंच जुगालीयां रो सुभ आउखों, ते तो पुन री प्रकृत दीसती जांणों।
अन तिरजंच रो आउखों पाप री प्रकृत, ते सूतर सूं बुधवंत करसी पिछांणों ॥ ४९ ॥
माठा माठा अधवसाय सूं बंधे आउखों, ते आउखो पाप री प्रकृत जांणों।
संका हुवें तो भगोती सूतर में जोवों, चोवीसमें सतक मांसूं पिछांणों ॥ ५० ॥
देवता नें नपुंसक कहे त्यांनें ओलखावण, जोड कीधी छे खेरवा शहर मभारो।
संवत अठारे वरस तेपने, आसोज विद अमावस नें बुधवारो ॥ ५१ ॥

ढाल : ११

दुहा

केई साधु नाम धरावतां, पिण हीया फूट ढोर समांन।
त्यांरी वोल्यां री समझ त्यानें नही, त्यांरा घट माहे घोर अग्यांन॥ १ ॥
कहे साधां ने नही राखणों, रात बासी रोगान।
पिण तेहीज रोगांन राखें रात रो, यूंही करें छे अभिमांन॥ २ ॥
रात वासी राखे छें रोगान नें, पूछ्यां कहे म्हे राखां नांहि।
कपट सहीत झूठ बोलता, ते पिण समझे नही मन मांहि॥ ३ ॥
रोगांन वासी राखे रात रों, वले बोले झूठ मिथ्यात।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो विवरा सुध वात॥ ४ ॥

ढाल

[जिण आगन्या सुखदायी]

टोपसी मे रोगांन वेहरे आंण्यो, पातरा रें देवें लगाय।
ते रोगांन रात रों नीलो रहे छे, ते निश्चें रात राख्यों ताय रे।
भवीयण वोलवो वचन विचारी, थे कांय करो आतम भारी रे।
भवियण छोड दो रूढ हीया री*॥ १ ॥
पातरा मे राखो भावें टोपसी मे राखो, उहीज रोगांन राख्यो रात।
पातरा मे राखों ने टोपसी में न राखो, आ किसा सूतर री बात रे॥भ०२॥
पातरा रे रोगांन जाडों लगावे, बीजें दिन लूही लूही रोगांन।
ते रोगांन ओर ठांमां रे लगावे, एहवा काय करो तोफांन रे॥ ३ ॥
लोट नें पातरा रे रोगांन लगावें, सुकतां लागें दिन दोय च्यार।
ज्या लगतो राते नीलो रोगांन राख्यो, इणमे तो नही सका लिगार रे॥ ४ ॥
थें रात रो रोगान राखता जावों, वले कहो म्हे राखां नांही।
ए साप्रत झूठ उघाडो वोलो, हीया फूटा नें खवर न कांई रे॥ ५ ॥
रोगान सूको पातरा रे राखो, घणा बरसां लग तांइ।
सूका रोगान ने पिण रोगांन कहीजे, तिणमें फेर न दीसें कांई रे॥ ६ ॥
रोगांन वासी राखें छे तिणनें, न गिणें ग्रहस्थ नें साग मांही।
वले दसवीकालक री गाथा वोलाए, त्यानें जावक दीया उडाई रे॥ ७ ॥
रोगांन ने वासी राखणो निषेधे, ते तो गिणे छे आहार रे मांही।
तिण लेखें तो नीलों सूको रोगांन, लागो न राखणो काई रे॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

रोगांन नें आहार गिणी पातरा रे, लागो राखें किण लेखें।
अभितर आंख हीया री फूटी, लागों अरु वरु नहीं देखें रे॥ ९॥
जब कहे नीलो रोगांन छे तिणनें, गिणां छां आहार रे मांहीं।
सूको रोगांन पातरा रे लागों, तिणनें आहार में गिणे नांहीं रे॥ १०॥
तिण लेखें तो नीली चासणीयादिक, राखणी पातरा रे लगाय।
नीली छे त्यां लग आहार में गिणणी, सूकां पछे नहीं आहार रे मांय रे॥ ११॥
इत्यादिक वस्त अनेक नीली ते, लोट नें पातरा रे लगाय।
त्यांनें पिण आहार मांहें जावक नही गिणणी, जब तो वासी राखणा छे ताय रे॥ १२॥
सूकां नें नीला रो नांम लेइ नें, भोला लोकां नें भरमावें।
पिण सूकों रोगांन ने नीलों रोगांन दोनूंइ, वासी राखता जावें रे॥ १३॥
रोगांन नें आहार मांहें गिणें नें, वासी राखता पिण जावें।
इसरा हीयाफूटेरा मांनव, त्यानें साधु किम समभावें रे॥ १४॥
वले रोगांन वासी राखें छें त्यांसूं, भेलो करे छे आहार।
त्यांरा बोल्या री परतीत मूर्ख करसी, त्यांरे अकल में घणों अंधारो रे॥ १५॥
रोगांन ने वासी राखें छे त्यांसूं, प्राछित दीयां विण कीयों संभोग।
त्यांरें बोलीयें बंधतो मूल न दीसें, त्यांरें लागों जोग नें रोग रे॥ १६॥
त्यांमें केई तों कूड नें कपट करेनें, वासी राखें छें रोगांन।
असेक रोंगांन में भेल घालें, इण विध वासी राखें छें तांम रे॥ १७॥
वले रोगांन नें वासी राखें इण विध, रोगांन सहीत ठांम नें ल्यावें।
आंण मेलें आप रा थांनक में, लोट नें पातरां रे लगावें॥ १८॥
अनेक दिन लग रोगांन रो ठांम, वासी राखें थांनक मांय।
लोट नें पातरां रे संपूरण लगाए, पाछो सूंपें घणी नें जाय रे॥ १९॥
जो रोगांन नें आहार मांहें गिणें तों, इण विध राते राखणो नही।
इण विध आहार थांनक मांहें राख्यां, ते तो नहीं साधां री पांत मांहीं॥ २०॥
इण लेखें तो घ्रतादिक रा ठांम, आंण मेलणां थांनक मांय।
खातां खातां बाकी रह्यो घ्रतादिक, ग्रहस्थ नें पाछो सूंपणों जाय॥ २१॥
रोगांन नें आहार गिण इण विध राखें, इण विध राखणा च्यार आहार।
रोगांन ज्यूं आहार तणी रुखवाली, करणी दिन रात मभार॥ २२॥
रोगांन नें आहार मांहें गिणें छें, अकल तिणां री उंधी।
आहार गिण नें लागों राखें पातरा रे, भिष्ट हुइ छे त्यांरी बुधी॥ २३॥
आहार तो लेप मातर लागों न राखें, जोवो दसवीकालक मांय।
रोगांन नें आहार गिणे नें, लेप लगाय राखें किण न्याय रे॥ २४॥

कहिं कहि नें कितरो एक कहूं, आहार माहे गिणें रोगांन।
ते सूंनें चित्त बकें दिन राते, त्यांरा घट मांहे घोर अग्यांन रे ॥ २५ ॥
रोगांन राखणों निषेधें तिण उपर, जोड कीधी मेडता मझार।
संवत अठारे वरस चोपनें, वेंसाखी अमावस सोमवार रे ॥ २६ ॥

ढाल : १२

दुहा

आजुणा काल आरें पांच में, तीर्थंकर तों निश्चें नहीं होय।
सुरत केवली पिण दीसें नहीं, आगम वीहारी पिण नही कोय ॥ १ ॥
घणा भारीकर्मा जीव उपनां, इण पांचमां आरा मांहि।
त्यांरे न्याय निरणा री बातां नहीं, पख भाल रह्या छे ताहि ॥ २ ॥
त्यांनें समकत सरधा तो परम दोहिली, ते किण विध करें तहतीक।
मोटो परव पजूसण सवंछरी, तिणरी पिण नही ठीक ॥ ३ ॥
केई करें सावण में सवंछरी, केई करें भादरवा मांय।
ओ गच्छवास्यां रें पिण वेदो पड्यों, त्यांरो कुण निवेडें न्याय ॥ ४ ॥
त्यां पाछें लूंका नीकल्या, त्यांरे पिण वेदो पड गयो ताहि।
केई करें सांवण में संवछरी, केई करें भादरवा मांहि ॥ ५ ॥
त्यां मांसूं नीकलिया ढूंढीया, त्यांरें पिण पडी मांहोमां तांण।
केई करें सावण में सवंछरी, केई करे भादरवे जांण ॥ ६ ॥
गछवास्यां रा झगडा मझे, साधु नें परणों नांहि।
उवें तों बांधी चाले छें रीत गछ तणी, आप आप तणा गछ मांहि ॥ ७ ॥
पिण ए साधु नांम धरावता, बाजें लोकां में अणगार।
ते पिण करें सावण में सवंछरी, यांरें पिण घोर अंधार ॥ ८ ॥
न्याय निरणों तो सवंछरी तणों, चाल्यों सूतर मांय।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[रे भवीयण सेवो रे]

सवंछरी पडिकमीयां पाछें, सितर दिवस तिहां रहणों।
ए समवायंग रे सितरमें ठाणें, भगवंत नां ए वेणो रे।
भवीयण जोवो हिरदें विचारी, छोड दो तांण हीयारी रे।
भवियण तांण सूं घणी खुवारी रे* ॥ १ ॥
चोमासी पडिकमीयां पाछें, बीतों छे महीनों नें दिन बीस।
जद सवंछरी पडिकमणों करणों, इम भाख्यों छें श्री जगदीस रे ॥ २ ॥
बीस दिन ने महीनों सवंछरी पेंहलां, सितर दिन दीया पाछिला भेल।
इण रीतें भगवंते भाख्यों, च्यार महीनां रो मेल रे ॥ ३ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जो सवंछरी पेंहली महीनो बधे तो, तिणने तो त्याहीज गलत करणो।
कदा सवछरी पाछे इधको महीनो हुवे तो, तिणने पिण त्यांहीज नही गिणणो रे॥ ४॥
उन्हाला मे इधिको महीनो हुवे तो, उन्हाला मे गलत करणो।
चोमासा मे महीनो बधे तो, चोमासा माहे नही गिणणो रे॥ ५॥
जो सवछरी पेहलां इधिक महीनो हुवे, तो तेरे महीने सवछरी ठवणी।
जो सवछरी पाछे महीनों बधें तो, आगली तेरे महीने करणी रे॥ ६॥
ओ तो न्याय उघाडो दीसे, तिणमे संका मूल म आणों।
थे अंतर हीया मे जोय विमासो, मत करो कूडी तांणो रे॥ ७॥
कोइ रिष पाचम ने भादरवा महीना री, सवछरी दीधी उथापी।
विना विचार्यां आप रे छादे, सावण माहे सवछरी थापी रे॥ ८॥
त्याने पूछ्यां कहे म्हे चोमासो ठाया थी, दिन काढें गुणचास पचास।
सवछरी करां म्हे विना भादरवे, इणमे दोष नही छे तास रे॥ ९॥
गुणचास पचास दिन कहे ने, सवंछरी करे सावण माहिं।
सितर दिन सवछरी पाछे चाल्या छे, त्याने जावक दीया उडाय रे॥ १०॥
गुणचास पचास दिन सूतर मे चाल्या, सितर दिन पिण सूतर मे चाल्या।
गुणचास थापें सितरां नें उथापे, ए तो घोचा अणहूता घाल्या रे॥ ११॥
गुणचास पचास री थापनां कर ने, सितर दीना ने दीया उथापी।
प्रतप सूतर रों पाठ उथापे, सावण माहे सवछरी थापी रे॥ १२॥
गुणचास पचास दिन काढेने, सवछरी करी सावण मे तांम।
पाछिला सितर दिन काढेने, त्याने छोड देणो ते गांम रे॥ १३॥
सावण री सवछरी कीधी तिणने, रहिणो नही तिण गाव मझार।
आसोजी पूनम रो कर पडिकमणो, काती विद पडिवा करणो विहार रे॥ १४॥
यारे लेखे काती मे रहे ते अन्याइ, अन्हाखी थका न करे निरणो।
तो यारे लेखे याने कातकी पूनम, पच मासी पडिकमणो करणो रे॥ १५॥
इधिक महीना रा दिन गिणेने, सावण माहे सवछरी थापी।
तो महीनो पिण गिणने आसोज महीना रो, चोमासी काय उथापी रे॥ १६॥
कातकी पूनम रो चोमासो करे जब, इधिक मासो न गिणीयो लिगार।
इधिक महीना रा दिन सवछरी कीधी, ते महीनो काय घाल्यो विसार रे॥ १७॥
मेद गूंबडों ने मसादिक बधे ते, तिणनें दूर करे छे काटी।
तिणरें बदले नाक कांनादिक काटे, तिणरी अकल आडी आइ पाटी रे॥ १८॥
ज्यूं किणहीक वरस में मास बधें जब, त्यारो त्याहीज गलत करणो।
तिणरें बदले आगो पाछो गलत करे छे, त्या जावक न कीयो निरणो रे॥ १९॥

असाढी पुनम नें कातकी पुनम, तीजी फागण री पुनम जांणों।
यां तीनां मासां विण न हुवें चोमासी, तिणमें संका मूल न आंणों रे॥ २०॥
ज्यूं भादरवा विण सवंछरी न हुवे, तिण मांहें पिण संका मत आंणों।
ज्यां सावण मांहें सवंछरी कीधी, ते जिण मारग रा अजांणों रे॥ २१॥
किण ही साहुकार रे पांच पूतर छें, तिणमें च्यार पूतर श्रीकारो।
पांचां में दूजों पूतर निपूंसक तिण रों, मंडें नहीं घरवारो रे॥ २२॥
ओ तो मरत गलत पूरो पड जासी, तिणरों वंस न वधें लिगार।
तिणनें जन्म्यों जठा सूं एसोइ जांण्यों, कदे जांणी नहीं भली वार रे॥ २३॥
कोइ निपुंसक रो घर मंडावे, ते तो छें विकल समांन।
तिणरें बदलें ओर नें राखे कवारों, ते जीव छें अगाध अग्यांन रे॥ २४॥
ज्यूं किणही एक चोमासें पांच महीनां हुवें जब, लूण महीनो वधीयो कहें लोग।
तिण लूंड महीना नें निपुंसग जिम जांण, तिणनें यूंहीं गमावणो फोक रे॥ २५॥
कोइ लूण महीना नें गिणती में गिण नें, सांवण मांहें सवंछरी थापी।
त्यां विनां विमासीयों घोचो घालें, सवंछरी भादरवा री उथापी रे॥ २६॥
कहि कहि नें कितरोएक कहूं, भादरवा विण सवंछरी नांहीं।
सूतर कथा न्याय निरणों जोए, विचार देखो मन मांहीं रे॥ २७॥
सवंछरी ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली मझार।
संवत अठारें पचावनें वरसें, चोमासा मांहें सुध विचार रे॥ २८॥

ढाल : १३

दुहा

केई भेषधारी भूला फिरे, त्याने जिण धर्म री नही सुध।
उंधी उधी करें छें परूपणा, त्यांरी भिष्ट हुइ सुध बुध ॥ १ ॥
साधां दिष्या दीधी चोमासा मझे, कीयो ग्रहस्थ नो अणगार।
तिण सू भेषधारी बकता फिरें, त्यामे सुध न दीसे लिगार ॥ २ ॥
केई तो कहे चोमासा मझे, साधा नें दिष्या देंणी नांहि।
दिष्या दीधी त्यांमे दोष छे, एहवो अधारो छे घट मांहि ॥ ३ ॥
त्यां श्रावक पिण केई विकल थां, त्यां माने लीधी त्यांरी बात।
त्यांरा गुर नें त्यांरा श्रावक तणों, घट माहे घोर मिथ्यात ॥ ४ ॥
दिप्या देणी निषेधी चोमासा मझे, ते अध अग्यानी बाल।
त्यामें फोडा पडें ससार में, उतकष्टो अनतो काल ॥ ५ ॥
दिष्या देणी कही चोमासा मझे, तिणमे सका म जाणो कोय।
थोडा सा परगट करू, ते सुणजो चितल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

बावीसमा श्री नेम जिणेसर, त्या पिण दिष्या लीधी चोमासा माहि।
सावण सुदि चादणी छठि तणे दिन, सहंस पुरप साथे दिष्या लीधी ताहि।
चोमासा मे दिष्या निसंक सूं देणी* ॥ १ ॥
राजमती दिष्या चोमासा मे लीधी, तीनसो जणीयां दिष्या लीधीं त्यांरी लार।
तिणनें नेम जिणेसर मुदे थापी, तिण सूं छोटी आर्यां चालीस हजार ॥ २ ॥
पदम प्रभूनाथ छठा तीथकर, त्यां पिण दिष्या चोमासा में लीधी।
काती विद तीज रे दिन सहस जणां सूं, चोमासे दिष्या लीधी त्यां आछी कीधी ॥ ३ ॥
अनंता तीथंकर चोमासा माहे, त्यां पिण दिष्या लीधीं सयमेव।
वले अनता ने पिण दीख्या दीधी, जेज नही कीधी दिष्या दीधी ततखेव ॥ ४ ॥
इम कह्या उधा बोले भेषधारी, तीथकर नीं बात क्यानें चलावो।
साधा ने चोमासा में दिष्या न देंणी, दिष्या देणी हुवे तो सुतर मे बतावों ॥ ५ ॥
इणरो जाव कह्यो आचारंग माहें, केवलीये कीधो ते छदमस्थ नें करणो।
जे केवलीया चोमासा मे दिष्या दीधी, ओ छदमस्थ रों पिण काढीयो निरणों ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

केवलीयें कीधो ते छदमस्थ कीधो, यांनें पाप कठाथी लागो रे पापी।
यां तो चोमासा मांहे दिष्या लीधी छें, थें चोमासे में दिष्या देंणी कांय उथापी॥ ७॥
कुमती कदाग्रही साधां रा निंदक, साधां रें आल देता सके नही पापी।
केई भेषधारी भूठा बोला अन्हाखी, त्यां चोमासे में दिष्या देणी उथापी॥ ८॥
उत्तराधेन रे दशमें अधेनें कह्यों जिण, एक समों पिण नहीं करणो परमाद।
तो चोमासा में दिष्या देणी निषेधी, त्यां विकलां रें किण विध होसी समाद॥ ९॥
दिष्या देणी निषेधे चोमासा मांहें, तिण भूठा बोला नें पूछीजें ताय।
तूं चोमासा में दिष्या देणी निषेधे, ते सूतर मांहें तूं काढ बताय॥ १०॥
जो उ सूतर मांहें नहीं बतावें, तिण मूरख नें घालीजें कूरो।
वले घणा लोकां मांहें फिट फिट कीजें, समभू लोकां में करणो घणों फितूरो॥ ११॥
घणा टोलां तणा साध बाजें लोकां में, ते तो चोमासा में दिष्या देवें।
त्यां माहें तो दोष न सरधें लिगार, सुध साध रों नांम अणहूंतो लेवे॥ १२॥
चोमासा मांहें दिष्या देवे छें त्यांनें, साध सरधे नें मुख सूं सरावें।
सुध साध चोमासा में दिप्या दीधी, तिण मांहें पापी दोष बतावें॥ १३॥
वले कहें दिष्या दीधी तिण गांम नें ठांम, तिण गांम नें ठांम तिणनें नहीं रहणो।
ओ पिण भूठ बोलें भेषधारी, त्यां विकलां री सरधा तणों कांई कहणों॥ १४॥
चोमासा मांहें दिष्या देणी निषेधें, त्यां श्री जिण वचन दीया छें उथापी।
तिण जिण धर्म नहीं ओलखीयों आंधें, तिणनें जांण लीजे महा पापी॥ १५॥
चोमासा मांहें दिष्या देणी निषेधी, तिण मूरख री करसी मूरख परतीत।
उण उंधी सरधा तणें परतापें, चिहूं गति मांहें हुसी फजीत॥ १६॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधें, ते तो अंध अग्यांनी जाबक बूडा।
त्यांमें दुख में दुख संसार में पडसी, वले चिहूं गति मांहें दीससी भूंडा॥ १७॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधें, आ तो उठी जठा थी भूठी।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी॥ १८॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधें, त्यांनें साध सरधें ते पिण मूढ मिथ्याती।
त्यां विकला नें साध सरधे नें बूडा, वले बूड गया त्यांरा पखपाती॥ १९॥
चोमासा में दिष्यां देणी निषेधें, ते तो नीमाइ निश्चें विकल समांन।
ते पिंडत बाजें छें विकल लोकां में, पिण घट मांहें त्यांरे छें घोर अग्यांन॥ २०॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधे, ते भूठा भूठा ले सुतर रो नांम।
त्यां तीनं काल रा तीर्थंकरां नें, पापी आल देंता डरीया नही तांम॥ २१॥
चोमासा मांहें दिष्या देंणी निषेधें, ते निमाइ निश्चें मूंढ मिथ्याती।
सूनें चित सूतर बाचें अग्यांनी, हीया फूट गया रा साथी॥ २२॥

चोमासा में दीष्या देणी निषेधे, तिणरा श्रावक पिण सुण सुण नें गूंजें।
ए पिण हीया फूट गधा रा साथी, इण बात रो न्याय निरणो न बूझें॥ २३॥
अनता साधा दिष्या चोमासा मे दीधी, तिण माहें दोष बतावे पापी।
इसडा केई भेषधारी अन्हाखी, त्या चोमासा में दिष्या देणी उथापी॥ २४॥
केई भेषधारी चोमासा मे दिष्या देवे, त्यानें तो मूरख सरधे छें साध।
साध चोमासा माहें दिष्या देवे, त्यांने असाध कहे ने करें विषवाद॥ २५॥
चोमासा माहे साध दिष्या दीधी, त्या किसो अकारज कीधो रे पापी।
आ तो पाप सेवण रा पचखाण कराया, थें चोमासा में दिष्या देणी कांय उथापी॥ २६॥
चोमासा में दिष्या देणी निषेधें, त्या विकलां री विकल राखें परतीत।
ते तो चोडें भूला छे अंध अग्यांनी, ते तो चिहूंगति माहें होसी फजीत॥ २७॥
चोमासा माहें दिष्या देणी ओलखावण, जोड कीधी छे केलवा सहर मझार।
सवत अठारें पचावनें वरस, फागुण विद एकम ने गुरवार॥ २८॥

ढाल : १४

दुहा

केई मूढ मिथ्याती जीवडा, ते बोलें नहीं वचन विचार।
साधां नें विहार करणो नहीं, चोमासे रे मझार ॥ १ ॥
कारण पडियां साधु नें, चोमासा मांहें करणो विहार।
श्री वीर जिणेसर भाषियो, ठांणा अंग सूतर मझार ॥ २ ॥
केई पिंडत बाजें लोक में, पिण घट में घोर अंधार।
ते पिण कहें छें चोमासा मझे, साधां नें नहीं करणो विहार ॥ ३ ॥
ते निंदक छें साधां तणा, तिणसूं संवलो न सुझें लिगार।
परती करवा साधां तणी, तुरत होय जाय तयार ॥ ४ ॥
चोमासा में विहार करण तणा, कारण कह्या जिणराय।
ते जथातथ प्रगट करूं सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[जीव मोह अणुकम्पा न आणिये]

दुष्ट राजादिक वेरी नो भय हुवे, जांणे उपधादिक ना लूसणहार जी।
त्यां उपधादिक नें राखवा भणी, चोमासा में करे विहार जी।
श्री वीर जिणेश्वर भाषियो* ॥ १ ॥
साधु भिख्या नें अभावे करी, नहीं मिलें पांणी नें आहार जी।
जब थिर परिणांम रहे नहीं, चामासे में करे विहार जी ॥ २ ॥
कोइ प्रत्यनीक छे साधां तणो, तिण ग्रामादिक मझार जी।
ते साधु नें काढे तिहां थकी, चामासे में करे विहार जी ॥ ३ ॥
गंगादिक ने उन्मार्गे, पाणी आवतो जाणे तिणवार जी।
तिण पाणी सूं जाणे डूबता, चामासे में करे विहार जी ॥ ४ ॥
कोइ आवे छे मोटे आडम्बरे, जीतब चारित्र ना लूसणहार जी।
ते म्लेच्छादिक दुष्ट जाणेलिया, चोमासे में करे विहार जी ॥ ५ ॥
ए पांच बोलां मांहिलो हुवे, तो चोमासा में करे विहार जी।
तिण री जिन आग्यां छे साधु ने, तिणमें दोष नहीं छ लिगार जी ॥ ६ ॥
वले पांच प्रकारां करी चोमासामें करणो विहार जी, ते पिण कह्यो छे घणा आगम मझे।
ते सांभलज्यो विस्तार, चामासे में करे विहार जी ॥ ७ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कोइ अनेरो आचार्य मोटको, अपूर्व ग्यांन तणो भंडार जी।
त्या कनें जाये ग्यांन भणवा भणी, चोमासे में करे विहार जी॥ ८॥
वले दरसण प्रभावना कारणे, ते पिण सास्त्र नो छे भडार जी।
ते शास्त्र भणवा कारणे, चोमासे मे करे विहार जी॥ ९॥
आचार्य उवझाय मुनिसरू, त्या कीधो सुणियो संथार जी।
त्यानें वांदवा नें कारणे, चोमासे में करे विहार जी॥ १०॥
आचार्य उवझाय रह्या तिहा, साध छे ओर क्षेत्र मझार जी।
त्यारी वैयावच करवा भणी, चोमासे में करे विहार जी॥ ११॥
गगा यमुना नें सरस्वती कोसिया ने एरावती जाण जी, ए पांचू नदी नावा सू उतरे।
महीना में एकवार प्रमाण जी, चोमासे मे करे विहार जी॥ १२॥
वले पांच कारण पडियां थकां, नदी उतरे वार अनेक जी।
एक दोय वारनो कारण नही, ते सुणज्यो आण ववेक जी॥ १३॥
भयनें भिख्याने अभावे करी, कोइ काढे गामादिक बार जी।
पाणी रो आगम जाण नें, वले म्लेछादिक नी सुण मार जी॥ १४॥
एहीज पाचूं कारण करी, चोमासे मे करे विहार जी।
तेहीज कारण पडिया साध नें, ए नदी पिण उतरे वारू बार जी॥ १५॥
इत्यादिक कारण पडियां साध ने, चामासा मे करणो विहार जी।
त्यानें अरिहतनी छे आगन्या, साधु ने नहीं दोष लिगार जी॥ १६॥
साधु विहार करे चोमासा मझे, तिणमे दोष नही तिल मात जी।
तिणमे दोष कहे अन्हाखो थका, त्यां साधां सू पडिवजियो मिथ्यात जी॥ १७॥
ते तो दोष अणहूतो काढता, बकवो करे दिन रात जी।
त्याने परभव री चिंता नही, न डरे झूठी करता बात जी॥ १८॥
चोमासा मे विहार करण तणी, जोड कीधी गुरला गाम मझार जी।
संवत अठारे नें वरस सतावनें, काती विद पांचम मंगलवार जी॥ १९॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी थांनक ने रात रों, जडें उघाडें कमाड।
तिहां हिंसा करे जीवां तणी, पिण संक न आंणें लिगार॥ १ ॥
वेतकल्प मांहें कह्यो साध नें, रहणो उघाडें दुवार।
ए वीर वचन नें आराधसी, ते किम जडें आडा कंवाड॥ २ ॥
वले उत्तराधेन में वर्जीयों, पेंतीसमांधेन मांहि।
हाथां सूं तो जडवो जिहांइ रह्यो, मन सूं पिण वांछणो नांहि॥ ३ ॥
केइ श्री जिण आग्यां लोप नें, जडें उघाडें कमाड।
त्यांनें छेडवीयां अवला पडें, वले बक उठें तिणवार॥ ४ ॥
पाछो जाब देवा तो समर्थ नहीं, दोष छोडणरा नहीं परिणांम।
तिण सूं कवाडीया रो नांम लें, दोष ढांकण रे कांम॥ ५ ॥
मोटा किवाड नें कवाडीयों, थांपें अग्यांनी एक।
वले वदलतां विरीयां नही, ते सुणजो आंण ववेक॥ ६ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

भेषधारी कमाड नें जडें उघाडें, त्यांमें खूंचणो काढ्यां घणों दुख पावें।
ते आपणा दोष ढांकण नें मूर्ख, कवाडीया मांहें दोष बतावें।
कुगुर चिरत सुणो भव जीवां*॥ १ ॥
केइ भेषधारी कहें कवाड जडयां में, जो ओ म्हांनें दोष लागें छें मोटो।
तो कवाडीया रो आहार लेवें छें, त्यांनें पिण दोष लागें छें छोटो॥ २ ॥
किवाडीया मांहें दोष बतावें, ते तो कवाड री थाप करवा काजें।
जो भूठ बोलीनेंइ दोष वतायों, तो एं दोषीलो आहार लेता क्यूं न लाजें॥ ३ ॥
कवाडीया मांसूं आहार लीयां रो, कह दीयो चोडें दोष उघाडो।
त्यांनें भारी परसी ए दोष परूपां, ते सांभलजो भवीयण विस्तारो॥ ४ ॥
जिण जाणेनें आहार दोषीलो वहरयों, तिण रा साध पणारी हूइ धूर धांणी।
तिण खावारें कारण जन्म विगोयों, दोषीलो आहार लीयो जांणी २॥ ५ ॥
जांणी नें आहार दोषीलो लेवें, ते निरलज परभव सांह्मों न देवें।
तो यांरा श्रावक अकल रा मूंढ मिथ्याती, ते बारमों वरत भांगें किण लेखें॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कवाडीया माहे तो दोष बतावे, तो यारी पीढीया लग सगलाइ बूडा।
त्यां दोषीलो आहार खाए दिन काढ्या, ते चिहु गति मे दीससी अति भूंडा ॥ ७ ॥
वले परूपण करता इम बोले, साधां ने आहार असुध वहरावे।
ते तो चारित धर्म रो लूंटणहारो, ते दातार गर्भ मे आडा आवें ॥ ८ ॥
साधा ने आहार असुध वहरावे, त्यांरें कर्म बधें घर रो माल खूटे।
उणरे दरबेइ तोटो नें भावेइ तोटो, ते तो सतगुर रा सयम नें लूटें ॥ ९ ॥
एहवी परूपणा करता नही सकें, ते सूरपणो लोकां ने मनावे।
जो उवे कवाडीया माहे दोष वताए, तो कवाडीया रो वेंहरे क्यूं ल्यावे ॥ १० ॥
यारी सरधा रे लेखें यांरा साध श्रावकां मे, च्यारूं तीर्थ मे छें मोटी खामी।
या असुध आहार जांणी वेहरयो वेंहरायो, ते सगला छें दुरगत जावा रा कामी ॥ ११ ॥
कोइ आप रो नाक काटे नकटो हुवे, ते तो पेला ने कुसवण करवा काजें।
ज्यूं साधां ने दोषीला करण भेषधारी, आप दोषीला हुता नही लाजें ॥ १२ ॥
उ तो ओर सवण ले गांव सिधायो, ते तो कुसले खेमे माल कमाय ल्यायो।
पिण नकटो दुखी हूओ जीवे जठा लगे, पिण नाक गमायो ते पाछो न आयो ॥ १३ ॥
ज्यूं साध तो कवाड किवाडीया ने, या दोयां ने सरधे छे जुआ जुआ।
भेषधारी कवाडीया मे दोप बताए, पीढीया लग दोषीला हाथां सूं हूआ ॥ १४ ॥
ते तो रातरो कवाड जडवारे काजे, कवाडीया माहे दोष बतायो।
ए पहिला तो दोष कदे नही सुणीयो, ए गाला सू गोलो घडनें चलायो ॥ १५ ॥
ते तो किवाडीया माहे दोष वतावें, वले वतलाया बोलें अन्हाखी ऊधा।
यारा श्रावक मिल यारी परख करें तो, भेषधारी मुख बोले सूधा ॥ १६ ॥
यारा श्रावक यानें इण विध पूछे, म्हारे साधा ने सुध वहरावण रा त्यागो।
किंवाडीयो खोल नें आहार वहरायां, म्हारो सूंस रहेसी के जासी भागो ॥ १७ ॥
म्हारो सूंस न भागे तो हू खोल वेहराऊ, हिवे उण वेला किण विध बोलें ऊधा।
जब तो कहे इण रो दोष म जाणो, वेहरण रे काम पडया बोले सूधा ॥ १८ ॥
यारा श्रावक याने वले इण विध पूछे, म्हारे साधा ने असुध वेहरण रा छे त्यागो।
कवाड खोल ने आहार वेहराया, म्हारो सूंस रहसी के जासी भागो ॥ १९ ॥
म्हारो सूस न भागे तो हू खोल वहराउ, जब तो पिण केयक बोलें सूधा।
साच बोले कहे दोष कमाड खोल्या, चोडें धाडें किम बोलें ऊधा ॥ २० ॥
ए साच बोलें ते तो साकडे पडीया, त्याने सतवादी कदे मत जांणो।
झूठ बोलण री काइ सेरी न दीसे, तिण सू साच बोलें पिण न छोडे ताणो ॥ २१ ॥
कवाड ने कवाडीयो एक कहता, पिण अठें तो कर दीया जू जूआ दोइ।
कवाड माहे तो दोष वतायो, कवाडीया मांहे तो कह्यों दोष न कोइ ॥ २२ ॥

यांरा श्रावक चतुर विचषण हुवें तो, इम भूठा घाली मुख देवें धूडो।
थे कवाडीया मांहे दोष बताए, इतरा दिन कांय बोलीयो कूडो ॥ २३ ॥
इणविध बुधवंत काढे निकालो, ते तो भूठाबोलां नें जांण ले भूंडा।
पिण आंधां नें साची बात न सूझे, ते तो कुगुर तणी तांण कर कर बूडा ॥ २४ ॥
जे प्रतष भूठा नें साचो कहें छें, ते दिन दिन कर्म बांधे हुवें भारी।
जे कुगुर तणी पषपात करें त्यांरें, टांको भले तो हुवें अनंत संसारी ॥ २५ ॥
वले कंवाडीयों नषेधवा काजे, मोटी छोटी लुगाइ रो दिष्टंत देवें।
यां दोयां रो साधु नें संघटो न करणो, ज्यूं कवाडीया रोइ आहार न लेवें ॥ २६ ॥
इत्यादिक भूंडा भूंडा दिष्टंत देइ, कवाडीयां नें नषेधण सूरा।
वले आपतो आहार कवाड्या रो वहरें, ते हाथां सूं मूरख पडे छें कूडा ॥ २७ ॥
छोटी नें मोटी दोनूंइ अस्त्री त्यागी, ते कवाडीया रो आहार लेवें किण लेखे।
कवाड नें कवाडीयो एक कहे ते, आपरी सरधा सांह्यो क्यूं नहीं देखें ॥ २८ ॥
छोटी डावडी ज्यूं कवाडीयो जांणो, वले आहार लेवें खोलाए कोठो नें आलो।
कवाडीयारो दोष जांण जांण सेवें, ते छोटी ढावडी रो किम करसी टालो ॥ २९ ॥
साधु तो कवाड कवीडीया नें, यां दोयां नें सरधें छें जूआ जूआ।
भेषधारी कवाड्या में दोष बताए, पीढीया लग दोषीला हाथां सूं हूवा ॥ ३० ॥
वले केयक भेषधारी इम बोलें, साधु ने रहणो कह्यों छें उघाडें दुवारो।
पिण जडणों उघाडणों वरज्यों न दीसे, तिणरे लेखें तो दोष नहीं छें लिगारो ॥ ३१ ॥
दोष नही कहें हाथां सूं जडीयां, तिण भूठ बोले कीधी जडवा री थाप।
तिणनें ग्रहस्थ उघाडे नें आहार वहरावें, तो तिण वहरयां में कांय परूपें पाप ॥ ३२ ॥
इम भूठ बोलेनें कांम चलावें, पिण छोडें नहीं आडो जडवो कवाड।
ते निरलज्ज भारी करमा अग्यांनी, त्यां गहलां नें सीख न लागें लिगार ॥ ३३ ॥
केइ भेषधारी कहें कवाड जडयां सूं, साधां नें दोष जावक नही लागें।
जो पहलो महावरत भागें कवाड जडयां सूं, तो साधवीयां रो पिण पेंहलों महावरत भागें।३४।
इम साधवीयां रो नांम लेइनें, ते निसंक सूं जडवा लागा कवाडो।
ते कल्प न जांणें साधवीयां रो, ते सांभल जो भवीयण विस्तारो ॥ ३५ ॥
साधवीयां तो च्यार पछेंवडी राखें, त्यांने तो दोष लिगार न लागें।
जो च्यार पिछेंवडी साधु राखें तों, जिण आग्यां लोप्यां तीजो वरत भागें ॥ ३६ ॥
वले जांगीयों कांचूओ राखें साधवीयां, त्यांरो पिण दोष भगवंत न कह्यों लिगारो।
जो जांघीयों कांचूओ साध राखें तों, हुइ जाएं श्री जिण आज्ञा बारो ॥ ३७ ॥
वले साधवीयां एकण गांव माहें, ए तो सेषाकाल रहें दोय मास।
जो सेषाकाल साधु जो बिमास रहें तो, जिण आगन्या लोप्यां हुवे वरत विणास ॥ ३८ ॥

साध तो राते रहे चोहटा विच में, ते पिण खुलीए अवग दुवारे ।
साधवीयां राते रहे चोहटा विचें तो, ते तो हुवें जाए श्री जिण आगन्या बारे ॥ ३६ ॥
इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक, ते तो साध साधवीयां रा न्यारा न्यारा ।
त्याने आपण आपण कल्प में रहणो, पिण साधु नें न जडणो साधवीयां री लारा ॥ ४० ॥
साधवीयां नें कल्पें ते राखे साधवीया, उतरा साधु राख्यां साधु रा वरत भागें ।
ज्यूं साधां ने कल्पे कह्यों दुवार उघाडें, जडें जिण साधु ने दोष क्यूं नही लागें ॥ ४१ ॥
जब केयक बापडा पाघरा बोलें, किवाड जडयां मानें लागे छें दोषो ।
केइ कहें जडीयां दोष न लागें, ए भूठा बोला किम जासी मोखो ॥ ४२ ॥
इम सांभल नें उतम नर नारी, एहवा भूठाबोलां सूं रहजो दूरा ।
जो कुगुरां नें छोडे ने सतगुर सेवे, ते तो चतुर विचषण प्रवीण पूरा ॥ ४३ ॥
केई भेषधारी इम बोलें अग्यांनी, म्हे उतरां ओरा साल नें पोल मझारो ।
उघाडो राख्यां माल जाए ग्रहस्थ रो, तिण कारण आडा जडा कवाडो ॥ ४४ ॥
ग्रहस्थ रो माल जो चोर ले जावे, तो उ ग्रहस्थ दुख पावे छे गाढो ।
ग्रहस्थ रो माल रुखवालवा काजे, म्हे सेठों जड राखां कवाड ने आडो ॥ ४५ ॥
ग्रहस्थ रो माल जो साध रुखाले, तो प्रतष पांचमो माहावरत भागो ।
वले हिंसा सु पहिलोंइ माहावरत भागो, जिण आगन्या लोप्यां अदत पिण लागो ॥ ४६ ॥
घर रो धन माल जहर जांणी छोडयो, जो उ ग्रहस्थ रा धन रो करे रुखवालो ।
तिण समकत सहित साधपणो खोयों, तिणने सासण मासूं दीयो बीर टालो ॥ ४७ ॥
ग्रहस्थ रा माल रुखवालवा काजें, भेषधारी आडा जडे कवाड ।
कदा जावतो करतां ढांढा माहें आवें, तिण लेखे तो धाकल काढणा बार ॥ ४८ ॥
ग्रहस्थ रो माल रुखवालवा काजे, भेषधारी आडा जडे कवाड ।
कदा जावता करतां मांहे चोर आवे, तो धणीनें जाय कहणो तिणवार ॥ ४६ ॥
नालेर कोपरादिक वस्त अनेक, त्यां उपर स्वानादिक ढूके आय ।
धन राखवा काजे कवाड जडें त्यांने, यानें पिण अलगा कर देणा जाय ॥ ५० ॥
ग्रहस्थ रा धन काजे जडसी कवाड, त्यांने पोहरो देइ काढणो दिन रात ।
ढुले फूटें उजाड हुवे तो, विगडवा नही देणों तिलमात ॥ ५१ ॥
ग्रहस्थ रे परिगरो नव जात रो छे, त्यारी भेषधारी करें रुखवाली ।
ते भोला लोकां ने गमता लागे, जांणें बाबो रो बाबो ने हाली रो हाली ॥ ५२ ॥
केइ भेषधार्‍यां ने जाब न आवे, जब भूठ बोलें वात लेवे सवार ।
मानें ग्रहस्थ घर मांहे रहिवा न दें छे, तिण कारण आडा जडां कवाड ॥ ५३ ॥
ते सूंनो घर हाट उपाश्रों थांनक, उठें किण लेखें जडें छें कवाड ।
एहवा प्रश्न पूछयां रा जाब न आवें, जब आलल भाषण ने हुय जाय तयार ॥ ५४ ॥

सवत अठारें वरस तेतीसें, जेठ सुद बारस मंगलवार।
ए कुगुर तणा चरित परगट कीधी, सहर पीपाड तणें रें मझार॥ ५५॥

ढाल : १६

दुहा

केइ साधु नांम धरायने, आडा जडे छे किवाड।
त्यामे केइ तो कहे दोष छे, केइ न कहे दोष लिगार॥ १ ॥
त्यामें दोष बतावे कमाड नो, तिण रों जाब न देवें तांम।
दोष कहे कवाड्या तणो, बकता फिरें गांम गांम॥ २ ॥
कमाड तणों दोष ढांकवा, लेवें कवाडया रो नांम।
कहे कवाड कवाडयो एक छे, एहवो बेदों घाल्यों छें तांम॥ ३ ॥
कहिवानें एक कह दीयो, पिण त्याहीज कर दीया दोय।
कवाड उघाड देवे तो लेवे नही, किवाड्या रो न छोडें कोय॥ ४ ॥
दोष बतावें कवाड्या तणों, पिण वेंहरे किवाड्यो खोलाय।
एहवा विकलां री वात में, कला म जाणों काय॥ ५ ॥
साधु दोष जाणें कवाडया तणों, तों छोड दे तुरत सताब।
हिवे कवाड नें कवाडया तणो, सुणो सुरत दे जाब॥ ६ ॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे साध सयाणा]

कवाड जड्वो तो साधूने वरज्यों सुतरमें ठांम ठांम, कवाडया रों तो आहार कठेंइ न वरज्यो।
वरज्यो हुवें तो बतावो तांम रे, भवीयण जोवों हिरदय विचारी।
म करो ताण हीया री रे, ताण कीधां सूं घणी खुवारी* ॥ १ ॥
पूरें मासे बाइ उठ बेस वेंहरावें, तो साधु ने वेंहरणो नांही।
ओछा गर्भ री उठ बेस वेंहरावे, ते वरज्यों नही सूतर रे मांही॥ भ० २ ॥
कोइ कहें कवाड्यों कठे चाल्यो छे, तिण रो जाब सुणो चित्त ल्याय।
कवाड वरज्यो कवाड्यों नही वरज्यो, ओ देखो उघाडों न्याय रे॥ ३ ॥
ज्यूं पूरे मासें बाइ उठ वेंहरावें, ते तो वरजी सूतर रे मांहि।
ओछा गर्भ वाली रो वरज्यों नाही, जब लेणो ठहरायो छे ताहि रे॥ ४ ॥
इण दिष्टंते कवाड्यां रो आहार, वेहर्यां मे दोषण नांही।
छोटा गर्भ री नें कवाड्या रो आहार, वरज्यों नही सूतर मांही रे॥ ५ ॥
ज्यूं मोटा ने छोटा गर्भ मे फेर जांणो, ज्यूं कवाड किवाड्यों मे जांणो।
कवाड्यों खोले साधु ने वेंहरावें, तिणरी म करो तांणो रे॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ज्यांरा बज बडेरा आगे हूआ ते, वहरयों कवाड्यां रो आहार।
तिण में दोष कह्या त्यांरा बज बडेरा, गया जमारो हार रे॥ ७॥
थोडा नें घणा उंचा थी वेंहरण रों, सूतर में नहीं उनमांन।
थोडा नें घणा विच आंतरों नांहीं, ते पिण जांण लेसी बुधवांन रे॥ ८॥
हाथ रें आसरें उंचा थी वेंहरावें, साधु नें अन पांणी।
जब तो साधु वेंहरतों संक न आंणें, वेंहर छें निरदोष जांणी रे॥ ९॥
घणा उंचा थी आहार साधू नें वेंहरावें, जब तों साधु करें छे टालों।
आसरों उनमांन अटकल नें वेंहरें, तिणरो सूतर में नहीं निकालो रे॥ १०॥
थोडा उंचा थी वेंहरायां दोष न जांणें, दोष जांणें उंचा थी वेंहरायां।
तिम कवाड्यां रा दोष तणी :तांण, छूटें न्याय हीया में आयां रे॥ ११॥
धीरें धीरें चालें साधु नें वेंहरावें, तो साधु वेंहरें अनादिक पांणी।
जों उतावलों ने दोडे वेंहरावें, तो नहीं वेंहरे अजेंणा जांणें रे॥ १२॥
उतावल सूं चाल्या नें कमाड खोल्या रों, अें तो दोष उघाडो दीसें।
धीरें चाल्या नें कवारयों खोल्या रों, दोष नहीं कह्यों जगदीसें॥ १३॥
बावन अनाचार कह्या दशवीकालक में, चोथों अणाचार साह्यों आंण्यों।
तिण सूं साह्यों आंण्यों तो साधू न बहरें, मोटों दोष अणाचार जांण्यों॥ १४॥
समचें तों कह्यों साह्यों आंण्यों न लेंणों, इण ठांमे तो मरजाद न कांइ।
थोडी दूर सूं तो साह्यों आंण्यों वेंहरें, ज्यूं कवाड्यों जांणों मन मांहि रे॥ १५॥
तीनां घरां थकी साह्यों आंण्यों वेंहरें, तिण दूरी री विगत न कांइ।
तिमहीज कवाड्या नें जांणो, विचार करो मन मांहीं रे॥ १६॥
तीनां घरां सूं तों साह्यों आंण्यो वेंहरे छें, ते पिण कदा घणी दूर जांणें।
तो पिण साधु नें वेंहरणों नांहीं, अकल सूं उनमांन पिछांणें रे॥ १७॥
ज्यूं कवाड उघाडे नें आहार देवें तों, लेंणों वरज्यों सूतर रे मांही।
किवाड्या रों आहार कठें नही वरज्यों, सूतर मांहें नकार छें नांही॥ १८॥
घणी दूर सूं साह्यां आंण्या रा दोष, थोडी दूर रो दोष म जांणों।
ज्यूं कवाड रो दोष कवाड्या रो नांहीं, ए रूडी रीत पिछांणो रे॥ १९॥
इण अणुसारे किवाडीया उपर, दिष्टन्त छें रे अनेक।
कहि कहि नें कितराएक कहूं, समझों आंण ववेक रे॥ २०॥
कोइ कहें किवाड्यों कितोएक मोटो, तिणरो सूतर में नहीं उनमांन।
इणरो उनमांन तों जीतववहार सेती, थाप करसी बुधवांन रे॥ २१॥
हाथ सवा हाथ रें आसरें लांबों नें पेंहलो, एहवो बांध्यों उनमांन।
इण बात रो निश्चों केवली जांणें, उनमांन सूं जांणें बुधवांन॥ २२॥

ज्यूं साध साधवी रे पिछेवरी रो, पेंहली तीन हाथ उनमान।
पिण लांबी रो निकाल तों नही सूतर मे, पांच हाथ थापी बुधवांन रे॥ २३॥
ज्यू कवाडीया लांबा नें पेहला री, आ पिण थाप करी छे तांम।
ते निश्चों तो केवलग्यांनी जांणें, तिणरी खाच तणो नही कांम रे॥ २४॥
कवाडीयो खोले आहार वेहरावें, तिणमे कोइ दोष मत जांणो।
कवाड कवाड्यो शरीषा नाही, हिवे तिणरों न्याय पिछांणो रे॥ २५॥
कवाडीयो नही धरती लगतो, कवाडीयो तो उचो जाणो।
कोठा कोठी नें आलादिक मे, तठे जीव रो नही ठिकाणो रे॥ २६॥
कीडी मकोडादिक जीवां रो ठिकाणो, धरती उपर फिरता जाणों।
आमा साहमा फिरे भवलेटी खाता, तठें हिंसा तणों छे ठिकांणों रे॥ २७॥
कमाड रो चूलीयों तो धरती उपर फिरें छे, तठें हिंसा तणो छे ठिकांणो।
तिणसूं कवाड नें जडवो वरज्यो छें, तिम कवाड्यां नें मत जांणो रे॥ २८॥
उची तो कीड्या चीगटादिक परसगे, कीड्यादिक री नाल बंधावें।
पिण कवाड्यां रा चूलीया हेठें, चीगट किहांथी पावें रे॥ २९॥
जो कवाडीया रो आहार टाले तिण नें, टालणा पडसी बोल अनेक।
तिण अनुसारे तिण सरीषा कहू छुं, ते सुणज्यो आंण ववेक रे॥ ३०॥
दही दूध री जावणी कोठा मासू काढे, साधु नें वेहरावें आय।
जो कवाडीया मा सूं आहार न लेवे, तिणनें ए पिण न लेणा ताय रे॥ ३१॥
घ्रत रो चाडों कोठा मा सूं काढे, साधु नें वेहरावें आय।
जो कवाडीया मा सू आहार न लेवें, तिणने घी पिण न लेणों ताय रे॥ ३२॥
कवाडीया री चूक नें चूलिया फिरीयां, आहार न वेहरें काइ।
तो जावणीयां रो तूंडो कोठा फिरीयां, दही नें दूध वेहरणो नांही रे॥ ३३॥
वले कोठा माहे घी रा चाडा रो तूंडो, फेर नें बारें आण वेंहरावे।
कवाडीया रो चूलीयो फिरियां न लेवे, तो घी पिण न लेणों इण न्यावे रे॥ ३४॥
इत्यादिक ठांम कवाडीया माहे, त्यारा तूंडा फेरी देवें ताय।
कवाडीया रो आहार न लेवें, त्याने ओ पिण लेणों नही इण न्याय रे॥ ३५॥
कोठी उपरला ठाम नें फेर वेंहरावें, फेरें ठाम उपर ला ठाम।
कवाड्या फेर्या रों आहार न लेवे, त्यांने ओ पिण लेणो नही ताम रे॥ ३६॥
केइ कहे कवाड्यो उघाड्यां, हिंसा तणी छें सक।
इण लेखे तो तिण ने अनेक बोलां रों, किण विध करसी निसंक रे॥ ३७॥
केइ वाइ भाइ चालेंनें वेहरावें, केइ उभा ते बेस वेहराय।
जूंआदिक री हिंसा री संका, ते संका कम कढाय रे॥ ३८॥

किणही भाइ री पाग में धांन रो दांणों, उछल नें पडीयो आय।
तिणरा हाथ सूं वेंहरतां संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे ॥ ३९ ॥
खांडादिक वेंहरावें तिणमें, सचित्त री खबर न काय।
माहे धांन रा दांणा री संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे ॥ ४० ॥
घ्रत री गोली मां सूं घ्रत वेंहरावें, तिणरें विच में फूलण होवें ताय।
ते वेंहरतां संका पडें साधू रे, ते संका केम कढाय रे ॥ ४१ ॥
इम इत्यादिक अनेक वस्त में, संका पडें मन मांहि।
पिण ववहार में सुध हुवें तों, साधु वेंहर लेवें ताहि रे ॥ ४२ ॥
तिम कवाड्यां रों ववहार सुध जांण नें, साधु वेंहरें छें तांम।
इण बात रों निश्चे तों केवली जांणें, खांच तणों नही कांम रे ॥ ४३ ॥
जो कवाडीयां रा दोष री संका, तो इण लारें छें संका अनेक।
लारें संका कही ते सगली टालणी, समझों आंण ववेक रे ॥ ४४ ॥
आगें लूंका नें ढूंढीया नीकलीया, जब तों हुंता वेंरागी विशेषों।
त्यां पिण कवाड्यों टाल्यों न दीसें, हीयें विमासी देखो रे ॥ ४५ ॥
सुध साधु तों यांरो सरणों न लेवें, पिण सूतर में वरज्यो नांही।
जो कवाडीया रो दोष कहों छों, ते काढो सूतर रे मांही रे ॥ ४६ ॥
सूतर मांहें तों मूल न वरज्यो, परम्परा मे पिण वरज्यों नांहीं।
तिण सुं जीत ववहार निरदोष थाप्यां री, संका म करो मन मांहीं रे ॥ ४७ ॥
जो कवाडीयां री संका पडें तो, संका छें ठांम ठांम।
ते कहि कहि नें कितराएक केहूं, संका रा ठिकांणां तांम रे ॥ ४८ ॥
साधु तो हिंसा रा ठिकांणा टालें, छद्‌मस्थ तणें ववहार।
सुध ववहार चालतां जीव मर जाएं, तो विरावक नहीं छें लिगार रे ॥ ४९ ॥
जिण जिण बोलां रो नीकालो नही छें, ते केवलीयां नें भलावों।
कवाडीया री तांण करेनें, मत कोइ झूठ लगावों रे ॥ ५० ॥
मोंनें तों कवाड्यां रो दोष न भासें, जांणें नें सुध ववहार।
जे निसंक दोष कवाड्यां में जांणों, ते मत वहरजो लिगार रे ॥ ५१ ॥
कवाड्या रो दोष कहे तिण उपर, जोड कीधी पादू मझारे।
संवत अठारें नें वरस चोपनें, वेंसाख विद दसम ने मंगल वारो रे ॥ ५२ ॥

ढाल : १७

दुहा

केइ नाम धरावें साध रो, पिण पूरा मूढ अयाण।
त्यांरी ववेक विकल छें साधव्या, ते पिण जिण मारग री अजांण ॥ १ ॥
त्यानें समझ नही त्यारे वोलीये, कूडी करे बकरोल।
त्यानें खवर नही त्यारा वरतरी, करे रही करम किलोल ॥ २ ॥
सूघ साधा ने उथापण भणी, उधी कीधी परूपणा ताण।
तिण सू उलटो उघाड हूओ आपरो, पडी गला ने आंण ॥ ३ ॥
इण रे वडा वडेरा आगे हूआ, दर पीढ्या लग वाज्या साध।
इण सूतर अर्थ उधा करे, कीया सगलां ने असाध ॥ ४ ॥
इण किण विध कीधी परूपणा, असाध ठहराया इण केम।
इण चोडें करी छे परूपणा, ते सांभलजो धर प्रेम ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

कठोतरी हाडादिक रा धोवण ने, दोय घडी ताइ कहे काचो पाणी।
एहवी परूपणा कीधी पाना वाचेने, निसंक थका कहे कर कर ताणी।
आ सरधा छे मूढ मती री* ॥ १ ॥
तिण सूं साधा ने धोवण पूछेने लेणो, दोय घडी तांइ धोवण काचो पाणी।
विण पूछ्या लीयो तिण काचो पांणी वेहरयो, वले अरिहत नीं आगना लोपाणी ॥ आ० २ ॥
जे सूतर न्याय चालें छे तिणने, दोय घडी हूआ पछे वेहरणो धोवण।
पेंहला वेंहरयो तिण तो काचो पाणी वेहरयो, ते तो अरिहत री आगनारा खोवण ॥ ३ ॥
एहवी परूपणा कीधी तिणने पूछ्यो, थे दोय घडी पहिली वेहरो के नाय।
जब निसक थका कह्यो म्हें तो वेंहरा, ए उतकष्टा बाजे ने वहरो काय ॥ ४ ॥
जब लोकां पूछ्यो थे किण लेखें वेहरो, साप्रत जांणनें काचो पाणी।
जब कहे म्हारे वडा वडेरें वहरयो, तिणसू म्हे पिण वेहरां त्यारी परतीत आणी ॥ ५ ॥
पिण धोवण तों निश्चेइ करनें, दोय घडी ताइ काचो पाणी।
तिण सूं सुध साधानें वेहरणो नाही, एहवी अरिहत बोली छे वाणी ॥ ६ ॥
म्हारे तो थेट सूं वेहरतां आवां, म्हां ढीला पख्या साहमो ए क्यू देखे।
म्हें तो आगना लोपी नें लोपी कहा छा, आं आगना लोपी किण लेखे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ए कहें म्हे आगना मांहें चालां छां, तो एं जिन आगना म्हांमों क्यूं नही देखें।
दोय घडी तांइ धोवण काचो पांणी छें, तिण धोवण नें वेंहरें किण लेखें॥ ८ ॥
सुघ साधां नें उथापण काजें, आप तणा वडेरां नें कांय विगोया।
दोय घडी धोवण नें काचो पांणी थापे, साधपणा सगलां रा खोया॥ ९ ॥
ज्यूं कोइ पेंला नें कुसवण करण नें, आपरो नाक काटे नें करे असमाध।
ज्यूं सुध साधां नें असाध थापणनें, आप री पीढीयां खप हुवां असाध॥ १० ॥
काचो पांणी जांणे जांणे नित वहरें, वले साधपणा रो नांम धरावें।
एहवा भेषधारी भिष्ट भोला लोकां में, सुध साधां ज्यूं वंदावें पूजावें॥ ११ ॥
दोय घडी पेहली म्हें धोवण पीयां ते, काचों पांणी कहों ते तो वात न भूठी।
इम सांभल नें त्यांनें साध सरधें छें, त्यांरी हीया निलाड री दोनूंइ फूटी॥ १२ ॥
साध होय नें काचो पांणी वेहरी बूडा, वेंहरावण वाला पिण बूडा छे विशेष।
एं तो दोनूं जणां च्यार तीर्थ बारें छें, जों सांसों हुवें तो सूतर मांहें देखो।
आ सरधा श्री जिणवर भाषी* ॥ १३ ॥
साधां नें काचो पांणी जांणेनें वेंहरायों, तिण श्रावक रो बारमों व्रत भागो।
साध पिण जांण वेंहरें काचो पांणी, ते तो निश्चें वरत विहूणा नागो॥ आ० १४ ॥
एहवी परूपणा कीधी तिण लेखें, इण रा वड वडेरा तो निश्चें नही साधो।
वले बावीस टोला रा साध वाजें छें, त्यांनें पिण दर पीढ्यां कीया असाध॥ १५ ॥
काचा पाणी रे संघटें तो आहार न वेंहरें, काचों पांणी रो जांणनें कर जाएं गटकों।
एहवाइ विकल साध वाजें लोकां में, त्यांनें विकल होसी ते करसी लटकों॥ १६ ॥
असुध आहार साधु नें अभष कह्यों छें, तिणमे सचित नें अभष कह्यों छें विशेषो।
भगोती गिनाता नें निरावलिका में, जो सांसो हुवें तों तीनूंइ सूतर देखों॥ १७ ॥
असुध आहार साधुनें अभष कह्यो छें, तिण मांहें संका नहीं छें लिगार।
जांण जांण असुध आहार अभष वेंहरें छें, ते तो नियमाइ निश्चें नही अणगार॥ १८ ॥
दोय घडी धोवण नें कह्यों काचो पांणी, साधां में दोष ढाकण नें चलायो भूठों।
काचों पांणी कहे नें पीता जाएं, त्यांरों साधपणो तो जाबक गयो उठो॥ १९ ॥
धोवण नें दोय घडी काचो पांणी जांणें, ते तो भूठा थका करें फेन फितूरों।
तेहीज पांणी पोतें जांण पीयें, त्यांरा संजम सरधा में पड गइ धूरो॥ २० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ढाल : १८

दुहा

केइ नाव धराव साध साधवी, पिण उभड़ चलीया जाय।
उंधी उंधी करे छे परूपणा, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ १ ॥

ढाल

[साधु मत जाणो इण चलगत सु]

कहे सुध साधां ने आहार वहरणो, तीजा पोहर मझार जी।
जे च्यारू पोहरमें करे गोचरी, ते श्रीजिण आग्या बार जी।
आ सरधा छे मूंढ मत्यां री*॥ १ ॥
तिण मूढमती ने पूछा कीधी, थे साधु नांव धराय जी।
थे च्यारू पोंहर में करो गोचरी, ते किण लेखे किण न्याय जी॥ २ ॥
जव कहे म्हे तो जिण आग्या बारें, ओ दोषण छे म्हारे मांय जी।
एं उतकष्टा होय दोषण काय सेवें, वले आग्या लोपी कांय जी॥ ३ ॥
तीजें पोहरे गोचरी थापे, साधां ने उथापण काज जी।
त्यारे उलटी आय पडी गलामे, त्या छोडी संजम लाज जी॥ ४ ॥
तीजें पोंहरें गोचरी थापे, करे च्यारूं पोहर मझार जी।
वले मुख सूं कहें म्हे आग्या लोपी, त्याने कुण कहसी अणगार जी॥ ५ ॥
तीजे पोंहरें गोचरी थापें, करे च्यारू पोहर मझार जी।
ते पेटभरा उघाडा दीसें, घ्रिग त्यारो जमवार जी॥ ६ ॥
च्यारू पोहर तणी गोचरी साध नें, कहि दीधी श्रीजिण आप जी।
ते वीर वचन उथाप्यों त्यारें, उदे हुआ छे पाप जी॥ ७ ॥
साधु च्यांर पोहर मे करे गोचरी, त्यारो भूठो करे फितूर जी।
पोतें च्यारूं पोहर मे करें गोचरी, त्यांरा साध पणामे धूर जी॥ ८ ॥
कहे सुध साधां नें एकण दिनमे, आहार करणों एक वार जी।
दोय नें तीन वार आहार करे ते, श्री जिण आग्या वार जी॥ ९ ॥
जब लोकां इणनें प्रश्न पूछ्यो, थें एकण दिन मझार जी।
थे कितरी विरीयां आहार करो छों, ए उत्तर दो इण वार जी॥ १० ॥
जब कह दीयों म्हे एकण दिन मे, आहार करां घणी वार जी।
म्हे चोडे कहां जिण आग्या लोपी, दोष सेवे करां म्हे आहार जी॥ ११ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

पिण एंतो कहे म्हे उतकष्टां छां, जिण आग्या रा पालण हार जी।
तो एं आग्यां लोप दोषण कांय सेवें, कांय करें घणी वार आहार जी॥ १२॥
म्हें तो दर पीढ्यां लग करता आया, च्यारूं पोहर में आहार जी।
एक दोय विरीयां रो कारण नांहीं, म्हांरो तो ओहीज आचार जी॥ १३॥
इण रें लेखे इण री दर पीढ्यां में, साध हुवो नहीं एक जी।
त्यां पिण असणादिक एकण दिन में, कीयो वार अनेक जी॥ १४॥
जो भगवंत कह्यों हुवें सुध साधां नें, बीजी वार न करणो आहार जी।
अनेक वीरीयां आहार करें छे, त्यांनें कुण कहिसी अणगार जी॥ १५॥
एकवार साधनें आहार परूपें, तिण चोडे चलायों कूड जी।
आप तो आहार करें बहु वीरीयां, तिण रा साधपणां में धूर जी॥ १६॥
साध नें आहार छ कारणां करणों, कारण विण करणों नांहि जी।
एक दोय वार रो नांम न चाल्यों, जोवो सूतर रे मांहि जी॥ १७॥
कहे नितको साध नें आहार न करणों, करे ते आग्या बार जी।
जब उण ने पूछ्यों थें कांय करो नित, असणादिक च्यारूं आहार जी॥ १८॥
जब कह्यो म्हें तों जिण आग्या लोपी, ओ दोषण छें म्हांरें मांय जी।
एं उतकष्टा वाज दोषण कांय सेवें, जिण आग्या लोपी कांय जी॥ १९॥
म्हें तो दर पीढ्यां लग खाता आवां छां, नितरा नित च्यारूं आहार जी।
वले कह दियों चोडें लोकां में, म्हें तो जिण आगन्यां बार जी॥ २०॥
तीजा पोंहर टाल गोचरी न करणी, एक टक विण न करें आहार जी।
वले नित रो नित आहार नहीं करणो, ओ साध तणों आचार जी॥ २१॥
म्हें कहां म्हें तों पूरों नहीं पालां, म्हें तों पालां जिसों फल होय जी।
इसी कहे नें पलो छुडावें, पिण भोलां खबर न कोय जी॥ २२॥
उंधी सरधा भेष धार्यां नी परगट कीधी, सिरियारी सहर मझार जी।
संवत अठारें वरस एकावनें, काती विद चवदस बुधवार जी॥ २३॥

ढाल : १९

दुहा

भेषधारी भागल भिष्टी थया, त्यासूं पले नही आचार।
ते ववेक विकल सुध बुध विना, ते बोले नही मूंढ विचार॥ १ ॥
वधोतर देखे जिण धर्म री, जब लागें अभितर लाय।
जब कूडा कूडा आल दे साधा भणी, पछे लोकां मांहे देवें फेलाय॥ २ ॥
पोते तो हूआ ठाला ठीकरा, पांचू महाव्रत दीया छें बोलाय।
धीग होय बेंठा छे बाबा तणा, त्यांरें भूठ री सूग न काय॥ ३ ॥
मत विखरतों देखे आप रो, फिरता देखे श्रावकां नें ताय।
तिणसु छल छिदर जोवें साधा तणा, आल देवण रो करें छें उपाय॥ ४ ॥
जस कीरत देखे साधां तणी, त्यासूं ए दुख सह्यों रे न जाय।
तिण सू आल दीयो अन्हारवी थकें, ते सुणजो चित ल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[श्रा श्रणुकम्पा जिरण श्रागन्या मे]

मेला चीगटा कपडा मेह नां भीना, तिण में ज्यां लग सचित्त तणी हुवें संक।
तिण संका सहीत साधु कपडों नीचोवें, तिण साधु नें दोष लागें छें निसंक।
भेषधारी तो आल देता नही संके* ॥ १ ॥
भूठ बोलण री त्यांरें सूग नही छें, ते जेंन तणा विगडायल गेंरी।
ते नरक निगोद तणा होय बेठा, सुध साधां तणा छें अंतरंग वेंरी॥ २ ॥
मेंला चीगटा कपडा मेह सू भीना, तिण मे सचित री सका न हुवें लिगार।
तिण कपडा ने निसंक निचोवें साधू, तिण में दोष वतावे छे मूंड गिवार॥ ३ ॥
संका रहीत कपडा नें साध नीचोवें, त्यारा पाचोइ महाव्रत कहें छें भागा।
केई भेषधारी तो इसडी परूपें, ते तों समकत विरत विहूणा नागा॥ ४ ॥
पांणी सचित हूवो अथवा अचित पांणी हुवो, साधु नें कपडो नीचोवणो नांही।
नीचोया साधपणा रो खेरोइ न रहें, इण सूं इधिको आकार्य नही छें कांई॥ ५ ॥
म्हांरा वावीस टोला मांहे विगडायल, ते पिण कपडों नही नीचोवें।
एहवी ऊंधी परूपणा कर कर पापी, भोला लोका नें निसंक डबोवें॥ ६ ॥
किणही ववेक रें विकल आय कह्यों जब, तिणरो तो पूरो न काढे निकालों।
अंतरंग भेष रो घालीयो पापी, सुध साधां नें दीयो अणहूंतों आलो॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

बावीस टोला कहें छें तिणमें, ढीला में ढीलों टोलों विशेष।
तिण टोला तणा टाणोकड भिष्टी, आप रा किरतब स्हांमों मूल न देखें॥ ८॥
आप रो मत थापण मूढ मिथ्याती, सुध साधां ने दीयो अणहूंतों आलो।
तिण रा श्रावकां पासें बकें दिन राते, ते पिण साच नें भूठ रो न काढें निकालो॥ ९॥
इण भूठाबोलां री बात मांने छें, ते पिण तिण करे जाबक बूडा।
तिण भूठाबोलां री पषपात करसी, ते पिण चिहूं गति मांहे दीससी भूंडा॥ १०॥
मेंमंत वरसात मंडीयों तिण कालें, मेंला चीगटा कपडा भीना राखें जांण।
तिण मांहे तो नीलण फूलण रा जीव, समें समें अनंता उपजें छें आंण॥ ११॥
सरदी मिटें नही तठा तांइ कपडा में, समें २ अनंता उपजें छें तांम।
समें समें पिण विणसें छें अनंता, निरंतर मंडीयो रहें संग्राम॥ १२॥
पांणी अचित्त हूआ कपडो नही नीचोवें, तो अनंत जीवां री हिंस्या साधु नें लागें।
तिण हिंसारा पाप थकी साध रें, पेंहलो माहाव्रत निश्चेंइ भागें॥ १३॥
पहिलों महाव्रत राखण रें तांइ, पांणी अचित्त हुआ साधु कपडों नीचोवें।
तिण मांहें दोष कहें छें अग्यांनी, साधां नें आल देइ ने आत्मा डबोवें॥ १४॥
अचित्त पांणी हूआं साध कपडों नीचोवें, तिण मांहें दोष कहें छें पाषंडी।
ते ववेक तणो विकल छें मूर्ख, तिण भेषलइ आत्मा नें भंडी॥ १५॥
अचित पांणी हूआं पछें कपडों नीचोवें, तिणमें दोष कहें छें मूढ मिथ्याती।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, तिण विकलां री अकल रही छें जाती॥ १६॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडों नीचोवें, तिणमें दोष कहें तिण री भिष्ट छें बुध।
तिण ववेक रा विकल नें साध सरधें छें, त्यांमें पिण काइ म जांणजो सुध॥ १७॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवें, तिण मांहें तो दोष माठी मत रों जांणें।
तिण जीवां री दया तों ओलखी नांही, पीपल बांधी मूर्ख जिम तांणें॥ १८॥
अचित्त पांणी हूवां पछें कपडों नीचोवें, त्यांरा पांचोइ माहावरत कहें छें भागा।
ते सुनें चित्त हीयाफूट ज्यूं बोलें, ते विरत विहूणा कहीजें नागा॥ १९॥
एहवो आल अन्हाखो साधां नें दीधो, ते निश्चेंइ बूड गयों कालीधार।
कदा टांकों भलें इण आल दीयां थी, तो पाधरो जाए नरक निगोद मभार॥ २०॥
एहवो आलदेइ लोकां में फेंलायों, तिण दुष्टी रे संसार दीसें छें जादा।
तिणरा सेवग सुण सुण हरष हूआ छें, जांणें पगां रें गूगरा बांधा॥ २१॥
आल देणवाला नें हरषणवाला, साराइ कर्म तणा पूंज बांधें।
ते हीयाफूट गधां रा साथी, त्यां श्री जिण धर्म न ओलख्यों आंधें॥ २२॥
भेषधारी आल अणहूंतों दीधों, अणहूंताइ माहावरत साधां रा उडाया।
इण लेखें उण नें इतरो प्राछित आवें, कह्यों छें वेतकल्प नें ठांणाअंग मांहि॥ २३॥

उणमें साधपणों तो आगेइ न दीसे, पिण साधां ने आल दीयों छे अन्हाखी ।
पिण उणरें लेखें उण ने साधपणो आवें, ठांणाअंग ने बृहतकल्प छे साखी ॥ २४ ॥
तिणनें साधपणो फेर दीधा विनाई, इण सूं केइ भेलो करसी आहार ।
एहवा प्राछित रों गाला गोलो करे त्यामे, साधपणा रो खेरो न दीसे लिगार ॥ २५ ॥
जिण टोला में दसमो प्राछित सेव्यो, अकार्य अकार्य हूआ विशेषे ।
एहवा पिण प्रायछित गउ कर बैंठा, ते तो प्राछित लेसी किण लेखें ॥ २६ ॥
अचित पांणी हूआं पछें कपडा नीचोवे, त्यारा पांचोइ महावरत भागा ठेहराया ।
तिण तीनोंइ कालना रपेसरा नां, पाचोइ माहावरत जाबक उडाया ॥ २७ ॥
अचित्त पाणी हूवा निसंक सू साधां, कपडा नें नीचोया छें गये कालो ।
वले आगमीये काल साध कपडा नीचोसी, त्यां सगलां ने दुष्टी दीयों छे आलो ॥ २८ ॥
अचित्त पाणी हूआं कपडा नही नीचोवे, तो नीलण फूलण रा जीव अनंता रों घाती ।
आ पिण समझ नही विकलां ने, ते हीयाफूट गधां रा साथी ॥ २९ ॥
अचित्त पांणी हूआ कपडा नही नीचोवे, भीनो राखे ते कारण काइ ।
नीचोया थका पाप किसो लागे छें, ओ पिण विकला रे निरणों छे नाही ॥ ३० ॥
साधु तो पाप अठारेड त्याग्या, चोखी छे त्यांरी सुमत ने गुपती ।
अचित्त पांणी हूआं पछे कपडा नीचोवें, त्याने पाप कठा सूं लागे रे कुमती ॥ ३१ ॥
अचित्त पाणी हूआ साधां कपडो नीचोवे, 'त्यांरो साधपणो पापी कहे छे भागो ।
तो पाप अठारे जिण कह्यां तामें, ते किसों पाप साधां ने लागों ॥ ३२ ॥
पाणी सचित्त हूवो अथवा अचित्त पाणी छे, पिण साधा नें कपडो नीचोवणो नाही ।
माहें नीलण उपजो भावे फूलण उपजो, तिणरो साधु नें पाप न लागे काई ॥ ३३ ॥
नीलण फूलण सहीत कपडो सूके जब, साधू ने कपडा रे लगावणो हाथ ।
अचित्त पांणी हूओ छें तोही कपडा ने, साधू ने नीचोवणो नही असमात ॥ ३४ ॥
अचित्त पाणी हूआं पछे कपडों नीचोवें, ते नीचोवणो किण ही सुतर मे न चाल्यो ।
इम कहि कहि अग्यानी भोला लोका रे, हीया में घोचो अणहूंतो घाल्यों ॥ ३५ ॥
जब तो वरस तो मेह उभो रह्यां पछें, पाणी वहे छें बजार रे माहि ।
जब तो तिण पांणी में पग नही देंणों, ओ पिण सुतर मे चाल्यो नाही ॥ ३६ ॥
ग्रहस्थ रे घरे धोवण रो कूडो भर्यो छे, काचो पांणी घाल्यों तिण धोवण मांही ।
तिण लेखें तो धोवण नही वहरणो, ओ पिण सुतर मे चाल्यो नाही ॥ ३७ ॥
दूध दही चास आदि अनेक दरव छे, काचो पांणी घाल्यो छें त्यां माही ।
तिण लेखें या दरबां ने वहरणो नाहीं, ओ पिण सुतर में चाल्यो नाही ॥ ३८ ॥
इम प्रश्न पूछ्या रा जाब न आवें, जब तो कहे म्हे तो अचित हुआं ल्या छो ।
तो अचित्त पांणी हूआं पछे कपडो नीचोयों, तिणमे दोष कहे आल किण लेखे द्यो छो ॥ ३९ ॥

अचित्त पांणी हूआं पछें कपडों नीचोंयों, त्यांनें कहो थें-सुतर में काढ दिखावों।
तो थे पिण पाछें बोल कह्या त्यांरों, सुतर मांसूं काढ बतावो ॥ ४० ॥
अचित्त पांणी हुआं कपडो नीचोयो तिणमें, दोस कहें त्यांरे पूरों अंधारो।
तिण साधपणों ओलखीयों न दीसें, भेष पहर नें आत्म कीधी खुवारो ॥ ४१ ॥
पातरा माहे दूध दही चास धोवण, तिण मांहे काचों पांणी पडीयो छें आयों।
त्यांनें तो खाता पीता नही संकें, तो कपडों नीचोयां दोष कह्यों किण न्यायों ॥ ४२॥
गोचरी करतां छांट पूंहरा आया, जब उभा रहें ग्रहस्थ रा घर माह्यों।
तो अचित पांणी हूआं पछे कपडों नीचोवें, तिण माहे दोष कह्यों किण न्यायो ॥ ४३ ॥
अचित पांणी हुआं पछें कपडो नीचोयों, तिणमें दोष कहें छें ते बोलें छें उंधा।
अण विचास्या आल पाषंडीयां दीधो, ते भारीकर्मा किम बोलसी सूधा ॥ ४४ ॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोयों, तिणमें दोष कहें मूंढ विना विचारों।
त्यांनें वांदें पूजें सुध साध जांणेनें, त्यांरें पिण जाणजो पूरों अधारो ॥ ४५ ॥
इण भूठाबोलां री परतीत न करणी, ओं तों कायों हूओ कहि दे काचो पांणी।
तिण पूछ्या रा जाब न आवें पूरा, जब थोडां में बोलें फिरती वांणी ॥ ४६ ॥
इण भूठाबोलां री परतीत करसी, ते भव २ मांहे घणा पिछतासी।
न्याय निरणा विना आल साधां नें देसी, ते नरक निगोद में भीका खासी ॥ ४७ ॥
मेंला चीगटा कपडा मेह सूं भीना, पांणी अचित्त हुआंइ नीचोवणों नांही।
तिणमें नीलण फूलणादिक कंथूआ उपजें, तिणरो साधू ने पाप न लागो कांइ ॥ ४८ ॥
दोय च्यार महीना तिण कपडा माहें, नीलण फूलणादिक जीव उपजें आय।
जीव उपजें तों नचित सूं उपजों, पिण कपडा नें नीचोवणों नहीं ताय ॥ ४९ ॥
मेंला चीगटा कपडा मेह सूं भीना, पोहर हुवें तथा आधीरात।
तो पिण कपडा नें भीनों राखणों, पिण नीचोवणा नही अंसमात ॥ ५० ॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवें, तिण में दोष कहें छें मतहीण भिष्टी।
इतरी पिण ओलखणा नहीं तिणनें, निश्चेंइ साध न जांणें समदिष्टी ॥ ५१ ॥
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवेणो, ते ओलखायों पुर सहर मभार।
समत अठारें सतावने वरसें, आसोज विद नवमी ने सुकरवार ॥ ५२ ॥

ढाल : २०

दुहा

केइ भेषधारी सुध बुध विना, बोले नही वचन विचार।
कहे हिवडा आरो छे पाचमो, पूरो पले नही आचार॥ १ ॥
म्हे दोष सेवा छा भारी २ जांण नें, तिणरो प्रायछित्त पिण न ल्यां तिलमात।
तो पिण म्हे सुध साध छां, प्रसिद्ध लोक विख्यात॥ २ ॥
म्हे बाजार मे परठा मातरो, तिणरो चोमासी प्राछित साख्यात।
ते म्हे परठ्यों परठां परठसां, तिणरो प्राछित न ल्या असमात॥ ३ ॥
कोंई आवे नही नें देखें नही, तठे मातरो परठणो विचार।
ते म्हे परठा छा लोकां देखता, तिणरो प्राछित नही ल्या लिगार॥ ४ ॥
इत्यादिक दोष अनेक छे, ते पिण सेवा छा वाल्ंवार।
ते म्हे दोष सेवा छा जाण २ ने, तिणरो प्राछित नही ल्यां लिगार॥ ५ ॥
बाजार मे परठा छां मातरो, भारी दोष जाणे तिण मांय।
तिण लेखे त्यामे साधपणो नही, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ६ ॥

ढाल

[भ० जिण आग्या०]

दस पांच वार एकण दिन माहे, मातरो परठे बाजार माय।
यारी सरधा रे लेखें जिती वार परठे, जितरा चोमासी प्रायछित आय रे।
भवीयण जोवो हिरदय विचारी, थे काय करो आत्म भारी रे।
भवीयण सूत्र जोय करो निसतारी*॥ १ ॥
एक दिन मातरो परठे तिणरो, चोमासी प्रायछित आवे।
इण लेखे एक दिन रा मातरा परठण मे, अनेक दिना रो साधपणो जावे रे॥ २ ॥
तो ए नित २ अनेक चोमासी रो प्राछित, जाण २ सेवे दिन रात।
इण लेखें तो यामे साधपणा री, बाकी रह्यो नही असमात रे॥ ३ ॥
इण विचे तो अनेक भारी २ दोप, नित २ सेवे छे ताहि।
यारो साधपणो वहि गयो जाबक, मातरा परठण रा दोष माहि रे॥ ४ ॥
या मातरा परठण मे दोष वतायो, तिण लेखें त्या साधपणो खोयो।
तो बीजा भारी २ दोषां रो प्रायछित्त, त्यारी तिथ न करणी कोयो रे॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

एक पइसा रा लेंणायत आगे, देवालों कांढे दीयों नागें।
जब भारो २ वोहरा हुता ते, तिण पासे आयनें कांइ मागें रे॥ ६ ॥
तो एक मातरों परठें बाजार में तिणरों, यांहीज दोष अणहूंतो बतायों।
इण लेखें तो यांहीज यांरो साधपणों, अभारे धूएं जाबक उडायो रे॥ ७ ॥
साधां ने दोषीला थापण नें, आपरोंइ साधपणों गमायों।
बाजार मे मातरो परठण रो, अणहूंतों दोष बतायो रे॥ ८ ॥
कोइ पेंला नें कुसावण करवा, आपरो नाक देवें कटाय।
ज्यूं ए साधां नें दोषीला थापण, आप दोषीला होय जाय रे॥ ९ ॥
यांरा वडवडेरा आगें हुआ त्यां, मातरें परठ्यों बाजार माह्यों।
तिण मांहें चोमासी दोष बताए, यांरा वडां नें दीया उडायो रे॥ १० ॥
यांरा बडा बडेरा आगे हूआ ते, ओं तो दोष किणही न बतायो।
बाजार मांहें मातरा परठण रों, ओं तो यांहीज दोष बतायो रे॥ ११ ॥
साधु तो बाजार में मातरो परठें, घणा लोकां देखंता ताहि।
तिण माहे दोष अणहूंतो बतायो, तिण रो मूढ न जांणें न्यायो रे॥ १२ ॥
उचार पासवण परठण रों प्राछित कह्यों ते, उचार आश्री प्राछित्त जांणो।
पासवण परठ्यां रो प्राछित नही छें, तिणनें रूडी रीत पिछांणो रे॥ १३ ॥
पासवण तो कही छे उचार रें सहचर, एकली पासवण कही छें नांही।
तिणरों निरणों कहूं छूं नसीत सूतर सूं, ते विचार करे देखों मन मांही रे॥ १४ ॥
नसीत सूतर रे चोथें उदेशें, उचारपासवण परठ्यां पछे सुच करणों।
कह्यो छें उचार रों असुच टालण नें, तिणरो बुधवंत कीजो निरणों रे॥ १५ ॥
उचारपासवण परठीयां पछें, कपडा सूं लूहें नांही।
तिणनें मासीक प्रायछित आवें, नसीत सूतर रे मांही रे॥ १६ ॥
उचारपासवण परठीयां पछें, लकडी नें वांस तण खपाट।
वले आंगुली ने सिलका करी लूहें, तिणने मासीक प्राछित रो पाठ रे॥ १७ ॥
कपडा सूं लूहणों चाल्यो, लकडादिक सूं लूहणों नांही।
ते पिण उचार आश्री कह्यों छें, पासवण रो लूहसी कांइ रे॥ १८ ॥
उचारपासवण परठीयां पछें, सुच नही लेवें ताय।
असुच तणों लेप लागों राखें, तिणनें मासीक प्रायछित आय रे॥ १९ ॥
लेप टालणों कह्यों छें सुच लेइ नें, ते तों उचार आश्री छें तांम।
पासवण तो पोतेंइज सुच छें, इणरो सुच तणो कांइ कांम रे॥ २० ॥
उचारपासवण परठीयां पछें, तिण उपर सुच लेवें ताहि।
तिणनें मासीक प्राछित कह्यों छें, नसीत सूतर रे मांहि रे॥ २१ ॥

उचारपासवण परठीयां पछें, तिहांइज सुच लेवणो नाही।
ते पिण उचार उपर लेंणो वरज्यो, अठे पासवण रों कांम कांइ रे॥ २२॥
उचारपासवण परठीयां पछे, सुच लेवे घणों अलगों जाय।
तिणने पिण मासीक प्रायछित आवें, ते पिण उचार आश्री छे ताहि रे॥ २३॥
उचारपासवण परठीया पछे, सुच लेणो कह्यो जिणराय।
तीन पुसली सूं पाणी इधको लेवे, तिणने मासीक प्रायचित्त आय रे॥ २४॥
तीन पुसली सूं सुच लेणो चाल्यो छे, उचार आश्री कह्यो छें ताम।
पासवण तों पोतेइ सुच छे, पासवण ने सुच रो नही कांम रे॥ २५॥
इतरा तो बोल नसीत मे चाल्या, चोथा उदेसा माहिं।
वले चोमासी प्राछित रा बोल अनेक, पनरमे उदेशे छे ताहि रे॥ २६॥
कोइ आवे नही वले देखे नही, तिहां परठणो कह्यो जिणराय।
उत्तराधेंन चोवीस मे धेंने, तिणरों पिण न जांण्यो न्याय रे॥ २७॥
उचारपासवण तो लघू बडी नीत, खेल ते मुख नो बलखो जाणो।
सघाण ते नाक नों छे सलेषम, जल ते मेल लीजो पिछाणो रे॥ २८॥
आहार ते असणादिक च्यारू, उपधि ते सारा उपगरण जाणो।
देह सरीर जीव सूं रहीत हूवो ते, इत्यादिक दरव अनेक पिछाणो रे॥ २९॥
यामे तथाविध छें परठवा जोग, सुध थडले परठणा तांम।
जेंणा ने उपयोग सहीत सूं, राखेंनें सुध परिणाम रे॥ ३०॥
कोइ आवे नही वले देखे नांही, तिहां परठणों कह्यों जिणराय।
तिणमे किणही एक दरब आश्री कह्यो छे, उचारपासवण रें न्याय रे॥ ३१॥
ज्यूं मिनष मे उपीयोग बारे कह्या छे, पिण एकण मे बारे छें नाही।
ज्यूं समचे कह्यो आवे देखे नाही, तिहा परठण री विध जाणजो याही रे॥ ३२॥
कोइ आवें नहीं वले देखे नही तिहां, सरीरादिक परठणों जाय।
तिण संग्रह शब्द मे सगला कह्या पिण, सगला नही छें ताय रे॥ ३३॥
आहार उपधि गृहस्थ रे काम आवे छे, तिण देखतां परठणों नांही।
अथवा तिण देख्यां हेला निंद्या हुवे, ते विचार करणो मन मांही रे॥ ३४॥
जब कोइ कहे ग्रहस्थ देखतां, परठणो नही लिगारो।
उत्तराधेन मे सगलो वरज्यो छे, ओ देखलो पाठ उघाडो रे॥ ३५॥
इम कहे तिणनें ग्रहस्थ देखतां, काजो पिण परठणो नांही।
पग पूजें ने रज दूर न करणी, राखादिक नही परठणी कांइ रे॥ ३६॥
पाणी नीतारीयां पछे लारलो गरदो, ते पिण देखतां परठणो नाही।
भोलो लूहणो गलणो धोया पछे, धोवण देखतां परठणो नही काई रे॥ ३७॥

वधे धोवण पांणी पीतां बधें तो, ते पिण देखतां परठणों नांही।
वले फूफदादिक नें सरीर मेंल, देखतां नही परठणो कांइ रे ॥ ३८ ॥
देखतां नही धोवण खोलीयादिक ने, पगादिक पिण धोवणा नांही।
गोबरादि पगां रे लागों हुवे तो, देखतां अलगो करणों नहीं त्यांही रे ॥ ३९ ॥
भाठो ढलीयों बगदो ने रेत, ए पिण देखतां परठणा नांही।
वले खेल संघाण नें मातरादिक, देखतां परठणो नही कांइ रे ॥ ४० ॥
जो सगला दरब देखतां वरज्या छें, तों ए परठें छे किण लेखे।
त्यांरी अभितर आंख हीयारी फूटी, पोतें बोल्या री पोते न देखे रे ॥ ४१ ॥
जब तों कहे म्हें दोष जाणे नें सेवां, तिण सूं देखतां परठां छां ताय।
पिण ए सुध साध बाजें लोकां मे, ते दोष सेवें किण न्याय रे ॥ ४२ ॥
इम कहे ने अग्यानी पार होय जावें, साधां नें उथापण विशेषे।
परठण रो दोष अणहूतो बतावे, पिण सूतर साह्मो न देखें रे ॥ ४३ ॥
साधां नें दोषीला थापण, पोतें पिण दोषीला जाय।
आपरो साधपणो जाबक उठें छे, तिणरी खबर न काय रे ॥ ४४ ॥
पिण एंतों अनेक दरब देखतां परठें, एक दिन माहे वार अनेक।
वले साधपणां रो नांव धरावें, ते बूडे छें विनां ववेक रे ॥ ४५ ॥
ओर तो भारी भारी दोष अनेक, सेवे छें दिनरात।
पिण यां परठण रों दोष बतायो तिणमें, साधपणों न रह्यों अंस मात रे ॥ ४६ ॥
अंग उपंग उघाडा करने, उचार परठणों एकंत जाय।
तिहां आवे नही देखें नही ग्रहस्थ, तो निंद्या लोकां में न थाय रे ॥ ४७ ॥
आहार सुखडी खादिम सादिम घणा हुवें, ते पिण देखतां परठणो नांही।
ते असणादिक ग्रहस्थ रे कांम आवे, वले निंद्या पांमे लोकां मांही रे ॥ ४८ ॥
उपधि कपडादिक घणा हुवें तों, लोकां देखतां परठणों नांही।
ए पिण ग्रहस्थ रें कांम आवे छें, वले निंदा पामें लोकां मांही रे ॥ ४९ ॥
जीव रहीत सरीर हुवें जब, ते पिण देखतां परठणों नांही।
ते एकंत जायगा नहीं परठे तों, हेला निंद्या पांमें लोकां मांहो रे ॥ ५० ॥
त्यामें केइ दरब तो मारग मांहे परठ्यां, बेइन्द्रीयादिक आवें साख्यात।
तिण सूं मारग टाले नें एकंत परठें, तो टलें जीवां री घात रे ॥ ५१ ॥
जे जे दरब देखता परठ्यां, ग्रहस्थ रे कांम नावे काइ।
वले हेला निंदा अजेंणा न हुवें तों, देखतां परठ्यां दोष छे नांही रे ॥ ५२ ॥
असणादिक सीतमात्र खारा खेरो, उपगरणादि अंसमात।
ते अजेंणा निंद्या टालनें देखतां परठ्यां, तिणमें दोप नही तिलमात रे ॥ ५३ ॥

दस दोष रहीत षेत्र हुवें तिहां, परठणो रूडी रीत जांण।
सगला बोला रो षेत्र समचे कह्यो छे, तिण री बुधवत करजो पिछांण रे॥ ५४॥
आवे नही वले देखे नाही, संजम प्रवचन विराधीजे नाही।
वले उची नीची भूम नही हुवें, त्रिणा पत्रादिक नही त्याही रे॥ ५५॥
थोडा कालनो अचित थडलो हुवे, विसतीरण कही जगनाथ।
च्यार आंगुल कही अचित उपरली, गामादिक थी दूर विख्यात रे॥ ५६॥
बिल उदरादिक नही रूंधाइ, तस प्राण बीजादिक रहीत।
दस बोल कह्या छें समचे दरबां रा, ज्यू उचार पासवण री रीते रे॥ ५७॥
पिण सगलाइ दरब परठण रे उपर, दस दस बोल कह्या छे नाही।
कोइ चतुर विचषण डाहा हुवें, ते, विचार करो मन माही रे॥ ५८॥
तीन च्यार मारग भेला हुवे तिण ठामे, वले मझ बाजार रे माही।
तिण ठामे साध ने उतरणो चाल्यो, ते क्यूं मातरो परठसी नांही॥ ५९॥
मातरा ने ओर दरब परठण री, विध ओलखाइ पुर सहर मझार।
सवत अठारे सतावने वरसे, आसोज सुद तेरस मगलवार रे॥ ६०॥



ढाल : २१

दुहा

भिष्ट भागल विकल हूआ तके, करें असुध वेंहरण री थाप।
चोर ज्यूं असुध अर्थ हेंरता, थोथा करें अग्यांनी विलाप ॥ १ ॥
किहांइक पाठ छे सूतर में, तिणरो न्याय मेले नहीं मूंढ।
साधां नें असुध वेंहरावीयां धर्म कहें, एहवी करें अग्यांनी रूढ ॥ २ ॥
साधां नें असुध वेंहरावीयां, तिणमें धर्म नहीं अंसमात।
धर्म कहें असुध वेंहरावीयां, तिणरा घट में घोर मिथ्यात ॥ ३ ॥
च्यार आहार सचित नें असूझता, श्रावक वेंहरावें जांण जांण।
तिणमें पाप अलप बहोत निरजरा, एहवी करें अग्यांनी तांण ॥ ४ ॥
ए पाठ भगोती सूतर मझे, शतक आठमा मांय।
तिणरो अर्थ करणवालो पिण डरपीयो, तिण केवलीयां नें दीयो भलाय ॥ ५ ॥
छदमस्थ अर्थ करे इहां, तिणरो केवली जांणें न्याय।
कदा कोइ बुधवंत बुध थकी, उनमांन थी देवें बताय ॥ ६ ॥
जांण अफासु थापीयां, वीर वचन विगटाय।
सूतर सूं पिण मिले नही, ते प्रतष दीसें अन्याय ॥ ७ ॥
साध नें सचित नें असुध दीयां, कहें बोहत निरजरा अल्प पाप।
विण उंधी सरधा रों निरणों कहूं, ते सुणजों चुपचाप ॥ ८ ॥

ढाल

[श्रा अणुकम्पा जिण आगन्या में]

अफासु आहार नें सचित कह्यों जिण, अणसणीजेंणं ते असूझतो थावें।
ते साधां नें श्रावक जांणे वेंहरावे, तिणरें अल्प पाप नें बोहत निरजरा बतावें।
असुध वहरण री थाप करे ते अग्यांनी, तथा असुध वेंहरण री थाप करों मत कोइ* ॥ १ ॥
कोरो अन सचित्त नें असुझतों छें, ते साधां नें श्रावक जांण वेंहरावें।
तिणमें जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, तिणरें अलप पाप नें बोहत निरजरा बतावें ॥ २ ॥
काचो पांणी सचित्त नें असुझतो छें, ते साधां नें श्रावक जांण वेंहरावें।
तिणमें जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, अल्प पाप नें बोहत निरजरा बतावें ॥ ३ ॥
काचा फल दाडमादिक असुझता छें, ते साधां नें श्रावक जांण वेंहरावें।
तिण दीधां में मूढ मिथ्याती जीवडा, अल्प तो पाप नें बहोत निरजरा बतावें ॥ ४ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सचित्त पान डोडादिक असुझता छें, ते साधा नें श्रावक जाणे वेहरावें।
तिण दीधां में मूंढ मिथ्याती जीव, अल्प तो पाप ने बोहत निरजरा बतावे ॥ ५ ॥
च्यारूं आहार सचित्त ने असुझता छे, ते साधाने श्रावक जाणे वेंहरावे।
तिण दीधा में मूंढ मिथ्याती जीव, तिणनें अल्प पाप ने बोहत निरंजरा बतावे॥ ६ ॥
साधानें आहार सचित्त ने असुध वेंहरावे, तिण श्रावक रों बारमों व्रत भागो।
साधु जांणेनें सचित्त असुझतो लेवें तो, ओ पिण व्रत भागे नें होय गयों नागो ॥ ७ ॥
साधां रें आहार सचित्त ने असुध लेवण रा, जीवे ज्यां लग छें पचखांण।
रोगादिक पीड्यां साधू रा प्रांण जाएं तोंही, सचित नें असुझतो नही लेवें जांण ॥ ८ ॥
असल श्रावक ते साधाने असुध न देवे, सुध साधां रा जाता देखे तोही प्रांण।
असुध देइनें सांधां रो साधपणों न लूटें, पोता रा लीधा चोखा पाले पचखांण ॥ ९ ॥
कदा राग रो घाल्यों असुध वेंहरावें, तिणमें संवर निरजरा अंस न जांणे।
व्रत भांगों नें पाप लागो छें तिणरों, प्राछित ले व्रत राखें ठिकांणे ॥ १० ॥
च्यारू आहार सचित्त ने असूझता छे, ते साधा नें श्रावक जांणें केम वेंहरावें।
सुध साधू तो जांणेने असुध न वेंहरें, अल्प पाप ने बोहत निरजरा किम थावे ॥ ११ ॥
अफासु नें अणेसणीज्जे पाठ सूतर में, तिण पाठ रो अर्थ सूधो कहणी नांवे।
जथातथ तिणरो अर्थ करे तो, घणां लोकां में सेखी उड जावें ॥ १२ ॥
तिणरा झूठा झूठा अर्थ अनेक बतावें, कदे कारण पडीयां रो नांम बतावें।
वले विविध प्रकारें घुचलाइ घाले नें, भारीकर्मां भोला लोकां नें भरमावें ॥ १३ ॥
ओ तो पाठ भगोती सूतर मे छे, पिण आधां रे अंतरंग नही छे पिछाणो।
च्यारू आहार सचित्त ने असुझता दीधा मे, बोहत निरजरा किहाथी होसी रे अयाणो ॥ १४ ॥
फासु एषणीक साधु नें देवे श्रावक, ठांम ठांम बहु सूत्रां रे मांहि।
ते सचित असुध जाणे किम देवे, वले बोहत निरजरा जाणे किम ताहि ॥ १५ ॥
इण पाठ नें मूंढे आंणे वांरूंवार, त्यांरा सचित नें असुध खावा रा परिणांम।
जो असुध वेंहरण रा परिणांम नही छें, तो यूंही क्यां नें बकसी वेकांम ॥ १६ ॥
च्यारू आहार सचित्त ने असुध वेंहरावें, तिणरे तो अल्प आउखो बंधाय।
भगोती पांचमें सतक छठे उदेसें, वले तीजें ठांणें ठाण अंग माय ॥ १७ ॥
साध नें आहार सचित्त नें असुध वेंहरावें, अल्प पाप ने बोहत निरजरा थाय।
जब तो ठांण अंग नें भगोती सूतर रो, पाठ ने अर्थ दोनूंइ उथप जाय ॥ १८ ॥
साधू ने जाणनें आधाकर्मी वेंहरावें, ते तो चारित धर्म रो लूटणहार।
ते पिण नरक निगोद में भींकां खावें, उतकष्टों रूलें तो अनंतो काल ॥ १९ ॥
आधाकर्मी वेंहरायां छें एकंत पाप, सचित नें असुध वेंहरायां ओं पिण पाप।
च्यारू आहार सचित्त ने असुध वेंहराया, तिणनें मूढ करें बोहत निरजरा री थाप ॥ २० ॥

साधां नें असुध आहार तो अभष् कह्यों जिण, ते अभष आहार देवें दातार।
तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहें ते, भूल गया मूढ विना विचार ॥ २१ ॥
साधां नें असुध आहार तों अभष कह्यों जिण, निरावलिका भगोती गिनाता मांय।
ते अभष आहार साधां नें श्रावक वेंहरायां, अल्प पाप ने बोहत निरजरा किम थाय ॥ २२ ॥
कुसीलीया ते हीण आचारी, विणा विचारीयां बोलसी वेणों।
रोगीयादिक गिलांण नें अर्थे, आधाकर्मीयादिक जांणेनें लेंणों ॥ २३ ॥
ए तो आचारंग रे छठें अवेन नें, ते जोयलो चोथा उदेसा मांय।
तो सचित्त नें असुझतो साधां नें दीधां, अल्प पाप ने बहोत निरजरा किम थाय ॥ २४ ॥
नही कल्पे ते वस्तु साधु वेंहरें तो, तिणनें तो चोर कह्यों जिणराय।
कह्यों छें आचारंग पेहलें सतखंधें, अठमांधेन पहिला उदेसा मांय ॥ २५ ॥
ठांम ठांम सूतरमें नषेध्यों, साधांनें असुध लेंणों नहीं कांई।
श्रावक नें पिण असुध न देंणों, असुध दीयां में धर्म छें नांहीं ॥ २६ ॥
च्यार आहार सचित्त नें असुझता छे, त्यांनें श्रावक तो निसंक सूं जांणें सुध मांन।
आपरी तरफ सूं सुध ववहार करनें, साधां नें हरख दीयो छें दांन ॥ २७ ॥
तिणरी पागमें सचित पंखीयादिक न्हाख्यों, अथवा सचित्त रजादिक लागी छें आय।
तिणरी श्रावक नें कांइ खबर नहीं छें, पिण ववहार सूं सुध जांण दियो वेंहराय ॥ २८ ॥
इण रीतें आहार सचित्त नें असूझतो छें, पिण श्रावक तों सुध जांणे नें वेंहरावें।
अल्प पाप ते पाप तणों छें नकारों, चोखा परिणांम सूं बहोत निरजरा थावें ॥ २९ ॥
कें तो अजांणपणें साधु नें वेंहरावे, तिणरी तरफ सूं फासु नें सुझतो जांण।
इण रीते ए पाठ नो अर्थ हुवें तों, ते पिण केवल ग्यांनी वदे ते प्रमांण ॥ ३० ॥
उनों पांणी निसंक सूं श्रावक जांणें छें, तिण पाणी नें घर रां बावर दीयों ताय।
तिण ठांम में काचों पांणी घर रां घाल्यों, तिणरी तो श्रावक नें खबर न कांय ॥ ३१ ॥
तिण पांणीनें श्रावक उंनों जाणेनें, निसंक सूं साधां नें दीयो वेंहराय।
तिणरें अल्प पाप ने बोहत निरजरा हुवें तों, ते पिण केवल ग्यांनी नें देंणों भलाय ॥ ३२ ॥
कोरा चिणा पड्या छें भूंगडादिक में, सचित गेहूं पड्यां छें धांणी रे मांय।
तिणरी श्रावक नें खबर न कांई, सुझता जांणी साधां नें दीयां वेंहराय ॥ ३३ ॥
अचित दाखां में सचित दाखां पडी छें, अचित खादम में सचित्त खादम छें ताय।
तिणरी श्रावक नें तो खबर न काइ, ते सुझतों जांणनें दीयो वेंहराय ॥ ३४ ॥
इत्यादिक अनेक सचित वस्त छें, ते श्रावक निसंक सु अचित जांण।
ते पिणं आपरी तरफ सु चोकस करनें, साधां नें वहरावें घणों हरख आंण ॥ ३५ ॥
इण रीतें श्रावक रें बहोत निरजरा हुवें, तो पिण केवलग्यांनी जांणें।
म्हें तो अटकल सूं उनमांन कस्यों छें, वले सुतर रा अनुसारा प्रमांणें ॥ ३६ ॥

आधाकर्मी साधु जाणेने भोगवे तो, नरक निगोद मे भीखा खावें।
असुध देवे ते संजम रो लूटणहारो, चहू गति मे घणो दुख पावे ॥ ३७ ॥
आधाकर्मी साधु अजांणे भोगवें तो, पाप रो अस न लागो लिगार।
तिण दातार नें पूछें निरणों कर लीधो, संका सहीत पिण नही लीयो तिणवार ॥ ३८ ॥
आधाकर्मी आहार कीयो तिणरें घर, उणरे तों घरे साधु वेहरण गयो नांही।
ते आहार अनेक घरां रे आंतरे, निरणो करे वेहरयों पातरा माही ॥ ३९ ॥
तिण आहार भोगवतां सुध साधु रे, पापरो लेप न लागो कांइ।
सुयगडाअग इकवीसमे अधेने, जोयकरो निरणो घट मांही ॥ ४० ॥
च्यार आहार सचित ने असूझता छें, तिणरी श्रावक ने खबर नही छें लिगार।
ते सूझता जाणे साधां ने वेंहरावे, तिणरा छे निरवद जोग व्यापार ॥ ४१ ॥
च्यार आहार अचित्त नें सुझता छे, पिण श्रावक रे संका पडी तिणवार।
ते सका सहीत साधा ने वेहरावे, तिणरा सावद्य जोग व्यापार ॥ ४२ ॥
सावद्य जोग सूं एकत पाप लागे छे, निरवद जोग सूं निरजरा ने पुन थाय।
थोडो पाप ने वोहत निरजरा बतावे, तिणने पूछीजे किसा जोगा सूं हुवे ताय ॥ ४३ ॥
सका सहीत आहार साधां ने वेहरायो, तिण घर रो माल खोयनें पाप लगायो।
तो सचित ने असुझतो जांणने देसी, तिणरे वोहत निरजरा किण विध थायो ॥ ४४ ॥
सुध साधा भेलो तो अभवी रहे छे, तिणरो साधु देखें छे सुध ववहार।
तिण अभवी नें साध वादे पूजे छे, तिणरो साधा ने दोष न लागे लिगार ॥ ४५ ॥
साधां भेलो रहे चोथा व्रतरो भागल, ते तो छानो छे तिणरो न पड्यो उघाड।
तिणनें वादे पूजें आहार पांणी देवे छे, तिणरो साधां ने दोष न लागो लिगार ॥ ४६ ॥
अभवी भागल ने जाणे माहे राखें, जब सर्व साधा रो साधुपणो भागें।
ज्यूं सचित ने असुझतो जाण वेंहराया, तिणरे निश्चेइ एकत पापज लागें ॥ ४७ ॥
सचित ने असूझतों आहार दीयां मे, अल्प पाप ने निरजरा सरधे किण लेखें।
दोय वाना सरध्यां मिश्र दान थपे छे, मिश्र उथाप्यो तिण सामो क्यूं नही देखे ॥ ४८ ॥
मिश्र वालां री सरधा ने खोटी कहे छे, पोते पिण मिश्र थापे छे मूंढ मिथ्याती।
आपरा बोल्यां री आपने समझ न काइ, ते तो हीयाफूट गधा रा साथी ॥ ४९ ॥
मिश्र थापण वालां री तो सरधा खोटी छे, ते कहे मिश्र मे मुन राखां छा ताय।
मिश्र दान रा सूंस न करावां म्हे किण नें, त्याने पिण त्यारा झूठ री खवर न काय ॥ ५० ॥
साधा नें आहार असुध देवण रो, ए त्याग करावे छे किण न्याय।
अलप दोष नें बहोत निरजरा जाणें छे, तिणरे निरजरा री कांय देवे अतराय ॥ ५१ ॥
वले साधा रे अंतराय आहार री पाडी, दातार नें अंतराय दीधी छे विशेखें।
अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी, तिणने सुस करायो छें किण लेखे ॥ ५२ ॥

श्रावक साधां नें असुध जांणनें वेंहरावें, तिणनें धर्म ने पाप दोनूंइ जांणो।
तिणनें असूझतो दान देवण रा, किसे लेखे करावो पचखांणो॥ ५३॥
मुख सूं कहो मिश्र दांन तणा म्हे, किणनेंइ सूस करावां नांही।
इण मिश्र दांन रा सूंस करायां, थांरी सरधा री वरग वूहा नही कांई॥ ५४॥
मूंला गाजर जमीकंद दांन देवें छें, तिणमें धर्म थोडो नें घणो कहे पाप।
तिण दांन रा सूंस करावो नांही, मिश्र दांन जाणी रहो चुपचाप॥ ५५॥
अल्प पाप ने बहोत निरजरा जाणो छो, तिण दांन तणां पचखांण करावो।
बहोत पाप ने निरजरा अल्प जांणो थे, तिण दांन रा सुंस करावो छो किण न्यावो॥ ५६॥
कोइ कहे यां तो सूतर रो पाठ उथाप्यो, पिण पोतें उथाप्यो ते खबर न कांय।
मोह मतवाला ज्यूं बोलें अग्यांनी, ते सांभलजो भवीयण चित ल्याय॥ ५७॥
च्यारूं आहार सचित नें असुझता छें, त्यांरा श्रावक त्यांनें क्यूं न वेंहरावे।
अल्प पाप ने बहोत निरजरा कहे छें, त्यांनें वेंहरावतां संका क्यूं ल्यावें॥ ५८॥
च्यार आहार सचित नें असुझता वेहरे, जब तो यां पाठ साचो करि थाप्यो।
च्यार आहार सचित नें असुध न लेवे, जब पोतेंइज थाप्यो ने पोतें उथाप्यो॥ ५९॥
च्यार आहार सचित साधां ने वेहरावे, जब श्रावकाइ पाठ साचो कर थाप्यों।
च्यारूं आहार सचित नें असुध न देवें, जब त्यांहीज थाप्यो नें त्यांहीज उथाप्यो॥ ६०॥
जेसाई साध ने जेसाइ श्रावक, यां दोयां रे घट मांहे घोर अंधारों।
जेसा कूं तेंसा आय मिलीया छें, उंटरे लारें उंटा बांधी कतारो॥ ६१॥
अल्प पाप ने बहोत निरजरा उपर, जोड कीधी गंगापुर गांम मझार।
समत अठारें वरस सतावनें, पोह सुद आठम मंगलवार॥ ६२॥

ढाल : २२

दुहा

भेषधारी मिष्टी भागला तणे, भूठ बोलण री सक न काय।
खोटी खोटी करे छे परूपणा, परभव सूं डरे नही ताय॥ १॥
धावता बालक री माता भणी, दिष्या देणी नही छे जाण।
लेणवाली ने पिण लेणी नही, एहवी कहे छे अग्यांनी ताण॥ २॥
तीन च्यार वरस रो बालक हुवो, जावक हांचल छोड्यो छे ताहि।
ते बालक अन खातो हुवे, तठा पछे दिष्या ले माहि॥ ३॥
एहवी अछती अछती करे छें परूपणा, लोका सू मिलती बात जाण।
यारी सरधा सू एहीज फिटा पडे, ते सुणजो चतुर सुजांण॥ ४॥

ढाल

[चतुर विचार करीने देखो]

जबू पइना मे अठारे नाता चाल्या, ते तो एहीज मिल मिल गावे जी।
धावतो बालक छोडे दिष्या लीधी वेस्या, तिणनें तो एहीज सरावें जी।
भूठाबोला रो सग न कीजे* ॥ १॥
तिण साप्रत धावतो बालक छोडे, एहीज कहे दिष्या लीधी जी।
एहीज इणनें सराय सराय, घणां लोकां मे प्रसिध कीधी जी॥ २॥
यारा वड वडेरा दर पीढ्या लग, इण वेश्या ने घणी सराइ जी।
वले इणरो खेवो पार हूवो कहे, कहिता सक न आणी कांइ जी॥ ३॥
ए तो साचा जाण ने कहिता आया, आ तो कूडी न जाणी बातो जी।
त्या लारे कुवदी कुपातर उठ्या, त्यानेंइज भूठा घाल्या साख्यातो जी॥ ४॥
बालक धावतो छोड दिष्या लीधी वेस्या, तिणने ठहरायो एकत कूडो जी।
इणरा वड वडेरा कहितां आया त्यारे, भूठ घाले मूढे दीधी धूरो जी॥ ५॥
अठा पछें अठारे नाता ए कहसी, ए भूठा ने वले भूठ थासी रे।
यारे लेखे ए भूठ जाणे जाणे बोले, ते चिहुगति मे गोता खासी रे॥ ६॥
बालक धावे तिणरी माने दिष्या न देणी, ठाणा अग तीजो ठाणो छे साखी जी।
ओ पिण भूठ जाणेने बोले छे, इसडा भारीकर्मा छे अन्हाखी जी॥ ७॥
ठांणा अग तीजें ठाणे तीन जणा नें, दिष्या न देणी तामोजी।
नपुसक व्याधीयों कलीव तीजो, ओर वरज्या नही तिण ठांमोजी॥ ८॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

बालक धावें तिणरी मानें दिष्या न देंणी, सूतर री साख दीधी ते भूठी जी।
ते हीयाफूट गधा रा साथी, तिणरी हीया नलाड री फूटी जी॥ ९॥
ठांणाअंग में तीजें अर्थ में घाल्यों, ते ग्रंथ तणा बोल जांणो जी।
उगणीस जणां ने दिष्या न देणी, ते जोय करो पिछांणो जी॥ १०॥
जो एं उगणीस बोलां ने साचा जांणें, तो ए पग पग भूठा थावें जी।
उगणीस बोल मांहिला बोल अनेक, यांहीज विकलां मांहें पावें जी॥ ११॥
उगणीस बोलां में बालक विरध नें, दिष्या देंणी वरजी छें त्यांही जी।
तो एहीज बालक विरध मूंडे नें, क्यूं लीधा टोला रें मांही जी॥ १२॥
बले चोर नें राजा रा अपराधी, त्यांनें पिण चारित दीधो जी।
वले आंधां नें दिष्या दे मांहे लीधो, ओ जांणेनें खोटो कांम कीधो जी॥ १३॥
उगणीस बोला माहें चाल्यों, दास नें दिष्या देंणी नांही जी।
तो एहीज दास दासी नें गोला, मूंडलीया टोला मांही जी॥ १४॥
दुष्ट ने रिणीयो माथें देणहार, त्यानें पिण कहें दिष्यां न देणी जी।
त्यांहीज त्यांनें दिष्या दीधी, जब बूड गइ त्यांरी केणी जी॥ १५॥
बीहकण ने कहे छे दिष्या न देवी, तिणने पिण दिष्या दे माहें घाल्यो जी।
ते बीहतो थको चोमासा मांहे, गाडें वेस दूजें गांम चाल्यो जी॥ १६॥
वले बीजो बीहकण चोमासा माहे, न्हास घोड ओर गांम लीधो रे।
भादरवे मास नीलो आलो चीथतो चाल्यो, काचो पांणी घणी वार पीधो जी १७॥
अपहरने आंण्या बांदा ने, तिणने पिण दिष्या दे माहे लीधो जी।
ओ पिण उगणीस जणां माहिलो, तो जांण नें खोटो कांम क्यूं कीधो जी॥ १८॥
जात हीण नें पिण कहे दिष्या न देंणी, जात हीण तो गोली नें गोला जी।
त्यांनें पिण दिष्या देइ मांहे घाल्या, यूंही बोल्या फूटा जिम ढोला जी॥ १९॥
अंगहीण ने कहें छे दिष्या न देणी, तिणनें पिण दिष्यो दे मांहें घाल्यो जी।
ते ढचक ढचक करतो पग चालें, तिण सूं सुखे न जांए चाल्यो जी॥ २०॥
उगणीस जणां ने कहे दिष्या न देणी, ए कह्या ते उगणीसा रें मांही जी।
त्यानेंइज दिष्या दीयां दोष न जांणें, यांरा बोल्या में साच न कांइ जी॥ २१॥
एहवा भूठाबोलां री फिरती वांणी, तिणमें साच नहीं छें लिगारो जी।
ते समकत विरत विहूणा नागा, ते यूंही हारें जमवारो जी॥ २२॥
धावता बालक री मा दिष्या लेवें, बालक न्यातीलां नें भलायो जी।
न्यातीलां री आगना ले दिष्या लीधी, साधवीयां समीपें आयो जी॥ २३॥
तिणमें भेषधार्‌यां तो दोष बतायो, दीयो अणहूंतो आलो जी।
सुध साधवी वधीयां यांने दुख लागो, तिण सूं बोलें आल पंपालो जी॥ २४॥

वले कहे बालक री दया आणी ने, बालक री माने दिष्या न देणी जी।
सुध साधां रा धेष रा घाल्या, त्यांरी छे भूठी कहेणी जी॥ २५॥
वले एहीज बालक री माने, दिष्या लीधी बतावे जी।
एहवा भूठा बोला छे कुपातर, त्यारा बोल्या री परतीत नावे जी॥ २६॥
मेणरेहा बालक छोड दिष्या लीधी, तिणने तो एहीज थापें जी।
सुध साधवीयां आगे दिष्या लीधी, तिणने भूठ बोली नें उथापे जी॥ २७॥
पद्मावती साधवी साध पणामें, करकण्डू ने जायो जी।
तिण मसाण मे बालक ने परठ्यो, तिणरी मन मे न आंणी कायो जी॥ २८॥
अठारे नाता मे बालक छोड वेस्या, चारित लीयो कहे साख्यातो जी।
सुध साधवीयां आगे दिष्या लीधी, तिण सू बोले छे भूठ विख्यातो जी॥ २९॥
पद्मावती मेणरेहा कुबेर सेन्या वेस्या, सजम लीयो सुखदायो जी।
भेषधार्‍या रे लेखे तीना रे, बालक री दया रही नही कायो जी॥ ३०॥
या तीनां ने पहिला तो याहीज सराइ, हिवे याने भूठी ठेराइ जी।
साधा नें भूठा घालणने पापी, भूठी भूठी बातां उठाइ जी॥ ३१॥
किण ही बाइरे बंधो दिष्या लेवा रो, बधो पूरो हूवा दीक्षा लेंणी जी।
तिण दिन बालक हाचल धावें, यारे लेखे तो दिष्या न देणी जी॥ ३२॥
जो बालक री मा भेप धार्‍यां ने पूछे, दिष्या लेउ के बालक धवाउं जी।
यामें घणो धर्म हुवे ते मोने बतावो, ज्यू हूं सुखसाता पाउजी॥ ३३॥
इम पूछ्यां भेषधार्‍या ने जाब न आवे, जब अगल डगल उधा बोले जी।
न्याय निरणो तो मूल न दीसें, जब भूठ रो टागरो खोलें जी॥ ३४॥
वीर कह्यो उत्तराधेन दसमे अधेने, समो एक न करणो प्रमादो जी।
तो बाइ तो दिष्या लेवण ने उठी, तिण री जेज किम करसी साधो जी॥ ३५॥
भेषधारी कहे उणने दिष्या न देंणी, बालक री दया आणी जी।
सूंस भागा रो कारण कोइ नही छे, एहवी बोलें कुपातर वाणी जी॥ ३६॥
सूंस भाग्यां तो हुवे छे अनंत ससारी, बालक पाल्या बधे मोह कर्मो जी।
किसा बोल्यां री जिण आगना छे, किसा बोला माहे जिण धर्मो जी॥ ३७॥
सूस भागे ने बालक पाले, तिणमे भेषधारी कहे धर्मो जी।
बालक छोडेनें दिष्या लेवे, तिणरें बधे पाप कर्मो जी॥ ३८॥
सूंस न भागे ने दिष्या लेवे, तिणने भगवंत भाख्यो धर्मो जी।
सूंस भागे ने बालक पालें, तिणरें बधसी पाप कर्मो जी॥ ३९॥
बालक धवाया मे धर्म जांणें, ते निश्चे पाषडी पूरा जी।
ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी, जिण भाष्या धर्म सूं दूरा जी॥ ४०॥

बाल धवायां में धर्म जांणें छें, दया जाणें छें रूडी जी।
तो सामायक मांहें बालक न धवावे, आ दया तो पड गइ पूरी जी॥ ४१॥
किणरे मा नें बाप दोनूं छें बूढा, त्यांसूं हाल्यो चाल्यो नही जावें जी।
वले जाबक धन नही घर मांह्यो, वले कवडी कमावणी नांवे जी॥ ४२॥
त्यांरें एक बेटो माइतां नें, आंण देवें चुगो पांणी जी।
यांरें लेखे तो इणनें दिष्या न देणी, माइतां री दया घट आंणी जी॥ ४३॥
एक दिष्या लीयां अनेक दुखी हुवें जब, तिणनें पिण दिष्या न देंणी जी।
दिष्या लीधां किणनें दुख न हुवें, जब दीक्षा देणी ने लेणी जी॥ ४४॥
धावता बालक री मानें दिष्या न देंणी, तिण लेखें घणां नें न देणी जी।
जो एं पाछला दुख पावें त्यांनें दिष्या न देणी, तो बूड गइ त्यांरी केंणी जी॥ ४५॥
धावता बालक री मानें दिष्या न देंणी, ओं तो चोडें चलाया गोला जी।
यांरी डाहा हुवे ते बात न मांनें, केइ मांनें तके जाबक भोला जी॥ ४६॥
बालक री मां दिष्या लेवें तिणरा, परिणांम पाडें भेषधारी जी।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, ते भागल भिष्ट अचारी जी॥ ४७॥
तीरथंकर चक्रवत बलदेवादिक, ते संजम ले सुखीया हुआ जी।
त्यांरें लारें अनेक दुखीया हुआ दीसें, केइ हीयो फूटीने मूंआ जी॥ ४८॥
सेठ सेन्यापती आदि वड वडा राजा, ते दिष्या ले हुआ सूरा जी।
त्यांरें पिण न्यातीला दुषीया हुआ, केइ अकाले पड गया पूरा जी॥ ४९॥
केइ निरधन भूखा दलदरीयादिक, संयम ले सुखी हूआ जी।
त्यांरें न्यातीला बोहत दुखी तिण विना, अन बिना अकाले मूंआ जी॥ ५०॥
धावता बालक री मां दिष्या लेवें, कहें बालक दुखीयो थावें जी।
तो राजादिक दिष्या लीधी छें त्यांरा, न्यातीला पिण दुख पावें जी॥ ५१॥
धावता बालक री मां नें दिष्या दीधां, बालक री दया न आंणी जी।
तो राजादिक नें दिष्या दीधी त्यां, पाछिलां री दया क्यूं न आंणी जी॥ ५२॥
भेषधार्‍यां नें आप तणां बोल्यां री, आपिण समझ न कांइ जी।
यां कने दिष्या लीधां लारला दुखी हुवें, त्यांरी एं पिण नांणें मन मांहीं जी॥ ५३॥
दिष्या लेंणवाला नें जेज न करणी, म्हारें कर्म काटे जांणो मोखो जी।
पाछला पाछला री कमाइ जासी, संजम लेंणों निरदोषो जी॥ ५४॥
पाछला दुखी हूवां मोनें पाप न लागें, सुखी हूवां मोने नही धर्मो जी।
यां सूं मोह तोडे अलगा होसी, त्यांरा कटसी निकेवल कर्मो जी॥ ५५॥
लारला सुखी दुखी री कीरप करसी, आ लोकीक दया जाणो जी।
आ सावद्य दया छोड संजम लेसी, ते निश्चें जासी निरवांणो जी॥ ५६॥

यांमे एक जणो जो उज्जड चाले, तिण रो न काढे निस्तारो जी।
वडा उट जिम आगें चालें, लारें बूही जाय कतारो जी॥ ५७॥
भेषधार्‍यां री सरधा ओलखावण, जोड कीधी पीपाड मझारो जी।
संवत अठारें वर्ष गुणसठे, चेत सुद तेरस सोमवारो जी॥ ५८॥



ढाल : २३

दुहा

केइ भेषधारी आरे पांचमे, ते नांम धरावे साध।
त्यांरी सरधा असुध छें अति बूरी, त्यांरें कदेय म जांणो समाध॥ १ ॥
त्यांरा टोला घणा छे जू जूआ, पूछ्यां कहें म्हें सघला साध।
पिण सरधा छें त्यांरी जू जूइ, वले कर रह्या मांहों मां विवाद॥ २ ॥
सरधा तो एक एकण तणी, चोडें खोटी कहें छें साख्यात।
पिण विकलां नें समभ पडें नहीं, चोडें दीसें उघाडो मिथ्यात॥ ३ ॥
कहिवा ने तो इम कहें, म्हें सगलाइ छां साध।
त्यारें आचार सरधा तों मिलें नही, तिणसूं मांहों मां करे विषवाद॥ ४ ॥
त्यांमें केइ कहें जीव खवावीयां, धर्म नें पुन एकंत।
केइ कहें जीव खवावीयां, मिश्र दांन कहंत॥ ५ ॥
मांहों मां उडावें एक एक नें, त्यांरें लागी मांहों मां तोट।
एक एक तणी सरधा मभे, कहें खोटा में खोट॥ ६ ॥
त्यारें मांहों मां सरधा तणो, फेर घणों छें अतंत।
पिण थोडो सों परगट करूं, ते सुणजो मतवंत॥ ७ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

प्रथवी पांणी अगन नें वाय, वले वनसपती ने छठी तसकाय।
छ काय री छ दांनसाला मंडावे, तिणमें एकंत पुन कहे छें ताय।
त्यांनें साध सरधें छें मूंढ मिथ्याती *॥ १ ॥
अथवा छही काय नें जीवां हणेंनें, त्यांरी जूदी जूदी दानसाला मंडावें।
पछें हाथां सूं दांन देवें दगचाल, तिणमें एकंत धर्म नें पुन बतावें॥ २ ॥
ग्रहस्थ नें मांहो मां छ काय खवावें, अथवा छ काय मारेनें खवावें।
तिणमें मिश्र कहे त्यांनें खोटा कहेने, एकंत धर्म ने पुन बतावें॥ ३ ॥
कोइ गाजर मूला नें सकरकंद देवें, जमीकंद रो दांन देवें छें ताह्यो।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छें, मिश्र कहें त्यांनें दीया उडायो॥ ४ ॥
वेंगण वालोलादिक अनेक नीलोती, रांधे रांधे मिथ्याती जीवां नें खवावें।
तिणमें मिश्र कहें ज्यांनें खोटा कहेनें, एकंत धर्म ने पुन बतावें॥ ५ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कोइ चिणा सेकी सेकी नें दान देवे, कोइ गोंहा नें सेकी सेकी देवे धांणी।
इत्यादिक अनेक धान सेकी ने देवे, तिणमे एकत पुन कहे मूढ अग्याणी॥ ६ ॥
कोइ कूआ बाव तलाब खोदावे, वले पावें काचो अणगल पांणी।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहें त्याने खोटा जांणी॥ ७ ॥
श्रावक नें माहोमां छकाय खवावे, वले छकाय मारेने जीमावे।
तिणमे मिश्र कहे त्यांने खोटा सरधे ने, एकत धर्म ने पुन बतावे॥ ८ ॥
समाइ पोसा रे काजें जागा करावे, छ काय जीवा रों करे घमसाण।
तिणनें एकत धर्म ने पुन बताए, इणमे मिश्र कहे त्याने खोटा जांण॥ ९ ॥
श्रावक ने देवें छें वस्त अनेक, छ काय जीवा रो करे घमसांणो।
तिणमे एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने खोटा जाणो॥ १० ॥
कल्पे ते वस्त श्रावक ने देवें, कलपे जिण षेतर ने काल मे तांम।
तिणमे एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यारी पाडी मांम॥ ११ ॥
साध विना छे सगलाइ अनेरा, त्यां सगलां ने दांन दीया कहे पुन।
सचित अचित दीया कहे पुन निकेवल, मिश्र कहे त्यारी सरधा ने जाने जबूंन॥ १२ ॥
तीर्थंकर दान दीयो ने कीयो सिनान, वले दिष्या रा महोछव कीया छे पूरा।
तिणमे एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने कहे छे कूडा॥ १३ ॥
भगवत पधारया री दीधी वधाइ, तिणने धन धान धरती दीधी छे दान।
तिणमे एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने जाणे विकल समान॥ १४ ॥
दानसाला मंडाइ परदेसी राजा, समाइ ने पोसा जिम जाणे छे तांम।
एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने खोटा कहे ठाम॥ १५ ॥
छ काय रा जीवा नें हणनें मिथ्याती, आहार नीपजाए साधा ने देवे छे दांन।
तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यारी जाणें छे खोटी सरधान॥ १६ ॥
मिथ्याती साधां ने काचो पांणी वेहरावे, वले वेहरावें कोरो काचो लूंण धांन।
तिणमे एकंत धर्म नें पुन कहें छे, मिश्र कहे त्यारी सरधा नें कर कर हिरान॥ १७ ॥
वले वेहरावे साधा नें सचित्त नीलोती, अथवा राधे राधे देवे साधां ने दांन।
तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने जाणे छे घोर अग्यान॥ १८ ॥
आधाकर्मी आदि दे आहार दोषीलो, कोइ मिथ्याती साधा ने देवे छे दान।
तिणमें एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यानें जाणें छे कपट री खान॥ १९ ॥
साधु तो धुजतो देख मिथ्याती, साधु नें तपावे छे हेठो वेसांण।
तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र री सरधा कहे छे जेहर समांण॥ २० ॥
कोइ साध उजाड मे थाको छे तिणनें, गाडादिक बेसांणीने गाव मे आंणे।
तिणनें एकंत धर्म नें पुन कहे छे, मिश्र कहें त्यांरी सरधा ने खोटी जाणे॥ २१ ॥

मात पिता वले सासू सुसरादिक, त्यांरो विनो करें छें हरष घणों आंणों।
तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांनें जांणे छें मूंढ अयांणो ॥ २२ ॥
वले काको बाबो ने सेंण सगादिक, त्यांरो विनो करें घणों हरख मन आंणो।
तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांनें एकंत खोटा जांणो ॥ २३ ॥
इत्यादिक संसारी अनेक जीवां रो, विनों करें मन हरष आंण।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांरी सरधा नें खोटी जांण ॥ २४ ॥
कोइ अणुकम्पा आंणी छकाय नें देवें, अथवा छ काय मारी नें खवावें।
तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांरी सरधा नें खोटी सरधावें ॥ २५ ॥
बंदीवांनादिक नें सचित्तादिक देवें, अथवा छही काय हणेनें जीमावें।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छें, मिश्र कहें त्यांरी सरधा नें जाबक उठावें ॥ २६ ॥
कोइ भय रों घालीयो दांन देवे छें, थावरीयादिक नें देवे दरब अनेक।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांनें जांणें खोटा विशेस ॥ २७ ॥
खरच करे छें मूंआ रे केडें, सेंण सगा न्यात जीमावें तांम।
तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांनें खोटा कहें गांम गांम ॥ २८ ॥
कोइ लज्या रो घालीयो दांन देवे छें, जाचक डूंबरादिक ने जांण।
तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहे त्यांरी सरधा ने खोटी पिछांण ॥ २९ ॥
रावलीया कीरतनीया नें भांड भवईया, त्यांनें दांन देवें मन मांहे गर्व आंण।
वले देवें सगा नें पेंरांवणी मूसालों, तिणमें पुन कहें मिश्र नें खोटो जांण ॥ ३० ॥
हांती नेंतादिक आंमा साह्मां देवें छें, वले आंमा साह्मां जीमें ने जीमावें।
तिणनें मिश्र कहें त्यांनें खोटा कहेनें, एकंत धर्म ने पुन बतावें ॥ ३१ ॥
अधर्म दांन टालेनें नवही दांन में, एकंत धर्म पुन बतावें।
मिश्र दांन कहें त्यांनें खोटा कहें छें, त्यांरी सरधा नें जाबक जड सूं उठावें ॥ ३२ ॥
मिश्र दांन उथापण री जोड कीधी छें, तिणमें तो त्यांनें जाबक दीया उडाय।
नव दांन में एकंत पुन कहेनें, मिश्र दांन में एकंत खोटो कहें ताय ॥ ३३ ॥
मिश्र दांन कहें छें तिणनें, धर्म तणो धाडायत थाप्यों।
वले कहें जमारो हार गयो छें, इम कहि कहि मिश्र दांन उथाप्यों ॥ ३४ ॥
मिश्र दांन परूपें तिणनें कहें छें, इण पुन तणों कर दीयों छें नास।
इम कहि कहि नें एकंत पुन थापें, मिश्र दांन री सरधा रो करें विणास ॥ ३५ ॥
वले मिश्र दांन परूपें तिण नें, कह दीयो कागला रो साथी।
वले तेहीज तिणनें साध सरधें तो, ते पिण पूरा छें मूंढ मिथ्याती ॥ ३६ ॥
वले मिश्र कहें छे तिणनें, देवालों काढ्यों कहें छें निसंको।
वले तेहीज तिणनें साध सरधें तो, त्यांरे पिण नही मिटीयो मिथ्यात रो डंको ॥ ३७ ॥

वले मिश्र दांन कहे छें तिण नें, गाजी ने मुल्लाखांरी ओपमा दीधी।
अठां दाना में एकंत पुन थापण ने, मिश्र वालारी घणी फजीती कीधी ॥ ३८ ॥
मिश्र दांन री सरधा नें जेंहर कहें छे, वले कहें छे मिश्र ने साप रो मूढों।
वले तेहीज तिणनें साघ कहे तो, त्यां पिण विकला रे मिथ्यात री गूढो ॥ ३९ ॥
इत्यादिक जोड अनेक करेनें, मिश्ररी सरधावाला ने घालीयो कूडो।
एकंत धर्म ने पुन थापण ने, मिश्र री सरधा उपर न्हाखी छे घूरो ॥ ४० ॥
मिश्ररी सरधा वाला ने खोटा कहे छें, वले तेहीज त्याने जो सरधे साध।
ते पिण निश्चे छे मूंढ मिथ्याती, त्यां विकलारे कदेय म जाणों समाध ॥ ४१ ॥
ज्याने धर्म तणा धाडायत थाप्या, जब तो अनेक चोरा विच कहि दीया भारी।
वले तेहीज त्यानें साध सरधें तों, त्यांरी पिण भव भव मे होसी घणी खुवारी ॥४२॥
वले पुन रो न्हास कीयो कहे ज्याने, वले कागला रा साथी कहि दीया ज्यानें।
वले तेहीज त्यांने साध सरघे तो, फिट फिट कहीजे त्या विकला ने ॥ ४३ ॥
मिश्र दांन कहे त्यानें कह्या देवाल्या, देवाल्यां कह्या तिण कह दीया चोर।
वले तेहीज देवाल्या ने साध सरघे तो, त्यारें अधकार मे अघारो घोर ॥ ४४ ॥
साप रा मूंढा सरीषा कहि दीया त्याने, जब तो भारी जाण्यो त्यारो जहर मिथ्यात।
वले तेहीज त्यानें साध सरघे तो, विगड गइ विकलारी वात ॥ ४५ ॥
मिश्र दांन कहे छे त्यांरी सरधा नें, भात भात करने खोटी दरसाइ।
वले तेहीज त्याने साध सरघे तो, त्यारा बोल्या री त्याने पिण समझ न काइ ॥४६॥
मिश्र दान कहे त्यानें खोटा कहे छें, वले तेहीज त्याने कहे छे साध।
ते पिण जिण मारग रा अजांण अग्यानी, त्यारें पिण कदेय म जांणो समाध ॥ ४७ ॥
जे साध कहिता पिण वार न ल्यावे, असाध कहितां पिण सक न आणें ॥
त्यारा श्रावक पिण छे ववेकरा विकल, गुर री सरधा पिण नही पिछाणे ॥ ४८ ॥
कोडान कोडगमे वोल न मिले, त्यारे सरधा माहे अनेक बोलारो छेफेर।
तो पिण मांहोमां साध सरघे छे, एहवो छे भेष धार्‍यां रे अधेर ॥ ४९ ॥
एकीकों बोल उथाप्यो तिणने, निन्वव कह्या छे श्री भगवान।
अनेक बोल उथाप्यां त्याने साध कहे छें, एहवो भेष धार्‍या रें छे घोर अग्यान ॥ ५० ॥
ए जिण जिण ठामें मिश्र ने थापे, ए तिण तिण ठामे एकत पुन थापे।
मिश्ररी सरधा सू लोक बूडता जाणे, तिणसू मिश्र री सरधा जाबक परी उथापें ॥ ५१ ॥
एं जिण जिण ठांमे एकत पुन थापें, एं तिण तिण ठांमे मिश्र ने थापें।
एकत पुन कहे ते तों पाषडीया री सरधा, तिणनें विपरीत जाणेंने परी उथापें ॥ ५२ ॥
भेषधार्‍यां री सरधा ओलखावण काजे, जोड कीधी छे खेरवा मझार।
संवत अठारें वरस चोपने, आसोज सुद एकम वृहस्पतवार ॥ ५३ ॥

●

ढाल : २४

दुहा

खोटो जांणे मिश्र नें उथापीयो, थाप्यो छें एकंत पुन।
जब मिश्र वालां पिण त्यांनें उडायनें, कर दीया जाबक जबूंन ॥ १ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिन आगन्या मे]

मिश्र दांन उथापें एकंत पुन थापें, त्यांनें अंतर ग्यांन बिना कह्या छेंआंधा।
अंतर ग्यांन विना आंधा निश्चें मिथ्याती, त्यांनें समकत आवारा पिण पड गया जांदा।
त्यांनें साध सरधे छें मूंढ मिथ्याती* ॥ १ ॥

मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, त्यांनें कह दीया निश्चें हिंसाधर्मी।
तो निश्चे मिथ्याती हुवें छे, ते तो साध नही छें निकेवल अधर्मी ॥ २ ॥

वले मिश्र उथापे एकंत पुन थापे, त्यांनें कहें त्यांरी अकल गइ दपटाइ।
वले कहें भोला लोकाने भर्म में न्हाखें, कूडा कूडा कुहेत लगाइ ॥ ३ ॥

हिंसाधर्मी मुख सूं कहि दीया त्यांने, वले कहें त्यांरी अकल गइ दपटाइ।
वले त्यांने तेहीज साध सरधे तो, त्यां विकलां में कला म जाणो काइ ॥ ४ ॥

निरवद दांन तों कह दीयों निर्ग्रंथ केरो, सावद्य दांन संसार नो कर दीयो कोरें।
तिणमें मिश्र उथापे एकत पुन थापें, त्यांनें निश्चें पाषंडी कह दीया चोरें ॥ ५ ॥

मुख सूं तों पाषंडी कह दीया त्यांने, इण वातनें निश्चें न जांणी झूठी।
हिवे तेहीज त्यांनें साध सरधें तो, हीया निलाड री दोनूंइ फूटी ॥ ६ ॥

मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, त्यांनें कहे छें ग्यान लोचन विण अंध।
वले तेहीज त्यांनें साध सरधें, तो ते पिण अग्यांनी अंध नरिंद ॥ ७ ॥

मिश्र दांन उथापे एकत पुन थापे, त्यांनें खोटो मत झाल्यों कहे ताय।
वले तेहीज त्यांनें साध सरधें तो, जब ओं पिण मिथ्या चोडें भूला जाय ॥ ८ ॥

मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, त्यांनें कहें छें अभितर पाटो खोलो।
अभितर पाटा वाला नें एहीज साध सरधें, तो विकलां रे वाज्यो मिथ्यात रो झोलो ॥ ९ ॥

मिश्र दांन उथापें एकंत पुन थापें, जीव खवायां पाप न गिणें ते आंटो।
त्यांरी सरधा में कहि दीयो दांणों न नीकलें, वले कहे त्यांनें थोथा मती पछांटो ॥ १० ॥

हाथां सूं आरंभ करनें जीमावें, तों पिण हिंसा न मांनें काइ।
त्यारी बुध तो जाबक बूडी कहे छें, वले कहें छें हीया आडी ढांकणी आइ ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

थोथी कण रहीत कही त्यारी सरधा नें, हीया आडी ढाकणी आइ ने कहे वुव भूंडी।
वले तेहीज त्यांने साध सरधे तो, त्या पिण विकलां री सरधा भूंडी ॥ १२ ॥
मिश्र दान उथापे एकंत पुन थापे, त्याने सिव धर्म्यांरा जोडायत थाप्या।
जब तो च्यार तीरथ मा सू बारे काढ्या, जडा मूल सूं त्यानें जावक उथाप्या ॥ १३ ॥
अन तीरथीयां रे जोडायत थापे, जब हिंसाधर्मी कहि दीया त्याने।
वले तेहीज त्यांनें साध सरधे तो, ववेक रा विकल कहीजें यानें ॥ १४ ॥
मिश्र उथापे एकंत पुन थापे, ते पहिला दयाधर्मी हुता कहे तासो।
पछे हुइ कहे छे हिस्या धर्म री सरधा, या तो कातीयो पीजीयो कीयो कपासो ॥ १५ ॥
कातीयो पीजीयो कपास कीयो छे, त्या तो समकत सजम खोयो अग्यानी।
वले तेहीज त्याने साध सरधे छें, ते पिण निश्चेंइ नही छे ग्यानी ॥ १६ ॥
आरंभ करे जीमावें कोड सीधो खवावे, कोइ धोवण पावें कोइ काचो पांणी।
त्याने एकत पुन सरीषो कहे छें, त्याने मिश्र वाला कहे निश्चें अनाणी ॥ १७ ॥
मिश्रवाला तो अग्यानी कहि दीया त्याने, अग्यांनी तो निश्चे नही समदिष्टी।
वले तेहीज त्यानें साध सरधे छे, तो मिश्र वाला पिण निश्चेइ भिष्टी ॥ १८ ॥
सचित अचित दीयां कहे पुन सरीषो, सुध असुध दीयां कहे पुन सरीषों।
इण मतनें तो निश्चेइ कह दीयो कूडो, हाथ रा कांकण नें स्यूं आरीसो ॥ १९ ॥
मिश्र दान उथापें एकत पुन थापे, ते तो तस थावर मार्‍यां रो पाप न जाणे।
तिण सूं उंधी अकल रा कह दीया त्यानें, त्यानें जावक उठावता सक न आणे ॥ २० ॥
कूडो मत तो कह दीयो त्यारो, वले उंधी अकल रा त्याने जाणे।
वले तेहीज त्यानें साध सरधें तो, ए पिण निश्चे पहिले गुणठाणे ॥ २१ ॥
संबत अठारे नें वरस तेतीसे, एकत पुन कहें छे त्यानें दीया उडायो।
मिश्र दांन थाप्यों छे निसक सूं चोडे, खोटी जोड करेने ताह्यो ॥ २२ ॥
एकंत पुन कहे सूतर अर्थ मरोडे, वले गुर री पिण परतीत मूल न राखें।
ज्यां ने अर्थ उंधाइज सूझे, पुन कहे त्याने मिश्र वाला इम भाखे ॥ २३ ॥
सूतर अर्थ उधा करें त्याने, वले गुर री परतीत न राखें लिगारो।
एहवा अवगुण वतावे त्याने साघ सरधे, त्यारें पिण जाणजो पूरो अधारो ॥ २४ ॥
मिश्र दान उथापें एकत पुन थापे, आठोइ दांन नें धर्म दान मे घालें।
जब मिश्र वाला कहे ए झूठ बोले छे, यारो खोटो मत आघो नही हाले ॥ २५ ॥
मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे, त्याने मिश्रवाला कहें कपट चलावें।
साघ श्रावक त्यांने निरणो पूछे जब, झूठ बोले उण रा घर रो पुन बतावें ॥ २६ ॥
उणरा घर रो एकत पुन बताए, भरमावे छें लोग लुगाइ।
साघ थइ ने सूधा न बोलें, आ खोटी सरधा त्यानें किण सीखाइ ॥ २७ ॥

नव दांनां में एकंत पुन परूपें, त्यांनें मिश्र वाला जांणें भोलप मोटी।
साख्यात सूतर री बात न माने, त्यांरी सरधा नें एकंत कहें छें खोटी ॥ २८ ॥
सुतर न मांनें एकंत पुन थापें, कूड कपट सु भरमावें लोक लूगाइ।
यांनें खोटा कहे तेहीज साध सरधें, त्यां पिण विकलां में कला न काइ ॥ २९ ॥
मिश्र वाला कहें मिश्र वीर परूप्यों, पुन कहे नें म्हांरों मिश्र दांन उथाप्यों।
ते तो जीव मार्‍या रो पाप न जांणें, त्यांतो धर्म नें पुन एकंत थाप्यों ॥ ३० ॥
मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, ते तो भूठी करे छें अग्यांनी भखालो।
ते अंतर ग्यांन विना जीव आंधा, त्यांरें आडा कहें छें अभितर कर्मजालो ॥ ३१ ॥
वीर वचन उथाप्या कहें त्यांनें, अंतर ग्यांन विना आंधा कहि दीया त्यांनें।
वले तेहीज त्यांनें साध सरधें, तों ववेकरा विकल कहीजे यांनें ॥ ३२ ॥
भठी लगावें नें चरू चढावें, वले चूल्हों वाले रांधें तरकारी।
जे कोइ धर्म जांणी नें जीमावें, ब्राह्मण तथा वले ओर भिख्यारी ॥ ३३ ॥
तिण नें एकंत पुन रो कारण कहें छें, देणवाला नें जाबक न कहें तोटो।
लेंणवालो उण री गति जासी, इण मत नें मिश्रवाला जांणें छें खोटों ॥ ३४ ॥
खोटो मत तो कह दीयो त्यांरो, त्यांनें वले तेहीज सरधें छे साध।
इसडा छें मूंढ ववेकरा विकल, ते पिण निमाइ निश्चें असाध ॥ ३५ ॥
वाव तलाव नें कूआ खोदावें, वले पों मांडें पावें काचो पांणी।
कंद मूल नें सतूकार देवें, अणुकंपा मन माहे आणी ॥ ३६ ॥
एणमें जीव मार्‍यां रो पाप न जाणें, कहे छें एकंत लाभ ठिकांणो।
एहवो धर्म बतावें लोकां नें, कहि २ मूढा सूं नवमो ठांणो ॥ ३७ ॥
जीव मार्‍यां रो पाप न जांणें, कुपातर पोख्यां धर्म ने पुन जांणें।
त्यांनें पिण तेहीज साध सरधे छें, ते पिण निश्चें पहले गुण ठांणें ॥ ३८ ॥
जिण ठांमें जीवां री हिंस्या हुवे छें, वले जाए जीवां रा जाबक प्रांण।
तिण ठामें एकंत पुन परूपे, त्यांरी खोटी सरधा कहें छें तांण ॥ ३९ ॥
वले मेश्री, ब्रह्मण, अगरवाला, त्यांरी सरधा छें सिव धर्मी री सेली।
केइ कुल जेंनी हिंसा धर्मी, त्यांरी पिण सरधा त्यांसूं कहें छें भेली ॥ ४० ।
हिंसा में पुन थापें तो कहि दीया त्यांनें, वले सिवधर्म्यां री त्यांरी सरधा जांणें।
त्यांनें वले तेहीज साध सरधें छें, ते पिण निश्चें पहिलें गुणठांणें ॥ ४१ ॥
मिश्र न जांणे नें पुन वखांणें, इण सरधा ने कहें छें जाबक भूंडी।
वीतराग रा वचन देखतां, आ कदेय न चालसी खोटी हूंडी ॥ ४२ ॥
सरधा तों भूंडी कहि दीधी त्यांरी, वले कही त्यांरी सरधा नें खोटी हूंडी।
त्यांनें पिण तेहीज साध सरधें छें, जब यांरी पिण सरधा जाबक गइ बूडी ॥ ४३ ॥

समत अठारे वरस इगतीसें, मिश्र वाला कीधी जोड मेड्ता माह्यों ।
मिश्र दान पाषंड्यां चोडें थाप्यो, पुन कहे त्याने जावक दीया उडायो ॥ ४४ ॥
इम भगवंत ने आल देइनें, आप तो न्याराइज होय जावें ।
त्यां कूडाबोलां रो कांइ पकडीजें, मून तणें ओले छिप जावें ॥ ४५ ॥
पुन कहे त्यानें मिश्रवाला कहे छें, त्यासू तो कहें न्याय बोल्यों नही जायो ।
मिश्र गोपवे नें मून कहे छे, वले कहें त्यानें चोडें कपट चलायो ॥ ४६ ॥
त्यारी सरधा तो त्यांसूं चोडें कहणी न जांए, वले कहे त्याने चोडें कपट चलायो ।
वले वीर वचन गोपव्या कहें त्यानें, वले घाल्या निन्व नें पाषड्यां माह्यो ॥ ४७ ॥
वारूंवार कूडाबोला कह दीया त्याने, वले भात भात. त्यानें दीयो उडायो ।
वले तेहीज त्याने साध सरधें छे, ते पिण पडीया छें अंधकार माह्यो ॥ ४८ ॥
मिश्र दान उथापें एकत पुन थापें, तिणने दोष कहें माहा भय रो ठिकांणो ।
माहा भय तो नरक निगोद मांहे छें, मिश्र वाला कहे यारो ए फल जाणो ॥ ४९ ॥
पुन कहें त्यांनें मिश्र वाला कहे छे, यां आधा ने साची सरधा न सूझें ।
वले कूडपखी तो कहि दीयो त्याने, वले कहे त्याने आधा जेम अलूझें ॥ ५० ॥
माहा भयकारी सरधा कहें छे त्यारी, वले भूठाबोला ने आधा कह्या त्याने ।
वले तेहीज त्यांने साध सरधें तो, विकला री पात मे गिणलेजो यानें ॥ ५१ ॥
त्यांसूं निरणो तो मूल कीयों नही जाएं, दस दान ने वले नव पुन माही ।
उजडपडीया कहे त्याने मिश्र वाला, त्यामे साच रो सीचो न सरधे काइ ॥ ५२ ॥
मिश्र दांन उथापें एकत पुन थापे, त्याने मिश्र वाला कहें एकंत कूडा ।
त्यानें पूछे तो मूंन ओले छिप जावे, खोटी सरधा परूपे ने होय जाए पूरा ॥ ५३ ॥
मिश्रीया कहे पुन पाप कहणों जिण पाल्यो, म्हे मिश्र कहा छा ते पिण पाल्यो ।
ए तो नास्तक मत सूं मिलता बोले छे, वले कहे त्याने भूठो भगडो भाल्यो ॥ ५४ ॥
आठ दान नें धर्म मे घालें छें त्यानें, मिश्रीया कहे मिश्र दांन जो न छे ।
मूंन तके सुध जाव न दीधां, घणा ने घणा पिछतावोला पछे ॥ ५५ ॥
नास्तक मत सूं मिलता कही दिया त्याने, वले कहें त्याने पिछतावोला थापे पुन ।
वले तेहीज साध सरघे छे त्याने, जव त्यारी पिण सरधा छे जावक जबून ॥ ५६ ॥
दस दांन नें वले नव पुन मांहें, त्यारो तो विवरो त्यासूं कीयो न जायो ।
सावद्य मे एकंत पुन सरधे, ओहीज बडो करें छे अन्यायो ॥ ५७ ॥
वडा 'अन्याइ तो कहि दीया यानें, वले साफ बोल्ता त्यांने न जाणें ।
वले त्यानें तेहीज साध सरधें तो, पीपल बाधी मूर्ख जिम ताणें ॥ ५८ ॥
कोरो अन काचो जल दीधां, पडदे पडदें पुन जणावें ।
प्रगट कहिता भूंडा दीसें, तिणसूं नवमो ठाणो दिखावे ॥ ५९ ॥

कहें ओ देखो अनेराने दीधां, पुन तणी परकत लिणरें बंधायो।
भगवंत निरणों मिश्र नहीं दाख्यों, तो म्हां सूं मिश्र केम कहवायो॥ ६०॥
भेषधारयां नें ओलखावण काजें, जोड कीधी खेरवा सहर मझार।
संवत अठारें वरस चोपनें, आसोज सुदि पूनम वृहसपतिवार॥ ६१॥

ढाल : २५

दुहा

किणही श्रावक रा व्रत आदर्‍या, रोटी खाएं छे मांग।
तिणनें आहार ताजो मिले नही, तिण वणार्यो साधु रो साग॥ १॥
ए सांग पेहर सोरो हूवों, दुनीया खादी खूंद।
जिण सेरी साधु गया, ते सेरी दीधो बूंद॥ २॥
श्रावक रा व्रता मझे, साध वण्यो किण न्याय।
उघाडो वाणीयो ठग लोक मे, ते भोला नें खबर न काय॥ ३॥
श्रावक थयो साध रा भेष में, ठग ठग खाएं लोका रा माल।
वूडे थोडा सुख रे कारणें, पिण आगें होसी हवाल॥ ४॥
तिणरा चाला चिरत तो अति घणा, ते पूरा केम कहवाय।
थोडसा परगट करूं, ते सुणजो चित्तलाय॥ ५॥

ढाल

[विना रा भाव सुण सुण गुंजे]

गुण विण पेहर्‍यो साधु रो सांगो, भेष रे ओलखाए छ मांगो।
ते तो वरत विहूणो नागो, पेट रे काजें माड्यो ठागो॥ १॥
ते पर घर गोचरी जावें, जठे बुगल ध्यानी होय जावे।
सूझतो आहार जाणे ने देखे, तो पिण घणो पूछे विशेखे॥ २॥
ठग थको आपो जणावे, भोला लोका ने भरमावें।
धुरताई करे जांण जाणो, लोक जाणे ज्यू उतम प्राणी॥ ३॥
इम कीयां लोक राजी होय जावे, तो मोने ताजो आहार वेहरावे।
घी खाड दूध दही मिष्टान, मोने देसी दे दे सनमान॥ ४॥
तिणने जाणजो मोटको ठगो, भोला लोकां ने देवे छे दगो।
ठग ठग खाए छे लोका रा माल, तिणमे भव भव मे होसी हवाल॥ ५॥
ग्रहस्थ रा भेष मे मांग खावें, तो कपट दगो टल जावें।
पेलो ग्रहस्थ जाणनें ताम, ग्रहस्थ सारू होसी परिणाम॥ ६॥
साव रो भेप पहरी नें ल्यावे, घणा लोका नें विसमे उपजावे।
ते तो ठगा उपरलो ठगो, भेष रे लारे देवें दगो॥ ७॥

ठग तो ठग ठग माल ल्यावें, पेंला नें पाप नहीं लगावें।
तिण तो धन तणों दीयो दगों, तिण सूं धन तणों छें ठगो॥ ८ ॥
असाधु थकों मांगे ल्यावें, ओं तो पेंला नें पाप लगावें।
पेंलें तो साधु जांणनें दीधो, इण साधू रा भेष में लीधो॥ ९ ॥
पेंलें दीधां मे जांण्यों धर्म, इण जांण्यों लागों पाप कर्म।
तिण सूं ओ तों छें धर्म ठगों, भेष पेंहरे मोटो दीयों दगों॥ १० ॥
ओ साध वण्यों विण काजें, निरलजा मूल न लाजें।
तिणनें पूछ्यां न बोलें सूधो, घणों छेडवीयां बोलें उंधों॥ ११ ॥
भारीकर्मा जिभ्या रो लंपटी, धुरत मायावीयो छें कपटी।
तिण आपरो मतलब देख, गुण विण पेंहर्‍यों साधु रो भेष॥ १२ ॥
आछों खावा पीव रें कांम, ओ तों साध वण्यों छें तांम।
वले चढ गयों मांन रें छाजें, अकार्य करतों नही लाजे॥ १३ ॥
इण नें उंचो करे कोइ हाथ, तिणरें निश्चें बंधें कर्म सात।
धर्म जांणे तो भारी मिथ्यात, चिकण कर्म लागें सात॥ १४ ॥
तिणने असणादि हरष सूं दीधो, तिण भारी कर्म बध कीधों।
धर्म जांण्यो तिणरी विशेष खुवारी, ते हूवों मिथ्यात सूं भारी॥ १५ ॥
तिण घणा जांण नें बोया, पाप मांहें पूरा विगोया।
माल खाय नें भारी कीधा, धर्म ठिकांणे दगा दीधा॥ १६ ॥
ओ तों साध वणे हूवो भारी, घणा लोकां री कीधी खबारी।
आप बूडे ओरां नें बोया, घणा लोकां नें पापी विगोया॥ १७ ॥
इसडो पापी हरांम खोर, ते तीर्थंकर नो चोर।
लूण हरांमी हूवो पकों, ज्यांरो खाधो त्यांनें दीयो धको॥ १८ ॥
बड बडा श्रावक नाम धरावें, इण छोटानें पेहली खमावें।
यां साराइ में पड गइ खांमी, इण रो विनो करे सीस नांमी॥ १९ ॥
वले विनो करे तिणने खमावें, नीचो होयनें सीस नमावें।
ओं वंदण भेलें मस्तक हलावे, साधा ज्यूं पाछो तिणनें खमावें॥ २० ॥
वले मन में मगज न मावें, साधु ज्यूं लोकां में पूजावे।
मगरुडाइ में होय रह्यों सेठो, कुकडधम राजा होय बेंठों॥ २१ ॥
दीसतों दीसें मोटों अणगार, वणीयों सासण रो सिणगार।
ते तो कूड कपट तणों भंडार, पापी पाप सूं न डरे लिगार॥ २२ ॥
एहवा कनें बेंसें केइ जाय, त्यांरी अकल गइ दपटाय।
एहवा कनें करे समाई, त्यांरी पिण गई अकल ढंकाई॥ २३ ॥

तिणरे सनमुख बेंसें आण, तिण कनें दरावे वखांण।
तिणनें कहे थांरी सत वांणो, त्यारेइ मोटी भोलप जाणो॥ २४॥
श्रावक तिण पासें आवे, जव लोकां मे प्रसंसा थावें।
भोलातो जाणे ओ साध रूडो, करणी करतूत माहे पूरो॥ २५॥
तिणने केइतो वाद खमावें, केई हरष सूं आहार वेंहरावे।
केई कपडो देवे चोखों, जांणे ओ तो साधू निरदोषो॥ २६॥
तिणनें वाद्या पूज्यां जाणें धर्म, कटता जाणे वले कर्म।
असणादिक दीये पिण धर्म जांणें, वेंहराए घणो हरख आणे॥ २७॥
ओ पिण छांनें छानें कहे आप, मोने दीया म जाणो पाप।
घणे ठगा सूं कांम चलावे, इण विध लोकां रो माल खावें॥ २८॥
कने वेस करे तिणसूं वात, घणो वधे लोका मे मिथ्यात।
कने बेठो तिण वात विगाडी, सावद्य आजीवकाय वधारी॥ २९॥
केई जाणे छे ओं साध नाही, साध रा गुण नही इण माही।
तो ही हरष सूं देवे आहार, करे करे घणी मनवार॥ ३०॥
कपडा पिण मही मही दे जांण, मन माहे उजम आण।
मागे तका वसत करें त्यार, इसडो छे केकारें अधार॥ ३१॥
मन माहे तो इतरोई न देखें, ओ साध वण्यो किण लेखे।
इण मे दीसे छे मोटी खोड, ओ तीथकर नो चोर॥ ३२॥
इण साधू रो साग वणायो, इण कीयो उघाडो अन्यायों।
तिण ने इतरोइ पूछे नाही, ओ पिण निरणो नही घट माही॥ ३३॥
कोइ चुतर विचखण ह्वेंत, तो तिणनें नखेध सांकड लेत।
तूं साध वण्यों किण लेखें, तूं तो वरता सांह्मों न देखें॥ ३४॥
तूं तो श्रावक थको वणीयो साध, मोटो अकार्य कीयो अगाध।
जिण मारग में कपट न पावे, श्रावक थको साध वणजावे॥ ३५॥
लोका री रोटी मागे खावे, साधु रो भेष धारीनें ल्यावें।
तू तो साध वण्यो छे ठगो, लोका ने देवानें दगों॥ ३६॥
तू तो दीसें उघाडो कपटी, जिभ्या तणो दीसें छे लपटी।
तो कने वेंसणो नही आछो, तूं तो ठग छे साचेलो साचो॥ ३७॥
तू तो ठगां मे मोटों छें ठगो, भेष पाछे देवे छे दगो।
भात भात नखेदे पूरो, इण रो भेष कराय दें दूरो॥ ३८॥
पाछो ग्रहस्थ री भेप करावें, उणरों कुर ने कपट छुडावें।
जब उण माहें हुवें वेराग, तो करदे सर्व सावद्य रा त्याग॥ ३९॥

खावा पीवा री न करे परवाही, वेंराग करें मन माहि।
ज्यां लग साधां सूं रहूं छूं न्यारो, विगे पिण नही खांउ लिगारो ॥ ४० ॥
मरणो पिण कर दें कबूल, असल साधू ज्यूं चालें सूल।
रहे साधां तणे हजूर, नही रहें साधा सूं दूर ॥ ४१ ॥
हुवें साधां तणों सुवनीत, उपजावें पूरी परतीत।
साधां रो हुवें आग्याकार, आगन्या नहीं लोपें लिगार ॥ ४२ ॥
हिवे तो भेष लीयोस लीयों, मो सूं दूर नही जायें कीयो।
सांकडी वणीयां करूं संथारूं, लीधो भेष ते नहीं उतारूं ॥ ४३ ॥
इसडी मन गाढी धारें, साधु भेष नही उतारें।
वले करें तिणरा गुणग्रांम, थे म्हारो कपट छोडायो तांम ॥ ४४ ॥
जो उण उपर आवें धेष, तो ज्यूंरो ज्यूं राखें भेष।
उलटो हुवे तिणरो बेंरी, केइ इसडा छें पापी गेरी ॥ ४५ ॥
जो साध रो भेष न करे दूरों तो उण रो करें लोकां में फितूरो।
प्रसिध चावो करें लोकां माहि, ओ ठग साध वणीयों छे ताहि ॥ ४६ ॥
ओ तो उघाडो छें दगादार, कूड कपट तणों छें भडार।
इणरी संगत न करणी लिगार, जिण मारग रो लजावणहार ॥ ४७ ॥
इम कहे सारा लोकां रे मांहि, जब लोक पिण जांणीलें ताहि।
इणमे कला न दीसें काई, इण मांडी छें ठगबाजाई ॥ ४८ ॥
ओ तो गुण विण वणीयो छे साध, दोष काढ्यां करें विषवाद।
ओ तो मांन वडाई में खूतो, भेष पेहरी नें यूही विगूतो ॥ ४९ ॥
असाधु थको साधां ज्यूं पूजावें, ठग ठग लोकां रा माल खावें।
मांन बडाइ में नही मावें, ते तो दिन दिन भारी थावें ॥ ५० ॥
ग्रहस्थी थको वणीयों छें साध, तिणरे भव भव में होसी असमाध।
ते चिहूं गति मांहे गोता खावे, संसार में घणों दुख पावे ॥ ५१ ॥
पाडें माहा मोहणी कर्म नों बंध, पछे होय जाय मोह अंध।
तिणनें सवली तो मूल न सुझें, दिन दिन इधिक अलुझें ॥ ५२ ॥
ग्रहस्थी साधु रो वेस वणावें, ठग ठग लोकां रा माल खावें।
भेष रें पाछें खाएं रोटी, आ चाल घणी छें खोटी ॥ ५३ ॥
भारी करमो जीव विशेखें, ओ साध वण्यों किण लेखें।
कदा निकाचत कर्म बंध जावें, तो उतकष्टो संसार बंधावे ॥ ५४ ॥
एहवा पापी नें दूर तजीजे, एहवा ठगारों वेसास न कीजे।
इणरी संगत आछी नाहीं, इणसूं भलो न होसी कांई ॥ ५५ ॥

एहवा दुष्टी जीव हुवे ताय, ते तो साधां सूं दे भिडकाय।
साधां रो हुवे उलटो वेरी, इसडो भारीकर्मो छे गेरी ॥ ५६ ॥
वले वोलें घणों विकराल, अणहुता कूडा कूडा दे आल।
इणरें भूठ तणी सुग नाही, पापी पाप सूं डरपें नही काइ ॥ ५७ ॥
इणरी मूर्ख करसी परतीत, ते पिण चिहू गति मे होसी फजीत।
एहवारी मांनें साची वात, तिणरे वेगो आवें मिथ्यात ॥ ५८ ॥
एहवा पापी सूं रहसी दूरा, ते तो परमेसर रा पूरा।
इसा नें मूंढे नही लगावें, तो समकत नें धको न थावे ॥ ५९ ॥
तिण कनें जाय बेसे वाइ, तिणरें वरत भांगण री लागे साई।
एकला री किसी परतीत, एकला नें जांण लेणो विपरीत ॥ ६० ॥
विगडायल फिरें एकलो, तिणनें कदेय म जांणो भलो।
इणरी वात तो धुर सूं बूडी, तिणरी संगत कीयां दीसें भूंडी ॥ ६१ ॥
इण कनें वेठां आवें आलो, तिणरो कुण काढें निकालो।
बात लोकांमें फेल जावें, बात पाछी ठिकांणें न आवे ॥ ६२ ॥
जे जे लज्यावंत छे वाई, तिण कने न बेसें जाई।
घरे आयां पिण न करें वात, ले लज्यावंत साख्यात ॥ ६३ ॥
इणसूं वात कीयां आछों नांही, वले चेंचे हुवे लोका मांही।
यूही लोकांमें हुवें फितूरो, अणहुंतो आल आवे कूरो ॥ ६४ ॥
तिण सू डाही हुवें ते वाई, तिण कने नही वेंसें जाई।
तिणनें मूढें पिण न लगावें, घरे आया पिण नही वतलावे ॥ ६५ ॥
केकांतो वले कपटाइ माडी, उघाडी करें ओघारी डाडी।
ओघे तो साधपणो नही लीधो, इणनें उघाडों काय कीधो ॥ ६६ ॥
साध रो भेष तो आप लीधो, तिण भेष नें दूरो न कीधो।
आप वणीयो रह्यो साध, कपट ज्यूं रो ज्यूं राख्यो अगाध ॥ ६७ ॥
लोक कांई जांणें डाडी उघाडी, लोक कांई जाणे डांडी ढकवारी।
लोक तो देखे साध रो भेष, तिणनें दांन दे हरष विशेष ॥ ६८ ॥
तिणतो ज्यूरो ज्यूं राख्यो भेष, तो कपट मे कपट विशेष।
तिणसूं पाधरों ग्रहस्थ रेंणों, के सुध साध पणें लेंणों ॥ ६९ ॥
जो पोतीयो वांधनें मांग खावे, कपट दगों तो टल जावें।
पेढी मांडे वखांण सुणावे, ते पिण सावद्य आजीवका वधावें ॥ ७० ॥
तिण कनें जाय वखांण मंडावें, मुदें आगेंवांणी आप थावे।
जव इणरी देखादेख, लोक भेला हुवे वशेख ॥ ७१ ॥

जब केइ इनने उतम जांण, असणादिक देवें हरष आंण।
इणरी अजीवका सावद्य वधारी, लोक बूडवानें हुआ त्यारी॥ ७२॥
इण कने जाय वखांण मंडावे, तो मिथ्यात घणों वध जावे।
इम कीयां मत बंध जाअे न्यारों, घणा लोकां ने करे खुवारों॥ ७३॥
पोतीयो बांधनें गांम गांम, मिथ्यात वधावें ठांम ठांम।
ओ पिण मगरूडाइ मांडें, साधांनेंइ वंदण छांडे॥ ७४॥
घणा लोकांनें भिडकावें, साधांरी वंदण छोडावे।
तिणसूं मांगेनें खाएं तिणरी, संगत नहीं करणी जिणरी॥ ७५॥
तिण कनें नहीं करणी समाई, तिण कने न बेंसणों जाइ।
इणरा सीलरी किसी परतीत, इण तों छोड दीधी छे रीत॥ ७६॥
इणमें अवगुण दीसें अथाय, ते पूरा केम कहवाय।
ओ तो आगुणग्राही चोर अवनीत, उंधी चलनें वले विपरीत॥ ७७॥
भेष में ठग ओलखवाण ताहि, जोड कीधी पूहना सहर मांहि।
सतावनो वर्ष संवत अठार, माह विद बीज सनीसरवार॥ ७८॥

ढाल : २६

दुहा

साध साधवी श्रावक श्रावका, जिण सासण मे तीर्थ च्यार।
ते धर्म ठगाइ करे नही, अभिंतर हीयें विचार॥ १॥
त्यामे साध साधवी री गोचरी, निरवद जोग व्यापार।
असणादिक करे ते निरवद्य जोग छें, त्यानें पाप न लागे लिगार॥ २॥
श्रावक ने श्रावका तणो, खाणो पीणो छे इविरत मझार।
जे जे दरब श्रावक भोगवे, ते सावज जोग व्यापार॥ ३॥
श्रावक भोगवें ते पेहले करण छे, भोगवावे ते दूजें करण जांण।
अणमोदे ते करण तीसरे, त्याने पाप लागे छे आंण॥ ४॥
केइ श्रावक खाए छे कमाय ने, केइ श्रावक मागेने खाय।
ते भेष राखे ग्रहस्थ तणो, आगे हूतो ज्यूंरो ज्यू ताय॥ ५॥
केइ तो लोक ठगवा कारणें, काइ तो राखे ग्रहस्थ रो भेष।
काई भेष बणावे साधू तणो, ते ठगवाने लोक वशेष॥ ६॥
ए अधवेसडो साग आछो नही, जिण सासण रे मझार।
तिणरा ठागा ने परगट करू, ते सुणजो विस्तार॥ ७॥

ढाल

[विने रा भाव सुण सुण गूजे]

पागडी ने झगो दूर कीधो, माथे पोतीयो बांध लीधो।
मूढे मूहपती बांधी साख्यात, झोली पातरा लीधा हाथ॥ १॥
वले ओघो काख माहे घाल्यो, लोकारें घर वेंहरण चाल्यो।
इण साग पांछे मिले रोटी, आ चलगत घणी छे खोटी॥ २॥
ओ तो वणीयों धर्म ठगो, धर्म री ठोर देवें छें दगो।
इण भेष सु ठागो चलावे, ठग ठग लोकां रो माल खावे॥ ३॥
इण भेष सूं लोक ठगावे, धर्म जाणी ने आछो वेंहरावे।
त्या घररोइ माल गमायो, उलटो मिथ्यात वधायो॥ ४॥
भोला तो जांणे हूवों छे धर्म, पिण उलटा लागा पाप कर्म।
इण भेष सूं लोक ठगावें, घर रो माल इविरत मे गमावे॥ ५॥

ओ जांणें मोनें वेंहरायों इणरें, उसभ कर्म लागें छें तिणरें।
इण भेष पाछें देवें दगों, ते तो निश्चेंइ छें धर्म ठगो ॥ ६ ॥
इण ओ भेष पहर्यों किण लेखें, आपरा किरतब साहमों न देखें।
ओ तो दीसें उघाडो ठगो, देवें छें घणां नें दगों ॥ ७ ॥
ओ तो ग्रहस्थ तणी पांत माह्यों, ओ तो सांग किण लेखें वणायो।
ओ तो एकंत रोट्यां रे काज, अधवेस वण्यों मुनीराज ॥ ८ ॥
वेस वणायों पेट रें काजें, निरलजा मूल न लाजें।
ते तो भेष रो भांडण हारो, कीयो जिण मारग में विगाडो ॥ ९ ॥
ए तो सांग घणों छें अजोग, तिण सूं सरम में पड जाएं लोक।
तिण आगें भोला लोक ठगावें, केई डाहा पिण कर्म में खावें ॥ १० ॥
एहवो सांग पेहर्यां फिरे तास, भोला हुवे ते बेसें तिण पास।
डाहा हुवें ते मूंढें न लगावें, तिण नें पेंला पिण नहीं बतलावें ॥ ११ ॥
इणतो साख्यात आण्यों सांगो, जिण मारग माहे पाडीयों भांगों।
अर्द्ध वेस सूं पर घर जावें, तिणनें आ पिण लज्या न आव ॥ १२ ॥
केई कहें साधपणों छें भारी, ते लेवा री आसंग नही म्हारी।
तिणसूं श्रावक ना वरत लीधा, मोसूं पले जिसा व्रत कीधा ॥ १३ ॥
तिणसूं पोतीयो बांधीयो माथें, झोली पातरा लीधा हाथें।
ओघो काख में घाली जावां, गोचरी आण मांगीनें खावां ॥ १४ ॥
इण विध करां आजीवकाय, म्हांमे फोडा न दीसें ताय।
म्हारा व्रत पिण चोखा पाल, सुखे गमावां छा काल ॥ १५ ॥
तिण नें कहें मांग खावो लोकां रो, ओतो छांदो निकेवल थांरो।
ओघो मूहपती पातरा हाथ, एं क्यूं ले जावो छो साथ ॥ १६ ॥
जब ओ कहें इण वांना लारे, म्हारों आग हुवें छें सारें।
हरख सहीत आगा बोलावें, रोटी पिण आछी तरें वेंहरावें ॥ १७ ॥
इण भेष पांछें रोटी आवें, इण भेष विण कुण वेंहरावें।
तिण सूं ओ भेष वणायों, हिवें कुमी रहे नही कायों ॥ १८ ॥
जब ओ कहें थे छों धर्म ठगों, भोला लोकां नें देवों छो दगों।
इण भेष सूं लोक ठगावें, जाणें म्हांनें धर्म थावें ॥ १९ ॥
थे तो जांणों छों पाप उघाडो, भेष लारें पाडो छो धाडो।
थे जांणों हूं इविरत माहे ल्याउ, इविरत :मे पेंलां रो माल खाउ ॥ २० ॥
इण लेखें थे धर्म ठगों, भेष पेंहरी नें देवो छों दगो।
माहामोहणी बंधसी कर्मो, छूट जासी जिण धर्मो ॥ २१ ॥

टांको झलीयां हुवें अनंत संसारी, भव भव माहे हुवेला खुवारी।
जिण सू ओ भेष परों उतारो, इण भेष मे धाडो म पाडो॥ २२॥
जो थारे मागेनें खाणो, तो पाधरो ग्रहस्थ होय जाणो।
जथातथ ग्रहस्थ होय जावें, तो कूडा कपट नही थावे॥ २३॥
जथातथ ग्रहस्थ होय लेवे, दाता पिण ग्रहस्थ जांण देवे।
जब नही काइ कपट ने दगो, तब नही कहीजें धर्म ठगो॥ २४॥
कोइ कहे साध हूंणो छे मोय, घर रा आग्या न देवें कोय।
तिणसूं अर्घ सांग वणउ, घणा घर रो मागेने खाउ॥ २५॥
जब घर रा काया होय जावे, मोनें आगन्या वेगी आवे।
इण कारण मागेने खाउं ताहि, जावजीव री नही मन माहि॥ २६
जब उण ने पाछो केणो ताह्यो, ओ थे साग क्याने वणायो।
मागेने खायें ते थारे छादे, ओ भेष ले कर्म काय बांवे॥ २७॥
पाधरो ग्रहस्थ रो हुवे साग, रोटीया खाता थें माग।
तो कूड कपट दगो टल जावे, जिण मारग री हलकी न थावे॥ २८॥
ओर न्यात रो मागेनें खासो, ओर न्यात रो अन्न पाणी ल्यासो।
जब न्यातीला छोड देसी आसो, आग्या वेगी देसी तासो॥ २९॥
इम सुणें कोई हरषें विशेष, तुरत उतारें साधु रो भेष।
कोइ कहे थोरा दिनां रे तांइ, भेष उतारणी आवे नाही॥ ३०॥
जब उणने वले केणो पाछो, ओ भेष नही छे आछो।
पिण इतरो कर ले वेराग, पाचू विगे रा कर दो त्याग॥ ३१॥
लूखोइ आहार जिण रो ल्यावो, तिण नें पाछों इतरो जणावो।
म्हा ने था जिम ग्रहस्थी जाणो, म्हा रे इविरत माहे छे खांणो॥ ३२॥
मो नें देख म भूलो भर्म, मो ने दीधा रो नही धर्म।
धर्म साधा ने दीया थावे, तिण रा पाप कर्म खय जावे॥ ३३॥
म्हे तो आगन्या लेवा कीयो साग, पार की रोटी खाउ छू मांग।
इम कहे पार की रोटी ल्यावे, तो कूड कपट दगो टल जावे॥ ३४॥
जो इतरी पिण करणी न आवे, भेष पिण उतारणी नावें।
जब तो साख्यात छे धर्म ठगो, घणा लोकां ने देवे छे दगो॥ ३५॥
भोला लोक पिण तिण आगे ठगावे, आछो आछो तिणने वेहरावें।
ओ पिण होय जाए गटकायो, तिणसू संजम ःलीयो न जायो॥ ३६॥
ताजे ताजे घर गोचरी जावे, जठी तठी फिर आछो ल्यावे।
ओ तो भेष ले हिलीयो गटके, सरस आहार रे कारण भटके॥ ३७॥

भेष ले हूवो उलटों भारी, सुखसीलीयों साताकारी।
जांणें इण भेष में मांग ल्याउं, ठग ठग लोकां रा माल खाउ ॥ ३८ ॥
साधपणों पिण लेणी न आवे, उलटो साधां मे दोष बतावें।
साधां रो उलटो हुवे वेंरी, केई इसडा पिण होय जाएं गेंरी ॥ ३९ ॥
साधां नें पिण वंदणा छोडें, दुष्ट परिणांमे बेंसें गोंढें।
छिदर जोंवे दिन रात, आल दे काढें तुरत साख्यात ॥ ४० ॥
अणहुंता आंगुण बोलें ताम, गामां नगरां ठांम ठांम।
साधा री वंदणा छुडावें, लोकां नें साधा सूं भिडकावें ॥ ४१ ॥
वले लोका आगें कहे एम, हूं साधपणो लेउं केम।
आगलइ साधां रे मांहि, साधपणो न दासें ताहि ॥ ४२ ॥
तिणसूं श्रावक पणों पालां चोखो, कांइ मोडे रा जासां मोखो।
इम कहि लोकां नें भरमावें, ठागा सूं कांम चलावें ॥ ४३ ॥
केई इसडा पापी होय जावे, सुध साधां सूं भिडकावें।
पोतें सुखसीलीयो होय जावें, तिणसूं साधपणों लेंणी नावें ॥ ४४ ॥
तिणसूं साधां रा अवगुण गावे, आपरा अवगुण सर्व छिपावें।
पछें संवलोतो मूल न सूझें, वले दिन दिन इधिक अलूझें ॥ ४५ ॥
ओं तो विवध पणों बोले कूडों, धर्म नो छे दावानल पूरो।
भूठ बोलतो न डरे लिगार, इण आरे कीयो अनंत संसार ॥ ४६ ॥
श्री जिण मारग छें साचो, एहवो भे वधीयो नहीं आछों।
एहवा नें देखने केई भोला, त्यांरो मन खाए डमडोला ॥ ४७ ॥
जाणे म्हे पिण इसडा होय जावां, इण विध मांगे म्हेइ खावां।
इम करतां करतां मत बांधें, मिथ्यात री वधोतर सांधें ॥ ४८ ॥
साध मारग रा होय जाए धेखी, निजर वलें साधां नें देखी
साध वधीयो तो मूल न चावे, ह्वें तो देखे तिणनें भिडकावें ॥ ४९ ॥
जिण मारग रा दावानल पका, भोला नें देवे धर्म रा धका।
इसडा भारीकर्मा जीव, त्या दीधी नरक री नीव ॥ ५० ॥
तिणसूं अधवेसडों सांग भूंडों, इण साग सूं घणा जाए बूडो।
ओ अधवेसडों साग अजोग, तिणसूं वधें मिथ्यात रो रोग ॥ ५१ ॥
इम सांभल ने नर नारी, इणरो संग न करणो लिगारी।
इण सांग में मांगें नें खावें, ते घणा नें दगो लगावें ॥ ५२ ॥
ओ भेष पेंहरी मांग खावें, तिणनें भगवंत नहीं सरावें।
जो ओ भगवंत भेष सरावत, तो ओं भेष घणो वध जावत ॥ ५३ ॥
भगवंत यांने केम सरावे, ओं तो उघाडो ठागो दिखावें।
घणा लोकां नें मिथ्यात पमावे, त्यांने भगवंत केम सरावें ॥ ५४ ॥

आणंद आदि दे श्रावक हूआ, ते घरमे वेठा पडिमा वूहा।
त्यां आपरा न्यातील्यां रो आण्यों, न्यातीला पिण निज तणी जाण्यों ॥ ५५ ॥
त्यां सगपण रे दावे दीधो, या पिण सगपण रें दावे लीधो।
त्यां अनेरा घर रो न लीधो, धर्म रे ओले दगो न दीधो ॥ ५६ ॥
त्यां इग्यारमी पडिमा मे ताह्यों, न्यातीलां रो माग ने खायो।
आपरा घर ज्यू त्यारों जाण्यों, तिण सूं त्यांरा घर रो आण्यो ॥ ५७ ॥
साध श्रावका आ सीख धारो, अधवेस साग मतीय वधारो।
आ सांग नही छे आछो, जिण मारग ने पाडें काचों ॥ ५८ ॥
इण सागवाला ने मतीय सरावों, मूढें पिण मतीय लगावो।
मूढें लगायां विगडे छें बात, लोकां रे वधे मिथ्यात ॥ ५९ ॥
ओ भेष नही सुखदाइ, साधां रे छे घणो दुखदाइ।
इण भेष सूं रहसी दूरा, ते परमेसर ना पूरा ॥ ६० ॥
अर्द्ध भेष ओलखावण ताई, जोड कीधी रावल्यां गांव माई।
सवत अठारें सतावना मझार, चेत सुद चोदस सूर्यवार ॥ ६१ ॥

ढाल : २७

दुहा

भेषधारी भागल तणा, श्रावक श्रावका अनेक छें तांम।
त्यांमें केयक तो दुष्टी घणां, त्यांरा दुष्ट घणा परिणांम॥ १ ॥
त्यांनें परभव री चिंता नही, ते बोले नहीं मूंढ विचार।
साधां नें आल देता सके नही, पाप कर्म सूं न डरे लिगार॥ २ ॥
किण ही दुष्टी अग्यांनी जीवरे, साधां नें आल दीयो छें ताय।
तिणरी साची बात ठेंहराय नें, देवें लोकां में फैलाय॥ ३ ॥
ठांम ठांम बकता फिरें, साधां रा अवगुण बोलें दिनरात।
उतारें साधां री आंसता, कर कर भूठी बात॥ ४ ॥
तिण सूं भेषधारी राजी घणा, तिणनें श्रावक जांणें सुध मांन।
ज्यूं ज्यूं अवगुण बोलें साधां तणा, तिणनें सरावें मूंढ अयांण॥ ५ ॥
तिणमें कूड कपट रा चाला घणा, ते पूरा पूरा केम कहवाय।
थोडासा परगट करूं, ते सुणजो चित्तल्याय॥ ६ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आगन्या मे]

केई नागडा निरलज बथोकडा छें, ते तो कजीयो करण नें बेंठां त्यार।
ते साधां नें आल देता नही संकें, आंगुण बोलता पिण न डरें लिगार।
एहवा दुष्ट श्रावक छे भेष धार्‍यां रा*॥ १ ॥
ते किरतघनी संसार रे लेखें, ते न गिणें किणरोंइ कीयों उपगार।
ते साधां नें आल देता नहीं संकें, भूठ बोलता न डरें लिगार॥ २ ॥
चोरी जारी आदि कुलंछण तिणमें, वले वेसासघाती घणा दगादार।
ते साधां नें आल देतां नही संकें, ते पाप कर्म सूं न डरें लिगार॥ ३ ॥
केई कजीयाखोर बथोकडा पटनट, रणभंज रिणा तणा भांजणहार।
ते साधां नें आल देता नही सकें, तिणारें परभव री चिंता न दिसे लिगार॥ ४ ॥
वले चाडीखोड चुगल हुवे दुष्टी, वले कूड ने कपट तणो भंडार।
ते साधां नें आल देता नही सकें, तिण जीतब जन्म दीयों छें विगाड॥ ५ ॥
तिण री साख नें परख नहीं हुवे लोकां में, वले कजीया राड ने बेंठां छे त्यार।
ते साधां नें आल देता नही संकें, वले जाता भगडा तणा लेंणहार॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

हिण रा बोल्या री परतीत नही छे लोका मे, इत्यादिक अनेक आंगुण रो भंडार।
ते साधां ने आल देतो वही संके, तिणरी बात मानें ते बूडा कालीधार॥ ७ ॥
एहवो भेषधारयां रे श्रावक हुवे तो, तिणने तो सगला मे आगे कीयों राखे।
तिण कने साधां ने आल देणा सीखावे, पछें ओ तो फिरीयो २ अकाल भाषें॥ ८ ॥
एहवा दुष्टी जीव नें कुबद सीखावें, आपतो बुगलध्यानी हो जावें।
पछें लोक जांणे ओ निरापेखी छे, पिण छांनें २ कूड कपट चलावें॥ ६ ॥
ऐसा ही सेवग नें एसाइ सामी, जेसा कुं तेंसा मिलीया छें आय।
ते कलेस कदागरो वधीया छे राजी, तिणमें दुष्टी हुवे तिणने देवे लगाय॥ १० ॥
एहवा दुष्टी जीव छे भारीकर्मा, त्या छोड दीधी छें लोका री पिण लजीया।
तिण दुष्टी जीव ने छेरवे कोई, जव ओ त्यारी बैंठो छे करवा ने कजीया॥ ११ ॥
एहवा दुष्टी अग्यांनी जीव छें पापी, तिण ने भलो मिनष तो छेडवे नांही।
तिणने छेडवीयां तो अवगुण होसी, भलो हुवे तो म जांणजो काई॥ १२ ॥
ते तो निंदक साधां तणो छे निरंतर, वले आल देवण नें उदमी पूरो।
वले रात ने दिवस छें धेषी साधां रो, ते नरक निगोद सूं नही छें दूरो॥ १३ ॥
साधां रे आल अणहुता देवे छें, तिणरे नियमाइ निश्चे भूडो हुवे तो जोणो।
तिणरे मूढे तो दलदर वोले उघाडो, वले घरमे पिण दलदर धसतो जांणो॥ १४ ॥
ले साधा री निंदक दुष्ट घणो हुवें, तिणनें भव भव मे दलदरी हुवे तो जाणो।
वले भव भव मे विजोग पडसी वाला रा, तिण माहे संका मूल म आणो॥ १५ ॥
वले तांणां तांण मिटे नही तिणरी, लारे लगी विपद रहे लागी।
जिहा जासी तिहां दुखीयो होसी, वले भव भव मे होसी घणो दोभागी॥ १६ ॥
एहवा दुष्टी ते श्रावक वाजे लोकामे, मुहपती बांधनें बोले मोटका कूडो।
वले साधां ने आल देता नही संके, त्यारा श्रावक पणमे पड गई धूरो॥ १७ ॥
सूध साधांने आल दे अन्हाखी, वले वकवो करे छें दिन नें रात।
भूठ रा पाप सूं न डरे पापी, सुध साधां थकी पडवजीयो मिथ्यात॥ १८ ॥
एहवा विकलाने विकल आय मिलीया जब, मन माने ज्यू गालां रा गोला चलावे।
ते तो गाडरी प्रवाह ज्यूं होय रह्या छे, उट रे केडे उटडां चलीया जावें॥ १६ ॥
त्यामें केयक दुप्टी अतही घणो हुवें, ते आल देतो संके नही तिलमात।
ते भूठा भूठा आल लोका ने सीखावे, ते पिण बकवोकरें दिनरात॥ २० ॥
त्यांरो श्रावक साधां रे आल देवे जब, ए पिण मन माहे हरषत थावे।
कांम पडे जव न्यारा होय जावें, पिण कुकला ने कुब्द तो एहीज सीखावे॥ २१ ॥
थोरी वावरी केई सिकार जावे जब, सिकारी कुत्ता नें साथे लेजावें।
आप तो गोली वावें छें अलगोज उभो, पछें सिकारी कुत्ता त्यां पासें लगावें॥ २२ ॥

ते स्वांन पिण सूसलादिक रांक जीवांनें, विणास •करें जीवां मारें छें तांम।
त्यांरी खालडी ने वले मांस धुराधर, ते सारा आवें छें सिकारयां रें कांम ॥ २३ ॥
तिण स्वांन थकी सिकारी छें राजी, तिण सिकारी नें स्वांन घणों कांम आवें।
ज्यूं त्यांरों श्रावक साधांनें आल देवे जब, ए पिण घणां फलफूल होय जावें ॥ २४ ॥
सिकारी तो स्वांन नें वरज राखे जब, स्वांन तो किणही जीव री न करे घात।
ज्यूं ए पिण यांरा श्रावकांनें वरजें, तो ए पिण साधां नें आल देता रहि जात ॥ २५ ॥
सिकारी स्वांन नें वरजें किण लेखें, पातें पिण छें जीवां रा मारणहार।
ज्यूं ए पिण श्रावकां नें वरजें किण लेखें, पोतेंई आल देंता न डरें लिगार ॥ २६ ॥
यांरा श्रावक साधां नें आल देवें ते, तिणरी बात नें साच मांनें छें तांम।
तिणरों निश्चों तो पूरो हाथे नहीं आयो, तोही कहिता फिरे छें गांम परगांम ॥ २७ ॥
भेषधारी साधां नें आल देवें ते, त्यांरा श्रावक त्यांरो साच मांनें ले तांम।
तिण आल सूं हरषत होयनें पापी, पछें ए पिण कहिता फिरें छे ठांम ठांम ॥ २८ ॥
कोई अनेरों आल साधां नें देवें ते, तिण आलरा धणी पोतें होय जावें।
पछें फिरीया फिरीया अजांण लोकां नें, तिण आल नें साचो करे दरसावें ॥ २९ ॥
यांरी सरधा मांहें छें इसडों अंधारों, सांधां नें आल दें तिणनें जांणें छे पको।
तिण रो न्याय निरणों तों मूल न काढे, यांनें कर्मां दीयो छें मोटो धको ॥ ३० ॥
भारीकर्मां जीव छें मूढ मिथ्याती, ते साधां नें आल देवणनें सूरा।
त्यांनें कुगुर मिलीया छें पूरा पापंडी, मांनव नो भव खोयनें बूडा छें पूरा ॥ ३१ ॥
कहि कहि ने कितरो एक केहू, साधां ने आल दे भारी कर्मां अन्हाखी।
ते दुष्टीयां मांहें मोटो दुष्टी छें, ते सनमुख वीर गया छें भाखी ॥ ३२ ॥
जोड कीधी छें आल रा फल ओलखावण, मेवाड मांहे पुर सहर मझार।
संवत अठारें सतावनें वरसें, आसोज विद अमावस ने वृहसपतवार ॥ ३३ ॥

ढाल: २८

[रे जीवा मोह अणुकम्पा न आणिये]

सुव साध साधवीयां री निंद्या करे, वले देवें अणहूता आल जी।
ते यूंही बूडे छे बापडा, बांधें उसभ करमां रा जाल जी।
ते तो माठी गति रा प्रावणा* ॥ १ ॥
ओर हर कोइ री निंद्या करें, तो पिण बधे पाप रा पूर जी।
तो साधां रा निंदक पापीया, ते तो जासी वहती रें पूर जी॥ २ ॥
साची नें साची कहे, ते तो निंद्या म जांणो कोय जी।
अणहूती कहे कोइ पर तणी, ते निंदक पापी सोय जी॥ ३ ॥
खाटा खेटो करें नित साध थी, वले अवगुण बोलें दिन रात जी।
घण लोकां रा व्रंद मिलें तिहां, करें साधां री तात जी॥ ४ ॥
जो उ गुण सुणें साधा तणा, तो उणरें लागें अभितर लाय जी।
रोम रोम माहे घणो प्रजले, वले मुख देवें कुमलाय जी॥ ५ ॥
खीटोर खुराइ करें घणी, छल छिदर जोवे दिन रात जी।
गण ग्राम करे लोक साधां तणां, तो इणरे छाती में न समात जी॥ ६ ॥
कोइ जस कीरत करें साधां तणी, तिण सू पिण राखे घेष जी।
ते तो वीद वण्या छे नरक ना, त्याने अरू बरू ल्यो देख जी॥ ७ ॥
अणहूतो अवगुण सुणे साधनो, तिण अवगुण ने साचो ठहराय जी।
पछें उजम आंण उदम करे, घणा लोकां में देवे फेंलाय जी।॥ ८ ॥
न्याय निरणो कीयां विण पापीया, बोलें विरूआ वेण जी।
त्याने चिंता नही परभव तणी, त्यांरा फूटा अभितर नेंण जी॥ ९ ॥
उण रें साध निजर पडे जदी, जब जागें अभितर घेष जी।
मांठा परिणामा मूंह विगाड दे, जाणें वेरी ज्यूं वेर वशेष जी॥ १० ॥
अनेक जीवां रे आल अनेक दे, एक साध रें आल दें एक जी।
तो पिण भारी पाप छे एहनो, समझ जो आंण ववेक जी॥ ११ ॥
साधां री निंद्या करें तेहने, कडवा फल लागें आंण जी।
ते थोडासा परगट करूं, ते सुणजों चुतर सुजांण जी॥ १२ ॥
केई धुर सूं तो जाए नारकी, 'तिहां खाए' अनंती मार जी।
पछे जाय पडें तिरजंच मे, तिण दुख रो कहितां नावें पार जी॥ १३ ॥

---

* यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

नरक विचें तिरजंच में, दुख अनंत गुणा छें तांम जी।
काल अनंतो तिहां रहें, तिहां सुख रो नहीं कोइ ठांम जी॥ १४॥
कदे नरक निगोद थी नीकलें, पांमें नर अवतार जी।
तिहां पिण दुख पांमें घणा, ते कहितां नांवे पार जी॥ १५॥

ढाल : २६

दुहा

केई सुध साधां रा समदाय में, केई हुवे अवनीत अजोग।
तिणने गुर काढें गच्छ बाहि रे, तिणने फिट फिट करे सहू लोग ॥ १ ॥
ते तो च्यार तीरथ बारें हुवो, तोही मन माहे अति अभिमांन।
तिणनें समदिष्टी साध गिणें नही, तो पिण कर रह्यों मूढ गुमांन ॥ २ ॥
सुध साधा ने ढीला कहें, जाबक कहे साधां नें असाध।
रात दिवस त्यारी निंद्या करें, करे घणों घणो विषवाद ॥ ३ ॥
ते पोंते विकलाइ करें घणी, हूओ आचार थी भिष्ट।
सुध सरधा पिण विगडे गड, समकत पिण हुइ छे निष्ट ॥ ४ ॥
केयक भिष्ट हुवा छे इण विध विधें, सेवा लागा दोष अनेक।
ते थोडासा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

नीसरणी मांडने चढे उतरें छे, रात दिवस माहे बार अनेक।
तिण आगना लोपी श्री अरिहंत नी, तिणरो भिष्ट हूवों छें आचार ववेक।
तिणने साधु किण विध सरधीजे* ॥ १ ॥
जो साध निसरणी चढें उतरें तो, तिणनें मोटों दोष कह्यो जिणराय।
दसवीकालक पांचमे अध्येनें, सठसठमी गाथा मांय ॥ २ ॥
तीन गाथा तिहां लगती कही छें, तिहां छकाय जीवा री कही छे विराध।
वले हाथ पगादिक साधू रा भागें, तिण साधु रे श्री जिण कही असमाध ॥ ३ ॥
नीसरणी तले कीड्यां नें लटादिक, जीव अनेक भेला हुवें आय।
चढतां उतरतां नीसरणी सरकें, जब अनेक जीव तिहां मारीया जाय ॥ ४ ॥
वले नीलण फूलण चोमासें आवे, हेठें उंची नें गात्रादिक मांय।
वले छांट लागे मेह बूठां चोमासें, वले विवध प्रकारें अजयणा थाय ॥ ५ ॥
ते तो सेषाकाल ने वले चोमासा माहें, साप्रत दोष सेवें छें साख्यात।
तिण दोष ने दोष न सरधे अग्यांनी, तिण चोडेंइ पडिवजीयों छें मिथ्यात ॥ ६ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वले कलप मरजादा उलंघें अग्यांनी, मनमांनें जिता दिन रहिवा लागों।
वले भूठी परूपणा करें लोकां में, तिण छोड दीयो श्री जिणवर मागो॥ ७॥
कहें साठ वरसां मांहें साध हूवो छें, तिणनें एक ठिकांणें रहिणों थापें।
वले सूतर रो नांम ले ले अग्यांनी, एहवो भूठ बोले वीर वचन उथापें॥ ८॥
सूतर मांहें कठें नहीं चाल्यों, साठ वरस रा नें रहिणों एक ठिकांणें।
इण बात तणो कोइ निरणों करें तो, तिण भूठाबोला नें भूठा बोलो जांणे॥ ६॥
निसंक सूतर रो नांम बताए, भोला लोकां नें उपजावें वेसासो।
लाज सरम छोडे नें अग्यांनी, चोमासा उपर थाप्यों चोमासो॥ १०॥
एक मास रही नें विहार कीधो छें, विमणा दिन बारें काढ्यां विण तिहांइज आवें।
सेषा काल पिण महीना थी इधिकों रहे छें, तिण भागल नें हटक में कुण चलावें॥ ११॥
हालण चालण री सक्त घटें जब, साधु ठाणापती रहें एक ठिकांण।
वरसां रो नांम न चाल्यों सूतर में, कारण विनां रहें मूढ अयांण॥ १२॥
नव दीषत सामायक चारित वालो, तिण कनें सिज्झातर रो आहार मंगावें।
ते सिज्झातर रो आहार तिणनें खवावें, इसरो चेला नें आचार सीखावें॥ १३॥
सिज्झातर रो आहार जांण जांण खवावें, तिणमें दोष कहें तिणने कहे अजांण।
ओं तो कल्प आचार साधु रो न जांणें, इसरी कहे मूंढ कर कर तांण॥ १४॥
ए सांप्रत दोष उघाडो दीसें, तिण दोष नें कर लीधो छें आसांन।
वले मन मांहें जांणें हूं प्रवीण पको, हीण बुधी थकों करें थोथों गुमांन॥ १५॥
चोवीसोइ तीर्थंकर त्यांरा साधां ने, सिज्झातर पिंड न कल्पें लिगार।
नव दिषत गिलाण नें बालक बूढा नें, त्यांने पिण नही खांणो सिज्झातर आहार॥ १६॥
मोटो दोष जांणें छें कमाड खोल्यां में, तो पिण हाथां सूं कमाड खोलवा लागो।
जीव हिंसा करतो नहीं संक्यों, हिंसा कीयां थी पेंहलों महावरत भागों॥ १७॥
कोइ पूछे तो कूड बोलें कपटी, म्हे तो जेंणा सूं हाथे खोल्यों कमाड।
मोनें पाप न लागों जेंणा सूं खोल्यां, इण विध भूठ बोलनें होय जायें पार॥ १८॥
कलाल तणो कुल मुख सूं निषेध्यों, तिणरो आहार लेवा नेहोय गयो त्यारी।
तिणनें जातो जांणी नें ग्रहस्थ निषेध्यों, थे म करो इण मारग री हाथां सूं खुवारी॥ १६॥
ग्रहस्थ वरज्यों जब जातों रह्यों छें, पिण उण रा परिणांम एहीज जांणो।
दुगन्च्छणीक रो आहार लेतो न संकें, तिण भांग दीधी श्री जिणवर आंणो॥ २०॥
मेंणा रा घर री गोंचरी थापी, छानें छानें खावों मेंणा रो आंण्यों अहार।
वले मेंणा री गोचरी करवा ढूकों, ते पिण लोकां में हूवो छें उघार॥ २१॥
लोकां मांहें परूपणा प्रसिद्ध लीधी, हूं तो मेंणा रो आंण्यों न खाउ अहार।
हूं इणनें अहार देउं पिण इण रों न लेउं, इण भूठ तणों पिण हूवों उघार॥ २२॥

कोइ गांम बारें जाय दिष्या लीधी, कोइ साध काजें सूंखडी मोल ल्यायो।
ते सांप्रत दोषीली सूंखडी लेता, लोक लज्या पिण छोडी छें तायो ॥ २३ ॥
जो दिष्या लेतो हुवें तिणरो न्यातीलो, तिणरें तांइ आंण ने तिणनें देवे कोय।
जो इधिकी आंणे ओर साधां काजें, ते वेंहरें तो साधु ने दोषण होय ॥ २४ ॥
दिष्या लेतो थको आहार साथे लेवे तो, आ पिण लोका मे आछी न लागे।
वले सका पडे ओर सगला साधां री, तिणरो न्याय निरणो करे किण किण आगे ॥ २५ ॥
ओर साधां रे काजें मोल लेइ ने, दिष्या लेणवालो ले नीकले साथ।
ते सूखडी साराइ साध खाए तो, तिणने निश्चेंइ दोष कह्यो जगनाथ ॥ २६ ॥
पेंहला तो गुर चोलपटादिक धोवे, त्यारी देखा देख चेलो पिण धोयो।
जब आप धोयो ते सहिल गिणनें, चेला सू तोर ने लोकां मांहि विगोयों ॥ २७ ॥
जब चेलो कहे हूं तो थांहरी देखादेखी, चोलपटादिक धोयो निसक।
जो दोष हुवें तो दोया मे दोष, म्हां एकला माहे नही छें वक ॥ २८ ॥
जब गुर कहे आगे धोवता आपे, ते हिवडा उवा रीत छे नांय।
जब चेलो कहे आ तो खबर नही मोने, थे पेहला मोने कह्यो नही काय ॥ २९ ॥
कपडा धोवण रो गुर चेला रे, एक एक रो मांहो मां कीयो उघाड।
जब लोकां माहें पिण भूडा दीठा, वले माहो मां कीधा कजीया ने राड ॥ ३० ॥
सोभा विभूषा करवा ने काजें, साध थइ कपडादिक धोवें।
तिण आगना लोपी श्री अरिहंत री, तिणरी चिहूंगति माहे खूराबी होवे ॥ ३१ ॥
अनता सिधा री साख करने, चेला करण रा कीया पचखांण।
ते पिण सूंस भागे ने चेला कीधां, तिण अनता सिधा री भागी आण ॥ ३२ ॥
सूंस भागेनें चेला करतो नही लाज्यो, ते तो होय गयो निश्चेइ भागल भिष्टी।
ते पड गयो च्यार तीर्थ बारें, तिणनें किण विध साधसरधे समदिष्टी ॥ ३३ ॥
सगला साध भेला होय मरजादा बाधी, तिण मरजाद मे सूस कीया अनेक।
ते पिण सूस सगलाइ भाग्या, वले भूठ बोले मूढ विना ववेक ॥ ३४ ॥
सगला साधा मिल ने मरजाद बाधी, सगलाइ साध कीया पचखाण।
अनता सिधां री साख करेने, आपे सगलाइ चालां यां सूस प्रमाण ॥ ३५ ॥
सगला सूस करे मरजाद बाधी, ते सूस लिख्या छे पाना रे माहिं।
तिण लिखत हेठें सगलां आषर कीधा, अनता सिधां री साख ठेंहराइ ॥ ३५ ॥
ए सूंस मरजादा भागें तिणनें, गिणवों नही च्यार तीर्थ माही।
वले तिणने निंदक जांणवो च्यार तीर्थ रो, तिणने वादें त्यानें पिण आगना नाही ॥ ३७ ॥
इसडा सूस कर ने पाना माहे लिखाया, अनंता सिधा री साख करनें ताय।
ते पिण सूंस सगलाइ भांग्या, वले जांणी जाणी बोलें मूसावाय ॥ ३८ ॥

कदे तों कहे हूं इण लिखत में नाही, कदे कहे म्हें लिखत आरे न कीधों।
कदे कहे म्हे लिखत मे आखर न कीधां, कदे कहे म्हे एक ससो कर दीधों ॥ ३९ ॥
कदे तो कहें म्हें सरमासरमी, लिखत हेठें आखर कीया ताय।
कदे कहें मोनें कहि नें करायों, कदे कहें म्हें लिखीयों सांकडें आय ॥ ४० ॥
कदे कहें मोसूं कपटाइ दगों करेनें, लिखत रे हेठें आखर कराया।
कदे कहें मोंनें एकलो करता जांणी नें, म्हें डरतें थकें आखर कीया छें ताया ॥ ४१ ॥
कदे तो कहें हूं यांरां टोला मांहें रह सूं, तठा तांइ म्हांरें छें पचखांण।
कदे कहें लिखत म्हांरें तांइ कीधों, ए सगलाइ मो उपर कीधा मंडांण ॥ ४२ ॥
कदे कहें म्हारें उसभ कर्म उदें आया, जब लिखत हेठें आखर लिख दीया ताय।
आतो भोलप होय गइ म्हांरी, तिण बात नें हूं रह्यों छूं पिछताय ॥ ४३ ॥
कदे तो कहें हूं सगलाइ चेलां में, हूं वडो हूंतों तिणनें मूंदें न कीधो।
हूं छोटां री आग्यां में किण विध चालूं, तिण सूं टोलों म्हें छिटकाय दीधो ॥ ४४ ॥
कदे तो कहें हूं रह्यों यांरा टोला में, आत्मार्थी जोवण कांम।
पिण आत्मा रो अर्थी कोइ न दीठों, तिण सूं एकलो नीकल्यो टोला सूं तांम ॥ ४५ ॥
कदे कहें अविनांरी ढालां जोडी ते, सगली ढालां मो उपर कीधी छें ताहि।
चेलां नें कह्यों ठांम ठांम कहो थे, हिवें हूं किण विध रहूं टोला रे मांहि ॥ ४६ ॥
इत्यादिक झूठ बोले छें अनेक प्रकारें, परभव रो डर नांणें मूल लिगार।
जांणी जांणी झूठ बोलें छें अग्यांनी, खोय दीयो तिण संजम भार ॥ ४७ ॥
अनंता सिद्धां री साख करे सूंस कीधा, ते सूंस भांगे नें हूवों एकलों।
ते हुय गयों अपछंदो अवनीत, तिणनें साध सरध्यां किम होसी भलो ॥ ४८ ॥
सुध साधां नें ढीला कहि कहि अग्यांनी, आप भागल थको उतकष्टों वाजें।
तिणनें च्यारूंइ तीरथ साध न जांणें, तो पिण नरलजो मूल न लाजें ॥ ४९ ॥
ज्यांनें ढीला जांणें त्यांरा टोला रा भागल, त्यां भागलां में मन जावा रो कीधो।
त्यां सूं नरमाइ करे कह्यों मोंनें ल्यों थें, त्यां पिण तिणनें मांहें नही लीधो ॥ ५० ॥
थे कहो तो दूर करूं म्हांरा चेला, थे कहो ते थांनें परतीत उपाय।
थें मोनें चलावो जिण रीत चालूं, थे मोनें मांहें ल्यो हूं थां मांहें आउं ॥ ५१ ॥
दोय वार गयों त्यांमें जावानें काजें, जातो अनेक कोसां रो पेंडों कीधो।
त्यांनें अनेक वार कह्यों मोनें मांहें ल्यों, तो पिण तिणनें त्यां मांहें न लीधो ॥ ५२ ॥
ज्यांनें ढीला जांणें त्यांरा टोला रा भागल, उतकष्टो प्राछित छें त्यांरें मांहि।
त्यां भागलां पिण तिणनें मांहें न लीधों, तिण भागल री भोलां खबर न कांइ ॥ ५३ ॥
पांचू विगेंरा त्याग कीया तेही भांग्या, वले सुखडी रा सूंस ते पिण भांग्यां।
सूंस यांनें लिख्या ते पांनो ही फाड्यों, रस ग्रिधी थकें एहवा सूंस उलांग्यां ॥ ५४ ॥

उषधादिक वासी राखवा लागों, ते पिण कपटाइ करनें ताहि।
धणी रो ओषध धणी नें पाछो न सूंप्यो, आप रें काजें सूंप्यो अनेरा ने जाय ॥ ५५ ॥
इणविध नित रो नित आणने मेले, धणी नें पाछो न सूंपें जाइ।
धणा मास दिवस तांइ सेव्यो निरंतर, वले तिण मांहें दोष न सरधें छे ताहि ॥ ५६ ॥
इसरा मोटा मोटा दोष जांणेनें सेवें, तिण भिष्टी री भोला करसी परतीत।
तिणनें साधु सरधी तीखूतों कर वादें, ते पिण चिहूं गति मे होसी धणां फजीत ॥ ५७ ॥
सुध साधाने मूर्ख ढीला परूपें, पोते भारी भारी दोष सेवन लागो।
वले कुडा कुडा आल देतो नही सकें, ते तो विरत विहूणो होय गयो नागो ॥ ५८ ॥
तिण भागल ने ओलखावण काजे, जोड कीधी नेणवा सहर मझार।
संवत अठारे वरस अडतालें, महाविदि अमावस नें सोमवार ॥ ५९ ॥

ढाल : ३०

दुहा

सत्रुंजो पर्वत कह्यो, तीर्थ न कह्यो जिणराय।
जो संका पडें इण बात री, तो जोवो सूतर रे मांय॥ १ ॥
तिहां एकंत जायगां जांण ने, घणा साधां कीयां संथार।
तिहां केवल ग्यान उपजाय नें, पोहता मुक्ति मझार॥ २ ॥
केइ अग्यांनी इम कहें, सत्रुंजो पर्वत बंदनीक।
तिहां कांकरे कांकरे सिध हुवा, तिण सूं ओ तीरथ ठीक॥ ३ ॥
तिण सूं तीरथ करां जातरा, जावां दूर थकी चलाय।
बांदां पूजां सत्रुंजो भाव सूं, तो पातक दूर पुलाय॥ ४ ॥
इण विध विकलाई करें, जेंनी नांम धराय।
भूला अग्यांनी भर्म में, जिण धर्म री खबर न काय॥ ५ ॥
सत्रुंजा पर्वत मझै, साधु सीधा अनेक तिण ठांम।
बंदनीक तो सिध साध छें, पर्वत बांदे अग्यांनी तांम॥ ६ ॥
साधु सीधां जायगां बंदनीक हुवें, तो कुण कुण जायगां बंदनीक।
ते चित्त लगाय नें सांभलो, ज्यूं पडें पाखंड री ठीक॥ ७ ॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे साध सयाणा]

जो थें सत्रुंजा पर्वत नें बांदो, तो बांदणा द्वीप अढाई।
वले बांदणा थांनें समुद्र दोनूंई, साधु सीधा एती ठोड मांहि रे।
भवियण जोवो रे हिरदे विचारी, थें कांय करो आतम भारी रे।
कुमत्यां हिंसा नहीं सुखकारी रे* ॥ १ ॥
लाख पैंतालीस योजन मांहें, साधु सीधा छे सगली ठामो।
सत्रुंजा ज्यूं सगली जायगां नें, बांदे पूजै करणा गुण ग्रामो रे॥ भ० २ ॥
थांरे लेखे सगली जायगां बंदनीक, हिव पग मेलसो किण जागां।
जो थें बंदनीक जायगां ऊपर पग मेलो, तो अकारज करवा कांय लागा रे॥ भ० ३ ॥
बंदनीक जायगां ऊपर पग मेले, वले करे कारज अनेक।
मल मातरो तिण ऊपर न्हांखै, वूडो छो विना विवेक रें॥ भ० ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सत्रुजा नें वादे हाथ जोडी नें, तिण ऊपर चढे जोड़ी सूवा।
वले मल मात्रो तिण ऊपर न्हांखै, ए तो पूरा अज्ञानी ऊंत्रा रे॥ भ० ५॥
ज्यानें वादे ज्यांरा इज सिर ऊपर, पग देता न हुवे पाछा।
इसडों अंधारो छे घट जेहनें, डाहा किम जाणे साचा रे॥ भ० ६॥
थें सत्रुंजा रे सिर पग मेलो, तिणनें तीर्थ थापे वांदो पूजो।
आप थापी नें आप उत्थापो, तो डाहो कुण माने दूजो रे॥ भ० ७॥
सावां रा तो गुण वंदनीक, त्यांरी काया पिण नही वंदनीक।
तो जायगां वंदनीक किस विध होसी, थांनें आ पिण नही छै ठीक रे॥ भ० ८॥
साधु सीधां सूं जायगां बंदनीय हुवै, अकारज कियां सूं नही वंदनीक।
इण लेखे तो मनुष्य क्षेत्र में, कोइ जायगां नही वंदनीक रे॥ भ० ९॥
सगली जायगां मांहे अकारज हुवा, साधु पिण सीधा सर्व ठाम।
अवंदनीक जायगां थांरे किसी थापीजे, थें किसी जायगां वांदो शीश नाम रे॥ भ० १०॥
तो पांच तीर्थ जितरी जायगां में, आगे हुआ अकारज अनेक।
जो जायगां बिगडे अकारज कियां तो, हिवे तीर्थ न बांदणो एक रे॥ भ० ११॥
सत्रुंजो [1] गिरनार [2] अष्टापद [3], समेत [4] शिखर आबु [5] वादे।
ए पांच तीर्थ नें थेटरा कहे छें, वले अनेक थाप्या आप छांदे रे॥ भ० १२॥
ए आपरे छांदे तीरथ थाप्या, कर कर कूडी टेको।
वले नाम लेवे सूत्रां रो चोडे, पिण सूत्र मे नही एको रे॥ भ० १३॥
शिव मारग ने मुसलमानां मे, आपणा कुल साहमो देखे।
त्यारा पुराण कुराण मांहे कह्यो तिणसूं, त्यां तीर्थ थाप्या इण लेखे रे॥ भ० १४॥
त्यांरी देखादेख तीरथ थापे, आप छादे झाल रह्या टेको।
ते जिनेस्वर देव तो नही थाप्यो, शंका हुवे तो सूतर मांही देखो रे॥ भ० १५॥
हरकेशी जी नें ब्राह्मणा पूछ्यो, स्नान करवा नें द्रह कुण थायो।
कुण तीर्थ कीधां थकां म्हांरा, जन्म मरण मिट जायो रे॥ भ० १६॥
जब यां जिन धर्म रूपियो द्रह बतायो, भली लेश्या रूप पाणी जाणो।
इण स्नान कियां जीव निर्मल होसी, तिण सूं पामे पद निर्वाणो॥ भ० १७॥
तीर्थ करो तुम्हे शील रूपियो, तिण सूं जीव हुवै निकलंको।
शीतलीभूत हुवे मुगत में जाये, तिण मे म राखो शंको रे॥ भ० १८॥
शील रूपियो तीर्थ श्री जिन भाख्यो, तिण मांहे नही छे कूडो रे।
ओर तीर्थ सर्व लौकिक रा जाणो, तिणसूं कर्म न हूवे पूरो रे॥ भ० १९॥
शील रूपियो तीर्थ थापेनें, यांनें आणिया मारग ठायो।
यांरा कुल रा तीर्थ सर्व छडाय नें, सत्रुंजादिक नही वतायो रे॥ भ० २०॥

जो सत्रुंजादिक तीर्थ कियां सूं, कटता देखता कर्मो।
तो ओहिज तीर्थ त्यांनें पिण कहिता, त्यां कीधां बतावत धर्मो रे ॥ भ० २१ ॥
शील रूपियो तीर्थ श्री जिन भाष्यो, उत्तराध्येन बारमों जोवो।
थें तीर्थ पर्वत पहाड़ थाप नें, नर भव नें कांय खोवो रे ॥ भ० २२ ॥
वले थावरच्चा अणगार नें पूछयो, सुखदेव संन्यासी आयो।
जात्रा तुम्हारे छे के नहीं छे, सु यात्रा म्हांरे छे सुखदायो रे ॥ भ० २३ ॥
जब सुखदेव कहे थांरे जात्रा किसी छे, किसी जात्रा करे काटो कर्मों।
जब सुखदेव संन्यासी नें कहे थावरच्चा, तूं सांभल म्हांरी जात्रा धर्मो रे ॥ भ० २४ ॥
ज्ञान दर्शण चारित तप नें संजम ते, इत्यादिक सारा गुण निरदोखो।
यांरा जतन करां ते जात्रां छे म्हांरे, तिण सूं पामें अविचल मोखो रे ॥ भ० २५ ॥
यां पिण ज्ञानादिक गुण री जात्रा कही छे, कांइ बाकी न राखी विशेखो।
सत्रुंजादिक री जात्रा नहीं दाखी, गिनाता रो पांचमो अध्येन देखो रे ॥ भ० २६ ॥
ठाम ठाम सिद्धान्त में जात्रा कही जिहां, ज्ञानादिक गुण बताया।
आ जात्रा उत्थापे पर्वत पहाड़ थापे, इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २७ ॥
भगवंते सूत्र मांहि निरवद्य, तीर्थ जात्रा बताई।
ते तीर्थ जात्रा थां सूं करणी नावें, तिण सूं मांडी थें विकलाई रे ॥ भ० २८ ॥
साधु साधवी श्रावक नें श्राविका, ए च्यारूं तीर्थ जिनजी बताया।
थें पांचमों तीर्थ सत्रुंजादिक थापे, इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २९ ॥
ए च्यारूं तीर्थ रा गुण तेहिज तीर्थ छे, यांरी काया पिण तीरथ नांहीं।
तो थें सत्रुंजादिक अनेक कहो छे, ते किम तीरथ मांही रे ॥ भ० ३० ॥
थें सावद्य तीर्थ जात्रा थापेनें, छ काय जीवां नें मरावो।
इसडो अकारज करो आप छांदे, तिण में जिन आज्ञा कांय बतावो रे ॥ भ० ३१ ॥
थें जीव मारेनें धर्म कहो छो, ते भगवंत रा नहीं वेंणो।
थें मोह मतवाला गहला ज्यूं बोलो, थांरा फूटा अभितर नेंणो रे ॥ ३२ ॥
जीव हण्या मांहें धर्म परूपें, त्यांरो मत जाबक खोटो।
ते साधु तणा वचन किम सरधे, त्यांरा घट में मिथ्यात छे मोटो रे ॥ ३३ ॥
थांनें हणे छेदे भेदे जीवां मारे, तिणरे बंध्या कहो पाप कर्मों।
थें ओर जीव मारे धर्म जांणो, ओ थांनें किम होसी धर्मों रे ॥ ३४ ॥
थांनें हणे त्यानें पाप कहे ते, आ बात नहीं छें भूठी।
थें धर्म कहो पेला नें हणियां, तिण सूं अभितर री आंख फूटी रे ॥ ३५ ॥
थें जीव हणेनें वले धर्म सरधो, आ मति किण दीधी माठी।
आ प्रतष चोडें खोटी सरधा, तिणनें झाल रह्या छो कांठी रे ॥ ३६ ॥

रांक जीवां ने मार्यां धर्म कहता, वले सिंह तणी परे गाजो।
भगवंत रा केडायत वाजो, ते पिण नावे थाने लाजो रे ॥ ३७ ॥

●

ढाल : ३१

दुहा

केई जैंनी नांम धराय नें, बोले भूठ अतीव।
साधु धोवण वहरे तेह में, कहे बेइंद्री जीव॥ १॥
ते पोतें तो धोवण पीवें नहीं, पिये त्यांनें निंदे दिन रात।
ते अन्हाखी थका बकवो करे, त्यांरा घट मांहें घोर मिथ्यात॥ २॥
जिभ्या रो स्वाद तज्यां विनां, धोवण पियो किम जात।
तिणसूं धोवण उथापें वहरणो, भूठी कर कर मुख सूं बात॥ ३॥
केई कहे वासी आहार में, एकण रात रे मांहि।
जीव बेइंद्री उपजें, तिण सूं साधां ने वहरणो नांहि॥ ४॥
पोतें ठंडो आहार भावे नहीं, तिण सूं उंधी परूपें एम।
एहवा हिंसाधर्म्यां रा लक्षण बुरा, ते सुणज्यो धर प्रेम॥ ५॥

ढाल

[धर्म आराधिये ए]

कसाई विचे तो कुगुर बुरा ए, त्यांरे दया नहीं लवलेश।
छ काया मारण तणो ए, दे पापी उपदेश।
पाखंडी गुर एहवा ए, उन्हों पांणी धरावे करे आमना ए *॥ १॥

पछें भर भर ल्यावे ठांम, आधाकर्मी भोगवे ए।
त्यांरा दुष्ट घणा परिणांम, भविक निरणो करो ए॥ पा० २॥

करडो काठो धोवण भावे नहीं ए, उन्हों पांणी लागे स्वाद।
तिण सूं अन्हाखी थका ए, करे कूडी विषवाद॥ ३॥

कहे धोवण में उपजे घणा ए, दोय घडी पाछें जीव।
ए उंधी परूपनें ए, दे छें कुगति नीं नींव॥ ४॥

धोवण इकवीस जाति नों ए, साधु नें लेणो कह्यो जिण आप।
आचारांग सूतर में ए, ते कुगुरां दीयो उथाप॥ ५॥

इकवीस जाति सूं मिलतो थको ए, घणी जाति रो धोवण जांण।
ते पिण लेणो कह्यो ए, तिणरी न करे मूढ पिछांण॥ ६॥

अनेरो सस्त्र परिणम्यां थकां ए, वर्ण ने रस फिर जाय।
ते धोवण लेणो साधु नें ए, ते विकलां नें खबर न काय॥ ७॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

कहे धोवण मे जीव उपजें ए, दोय घडी मे आय।
ते पिण सूतर मे नही ए, झूठा थका बोले मूसावाय ॥ ८ ॥
ततकाल रो धोवण नहीं वेंहरणों ए, घणी बोलां रो धोवण लेणो जांण।
दसवैकालक मे कह्यो ए, तोही करे अग्यांनी तांण ॥ ९ ॥
कहे धोवण में जीव उपजें ए, ते अन तणे परवेश।
एहवो झूठ बोलनें ए, कर रह्या कूड कलेश ॥ १० ॥
जो धोवण में जीव उपजें ए, तो रोटी में ई उपजे आंण।
दोय घडी मझे ए, ए लेखो बरोबर जांण ॥ ११ ॥
इमहिज दाल खीच घाट में ए, इत्यादिक सगलो अन जांण।
सगलां में जीव उपजे ए, धोवण सूं यांनें ल्यो पिछाण ॥ १२ ॥
कठे पांणी थोडो नें अन घणो ए, कठे अन थोडो पांणी अत्यन्त।
पांणी नें अन सर्व मे ए, यां सगलां रो एक विरतंत ॥ १३ ॥
दूध री जावणी रा धोवण मझे ए, यामे उपजें बेइंद्री आय।
तो दूध में पिण उपजे ए, पांणी मिले छे तिण मांय ॥ १४ ॥
वले दही नें छाछ रा धोवण मझे ए, यामे उपजे वेइंद्री आय।
तो उपजें दही छाछ मे ए, पांणी मिले छे यांरे ई मांय ॥ १५ ॥
जिण जिण दरब रा धोवण मझे ए, जो उपजें बेइंद्री आय।
तो दरब में ई उपजें ए, पांणी मिले छे दरब रे मांय ॥ १६ ॥
इतरा काल पछें जीव उपजे ए, ते सूतर मे न कह्यो भगवंत।
उपजता जीव जांण नें ए, वहरे नहीं मतिवत ॥ १७ ॥
केई रात बासी रोटी मझे ए, कहे उपजें बेइंद्री आय।
ते साधु नें नही वेंहरणी ए, एहवी कूडी करे बकवाय ॥ १८ ॥
ऊन्ही रोटी ततकाल री ए, ते खातां लागे स्वाद।
ठंडी भावे नही ए, तिण सूं बोले मिरखावाद ॥ १९ ॥
जीभ तणा लंपटी थका ए, ठडी रोटी माहे कहे जीव।
न कहे तो लेणी पडे ए, तिणसूं बोले झूठ सदीव ॥ २० ॥
लाडू लापसी सीरा पकवान नें ए, बासी बहिरे मन चाय।
रोटी वहिरे नही ए, तिण माहे जीव बताय ॥ २१ ॥
जो बासी रोटी में जीव उपजे ए, तो लाडू आदि दे सगलां मे जांण।
अन्न पाणी सगलां मझे ए, इणरी न करे मूढ पिछांण ॥ २२ ॥
लाडू लापसी सीरो तो भावे घणो ए, ठडी रोटी भावे नांहि।
तिण सूं अन्हाखो थका ए, जीव कहे ठंडी रोटी मांहि ॥ २३ ॥

पोहर रात गयां रोटी करे ए, तिणने नही वेंहरे परभात।
तिणमें जांणे जीवडा ए, तीन पोहर निकली कहे रात ॥ २४ ॥
तो परभाते रोटी नीपजें ए, आथम्यां सूधी खाणी नांहि।
पोहर च्यार नीकल्या ए, इण लेखें बेइंद्री तिण मांहि ॥ २५ ॥
उन्हाला री रात नान्ही हुवें ए, दिन मोटो छें साख्यात।
कदे फेर दोढो परे ए, लेखो कीयां विना क्यूं खात ॥ २६ ॥
रात पड्यां जीव ऊपजें ए, दिन रा न उपजें तिण मांय।
तो किण ही सूतर मझे ए, साचा हुवे तो काढ बताय ॥ २७ ॥
केई बासी वहिरे सीयाला मझे ए, शील सातम सूधी ताहि।
आगे वहिरे नहीं ए, ते पिण नही सूत्र रे मांहि ॥ २८ ॥
बासी विणस्यो नें कूयो घणो ए, वले अत्यन्त कूह्यो असार।
एहवो आहार भोगवे ए, तो पिण नाणे द्वेष लिगार।
दसमां अंग में कह्यो ए ॥ २९ ॥
वले भगवंत वासी वहरियो ए, जोवो आचारांग मांय।
मूरख माने नहीं ए, चोडे भूला जाय ॥ ३० ॥
जीभ्या रो लोलपी थको ए, जीव बासी में कहे ताण।
उंधी सरधा थकी ए, बूडे छें मूढ अयाण ॥ ३१ ॥
जो ठडी रोटी में जीव बेइंद्री ए, तो यांरा श्रावक जाण ने कांय खाय।
महाजन रा कुल मझे ए, इसडो कांय करे मूंढ अन्याय ॥ ३२ ॥
कदा पोते कुगुरां रा भरमाविया ए, पोते बासी अन्न नही खाय।
पिण घर रा मिनख नें ए, ठंडो आहार देवे खवाय ॥ ३३ ॥
व्यालूं करतां रोटी बचे ए, त्यांनें धरती क्यूं न देवे न्हांख।
जाणे छे जीव ऊपना ए, पछे खातां ई नाणे शांक ॥ ३४ ॥
नित नित खावे बेइंद्री ए, जीव काया करे दूर।
दांतां सूं मारेनें गिले ए, त्यांरो श्रावक पणो चकचूर ॥ ३५ ॥
जीव खाये खवरावे जाण नें ए, त्यां गुर री न राखी परतीत।
महाजन रा कुल तणी ए, छोड दीधी त्यां रीत ॥ ३६ ॥
बासी अन्न मांहें नीलणादिक ऊपजे ए, ते किण ही काल में जाण।
देखी नें साधु परिहरे ए, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ ३७ ॥
रात्रि भोजन करे तेह में ए, पाप कहे ते न्याय।
पिण मुतलब आपरे ए, हुवे ज़िण सूं दे अधिको बताय ॥ ३८ ॥

भूठ बोले पाप अधिको कहे ए, आपरे उन्हों ल्यावण काज।
जिभ्या रा लोलपी थका ए, भूठ बोलता नाणे लाज ॥ ३९ ॥
पिण भोलां नें खबर पडे नही ए, तिणरो कुण काढे निकाल।
विकलां नें कुगुरां न्हांखियो ए, मोटो मिथ्यात रो जाल ॥ ४० ॥
कोरडू धान ने छाछ भेलां हुवां ए, तो उपजे वेइंद्री तिण माय।
पाखंडी इम कहे ए, ते एकंत मूसावाय ॥ ४१ ॥
कहे खीच ने छाछ भेलो करी ए, कोई जीमे भाणा मांय।
तो उपजे वेइंद्री ए, एहवो दियो भूठ चलाय ॥ ४२ ॥
जिण जिण धान मे कोरडू मिले ए, तिण माहे घाले छास।
तो उपजे वेइंद्री ए, ते खाधां हुवे तिण रो विणास ॥ ४३ ॥
छाछ नें कोरडू धान भेला हुवे ए, विदल दियो तिण रो नाम।
एहवा विदल मभे ए, उपजे वेइंद्री ताम ॥ ४४ ॥
एहवी करे परूपणा ए, घाले भोलां रे शंक।
भिडकावे जिन धर्म थी ए, ओ चोडे कुगुरां रो डंक ॥ ४५ ॥
आ सरधा दिगम्बर मत तणी ए, ते नही माने आगम ज्ञान।
केई विगड्या श्वेताम्बरी ए, त्यां पिण लीधी त्यांरी मान ॥ ४६ ॥
कोरडू धान नें छाछ भेला कियां ए, उपजे वेइंद्री आय।
ते नही छें सिद्धांत में ए, ओ कुगुरां दीयो गोलो चलाय ॥ ४७ ॥
कोरडू धान छाछ भेला कीयां ए, जो उपजे वेइंद्री तिण मांय।
तो इण सरधा रा धणी ए, खाटादिक क्यूं खाय ॥ ४८ ॥
वेजड तणी रोटी हुवे ए, ते नहीं खाणी छाछ सूं लगाय।
इणमे ई जीव ऊपजे ए, उणरी सरधा रो ओहिज न्याय ॥ ४९ ॥
जाण जाण नें खावें जीव वेइंद्री ए, जो खावे छै विना आगार।
ते भागल व्रतां तणा ए, त्यांरा श्रावकपणा ने धिक्कार ॥ ५० ॥
केइ श्वेताम्बर नें दिगम्बरा ए, ते बोले भूठ निसंक।
ऊंधी करे परूपणा ए, यांरी श्रद्धा माहे मोटो वंक ॥ ५१ ॥
जो कदा न खावे जाणनें ए, आ खोटी मत री छें रूढ।
इसडी ऊंधी ताणनें ए, आगे गया अनंता बूड ॥ ५२ ॥
वारे कुल री साधां नें कही गोचरी ए, यां कुलां सूं मिलता चले जाण।
आचारांग मे कह्यो ए, ते उथापी मूंढ अयाण ॥ ५३ ॥
वारे कुल री कही छे गोचरी ए, ते तो चोथा आरा मांय।
हिवडां करणी नहीं ए, एहवो बोले मूसावाय ॥ ५४ ॥

पांचमे आरे साधु साधवी ए, जो चाले सूतर रे न्याय।
तो बारह कुल री करे ए, पिण विकला सूं किधी न जाय॥ ५५॥
ओर कुलां में आछो मिले नहीं ए, पोते भावे सरस आहार।
जिभ्यारा लंपटी थका ए, झूठ बोले जनम् विगाड॥ ५६॥
ओर कुल री न करां म्हें गोचरी ए, ओर कुल में तो मद्य मांस खाय।
तिण सूं महाजन रा कुल मझे ए, गोचरी करां म्हें जाय॥ ५७॥
मांम खावे तिण घर वहिरे नहीं ए, मांस आहारी नें मूंड ले मांय।
भिन्न राखे नहीं ए, एकण पात्रे खाय॥ ५८॥
जिण कुल रो आहार वहिरे नहीं ए, तिण कुल रा नें मांहें ले मूंड।
संभोग भेलो करे ए, देखो अन्यान्यां री रूढ॥ ५९॥
आगे क्षत्री कुल रा राजवी ए, ते मांस खाता घर मांय।
त्यांरे घरे बहिरता ए, साधु साधवी जाय॥ ६०॥
उग्रसेन राय जीव भोला किया ए, ते गोरो देवा नें ताय।
यांरा कुल री रीत थी ए, त्यांरा कुल मांहें बहरता जाय॥ ६१॥
त्यांरा कुल रा हुंता साधु साधवी ए, ते मांस खाता घर मांय।
त्यांसूं भेला रह्या ए, त्यांरा कुलां में बहरता जाय॥ ६२॥
ऊंच नीच मध्यम कुल री गोचरी ए, साधु नें कही जिनराय।
बारे कुल मांहें आविया ए, जोवो सूतर रे मांय॥ ६३॥
ऊंच कुल क्षत्री राजा तणो ए, मध्यम बाणिया ब्राह्मण जाण।
नीच कुल पिण चोखो कह्यो ए, गूजरादिक मिलता पिछाण॥ ६४॥
बारह कुल री गोचरी निषेधसी ए, तिणरे बोहला पाप।
चोर तीर्थंकर तणो ए, कह्यो जिनेश्वर आप॥ ६५॥
लाडू पतासा री परभावना ए, दरावें उपासरा मांहि।
वखाण पूरो हूवां ए, ते किण ही सूतर में नांहि॥ ६६॥
खावारा लोलुपी थका ए, घणा भेला हुवे आय।
लेवण नें लाडुआ ए, लाजे नहीं मन मांय॥ ६७॥
आगे आनंदजी आदि श्रावक हुआ ए, त्यांरे कोडां रो धन घर मांय।
त्यां साधां रा थानक मझे ए, नहीं दीधी परभावना आय॥ ६८॥
वले भगवंत रा मांडला मझे ए, नर नारी मिलता अनेक।
जिण दिन पिण श्रावक घणा ए, लाडू बांट्या न दीसे एक॥ ६९॥
लाडू पतासा बांटण तणो ए, ओ कुगुरां तणो उपदेश।
ते मुतलब आपरो ए, कोई बुधिवंत जाणे त्यांरी रेस॥ ७०॥

जो लाडू पतासा वापरे ए, ते कोई यांनें देवे वहराय।
ए मुतलव आपरो ए, तिण सूं दीधी कुत्रुव चलाय ॥ ७१ ॥
वले प्रशंसा वधारवा ए, मान वडाई काज।
दरावे परभावना ए, जावक छोडे दीधी लाज ॥ ७२ ॥
ज्यांरे लाडू पतासा पानें पडे ए, ते तो करे गुण ग्राम।
समझे नही धर्म में ए, त्यांरे लाडू पतासा सूं काम ॥ ७३ ॥
धर्म कही कही भोला लोका नें ए, लाडू पतासा वंटाय।
घणा रे मन मानियो ए, तिणरो कुण पूछे न्याय ॥ ७४ ॥
खाणो पीणो विषय इंद्रिया तणो ए, तिण सूं कर्म वंधाय।
जिनेश्वर इम कह्यो ए, जोवो सिधांत रे मांय ॥ ७५ ॥



रत्न : ३३

आचार री चौपई

ढाल : १

दुहा

पहिलां अरिहंत नें नमूं, ज्यूं सीझे आतम काम।
पिण वले विशेषे वीर ने, ए सासण नायक साम॥ १ ॥
कार्य साझी आपणा, ते पोंहता निरवाण।
सिद्धां ने वंदणा करू, त्या मेट्यो आवण जाण॥ २ ॥
आचार्य सहु सारिषा, गुण रत्ना री खाण।
उवझाय ने सर्व साध जी, ए पाचूइ पद वखाण॥ ३ ॥
वांदीजे नित एहनें, नीचो सीस नमाय।
गुण ओलख वंदणा करे, तो भव भव ना दुख जाय॥ ४ ॥
सुगुरु कुगुरु दोनू तणी, गुण विन खबर न काय।
पहिलां कुगुरु ने ओलखो, सुण सूतर रो न्याय॥ ५ ॥
सूतर साख दीयां विना, लोक न माने वात।
सांभल ने नर नारियां, छोडो मूल मिथ्यात॥ ६ ॥
कुगुरू चरित अनंत छे, ते पूरा केम कहाय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्तलाय॥ ७ ॥

ढाल

[आदर जीव खिम्यागुण]

ओलखावण दोहरा भव जीवा, कुगुरू चरित अनंत जी।
कहितां छेह न आवे तिणरो, इम भाख्यो भगवंत जी।
साधु म जाणो इण चलगत सूं* ॥ १ ॥
आधाकर्मी थानक मे रहे तो, ते पाडे चारित मे भेद जी।
नशीत नें दशमे उदेशे, च्यार महीना रो छेद जी॥ २ ॥
अठारे ठाणा कह्या जू जूआ, एक विराधे कोय जी।
बाल कह्यो श्री वीर जिनेसर, साधु म जाणो सोय जी।
कुगुरू पिछाणो इण चलगत सूं॥ ३ ॥
आहार सिज्या ने वस्त्र पातर, असुध लियां नही सत जी।
दसवेकालक छठे अध्ययने, भिष्ट कह्यो भगवंत जी॥ ४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

अचित वस्तु नें मोल लरावे, तो सुमत गुप्त हुवे खंड जी।
महाव्रत पांचूंई भागा, चोमासी नो डंड जी॥ ५॥
एतो भाव नसीत मे चाल्या, उगणीस में उदेश जी।
सुघ साधु बिन कुण सुणावे, सूत्र नी उंडी रेस जी॥ ६॥
पुस्तक पातर उपाश्रादिक, लिवरावे ले ले नाम जी।
आछा भूंडा कहि मोल बतावे, ते करे ग्रहस्थ नों काम जी॥ ७॥
गराग नें तो कइयो कहिजें, कुगुरु विचे दलाल जी।
बेचणवालो कह्यो वाणियो, तीनां रो एक हवाल जी॥ ८॥
क्रय विक्रय मांहे वर्ते तो, महादोषण छे एह जी।
पेंतीसमां उत्तराधेन में, साधु न कह्यो तेह जी॥ ९॥
नितको बहरे एकण घरको, च्यांरा में एक आहार जी।
दसवेकालक तीजा में कह्यो, साधु नें अणाचार जी॥ १०॥
जो ल्यावे नित धोवण पांणी, तिण लोप्यो सूतर नों न्याय जी।
बतलायां बोले नही सूधा, दोषण दीए छिपाय जी॥ ११॥
नहीं कल्पे ते वस्तु वेंहरे, तिणमें मोटी खोड जी।
आचारांग पेंहले श्रुतस्कंधे, कह दीयो भगवंत चोर जी॥ १२॥
पेंहलों व्रत तो पूरो पडियो, जब आडा जडे किवाड जी।
कूंटो आगल हुडो अटकावे, तो निश्चे नही अणगार जी॥ १३॥
पोते हाथे जडे उघाडे, ते करे जीवां रा जेन जी।
गृहस्थ उघाडी आहार वेंहरावे, तब करे अणहूंता फेन जी॥ १४॥
साधवीयां. नें जडवो चाल्यो, तिणरी म करों तांण जी।
यां लारें जो साधु जडे तो, ए भागल रा अहनाण जी॥ १५॥
मन करनें जो बांछे जडवों, तिण नही जाणी पर पीर जी।
पेंतीसमा उत्तरावेन में, बरज गया महावीर जी॥ १६॥
पर निंदा में राता माता, चित्त मे नही संतोष जी।
वीर कह्यो दसमां अंग में, तिण वचन में तेरे दोष जी॥ १७॥
दिष्या ले तो मो आगे लीजे, ओर कनें दे पाल जी।
कुगुरु एहवो सूंस करावे, ए चोडें उंधी चाल जी॥ १८॥
ए बंधा थी ममता लागे, गृहस्थ सूं भेलप थाय जी।
नशीत रे चोथे उद्देशे, डंड कह्यो जिणराय जी॥ १९॥
जीमणवार में वेंहरण जाए, आ साधां री नहीं रीत जी।
वरज्यो आचारांग वृहतकल्प में, उत्तराधेन नसीत जी॥ २०॥

आलस नही आरा मे जाता, वले बेठी पांत वसेष जी।
सरस आहार ल्यावे भर पातर, त्यां लज्यां छोडी ले भेप जी ॥ २१ ॥
चेला करण री चलगत उधी, चाला बोहत चलाय जी।
साथे लीयां फिरे गृहस्थ नें, वले रोकड दाम दराय जी ॥ २२ ॥
ववेक विकल नें सांग पहराए, भेलो करे आहार जी।
सामग्री मे जाय वंदावे, फिर फिर करे खुवार जी ॥ २३ ॥
अजोग ने दिष्या दीधी ते, भगवंत री आग्या बार जी ।
नसीत रो डंड मूल न मान्यो, ते विटल हुवा बेकार जी ॥ २४ ॥
विण पडलेह्या पुस्तक राखे, वले जमे जीवां रा जाल जी।
पडे कुंथुआ उपजे माकण, जिण बांधी भांगी पाल जी ॥ २५ ॥
जोवे वरस छ मास निकलीयां, तो पेंहलां व्रत नो खंड जी।
नित पडिलेहण मेली तिणनें, एक मास नों डंड जी ॥ २६ ॥
गृहस्थ ने साथे कहे सदेसो, तो मेलो हुवो संमोग जी।
तिणनें साधु किम सरधी जे, लागो जोग ने रोग जी ॥ २७ ॥
समाचार विवरा सुध कहि कहि, सानी कर गृही बुलाय जी।
कागद लिखावे करे आमना, परहथ दीए चलाय जी ॥ २८ ॥
आवण जावण बेसण उठण री, वले जायगां देवे बताय जी।
इत्यादिक साधु कहे गृहस्थ ने, तो दोनूं बराबर थाय जी ॥ २९ ॥
गृहस्थ नें दे लोट पातरा, पूठा परत विशेष जी।
रजोहरण पूंजणी देवे, ते भिष्ट हुआ ले भेष जी ॥ ३० ॥
पूछे तो कहे परठ दीया मे, कूड कपट मन मांहि जी।
कांम पडे तो जाय उरा ले, न मिटी अंतर चाहि जी ॥ ३१ ॥
कहे परठ्या गृहस्थ नें देइ, बोले वले अन्याय जी।
कह्यो अचारांग उत्तराधेन मे, साधु परठे एकंत जाय जी ॥ ३२ ॥
करे गृही सूं वदलो सदलो, पिंडत नाम धराय जी।
पूरी पडी सगला वरतां री, ते भेष ले भूला जाय जी ॥ ३३ ॥
थोडो सो उपध गृहस्थ नें दीधां, वरत रहे नही एक जी।
चोमासी डंड नसीत मे गूंथ्यो, तिण छोडी जिण धर्म टेक जी ॥ ३४ ॥
विण अंकुस जिम हाथी चाले, घोडो विगर लगाम जी।
एहवी चाल कुगुरू री जांणों, कहिवा नें साधु नाम जी ॥ ३५ ॥
अणुकंपा नही छही काय री, गुण विण कहे मे साध जी।
ए चरचा अणुजोग दुवार में, विरला परमारथ लाध जी ॥ ३६ ॥

घृष्ट पुष्ट नें मांस बधारे, वले करे विगेरो पूर जी।
माठा परिणांमा नास्यां निरखे, ते साधुपणा थी दूर जी॥ ३७॥
सरस आहार ले विण मरजादा, तो बधे देही री लोथ जी।
काचमणी प्रकाश करे जिम, कुगुरु माया थोथ जी॥ ३८॥
दबक दबक उतावला चाले, तस थावर मास्यां जाय जी।
ईर्या समिति जोया विण भागी, ते किम साधु थाय जी॥ ३९॥
कह्यो आचारंग उत्तराधेन में, जो करे चलतां बात जी।
उंची तिरछी दिष्ट जोवे तो, छ काय री हुवे घात जी॥ ४०॥
कपडा में लोपी मरजादा, लांबा पेना लगाय जी।
इधिको राखे दोयवड ओढे, वले बोले मुसावाय जी॥ ४१॥
उपगरण नें इधिका राखे, तिण मोटो कीयो अन्याय जी।
नसीत रें सोल में उद्देशे, चोमासी चारित जाय जी॥ ४२॥
मूरख नें गुर एहवा मिलिया, ले डूबसी लार जी।
साचो मार्ग साधु बतावे, तो लडवा नें छे तयार जी॥ ४३॥
एहवा गुर साचा कर मानें, ते अंध अग्यांनी बाल जी।
फोडा पडे उतकष्टा तिणमें, तो रुले अनंतो काल जी॥ ४४॥
हलुकर्मी जीव सुण सुण हरखे, करे भारीकर्मी धेष जी।
सूतर रो न्याय निदाकर मांनें, ते डूबा वले विशेष जी॥ ४५॥

ढाल : २

दुहा

समदिष्टी आरे पांच में, थोडी रिध अपमान।
मिथ्यदिष्टी जोडे हुसी, बहु रिध बहु सनमान॥ १॥
समण थोडा ने मुड घणा, पाचमे आरे चेन।
भेष लेइ साधां तणो, करसी कूडा फेन॥ २॥
साधु अल्प पूजावसी, ठाणा अग में साख।
असाधु महिमा अति घणी, श्री वीर गया छे भाख॥ ३॥
कुगुर कुदेव कुधर्म मे, घणा लोक रजाबंध होय।
ओलख ने निरणो करे, ते तो विरलां जोय॥ ४॥
साधु मारग छे साकडो, भोला खबर न काय।
जिम दीवे मरे पतंगियो, तिम पडे पगां मे जाय॥ ५॥
घणा साधु ने साधवी, श्रावक श्राविका लार।
उलटा पड जिण धर्म थी, परसी नरक मझार॥ ६॥
महा नसीत मे इम कह्यो, गुण विण धारे भेष।
लाखा कोडा गमे सावठा, नरका पडता देख॥ ७॥
लीधा वरत न पालसी, खोटी दिष्ट अयाण।
तिणनें कही छे नारकी, कोइ आप म लीजो ताण॥ ८॥
आगम थी अंवला बहे, साधु नाम धराय।
सुध करणी वेगला, ते सुणजो चितल्याय॥ ९॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा]

सीधा घर आपे साधु नें, वले ओर करावे आगे रे।
एहवो उपाश्रो भोगवे, तिणनें वज्र किरिया लागे रे।
तिणनें साधु किम जाणीए* ॥ १ ॥
आचारंग दूजे कह्यो, महा दुष्ट दोषण छे जिणमे रे।
वीर वचन संवला करो, तो साधुपणो नही तिणमें रे॥ २ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

साधु अर्थे करायो उपाश्रो, छायो लिप्यो ग्रहस्थ बाल रागी रे।
तिण थानक रहे तेहनें, महा सावद्य किरिया लागी रे॥ ३॥
त्यांनें भावे तो ग्रहस्थ कह्या, दियो आचारंग साखी रे।
भेषधारी कह्या सिधंत में, भगवंत काण न राखी रे॥ ४॥
सिज्यातर पिंडज भोगवे, वले कुब्द केलवे कपटी रे।
धणी छोड आग्या ले अवरनी, सरस आहारादिकरा लंपटी रे॥ ५॥
सबलो दोषण लागे तेहनें, वले नसीत में डंड भारी रे।
अणाचारी कह्या दसवेकालिके, तिण भगवंत सीख न धारी रे॥ ६॥
अणुकंपा आण श्रावक तणी, दरब दरावण आगा रे।
दूजे करण खंड्यो वरत पांचमो, तीजे करण पांचूंई भागा रे॥ ७॥
ग्रहस्थ जिमावणरी आमनां, जो करे साधु दलाली रे।
चोमासी डंड नसीत में, व्रत भांगे हूआ खाली रे॥ ८॥
करे बांसादिकनो बांधवो, वले किया भींतां रा चेजा रे।
लीपवो छायवो आद दे, ते कहिजे सपरिकम सेजा रे॥ ९॥
एहवी वस्ती भोगवे, ते साधु नहीं लवलेसे रे।
मासीक दंड कह्यो तेहनें, नसीत नें पांचमें उद्देशे रे॥ १०॥
बांधे पड्दो परेच कनात ने, वले चन्द्रवा सिरकी ताटा रे।
साधु अर्थे किया ते भोगवे, तो ग्यानादिक गुण नाठा रे॥ ११॥
थापीता थानक में रहे, तिण दिया महाव्रत भांगो रे।
भावे साधुपणा थी वेगला, त्यांनें गुण विण जाणो सांगो रे॥ १२॥
काच चशमो वर्ज्यो ते राखनें, जाणे दोषण छे थोरो रे।
पांचमों वरत पूरो पड्यो, वले जिन आग्या नां चोरो रे॥ १३॥
ग्रहस्थ आयो देखी मोटको, हावभाव सूं हरषित हुआ रे।
करे विछावण री आमनां, ते तो साधु मारग थी जूआ रे॥ १४॥
ग्रहस्थ तेरण आया साधु नें, कपडादिक वेहरण ले जावे रे।
इण विध वहरे तेहमें, चारित किणविध पावे रे॥ १५॥
साहमों आण्यो लेजाए तेरियो, ए दोनूं दोषण छे भारी रे।
यांनें टाले केडायत वीर नां, सेव्यां नहीं साधु आचारी रे॥ १६॥
धोवणादिक में निलोतरी, वले जीव सहित कण भीनां रे।
ते पिण वहरे संके नहीं, ते परभव सूं नहीं बीनां रे॥ १७॥
एहवो अनपाणी भोगवे, त्यांनें साधु किम थापीजे रे।
जो सूतर नें साचा करो, तो चोरां री पांत घातीजे रे॥ १८॥

ग्रहस्थ रे सझाय बोल थोकडा, साधु लिखे तो दोषण लागे रे।
लिखायांने अनुमोदिया, दोय करण उपरला भागे रे॥ १९॥
पहिले करण लिखियां मे पाप छे, तो लिखाया दोष उघाडा रे।
पाच महाव्रत मूलगा, त्या सगलां मे परिया वघारा रे॥ २०॥
उपगरण भलावे ग्रहस्थनें, ओ नही साधु आचारो रे।
प्रवचन न्याय न मानियो, लियो मुगत सूं मारग न्योरो रे॥ २१॥
ग्रहस्थ रा उपधि रा जाबता, कीधां वरत चकचूरो रे।
सेवग हुओ संसारिया, ते साधुपणा थी दूरो रे॥ २२॥
साता पूछे पूछावे ग्रहस्थ ने, ते अविरत सेवण लागा रे।
अणाचारी कह्या दसवेकालिके, वले पांचूई महाव्रत भागा रे॥ २३॥
श्रावक ने वले श्राविका, करें मांहोमांहि कारज रे।
साता पूछे विनो वियावच करे, यामे धर्म परूपे अनारज रे॥ २४॥
अणाचार पूरा नही ओलख्या, ते नवभागा किण विध टाले रे।
ग्रहस्थने सीखावे सेवणा, लिया वरत नहि सभाले रे॥ २५॥
कारण परिया लेणो कहे साधुने, करे असुध वहरण री थापो रे।
दातार ने निरजरा घणी, वले थोडो बतावे पापो रे॥ २६॥
एहवी ऊंधी करे परूपणा, घणा जीवा ने उलटा नाखे रे।
अणविचारी भाषा बोलता, भारीकर्मा जीव न साके रे॥ २७॥
करे भिष्ट आचार नी थापनां, कहि कहि दुषम कालो रे।
हिवडां आचार छे एहवो, घणा दोषारो न हुवे टालो रे॥ २८॥
एक पोते तो पाले नही, वले पाले जिणसूं धेषो रे।
दोय मूर्ख तिणने कह्यो, पहलो आचारंग देखो रे॥ २९॥
पाट बाजोट आण्या ग्रहस्थ नां, पाछा देवण री नही नीतो रे।
मरजादा लोपीनें भोगवे, तिण छोडी जिन धर्म रीतो रे॥ ३०॥
त्यानें डंड कह्यो एक मास नों, नशीत उद्देशे बीजे रे।
ए न्याय मारग परगट कियां, भारीकर्मा सुण सुण खीजे रे॥ ३१॥

ढाल : ३

दुहा

घणा असाधु जिन कह्या, ते लोक मे साधु कहाय।
सांसो हुवे तो देखलो, दसवेकालक मांय ॥ १ ॥
भेष सगलां रो सारीखो, ते भोला खबर न काय।
विवरो वीर बतावियो, दूजी गाथा मांय ॥ २ ॥
ग्यान दर्शन चारित तप, ए च्यारां में रक्त अपार।
एहवे गुणे सहित छे, ते मोटा अणगार ॥ ३ ॥
इण विध साधु नें ओलखे, ते तो विरला जाण।
ए न्याय मारग जाण्यां बिना, करे अग्यानी ताण ॥ ४ ॥
चोथे आरे अरिहंत थकां, इम हिज खांचा ताण।
पाषंड में पडता घणा, कर्मा वस लोक अजाण ॥ ५ ॥
झगडा राड हुंता घणा, चोथा आरा मांय।
पांचमां रो कहिवो किसूं, ते सुणज्यो चितलाय ॥ ६ ॥

ढाल

[जोयजो रे कायर होया]

सावत्थी तो नगरी वीर पधारिया रे, गोशालो झगड्यो छे तिहां आय रे
लोक मूंढा सूं वाणी इम वदे रे, कुण साचो कुण झूठो थाय रे।
पाषंड वधसी आरे पांचमें रे* ॥ १ ॥
घणा लोकांरे मन इम मानियो रे, गोशालो भाषे ते सत वाय रे।
वीर नही छे जिन चोवीसमों रे, अणहूंतो बोले मुसा वाय रे ॥ २ ॥
केएक उत्तम था ते इम कहे रे, गोशालो जिन नहीं करे अन्याय रे।
सतवादी वीर जिनंद चोवीसमां रे, ए कदेय न बोले मुसावाय रे ॥ ३ ॥
कितरां एक रो सांसो मिटियो नहीं रे, म्हांनें तो समझ पडे नहीं काय रे।
जिण दिन पिण सगलाइ समज्या नही रे, भोल घणी थी लोकां मांय रे ॥ ४ ॥
श्रावक गोसाला रे सुणिया अति घणा रे, इग्यारे लाख इगसठ हजार रे।
वीर रें एक लाख बले उपरे रे, गुणसठ सहंस अधिक विचार रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जद पिण पाखंडी था अति घणा रे, तो हिवडां पिण पापंडी नो जोर रे।
वीर जिनद मुगत गया पछे रे, भरत मे हुओ अधारो घोर रे॥ ६ ॥
तिणमे धर्म रहसी जिनराजरो रे, थोडोसो आग्या नो चमत्कार रे।
झबको परे ने वले मिट जावसी रे, पिण निरंतर नहिं इकवीस हजार रे॥ ७ ॥
अल्प पूजा होसी सुध साध री रे, आगूच वीर गया छे भाष रे।
असाधु री पूजा महिमा अति घणी रे, ठाणा अंग माहे तिणरी साख रे॥ ८ ॥
ऊगे ऊगे ने वले ऊगियो रे, तो आथमिया विन किम उगाय रे।
इण न्याय भवियण नही धर्म सासतो रे, हुय हुय झलपट नें बुझ जाय रे॥ ६ ॥
लिगरा लिंगरी वधसी अति घणा रे, करसी माहो माँहि झगडा राड रे।
जे कोइ काढे तिण मे खूचणो रे, क्रोध कर लडवा नें छे तयार रे॥ १० ॥
चेला चेली करण रा लोभिया रे, एकल मत बांधण सू काम रे।
विकला नें मूंड मूंड भेला करे रे, दिराए ग्रहस्थ ना रोकड दाम रे॥ ११ ॥
पूजरी पदवी नाम धरावसी रे, में छां सासण नायक साम रे।
पिण आचारे ढीला सुध नहिं पालसी रे, नहिं कोइ आतम साधन काम रे॥ १२ ॥
आचार्य नाम धरासी गुण विना रे, पेटभरा ज्यारो परवार रे।
लपटी तो हूसी इद्री पोषवा रे, कपट कर ल्यासी सरस आहार रे॥ १३ ॥
तकसी तो देखी आरा टामला रे, रिगसी ए जाणी जीमणवार रे।
पांत जीमें जिह्वा जासी पाधरा रे, आग्या लोपे हूसी बेकार रे॥ १४ ॥

ढाल : ४

दुहा

दावानल लागो अधिक, वले वाजे वाय अथाय।
अटवी मोटी इंधण घणा, ते किम आग बुजाय ॥ १ ॥
आगा सूं इंधण अलगा करे, वले रहे वाजंतो वाय।
ऊपर जल सूं छांटियां, दावानल मिट जाय ॥ २ ॥
तिम भर जोवन व्रत आदरे, वले डीलमें पुष्टी काय।
अति सरस आहार नित भोगवे, तो विषय बधंती जाय ॥ ३ ॥
अति सरस आहार न भोगवे, वले खीणी पाडे काय।
बुझावे विषेरूप अगन नें, सुमतारस पाणी ल्याय ॥ ४ ॥
विषे वधे तिम आहार न भोगवे, घष्टी पुष्टी न करे काय।
भांत भांत करे निषेधियो, सूत्र सिद्धांतां मांय ॥ ५ ॥
आ भोल पडी मोटी घणी, त्यां जिभ्या दीधी मुकलाय।
खाणे पहरणे चित दियो, इण सबले सरणे आय ॥ ६ ॥
भेष लेइ भगवान रो, खावा लोकां रा माल।
तप जप संजम बाहिरो, कूंदो वण रह्यो लाल ॥ ७ ॥
छद्मस्थ एलाणे ओलखे, ए भेष ले भूला जांय।
तिणरी खबर इण विध परे, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[जीव दया व्रत पालो]

रसगृद्धी ते हिलिया गटके रे, सरस आहार नें कारण भटके।
भेषलेइ आतम नहि हटके रे, त्यांरे चिहूं दिस फांदा लटके ॥ १ ॥
रंगाच्चंगा नें डीलां सनूरा रे, लोहो मांस बध्या नहिं रुडा।
लिया व्रत न पाले पूरा रे, ते सिव रमणी सूं दूरा ॥ २ ॥
चांप चांप नें कीधां आहारो रे, डील फाटे नें बधे विकारो।
त्यारी देही बधे ऊभी नें आडी रे, साथल पीड्यां पडे जाडी ॥ ३ ॥
घृत दूध दही मीठो भावे रे, कारण विण मांगी नें ल्यावे।
लूंदा ल्यांवे तपसा जणायो रे, ए तो पेट भरण रो उपायो रे ॥ ४ ॥

कोरो घृत पीए वीधारी रे, आ जुगती नहिं ब्रह्मचारी।
मरजादा विन करे आहारो रे, तिण लोपी भगवंत कारो॥ ५॥
ताक ताक जाए घर ताजे रे, साधु भेष लियो नहिं लाजे।
पर घर जाय पडगो माडे रे, नहिं दियां भाडां ज्यूं भांडे॥ ६॥
दातां रा करे गुण ग्रामो रे, पारे नहिं दे तिणरी मामो।
करे ग्रहस्थ आगे वाता रे, नहिं वहरावे त्यांरी करे तातां॥ ७॥
श्रावक श्राविका ऊपर ममता रे, सिष्या री नहिं सुमता।
मूंडे वले काल्या दुकाल्या रे, त्यांसूं व्रत न जाए पाल्या॥ ८॥
बांध्यां थानक पकस्या ठिकाणा रे, ग्रहस्थ सूं मोह वंधाणा।
सुखसीलिया साताकारी रे, डूबा साधु नो भेषधारी॥ ९॥
ए लखण कुगुर रा जाणो रे, उत्तम नर हिरदे पिछाणो।
देव गुर में खोटा जिण खाधा रे, तिणनें छे संसार जादा॥ १०॥
एहवा नें गुरकर पूजे रे, समकत विन संवलो न सूझे।
तिणरे छे भारी कर्मो रे, ते किम ओलखे जिन धर्मो॥ ११॥
कुगुरा री झाली पखपातो रे, त्यांनें न्याय री न गमे वातो।
बुध उलटी ने मूढ मिथ्याती रे, साधु वचन सुण्या वले छाती॥ १२॥
धनावे सेठ बेटी नें खायो रे, कुसले राजग्रही आयो।
इम करसी साधु आहारो रे, तो पोंहचे मुगत मझारो रे॥ १३॥

●

ढाल : ५

दुहा

खोटो नांणो नें सांतरों, एकण नोली मांय।
ते भोला रे हाथे दियां, त्यांसूं जूआ किया किम जाय॥ १॥
ज्यूं साधु असाधु लोक में, दोयां रो एक आकार।
भोला भिन्न नहिं लेखवे, ते जाणे नहिं आचार॥ २॥
जिणरी बुध छे निरमली, ते देखे दोयां री चाल।
कुगुरां नें काने करे, साधु वांदे पग झाल॥ ३॥
जे भारीकर्मी जीवडा, ते रह्या कूडी पख झाल।
पिण छिपायी छिपे नहीं, ते सुणजो कुगुर नी चाल॥ ४॥

ढाल

[शादलरी—ए देसी]

ग्रहस्थ लीपे साधु कारणे, वले ऊपर छावे छान।
तिणरी करे अनुमोदना, ए कपट बुगल ज्यूं घ्यान।
ते किम तिरसी संसार नें*॥ १॥
थानक भाडे लियो भोगवे, वले काचो पाणी तिण ठाम।
गछवासी भेला रहे, ए विटलां रो छे काम॥ २॥
मिनष आंतरिया ऊपरे, धन उदके थानक काज।
ते मोल लराय मांहें वसे, त्यां छोडी लोकां री लाज॥ ३॥
वले जागां बांधण कारणे, लेवे अउतरो माल।
तिण जागां मांहें रह्यां, ओ खांपणवालो ख्याल॥ ४॥
लिंगडा लिंगड्यां कारणे, जागां बांधी मठ जेम।
मठवासी ज्यूं मांहें वसे, त्यांनें साधु कहीजे केम॥ ५॥
एहवा थानक भोगव्यां, बुद्धि अकल पत जाय।
भेष भांड्यो भगवान रो, साधु नाम धराय॥ ६॥
ए चाला तो पोते चालवे, काम पड्यां हुवे दूर॥
थानक भायां निमते कहे, कपटी बोले कूर॥ ७॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

गृहस्थ वेलादिक तप कियां, तिण पासे घाल्यो डंड।
भोलां ने पाख्यां भर्म मे, ते हणे जीवां रा झंड ॥ ८ ॥
लाडू करावे करे आमनां, सामग्री मे दराय।
ते रस गृद्धी चेंवे पख्या, आणी आणी खाय ॥ ९ ॥
केइ भेषधारी भूला कहे, पोखो धर्म रे नाम।
श्रावक नें श्राविका भणी, दया पालण रे काम ॥ १० ॥
पछे गृहस्थ साधु श्रावकां तणो, भेलो बांध तूमार।
मोल ल्यावे त्यांरे कारणे, के घरे नीपावे आहार ॥ ११ ॥
तिण घर जाए तेरिया, ज्यूं डोरी ताण्यो स्वान।
ताजे आहार तूटा पडे, ओ पेट भरण रो तान ॥ १२ ॥
ए जीमणरो नाम दया दियो, पिण प्रतख दीसे गोठ।
कावू करवा आपणो, चोडे चलायो खोट ॥ १३ ॥
वले भेष पहरी लोलपी थका, हेरे परघर हाट।
इद्रयां मेली मोकली, त्यांरो परभव मे कुण घाट ॥ १४ ॥
गुरु चेला एक समुदाय में, ते सगला एकण पांत।
आहार पाणी भेला करे, तिणमें क्यूं जाणे भांत ॥ १५ ॥
केइ चेला ने जाण कुसीलिया, त्यांसूं तो तोडे संभोग।
गुरु सूं न तोरे संकता, एतो बात अजोग ॥ १६ ॥
श्री वीर जिनेसर इम कह्यो, भेलो राखे भागल जाण।
तिण गच्छ सूं भेलप करे, ए बूडण रा अहलाण ॥ १७ ॥
कुसीलियां भागल भेला रहे, तिणरो न काढे निकाल।
कूड कपट करता फिरे, वले साधां सिर दे आल ॥ १८ ॥
परससा करे आप आपणी, दोषण देवे ढांक।
भागल भागल मिल गया, किणरी न राखे सांक ॥ १९ ॥
जो एकण नें अलगो करे, तो करे घणा रो उघाड।
पलमों दूर कियां डरे, ओ खोटो नाणो असार ॥ २० ॥
पांच सुमत तीन गुपत मे, दीसे छिदर अनेक।
पांच महाव्रत मांहिलो, आखो न दीसे एक ॥ २१ ॥
ते गुरु करनें पुजावता, आप डूबे ओरा ने डवोय।
इम सांभल नर नारियां, छोडो कुगुरु नें जोय ॥ २२ ॥
भट्टी काढे कलाल तणे घरे, उनो पाणी हुवे तयार।
लिंगडा लिंगडी शहर मे, वांधे मकोडा ज्यं हार ॥ २३ ॥

कदा आगे पाणी नहिं ऊतर्यो, तो तिहांइज ले विसराम।
भरभर ल्यावे लोट पातरा, ठाली कर दे ठाम॥ २४॥
ते पछे फेर भरावे ठामडा, काचो पाणी आण।
ते भारी दोष पिछात सूं, ए बूडण रा अहलाण॥ २५॥
त्यांरे परंपरा में निषेधियो, नहिं वहरणो घरे कलाल।
तिण घर ढूका वहरवा, भांगी परंपरा पाल॥ २६॥
त्यांरे लेखेइ तिण कुल वहरतां, आवे चोमासी नों डंड।
आज्ञा लोप बडा तणी, हूंआ जगत में भंड॥ २७॥
धुर सूं तो कुल जुगतो नहीं, बीजो गृहस्थ ले जावे साथ।
नित नित वहरे ते तीसरो, चोथो दोष पिछात॥ २८॥
वणीमग संकादिक दोषण घणा, पिण चावा दोषण च्यार।
ते लिंगडा लिंगडी टाले नहीं, ते विटल हुआ बेकार॥ २९॥
त्यांमें कितरा एक वहरे नहीं, केइ वहरे तिण घर जाय।
त्यांमें कुण साधु ने कुण चोरटो, ते पिण खबर न काय॥ ३०॥
जो अस्त्री समझे साधां कनें, तो धणी नें देरे लगाय।
भरतार समझ्या नार नें, कुगुरु कुब्द सिखाय॥ ३१॥
सासू बहू मा बेटीयां, वले सगा सबंधीयां मांहि।
त्यांने रागनें वेष सिखावता, भेद घलावे ताहि॥ ३२॥
केइ आवे सुध साधां कनें, तो मतीयां नें कहे आम।
थें वर्जी राखो घर रा मनुष्य नें, जावा मत दो ताम॥ ३३॥
कहे दरसण करवा दो मती, वले सुणवा मत दो वांण।
डराए नें ल्यावो म्हां कनें, ए कुगुर चरित पिछांण॥ ३४॥
त्यांरी अकल लागे केई बापडा, त्यांमें बुद्धि नही लवलेस।
दगधे घर रा माणसां, कर रह्या कूड कलेस॥ ३५॥
केई अपचो कर भूखां मरे, आ खोटा मतरी रेस।
तिणरो दिन छे बांकडो, त्यांरे कुगुर तणो परवेस॥ ३६॥
हलुकरमी डराया डरे नहीं, त्यांनें रुचियो जिणवर धर्म।
चल जाए केयक बापडा, उदे हुआं असुभ कर्म॥ ३७॥
त्यांरा मत तणा घर मांहिलो, एक फिर्यां दुख थाय।
ताजा आहार पांणी कपडा तणी, जांणे रखें पडे अंतराय॥ ३८॥
पेट रे कारण पापीया, त्यांरा घर में घाले बेठ।
कलहो बधारे करे आमनां, ए तो खोटा कुगुर पेठ॥ ३९॥

तिण घर एक समझू हुवें, तो राखे तिणरी आख।
सुध असुध लेवण तणी, आवे मन मे साक ॥ ४० ॥
तिण कारण कुगुर कर रह्या, आमी सामी घमडोल।
तोही आधा ने मूल सूझे नही, जिम तांबा उपर झोल ॥ ४१ ॥
भाग प्रमाणे कुगुर मिल्या, ते कर्म तणो छे दोप।
इम सामल नर नारीया, मत करो मांहो माहि रोप ॥ ४२ ॥

ढाल : ६

दुहा

भेषधारी विगस्या घणा, पांचमां आरा मांय।
नांम धरावे साधु रो, पिण बेठां सरम न काय॥ १॥
खेत खाधो लोकां तणो, पहर नाहर की खाल।
ज्यूं भेष लीयो साधां तणो, पिण चाले गधा री चाल॥ २॥
सरधा में भूला घणा, ते थापे हिंसा धर्म।
वले भिष्ट हुआ आचार थी, बोहला बांधे कर्म॥ ३॥
आभे फाटे थीगरी, कुण छ देवणहार।
ज्यूं गुर सहीत विगडीयो, त्यांरे चिहुं दिस परिया बघार॥ ४॥
चोरी जारी आद दे, नीपजें माठा कर्म।
तोही आंधा जाय पगां पडे, ते मूल न जांणे मर्म॥ ५॥
गुर गुरणी तणा चरित जांणियां, पिण छूटे नहीं पखपात।
तोही निरलज सुध साधां तणी, उठावे अणहूंती बात॥ ६॥
आल देवण आघा घणा, वले डरे नहीं तिल मात।
भूठ बोले मुख बांधनें, ते किम आवे हाथ॥ ७॥
ज्यांरे लाय लागी चिहुं दिसा, रहे न तिणरी सुध।
ज्यूं विणास काले इण भेष री, उपनीं विपरीत बुध॥ ८॥
कुगुर चरित अनंत छें, कहितां नावें पार।
हिवे भव जीवां नें प्रति बोधवा, अल्प कहूं विस्तार॥ ९॥

ढाल

[समरू मन हर्षं तेह]

एक एक तणा दोषण ढांके, अकारज करता नहीं सांके।
त्यांनें कोइ नहीं हटकण वालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ १॥
त्यांरा विटल हुवा चेली चेला, गुर मांहें पिण आवे रेला।
लोपी मरजाद फोडी पालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो॥ २॥
व्रत पचखांण में नही सेठां, ठांम ठांम थांनक मांडे बेठां।
श्री जिणवर सीख दीधी रालो, एहवा भेषधारी पांचमें कालो॥ ३॥

साथे लीयां फिरे पुस्तक पोथा, आचार पालण जावक थोथा।
ते फस रह्या माया जालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ४ ॥
करणी करतूत माहे पोला, वले अरड वरड मिरषा वोला।
त्यांरे भूठ तणो नही टालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ५ ॥
विकलां ने मूड कीया भेला, ते नाच रह्या कुबदी खेला।
जाणें भरभोलिया तणी मालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ६ ॥
त्यांरा श्रावक पिण केइ मूढ मती, पेलारी बात करे अछती।
परभव डर नाणे देता आलो, एहवा भेपधारी पाच मे कालो ॥ ७ ॥
नाम घरावे साघ सती, पिण लषण न दीसे एक रती।
मूढे भूठ तणो वेह रह्यो नालो, एहवा भेषघारी पाच मे कालो ॥ ८ ॥
केई पदवीघर बाजे मोटा, चलगत उघी लषणा खोटा।
कण रहीत एकत परालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ६ ॥
केइक लिंगडा ने लिंगडो, त्यारी सुमत गुपत धूरसू बिगडी।
अतर नही घाल्यो बिचालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १० ॥
एक टोला मे तायफा रे घणा, तायफा तायफा मे भागल पणा।
कुण काढे त्यारो निकालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ११ ॥
उघाड माहोमांहि केम करे, पाणी सगलां रो माहि मरे।
लिंगडा लिगड्या रो एक ढालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १२ ॥
भेष मांहे करे चोरी जारी, त्यानें गृहस्थ बिचे कहिजे भारी।
त्यांरे केरे लागा मूरख बालो, एहवा भेषघारी पाच मे कालो ॥ १३ ॥
तिणरो करे रह्या गालागोलो, त्यारो बिगड गयो जावक टोलो।
त्या में कुकर्म रो वधियो चालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ १४ ॥
एहवा कर्म करे साघु बाजे, निरलजा मूल नही लाजे।
निकाल काढ्या उठे भालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १५ ॥
त्यारो जथातत्थ उघाड करे, तो परिवार सहित तिणसू रे लडे।
भगडो भाले बाधे चालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १६ ॥
जब आफे लोकां मे उघाड पडे, किण एक भागल ने दूर करे।
तिणनें प्रायछित विन ले माहे बालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ १७ ॥
एतो कपट करे लोकिक राखी, इतरी न कियां जाय नाकी।
आहार पाणी आडो आवे तालो, एहवा भेपधारी पाच मे कालो ॥ १८ ॥
इम कर कर ने राखे शेखी, त्याने केवलज्ञानी रह्या देखी।
एतो पेटतणी करे प्रतिपालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १६ ॥

जो आप तणा किरतब देखे, तो ऊंचो सुर बोले किण लेखे।
समझे नहि ग्यान रहित बालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २० ॥
त्यांमें अठारेइ पाप तणा खाता, तो पिण मूरख बोले ताता।
अग्यानी आपो नहि संभालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ २१ ॥
लष्टपुष्टनें देह राखे चंगी, त्यांमें मिले रे माठी चोभंगी।
तोही बोले आल नें पंपालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २२ ॥
मोची डूंब धोबी नें पींजारे, ठगा सूं राज कियो च्यारे।
ए दिष्टंत लीजे संभालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २३ ॥
त्यांनें प्रगट कियां मांडे कजिया, ज्यांरा विगड गया साधु अजिया।
तिणसूं सावां रे सिर देवे आलो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ २४ ॥
ते परिवार सहित नरके जासी, पछे चिहुं गति में भीका खासी।
भमसी अरट तणी ज्यूं घडमालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ २५ ॥
में सुणिया था वीर नां वेणा, ते प्रत्यख देख लिया नेणा।
सांसो हुवे तो सूत्र संभालो, एहवा भेषधरी पांच में कालो ॥ २६ ॥
अंधारा सूं चोर रहै राजी, जेहवी कुगुरु तणी चहूरवाजी।
कोइ आय पडे भमर जालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २७ ॥
वैराग घट्यो ने भेष वधियो, हाथ्यांरो भार गधा लदियो।
थक गया बोज दियो रालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २८ ॥
घुर सूं केइ नवतत्व नही भण्या, तेतो सांग पहरी मुनिराज बण्या।
ज्यूं नाहर री खाल पहरी स्यालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २९ ॥
मांहों मांहि निजर पड्यां खीजे, त्यांनें उपमा स्वान तणी दीजे।
बतलायां करे मुंह विकरालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३० ॥
केतला एक अदत्त लेवण लागा, कितला एक चोथा सूं भागा।
निकलियो भर्म पडियो देवालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३१ ॥
चोरां मांहें चोर जाय बस्या, भागलां में भागल आय धस्या।
कचरा कूटा ज्यूं दीसे ओ गालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३२ ॥
रसगृद्धी ताके घर नें हाट, वले अवसर देख पाडे वाट।
डाकण ज्यूं दातार राखे ठालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३३ ॥
इण भेष तणा कूडकपट तणी, कितली एक कहूं हो त्रिभुवन धणी।
छलिया रां तणों नहि रुखवालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३४ ॥
त्यांनें पिण गुरु जाणी पूजे, समकित विन संवलो नहि सूझे।
अभितर फूटी आयो जालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३५ ॥

तिणरी दिस छे सगली काणी, ते खांच आपण मे ले ताणी।
अग्नि ज्यू ऊठे अंतर झालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ३६ ॥
समचे कह्यां पिण निंदा जाणे, बुद्धी भिष्ट थयां उलटी ताणे।
ते कर रह्या झूठी झखालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ३७ ॥
जे अन्याय मारग रा पखपाती, ज्यांरी सुण सुण बल उठे छाती।
त्यानें कुगुरु तणी लागी लालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ३८ ॥
पखपात नही त्यारे मन भावे, पिण चोर चादणो किम सुहावे।
लारे बाहर रा पूर लागा लालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ३९ ॥
ए तो भाव आचारंग मे चाल्या, केइ ठाणाअग माँहि सूं घाल्या।
विकला नें वीर दिया टालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ४० ॥
वले अंग उपग मूल नें छेद, तिण माहै पिण चाल्या भेद।
ओलखाय कियो वीर उजवालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ४१ ॥
कितरा एक चरित काने सुणिया, कितरा एक सूतर सू गुणिया।
केइ प्रतख देख लिया न्हालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ४२ ॥
सूतर तणो लेइ सरणो, पाषड पथ रो कियो निरणो।
खोटा नें उत्तम दे विडालो, एहवा विरला पाच में कालो ॥ ४३ ॥
एतो कुगुर तणी छे निसाणी, सुण हरष धरे उत्तम प्राणी।
अमृत ज्यूं लागे रसालो, एहवा विरला पांच में कालो ॥ ४४ ॥



दुहा

ढाल : ७

केई भेषधारी भूला थका, ते कर रह्या उंधी तांण।
इविरत बतावें साध रे, ते सूतर अर्थ अजांण॥ १॥
त्यां साधपणो नही ओलख्यो, ते भूला भर्म गिवार।
सर्व सावद्य त्याग्यों मुख सूं कहें, वले पाप रो कहें आगार॥ २॥
आहार पांणी कपडादिक उपरे, उवे सदा रह्या मुरभाय।
एहवा भेषधास्यां रे इविरत खरी, पिण साधां रें इवरत न कांय॥ ३॥
च्यार गुणठांणा इविरत कही, तठें विरत न दीसें लिगार।
देस विरत गुणठांणें पांच मे, आगें सर्व विरत अणगार॥ ४॥
जो साधां रे इविरत हुवें, तो सर्व बिरती कुण होय।
त्यांरो भाव भेद परगट करूं, सांभलजो सहु कोय॥ ५॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आ०]

चौवीसमां श्री वीर जिणेसर, निरदोष आहार आंणी नें खायो।
सुध परिणामे उदर में उतास्यो, त्यांनेंइ मूरख पाप बतायो।
इण पापंड मतरो निरणो कीजो* ॥ १॥

अनत चोबीसी मुगत गइ, ते आहार ल्याया था दोषण टालो।
तिणमें अग्यांनी पाप बताए, सगला रे सिर दीधों आलो॥ २॥

सर्व सावद्य जोग रा त्याग कीयां ते, सर्व विरत सुध साध कहावें।
तिरण तारण पुरषां रे अग्यांनी, इविरत रो आगार बतावें॥ ३॥

गोतम आदि दे साध अनंता, साधवीयां रो छेह न पारो।
सगला रो आहार अधर्म में घाल्यो, तिण आंख मींची नें कीयों अंधारो॥ ४॥

साध रो जनम हूओ जिण दिन थी, कल्पें ते वस्तु वहरीनें ल्यावें।
ते पिण अरिहंत री आगना सूं, इणमेइ दूष्टी पाप बतावें॥ ५॥

वस्त्र पातर रजोहरणादिक, साध रा उपध सूतर में चाल्या।
भगवंत री आग्या सूं राखें, ते अधर्म मांहें अग्यांनी घाल्या॥ ६॥

दसवीकालक ठांणां अंग में, प्रश्न व्याकरण उवाइ मांह्यों।
धर्म उपध साध रा विरत में, तिण मांहें मूरख पाप बतायो॥ ७॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

किण ही ग्रहस्थ नीलोतरी ने त्यागी, जीवे ज्या लग आण वेरागो।
उ साधपणो लेइ इविरत सरधे, तो ववेक विकल खावा कांय लागो ॥ ८ ॥
अधर्म जाणें नीलोतरी खाधा, तो पचखाण भाग्यो किण लेखें।
घर मे थका जावजीव त्यागी थी, तिण साह्मो मूरख काय नही देखे ॥ ६ ॥
ग्रहस्थ जे जे वस्तु त्यागी ते, अधर्म रो मूल इविरत जांणों।
ते साधपणो लेइ सेवा लागो, तो क्यू नही पाले लीयां पचखाणो ॥ १० ॥
जे इविरत सरधें नें सूस न पाले, ते भागल छे भारीकर्मों।
मारग छोडीनें उजर पडीया, साध आहार कीया मे सरधें अधर्मो ॥ ११ ॥
करें वीयावच चेला गुररी, करम तणी कोड तेह खपावे।
तीर्थंकर गोत वंधें उतकष्टो, पिण गुर नें तो मूरख पाप बतावें ॥ १२ ॥
दसवीस चेला पडिकमणो करनें, गुर री वीयावच करवा आवे।
ते गुर नें पाप लगाए अग्यांनी, दुरगत माहे काय पोहचावें ॥ १३ ॥
गुर नें पाप लागे वीयावच कराया, ए सूतर माहे कठे नही चाल्यो।
मुढ मती जीव भारीकरमा, ए पिण घोचो अणहुतों घाल्यो ॥ १४ ॥
गुर ने पाप सूं भेलो कीया मे, चेला रा करम कटें किण लेखे।
अभ्यंतर फूटी ने अंध थया ते, सूतर सांह्मो मूल न देखे ॥ १५ ॥
साध माहोमाही देवें लेवे, वस्त्र पातर आहार ने पाणी।
ते पिण लीधा मे पाप बतावे, एहवी कुपातर बोलें वाणी ॥ १६ ॥
दातार ने धर्म साधां ने वेहराया, पिण साध वेंहरे हुवे पाप सूं भारी।
दातार तरीयो साधु डवोए, आ पिण सरधा कहे भेषधारी ॥ १७ ॥
जो पाप लागें साध आहार कीया में, तिण पाप रो साफ्त दीयो दातार।
तिरण री आसा राखे किण लेखें, भूला रे भूला थे मूढ गिंवार ॥ १८ ॥
साध तो पाप अठारेइ त्याग्या, सुध छे तिणरी सुमति ने गुपती।
दातार कने सुध जाच लीया मे, पाप कठी सू लागो रे कुमती ॥ १६ ॥
गुर दिख्या देइ सिख सिषणी करें ते, निरजरा तणा भेद माहे चाल्या।
मोह मिथ्यात सूं भारीकरमा, ते पिण परिग्रहा माहे घाल्या ॥ २० ॥
छठें गुणठांणे परमाद कहीनें, साधा रे इविरत थापें खावारी।
पूछ्यां कहे मे सर्व विरती छां, ओ पिण भूठ बोले भेषधारी ॥ २१ ॥
छठें गुणठांणे परमाद कह्यो ते, किणहीक वेला लागतो जाणो।
ते विषे कषाय उसभ जोग आयां, पिण मुढ मती करें उंघी ताणो ॥ २२ ॥
परमाद इविरत कहे आहार उपध सू, ते कर रह्या कुमती कूडी विषवादो।
आहार उपध केवली पिण आंणें, ते कठी गयो त्यारो परमादो ॥ २३ ॥

अप्रमादी कह्या सातमें गुणठाणें, परमाद नहीं तिण गुण ठांणा आगें।
उवे पिण आहार उपाध भोगवता, तो त्यांनें परमाद क्यूं नहीं लागें ॥ २४ ॥
छदमस्थ आचरें केवलीए आचरीयों, केवली ए ताग्यो ते छदमस्थ त्यागें।
आहार उपध केवली ज्यूं भोगवीयां, तिण साध नें परमाद किण विध लागें ॥ २५ ॥
साध आहार करतां चारित कुसले, सुध परिणांमा सूं कटें आगला करमों।
जब उंध मती कोइ अवलो बोलें, कहे घणों खावो ज्यूं घणों हुवे धर्मो ॥ २६ ॥
पोहर रात तांइ साध उंचें सब्दें, धर्मकथा कहे मोटें मंडाणो।
उण उंध मती री सरधा रे लेखें, आखी रात में करणो वखांणो ॥ २७ ॥
जेंणा सूं साध करे पडिलेंहण, ते काटण करम आत्म नें उधरणी।
उण उधमती री सरधा रे लेखें, आखोइ दिन पडिलेहण करणी ॥ २८ ॥
मरजादा सूं आहार साध नें करणो, मरजादा सूं करणो वखांणो।
मरजादा सूं पडिलेहण करणी, समझो रें समझो थे मूंढ अयांणो ॥ २९ ॥
ज्यूं साध नें आहार छ कारणें करणो, उवें घणों घणो खासी किण लेखें।
ए छवीसमो उत्तराधेन मांहें, वले छठो ठांणों मूंढ क्यूं नहीं देखें ॥ ३० ॥
जो धर्म हुवें साध आहार कीयां में, तो क्यांनें करें आहार ना पचखांणो।
पाप जांणेंनें त्याग करें छें, उलट बुधी बोले एहवी वांणो ॥ ३१ ॥
साध काउसग में त्यागें हालवो चालवो, वले मुख सूं न बोलें निरवद वांणो।
उण उलट बुधी री सरधा रे लेखें, अें पिण पाप तणा पचखांणो ॥ ३२ ॥
कोइ बोलण रा त्याग करें गुण साझें, ते धर्मकथा मांडी न करें वखांणो।
उण उलट बुधी री सरधा रे लेखें, अें पिण पाप तणा पचखांणो ॥ ३३ ॥
कोइ साध साधां नें आहार देवण रा, त्याग करें मन उछरंग आंणो।
उण उलट बुधी री सरधा रे लेखें, अें पिण पाप तणा पचखांणो ॥ ३४ ॥
कोइ साध साधां री न करें वीयावच, त्याग करें मन उरंग आंणो।
उण उलट बुधी री सरधा रे लेखें, अें पिण पाप तणा पचखांणो ॥ ३५ ॥
सर्व मूलगुण में सर्व सावद्य त्याग्यों, तिणसूं नवा पाप न लागें आंणो।
आगला करम काटणनें साध नें, उत्तर गुण छें दस विध पचखांणो।
आ सरधा श्री जिणवर भाषी* ॥ ३६ ॥

साध उपवास बेलादिक करें संथारो, कोइ साध लेवें नितरो नित आहारो।
पाप रो त्याग बेहूं रे सरिषो, ओं तप तणों छें भेदजन्या रो ॥ ३७ ॥
जेंणा सूं चाल्यां जेंणा सूं उभां, जेंणा सूं बेंठा जेंणा सूं सुवंता।
जेंणा सूं भोजन कीयां जेंणा सूं बोल्यां, तिण साध नें पाप न कह्यों भगवंत ॥ ३८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए दसवीकालक चोथें अधेने, आठमी गाथा अरिहंत भाषी।
छ बोल जेणा सूं साध कीयां मे, पाप कहे भारीकर्मां अन्हाखी ॥ ३९ ॥
निरवद गोचरी रखेसरां री, मोख री साधन भगवान भाषी।
ए दसवीकालक पांचमें अधेने बांणूमी गाथा बोले साषी ॥ ४० ॥
सुध आहार वहरया साध सद गति जावें, निरदोष दीया सुद गति जावे दाता।
ए दसवीकालक पांचमे अधेने, पेंहला उदेसा री छेंहली गाथा ॥ ४१ ॥
सात करम साध ढीला पाडे, सुध आहार करे साध तिण कालो।
ए भगवती सूतर पेंहले सुतस्कधे, नवमो उदेसो जोय संभालो ॥ ४२ ॥
आहार करे गुर री आगना सूं, तिण साध ने वीर कही छें मोखो।
अठारमो अधेन गिनाता रो जोए, सांसो काढी मेटो मन रो धोखो ॥ ४३ ॥
सब्द रूप गन्ध रस फरस री, साधा रे इविरत भूल न कायो।
ए सुयगडाग अधेन अठारमें, वले उवाइ सूतर माह्यो ॥ ४४ ॥
साधा रे इविरत कहे पाषंडी, तिण कुमती री सगत दूर निवारो।
ए सुण सुण ने उत्तम नर नारी, सर्व विरती गुर माथे धारो ॥ ४५ ॥



ढाल : ८

दुहा

आहार उपध ने उपासरों, भोगवें दोष सहीत।
भिष्ट थया आचार सूं, त्यां छोडी साधां री रीत ॥ १ ॥
आहार उपधने उपाश्रो, असुध दें दातार।
ते गुरां समेत दुरगत परें, खाअें अनंती मार ॥ २ ॥
सहु दोषां में दोष मोटकों, आधाकर्मी जांण।
एहवा थांनकादिक भोगवें, त्यां भांगी जिणवर आंण ॥ ३ ॥
जिण आगना पालें नही, ते भागल री छें पांत।
ते कुग कुग अकार्य कर रह्या, ते सुणजो कर खांत ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिन आगन्या मे]

केई भेषधारी कहे म्हे जीव बचावां, ते करें अन्हाखी अणहूंता कूका।
ते साधपणा रो नांम धराए, उलटा छ काय मरावण ढूका।
इण पाषंड मतरो निरणो कीजों* ॥ १ ॥
पीलू जितरी मुरड माटी में, असंख्याता जीव तेहीज बतावें।
मांहे बुगलध्यानी मुनीसर बेंठा, उपर थाटें थाटें मुरड नखावें ॥ २ ॥
साधां रे कारण थांनक लीपे, पीली पांणी रा जीवां नें मारी।
जो उण थांनक में साध रहें तो, तिणनें तो वीर कह्यों भेषधारी ॥ ३ ॥
कूंटा सांकल करावे थांनक कारण, वले खाती सिलावट बेठा कमावें।
केंलू कूटीजे ने चूंनो दरीजें, अे पिण चाला कुगुर चलावें ॥ ४ ॥
एक आंकुरा वनसपती में, जीव अनता तो मुख सूं बतावे।
जो थांनक उपर नीलो उगें तो, सांनीकर दुष्टी जड सूं कढावें ॥ ५ ॥
दरतां लीपतां थांनक चूणतां, कीड्यां मांकादिक मरे अथागो।
डरें नहीं दुष्टी अकार्य करता, त्यांरे करम जोगे डंक कुगुरां रो लागो ॥ ६ ॥
वले छपरा छावंता ने केंलू फेरतां, तठें नीलणफूलण जीव मरें अणंता।
जमीया जाल उखेलें अग्यांनी, ते पिण कुगुरां रे काज हणंता ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए थांनक काजे हणे जीव दुष्टी, हणावण वालो दूजे करण जांणो।
सरावण वालो तीजें करण डूबो, पछे इविरत लेखे वरोवर जांणो॥ ८॥
जिण थांनक करावण गरथ दीयो ते, सर्व हिंसा रो कहीजे नायक।
धर्म काजे दुष्टी जीव हणाए, अनत जीवां रो हुवो दुखदायक॥ ९॥
अनंता जीव मारे थांनक कीधो, वले दिन दिन अनत मरे छे आगे।
भेषधारयां सहीत श्रावक ने पूछीजे, इण थानक रो पाप किण किण ने लागें॥ १०॥
कोइ श्रावक राते रोछार सूअे तो, तिणने पाप लागो कहे छे विमासी।
ओ थानक सदाइ रोछार रहे छे, तिण पाप थी दुरगत कुण कुण जासी॥ ११॥
मठवासी ज्यूं तिणमे मूरख रख्या छे, वले थांनकरी राखे धणीयापो।
सार सभाल करे परीयां धूरीयां, तिणने लागे छें निरंतर पापो॥ १२॥
कोइ पूछे तो कूड वोले कपटी, श्रावका रे काजे कीधो वतावे।
जो साचो हुवे तो माहे रहणो त्यांगे, पछे कुण कुण श्रावक थांनक करावे॥ १३॥
छकाय हणीने थानक कीधो, ते तो थांनक छे आधाकर्मी।
तिण थांनक मे साध रहे तो, धर्म सूं भिष्ट ने कहीजें अधर्मी॥ १४॥
वले ग्रहस्थ कह्यो तिणने वीर जिणेसर, महासावद्य किरिया लागे भारी।
आचारग दूजे श्रुतकंधे, भेपरे लेखे कह्यो भेपधारी॥ १५॥
आधाकर्मी थांनक मे साध रहे ते, नरक निगोद मे झीका खावे।
ए भाव भगोती मे वीर कह्या छे, वले चिहुं गत माहे घणो दुख पावें॥ १६॥
साध रे कारण थांनक करावे, ते गर्भमें आडो आवें दाता।
त्याने कापे कापे काढे नान्हा काता, वले नरकां मे मार अनती खाता॥ १७॥
धन रे कारण जीव हणे त्याने, मदवुधी कह्या दसमे अगो।
दयारी ठोर हिसा ने थापी, डूबा रे डूबा थे कुगुरां रे सगो॥॥ १८॥
धर्म हेते हिंसा कीयां समकत जावे, वले जनम मरण दुख वधे अथायो।
ए वीर वचन साचा कर सरदो, पेला अधेन आचारंग माह्यो॥ १९॥
इम साभल ने उत्तम नरनारी, देवगुर धर्म काजे हिंसा नही कीजे।
आहार उपध सेज्या संथारो, निरदोष हुवे तो देइ लाहो लीजे॥ २०॥
न्याती अन्याती श्रावक अश्रावक ने, आधी आखी राति थानक मे वसावे।
नसीत रे आठमे उदेसे, च्यार महीनां रो चारित जावे॥ २१॥
वासा रूप रहे तिणनें नही नषेधे, कोइ नषेध्या पछेइ रहे जोरीदावे।
तिण साथे वारे जाअे साथे आवे पाछो, तिणनेइ डंड चोमासी आवे॥ २२॥
सिधत रा पाठमें वीर नषेध्यो, केइ भिष्ट आचारी कहे रहणों चाल्यो।
उवें सूतर रो नामलेइ झूठ वोले, ओ अर्थमे घोचो अणहूतो घाल्यो॥ २३॥

कूडा कूडा अर्थ लोकां नें वचाएं, आप डूबें करें ओरां नें भारी।
अणहुंता अर्थ सूं पाठ उथापें, जो टांकों झलें तो हुवें अनंत संसारी ॥ २४ ॥
उदेसीक असणादिक भोगवें ते, वले मोल लीयो उपधादिक आहारो।
वले नितपिंड भोगवें एकण घरनो, एहवा साध जासी नरक मझारो ॥ २५ ॥
एतो भाव कह्या उतराधेन मांहें, वीसमां अधेन में काढ्यो निकालो।
त्यांनें पिण गुर जांणेंनें वांदें अग्यांनी, त्यांरी अभितर फूटी आया करम जालो ॥ २६ ॥
गांमवारें उतरीयो कटक सथवाडो, तिहां गोचरी जावेंतो पाछो आवें।
कोइ जिण आगना लोपी रात रहें तों, च्यार महीनां रो चारित जावें ॥ २७ ॥
एतो वेतकल्प रे तीजें उदेसें, सावनें कटक मांहें न रहणो रातो।
कोइ रातें रही वले दोष न सरधें, तिण मूरख री मांनें मूरख बातो ॥ २८ ॥
एहवा भारी भारी दोष जांणनें सेवें, वले बतलांया बोलें नही सूधा।
ते समझाया, समझें नही मूरख, जिण आगना लोपी नें पडीया उंधा ॥ २९ ॥
एहवा भेषधारी साध रा भेष मांहें, ते तो आप डूबें ओरां नें डबोवें।
त्यांनें वांदें पूजें संतगुर जांणेंनें, ते पिण मानव रो भव खोवें ॥ ३० ॥
उसभ करम उदें सूं संवलो न सूझें, त्यांनें गुर मिलीया छें हीण आचारी।
त्यांरी सेवा भगत कीयां ए फल लागें, टांको झले तो हुवें अनंत संसारी ॥ ३१ ॥
इम सांभलनें उत्तम नरनारी, एहवा भेषधार्‍यां सूं रहजो दूरा।
साधां री सेवा करें चित्त चोखें, ते तो चुतर विचषण प्रवीण पूरा ॥ ३२ ॥

ढाल : ६

दुहा

भेषधारी भूला फिरें, त्यारें घोर रुदर मिथ्यात।
वले भिष्ट थया आचार थी, त्यांरी भोला करें पखपात ॥ १ ॥
आहार उपधि ने उपाश्रो, असुध भोगावें जांण।
त्यासूं आचार री चरचा कीयां, तो लागें जहर समांण ॥ २ ॥
वले जीव हिंसा सू डरे नहीं, सके नही करता अकाज।
वले धर्म कहे हिंसा कीयां, नाणे मन माहे लाज ॥ ३ ॥
पिण भोला ने खबर पडे नही, चोडें आचार री वात।
थोडीसी परगट करूं, ते सुणजो विख्यात ॥ ४ ॥

ढाल

[देवदानव तीथकर गणधर]

आधाकरमी थानक माहे साध रहे तो, पेंहलो महावरत भागें।
वले दया रहीत कह्यो सूतर भगोती मे, अनंत जनम मरण करसी आगें रे मुनिवर।
जीव दया विरत पालो* ॥ १ ॥
वले सर्व सावद्य रा त्याग कहे तो, दूजोइ माहावरत भागो।
जो उ कहे थांनक म्हारे काज न कीधो, तो कपट सहीत भूठ लागो रे ॥ मु० जी० २ ॥
जे जीव मूआ त्यां सरीर न आप्यो, तिणसूं अदत उण जीवां रो लागो।
वले आगनां लोपी श्री अरिहत री, तिणसूं तीजोइ माहावरत भागो रे ॥ ३ ॥
तिण थांनक नें आपणो कर राखें, वले ममता रहे नित लागी।
मठवासी ज्यूं माहे वसे तो, पांचमोइ गयो विरत भागी रे ॥ ४ ॥
बाकी चोथो छठो विरत इण विध भागा, आचार कुसील रे लेखें।
एहवा भागल फिरें साध रा भेषमे, त्याने बुधवंत ग्यान सूं देखें रे ॥ ५ ॥
एक काय हणे तिणनें उतकष्टे भागे, हिंसा छकाय री लागे।
ज्यूं एक विरत भाग्यां उतकष्ट भागे, विरत छहूंइ भागें रे ॥ ६ ॥
ए आचारग रे दूजें अधेनें, छठो उदेसो सभालो।
ए भाव सुणेने हिये विमासो, मत बोलो आल पंपालो रे ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इणसूं दोष मोटां मोटां सेवें, साध रा भेष मझारो।
कोइ चुतर विचषण जांण होसी ते, थांनें किम सरधें अणगारो रे॥ ८॥
वले दोष बयांलीस भाख्या सूतर में, बावन कह्या अणाचार।
यां मांहिला दोष सेव्यां सेवायां, माहावरतां में परसी वघार रे॥ ९॥
कोइ थानक निमतें गरथ दे तिणनें, मुख सूं मतीय सरावों।
आप समांणा छ काय जीवां नें, सांनीकर कांय मरावो रे॥ १०॥
थांनक करावें त्यांनें धर्म कहें नें, भोलां नें मत भरमावो।
आप रहिवानें जायगां रे कारण, जीवां नें मतीय मरावो रे॥ ११॥
साधां रें कारण जीव हणें त्यांरे, हुसी भूंडा सूं भूंडो।
जो उ साधु थइ उण जायगां में रहसी तो, साधपणो उणरोइ बूडो रे॥ १२॥
जिण गरथ दीयो जिण सूं जीव मूंआ त्यांरो, उतरा जीवांरो उणनें पापो।
वले धर्म जांणें तो पाप अठारमों, तिणसूं होसी घणो संतापो रे॥ १३॥
साध काजें दडें लीपें छपरा छावें, वले जीव अनेक विध मारें।
आप डूबे वेर बांधें जीवां सूं, वले गुर रो जनम विगाडे रे॥ १४॥
थे धर्म ठिकांणें जीव हणों छो, तो दया किसी ठोड पालो।
कुगुरां रा भरमाया आतमा नें, कांय लगावो कालो रे॥ १५॥
रात अंधारी में जीव न सूझें, जब आडा म जडो किंवाडो।
छ कायां रा पीहर वाजो तो, हाथा सूं जीव म मारो रे॥ १६॥
जो थांनें साची सीख न लागें, तो मतल्यों साधवीयां रो सरणो।
साध नें रहणों दुवार उघाडें, साधवीयां नें चाल्यो जडणो रे॥ १७॥
जो गृहस्थ साथे मेलो संदेसो, जब मारी जासी छ कायो।
उ जोयां विनां चाले मारग मांहे, तो एहवो म करो अन्यायो रे॥ १८॥
साधपणो थांसूं सझतो न दीसें, तो श्रावक नांम धरावो।
सगत सारु वरत चोखा पालो, दोषण मतीय लगावो रे॥ १९॥
आचार थांसूं पलतो न दीसें, तो आरा रे माथें मत न्हांखों।
भगवंत रा केडायत वाजे, झूठ बोलता क्यूं नहीं सांको रे॥ २०॥
थे विरत विहूणा साध वाजो, तो ही रह्या लोकां में पूजाय।
ठाला वादल ज्यूं थोथा गाजो, ओं मोनें इचर्य थाय रे॥ २१॥
इत्यादिक आचार में हीणां, ते पूरा केम कहवायो।
हिंसा मांहें धर्म परूप्यो, थांनें ते पिण खबर न कांयो रे॥ २२॥
तेलो करें तिणनें तीनां दिनां लग, कोइ उनोपांणी कर पायो।
तिणनें तो आगली सरधा रें लेखे, थे एकंत पाप बतायो रे॥ २३॥

तिणनें चोथे दिन आरंभ करने, छ काय हणीनें जीमायो।
तिण मांहे मिश्र धर्म बतावो, ते किण विध मिलसी न्यायो रे॥ २४॥
तेला मे उनो पाणी कर पावें, तिणमे तो पाप बतायो।
चोथें दिन पोख्यो ते हिसा घणीं करे, तिणमे मिश्र किहा थी थायो रे॥ २५॥
ओ मिश्र परूप्यो ते थारें लेखे, आधो न चालें कोय।
थे हिंसा माहे धर्म म थापो, सूतर सांह्मों जोय रे॥ २६॥
अर्थ अनर्थ धर्म जाणीनें, छकाय हणे मदबुधी।
धर्म रे कारण जीव हणे त्यारी, सरधा घणी छे उंधी॥ २७॥
सूइ नाके सिंधर पावे, कहो किम आगो पेसें।
ज्यूं हिंसा माहे धर्म परूपें, ते सालोसाल न वेसें रे॥ २८॥
ए समचें आचार साधरो बतायो, तिणमे राग धेख मत जांणो।
थे सुण सुणनें समता भाव राखो, थे म करो खाचातांणो रे॥ २९॥
पीत पुराणी थी थासूं पेहली, तिणसूं भिन भिन कर समभावूं।
जो थारा मनमे संका पडें तो, सूतर काढ बतावूं रे॥ ३०॥
समत अठारे वरस तेतीसें, मेडता सहर मझारो।
वेंसाख विद नवमीं दिन थाने, दीधी सीखावण हितकारो रे॥ ३१॥

ढाल : १०

दुहा

तालपुट विष पीधां थकां, जूदा हुवें जीव काय।
कुगुर नें कोइ गुर करें, ते चिहुं गति गोता खाय॥ १॥
कुगुर कुपातर अति बूरा, भाख्यो श्री भगवांन।
त्यांनें माठी माठी देउं ओपमा, ते सुणो सुरत दे कांन॥ २॥

ढाल

[वीर सुणो मोरी वीनती]

विष पीधों निरणें कोठें, पवन भूम्यो हो वले तिणहिज ठांम।
नहीं ओषध नहीं गारडू, जिवण रो हो तिनरें काठो कांम।
लखण सुणो कुगुरां तणां* ॥ १॥
विष जिम छें मिथ्यात अनादरो, सर्प जेहवा हो कुगुरां रा डंक जांण।
जहर सगलेइ परगम्यों, नहीं वांछेंहो सुणवा साधां री वांण॥ २॥
कदा सुणें तो सरधें नहीं, विण समझ्यां हो करें उंधी तांण।
साध श्रावक धर्म न ओलख्यों, सावद्य निरवद हो करणी रा अजांण॥ ३॥
सनीपात फोलो घट तेहनें, घणों भिडकें हो पायां मिश्री ने दूध।
इम साध वचन सुणीयां थकां, बक उठें हो मिथ्याती विण सुध॥ ४॥
केइ अग्यांनी इम कहें, म्हांरे तो हो घणा री परतीत।
ते केडें लागा कुगुरां तणे, समभण री हो न दीसें कांइ रीत॥ ५॥
जाजम विछाइ कूवा उपरें, चिहूं कांनी रे मेल्यों उपर भार।
भोला वेंसे तिण उपरें, ते डूब मरें रे तिण कूवा मभार॥ ६॥
तिम कुगुर छें कूवा सारिषा, जाजम सम रे कनें साव रो भेष।
त्यांनें गुर लेखव वंदणा करें, ते डूबें रे मूरख अंध अदेख रे॥ ७॥
कुगुर भडभूंजा सारिषा, त्यांरी सरधा हो खोटी भाड समांण।
भारीकरमां जीव चिणा सारिषा, त्यांनें भोखे हो खोटी सरधा में आंण॥ ८॥
चोरी जारी करता लाजें नहीं, ते किम लाजें हो मूरख देता आल।
केई भेषधारी छें एहवा, कर रह्या हो पापी भूठी भखाल॥ ९॥
एहवा भेषधार्‍यां नें छेडव्यां, बक उठें हो वोलें आल पंपाल।
कजीया कलेस करें घणां, नहीं संकें हो देता कूडा आल॥ १०॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

लोक सुणे वखांण रात रो, जब जाए हो पाषड पथ उठ।
जब भेषधारी कुडता थका, ते तो बोलें हो पापी किण विध भूठ ॥ ११ ॥
परउपगार जांणने, साध करे हो रात रो वखांण।
तिणमें कहें दोष निसंक सू, ते भेषधारी हो एहवा मूंढ अयांण ॥ १२ ॥
रात तणो वखाण निषेधीयो, भेषधास्या हो मूरखां बेफाम।
ते चोडे भूठ चलावीयो, लेइ लेइ हो भगवंत रो नांम ॥ १३ ॥
जो सूतर मे भगवंत वरजीयो, रात तणो नही करणो वखाण।
साचा हुवें तो सूतर मे बताय दो, नही तो बूडो क्यू हो कूडी कर ताण ॥ १४ ॥
रात तणो वखांण करणो नही, सूतर माहे हो नही वरज्यो साख्यात।
भेषधास्यां भूठ चलावीयो, त्यारी माने हो कोइ मूरख बात ॥ १५ ॥
दोष जाणे वखांण राते कीया, तो कांय करें हो पोतें राते वखाण।
पोते साध नांम धराय नें, कांय बूडे हो मूरख जाण जाण ॥ १६ ॥
इम कह्या जाव न उपजे, जब बोले हो मूरख उंधी वांण।
कहे म्हे दोष सेवां जाण जांणनें, पिण थानें हो नही करणो वखांण ॥ १७ ॥
पोते भागल दोषीला ठहरने, निषेधो हो रात तणो वखाण।
एहवा भेषधारी सुध बुध विनां, अणहूती हो लीधी गला में ताण ॥ १८ ॥
कोइ नाक काटे आपरो, पेलाने हो कुसावण करवा काज।
एहवा मूरख छें मानवी, नकटा हुवेतां हो मूरख नांणी लाज ॥ १९ ॥
ज्यूं साधां नें दोषीला थापवा, भेषधारी हो दोषीला ठहस्या आप।
नकटा तणी त्यांनें ओपमा, त्यारे होसी हो भवभव मे संताप ॥ २० ॥
एहवा कुगुरां री परतीत सूं, आगे बूडा हो घणां जीव अनंत।
ते नरक निगोद माहें पड्यां, त्यारो कहता हो किम आवें अ त ॥ २१ ॥

ढाल : ११

दुहा

विनें मूल धर्म जिण कह्यो, ते जांणें विरला जीव।
ते सतगुर रो विनों करें, त्यां दीधी मुगत री नींव ॥ १ ॥
जे कुगुर तणो विनो करें, ते किम उतरें भवपार।
ज्यां सुगुर कुगुर नहीं ओलख्या, ते गया जमारो हार ॥ २ ॥
केई अग्यांनी इम कहें, गुर नें बाप एक होय।
मूंडा भला जे गुर कस्या, त्यांनें न छोडणा कोय ॥ ३ ॥
जिण आगम मांहें इम कह्यों, गुर करणा गुण देख।
खोटा गुर नें नहीं सेवणा, त्यांरी कीमत करणी वशेष ॥ ४ ॥
कुगुर नें अजांणपणें गुर कीयों, ठीक पडीयां छोडणो सताब।
आतो लीधी टेक न राखणी, ते सुणजो सूतर रा जाब ॥ ५ ॥

ढाल

[जगत गुरु तिसला नंदन वीर]

केई भोला लोक इम कहें जी, गुर नहीं छोडणा कोय।
त्यां आचार तो ओलख्यों नही, मन आवें ज्यूं बोलें सोय।
चुतर नर छोडो कुगुरनों संग* ॥ १ ॥
गुर गहला गुर बावला, तोही गुर देवन का देव।
चेलो जों सेणो हुवे तो, उं करें गुरां री सेव ॥ २ ॥
साचो मारग साधरो जी, खोट खटावे नांहि।
चेलो गुर चूके कदा जी, तो छोडें खिण एक मांहि ॥ ३ ॥
कहो साध किसका सगा जी, तडकें तोडे नेह।
आचारी सूं हिलमिलें जी, अणाचारी सूं छेह ॥ ४ ॥
नीलटांस कीडा चूगें जी, मांहें विराजें रांम।
कहे करणी रो कारण नहीं, म्हांरे दरसणरोइ कांम।
ए अणतीरथी री वांण ॥ ५ ॥
नीलटांस कीडा चूगेजी, तिणरे दया नही घट मांय।
पापी रो मुख देखतां जी, भलो कठा सूं थाय ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

गुण लारें पूजा कही, तोही निगुण पूजता जाय।
चोंडे भूला मांनवी, त्याने किम आणीजे ठाय ॥ ७ ॥
सोंनारी छूरी चोखी घणी, पिण पेट न मारें कोय।
ए लोकीक दिष्टत साभले, तुम्हे हिरदे विमासी जोय ॥ ८ ॥
ज्यूं गुर कीधा तिखा भणी, ते ले जावे दुरगति मांय।
जे भागल तूटल गुर हुवे, त्याने उभा दीजे छिटकाय ॥ ९ ॥
खोटा गुरने नही सेवणा जी, श्री वीर गया छे भाख।
कुण कुण गुरने छोडीया, त्यांरी सूतर मे छें साख ॥ १० ॥
जमाली सिष्य भगवंत रो, तिणरे चेला पाचसो जांण।
एक वचन उथापे वीर नो जी, पर गयों उलटी तांण ॥ ११ ॥
जब कितरा एक चेलां तणो जी, तुरत गयो मन भाग।
घणां चेलां जमाली ने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १२ ॥
केइ मूढ मिथ्याती कने रह्या, केइ आया भगवत पास।
जमाली ने खोटो जांण छोडीयो, त्याने वीर वखाण्या तास ॥ १३ ॥
जमाली नें कुगुर जाण्या पछें जी, छोड दीयो ततकाल।
जो गुर छोड्यारी संका पडे तो, सूतर भगोती संभाल ॥ १४ ॥
सावथी नगरी रे वाहिरे जी, कोठक नांमा बाग।
तठे गोसाले भगवत सू जी, कीयो सवादो लाग ॥ १५ ॥
अजोग बोल्यो भगवंत नें जी, मूल न राखी काण।
दोय साध वाल्या भगवंत रा जी, वीर नें कीयो लोही ठाण ॥ १६ ॥
लेस्या सू खाली हुवो जाणने जी, साध आया सताब।
गोसाला ने प्रश्न पूछीया, जब नायो गोसाला ने जाब ॥ १७ ॥
जब गोसाला रा चेला तणो, उतरीयो गोसाला सूं राग।
तिणने खोटो जाणने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १८ ॥
त्यां गोसाला ने गुर कीयो हूतो, पिण छोडतां नांणी लाज।
पछे गुर करे श्री भगवत ने, त्या साख्या आतम काज ॥ १९ ॥
केइ चेलां गोसाला कने रह्या, त्या राखी गोसाला री टेक।
ते तो कुगुर नें सेवनें जी, अे बूडा विना ववेक ॥ २० ॥
गोसाला ने चेला छोडीयो जी, ते तिरीया ससार।
ए भगवती रे सतखंध पनरमें, ते बुधवत करजों विचार ॥ २१ ॥
सोगंधीया नगरी तिहा जी, नीलासोग उद्याण।
सेठ सुदंसण तिहां वसे, ते डाहो चतुर सुजांण ॥ २२ ॥

सुखदेव सिन्यासी नें गुर कीयो जी, सेठ सुदंसण जांण।
खोटो जाण्यों जब छोडीयो, उणरी मूंल न राखी कांण ॥ २३ ॥
थावचा अणगार नें, गुर कीधा उत्तम जांण।
सुखदेव सिन्यासी ने छोडीयो, तिण श्री जिण धर्म पिछांण ॥ २४ ॥
सुखदेव सिन्यासी सांभल्यो जब, आयो वेग सताब।
सेठ सुदंसण रे घरे जी, आयों करवा जाब ॥ २५ ॥
पछें सुखदेव ने सुदंसण, आया नीलासोग उद्यांन।
थावचें अणगार समझावीया, जब आयों घट में ग्यांन ॥ २६ ॥
सुखदेव सिन्यासी तिण समें, वले चेला एक हजार।
थावचा अणगार नें गुर कीयां जी, लीधो संयम भार ॥ २७ ॥
त्यां आगला गुर नें छोडतां जी, संक न आंणी काय।
गिनाता रा पांचमां अधेन में जी, ए चोडे सूतर रो न्याय ॥ २८ ॥
सेलकराय रषेसर तणे जी, पांचसो चेला लार।
सेलगपुर नगर पधारीया जी, करता उग्र वीहार ॥ २९ ॥
तठें बेटें कीधी त्यांरी वीनती जी, सरीर मे रोग जांण।
जब रथसाला में आय उतस्या जी, पछें ओषध कीधा आंण ॥ ३० ॥
रोग गयो साता हुइ पिण, न करें तिहां थी वीहार।
खावापीवा उण चित्त दीयों जी, ग्रिधी थको करें आहार ॥ ३१ ॥
उसनो उसनविहारी हुवो जी, पासथो कुसीलीयो जांण।
परमादी नें संसतो, ए पांचूंई बोल पिछांण ॥ ३२ ॥
जव पंथग वरजी पांचसो जी, मिलनें कीयो विचार।
गुर तो पड्या परमाद में जी, पिण आपांनें सिरें छें वीहार ॥ ३३ ॥
एहवी करें विचारणा जी, परभाते कीयों वीहार।
गुरनें ढीलों जांण छोडीयो, ते धिन मोटा अणगार ॥ ३४ ॥
पंथग बरजी पांचसों जी, नांणी गुर री परतीत।
त्यां ढीलो जाणीनें परहस्यो जी, आजिण मारग री रीत ॥ ३५ ॥
पंथग वीयावच करीजी, तिणनें कहे केइ धर्म।
त्यां जिण मारग नहीं ओलख्यों जी, भूला अग्यांनी भर्म ॥ ३६ ॥
उसनादिक पांचूं भणीजी, असणादिक दें कोय।
तिणनें चोमासी डंड नसीत रें, पनरमें उदेसें जोय ॥ ३७ ॥
तो सेलगनें जिण घालीयो जी, उसनादिक पांचूं मांय।
तो तिणरी वीयावच कीयां में, धर्म किहां थी थाय ॥ ३८ ॥

ज्ञाता अग मे जिण कह्यो जी, म्हांरो साध साधवी होय।
जो सेलग ज्यूं ढीलो पडें तो, गण माहे आछो न कोय॥ ३६॥
घणा साध नें साधवी जी, श्रावक श्राविका मांय।
उ हेलवा निंदवा जोग छे, जाव अनत संसारी थाय॥ ४०॥
जे हेलवा निंदवा जोग छे, तिणनें वाद्या किहा थी धर्म।
तिणरो विनो वीयावच कीया मे, निश्चें बधसी कर्म॥ ४१॥
पथग वीयावच करीजी, ए आपरो छादो जांण।
धर्म नही तीन करण मे जी, नसीत सूं करो पिछांण॥ ४२॥
पथग ने वीयावच थापीयो, जब सगलाइ भेला जांण।
ते पिण छादो आपरो जी, पूरवली पीत आंण॥ ४३॥
पंथग वरजी पाचसो, गुरनें छोड्या खोटां जांण।
पछें सुध हुवा काने सुण्या, जब सगलाइ मिलीया आंण॥ ४४॥
ए ज्ञाता सूतर में कह्यों जी, पांचमां अधेन रे मांय।
खोटा जांणे गुर छोड़णा जी, आ संका म आंणो काय॥ ४५॥
सकडाल गोसाला नें गुर कीयो जी, छेंहलो तीर्थंकर जांण।
तिण खोटो जांण्यो जब छोडीयो, उणरी मूंल न राखी कांण॥ ४६॥
पछें गुर कीधा भगवंत ने जी, कीयों गोसाला ने दूर।
ए सातमा अंग माहे कह्यों, ते निश्चे म जांणो कूर॥ ४७॥
पछें गोसालो सुण आयो तिहां, सकडाल नें फेरण कांम।
सकडाल गोसाला नें देखनें, बेठो रह्यों एकण ठांम॥ ४८॥
तिणनें आदर सनमांन दीयो नही, वले मीट न मेली तांम।
जब गोसाले कपटी थके, कीधा भगवंत रा गुण ग्राम॥ ४६॥
हाट दीधा उतरवा तेहनें, पिण माम पाडी तिण ठांम।
कह्यो तोने ओ दान दीयो तिको, म्हारे नही धर्म रो कांम॥ ५०॥
अंगालमरदन साध रे, चेला पांचसो मुनीराय।
गुर तो अभवी जीव छे, पिण चेला नें खबर न काय॥ ५१॥
एक भडसूरों आगे चलें, तिणरें पांचसों हस्ती लार।
एहवो सुपनो राय देखनें, परभाते करे वीचार॥ ५२॥
इतला माहे आवीया, अंगालमरदन अणगार।
राजा देख सासे पड्यो, पछें परख करी उण वार॥ ५३॥
पछें चेलां पिण गुर ने जांणीयो, ए तिरण तारण नही होय।
दया रहीत जांणें छोडीयो, पिण मोह न आण्यो कोय॥ ५४॥

ए ठांणांअंग रा अर्थ में, वले कह्यो कथा रें मांय।
खोटा गुर नें छोडणा कह्या, ते निश्चें सूतर रोय न्याय॥ ५५॥
हूं कहि कहि नें कितरा कहूंजी, गुर छोड्यां रा नांम।
ते सूतर में छें अति घणा जी, आ कही वांनगी तांम॥ ५६॥
इत्यादिक साध नें श्रावकां जी, गुर नें छोड तिरीया अनंत।
जे करणी करें मुगते गया, त्यांरा गुण गाया भगवत॥ ५७॥
गुर गुर गेंहला कर रह्या, पिण गुर री खबर न कांय।
जो हीण आचारी नें गुर करें तो, चिहूं गति गोता खाय॥ ५८॥
जे कुगुर छोड सत गुर करें, वले पालें विरत अभंग।
ते तिर्‍या तिरें तिरसी घणा जी, सतगुर रे परसंग॥ ५९॥
गुर नें ढीला जांण छोडीया, त्यांरी कही सूतर सूं बात।
हिवें परंपरा गुर छोडीया जी, ते सुणजो विख्यात॥ ६०॥
लूंकें साह गुर नें छोडनें जी, कीधी आपणी थाप।
जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, इण मोटों कीधों पाप॥ ६१॥
त्यां मां सूं नीकल्या ढूंढीया जी, लूंका गुरां नें छोड।
जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, यांमें ही मोटी खोड॥ ६२॥
लूंकां नें ढीला जांण छोडनें जी, सयमेव चारित लीध।
साध वाज्या तिण दिवस थी जी, ओर गुर कोइ माथे न कीध॥ ६३॥
जो गुर नही माथे केहनें जी, तिणमें बतावें दोप।
तो धुर सूं निगुरा छें ढूंढीया, इण लेखें ओही मत फोक॥ ६४॥
कोइ कहें गुर माथे कीयां विनां जी, नही उतरें भव पार।
तो इण लेखें सगलाइ ढूंढीया जी, अें निगुरां रो परिवार॥ ६५॥
जो गुर छोड्यां में दोष छें, वले गुर नहीं कीधां रो दोष।
ए दोनूं दोष तो ढूंढीयां मे, ते किण विध जासी मोख॥ ६६॥
वले मांहोमां ढूंढीया जी, गुर छोडें छें तांम।
वले ओर करें गुर जायनें जी, तिणरो धरावें नांम॥ ६७॥
ढूंढीया में गुर छोडें घणां जी, त्यांरो किण किण रो कहूं नांम।
जो दोष हुवें गुर छोडीयां, तों अें सर्व बूडा वेकांम॥ ६८॥
केई संवेगीयां रा श्रावकां, त्यां गुर कीयां ढूंढीयां तांम।
जो दोष हुवें गुर छोडीयां तांम, अें खोटी हुवा वेकांम॥ ६९॥
वले भगत सिन्यासी ने सेवडा जी॰ केई गुर छोडी उभा जाय।
जो उवे गुर करें ढूंढीया भणी जी, तूरत मूंडेले मांय॥ ७०॥

उगत आगन्या गुर छोडायनें जी, आप हुवा गुरु नाम ।
जो दोष कहें गुर छोडीया तो, पाप बांधा त्यांने ग्यान ॥ ५१ ॥
थांने गरज्या रे लेखें इम बोलणो जी, गुर मत छोडो कोय ।
आगन्या गुर ने सेवनां, थांनें सुध गति देसी सोय ॥ ५२ ॥
इम कहणी आवें नहीं, जब बोल्या कूडी बात ।
खोटा जांणी गुर छोडणा जी, करणा उत्तम गुरु ग्यान ॥ ५३ ॥
तो क्यूं कह्यो गुर ने न छोडणा जी, कूडी कांय करो बकवाद ।
इण विध जोडा नांकहें, जब कोयक बोलें न्याय ॥ ५४ ॥
कुगुर छोडणी करी जी, रीयां गांम मझार ।
संवत अठारें तेतीसे समे, असाढ सुद तीज नें सोमवार ॥ ५५ ॥



ढाल : १२

दुहा

भेष पहर्यो भगवांन रो, साधु नांम धराय।
पिण आचार में ढीला घणां, ते कह्यों कठा लग जाय ॥ १ ॥
त्यांनें वांदें गुर जांणनें, वले कूडी करें पखपात।
त्यां भूठां नें साचा करण खपें, त्यांरे मोटों साल मिथ्यात ॥ २ ॥
कुगुर तणां पग वांदनें, आगें बूडा जीव अनंत।
वले बूडें नें बूडसी घणां, त्यांरो कहतां न आवें अंत ॥ ३ ॥
साध मारग छें सांकडों, तिणमें न चालें खोट।
आगार नहीं त्यांरे पाप रो, त्यां वरत कीयां नवकोट ॥ ४ ॥
भेषधारी भागल घणां, त्यांसूं पलें नहीं आचार।
ते कुण अकार्य कर रह्या, ते सुणजों विसतार ॥ ५ ॥

ढाल

[आदर जीवा खिमा गुण आदर]

कुगुर तणां चिरत चावा करसूं, सूतर री दे साख जी।
सुमता आंण सुणो भव जीवां, श्री वीर गया छें भाख जी।
साध म जांणों इण आचारे* ॥ १ ॥

जो कुगुरां नें सेंठा कर झाल्या, तोही सुण सुण म करो धेख जी।
साच भूठ रो करो निवेरो, सूतर सांह्मो देख जी ॥ २ ॥

जीमणवार मांसूं कोइ ग्रहस्थ, ल्यावें धोवण पांणी मांड जी।
ते आप तणें घरें आंण वेंहरावें, ते करें भेष ने भांड जी ॥ ३ ॥

जो जांण जांणनें साध वेंहरें, तिण लोप दीयो आचार जी।
ए प्रतख सांह्मो आण्यों लेवे, त्यांनें किम कहिजें अणगार जी ॥ ४ ॥

ए अणाचार उघाडों सेवें, जे सांह्मो आंण्यों ले आहार जी।
ए दसवीकालक तीजें अधेनें, कोइ जोवो आंख उघाड जी ॥ ५ ॥

साध साधवी ठरलें मातर, एकण दरवाजें जांय जी।
वीर वचन सूं उलटा पडीया, ए चोडें कीयों अन्याय जी ॥ ६ ॥

गाम नगर पुर पाटण पाडो, तिणरो हुवें एक नीकाल जी।
तिहां साध साधवी न रहें भेला, आ वांधी भगवंत पाल जी ॥ ७ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

एकण दरवाजें साध .साधवी, जो जाए नगरी वार जी।
तो अपरतीत उठें लोका मे, केइ विरत भांगी हुवे खुवार जी॥ ८॥
जुदो जुदो नीकाल छतो पिण, कोइ जाए एकण दरवाज जी।
ते घेठा हटक न मानें किणरी, वले नांणें मन मे लाज जी। ९॥
एक नीकाल तिहां रहणोइ वरज्यो, तो किम जाए एकण दुवार जी।
ए वेतकल्प रे पेहले उदेसें, ते वुधवत करो विचार जी॥ १०॥
ग्रहस्थ रें घरे जाए गोचरी, जो जोडीयो देखें दुवार जी।
तिहां सुध साध तो फिर जाए पांछा, भागल जाए खोल किंवाड जी॥ ११॥
केई भेषधाऱ्यां रे एहवी सरधा, ग्रहस्थ रे जड्यो दुवार जी।
तो घणी तणी आग्या ले साध, मांहे जाए खोल किंवाड जी॥ १२॥
हाथा सूं साध किंवाड उघाडे, मांहे जाए वेंहरण नें आहार जी।
इसरी ढीली करे परूपणा, ते विटल हुवा वेकार जी॥ १३॥
किंवाड उघाडनें वेंहरण जाणरो, मूल न सरधे पाप जी।
कदा न गया तो पिण गया सारिषा, आ कर राखी छे थाप जी॥ १४॥
किंवाड उघाडनें वेहरण जाए, तो हिंसा जीवा री थाय जी।
ते आवसग सूतर में वरज्यों, चोथा अधेन रे माय जी॥ १५॥
गांम नगर बारें उतरीयो, कटक सथवाडो ताहिजी।
जो साध रात रहे तिण ठामे, ते नही जिण आग्या माहि जी॥ १६॥
एक रात रहे कटक में तिणनें, च्यार मास रो छेद जी।
ते वेतकल्प रे तीजें उदेसे, ते सुण सुण म करो खेद जी॥ १७॥
इसरा दोष जांणीने सेवे, तिण छोडी जिण धर्म रीत जी।
एहवा भिष्ट आचारी भागल, त्यांरी कुण करसी परतीत जी॥ १८॥
विण कारण आंख्यां में अंजण, घालें आंख मझार जी।
त्यांनें साधवीयां किम सरधीजें, त्या छोड दीयो आचार जी॥ १९॥
विण कारण जो अजण घाले, ते श्री जिण आग्या बार जी।
दसवीकालक तीजें अधेनें, ओ उघाडो अणाचार जी॥ २०॥
वस्त्र पातर पोथी पानादिक, जाए गृहस्थ रें घरे मेल जी।
पछें करें विहार दे घणी भलावण, तिण प्रवचन दीघां ठेल जी॥ २१॥
पछें ग्रहस्थ आंमा साह्या मेलतां, हिंसा जीवां री थाय जी।
तिण हिंसा सूं ग्रहस्थ नें साध, दोनूं भारी हुवे ताय जी॥ २२॥
भार पडावें ग्रहस्थ आगे, ते किम साधु थाय जी।
नसीत रे बारमें उदेसे, चोमासी चारित जाय जी॥ २३॥

वले विण पडिलेह्यां रहें सदा नित, ग्रहस्थ रा घर मांय जी।
ओ साधपणों रहसी किम त्यांरो, जोवों सूतर री न्याय जी ॥ २४ ॥
जो विण पडिलेह्यां रहें एक दिन, तिणनें डंड कह्यों मासीक जी।
नसीत रे दूजें उदेसें, तिहां जोय करों तहतीक जी ॥ २५ ॥
मात पितादिक सगा सनेही, त्यांरा घर में देखें खाल जी।
त्यांनें परिग्रहो साध दरावें, आ चोडें कुगुर री चाल जी ॥ २६ ॥
सांनीकर साध दरावें रुपीया, वरत पांचमों भांग जी।
वले पूछ्यां झूठ कपट सूं बोलें, तिण पेंहर विगाड्यों सांग जी ॥ २७ ॥
न्यातीलां नें दांम दरावें, त्यांरें मोह न मिटीयों कोयजी।
वले सार संभाल करावें त्यांरी, ते निश्चें साध न होय जी ॥ २८ ॥
अनरथ रो मूल कह्यों परिग्रहो, ठांणां अंग तीजें ठांण जी।
तिणरी साध करें दलाली, ते पूरा मूंढ अयाण जी ॥ २९ ॥
रित उनालें पांणी ठारें, ग्रहस्थ रा ठांम मझार जी।
मन मांनें जब पाछा सूंपें, ते श्रीजिण आग्या बारजी ॥ ३० ॥
ग्रहस्थ तणां भाजन में साधु, जीमें असणादिक आहार जी।
तिणनें भिष्ट कह्यों दसवीकाल में, छठा अधेन मझार जी ॥ ३१ ॥
केइ सांग पहर साधवीयां बाजें, पिण घट में नहीं ववेक जी।
आहार करें जब जडें किवाड, दिन में बार अनेक जी ॥ ३२ ॥
ठरलें मातरे गोचरी जाए जब, आडा जडें किंवाड जी।
वले साध कनें आवें तोही जडलें, त्यांरो विगड गयो आचार जी ॥ ३३ ॥
साधवीयां नें जडवो चाल्यों, ते सीलादिक राखण काज जी।
ओर कांम जो जडें साधवीयां, त्यां छोडी संजम लाज जी ॥ ३४ ॥
आवसग में हिंसा कही जडीयां, आलोवण खातें ताहि जी।
मन करनें जडणो नहीं वांछें, उतराधेन पेंतीसमां मांहि जी ॥ ३५ ॥
ओषध आद दे वेंहर आंणें, केइ वासी राखें रात जी।
ते जाय मेलें ग्रहस्थ रा घर में, पछें नित ल्यावें परभात जी ॥ ३६ ॥
आपरो थको ग्रहस्थ नें सूंप्यों, ए मोटों दोष पिछांण जी।
वले बीजो दोष वासी राख्यां रो, तीजो अजें यणा जांण जी ॥ ३७ ॥
वले चोथो दोष पूछ्यां झूठ बोलें, वासी राख्यों न कहें मूंढ जी।
केइ भेषधारी छें एहवा भागल, त्यांरें झूठ कपट छें गूढ जी ॥ ३८ ॥
ओषध आद दे वासी राख्यां, वरतां में पडें वगार जी।
कह्यो दसवीकालक तीजें अधेनें, वासी राखें तो अणाचार जी ॥ ३९ ॥

केइ आधाकरमी पुस्तक वेंहरें, वले तेहिज लीधो मोल जी।
ते पिण साह्यो आंण्यो वेंहरे, त्यारे पूरी जाणजो पोल जी॥४०॥
कोइ आप कने दिख्या ले तिणरें, सांनीकर मेले साज जी।
पुस्तक पांनादिक मोल लरावे, वले कुण कुण करे अकाज जी॥४१॥
गछवासी परमुख आगा सूं, लिखावें सूतर जांण जी।
पेंहला मोल कराय परत रो, सचकार दरावें आंणजी॥४२॥
रुपीया मेलावे ओर तणे घर, इसडो सेठों करें कांम जी।
ते पिण हाथे परत आयां विण, दिख्या दे काढें ताम जी॥४३॥
पछें गछवासी कवल सूं डरतो, परत लिखें दिन रात जी।
जीव अनेक मरे तिण लिखतां, करें तस थावर री घातजी॥४४॥
इण विध साध परत लिखावे, तिण सजम दीधो खोय जी।
जे दया रहीत छें एहवा दूधी, ते निश्चे साध न होय जी॥४५॥
छकाय हणीने परत लिखी ते, आधाकरमी जांण जी।
ते हिज परत जो साध वेंहरे, ए भागल रा अहलांण जी॥४६॥
वले तेहिज परत टोलां मे राखे, आधाकरमी जाण जी।
जे सेमल हुवा ते सगला बूडा, तिणमे संका मत आण जी॥४७॥
आधाकरमी रा लेवाल रूले तो, उतकष्टो काल अनंत जी।
दया रहीत कह्यों तिण साध ने, भगोती मे भगवंत जी॥४८॥
कोइ श्रावक साध समीपे आए, हरषे वादे पग भाल जी।
जब साध हाथ दे तिणरे माथे, आ चोडे कुगुर री चाल जी॥४९॥
ग्रहस्थ रें माथें हाथ देवें ते, ग्रहस्थ बरोबर जांण जी।
एहवा विफलां नें साध सरधे, ते पिण विकल समाण जी॥५०॥
ग्रहस्थ रे माथे हाथ दीयो तिण, ग्रहस्थ सू कियो समोग जी।
तिणनें साधु किम सरधीजे, लागो जोग ने रोग जी॥५१॥
दसवीकालक आचारग माहे, वले जोवो सूतर नसीत जी।
ग्रहस्थ रे माथें हाथ दीयो ते, आ प्रतख उंधी रीत जी॥५२॥
वले चेला करें ते चोर तणी परें, ठग पासीगर ज्यूं तांम जी।
वले उजबक ज्यूं तिणने उचकाए, लेजाय मूंडे ओर गांम जी॥५३॥
आछो आहार दिखाए तिणने, कपडादिक महो दिखाय जी।
इत्यादिक लालच लोभ बताए, भोलाने मूंडे भरमाय जी॥५४॥
इण विध चेला कर मत बांधे, ते गुण विण कोरो भेष जी।
साधपणा रो साग पेहर नें, भारी हुवे बसेष जी॥५५॥

मूंड मूंडावी भेला कीधा, त्यांसूं पलें नहीं आचार जी।
भूख तिरखा पिण खमणी नावें, जब लेवें असुध पिण आहार जी ।। ।। ५६ ।।
अनल अजोग नें दिख्या दीधां, तो चारित रो हुवें खंडजी।
नसीत रे उदेसें इग्यारमें, चोमासी रो डंड जी ।। ५७ ।।
ववेक विकल बालक बूढा नें, पेंहरावें सांग सताब जी।
त्यांनें जीवादिक पदारथ नव रा, जाबक नावें जाबजी ।। ५८ ।।
सिष्य करणों तो निपुण बुधवालो, जीवादिक्र नव जांणें ताहिजी।
नहीं तों एकल रहणों टोला में, उत्तराधेन बतीसमा मांहि जी ।। ५६ ।।
केई दडें लीपें हाथां सूं थांनक, ते पिण ढलीया कूट जी।
इसरो कांम करें तिण साधु, पाडी भेषमें फूटजी ।। ६० ।।
जो दडें लीपें थांनक नें साधु, तिण श्री जिण आग्या भंग जी।
तीजा वरत री तीजी भावना, तिहां वरज्यो दसमें अंग जी ।। ६१ ।।
छती साधवीयां टोला मांहे, वले कारण पिण न पड्यों कोय जी।
तोही दोय साधवीयां रहें छें, ओ दोष उघाडो जोय जी ।। ६२ ।।
पवित्रणी रहें दोय साधवी, ते जिण आग्या में नांहि जी।
त्यांनें वरज्यो ववहार सूतर में, पांचमां उदेसा मांहि जी ।। ६३ ।।
कारण विण एकली साधवी, असणादिक वहरण जाय जी।
वले ठरलें पिण एकलडी जावें, ते नहीं जिण आग्या मांय जी ।। ६४ ।।
वले एकलडी नें रहणों वरज्यो, इत्यादिक बोल अनेक जी।
ते वेतकल्प रें पांचमें उदेसे, ते समझों आंण ववेक जी ।। ६५ ।।
कुगुरु एहवा हीण आचारी, साधां सूं दे भिडकाय जी।
आप तणां किरतब सूं डरता, जिण मारग दीयों छिपाय जी ।। ६६ ।।
इसडा कुगुरु नें गुरकर मांनें, त्यांरें अभितर में अंधकार जी।
गुर में खोटो खाय अग्यानी, चाल्या जनम विगाड जी ।। ६७ ।।
उसभ करम ज्यांरे उदें हुवा जब, इसरा गुर मिलीया आय जी।
दग्ध बीज हो जावक बूडा, पछें चिहूंगति गोता खाय जी ।। ६८ ।।
इम सांभल नें उत्तम नरनारी, छोडो कुगुर नों संग जी।
सत गुर सेवो सुध आचारी, दिन दिन चढतें रंग जी ।। ६९ ।।
आ सझाय करी कुगुरु ओलखावण, पीपाड सहर मझार जी।
समत अठारें वरस चोतीसें, आसोज सुद सातम बुधवार जी ।। ७० ।।

ढाल : १३

दुहा

केई साधु नांम धराय नें, सेवें दोष अनेक।
त्यांनें ठीक नही त्यांरा दोष री, ते सुणजों आंण ववेक॥ १॥

ढाल

[मगध देस को राजा राजेसर]

केइ भंगी रा घर री रोटी तो खावें, पिण भंगी री भीटी न खावें।
इसडी उत्तमाई देखो विकलां री, डाहा ते इचर्य पावे रे।
जोवों हिरद विचारी, थे छोडों कुगुर री लारी रे।
कुगुर हीण आचारी* ॥ १ ॥
ज्यूं केई हाथा सूं जडें उघाडे किंवाड, ग्रहस्थ उघाड दीयां करें टालों।
इसडों आचार देखो कुगुरां रो, ते प्रतष दाल मे कालो रे॥ २॥
गृहस्थ उघाडे आहार वेंहरावें, ते वेंहरें नही दोष जांण।
हाथे जड्यां उघाड्यां रो दोष न जाणें, इसडा छें मूढ अयांण रे॥ ३॥
गोचरी जाए जव जडें किंवाड, पाछा आयां पिण खोलें किंवाड।
ग्रहस्थ रे घरे गयां खोल नें पेसें, इसडों कुगुरां रो आचार रे॥ ४॥
ज्यांनें साध सरधें त्यांनें भेला न राखे, एकण थांनक मांहि।
त्यांनें पूछ्यां कहें म्हांरे नही संभोग, तिणसूं भेला उतरां नाहि रे॥ ५॥
इम कहि कहि राते भेला न राखे, एकण थानक माय।
तो यांरे ग्रहस्थ सूं संभोग किसों छें, तिणनें मांहे राखे कांय रे॥ ६॥
ग्रहस्थ नें भेलां राखें सांधा नें नहीं राखे, ओ दोनूं कानी देवालों।
यां दोनूं बोलारो प्रायछित आवें, सूतर नसीत संभालो रे ॥ ७॥
कोइ सुध साधां रा कुल गण मांहे, भेद पाडें कर कर तांण।
तिणनें प्रायछित्त दसमों आवें, ठांणा अंग रे पांचमें ठांण रे॥ ८॥
जो दोषीलां सूं संभोग तोडें तो, प्रायछित्त मूल न आवें।
वले त्या दोषीला ने तेहिज वांदें, तो सगला सरिषा थावें रे॥ ९॥
कदा आप दोषीलां नें वंदणा छोडें, तो पिण श्रावकां नें ढूकावें रें।
ते आप तणां मुतलब रें अर्थे, ठागा सूं कांम चलावें रे॥ १०॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले धर्म कहें दोषीलां नें बांद्या, तिणरें आय चूकों मिथ्यात।
तिण समकत सहीत साधपणों खोयो, उंधीं सरधें सूतर री बात रे॥ ११॥
त्यां दोषीलां नें साधां बंदणा छोडी, त्यांनें श्रावक श्राविका वांदें।
तिणनें त्यांरा गुर री परतीत न आई, जिण धर्म न ओलख्यों आंवें रे॥ १२॥
ज्यांरी परतीत थी त्यां बंदणा छोडी, तो आप वांदें किण लेखें।
इसडो अंधारों छें घट भितर जेहनें, ते सूतर न्याय न देखें रे॥ १३॥
ज्यांनें दोषीलां सरधें त्यांनें हिज वांदे, इसडी ज्यांरें भोलप मोटी।
ते समझें नहीं घमडोल में पडीया, सरधा झाल रह्या छें खोटी॥ १४॥
ढीला भागल नें साध वांदे नहीं, लागतो जांणें पाप करम।
तो श्रावक श्रावका वांदसी त्यांनें, किण विध होसी धर्म रे॥ १५॥
जे घर हुवो असुझतो तिण दिन, जिण दिन वेंहरणों नांहि।
जो उणहीज दिन तिण घर रों वेंहरें, तो भागल री पांत मांहि रे॥ १६॥
पेंहला तो ज्यां घरां रो धोवण जाय ल्यावें, त्यां कठें असूझतों होय जावें।
पछे तिण दिन तिण हीज टोलारा, विण पूछ्यांही वेंहरी ल्याय रे॥ १७॥
उणहीज दिन उणहीज टोलारा, मन मांनें तिण घर जावें।
असुझतो हुवो घर नहीं बतावें, विण पूछ्यांही वेंहरी ल्यावें रे॥ १८॥
इम प्रतष आहार असुझतो खावें, त्यांमें आछी अकल किम आवें।
ते साधपणां रो नांम धरावें, इण लेखें दुरगत जावें रे॥ १९॥
कोइ कहें म्हें नितको एकण घर रों, नहीं वेंहरां आहार नें पांणी।
म्हें धोवणादिक वेंहरां ते न्हांखी तो, ओ पिण झूठ बोलें छें जांणी रे॥ २०॥
तो पेंहलें दिन जिण घर जाय वेंहर्‍यो, असणादिक च्यारूं आहार।
बीजें दिन वीहर करतां नित वेंहरें, जब कठी गयो आचार रे॥ २१॥
उन्हों पांणी पिण नितकों वेंहरें, कलालादिक रें घरे जाय।
त्यांनें पूछें पांणी नितकों कांय वेंहर्‍यों, जब साच बोल्यों नहीं जाय रे॥ २२॥
केइ पाडा बंध गोचरी वरजेनें, फूटकर घरां रे मांय।
सिष्य सिष्यणी सगला नें मेलें, तिहां वेंहरें नितरा नित जाय रे॥ २३॥
एक दोय सिंघाडें पेंहलें दिन वेहर्‍यों, केकां वेंहर्‍यो बीजें दिन जांण।
नितरो नित वेंहर्‍यों एकण टोला रां, गुर रें पास मेल्यो आंण रे॥ २४॥
केई एकण गुर रा सिष्य सिष्यणी छें, च्यारां पांचा जायगां रहें ताय।
ते गोचरी जाए विण पूछ्यां मांहोमां, एकण घर पिण वेंहरें आय रे॥ २५॥
उण वेंहर्‍यों ते घर बीजा न टालें, बीजां वेंहर्‍यो ते ओ पिण न टालें।
नितरो नित वेंहरें एकण टोला रा, अणाचार नें कुण संभालें रे॥ २६॥

इत्यादिक वले कूड कपट सूं, एकण घर वेंहरे नितको आहार।
ते अणाचारी उघाडा चोडें, ते पिण बाज रह्या अणगार रे॥ २७॥
च्यार पांच साव किहां रह्या चोमासें, आप आपरो वेंहस्त्यों खावें।
तो संकडाई पिण न पडे तिणा रे, सगला रे साता होय जावें रे॥ २८॥
च्यार पांच अनेक मेला रहें साध, ते जूजूवा वेंहरण जावे।
तो एकण दिन एकण घर मांहें, सगलाई वेंहरण आवे रे॥ २९॥
केई साध नांम धरावे त्यांरो, आचार छे घणों अजोग।
आहार पांणी तणां ग्रिधी छें गाढा, तिणसूं तोडें मांहोमां संभोग रे॥ ३०॥
इग्यारें सभोग तो भेला राखें, न्यारो करे आहार नें पाणी।
ते नितरो नित एकण घर वेंहरण, त्यांरा कपट नें लीजो पिछांणी रे॥ ३१॥
ते पिण मांहोमां देवें लेवे, तो भेलोइज आहार नें पांणी।
ते नित्य पिंड एकण घर रो खावें, त्यांरा चारित री धूर घांणी रे॥ ३२॥
सदा भेला रहे नित इण सरधा सूं, सदा नित पिंड इण विध खावें।
ते पेटभरा साव रा भेष मांहे, ठागा सूं कांम चलावे रे॥ ३३॥
कोइ कारण वशेष रोगादिक आयां, नित पिड ओषध ज्यूं खावे।
राग वेष रहीत कोइ कारण बतावें, ते तो निषेघणी नावें रे॥ ३४॥
जे जे वोल सूतर मे नाही, ते वांधणो जीत आचार।
ते प्रतख नित नित वेंहरे एकण घर, ओ तो उघाडो अणाचार रे॥ ३५॥
पांणी न वेंहरें ने धोवण वेंहरे, ते पिण सरधा खोटी।
धोवण माहे तो वले छे असणादिक, ते वेहस्त्यां छे भोलप मोटी रे॥ ३६॥
ते धोवण नें पाणी माहे न गिणे, ओ पिण मोटो अंधारो।
पांणी तो च्यार आहारां मे आयो, पिण धोवण नही त्या बारो रे॥ ३७॥
केई च्याराई आहारां रो उपवास करें छें, ते धोवण पीवें नांही।
जे धोवण पाणी मांहे नही तो, क्यूं न पीवें उपवास मांही रे॥ ३८॥
इकवीस जातरो पांणी चाल्यो, ते धोवण पांणी एक जात।
जे धोवण वेंहरेने पांणी न वेहरे, त्यारी मूरख माने वात रे॥ ३९॥
जो आप तणो वेहस्त्यों आप खावे, तो इसडो इज हुवें आचार।
तो जूओ जूओ वेहस्त्यो आंण खाधा रों, दोष नही छे लिगार रे॥ ४०॥
तो जोड करीयाने• ओलखावण, यांरोइज ओलखायो आचार।
आप थापी ने आप उथापे, बोले नही वंघ लिगार रे॥ ४१॥
निरवद किरतव कहि कहि मूंढें, पीढीयां खप करता आवें।
पिण सुघ साधां नें दोषीला ठहरावण, तिणमे हीज दोष बतावें रे॥ ४२॥

कोइ आप तणों नाक जाबक काटें, पैंहलां नें कुसावंण कार्जे।
ज्यूं साधां नें दोषीला थापण, आप दोषीला होता न लाजें रे॥ ४३॥
जिण जिण किरतब मांहें दोषण थापें, ते छोड बतावें तो सूरा।
विण छोड्यां गैंहला ज्यूं गूजें, ते साध मारग थी दूरा रे॥ ४४॥
दोष बतावें पिण छोडणी नावें, वले साध नांम धरावें।
वार वार तेहीज बातां करतां, निरलजा नें लाज न आवें रे॥ ४५॥
सुध बुध विनां विचास्यां बोलें, ते होय बेंठा छें भडंग।
त्यांसूं चरचा तणों कदे कांम पडें तो, जांणक बोलें जडंग रे॥ ४६॥
इसडा छें कुगुर हीण आचारी, ते पिण राखें छें मुगत री आसों।
ग्यांनी पुरष इसड़ा विकला रों, देख रह्या छे तमासो रे॥ ४७॥
कांणी काजल घालें तिण आंखें, ते सोभा न पामें लिगार।
जो आचार बतावें पिण पोतें न पालें, ते पिण मूंढ गिवार रे॥ ४८॥
जे अणाचारी थका आचार बतावें, ते यूंही अन्हांखी कूकें।
जांणें गायां तणां टोलारे मांहि, निकेवल गधा ज्यूं भूके रे॥ ४९॥
साध मन करनें नहीं वांछें किंवाड, उत्तराधेन पेंतीसमें चाल्यों।
पिण जडवो उघाडवों वरज्यो न दीसें, ओ घोचो कुगुरां रो घाल्यो रे॥ ५०॥
मन करनें किंवाड न वांछणों, ते जडवारो परमारथ जांणों।
थे हाथा सूं जडो उघाडो किंवाड, तिणसूं उलटी मत तांणो रे॥ ५१॥
असणादिक च्यारूंई आहार, साध मन करें न वांछें रातो।
ते तो परमारथ खावारो जांणों, थे सरधो सूतर री बातो रे॥ ५२॥
मन करनें साध अस्त्री न वांछें, ते परमारथ सेवारो जांणों।
धर्म परमारथ वंछां करें तो, सावद्य कदेय म जांणों रे॥ ५३॥
मन करनें साध किंवाड न वांछें, ते तो जडवा उघाडवा कांमो।
तिण किंवाड उपर सूर्बे बेंसें इत्यादिक, तो दोष नहीं छें तांमो रे॥ ५४॥
मन करनें साध धन न वांछें, ते तो राखवा कार्जे।
पिण थांनक मांहें धन पडीयों देखें तो, साध रों बिरत मूल न भाजें रे॥ ५५॥
चंदरवादिक साध मनकर न वांछें, पिण तिहां रहीतां दोष न लागें।
पिण छूटा चंदवा नें हाथां सूं बांधें, तो साध तणो विरत भांगें रे॥ ५६॥
ज्यूं मन करें साध किंवाड न वांछें, तिहां रहीतां दोष न लागें।
पिण तेहीज किंवाड जडें उघाडें, तो पेंहलों माहावरत भांगें रे॥ ५७॥

ढाल : १४

दुहा

भेषधारी विगड्या घणां, ते करें अनेक अन्याय।
तें नांम धरावे साधु रो, पिण जिण धर्म री खबर न काय ॥ १ ॥
त्यामे चोरीजारी करें घणां, बोलें भूठ अथाग।
निरलज सुध बुध बाहिरा, भूला मुगत रो माग ॥ २ ॥
भूठा ने साचो करे, तिणरा दोषण देवें ढांक।
सांचा नें भूठों करें, ते पिण नाणें सांक ॥ ३ ॥
त्यामें कुबदी कदाग्रही अति घणा, सके नही देता आल।
त्यांरो गुर सहीत गण विगाडीयो, तिणरो कुण काढे नीकाल ॥ ४ ॥
त्यां भेषधार्‍यां रा टोला तणी, एक इचर्य वाली वात।
त्यामे धीगामस्ती मंड रही, ते सुणजो विख्यात ॥ ५ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अणुकम्पा न आणिये]

चोरी करें साधरा भेषमें, वले भूठ बोले फिर जाय रे।
मोटी चोरी करे छें तेहने, फेर दिख्या आवें छे ताय रे।
तूमे जोयजो अंधारो भेषमें* ॥ १ ॥
तिणने चेलो चेली जाणें आपरो, थोरो प्रायछित दैवे आप जी।
तिण उपरलों आय दिख्या दीये, उणरों दीधो डंड उथाप रे ॥ २ ॥
राग रो घाल्यो थोडो डंड दे, तिणनें उतरो प्रायछित आय रे।
जो उ : प्रायछित डंड लेवे नही, तो उ साध केम कहवाय रे ॥ ३ ॥
चोरनें । लेवें सूतर पारका, ओर पासें देवें गलाय रे।
जांणे रखे चोरी चावी हुवां, मोंनें फेर साधपणो आय रे ॥ ४ ॥
गालणवालो चोरी चावी करे, तिणने फेर दिख्या दे जाण रे।
कहिनें गलाया सूतर तेहने, दड थोडो दे मूढ अयांण रे ॥ ५ ॥
ओर कने सूतर गलावीया, चोरी ढाकवा री मन आण रे।
तिण कूड कपट केलव्यों घणों, मुदें तो चोर तेहीज जाण रे ॥ ६ ॥
ओर रे कहें सूतर गालीया, ते तो भोलों छे विकल समांन रे।
पछें चोरी चावी कीधी तेहनीं, गुर गुरणी ने कीयां हेरान रे ॥ ७ ॥

---

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

चोरी नें चावी कीधी तेहनें, फेर दिख्या देवें तांय रे।
मुदें चोर नें दिख्या दें नहीं, एहवो करें अग्यांनी अन्याय रे॥ ८ ॥
मुदें चोर नें दीख्या दे नहीं, आघो काढें थोडो दे दंड रे।
तिणनें पिण दिख्या देंणी फेरसूं, च्यार तीरथ में करणो भंड रे॥ ९ ॥
तिणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो सगलाइ मूंढ गिंवार रे।
एहवा नें आचार्य लेखवें, ते तो गया जमारो हार रे॥ १० ॥
वले केयक लिंगडा नें लिंगडीयां, ते तों करें मांहोमां अकाज रे।
चोथो वरत भांगें पापीया, लोकां री पिण नांणें लाज रे॥ ११ ॥
केयक वरत भांगें भेद सूं, ते तों मांहोमांहीं मिल जाय रे।
जो उ करें आलोवण तेहनें, फेर दिख्या देवें ते न्याय रे॥ १२ ॥
त्यांरें भेद मांहें सेव्यो नहीं, त्यांनें प्रायछित नावें लिगार रे।
तिणनें दिख्या देइ छोटो करें, ते तो पूरा मूंढ गिंवार रे॥ १३ ॥
दिख्या नावें तिणनें दिख्या दीए, तिण मोटो कीयों अन्याय रे।
तिणनें पिण दिख्या आवें फेर सूं, चोडें देखो सूतर रो न्याय रे॥ १४ ॥
जो उणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो उण टोलां में भोलप जांण रे।
सगला बूडें छें बापडा, तिणरें केडें कर कर तांण रे॥ १५ ॥
भागलां नें कोड कसाई विचें, भूंडा कहें मुख सूं जांण रे।
इम भेषधारी बकता फिरें, त्यांरा बोलां री करजो पिछांण रे॥ १६ ॥
त्यांरा टोलां मांसूं केई नीकले, त्यांनें दिख्या विनां ले मांय रे।
वले वांदें पूजें सुध साध ज्यूं, त्यांसूं भिन न राखें कांय रे॥ १७ ॥
कहता कोड कसाया सूं बूरा, त्यांनें विनां दिख्या ले मांहि रे।
पछें पूछ्यांरो जाब न उपजें, तिणसूं बारें काढ्या ताहि रे॥ १८ ॥
एक दोय वरस भेला रह्या, वांदे पूजे भेलो कीयो आहार रे।
त्यांनें फेर दिख्या आवें मूल थी, कोइ बुधवंत करजो वीचार रे॥ १९ ॥
कोइ साध कसायां भेलो रहें, एक दोय वरस परमांण रे।
जो उवे फेर दिख्या दें तेहनें, तिण लेखें त्यांनेंइ जांण रे॥ २० ॥
फेर दिख्या दीयां पिण तेहसूं, जो उवे भेलो करें आहार रे।
तो उवे सगला बूडा छें बापडा, साध तणो भेषधार रे॥ २१ ॥
केइ वरत पालें श्रावक तणां, इण साध तणां भेष मांय रे।
त्यांनें दिख्या विनां मांहें लीयें, वांदें पूजें तिणरा पाय रे॥ २२ ॥
त्यांनें श्रावक पिण नहीं सरधता, खोटी सरधारो कहता एम रे।
त्यांनें दिख्या विनां मांहें लीयें, त्यांनें साध कहिजें केम रे॥ २३ ॥

दिख्या दीयां विनां माहे लीयां, तिणने पिण दिख्या देंणी जाण रे।
गाला गोलो करें इण बात रो, सगला बूडा मूंढ अयांण रे॥ २४॥
जो उणने दिख्या देनें मांहे लीये, तो टलें सगलां रो संताप रे।
पछे भूठ बोले जो उ कपट सूं, तो उणरो उणनें इज लागें पाप रे॥ २५॥
केई भेषधाय्यां रा टोला मझे, एक उंधी घणी छे रीत रे।
ते सुणतांइ इचर्य उपजे, नही न्याय मेलण री नीत रे॥ २६॥
सील भांगें त्यांरा टोलां मझे, तिणनें फेर दिख्या दे ताम रे।
पिण छोटां रे पग पाडे नही, एहवा करे अग्यानी काम रे॥ २७॥
कहिवाने दिख्या दीधी फेर सूं, पिण डंड दीयों नहीं तिलमात रे।
बडो हूंतो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, त्यांरी मूरख माने बात रे॥ २८॥
फेर दिख्या दे बडो राखी, तिण चोडे चलायो भूठ रे।
उगरा टोलां माहे उण पापीयें, कीधी कुसील सेवारी छूट रे॥ २९॥
फेर दिख्या दे वडो राखीया, तो कुण डरे करतो अकाज रे।
तिण टोलां रा लिंगडा लिंगडीयां, सील भागता नाणें लाज रे॥ ३०॥
सील भांगे तिणने दिख्या दीये, सगला सूं बडो राखे जांण रे।
एहवी मरजादा वांधी तेहमे, दीसे भागल रा अहलांण रे॥ ३१॥
वले विगड्यो टोलो जांणें आपरो, पडतो दीसे घणांरो उघाड रे।
त्यांरा दोष ढांकण रे कारणें, कपटी एहवो वांध्यो आचार रे॥ ३२॥
केई टोलां में लूंठा घणां, केई वनीत छे त्यां मांहि रे।
ते अकारज कर दिख्या लीयें, ज्यूंरा ज्यूं बडा राखें ताहि रे॥ ३३॥
लागवाजी हुवें रांक गरीब सूं, तिणरो करे तुरत उघाड रे।
तिणनें तो दिख्या दे छोटो करे, सगला रें पगे देवे पाड रे॥ ३४॥
प्रायछित सगलां ने नही दे सारिखो, जो उवे करें सारिखो अकाज रे।
आप छांदें करें मन जाणीयो, त्यानें किम कहीजे मुनीराज रे॥ ३५॥
सील भांगे नें फेर दिख्या लीये, बडा रहे करता ओ गाज रे।
तिण टोलारा लिंगडा लिंगडी, किम संक सी करता अकाज रे॥ ३६॥
वरत भांगे नें फेर दिख्या लीयें, वडानें लगावे पाय रे।
तिण श्री जिण वचन उथाप नें, चोडे कीधो बुडण रो उपाय रे॥ ३७॥
वडा आगें करावे वंदणा, तिण कीयो विना रो नास रे।
एहवा भेषधारी भूला थका, राखे मुगत जावारी आस रे॥ ३८॥
भेषधारी भागल चोथा तणां, त्यांरी खबर पडे नहीं काय रे।
आगा ज्यूं टोलां में बंदावता, एहवी धीगामस्ती छें ताम रे॥ ३९॥

भागल नें दिख्या दे बडो रालीयो, तिण टोलां में पूरो अंधार रे।
त्यांनें वांदे पूजें गुर जांणनें, ते पिण बूडा कालीधार रे॥ ४०॥
एहवा भेषधाऱ्यां रा टोला मभे, उघडी भागलां री खांन रे।
त्यांनें छोडे कोइ संजम लीयें, तिणनें फिर फिर करें हेरांन रे॥ ४१॥
त्यां भेलो रहें ज्यां लग गुण करें, पिण न करें तिणरो उघाड रे।
जोउ संजम ले साधां कनें, तिणनें भांडें फिर फिर लार रे॥ ४२॥
त्यांनें खोटा जांणें नें छोडीयां, तो उवे बोलें अनेक विध कूड रे।
पर्छे लागू थका बकवो करें, कूडा करें फंन फितूर रे॥ ४३॥
त्यां मांहें रहें त्यां लग तेहनीं, करें कूडी घणीं पखपात रे।
दोष हुवें ते सगला ढांकनें, सवारलें तेहनीं वात रे॥ ४४॥
त्यांनें छोडें त्यांरा लागु घणां, तिणसूं पडवजीयो पूरो मिथ्यात रे।
तिणनें आल देता संके नहीं, भूठी कर कर अन्हाखी बात रे॥ ४५॥
केई भेषधाऱ्यां रा टोलां मभे, चोथा वरत सूं भागा अनेक रे।
त्यांरो लेखो कीयां तो लड पडें, भगडें मूंढ विनां ववेक रे॥ ४६॥
भेषधारी भागल नें छेडव्यां, तो उ भांबां घालें हाथ रे।
उलटा आल देवें पापीया, भूठी भूठी उठावें बात रे॥ ४७॥
त्यांरा भागलां नें चावा कीयां, करें ग्रहस्थ आगें पूकार रे।
केई ग्रहस्थ सुध बुध बाहिरा, भगडो करवा नें हुवें तयार रे॥ ४८॥
ते तो कुगुरां रा भरमावीया, लडवा आवें भेली करें खेंड रे।
उंधर बोलें अजोग बूरी तरें, जांणें जाग्यों पूर्वलो वेंर रे॥ ४९॥
गुर गुरणी नें जांणें कुसीलीयां, ते किण विध काढें निकाल रे।
उलटो आल देवें साधनें, अन्हाखी थका भाषें अलाल रे॥ ५०॥
सती काढें कुसती रा खूंचणा, तो उवा बोलें आल पंपाल रे।
कूड कपट केवल नें पापणी, उलटो देवें सती सिर आल रे॥ ५१॥
कुसती डरे नहीं सील भांगती, तो उवा किम डरें देती आल रे।
तिणसूं सती डरें कुसती थकी, ते तो लोकीक सांझ्यो न्हाल रे॥ ५२॥
ज्यूं भेषधारी भागल घणां, त्यांरो कुण काढें निकाल रे।
भगडो भालें पापी तेहसूं, उलटो देवें अन्हाखी आल रे॥ ५३॥
अकार्य करता डरें नहीं, तो ए किम डरें देता आल रे।
एहवां भेषधारी भागलां तणों, कहो किण विध काढें निकाल रे॥ ५४॥
आपणा दोषण नें ढांकवा, पापी बोलें अनेक विध कूड रे।
त्यांनें छेडवीयां गलें पडें, त्यांसूं बुधवंत रहजो दूर रे॥ ५५॥

भेषधारी भागल तूटल घणां, होय बेंठा बावा रा बीग रे।
वेसरमा सुध बुध वाहिरा, सांह्मा मांडें साधां सूं सीग रे॥ ५६॥
आपणा किरतब देखे नहीं, हाथां सूं चावा हुवें मत हीण रे।
त्यांरा दोष परगट हुवां परजलें, पछें भाषें लोकां आगे रीण रे॥ ५७॥
एहवा भेषधार्‍यां नें गुर करें, ते तो गया जमारो हार रे।
ते तो जासी नरक निगोद में, तिहां खासी अनंती मार रे॥ ५८॥
छेदन भेदन पांमसी अति घणीं, तिहां सुख नही लवलेस रे।
परमाधांमी रे पांनें पड्यां, पांमे दुख असाता कलेस रे॥ ५९॥
इम सुण सुणनें नर नारीयां, सतगुर सेवो रूडी रीत रे।
भेषधारी भागल नें परहरें, राखो सुध साधां री परतीत रे॥ ६०॥
भेष अंधारी परगट करी, आणंदपुर सहर मझार रे।
समत अठारें तेतीसे समें, वेंसाख सुद इग्यारस रिववार रे॥ ६१॥

ढाल : १५

दुहा

अरिहंत सिध नें आयरिया, उवभाया सर्व साव।
मुगत नगरनां दायका, ए पांचूं पद आराध॥ १ ॥
वांदीजे नित एहनें, नीचो सीस नमाय।
गुण ओलख बंदणा कीयां, भव भव रा दुख जाय॥ २ ॥
साध साधवी श्रावक श्रावका, जिण भाष्या तीरथ च्यार।
छोटी मोटी माला गुण रतनां तणी, त्यांनें सीख कहूं हितकार॥ ३ ॥
साध साधवी श्रावक श्रावका भणी, चालणो इण मरजाद।
दोष देखे तो तुरत बतावणो, ज्यूं वधें नहीं विषवाद॥ ४ ॥
कोइ कषाय वस दुष्ट आतमा, ओर साधां सिर दे आल।
त्यांमें घणां दिन दोष कहें घणां, तिणरो किण विध काढे निकाल॥ ५ ॥
ओरां में बतावे दोष घणां दिनां, तिणरी मूल न मानणी बात।
आ बांदी मरजादा सर्व साधनें, ते लोपणी नहीं तिलमात॥ ६ ॥
तोही दोष काढे घणां दिनां, वले भूठो करें विषवाद।
ते अपछंदा निरलज नागडा, तिण लोप दीधी मरजाद॥ ७ ॥
इसडा अजोग नें अलगो कीयां, जब उ काढे दोष अनेक।
वले ओगुण काढे अति घणां, तिणरी बात न मानणी एक॥ ८ ॥
इण रीते साधनें चालीयां, किणरे संका पडे नहीं काय।
वले वशेष परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ९ ॥

ढाल

[डाभ मुंजादिकना डोरी]

हिवे सांभलजो नर नार, सुध साधां तणो आचार।
कदा कर्म जोगे दोष लागे, तो प्रायछित लेणो गुर आगे॥ १ ॥
कोइ गण मांहें दोष लगावे, ते निजर आपरी आवे।
ते नहीं राखणो दाब, उणनें कही देणो तुरत सताब॥ २ ॥
गुर चेला नें गुर भाइ मांई, दोष देखे तो देणो बताई।
त्यांसूं पिण करणो नहीं टालो, तिणरो काढणो तुरत निकालो॥ ३ ॥

कोइ दोष जाणीने सेवे, तिणरो प्रायछित पिण नही लेवे।
तिणने कर देणो गणसू न्यारो, कुण डूबसी तिणरी लारो ॥ ४ ॥
दोषीला सूं करे आहार नें पाणी, तिणरो चारित्र हुवे धूल धाणी।
दोषीलां ने राखे गण माय, तो सगलाइ भिष्टी थाय ॥ ५ ॥
गुर रो दोष चेलो ढाके, मूढे पिण कहितो साके।
तिणरे रहगइ भोलप मोटी, घर छोड हुवो छे खोटी ॥ ६ ॥
किणरो द्वेषी कोइ होय जावे, तिणमे दोष अनेक बतावे।
कहे म्हे छानां राख्या दोष जाण, म्हे राखी घणा दिन काण ॥ ७ ॥
घणा दिना रा दोष बतावे, ते तो मानवा मे किम आवे।
साच भूठ तो केवली जाणे, छदमस्थ प्रतीत न आणे ॥ ८ ॥
हेत माहि तो दोषण ढाके, हेत टूटा कहतो नहि सांके।
तिणरी किम आवे परतीत, उणने जाण लेणो विपरीत ॥ ९ ॥
इण दोषीला सूं कियो आहार, जद पिण नहि डरियो लिगार।
हिवैं आल देतो किम डरसी, उणरी परतीत मूरख करसी ॥ १० ॥
इण दोष क्याने किया भेला, इण क्यूं न कह्यो उण वेलां।
इणरी साध तणी रीत हुवे तो, उणरो उण दिन कहेतो ॥ ११ ॥
जद ऊ कहे न कह्यो डरते, गुर सू पिण लाजां मरते।
जब उणनें कहिणो पाछो, तोने किण विध जाणा आछो ॥ ॥ १२ ॥
थें दोषीला सू कियो संभोग, थारा वरत्या माठा जोग।
थारी परतीत नावें म्हांनें, इणरा दोष राख्या ते छानें ॥ १३ ॥
थें तो कियो अकारज मोटो, जिन मार्ग मे चलायो खोटो।
थारी भिष्ट हुइ मति बुद्ध, हिंवे प्रायछित ले हुय सुद्ध ॥ १४ ॥
उणनें पूछ्यां ऊ आरे होय, तो उणने प्रायछित देसां जोय।
जो ऊ पूछ्यां आरे नही होय, तो उणसूं जोर न लागे कोय ॥ १५ ॥
उणरी तो थारा कह्या सूं संक, पिण तू तो दोषीलो निसंक।
इम कहि तिणनें घालणो कूरो, प्रायश्चित नहि ले तो कर देणो दूरो ॥ १६ ॥
ज्यू कोइ वले नें दूजी वार, किणरा दोष न ढाके लिगार।
दोष ढांक्या सूं हुवै खुवारी, टाको भले तो अनंत ससारी ॥ १७ ॥
संका सहित ने राखे मांय, तो ओर साध दोषीला न थाय।
दोषीला ने जाणी राखे माय, तो सगलाइ साध असाध थाय ॥ १८ ॥
एक दोष सेवे नित साध, तिण संजम दियो विराध।
तिणनें साध जाण वादे कोय, ते अनंत संसारी होय ॥ १९ ॥

तो घणां दोष सेवे साख्यात, तिणनें जाण वादे दिन रात।
ते तो पूरा अज्ञानी बाल, ते रूलसी अनंतो काल ॥ २० ॥
एक दोष रो सेवणहार, तिण बांद्यां बधे अनंत संसार।
तो तिणमें जाणे घणां दोष साल, त्यांनें वांद्यां हुवे कवण हवाल ॥ २१ ॥
जाण जाण दोषीला नें बांदे, जिण धर्म न ओलख्यो आंधे।
ते तो बूड गयो कालीधार, आरे कियो अनंत संसार ॥ २२ ॥
छिद्रपेही छिद्र धारी राखे, कदे काम पडे जद कही राखे।
तिणमें साध तणी नहीं रीत, तिणरी कुण मानें परतीत ॥ २३ ॥
एहवारो वचन मांनें साचो, तो जिनमत पड जाय काचो।
पछे हरकोइ दोष बतावे, हरकोई झूठ चलावे ॥ २४ ॥
उणरी मान्या ऊ होय जावे सूरो, तो जिनमत रो हुवे फितूरो।
शुद्ध साध हुवे मोत्यां री माल, त्यांरे हरकोइ दे काढे आल ॥ २५ ॥
घणां दिनां काढे दोष विख्यात, तिणरी मूल न मानणी बात।
शुद्ध सावां री ए मरजाद, तिणसूं बधे नहीं विषवाद ॥ २६ ॥
ओर साधां में दोषण देखी, तुरत कहें ते निरापेखी।
तिणरे मूल नहीं पखपात, तिणरी मानणी आवे बात ॥ २७ ॥
किण में दोष परपूठ बतावे, ओर साधां नें आय सुणावे।
तिणरो किण विध काढे निकाल, दोनूं भेला नहीं तिण काल ॥ २८ ॥
एहवे कारण पडयां करे जेज, ओर मुतलब सूं नहीं हेज।
दोष ढांकण री नहीं नीत, आतो जिन मारग री रीत ॥ २९ ॥
प्रायछित देवारा छे कामी, त्यांमें कदेय म जाणो खामी।
पछे करे दोयां नें भेला, निकाल काढे तिण बेलां ॥ ३० ॥
जिणमें दोषण आप जाणे, प्रायछित देनें आणे ठिकाणे।
उतावल सूं न करणो विगाड़ो, प्रायछित न ले तो कर देणो न्यारो ॥ ३१ ॥
कदा सहज दोष छे ताय, दोनूं झगडे छे मांहोंमांय।
समझाया नहीं समझे ताय, तो केवल ज्ञानी नें देणो भलाय ॥ ३२ ॥

ढाल : १६

दुहा

भेषधार्‍यां रा त्याग वेंराग मे, लखण नही तिलमात।
विगे छोड बाजे वेरागीया, पिण एक इचर्य वाली बात ॥ १ ॥
उवे जाणे उत्तर गुण नीपनों, ते कर कर कूडी रूढ।
मूल गुण सहीत उत्तर गुण, दोनूं विगडया न देखें मूंढ ॥ २ ॥
ते सूस लोका ने जणावता, नाणें मन मे लाज।
ठगबाजीगर नी परे, करे अनेक अकाज ॥ ३ ॥
केइ सूंस करे सुध बुध विना, केइ मांन वडाइ आण।
केई मसाणीया वेराग स्यूं, केइ सरमा सरमी जाण ॥ ४ ॥
त्यांसूं पछे न जाए पालीया, चोडे भाग्या पिण नही जाय।
आरतध्यान मे दिन नीकले, पिण कारी न लागें कांय ॥ ५ ॥
सूस भागे पिण कपटी थकां, करे अनेक उपाय।
ते तो ताकें सेरी चोर ज्यूं, भेल सभेल कर खाय ॥ ६ ॥
त्यां विकला रा सूंसां तणी, परतीत आवें केम।
ते डाव घाव करे किण विधे, ते सुणजो धर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[विछिया नी देशी]

केइ भेषधारी महीना मझे, पनरें दिन विगे त्यागें जांण रे।
वेंराग विण सुध बुध बाहिरा, त्यारी बुंधवंत करजो पिछांण रे।
तुम्हें जोयजो सूंस विकलां तणां* ॥ १ ॥
ते पिण कहिवाने पनरें दिन कहें, पिण आगार राखे अनेक रे।
पूरा त्याग परूपें भूठा थका, ओ पिण घटमें नही ववेक रे ॥ २ ॥
एहवो त्याग परंपरा बांधीयो, ते पिण जोरी दावें कराय रे।
आप लूखो खाए पेलो चोपड्यों, तिणसूं अन्हाखो दे अंतराय रे ॥ ३ ॥
उ जां लग त्याग करें नही, त्यां लग थोडो घालें चुगराय रे।
ओर इधको लेवे चोरटा थका, उणनें त्याग बताय बताय रे ॥ ४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

देखे आप सूं उघको खावतो, जब जागें अभितर धेष रे।
कूड कपट सूं करें नषेघणां, तिण पहर विगाड्यों भेष रे॥ ५॥
म्हां बरोबर त्याग कीयां पछें, विगें वांटे देसां तोय रे।
तिणसूं ते पिण त्यागें तिण विधें, इम सहु सरीषा होय रे॥ ६॥
विनां परिणांमा सूंस करावीयां, इसको खेदो दीसें साख्यात रे।
त्यांरा सूंस पालण री विध सुण्यां, एक इचर्य वाली बात रे॥ ७॥
दोय च्यार जणां गया गोचरी, वेंहरी लाया पूरण आहार रे।
पिण विगें थोडो आयों देखनें, करें मांहोमांहीं मनवार रे॥ ८॥
जांणें थोडा विगें रे कारणें, म्हांरे कुण लगावें आज रे।
तिणसूं नां कहें माथो धूणनें, पिण नांणें मूरख लाज रे॥ ६॥
न लगावें सर्व लोलपी थका, जांणें गिणती में दिन घट जाय रे।
जब मांहोमांहीं निंदा करें, घृत कपडा रें देवें लगाय रे॥ १०॥
कोइ वधतो देखे कल्हो राड नें, कोइ डरतो थको मन मांय रे।
कोइ लाज सरम रो मारीयो, कदा थोडोसो देवें लगाय रे॥ ११॥
थोडो विगें खाधां वेदल हुवें, गिणती मां सूं घट्यो दिन जांण रे।
टाला टोलो करण खपे घणुं, पिण पडी गला नें आंण रे॥ १२॥
घृत थोडोसो आयों देखनें, केई आहार रे देवें लगाय रे।
लेप लागें ते लूखा में गिणे, सूंस भांगेनें इण विध खाय रे॥ १३॥
आइ फीणा रोटी चूरमादिक, वले गलगली रोट्यां पूर रे।
पिण घी थोडो आयो देखनें, कपटी किण विध बोलें कूड रे॥ १४॥
म्हें आज तो आहार लूखो करां, न लगावां विगें नें कोय रे।
तिणसूं फीणा रोटी चूरमादिक, लेवें पातरा मां सूं जोय रे॥ १५॥
चूरमा फीणा रोटीदिक मझे, जो तिणमें घी हुवें पाव अधसेर रे।
भावें जितो खाय लूखो गिणे, एहवो भेषधार्‍यां रे अंधेर रे॥ १६॥
कोइ रांक थको बुध केलवें, घृत ले काढें तिण मांय रे।
तिणनें डरावें लोलपी थका, वले झगडो राड मचाय रे॥ १७॥
त्यांमें रांक रहें छें जोवतों, लूंठो हुवें तो खाए डराय रे।
धींगामस्ती नें आरतध्यांन में, यांरा दुख मांहें दिन जाय रे॥ १८॥
आपरें लूखो खांणो जिण दिनें, कोइ आहार अपथ वेंहराय रे।
जब कपटी दगो करें इण विधें, विगें भेलों लेवें तिण मांय रे॥ १६॥
आपरें विगें खांणो जिण दिनें, पेंलारें लूखो खाणो हुवें आहार रे।
जब आवे रोटी चोपडी, तो घाल दे घृत मझार रे॥ २०॥

कितला एक घी खाए घणों, केकां नें घणों विगें भांय रे।
जब कोयक कोरो घी पीवे, पिण लाजें नही मन मांय रे॥ २१॥
यांरा खावारा चरित अनेक छें, ते तो पूरा कह्या न जाय रे।
वले वेंहर ल्यावण री विध कहूं, ते पिण सुणीयां इचर्य थाय रे॥ २२॥
सहर जाता विचे गांवडां मझे, कोइ ग्रहस्थ विगे वेहराय रे।
थोडो आवतो देख लेवें नहीं, आगे मोटी आसा मन माय रे॥ २३॥
घणो बिगे खावारें कारणें, लगतो खावे लूखो आंण रे।
ते तो सहर माहे गयां पछें, नित सरस विगे ले जांण रे॥ २४॥
घणों विगें ल्यावारी खप करे, ताक जाए ताजो घर जोय रे।
न मिलीयां न खाए तेहनें, वेरागी मत जांणो कोय रे॥ २५॥
जिण दिन विगें खाणो आपरे, जद जाए ताजो घर टाल रे।
आप न खाए खांणो ओर रे, जब जोवें घर अदेवाल रे॥ २६॥
दूजें दिन विगे खावा कारणे, ताजा घर देवे टाल रे।
ओरां नें पिण जावा दे नही, एहवी पेट री बांधें पाल रे॥ २७॥
विगें देवे न देवे तेहनां, सगला घर राखे टाल रे।
आप मूतलब वेंहरे तिण घरे, विण मूतलब देवे टाल रे॥ २८॥
आपरें लूखो खांणो जिण दिने, जब आगूंच बोले एम रे।
लूखो आवें ते वास बताय दे, तिणनें सरल कहिजें केम रे॥ २९॥
ते पिण पडीया पोमावता, ले ले त्याग रो मूरख नाम रे।
पिण खावा रो ध्यांन मिटीयो नही, त्या जनम विगाड्यो वेकांम रे॥ ३०॥
उवास करें जद पिण तेहनो, विगें खावारो न मिट्यों ध्यान रे।
ताजा घर थाप राखें पारणे, ओर साध ने न दें जाण रे॥ ३१॥
कदा बीजे दिन घर हुवे असूझतो, काई आय पडे अतराय रे।
उसभ करम वांधेने यूं ही रह्यो, पुन विना विगें किम खाय रे॥ ३२॥
ओर साध ने अतराय पाडियां, करम आठोंइ उसभ बधाय रे।
तीस कोडाकोड सागर तणी, उतकष्टी बंधें अतराय रे॥ ३३॥
पछें जिण गति जाए तिण गते, अवस आय पडें अतराय रे।
आसा मांडें ते न पडे पाधरी, चिंतवें ते निरफल थाय रे॥ ३४॥
विगें त्याग नें उत्तर गुण कीयां, जो पालें नही रूडी रीत रे।
उत्तर गुण नही भागां एकला, भांगां छे मूलगुण सहीत रे॥ ३५॥
कोइ विगे वेहरावें सुपातर जांणने, उलट परिणांमा दातार रे।
पिण विगे न खांणों आपरें, जद माडें वणी मनवार रे॥ ३६॥

कोइ लाज सरम रो घालीयो, विगें वेंहरावें दातार रे।
पिण आपरें खांणों जिण दिनें, ढीला मेलेनें कहें नाकार रे॥ ३७॥
आप विगें न खाए जिण दिनें, कोइ दातार विगें वेंहराय रे।
तो सूझता में संका घालनें, आप बुगल ध्यांनी होय जाय रे॥ ३८॥
आपरें विगें खांणों जिण दिनें, कोइ विगें देवें तिण काल रे।
असुध हुवें तो पिण छोडें नहीं, पूछेनें नहीं काढें नीकाल रे॥ ३९॥
आपरें विगें खांणों जिण दिने, करें कुदम कुदा जांण रे।
आपरें नहीं खांणों तिण दिनें, वेंहर ल्यावें घर समुदांण रे॥ ४०॥
एहवी ओघट घाट घटमें घणी, करें चाला चरित अनेक रे।
तिणरो भोलां नें रांक गरीब सूं, भेलो रहीवा रो मन वशेष रे॥ ४१॥
जिण साथे गयां विगें मिलें घणो, तिण साथे मेल्यां हरषत थाय रे।
थोडो मिलें तिण साथे मेलीयां, तो धडक पडें मन मांय रे॥ ४२॥
ओ तो किणही एक आगें रख्यां थकां, चाला चरित कीया नही जाय रे।
जब साप ठोडी दव्या नी परे, दुख पावें घणों सीदाय रे॥ ४३॥
गुर गुरभाइ नें ओर साध सूं, इणरें किणसूं म जांणों पीत रे।
उणनें घणों विगें आंण पोखीयां, तिणरोइ छें वनीत रे॥ ४४॥
तप करें विगें रें कारणें, तिणरा कुण कुण कहिजें दोष रे।
घणों खावानें मारें हिडवची, थोडें खायां न करें संतोष रे॥ ४५॥
विकल सूंस पालें इण विधें, ते तो निश्चें बूडा जांण रे।
वले सरधें साधपणों आपमें, ते तो मूंढ मिथ्याती अयांण रे॥ ४६॥
एहवो त्याग परंपरा बांधनें, घाल्यो टोलां में झगडो राड रे।
हेत तूटें मांहोमांहीं तिम कीयों, ते तो पूरा मूंढ गिवार रे॥ ४७॥
थोडा घणां सांह्मो जोवे नहीं, सेजां आयो लगावें जांण रे।
परतीत उपजावें पालतो, तिणरा त्याग कीयां परमांण रे॥ ४८॥
समत अठारें बतीसें समें, आसोज सुद बीज मंगलवार रे।
विकल पचखांणी परगट करी, खेंरवा सहर मझार रे॥ ४९॥

ढाल : १७

दुहा

कोइक रे माहोमां अडो अडी, कोइ आणे मन वेंराग।
जाव जीव विगें त्यागन करे, पछें कायर जाए भाग ॥ १ ॥
केई विगें खाए अपरेतीया, केदे हुवें अजीरण ताम।
आवजीव विगे त्यागे तिण समे, त्यांरो कठण घणों छें काम ॥ २ ॥
पछें भूरे रोट्यां देख चोपडी, इघकी लेवारें कांम।
परठावणीया खावाने हीज रें, भूडा रहे परिणाम ॥ ३ ॥
खाजा साकुली आया देखने, मन मे रहे ओघट घाट।
लाफसी सीरादिक जांणें आवीया, जोवे इघका लेवण री बाट ॥ ४ ॥
जो इघको न देवे तेहनें, तो जागे अभितर रोस।
आडी तेडी बातां घाली लडें, काढें अणहुंता दोष ॥ ५ ॥
दुष्ट परिणांम रहे तिण उपरें, वले बांधें तिणरी अंतराय।
वेर बुधी ज्यूं छिद्रर जोवतो, वले खुद्र परिणाम घट मांय ॥ ६ ॥
विकलां रा सूंस पचखाण सूं, दिन दिन कैंतब थाय।
ओर साघा ने उपसर्ग उपजे, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[धीज कर सीता सती रे लाल]

विकल सूंस करतां थका रे, राखे अनेक आगार रे। सुगणनर*।
ते करें विकलाइ अन्हाखी थका रे लाल, तिण घाली टोलां मे राड रे। सुगणनर ॥
सुणजो सूंस विकला तणां रे लाल* ॥ १ ॥
खावा नें मारें भाकुली रे, वले रहे निरतर सोच रे।
तिणरी विकलाइ देखनें रे लाल, ओर साघां ने उपजे संकोच रे ॥ सु० २ ॥
विगे आयो देखें पातरे रे, ओर साधां नें खाता देख रे।
तिणनें टालेनें देवें चोपडी रे, जब जागें मूरख ने धेख रे ॥ ३ ॥
जो टाल टालनें देवे चोपडी रे, वले सूंखडी आदि देवें टाल रे।
तो दवीयो थको पडीयो रहे रे, नही देतो उठें घट भाल रे ॥ ४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

तिणसूं आडी तेडी बातां घालनें, करें खोटोराइ जांण रे।
काढें अणहूंता खूंचणा रे, पग पग तांणा तांण रे॥ ५॥
पछें सावां नें सरधें लोलपी रे, वले बोलें अनेक विध कूड रे।
आल देतों संकें नहीं रे, तिणरा त्याग कीयां में धूर रे॥ ६॥
कोई सराग रो घालीयो रे, टाल देवें घणां रो आहार रे।
ते दोनूंइ चोर भगवांन रा रे, तीजो वरत भांजे हुवा खुवार रे॥ ७॥
कोइ विगें वेंहरावें तेहनें रे, तो नहीं वेंहरें मूंढ अयांण रे।
ओरां री इरषा रो घालीयो रे, ए बूडणरा छें अहलांण रे॥ ८॥
दातार तो हरष पांमें घणों रे, नीठ मिलीयो सुपातर जोग रे।
उ उलट परिणांमा वेंहरावतो रे, पिण विकल पचखांणी नें सोग रे॥ ९॥
एहवा विकल भेला रह्यां रे, उ जद तद दावादार रे।
ते गुण कीयां पिण अवगुण गिणें रे लाल, वले छिदर गवेषणहार रे॥ १०॥
इण विध आगें बूडा घणां रे, त्यांरो कहितां न आवें पार रे।
ते समकत बोध गमायनें रे लाल, गया नरक निगोद मझार रे॥ ११॥
वले बेला तेलादिक पारणें रे, विगें खाए विण मरजाद रे।
ओरां नें राखें झींकता रे लाल, आप इधका करें विषवाद रे॥ १२॥
तपसा करें खावारें कारणें रे, ते पिण पूरा मूंढ रे।
विगेंरो उद्यम करें पारणे रे, जाए ताजें ताजें घर ढूंढ रे॥ १३॥
ते पेटभरा ठग भेष में रे, ते पिण बुगलव्यांनी होय जाय रे।
त्यां भोलां नें पाड्या भर्म में रे लाल, ताजा माल आंणी खाय रे॥ १४॥
वले वीहार गामां नगरां करें रे, पिण रहें निरंतर संताप रे।
मिगसर महीना थी मांडनें रे लाल, करें चोमासा री थाप रे॥ १५॥
गमतो खेतर देखीनें कहें रे, म्हें अठें करसां चोमास रे।
ओरां री म करजो वीणती रे लाल, यांरें मांहोंमां नहीं वेसास रे॥ १६॥
मिगसर मास लागां पछें रे, मांडें घणीं दोडादोड रे।
जांणें मन चिंतवीया खेतर में रे लाल, रखे करें चोमासों ओर रे॥ १७॥
वले छती सगत फिरवा तणी रे, तोही थांणें वेंसें रहें जांण रे।
ताजो खांणों मिलें तिण सहर में रे लाल, पर रहें मूंढ अयांण रे॥ १८॥
जो ताजो आहार मिलें नहीं रे, तो छोड दें थांणों सताब रे।
वले अलगो खेतर आछो सुणे रे लाल, तो जाय वेंसे खेतर दाब रे॥ १९॥
थांणें वेंसें लोलपी थकारे, वले कूडा कारण बताय रे।
त्यांमें दोषां रो थाग दीसें नहीं रे लाल, ते पूरा केम कहीवाय रे॥ २०॥

तिणनें उपरलो आए मिले रे, तो छुडाय दें थाणों सताब रे।
विण परीणामां काढें दवकायने रे लाल, पाडे तिणरी आब रे॥ २१॥
उ साध श्रावका रो दबीयो थको रे, गयो अनेरे गांम रे।
पिण अंतरंग मे दुखीयो घणो रे, इणरो छूटो ठिकांणो ठांम रे॥ २२॥
इणने एकंत लोलपी जाणनें रे, ओरानें देतो जांणे अंतराय रे।
वले आंगुण घणां जाणे तेहनें रे, दीयो ठिकाणो छुडाय रे॥ २३॥
तोही तांणा वेजा तिणरे लागे रह्या रे, तिहां पाछा आवारा परिणांम रे।
जाणें चोमासो पूरो हूआ पछें रे, पाछो जाय बेंसेसूं तिण ठांम रे॥ २४॥
सुखसाता आगा ज्यूं तिहां पावसू रे, इणरें इसरो छें मन वेसास रे।
इण आसा सूं दिन गिनतां थकां रे, पूरों करें छें चोमास रे॥ २५॥
चोमासो पूरो हूआ पछें रे, पाछो आय बेंसें थांणे सताब रे।
तेतो लोलपी नगर पिंडोलीयो रे, तिणनें खाणे कीयो छे खुराब रे॥ २६॥
कदेयक तो थांणे कहे रे, कदे कारण बतावें ताहि रे।
इणरें कूड कपट रो चालो घणो रे, तिणनें विकल राखें गण मांहि रे॥ २७॥
कल्प मरजादा भांगी लोलपी थको रे, तिणरें कदेय म जांणो समाध रे।
तिणसूं आहार पांणी भेला करें रे लाल, त्यानें निश्चें कहीजें असाध रे॥ २८॥
वले तप करें महिमा वधारवा रे, पूजा सलाघा काज रे।
जस कीरत रा भूखा घणा रे, ठाला बादल ज्यूं करें ओगाज रे॥ २९॥
मत विखरतो जांणें आपरो रे, फिरता देखें श्रावक अनेक रे।
तो करे उपाय मत राखवा रे, ते सुणजो दिष्टंत एक रे॥ ३०॥
जोगी ब्राह्मण आददे दरसणी रे, ज्यारी जाती देखे डोली ग्रास रे।
तो करें उदंगल अति घणां रे, त्यारें आजीवका रो विसास रे॥ ३१॥
हाथ फाडें चादी चिगदो करें रें, मारें जांघ गलें घाले जाण रे।
इतरें कीयें सुलझें नही रे लाल, तो जूंहर खडके आंण रे॥ ३२॥
टूंटो खोडो पांगलो रे, वले गरटो जोजरो जांण रे।
निकमां माणस भेला करी रे, खडकें जूंहर मे आण रे॥ ३३॥
जो माथा उपर ली आए वणे रे, तो न गिणें बालक बघेल रे।
भेलाकर होमें धरती कारणे रे, देवे जूंहर मे ठेल रे॥ ३४॥
कदा जूंहर रस आवें नहीं रे, तो वणजाअें घणी खुराव रे।
ग्रास जाअेंने फिट फिट हुवें रे, उतरजाअें लोकां मे आब रे॥ ३५॥
इण दिष्टतें भेषधारी लोक मे रे, साधरो नाम धराय रे।
आजीविका अर्थे गच्छ बांधीयो रे लाल, भोलां आगें रह्या छे पूजाय रे॥ ३६॥

ते अकारज अनेक करता थका रे, संकें नहीं मन मांय रे।
ते मतवाला ज्यूं छकीया रहें रे लाल, ते डरें नहीं करता अन्याय रे॥ ३७॥
उघाड पडें त्यांरो लोकमें रे, कदे पूजा श्लाघा घट जायरे।
वले श्रावक फिरें मत वीखरें रे लाल, जब कुण कुण करें उपाय रे॥ ३८॥
केई गरढा अवनीत अजोगनें रे, तिणनें पोगां चढाय चढाय रे।
लांबी तपसा करावें तेहनें रे लाल, कें संथारो देवें कराय रे॥ ३९॥
तोही आघ आदर न हुवें लोक में रे, वले परजाअें इधको उघाड रे।
तो बाल जवांन पिण तेहनें रे लाल, करावें लांबो तप नें संथार रे॥ ४०॥
इम कर कर कांम चलावता रे, खाअें लोकां रा माल रे।
ते वरत विहूणा नागडा रे लाल, ते कूंदा वण रह्या लाल रे॥ ४१॥
कदा संथारो रस आवें नहीं रे, तो वणजाअें घणी खुराब रे।
आजीवका घटें मत वीखरे रे लाल, उतर जाअें लोकां में आब रे॥ ४२॥
चांदी चिगदां सम त्यांरो तप कह्यों रे, संथारो जूंहर समांण रे।
ते तो ग्रास आजीवका कारणें रे लाल, करें मनख मारें घमसांण रे॥ ४३॥
कोइ जूंहर मां सूं नीकलें रे, तिणनें पकड जूंहर में दें झोंक रे।
ज्यूं कोयक संथारो भांग नीकलें रे, तिणनें जोरी दावें राखें रोक रे॥ ४४॥
जो उ अनपांणी मांगे हेला करें रे, तो राखें अबोलो मुख मीच रे।
ते हाय विराय टलबल करें रे, तिणनें मारें भूंडीतरे कुमीच रे॥ ४५॥
खावापीवा रो अतृपतो मूआं रे, महा मोहणी कर्म बंधाय रे।
वले नरक निगोद मांहें पडे रे, पछें चिहूं गति झोला खाय रे॥ ४६॥
उणनें रोक राखें ते पापीया रे, ते मिनष ना मारण हार रे।
ते पिण बांधें महा मोहणी रे लाल, जासी नरक निगोद मझार रे॥ ४७॥
एहवीतरें मूआं नें मारीयां रे, दोनूं नें दुरगत होय रे।
यांरें कर्म बंधें महा मोहणी रे लाल, दसासतकंधे सुतर में जोय रे॥ ४८॥
विना विचास्यां लांबो तप करे रे, वले करें संलेखणा संथार रे।
पछें आरतध्यांन मांहें मरे रे लाल, ते चाल्या जन्म विगाड रे॥ ४९॥
ग्रहस्थ रा घरमें कलहो हुवें रे, कोइ ताकें कूओ नें खेड रे।
कोयक आपच करे मरे रे, वले खाय मरें केई जहर रे॥ ५०॥
ज्यूं भेषधारी घर छोडायनें रे, करें मांहोंमा कजीया राड रे।
त्यामें केयक दुखरा दाधा थका रे, करें संलेखणा संथार रे॥ ५१॥
त्यांरो संथारो पार पोहचें नहीं रे, पोहचें तोही असुध परिणांम रे।
मरें लाज सरम रा मारीया रे, त्यांरो मरणो छें मरण अकांम रे॥ ५२॥

जे बालमरण मूआ तके रे, बूड़ा घोर रूद्र संसार रे।
त्यांरा गुण कीरत महिमा करे रे लाल, ते पिण बूड़ा त्यांरी लार रे॥ ५३॥
विने करें सुतर भणें रे, करें तपसाने पाले आचार रे।
इहलोक परलोक जस कारणे रे लाल, ते तो भगवंत री आग्या बार रे॥ ५४॥
इहलोकादिक अर्थे तपसा करें रे, वले करें संलेखणा संथार रे।
कह्यों दसवीकालक नवमा अधेन में रे, अग्यां लोपी नें परीया उजाड रे॥ ५५॥
केई तपसा करें मांनी थका रे, केई पेट भराइ काज रे।
वले लोक सरायां हरषत हुवे रे लाल, त्याने केम कहीजे मुनीराज रे॥ ५६॥
ए सुण सुणनें नर नारीयां रे, करजो मनमें विचार रे।
समचे कह्या सगलां उपरे रे लाल, नांम लेइ न कह्यो उघाड रे॥ ५७॥
जिणमे अवगुण होसी एहवा रे, त्यांनें न गमें एहवी जोड रे।
बुधवंत सुण सुण हरषें घणा रे लाल, पामे आणंद कोड रे॥ ५८॥
सुस लेइ सुध पालजो रे, चोखा राखो परिणांम रे।
लोक वतावें आगली रे, एहवो म करजो काम रे॥ ५९॥
विकल पचखांणी आ दूसरी रे, कीधी खेखा सहर मझार रे।
संवत अठारें बतीसें समें रे लाल, काती विद बीज मंगलवार रे॥ ६०॥

ढाल : १८

दुहा

पचखांण सुणे विकलां तणो, करजो सूंस विचार।
सीखावण कहूं सर्व साधनें, ते बुधवंत लेजो धार॥ १ ॥
केई सूंस करें बैंराग सुं, तिण काले सुध परिणांम।
पछें पड जाअें केई आड दोढ में, तिण जन्म गमायो वेकांम॥ २ ॥
वले वाजें लोकां में वेंरागीया, त्याग बताय बताय।
पिण करें विकलाई अति घणी, तिणरी खबर न काय॥ ३ ॥
करें विकलाई तेहनें, सूंस कीया ते निरफल थाय।
वले खावापीवा रो अत्रिसो रह्यां, तिणरें मोहणी कर्म बंधाय॥ ४ ॥
तिणसूं पहिला तोलनें, कीजो उत्तर गुण पचखांण।
कीधां पछें सुध पालजो, ज्यूं वेगा पोंहचो निरवांण॥ ५ ॥
विकलाई देख विकलां तणी, समचें कहूं छूं भाव।
सूंस लेवण नें पालण तणों, कही बतावूं न्याव॥ ६ ॥

ढाल

[पूजजी पधारो हो नगरी सेविया]

कोइ बंधो करें जाव जीव लग एहवो, हूं एकटक करसूं आहार मुनिसर।
पछें चांप चांप आहार मरजादा लोपी करें, ते श्रीजिण आग्या बार हो मुनिसर।
करजो रे भवीयण सूंस विचार नें* ॥ १ ॥
एक वार दोय वार आहार कीयां थकां, साध नें दोष न कोय हो।
चांप चांप आहार एकण टकमें कीयां, छिद्र चारित रे होय हो॥ २ ॥
चांप चांप आहार करें एकण वार में, तेहिज आहार करें दोय वार हो।
तिण आज्ञा आराधी श्री जिणराज री, ते सुखे वहें संयम भार हो॥ ३ ॥
जो करणी नावें अणोदरी तेह सूं, तो करणो पूरो उन्मांन हो।
पिण कठोकठ साध नें आहार करणो नहीं, ते भाष गया भगवांन हो॥ ४ ॥
चांप चांप आहार करें छें तेहमें, दोषण उपजें अथाग हो।
निद्रा आलस रोग री उतपत हुवें, केई जाअें संजम सूं भाग हो॥ ५ ॥
जो करें उत्तरगुण आंण वेंराग नें, तो पालजे रूडी रीत हो।
जो आहार उनमांन एकण टकमें कीयां, ओर साधांनें आवें परतीत हो॥ ६ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

उपवास बेलादिक पारणे धारणें, तूं चांप चांप करेंलो आहार हो।
जद पिण अरिहंत री आज्ञा नही, ग्यानादि गुण नें विगाड हो॥ ७॥
उपवास वेला तेलादिक तप तणो, तू बधो करेला जावजीव हो।
पछें आरत ध्यांन मांहे पडीया थकां, तो वधसी कर्म अतीव हो॥ ८॥
बंधो कीयां विण छूटो तप करें, जो रहिता जांणे थिर परिणांम हो।
पछे बंधो करे तो पाले रूडी रीत सू, ज्यूं सुधरें आत्म काम हो॥ ९॥
तू उपवास वेला तेलादिक तप करे, तो बेंराग राखे घट माय हो।
ताजा घर पारणें धारणें नही राखणा, ओर साधा नें न देणी अतराय हो॥ १०॥
ताजा घर पारणें धारणें थाप राखीया, तो आ रीत छे घणी विपरीत हो।
वले साध सरखेला तोने लोलपी, थारी कुण मानेला परतीत हो॥ ११॥
तप कीजें सरल सभावे कर्म काटवा, उपवास बेलादिक जाण हो।
सहजें आयो कीजे पारणो धारणो, ज्यूं पामे पद निरवाण हो॥ १२॥
जावजीव पांचूइ विगें त्यागण तणा, थारा इसडा उठे परिणांम हो।
तो आगली पाछली कीजे विचारणा, ए कठण घणो छे काम हो॥ १३॥
सूस कीया पछे विगय खावण तणी, कारी न लागें काय हो।
पछें परिणांम आड दोड में वरतीयां, घणेरी खुराबी थाय हो॥ १४॥
तो सहजेइ विगे टाले सूस विण कीया, ओरांने विगे खाता देखी ताम हो।
पछें लूखो आहार कीया सुं ताहरा, किसडा एक रहे परिणांम हो॥ १५॥
जो चोखा परिणांम रहे नित ताहरा, वरस छमास लगे जांण हो।
तो त्याग कीजें दोय च्यार वरसां लगें, यूं सहिता सहितां कीजे पचखांण हो॥ १६॥
जो थिर परिणांम रहिता जाणे ताहरा, तो थागा थेंगरा रो नही काम हो।
तूं त्याग कीजें जावजीव निसंक सू, चढता राखे परिणांम हो॥ १७॥
पाछें रिगेंला तूं रोट्यां देखे चोपड़ी, तो लागेली घणी विपरीत हो।
ओर साघ सरखेला तोने लोलपी, उठेला घणी अपरतीत हो॥ १८॥
जे विगें त्यागे नें रोट्यां जोवे चोपडी, वले चोपडी रा जोवें दातार हो।
तिणरो खावारो ध्यान मिट्यो नही माहिलो, तिणनें बुधवंत देसी धिकार हो॥ १९॥
त्याग करें तो विकलाइ करे मती, राखे समता परिणांम हो।
ओर साघ बतावें तोनें आंगुली, तूं इसडो म कीजे कांम हो॥ २०॥
कदे ओर साघ तोनें जांणें सीदावतो, कोइ आहार आछो दें जोय हो।
ते पांती सूं इधिको लेवेंला कारण विना, तो कुण सरधें वेंरागी तोय हो॥ २१॥
ओर साधां नें विगें खाता देखनें, तूं धेष धरेंला मन माय हो।
साधां रो इसको खेदो कीयां थकां, ए पूरो वूडण रो उपाय हो॥ २२॥

सूंस कीयां पेंली ओर साधां भणी, कदे विगें नहीं धाम्यो तिलमात हो।
ते जावजीव सूंस करें तो पालण तणी, इचरज वाली छें बात हो॥ २३॥
वेंराग विनां विगें त्यागें उसभ उदें, वले ओर सूंसां रो करे पूर हो।
ते सूंस घणां मांहें भाग सकें नहीं, पछें गणसूं हो जाअें दूर हो॥ २४॥
उणरें ओघट घाट रहे घट में घणी, वलें पग पग कपट नें कूर हो।
उ खवारा चाला चिरत करें घणा, ते दिन दिन मुगत सूं दूर हो॥ २५॥
वले चेलां री भूख रहें तिणनें घणी, नहीं सूंस पालण री नीत हो।
सूंस लेइनें भांगें तेहनी, चिहूं गति में होसी कूपीत हो॥ २६॥
कोइ विगेंरो त्याग करें जीवें ज्यां लगे, पारणें धारणे आगार हो।
जो उ तपसा करें विगेंरो लोलपी थको, उणरो पडजाअे साधां में उघाड हो॥ २७॥
उ देखा देख पिण तपसा करतो नहीं, ते पिण रितु वरसात हो।
हिवें ग्रीषम रितु पिण ए एकलोइ तपकरें, ते लोलपी थको साख्यात हो॥ २८॥
ते थोडो विगें देखी तपसा करें नहीं, घणो आयो देख हुवें तयार हो।
एहवा चाला चिरत करें घणा, ते चाल्या जन्म बिगाड हो॥ २९॥
सूंस कीया जब परिणांम ओर था, पछें होय जायें ओर परिणांम हो।
तो थिर परिणांम करे सुध पालजे, ज्यूं सुध रें आत्म कांम हो॥ ३०॥
आहार विगें मरजादा सूं भोगवे, वले राग नें धेष रहीत हो।
देहीनें भाडो देवें छ कारणें, श्री जिण आग्या सहीत हो॥ ३१॥
जो इण रीतें आहार विगें नित भोगवें, तो साध नें दोष न कोय हो।
जो त्याग वेंराग करो कर्म काटवा, तो आपो वस आंणो सोय हो॥ ३२॥
वले केयकांरी अथिर घणी छें आत्मा, ते खिण मांहें रंग विरंग हो।
ते खिण एक में मंड जाअें सलेषणा, वले खिण मांहें जाअें मन भंग हो॥ ३३॥
उणनें धाप्यां तो मीठी लागें सलेषणा, भूखां मीठो लागें अन्न हो।
जो एहवा जीव मंडे सलेषणा, त्यांरो थिर किम रहसी मन्न हो॥ ३४॥
देवल धजा सरीषो मन जेहनों, ते करें सलेखणा संथार हो।
त्यांनें भूख लागां परिणांम भागल हुवें, ते कुसले न पोहचें पार हो॥ ३५॥
ज विगर विचार्‍यां करसी सलेखणा, वले विगर विचार्‍यां संथार हो।
पछें आरतध्यांन मांहें परीयां तिके, ते गया जमारो हार॥ ३६॥
तो पहिलां तूं अणसण अणादरी तप करे, वले दिन दिन आहार घटाय हो।
विगें रो त्याग सहितों सहितों करे, इम खीणी पारें कांय हो॥ ३७॥
पछें परिणांम दिढ रहिता जांणें ताहरा, तो बात काढे मुख वार हो।
परतीत उपजें ए सगला साध नें, मंडजे सलेखणा संथार हो॥ ३८॥

ते पिण गुरवादिक आग्या दीया, तो चढता हुवें परिणांम हो।
ते पिण देही नें पतली पाख्यां पछें, ढील तणों नही कांम हो ॥ ३९ ॥
एकासणो आंबल उपवास बेलादिक, वले विगे तणो परिहार हो।
इत्यादिक सूंस करे जाव जीवरो, तो करजे विचार विचार हो ॥ ४० ॥
केई सूर ने वीरपणों मानें आपने, ते करे जावजीव पचखाण हो।
पछें सूंस न जावें गीदर सूं पालीया, ते भागे विकल जांण जांण हो ॥ ४१ ॥
एहवा त्याग कीयां विण साध नें, दोष न लागें कोय हो।
तो काचा परिणांमा सूंस न कीजीए, सूतर साहमो जोय हो ॥ ४२ ॥
तप करता देख ओर साधा भणी, कोइ लोलपी करें कपटाय हो।
उ तपसा छोडें विगेरें कारणे, उणरें गिरधिपणो घट मांय हो ॥ ४३ ॥
तिणरें उपदेस देवारी खेद दीसें नही, वले भणवा ने लिखवारी न काय हो।
तोही नित विगें खावें तपसा करें नही, ओर साधां नें पाडें अंतराय हो ॥ ४४ ॥
उणनें आछा घर न बतावे गोचरी, तो उलटो डरावे तांम हो।
अन्हाखी थको दुख देवें साधां भणी, ते विगय खावा रें कांम हो ॥ ४५ ॥
जो तपसा करण रो कहे कोइ तेहनें, तो उ भूठ बोले कारण बताय हो।
इसरा अजोग अवनीत नें लोलपी, ते किण विध आवें ठाय हो ॥ ४६ ॥
जो उ आहार थोरो के उ आहार लूखो करे, वेंराग भावें रूडी रीत हो।
ते नित नित आहार करे तिण साध री, तिणरा कारण री आवें परतीत हो ॥ ४७ ॥
केयक कारण अणहुता बताय ने, ते लागा छे खावा लार हो।
केयक सूंस भांगेनें विकल थया, यां दोयां री सगत निवार हो ॥ ४८ ॥
तो बल समरथपणो देख सरीर नो, माहे सरधा वेंराग पिछांण हो।
वले काया निरोगी देखे आपणी, तू होय अवसर नों जांण हो ॥ ४९ ॥
वले दरब खेतर काल भाव विचारनें, वय जोवनादिक जांण हो।
वले गुरवादिक साधां नें पूछने, कीजें जावजीव पचखाण हो ॥ ५० ॥
सूंस कीया परिणांम सेंठा रहे, त्यांरा सूंस कीया परिणांम हो।
जें सूरा वीरा पार पोहचावसी, ते पांमे पद निरवाण हो ॥ ५१ ॥
ए भाव सुणे उत्तम नर नारीयां, चोखा पालजों सूंस हो।
ज्यूं फेरा टलें जन्म नें मरण तणा, पूरीजें मन हूंस हो ॥ ५२ ॥
समचें कही छें विकल सीखावणी, गुंदवच सहर मझार हो।
संवत अठारें बतीसा वरस में, बेसाख सुद ग्यारस सोमवार हो।
करजो रे भवीयण सूंस विचारनें ॥ ५३ ॥

ढाल : १६

दुहा

दुषम आरो पांचमो, घणो हलाहल मांन।
तिणमें भेषधारी हुसी घणा, कूड कपट री खांन॥ १॥
अे कुबदी खेला नाचसें, इण साध तणा भेष मांय।
वले हिंसा धर्म परूपनें, अें परसी नरक में जाय॥ २॥
त्यांरा विकल श्रावक नें श्रावका, ते करसी कूडी पषपात।
त्यांनें कुबद कदाग्रह सीखाय नें, त्यांनें पिण लेसी साथ॥ ३॥
ज्यांरे अंधकूंप नें जलोजथा, त्यांरें दिवस तका हीज रात।
ए गुघू सरीषा होय रह्या, वले दिन दिन अधिक मिथ्यात॥ ४॥
अें नव नव आंकरा नवकडा, ते जासी नरक मझार।
माहा नसीत में में सुण्या, ते सुणजो विस्तार॥ ५॥

ढाल

[सल कोइ मत राख]

आचार्य नें साध साधवी, वले श्रावक श्रावका जांणो रे।
अें गुण विण नांम धरायनें, नरक जासी त्यांरो परिमांणो रे।
इण विध ओलखों नवकडा* ॥ १॥
पचावन कोड नें लाख पचावन, वले पचावन हजारो रे।
पांचसो नें पचावन उपरां, आचार्य जासी नरक मझारो रे॥ २॥
छासठ कोड नें छासठ लाख, वले छासठ कह्या हजारो रे।
छसों नें छासठ उपरें, साध जासी नरक मझारो रे॥ ३॥
सितंतर कोड लाख सितंतर, वले सितंतर हजारो रे।
सातसों नें सितंतर उपरें, साधव्यां जासी नरक मझारो रे॥ ४॥
अठ्यासी कोडनें लाख अठ्यासी, वले अठ्यासी हजारो रे।
आठसों नें अठ्यासी उपरें, श्रावक जासी नरक मझारो रे॥ ५॥
निनांणूं कोडनें लाख निनांणूं, वले निनांणूं हजारो रे।
नवसों नें निनांणूं उपरें, श्रावका जासीं नरक मझारो रे॥ ६॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए आचार्य नें साध साधवी, पदवी धर वाजे मोटा रे।
जे नरक जासी इण भेष मे, त्यांरा लखण घणां छे खोटा रे॥ ७॥
ते भिष्ट थया आचार थी, वले सरधा मे मूंढ मिथ्याती रे।
पहरण सांग साधां तणों, पिण थोथा चिणां रा साथी रे॥ ८॥
खाए पीए सुखे दीहां सूय रहैं, वले डील में वण रह्या लूंठा रे।
गोचरी वीहार करें जरें, जांणे रावला कोतल छूटा रे॥ ६॥
अें तो फिरता वचन बोले घणा, वले कूड कपट मांहे राचे रे।
चरचा करें तिण अवसरे, जांणे ओघड उघाडा नाचें रे॥ १०॥
न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या फेन फिलूरा रे।
जो सूतर री चरचा करें, तो पग पग पड जाय कूडा रे॥ ११॥
कूड कपट करे मत बांधीयो, ते तो पेट भराइ काजें रे।
आचार मे ढीला घणा, तोही निरलजा मूल न लाजे रे॥ १२॥
ते साध नांव धरायनें, ठांम ठांम थांनक करावें रे।
तिणरी सांनी सूं कर कर आंमना, छ काय जीवां नें मरावें रे॥ १३॥
आधाकर्मी थांनक नें भोगवें, वले सांग साध रो धरीयो रे।
छ काय जीवां नें मरावता, ओ तो पीहर पूरो पडीयो रे॥ १४॥
वले पडदा परेच बंधावता, चंद्रवा सिरकी ताटा रे।
वले छपरा छांन करावता, तिणरा ग्यांनादिक गुण न्हाठा रे॥ १५॥
इत्यादिक थांनक रें कारणें, जीव हणे वारूंवारो रे।
एहवा थांनक साध भोगवें, ते चाल्या जन्म विगाडो रे॥ १६॥
साध थइ उदेसीक भोगवे, वले मोल लीयो वहरें आहारो रे।
नित पिंड वेहरे एकण घरे, ते जासी नरक मझारो रे॥ १७॥
ए उत्तराधेन रें वीसमे, वीरना वचन संभालो रे।
जे उदेसीकादिक भोगवें, त्यारें किम होसी नरक सू टालो रे॥ १८॥
घी खांड लाडू मिश्री मोल ले, त्यांरा भर भर मेलें चाडा रे।
मोल ले ले वेंहरावें साध नें, ते तो गर्भ में आवसी आडा रे॥ १९॥
घी खांड लाडू लूंग मिश्रीयां, मोलरा लीधा वेहरें जांणो रे।
वले साध वाजें इण लोकमे, ते तो पूरा मूंढ अयांणो रे॥ २०॥
जो चेलो हूंतो जाणे आपरो, तो उणने रोकड दांम दरावे रे।
पांचमो महावरत भागनें, तोही साध रो विडद धरावें रे॥ २१॥
जीवादिक जांणे नही तेहनें, पांचोइ महावरत उचरावे रे।
साध रो सांग पेंहराय नें, भोला लोका ने पगां लगावें रे॥ २२॥

बालक बूढो देखें नहीं, यांरे पांनें पडें ज्यूं ज्यूं मूंडें रे।
नांव ना करवा आपरी, ते तो मांन बडाइ सूं बूडें रे॥ २३ ॥
वले चेलो करवा कारणें, मांहोमां झगडो मांडें रे।
फाडा तोडो करता लाजें नहीं, इण साध रा भेष नें भांडें रे॥ २४ ॥
गांवां नगरां समाचार मेलवा, सांनीकर ग्रहस्थ बोलावें रे।
कागद लिखावें तिण कनें, विवरों आप बतावें रे॥ २५ ॥
ग्रहस्थ आगें वीयावच करावीयां, साध नें कह्यो अणाचारी रे।
दसवीकालक तीजा अधेन में, कोइ बुधवंत लेजो विचारी रे॥ २६ ॥
भागल तूटल त्यांमें घणा, त्यांरो कुण काढें नीकालो रे।
जो थोडासा त्यांनें छेडव्यां, उलटो दे अन्हाखी आलो रे॥ २७ ॥
आप सरीषा करवा खपें, दे दे अणहूंता आलो रे।
त्यांनें परभव री चिंता नहीं, त्यांरें झूठ तणो नहीं टालो रे॥ २८ ॥
सुध साधां रे माथें आल दें, त्यांरा टोला में तेह सपूतो रे।
तिण झूठ रो निरणो करें नहीं, त्यांरें नरक जावारा सूतो रे॥ २९ ॥
झूठो आल देवें तेहनें, प्रायछित न दें लिगारो रे।
तिणसूं आहार पांणी भेलो करें, ते बूड गया कालीधारो रे॥ ३० ॥
रेणादेवी री कुगुर नें ओपमां, ते सांभलजो चित्त ल्यायो रे।
कूड कपट करे पापीया, सुध साधां सूं दे भिडकायो रे॥ ३१ ॥
रेणादेवी दिखण रा बाग में, अणहूंतोइ सर्प बतायो रे।
तिण आपणा किरतब ढांकवा, उण बोलीयो मूसावायो रे॥ ३२ ॥
तिण जिणरिष नें जिणपाल रे, उण घालदी संका मोटी रे।
पिण बुधवंत जाए जोयों तिहां, जब जांणी छें तिणनें खोटी रे॥ ३३ ॥
ज्यूं कुगुर रेणादेवी सारिषा, संका साधां रो घालें रे।
ते आपणा किरतब ढांकवा, सुध साधां कनें जातां पालें रे॥ ३४ ॥
पिण बुधवंत पूछ निरणो कीयो, जब जांण लीया त्यांनें खोटा रे।
ग्यांन किरीया में पोला घणा, जांणें पांणी तणा परपोटा रे॥ ३५ ॥
तिण रेणादेवी सांहमों जोयनें, जिनरिष हूवो खुवारो रे।
तिम कुगुरां परतीत सूं, दुरगत जासी नरभव हारो रे॥ ३६ ॥
रेणादेवी रो कपट जिहांइ रह्यो, पिण कुगुरां रा कपट छें भारी रे।
आप डूबें ओरां नें डबोवता, केई हुय जाए अनंत संसारी रे॥ ३७ ॥
सांग पहरे साधां तणों, खाधा लोकां रा मालो रे।
तप जप संजम बाहिरा, अें कूंदा बण रह्या लालो रे॥ ३८ ॥

इम सुण सुणनें नर नारीयां, छोड दो कुगुर सताबो रे।
सुध साधां तणी सेवा करो, राखी चावों इजत आबो रे॥ ३६॥
संवत अठारें तेतीसे समे, जेठ सुदि पुनम शुक्रवारो रे।
कही छे कुगुरा री नवकडी, रीया गाव मझारो रे॥ ४०॥



ढाल : २०

दुहा

दुषम आरें पांचमें, श्रावक श्रावका नांम धराय।
गुण विण ठाला ठीकरा, पडसी नरक में जाय ॥ १ ॥
ते हीण आचारी कुगुरां तणी, सेवा करें दिन रात।
त्यां भूठा नें साचा करवा भणी, कूडी करें पखपात ॥ २ ॥
त्यां आंधा नें मूल सूझें नहीं, न्याय मारग री बात।
पाषंड मत में रच रह्या, घट मांहें घोर मिथ्यात ॥ ३ ॥
दीठी ने अणदीठी कहें, भूठ बोलता नांणें सांक।
आल देवण नें नहीं आलसू, त्यांरी बोली में बांक ॥ ४ ॥
एहवा श्रावक जासी नरक में, त्यांरा चाला चिरत अनेक।
वले थोडासा परगट करूं, ते सुणजो आंण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अणुकम्पा न आणिये]

नव नव आंकारा कुगुर नवकडा, ते तो जासी नरक मझार रे।
त्यांरा श्रावक नें श्रावकां तणों, तुम्हें सांभलजों विस्तार रे।
एहवा श्रावक जांणों नवकडा* ॥ १ ॥
धुर सुं तो भूला मारग मुगत रों, गुर काजें हणे छें जीव रे।
वले धर्म जांणें हिंसा कीयां, त्यां दीधी नरक री नीव रे ॥ २ ॥
चवतो देखे थांनक जो गुर तणों, तिणरी आय करें संभाल रे।
नीलों उखण उपर न्हांखें मुरड नें, करें अनंत जीवां रों खेंगाल रे ॥ ३ ॥
पीलो पांणी तणा जीव मारनें, दडें लीये थांनक नें आय रे।
ते पिण गुर रें काजे निसंक सूं, अें तो हण रह्या जीव छकाय रे ॥ ४ ॥
केइ करावें थांनक मूल थी, धुर सूं नवी जायगां उठाय रे।
पूछें जीव विणासे विध विधें, ते तो कह्यों कठा लग जाय रे ॥ ५ ॥
गाडां गाडां पृथवी मंगावता, वांणा वांणा पांणी मंगाय रे।
कचरा कूटों करे छ काय रो, मन गमतों थांनक बणाय रे ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केई करे मजूरीया हाथ सूं, उडी उडी दरावें नीव रे।
घर रो गरथ देई पापीया, छ काय रा मरावे जीव रे॥ ७॥
छ काय हणेंने थानक करे, तिणमे धर्म जांणे निसंक रे।
तिणसूं ठांम ठांम जायगा बधे, एहवा लागा कुगुरां रा डंक रे॥ ८॥
त्यानें पूछ्यां बोले केई पाधरा, केई भूठ बोले ततकाल रे।
भायां निमते थांनक करायो कहे, अन्हाखी थका भाखे अलाल रे॥ ९॥
प्रतख करायो गुर रे कारणे, लाजा मरता खाचेले आपरे।
धर्म रे ठिकांणे भूठ वोलने, भारी हुवे चीकण बाधे पाप रे॥ १०॥
धर्म ठिकांणे भूठ बोलीया, बधे महामोहणी कर्म रे।
सित्तर कोडाकोड सागर लगे, नही पामे जिणवर धर्म रे॥ ११॥
ज्यूं किणरी मा वेनादिक डाकण हुवे, त्यारी बात सुण्या पामे खीज रे।
त्यानें साची करण खपे घणूं, भूठो थको पिण थापे धीज रे॥ १२॥
वले अनेक उपाय करे घणा, घर जाणो पिण कर दे कबूल रे।
पिण मुख सू डाकण कहणी दोहिली, गाढोइ भूडो हुवे कबूल रे॥ १३॥
ज्यूं भारीकरमा केई जीवडा, वोलें कुगुरा रे बदले भूठ रे।
त्यांनें साचा करण खपे घणुं, कूडा गुण करें मुख परपूठ रे॥ १४॥
अनत संसार सू डरे नही, नरक जाणों पिण करें कबूल रे।
पिण मुख सू खोटा कहणा दोहिला, रह्या पाखड मत मे भूल रे॥ १५॥
डाकण रे वदले धीज कीया थका, कदा राजा कोप्यां घर जाय रे।
पिण कुगुरां काजे भूठ वोलीया, पडे नरक निगोद मे जाय रे॥ १६॥
आप आदरया त्यां कुगुरां तणा, देवें दोषण सगला ढांक रे।
सुध साधा ने आल देता थका, पापी मूल न आणे साक रे॥ १७॥
सुध साधां री निदा करे, वले निजर पड्या जागे धेष रे।
त्यासूं वरते वेरी ने सोक ज्यूं, जोवे छल छिदर वसेष रे॥ १८॥
आप कुगुरा ने सेठा झालीया, त्यामे दोषां रो छेह न पार रे।
तिण सुं साधां तणा दोष जोवता, खप कर रह्या मूंढ गिवार रे॥ १९॥
पिण साधा माहे दोष देखें नही, जब कूडोइ देवें आल रे।
पछे भूठ वोली वकता फिरे, त्यारे कुण काढे निकाल रे॥ २०॥
कडवो तूवो वेहरायो साध ने, नागश्री ब्राह्मणी एक वार रे।
तिणसूं ससार मे रुली घणी, सातूं नरकां मे खाधी मार रे॥ २१॥
तिण तो न्हांखण रा आलस भणी, तूवो वहरायो साध ने देख रे।
तिणराइ फल लागा पाडुआ, पामी दुख मांहे दुख वसेष रे॥ २२॥

तो साधां री केइ निंदा करें, वले राखें अभितर धेष रे।
अछतो पिण आल देवें निसंक सूं, ते तो बूडा वले वसेष रे॥ २३॥
केई करला बोलें बूरी तरे, केई वांछें साधां री घात रे।
केयक परीसा देवें वचन रा, केई तपता रहें दिन रात रे॥ २४॥
सर्व पाषंडीयां सूं मिल गया, वले लोकां नें देवें लगाय रे।
त्यांरे केडें गमता बोलें घणा, साधां सूं वेंरी करवा ताय रे॥ २५॥
एहवा नागश्री सूंइ अति बूरा, त्यांरो कहतां न आवें अंत रे।
तेतो नरक गांमी छें नवकडा, त्यांनें ओलखल्यो मतवंत रे॥ २६॥
नागश्री ब्रांह्मणी दुख भोगवे, नीठ नीठ पाम्यों तिण अंत रे।
सदा वेंरी ज्यूं वरतें साध सूं, त्यांरो हुसी कुण विरतंत रे॥ २७॥
हिवें कहि कहि नें कतरो कहूं, कोइ बुधवंत करजो विचार रे।
जे जे साधां रें सिर आल दें, ते तो बूडा कालीधार रे॥ २८॥
जो साची नें साची कहें, तेतो निंदा म जांणों कोय रे।
साची नें साची कहणी निसंक सूं, ते पिण अवसर जोय रे॥ २९॥
अेंतो जीव अजीव जांणें नही, आश्रव संवर की खबर न कांय रे।
आश्रव सेवें संवर धर्म जांणनें, अें तो चोडें भूला जाय रे॥ ३०॥
उपभोग परिभोग श्रावक तणा, तेतो इविरत आश्रव मांहि रे।
सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, यांमें धर्म जांणे छें ताहि रे॥ ३१॥
देवगुर धर्म ओलखीयां विना, रह्या ठाला बादल ज्यूं गूंज रे।
वले धोरी होय बेठा धर्म ना, पिण पूरा छें मूंढ अबूज रे॥ ३२॥
केई चरचा में अटकें घणा, पिण सूधा न बोलें मूंढ रे।
अण विचास्यां उंधा बोलें घणा, पिण छोडें नहीं खोटी रूढ रे॥ ३३॥
वले गुर रों आचार जांणें नही, सरधां री पिण खबर न काय रे।
भेषधारी भागल तूटल भणी, तिखोतो कर वांदें पाय रे॥ ३४॥
घी खांड लूंग मिश्री आदि दे, मोल ले ले वेंहरावे जांण रे।
वले नीपनों जांणें वरत बारमो, इसडा छें मूंढ अयांण रे॥ ३५॥
बारमो वरत भांगें आपरो, साधां नें वेंहरावे ले मोल रे।
तका पिण समझ पडें नहीं, त्यांरा वरतां मांहे मोटी पोल रे॥ ३६॥
थांनक मोल लें गुर रें कारणें, वले भाडें लेवें गुर काज रे।
बारमो वरत भांग भागल हुवा, नरक में जासी श्रावक बांज रे॥ ३७॥
कपडो मांगें साध साधवी, जब हाजर नही घर मांय रे।
मोल ले ले वेहरावें साध नें, गांव परगांव सुं मंगाय रे॥ ३८॥

मोल ले ले कपडो वेंहरायनें, वले धर्म जाणे मन मांय रे।
इसडी सरधा रा श्रावक श्रावका, ते तो दुरगति पडसी जाय रे॥ ३६॥
जीमणवार आरा तणें घरे, माड धोवण उंनो पांणी जांण रे।
ते साधां नें वेहरावा कारणे, आपरे घरे राखे आंण रे॥ ४०॥
पछे तेड वहरावे साध नें, वले जांणे होसी मानें धर्म रे।
एहवा कुगुरां रा भरमावीया, भूला छें अग्यानी भर्म रे॥ ४१॥
केई धोवण जांणे इधको करे, साधां ने वहरावण कांम रे।
उंनो पांणी करे ठामडा भरे, ते पिण ले ले गुर रो नाम रे॥ ४२॥
घणा साध साधवी जांण नें, इधको नीपजावें आहार रे।
पछें भर भर वहरावें पातरा, ते तो परभव में होसी खुवार रे॥ ४३॥
असुध आहार पांणी वहरावीयां, बंधें पाप कर्म रा पूर रे।
साध पिण जांणे वेहरे असुझतो, ते तो साधपणा थी दूर रे॥ ४४॥
केइ आहार वहरावे असुझतों, केइ कपडों वहरावें असुध रे।
देवें थानकादिक असूझता, भिष्ट हुइ सगलां री बुध रे॥ ४५॥
सामायक संवर पोसा मझे, करें सावद्य जोग रा त्याग रे।
तिणमे भागलां ने वंदणा करे, सामाइ पोसों पिण गया भाग रे॥ ४६॥
एक समाइ भांगे तेहनें, डंड देवे समाइ इग्यार रे।
तो नितका सामाइ भागे तके, ते तो गया जमारो हार रे॥ ४७॥
सूंस न लें त्यांने पापी कह्या, लेनें भागे ते महा पापी होय रे।
वलें जांने हूं श्रावक मोटको, त्याने नरक तणी गति जोय रे॥ ४८॥
मांनें भागल तूटल एकल मणी, वीणती कर राखे चोमास रे।
ते पिण साधां सुं धेषरा घालीया, वखाण सुणे तिण पास रे॥ ४९॥
जो उ साधां रा आंगुण वोलें घणा, तिणने हरष सू देवें दांन रे।
वले करें प्रसंसा तेहनी, घणो देवे आदर सनमांन रे॥ ५०॥
उणनें मन में तो साध जांणें नही, तोही वधारे उणरो आध रे।
ते पिण साधां सुं धेष चलायवा, त्यांरो निश्चेंइ जांणो अभाग रे॥ ५१॥
आप आदस्या कुगुर तेहनां, गुण वोलावण रें कांम रे।
उपिण लोभ रो घालीयो थको, भूठा भूठा करे गुण ग्राम रे॥ ५२॥
एहवा चाला चिरत करें तेहनें, जो पाप उदें हुवें इण भव आंण रे।
दुख असाता अठेइज हुवें घणी, परभव मे तो संका मत आंण रे॥ ५३॥
भागल रा वखांण वांणी सुण्यां, केई पडवजें वेगो मिथ्यात रे।
वले तहत वचन करे तेहनों, तिणनें हूंकारें मूंगी बात रे॥ ५४॥

ज्यारें कुगुरां सूं राग अति घणों, वले साधां सूं अंतर धेष रे।
दोनूं कांनी देवालो तेहनें, ते तो बूडा में बूडा वसेष रे॥ ५५॥
करलो डंक लागों कुगुरां तणों, तिणसूं करें त्यांरी पखपात रे।
त्यांसूं लीधी टेक छूटें नहीं, त्यांरा घट में छें मोटो मिथ्यात रे॥ ५६॥
संवत अठारें नें तेतीसे समें, असाढ विद नवमी रविवार रे।
श्रावक नरकगांमी नवकडी, कीधी रीयां गांव मझार रे॥ ५७॥

ढाल : २१

दुहा

भारीकरमा जीव ससार मे, ते भूला अग्यानी भर्म।
त्यांनें गुर पिण मूढ मूरख मिल्या, ते किण विध पामे जिण धर्म॥ १ ॥
सुध साधां री निंदा करें, वले देवे अणहूंतो आल।
त्यांरा बोल्यां री समझ त्यांनें नही, तिणरो कुण काढे नीकाल॥ २ ॥
त्यांनें ठीक नही धर्म अधर्म री, गुर कुगुर री खबर न काय।
वले साधू तणा आचार री, समझ नही मन मांय॥ ३ ॥
डाकण नें चढवा जरख मिले, जव डाकण हरखत थाय।
ज्यूं भारीकरमा नें कुगुर मिले, जाणें पाछ रही नही काय॥ ४ ॥
त्यांनें कुगुर कुब्द सीखाय ने, कलेस करावे दिनरात।
ते कुगुर सहित जाजें कुगत में, तिहां मार अनंती खात॥ ५ ॥

ढाल

[समरूं मन हरषे तेह सती]

अनादरो जीव गोता खावे, समकत पंथ हाथे नही आवे।
मिथ्यात मत माहे कलीया, करम जोगे गुर माठा मिलीया॥ १ ॥
उसभ उदें सूं सवलों नही सूझे, वले भाव सहीत कुगुरां ने पूजे।
ते मुगत मारग सूं परा टलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २ ॥
जे कुगुर तणें पडीया पानें, ते सुगुर तणा वेण नही मानें।
मिथ्यात मत मे काढा मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ३ ॥
भारी दोष लगावता नही साके, वले पांचमां आरा रे सिर न्हाखें।
ज्यासूं वरत नही जाजें पलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ४ ॥
सूतर रो न्याय तो नही जाणें, कुगुरां री पख काठी ताणे।
उधा उंधा बोले क्रोध सूं बलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ५ ॥
भात भात साध त्यांनें समझावे, पापी जीव रे मन नही भावे।
त्यांरे माठी गतिरा टांका झलीया, करम जोगे गुर माठा मिलीया॥ ६ ॥
ज्यारे उसभ कर्म तणा जोरा, ते केवली थकां रहि गया कोरा।
त्यांरा पिण वाल्या नही वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ७ ॥

मेंला जीव मारग नहीं आवें, त्यांनें उपदेस दीयो अहलों जावें।
ते मोहकर्म सूं माठा खलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ८ ॥
भारीकरमा जीव मूंढ मिथ्याती, साधू नें दीठां बल उठें छाती।
वले ओगुण बोलणनें उललीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ६ ॥
साध काजे बांवे ताटा ताटी, त्यां विकलां नें गति होसी माठी।
वले भीत चूणे भेलाकर ढलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १० ॥
साध काजे परदा आण बांधे, जिण धर्म नहीं जाण्यो आंधे।
बले छावण लीपण नें हल फलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ११ ॥
श्रावक नें जीमावे धर्म जांण, छ काय रो कर कर घमसाण।
ते जिन मारग सूं जाबक टलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १२ ॥
कुगुरां रो तो दोष जाबक ढांके, साधां नें आल देता नहीं सांके।
त्यांरा लोकीक में पिण गुण गलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १३ ॥
त्यांरे कुगुरां रा डंक भारी लागा, कजिया राड करवानें आगा।
वचन बोले अलिया अलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १४ ॥
न्याय तणी चरचा करतां, त्यां विकलां नें वार नहीं लडतां।
उंधा बोलें क्रोध मांहें बलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १५ ॥
जिण आगम न्याय देवें ठेली, अनमतीयां नें उठाय करें बेली।
पाषंडीयां में जाय मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १६ ॥
गुणवंत साधां रा कोई गुण गावें, ते दुष्ट जीवां रें मन नहीं भावें।
ते रात दिवस रहें परजलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १७ ॥
जीवादिक नवतत रो नही निरणों, वले क्रोध तणों लीधो सरणों।
त्यांनें मोहकर्म अजगर गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १८ ॥
न मिट्यों च्यारूं गति में आवण जांणों, चोरासी में लागो बेजा तांणो।
जिम आंमा साहमां फिर रह्या नलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १६ ॥
देवगुर धर्म तणे काजें, जीवां नें हणता नहीं लाजें।
त्यांनें कुमत करे कुगुरां छलीयां, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २० ॥
आचार री बात लागें काठी, त्यांरी सुध बुध अकल जाबक नाठी।
आंधें पुरुष धरटी में मोती दलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २१ ॥
गुण विण साध रो सांग धरें, त्यां विकलां रा पगां में जाय पडें।
ते बीज विहुणा हांके हलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २२ ॥
आधाकर्मी थानक सेवण लागा, ते चारित विहुणा छें नागा।
त्यांनें वांदें पूजें मांनें मन रलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २३ ॥

सामायक पोसा मांहे भागलां नें वादे, ते करमां रा पूंज भारी बाधे।
त्यारा समकत सहीत वरत गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २४॥
भागलां ने वादे जोडी हाथ, ते पाप करम बाधे सात।
उलटा कर्म रिणे मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २५॥
हरीया जव देखीनें मिरग डरे, वावर माडी मे जाय पडे।
मिरग ज्यूं सेधे मारग जाए हीलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २६॥
आप गुर रा किरतब देखें, तो उचे सुर बोलें किण लेखे।
न्याय विना बोले सिकल विकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २७॥
ज्यारे कुगुरा रो डंक लागो भारी, त्यानें आचार री बात लागें खारी।
ते अणाचास्या सू हिलिया मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २८॥
पाच महावरता री चरचा छेरें, तो तुरत मूंहढा नो रंग फेरे।
अतरंग मे आधण ज्यू उकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ २९॥
जो वरता री चरचा करें त्या आगे, तो क्रोध करे लडवा लागे।
जाणे भाड मा सू चिणा उछलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ३०॥
जो साध रो आचार कहे तिण आगे, तो रूम रूम मे लाय लागें।
मूह विगाड बोलें क्रोध बलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ३१॥
ज्यारे कुगुरा रो डंक लागो जाणो, त्यारी बोली मे नही ठोर ठिकांणो।
कहि कहिने तुरत जाए बदलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया॥ ३२॥
जोड कीधी छे कोठरीये गांम, संवत अठारें तयाले वरस ताम।
काती सुद आठम नें सोमवार, उत्तम गुर सेवो नर नार॥ ३३॥

ढाल : २२

दुहा

इण दुषम आरें पांचमें, विगस्यो साधरो भेष।
संका हुवे तो पूछ निरणों करो, वले अरूवरू लो देख॥ १ ॥
साध मारग छें सांकडो, करडो छें त्यांरो आचार।
ते जिण तिण सेती किम पलें, जावजीव रहणो एकधार॥ २ ॥
केई सांग पेंहरे साध हुआ, त्यांरा घट में नहीं ववेक।
त्यां साधपणो नहीं ओलख्यों, तिणसूं सेवें छें दोष अनेक॥ ३ ॥
दोष सेव्यां भागें साधपणो, त्यांनें ते पिण खबर न काय।
त्यांनें श्रावक पिण तेसाहीज मिल्या, त्यांनें समझ नही मन मांय॥ ४ ॥
जो आचार बतावें त्यांनें साध रो, तो तुरत जांगें त्यांनें घेख।
जांणें निंदा करें छें मारा गुर तणी, घटमें नही सुघ ववेक॥ ५ ॥
आचार बतांयां साध रों, तिणनें निंदा सरधे ते मूंढ।
ते ववेक विकल सुघ बुध बिना, त्यां झाली मिथ्यात री रूढ॥ ६ ॥
साचीनें झूठी कहें, ते तो निंदा होय।
साची वात कहें समझायवा, ते निंदा म जांणो कोय॥ ७ ॥
जे भारीकर्मा जीवडा, त्यांनें न गमें आचार री बात।
ते भूला छें भर्म अनादरा, त्यांरा घट मांहें घोर मिथ्यात॥ ८ ॥
पिण भव जीवां नें समझायवा, थोडी सी कहूं अल्प मात।
ते सुण सुणनें नर नारीयां, छोंडों कुगुरां तणी पखपात॥ ९ ॥

ढाल

[भवियण जिण आग्या०]

कोइ साधपणा रो नाम धरावें, पूरों पलें नहीं आचारो।
त्यांरा श्रावक दोष सेवावण सेंमल, यां दोयां रे घट में अंधारो रे॥ भ०॥
जोवों हिरद विचारी, छोड दो कुगुरां री लारी रे। भ०।
कुगुर छें हीण आचारी*॥ १॥
आंधा नें आंधो आय मिलीयो जब, कुण बतावें वाटो।
ज्यूं कुगुरा नें विकल मिलीया श्रावक, यां दोयां रे अकल आडो पाटो रे॥ २॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यांरा श्रावक जीव हणे त्यारे काजे, त्यां श्रावका ने तो वरजें नाही।
तें तो दोनूइ हरखे छे हिंसा कीयां थी, त्यारे दया नही घट माही रे॥ ३ ॥
कोइ साधां रे काजें नीलों उखेल नें, वरसता मेह मे मूरड न्हाखें।
अनता जीवां रो घमसांण करतां, पापी जीव मूल न साकें रे॥ ४ ॥
मोटी तिथ आठम नें चउदस, तिण दिन पिण न करें टालो।
आप डूबे भिष्ट करे गुरा ने, आत्मा ने लगावे कालो रे॥ ५ ॥
साधां रे काजे जायगा खोदनें, करे विषम जागाने सूघी।
नीलणफूलण नीला अकूडा मारे, त्यारी अकल घणी छे उंधी रे॥ ६ ॥
वले कसी सूं खोदे समी जागा करता, कीडी माकादिक देवे दाटी।
वले तिण माहे धर्म जांणें छे भोला, त्यारें आइ अभितर पाटी रे॥ ७ ॥
वले साधा रे काजे केलू फेरावे, जमीया उखेले जालो।
वले नीलणफूलण रा जीवा ने मारे, तस जीवा रो पिण करे खेंगालो रे॥ ८ ॥
घणो खात कचरादिक पडीयो जागा मे, बुहार भेलो करे साध रे भावें।
पछे ओडीयें ओडीये बारे नखावे, तिहा पिण जीव मास्या जावे रे॥ ९ ॥
साध काजे दडें लीपें छपरा छावे, चद्रवा ने ताटादिक बांधें।
वले विवध पणे घात करें जीवा री, तिण धर्म न ओलख्यो आधे रे॥ १० ॥
एहवा किरतब करे छे साधा रे कारण, त्याने साध निषेधे जो नाही।
वले आप मुतलव जांण राजी हुवे, त्याने गिणजो मती साधां माही रे॥ ११ ॥
एहवा किरतब करावे आमनां करनें, आपरे सुखसाता रें काजे।
वले पेहरण साग साध रो छे त्यारे, पिण निरलजा मूल न लाजे रे॥ १२ ॥
जीवा री घात करने जागा करे चोखी, तठे रहवा नें होय जाबे त्यारी।
ते तो प्रतख्य असाध उघाडा दीसे, त्याने वीर कह्या भेषधारी रे॥ १३ ॥
केई साधां रे कारण नीव दराए, नवी करावे जागा।
तिण जागामे साध रहे ते· विरत विहूणा नागा रे॥ १४ ॥
केई साध रे काजे मोल ले जागा, केई साधा रे काजे ले भाडें।
तिण माहे रहे ते अणाचारी, निश्चे सुध साध तणी पात बारें रे॥ १५ ॥
साध काजें दडे लीपें गार घालेने, ते पिण कर्म बाधेनें बूडा।
साध पिण तिण ठामे रहे ते, चिहु गति मे दीससी भूंडा रे॥ १६ ॥
एक थानक तणा छे दोष अनेक, ते तो पूरा केम कहवाय।
असुध थानक भोगवे भेषधारी, ते भोला ने खबर न काय रे॥ १७ ॥
नाटकीयें सांग साधा रो आंण्यो, ते पिण साग तणी वरग बूहो।
भेषधाख्यां तो साधरो साग लजायो, स्वान ज्यूं पकड रह्या ढूंसो रे॥ १८ ॥

अजूंणाकाल में पांचमें आरें, घणी हीण पडी छे बुध।
एहवा अणाचास्यां नें साध सरधे, त्यांमें काय न दीसें सुध रे॥ १६॥
एहवा भाव सुणेनें भारीकर्मा, पांमें नही चमतकारों।
कर्म जोगें त्यांनें कुगुर मिलीया, त्यांरो किण विध मिटें अंधारो रे॥ २०॥
त्यांरा थांनक में कोइ दोष बतावें, तो बोले घणा आलपंपालो।
पाछो जाब न आवे जब क्रोध करेनें, देवें अणहूंतो आलो रे॥ २१॥
सुध साध तो सुध थांनक में रहें छें, त्यांमें दोष बतावें अन्हाखी।
भूठ बोले छें आप सरीषा करण नें, त्यांरा भूठा बोला छें साखी रे॥ २२॥
सुध साधां रे आल देता नहीं संकें, आपरा दोष ढांकें निसंक।
दोनूं प्रकारे बूड गया त्यांनें, आपरों नहीं सूझें वंकरे॥ २३॥
परभाते आहार वहर्‌यों तिण घर रों, आथण रों वेंहरें दाल नें रोटी।
कारण विना दोनूं टक वेहर ल्यावें, आ पिण चलगत खोटी रे॥ २४॥
परभाते आहार ल्यावे तिण घर रों, बेपारां गुगरीयादिक आंणें।
आथण रों ल्यावें ऊनी दाल नें रोट्यां, संका पिण किणरी न आंणें रे॥ २५॥
त्यांरा श्रावक पिण छें ववेक रा विकल, त्यांरें मूल पडें नहीं संक रे।
जेसाकूं तेंसो आय मिलीयां, हिवे कुण काढें त्यांरो वंक रे॥ २६॥
कारण बिना उंनों आहार ल्यावें आथण रों, नही गरढो गिलाण विसेप।
हिलीयों उंनी दाल नें रोट्यां रें रसकें, त्यां छोडी लज्या ले भेष रे॥ २७॥
कोइ राखवीयादिक तेंवार आथण रों, जवतो पेंहलां करें भालामालो।
पछें रसग्रिधी फिरें आथण रा, ताजो घर संभाल संभालो रे॥ २८॥
छतो आहार मिलें परभात रों त्यांनें, तो पिण ग्रिधी थका वेंहरें नांहीं।
जांणे आंथण रो ल्यासूं तेंवार रो जीमण, तांणां वेजा लागा तिण मांही रे॥ २६॥
इम आरतध्यांन करतो दिन काढें, सांझ रा ल्यावें सेवां नें कसार।
वले घृत नें खांड रां करें चबोला, इण विध पूजें तेंवार रे॥ ३०॥
इण विध तेंवार पूजें रसग्रिधी, ते पिण नांम धरावें साध।
ताजें आहार तूटा पडे पापी, त्यांरे किण विध होसी समाध रे॥ ३१॥
ताजों आहार तेंवार रो सरस जांणें तो, चांप चांप खाएं भरपूर।
एहवी विकलाइ करें छे तिणांरा, परी साधपणा में धूर रे॥ ३२॥
एहवा रसगिरधी जिभ्या रा लंपटी, त्यां पहर विगाड्यो भेख।
त्यांनें साध सरधें वादें पूजें अग्यानी, ते पिण बूडें छें विना ववेक रे॥ ३३॥
कोइ कारण पडीयां जाअें आंथण रा, जब दोष नही छें लिगार।
बिना कारण जाअें तेंवार जांणेनें, त्यांनें छें तीन धिकार रे॥ ३४॥

कोइ ग्रहस्थ घर सूं बोलावण आयो, म्हारें घरे वेंहरण पधारो।
तेडीया तिण घर जाअे तिणानें, किम कहीजे अणगारो रे॥ ३५॥
तेरण आयो ते छ काय मरदतों, तिणरा हाथ सूं पिण न करे टालो।
तेरीया गयामे दोष न जाणें, त्यारें आयों अभितर जालो रे॥ ३६॥
कदा कर्मजोगे साध तेडीया जावे, तो प्रायछित ले हुवें सुधो।
पिण सदाइ तेडीया जाअे तिणारी, भिष्ट हुइ छें बुधो रे॥ ३७॥
जो सहजेंइ ग्रहस्थ आयो छें थानक मे, ते कहे म्हारा दिस पधारो।
तिण भावभेल न आंण्यों साधां रो, जब गया नही दोष लिगारो रे॥ ३८॥
तेडीया जावेनें आंण दीधो लेवे, ते नीयमाइ निश्चे भिष्टी।
एहवा भागल भिष्ट हुआ छे त्याने, साध सरधे नही समदिष्टी रे॥ ३९॥
केइ भेषधारी ग्रहस्थ ने देवें, पूठा पांना ने परत वशेष।
लोट पातरा नें ओघो पूंजणी देवें, ते तो भिष्ट हुआ ले भेष रे॥ ४०॥
केइ भोला ग्रहस्थ तो इम जाणे, मोसूं दीसे छे साधा री मया।
पूंजणी काढ दीधी छें मोनें, तिणसूं पाला छां म्हे दया रे॥ ४१॥
ग्रहस्थ नें साध पूंजणी दीधा, भोला तो जाणे दोष न लागो।
पिण नसीत सूतर मे श्रीजिण भाख्यों, तिणरो चोमासी चारित भागो रे॥ ४२॥
ग्रहस्थ नें साध पूंजणी देवे, ते निमाइ निश्चे भिष्टी।
पिण भोलां रे भावे तो तेहीज साध, तिणने साध न सरधें समदिष्टी रे॥ ४३॥
केइ कहे पूंजणी सूं तो दया पले छे, तिणसूं पूंजणी देवे छे साध।
तिण लेखें तो मूहपती पिण देंणी, इणसू पिण दया पलसी वाध रे॥ ४४॥
बले धोवणादिक पिण देणो ग्रहस्थ ने, तिणसू काचा पाणी तणो हुवें टालो।
आ पिण दया पले यारे लेखें, पूंजणी रो न्याय संभालो रे॥ ४५॥
पूंजणी देणी तो रोटीयां पिण देणी, तिणसू टलें चूला रो आरभो।
पूंजणी देवेनें रोटीयां न देवें, यारी सरधा रो वडो अचभो रे॥ ४६॥
कोइ काचा पाणी सूं कपडादिक धोवें, वांटादिकमे घालें काचो पाणी।
तिणनें धोवणादिक देणों दया पलावण, पूंजणी देवा रो लेखो जाणी रे॥ ४७॥
पूंजणी सूं तो गिणवा जीव पूजें, ते पिण थोडा सा अल्प मात।
उंनों पांणी धोवण असणादिक दीधां, टले अनत जीवा री घात रे॥ ४८॥
ग्रहस्थ नें एक पूंजणी देणी, तिण लेखें तो देणी वस्त अनेक।
थोडीसी वस्त साध देवें ग्रहस्थ नें, आखो वरत रहे नही एक रे॥ ४९॥
ग्रहस्थ नें साध हाथ पकडनें, राग करनें हेठो बेंसाणें।
एहवा भागल भेषधारी छे त्यांने, डाहा हुवे ते साध न जांणें रे॥ ५०॥

संवत अठारे एकावनें वरसे, सावण सुद तीजनें बुधवार।
भेषधार्‍यां नें ओलखावण काजे, जोड कीधी सरियारी मझार रे॥ ५१ ॥

ढाल : २३

दुहा

सुध साधां ने दान असुध दे, जांणनें असुध ले साध।
ते दोनूं बूडे छे बापडा, श्री जिण वचन विराध ॥ १ ॥
असुध देवाल नें लेवाल रे, कडवा फल लागे आण।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चुतर सुजाण ॥ २ ॥

ढाल

[राग उलाली]

तीना बोलां करे जीवरे जी, अलप आउखो बंधाय।
हिंसा करे प्रांणी जीव री, वले बोले मूसावाय जी।
साधां नें असुध वेंहराय जी, हिंसाकर चोखी जागा बणाय जी।
साधां नें उतारें माय जी, त्यारे उसभ कर्म बधे आय जी।
तीजें ठाणें कह्यो जिणराय जी, वले सुतर भगोती रे माय जी।
श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १ ॥

दडे लीपें साधा रे कारणें, वले छपरा छावें आय।
केंलू पिण फेरतां थकां, जमीया जाल उखेले ताय जी।
नीलण फूलण मारी जाय जी, अनता जीव छे तिण माय जी।
वले ओर हणें छकाय जी, त्यांरी दया न आणे काय जी।
त्यारें पिण अल्प आउ बधाय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ २ ॥

वले नीव दराए थेट सूं, वले टाची बजावे ताय।
भेलाकर भाठा चुणें, तिण बोहत मारी छकाय जी।
अनता जीव हणीया ताय जी, ते पूरा केम कहिवाय जी।
साधां नें रहिवा री मन ल्याय जी, तिण मोटो कीयों अन्याय जी।
तिणरें पिण अलप आउ बंधाय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ ३ ॥

जिण गरथ दीयो थांनक करायवा, तिण पिण मराइ छकाय।
किणही मोल भाडे भोग लावे लीयों, किणही थाप राख्यों छें ताय जी।
इत्यादिक दोपीला कराय जी, खणे खोदे समो कीयों जाय जी।
विध विध सूं मारे छकाय जी, साधा नें उतारें मांय जी।
वले मन में हरखत थाय जी, त्यारे पिण अलप आउ बधाय जी ॥ ४ ॥

आहार सेज्या वसतर नें पातरो, इत्यादिक दरब अनेक।
असुध वेंहरावें साध ने, ते डूबें छे विना ववेक जी।
त्यां भाली कुगुरा री टेक जी, त्यांरे कर्म तणी काली रेख जी।
त्यांनें सीख न लागे एकजी, गुर नें पिण कीया भिष्ट वशेष जी।
संका हुवें तो सूतर लो देख जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा॥ ५॥

पाप उदें हुवे तेहनें जब, पडें निगोद में जाय।
उतकष्टो अनंता भव करें, तिहां मार अनंती खाय जी।
रहें घणी संकडाई मांय जी, जक नहीं निगोद में ताय जी।
वले मरण वेगो वेगो थाय जी, उपजें नें विलें होय जायजी।
तिणरो लेखो सुणो चितल्याय जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा॥ ६॥

सतरें भव जाभेरा करें, एक सास उसास मभार।
एकण मोहरत नें मभे, भव करें साढा पेंसठ हजार जी।
वले छतीस इधिक विचार जी, एहवी जनम मरण री धार जी।
मरण पांमें अनंती वार जी, अनंता काल चक्र मभार जी।
तिणरो वेगो न पांमें पार जी, ए फल पांमें निगोद मभार जी।
असुध दांन तणो दातार जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा॥ ७॥

कदा पेंहला पडे बंध नरकनो, तो पडे नरक में जाय।
तिहां क्षेत्र वेदन छें अति घणी, परमाधांमी मारें बतलाय जी।
तिहां मार अनंती खाय जी, उठें कुण छुडावें आय जी।
भूष त्रिषा अनंती ताय जी, दुष में दुख उपजें आय जी।
असुध दीधां रा ए फल जाणजी, श्री वीर कहें सुण गोयमा॥ ८॥

दुख भोगवतां नरक में जी, सेष बाकी रहे पाप।
ते उपजें तिरयंच में, तठें पिण घणो सोग संताप जी।
ते छूटें नही कीधां विलाप जी, वले न्हाखें निगोद में पाप जी।
आडा नावे गुर मा वाप जी, दुख भोगवें आपो आप जी।
असुध दांन दीयो धर्म थाप जी, ते कुगुर तणो प्रताप जी॥ ९॥

आधकर्मी साध जो भोगवें, ते बांधें चीकणा कर्म।
ते भिष्ट थया आचार थी, तिण छोड दीयो जिण धर्म जी।
नीकल गयो त्यांरो भर्म जी, त्यां छोडी लाज नें सर्म जी।
त्यां विगोय दीयो निज ब्रह्म जी, दुख पांमें उतकष्टा परम जी॥ १०॥

असुध जांणनें भोगवें, त्यां भांगी जिणवर पाल।
ते भमण करसी संसार में, उतकष्टो अनंतो काल जी।
नरक में जासी टांको भालजी, तिणनें मार देसी नरकपाल जी।
कीधा कर्म संभाल संभाल जी, रोसी किरतब सांहमो नाल जी।
भगोती॰ पहलें सतक नीकाल जी, लीजों नवमें उदेशो संभाल जी॥ ११॥

साधा रें काजें हणे छकाय ने, ते वार अनंती हणाय।
जो साध जांणेने भोगवें, ते पिण अनत मरण करें तायजी।
अें तो दोनूंई दुखीया थायजी, अनता भव मास्या जाय जी।
एकवार मारी थी छकाय जी, त्या तो दुख भोगवे लीया ताय जी।
पिण यांरो पार वेगो नहीं आयजी, श्री वीर कहे सुण गोयमा॥ १२॥

छकाय रे उसभ उदे हूवा, त्या तो पामी एक वार घात।
पिण साध पड्यो नरक निगोद मे, सेवगा नें पिण लीधा साथ जी।
त्या मानी कुगुरा री बात जी, कीधी तस थावर री घात जी।
अनतो काल दुख मे जात जी, वले मरण वेगो वेगो थात जी॥ १३॥

ज्या गुर ने डबोया सेवगा, त्या सेवगा नें डबोया साध।
ते दोनूं पस्था नरक निगोद मे, ते श्री जिण धर्म विराध जी।
बूडा संसार समुद्र अगाच जी, ते किण विध पामे समाध जी।
जिण धर्म री रेस न लाधजी, भव भव में पामे असमाध जी।
ओ पिण कुगुर तणो परसाद जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा॥ १४॥

असुध दान दीयों जिण साध ने, तिण साध ने लूट्या ताय।
तिणरं पाप उदें हुवे इण भवे, तो दलदर धसे घर माय जी।
रिध सपत जाये विललाय जी, वले दुख माहे दिन जाय जी।
कदा पुन भारी हुवे तायजी, तो इण भवमे दुख न थाय जी।
परभव मे संका नही काय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा॥ १५॥

इम साभल नें नर नारीया, कोइ करजो मन मे विचार।
सुध साधा ने जाणनें, असुध मत देजो किणवार जी।
असुध मे नही धर्म लिगार जी, सुध देने लाहो लो लार जी।
उतर जावो भवपार जी, ओ मिनख पणारो सार जी॥ १६॥



ढाल : २४

दुहा

दया सत दत सील सुघ, निग्रग्रही अणगार।
पांच महावरत आदरी, पालें निर अतिचार॥ १ ॥
यांसूं नवा करम नहीं नीपजें, अर जूना तप करि खपाय।
जब चेतन निरमल हुवें, मोक्ष विराजें जाय॥ २ ॥
हिंसा भूठ अदत अछें, कुसील परिग्रह धार।
इणसूं कर्म उपारजें, जीव भमत संसार॥ ३ ॥
हिंसा त्यागयां सब तिगें, तीन करण तीन जोग।
ए जिण भाखित माहावरत, पाले सुध उपयोग॥ ४ ॥
अणुक्रमें वरत आदरवा भणी, सिष पूछें जुगत लगाय।
सुणि सतगुर इसडी कहें, सांभलजों चित्तल्याय॥ ५ ॥

ढाल

[जगत गुरु तिसलानन्दन वीर]

कोइ कहें पहिलों माहावरत पालसूं जी, हणसूं नही छकाय।
पिण माहरी जिभ्या वस नहीं, हूं बोलसूं मूंसावाया।
चुतर नर समभों ग्यान विचार*॥ १ ॥
ओ महावरत भाख्यो भगवांन रो, ते नही हुवें इण रीत।
तू हिंसा में धर्म परूप दें, थारी कुण मानें परतीत॥ च० २ ॥
कहें देवगुर धर्म कारणें, आरंभ कीयां रूडो थाय।
देवलादिक करावीया जी, जीव भली गति जाय॥ ३ ॥
धर्म हेतें जीव हिंसा कीयां में, थोडोसो पाप बंधाय।
तूं एहवी करें परूपणा, हिंसा मांहे सेंमल होय जाय॥ ४ ॥
इम हिसा में धर्म सथापवा जी, करावें जीवां री घात।
माहावरत तो जिहांइ रह्या, जाय समकत होय मिथ्यात॥ ५ ॥
तो हूं हिसा भूठ बेहूं त्याग सूं, पिण चोर लेसूं पर माल।
माहरी धन उपर ममता घणी, मोसूं नहीं मिटें ओ साल॥ ६ ॥
जो तूं जीव हणसी नही जी, वले नहीं बोलसी कूड।
पिण पेंलारें दाह दीधां थकां, पेहिला माहावरत में पडसी धर॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

धन चोर्यां धणी दुख पामसी जी, हिंस्या लागी इम जोय।
जो तूं कहसी हिंसा लागी नही तो, दूजोइ बरत न होय॥ ८॥
तो तीजोइ माहावरत आदरू जी, चोरूं नही परधन।
पिण सील मोसूं पले नही, म्हारो विषे सू लग रह्यों मन॥ ९॥
चोथो आश्रव सेवतां जी, तीन वरत जाय भाग।
सब गुण वाले पलक मे जी, जिम पीनी रूइ आग॥ १०॥
जीव पंचिंद्री नी हिंसा हुवे जी, हणवो नही ते भूठ।
वले आग्या नही वीतराग नी, जब तीन वरत जाये उठ॥ ११॥
तो हूं चोथोइ माहावरत आदरू जी, पाचमो कीधो न जाय।
नवविध परिग्रह राख सू, मोसू ममता नही मूकाय॥ १२॥
खेतू वथू आदि परिगहो जी, ओ च्यारूइ आश्रव नो छे मूल।
एक परिग्रहो राखीया, च्यारू माहावरत मिलसी धूल॥ १३॥
सस्त्र छे छहू काय नो जी, कूड कपट नो ठाम।
आग्या नही जिणराज नी, वले नही रहे सील परिणाम॥ १४॥
पाचूइ आश्रव त्यागसूं जी, एक करण तीन जोग।
आग्या देसूं अणुमोद सूं, मोसूं सरागी बहू लोग॥ १५॥
एक करण तीन जोग थी जी, माहावरत नीपजे नही कोय।
त्रिविधे त्रिविधे सावद्य तागीया जी, माहावरत इण विध होय॥ १६॥
एक घर त्याग्यो आपरो, जिणमे कितरो एक धन धान।
हिवे हुकम चलासी लोकमे, इण लेखे जाणे राजान॥ १७॥
घरमे गिणत होती नही जी, पूरो न मिलतो नाज।
भेप लेइ भगवान रो, केड करवा लागा राज॥ १८॥
दोय करण तीन जोग सू जी, पांचूइ आसरव त्याग।
अणुमोदना खाली राख सूं, माहरे एतो इज छे वेराग॥ १९॥
अणुमोदना खाली रही जी, जव तूं वेहरे असुध आहार।
सभोग करे गृहस्थी थकी, तिणसू पांचूं वरता मे पडे बगार॥ २०॥
पाचूइ आश्रव ने विपे जी, हरख होवे मनमान।
तीनूंइ जोगां थकी, थारो न मिटयो खोटो ध्यान॥ २१॥
तीन करण तीन जोग सूं जी, सर्व सावद्य परिहार।
धर्म सुकल ध्यान ध्यावता, नीपजे पाचूइ माहावरत सार॥ २२॥

●

ढाल : २५

दुहा

इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष।
ते समकत विरत विना फिरें, भूला भर्म वसेष॥ १॥
ते सारंभीनें सपरिग्रही, वले करें अकार्य अनेक।
ते पिण साध नाव धरावता, त्यां झाली मिथ्यात री टेक॥ २॥
त्यां जूवा जूवा गच्छ बांधीया, मांहोमां कर कजीया राड।
त्यांरी सरधा चलगत जू जूइ, वले जूओ जूओ छें आचार॥ ३॥
सुध साधां सूं चरचा करें, जब सगला एकें होय जाय।
कहें म्हे सगलाइ साध छां, एहवी बोलें अग्यांनी वाय॥ ४॥
सावद्य कामा करता नें करावता, संका आंणें नही मन मांय।
हिवें कुण कुण अकार्य कर रह्या, ते सुणजो चितल्याय॥ ५॥

ढाल

[भवियण जिन आज्ञा]

साधांरें काजें थांनक करावें, छ काय रो कर धमसांण।
तिण थांनक मांहें रहिवा लागा, त्यां भांगी छें श्रीजिण आंण रे।
भवीयण जोवों हिरदें विचारी, थें छोडो कुगुरां री लारी रे। भ०।
थें ज्यूं उतरो भवपारी*॥ १॥
सांप्रत एहवा थांनक सेवें, वले झूठ बोलें ठांम ठांम।
कहे थांनक म्हारें काज न कीधो, श्रावकां रें काजें कीयो तांम रे॥ २॥
त्यांरा श्रावकां नें कहें थे इम बोलो, थांनक नें कहों धर्मसालों।
ज्यूं थारी म्हांरी आछी लागे लोका में, म्हांनें तो दोषण मांसूं टालो रे॥ ३॥
त्यांनें श्रावक पिण तेहवाइज मिलीया, त्यांनें ज्यूं सीखावें ज्यूं बोले।
कहें धर्मशाला म्हांरें काजें कराइ, झूठ बोलें वाजतें ढोलें रे॥ ४॥
श्रावक त्यांसूं रीझ रह्या छें, जांणें बोलें पढाया ज्यूं सूआ।
त्यांमें जांणपणा री जुगत न दीसें, तेतो निंदक साधां रा हुआ रे॥ ५॥
व्यापारयां नें ठगां वेसासे, उजाड नें धतूरो खवायों।
तेल बांमीहा छांमीया करता, मूआ उजाड रे माह्यो रे॥ ६॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ज्यू भेषधार्‍यां लोकां ने वेसासे, भूठ बोलणों त्याने सीखायो।
इण थानक ने कहो धर्मसाला, ते धर्मसाला कहिता मरसी ताह्यो रे॥ ७॥
साधा रें काजे थांनक कीधो चोडे, छ काय रो करें खेगाल।
ते थांनक प्रतख छे पापसाला, तिणरो नाम दीयो धर्मसाल रे॥ ८॥
तिण थानक मे साधा रे काजें, मन गमती राखें बारी।
तिण हिंस्या थकी साध नें श्रावक री, भव भव मे होसी खुवारी रे॥ ९॥
त्यांरा श्रावक पिण केइ मूढमती छे, जाण जाण गुर रा दोष ढाकें।
आधाकर्मी थांनक ने कहे धर्मसाला, भूठ बोलता मूल न सांकें रे॥ १०॥
एहवा भूठा बोलाने पूछा कीजे, थे धर्मसाला करावण काजें।
थे रुपीया कठी थी आण कराइ, जब पाछो जाब देता लाजे रे॥ ११॥
थे कहो म्हारे काजे कीधी धर्मसाला, तो अजोग दांन लीयो किण काजे।
थे कुण कुण दांन ले साला कराइ, ते सुण सुणनें मत लाजो रे॥ १२॥
मिनष आंतरीयो घुरडके जूतो, ते धन उदके थांनक काज।
ते दांन लेइ धर्मसाला करावो, एहवो दान लेता क्यू नही लाजो रे॥ १३॥
वले धर्मसाला करावण काजें, लेवो अउतरो मालो।
ओ निरमायल माल लोकीक लेखें, ओ तो खांपणवालो ख्यालो रे॥ १४॥
कोइ अंतकाल समे धन उदकें, रांक गरीब भिख्यारी ताई।
ते दांन लेइ धर्मसाला करावों, तिणमे करो पोसा समाई रे॥ १५॥
वले गांम परगांव सूं मागणी करने, करावो छो धर्मसाला।
थे भिख्या मांगो नीचो हाथ मांडो, थारा कुल सहामो क्यूं नही न्हालो रे॥ १६॥
थे मोटका मिनष वाजो छो लोकां मे, वड वडा करो किरियावर काजो।
धर्मसाला कराइ अजोग दान ले, थे छोड दीधी सरम ने लाजो रे॥ १७॥
निरमायल दांन मुरदा रों लेइने, थे धर्मसाला करावो छे।
तिण दांन तणो लेवाल छें कुण कुण, तिणरो थे नांम बतावो रे॥ १८॥
उतो धर्म जांणी दान दें अतकालें, तिणरो लेवाल किणने थापो।
थे पैंला रे वदलें भूठ बोलनें, काय विगोयो आपो रे॥ १९॥
दातार तो दांन देवे इम जाणी, साधारें जागा बाधण तांइ।
इण रुपीयां साटे चोखो थांनक करासी, तो साध उतरसी तिण मांही रे॥ २०॥
यूं जांणे धन उदके आंतरीयों, निकेवल सांधां रे कांम।
थे कहो इसों दान साध क्याने ले, तो किसें श्रावक लीयों छें तांम रे॥ २१॥
ओं तो दांन साध श्रावकां लीधो छें, तीजों न दीसे कोय।
इण दान तणो भेलू हूवो तिणरों, चोडे नाम बताय दो सोय रे॥ २२॥

जो साधां रो नांम बताय दे चोडें, तो साध सहीत श्रावक सर्व बूडा।
जो श्रावकां ओं दांन लीयो कहे तों, न्यात जात मे दीससी भूंडा रे॥ २३॥
त्यांमें केयक तो पाप कर्म सूं डरता, केइ लोकीक सूं डरता।
ते तो कहिदें थांनक साधां रें काजे कीधो, सूधा बोले छे लाजां मरता रे॥ २४॥
केइ कहें थांनक म्हांरें काजें कीधों छे, वद वदनें कहे वारूंवार।
त्यांमें इसडा इसडा केइ भूठा बोला छे, त्यांरा घटमे छे घोर अंधार रे॥ २५॥
त्यां भूठा बोलांनें पाछो इम कहिणों, जो थे लीयो आंतरीयो दांन।
इण दांन थकी जात न्यात लोकांमें, थे होसो घणा हिरांन रे॥ २६॥
मिनष आंतरीयो नें घुरडकें जूतों, तिण दांन रा थें लेवालो।
ते दांन लेइ धर्मसाला करावो, जब थें कुल नें लगावो कालो रे॥ २७॥
थे निरमायल दांन मुरदा रो लेइनें, जागा कराय हरषो तिण देखी।
तिण जागा मांहें करो पोसा सामांइ, तो उड गइ जावक सेखी रे॥ २८॥
थे सांप्रत मुरदा रो दान लेइनें, साधां रें काज थांनक करायो।
थे कहो थांनक म्हांरें काजें कीवों, ओ तो भूठ कुगुरां रो सीखायों रे॥ २९॥
आप आप तणा थांनक री ममता, दर पीढ्यां लग लागी छें ताहि।
यारी मरजी बिना अनेरा टोलां रां, कुण धसें तिण मांहि रे॥ ३०॥
मठधास्यां ज्यूं मठ मांडे बेंठा, मठधास्यां ज्यूं राखें धणीयापो।
सांप्रत ममताधारी छे त्यांनें, साध किसें लेखें थापो रे॥ ३१॥
आप आप तणा थांनक मांड बेंठा, ओरा नें उतरण दें नांही।
कदा उतरण दें तोही धणीयाप यारो, उतारे खोज भांगण 'तांइ रे॥ ३२॥
थांनक निमतें गरथ लागे ते, करें सामग्रीही में भेलों।
ओर सामग्री तणा नही देवे, यारें नहीं छे माहोमा मेलो रे॥ ३३॥
वले गांव परगांव सूं गरथ मंगावें, ते पिण सामग्री मांहीं।
कदा कोइ सरमा सरमी देवें अनेरो, ते तो लेखा में छें नांहीं रे॥ ३४॥
गछवासी ज्यूं गछ मांडी बेंठा, आप आपरा थांनक ठहराय।
ते पिण साध बाजें लोकां में, ते पिण भोलां नें खबर न काय रे॥ ३५॥
मुरदारो दांन ले थांनक करायों, ते थांनक नहीं छें सिष्ट।
तिण थांनक मांहे साध रहे छें, ते तो निमाइ निश्चें भिष्ट रे॥ ३६॥
मुरदा रो दांन ले थांनक करायों, त्यांरी भिष्ट हुइ छें बुध।
तिण थांनक मे करें पोसा सामाइ, ते पिण श्रावक नही छें सुध रे॥ ३७॥
कोइ मांदो आंतरीयों घुरलकें जूतो, ते धन उदकें थांनक काजों।
ते आंतरीयादिक रो दांन लेइनें, लोकां में वधारो छो व्याजों रे॥ ३८॥

इण दान रो लेवाल किणने ठेहरायो, किणरो थको वधे छे व्याजो।
ओ किण किणरो वाजे छे परिग्रहो, ओ किण किणरे आवसी काजो रे॥ ३९॥
इण मुरदा रो दान ले थांनक करावें, त्यारी मत घणी छे माठी।
तिण थानक मे करसी पोसा सामाइ, त्यारी पिण अकल गइ छे न्हाठी रे॥ ४०॥
एतो निरमायल मुरदा रो माल, तिणने रांक भिख्यारी झाले।
भगवत रा उत्तम च्यार तीरथ, एहवा दान ने हाथ न घाले रे॥ ४१॥
एहवो फितूरखांनो मांड रह्या लोका मे, त्यारा मत माहे मोटी भोलो।
बुधवंत बिण कुण काढें निकालो, चोडे माड रह्या गागीरोलो रे॥ ४२॥
त्यांरा थानक रो कोइ काढे नीकालो, जब बोलें घणा आलपपालो।
सुध साध रहे निरदोष जायगा मे, त्यारे उलटा देवें साधां सिर आलो रे॥ ४३॥
आधाकर्मीयादिक छें थांनक दोषीला, तिणने दीयों छे निरदोष थापी।
निरदोष जागां माहे साध रहे छें, तिणमे दोष कहे छें पापी रे॥ ४४॥
एहवी अजोग जायगा माहे रहसी, त्यांमें अकल पिण एहवी आवे।
त्यांरो असुध उपदेस मूढा री वांणी, ते भवजीवां नें किम समझावे रे॥ ४५॥
जाण जांणने एहवी जागा सेवें, वले असुध लेवे अनपांणी।
ते प्रतख जेन तणा विगडायल, त्यारी खोटी वखाण री वाणी रे॥ ४६॥
वीर विक्रमादीत रे सिंघासण बेंठां, लोक कहे आच्छी बुध आवें।
ज्यूं निरदोषण जायगा भोगवे त्यांरे, आछी आछी अकल बुध थावें रे॥ ४॥
माहोमा कहे म्हे सघलाइ साध, माहोमा त्यांरी वंदणा छुडावें।
वले माहोमा सरधा कहे त्यारी खोटी, माहोमा दोष अनेक वतावे रे॥ ४८॥
माहोमा आप तणा श्रावका नें, साध कहे त्यासूं भिडकावें।
ते सामायक पोसा न करें त्यारे पासें, वले वखांण सुणवा नही जावे रे॥ ४९॥
माहोमा साध कहे त्यांरी वंदणा छुडावें, त्या विकलां री किसी परतीत।
कपटी थका झूठ बोलें अग्यांनी, त्यामें साध तणी नही रीत रे॥ ५०॥
साध सरधे त्यारी वंदणा छुडावे, त्यारी सरधा घणी विपरीत।
साध कहें त्यांनें वाद्यां धर्म न सरधे, ते भव भवमे होसी फजीत रे॥ ५१॥
माहोमा भेला हुवां करे नही वंदणा, साता पिण पूछे नांही।
आवो पधारों पिण नही देवें माहोमां, नही उतारे थानक मांही रे॥ ५२॥
आमना जणाय जणाय ग्रहस्थ ने, माहोमा देवें वदणा छुडाय।
वले साध माहोमा कहें किण लेखें, ओ पिण अंधकार त्यांरा मत माहि रे॥ ५३॥
जिगन दोय सहंस कोड साध जाझेरा, उतकष्ट नव सहंस छे कोड।
त्यां साधां नें थे वांदो वंदावो, सीस नामी नें वेकर जोड रे॥ ५४॥

ज्यांरी वंदणा छुडावें त्यां साधां नें, काढ्या सावां तणी पांत बारें।
त्यांनें वले तेहीज साध सरधें, ओ पिण विकलां रे नही छें विचार रे ॥ ५५ ॥
ज्यां साधां री वंदणा छोडाई, त्यांनें साध कहे किण लेखें।
अभितर आंख हीया री फूटी, ते सूतर सांह्यों न देखें ॥ ५६ ॥
साध सरधें त्यांरी वंदणा छुडावें, ते बूडगया कालीधारो।
ते भारी करमा छें मूंढ मिथ्याती, त्यांरा घट माहे घोर अंधारो ॥ ५७ ॥
माहोमा साध कहें छें मूंढा सूं, त्यांसूं पिण करें अंतरंग धेष।
वले इसको खेदो करें छें माहोमा, त्यां पहर विगाड्यों छें भेष रे ॥ ५८ ॥
ज्यांनें कदेयक तो कहें साध लोकां में, त्यांनें कदेयक कहि दे असाध।
फिरती भाषा बोले अग्यांनी, त्यांरे किण विध होसी समाध ॥ ५९ ॥
एहवा भेषधार्‍यां नो वखांण सुणें छें, त्यांरे दिन दिन हुवें गाढो मिथ्यात।
ते कलेस कदाग्रहो करें साधां सुं, छेरवीयां करे उंधी वात रे ॥ ६० ॥
संवत अठारें बावनें बरसें, भादरवा विद सातम सुक्रवार।
जोड कीधी कुगुरां रो कपट ओलखावण, पाली सहर मझार रे ॥ ६१ ॥

ढाल : २६

दुहा

भेषधारी भागल तूटल हुआ, त्यासूं पले नही आचार।
दोष सेवे छें जाण जांणनें, पूछ्यां साच न बोलें लिगार ॥ १ ॥
त्यारो पोथ्यां तणो गिज देखनें, कोइ प्रश्न पूछे एम।
ओ पोथ्यां रो गिज पड्यौं तेहनी, पडिलेहण करों छों केम ॥ २ ॥
जब भारीकरमा जीवा थकी, साच बोल्यो नही जाय।
निज दोष ढाकणनें पापीया, बोलें छें मूसावाय ॥ ३ ॥
कहे पोथ्या पडिलेहणी चाली नही, किण ही सुतर रे माहि।
तिणसू नही पडिलेहा छां पोथियां, थे सका म राखो कांय ॥ ४ ॥
पोथ्यां नें नही पडिलेहीयां, तिणरो नही म्हांनें दोषने पाप।
म्हानें हिंस्या पिण मूल लागे नही, एहवी कीधी लोका मे थाप ॥ ५ ॥
कपडा पाट बाजोट भोगवां, त्यारी करणी पडिलेहण जोय।
नही भोगवां कपडादिक तेहनी, नही पडिलेह्या दोष न कोय ॥ ६ ॥
एहवो झूठ बोलनें दोष ढाकीयों, ते भोला खबर न काय।
हिवे कूड कपड त्यारो सूणों, एगाएक चित्त लगाय ॥ ७ ॥

ढाल

[डाभ चतुर विचार]

कहे पोथ्यां री पडिलेहण नही चाली, तिणरी भाषा छे एकंत झूठी रे।
सुतर अरथ सवला नही सूझे, तिणरी हीया निलाड री फूटी रे।
भूठाबोलां रो सगन कीजें* ॥ १ ॥
जो थोडी पिण उपधि नही पडिलेहे, तिणनें मासीक दड बतायो रे।
संका हुवें तो नसीत सुतर माहे जोवों, दूजा उदेसा रे माह्यो रे ॥ २ ॥
वले आवसग दसवीकालिक आद देइ, घणा सूतरा री साखो रे।
साध नें नित पडिलेहण करणी, श्री वीर गया छें भाखो रे ॥ ३ ॥
राख रेत पोथी ने आखो थानक पडारो, विण वावरीया उपधि छें माही रे।
त्यानें पिण एकवार तो अवस पडिलेहे, विण पडिलेह्या न राखे काइ रे ॥ ४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

भेषधारी कहे पोथ्यां नही उपधि में, तिणसूं पोथ्यां पडिलेह्यां नाही रे।
अंतो ग्यांन तणी नेसराय छें तिणसूं, नही पडिलेह्यां दोष न कांइ रे॥ ५ ॥
भूठ बोले पोथी री पडिलेहण उठाइ, तिणने भारीकर्मी जीव जांणों रे।
तिणरों न्याय सुणे भव जीवां, तिण भूठा री पख मत ताणो रे॥ ६ ॥
पोथीयां रो गिज विण पडिलेह्यां राखे, त्यांमें जमें जीवां रा जालों रे।
नीलणफूलण चोमासा मांहें आवें, घणा जीवां रों हुवें खेंगालो रे॥ ७ ॥
कीडीया कंथू आदिक जीवां रा समूह, उपज उपज मरें तिण ठांमो रे।
विण पडिलेह्यां पोथ्यां रा गिज में, त्यांरें भारी मंड्यों संगरामो रे॥ ८ ॥
विण पडिलेह्यां पोथ्यां रा गिज में, अनंत जीवां तणी हुवें घातो रे।
तिणरो पाप नें दोष लागों नहीं सरधे, त्यांरी विकल मांनें छें वातो रे॥ ९ ॥
पोथ्यां रा गिज नें विण पडिलेह्यां राखें, अनंत जीवां रो हुवें घमसांणो रे।
तिण हिसा तणो पाप किणनें लागों, चोडें कहिता संक म आंणो रे॥ १० ॥
जो पोथ्यां ने हिसा रों पाप लागों हुवे, तो पोथ्यां रों नाव बतावो रे।
नांमे घरना में पाप रों भेळूं वतावों, थांरी सरधा नें मतीय छिपावो रे॥ ११ ॥
जो किणनेंइ पाप लागों नहीं हुवें तो, आ पिण कहि दो निसंको रे।
जेसी हुवें तेंसी कहि वतावो, छोडों हीया रों वंको रे॥ १२ ॥
त्यांनें प्रश्न पुछ्यांरों जाब न आवें, जब कूडा कूडा कूहेत लगावें रे।
आल पंपाल बोलें विनां विचार्‍या, गालां रा गोंला मुख सूं चलावें रे॥ १३ ॥
पोथ्यां रो गिज विण पडिलेह्यां राखें, त्यांनें पार लागें भरपूरो रे।
पोथ्यां विण पडिलेह्यां रो पाप न सरधें, त्यांरो तो मत जावक कूडो रे॥ १४ ॥
पोथ्यां गिजनें विण पडिलेह्यां राखें, त्यारें सदा रहे असमाधो रे।
पोथ्यां रा गिज सूं जीव मरे अनंता, त्यांनें निश्चेइ जांणों असाधो रे॥ १५ ॥
कहें पोथ्यां नें कदे नही पडिलेह्यां, तिणरो दोष न लागें कांइ रे।
तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्यां नें मेल्यां, ओ पिण दोष छें नांहीं रे॥ १६ ॥
पोथ्यां नही पडिलेह्यां रों दोष न लागें, तो गाडा मे मेल्यां दोष छें नांही रे।
वले बेठीयां पोढीया पोथ्या चलाया, ओ पिण दोष न लागे कांइ रे॥ १७ ॥
जो पोथ्यां नही पडिलेह्यां रो दोष न लागे, तो मोल लीधां वेहर्‍यां दोष नांही रे।
हिंसादिक दोष सेवें पोथ्यां रे तांइ, यारे लेखें तो दोष न कांइ रे॥ १८ ॥
पोथ्यां नही पडिलेहें छे तिणरें लेखे, मेलणी ग्रहस्थ घर माह्यों रे।
ओवरा भखारी में पिण मेलणी पोथ्यां, विण पडिलेह्यां राखे तिण न्यायो रे॥ १९ ॥
कहें पोथ्यां री पडिलेहण करणी, ते नही छे सूतर रे माह्यों रे।
तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्या मेलण रो, ओ पिण नहीं छे नकारों ताह्यो रे॥ २० ॥

पोथ्यां री पडिलेहण सूतर में न चाली, पोथ्यां ने न गिणे उपधि रे माह्यो रे।
इम कहि कहि अग्यान्या पडिलेहण छोडी, ओ तो चोडें कपट चलायो रे॥ २१॥
पाट बाजोट कपडा ने पडिया राखे, इत्यादिक उपधि वशेषो रे।
त्याने उपध जाण पडिलेहे नाही, ओ दोष सेवे किण लेखें रे॥ २२॥
आखा थांन नें विण पडिलेह्यां राखें, न पडिलेहे पिछोवडी सीवी रे।
वले पडिलेह्या विण उपधि राखें अनेक, त्या खोइ संजम रूप नीवी रे॥ २३॥
कपडा ने पोथ्यां आला माहे घालें, उपर गारों लीपें छे काठो रे।
जब पूरी पडी पडिलेहण त्यारी, त्यारो चारित घट मा सू न्हाठो रे॥ २४॥
मास छ मास ताइ न खोले आला, जब जमे जीवा रा जाला रे।
त्यांमें जीव अनेक उपजे खपें छे, एहवा गुर छे विकलां वाला रे॥ २५॥
कोइ खोडो ने पांगलो लूलो होवे, पगां बाधे इंडूणी गाबो रे।
दोनूं टंका न करे पडिलेहण, तिणरो भागल काई देसी जाबो रे॥ २६॥
मुंहपती री तो करे नित पडिलेहण, नही पडिलेहे पगारो गाबो रे।
तिण माहे जीव अनेक घसे छे, त्याने देवे पगा सू दाबो रे॥ २७॥
थांनक आडा पडदा बाध्या छे, ते साध हाथा सू खोलनें बाधे रे।
तिणरा सावपणा नें पलीतो लागो, ओ पिण दोष न जाण्यो आधे रे॥ २८॥
तिण परदा रें नीलणफूलण आवे, आडो दीया छाटां लागे रे।
तिण हिंसा तणो पाप साधा ने हूवो, तिणसू पहिलो महावरत भागे रे॥ २९॥
जो सी राखणने पडदा हेठा करे छे, जब तो पडदा भोगवीया साधो रे।
तिणने देव अदत ने परिग्रह लागो, तिण चारित दीयो विराधो रे॥ ३०॥
जब कहे ग्रहस्थ री आगना लेने, म्हे पडदा मेला ढलकाउ रे।
तिण लेखे तो ग्रहस्थ री आगना लेइने, सी राखण सीरख ओढणी साऊ रे॥ ३१॥
साधा रें कारण पडदा बाधें छे, ते कर्म बाधे हूवो भारी रे।
तिण पडदा माहे रहे साध जाणने, तिणरी पिण घणी खुवारी रे॥ ३२॥
कारण विण पिण महिना सूं इधिका रहे छे, त्या भाग्यो कल्प लोपी मरजादो रे।
तिण दोष तणो प्रायछित नही लेवे, वले पूछ्यां करे विषवादो रे॥ ३३॥
केई चोमासी उतर गया पछे, कारण विण रहिवा लागा रे।
खावा पिवा कपडादिक काजें, त्यासू छूटें नही सेदी जागो रे॥ ३४॥
चोमासो करे तिण गाम नगर मे, नही करें चोमासा दोयो रे।
तठा पहिली चोमासो करे तिण गामे, तिण चारित चोडे विगोयो रे॥ ३५॥
छती सगत छे पगा चालण री, तो ही लेवे कारण रों नांमो रे।
कारण कहे छे दोप रो खोज भागण रो, पिण रहे छे मुतलव कामो रे॥ ३६॥

त्यांमें कोइ तो मुतलब खावारें काजें, केई चेंला रें मुतलब काजें रे।
कोइ रहें कपडादिक काजें, तिणसं भूठ बोलतां न लाजे रे ॥ ३७ ॥
कोइ तो जांणें म्हारा श्रावक फिर जासी, तो मत मांहें पडसी वगारा रे।
फिरता फिरता कदा सर्व फिरें तो, इहां थी छुट जासी पग म्हारा रे ॥ ३८ ॥
जों श्रावक म्हारा फिर जाअें म्हांथी, तो पछें कारी न लागें कायो रे।
भगवंतें बांधी मरजादा भागेंनें, देवे चोमासों ठहरायो रे ॥ ३९ ॥
कल्प मरजादा लोपतां संक न आंणें, त्यांमें साध तणी नहीं रीतो रे।
ते तों इह लोकरा अर्थी छें अग्यांनी, ते चिहूं गति में होसी फजीतो रे ॥ ४० ॥
साध एक मास रह्या तिण गांमें, तो बिमणा काढणा दिन बारे रे।
तठा पहिली पिण तिहां आय रहें छें, ते तो विटल हुआ वेंकारो रे ॥ ४१ ॥
कल्प भागेनें करें चोमासो, कल्प भागेनें रहें सेखा कालो रे।
अणहूंतों अग्यांनी कारण बतावे, त्यांरें भूठ तणों नही टालो रे ॥ ४२ ॥
कल्प भागेनें करें चोमासों, कल्प भागेनें रहें सेखा कालो रे।
तिणनें पिण पूज जांनें अग्यांनी, त्यांरे आयो अभितर जालो रे ॥ ४३ ॥
जे सोइ पूजनें जेंसाइ चेला, जेसोंइ परवार छें दूजो रे।
कल्प भागेनें करें चोमासो, ते पूज छें पूरों अबूजो रे ॥ ४४ ॥
दोष सेंव्यांरो प्राछित नहीं लेवे, आगा सूं नही पालें मरजादो रे।
एहवी घिगांमस्ती मंडे रही तिण गछ में, ते तो भगवंत रा नहीं साधो रे ॥ ४५ ॥
थांनक मांहें पांणी चवें जब, ठांमडा मांड भेले पांणी रे।
तिणनें हिंसा लागें छे तस थावर री, तिणरो दोष न जांणे अग्यांनी रे ॥ ४६ ॥
काचों पांणी भेलें पोतें जाय ढोले, तिणरी दया घट मांसूं न्हाठी रे।
एहवा पिण साध वाजें लोकां में, तिणरी चोडें छें चलगति माठी रे ॥ ४७ ॥
त्यारें ग्रहस्थण थांनक आय लीपें जब, आर्या धोवण गारा में घालें रे।
केइ आर्या हाथां दडें लीपें छें, केइ गार पीडा हाथां भालें रे ॥ ४८ ॥
केइ आर्या थानक तणी छंजास्यां, पडी हुवें तो थांनक माहे आंणें रे।
त्यां छजास्यानें आपरी कर जाणें, तिणसूं मेल दे एकंत ठिकांणें रे ॥ ४९ ॥
ओषघ आदि दे तंबाखू इधकी आंणें, वधें ते बासी राखें छे रातो रे।
त्यांनें पूछ्यां कहें अें तों ग्रहस्थ री छें, तिणरी फेर आग्या ले परभातो रे ॥ ५० ॥
आपरी वस्त थांनक में बासी राखें ते, ग्रहस्थ री थापी किण न्यायो रे।
वले ग्रहस्थ री आग्या लेवें किण लेखें, त्यांमें आ पिण अकल न कायो रे ॥ ५१ ॥
मूआ गयां रा पातरा इधिका हुवे ते, त्यांरो पिण ममता मूकें नांही रे।
त्यांनें पडिया राखें छें विण पडिलेह्यां, आपरा थांनक मांही रे ॥ ५२ ॥

लोट पातरा थांनक मे पडीया देखीनें, कोइ प्रश्न पूछें छें आंमो रे।
अें लोटनें पातरा सावठा किणरा, जब तो कहे छें ग्रहस्थ रा ठांमो रे॥ ५३ ॥
लोट नें पातरा ग्रहस्थ रा कहिने, आप न्यारों होय जावे रे।
एहवा एहवा भूठ जाणेनें बोले, त्यामें साध रो खेरो न पावें रे॥ ५४ ॥
ग्रहस्थ रे लोट पातरा क्यानें चाहीजें, ते थांनक मे मेलें क्यानें रे।
आपरा पातरा ने कहे ग्रहस्थ रा, साध न कहीजे ज्यानें रे॥ ५५ ॥
जो आपरे चाहीजें लोट पातरा, तो लेवे छें तिण मासूं ताह्यों रे।
वले मूआं गया रा ववे लोट पातरा, ते मेल देवें तिण मांह्यो रे॥ ५६ ॥
ओ तों कोठार ज्यूं छे लोट नें पातरा, ते तो निश्चेंइ त्यांरा जाणो रे।
जो भेषधारी कहे अें तो ग्रहस्थरा छें, त्या विकलां रो करजो पिछांणो रे॥ ५७ ॥
बिण पडिलेह्या राख्या पहिलो व्रत भागों, बीजो व्रत भागों भूठ भाख्या रे।
तीजों व्रत भागो जिण आगना लोप्यां, पाचमों व्रत भागो इधिका राख्यां रे॥ ५८ ॥
आचार कुसील तणे लेखें तों, चोथो ने छठों व्रत भागा रे॥
विण पडिलेह्यां पातरा इधिका राखें, ते व्रत विहूणा नागा रे॥ ५९ ॥
लोट पातरा नें उपधि इधिका राखें, त्यामे छे मोटी खोडो रे।
इधिकाइ राखे ने विण पडिलेह्यां, ते तो निश्चें भगवान रा चोरो रे॥ ६० ॥
कुगुरानें ओलखावण जोड करी छे, सोजत सहर मभारो रें।
समत अठारे ने वरस तेपनें, आसोज सुद सातम थावरवारो रें॥ ६१ ॥



ढाल : २७

दुहा

भेषधारी भूला जिण धर्म थी, त्यांरा फूटा अभितर नेत।
ते भोलां नें भिष्ट करवा भणी, कूडा लगावें कूहेत ॥ १ ॥
निज दोषण ढांकण भणी, भूठी भूठी बणावें वात।
त्यांरी बात मांनें तिण जीव रें, आवे तुरत मिथ्यात ॥ २ ॥
चहुरबाजी तमासा नी परें, ज्यूं भेषधास्थां मांड्यों फंद।
किणही भोला नें न्हांखी फंद में, जब पांमें अधिक अणंद ॥ ३ ॥
काचा पंखी रें पांख आइ नहीं, ते उछल पडीयो आला वार।
तिणनें पडीयो देखनें पापीया, त्रापे आवें तुरत मभार ॥ ४ ॥
ज्यूं काचों जांणपणों छें तेहनें, तिणनें भिष्ट करण हुवे तयार।
तिणनें भिडकावें सुध साधां थकी, कूड केलवे वारुंवार ॥ ५ ॥
कमाड जड्यांनें उघाडीया, तिणनें दीसें उघाडों पाप।
ते वीर वचन उथापनें, करें कवाड जडण री थाप ॥ ६ ॥
चोढें दोष अणाचार सेवता, पूछ्यां आरे न हुवें ताहि।
ते ढालें उतारें कूड कपट सूं, ते सुणजों चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिन आग्या में]

केई साध रो भेष पेंहरी नें भूला, आडा जडे उघाडे कमाड।
त्यांमें केई तो कहें म्हांनें दोप लागे छें, केई कहें म्हांनें दोष न लागें छें लिगार।
यां भूठाबोलां रो निरणों कीजो* ॥ १ ॥
कवाड जडे पिण दोष जांणें छें, ते तो छें एक मूर्ख री पांत।
कवाड जडे नें दोष न जांणें, त्यांनें दोय मूर्ख कहीजे भलीभांत ॥ २ ॥
त्यां भेषधास्थां नें पूछा कीजे, थांरो श्रावक कहें थांसूं जोडी हाथ।
मोनें कमाड जडवों उघाडणों नांहीं, ए सूंस करावों मोनें सांमीनाथ ॥ ३ ॥
जब तो कहें म्हें उणनें सूंस करावां, तो किसों बरत उणरें नीपनों जांणों।
जब कहें उणरें पेंहलो वरत नीपनो, हिंसा रों त्याग कीयो छें सुमता आंणो ॥ ४ ॥
जोड कवाड हाथा सूं जडें उघाडे, जबकि सों व्रत उन श्रावक रो भागो।
जब तो कहें उणरों पेंहलों व्रत भागो, हिंसा रो पाप सागेइ लागों ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

श्रावक जड्या उघाड्यां पहिलो व्रत भागो, जब तो थारोई पहलो महाव्रत भागो।
थे पिण कवाड जडो नें उघाडो, जब हिंसा रो दोष थानेंई लागो ॥ ६ ॥
दोष न गिणें छे कवाड जड्या उघाड्या, तिणने जाब सू जाब देइ खिष्ट कीधो।
जब मूंढो बिगाडने पडगयो फीटो, बल्तो जबाब पाछो नही दीधो ॥ ७ ॥
वले भेषधारी नें पूछा कीधी, थे कवाड जडेंने गोचरी जावो।
पाछा आवो जब पिण कवाड उघाडो, तो ग्रहस्थ रो आडो देख पाछा काय आवो ॥ ८ ॥
थानक रो कवाड तो जडो उघाडो, तिणमे तो दोष गिणो नही कांइ।
तो थे ग्रहस्थ तणों कवाड खोलेने, क्यू नही जावो तिणरा घर माही ॥ ९ ॥
जब तो कहे म्हे कवाड जड्यां मे, दोष तो मूल न जाणो लिगार।
आगे बाइ हुवे काइ ढाकी उघाडी, तिणसूं माहे न जाओ खोल कवाड ॥ १० ॥
इम भूठ बोलीनें होय गयो पार, तिणने पाछो खिष्ट करवों छें एम।
हाट माहे तो बाइ थे बेठी न जाणो, तो हाट खोली वेहरायां वेहरो नही केम ॥ ११ ॥
कोइ बाइ ओरा रो कमाड उघाडे, थाने वेहरावें तो वेंहरो नही कांय।
माहे तो बाइ ढाकी उघाडी न जाणो, हिवे कहो थे दोष गिणों किण माहि ॥ १२ ॥
कोइ ग्रहस्थ कहे सामी कमाड उघाडें, असणादिक वेहरण माहे पधारो।
जब थे कमाड उघाड माही क्यूं न जावो, कमाड खोल्यां में दोष न जांणो लिगारो ॥ १३ ॥
इत्यादिक खिष्ट कीया छे अनेक बोला सूं, तिणरो पाछो जाबतों मूल न आयो।
कदा कवाड जड्या माहे दोष जाणें छें, तो पिण पापी सू चोडे कह्यो नही जायो ॥ १४ ॥
यांरा वडा वडेरा दर पीढ्या लग, कहे कमाड खोलायने न लीयों आहार।
त्यां तो दोष जाणेनें नही लीधो, हिवे तो मूढ दोष न जाणें लिगार ॥ १५ ॥
बयालीस दोषां मे दोष कह्यो छे, यारा बडा वडेरा रा आखर संभालो।
भिने दोष मे दोष जाणे ने टाल्यो छे, त्यारी सरधा ने विकला लगायो छे कालो ॥ १६ ॥
साधवीयां रो नांम लेइने, साध ने कवाड जडवो थापे।
ते परभव सू डरें नही पापी, जाण जांणनें वीरना वचन उथापे ॥ १७ ॥
साध नें कवाड जडवो थापण ने, पापी कूडा कुहेत लगावण लागो।
जो साध जड्यां उघाड्या पेहलों व्रत भागे, जो साधवियारोइ पहलो व्रत भागो ॥ १८ ॥
तिण मूढमती ने पाछो इम कहीजे, तूं ओही विचार हीया मे न देखे।
साधवीयां तो सील राखण ने जडे छे, साध कवाड जडे किण लेखे ॥ १९ ॥
जब मूढ मती पाछो इम बोलें, सील राखण पेंहलों व्रत भागे छें जेह।
डाला राखणनें गोड जडीयां सू काढे, ए खोटो दिष्टत देवें लोका आगें तेह ॥ २० ॥
तिण मूढमती ने पाछो इम कहिणो, थें गोचरी जाओ ग्रहस्थ नें घर ताम।
घर में एकली अस्त्री छे बाल जवान, इतरे मेह आय गयो तिण ठाम ॥ २१ ॥

एकली अस्त्री छैं तिहां रहो कें न रहों, जब तो कहें म्हें न रहां तिणठांम।
म्हें वरसतें मेह नीकल जावां बारें, चोथो सील वरत राखण ने काम॥ २२॥
जो थे सील राखण नें पांणी मांहे चालो, जब थांरें लेखें थांरो पहिलों व्रत भागों।
आर्या तों कवाड जडे सील राखण, थे सील राखण जीव मास्या अथागों॥ २३॥
आपरों व्रत भागो तो केंहणी न आवें, जाब अटक गया जब पड गया फीटा।
भोला लोकां नें समझ पडें नहीं कांइ, डाहा लोकां में तो घणा भूंडा दीठा॥ २४॥
वरसतें मेह नीकले अस्त्री कना थी, तिण साध नें श्री जिण आगना जांणो।
साधवीयां कवाड जडें सील राखण नें, तिण में पिण श्री जिण आग्या प्रमांणो॥ २५॥
सीलादिक कारण विण कवाड जडें छें, सीलादिक कारण विण मेह में चालें।
जब तो पहिलो महाव्रत निश्चेंइ भागों, तिण मांहे घोचो अग्यांनी घालें॥ २६॥
त्यांनें कवाड जड्यां मांहे दोष बतावें, जब भूठ वोलें फलसों देवें बताइ।
कहें साध तों फलसों हाथां सूं उघाडें, तो कवाड जडवारी कुण चलाइ॥ २७॥
कवाड विचें तो फलसो भारी छें, फलसों पूंजें खोलेनें मांहें जांणो।
ते तो आचारंग सूतर मांहें कह्यो छें, म्हे कवाड जडण री संक क्यूं आंणों॥ २८॥
कवाड जडण उघाडण रो दोष ढांकणने, फलसों उघाडण रो भूठ चलायों।
वले आचारंग मांहे चाल्यों कहें छें, ते पिण एकंत मूसावायो॥ २९॥
कंटक बोदीया पाठ कह्यों छें सूतर में, ते कंटक नी साखा डाली जांणो।
आचारंग दूजें सतक पेंहलें अधेनें, पांचमों उदेसो जोय करो पिछांणो॥ ३०॥
कंटक बोदीया साखा नें फलसो कहे छें, तिण निश्चेंई चोडें चलायो छे कूडों।
ते तों कवाड जडण नें उंधा अर्थ करें छें, त्यांरा साधपणा मांहें पर गइ धूरो॥ ३१॥
कटक साखा रो ठूंठो पूंजें दुवार खोले, फलसों होसी तो पूंजणी किम आवें।
कंटक वोदीया रो अर्थ फलसो कहें ते, निश्चेंइ गालां रा गोला चलावें॥ ३२॥
तिण भेषधारी ने पूछा कीजे, कवाड जड्यां खोल्यां पाप कें धर्म।
जो धर्म कहें तो लोकां में भूंडा दीसें, पाप कह्यां निकल जाअें सरधा रो भर्म॥ ३३॥
कवाड जड्यां मांहें दोष उघाडों, सांभलजों सूतर री साख।
तो पिण पापी मूल न मांनें, कवाड जडवो छे साध नें कहे छेअन्हाख॥ ३४॥
कवाड जड्यां उघाड्यां हिंसा कही जिण, आवसग सूतर चोथा अधेन मझार।
थोडी हिंसा कीयां डंड आवें चोमासी, नसीत बार में उदेसें विचार॥ ३५॥
वेतकल्प सूतर रे पेंहलें उदेशे, साधवीयां नें नहीं रहिणो उघाडे दुवार।
आडो जडेनें रात रो रहिणों, सील नें उपजतों जांण विगाड॥ ३६॥
साध नें रहिणो दुवार उघाडें, साध नें कमाड़ जडवो नहीं चाल्यों।
पोतें जडण उघारण रो कांम न पडें तो, जडीयें दुवार तो रहणों नहीं पाल्यों॥ ३७॥

आर्यां रो नाम लेइनें साध जडें छे, त्यानें जिण मारग रा कहीजे अजाण ।
आर्यां न जडे तों जिण आगना लोपी, साध जडे तिण भागी छे जिणवर आंण ॥ ३८ ॥
मन करनें पिण साध कमाड न बाछे, ते काया सूं किण विध जडें कमाड ।
ते वरज्यो छें उत्तराधेन पेंतीस मे अधेन, चोथी गाथा जोय करो निस्तार ॥ ३९ ॥
मनोहर घर ने वले चित्राम कीधा, माला सहीत ने धूपादिक वासकारी ।
कवाड सहीत ने घर धवलीयो हुवें, वले चंद्रवा सहीत न वांछें लिगारी ॥ ४० ॥
जो इतरा बोल माहिलो सहजा हुवे तो, तिहां रहितां दोष न लागें कांइ ।
आगे पडीया छे जिम नचित पस्त्या छो, त्यांरी बछा पिण नही करणी मन माही ॥ ४१ ॥
चंद्रवा छूटा नें साध पाछा बाधे, वले हाथां सू जडे उघाडें कमाड ।
ते चित्रामादिक समारे हाथा सूं, त्यांरो बिगड गयो जाबक आचार ॥ ४२ ॥
ज्याने मन करने वाछणा जिण पाल्या, त्यानें कायाइं करेने सेवण लागा ।
वले कमाड जडवो साधा ने थापे, त्यांने वरत विहूणा कहीजे नागा ॥ ४३ ॥
गोसालें पिण कमाड जडीयो नही दीसे, ते सूतर भगोती सू करो पिछांणो ।
गोसालो मूआ पछें चेला जस्या छे, ते तो आपरा मुतलब रे काम जांणों ॥ ४४ ॥
पेहला चेलां ने करडा सूस कराए, पछे निज आलोवण कीधी गोसालें ।
जब चेला टटवस करणो माड्यो, जब चेलां कमाड जड्यो तिण कालें ॥ ४५ ॥
चेला टटवस करनें पाछो उघाड्यो, बीजू तो आगें हुतो उघाडो दुवारों ।
गोसाला ने घीसालतो लाजा मरे छें, तिणसूं चेला जडीयो उघास्यों कमारो ॥ ४६ ॥
गोसाला रे तो जागा सूतर में चाली, जडवो उघाडवों नही चाल्यों कवाड ।
ते तीथकर वाजे ते किण विध जडसी, ओ पिण दीसें उघाडो विचार ४७ ॥
केई पाषंडी पिण वाजें वेंरागी, ते पिण आडा न जडे कमाड ।
भगवंत रा साध वाजे कमाड जडे छे, त्यां विकला नें दीजें तीन धिकार ॥ ४८ ॥
झूठ वोलता वोलता जाव मे अटके, तो अनेक आका झाका ले उठें ।
वले क्रोध करे प्रजलता पापी, सुध साधा री निंदा करे परपूठें ॥ ४९ ॥
सावां रा भेष थका कमाड ने जडता, निरलजा हुवें ते मूल न लाजे ।
वले दोष काढे त्यासूं मड जाए साह्मा, न्याय चरचा करे त्यासू दूरा भाजें ॥ ५० ॥
कमाड जडवारो दोष ओलखावण, जोड कीधी पालीसहर मझार ।
समत अठारेनें वरस बावने, आसोज सुदि बीज ने बुधवार ॥ ५१ ॥

ढाल : २८

दुहा

दुषम आरें पांचमें, हीण परी लोकां री बुध।
त्यांनें साध नें असाध दोनूं तणी, पूरी परती न दीसें सुध ॥ १ ॥
भेषधारी भागल तूटल फिरें, इण साध तणा भेष मांहि।
त्यांरें माया ममता अति घणी, ते कह्यों कठा लग जाय ॥ २ ॥
गांमा गांमा थांनक त्यांरे बांधीया, छ काय रों कर घमसांण।
नामें पर नामें त्यांरें जू जूआ, त्यांमें पर रह्या मूंढ अयांण ॥ ३ ॥
चेला चेली करणरा अति लोभी, त्यांरें लागी तिसणा लाय।
ववेक विकल बालक विरध नें, तुरत मूंडलें मांहि ॥ ४ ॥
त्यां भेष भांड्यो छें भगवांन रो, वले छोडी सरम नें लाज।
चेला चेली करण रें कारणें, करें छें अनेक अकाज ॥ ५ ॥
वले ओर दोष सेवे घणा, ते पूरा कह्या नहीं जाय।
थोडा सा परगट करू, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[पाषंड बधसी आरे पाचमें]

जिण साधपणा रा गुण जांण्या नही रे, वले नहीं जांण्यों समकत रो सरूप रे।
एहवा विकलां नें मूंड भेला करे रे, ते भेष ले बूडा भवजल कूप रे।
त्यांनें साध म जांणो श्री भगवांन रा रे* ॥ १ ॥
बूढा नें मूंडे बालक रें लालचे रे, जाणें बालक होसी म्हारें भणणार रे।
पिण अें दोनूंइ पेटभरा पेटारथी रे, त्यांनें सांग पेंहराय कहें अणगार रे ॥ २ ॥
तिण बालक ने न्याती लेगा पकडनें रे, तिणने ग्रहस्थ कीयों छें भेष उतार रे।
ते बालक विकल थको रमतों फिरे रे, ते पिण चाल्या छें तिणरी लार रे ॥ ३ ॥
तिण ने पाछों ल्यावण री आसा धारने रे, धरणों पाल्यों तिण ठांमें जाय रे।
तोही हाथ न आयों त्यांरें डावडो रे, जब फेर धरणो दीयों छें ताय रे ॥ ४ ॥
कहें मांनें पाछों सूंपेदो डावडो रे, नहीं तों अणसण कर छोडूं थां उपर प्रांण रे।
कें हूं पाछो होय जासूं ग्रहस्थी रे, जोरी दावें लेजा सूं तिणनें तांण रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले कजीयो कलेस कीयो तिण अति घणो रे, छोरा नें पाछो लेजावण काज रे।
ओघड ज्यूं उघाडा नाच्या लोक मे रे, त्यां भेष री मूल न राखी लाज रे॥ ६ ॥
तो पिण हाथे नही आयो डावडो रे, वले फीटा पडीया छें लोकां माहे रे।
भूखां मूआं ते पिण यूं ही गयो रे, पछे काया होय धरणो दीयों उठाय रे॥ ७ ॥
पहिला तों विकलां नें मूंड माहे लीया रे, पछें धरणो पाडयो पिण ठामे जाय रे।
तिणानें तो विकल निजरां देखी लीया रे, तो ही न मटी विकला नें तिणरी चाहि रे॥ ८ ॥
भेषधारी विलखा वेदल हूआ घणा रे, जाणे कोइ न सरीयो म्हारे काज रे।
आसा अलूघा पाछा आवीया रे, घणा लोका मे खोए लाज रे॥ ९ ॥
पछें माहोमां मिलनें मतो कीयो रे, आपे भूडा दीठा छा लोका माहि रे।
हिवें बालक विण बूढों किण कामरो रे, तो इण बूढा ने बारे काढे दो ताहि रे॥ १० ॥
इम जांणे ने बूढा नें पिण छोडे दीयो रे, जब बूढो तो जाय बेठो तिण गांम रे।
ओ पिण भेष छोडेनें हूवो ग्रहस्थी रे, जेसा हूता जेसोइज कीधों कांम रे॥ ११ ॥
कलेस कदागरो करे घणो रे, वले देवें करडा करडा सराप रे।
तपकर मरवा माडे उपरे रे, छोरा नें पाछा ल्यावण री थाप रे॥ १२ ॥
तिणमे भेषधारयां नें साभल जाण जो रे, पिण निश्चे तो जाणे श्री भगवत रे।
यांरा चेहन देखे ने याने अटकल्या रे, यारे छोरा सूं दीसे ध्यान अतंत रे॥ १३ ॥
जों सेंमल न हुवे तो कह दो एतलो रे, इणने लेसां म्हे आसी जब वेंराग रे।
लडे झगडे ल्यायानें माहे ल्या नही रे, साचा हुवे तो कर दो इणरो त्याग रे॥ १४ ॥
जो त्याग न करे तो तिण कजीया मझे रे, सेमल छे चेला करवा काजरे।
एहवा कजीया कराएने चेला करे रे, ते निरलजा मूल न आंणे लाज रे॥ १५ ॥
जो इतरो कहें कजीया मूल करो मती रे, म्हारे छोरा ने लेवण रा छे त्याग रे।
तिणरी आसा छोडे नें निरदावे हुवे रे, जब तो थोडा मे कजीयो जावें भाग रे॥ १६ ॥
सुस करेनें कजीयो मेटे किण विधे रे, तिणरे चेला री लागी तिसणा लाय रे।
तेतो कुटंब छोडेने पडीयों विटंब मे रे, सुमता नही दीसे तिणरे माहि रे॥ १७ ॥
एहवा विकलां नें साधु सरघे छें भेलीया रे, त्यारी पिण अकल गइ दपटाय रे।
त्याने कर्म जोगें एहवा कुगुर मिल्या रे, ते पिण खूंता छे मोह मिथ्यात रे माहि रे॥ १८ ॥
कोइ मादो अकेलो ग्रह करला थकां रे, धन उदके साधा रे थानक काज रे।
एहवो पिण दान लेता लाजें नही रे, त्या विकला ने किम कहीजे मुनीराज रे॥ १९ ॥
मिनष आंतरीयो जूतो घुरडके रे, धन उदके साधां रे थांनक काज रे।
वले साता उपजावण साधा नें दीयों रे, ते दान लेतां पिण नाणे लाज रे॥ २० ॥
कोइ घर छोडतो थानक मोल ले रे, जाणे साध रहसी तिण थांनक माहि रे।
वले परिग्रह पिण छाने सूपे ग्रहस्थ ने रे, साधां ने साता उपजावण ताहि रे॥ २१ ॥

बले साधां रें थांनक करावण कारणें रे, लेवें छें अउत तणों तो माल रे।
एहवा थांनक जे साध भोगवें रे, त्यांमें भव भव में होसी घणा हवाल रे॥ २२॥
वले कहि कहिनें त्यांनें कितरो कहूं रे, नही छोडें मुरदादिक रो धन माल रे।
ते पिण नांम धरावें साधरो रे, आ चोडे देखों कुगुरां री चाल रे॥ २३॥
तिण परिग्रहा नें कहें छें थांनक तणो रे, आप तों होय जाअें छें दूर रे।
पिण अंतरंग में जांणें छें धन आपरो रे, कपटी जांणेनें बोले कूड रे॥ २४॥
जिणरों थांनक छें तिणरो परिग्रहो रे, पिण ओर रो भेल नही तिलमात रे।
तिण थांनक रा धणी धोरी जो साध छें रे, तो साधां रो परिग्रहो छें साख्यात रे॥ २५॥
तिण धन रा भेलू त्यांरा श्रावक हुवें रे, ते मिल नें मेले ठिकांणों जोय रे।
ते गुपत छांनें छें सामग्री मझे रे, ते लोकां में चावो न करे कोय रे॥ २६॥
ते व्याज वधें छें सामग्री मझे रे, त्यां सगलां रो जांणें छें साध नांम रे।
ते अंतरंग में जांणे छें धन नें आपरो रे, ओ सगलोइ आसी म्हांरे काम रे॥ २७॥
जिणमें नांणों छें तिणरा घर थकी रे, चाहीजे ते वेंहरी ल्यावें जांण रे।
घी खांड कपडादिक देवें मोकला रे, तिणरो लेखो उ जाणें ते परमांण रे॥ २८॥
जो थांनक निमतें पइसों चाहिजे रे, वले काठ खांपण नें मांडी कांम रे।
जब पिण सामग्री मांहे भेलो करे रे, तिण परिग्रह ने लेवा न दें तांम रे॥ २९॥
करलो कांम पख्यां लेवा दे तेहनें रे, कें लेवा दे खोज भागण रे कांम रे।
ते पिण मुतलब जांणें आप रो रे, विण मुतलव लेवा न दे तांम रे॥ ३०॥
त्यांमें कितरायक मांग्यां पाछो दे नहीं रे, जोरीदावें बेंठा छें मूंढो मार रे।
जब अें लाजां मरता पाछा बोलें नही रे, पिण छांनें छांनें भायां में करें पुकार रे॥ ३१॥
एहवो पोलांणो छें इण भेष मे रे, ठागो चलायो लोकां माहि रे।
जाल मांड्यों छें मोह मिथ्यात रो रे, तिण मांहे पडें अग्यांनी आय रे॥ ३२॥
कदे उसभ कर्म त्यांरें उदें हूआ रे, जव वात चावी हुइ लोकां माहि रे।
पापें भरीयो घडो फूटे गयो रे, हिवें दोष छिपाया न छिपें ताहि रे॥ ३३॥
जब साव श्रावक सारा लाजां मरें रे, लोकां में हूवो जांण फितूर रे।
जब दोष ढांकण री खत करें घणी रे, हिवें विधविध सूं चोडें बोलें कूड रे॥ ३४॥
त्यांनें परभव रो डर तों मूल दीसें नहीं रे, भूठ बोले दोषां नें देवें दाव रे।
एहवा साध श्रावक सगला बूडे गया रे, ते चिहूंगति में होसी घणा खुराब रे॥ ३५॥
कोइ श्रावक यांरा ते खाअें मांगनें रे, तिणनें दरावें रोकड दाम रे।
तिण मांहे सीर जांणें छें आपरो रे, इणरें होसी ते आसी म्हारें कांम रे॥ ३६॥
उ मोल ल्यावें घी सकर सूंखडी रे, वले चिरक पिण मेवा नें मिसठांन रे।
उ पिण खाअें छें नम मांनें जीतो रे, गुर नें पिण देवें अढलक दांन रे॥ ३७॥

तिणरें निठ जाझें खाता देतां थका रे, तो फेर सरू करें दातार रे।
कांनी कांनी गांमा नगरां थकी रे, परिग्रह मेलण नें करें तयार रे ॥ ३८ ॥
तिणनें फेर दरावें कर कर आंमना रे, वले उण कना थी ल्यावें छें आप रे ।
घोरां कुत्ती मिली ज्यूं मिल गया रे, ज्यूं यारें पिण आकर राखी छें थाप रे ॥ ३६ ॥
किणरे दोय सीख्यां रे सोदो वेचणो रे, जब एक जणों वणे दलाल रे।
गराग ठगणनें कपट दगो करे रे, ये पिण इण विध ठग ल्यावें माल रे ॥ ४० ॥
मिनष आतरीयो जूतो धुरडके रे, घन उदकें राक गरीब नें ताहि रे।
ते पिण दरावे तिण श्रावक भणी रे, तिणरी पिण आसा छें मन माहि रे ॥ ४१ ॥
हू कहि कहि ने वले कितरो कहूं रे, इण भेष माहे छें घोर अधार रे।
त्यारा श्रावक भोला नें समझ पडे नही रे, ते पिण बूंडें छें त्यारी लार रे ॥ ४२ ॥
त्यामें दोष बतावे थांनक तणो रे, जब भोला नें किण विध दें भरमाय रे ।
कहे थांनक चाल्या छे अठारें जातरा रे, तिणसूं म्हे पिण रहा छां थांनक माय रे ॥ ४३ ॥
इम कहि कहि दोषीला थांनक भोगवे रे, गाला गोलीं कर देवें ताय रे।
हिवे अठारें जातना थानक तेहनो रे, जू जूओ नाम सुणे चितल्यांय रे ॥ ४४ ॥
देवरों सभा जायगा पोतणी रे, परव्राजक नो कह्यो असरांम रे।
रूंष हेठें पिण साध उतरे रे, अस्त्री नें पुरुष रमवाना आराम रे ॥ ४५ ॥
गुफा नें लोहारादिक नी साला मझे रे, वले गुफा परबत नी हुवें रसाल रे।
चोह कमावे तिण ठामे पिण उतरें रे, विरष व्यापत उद्यान नें गडसाल रे ॥ ४६ ॥
क्रियाणासाला नें जगनें मडप मझे रे सूनो घर नें मसांण छत्री माहि रे।
परवत घरनें वले हाट मे रें, इत्यादिक जाचीनें रहे तिण माहि रे ॥ ४७ ॥
यांमे दोषीला थांनक तों एको नही रे, ए सगलाइ वीर कह्या छें सिष्ट रे।
त्यामे साधरो तो थानक चाल्यो नही रे, थानक माडीनें बेंठा ते भिष्ट रे ॥ ४८ ॥
थांनक तो कहे छे अठारे जातरा रे, अे वारुवार कहे किण कांम रे।
दोषीला थांनक रा दोष छिपायवा रे, वले दोषीला सेवण रा परिणाम रे ॥ ४६ ॥
भोला नें भरमावें कपट दगो करी रे, तिण सूं भोला जाणे थांनक निरदोष रे।
पिण मन माहें मूल न जांणें सुझता रे, यां विकला नें किण विध होसी मोख रे ॥ ५० ॥
भेषधारी भागल तूटल ओलखायवा रे, जोड कीधी छें सोजत सहर मझार रे।
संवत अठारे ने बरस तेपने रे, आसोज विद इग्यारस नें मंगलवार रें ॥ ५१ ॥

ढाल : २६

दुहा

आधा कर्मी नें उदेसीक जे कीयों, ते तों साध नें कल्पें नांहि।
भोगवें त्यांनें भिष्टी कह्या, नहीं साध तणी पांत मांहि॥ १ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें, त्यांनें नषेधा श्री भगवांन।
त्यांनें कुण कुण कहि वतलावीयें, ते सुणों सुरत दे कांन॥ २ ॥

ढाल

[भवियण जिन आ०]

आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, निश्चें कह्या अणाचारी।
दसवीकालिक तीजें अधेनें, तिणमें संका म जांणों लिगारी रे।
भवीयण जोवो हिरदय विचारी, एहवा कुगुर छें हीण आचारी रे।
त्यांनें वांद्या हुवें घणी खुवारी*॥ १ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, भिष्ट कह्या भगवंत।
दसवीकालिक रें छठें अधेनें, ते निरणों करो मतवंत रे॥ २ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांने, कह्या छें गृहस्थ नें भेषधारी।
माहा सावद्य किरीया लागी कही त्यानें, आचारंग सेद्या अधेन मभारी रे॥ ३ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांरा, भागा छहू व्रत जांणों।
आचारंग दूजा अधेन रें छठें उदेशें, तिहां जोय करों पिछांणो रे॥ ४ ॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, नरकगांमी कह्या भगवांन।
ते उत्तराधेनरे वीसमें अधेनें, ते निरणों करो बुधवांन रे॥ ५ ॥
आधाकर्मी भोगवीयां अधोगति जाअें, वले कह्यों छें अनंत संसारी।
भगोती पहिला सतक रें नवमें उद्देशें, तिहां बोहत कह्यों विस्तारी रे॥ ६ ॥
आधाकर्मी उदेसीक न कल्पें ते लेवें, तिणमें छें मोटी खोड।
आचारंग रें पहलें सुतखंधें, तिणनें कह दीयो भगवंत चोर रे॥ ७ ॥
आधाकर्मी एकवार भोगवें, तिणनें चोमासी प्रायछित देणों।
पिण सदा निरंतर थेटसूं भोगवें छें, तिणरा प्रावछित रो कांइ कहणो रे॥ ८ ॥
आधाकर्मी में एकवार भोगवें, तिणनें सबलों दोषण लागों।
सदा निरंतर थेटसूं भोंगवें छें, तिणनें प्राछित रों नहीं थागों रे॥ ९ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

साधां रे काजे थांनक दडे लीपें जद, कीड्यां ने माकादिक देवे दाटी।
लाखा कोडां गमें तस जीवां नें मास्या, त्या विकलां ने होसी गति माठी रे॥ १०॥
अनेक तस जीवा ने जीवां मास्या, अनेक जीवा उपर दीधी माटी।
कुगुरां काजे जीव इण विध मारे, त्यारी अकल आडी आइ पाटी रे॥ ११॥
सास उसास रुंधी तस जीव नें मास्यां, माह मोहणी कर्म बंधाय।
दसासतखध सुतर में कह्यो छे, ते पिण विकलां ने खबर न काय रे॥ १२॥
चिगटरो तिरको न्हांखें तिण ठामे, तठें कीड्यां लाखां गमे आवें।
तिहां गार दड्यां लीप्या दर रूंधाय, लाखागमे कीड्यां मारी जाय रे॥ १३॥
पूतीकर्म भोगवें तिण साध नें, कह्यो छें गृहस्थ नें भेषधारी।
दोय पक्ष तणो सेवणहार कह्यो छें, सुयगडाअंग सूतर मझारी रे॥ १४॥
तो पूतीकर्म दोष विचें आधाकर्मी, दोष विशेष छें भारी।
सदा निरतर आधाकर्मी सेवें छे, तेतों निश्चे नही अणगारी रे॥ १५॥
आधाकर्मी थांनक जांण जाच सेवें छें, वले साध वाजें छें अन्हाखी।
त्यारे तो माहामोहणी कर्म बधें छे, दसासतखंध सुतर छें साखी रे॥ १६॥
आधाकर्मी थांनक जांण जांणनें सेवें, पूछ्यां पाधरा बोलणी नावें।
मिश्रभाषा बोले महामोहणी बाधे, कूड कपट सूं कांम चलावे रे॥ १७॥
आधाकर्मी थांनक जांण जांणनें सेवे, पूछ्यां थका बोलें कूड।
त्यांरा श्रावक पिण त्यारी साख भरे छे, ते पिण गया बहती रे पूर रे॥ १८॥
आधाकर्मी तो थानक सेवें उघाडों, वले झूठ बोले जाण जांण।
त्यारा जेंसाइ सामी नें जेंसाइ सेवग, त्यारो बिगड्यो छे जाबक घाण रे॥ १९॥
केइ श्रावक पिण त्यारा भारीकर्मा, झूठ बोलता न डरें लिगार।
आधाकर्मी नें निरदोष कहें छे, ते वूड गया कालीधार रे॥ २०॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवे त्याने, साध सरधे ते निश्चें मिथ्याती।
ठाणाअंग दसमें ठाणें कह्यो अर्थ मे, मूढा तणी म जाणो बाती रे॥ २१॥
आधाकर्मी उदेसीक भोगवे त्यानें, साध सरधें त्यारें भारी कर्मों।
ते सुध बुध वाहिरा जीव अग्यांनी, ते किम पामे जिण धर्मो रे॥ २२॥
आधाकर्मी रा दोप सूतर सूं वताया, वले सूतर मे दोष अनेक।
हिवे मोल लीया रा दोष कहूं छूं, सुणजो आंण ववेक रे॥ २३॥
मोल रा लीया भोगवें त्याने, निश्चे कह्या अणाचारी।
दसवीकालक रे तीजें अधेने, तिणमें सका म जांणों लिगारी रे॥ २४॥
मोलरो लीधों भोगवें त्याने, नरकगामी कह्या भगवत।
उत्तराधेन रें बीस मे अधेने, ते निरणों करो मतवंत रे॥ २५॥

मोलरो लीयो नहीं कल्पें ते वेंहरें, तिणमें छें मोटी खोड।
कह्यों छें आचारंग रे पहिलें सतखंधें, तिणनें कह दीयों भगवंत चोर रे ॥ २६ ॥
मोलरो लीयों भोगवें त्यांनें, भिष्ट कह्या भगवंत।
दसवीकालक रे छठें अधेने, ते निरणो करों मतवंत रे ॥ २७ ॥
मोल रो लीयो भोगवें त्यांरा, सुमत गुपत महाव्रत भागा।
नसीत रें उगणीस में उदेशें, व्रत विहुणा छें नागा रे ॥ २८ ॥
मोल रो लीयों एकवार भोगवें, तिणनें चोमासी प्राछित देणों।
पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राछित रों नही परमांणो रे ॥ २९ ॥
मोल रो लीयो एकवार भोगवें, तिणनें सबलों दोषण लागो।
पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राछित रो नहीं थागो रे ॥ ३० ॥
मोल लीधा रा दोष सूतर सूं बताया, वले सूतर माहे छें अनेक।
हिवें नित पिंड वेंहरयां रा दोष कहूं छूं, ते सुणजों आंण ववेक रे ॥ ३१ ॥
नितरों नित एकण घर रों वेंहरें, त्यांनें निश्चें कह्या अणाचारी।
दसवीकालक रे तीजें अधेनें, तिणमें संका म जांणों लिगारी रे ॥ ३२ ॥
नितरों नित एकण घर रों वेंहरें, त्यांनें भिष्ट कह्या भगवंत।
दसवीकालक रे छठें अधेनें, ते निरणो करों मतवंत रे ॥ ३३ ॥
नितरो नित एकण घर रो वेंहरे, त्यांनें नरक गांमी कह्या भगवांन।
उत्तराधेन रें वीसमें अधेनें, ते निरणों करों बुधवांन रे ॥ ३४ ॥
नितरों नित एकण घर रों वेंहरे, तिणमें छें मोटी खोड।
आचारंग रे पेंहलें सतखंधें, कह दीयो भगवंत चोर रे ॥ ३५ ॥
नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, तिणनें मासीक प्राछित देणों।
पिण सदा निरंतर वेंहरें तिणनें, प्राछित रों नहीं प्रमाणो रे ॥ ३६ ॥
कोइ भेषधारी भागल नित रो नित वेंहरे, एकण घर रों आहार।
त्यांनें पूछ्यां थका पाधरा नही बोलें, भूठ बोलें विविध प्रकार रे ॥ ३७ ॥
नित को एकण घर रो धोवण तों वेंहरां, नित पांणी न वेंहरां लिगार।
धोवण नें च्यार आहार म्हें न गिणें, एहवों भेषधार्यां रे अंधार रे ॥ ३८ ॥
तेहीज नित नित कलाल रा घर सूं, वेंहर ल्यावें छें उंनो पांणी।
चोडे धाडे पीढ्यां लग वेंहरतां आवें, वले भूठ बोलें जांण जांणी रे ॥ ३९ ॥
चोडें भूठ सभा में बोल्यो, नितका पांणी न वेंहरां तांम।
तिण भूठ तणों उघाड कीयों जब, लीयो वडां रो नांम रे ॥ ४० ॥
जो साचो हुवें तो सूतर माहे काढ बतावत, बडां रों नहीं लेतो नाम।
तिणरा बडेरा तो अणाचारी उघाडा, त्यांमें साधपणो नहीं तांम रे ॥ ४१ ॥

भगवत भाख्या सूतर ने उथापें, वडा लारे सेवे अणाचार।
ते वूड गया बडा सहोत अग्यानी, ध्रिग त्यारो जमवार रे॥ ४२॥
वीहार करें जव नित को वेहरे, ते नितको वेहर्‍यो गिणे नाही।
इण विध कूड कपट करे नित वेहरे, ताजो आहार लेवारे ताडं रे॥ ४३॥
वीहार तणो नाम लेनें अग्यांनी, चोडे सेवे अणाचार।
आ आप छादे थाप कीधी अणहुती, ते विटल हुआ वेकार रे॥ ४४॥
केइ तों नित रों नित एकण घर नो, वेहरे धोवण ने पांणी।
ओ पिण उघाडो अणाचार सेवें, निहर थका जाण जाणी रे॥ ४५॥
केइ कहे म्हारें बधी गोचरी छें, तठें तो म्हे एकतर जावो।
बाकी फुटगर घर मोकलाय देवा म्हे, तिहां थी मनमाने सोइ ल्यावो॥ ४६॥
जको वेहरें तिणनें नही जांणो, वीजा रे अटकाव छे नांही।
इण विध कूड कपट करें नित वेंहरें, भोगवे सर्व टोला मांही रे॥ ४७॥
एकण टोला री एकण गाव मांही, ते जुदी जुदी थांनक उतरे छें।
आरज्यां रहे छे अनेक, सगल्या रे सभोग छे एक रे॥ ४८॥
ते आपरें गोचरी जू जूइ जावे, ओर रा लीया घर नही टाले।
ते सगली जणी आहार पांणी ल्याए, गुर ने आण दिखा लें रे॥ ४६॥
सगला रो आंण्यो आहार गुर भोगवे छे, नित पिड रो न करे टालो।
एहवा भेषधारी भागल साध बाजें, त्यां आत्मा ने लगायो कालो रे॥ ५०॥
एक टोला रा नित जू जूओं वे हरें, एकण घर रों आहार पांणी।
त्या विकलां ने साध सरधें छें मूरख, ते पूरा छें मूढ अयाणी रे॥ ५१॥
केइ भेषधार्‍यां रे इग्यारे सभोग, एक भेलो न करे आहार।
बधीयो घटीयो आहार देवे लेवे, वले माहोमा करे मनवार रे॥ ५२॥
आहार तणा सभोग ने तोर्‍यो, ते पिण खावा रें काज।
एक माडलें आहार जू जूओ करता, निरलजा मूल न लाजे रे॥ ५३॥
आहार पाणी माहोमा देवें लेवें, वले कहे म्हारे नही सभोग।
एहवा भूठबोला भागल भेषधारी, त्यारें लागो जोगनें रोग रे॥ ५४॥
आधाकर्मी ने मोल रो लीधों, नितकों एकण घर रों आहार।
ए तीनां दोषा रो फल ओलखायो, अल्प मात्त कह्यो विस्तार रे॥ ५५॥
आधाकर्मी नें मोलरो लीधो, नही वहरणों करडे कांम।
निरदोषण नें नितपिंड आहार, कारण पर्‍यां लेंणों कह्यो ताम रे॥ ५६॥
आधाकर्मी ने मोलरों लीधो, ओ तो निश्चें उघाडो असुध।
नित पिंड तो ढीला परता जांणी वरज्या, आ तीर्थंकरा नी वुध॥ ५७॥

भेषधारी तो दोष अनेक सेवें छें, ते पूरा कह्या न जाय।
वले साधपणा रो नांम धरावें, ते भोलां नें खबर न काय रे॥ ५८॥
अें तीनूं दोष तों जांण जांण नें सेवें, वले वद वद नें बोलें कूड।
त्यांरों घांण रो घांण बिगड गयों जावक, ते गया वेंहती रे पूर रे॥ ५६॥
अें तीन दोष ओलखावण काजे, जोड कीधी छें पाली मझार।
संवत आठारें पचावन वरसें, भादरवा विद दसम बुधवार रे॥ ६०॥

ढाल : ३०

दुहा

भेषधारी लांबी तपसा करें, प्रगट कर दे लोका माहि।
वले बतावें दिन पारणा तणों, जाणे दीधी डबडबी बजाय ॥ १ ॥
त्यामे कोइ लाबी तपसा करें, केइ जस महिमा काम।
केइ पेट भराई कारणे, आछो आहार खावा रा परिणाम ॥ २ ॥
ज्यूं ज्यूं सरावे तेहनें, ज्यूं ज्यूं फल फूले होय जाय।
ज्यूं ज्यूं कर्म बंधे छें चीकणा, तिणसू ससार बधतो जाय ॥ ३ ॥
पारणा रो दिन चावो करे, आछो आछो खावा रे काज।
सुध असुध पिण वेंहरता, मूल न आणे लाज ॥ ४ ॥
सुध साध लाबी तपसा करें, चावी न करे लोका माहि।
वले न बतावें उण दिन पारणो, दोष लागतो जाणीनें ताहि ॥ ५ ॥
लाबी तपसा चावी नही करे, त्याने कपटी कहे छे मूढ।
उलटा दोष बतावें छे तेहमे, कर कर कूडी रूढ ॥ ६ ॥
लाबी तपसा रो पारणो, चावो कीया दोष लागे ताय।
तिणरा भाव भेद परगट करू, ते सुणजों चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[रे भवियण जिन आज्ञा सुखकारी]

केइ भेषधारी लांबी तपसा करे जब, परगट करे लोका रें माहि।
वले पारणा रो दिन कहे लोका मे, जाणे डबडबी दीधी बजाय रे। भणियण।
आत्मकाय विगोवो, ओछा वेवज पेट रे कारण।
भोला लोकां ने कांय डबोवो रे, परभव साहमों जोवो ॥ १ ॥
त्यारा श्रावक पिण ववेक रा विकल, जिण धर्म री रीत न जाणे।
तपसी ने दान देवा रे कारण, अें पिण पारणो साथे आणे रे ॥ २ ॥
अे पिण पारणा रो दिन कहि २ ग्रहस्थ ने, त्यानें पिण तपस्या करावे।
आप तणा खावा नें काजे, त्यानें पारणो साथे अणावे रे ॥ ३ ॥
ग्रहस्थ ने इग्यारस सवछरी रो, उपवास करताने नही करायों।
दूजे दिन त्याने उपास कराए, पारणों आप साथ अणायो रे ॥ ४ ॥
अें पेटरे कारण ग्रीधी थका पापी, आरंभ करावणरो डर नांणें।
त्यानें श्रावक पिण तेसाइज मिलीया, ते विकलां नें विकल न जाणें रे ॥ ५ ॥

आपरा पारणा रो तो मिस करेनें, आरंभ करें छें विविध प्रकार।
तिणमें तपसी तणों भाव भेलें अग्यांनी, गुर सहित बूडा कालीधार रे॥ ६ ॥
पाछली रातरा उठ सवेरा, ताकीद सूं चूल धकावें।
उतावल नीपजावें असणादिक, जांणें रखे तपसी फिरजावे रे॥ ७ ॥
कोइ तो धनागरों कर राखें, कोइ करें सीरादिक तांम।
कोइ सूंठ कूटेणें करें अलोइ, तपसी नें वेंहरावण रें कांम रे॥ ८ ॥
कोइ दूध उनोकर अलगो मेलें, कोइ मोल लेई आवें तांम।
कोइ हाट थकी घरे आंण राखे, तपसी नें वेंहरावण कांम रे॥ ९ ॥
इत्यादि अनेक असुध दरवां नें, आगा पाछा मेले राखे तांम।
असुध नें सुध करता नहीं डरपें, वेंहरावण रा आंण परिणांम रे॥ १० ॥
त्यांरा गुर पिण त्यांनें तेंसाइ जांणें, असुध वेंहरता संक नहीं आंणें।
सुध असुध लेता नहीं संके, त्यां चित दीयों छें खांणें रे॥ ११ ॥
साधां नें दांन देवाने काजें, प्रावणा आघा पाछा जीमावें।
ते तो दोष बयालीस में दोष छठों छें, ज्यूं अें पारणों साथे अणावें रे॥ १२ ॥
आणंद आद दे श्रावक अनेक हूआ छें, त्यांनें सुतर माहे वखांण्या।
त्यां साधां नें दांन देवारें काजें, पारणा साधां साथे न आण्या रे॥ १३ ॥
तपसी तणा पारणा रे दिन, सामग्री ना घर मोटका जांण।
आछो आछो आहार देता जांणें तिण घर, पातरा मांडें आंण रे॥ १४ ॥
वास वास में घर लांबा पातला हुवें ते, त्यांनें तों देवें टाल।
वास वास माहे आहार आछो देवे छें, त्यां घर जाअें संभाल २ रे॥ १५ ॥
समदांणी गोचरी नें छोडेनें, यां गधा गोचरी मांडी।
एहवा भेषधारी पेटभरा छें पापी, त्यांरी चिहुंगति में होसी भांडी रे॥ १६ ॥
कदा मोटकें घर आहार आछों न देवें, तो पिण तिण घर वेंहरें नांही।
रसग्रीधी ताजों आहार गवेषें, ताणा वेजा त्यांरा घट मांहि रे॥ १७ ॥
तपसी रें तों आहार अलप चाहीजें, ते आवें थोडा घर मझारो।
तिण तपसी तणा पारणा रें दिन, सगला रह्या छें मूंह फाडो रे॥ १८ ॥
उण दिन तो तपसी रें ओलें सगला ल्यावें सरस आहार।
कांनी कांनी सूं घर संभाल संभाले, जांणें पूजणो मांड्यों तेंवार रे॥ १९ ॥
ते आहार तपसी नें तपसी रा संभोगी, मिलनें सगलाई खावें।
उण तपसी लारें सगला हूआ त्रिपता, तिणसुं तपसी तणा गुण गावें रे॥ २० ॥
तपसी लारे सगलाइ त्रिपता हुआ, जांणें आज हूआ म्हें निहाल।
मुहपती बांधेने भेष लजायों, मांड्यों नाटकीया वालों ख्याल रे॥ २१ ॥

नाटकीयो वरत उपर खेले, नाच अनेक विध आंणें ।
नीचें उभा ते करें धीग धीगा, ए पिण दान माहे सीर जाणें रे ॥ २२ ॥
नीचला धीग धीगा तो कीधा घणाइ, पिण दांन तों नाच सारू आवें ।
दांन आयों ते नाटकीयों नाच्यो तिणसूं, पिण मिल ने सगलाइ खावें रे ॥ २३ ॥
नाटकीयों वरत उपर नाच्यो ते, सगला कुटंब रो कांम चलावें ।
ज्यूं थारें पिण लावी तपसा करे ते, पारणे सारा ताजो खावें रे ॥ २४ ॥
लावी तपसा रे पारणे तपसी जाणेने, गमतो आहार आणेनें देणो ।
वले गोचरी मे गमतो आहार जाणेनें, वले मागी मांगीने लेणो रे ॥ २५ ॥
गरढा गिलांण रोगी तपसी रे कारण, गमतो आहार गवेषे ते लेखें ।
थारें ओले भेषधारी सगला, ताजो ताजो आहार गवेषें रे ॥ २६ ॥
इण रीतें ताक ताक आहार गवेषे, ते पिण खासी सराय सराय ।
एहवा भेषधारयां मे चारित नाही, चारित हुवें त्यारो कोयला थाय रे ॥ २७ ॥
इह लोक रा अर्थी तपसा करे त्यारा, चोखा नही परणाम ।
ते तपसा नें परगट करदें लोका मे, खावा पीवा जस कीरत काम रे ॥ २८ ॥
साधु नें लाबो तप करें जब, प्रछन्न छाने करणो ।
ग्रहस्थ ने कहणों जिण वरज्यो, तिणरो आवसग मे निरणों रे ॥ २९ ॥
जोग संग्रह ना बोल बतीस चाल्या छें, तिण मे सातमो बोल पिछाणो ।
अजाण्यो तप - साध ने करणो, अग्यात कुल गोचरी जांणो रे ॥ ३० ॥
वले समवाअग चोथा अग माहे, जोग सग्रह ना बोल बतीस ।
त्यां पिण अजांण्यों तप करणों, इम भाष गया जगदीस रे ॥ ३१ ॥
वले उत्तराधेन इगतीस मे अधेनें, प्रश्नव्याकरण दसमा अधेन माहि ।
तिहां पिण बतीस जोग सग्रह छे, नांम मात्र कह्या जिणराय रे ॥ ३२ ॥
वेसाली नगरी वीर पधारया, तिहा पचख दीया मास च्यार ।
त्यां पिण तपसा ने पारणा रो दिन, किणनें कह्यो न दीसें लिगार रे ॥ ३३ ॥
त्यानें दांन देवा री भावना भाइ, च्यारू महीना जीर्ण सेठ ।
छानी तपसा भगवंते कीधी, ओ सुध ववहार छें नेट ॥ ३४ ॥
अभिग्रह करे ते न कहे लोकां नें, जाणें रखे कोइ दोष लगावें ।
ज्यूं लांबी तपसा रो पारणों जाणे जब, केई भोला असुध वेंहरावें ॥ ३५ ॥
एक आदि देइ दातरी तपसा करें ते, ग्रहस्थ नें न कहे तांम ।
ग्रहस्थ नें कह्यां दोष लागेतो जांणों, लांबी तपसा पिण जांणों आम ॥ ३६ ॥
साध रें महीना रो पारणो जांण्यो, बाइ सीरो करने वेंहरायो ।
तिणरी जायगा मे पारणों करे साध, तिणरो सोना रो वारलों लायो रे ॥ ३७ ॥

कर्म जोगें साध नें वमण हुइ जब, साध रो चित्त आयों ठिकांणें।
जब आप तणो अवगुण पिण सुझ्यों, आहार नें पिण असुध जांणें रे ॥ ३८ ॥
गाढों निरणों करने सीरो न लीधों, उण पिण सीरों मोनें कर दीधों।
ते आहार कीयां म्हांरी भिष्ट हुइ मत, तिणरो बारलों चोर मे लीधो रे ॥ ३९ ॥
बाइ तो सीरों करे कर्म बांध्या, वले बारलो दीधो खोयो।
आ बाइ तो दोनूं प्रकारें बूडी, म्हें पिण चारित्त डबोयो रे ॥ ४० ॥
म्हारा पारणा रो दिन बाइ जांण्यों तो, तिणसूं ए कर्म हूवों भारी।
ए सवली विचार तिहां थी निकलीयो, आयो बाइ रा घर मझारी ॥ ४१ ॥
बाइ नें साच बोलाए साध, वारलों पाछो दीधों ताय।
पछें सगली बात सुणाए बाइ नें, ओलंभो दीयो तिणनें समझाय रे ॥ ४२ ॥
सीरो असुध खायों तिणसूं बारलो लेगों, जब तूं तो ओर रे माथे देती।
इण पाप थकी परभव दुखपाती, अठे पिण घणा घमेडा लेती ॥ ४३ ॥
आ कथा तो भेषधारी जांणें छें, ते कहि कहि घणी दिढावें।
पिण पोंतें तो तपसा लांबी करे जव, घणा लोकां नें तुरत जणावे रे ॥ ४४ ॥
लांबी तपसा नें पारणा रो दिन, घणा लोकां में देवें फेलाइ।
पेटभरा इह लोक रा अर्थी, जांणें डबडवी चोडें वजाइ रे ॥ ४५ ॥
बाइ तों पारणों विना जांणायां जांण्यो, तिणसूं हूवो विगाडों।
तो आपरें मुतलब तपसा जणावें, ते भव भव होसी खुवारो रे ॥ ४६ ॥
गाला गोलो करे साच असुध लेसी, असुध आहार बाइ ज्यूं देसी।
ते दातार नें लेवाल वेहुइ, आगें घणा धमेडा लेसी रे ॥ ४७ ॥
इह लोक रें अर्थे तपनहीं कारणों, परलोक रे अर्थे न करणों।
कीरत सलागादिक रे पिण अर्थे न करणों, दसवीकालक नव में अधेन निरणों ॥ ४८ ॥
तप करणों कह्यों एक निरजरा नें अर्थे, ते लोकां में क्यां नें पमासी।
जे तप करनें पमासी लोकां में, तिणरा फल आछा किम पासी ॥ ४९ ॥
केई इह लोक रें अर्थे करें त्यांसूं, छांनें केम रहवायों।
परगट लोकां में कीयां विण तिणरों, जांणें पेट आफर गयों ताह्यो रे ॥ ५० ॥
इह लोक रें अर्थें तप करेनें, ठाला बादल ज्यूं करे ओगाज।
मोटी तपसा सूं लेनें पारणा तांइ, जांणें ढीबकी रही छें बाज रे ॥ ५१ ॥
पांच सात तांइ मोटो तप नही दीसे, मोटो तो पख मासादिक जांणो।
एहवो मोटकों तप लोक जांणें तो, दोष लागण रो दीसें ठिकांणो रे ॥ ५२ ॥
मोटा तप रो पारणों कह्यां लोकां में, गुण तो कांइ न दीसें।
दोष लागतो उघाडों दीसें तिणसूं, छांनो तप कह्यो जगदीसें रे ॥ ५३ ॥

कोई भेषधारी भागल फिरें एकेलों, ते तपसी रो नाम धरावें।
बेले बेलें पारणों कहेकहे, लोकां मे ठागो चलावें रे ॥ ५४ ॥
तपसी तणों नाम ले ले कपटी, ठग ठग लोका रा माल खावें।
जांणें मोंनें तपसी लोक जाणे तो, आछो आछो आहार वेंहरावें रे ॥ ५५ ॥
तिणरी भोला लोकां नें तो ठीक नही छे, तपसी जांण आछो वेंहरावें।
इणरा तप तणो ठागों नही जांणें, तिणसूं लोक ठगावे रे ॥ ५६ ॥
ते डील तणों घष्ट पुष्ट थयों छे, वले लुटपुट डीला सनूरो।
वले चाल पिण तिणरी छेठी देखें, बुधवंत जांण लीयो फितूरो रे ॥ ५७ ॥
लूखो सूको सरीर तपसी तणो हुवें, बले सरीर हुवे तेज रहीत।
वले तपसी तणा लोही मांस ढीला हुवें, चलगत हुवे वेराग सहीत रे ॥ ५८ ॥
केइ चुतर विचक्षण डाहा हुवे ते, दोया नें रूडी रीत पिछाणें।
तपसी ने तों तपसी जांणेंले, कपटी नें कूडो जाणें रे ॥ ५९ ॥
एहवा भेषधारी भागल भिष्टी नें, एहवो भागल भिष्टी मिलें आंणों।
तों ओ ठग ठगने माल खामें लोकां रा, त्यारी भोला नें नही पिछाणो रे ॥ ६० ॥
भेषधास्था तणा किरतब ओलखावण, जोड कीधी नाथदुवारा मभार।
समत अठारें वरस छपनें, काती सुद आठम मंगलवार रे ॥ ६१ ॥



ढाल ३१

[प्रभव०]

मोची तणों थो दीकरों, ते गयों देसांतर तांम।
आगें काल कीयों राजा तिहां, मोची गयों तिण ठांम ॥ १ ॥
पुत्र नहीं तिण राय नें, जब किणनें बेंसांणें पाट।
अमराव सहु नें मित्रवी, मिलिया थाटो थाट ॥ २ ॥
माहो माहि मिसलत करी, हथणी सिणगारो आज।
कुंवरी वरमाला घालसी, तिणनें बेंसांणां राज ॥ ३ ॥
ए वात ठेंहराइ मिलीनें सहू, हिवें मेल्या रांणोंरांण।
तिण स्वयंवर मंडप मझे, मोची पिण उभों आंण ॥ ४ ॥
तिण मोची रा गला मझे, कुंवरी घाली वरमाल।
दीठों रूप रलीयांमणो, रायपुत्र जाण्यो सुखमाल ॥ ५ ॥
मंत्रीसरां मोची नें पूछीयों, तुमनों कुण कुल कुण जात।
जब इण कह्यो खत्री कुल जात छां, उंचो गोत कह्यो विख्यात ॥ ६ ॥
इम सांभल सहू हरखीया, परणाइ राजकुमारी।
राज बेंसांणें राजा कीयों, मोची नें तिणवारी ॥ ७ ॥
मात पिता छें मोची तणा, तिण देस में पडीयो काल।
मउ साथे आया तिण नगरीयें, तिहां मोची बेठों सरवर पाल ॥ ८ ॥
तिण मातपिता नें ओलखे, पगां पड्यों छें आय।
समझाए ल्यायों सहर में, त्यां पिण दीधी जात छिपाय ॥ ९ ॥
मोची मातपिता सहीत सूं सुखे राज करें तिणवार।
पिण जात सभाव मिटें नहीं, त्यांरों त्यांसूं पडीयों उघाड ॥ १० ॥
बहुना पगनी मोचडी, तिणरी कूट गइ छें तूट।
जब सुसरें तिण मोचडी तणी, चोखी लीधी कूंट ॥ ११ ॥
कूंटी ले तो देखीयों, सुसरा नें तिणवार।
सांसो पडीयों तेहनें, जांण्यों खाधी बात विकार ॥ १२ ॥
राजा दीसें रलीयांमणों, मन मांन्यों मिलीयों मेल।
कूंटी सांह्मों भाली जांणीयो, क्यूं दीसें जात में भेल ॥ १३ ॥
कूंटी अहलांणें जांणीयों, आ जात दीसें छें पोची।
ओ राज अंस दीसें नहीं, संकेत जात रो मोची ॥ १४ ॥

तिण रात धणी ने पूछीयो, एक अरज हमारी सुणसो।
हुवें जेसी फुरमावो मो कनें, आप जात रा कुणसो ॥ १५ ॥
तू तो म्हारी अस्त्री, हूं छूं थारो वर।
पांणी तो पीधां पर्छे, हिवें काई पूछें छे घर ॥ १६ ॥
जब वलती रायकुवरी कहे, हूं अस्त्री ने थे वर।
जो भेल हुवे तुम जात मे, तो जातों दीसे घर ॥ १७ ॥
जो पहली मोने जताय दो, तो कांइ वाधे लेउं वात।
परधान कांमदार प्रोहत भणी, तेडाउ रातोरात ॥ १८ ॥
इणनें वार वार पूछ्यो घणो, जब ओ पिण उडो आलोची।
थारें करणो वेंसों कर लीजो, हू छू जात रो पिण मोची ॥ १६ ॥
जब रातोंरात बोलवीयों, रायकुवरी परधान।
बिगडी बात सुवारलों तो, थे पूरा वुधवान ॥ २० ॥
वले राजा कहे परधान नें, तूं गलो हमारो काट।
हिवे ढील म कर इण काम री, किण री मत जोए वाट ॥ २१ ॥
जब परधान कहे किण कारणे, इसडी बात करो छो पोची।
जब राजा कहे हू राजा नही, हू छूं जात रो मोची ॥ २२ ॥
आ बात सुणे राजा तणी, परधान पिण पाम्यो हरख।
ओ पिण जात हीणो हूंतो, इणरेइ मिट गइ मन धरक ॥ २३ ॥
ओ दूहा देइ बोलीयो, पगभ्हाल रह्यो छे लूंब।
मारी चिंता मूल करो मती, हूं जात तणो छूं डूंब ॥ २४ ॥
जब राज कहे तूं भूठ बोलनें, रखे पाडें म्हारी आव।
जब महिलां मांहे डूंबडे, लेइ बाजाइ रबाब ॥ २५ ॥
हिवे तेडावो कामदार नें, उग सू गाढी बाधो वात।
जो आपे चावा हुवां, तो उ करसी दोया री घात ॥ २६ ॥
इणनें पिण तेडावीयो, ते पिण आयो रातोरात।
राजा परधांन कहे तेहनें, तूं म्हा दोया री कर घात ॥ २७ ॥
जब कांमदार कहे किण कारणे, इसी कहो थे वात।
जब राय परधान दोनू कहे, म्हांरी बिगड गइ वात साख्यात ॥ २८
हू मोची ओ डूंबडो, म्हे ठागा सू खाधो राज।
हिवें गलो काट तूं म्हारो, ज्यूं रहे दोया री लाज ॥ २६ ॥
इण वात सुणे दोनूं तणी, कामदार हरख्यो तिणवार।
मिट गइ चिंता तेहनी, हिवें डर नही रह्यो लिगार ॥ ३० ॥

थे चिंता मत राखो मांहरी, मोसूं मत जावो खोबी।
थे तो मोची नें डूंब छो, हूं पिण जात रो धोबी॥ ३१॥
जब राजा धोबी नें कहे, रखे बात करें तूं फीटी।
जब धोबी महिलां मझे, दीधी हरख सूं सीटी॥ ३२॥
हिवें तीनूं जणां मतों कीयों, हिवें ल्यावो प्रोहित बोल्या।
बात चावी हुवें आपणी, तो ओ तीनूं देवें मराय॥ ३३॥
हिवें प्रोहित नें बोलवीयो, तिणहीज रात मझार।
कहें प्रोहित नें तीनूं जणां, म्हां तीनां नें तूं मार॥ ३४॥
जब प्रोहित कहें किण कारणें, करूं तीनां री घात।
जब कहें तीनूंइ तेहनें, म्हांरी बिगडी बात साख्यात॥ ३५॥
हूं राजा तो मोची अछूं, ओ डूंब छें परधांन।
कांमदार धोबी हूवों, म्हें तीनूं नही सुघमांन॥ ३६॥
म्हां तीनां नें तूं मारसी, तो म्हांरी सोभा रहसी तांम।
उघाड न पडसी लोक में, सहू सुधरसी कांम॥ ३७॥
ए बात सुणीनें हरखीयो, थे डर मत राखो म्हारों।
थे मोची डूंब नें धोबी छों, ज्यूं हूं पिण जात रो पींजारो॥ ३८॥
जब राजा कहें झूठ मत बोलजे, जब काढी पीजण री घाइ।
घट धूं धूं करतो बोलीयों, जब संका न रही काइ॥ ३९॥
ते ठीक अमरांवां नें नहीं, यां राज कीयो छें खूब।
यां च्यारूं जणां ठागो कीयों, तिणरी बाहर न बूंब॥ ४०॥
वले माहोमा एकएकनो, न करें मूल उघाड।
जात सघलां री पाडवी, तिणरो डर नही रह्यो लिगार॥ ४१॥
इण दिष्टंतें जांणजों, भेषधारी छें अनेक।
ते साध बाजें लोक में, त्यां पेंहर बिगाड्यों भेष॥ ४२॥
त्यांरा टोला बाजें जू जूआ, जू जूइ सरधा अनेक।
त्यांरो आचार पिण छें जू जूओं, पिण कांम पड्यां कहें एक॥ ४३॥
पाणी सगलां माहे मरें, सगला सेवें अणाचार।
ते माहोमा सहू मिल गया, त्यांरों करें कुण उघाड॥ ४४॥
माहोमा सरधा एकएक नी, खोटी जांणें छें अंधकार।
पिण खोटा त्यांनें कहिता डरें, जांणें म्हारोइ करेंला उघाड॥ ४५॥
असाध कहें जों तेहनें, ते पिण मनें कहें असाध।
जब उघाड पडें दोयां तणों, तिणसूं न करे छें विषवाद॥ ४६॥

ते ठागो चलावे छे लोक मे, ठग ठग खाअे लोकां रा माल।
ते जासी नरक निगोद में, त्यामे परसी घणा हवाल ॥ ४७ ॥
माहोमा कहे म्हे सर्व साध छें, त्यांने मन माहे जांणे असाध।
एहवा भेपधारी छे तेहनें, किण विध होसी समाध ॥ ४८ ॥
ते माहोमा वंदणा छोडाय दे, वले मुख सू कहे त्यांनें साध।
एहवा भूठाबोला छे तेहनें, भव भवमे होसी व्याध ॥ ४९ ॥
ज्यूं यां च्यारूं जणा ठागों करी, राज कीयो मोटे मडांण।
ज्यूं अें भेषधारी ठागो करी, माल खाअें लोकां रा आंण ॥ ५० ॥
ज्यू अें माहोमा च्यारूं जणा, कहे माहोमा सुघमांन।
ज्यूं भेषधारी माहोमा कहे, म्हे सर्व साधू छां गुणखांन ॥ ५१ ॥
ज्यूं अे माहोमा च्यारूं जणा, जाणे म्हे छां घणा असुध।
ज्यूं भेषधारी माहो माहि मे, जांणें म्हे पिण नही छा सुध ॥ ५२ ॥
ए च्यारूं जणा चावा हुवे, तो एकण भव मे दुख थाय।
पिण भेषधारी दुखिया होसी घणा, त्यारो कह्यो कठा लग जाय ॥ ५३ ॥
भेषधारी भागल तूटल भणी, त्याने ओलखें जथा तथ बुधवांन।
त्यारो सग परन्वों छोडाय दें, घाले घटमे ग्यान ॥ ५४ ॥
रायकुमारी डाही हुंती, तिण कीधी त्यारी पिछांण।
कूटी लीधी देखने, मोची लीधो जाण ॥ ५५ ॥
तिण सरीखो कोइ चुतर होसी, ते करसी पूरी पिछाण।
आचार पाडूओ देखनें, भेषधारी लेसी जाण ॥ ५६ ॥
एक मोची ने परखीयां, तीनू परख्या तेह।
ज्यूं एक टोलाने परखसी, ते सगला परखसी जेह ॥ ५७ ॥

●

ढाल : ३२

दुहा

ओ दुषम आरो पांचमो, ते काल उतरतो जांण।
तिणमें भेषधारी भागल घणा, समकत विण मूंढ अयांण॥ १ ॥
त्यांसूं आचार तों पलें नहीं, तो पिण नाम धरावें साध।
कने सांग राखें साधां तणो, पांचूं व्रत दीया छे विराध॥ २ ॥
त्यांरा दोष उघाडे तेहसूं, करे छें कजीया राड।
धरणो पाडें बाजार में, लडवा नें हुय जावे तयार॥ ३ ॥
त्यांरा श्रावक पिण सेमल हुवें, गुरां ने भखाय भखाय।
धरणो परावण री त्यारी करें, मेले बाजार रे माहि॥ ४ ॥
त्यां लज्या छोडी लोकां तणी, वले लजायो साध रो भेख।
जो किणरे संका हुवे, तो अलवरू लो देख॥ ५ ॥

ढाल

[रे भवियण जिन आज्ञा]

त्यांरो सीलव्रत कोइ भागो सुणेने, तिणरो कोइ करें उघाड।
जब साध श्रावक मिल भेला होय नें, लडवा नें होय जाय त्यार रे। भवीयण।
त्यांनें साध सरधीजें केम, त्यांरा भागा व्रत नें नेम रे।
हूआ ठाला ठीकरा जेम* ॥ १ ॥
त्यांनें श्रावक पिण तेंसा इज मिलीया, त्यांरे न्याय तणी नहीं नीत।
साच भूठ तणा नीकाला विनाइ, यूंई झगडें वेरीत रे॥ २ ॥
चोथो व्रत भागो कहे छें जिण रो, तिणनें तो वेठो राखें ताहि।
ओर च्यार जणा मिल भेला होय नें, धरणो पाडो बाजार रे माहि रे॥ ३ ॥
अें सुध बुध विना नागडा निरलजा, थानें जांण्या इण धरणा लायक।
ते ववेक रा विकल हुंतां च्यारेइ, त्यांनें मेल्या टोला रे नायक रे॥ ४ ॥
ते च्यार जणा छे मूल रा करडा, ते आया बाजार रे माहि।
ते रीस भरया छे जाज्वलामांन, त्यां पासें उभा छें आय रे॥ ५ ॥
थें म्हारा साध रो व्रत भागो कहो छो, ते तो दो छों .अणहुंतो आल।
हिवें साच नें भूठ री खबर पडसी, तिणरो काढण आया छां नीकाल रे॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इण वात रो निकाल काढ्या विण थांनें, च्यारू आहार नही खांणो।
अनंता सिधां री आण छे थानें, वले तीर्थंकरां री आंणो रे॥ ७॥
वले राज री आण छै थाने, मत खाय जो च्यारूइ आहार।
म्हे पिण च्यारूंई आहार न खावा, ओ घरणो दियो मझ वाजार रे॥ ८॥
अनता सिधा री ने तीर्थंकरा री, म्हे आण दीधी छै मझ बाजार।
वले राजा री आण दराइ छे थाने, मत खायजो च्यारूइ आहार रे॥ ९॥
मझ बाजार मे एहवो घरणो पाख्यौ, घणा लोका ने कीया भेला।
एहवा भेषधारी साध रा भेष माहे, जाणे नाच्या कुव्दी खेला रे॥ १०॥
यांरा साव साधवी ववेक रा विकल, घरणो पारण सूं राच्या।
भेषधारी इण दुषम कालें, ओघड उघाडा नाच्या रे॥ ११॥
ज्यांनें अन पांणी खावा री आंण दराइ, ज्यारी वछी अकालें घात।
मिनषां ने मारण रो उपाय कीयो छै, त्यामे साधपणो नही असमात रे॥ १२॥
साव गोचरी जाअे छे तिण घर मे, आगें उभो भिख्यारी आणो।
तिण घर मे प्रवेस न करें साध, पडती अंतराय जांणो रे॥ १३॥
तो सांप्रत त्यांने आंण दराइ, च्यारूं आहार री दीधी अंतराय।
उघाडी घात वाछी छे त्यारी, ते पिण विकला ने खबर न काय रे॥ १४॥
भूख रा सैंठा जाण्या त्यानें मेल्या, पेंलां ने भूख रा काचा जांण।
ते थोडा में लातर भूठा पर जासी, के छोड देसी अकाले प्राण रे॥ १५॥
त्यां च्यारू जणा रां नाम दीया लोकां मे, अे तो च्यारूं नालां छे भारी।
नागण वाघण किककिला सभूबांण, अे वेस्यां री मारणहारी रें॥ १६॥
एक तो भेषधारी कहे इम बोल्यो, मुंजरी डोरी सीघ री आंण।
यांरा ने म्हांरा पग भेला बाघ देसा, आघा पाछा न देसां जांण रे॥ १७॥
एहवी वात करें लोक त्यांरे मूंढें, बले ठांम ठाम कहें परपूठे।
तो पिण निरलजा भेषधारी, घरणा सूं नही उठें रे॥ १८॥
एहवा भारी दोषां री ठीक नही छें, त्याने समकत पिण नही पावें।
ते पिण साग पेंहरे साध वाजे लोकां मे, ते भेष नें यूंही लजावें रे॥ १९॥
त्यांनें श्रावक पिण तेहवा इज मिलीया, ते अकार्य करतां कुण पालें।
जैसा कू तेसा आय मिलीया जब, पाधरा किण विध चाले रे॥ २०॥
घुरसूं ओ हीज अन्याय उघाडो, ते अंतर माहे न देखें।
जिणरो व्रत भागो कहे ते नही भगडे, वीजा घरणो पाड्यो किण लेखें रे॥ २१॥
साचो भूठो हुवें तो उणरी उ जाणें, वीजाने पुरी खवर न कांय।
ते निसक सूं इणनें साचो ठेहरावण, घरणो पाड्यो बाजार रे माय रे॥ २२॥

जिणरा सीलव्रत नें भागो कहें छें, तिणनें पोते आए करणो निरणो।
इणरें वदलें बीजा भेषधास्यां ने, किसें लेखें आए देणों धरणो रे ॥ २३ ॥
धणां दिनां लग बाजार माहि, वासी धरणो पाड्यो।
इहलोक नें परलोक दोनूइ, जीतब जनम विगाड्यो रे ॥ २४ ॥
इह लोक तो फिट फिट हुवा लोकां में, गांमां नगरां मे धणा भूंडा दीठा।
भेष भेषंतर जात न्यात रें मांहि, सगलां में पडीया फीटा रे ॥ २५ ॥
सुध साध जिणेसर ना छै त्यांनें, धरणो पारण री नहीं रीत।
भेषधारी भागल धरणा देसी, ते चिहूंगति मे होसी फजीत रे ॥ २६ ॥
एहवा भारी भारी दोष चोडे सेवे, ते पिण साध लोकां में वाजें।
अें तो नागडा निरलज दीसें उघाडा, त्यांरा श्रावक पिण त्यांसूं न लाजें रे ॥ २७ ॥
चोवीस तीर्थंकर ना सासण माहे, किणही धरणो पास्यो दीसें नांहि।
इण दुपमकाल माहे भेषधास्यां, धरणो दीधो बाजार रे मांहि रे ॥ २८ ॥
जो सुध साध रे किण आल दीयो हुवें, तो साध तो सुमता आंणें।
ओर किणहीनें दोष न देवें, आपरा संचीया कर्म जांणें रे ॥ २९ ॥
जो म्हे किणरेइ माथे आल दीयो छें, तो आल म्हांरेंइ आयो।
ते आल समें परिणांमां खमीयां, म्हारें कर्म निरजरा थायो रे ॥ ३० ॥
जो इतरी करणी नावें साव सूं, अण बोल्यों रहिणी नावें।
ते च्यारूइ आहार ना त्याग करें नें, सागारी संथारो ठावे रे ॥ ३१ ॥
इण कलंक उतरीयां विण मोने, च्यारूं आहार खावारा पचखांण।
जो कलंक न उतरे मारा माथा थी, च्यारूं आहार न खाउ जांण रे ॥ ३२ ॥
इण विध साध अणसण करनें, आल उतरे तो उतारे।
जो कर्म जोगे आल नहीं उतरे तो, किण सूं धरणो मूल न पाडें रे ॥ ३३ ॥
जब केई भेषधास्यां रा श्रावक इम बोल्या, इम कीयां अें सुधा न थावें।
आगें तो आल उतारण देवता आवता, हिवडां देवता नहीं आवें रें ॥ ३४ ॥
तिण सूं आल देवे तिण नें पाधरो करणो, चोडे पारणो छें धरणो।
च्यारूं आहार खावा री आंण दराए, इण विध पाधरो करणो रे ॥ ३५ ॥
भूखां मरसी वले तिरसां मरसी, जब उतार देसी उवे आल।
तिण सूं म्हांरा साध धरणो पाडे छें, वेगो काढण निकाल रे ॥ ३६ ॥
यांरा श्रावक पिण एहवा छें अग्यांनी, धरणो पाडयां में दोष न जांणें।
त्यां जिण मारग ओलखीयों नांहीं, समझ पडयां विण उंधी तांणें रे ॥ ३७ ॥
यांरा श्रावक केइ पाधरा बोलें, साव नें नहीं देणो धरणों।
केइ विकल कहें देणों छें धरणो, यांनें माहोमा पिण नहीं छें निरणो रे ॥ ३८ ॥

घरणो पारण गया ते ववेक रा विकल, त्यांनें मेल्या ते विकल विसेख।
ते हीया फुट गघा रा साथी, छोडी छें भेष री टेक रे ॥ ३९ ॥
ते पिण पिंडत वाजें लोकां मे, घरणा पाड्यां में दोष न जांणें।
एहवा अजाण ते मूंढ मिथ्याती, ते जिण धर्म नें केम पिछांणें रे ॥ ४० ॥
साघ रो नांम धराए अग्यांनी, घरणो पाडवा लागा।
भोला लोकां माहे पूजावें, ते व्रत विहूणा नागा रे ॥ ४१ ॥
घरणो पाड्या में धर्म जांणें ते, निश्चेंइ मूढ मिथ्याती।
तिणसूं आहार पांणी कोई भेलो करे छे, ते पिण तिण रो छें साथी रे ॥ ४२ ॥
अन पांणी खावा री आंण दरावें, ते जेंन तणा छें जिंदा।
एहवा बिगडायल साव रा भेग मे, ते होय रह्या मोह अंघा रे ॥ ४३ ॥
घरणो पाडे साघ रा भेष मांहे, ते निमाइ निश्चें बूडा।
एहवा भेषधास्यां नें गुर करसी, ते चिहुं गति माहे दीससी मूंडा रे ॥ ४४ ॥
त्यांरा घरणा पाड्यां माहे दोष बतावें, त्यारे माथे दें अछतो आलो।
थारें पिण साघवी घरणो दीघो, तिणरो पाछो न काढें निकालो रे ॥ ४५ ॥
दरबार थकी प्यादा मेले नें, यानें बाजार माथी उठाया।
वले सिन्यास्यां पिण नषेध्या त्यांनें, जब भूंठा पड हो गया काया रे ॥ ४६ ॥
घरणो पाडेनें निकालो न काढ्यो, पाछा फिटा पडनें आया।
आल तो माथे ज्यूं रो ज्यूं राख्यो, ते तो सोभा कठेंइ न पाया रे ॥ ४७ ॥
चोथा व्रत भांगां रो आल लीयां फिरें छे, अजे क्यूं नही काढे छें तार।
आल रा देवाल तो अठे नेंडा फिरें छें, हिवें छोडी क्यूं यांरी लार रे ॥ ४८ ॥
इण लेखें तो व्रत भागो छें इण रो, ते निश्चें तो ग्यांनी जांणें।
यांरा टोलावालां नें तो निश्चों न आयो, अें संका सहित क्यूं ताणें रे ॥ ४९ ॥
भेषधास्यां नें ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली सहर मझार।
संवत अठारें वरस गुणसठें, आसोज विद एकम रविवार रे ॥ ५० ॥

●

रत्न : ३४

अवनीत रास

ढाल : १

दुहा

मद विषे कषाय वस आत्मा, तिणसू विनो कीयो किम जाय।
तिणरी वर्णे खुरावी अति घणी, ते सुणजो चित ल्याय॥ १॥

ढाल

[विना रा भाव सुण सुण गु जे]

कोइ गण मे हुवे साधु अहंकारी, तिणरी थोडा मे हुय जाअे खुवारी।
उणरों गुण कही पोगा चढावे, तो उ थोडा मे फलफूल थावे॥ १॥
जो उणने गुर गुरभाइ सरावे, तो उ मगज मे पूरो न मावे।
जव रहे टोला मे राजी, ठाला वादल ज्यूं करे ओ गाजी॥ २॥
इसडो अभिमानी दोष लगावें, तिणसू आलोवणी नही आवे।
इह लोक रो अर्थी मूंढ वाल, सल सहीत कर जाअे काल॥ ३॥
इसडो अभिमानी हुवे अवनीत, कदे चाले रीत कुरीत।
तिणने गुर निषेंदे घणा मांय, तो उ गुर रो धेपी हुय जाय॥ ४॥
तिण भूठा ने कहे कोइ भूठो, तिण सू तो रहे नित रूठो।
खपे छे तिणने देवा आल, जाणे टोला मासू देउ टाल॥ ५॥
या तो घणा साधा रे माहि, म्हारी आव न राखी काइ।
म्हारी आसता चोडे उतारे, तो हू क्याने रहू यारे सारे॥ ६॥
यांने छोडेने होय जाउ न्यारो, यारे पिण करू वोहत विगारो।
यामे दोष परूपू भारी, जव खवर पडे याने म्हारी॥ ७॥
यारा चेला ने वली चेली, त्याने फाड करू म्हारा वेली।
इसडी चिंतवे मन मांय, मिले ओर साधा सू जाय॥ ८॥
जिण विध गुर सूं मन भागे, तेहवी वात करे तिण आगे।
जिण विध जागे गुर सूं धेष, तेहवी करे वात वशेष॥ ९॥
वले वोले आल पपाल, भूठा २ दे गुर रे आल।
वले दोष अनेक वतावे, जावक खोटा सरघावे॥ १०॥
गुर गुरभाई उपर धेष, त्यारा अवगुण वोल अनेक।
जूंना २ खुरट उखेलें, आपरे मन माने ज्यू ठेले॥ ११॥

वले आप रें स्वार्थ नावें, त्यांमें दोष अनेक बतावे।
केकांरी तों हूं परतीत नांणूं, त्यांनें थेटरा असाध जांणूं॥ १२॥
टोला मांहें तो घणी ढीलाई, कह्यां ठीक न लागें कांई।
तिणसूं म्हांरे तो हूवेंणो न्यारो, यांमें कुण विगाडें जमारों॥ १३॥
जो हूं इसडा जांणतो यांनें, तो हूं घर छोडतो क्यांनें।
हूं तो घर छोडनें पिछतांणो, में तो खोटो खाधा अजांणो॥ १४॥
कलह लगावण री करें वले वात, जाणें फाड लेउं म्हांरे साथ।
जब पेंलों हुवे कांन रों काचो, तो उ मांन ले इणरो साचों॥ १५॥
जब ओं राखे इणरी परतीत, ओ पिण बोलें इणहीज रीत।
ओं तों किणही मे दोष न जांणे, इणरा कह्यां सूं ओपिण तांणे॥ १६॥
जब ओ आपरो वेली जांण, पछे गुर सूं झगडें आंण।
यां बेंठाहीज, उंधो बोलें, आंगुणां रो पिटारो खोलें॥ १७॥
यां आगें बोल्यो तिणहीज रीत, गुर आगेइ बोले विपरीत।
वले बोले अन्हाखी अलाल, गुर नें देवें झूठा आल॥ १८॥
जिण इणनें घाल्यो थो झूठों, तिणसूं तो वेठो थो रूठों।
तिणमें दोष अनेक वतावें, मनमानें ज्यूं गोला चलावे॥ १९॥
हूं तों याने न जाणूं साध, घर में थकां रो जांणू असाध।
यांरा महाव्रत पांचूंइ भागा, सुमत गुपत मे दोषण लागा॥ २०॥
यांनें राखसो टोला माहि, तो बारे नीकल सूं ताहि।
थें तो यांरी करो पखपात, तिण सूं मांनूं नहीं थांरी वात॥ २१॥
वले घणी साधवीयां माहि, साधपणो न जाणूं ताहि।
वले दोप घणांमें वतावें, विपरीत पणें सुणावे॥ २२॥
हूं धरती छोड परो नही जाउं, यां खेत्रां में साथे लगो आउं।
था सांहमो उतर सूं आंणो, ओर गया ज्यूं मोनें म जांणो॥ २३॥
थांरा दोप घणाने सुणाउ, थांने चोडे असाध सरधाउं।
इम बोलें घणो विकराल, संके नही देतो आल॥ २४॥
जिणसूं वात बांधी थी भेली, तिण चेपी साथे लगी मेली।
कांयक दोप ओ पिण काढे, उणने वले पोगां चाढें॥ २५॥
इणरी आगेंई कीधी पखपात, झूठी साख भरी साख्यात।
जब इणनेंई निखेध्यो थो गाढों, तिणसूं ओपिण बोलें आडो आडों॥ २६॥
न्याय निरणा तणी नही वात, झूठी करवा लागो पखपात।
न्याय निरणारी हुवे नीत, तो इणने निपेवे इण रीत॥ २७॥

ओ तों तौमे हीज छे वांक, थें दोषण राख्या ढांक।
थें तो लोप दीधी मरजाद, तूं तो भूठो करे विषवाद ॥ २८ ॥
घणा दिना काढें दोष अनेक, तिणरी वात न मानणी एक।
आपांरे छें इसडी मरजाद, हिवें क्याने करे विखवाद ॥ २९ ॥
इणनें इण विध पाडें कूडो, घणा वेठा घाले मुख घूडो।
पिण चोरा कुत्ती मिली तेह, ते तो पोहरा किण विध देह ॥ ३० ॥
ज्यूं मिलीयों अवनीत सूं जेह, तिणने निषेधसी किम तेह।
जब गुर जांण्यो इणरें सीहे, ओं तों बोलतो मूल न बीहें ॥ ३१ ॥
ओं तों दीसें छें भारीकर्मो, निरलज घणों वेसरमों।
इणनें प्रतख सूभी भूंडी, जब गुर तो विचारी उंडी ॥ ३२ ॥
रखे छूट एकलो थावे, रखे सका घणां रे परजावें।
रखे गूंजे पाखंडी अयाण, रखे जिणमत री पडे हांण ॥ ३३ ॥
रखे घट जायेंला उपगार, वेंदो उठेंला लोक मभार।
जो इणनें करडा कहूं इणवारो, तो ए छूट होय जायला न्यारो ॥ ३४ ॥
ओ तो चढियो क्रोध अहंकारें, तो हिवें करणों कुण विचारो।
जो नरमाई कीयां ठाय आवें, कदा आलोय नें सुध थावें ॥ ३५ ॥
इम जांणी कीधी नरमाई, परतीत पूरी उपजाई।
किणरे सका न राखी कांय, सगला नें दीया समभाय ॥ ३६ ॥
जब ओं किण विध बोले उधो, हिवें ओ पिण बोलीयो सूधो।
अब तो जावजीव रहूं मांय, गण छोडण री काढूं वाय ॥ ३७ ॥
इण दोषण काढ्या था अनेक, तिणरी पाछी न पूछी एक।
किणनें थोडो घणो दड देणों, ते पिण नही काढीयो वेणो ॥ ३८ ॥
वले घणी साधवीयां माहि, साधपणों न जांणतो ताहि।
त्यानें काढणी नही ठेराई, त्यांरी वात न कीधी काई ॥ ३९ ॥
यानें छोड्या रहूं गण माहि, तका पिण काई वात न काय।
टोला मांहे कहेतों थों ढीलाई, तिणरी पाछी नही चलाई ॥ ४० ॥
सगली ढीली मेले दीधी वात, विनें सहीत वोलें जोडी हाथ।
हिवें आप घणो पिछतावें, गुर नें वारूंवार खमावें ॥ ४१ ॥
म्हे तो कीधों छे कांम खोटो, अपराध कीयो म्हे मोटों।
मोनें आछो न जांणसो आप, इम करवा लागों विलाप ॥ ४२ ॥
हिवें हूं मन मे न राखूं पाप, म्हांरी सुणों आलोवण आप।
म्हें तो आपरा अवगुण अनेक, सावां रे कने बोल्या वशेष ॥ ४३ ॥

ते हूं आपनें सर्व सुणाउं, जुदा जुदा कहे बताउं।
इण बात रो न काढूं आगों, इम कहि नें सुणावण लागों ॥ ४४ ॥
वले आलोया बोल अनेक, हिवें सल न राखूं एक।
वले याद आवसी मनें, ते पिण कहि देसूं थांनें ॥ ४५ ॥
म्हांरा मन मांहें आई अनेक, पूरी कहणी न आवें वशेष।
म्हांरी भाषा तणें अेंलांण, लेजों तिण अणुसारें जांण ॥ ४६ ॥
म्हें तों इसरो जाण्यो मन माय, म्हारी गिणती राखें नहीं काय।
म्हारी आसता देवें उतारी, तिणसूं एकलो हुवेंणरी धारी ॥ ४७ ॥
म्हें कीधो विचार वशेष, यांनें इम कह्यां जागसी धेष।
जब अें करडा कहिसी तिणवारो, तब हूं एकलो होय जासूं न्यारो ॥ ४८ ॥
तिण कारण हूं बोल्यों विपरीत, म्हांरें एकला हुवेंणरी नीत।
म्हें तों इसडी न जांणी थी काय, मों आगें करसी नरमाय ॥ ४९ ॥
म्हें कीधों घणो विषवाद, म्हांरों खमजों सगलो अपराध।
म्हांरी गई आगावाली रीत, हूं तो हूओ घणो अवनीत ॥ ५० ॥
वले मन मांहें बोहत सीदावें, मुखसूंई घणों पिछतावें।
म्हें तो खोई म्हांरी परतीत, मोंनें आप जांण्यों अवनीत ॥ ५१ ॥
म्हें तों कीधो घणों अन्याय, थांरा आंगुण बोल्या साधां माहि।
हूं तो वले इण भव मांहि, एहवों कांम न करसूं ताहि ॥ ५२ ॥
कदा दोष जांणूं आप मांय, तो हूं कहि देसूं आप नें आय।
बीजानें कहितों कदेय म जांणों, हिवें तो म्हांरी संका म आंणो ॥ ५३ ॥
ओरां आगें न कहणरी थाप, म्हांरी परतीत राखजों आप।
हूं तो चालसूं आगली रीत, अठासूंइ जांणों वनीत ॥ ५४ ॥
आपों हेलें निन्दें गुर पासें, निज अवगुण अनेक परकासें।
वले कर कर घणी नरमाई, परतीत पूरी उपजाई ॥ ५५ ॥
वले करें घणो पिछ्यताप, हिवें प्रायछित दों मोनें आप।
इम कीधी आलोवण ताय, जब गुर जांण्यो आयो ठाय ॥ ५६ ॥
ओं तो प्राछित मांगें म्हां आगें, म्हांरें तो दीधां ठीक न लागें।
ओ तो कषाय वस बोल्यों जांण, प्राछित देउं इण अेंलांण ॥ ५७ ॥
कदे विकटे वलें किण काल, वले भांगी दे बांधी पाल।
प्राछित दीधों ते बोल संभाल, एक ओ पिण दे काढें आल ॥ ५८ ॥
म्हें तो प्राछित यां कनें लीधों, मोसूं डरतां पूरो नहीं दीधों।
म्हांरा बोल्यां रो करत निवेरों, तो मोनें साधपणों देत फेरों ॥ ५९ ॥

कदे इसरोई दे काढे आल, तिणरो कुण काढे नीकाल।
इणरों आगा सूं नही वेसास, इसरो जांण टालो दीयो तास ॥ ६० ॥
हिवडां तो न दीसें खामी, प्राछित लेवारों छें कांमी।
वले कपट न दीसें ताय, तो इणरों देउ इणने भोलाय ॥ ६१ ॥
ओ तों करें आलोवण एम, ओछो प्राछित लेसी केम।
इसरो जाणें कह्यों तिणनें आंम, थने भासे जितों लेवों तांम ॥ ६२ ॥
आड दोढ आई मन माय, ते पिण सारी याद अणाय।
जिण परिणामां कह्यों ओरा पास, सगला दोष भेला करें तास ॥ ६३ ॥
तिणरो प्राछित लें थारे मेलें, वले याद आवे तिण वेलें।
थनें दीधी छें आग्या ताहि, कोइ सल मत राखजों माहि ॥ ६४ ॥
जव ओ करवा लागो विलाप, मोने प्राछित देवो आप।
प्राछित मांग्यो घणां दिन ताय, तो पिण दीधो उणने भोलाय ॥ ५५ ॥
पछे इणनें कह्यो तूं वताय, ते हूं प्राछित ले काढूं ताय।
जव ओ कहे मोने खवर न काय, आपनें भासें ते लेवो ताय ॥ ६६ ॥
इणने वतलायो घणी वार, दोष प्राछित न कहे लिगार।
इणने पूछ्या रो उत्तर एह, आपने भासें ते लेवो तेह ॥ ६७ ॥
पूछ्यां सीदावे संकोच पाम, जव इणरा जांण्या सुध परिणांम।
कदा फेर अगन ज्यूं ओ जागे, वले विगट वेदों करें आगें ॥ ६८ ॥
तो इणनें उत्तर देवा काम, तप थोडो घणों लेउं ताम।
दोष निरजरा हेत लीयों जाण, कलहादिक मेटण री मन आंण ॥ ६९ ॥
ते तो केवल ग्यानी रह्या देख, पिण केतब न राख्यो एक।
जे कोइ माहे राखसी सल, तो उणरी उणनें मुसकल ॥ ७० ॥
वले घणां साधां रे माय, त्याने दीयो वशेष जताय।
कोइ दोष जाणो जिण माय, प्राछित लेजों सुध वताय ॥ ७१ ॥
अठा पेंहली रा केतव अनेक, ते तो वाकी न राख्या एक।
अठा पेंहली रो अपराध सारो, ओ पिण खमायों वारूंवारो ॥ ७२ ॥
सरल हूवो दीसें सुवनीत, आगें हूंता तिणहीज रीत।
सहु हिल मिल नें एक हूआ, ओंपरा नही दीसें जूआ ॥ ७३ ॥
कोइ गण माहें दोष लगावे, ते निजर आपरी आवें।
तिणने देणो तुरत वताई, आगली रीत सेंठी ठेंराई ॥ ७४ ॥
कलहो मेट कीया जिण सुध, जिणरी निरमल लेस्या बुध।
पिण दुष्टी रे समता न आवें, वले किण विध कलहो उठावें ॥ ७५ ॥

जिण आल दे काढ्या था दोखों, तिणरें मनमांहि मोटो धोखों।
ओं तो आपरा किरतब देखें, तिणसूं पड गइ धरक वशेखें॥ ७६॥
म्हें तो कीधीं घणी अजोगाई, यांसूं छांनी न दीसें कांई।
मोनें जांण्यो घणो अवनीत, म्हांरी किम करसी परतीत॥ ७७॥
रखे सगला साधां रे मांय, म्हारी परतीत देवें घटाय।
अवनीत मोनें सरधाय, म्हांरी आसता देला उडाय॥ ७८॥
पछें सगलां नें ले बख मांय, म्हांरा आंगुण त्यांनें दरसाय।
रखे पछें मोसूं दाव वालें, एकला नें टोलां मांसूं टालें॥ ७९॥
तो हूं पिण यांरा गण मांय, साध साधवीयां नें फटाय।
त्यांनें फाड्यां सूं करूं न्यारा, त्यांनें कर राखूं वेली म्हांरा॥ ८०॥
किणसूं सेंठी बांधे राखूं वात, मोनें छोड्यां आवें म्हांरे साथ।
तिणरा परिणांम गुर सूं फारों, तिणनें सेंठो कर राखूं म्हारों॥ ८१॥
टोलो फारणरी धारी मन मांय, संकीयो नहीं करतों अन्याय।
ज्यां भेलो रहें दिनरात, त्यांसूंइज मांडी वेसासघात॥ ८२॥
मांहें थकों करें एहवा कांम, तिणरा दुष्ट घणा परिणांम।
ते तो परभव साह्मो न जोवे, नर नों भव निरथक खोवें॥ ८३॥
तिण अवनीत नें सूझे उंधो, तिणरी भिष्ट हुइ मति वूंधो।
संवलो सूझें नही तिलमात, तिणरें उदें थयो छें मिथ्यात॥ ८४॥
बाह्य विनो करें दिनरात, अभितर में खेल रह्यो घात।
घणो केलवें कपट नें कूरों, गुर रो धेषी होय गयों पूरों॥ ८५॥
वेंरी ज्यूं रह्यों डस झाल, मुख सूं करें लाल नें पाल।
विनो नरमाई करें वशेखो, छल छिद्र रह्यो नित देखो॥ ८६॥
चोर ज्यूं रहें दुष्ट परिणांम, साध साधवी फारवा कांम।
अवनीत उंधी उंधी धारे, आप विगड्यो ओरां नें विगारे॥ ८७॥
एकला री आसंग नही आवें, जब ओरां में वेली उठावें।
तिणनें लालच लोभ दिखावें, गुर सूं जावक भिडकावें॥ ८८॥
जिण विध गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें।
जिण विध जागें गुर सूं धेष, तेहवी करें वात वशेष॥ ८९॥
आपां उपर छें गुर रो धेख, दाव वालसी अवसर देख।
एकें कर साध साधवी सारा, आपां नें छोडसी न्यारा न्यारा॥ ९०॥
आपां सूं बोलें नरम वशेखें, ते तो आपरों मुतलब देखें।
यांनें सुधा कदे मत जांणों, यांरी परतीत मूल म आंणों॥ ९१॥

जों आपामासू करे एक काल, तो एकण ने दे गण सूं टाल।
माहे राखें तो फोरा पारें, वले परतीत पूरी उतारे ॥ ९२ ॥
तो आपा पिण टोला माहि, आपणा कर राखा ताहि।
त्यांसूं सेठो. कर कर करारो, ते गुर नें लखाव म पारो ॥ ९३ ॥
इम कहि कहि उणने भरमावे, सिष पदवी रो लोभ दिखावे।
तिणसू कर कर घणी नरमाय, वले विविध पणें ललचाय ॥ ९४ ॥
जों उणरे उदे हुवे मिथ्यात, तो उ मांन ले उणरी वात।
परमारथ पिण पूरो न बूझे, कर्मां वस सवली नही सूझे ॥ ९५ ॥
जब ओ गुर आग्या दे ठेली, अवनीत रो होय जाअे बेली।
तिणसू करें अग्यानी एको, बोल बंध सेठा लेवे वशेखो ॥ ९६ ॥
वले माहोमा सूंस खावे, जिलो बाध एके होय जावे।
अवनीत सू एके होई, लोभ रे वस आत्म विगोई ॥ ९७ ॥
सिख पदवी री तिणरे चाहि, पुजा सलाघा री मन माहि।
इत्यादिक लोभ मन माहे आण, अवनीत सू एको कीयो जाण ॥ ९८ ॥
अवनीत रे एको ने मिलाप, जब करें अविना री थाप।
आपा ने गुर सू डरतो न रहिणों, करडा कहे पाछो करडो कहिणो ॥ ९९ ॥
आपा डरता रहिसां किण लेखे, आपा री तो परतीत वशेखें।
आपा तो रहिसां गण माहे जोडे, इसडो कुण आपा सू तोडे ॥ १०० ॥
कदे परषदा लोक हुवे भेला, थानें करडा कहे तिण वेला।
जब थे पिण करडा पाछा कहिजो, लोका बेठा डरता मत रहिजो ॥ १०१ ॥
पाछो न कह्या लागें हलकाई, थारी गिणत रहे नही काई।
तिणसू थे पिण करडो कहिजो पाछो, नही कह्या न लागे आछो ॥ १०२ ॥
करडा पाछा कह्यां तोडें थासू, जब थे आय मिलजो म्हासूं।
थारो उपर राखजो बोलो, ज्यूं वधे आपा रो तोलो ॥ १०३ ॥
मोंने अलगो जाणो तिण वेला तोही आय होयजो मो भेला।
म्हांरी सका कदे मत आणो, मोनें थारो थकोईज जाणो ॥ १०४ ॥
इण विध हुआ अविना मे सेठा, उलटा लडवा ने बेठा।
कजीयो करवारी बाट जोवे, छेरवे तो ततपर होवें ॥ १०५ ॥
तिणने गुर कहे सहिज में सूधो, तो उ पड जाअे मूरख उधो।
तिणरा लखण घणा छे माठा, उलटो गुर ने कहे करडा काठा ॥ १०६ ॥
गुर नें करडो काठो कहिणो पाछो, ओ किरतब जाणीयो आछो।
तिणरी फिर गई सवली दिष्ट, हुआ जिण मारग थी भिष्ट ॥ १०७ ॥

तिणनें गुर करडा कहें किण वारें, जब उ अवनीत पास पुकारें।
जब अवनीत कहें उणनें एम, थें क्यूं पाछों कह्यों नहीं केम॥ १०८॥
इसरी करे अविनां री थाप, मांहोमां कीयो त्यांरे मिलाप।
वले जिलो बांधण रे काज, हिवें कुण २ करें अकाज॥ १०९॥
हिवें मिल २ नें करें चोरी, गण में करे फारा तोरी।
उणरी वात करें उण आगे, जिण विध मांहोमां कलह लागें॥ ११०॥
गुर सूं पिण मेलें मूरख दांडी, तिण भेष ले आतमां भांडी।
गुर सूं चेलो हुवें उदास, तेहवी वात कहें तिण पास॥ १११॥
किणने कहें थां उपर धेख, ते अरु-वरु ल्यो देख।
किणनें कहें थांरी कीधी उतरती, मो आगें पिण कीधी परती॥ ११२॥
किणनें वले कहें छें आंम, थांनें लोलपी कहें छें तांम।
किणनें कहें थांनें कहितां वेंणो, इणनें महीं कपडो नही देणो॥ ११३॥
किणनें कहें थे प्राछित लीधो, ते तो मों आगें कहि दीधो।
थांरी आसता एम उतारें, वले निन्दा करें पूठ लारें॥ ११४॥
किणनें कहें थांनें कहितां चोरो, किणनें कहे थांसूं हेत थोरो।
किणनें कहें थांनें कहितां अविनीत, किणने कहें थांरी करें अप्रतीत॥ ११५॥
किणनें कहें थांने नही भणावें, किणनें कहे थांनें नहीं वतलावें।
किणनें कहें थांनें रोगी जांणें, पिण ओषध कदेय न आंणें॥ ११६॥
किणनें कहें थांनें चोमासे काल, लांबो खेतर वतावें टाल।
आछे खेतर थांनें नही मेलें, सेपें काल पिण इमहीज ठेलें॥ ११७॥
किणनें कहें थांरो न करे वेसास, मांहें रहिवा री न करे आस।
जिण विध जागें गुर सूं धेप, तेहवी करें वात वशेप॥ ११८॥
जिण विध गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें उण आगें।
जिण विध गुर सूं हेत तूटें, तेहवी वात करें परपूठे॥ ११९॥
इण विध साध साधवी फाडें, गण में भेद इण विध पाडें।
गुर सूं परिणांम उतारे, सुध साधां नें मूढ विगारे। १२०॥
वले गुर में अवगुण दरसावें, भूठा २ दोप वतावे।
वले निन्दा करे छांनें-छांनें, जिणरे असुभ उदें ते मांने॥ १२१॥
जिणनें गुर सूं करें उपराठो, आपरो कर राखें काठो।
जिणनें निसंक आंपरों जाणें, तिणनें घणो घणो वखाणे॥ १२२॥
ओर साध नें मेल उण साथ, जब पिण करें वेसासघात।
उणनें फार करें आप कांनी, पछें निन्दा करे मन मानी॥ १२३॥

'इण विध करें फारातोडी, गुर सूं छांने छांने करे चोरी।
त्यासूं छांने छानें जिलो बावे, जिण धर्म न ओलख्यो आवे॥ १२४॥
माहोमा मिल जिलो बाधे, गुर आग्या विण आपरे छादे।
इसरो करे अकारज खोटो, तिणने दोष लागे छे मोटों॥ १२५॥
एहवा दोष री कर राखे थाप, पछे सेवे निरतर आप।
वले साधु नाम धरावे, तो उ पेहिले गुणठाणे आवे॥ १२६॥
जों उ: दोष 'ने दोष न जाणे, तो पिण पेहिले गुणठाणें।
ते तो मूढ मिथ्याती पूरो, पडीयो च्यार तीरथ थी दूरो॥ १२७॥
'तिणरे सरधा जमाली री आई, मूल की पूंजी सर्व गमाई।
समकत ने साधपणो खोयो, जिलो बाध नें जनम विगोयो॥ १२८॥
एहवा गेरी थका गण माय, तिणरी गुर नें खबर न काय।
मुख उपर तों करे गुणग्राम, छाने छाने करे एहवा काम॥ १२९॥
गुर रे मुख तो गुण गावे, छाने छाने अवगुण दरसावे।
मुख उपर तों बोले राजी, छाने छाने करे दगाबाजी॥ १३०॥
वले वादे गुर ने जोडी हाथो, पगा मे देवे नित नित माथो।
वांदताई करे गुणग्राम, सारा पेहली ले गुरा रो नाम॥ १३१॥
वले लोकां ने वंदणा सिखावे, त्यामे पिण गुर रो नाम घलावें।
लोका आगे करे गुणग्राम, पिण मन रा मेला परिणांम॥ १३२॥
जोम अहंकार मे नही मावे, त्यासू आलोवणो नही आवे।
प्राछित लेने सुध नही थावें, पूरी परतीत नही उपजावे॥ १३३॥
जब याने जाण्या दगादार पूरा, तब कर दीया गण सू दूरा।
जब अे हुआ जावक अपछंदा, विगडायल जेन रा जिंदा॥ १३४॥
त्या छोडी लाज ने मरजाद, सके नही करता विषवाद।
त्यारे भूठ तणो नही टालो, कूड कपट तणो बोहत चालो॥ १३५॥
त्यारा नेम वरत सर्व भागा, हुआ वरत विहूंणा नागा।
परीया च्यार तीरथ सू बारे, आप विगड्या ओरा नें विगाडें॥ १३६॥
गण मे करता था फारा तोरो, त्याने जाण्या घणा जणां चोरो।
सगला' साधां मे परतीत खोई, त्यारी साख भरे नही कोई॥ १३७॥
त्यारे सिष पदवी री थी आस, तिण थी पिण हुआ निरास।
त्यांरो वेसास आगा सूं भागों, आतम ने कलक मोटो लागो॥ १३८॥
गण मे कीधी थी वेसासघात, पिण कोइ न लागो हाथ।
ज्याने आपरा कीधा था फार, ते पिण न गया त्यारी लार॥ १३९॥

त्यां पिण यांनें खोटा जांण, गुर नीं आग्या कीधी परमांण।
अें तो गण मांहें भूंडा दीठा, सगला साधां में पर गया फीटा ॥ १४० ॥
साध तो कोइ हाथे न लागों, श्रावकां सूं करें हिवें ठागों।
त्यां आगें बोलें सूधा वशेख, मिनकी ज्यूं रह्या छल देख ॥ १४१ ॥
त्यां देखतां करें खप गाढी, न्हार भगत तणी चाल काढी।
बुगलध्यांनी ज्यूं वणीया ताहि, लोकां नें न्हाखवा फंद मांहि ॥ १४२ ॥
श्रावकां री लागी त्यांरे चाय, त्यांनें फारण रो करें उपाय।
मांन बडाई नें पेट काज, हिवें कुण कुण करें अकाज ॥ १४३ ॥
खोटी पेडी जमावण काजें, भूठ बोलता मूल न लाजें।
आपणा दोष सगला ढांके, ओरां सिर आल देता न सांके ॥ १४४ ॥
जांणें गुर मांहें दोष वताय, श्रावक श्रावकां लेउं फंटाय।
इसरी आसा बांधे मन मांय, रात दिवस करें वकवाय ॥ १४५ ॥
श्रावक श्रावकां पूछे ताय, वले पूछें अनेराई आय।
वले पूछें त्यांनें ओर लोक, जव अे गुर में वतावें दोख ॥ १४६ ॥
घणां लोकां में भूठ चलावे, अणहुंता दोष गुर में वतावें।
आपरें मन मांनें ज्यूं वोलें, आं गुणां रो पिटारो खोलें ॥ १४७ ॥
दोष वीसां तीसां रो ले नांम, पछें वोले अग्यांनी आंम।
यांमें दोषां रो कहूं उनमांन, ते सुणों सुरत दे कांन ॥ १४८ ॥
सों मण तणी खांड माहि, तिण मांसूं एक मूंठी दिखाइ।
ज्यूं छें दोष घणां यां मांहि, थांनें थोडासा दीया वताय ॥ १४९ ॥
घणी ढीलाइ छें टोला मांय, ते तो लोकां नें खवर न कांय।
यांरे खोट घणों छें मांहि, परूपे जिम पालें नांहि ॥ १५० ॥
अें आचार घणोंई दिढावें, पोते तों पूरो पालणी नावें।
अें तो कपट सूं कांम चलावें, यांमें साधपणों नहीं पावें ॥ १५१ ॥
म्हें यांमें आगेई दोष वताया, यांनें प्राछित दीधों छों ताय।
पिण अें वले न चालें सूचा, तिणसूं म्हें हो गया जूदा ॥ १५२ ॥
म्हांरे आचार री छें सगाई, यामें तो दीसें घणी ढीलाई।
जव म्हें असाध जांणीया यांनें, खोटा जांण छोडीया त्यांनें ॥ १५३ ॥
म्हें मिनष तणो भव हार, म्हें किम वूडां यांरे लार।
म्हें करसां आतमा रो किल्याण, चोखो चारित पालसां जांण ॥ १५४ ॥
जिणरा छे धेषी पूरा, तिणरें आल दे कूडा कूडा।
तिणमें दोष अनेक वतावें, जावक खोटो सरधावें ॥ १५५ ॥

गुर गुर भाई उपर घेष, त्यारा आंगुण बोलें वशेष।
जूंना जूंना खुरट उ खेलें, आपरें मन मांनें ज्यूं ठेलें॥ १५६ ॥
जिण घाल्यों थो इणने भूठों, तिण सूं तो बेठो थो रूठो।
तिणमें दोष अनेक बतावें, मन मानें ज्यू गोला चलावे॥ १५७ ॥
तिणसूं तों आवें लागा लागा, तिणने आल देवा नें आगा।
तिणरी परती परती काढें वात, हिला निन्दा करें दिन रात॥ १५८ ॥
वले करे घणों विषवाद, सगला साधां नें कहे असाध।
घणा लोकां मे वद वद वोलें, आंगुणा रो पिटारो खोलें॥ १५६ ॥
किणनें कहे यानें प्राछित आवे, तो प्राछित यासू लेणी न आवे।
तिण कारण म्हे नीकलीया बारें, कुण बूडसी यारे लारें॥ १६० ॥
किणनें कहे यांनें म्हे दड दीधों, जब तो प्राछित यां लीधो।
वले यां दोष सेव्या छे ताहि, प्राछित विन लीधा किम रहां मांहि॥ १६१ ॥
किणनें कहे यानें दोषण लागा, यारा पांचोई महावरत भागा।
सुमत गुपत हुआ चकचूर, इण कारण यांसूं हो गया दूर॥ १६२ ॥
किणनें कहे यांमे नही आचार, दोष सेवतां न डरें लिगार।
अणाचारी न लागे प्यारा, तिण कारण यासूं हो गया न्यारा॥ १६३ ॥
किणनें कहे अे तो बोलें फिरता, भूठ सूं नही दीसे डरता।
कूड कपट घणो यां माहि, यारा बोल्या री परतीत नांहि॥ १६४ ॥
किणनें कहे अें तो सुध न चालें, दोष सेवें तो कुण यांनें पालें।
जे कोइ दोष काढें या माहि, तिणसूं डस झाल राखें ताहि॥ १६५ ॥
हूंतो कहितो यांने दोष देख, जब अें म्हांसूं पिण करता धेख।
म्हांरी वात नें देता उडाय, मोनें तो राखता दबकाय॥ १६६ ॥
म्हारे हुंती घणी मन मांय, एकलां री आसग नही कांय।
हिवें तो म्हे हुआ छां दोय, दोष सेवण न द्यां कोय॥ १६७ ॥
इसरा घड घड नें भूठ चलावे, आपरो सूरपणों मनावे।
आपरा दोपां सांमो न देखें, भूठ मे भूठ बोले वशेखे॥ १६८ ॥
किणनें कहे यांमे दोषण पावे, विविध प्रकारे प्राछित आवे।
म्हामें दोषण मूल न पावे, मिच्छामि दुकडं पिण नहीं आवे॥ १६६ ॥
किणनें कहे यां कह्यों म्हारें पास, एक लिखत कर द्यों मोने तास।
जो थें नीकलों टोला बार, जब थानें करणा नहीं च्यारूं आहार॥ १७० ॥
पाछें भागल तूटल रहे ज्यांनें, सगला पानां सूंप देणा त्याने।
इसरों लिखत कर द्यों कहे म्हांनें, इण कारण यांसूं हो गया कानें॥ १७१ ॥

अें तो ढीला पारण रे कांम, एहवा बंध बांधे तांम।
इसरा बंध में परां नहीं ताहि, म्हांरें कुण रहसी ढीलां मांहि ॥ १७२ ॥
किणनें कहें यांमें पेहलो गुणठाणों, निश्चेंइ मिथ्याती जांणो।
यांनें साध साचेला जांणें, ते पिण पेहलें गुणठाणें ॥ १७४ ॥
किणनें कहें यांमें समकत नांहि, साधपणो जांणें आप मांहि।
जो अें आपनें असाध जाणें, जब तों चोथें गुणठाणें ॥ १७३ ॥
यांनें किणही पूछ्यों किण वेलां, किण भांत हुवो यांसूं भेला।
जब कह्यो म्हांरें भेला होवो, इण भव में वाट म जोवो ॥ १७५ ॥
जो अें प्राछित ले सुध थाय, तो म्हें यांसूं भेला रहां जाय।
थांनें प्राछित लेता जांण्या नांहि, दीधां विण नहीं जावां मांहि ॥ १७६ ॥
यांनें किणहीक पूछीयों आय, मो आगें कहीजों सतवाय।
थांनें असाध जांणों के साध, जब कह्यों म्हे जाणां असाध ॥ १७७ ॥
जब यांनें फेर पूछ्यों मीठी वाणो, किण दिन पछें असाध जाणों।
जब अें बोलीया वचन विराध, म्हांनें छोडीयां पछें असाध ॥ १७८ ॥
थांनें तों यां कर दीया जूआ, पछें असाध क्यांथी अें हूआ।
जब तों पाछों जाव न आयों, मून साभ रह्या मुरझायों ॥ १७९ ॥
यांनें पूछ्यों किणही किण वेर, हिवें दिख्या लेंता दीसो फेर।
जब कहें फेर दिख्या ल्यां म्हें क्यांनें, खोटा जांण छोड दीया त्यांनें ॥ १८० ॥
म्हांमें ओर दोषण नहीं पावें, म्हांनें फेर दिख्या क्यांनें आवें।
म्हें भेला रह्या भागलां मांय, तिणरो प्राछित ले सुध थाय ॥ १८१ ॥
इण रीतें करें वकवाय, ते तो पूरी केम कहवाय।
जिण तिण आगें इण विध बोलें, ओंगुणां रो पिटारो खोलें ॥ १८२ ॥
यांरे ओहिज मुदें ध्यांन, यांरे ओहिज मुदें ग्यांन।
जांणें गुर नें खोटा सरधाय, श्रावक श्राविका लेउं फंटाय ॥ १८३ ॥
जाणें म्हें यांरी वंदणा छुड़ाय, सगलां नें पारां म्हांरे पाय।
जो जाणें यांनें लोक खोटा, तो म्हांनें जांणें अें पुरुष मोटा ॥ १८४ ॥
जिण विध गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें।
जिण विध गुर सूं हुवें उदास, तेहवी वात करें तिण पास ॥ १८५ ॥
जिण विध गुर सूं हेत तूटें, तेहवी वात करें परपूठें।
जिण विध जागें गुर नें धेष, तेहवी करें वात वशेष ॥ १८६ ॥
जिण विध गुर नें न जाणें आछा, जिण विध जाणें आप नें साचा।
एहवी भूठी वातां वणावें, ते भूठ लोकां में फेलावें ॥ १८७ ॥

जिण विध गुर ने असाध जाणे, एहवी वात घणी मुख आणे ।
सके नही देता आल, वले कर रह्या भूठी भलाल ॥ १८८ ॥
लोका सूं करें घणी नरमाय, मीठा बोले त्यासू मिल जाय ।
त्यारी करे खुसामदी जाण, जाणे फद माहे न्हाखू नाण ॥ १८९ ॥
यारी धुरताई ने कपटाई, तिणमे पाछ न दीसे काई ।
त्यारे घात घणी घट माय, त्यारी काचा ने खबर न काय ॥ १९० ॥
श्रावक श्रावका री त्यारे चाहि, तिणसू सवलो न सूभें ताहि ।
घणो भूठ वोले जाण, त्यारी बुधवंत करजो पिछाण ॥ १९१ ॥
याती कीधो अकारज खोटो, याने दोषण लागो मोटो ।
गुर सूं छाने २ वांध्यो जिलो, याने कर्मा दीधो टिलो ॥ १९२ ॥
गण में कीधी फारा तोरी, करवा लागा छाने २ चोरी ।
गुर सूं माडी वेसासघात, त्यारी परगट होय गई वात ॥ १९३ ॥
वले सेवीया दोष अनेक, ते पिण चावा हुआ वशेख ।
तिणरो प्राछित न हुआ आरे, जब काढ दीया गण बारे ॥ १९४ ॥
खोटा जांण ने छोडीया याने, ते वात न राखी छाने ।
यांनें चोडें छोड्या साख्यात, तिणमे कूड नही तिलमात ॥ १९५ ॥
अें तो कहें छें घणा लोकां मांहि, म्हें छोड्या छें यांने ताहि ।
इण विध वोले छें परपूठ, ते तों निश्चेइ बोले छे भूठ ॥ १९६ ॥
किणने कहे या छोडीया म्हाने, किणनें कहे म्हे छोडीया याने ।
इम भूठ वोले जाण जाण, सके नही मूढ अयाण ॥ १९७ ॥
जिण किरतब सूं कीया बारे, तिण वात रो नाम न काडे ।
हिवे ओर री ओर ले उठें, अें तो लाग रह्या मत भूठे ॥ १९८ ॥
आप माहें छे दोष अनेक, ते तों बारे न काढे एक ।
उलटों ओरा मे दोष वतावें, भूठ मे भूठ जाण चलावें ॥ १९९ ॥
ओगुण सुण २ ने समदिष्टि, याने जाणे धर्म सूं भिष्टि ।
यांरा वोल्यां री परतीत नाणें, भूठ मे भूठ बोलता जाणे, ॥ २०० ॥
श्रावक आरें करता दीसे नाहि, जब अें प्राछित ओढे आया माहि ।
आ आलोवण करणी थापी ताय, प्राछित पूरो लेणो ठेंहराय ॥ २०१ ॥
पांचूं पद विचें दे आया मांय, परतीत पूरी उपजाय ।
तिणरा साखी ग्रहस्थ ठेहराय, तठा पछें लीया मांय ॥ २०२ ॥
टोला रा साध साधवी माहि, किणरें प्राछित ठेंहरायों नाहि ।
किणही प्राछित मूल न लीधो, मिच्छामि दुकडं पिण नही दीधो ॥ २०३ ॥

किणही में न काढयो बंक, सगलां नें कर दीधां निसंक।
प्राछित विण दीधां आया मांहि, सगलां नें सुध जांणी ताहि ॥ २०४ ॥
यांरी तरफ सूं चोखा जांण, गुर रे पगां पडीया आंण।
जो अें दोष जाणें किण मांहि, तो अें आगों काढें जिसा नांहि ॥ २०५ ॥
ज्यांने असाध कह्या था मुख सू, त्यांरा वांदीया पग मसतक सूं।
त्यांनें प्राछित मूल न दीधो, उलटों आप प्राछित ओढ लीधो ॥ २०६ ॥
ज्यांरा पांचूंव्रत कह्या भागा, त्यांरे हीज पगां आय लागा।
ज्यांनें कह्या था लोकां में खोटा, त्यांनेंहीज लेखव लीया मोटा ॥ २०७ ॥
ज्यांमें काढ्या था अनेक दोप, ते तो कर दीया सगला फोक।
उलटों आपरें डंड ठेंहराय, इण विध आया गण मांय ॥ २०८ ॥
ज्यांनें ढीला कहिता तांण तांण, वले भागल कहिता जांण जांण।
ज्यांरी वंदणा देता छुडाय, त्यांरा हीज पोतें वांदीया पाय ॥ २०९ ॥
ज्यांनें कहिता पेहलें गुणठाणें, त्यांराहीज पग वांदीया आणें।
अणाचारी कहिता दिनरात, तिका पाछी न पूछी वात ॥ २१० ॥
ज्यांनें प्राछित केंता था आप, ते तो जावक दीयों उथाप।
उलटो आप डंड कराय, गण मांहे पेंठा छें आय ॥ २११ ॥
कहितो थों मोमें दोप न पावें, मिच्छामि दुकडं पिण नहीं आवें।
तिणनें प्राछित देणों ठेहराय, तठा पछे लीयों गण मांय ॥ २१२ ॥
कहितो आलोवण करूं नांहि, आप छांदे रहिसूं गण मांहि।
तिण आलोवण करणी थाप, ते प्राछित पिण ओढीयो आप ॥ २१३ ॥
ज्यांमें कहिता कपट नें भूठ, हिला निन्दा करता परपूठ।
त्यांनें उत्तम पुरुष ठेंहराय, प्राछित ओढ आया त्यां मांय ॥ २१४ ॥
ज्यांनें खोटा सरधावण ताय, कीधा था अनेक उपाय।
त्यांनें तिरण तारण ठेंहराय, प्राछित ओढे आया त्यां मांय ॥ २१५ ॥
यांरी करता था केई तांण, त्यांरो गल गयो जावक मांण।
यांरी करता केई पखपात, त्यांरी पिण विगड गइ वात ॥ २१६ ।
यांनें जाणता था केई साचा, ते तों प्राछित ले हुवा काचा।
वले तांणे यांरी दूजीवार, तों अें पूरा मूंढ गिंवार ॥ २१७ ॥
आगें तो यांरी राखें परतीत, निज गुर सूं हुवा विपरीत।
सुध साधां नें कह्या वले भूंडा, ते तो दोनूं प्रकारे वूडा ॥ २१८ ॥
जो यांरे बंधीया निकाचित कर्म, तों यांसूं छूट जासी जिण धर्म।
जासी मांनव रो भव हार, पडसी नरक निगोद मभार ॥ २१९ ॥

जो यारे न बध्यो निकाचित कर्म, कदा परजाअे पाछा नर्म।
कदा आलोए ने सल काढे, निज काम सिराडे चाढे॥ २२० ॥
न्यारा थका हुता गेरी, गण रा हुआ था पूरा वेरी।
सर्व साधां ने असाध सरधाया, त्यामेहीज डड ओढ ने आया॥ २२१ ॥
यां तो च्यार तीरथ रे माय, कीधो थो घणो अन्याय।
पिण प्राछित ले आया माहि, टोला री परतीत अणाई॥ २२२ ॥
घणा श्रावक हुआ निसक, यामेहीज जाणीयो वक।
या तो दोष बताया यां माय, आ तो भूठी कीधी बकवाय॥ २२३ ॥
वारे थका तो कहिता असाध, माहे आय सरध लीया साध।
इण विघ वोल्या था विपरीत, त्यारी तुरत नावे परतीत॥ २२४ ॥
टोला रा साध साववी माहि, साधपणो न कहिता ताहि।
इण वात सू घणा भूडा दीठा, परीया च्यार तीरथ मे फीटा॥ २२५ ॥
अे तो प्राछित ओढे मांहे आया, सगला साधा ने सुध ठेंहराया।
पिण यारो छूटो नही अभिमान, वले किण विध विगडे छे तांन॥ २२६ ॥
जिण दोष थी काढीया बार, ते पिण दोष सगला चितार।
ते आलोवणा गुर हजूरो, तिणरे प्राछित लेणों पूरो॥ २२७ ॥
सगला साधा ने असाध सरधाया, त्यांमे दोष अनेक वताया।
ते तो दोष साधा में न पावे, तिणरो प्राछित पिण याने आवें॥ २२८ ॥
ते पिण आलोवणो गुर पास, प्राछित लेणो आण हुलास।
ते आलोवण करणी न आवे, प्राछित पिण लीधो न जावे॥ २२९ ॥
उणनें कह्यो घणीवार ताम, पिण आलोवण रा नही परिणाम।
ओ तो भारीकर्मों नही सरलो, तिणने आलोवणो काम करलो॥ २३० ॥
जिण ऊपर प्राछित ठेंहरायो, तिणने पिण घणो जतायो।
इणने प्राछित दीजो भारी, इणरी सक म करजो लिगारी॥ २३१ ॥
इणने प्राछित पूरो दीजो, थाने दोष लागे ज्यू म कीजो।
जब इण पिण नही मानी वात, इणरी छूटी नही पखपात॥ २३२ ॥
इणरेई दगों मन माहि, ते कहे हुंतो प्रायछित देउ नाहि।
जे दोष भ्याससी ते उण माहि, उणरो उहिज ले काढसी ताहि॥ २३३ ॥
उणरो प्राछित उणने भलावे, गुर आगे लेणो नही वतावे।
जब जाण्यो इणने अवनीत, इणने उंधो सूझ्यों विपरीत॥ २३४ ॥
आप तो उणने प्राछित न देवें, उणरें मेले उ प्राछित लेवे।
गुर आगे लेण री नही वात, ओ उघाडोई मिथ्यात॥ २३५ ॥

गुर आगे प्राछित लेवे नाहि, आप छादे लेवें मन माहि।
जब तो चोरेंई जांणों अवनीत, त्यामे साध तणी नहीं रीत ॥ २३६ ॥
साधां तो यांनें दीयो जताय, अे दगा सू आया दीसे मांय।
यांरी किम आवे परतीत, यारी देखलो पाछली रीत ॥ २३७ ॥
जब तो पाछो बोलीयो आंम, म्हे दगो करसां किण काम।
म्हारें सिप करवारी न काई, सूंस करने परतीत उपजाई ॥ २३८ ॥
म्हारे सिप सिपणी करणों नाहि, म्हारे सूंस छे इण भव माहि।
संभोगी करवारो छें आगार, ओ फिरतो बोल्यो तिणवार ॥ २३९ ॥
जब उणनें पाछो दीयो खराय, आ थे फिरती बोल्या क्यूं वाय।
थांरे टोला रे वाहिर जाय, संभोगी पिण न करणों छे ताय ॥ २४० ॥
जब ओ बोल्यो कर नरमाय, संभोगी पिण न करसां ताय।
ज्यूं रो ज्यूं पाछो आरे कराय, काची वात न राखी काय ॥ २४१ ॥
केई साध बोल्या इण रीत, यारा सूंसां री नही परतीत।
याने सूंस करावे अनेक, पालता नही जाण्यां एक ॥ २४२ ॥
याने आगेंई सूस कराया, अनंता सिद्ध साखी ठेहराया।
ते सूंस पानां में लिखाया, नीचें यांरा आखर कराया ॥ २४३ ॥
इण रीते सूस कराया, ते पिण सूंस सगला उडाया।
चोरे भाग कीया चकचूर, इणमे मूल न दीसे कूर ॥ २४४ ॥
तो लारला सूंस इमहीज जाणो, यांरी परतीत मूल म आणो।
वले एक साध वोल्यो एम, थांरी परतीत आवसी केम ॥ २४५ ॥
म्हारा पांचूं वरत कह्या भागा, थें तो लोकां मे कहिवा लागा।
सुमत गुपत भागी केता म्हांरी, मोने साध न गिणता लिगारी ॥ २४६ ॥
मोने असाध कह्यो लोकां माय, मो में दोष अनेक वताय।
ते प्राछित म्हे तो मूल न लीधो, मिच्छामि दुकडं पिण ही दीधो ॥ २४७ ॥
थें प्राछित पिण मोनें न ठेहरायो, तोही आंय वाद्या म्हारा पायो।
मोने परूप्यो लोकां में असाध, हिवे हु किण विध हुओ साध ॥ २४८ ॥
आ देख लीधी थारी रीत, इम नावे थांरी परतीत।
जब कहे म्हें लोका रे मांहि, थांने असाध परूप्या नाहिं ॥ २४९ ॥
पाछो जाव नायो तिण ठांम, भूठ बोले चलायो काम।
इणरी किणनें न आई परतीत, भूठाबोलो जाण्यों विपरीत ॥ २५० ॥
यांनें पाछा लीया गण मांहि, जब यांसूं पेंहली वात ठहराइ।
सिप सिपणी न करणा सोय, जुदो टोलो न वाधणो कोय ॥ २५१ ॥

कदा गुर ने पिण दोषण लागे, तो कहणों नही ओरा आगे।
गुर नेंइज कहिणो सताब, घणा दिन नही राखणो दाब ॥ २५२ ॥
वले फाडा तोडा री वात, किणसूं करणी नही तिलमात।
जिलो बांधणो नही माहोमाहि, फेर साथे ले जावणो नाहि ॥ २५३ ॥
पाचू पद विचे दीया ताय, आलोवण प्राछित पूरो ठेहराय।
आग्या मे चालणो रूडी रीत, पूरी उपजावणी परतीत ॥ २५४ ॥
आगा विचेइ रहिणो वनीत, बाकी सर्व आगली रीत।
इत्यादिक पेहली सेठी ठेहराय, पछे गण मे लेणा थाप्या ताय ॥ २५५ ॥
एक वले परतीत उपजावो, बले कर्म जोगे न्यारा थावो।
तो न बोलणा अवगुणवाद, इसडो करणो नही विषवाद ॥ २५६ ॥
जिण बोल सूं वले तूट जाय, तेहिज बोल कहिणो लोका माय।
ओर बोल न कहिणो एक, आ परतीत उपजावो वशेख ॥ २५७ ॥
जब ओ पिण बोल्यो चोखी वाणी, हिवे इण भव मे सका मत आणो।
तो पिण ओ बोल गाढो खराय, इत्यादिक घणा बोल जताय ॥ २५८ ॥
पछे दोय सूस कराय, तठा पछे लीया गण माय।
आलोवणा प्राछित पूरो ठेहराय, अनन्ता सिघ विचे दे आया माय ॥ २५९ ॥
ते आलोए प्राछित लेणी नावे, तिणसू भूठी भूखलाया खावे।
जाणे आगे ठेहराइ ते भेलो, प्राछित लेवू म्हारें मेलो ॥ २६० ॥
ओ पिण खाचाताण माडी, जाणे टल जाये ज्यू म्हारी भाडी।
जब साधां घणो दबकायो, घणो दोरोसो आरे करायो ॥ २६१ ॥
गृहस्थ बेठा ठेहराइ वात, ते प्रसिध करणी विख्यात।
जिण में हुतो जिण रो जाणे वक, ज्यू भागे लोका री सक ॥ २६२ ॥
आगे कीधो थो तिम ठेहरायो, प्राछित लेणो आरे करायो।
जब उणने कह्यो इण जाय, जब ऊ ओर ले उठीयो ताय ॥ २६३ ॥
जो हूं प्राछित था आगे लेसूं, ते ओर आगे कहण नही देसू।
साधां री रीत तिम कीधो कहिणो, प्राछित रो नाम किणरो नही लेणों ॥ २६४ ॥
ओर कहिवा रो कीधो छे टालो, सगला सूस कीया ते सभालो।
ओ तो भूठो ले उठीयो भोर, साधा तो सूस कीधो ते ओर ॥ २६५ ॥
जो सूंस कीयो जाणे एह, तो दूजो क्यू आरे हुओ तेह।
लोकां कने प्राछित कहिणो थाप, उण कने जाय दीयो उथाप ॥ २६६ ॥
ओ तो उणरेइज वल भूंभे, पोते काई सवली नही सूभे।
जाणे ओ करसी म्हारें रूडो, इणरे पाछे लागो पूरो ॥ २६७ ॥

ओं तो गुर नें उलटो डरावे, उली पेंली अनेक वतावें।
सूंस कर नें वदल गयों ताय, बोलीए पिण वन्धन थाय ॥ २६८ ॥
हू तो ज्यां लग रहिसूं गण मांहि, किणरो अवगुण बोलसूं नाहिं।
म्हें तो सूंस जठेतांई कीधो, जाव जीव रो सूंस न लीधो ॥ २६९ ॥
इणनें जाबक वदल गयो जांण, जब फेर पूछयों मीठी वांण।
यांरी परख करवा कह्यों आंम, सगला सूंस करो एक तांम ॥ २७० ॥
कदा आहार पांणी तूट जाय, तो किणरा अवगुण न बोलणा ताय।
जिण बोल सूं तूट जाअे आहार, तेहिज बोल कहिणों विचार ॥ २७१ ॥
ओर अवगुण न बोलणा जांण, ओं तो सगला करो पचखांण।
जब यां पाछों उत्तर दीयो एम, ओं तो न करां म्हें नेम ॥ २७२ ॥
ओं सूंस म्हांरे ठीक न लागें, कदा तूट जाअे वले आगें।
पेंहला सूंस कीयो ते भागो, आगा सूं इम बोलवा लागो ॥ २७३ ॥
जब इणनें जाण्यों घणों अवनीत, साधु तणी न जाणी रीत।
ओगुण बोलण सं कांई कांम, इणरा दुष्ट जाण्या परिणांम ॥ २७४ ॥
ओगुण बोलण रों डर दिखाय, गण माहें रहिता जाण्या ताय।
आगा ज्यूं जाण्यों भूठ रो चालो, ते कदे दे काढे मोटोई आलो ॥ २७५ ॥
अें दगा सूं आया दीसे ताहि, इसडा आछा नहीं गण मांहि।
तो याने वेगा देंणा छिटकाय, इसडी धारी मन मांय ॥ २७६ ॥
प्राछित लेंणों तो वदलीयो नांहि, पिण मांन घणों घट मांहि।
जो म्हांरो प्राछित कहे लोका आगें, तो म्हांरी जाव हलकाई लागें ॥ २७७ ॥
तिण कारण वले अडवी मांडी, हुंती देख आपरी भांडी।
वारूंवार आहिज घणी तांणें, रखे लोक भूंडो मोनें जाणें ॥ २७८ ॥
प्राछित चावो न करूं लोकां माहिं, गाला गोले छांनो राखूं ताहि।
पिण आ तों प्रसिध वात, ते छिपाई केम छिपात ॥ २७९ ॥
ओर साधां प्राछित लीधो नांहि, त्यांनें कहवा न दूं लोकां माहिं।
जो उवे कहें म्हांनें प्राछित न दीधो, तो हूं पिण केसूं म्हेंई न लीधो ॥ २८० ॥
जब इणनें वले पूछीयो जांण, कोई ग्रहस्थ पूछे मोनें आंण।
थारा सूंस भागा सुणीया तास, थांराइज सिपां रे पास ॥ २८१ ॥
नहीं भागा ने नही भागो तो कहि सूं, अण बोल्यो वेठों किम रहिसूं।
इसडों आल माथे किम लेसूं, जब ओ कहे यूं तो कहिण न देसूं ॥ २८२ ॥
साधां री रीत कीधो कहिणों, ओर उत्तर पाछो नही देणो।
आमना करे देवो जणाय, तेहवी पिण नही काढणी वाय ॥ २८३ ॥

जो थे कहिसो म्हामे दोष नांहि, तो हू कहि देसू दोष या माहि।
म्हे कह्यों ते नही छे भूठ, तो वले वेदो जासी उठ ॥ २८४ ॥
जिण प्राछित नही लीधो छे ताय, तिणने न लीयों न काढणी वाय।
जिण प्राछित लीधो छे ताम, तिणरो पिण नही लेणो नाम ॥ २८५ ॥
लीधा न लीधा रो नाम नकारो, ग्रहस्थ आगे न कहिणो लिगारो।
जो थे कहिसो इणनें प्राछित दीधो, तो हू कहिसू म्हे मूल न लीधो ॥ २८६ ॥
इसडो आल कुण ओढे माथे, प्रतीत जाअे इण वातें।
ग्रहस्थ नें भर्म ओर रों होवे, तो यारें वदलें परतीत कुण खोवे ॥ २८७ ॥
ग्रहस्थ पिण साचा ने भूठो जाणें, भूठा ने साचो कहे अजाणें।
ग्रहस्थ दोनूं प्रकारें हुवे भारी, केयक होय जाए अनत ससारी ॥ २८८ ॥
जांण नें साचा भूठा रो, सरीखो भर काढे हू कारो।
एहवी मिश्र भाषा सू हुवें खुवारी, ज्यू बणी वसुदेव राजा री ॥ २८९ ॥
इसडों कुण करसी अन्याय, वले निज परतीत गमाय।
कोइ जाणें यारे सिपां री चाहि, यानें प्राछित विण लीया माहि ॥ २९० ॥
आप प्राछित लीयो ते छिपावे, न लीयो तिणने दीयो सरधावें।
लोकां ने कहिवा न दे इण काम, यांरा दुष्ट घणा परिणांम ॥ २९१ ॥
म्हांनें प्राछित लीयो जाणे लोक, तो म्हांमे जाण लेसी दोष।
नही तो यांमे हिज जाणें दोप, यानें प्राछित लीयो जाणे लोक ॥ २९२ ॥
इसडी गूढ माया सेवे, ओर साधा सिर आल देवे।
इसडा आछा नही गण माहि, जाण्यो वेगा दीजे छिटकाइ ॥ २९३ ॥
एक आचार्य पदवी रो भूखो, कदागरो करवा ढूकों।
पदवी मूंढे आणें वारूवार, कहितो पिण नही लाजें लिगार ॥ २९४ ॥
जिणने थाप्यो आचार्य आप, तिणने तो जाणे देउं उथाप।
आचार्य पदवी हू लेऊं, जाणे सगला रो नायक वेऊ ॥ २९५ ॥
जिणने थाप्यों आचार्य जांण, जाव जीव रा करे पचखांण।
तिणमे अनंता सिद्धां री साख, त्या सूसा री करवा माडी राख ॥ २९६ ॥
आचार्य पदवी रे काजें, सूंस भांग तों पिण नही लाजें।
हूवों पदवी रो मोह मतवालो, आत्मा ने लगावे कालो ॥ २९७ ॥
इसडों अभिमांनी ने अवनीत, माडी गछवास्या वाली रीत।
पदवी पदवी करतो दीठों भूंडो, अवनीत सू एको कर वूडो ॥ २९८ ॥
यांरे एको माहोमां न छूटों, उणरें वदले ऊ वोलें भूठों।
एक एक रा दोषण ढांके, गुर आगें पिण कहितो सांकें ॥ २९९ ॥

वले बोलें घणा घणा उंधा, सरलपणें न बोलें सूधा।
करें जोम नें गाढ री वात, मिटियो नहीं त्यांरो सल मिथ्यात ॥ ३०० ॥
पांचूं पद बिचें दे आया मांहि, कपट दगो छूटों नहीं ताहि।
यांनें जाण्यां अें वेसासघाती, मांहोमां करें पखपाती ॥ ३०१ ॥
यांरो जाण्यों मांहोमां एको, चाला चरित देख्या अनेकों।
आगा ज्यूं चोखी रीत ठेंहरायो, तिका पिण नही दीसें कायो ॥ ३०२ ॥
इणनें एक बाई पूछ्यों एम, सांमीजी सूं जुदा हुवा केम।
जब ओर साध बोल्यो इम वांण, अब तों गुरां रे पगे पडीया आंण ॥ ३०३ ॥
जब उण साध नें कह्यों इण एम, इसडो थें बोलीया केम।
म्हांनें पगा पडीयों कह्यो कांय, हूं तो करार करे आयो मांय ॥ ३०४ ॥
आज पछें थें इसडी वाय, मूंढा बारें म काढजों ताय।
अें तों बोले अग्यांनी एम, ते तो गुर नें आरावसी केम ॥ ३०५ ॥
यांनें जाण्यों घणों अवनीत, नहीं चारित पालण री नीत।
छोडी जिण मारग री रीत, इणरी जावक नावें परतीत ॥ ३०६ ॥
ग्रहस्थ आगें कहिवा रा पचखांण, ते पिण सूंस भांगीयों जांण।
प्राछित ठेंहरायों घणा री साखी, ते वदल गयो अन्हाखी ॥ ३०७ ॥
वले घणा लोकां रे मांय, भूठी भूठी करे वकवाय।
वले वद वद नें बोले करों, जब इणनें तों कर दीयो दूरो ॥ ३०८ ॥
दूजोडा नें न छोड्यों ताय, तिणनें दीयो एम जताय।
जो थारें एको न छें मांहोमांहि, फाडा तोडो न कीधो छें ताहि ॥ ३०९ ॥
तो तूं मत जाए उणरी भार, उण दोपीला नें काढीयो बार।
ऊ प्राछित आढ वदलीयों तांम, तिण भूठा वोला सूं नहीं कांम ॥ ३१० ॥
जो तूं जाएला उणरी लारी, तो थें एको कीयो गण फारी।
इम कह्यां वेठो रह्यो तांम, अंतरंग तों मेला परिणांम ॥ ३११ ॥
उण सूं मिल मिल नें करें वात, उणरीज करें पखपात।
उणरो थको वेठो गण मांय, जांण जांण करे कपटाय ॥ ३१२ ॥
ओं तो जाणें रहूं गण मांय, पिण उण विण रह्यो न जाय।
तिणरी करें दलाली आप, करें मांहें ल्यावण री थाप ॥ ३१३ ॥
आगें ठेंहरायो प्राछित ताहि, ते प्राछित दे लेवो मांहि।
इणरो परमारथ छें एह, मों उपर प्राछित थापों तेह ॥ ३१४ ॥
जव उणनें पाछो कह्यों एम, तो उपर थापां प्राछित केम।
थारें उणरी दीसें पखपात, वले भेली दीसें थांरी वात ॥ ३१५ ॥

जब इण कह्यों मों उपर थे थाप्यो, ते थेइज कांय उथाप्यो।
जब इणने कह्यों वले आम, उणहीज उथापीयो ताम ॥ ३१६ ॥
उण कह्यो प्राछित लेऊं नांहि, तिणनें किण विध राखां मांहि।
जब इण भूठ बोले तिणवार, उणरी बात लीधी संवार ॥ ३१७ ॥
उ तो प्राछित बदले क्यांनें, उणनें आवे जितो देणो म्हांनें।
फाडा तोडो न कीयो म्हे सोय, तिणरो प्राछित न लेउ कोय ॥ ३१८ ॥
उ तो बदलीयो ते इण न्याय, ओ बोल्यो इसडो भूठ बणाय।
जब उणनें दीयो जताय, तोसूं प्राछित दीयो न जाय ॥ ३१९ ॥
म्हे तो सरल हुवो जाण्यो ताह्यो, जब था उपर प्राछित ठेंहरायों।
अब तो सरल न दीसो एक, छल खेलता दीसो अनेक ॥ ३२० ॥
उणनें प्राछित भारी आवे, ते तोसूं पूरो दीयो नही जावे।
तोनें प्राछित कुण भलावे, थारी परतीत मूल न आवे ॥ ३२१ ॥
तूं प्राछित दीधां रो करे नांम, ते तो खोज भांगण रे काम।
तूं प्राछित रो करे गाला गालो, इसडों दूजो कुण बेठो छे भोलो ॥ ३२२ ॥
जो उणरे रहिणों होसी गण मांय, तो गुर कनें प्राछित लेसी आय।
गुर छोडे तोकनें लेवें ताय, ते कारण मोहि बताय ॥ ३२३ ॥
आ उघाडा दगा री बात, मिल मिल नें करो वेसासघात।
थामे साध तणी नही रीत, उघाडाई दीसो अवनीत ।' ३२४ ॥
गुर कनें प्राछित लेवा नें पाछो, तिणने कदे म जांणजो आछो।
इसडाने राखें गण माय, तो सगलां नें आछो नहीं थाय ॥ ३२५ ॥
जब उणरी पख में बोल्यो पूरो, जब इणनेंइ कर दीयो दूरो।
इणनेंइ नही राखियो माय, जब ओ उण सूं भेलो हुवो जाय ॥ ३२६ ॥
जो उ न जाअे उणरी लार, तो उ कर दे इणरो उघाड।
कदा दसमो प्राछित बतावे, ते इणसूं पछे लीयो न जावे ॥ ३२७ ॥
ओ जाणें म्हांरी पारेला कूक, अठा सू पिण जाउला चूक।
भेला होय नें कीधा छे कर्म, चावा हुवा निकल जाअे भर्म ॥ ३२८ ॥
जो आप मे खामी न हुवे लिगार, तो कुण जाए भागल री लार।
ओ तो आपरा किरतब देखे, ते गुर सू भेलो रहे किण लेखें ॥ ३२९ ॥
जो उणने प्राछित आप ओढावे, तो उ इणनें उतरो बतावे।
तिणसूं उणनें प्राछित देणी नावें, आप सूं पिण लेंणी न आवे ॥ ३३० ॥
इणरे इसडी वणी छे आय, आड दोड मे पडीयो जाय।
अवनीत सूं गाढी जोडी, गुर सूं तो पेहलाइज तोडी ॥ ३३१ ॥

गुर कीधो थो उपगार भारी, ते तो घाल दीयो विसारी।
अवनीत रे जिले जूतो, नर नों भव खोय विगूतो॥ ३३२॥
यांनें छोडीया पेंहली वार, दोयां नें साथे काढीया बार।
हिवें छोडीया दूजी वार, एकीकानें काढीयों बार॥ ३३३॥
हिवें अवनीत हुआ दोनूं भेला, करवा लागा गुरां री हेला।
सूंस वरत सर्व यांरा भागा, हुवा वरत विहूंणा नागा॥ ३३४॥
प्राछित न ले तिणसूं काढ्या बारें, तिण बात रो नांम न काढे।
उलटो दोष साधां में वतावे, भूठ बोलतों संक न ल्यावे॥ ३३५॥
जब गृहस्थ बोल्या वाय, यांमें दोष हुवें ते दयो वताय।
जब ओ पाछो बोल्यो तिणवार, यांरा दोषां रो घणों विसतार॥ ३३६॥
हिवें काल पडिकमणा रो आयो, ते तों पूरा केम कहिवायो।
चेडा नें कोणक री हुइ राडो, ज्यूं यांरा दोषां रो छें विसतारो॥ ३३७॥
पछें घणा लोक मिल आया, त्यां कनें दोष अनेक वताया।
जब लोक पाछा बोल्या एम, ओ गढ इण विध भांगे केम॥ ३३८॥
कोइ भारी वतावो दोष, ज्यूं सुणें सगलाई लोक।
जब कह्यों मोटों दोष नहीं मांय, अणहूंतो वतायो न जाय॥ ३३९॥
जों अंही दोष यांमें हुवेंसी, तिणरों अं प्राछित लेसी।
जब कहें प्राछित तों यांमें नांहीं, आगें सुध हुवा म्हां मांहीं॥ ३४०॥
जब लोकां कह्यों तो क्यूं वतावो, यांमें दोष हुवें ते सुणावो।
जब कहें अं तों म्हे वातां वताई, यांरी उठांणपरीया सुणाई॥ ३४१॥
जब लोकां कह्यो वले यांनें, आ निरथक सुणाई थे क्यांनें।
हिवें थें प्राछित ले आवो मांहि, जिलो मत राखो ताहि॥ ३४२॥
जो थें जिला सहित आवो मांहि, जब तो मांहे न लेवें ताहि।
थांरी परतीत यांनें न आवे, रखे वले किणनेंई ले जावे॥ ३४३॥
जब अं पिण बोल्या वेरीत, म्हांनें यांरी नावें परतीत।
अं म्हांसूं गाढो करे करार, पछें काढें एकीका नें बार॥ ३४४॥
जद गृहस्थ बोल्या तिणवार, थांनें दोष विनां काढें बार।
तो म्हें वंदणा छोड दयां यांनें, इसडी वात विचारो क्यांनें॥ ३४५॥
जब कहें म्हें रहिसां दोय, तीजां नें नहीं फाडां कोय।
इसडी परतीत उपजावां, दोय तो वीखर न्यारा न थावां॥ ३४६॥
मुदें जिलो विखेरणों पेंहलों, ओं तो दोष नहीं छें सेंहिलों।
चोरी सहीत लेवें गण मांय, तो सगलाई भिष्टी थाय॥ ३४७॥

जिलो विखेरण रा नही परिणाम, प्राछित लेवा रो पिण काठो कांम।
जब लोका पिण जाणे लीया ताहि, अे दगा सहीत आवें गण माहि ॥ ३४८ ॥
वले गृहस्थ बोल्या केई वाय, गुर कनें प्राछित ल्यो जाय।
जब ओ बोल्यो अविनेकारी वाणो, आ वात इण भव मे मत जाणो ॥ ३४९ ॥
जो म्हें जावा यारा गण माय, तठे तो म्हारी गिणत न कांय।
म्हाने दिख्या दे लेवे माय, सगला रे पगा देवे लगाय ॥ ३५० ॥
आपणा किरतब देखे, ते गण मे आवसी किण लेखे।
आलोवण पिण करणी नावे, प्राछित पिण लेणी न आवे ॥ ३५१ ॥
जथातथ निज ओगुण बतावे, तो यानें प्राछित दसमो आवे।
एहवो वेराग ने नरमाई, ते मूल न दीसे काई ॥ ३५२ ॥
जब घणा लोका जाण्या अजोग, याने माहे लेवा नही जोग।
लोका पिण कह्यों साधा ने आय, काची बाता म ल्यो याने माय ॥ ३५३ ॥
अपछदा पजीया गण . सू जूआ, च्यार तीरथ मे फिट फिट हूवा।
श्रावक हूंता चतुर सुजाण, याने वदणा छोडी खोटा जाण ॥ ३५४ ॥
अे जाणे यामे दोष बताउ, श्रावका ने यासू भिड़काउ।
यारे उसभ उदे हुआ आण, मुख सू पिण नीकले खोटी वाण ॥ ३५५ ॥
विसवा पिण म्हाराई घट जासी, लोका मे पिण आछी नही थासी।
पिण यारा श्रावका ने करू एम, दाहे बलीया आकडा जेम ॥ ३५६ ॥
या कनें हरकोइ आवे, जब अें गुर माहे दोष बतावे।
अे तो मिल मिल ने भूठ बोले, अवगुणा रो पिटारो खोले ॥ ३५७ ॥
आगे बोलीया अवगुण अनेक, तिण विचेइ बोले छे वशेख।
यारें निन्दा तिकोइज ध्यान, यारे निन्दा तिकोइज ग्यान ॥ ३५८ ॥
जाणें अवगुण काढ्या दिन रात, कोयक लागें म्हारेइ हाथ।
इण कारण करे छे विलाप, यारें उदे हूआ छे पाप ॥ ३५९ ॥
अवगुण सुण सुण ने समदिष्टी, याने जाणे धर्म सूं भिष्टी।
यारा बोल्या री परतीत नाणें, भूठ मे भूठ बोलता जांणें ॥ ३६० ॥
सगला श्रावक सारीखा नाहि, अकल जुदी जुदी घट माहि।
समदिष्टी री साची हुवे दिष्ट, ते याने करे थोडा माहे खिष्ट ॥ ३६१ ॥
ते याने न्याय सू देवे जाव, पारे घणा लोकां माहे आव।
यारी मूल न आणे सक, याने देखाल दे यारो बक ॥ ३६२ ॥
थें घणा दोष कहो गुर माहि, घणा वरसां रा जाणो छो ताहि।
तो थें पिण साध किम थाय, जाण जाण भेला रह्या माय ॥ ३६३ ॥

जो यांमें दोष घणा छे अनेक, कदा दोष नही छें एक।
ते तो केवलग्यांनी रह्या देख, पिण थें तो बूडा ले भेख॥ ३६४॥
जो यामें दोप कह्या थें साचा, तोही थें तों निश्चें नहीं आछा।
जो भूठा कह्या तो वशेष भूंडा, थें तो दोनूं प्रकारें बूडा॥ ३६५॥
थें दोषीला नें वांद्या कहो पाप, भेला पिण रह्यां कहो संताप।
दोषीला नें देवें आहार पांणी, वले उपधादिक देवे आंणी॥ ३६६॥
हरकोइ वसत देवें आंण, करें विनो वीयावच जांण।
दोषीला सूं करें संभोग, तिणरा पिण जाणों छों माठा जोग॥ ३६७॥
इत्यादिक दोषीला सूं करंत, तिणमें पाप कहो छो एकंत।
अें थें जाणे कीया सारा कांम, ते पिण घणा वरसां लगे तांम॥ ३६८॥
घणा वरस कीया एहवा कर्म, तिण सूं बूड गयो थांरो धर्म।
निरंतर दोष सेवण लागा, हुआ वरत विहुंणा नागा॥ ३६९॥
ओ थें कीधो अकारज मोटों, छांनें छांनें चलायो खोटों।
थे तों वांध्या करमा रा जालो, आतमा ने लगायो कालो॥ ३७०॥
थें गुर ने निश्चें जाण्यां असाध, त्यांने वांद्या जांणी असमाध।
त्यांराहीज वांद्या नित नित पाय, मस्तक दोनूं पग रे लगाय॥ ३७१॥
यांसूं कीधा थें बारें संभोग, ते पिण जाण्यां सावद्य जोग।
सावद्य सेव्यो निरंतर जांण, थें पूरा मूंढ अयांण॥ ३७२॥
थें भण भण नें पाना पोथा, चारित विण रहि गया थोथा।
थे कहो अर्थ करां म्हें गूढा, तो थें भण भण नें काय बूडा॥ ३७३॥
थें वीहार करता गांम गांम, सिप सिषणी वधारण कांम।
किणने देता बंधो कराय, किणनें देता घर छोडाय॥ ३७४॥
वले कर कर गुर रा गुण ग्रांम, चढावता लोकां रा परिणांम।
जब थें गुर ने खोटा जाणो ताहि, ओरां नें क्यूं न्हाखता यां माहि॥ ३७५॥
पोते पडीया जाणों खाड मांय, तों ओरां नें न्हाखता किण न्याय।
ओरां नें डबोवण रो उपाय, जांण जांण करता था ताय॥ ३७६॥
पांच पद वंदणा सीखावता ताह्यों, तिणमें गुर रो नांम घलायो।
तिण गुर ने वांद्या जांणता पाप, तो ओरां नें कांय बोया आप॥ ३७७॥
ज्यूं नकटो नकटा हुआ चावें, उसभ उदे माठी मत आवें।
ज्यूं थें डूबता दोषीलां मांहि, ज्यूं ओरां नें डबोवता ताहि॥ ३७८॥
ओरां सूं करता एहवो उपगार, थांरा भणीया रो ओहीज सार।
इसडो कूड कपट थें चलायो, थांरो छूटको किण विध थायो॥ ३७९॥

थें तो जिण मारग मे हुआ ठगो, थे दीयो घणा नें दगो।
ठग ठग खावा लोका रा माल, थांरो होसी कुण हवाल ॥ ३८० ॥
आछी वसत हूती घर माहि, आहार पांणी कपडादिक ताहि।
थानें गुर जाणे हरख सूं देता, सो थांरा तो अे निकल गया पेंता ॥ ३८१ ॥
म्हे थानें वादता वारूंवार, जद म्हाने हुवतो हरष अपार।
थाने जाणता सुध आचारी, थे छाने रह्यां अणाचारी ॥ ३८२ ॥
म्हे थांने जाणता था पुरष मोटा, पिण थे तो निकल गया खोटा।
म्हे थानें जाणता उत्तम साध, थे तो होय नीवरीया असाव ॥ ३८३ ॥
थे जाणे रह्या दोपीला माह्यो, ठागा सू थे कांम चलायो।
थे जीतब जनम विगास्यो, नरनो भव निरथक हास्यो ॥ ३८४ ॥
थें घणा दिनां रा कहो छो दोष, थांरी वात दीसे छे फोक।
साच भूठ तो केवली जाणे, छदमस्थ तो परतीत नाणे ॥ ३८५ ॥
थें हेत माहे तो दोपण ढाक्या, हेत तूटें कहिता नही साक्या।
थारी किम आवे परतीत, थाने जाण लीया विपरीत ॥ ३८६ ॥
थे दोषीला सूं कीयो आहार, जद पिण नही डरीया लिगार।
तो हिवें आल देता किम डरसी, थारी परतीत मूरख करसी ॥ ३८७ ॥
अे थे दोष क्याने कीया भेला, अे थें क्यूं न कह्या तिण वेला।
थांमे साध तणी रीत हुवेतो, जिण दिन रो जिण दिन केंतो ॥ ३८८ ॥
थे दोषीला सूं कीयो समोग, थारा वरतीया माठा जोग।
थारी परतीत नावे म्हाने, यारा दोष राख्या थे छाने ॥ ३८९ ॥
थे तों कीधो अकारज मोटो, जिण मारग मे चलायो खोटो।
थारी भिष्ट हुइ मति बुध, हिवें प्राछित ले होवो सुध ॥ ३९० ॥
उणरी तो थारा कह्या सूं सक, पिण तू तो दोषीलो निसक।
इम कहि उणने घालणो कूडो, घणा वेठां देणी मुख धूडो ॥ ३९१ ॥
ज्यूं कोइ वले न दूजीवार, किणराई दोप न ढाके लिगार।
दोष ढाक्यां हुवे घणी खुवारी, टाको भलें तो अनंत ससारी ॥ ३९२ ॥
संका सहीत ने राखे माय, तो ओर साध दोषीला न थाय।
दोषीला ने जांणी राखे माय, तो सगलाई असाध थाय ॥ ३९३ ॥
इम कह्यां यानें जाव न आवे, जब भूठी भूठी वाता बणावे।
यारा दोष न कह्या म्हे डरते, गुर सू पिण लाजा मरते ॥ ३९४ ॥
रखे कर दे मोनें टोला बारे, मुदे तो ओहीज डर रह्यो म्हारे।
म्हे दोष सेव्या यारे कहे जाण, या सेव्या री करी तांण ॥ ३९५ ॥

कदे देतों हूं दोष बताय, जब म्हारी देता वात उडाय।
म्हां एकला री आसंग नही कांय, तिण सूं रह्यो दोषीलां मांय ॥ ३९६ ॥
हिवें तों हुआ म्हे दोय, दोप सेवण न द्यां कोय।
इसडी जोमरी वातां वणावे, मन मानें ज्यूं गोला चलावे ॥ ३९७ ॥
जब यानें पाछो कहिणो एम, थांरो साधपणो रह्यो केम।
थें डरता अकारज कीवो, तिणरो प्राछित पिण नही लीधो ॥ ३९८ ॥
कदा गुर काचो पाणी मंगावत, तो थें डरता थकां भर ल्यावत।
करावत पाप हर कोई, तो थे डरता करता सोई ॥ ३९९ ॥
कदा गुर पिण भारी पाप करता, तोही थें तो भेला रहिता डरता।
मागलां माहें रहिता खूंता, पिण थें एकला कदेय न हूंता ॥ ४०० ॥
इसडी थारी गीदडाई, थेंइज थांरे मुख सूं वताई।
इसडा पाक्रम थां माहे पावें, थांरी आगा सूं परतीत नावें ॥ ४०१ ॥
साधां नें डरतो मूल न रहिणो, दोष देखे सताव सूं कहिणो।
डरता न कह्या तो थे गीदड पूरा, हिवें किण विध होसो थें सूरा ॥ ४०२ ॥
एकला होयवा सूं डरते, दोष न कह्या थें लाजां मरते।
तो हिवे ढाकोला दोप अनेक, जाणे होय जावांला एक एक ॥ ४०३ ॥
हिवें थारे दोयां रे माय, कोइ दोप दे अनेक लगाय।
तो पिण चावा न करो लाजां मरता, एकला होण सूं वले डरता ॥ ४०४ ॥
एकला होण सूं डरो दोई, मांहोमा दोप देसो लकोई।
आ देख लीधी थारी रीत, हिवें जावक नावें परतीत ॥ ४०५ ॥
थांरे तो मांहोमां दोप देख, हिवे तो ढांकसो वशेख।
एकला होवण रो डर थांनें, मांहोमां दोप राखसो छाने ॥ ४०६ ॥
जो हिवें कहो म्हे न राखां छानें, तो हिवे वात थांरी कुण मानें।
थें बेंठा परतीत गमाय, थांरी मूर्ख माने वाय ॥ ४०७ ॥
किणही चोर रो हुवो उघाडों, फिट फिट हुवो सहर मझारो।
घणा लोकां जाणीया तास, पछे कुण करे तिणरो वेसास ॥ ४०८ ॥
ज्यूं थांरो पिण हुवो उघाडों, दोपीलां भेलो काढ्यों जमारो।
परगट न कीया त्यारा दोष, थें जनम गमायो फोक ॥ ४०९ ॥
एक दोप सेवें नित साध, तिण संजम दीयो विराध।
तिणने गुर जांण नें वांदे कोय, तो उ अनंत संसारी होय ॥ ४१० ॥
तो घणा दोप जाणें थें साख्यात, त्यानें जाणे वांदयां दिनरात।
तो थें पूरा अग्यांनी वाल, थें रुलसो कितोएक काल ॥ ४११ ॥

एक दोष रो सेवणहार, तिण वादया वधे अनत ससार।
थें घणा दोप जाण्यां त्यां माय, त्यांरा हीज वादया नित नित पाप ॥ ४१२ ॥
भागलां रा वांदया जाणें पायो, जिण मारग माहे ठागो चलायो।
रह्या कूड कपट माहे भूल, हिवे थांरो होसी कुण सूल ॥ ४१३ ॥
जो थे गुर मांहे दोष वताया, घणा वरस थे राख्या छिपाया।
तिण लेखें पिण थेंइज भूडा, ग्यांनादिक गुण खोई बूडा ॥ ४१४ ॥
जो थे दोप कह्या यामे कूरा, जव तो थे जावक बूडा पूरा।
थें दीया अणहूता आल, हिवें रुलसो कितो एक काल ॥ ४१५ ॥
थें दोनूं विध बूडा इण लेखे, साच भूठ तों केवली देखें।
छदमस्थ तों या अेहलाणें, यानें जावक भूठा जाणें ॥ ४१६ ॥
यां कने पेहला अवगुण कहिवाय, पछे खिष्ट करे इण न्याय।
यांरा वचन ने सेठा भाले, यानें पग २ भूठा घाले ॥ ४१७ ॥
यांनें जाव न आवे पूरा, चरचा करता परजाअें कूरा।
ज्यूं वोले ज्यूं पकडावे, भागवा री सेरी न पावे ॥ ४१८ ॥
अें तों अवगुण वोले अनेक, वुधवंत नही माने एक।
यांनें जाणे पूरा अवनीत, यारी मूल नाणे परतीत ॥ ४१९ ॥
अवनीतां रो करे वेसास, तो हुवे वोध वीज रो नास।
च्यार तीरथ सूं पडीया कानें, त्यारी वात अग्यानी माने ॥ ४२० ॥
अविनीतां रो करे परसग, तो साधां सूं जाअें मन भग।
अें साधा ने अमाय सरधावे, भूठा २ अवगुण वतावे ॥ ४२१ ॥
यांरो जाय सुणे वखाण, तिण लोपी जिणवर आण।
यांरी तहत करे कोड वाणी, आ दुरगत नी अेंलाणी ॥ ४२२ ॥
किणरें उसभ उदे हुवे आण, ते करे अविनीत री ताण।
त्यां भूठा नें साचा दे ठेहराई, त्यारे अनत संसार री साई ॥ ४२३ ॥
यानें कहि वतलावे सामी, तिणमे पिण जाणजों मोटी खामी।
यानें उचो करे कोड हाथ, तिणरे निश्चे वधे कर्म सात ॥ ४२४ ॥
यांरो जाय वखांण मंडावे, वले ओर लोकां नें वोलावे।
इसडी कोड करे दलाली, ते पिण धर्म सूं होय जाए खाली ॥ ४२५ ॥
यानें च्यार तीरथ माहे जाणे, ते पिण पेहले गुणठाणे।
यांरी करे कोड पखपात, तिणरें आय चूको मिथ्यात ॥ ४२६ ॥
यांसूं करे आलाप सलाप, तिणरे पिण वधे चीकणा पाप।
यानें वंदणा करे जोडी हाथ, तिणरे वेगो आवे मिथ्यात ॥ ४२७ ॥

यांरी भाव भगत करे कोइ, वले आदर सनमान दे सोई।
तिणरें सरधा न दीसे साची, गुर री पिण परतीत काची ॥ ४२८ ॥
यांसूं करे विनो नरमाई, तिणरें लागी मिथ्यात री साई।
घणों २ जो यां कनें जावे, ते समकत वेगी गमावे ॥ ४२९ ॥
अें अवनीत नें भागल पूरा, वले आल दे कूडा कूडा।
त्यांरी मान लेवे कोई वात, ते तों बूड चूका साख्यात ॥ ४३० ॥
कोइ भणवा रा लालच रो घाल्यो, त्यांरे कनें जाअें कोई चाल्यो।
ते तों गुर रो न मानें हटको, तिणरो तो हुंतो दीसे छे गटको ॥ ४३१ ॥
चरचा बोल सीखे त्यां आगे, तिणरें डंक मिथ्यात रो लागे।
यांरो संसतो परचों न करणो, यांरो संग जावक परहरणो ॥ ४३२ ॥
समकत रा अतिचार संभालो, तो अवनीत सूं देजो टालो।
जोवो आणंद श्रावक री रीत, राखो सूतर री परतीत ॥ ४३३ ॥
अें अवगुण बोलें चिठाय चिठाय, किणही भोला रे संक पड जाय।
जो उ न करे त्यांरी पषपात, तिणरो काढणों सोहरो मिथ्यात ॥ ४३४ ॥
त्यांरी गाढी झाले पष कोई, ते नहीं छोडे झूठा जाणें तोही।
ते बूडसी अवनीतां रे लारें, त्यां अहली दीयो जनम विगाडें ॥ ४३५ ॥
कोई लीधी टेक न मेले, आपरें मन मानें ज्यूं ठेले।
जिण धर्म री रीत न जाणें, मूंढ मूर्ख थको यूंही ताणें ॥ ४३६ ॥
यां कनें करे कोई पोसो समाई, यां कनें करे पचखाण जाई।
तिणरी पिण जांणजो मति काची, जिण मारग में न कीधी आछी ॥ ४३७ ॥
जे अवनीत रा पपपाती, त्यांरी सुण २ वल उठे छाती।
अवनीतां रो करे उघाड, जब पिण मूंढो देवे विगाड ॥ ४३८ ॥
कोई गण में हुवे अवनीत, तिण सूं गाठी वांधे पीत।
ते पिण ओगुण बोलावण कांम, इसडा छे मेला परिणांम ॥ ४३९ ॥
जिणरो धेष छे घणा दिन पेलो, दुष्ट परिणांमी जीव छे मेलो।
तिणरें उदे हुवे कर्म मिथ्यात, ते तुरत मानें त्यांरी वात ॥ ४४० ॥
ते अवनीतां री करे पखपात, तिणरे आय चूको मिथ्यात।
खप करे त्यांरी करवा थाप, तिणरें उसभ उदे हुवा पाप ॥ ४४१ ॥
जाणें अभिमांनी ने अवनीत, तोही राखे त्यांरी परतीत।
तिणरे प्रतष पूरो अंधारो, बूडें छे अवनीत रे लारो ॥ ४४२ ॥
जिणनें गुर रा अवगुण सुहावे, ते अवनीत नें मूंढे लगावे।
त्यां कनें गुर रा अवगुण बोलावे, पछे लोकां में आप फेंलावे ॥ ४४३ ॥

करे जिण तिण आयं वात, करे अवनीता री पखपात।
अवनीता ने साचा साचा सरधावे, गुर माहे अवगुण दरसावे ॥ ४४४ ॥
वादें तो गुर नें सीस नाम, करे अवनीता रा गुणग्राम।
ते होय बेंठा अवनीता री लारी, वले ओरा ने खपें करवा खुवारी ॥ ४४५ ॥
गुर सू लोकां रा परिणाम फारें, आप विगड्यो ओरा नें विगाडे।
इसडो श्रावक वेसासघाती, ते पिण होयचूको मिथ्याती ॥ ४४६ ॥
गुर री साची वात दे ठेली, अवनीतां रो होय जाए वेली।
हरकोई अवनीत छूटे, तिणरो बेली होय उठे ॥ ४४७ ॥
साधा रा अवगुण अवनीत बोले, तिण सूं वात करे दिल खोले।
अवनीत ने मिलीया अवनीत, त्यारी तेहीज करे प्रतीत ॥ ४४८ ॥
गुर सू पिण जावक नही तोडें, अवनीत सू पिण सटकें नही जोडें।
घरपाघर रह्या छे देख, छल छिदर जोवे छे वशेख ॥ ४४९ ॥
जो अवनीता ने लोक न मानें, तो आप पिण होय जाए कानें।
अणसरते दवीया रहे माहि, पिण लखण भदर लीया ताहि ॥ ४५० ॥
केई श्रावक दोपडपीटा, ते पिण पडीया यारे सग फीटा।
जो कोई बंध निकाचत पाडें, ते पिण अनत संसार वधारे ॥ ४५१ ॥
केई श्रावक भागल साख्यात, ते भागला री करे पखपात।
जाणे चोर सूं मिल गई कुती, भूठी वाता करे अणहूती ॥ ४५२ ॥
ते भागलां नें कहे उतकिष्टो, तिणरी पिण मति होइ गई भिष्टो।
तिण भागल नें भागल मिलिया, जब पूरीजे मन रलीया ॥ ४५३ ॥
असाधा नें सरधे साध, साधा नें सरधे असाध।
दोनूं प्रकारें मूरख बूडे, ते पिण जाय बेससी तूडे ॥ ४५४ ॥
एहवा अभिमानी ने अवनीत, होसी चिहुगति माहे फजीत।
याने भूंडा कह्या लोका आगे, यारा पखपाती रे दाह लागे ॥ ४५५ ॥
ए समचे भाव कह्या छे जाण, कोई आप म लीजो ताण।
एहवा अवगुण छे जिण माय, ते छोड्या विण सुख नही थाय ॥ ४५६ ॥
ए विगडायल जेन रा पूरा, त्याने कर दीया गण सू दूरा।
लाज सरम त्या अलगी मेली, भेषधारी भागल त्यारा वेली ॥ ४५७ ॥
ए साधां मे दोष बतावे, ते भेषधाऱ्या रे मन भावे।
यारी ठडी कीधी या छाती, ए पिण हुवा त्यारा पखपाती ॥ ४५८ ॥
या तो दुरगत री नीव दीधी, भेषधाऱ्या रे खरची कीधी।
इण खरची सू होसी खुराब, पडसी चिहु गति माहे आव ॥ ४५९ ॥

ए तो आगेंइ देता था आल, ते भूठ रो क्यांनें काढें नीकाल।
ओ सहजें पडीयो भूठ पानें, हिवें ए क्यांनें राख्या छानें॥ ४६० ॥
भेषधार्‍यां रा श्रावक आवे, त्यांसूं तो घणा मिल जावे।
त्यांनें मीठा वचनां बोलावे, त्यां आगें गुर में दोष बतावे॥ ४६१ ॥
जब ए पिण राजी होय जावे, असणादिक आछी रीत वेंहरावे।
वले ए पिण यांनें पोगां चढावे, वारूंवार अवगुण बोलावे॥ ४६२ ॥
वले मांहोमां कलहो दें लगाइ, आमी सामी भेटी मेलें ताहि।
यांरे आगेंई साध सूं धेष, तिणसूं यांरी मानें वसेष॥ ४६३ ॥
वले यांनें पूछें केइ एम, थांनें गण बारे काढीया केम।
जब ए कहे म्हांनें काढें क्यांनें, म्हें तो ढीला जाणें छोड्या यांने॥ ४६४ ॥
इसडा भूठ बोलें जांण जांण, तिणरों कठें नहीं परमांण।
यांनें छोड्या एकीकानें ताय, तका तो वात दीधी छिपाय॥ ४६५ ॥
कमलप्रभ आचार्य नें देखो, तिण विचे यांरी विगडी वसेखों।
उण वचन फेर्‍यो एकवार, तों रुलीयो अनंत संसार॥ ४६६ ॥
ए तों बके घणा दिनरात, कूड कपट सहीत करे बात।
वले विवधपणें देवे आल, तों ए रुलसी कितोएक काल॥ ४६७ ॥
इसडा अनंत हुआ नें होसी, परभव सामो विरला जोसी।
वले आरा आजूणा मांहि, म्हें पिण देख लीया छे ताहि॥ ४६८ ॥
ए भाव कह्या तिण मांहि, कोई बोल टले छे ताहि।
केई अणुसारें मेल्या छे न्याय, कोई बोली रो फेर छे मांय॥ ४६९ ॥
इत्यादिक यांमें आंगुण जांण, जब लागा छे जहर समांण।
यांनें निन्व जाणें कीया दूर, तिणमें मूल म जांणजों कूड॥ ४७० ॥
सेतीसें वरस संवत अठारें, काती सुद एकम सनीसरवार।
निन्व भागल रो विसतार, कीधो पादू गाम मभार॥ ४७१ ॥